Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यमित्र

1996 May-June Oct-Dec

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078832

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

80
078832

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ArnikaPlus-TRIOFER ArnikaPlus-TRIOFER ArnikaPlus-TRIOFER

अम्लरोग ? क्षुधामंद ? कोष्ठबद्धता ?

स्वास्थ्य और सौंदर्य की रक्षा के लिए लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण पेट की गड़बड़ी और अस्वस्थ लिवर। यदि तंदुरुस्ती चाहते हों तो पेट की गड़बड़ी दूर करें और लिवर की सुरक्षा पर ध्यान दें।

पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर की सुरक्षा के लिए

डा. सरकार का एक फलप्रद आविष्कार

लिवोसिन

आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।

सेवन विधि

दो चाय चम्मच लिवोसिन एक गिलास थोड़ा हलका गरम पानी के साथ सुबह खाली पेट और रात को सोने से पहले सेवन करें, जबतक सीने की जलन, हाजमाशक्ति में वृद्धि, कोष्ठबद्धता और पेट की गड़बड़ी से छुटकारा न मिल जाये और लिवर स्वस्थ न हो जाये।

लिवोसिन

आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

06-95

LIVOSIN LIVOSIN LIVOSIN LIVOSIN LIVOSIN LIVOSIN

अर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माताओं की एक सहयोगी संस्था Jupiter की आयुर्वेदिक गवेषणा का एक तोहफा।

जूपिटर फर्मास्युटिकल्स लिमिटेड
२५, इडेन हास्पिटल रोड, कलकत्ता-७३
फोन : २६-०१५६/२७-०२२४

Jupiter Emars Allen allens Dr Sarkar Group

एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक औषधि-प्रस्तुतकर्ता

जिसके हिफाजत से ही आपका आरोग्य और विश्वास।

विपणनकर्ता
allens **एलेन्स इंडिया लि.**
अर्निकाप्लस अपार्टमेन्ट, सियालदह
३५, ए.पी.सी. रोड, कलकत्ता-९
फोन : ३५०-९०२६/३५१-००४४
प्र. का. एलेन्स अपा. : ३५१-००७२

Allen's Ad India

BoroAllen BoroAllen BoroAllen

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. दायित्व—क. देनेवाली चीज, ख. जो चीज दी जाए, ग. जिम्मेदारी, घ. अदायगी।

२. दासानुदास—क. दासता, ख. परतंत्र, ग. अत्यंत गरीब, घ. दासों का दास।

३. संहार—क. नाश, ख. हिंसा, ग. संघर्ष, घ. तोड़फोड़।

४. हृदयंगम—क. हृदय में स्थित, ख. हृदय को तुष्ट करनेवाला, ग. मर्मस्पर्शी, घ. सहमतिसूचक।

५. सकलप्रिय—क. लोकप्रिय, ख. जो सबको प्रिय हो, ग. जिसका आम प्रचार हो, घ. सबको फायदेमंद।

६. सकर्मक—क. जिसका परिणाम अच्छा हो, ख. जिसमें सफलता मिले, ग. प्रभावकारी, घ. कर्म से युक्त।

७. आस्वाद—क. अच्छा स्वाद, ख. रस, ग. सहानुभूति, घ. बुरा स्वाद।

८. मूलोच्छेद—क. संघर्ष, ख. बर्बादी, ग. शत्रु का विनाश, घ. समूल नाश।

९. प्रवंचना—क. षड्यंत्र, ख. धोखेबाजी, ग. चोट पहुंचाना, घ. चुपके से प्रहार करना।

१०. उद्दिष्ट—क. चाहा या सोचा हुआ, ख. उपयुक्त, ग. आज्ञा-प्राप्त, घ. लक्षित।

११. अभिवाद्य—क. लयबद्ध, ख. संस्तुत्य, ग. प्रशंसा करने योग्य, घ. अभिवादन करने योग्य।

१२. पक्षधर—क. पक्षपात, ख. जो किसी का पक्ष ले, ग. प्रशंसा करनेवाला, घ. सिफारिश करनेवाला।

१३. भावस्थ—क. अनुरक्त, ख. भावुक, ग. भाव में लीन, घ. स्थिर भाव रखनेवाला।

१४. एकात्म—क. अभिन्न, ख. स्थिरचित्त, ग. अकेला, घ. मुक्ति।

उत्तर

१. ग. जिम्मेदारी। अनाथ बच्चों के पालन का **दायित्व** सामाजिक संगठनों को लेना चाहिए। (व्युत्.-दा)

२. घ. दासों का दास, अत्यंत विनम्र सेवक। वफादार कर्मचारी प्रायः स्वयं को **दासानुदास** कहते हैं। दास+अनुदास (व्युत.-दास्)

३. क. नाश। युद्ध में मानव-जीवन तथा सभ्यता का **संहार** होता है। (व्युत्.-सम, हृ)

४. क. हृदय में स्थित। शिष्य ने गुरु के उपदेश को **हृदयंगम** कर लिया। (व्युत.-हृत, गम्)

५. ख. जो सबको प्रिय हो। अनुपम कलाकृति **सकलप्रिय** होती है। (सकल+प्रिय)

६. ग. प्रभावकारी, घ. कर्म से युक्त। सामाजिक योजना **सकर्मक** होनी चाहिए। (व्युत.-स, कर्मन्)

७. ख. रस, रसानुभव। श्रेष्ठ साहित्य का **आस्वाद** लेना चाहिए। (व्युत्.-आं, स्वद्)

८. घ. समूल नाश। भ्रष्टाचार का **मूलोच्छेद** होना चाहिए। मूल (व्युत्.-मूल) +उच्छेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(व्युत्.-उद्, छिद्)

९. ख. धोखेबाजी, ठगी । व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन में **प्रवंचना**का भागी नहीं होना चाहिए । (व्युत्.-प्र. वञ्च्)

१०. क. चाहा या सोचा हुआ । **उद्दिष्ट** योजना का कार्यान्वयन सार्थक होगा । (व्युत.-उद्, दिश्)

११. घ. अभिवादन करने योग्य । अतिथि **अभिवाद्य** होता है । (व्युत्.-अभि, वद्)

१२. ख. जो किसी का पक्ष ले । गलत काम करनेवाले व्यक्ति का **पक्षधर** कदापि नहीं होना चाहिए । (पक्ष+धर)

१३. ग. भाव में लीन । अच्छी कविता सुनकर श्रोतागण **भावस्थ** हो गये ! (भाव+स्थ)

१४. क. अभिन्न । समस्त मानवता से **एकात्म** भाव रखना चाहिए । (एक+आत्म)

पारिभाषिक शब्द

Vice Chancellor	= उपकुलपति
Devaluation	= अवमूल्यन
Demonetization	= विमुद्रीकरण
Prorogation	= सत्रावसान
Plenary Session	= पूर्ण अधिवेशन
Sessions Judge	= सत्र न्यायाधीश
Adjourn Sine die	= अनिश्चितकाल के लिए स्थगन

ज्ञान-गंगा

तत् सुखं यत्र निर्वृतिः ।

(महाभारत, शांतिपर्व १११/३२)

—वह सुख है जिसमें शांति हो ।

स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम् ।

(स्वप्नवासवदत्ता ४/६)

—बार-बार स्मरण करने से दुःख नया हो जाता है ।

क्वचिद् बुधैरप्यपथेन गम्यते ।

(नैषधचरित ९/३६)

—कभी विद्वान लोगों को भी रास्ता छोड़कर चलना पड़ता है ।

योग्यः सर्वत्र युज्यते ।

(दीपमालिका ७/३८)

—योग्य मनुष्य सब जगह के लिए उपयुक्त होता है ।

मानापमानदानानि प्रकटानि न कारयेत् ।

(गणेशपुराण (उ.पू. ३१/१२)

—अपने सम्मान, अपमान एवं दान का विज्ञापन नहीं करना चाहिए ।

भाविभद्रं हि जीवितम् ।

(द्विसंधान महाकाव्य ९/३८)

—भावी कल्याण पर ही जीवन आश्रित है ।

कुतर्कग्रंथ—सर्वस्व—गर्वज्वरविकारिणी ।
एति दृग
निर्मलीभावमध्यात्मग्रंथभेषजात् ।।

(अध्यात्म-सार १/२२)

—कुतर्क—ग्रंथों के अध्ययन से व्यक्ति मद-ज्वर से ग्रस्त होता है, जिससे दृष्टि विकृत हो जाती है, जबकि अध्यात्म-ग्रंथ रूपी औषधि से दृष्टि निर्मल होती है ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३६, अंक ५, मार्च, १९९६

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी
कादम्बिनी वर्षतु

हास परिहास विशेषांक

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

• • •

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

निबंध एवं लेख

सामाजिक परिवर्तन में संस्कृति और प्रशासन की भूमिका
● बाल्मीकि प्रसाद सिंह २२

एक चिरंतन महक है मैथिली के लोक गीतों में
● गौरीशंकर नागदंश ३०

दुलहनिया का दिल
● प्रेम जनमेजय ३२

पत्रिका प्रकाशन
● डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी ३३

जहां मोर धधकती चिता में कूदे थे
● अशफाक कादरी ५८

वैदिक ऋचाओं से आज तक होली
● डॉ. सत्यदेव आजाद ६५

है कामदेव का पक्षी तोता
● डॉ. डी. एन. तिवारी ६८

माडलिंग के नाम पर बिक रही हैं सुंदरियां
● देशबंधु वशिष्ठ १०२

लोककाव्य में रोग मुक्ति के उपाय
● अ. कु. जै. १११

ईंट पर सिर रखकर ख्वाब बुननेवाला शायर
● उषा वधवा १२१

पिया आया बसंत फूल रस के भरे
● डॉ. राजेन्द्र गौतम १२९

मनसाराम के कोलाज
● मनमोहन सरल १३४

होली की लपटें
● अरुण कुमार जैमिनि १७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य एवं हास्य कथाएं

होली कीचड़ की
● पूरन सरमा ३५

एक चिंतन पापड़ के नाम
● सत्यनारायण भटनागर ३८

आम आदमी की तलाश
● अशोक व्यास ४१

मिल गयी घाघरा चोली पहने
● छाया वर्मा ४४

बहिरू पंडित : दफतड़न् सिस्टर
● डॉ. कुमार दिलीप सिंह ४६

होली में चोरी लकड़ी और लड़की की
● अरविंद तिवारी ४८

किरायेदार बनें, मजे करें
● शशांक अत्रे ५४

शिकारनामे
● बृज किशोर शुक्ल ५६

कचरा फेक गयी
● मंजु ज्योत्सना ६२

श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते...
● जगदीश किंजल्क ७४

अपना नरक दर्शन
● गोपाल चतुर्वेदी ८१

कामवाली की तलाश में
● जितेन्द्र जीतू ८७

मूर्च्छा दर्शन
● डॉ. सरोजनी प्रीतम ९०

कला है मूर्ख बनाना भी
● डॉ. देवव्रत जोशी ९४

तंत्र विशेषांक से निकला भूत
● संगीता नेमा ९६

नाक काटने की प्राचीन परंपरा
● कृष्ण मुरारी पुरोहित १०८

ब्राह्मण जात है : मुंह काला हो जाएगा
● डॉ. संसारचंद ११४

दढ़ियलनामा : होली हुड़दंगी : भविष्यफल
● स्वामी बिजनौरी १२६

मूर्ख एक ढूंढ़ो हजार मिलते हैं
● अश्वनी कुमार दुबे १४०

आधुनिक द्रोपदी के आत्म संस्मरण
● गीता पुष्प शॉ १४३

हाय रे भोजन प्रेमी मिथिला के
● महेश कुमार झा १४७

प्रतिवेदन पोरस के हाथी का
● आशुतोष दुबे १५१

थाली सिस्टम की वापसी
● डॉ. पी. के. श्रीवास्तव १५४

इश्क के घाट पर किसको सम्हले देखा है
● उमाशंकर चतुर्वेदी १५८

करे कोई और भरे कोई
● दिव्या सक्सेना १६४

ऊं श्री सासू महत्तम
● दिग्विजय नारायण सक्सेना १७८

गोरी के अंगों का आतंकवाद
● उमाशंकर चतुर्वेदी १८०

आये दिन चुनाव के
● डॉ. पी. सी. रावत १८३

भौजी की राम राम
● सुधारानी श्रीवास्तव १८६

स्वर्ग में राजकपूर और जौहर की बातचीत
● मंजुला डोभाल १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताएं/हास्य कविताएं

● पोद्दार रामावतार अरुण ● डॉ. हरिमोहन १६७
● शकुन्तला श्रीवास्तव ● शिवप्रसाद कमल ● नीलिमा सिन्हा १६८
● ज्योति प्रकाश सक्सेना ● यश मालवीय १६९
● इंदु जैन १७०
● बटुक चतुर्वेदी ● दीपक गुप्त १७१
● सुरेश नीरव ● नरेन्द्र मोहन कपूर ● बलवीर त्यागी १७२
● गोपाल शर्मा ● विनयकांत उपाध्याय १७३
● रमेश जोशी ● पैरोड़ीदास १७४
● प्रकाश प्रलय ● हरीश दुबे ● कमल जैन १७५
● शेरजंग गर्ग १७६

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य—४, ज्ञानगंगा—५, प्रतिक्रियाएं—९, कालचिंतन—१४, आखिर कब तक—१८, प्रेरक प्रसंग—२८, वैद्य की सलाह—५१, गोष्ठी—७८, विधि विधान—९८ बुद्धि-विलास—१०१, ज्योतिष समस्या और समाधान—११२, प्रवेश—११८, व्यंग्य-तरंग—१३८, इनके बयां जुदा जुदा—१६१, यह महीना और आपका भविष्य—१६२, नयी कृतियां—१९०, क्लब समाचार—१९४, सांस्कृतिक समाचार—१९६, समस्यापूर्ति—१९७ ।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल,
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार, कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)
अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) ।

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत पत्र

प्रदूषित तीर्थ

जनवरी अंक में प्रयाग कुंभ का महात्म्य पढ़ा । कितना अच्छा हो कि सपनों, कल्पनाओं और भावनाओं के साथ-साथ हम ठोस वास्तविकताओं को भी दृष्टि में रखें । प्रयाग पहुंचने पर पंडे, मल्लाह और श्राद्ध-पुजारी बहुत प्रताड़ित करते हैं, १० रुपये के काम के लिए ५०० मांगते हैं । चाहे यजमान के पास घर वापसी का भी पैसा न बचे । धर्म के नाम पर, गंगा की गोद में बसनेवाले ये पंडे कभी-कभी इतना घृणित दृश्य उपस्थित कर देते हैं कि घृणा भी होती है, रोना भी आता है । इसी गंगा तट पर पहले स्नान करने के नाम पर, नागाओं, वैष्णवों, उदासीन साधुओं में सशस्त्र युद्ध (मारपीट नहीं) हुए हैं । ये ऐतिहासिक तथ्य बारहवीं शती से ही मिल रहे हैं । अभी हाल के वर्षों में, शंकराचार्यों का रथ खींचनेवाले भिखारियों और किशोर बालकों को जाड़े में भी पसीना आ जाता है— बांध की चढ़ाई पर । उतराई में भीड़ के कारण, कोई न कोई दबता ही रहता है । कोई अपने को शंकराचार्य घोषित कर देता है, कोई अपने को परमहंस, कोई १००८ और कोई भक्त शिरोमणि । उसका खंडन और निंदा का क्रम चलता रहता है । अधिकतर गण्यमान्य साधु एवं शंकराचार्य सशस्त्र सुरक्षा की मांग करते हैं और वह मिलती भी है— क्योंकि माफिया गैंगों से कम नहीं है ये लोग । हर वर्ष कुछ विदेशियों, कुछ महिलाओं के गायब होने का समाचार मिलता रहता है । पिछले वर्ष तो मेला समाप्त होने के बाद एक संन्यासी बाड़ा के सेप्टिक टैंक से महिला की लाश मिली थी ।

और यह सब यहीं नहीं होता । हरिद्वार के कुंभ में, गांधीजी ने, वहां फैले पाखंड, भ्रष्टाचार, अनाचार, अव्यवस्था को देखकर, अमावस्या का महत्त्वपूर्ण स्नान बिना किये ही, उसी दिन हरिद्वार छोड़ दिया था । रामकृष्ण परमहंस से पूछा गया, "क्या **गंगाजी सचमुच सारे पाप काट देती हैं ?" उनका उत्तर था, "वे सारे पाप किनारे के वृक्षों पर जा बैठते हैं और जब नहाकर लोग लौटते हैं तो पाप उन पर फिर सवार हो जाते हैं** । वाराणसी के गंगा तट पर फैले मलमूत्र को देखकर परमहंस ने कहा था, "**पुण्य मिलता हो या न मिलता हो, यहां के लोगों का हाजमा जरूर अच्छा है ।**"

गंगाजी हर शहर में, हर घाट पर, गंगोत्री से लेकर ऋषिकेश, प्रयाग, पटना, कलकत्ता तक करोड़ों लोगों को मात्र दर्शन से ही मुक्त करती रही हैं (**गंगे, तव दर्शनात् मुक्तिः**) फिर भी न जाने इस देश में क्यों पापाचार, घोटालाचार, आतंकवाद, राजनीतिक और आर्थिक अपराध बढ़ता ही जा रहा है ? और साथ ही जनसंख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गरीबी भी । अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण बताते हैं कि प्रशासनिक और आर्थिक भ्रष्टाचार में हम सर्वोच्च हैं । देश की हालत बताती है कि कितना ''भीतर का अमृत छलक रहा है ।''

सारे तीर्थ भयानक प्रदूषण से ग्रस्त है । इन तीर्थों से लोगों को विरत करना चाहिए क्योंकि अब प्रशासन व्यय, प्रदूषण का भय, आतंकवाद का भय, रोगों का और दुर्घटनाओं का भय, ट्रैफिक की समस्या तथा स्थान की कमी आधुनिक नरक निर्मित कर रहे हैं । पिछले हरिद्वार कुंभ में नेताओं के कारण भगदड़ मच गयी, पुल पर भारी भीड़ में कितने ही लोग दिवंगत हो गये । यह सब देखते हुए भी लोगों की आंखें नहीं खुलती हैं, लोग सोए हुए हैं । गीता में ऐसे लोगों के लिए कहा गया है—

या निशा सर्वभूतानां – लोग सोए हैं— आंखें नहीं खोलते । श्री कृष्ण ने बेकार में गीता उपदेश दिया, कह देते कि हे अर्जुन और कौरव जाओ सभी गंगा नहा लो, सभी समस्याएं सुलझ जाएंगी । उपनिषदों ने मानव मन को ही हर प्रकार से समझाने का प्रयत्न किया है । धर्म आंतरिक जागरण (देवी जागरण नहीं) से आया है, आत्मबल और आत्मनिरीक्षण से स्थापित होता है । धर्म और अमृत की प्राप्ति बाहर के शारीरिक कृत्यों से नहीं आंतरिक तप से होती है । मन चंगा हो तो कठौती में भी गंगा है, वरना गंगा भी गंदा नाला ही है । बहुसंख्य भीड़ ने यही सिद्ध किया है ।

मन एवं मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयो :

— स्वामी आनंद ध्रुव
— सुदर्शन भवन, सूर्यकुंड
इलाहाबाद-२११००१

प्रोत्साहन पुरस्कार

जहां पियार ऊहां राह ?

हमरी पिआरी 'कादम्बिनी' ?

तोका हमर बहुत-बहुत पिआर ।

हमरी 'जान ऑव आर्क' वइसे त तूं हर बार हमरे घरे नित्य अपन नया-नया रूप लेई के आवत है । किंतु तोहार जनवरी '९६ के 'स्वास्थ्य विशेषांक' रूप के कवनो जवाब नाहीं है ।

इतना त सबको मालूम रहा कि ईवार तोरा उक्त विशेषांक रूप में ही आना है । परंतु ई अनुमान कोई नाहीं किया था कि अवकी का तोरा रूप मा इतना निखार होगा । अवकी का तोरा ऊपरी साज-सज्जा व मेकप के जितना भी बड़ाई करल जाए ऊ कम हीं होगा । अऊरो अंदर का मसाला के बारे मा हम कुछ लिखे 'पिआरी' ई अवकात अमरी कलम में ना है ।

हमरी डॉलिंग, दुःख सिर्फ ई बात का है कि हमरा घरवा थोड़ा देहात में पड़ी जात है । हमनी का हर काम चाहे ऊ छोटा होय वा बड़ा ऊका लेके शहर हीं जाय पड़त है । ईहां ना त कोई ठीक गाड़ी-घोड़ा क सुविधा है, ना कोई डॉ. अस्पताल क पता । ना कोई किताब क दूकान, ना कोई स्कूल-कॉलेज और रेलवे स्टेशन वा स्टेशन स्टाल देखे खातीर ३५ कि. मी. दूर जाये पड़त है ।

पिआरा, अब तू खुद ही सोच सकत कि तोरा क पावे में हमारा कितना परेशानी उठावे पड़त है । लेकिन हमरी जान, पिआर त आखिर पिआर होत । हम भी जइसे तइसे करि तोरा के ढूंढ हीं लेत है । ऊ ठीक ही कहल जात है—

''जहां पिआर है ऊहां राह भी है''

हमरी कादम्बिनी, वइसे त हर बार शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाई के हीं तोका लावे का कोशिश करत हैं । लेकिन हर बार हमें सफलता नाहीं मिलत । कभी-कभी तू मिल जात है । कभी-कभी पता चलत कि तोरा आवे में दो-चार दिन देर है । ई बात सून हमका बहुत दुःख होत है । पर कर भी क्या सकत ? हम चार दिन रुक क तोरा ला इंतजार तो नाही कर सकत है । मजबूरन हमरा खाली हाथ आवे पड़त है । ई चक्कर में भी दो-चार दिन देर होई जात है । तोरा के देर से पाई के हमर पिआर, ससूर अऊर उमड़ी जात । कभी-कभी तो आंख में पिआर के आंसू भी छलक जात हैं ।

कादम्बिनी एगो बात है, ऊ का है कि कभी-कभी तोरा संपदकवा—अवस्थीआ भैया (भईया) पे हमका बहुत गुसा आई जात है । मेरा जान, तोरा त ई मालूम है कि जब भी तूं हमर घरे आवत है पूरा मुहल्ला इकट्ठा होई जात है । आऊर सब कोई ईहे पूछत कि— का हो पिआरे राजेशजी का हुआ, ई बार का अंक में संपदकवा तोरा लेटरवा को कवनो स्थान दिया कि नाहीं हो ।''

अब तूं हीं बता न हमर सर केतना शर्म से झूक जात है ?

हम ई कह के टाल देत है कि अवस्थीआ भईया का पास ईतना न जिआदा लेटर जात है कि विचारा पढ़ने का भी समय नहीं पावत है । हम त अभी २-४ बार से हीं लेटरवा देत है । कभी न कभी तो भईआजी छापवे करेंगे । कितने लोग त १०-१० वर्ष से अपनी रचनाएन और कविताएं और व्यंग न जाने का का भेजत है उनका तो छापने का मौका ना मिलत हम कवना खेत का मूली है ।

''अवस्थीआ तो चोटा आदमी है । ई ऊका हीं अपनी कादम्बिनी में सामिल करत जो उकर कवनो न कवनो नाता से संबंधी वा दोस्त वा चिर-परिचित है ।''

का कहें पिआरी हम ईका बहुत खंडन करत है, पर इन सबके आवाज के सामने हमार आवाज ससुरी दव के रही जात है, अब तूं हीं बता ई सब सून के का हमके अच्छा लगत है ''ना रे कादम्बनीआ ना बहुर दुःख होत है रे ।'' सब सुनना पड़त है रे सब सुनना पड़त है ।

मेरी जान, तोसे बस इतने रिक्वेस्ट है कि उनका थोड़ा समझावो और कहो— 'हमरी ईज्जतवा का तो कवनो बात नाहीं करता हमका तो बेइज्जती सहने की आदत हो गयी है । उनसे कहो अपनी इज्जतवा का खिआल रखें । काहें का मुफ़ में बर्बाद करत है ।

कादम्बनी अंत मा अब का लिखे । अवस्थीआ भईळा को 'महापंडित राहूल सांकृत्यायन पुरस्कार' मिला है ई जान का बहुत खुशी हुई, ऊनको हमारा धन्यवाद बोलना ।

एक वादा तोरा से 'पिआरी', लेकिन अधूरा । ई बार हम कोशिश करेंगे तोका शहर में ही मिलने का और हमर लेटरवा अपने ऊ अंक में सामिल करा के लावोगी तो तोका हम 'दिलवाले दूल्हनिया....'' दिखावेंगे ई वादा है हमर तोरा से—

तोहार, पिआर

— राजेशजी

बसतपुर, परसागढ़ सारण (बिहार) ८४१२२०

प्रोत्साहन पुरस्कार-२

जीरादेई की उपेक्षा

नववर्षांक में देशरत्न राजेन्द्र बाबू के निवास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ग्राम जीरादेई की अवस्था पर अशोक सुमन का आलेख सरकारी और गैर-सरकारी दोनों स्तरों पर की गयी उपेक्षा के ज्वलंत दृष्टांत की ओर इंगित करता है ।

जीरादेई का गंवई गांव और बिहार प्रदेश को यह विशिष्ट गौरव प्राप्त है कि उसने भारतीय गणतंत्र को उसका पहला राष्ट्रपति दिया जो भारतीय जनमानस का सच्चे अर्थों में प्रतिनिधि था, सरल, विद्वान और अजातशत्रु । अगर केंद्र और प्रदेश की क्रमागत सरकारें बिहार के इस गौरवशाली सपूत के स्मृति धरोहर को उनके निधन के तीस-बत्तीस वर्षों की अवधि में संभालकर नहीं रख सकी है तो इन राष्ट्रीय तीर्थों के संरक्षण, संधारण और विकास के लिए स्वैच्छिक संस्थाएं भी तो आगे नहीं आ रही हैं ।

देश अवगत है कि संपूर्ण देश के प्रति व्यक्ति मात्र एक रुपये की सहयोग राशि से स्वामी विवेकानंद का अनुपम 'रॉक मेमोरियल' बना है । ऐसे राष्ट्रीय नेताओं के स्मारक इसी प्रकार बनने भी चाहिए जिसमें देश की संपूर्ण जनता अपनी सहभागिता का अहसास कर सके । क्योंकि, देखा गया है कि राष्ट्रीय स्मारकों का निर्माण और संरक्षण भी सरकारी स्तर पर उससे होनेवाले राजनीतिक लाभ के दृष्टिकोण से ही होता है ।

अंडमान की पोर्टब्लेयर स्थित सेल्यूलर जेल भी हमारे स्वातंत्र्य सैनिकों की स्मृति में राष्ट्रीय स्मारक घोषित है, आजादी के चालीस वर्षों के बाद ही सही सरकार का ध्यान इस ओर तो गया । परंतु इस भवन के बचे हुए तीन 'विंग' में से एक का उपयोग आज भी सामान्य जेल की तरह हो रहा है जो दुःखद है । कादम्बिनी ने जीरादेई पर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित कर सांस्कृतिक चेतना के अपने दायित्व का प्रशंसनीय अनुपालन किया है ।

— मोहन कुमार सरकार

— भागलपुर

कालजयी काल-चिंतन

मेरा परिवार कादम्बिनी को पिछले १५ वर्षों से पढ़ रहा है । इस पत्रिका से हमें काफी ज्ञानवर्द्धक बातें सीखने को मिली हैं । मेरी कम पढी-लिखी पत्नी को भी इतना अभ्यास हो गया है कि वह किसी भी विषय पर अच्छे-अच्छों की बोलती बंद कर देती है । यह कादम्बिनी का ही कमाल है । वह आपसे मिलना भी चाहती है । उसको आपका काल-चिंतन बहुत अच्छा लगता है ।

आज (६-२-९६) फरवरी १९९६ का अंक मिला । मंजू देवी का साहित्यिक लेख, 'कुम्हार की लड़की ने रामायण लिखी' शोध कार्य करके बहुत अच्छा कार्य किया है । एक तो नारी, जिसने सर्वप्रथम रामायण लिखी, दूसरा कुम्हार की लड़की ने रामायण लिखी और ऐसे समाज को झकझोरा जिसने उसे हीन भावना से देखा , परंतु विद्वान तो किसी भी जाति में हो सकता है । मंजू देवी को उनके लेख पर बधाई ।

—डी.आर. चौधरी

न.स.क.म.लि.,

नगीना, जिला-बिजनौर ।

(आपकी पत्नी का हमारे कार्यालय में स्वागत है ।)

सं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यामाचरण दुबे नहीं रहे

प्रख्यात समाजशास्त्री और लेखक श्यामाचरण दुबे की चार फरवरी, ९६ को दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गयी ।

प्रोफेसर दुबे ७३ वर्ष के थे । उनके परिवार में उनकी पत्नी प्रोफेसर लीला दूबे के अलावा दो पुत्र और एक पुत्र वधु है ।

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित प्रोफेसर दुबे ने हिंदी और अंगरेजी में अनेक पुस्तकें लिखीं तथा कई अन्य भाषाओं में उनका अनुवाद किया ।

प्रोफेसर दुबे को १९९३ में भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी पुरस्कार और इंदिरा गांधी व्याख्यान पुरस्कार, १९७६ में पश्चिम बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी के एस. सी. राय स्वर्ण पदक पुरस्कार, १९८७ में काशी विद्यापीठ के 'डॉक्टर ऑव लेटर्स' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

इसके पूर्व १९४३ में उन्हें 'वर्ल्ड पॉलिटिक्स गोल्ड मैडल' पुरस्कार से भी विभूषित किया गया था । १९८४ में उन्हें कानपुर विश्वविद्यालय ने 'डॉक्टर ऑव लेटर्स' की मानद उपाधि से सम्मानित किया था ।

उनके लेखन कार्यों में १९५५ में 'दि इंडियन विलेज', १९५८ में 'इंडियाज चेंजिंग विलेज', 'ह्यूमन फैक्टर्स इन कम्युनिटी डेवलपमेंट' नामक पुस्तकें प्रमुख थीं । उन्होंने देश के आदिवासियों पर भी अनेक पुस्तकें लिखीं । कादम्बिनी परिवार की ओर से श्रद्धांजलि ।सं.

कद लम्बा कीजिये !!

छोटा कद अब तक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद किसी कारण हो, अब 10 से 40 वर्ष तक की आयु के बच्चे, स्त्री, पुरुष हमारी दवा P.H.C. द्वारा 2 से 10 सै. मी. तक कद लम्बा करें। एक माह की दवा का मूल्य 125 रुपये डाक खर्च 25 रुपये अलग। जल्द लाभ के लिए P.H. Gold एक माह का ईलाज 450/- डा. खं. अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, विवाह-शादी, प्राईवेट, सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता है। किसी तरह के व्यायाम की जरुरत नहीं। कोई SIDE EFFECT नहीं। गारंटी :- पूरे कोर्स के बाद परिवर्तन न हो तो आधा मूल्य वापस।

ताकत बढ़ायें शान से जियें

बचपन की गलतियों या उम्र की अधिकता के कारण कमजोर पड़ चुकी नसों में फिर से नयी ताकत, नया जोश प्राप्त करें। अच्छा खाते सेहत न बनना, दुबले पतले कमजोर, मोटे तगड़े बनें। कुछ ही दिनों में 7-8 किलो वजन बढ़ायें। हर आयु में मर्दाना कमजोरी खत्म करें। जीवन साथी के सामने शर्मिन्दा न हो। बेकसूर जीवन साथी को घुट-घुट कर जीनें या गलत रास्ते जाने के लिए मजबूर मत करें। ताकत का खजाना भरें, विवाहित जीवन का भरपूर आनंद लें। आयुर्वेद ईलाज करवायें। देर से जीवन भर पछताना पड़ सकता है। सादा ईलाज, 200/- रु., दूगनी ताकत 350/- रु., तीन गुनी ताकत 500/-, बादशाही ईलाज 1700/- रु.। विज्ञापन दो तीन बार पढ़ें। बेतुके सवाल मत पूछिये।

विद्यार्थियों के लिये वरदान

दवा M.P. विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन लगाती है. दिमागी परेशानी दूर कर, परीक्षा के डर को समाप्त करती है. एक बार पढ़ी बात जिन्दगी भर याद रहेगी. दिमागी काम करने वाले विद्यार्थी, प्रोफेसर, कलर्क, वकील, जजों तक लाखों लोगों ने लाभ उठाया है. 30 दिन का ईलाज 180/- रुपये।

नाक के आपरेशन से डरें पुराना जुकाम बिगड़ कर दमा बन जाता है, नाक का बंद रहना, मस्सा या हड्डी का बढ़ जाना, लगातार छीकें, दिमाग से रेशा गिरना, गला खराब होना। 30 दिन का ईलाज 180/- रु। आज ही पत्र लिखकर घर बैठे मंगवायें। इतवार छुट्टी, कोई ब्रांच नहीं।

मेहरा क्लीनिक Code No. 450 J.K
गैस एजन्सी के सामने, इस्लामाबाद, अमृतसर-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

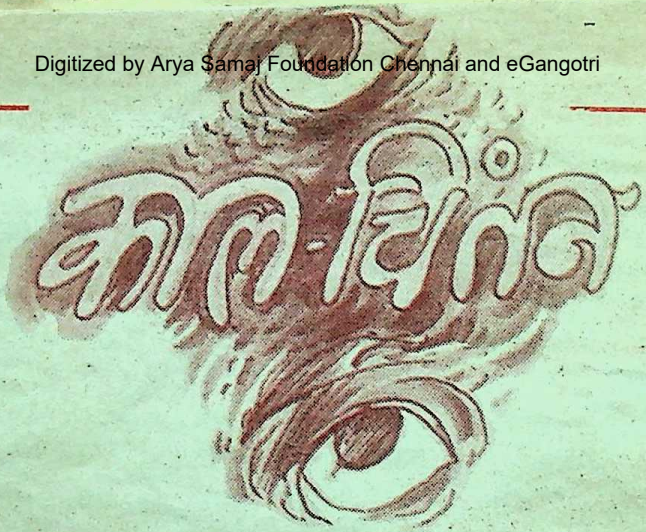

— कालखंड के हम विभीषण युग से गुजर रहे हैं। इतिहास के पृष्ठों ने यह अनुमोदित कर दिया है कि इनके पीछे स्वार्थों से निहित कितने वीभत्स समायोग थे, जिन्होंने व्यक्ति और परिस्थितियों को जन्म दिया।

□

— इतिहास अपने को दोहराता है।

— इस दोहराते हुए इतिहास का मैं, न परीक्षक हूं, न दिव्यदृष्टा और न आध्यात्मिकता के मानदंडों का परम पारखी।

— मैं केवल दृष्टि हूं।

— माली हूं मैं : मन से संरक्षणा के लिए अपने ही पाले-पौधे और मनुष्यता के चरम-लक्ष्य का।

— माली की भूमिका अत्यंत गहन और अंतर्निहित है। वह वृक्षों को प्राणवायु के समन्वय से अमरत्व दे सकता है; वही माली प्राणवायु की उपेक्षा कर एक नंगे—ठूंठ में बदल सकता है।

— माली हूं मैं स्वीकार्य के बाद भी सामर्थ्यहीन हूं कि अवयव के वे सभी आयाम जुटा सकूं जो सत्य की कसौटी पर खरे उतरें !

— अभी तक इतना अवश-विवश रहा हो कोई, शायद नहीं !

□

— संदर्भों में पहचान के लिए आवश्यक है यह समझना कि वृक्ष का धर्म पनपते हुए नाजुक पौधे से उभरकर विशाल होना, पुष्पाच्छादित होकर अपनी अस्मिता को अर्थ देना और फिर फल के रूप में अपनी प्राथमिक स्थिति में आना ही नहीं है।

— आवश्यक है यह समझना कि वृक्ष का वह निस्तेज फल फिर अंकुरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा और वृक्ष बनेगा उसी प्रक्रिया में ।

— इसी सार्थक अभिव्यक्ति के लिए ही तो प्रणाम करते हैं हम प्रकृति के इन जीवों-उपजीवों को जो शेष और निःशेष के बीज अपनी पहचान छोड़ने में कायरता का परिचय नहीं देते ।

- वे विभीषण नहीं हैं ।
- वे अपने पुरोवाक् अस्तित्त्व का स्वामित्व स्थापित करते हैं ।
- वे सत्य की प्रतिष्ठा को स्वीकारते हैं ।
- वे स्वामित्व की सत्ता को पहचानते हैं ।

□

— स्थिति यह चिंतनीय ही नहीं, विभीषिका की है । यहां दर्शन के सभी सम्यक् आयाम निस्तेज हो जाते हैं ।

— शेष रहते हैं प्रार्थना के स्वर ।

— मौन प्रार्थना की आत्मा और विश्वास के अटल चरम केंद्र जो अयाचित उद्घोषित करते हैं कि विगत वर्तमान नहीं है तो वर्तमान भी भविष्य नहीं हो सकता ।

— समय के चक्रवात में ग्रह-नक्षत्र ही नहीं घूमते, मानवता का समूचा प्रकरण उसकी परिधि में समाहित होता है ।

— यहीं आकर प्रश्न उठते हैं आस्तिक और नास्तिक प्रतिबिंब के ।

— रखता है जो विश्वास, जीता है उसके साथ, वह आस्तिक है । अपने आपसे जिसका विश्वास उठ जाता है, वह नास्तिक है ।

— आस्था किसी विक्रयालय या पूजाघरों में नहीं मिलती ।

— अनास्था का व्यक्तित्व संदिग्ध घेरों में आवृत्त नहीं होता, क्योंकि अनास्था भी एक सोच है ।

— सोच है आस्था है, सोच अनास्था है । तब प्रतिफल यह हुआ कि सोच ही पहचान है ।

— पहचान के बिना कोई संज्ञा नहीं ठहरती ।

— पहचानिए अपने आपको

— पहचानिए अपने परिवेश को

— पहचानिए चक्र-कुचक्र के बीच चलते हुए उस पृथ्वी को, जो जानते हुए भी कि वह निरंतन गतिमान है, हम स्वीकारने में हिचकते हैं ।

— पहचान धर्म है : मनुष्य का, आत्मा का, आत्मा के अभिषेक का और समस्त सार्थक और निरर्थक क्रिया-कलापों का ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

□

— आत्मा काषाय के एक तंत्र से आवृत्त है ।

— काषाम के वलय के ऊपर अध्यवसाय के तंत्र उठते हैं । वहीं से संक्लेष के झरने बहते हैं ।

— झरने निरक्षर हैं : समय और मनुष्य चेतना की परिधि उन्हें प्रवाहित नहीं करती ।

— व्यक्ति जब मूर्च्छा में होगा, तो संक्लेश के सागर से तरंगें उठेंगी । वह जब चैतन्य होगा, तब वह सम्यक् मनःस्थिति के कार्य करेगा— शांत होगा या शून्य होगा क्षणिकता में ।

— चैतन्य यानी चेतना मनुष्य और ब्रह्मांड को समन्वय की उस महीनतम तरलता में उतारती है जो मात्र एक ही चिंतन का अभिषेक करती है :

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया ।

— चेतना मनुष्य की अपनी आत्मा की पहचान तो कराती ही है, वह दूसरी आत्माओं को भी अपने साथ जोड़कर साथ चलने का संदेश देती है ।

— चेतना जीवन मूल्यों से प्रस्फुटित होती है ।

— जीवन के मूल्य कभी बाहर से नहीं आते, वे वहीं से प्रकट होते हैं, जहां छिपे होते हैं ।

— नहीं पहचानते जो छिपे हुए जीवन मूल्यों को, वे हताशा और निराशा का शिकार बनते हैं ।

— इसीलिए तो पहले ही स्पष्ट किया है हमने कि अपनी पहचान जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है । अपने को पहचानने के बाद ही दूसरों की पहचान की जा सकती है ।

— दूसरों की पहचान का मानदंड जो नहीं समझते, वे अपनी पहचान से भी अपरिचित हो जाते हैं ।

— अपनी पहचान से अपरिचित व्यक्ति मनुष्य-धर्म को लज्जित करता है ।

— लज्जा को पहचान लें, तो आचरण सुधर जाएंगे । हमारी विभीषिका यह है कि हम लज्जा को स्वीकारते ही नहीं—एक संज्ञा के रूप में या विशेषण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप में ।

— पहचान के बिना वागर्थ अधूरा है ।

— पहचान से ही सम्यक् और समुच्चय का बोध होता है ।

— पहचान सुरक्षा कवच है ।

— अपरिचितों के दायरों में मनुष्य का अस्तित्व चींटियों और कीड़ों से कहां कम है !

— समय की शिलाओं में यदि परिचय और अपरिचय के अभिलेख लिखे जा सकें, तो काल-खंड की भूमिका सीमित हो जाएगी ।

— स्थिति तो यह है कि खंड-खंड में विभाजित हम काल-खंड के कांच के टुकड़े बन गये हैं कि तरसकर सोचते हैं, काश ! हीरे की एक कनी भी हो सकते ।

— हीरे की कनी और कांच के व्यापक आयामों में बहुत अंतर नहीं है; लेकिन जब वे एक-दूसरे का साथ छोड़ देते हैं, तो न दृष्टि काम देती है, न काम देता है मनुष्य का माली मन और न काम देता है खंड-विखंडों में विभाजित शक्तियों और परिस्थितियों के साथ संलाप करना, एकता के तार जोड़ना अथवा भटकते हुए आयामों को मिलाने का उपक्रम करना ।

□

— गतिमान हैं हम काल-खंड के विभीषण युग से— पहचान नहीं है यहां हीरे की या कांच की ।

— स्वार्थों के जंगल में विस्फोटकों के बीच न शेर सुरक्षित हैं और न गौरैया या खंज़न नयन का उपादेय पक्षी ।

— हवाएं जहां दूषित हों, वहां न शहरों की सीमाएं हैं, न गांवों की और न वन-प्रांतरों की ।

— एक विषधर सभी को आक्रांत कर गया हो, तो अंतर खोजने का उपक्रम एक असफल यात्रा का प्रथम-चरण ही तो होगा ।

□

— विश्लेषणों के बाद इतिहास को कलंकित कर अपने को विरक्त करना मेरे लिए संभव नहीं है ।

— दोषी हैं हम, हमारे अवयव, हमारे क्रिया-कलाप, हमारी विलुप्त चेतना और हमारा समय । तब काल-खंड को दोष देना अभीष्ट नहीं है ।

रजेन मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२वां विश्व पुस्तक मेला

खराब मौसम के बावजूद विश्व पुस्तक मेला चहल-पहल के साथ समाप्त हो गया। मेले में सबसे ज्यादा बिक्री रविवार, जो कि अंतिम दिन था, उस दिन हुई। यह बारहवां पुस्तक मेला था और उसमें ११५० प्रकाशकों ने भाग लिया। इसके पहले १९९४ में जो पुस्तक मेला हुआ था, उसमें ९८४ प्रकाशक थे। इस मेले की एक विशेषता और भी थी। हुआ यह कि इसमें दक्षिण-पूर्वी देशों और सार्क देशों के प्रकाशकों और अतिथियों को भी आमंत्रित किया गया था।

पुस्तक मेले के दौरान कई गोष्ठियां हुईं, जिनमें कॉपी राइट से संबंधित चर्चा, कागज की बढ़ती हुई कीमतों पर चिंता और भारतीय भाषाओं के परस्पर और अंगरेजी में अनुवाद की आवश्यकता अधिक महत्त्वपूर्ण थीं।

इस पुस्तक मेले की एक और विशेषता यह थी कि किसी 'माननीय राजनीतिज्ञ' का प्रवेश नहीं था। इसलिए सारे काम बिना सुरक्षा प्रबंध के सुव्यवस्थित ढंग से हो गये। वैसे भी पुस्तकों की दुनिया से राजनेता दूर रहें, तो अच्छा ही है। मेले के इस अवसर पर पाकिस्तान के मशहूर शायर डॉ. फराज अहमद का आना सबसे बड़ी उपलब्धि थी। डॉ. फराज अहमद से ७-८ दिन खासी बातें हुईं और लगा कि सभी झगड़ों की जड़ राजनीति है। फराज अहमद में कहीं 'दुश्मन देश' की बू नहीं थी। उन्होंने कई बार कहा कि 'इश्क में गजब का जोश होता है। वह दरअसल ऐसे एटम की तरह है, जिसका सही दिशा में इस्तेमाल अमन और चैन लाता है। गलत इस्तेमाल तबाही और बरबादी का बाइस बनता है। इश्क करनेवाले कभी जुल्म नहीं कर सकते, न वे धोखा दे सकते हैं, क्योंकि वह तो प्यार का खेल है — दो देशों के बीच हो या दो दिलों के बीच।'

फराज की चंद पंक्तियां जो मुझे उनके मुंह से सुनने को मिलीं, पेश हैं—

इश्क नहीं किया उसने कुछ नहीं किया
चलो ये इश्क नहीं चाहने की आदत है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करें हमें एक-दूसरे की आदत है
सुना है लोग उसे आंख भर के देखते हैं ।
उसके शहर में कुछ दिन ठहरकर देखते हैं
अब उनके शहर में ठहरें के कूच कर जाएं
फराज आओ सितारे सफर के देखते हैं

उनकी गजल की इन लाइनों पर काफी दाद मिली ।

मुंसिफ हो अगर तुम तो कब इंसाफ करोगे
मुजरिम हैं अगर हम तो सजा क्यों नहीं देते ।

ऐसे खुले माहौल में देशों के रिश्ते बनें, तो अमन कायम हो सकता है ।

अब यह मत पूछिए कि विश्व पुस्तक मेले में कितनी पुस्तकें बिकीं और किस तरह की पुस्तकें बिकीं । पुस्तकों के मूल्य इतने अधिक हैं कि बिकती तो सस्ती पुस्तकें ही हैं या धार्मिक पुस्तकें । एक हजार पृष्ठ की बाइबिल १२ रुपये में यदि मिलती है, तो शायद उसे रद्दी में बेचने में और ज्यादा पैसे मिलते । जो हो, पुस्तकों के शौकीनों को किस्म-किस्म की मिठाई की तरह कई किस्म की पुस्तकें देखने को मिलीं, यही क्या कम है !

पत्नियों की दृष्टि में सारे पति बेकार हैं

लिंडा सोनरांग लंदन की एक लेखिका हैं । उनकी एक पुस्तक अचानक मेरे हाथ लगी— 'इन साइड मैरिज' अर्थात शादी का खुलासा क्या है ? यह पुस्तक ३०० विवाहित जोड़ों की पत्नियों से बात करके लिखी गयी है । किसी भी पत्नी ने अपने पति की सराहना नहीं की । एक पत्नी कहती है— 'पति महोदय जूता खोलकर एक तरफ फेंक देते हैं और मोजे दूसरी तरफ । जूता पोंछना होता है, तो पत्नी के पहनने का जो भी कपड़ा हाथ लगे, उसी से पोंछ लेते हैं ।' मुझे यह पढ़कर कई बार देखा हुआ दृश्य याद आया— जब बिहार के मेरे कवि मित्र और कुलपति जैसे ही घर पहुंचते थे, उनकी पत्नी जूते के फीते खोलने के लिए दौड़ पड़ती थी । मैंने कहा था, 'भाभी मेरे जूते कौन खोलेगा ?' तो उनकी लड़की ने आगे बढ़कर कहा था, 'मैं खोलूंगी ।' वह मित्र अब जीवित नहीं हैं, लेकिन उनकी पत्नी और लड़की दोनों जीवित हैं और मैं चिढ़ाने से बाज नहीं आता कि अब तो बहुत बरस बीत गये जूते खोलने की आदत तो कम-से-कम छूट गयी होगी ।'

लिंडा ने बिहार जरूर देखा होगा, क्योंकि उसने अपनी पुस्तक में कुछ और मनोरंजक बातें लिखी हैं । उदाहरण के लिए— खाने के बाद जोर की डकार लेना, आवाज के साथ गैस निकालना, सोते समय खर्राटे भरना, माचिस की तीली से कान खोदना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी कपड़े से नाक साफ करना । लिंडा के इस शोध को प्रामाणिक मान लिया जाए, तो ब्रिटेन के पुरुषों और बिहार के पुरुषों में बहुत अंतर नहीं मिलेगा । यह भी कह सकते हैं कि दुनियाभर की पत्नियां अपने पुरुषों की खामियां ही देखती हैं । लिंडा ने तो पतियों के खाने की शिकायत भी की है । भारत में यदि उसे आजमाया जाए, तो मैंने देखा है कि कई लोग तो इस तेजी से खाना खाते हैं जैसे वे खेल के मैदान में दौड़ लगा रहे हों । कई लोगों की आदत है कि वे चपर-चपर कर खाते हैं । एक बात हो, तो समझ में आती है । इस पूरी पुस्तक में लिंडा को पतियों की ऐसी ही बेतुकी बातें दिखी हैं, तो क्या मान लिया जाए कि अपने को बहुत सभ्य कहलानेवाला अंगरेज पतियों की दहलीज में भारतीयों से अलग नहीं है !

मुझे लगता है कि भारत की किसी लेखिका के लिए शोध का यह अच्छा विषय है ।

अमरीकी राष्ट्रपतियों के प्रेम-प्रसंग

पता नहीं क्यों एक किताब और कुछ इसी तरह की पढ़ने को मिली । उसमें अमरीका के राष्ट्रपतियों के प्रेम-संबंधों की चर्चा थी । पुस्तक का नाम है— 'प्रेसिडेंशियल सेक्स फ्रॉम द फाउंडिंग फादर्स टू बिल क्लिंटन ।' बिल क्लिंटन के प्रेम-प्रसंग जेनिफर फ्लॉवर के साथ खुलेआम रहे हैं । जॉर्ज वाशिंगटन भी बच नहीं सके और मार्था नामक महिला से अंत तक उनका गहरा संबंध रहा । अमरीका के बीसवें राष्ट्रपति जेम्स ए. गैरीफील्ड लूसिया गिलबर्ट कैल हाउस पर बेहद फिदा थे । लूसिया 'न्यूयॉर्क टाइम्स' की रिपोर्टर थी । एक रिपोर्टर के लिए बड़ी-से-बड़ी जगह पहुंचना आसान हो जाता है । राष्ट्रपति वारेन हार्डिंग के अवैध संबंध कैरी फिलिप्स नामक महिला से थे । वह फिलिप्स के पहनावे को बेहद पसंद करते थे । अब रूजवेल्ट की बात ले लीजिए— लिखा है कि रूजबेल्ट के चार विभिन्न महिलाओं से संबंध थे । लकी पेज मरमर से तो तीस वर्षों तक रूजवेल्ट के संबंध रहे थे और उन्हें सहूलियत इसलिए मिल गयी थी, क्योंकि वह उनकी सेक्रेटरी थी ।

अमरीका के पंद्रहवें राष्ट्रपति जेम्स बूचेनन कहने के लिए तो अविवाहित थे, लेकिन उनके संबंध विलियम रूपस किंग से जग-जाहिर थे । रूपस उपराष्ट्रपति थी । जॉन एफ. केनेडी के बारे में तो कहा जाता है कि कोई महिला उनके सामने न आये, तो ही ठीक है, क्योंकि वह तो अपना काम भी छोड़ सकते थे और उस महिला के पीछे भाग सकते थे । कैनेडी ने अपने अवैध संबंधों के मामले में छिपाने की कभी परवाह नहीं की और धड़ल्ले से वह प्रेम संबंध बनाते गये ।

राष्ट्रपति निक्सन के संबंध में कहा जाता है कि वह अपनी पत्नी के प्रति पूरी तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वफादार थे, क्योंकि उनकी घनिष्ठता बेब रेबोजों के साथ थी । जो भी हो, हैगुड की यह पुस्तक अमरीकी राष्ट्रपतियों का खासा परदाफाश करती है, लेकिन यह मानकर संतोष कर लेना चाहिए, 'इश्क जोर नहीं है गालिब ।' दुनिया का कोई आदमी हो या कोई औरत हो, इश्क की दुनिया में उसी तरह रंग जाते हैं जैसे होली के दिनों में बढ़िया कपड़े भी रंगे जा सकते हैं ।

नामवर सिंह . . .

माधवराव सिंधिया जाते-जाते राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता से नामवर सिंह की दादागिरी समाप्त कर गये । इससे मुझे सुख मिला हो, ऐसी बात नहीं है । आखिर नामवर सिंह मेरे दोस्त तो हैं ही । आश्चर्य तो यह हुआ कि खरीद की सूची से उन्होंने मेरी पुस्तक को भी 'क्रॉस' कर दिया । मैं अपनी बात ही क्यों कहूं, निर्मल वर्मा, शिवप्रसाद सिंह, महीपसिंह, प्रदीप पंत और ऐसे न जाने कितने नाम हैं, जिनकी पुस्तकें बेकार समझी गयीं ।

केंद्रीय पुस्तक चयन की बाइसवीं बैठक में अस्वीकृत की गयी पुस्तकों की एक सूची मेरे हाथ लग ही गयी । यह गोपनीय दस्तावेज है, लेकिन संपादक की टेबल पर गोपनीय दस्तावेज ही तो आते हैं, वरना हवाला कांड की सारी रिपोर्ट रोज अखबारों की सुर्खियां न बनती । यहां सिर्फ लिखना यही है कि इस बैठक की अध्यक्षता नामवर सिंह ने की थी और खरीदी गयी पुस्तकों में जो प्रकाशक 'प्रबल भाग्यवान' रहे, उनमें राज कमल, राधाकृष्ण, वाणी, आधार और प्रवीण प्रकाशन के नाम उल्लेखनीय हैं ।

फाड़ने से पहले पढ़ने में कोई हर्ज नहीं

३० जनवरी, १९९६ का एक पत्र ये हमें मिला है । पत्र के लेखक हैं स्वतंत्र कुमार त्रिपाठी, अस्थायी पता— जेल हाउस, जेल रोड, लखनऊ । स्थायी पता — ग्राम एवं पोस्ट रामगढ़ (लम्भुआ), सुलतानपुर (उ.प्र.) ।

निश्चय ही पत्र लेखक जेल में हैं लेकिन वहां से यह नितांत व्यक्तिगत पत्र मुझे भेजा है, जिसे मैं उजागर करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं । पत्र के कुछ अंश देखिए—

विद्यार्थी-जीवन तो शायद नष्ट हो गया है । रोड रोलर का ड्राइवर बनने की सोच रहा हूं लेकिन चलानी नहीं आती । शायद बगैर मार्गदर्शक के रोड रोलर बेकाबू न हो जाए । बहुत उग्र स्वभाव वाला हूं, लोगों के कथनानुसार । अब आप के ऊपर है । पत्र फाड़कर फेंक सकते हैं । अपने कर्मों से हाथ की रेखाएं भी बदली जा सकती हैं क्या ? सुना ऐसा ।

— राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

278832

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति का अभिप्राय न केवल कला, संगीत, नृत्य व नाटक से है, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवन-शैली है । आंशिक रूप से संस्कृति का अभिप्राय है परिष्कार की एक प्रक्रिया । एक कहावत के अनुसार सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है । प्रस्तुत है इस संबंध में श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह का लेख । श्री सिंह न केवल शिक्षाशास्त्री और चिंतक हैं, बल्कि एक कुशल प्रशासक भी हैं । भारतीय प्रशासनिक सेवा के श्री सिंह वर्तमान में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय में सचिव हैं ।

सामाजिक परिवर्तन में संस्कृति और प्रशासन की भूमिका

● बाल्मीकि प्रसाद सिंह (आई. ए. एस.)

संस्कृति शक्ति है । यह उस समग्र पूर्णता की खोज है जो प्रेरणा बनती है, उस सबको जानने की जिसका हमसे सबसे अधिक सरोकार रहता है । प्रत्येक समाज की संस्कृति उसकी कला, दर्शन व धर्म, शिक्षा व विज्ञान, फिल्मों व समाचार-पत्रों, रेडियो व टेलीविजन, सामाजिक रीति-रिवाज, राजनीतिक संस्थाओं व आर्थिक संगठनों के माध्यम से व्यक्त होती है । संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष अथवा समाज की सब प्रकार के काम-धंधों में कार्यकुशलता बढ़ाती है, क्योंकि संस्कृति ही वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति-विशेष व समाज के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है ।

भारतीय संस्कृति

युग-युगांतरों से भारतीय संस्कृति का विकास शनैः-शनैः हुआ । यह एक अविरल धारा है । यह कहानी है— एकता व संश्लेषण, मेल-मिलाप और विकास, मैत्री और समावेश तथा पुरानी परंपराओं को नये मूल्यों में विलय करने की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई लोग भारतीय संस्कृति को हिंदू संस्कृति, इसलामी संस्कृति, ईसाई संस्कृति इत्यादि के रूप में अलग-अलग देखते हैं। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में यह संकुचित दृष्टिकोण है। हमारी संस्कृति की जड़ें आर्यों से लेकर नीग्रोटोज तक और उनसे भी आगे फैली हुई हैं। नीग्रो लोग अफरीका से भारत आये, आदिम जनजाति के लोग आस्ट्रेलियाई प्रजाति के हैं, मंगोल जाति के लोग तिब्बत और चीन से आये तथा द्रविड़ों ने दक्षिण भारत को अपना निवास स्थान बनाया। बहुमत के अनुसार सिंधु, सरस्वती और पंजाब की पांच नदियों द्वारा सिंचित 'सप्त सिंधु' प्रदेश को आर्यों का मूल स्थान माना जाता है जहां से वे पूरब दिशा की ओर बढ़े थे।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिले साक्ष्यों से पता चलता है कि आर्यों ने अनेक जातियों पर विजय प्राप्त की। इनमें कुछ सभ्यताएं काफी विकसित थीं। इस प्रकार कई संस्कृतियों का आपस में विलय हुआ। यह मत सही नहीं है कि केवल आर्यों ने इस क्षेत्र को जीता था। उनके बाद यूनानी, शक और कुषाण आये। गुप्त वंश के राजाओं के शासन-काल के दौरान तथा उनसे पूर्व हूण और उनके बाद तुर्क आये। ऊपरी बर्मा की शान प्रजाति के आहोन लोग असम में आकर बस गये थे। मुसलमानों से पहले भारत में आनेवाले सभी समुदाय तत्कालीन समाज में विलीन हो गये थे और उन्होंने अपनी पहचान खो दी थी। मुसलमानों ने अपनी अलग पहचान बनाये रखी है, लेकिन उस समय मौजूद सांस्कृतिक आचार-व्यवहार ने उन्हें भी प्रभावित किया, जिससे मुसलिम समाज के रीति-रिवाज पर असर पड़ा। यूरोपवासियों के भारत आगमन से भी हमारी सांस्कृतिक विरासत में दूरगामी परिवर्तन हुए। पश्चिम की तकनालॉजी और पूंजी का प्रयोग भारत में होने से भौतिक वस्तुओं में काफी परिवर्तन आया। अंतरराष्ट्रीय चरित्र वाले ईसाई धर्म का भी भारतवासियों से परिचय हुआ। शिक्षा प्रणाली में अंगरेजी की शुरुआत करना एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। यद्यपि इसके पीछे अंगरेजों की शासन व्यवस्था के लिए बोलनेवाले हिंदुस्तानी बाबू तैयार करना था, तथापि इसके दूरगामी परिणाम निकले। अंगरेजी भाषा की पुस्तकों से भारतीयों के मन में वैज्ञानिक उन्नति के साथ-साथ राष्ट्रवाद और लोकतंत्र जैसे नये विचारों का प्रादुर्भाव हुआ।

इस प्रकार भारत के लोग न तो शुद्ध आर्यों के वंशज हैं और न ही द्रविड़ों की संतान। भारतवासी उन सभी महान पुरुषों की संतान हैं जिन्होंने भारत आकर इसे अपना घर बनाया। आज जो कुछ भी भारतीय हैं— चाहे वह विचार हों, शब्द हों या सामाजिक रीति-रिवाज— वह सब इन्हीं का और कई अन्य तत्त्वों का मिश्रण है। भारतीय संस्कृति रासायनिक संरचना की उपज है जिसमें सभी तत्त्वों का थोड़ा-थोड़ा मिश्रण शामिल है।

भारतीय प्रशासन का विकास

प्रशासन के ढांचे को राज्य अक्षुण्ण बनाये रखता है। यह एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से राज्य अपना लक्ष्य प्राप्त करता है। मानवीय संबंधों को व्यवस्थित करनेवाला यह साधन व्यक्ति में विशिष्टता पैदा करता है तथा सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी मदद करता है । समाज को बनानेवाले मनुष्यों पर नियंत्रण रखना, उन्हें निर्देश देना तथा उनके साथ तालमेल रखना प्रशासन के प्रमुख कार्य हैं जिनके माध्यम से सामूहिक उद्देश्य या लक्ष्य प्राप्त किये जाते हैं । प्रशासनिक तंत्र को समाज में व्यवस्था बनाये रखने का उत्तरदायित्व भी सौंपा गया है । सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करने तथा समाज द्वारा स्व-निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नये मूल्य सिद्धांतों को प्रतिपादित करने में प्रशासन की अहम भूमिका है ।

अपने प्रशासनिक इतिहास पर एक नजर

इसका यह अभिप्राय नहीं है कि एकता लाने का कभी प्रयास ही नहीं किया गया । हम पाते हैं कि प्राचीन समय से ही, राज्य और रजवाड़े पूरे देश में एक जैसा शासन लागू करते थे ।

डालने से हमें पता चलता है कि कुछ समय को छोड़कर भारत में कभी भी प्रशासनिक एकता नहीं रही । इसका यह अभिप्राय नहीं है कि एकता लाने का कभी प्रयास नहीं किया गया । हम पाते हैं कि प्राचीन समय से ही, राज्य और रजवाड़े पूरे देश में एक जैसा शासन लागू करते थे । रामायण और महाभारत-जैसे पौराणिक महाकाव्यों में एकीकरण की कथा बयान की गयी है । चंद्रगुप्त उन इतिहास पुरुषों में से एक हैं जो पूरे भारतवर्ष को एकछत्र शासन की डोर में बांधना चाहते थे । अशोक ने इस परंपरा को बरकरार रखा और पहली बार भारत के बहुत बड़े हिस्से को एक शासन सत्ता के आधीन लाया । पठानों और मुगलों के शासन-काल में भी यही पुनरावृत्ति हुई ।

भारत में सांस्कृतिक एकता व विलयीकरण के लिए उसकी भौगोलिक स्थिति उत्तरदायी रही है । भारत की सीमाएं उसको अपने पड़ोसी देशों से अलग-थलग रखती हैं । अपने लंबे इतिहास में देश को विभाजित करने या इसकी सीमाएं बढ़ाने के प्रयास साधारणतया विफल रहे । इसका उदाहरण है— अफगानिस्तान को भारत के साथ मिलाने का आर्यों का प्रयास विफल रहा । इसी प्रकार पंजाब को अफगानिस्तान में शामिल करने का यूनानी प्रयास और कंधार को अपने आधीन बनाये रखने के मौर्य शासकों के प्रयास निष्फल साबित हुए । भारत पर काबुल से शासन करने की महमूद गजनी की महत्त्वाकांक्षा को मुंह की खानी पड़ी । मुगल साम्राज्य की भी कुछ ऐसी ही कहानी है । इसी प्रकार सिंध पर भी कई बार कब्जा हुआ । लेकिन वह फारस का स्थायी भाग कभी नहीं बन सका । भौगोलिक एकता जो कभी टूट नहीं सकी, इतिहास के पन्नों में दर्ज है ।

राजनीतिक उतार-चढ़ाव

वैज्ञानिक साधनों के अभाव के कारण भारत में राजनीतिक उतार-चढ़ाव होते रहे हैं । देश की विशालता और आधुनिक संचार माध्यमों के अभाव के कारण राजनीतिक एकता हासिल करना कठिन था । हमारा अतीत बताता है कि देश में प्रशासनिक एकता के बिना भी सांस्कृतिक एकता बनी रही । यह एक विचित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधाभास है कि सांस्कृतिक एकता की चेतना प्रबल होने के बावजूद लोगों में राजनीतिक एकता का बोध नहीं था । इतिहास गवाह है कि भारतीय संस्कृति सदैव से एकसूत्र में बंधी रही । सामाजिक जीवन की इकाई गांव होता था और आज भी यही है ।

वेदों और उपनिषदों में जिन समुदायों का वर्णन मिलता है वे लोकप्रिय थे और उनका स्वरूप प्रजातांत्रिक था । चुनाव के द्वारा जनता अपने प्रतिनिधि सभाओं में भेजती थी, जो लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करती थीं । इन सभाओं में सदस्यों को अभिव्यक्ति और खुले विचार-विमर्श की स्वतंत्रता थी । ये सभाएं राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक मसलों पर निर्णय लेती थीं । उत्पादन से लेकर उपभोग तक के समस्त आर्थिक कार्य कलाप गांव तक ही सीमित थे । परिवार या समुदाय, कुल या जातिं की सीमाओं को लांघना वर्जित था । इसलिए ऐसी परिस्थितियों ने सामाजिक चेतना लाने में रुकावट डाली । प्राकृतिक शक्तियों पर किसानों को निर्भर रहने के कारण विधाता की मरजी या निष्क्रियता की प्रवृत्ति को जन्म दिया । व्यापार और वाणिज्य में आयी तरक्की के कारण आर्थिक जीवन की इकाई में विस्तार हुआ, जिसके फलस्वरूप आर्थिक प्रशासन की उत्पत्ति हुई । नये विचारों का प्रसार हुआ और नया परिवर्तन अपनाने में तत्परता आयी ।

आजादी मिलने के ब्राद भारत ने समाज की स्थापना और उन्नति का रास्ता पकड़ा है । तब से और अब तक जो संवैधानिक और सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, उनसे स्थिति स्पष्ट हो गयी है । इस समानता के आधार पर समाज की व्यवस्था और आर्थिक विकास की प्रक्रिया तेज करना चाहते हैं ताकि तरक्की को उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सके ।

सामाजिक परिवर्तन में संस्कृति और प्रशासन की भूमिका

सामाजिक परिवर्तन एक व्यापक प्रक्रिया है और इसके पीछे कई कारण हैं । इतिहास से हमें सबक मिला है कि जब कोई समाज अपने साधनों का इस्तेमाल दूरदर्शिता से करता है तब उसमें बदलाव की चेतना अधिक प्रबल हो जाती है । संस्कृति और प्रशासन दोनों ही सामाजिक परिवर्तन के साधन हैं और इनमें सही तालमेल स्थापित होने से अभूतपूर्व ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिसके फलस्वरूप अपेक्षित परिवर्तन की गति में तेजी आती है । आधुनिक युग में बहुत बड़े सामाजिक परिवर्तन हुए, जैसे विदेशी शासन से भारत की आजादी तथा संयुक्त राज्य अमरीका में नागरिक अधिकार आंदोलन । सामाजिक परिवर्तन लाने में नेतृत्व की भूमिका निर्णायक होती है । यह नेतृत्व लोगों व उनके समूहों से ही उभरकर आता है ।

लोकतांत्रिक समाज में राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाने के लिए जहां एक ओर जनता की भागीदारी आवश्यक है वहीं दूसरी ओर इन कार्यक्रमों का वास्तविक संचालन प्रशासन द्वारा किया जाना अपेक्षित है । प्रशासन को प्रयोजनमूलक बनना है ताकि उसमें सामाजिक परिवर्तनों की झलक दिखायी दे और इसके प्रति सदैव संवेदनशील बना रहे । दुर्भाग्य से हमारे प्रशासन का स्वरूप सोपानिक और यथास्थितिमूलक है । इस संबंध में इसको बुद्धिसंगत बनाने के लिए हमें मानवीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतिविधियों में संगति लानी है । स्थापित मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए प्रशासन को अपने ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन लाना होगा । बढ़ रही प्रशासनिक गतिविधियों में सामाजिक परिवर्तन की झलक स्पष्ट दिखायी देती है ।

नया प्रशासनिक आचरण

भारत में एक नया प्रशासनिक आचरण उभर रहा है जो जनता की इच्छा परिलक्षित करने की कोशिश में लगा है और नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए संगठनात्मक दक्षता व संसाधनों का विकास कर रहा है । इस

भारत में एक नया प्रशासनिक आचरण उभर रहा है जो जनता की इच्छा परिलक्षित करने की कोशिश में लगा है और नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए संगठनात्मक दक्षता व संसाधनों का विकास कर रहा है ।

संबंध में हमारा प्रशासन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तंत्र के साथ मिलकर कार्य कर रहा है । एक हद तक प्रशासन इन तंत्रों को प्रभावित कर रहा है और उनसे स्वयं भी प्रभावित हो रहा है । चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए राजनीतिक और प्रशासनिक, दोनों तंत्रों के लिए नये विधान की आवश्यकता है । दुर्भाग्य से सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट के कारण प्रत्येक स्तर पर प्रशासन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल असर पड़ा है । अव्यवस्था, भ्रम, भ्रष्टाचार और आलस्य को बढ़ावा देनेवाली ताकतों के विरुद्ध नये लोक प्रशासन को अंदर से ही रक्षा कवच तैयार करना होगा । नवीन सांस्कृतिक शक्तियां इस काम में सहायता करेंगी ।

संस्कृति का आदान-प्रदान

विश्व में वैज्ञानिक क्रांति को देखते हुए हमारे लिए आवश्यक हो गया है कि हम भी अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों का संचालन वैज्ञानिक तरीकों से करें । युगों पुरानी और श्रमसाध्य कार्य-प्रणाली के स्थान पर नये वैज्ञानिक तरीके अपनाने के बाद ही हम अपने समाज को वैज्ञानिक समाज कह सकते हैं । हजारों वर्षों तक विज्ञान और तकनालॉजी सीमित रहने के कारण एक-दूसरे की संस्कृतियों से कुछ सीखने का अवसर नहीं के बराबर था । लेकिन इसके बावजूद हमारी संस्कृति ने अन्य संस्कृतियों को प्रभावित किया और दूसरी संस्कृतियों के साथ हमारा भी थोड़ा-बहुत आदान-प्रदान हुआ ।

आज विज्ञान और तकनालॉजी ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया को तेज और सरल बना दिया है । आज दुनिया सिमटती जा रही है और प्रत्येक व्यक्ति की दुनिया फैल रही है । हर एक संस्कृति हर दूसरी संस्कृति को प्रभावित कर रही है । ज्ञान की धारा न केवल राज्य अथवा देश की संकीर्णता से मुक्त हुई है बल्कि, इसने जाति, वर्ग और रंगभेद की सीमाओं को भी पार कर दिया है । विश्व में आज दूरदर्शन ऐसी अद्भुत घटना है जो हमें सारी दुनिया का दिग्दर्शन करा रहा है । इसके अलावा विज्ञान ने हमें ऐसी क्षमता भी प्रदान की है जिससे मनुष्य को भूख, दरिद्रता और बीमारी से मुक्ति मिल सकती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें दो राय नहीं कि हम अपने कार्यों में विज्ञान और तकनालॉजी का प्रयोग करके गरीबी हटा सकते हैं और चहुंमुखी उन्नति कर सकते हैं । वैज्ञानिक वातावरण का निर्माण करना इस बात पर निर्भर है कि हम अपने समाज में किस प्रकार के मूल्यों का पोषण और प्रसार कर रहे हैं । विश्व की वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रांतियों का विश्लेषण करने पर सांस्कृतिक मूल्यों और आर्थिक परिवर्तन में परस्पर गहरा संबंध होने का पता चलता है । सांस्कृतिक दृष्टि से स्वीकृत मूल्यों और प्रतीकों ने आर्थिक विकास रूपी बीज के पनपने के लिए खाद का काम किया है ।

सांस्कृतिक चुनौती

जिन विचारधाराओं और संस्थाओं ने जीवन-शैली और आचार-व्यवहार को प्रभावित किया, उनके इतिहास पर नजर डालने से पता चलता है कि जब-जब आर्थिक मसलों ने सांस्कृतिक चुनौती का रूप लिया, तब-तब आर्थिक विकास अधिक आसानी से हासिल हुआ है । इंगलैंड के प्यूरिटन, जापान के समुराई और रूस के बोल्सविक उद्योग-धंधों के नेता के रूप में नहीं उभरे बल्कि, उनकी छवि अपने-अपने राष्ट्र के चहुंमुखी विकास के नये संदेश वाहक के रूप में उभरी । इसी प्रकार का संदेश महात्मा गांधी ने देशवासियों को दिया था । इन सब बातों से यह तथ्य उजागर होता है कि ठोस सांस्कृतिक समर्थन के बिना न तो आर्थिक प्रगति प्राप्त की जा सकती है और न ही सामाजिक असमानताओं को दूर किया जा सकता ।

सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए प्रशासन एक वाहन का काम करता है । अतः उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होता है, जिसकी प्रतिपूर्ति सांस्कृतिक चेतना करती है । सामाजिक और आर्थिक कार्यक्रमों को चलाने का दायित्व प्रशासन के ऊपर है । अतः उसे राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनाये जाने की आवश्यकता है । प्रशासन में मनुष्य की विफलता को केवल नियम व विनिमय से नहीं रोका जा सकता । यह आम धारणा है कि प्रशासन की विफलता के पीछे भ्रष्टाचार या ढिलाई नहीं होती, बल्कि जागरूकता, सोच और निष्ठा की कमी होती है । प्रशासन के विभिन्न अंगों को सामाजिक लक्ष्य प्राप्त करने के प्रति अधिक जागरूक होना चाहिए । प्रशासकीय सुधारों की बौछार करने की अपेक्षा उन्हें जनता की आवश्यकताओं के प्रति अधिक क्रियाशील बनाने की जरूरत है ।

— सचिव, संस्कृति विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, कमरा नं. ५०२-सी
नयी दिल्ली-११०००१

विशाल प्रतिमा

हाल ही में जापान में बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा बनायी गयी है । यह प्रतिमा लेटी हुई मुद्रा में है । इसकी लंबाई ४१ मीटर तथा चौड़ाई १२ मीटर है । तह अमरीका स्थित स्वाधीनता देवी की प्रतिमा से भी बढ़ी है । • पुष्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरक प्रसंग

किसी भी प्राचीन हिंदू धर्म को ले लीजिए, आपको उत्तर दिशा की प्रशंसा और दक्षिण दिशा की निंदा मिलेगी । उत्तर में देवता हैं, उत्तर में स्वर्ग है, उत्तर में मोक्ष है, उत्तरायण में मृत्यु से स्वर्ग प्राप्त होता है, उत्तर में अमृत है, इत्यादि ।

यह सब क्यों है ? ऐतिहासकों का विचार है कि आर्य उत्तर से आये और इसीलिए इस दिशा को इतना महत्त्व दिया गया । मेरु पर्वत ही इनका आदि निवास-स्थान है । प्राचीन ग्रंथों से पता चलता है कि मेरु के आगे नहीं जाया जा सकता । उसी पर्वत पर सूर्य अस्त होता है ।

('भाषा साहित्य और देश'—हजारीप्रसाद द्विवेदी)

मनुष्य को सुखी होना है, शांति से जीना है तो उसे हिंसा और परिग्रह छोड़ना होगा । जब तक हिंसा और परिग्रह है, तब तक संघर्ष है । जब तक संघर्ष है, तब तक अशांति है । आग में कभी कमल नहीं खिलते । वहां तो अंगारे मिलते हैं । हिंसा और परिग्रह की आग को बुझाने के उपाय हैं संयम और आत्मानुशासन । मनुष्य की जीवन-शैली में इन तत्त्वों की प्रधानता हो जाए तो समस्या का सहज समाधान हो जाए ।

यह एक सच्चाई है कि सब लोग अहिंसक नहीं हो सकते, अपरिग्रही नहीं हो सकते । जीवन चलाने के लिए हिंसा और परिग्रह का सहारा लेना पड़ता है । किंतु अनावश्यक हिंसा और अतिसंग्रह जीवन की अनिवार्यता नहीं है । भगवान महावीर ने अल्पारंभ और अल्परिग्रह के सूत्र देकर एक ऐसा मार्ग प्रशस्त कर दिया, जिस पर कोई भी चल सकता है । इस मार्ग पर चलने की अर्हता प्राप्त करने के लिए क्रूरता और अत्यधिक आसक्ति को छोड़ना जरूरी है । यदि मनुष्य को सुख पाना है, शांति से जीना है, युद्ध से बचना है और पर्यावरण को शुद्ध रखना है तो हिंसा और परिग्रह का अल्पीकरण करना ही होगा, संयम के साथ जीना सीखना होगा ।

(अणुव्रत आचार्य तुलसी)

भगवान बुद्ध को अपना अराध्य देव और परमपूज्य माननेवाले बौद्ध धर्मावलंबी देश जापान के एक बाल विद्यालय में एक बार स्वामी रामतीर्थ ने एक कक्षा के बच्चों से प्रश्न किया, "मैं जानता हूं तुम्हारा देश भारत में जन्मे भगवान बुद्ध को परमपूज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानता है । किंतु वह तो जापानी नहीं थे , विदेशी थे । यदि कल को भगवान बुद्ध पुनः जन्म लेकर और तुम्हारे देश के शत्रुओं के सेनापति बनकर जापान पर आक्रमण कर दें तो बताओ ऐसे धर्म-संकट में तुम क्या करोगे ?''

इस अप्रत्याशित उत्तेजक प्रश्न पर कक्षा के बच्चों की भृकुटियां तन गयीं । मारे क्रोध के बच्चों ने होंठ काट लिए । तब उनमें से सबसे छोटे बच्चे ने क्रोध से कांपते हुए उत्तर दिया, ''यदि भगवान बुद्ध ने हमारी परमप्रिय मातृभूमि पर आक्रमण करने का दुस्साहस किया तो मैं उनसे युद्ध करूंगा ।'' सभी बच्चे एक साथ चीख उठे, ''हमारे देश पर आक्रमण करनेवाला कोई भी हो, कितना भी पूज्य हो, हम उससे युद्ध करेंगे ।''

(संस्मरण—स्वामी रामतीर्थ)

स्वामी विवेकानंद जापान की यात्रा पर थे । एक दिन स्वामीजी बाजार में एक दुकानदार से आम खरीद रहे थे । दुकानदार ने स्वामीजी को कुछ सड़े हुए आम भी दे दिये । स्वामीजी दुकान से आम लेकर चल दिये । वह अभी कुछ दूर ही गये थे कि एक बालक उनके पास आया और बोला, ''उस दुकानदार ने आपको कुछ खराब आम दे दिये हैं । कृपया वे आम आप मुझे दे दें और ये बढ़िया आम आप ले लें । आपको जो असुविधा हुई है, उसके लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूं ।''

स्वामीजी उस बालक से बहुत प्रभावित हुए और बोले, ''बेटा इस उपकार के बदले बताओ मैं तुम्हें क्या दे सकता हूं ?'' बालक बोला, ''यही जब आप अपने देश जाएं तो वहां इस घटना की चर्चा किसी से नहीं करें कि एक जापानी दुकानदार ने मुझे खराब फल दिये ।'' स्वामीजी उस नन्हे बालक की देशभक्ति देखकर दंग रह गये ।

(संस्मरण—स्वामी विवेकानंद)

'मैकवेथ' नाटक के मंचन के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने प्रधानमंत्री राहत कोष से बच्चनजी को १५००० रुपये सहायतार्थ दिये थे । मनोरंजन कर से बचने के लिए यह घोषणा की गयी थी कि इस नाटक की टिकट बिक्री से जितनी भी आय होगी वह प्रधानमंत्री कोष में दे दी जाएगी । अंत में जब हिसाब लगाया गया तो मात्र १००० रुपये बचे जो एक मखमल के बटुए में रखकर 'मैकवेथ' के सबसे अल्पायु अभिनेता के हाथों पंडितजी को तीन मूर्ति भवन में सौंप दिये गये ।

'वाह, खूब अभिवृद्धि की आपने प्रधानमंत्री कोष की, १५००० लेकर और १००० देकर ।' यह कहकर पंडितजी ने सहज मुसकान के साथ यह धनराशि स्वीकार की ।

('दशद्वार से सोपान तक'—डॉ. हरिवंश राय बच्चन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक चिरंतन महक है, मैथिली लोक-गीतों में

● गौरी शंकर नागदंश

यही वर मांगी लेहु
यही वर हे !
ललना है, मांगी लेहु
अयोध्या अइसन राज
बीर लक्षमण देवर हे

इस गीत में अप्रत्यक्ष रूप से कुमारियां लक्षमण-जैसे वीर देवर को मांगकर रामचंद्र-जैसे तेजस्वी पुरुष की कामना करती हैं । इन गीतों में सिर्फ विवाह पूर्व की तरुण-उमंगें ही नहीं,आसन्न-प्रसवा सीता की हृदय द्रावक वेदना भी है । सीता अपने प्रिय पति राम से करुण स्वर में कहती है— अब उनके नैहर में अपना कहलानेवाला कोई नहीं है । फिर भी राम कष्ट-मूर्च्छिता सीता को बीहड़ वन में छोड़ आने के लिए भेज ही देते हैं—

''नया मोरा नईहर में माए
भइयों सहोदर है
प्रभुजी नए रे जनक रिवि बाप
केकरा बल जाउअ हे,''

सिर्फ इतना ही नहीं प्रसवकाल की ओर भी औपचारिकताएं थीं जो सीता को रह-रहकर विचलित कर दे रही थीं ।

''ललना के ही मेरा आगु-पाछु
होयत, के ही रे नार छीलत हे
काने सीता-हकन करे
अँचरे लोर पोछथि हे,

लेकिन सीता का यह विलाप खाली नहीं जाता है । बन की आदिवासी कन्याएं इन पंक्तियों को सुनती ही नहीं, गुनती भी हैं और परिचर्या के बाद वे पुरस्कार मांगने से भी बाज नहीं आतीं ।

ललना हे, हम सीता आगु-पाछु
होयब, हमे नार छिलव हे
ललना हमे लेब सोने के
हँसुलिया हृदय जुरायब हे,

इन गीतों में सिर्फ कॉच-कुआरी सुकुमारियों की मनोहारी आकांक्षा ही नहीं है बल्कि उन व्याहता पत्नियों की विरह-वेदना भी है जिनके पति रोजी-रोटी के लिए परदेश बस गये हैं—

''तलकि-तलकि उठय जियरा
कौना विधि बोधब हे
ललना हमरो बलमु परदेश
उदेश न पावल हे,''

परदेश गया पति तो लौट आता है लेकिन जिन बेटियों की दुनिया दूसरी हो जाती है उनकी माताओं की गंगा-यमुना होती आंखों की पीड़ा भी सुनिए । जिस तरह गौ-दोहन के समय गाय बछिया के लिए हुंकरती है उसी तरह भोजन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय बेटी का अभाव मां को रुलाता है लेकिन हर्षित दामाद तो मुसकराता रहता है—

गैया ज हँकरे दुहान के बेर
बेटी के माए हुकरय रसोइयां के बेर
धियना के कनईत में गंगा
बहिगेल
दमदा के हंसईत में चादरि
उड़ि गलेल,

मिथिला के गीत गानेवाले पुराने पड़ जाते हैं, लेकिन वहां के गीत 'सोहर' की तरह हरदम नये बने रहते हैं। सोहर,'सुघड़' सु-घड़ी का अपभ्रंश है क्योंकि सोहर हमेशा शुभ घड़ी विवाह, पुत्र-जन्म, उपनयन-संस्कार के अवसर पर ही गाये जाते हैं।

ऐसा ही एक दूसरा उदाहरण है, जिसमें मानव प्राणी की कौन कहे पशु-पक्षी भी रोने लगे—

बड़, रे जतन से हम सिया जी
के पौसलौं,
सेहु रघुवंशी ले ले जाय
सुन हे सखिया
राजा ए जनक रोबे अपनी
अटरिया
रानी रौबे रनिवास
सुन हे सखिया
हाथी रौबे, हाय हथिसरवा में
घोड़ा रौबे घोड़सार

—मां सुनयना के इस हृदय-द्रावक विलाप पर सीताजी की सखियां मां सुनयना को समझाती भी हैं—

चुप रहु, चुप रहु मातु
सुनैना,
जग केर एहे व्यवहार

मैथिली के समदाइनी (समाप्ति परक) गीतों से लेकर द्विरागमन आदि के अपने रंग हैं ही, लेकिन नचारी का रंग कुछ भिन्न ही है। इसको गानेवाले खासकर साधु-बंजारें, भिखमंगे और बुबने हुआ करते हैं।

भोला गरीबक दीन
एकटा लोटा छल
बेटा छल तीन
पानी पिबैत काल से हो
लैए छीन
भोला गरीबक दीन

नचारी के अधिकतर गीतों की परिक्रमा शिव के चारों तरफ ही होती है, उनके मुख्य नायक यायावरों के देवता शिव ही हैं—

एक कोला शिव बोअलहिं
आँकि धतूर
एक कोला बोअलहि भांग हे
एक दिन गौरी मनहि-मन सोचथि
कैहन भेल शिव के ग्यान है

दक्षिण बिहार के लोग मिथिलावासियों को आदर से तिरहुतिया भी कहते हैं—

कोकटी धोती पटुआ साग
तिरहुत गीत बड़े अनुराग
भाव सरल गत-तरुणी रूप
एतवै तिरहुत होईथ अनूप

मैथिल लोकगीतों में फागुन भी बड़े करीने से प्रवेश करता है।

सउंसे शहरवा रंग से भरी
केकरा सिरे डारु अबीर

— प्रो. माधुरी सिंह का मकान
शिवपुरी (ए. एन. कॉलेज के पीछे)
पटना-२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुलहनिया का दिल

● प्रेम जनमेजय

दिलवाले दुलहनियां ले जाते हैं परंतु दुलहनिया के दिल को देखने का कोई कष्ट नहीं करता है ।

दिलवाले का दिल डॉलर है और दुलहनिया का दिल बेचारा भारतीय रुपया या रूसी रूबल, जिसका डॉलर के मुकाबले निरंतर अवमूल्यन होता रहता है । डॉलर अंतरराष्ट्रीय दादा का अस्त्र-शस्त्र है तथा रुपया गरीब की जोरू, जो सबकी भाभी होती है । ऐसे में दिलवालों के सामने दुलहनिया कुछ नहीं कर सकती है, तो बेचारे घरवाले क्या करेंगे ?

दिलवाले विश्व-बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष हैं, जो जब उधार देते हैं तो पहली मुलाकात में दुलहनिया को आकर्षित लगते हैं, परंतु जब शादी के बाद दहेज का उधार मांगते हैं तो आत्महत्या के इलावा कोई रास्ता नहीं बचता है । बेचारी उधार खायी दुलहनियां तलाक का शिकार बनती है ।

दिलवाले दुलहनियां ले जाते हैं, अगर दुलहनिया मान जाती है और अगर नहीं मानती है, तो हत्या, बलात्कार और वेश्यालय का एक सिलसिला शुरू हो जाता है उसके लिए । दिलवालों की दुलहनिया तब तक ही दुलहनिया रहती है, जब तक वह बच्चा पैदा करने की मशीन नहीं बनती है, उसके बाद तो दिलवाले दूसरी दुलहनिया की तलाश में निकल जाते हैं ।

अतः हे संपादक ! दिलवाले दुलहनियां जरूर ले जाएं, परंतु दुलहनिया के दिल से न खेलें ।

—७३ साक्षर अपार्टमेंट्स,
ए-३ पश्चिम विहार,
नयी दिल्ली-११००६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका-प्रकाशन

● डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी

अपने संपादन में शीघ्र ही मैं एक पत्रिका निकालने जा रहा हूं—हिंदी में । एक अच्छे-खासे धन-कुबेर ने आजीवन वित्तीय प्रबंध का अनुबंध-पत्र भी हस्ताक्षरित कर दिया है । अनाप-शनाप धन के इस स्वामी के सुदीर्घ जीवन की कामना कर रहा हूं । वैसे संपादक सहित उसका सुदीर्घ जीवन सुनिश्चित है । प्रसार-प्रबंध सहित पूरा संपादकीय विभाग भी अपने तेवर में है ।

पत्रिका का नाम होगा 'सहानुभूति' और उसकी मुख्य प्रकाश्य सामग्री होगी—असफल प्रेम । कराये गये सर्वेक्षण के आधार पर प्रेम की उत्तेजना एक सहजात, विश्वजनीन और सनातन प्रवृत्ति है और निन्यानवे प्रतिशत प्रणय-प्रसंग में असफल होना नियति भी । प्रेम को गहराई से लेते हैं पैसेवाले लोग । वास्तविक नाम के अलावा छद्म नाम से भी रचनाओं के प्रकाशन की व्यवस्था होगी । निस्संदेह जितनी भीड़ रचनाकारों की होगी, उससे अधिक साहस और धैर्य सहेजने के लिए पूरे देश में फैले हिंदी पाठकों की । संपादकीय टिप्पणियों में प्रणय-विफलताओं के कारणों का विशेष उल्लेख होगा, ताकि नये प्रेमी उनकी पुनरावृत्ति कर रात-रातभर करवटें न बदलें और न ही आहें भरें । एक टिप्पणी हमेशा रहेगी कि असफल प्रेमी हताश न हों । वे कैंडे के कवि एवं कलाकार बन सकते हैं । उससे भी पत्रिका को ही अंततोगत्वा लाभ होगा ।

सारे स्तंभों की रूपरेखा भी विलक्षण है । खेल या जीवन की अन्यान्य प्रतियोगिताओं में नीचे के क्रम से पराजितों को विशेष शीर्षक देकर विवरण छापा जाएगा । निश्चित है कि विजेता एक और पराजित अनेक होते हैं । वे 'सहानुभूति' को कंठाभरण बना कर रखेंगे । दूसरी पत्रिकाओं में अस्वीकृत हुई रचनाओं, विशेष रूप से कविताओं को प्रकाशित किया जाएगा । उत्साही नव लेखक इष्ट मित्रों सहित पूरे रिश्तेदारों के लिए पत्रिका के अंक खरीदकर वितरित करेंगे । सिद्ध-प्रसिद्ध रचनाकार तो उपहार में भेजी गयी पत्रिका को खोलकर अपनी रचना तक नहीं पढ़ते । आप मेरा संपादकीय कौशल देखने के लिए तैयार रहें, 'सहानुभूति' आंखें खोलते ही अमरबेल की तरह सर्वत्र छा जाएगी ।

—२, धामावाला बाजार,
पुरानी कोतवाली,
देहरादून ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

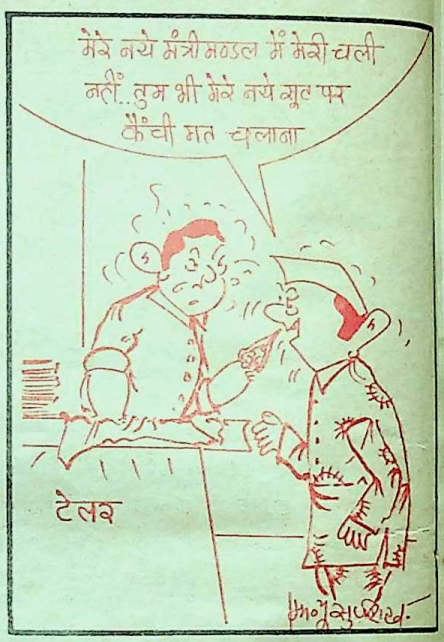

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

होली कीचड़ की !

● पूरन सरमा

कोई जरूरी नहीं कि कीचड़ होली पर ही उछाला जाता है । आजकल देश में बारह महीनों ही परस्पर कीचड़ उछाला जा रहा है । यह हमारी प्रगतिशील नीतियों का ही परिणाम है और कुछ उछालने को नहीं है तो कीचड़ ही उछालिए । वैसे कीचड़ उछालने से लाभ भी अनेक हैं । जिसने कीचड़ उछालने की कला सीख ली समझो वह इस युग में सफलतम व्यक्ति है । उसे कहीं-किसी प्रकार की बाधा नहीं है । बस जिस पर कीचड़ उछाला जा रहा है । उसके थोड़े वेयर अबाउट्स मालूम होने चाहिए । वह आपसे सिर उठाकर बात करने की स्थिति में नहीं रहेगा ।

जो जिस क्षेत्र में है— वह उसी तरह कीचड़ उछाल रहा है । जैसे राजनेता अन्य राजनीतिज्ञों पर, साहित्यकार अन्य रचनाकारों पर तथा समाजसेवी अपने ही समानधर्मी व्यक्ति पर कीचड़ उछालता है । होली हमारा सांस्कृतिक पर्व है । इस पर हम अपनी कीचड़-संस्कृति का ही परिचय नहीं देंगे तो और कब देंगे । युगानुकूल आचरण न करनेवाला मूर्ख माना गया है । इसलिए यह शालीन कृत्य करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए । इस मामले में ज्यादा लिहाज मत बरतिए— कीचड़ उछालने की जंच गयी, उछाल दीजिए । सामनेवाला अपने आप आपसे बात का मूड देखता फिरेगा ।

मैं अपनी ही सुनाऊं— कीचड़ उछालने की मैंने सौगंध खा रखी थी— वर्षों तक पिटता रहा । लोग बात-बात पर धराशायी करते रहे— लेकिन एक दिन कसम तोड़नी ही पड़ी । आज लोग मानते हैं कि यह भी कोई लेखक है । मैंने अपने अखबारों में अन्य उठते हुए साहित्यकारों पर साहित्यिक गाली-गलौच जारी किया तो लोग मेरे लेखन का लोहा मान गये— कहने लगे— साहब क्या बोल्ड राइटर है । किसी से नहीं डरता । सबकी कलई खोल रहा है । यह इमेज तो पाठकों की बनी लेकिन वे लोग जिन पर मैंने टिप्पणियां कीं— वे भी प्रभावित हुए, आये और बोले— दादा, बख्शो हम शरणागत हैं । अब तक हमसे भूल हुई जो तुमको लेखक नहीं माना । सही भी है— वे मुझे लेखक कैसे मानते, मैं तो साहित्यिक रचनाएं लिख रहा था । कीचड़ उछाला— तब जाकर इस क्षेत्र में अपना अधिकार हासिल कर सका । वरना अन्य साहित्यकारों की तरह मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तक इधर-उधर भटकता रहता ।

अरे भाई एक राजनेता की ही बात ले लो । बिचारा जब तक जनसेवा का व्रत रखता है तब तक लोकप्रिय नहीं होता । ज्यों ही कीचड़ उछालो संस्कृति को अपनाया कि लोग जानने लगते हैं । दूसरे अन्य राजनेताओं की कहानियां झूठ-मूठ गढ़कर आम सभाओं में कहने लगे कि जनता ने उन्हें सच्चा नेता माना । किसी भी औरत से किसी भी नेता के गलत संबंध होने की बात उछाली कि आप हो गये रातोंरात हीरो । इधर-उधर से गलत-सलत फोटो मिलाकर अखबारों को जारी कर दो लोग आपकी स्कूप शक्ति से स्मृत हो जाएंगे । चटपटी बातों के मध्य किसी पर करोड़ों रुपयों का घोटाला करने का आरोप लगा दो— भाई-भतीजाबाद का दोष मढ़ दो— अथवा सरकारी साधनों के दुरुपयोग का या रिश्वतखोरी में लिप्त भ्रष्टाचार की कहानी कह दो— जनता आपको दाद देगी— जीवन खुशहाल होगा और आम चुनावों में आपको विजय-श्री प्राप्त होगी । मंत्रीपद पाना है तो दल बदल लो और सत्तारूढ़ दल से जा मिलो, तो यह कमाल है केवल कीचड़ उछालने की कला का । इसमें झूठ बोलना नितांत आवश्यक है । आप सोचते होंगे कि किसी के बारे में कोई जानकारी नहीं हो तो क्या बोलें— सीधी-सी बात है कह दीजिए फलां योजना में ठेकेदार से मिलकर पांच लाख डकार गये । हालांकि आपने यों ही कहा है, लेकिन बात सही है । पांच नहीं तो तीन लाख तो हजम कर ही गये हैं ।

इसलिए डरने की आवश्यकता नहीं है । आरोप सदैव सत्य होते हैं । यह न्यायपालिका

सदैव प्रतिपादित करती रही है । सत्ता में हैं तो आपका झूठा आरोप सत्य साबित करने की जिम्मेदारी भी न्यायपालिका की है । विपक्षियों को परास्त सदैव इसी तरह किया जाता है । इसलिए प्यारे बंधुओ, कीचड़ उछालने से यदि कोई लाभ होता है तो उसे करने में हर्ज क्या है, यह भी जान लो कीचड़ आप-जैसा योद्धा ही उछाल सकता है । जिसने कीचड़ नहीं उछाला या कीचड़ में नहीं सना, वह नेता हो भी नहीं सकता । कई बार थूक ऊपर थूकने पर आ गिरता है । तो क्या हुआ, पोंछ लीजिए, आजकल तो थूक कर चाटने का फैशन और मौसम दोनों हैं ।

हर क्षेत्र में स्थान बनाये रखने के लिए यह नायाब हथियार काम में लेना उपयुक्त है । अभिनेता-अपने समकालीन अभिनेताओं की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर क्षेत्र में स्थान बनाये रखने के लिए यह नायाब हथियार काम में लेना उपयुक्त है। अभिनेता-अपने समकालीन अभिनेताओं की सदैव आलोचना करेगा तो पत्रकार अपने अलावा किसी को पत्रकार मानेगा ही नहीं। लेखक कहता है मैं ही हूं बाकी तो सब घास खोद रहे हैं। नेता कहता है कि सच्चा जनसेवक वही है तथा वही राष्ट्र की बागडोर संभाल सकता है।

सदैव आलोचना करेगा तो पत्रकार अपने अलावा किसी को पत्रकार मानेगा ही नहीं। लेखक कहता है मैं ही हूं बाकी तो सब घास खोद रहे हैं। नेता कहता है कि सच्चा जनसेवक वही है तथा वही राष्ट्र की बागडोर संभाल सकता है वरना देश रसातल में चला जाए। तो मेरे यारों, यह सब देन कीचड़ उछाल संस्कृति की है। यह विश्वास उनमें इसी कला के बूते पर जम पाया है।

कोई बात नहीं, आज बारह महीनों कीचड़ नहीं उछाल सकते— क्योंकि हर आदमी राजनेता हो भी नहीं सकता— लेकिन जिजीविषा यह कहती है कि वर्षभर में एक त्यौहार होली का इसलिए ही आता है कि शरीफ लोग भी कीचड़ उछालकर अपने मन की साध पूरी कर लें। इसलिए बंधुओ— यह कीचड़ उछालने का उपर्युक्त मौसम है। पड़ौसी पर कीचड़ उछालिए— प्रेमिका के माता-पिता पर कीचड़ फेंकिए— मौका लगे तो अपने अफसर की कलई खोलिए— कुल मिलाकर अपना जो भी प्रतिद्वंद्वी है, उस पर कीचड़ की परतें भर-भरकर फेंकिए— क्योंकि रंग फेंकने की क्षमताएं समाप्त हो गयी हैं।

इसलिए मुफ़्त का यह गहरा रंग— फेंकिए ताकि आपका निशाना पूरा हो तथा रंग की फिजूलखर्ची से बच सकें। होली फिर पूरे एक वर्ष बाद आएगी— मेरे लिए तो अच्छा रहता यदि दीवाली के एवज होली दो-दो हो जातीं, तो कम से कम कीचड़ उछालने का मौका दो बार तो मिलता। शरीफ आदमी हूं न कीचड़ उछालने के लिए कोई बहाना तो चाहिए ही। होली के बहाने मैं अपने समानधर्मियों को बदतमीज तो कह ही लेता। लेकिन दुर्भाग्य मेरा जो दीवाली दो आयीं और दीवाला निकला गयीं— लेकिन होली निगोड़ी एक ही आयी। कोई है— माई का लाल ज्योतिषी या पंडित— जो अगले वर्ष दो होलियां होने का दावा करें। तो सच मैं अपने क्षेत्र में भली प्रकार के पांव जमा सकता हूं। अन्यथा ठीक है एक ही होली से काम चलाऊंगा क्योंकि कीचड़ उछालना हमारी नियति है, इसे छोड़ नहीं सकते। इसलिए आओ संपूर्ण देश को इस होली पर एक ही नारा दें— कीचड़ उछालो—आओ सब कीचड़ उछालें। ●

—१२४/६१-६२, अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे मुझे पापड़ चाय के साथ देते हैं। गोल-गोल, चपटे, मिर्चवाले, मिर्च भी पापड़ में काली। वे पापड़ के साथ कुछ भी देते हैं तो मुझ अच्छा लगता है क्योंकि मुखशुद्धि के लिए खाने के बाद पापड़ आवश्यक है। अब यह आवश्यकता क्यों है ? मुखशुद्धि क्यों जरूरी है ? यह चिंतन का विषय है। पहले कुछ खाओ, पीओ और फिर मुख शुद्ध करो, यह हमारी परंपरा है। हम पहले हाथ गंदे करते

व्यंग्य

एक चिंतन पापड़ के नाम

● सत्यनारायण भटनागर

हैं तब साबुन से हाथ धोते हैं। क्यों ? इसलिए कि हाथ में लगे अन्नकण जो सबूत के रूप में दिखायी देते हैं वे समाप्त हो जाएं। हाथ धोना हाथों का शुदध होना है, वैसा ही क्या पापड़ मुखशुद्धि है। मुझे नहीं लगता कि इन अर्थों में पापड़ का उपयोग हो। पापड़ पापड़ है। वह जायकेदार है। वह मुंह में पानी ला देता है। उसका शुद्धि से कोई लेना-देना नहीं। पता नहीं उसका मुखशुद्धि से संबंध क्यों जोड़ दिया गया।

पापड़ सचमुच में पापड़ है। आप खाओ तो वह पापड़ है और न खाओ तो पापड़ है। वह गोल है। दुनिया की तरह गोल। आज की दुनिया की बातचीत की तरह गोल-मोल नहीं। आजकल बातचीत भी लच्छेदार होने लगी है। लोग बातों ही बातों में स्वाद लेने लगे हैं इसलिए बातों ही बातों में इशारा हो जाता है और बातों ही बातों में प्यार भी हो जाता है। इसलिए इन बातों के कई अर्थ होने लगे हैं। आप कहते कुछ हैं। उसके अर्थ कुछ और होते हैं। सामनेवाला कुछ और समझता है और यदि कोई चोरी से सुन रहा है तो वह अपनी इच्छा से कुछ और अर्थ लगाएगा, इसलिए प्यार से राजनीति और कूटनीति तक बात गोलमाल होती है। लकिन यह गोलमोल पापड़ की तरह नहीं होती। हां पापड़ कच्चा नहीं खाया जा सकता। उसका असली स्वाद लेने के लिए उसे सेकना पड़ता है या तलना पड़ता है। क्या हमारी बात बिना सांच के आंच पर पके स्वाद दे पाती है। इसलिए बातचीत का स्वाद पापड़ के साथ ही आता है। खाना खाना तो नाम है। मुख्य बात है पापड़ और पापड़ के साथ चर्चा, चर्चा प्यारभरी, चरपरी, नमकीन-जैसे पापड़ की कड़कड़ाहट की आवाज हो, जो दिल की आवाज बनकर उभरती है।

पापड़ गोलमटोल एक-से मनभावन लगते हैं। वे जितने पतले हों, उतने अच्छे। आप विचार कीजिए पापड़ का पतलापन किसी नायिका की कमर-सा हो तो कैसा लगे ? कविगण तो नायिका की कमर कहां है, यह खोज का विषय मानते हैं किंतु पापड़ तो पापड़ है। वह गोल-मटोल भले ही किसी फिल्मी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायिका-सा हो किंतु वह इतना पतला, दुबला दिखायी देता है, जैसे आधुनिका हैल्थ क्लब से निकलकर अभी चली आ रही है । जितना पतला पापड़ उतना अच्छा पापड़ । अब आप कल्पना कर लीजिए इस पापड़ की किसी से भी, आप तुलना करेंगे, तो बहुत पापड़ बेलने पड़ेंगे आपको । जनाब पापड़ बेलना कोई मामूली काम नहीं है । वह जमाना गया जब घर पर पापड़ बेले जाते थे । न्यौते होते थे अपने अड़ोस-पड़ोस में पापड़ बेलने के लिए । दिन भर लगता था एक महिला मंडल को तब जाकर पापड़ बेले जाते थे । पापड़ बेलना कोई साधारण काम नहीं है । इसीलिए आजकल की कोई नायिका पापड़ नहीं बेलती । अगर नायक इतराये, प्यार जताये । पीछे पड़े अपनी प्रियतमा के कि वह पापड़ उसके नरम-नरम हाथों का खाएगा तो संभव है वह और कुछ खा लेवे, किंतु नायिका के हाथ का पापड़ तो उसे मिल ही नहीं सकता । ऐसे नायक की जन्म पत्रिका के सातवें घर में मंगल का दंगल प्रबल योग लेकर तलाक का रास्ता अवश्य दिखा सकता है । इसलिए समझदार व्यापारियों ने पापड़ को उद्योग के खाते में डाल व्यावसायिक बना दिया है । अब यह बात अलग है कि विवाह सहित जीवन का हर अंग व्यावसायिक होकर पापड़ की तरह विज्ञापन की वस्तु बन गया है, पर कोई माने या न माने, जो पापड़-जैसी वस्तु बेल दे वह पापड़ की तरह दुबली-पतली ही रहेगी । वह टुनटुन हो ही नहीं सकती ।

पापड़ पापड़ है । उसे नरम, दुबला मानकर मत चलिए । वह आग पर सिकते ही कड़क हो जाता है । ऐसा कड़क जैसे नंबर वन का हीरो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पापड़ सचमुच में पापड़ है । आप खाओ तो वह पापड़ है और न खाओ तो पापड़ है । वह गोल है । दुनिया की तरह गोल । आज की दुनिया की बातचीत की तरह गोल-गोल नहीं । आजकल बातचीत भी लच्छेदार होने लगी है । लोग बातों ही बातों में स्वाद लेने लगे हैं इसलिए बातों ही बातों में इशारा हो जाता है और बातों ही बातों में प्यार भी हो जाता है ।

हो । शासन में बैठा कोई अफसर हो या कड़क प्रशासन की घोषणा करता कोई राजनेता हो । यह दुबला-पतला पापड़ तले जाने पर अकड़कर ऐसे थाली में सजता है जैसे कुरसी पर बैठा नेता या नायिका के गले में पड़ा हीरों का हार । पर यह हमारे वर्तमान चरित्र की तरह ऊपरी और दिखावटी अकड़ है । यह एक झटके में टूट जाता है, जैसे भारतीय प्रजातंत्र का कोई दल । पापड़ एक झटके में कई टुकड़े होकर बिखरने की संभावना लिए अकड़ता है, किंतु उसका हर टुकड़ा एक-सा स्वाद लिए अपनी अकड़ बनाये रखता है । जैसे दलबदल के बाद टूटे दल अनेक दलों में बिखरकर भी नीति और सिद्धांत की बातों को दुहराकर कुरसी के स्वाद की घोषणा करते रहते हैं ।

लेकिन पापड़ पापड़ है । वह टूटकर बिखर सकता है । उसका स्वाद लिया जा सकता है । वह हमारे राजनीतिक दलों की तरह नहीं है कि स्वार्थों के लिए पुनः मिलने को इच्छुक हो । इन अर्थों में पापड़ का चरित्र हमारे आधुनिक चरित्र से उत्तम है ।

पापड़ वर्तमान संदर्भों में चिंतन का विषय है । वह दालों से बनता है । अलग-अलग दालों का अलग-अलग पापड़ । वह हर हालत में नमकीन होता है, क्योंकि उसमें नमक और मिर्च मिलायी जाती है । यह नमक-मिर्च लगाना आजकल युगधर्म है । चाहे समाचार-पत्र हो या हमारी चर्चा, नमक-मिर्च मिलाये बिना कोई आनंद नहीं आता । इन अर्थों में वर्तमान चरित्र के अनुकूल पापड़ का चरित्र है । हमारी तरह विभिन्न दालों से बनकर नमक-मिर्च लगकर, कूट-पीटकर, बेलन से पतला बेले जाने पर भी पापड़ पापड़ ही रहता है, जिस प्रकार हम विभिन्न जाति, धर्म, प्रांत, विचारों के होते हुए भी एक राष्ट्र भारतीय ही बने रहते हैं । इस प्रकार वह विभिन्नता में एकता का नारा लगाता हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक कहा जा सकता है ।

पापड़ की कथा चिंतन के क्षेत्र में अनंत है । विचार कीजिए और कल्पना सागर में गोता लगाइए । पापड़ नायिका की तरह मधुर और नेता की तरह थुलथुल गोलमटोल दिखायी दे सकता है । वह पृथ्वी की तरह गोल है और हमारे चिंतन की तरह हलका-फुलका ।

—२, एम.आई.जी. देवरा देवनारायण,
रतलाम (म.प्र.)-४५७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

आम आदमी की तलाश

● अशोक व्यास

इस देश के हर नेता को बस एक ही चिंता है, दुःख है, पीड़ा है कि किस तरह आम आदमी का हित हो, वह ऊपर उठे तरक्की करे ।

आजादी के बाद यह बीमारी बहुत फैली है । प्रधानमंत्री से लेकर महल्ले के छुटभय्ये नेता के किसी भी अवसर पर दिये हुए भाषण का कुल मिलाकर निचोड़ यही निकलता है कि आम आदमी के लिए बहुत कुछ करना है ।

अब सवाल यह पैदा होता है कि आम आदमी होता कैसा है, कहां पाया जाता है ? लेकिन जनाब आम आदमी भी कुछ कम नहीं है किसी को नजर ही नहीं आता है अगर कभी हमें भी दिख जाए, तो उससे पूछें, 'कहां छुप गया था कठोर तेरी तलाश में मंत्री से लेकर संतरी सब भटक रहे हैं ।'

विशेषकर चुनाव प्रचार के शोर में तो सारा जोर बिचारे आम आदमी पर ही होता है । नेता का भाषण सुननेवाले श्रोता भी बहुत बेफिकरी से उसका भाषण सुनते समय सोचते हैं कि होगा कोई दबा, कुचला, बेवकूफ किस्म का आदमी जिस पर बहुत अत्याचार हो रहे हैं ।

नेता भी पूरा घाघ होता है, वह जानता है कि सामने जो प्रायोजित श्रोता बैठे हैं उन्हीं में से ज्यादातर आम लोग हैं । परंतु उसे उससे क्या ? उसे तो उससे एक ही चीज लेनी है, वो उसका वोट ।

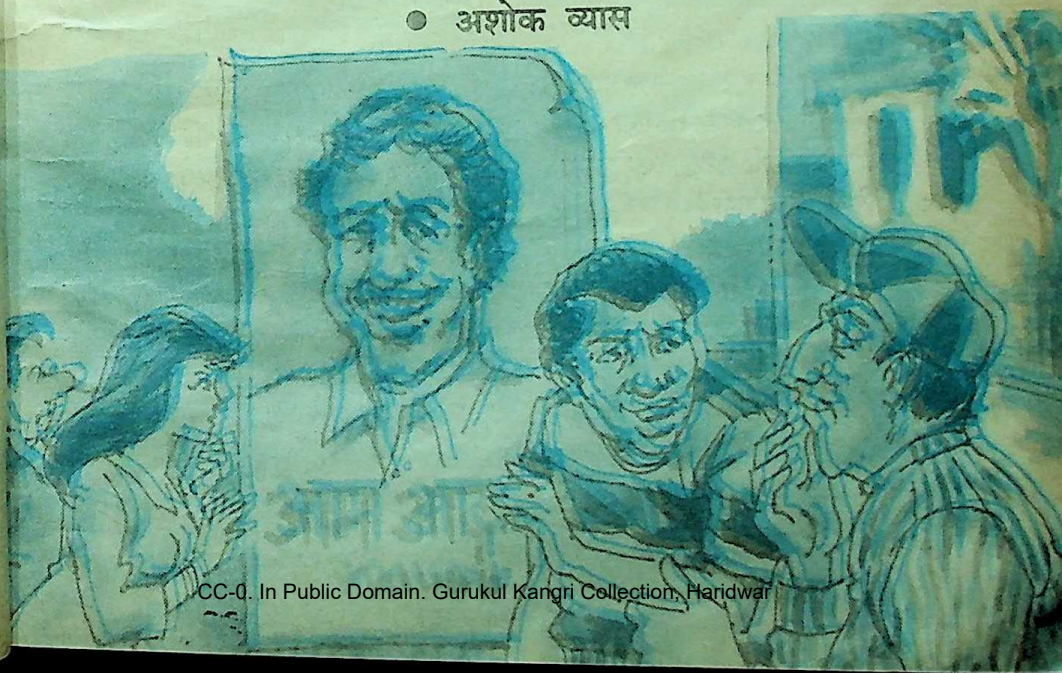

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकर्ता की मीटिंग में भी वह बस एक ही बात जोर देकर कहता है कि आम आदमी का वोट उसे मिल जाए तो चुनाव में उसकी जीत पक्की है ।

अब गांधीजी का जमाना तो रहा नहीं कि कार्यकर्ताओं का उससे जीवंत संपर्क हो । उसे जानते हों, पहचानते हों । उन्हें तो बस नेता, मंत्री, कुरसी, सिफारिश, कमीशन, बूथ केप्चरिंग, हड़ताल, बंद आदि चीजें ही मालूम हैं, सो उन्होंने सोचा कि ये आम आदमी जरूर कोई खास आदमी होगा जो गायब हो गया है । हमारे नेताजी को उसी के वोट की शायद सबसे ज्यादा जरूरत है ।

तलाश है इस आदमी की ! क्या आपने इसे कहीं देखा है ? इसका पता बतानेवाले का नाम गुप्त रखा जाएगा, आने-जाने के खर्च के अलावा उचित ईनाम भी दिया जाएगा ।

नेता का खास आदमी बनने के लिए कुछ अति उत्साही कार्यकर्ताओं ने आम आदमी को ढूंढ़ने के लिए अखबारों में विज्ञापन दे दिये पंफलेट, छपवा दिये और उन्हें जगह-जगह बंटवाया । तारीफ की बात यह है कि उसमें एक आदमी का फोटो भी छपवा दिया । उन्हें उसके बारे में कुछ मालूम तो नहीं था कि वह कैसा है, उसकी उम्र क्या है तो उन्होंने आठ-दस व्यक्तियों के फोटो देकर एक चित्रकार से कहा कि इससे मिलता-जुलता एक आदमी का चित्र बना दो । चित्रकार ने अपनी कल्पना से एक आदमी का चित्र बना दिया वही छप गया था ।

वह विज्ञापन हमारी नजरों से भी गुजरा । आप भी गौर फरमायें वह कुछ इस तरह था । उसमें बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था कि, तलाश है इस आदमी की ! क्या आपने इसे कहीं देखा है ? इसका पता बतानेवाले का नाम गुप्त रखा जाएगा, आने-जाने के खर्च के अलावा उचित ईनाम भी दिया जाएगा । आगे उसका वर्णन लिखा था,

कि, उम्र आजादी के बाद से स्थिर है, लंबाई समय के हिसाब से घटती-बढ़ती रहती है । नजर देखने में ठीक-ठाक है परंतु (दूरदृष्टि) ठीक नहीं है । वैसे समझदार है परंतु खुद का भला-बुरा भी नहीं समझता है, जागते में सपने देखता है ; भोला, और मासूम है, इसका नाम 'आम आदमी है ।

जनाब उसे ढूंढ़ने के लिए हम भी गली-गली घूमने लगे । हर आते-जाते को घूर-घूरकर देखने लगे । उसके लिए हर कहीं भटके, सरकारी बसों में लटके फिल्म की लाईन से लेकर राशन की दुकान तक अटके । हर आदमी हमें आम आदमी-जैसा कुछ-कुछ लगा, लेकिन पूरे यकीन से उससे नहीं कह सके कि चल यार तू कहां खो गया था । तुझे सारा देश ढूंढ़ रहा है ।

एक आदमी जिसके लंबे-लंबे बाल थे, सिगरेट के कश ऐसे लगा रहा था जैसे फिल्म में कोई विलन लगाता हो । हमने उससे बड़े विनयपूर्वक पूछा 'भाई साहब आप कौन हैं ।' उसने हमें ऊपर से नीचे एक घूरकर देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिगरेट का धुंआ हमारे मुंह पर उड़ाकर बालों को झटककर बोला 'अक्खा लोग जानता है हम टोनी दादा का आदमी है, क्या ?

लब्बो-लुआब यह है कि हर कोई किसी न किसी का आदमी निकला । बस वो आम आदमी नहीं था । तब हमने गुस्से में आकर अपने पत्रकार मित्र से पूछा । उन्हें अंदर की सब बातें मालूम रहती हैं । कि ये साला आम आदमी कहां पाया जाता है । क्या तुमने उसे कहीं देखा है ?

पत्रकार सुनकर हंसने लगा, बोला, 'तुम इतना भी नहीं जानते' । आम आदमी को नहीं पहचानते, फिर धीरे-से बोला अरे, भाई आम आदमी खास हो गया है । आजकल वह नेता हो गया है ।'

हमने पूछा 'वह तो दूरदर्शन की स्क्रीन पर दिखता है, संसद में बोलता है । अखबारों में छपता है । एक मौसम है जब वह बहुतायत से पाया जाता है और उसे हर कोई देख सकता है । वह है चुनाव का मौसम । मैंने कहा कि, 'ऐसा होता क्यूं है ।' वह बोला हर आम आदमी खास होना चाहता है, जब खास नहीं हो पाता तो उसका मुखौटा लगा लेता है ।

और आम आदमी के नाम पर जो चिंता करते हैं, वे खास आदमी होते हैं । परंतु उनके अंदर भी एक आम आदमी होता है जिससे वे हमेशा डरते हैं, क्योंकि आज जो खास बने बैठे हैं, वे भी तो कल आम थे ।

इस आम और खास के चक्कर में मेरा सर चकराया, मैं घबराया और आगे बढ़ा तो चौराहे पर एक लल्लू टाईप आदमी मुझसे टकराया, वह मुझसे बोला 'का भय्यां अंधे हो का ?

देखकर नाहीं चलते ।'

उसका चेहरा चाल-ढाल आदि देखकर मुझे कुछ शक हुआ और मेरे मुंह से निकल गया 'भाई साहब आप कौन-से आदमी हैं ?'

उसने भी झटके-से जवाब दिया 'आप हम को नाहीं पहिचानते ? अरे भई हम आम आदमी हूं ।' उसके बाद उसने मुझे तमाम देश-विदेश की समस्याओं पर एक तगड़ा भाषण पिलाया । जिंदाबाद का नारा लगाया और जय हिंद करके चला गया ।

मैं चुपचाप उसे जाते हुए देखने लगा । मेरी समझ में आ गया कि यही आम आदमी है आज नहीं तो कल यह खास आदमी बन जाएगा । जब यह खास बन जाएगा तो आम आदमी के बारे में लंबे-लंबे भाषण देगा और उसके बारे में चिंता करेगा । और बेचारा आम आदमी जहां है जैसा है वहीं मरेगा उसे कोई ढूंढ़ नहीं पाएगा । उसके लिए तो सिर्फ इश्तहार छपेगा, जिसमें बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा रहेगा कि तलाश है इस आदमी की, क्या आपने इसे कहीं देखा है ?

— ७४ एन/वन 'डी' सिक्युरिटी लाईन
गोविंदपुरा, बी.एच.ई.एल. भोपाल-४६२०२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल गयी घाघरा-चोली पहने

● छाया वर्मा

आज याद आ रहा है वो दिन जब मैं डोली से उतारी जा रही थी । ये दिन आज अचानक इसलिए याद आ गया, क्योंकि इस दिन के साथ जुड़ा है, आज का एक दिन । तमाम लोगों की भीड़ को चीरती हुई मांजी मुझे सहारा देकर घर के प्रवेश-द्वार तक ले जा रही थीं । उसी समय के कुछ क्षण आज बार-बार याद आ रहे हैं । एक नन्हां मासूम-सा चेहरा बार-बार मेरे घूंघट के अंदर झांककर मेरा चेहरा देखने की कोशिश कर रहा था । वे उत्सुक आंखें मुझे आज भी याद हैं ।

जब मुझे अंदर मेरे कमरे में बिठाया गया तो वे ही आंखें फिर मेरे घूंघट से होती हुई मेरे चेहरे पर टिक गयीं । इस बार मैं धीरे-से मुसकुरा दी । अब उसके होंठ हिले—'आप मुझे पहचानती हैं, मैं कौन हूं ?' मैंने सिर हिलाकर ना कहा तो वह बोली—'मैं पप्पी हूं, आपकी भांजी ।' यह था पप्पी के साथ मेरा पहला परिचय । बाद में पता चला कि पप्पी मेरी मंझली ननद की बड़ी बेटी है और अपने नाना-नानी की बेहद लाड़ली ।

उसका प्यारा खेल था—'लुका-छिपी' । वह कहीं छिपकर चिल्लाती—'मामी, ढूंढ़िए मैं कहां हूं ?' मैं दरवाजे या बड़ेवाले बक्से के पीछे से कभी उसकी उड़ती हुई फ्रॉक और कभी लहराता रिबन देखकर भी उसे ढूंढ़ने का अभिनय करती हुई कहती—'पप्पी कहां छिपी है ? इस दरवाजे के पीछे भी नहीं है, अमरूद के पेड़ के पीछे भी नहीं है, आखिर कहां छिपी है ? अम्मांजी, पप्पी कहां छिपी है ?' और अचानक पप्पी सामने आकर उछल-उछलकर कहने लगती—'मैं यहां छिपी थी, नहीं ढूंढ़ पायी न ।'

कुछ ही दिनों के बाद स्कूल की नौकरी छोड़कर मैं भी गोआ चली गयी । गोआ से अहमदाबाद और अंत में दिल्ली में आकर बस गयी । इस बीच पप्पी इतनी बड़ी हो गयी कि उसकी शादी भी हो गयी और वह तीन बच्चों की मां भी बन गयी । एक बच्चे के न रहने की चोट भी सही उसने ।

अचानक छह महीने पहले खबर मिली कि पप्पी का कोई ऑपरेशन हुआ है । कैंसर का शक मिटाने के लिए बायप्सी करवायी गयी तो शक झूठा निकला । मैंने भगवान को धन्यवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

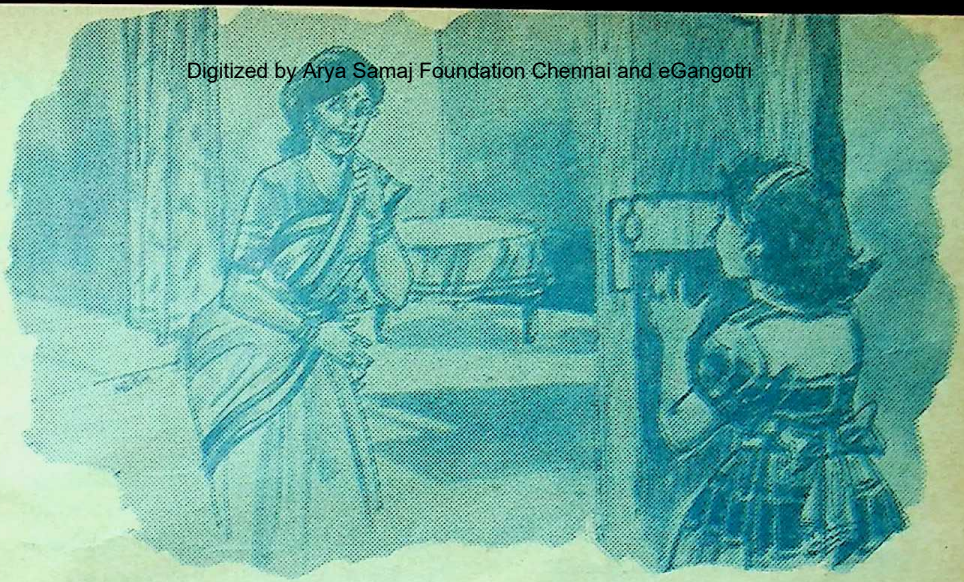

दिया कि उसने हमारी पप्पी को बचा लिया इस जानलेवा बीमारी से ।

मार्च महीने में होली से चार दिन पहले देवर का फोन बांबे से आया कि पप्पी अपने पति के साथ प्लेन से दिल्ली जा रही है, उससे मिल लो । उसे कैंसर है और यहां के डॉक्टर ने जवाब दे दिया है । सुनकर हम सकते में आ गये । कल सुबह ही तो प्लेन आना है ।

अगले दिन हम पति-पत्नी हवाई अड्डे पहुंचे तो उसे देखकर दंग रह गये । वह लगभग कोमा में थी । मैंने प्यार से उसके माथे पर हाथ रखा और धीरे-से आवाज दी—'पप्पी', और मेरा दुर्भाग्य कि इस बार मुझे कहना पड़ा—'मुझे पहचान रही हो बेटी, मैं बड़ी मामी हूं ।' अपनी डबडबायी आंखो को मैंने यत्नपूर्वक रोका और मुसकुरायी । सोफे पर लेटे-लेटे उसने आंखें खोलीं, मुझे देखकर मुस्कुराई, हाथ जोड़कर होंठों में बुदबुदाकर मुझे प्रणाम किया और फिर आंखें अपने आप बंद हो गयीं । उसका सिर एक बार और सहलाकर मैं वहां से हट गयी । उसके पति ने सिसकते हुए कहा—'डॉक्टर के अनुसार पंद्रह दिनों से अधिक नहीं ।' मैंने मन ही मन कहा—इतने दिन कहां ? सही सलामत घर पहुंच जाए तो गनीमत समझो ।

और वही हुआ । होली से एक दिन पहले उसने हम सबसे मुंह मोड़ लिया ।

मुझे खबर मिली तो मुझे लगा वह फिर कहीं छिप गयी है और मैं उसे ढूंढ़ रही हूं । मैं कहती जा रही हूं—'पप्पी ! तू कहां छिप गयी बेटी !' पर इस बार न तो उड़ती हुई फ्रॉक दिखी न लहराता हुआ रिबन । हारकर अपना फोटो-एलबम देखने लगती हूं । कहीं नहीं तो यहां अवश्य मिलेगी । और मिल गयी—घाघरा-चोली पहने, हाथ में एक मटकी लिए, राजस्थानी वेशभूषा में छोटी-सी पप्पी ।

मैंने महसूस किया कि मेरा चेहरा आंसुओं से भीग गया है और कांपते हुए होंठ अस्फुट स्वर में कह रहे हैं—'देखा, आखिर ढूंढ़ लिया न !'

—२८७, लक्ष्मी बाई नगर,
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

बहिरु पंडित

दफतड़नू सिस्टर !

● डॉ. कुमार दिलीप सिंह

बाल ब्रह्मचारी बहिरु पंडित, घर के रसोइया भी थे, पुजारी भी । जानकी उनके असिस्टेंट थे । चौका घर से पूजा घर तक उनका एकक्षत्र राज था । देवताओं की पूजा तो हम भी कर लेते थे पर पेट-पूजा का भार पूर्णतया पंडितजी पर ही था । उनका पूरा नाम तो हमें याद नहीं पर औरंगाबाद के आसपास के रहनेवाले थे । बाबूजी न गांव पर उन्हें जागीर दे दी थी और ड्यूटी गया बजाना तय हुआ था । ऊंचा सुनते थे तो क्या, हर बात को आपके 'लिप मूवमेंट' से समझने की अपूर्व क्षमता थी उनमें । पर जिस बात को वे समझने लायक समझे उसे ही, बाकी के लिए बहरा होना उनके लिए एक वरदान था ।

ठेठ मगही का प्रयोग हमारे लिए उनकी भाषा को संस्कृत से भी कठिन बना देती । नमक को नून और सब्जी को तीयन-तरकारी कहना तो हमारी समझ में आता पर दफतड़नू का मतलब ? बिना उनसे पूछे आलिम फाजिल भी इसको नहीं बता पाते ।

बाबूजी ने मेरा और नीलू दीदी का नाम कॉन्वेंट में लिखा दिया था, जिसका नाम आजकल नाजरेथ अकादमी हो गया है । मखमल जीन की पैंट, उजली बुशर्ट और उजले जूते-मोजों के साथ लाल टाई पहने जब हम स्कूल जाते तो दूसरे स्कूल के बच्चे हमें लाल टाई बंदर का भाई कहकर चिढ़ाया करते । स्कूल में एक बड़ा-सा पैविलियन था, जिसमें लंच के समय खाना लेकर, उन दिनों, घर के नौकर-चाकरों को अंदर जाने की इजाजत थी । वहीं पहुंचते थे कामता सिंह बराहित के साथ खाना लेकर बहिरु पंडित । वहां सब को अंगरेजी बोलते-बतियाते देखकर पंडितजी को अंगरेजी सीखने की चाहत हुई होगी । ध्यान लगाकर सुनते रहते । जिस भाषा ने हम कानवालों को परेशान कर रखा था, उसे चलें बहिरु समझने ।

नतीजा जल्द ही सामने आ गया । एक तो उन्हें कम सुनायी पड़ता, दूसरे ढेर सारे शब्द । बच्चों का कोलाहल अलग से । ज्ञान की गगरी से मंत्र निकाला कि अभिवादन करना तो कम से कम सीख ही लेना चाहिए । बस जुट गये उसी में एकाग्रता से । सिस्टर खाना खाने के वक्त घूम-घूमकर सब बच्चों पर निगाह रखतीं । इससे शोर भी कम होता और डर के मारे हम पूरा खाना खा लेते । जूठन छोड़ने पर सजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठेठ मगही का प्रयोग हमारे लिए उनकी भाषा को संस्कृत से भी कठिन बना देती । नमक को नून और सब्जी को तीयन-तरकारी कहना तो हमारी समझ में आता पर दफतड़नू का मतलब ? बिना उनसे पूछे आलिम फाजिल भी इसको नहीं बता पाते ।

मिल सकती थी ।

टेबल पर चादर बिछाकर खाना परोस ही रहे थे कि बहिरु कि सिस्टर आ गयीं । पंडित ने आव देखा न ताव झट-से उच्चारित किया— दफतड़नू सिस्टर । और अपनी ही प्रतिभा पर गद्‌गद् होकर सीना ताने खड़े रहे । सिस्टर ने हंसकर कहा— व्हाट ? पंडित निरुत्तर । हमारे चेहरे फक् । अंगरेजी पढ़ानेवाली और अंगरेजी पढ़ानेवाले दोनों की समझ में कुछ भी नहीं आया । सिस्टर मुसकराते आगे बढ़ गयीं और हम सर झुकाये खाने बैठ गये । बहिरु पंडित से वहां तो कुछ पूछा नहीं जा सकता था क्योंकि पूछने के लिए चिल्लाकर बात करनी होती और शोर होता, इसलिए घर आकर बाबूजी को सारी बात बतायी गयी । ऐसे बेवकूफ के चलते फिर कहीं अपनी भद्द न हो इसलिए हमने अपनी टिफिन खुद स्कूल ले जाने का फैसला कर लिया ।

बाबूजी हिंदी के प्रोफेसर थे पर अंगरेजी पर भी उनकी पकड़ अच्छी थी । हर हिंदुस्तानी की तरह गुस्से में जब भी डांटते अंगरेजी का ही उपयोग करते । पर दफतड़नू ? उनके पल्ले भी कुछ नहीं बैठा । डिक्शनरी में तो मिलने से रहा । यह तो भला हो पंडितजी का, जो शाम को उन्होंने ही मामले का खुलासा कर दिया ।

संध्याकाल रोज की तरह पंडितजी भांग पीसने और कविता सुनाने बैठ गये ।

पहला पहर में जो नर पीवै कर सभा की आस
सभा मध्य जब गरजन लागे जस जंगल का बाघ
सुनो भई भांग के लच्छन

और आगे कुछ जवाब मिलता कि बाबूजी आ गये । जोर से शायद कुछ लिखने-पढ़ने में बाधा पड़ी हो । सब कुछ शांत । भंग की तरंग गायब, उमंग लापता ! आते ही पूछा— क्यों पंडितजी यह स्कूल में दफतड़नू का क्या मामला है ? बहिरु पंडित गमछे से 'सिलॉट' ढाककर खड़े हो गये । बोले—"जैसे सभें लईकवन करता है, हमहूं तो सिस्टर को परनामे किया था । अंगरेजी में सीख लिया है । सुबह के टैम 'गुट मारनी' और दुपहरिया में 'दफतड़नू' (गुड ऑफटर नून का संक्षेप) । रात में उधर जाना ही नहीं है, इहैं तो बात है । अब तो मारे हंसी के सबका हाल बेहाल । बहिरु की बारी थी भक् होने की ।

दूसरे दिन जब स्कूल के वर्किंग स्टाफ को यह पता चला तो पूरा स्टाफ पंडितजी को 'दफतड़नू' कहने लगा और पंडितजी लग गये अंगरेजी की अगली लाईन सीखने में ।

—कुमार हाऊस
वेस्ट चर्च रोड,
गया-८२३००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली स्वयं एक प्रेम है । होली की ज्वाला से प्रेम उत्पन्न होता है । कम दहेज लानेवाली बहू अपने पति से बहुत प्रेम करती है, इसलिए वह मिट्टी का तेल छिड़ककर अपने प्रेम की लौ को प्रदीप्त करती है । होली आते ही चारों ओर प्रेम बढ़ जाता है । लकड़ी चोरों की संख्या बढ़ जाती है । वे लोग जिनके खानदान में कभी

व्यंग्य

होली में चोरी लकड़ी और लड़की की

● अरविंद तिवारी

किसी ने चोरी नहीं की लकड़ी की चोरी कर लेते हैं ।

वैसे कई बार लडकी भगानेवाले भी ऐसे ही वीर निकले हैं जिनके खानदान में कभी किसी ने लड़की नहीं भगायी । हिम्मत की बात है । क्रिस खानदान में ऐसी हिम्मत कब बढ़ जाए, कहा नहीं जा सकता ।

होली के दिनों में होली के बहाने लोग अपनी दुश्मनी निकाल लेते हैं । प्रायः गांवों में बैलगाड़ियां, लकड़ी के हल, लकड़ी के छप्पर, खंभे आदि होलिका माता को चढ़ा दिये जाते हैं । होलिका माता ऐसी वस्तुओं को पाकर अपनी लौ ऊंची कर लेती हैं । जब तक बैलगाड़ी का मालिक आकर अपनी बैलगाड़ी पहचाने तब तक उसकी बैलगाड़ी जल चुकी होती है । उस वर्ष की होली बैलगाड़ीवाले पर भारी पड़ जाती है ।

यह कहानी एक वीर मराठा बाबूराव की कहानी है । मराठा सीरियल से इस कहानी का कुछ लेना-देना नहीं है । मराठा बाबूराव बहुत वीर था और हिंदी साहित्य के वीरगाथाकाल के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वीर लोग प्रेम भी बहुत करते हैं । बाबूराव बचपन से ही वीरता और प्रेम दोनों का प्रदर्शन करने लगा था । बचपन में ही वह कभी किसी खलनायक को पीट देता था, तो कभी किसी लड़की को छेड़ देता था ।

उसकी वीरता होली के दिनों में देखते ही बनती थी । फागुन की रातें वैसे भी मादक होती हैं, उसमें महल्ले की होली को अव्वल दरजा दिलाने के नशे में बाबूराव पागल हो जाता था । उसके पागल होने का एक कारण उसकी प्रेमिका सरला थी । वह बाबूराव की तरह ही ठिगने कद की थी । प्यार के मामले में वह बहुत बहादुर थी । उसकी बहादुरी का एकमात्र कारण बाबूराव का बहादुर होना था । सरला के पिता पटवारी थे । गांव में पटवारी धर्मराज और यमराज दोनों के रूप में मान्यताप्राप्त अधिकारी होते हैं । स्वतंत्र भारतवर्ष में पटवारियों ने देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जो सेवा की है, उसके लिए देशवासियों को उनका ऋणी होना पड़ता है । इस रचना में पटवारियों की महानता पर प्रकाश डालने की अपेक्षा सरला और बाबूराव के बीच अचानक प्रेम होने के कारण खोजना श्रेयस्कर होगा ।

सरला और बाबूराव के प्रेम के कारण होलीवाली लकड़ियां थीं । गांव का जंगल पटवारी की संपत्ति होता है, अतः सरला के घर के बाहर पेड़ों के ढेर लगे थे । बाबूराव की नजर इन्हीं कटे हुए पेड़ों पर थी न कि सरला पर । बाबूराव दिन में इन्हीं पेड़ों की लकड़ियों को घूरता था । सरला को गलतफहमी हो गयी कि बाबूराव उसे घूरता है ।

पहला प्यार अकसर गलतफहमी में ही होता है । बाद में मनुष्य शादी से लेकर मृत्यु तक गलतफहमी में जीता रहता है । बाबूराव के प्रति गलतफहमी में ही सही सरला के मन में प्रेम उत्पन्न हो गया ।

बाबूराव फागुन के महीने में पटवारी के घर के चक्कर लगाता था, ताकि लकड़ियों की चोरी हो सके । सरला को जब पता चला कि बाबूराव रात को उसके घर के चक्कर लगाता है, तो उसकी नींद उड़ गयी ।

होली के कुछ रोज पहले फागुन की दूधिया रात में सरला ने बाबूराव को लकड़ी चुराते हुए पकड़ लिया । बाबूराव ने जैसे ही लकड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकायी सामने सरला आ गयी । सरला बाबूराव को ऐसे घूरने लगी, जैसे कोई प्रेमी अपनी पत्नी के सामने प्रेमिका के साथ रंगे हाथों पकड़ा गया हो ।

सरला ने शोर मचाने की धमकी दी । बाबूराव ने कहा ऐसा मत करो । सरला ने कहा ठीक है शोर नहीं मचाऊंगी किंतु तुम्हें मेरे साथ प्रेम करना होगा । मेरे साथ प्रेम करने में दूसरा फायदा यह होगा कि मैं अपने घर से तुम्हारी होली तक लकड़ियां पकड़वाने में मदद करूंगी ।

पहला प्यार अकसर गलतफहमी में ही होता है । बाद में मनुष्य शादी से लेकर मृत्यु तक गलतफहमी में जीता रहता है । बाबूराव के प्रति गलतफहमी में ही सही सरला के मन में प्रेम उत्पन्न हो गया ।

उस समय बाबूराव को होली बढ़ाने की धुन सवार थी । प्यार करने का मूड कतई नहीं था मगर लकड़ियों के चक्कर में वह लड़की के हत्थे चढ़ गया । पटवारी के घर से चोरी होनेवाली लकड़ियों की संख्या बढ़ गयी तो पटवारी का ध्यान गया । सरला और बाबूराव दोनों मिलकर लकड़ी उठाते और होली तक पहुंचा देते । दिन में बाबूराव के साथी बाबूराव की बहादुरी की प्रशंसा करते ।

क्षेपक शुरू होता है । फागुन की रात में चांदनी बिखरी पड़ी है । बाबूराव और मैं सरला के घर लकड़ी की चोरी करने जाते हैं । सरला सामने आती है । मैं दोनों से कहता हूं कि मैं चलता हूं । बाबूराव मुझे रोक लेता है । सरला बाबूराव को एक चॉकलेट देती है । बाबूराव उससे कहता है इसे भी दो । वह मुझे चॉकलेट नहीं दे तो । बाबूराव अड़ जाता है, इसे चॉकलेट देनी पड़ेगी । मगर मुझे चॉकलेट नहीं मिली । हम तीनों एक मोटी-सी लकड़ी चुराकर होलिका माता की ओर ले चलते हैं, तभी पटवारी आ जाता है ।

वह देखता है कि लकड़ी और लड़की दोनों की चोरी हो रही है । वह सरला को वहीं पीटता है और हमसे कहता है लकड़ी भी वापस रख के आओ । लड़की वापस हो चुकी थी मगर लकड़ी टस से मस नहीं हो रही थी । हमारे साथ पटवारी के घर से होली तक लकड़ी सरला की ताकत के कारण ही पहुंची थी ।

पटवारी ने लकड़ी छोड़ दी और बाबूराव को चेतावनी दी कि मैं लड़की नहीं छोड़ पाऊंगा, इसलिए मेरे घर के चक्कर मत काटना ।

उस वर्ष बाबूराव के महल्ले की होली सबसे बड़ी लौ के साथ जली और साथ ही प्रेम की लौ में जलने लगे बाबूराव और सरला ।

बाद में दोनों की शादी हो गयी ।

अब प्रतिवर्ष होली आते ही दोनों पति-पत्नी लकड़ी चुराने निकल पड़ते हैं । सरला अपने पीहर से जरूर लकड़ी चुराती है ।

इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है कि जो लड़कियां होली के दिनों में प्रेम करती हैं, वे अन्य लड़कियों से अधिक शक्तिशाली हो जाती हैं ।

—प्राचार्य उदयपुरिया, जयपुर-३०३८०७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमित, कुरुक्षेत्र ।

प्रश्न : उम्र ३० साल । हलका-हलका बुखार कभी भी हो जाता है । पेट में दायें भाग में पसली के नीचे दर्द रहता है । भूख कम लगती है । कभी-कभी उल्टी करने का मन करता है । कमजोरी महसूस होती है । तीन महीने से परेशान हूं ।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, नवायसलोह दस ग्राम, आरोग्यवर्धनी वटी दस ग्राम और शंख भस्म दस ग्राम लेकर उसकी साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । रोहितकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । सितोपलादि चूर्ण तीस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर तीस मात्रा बनायें । दोपहर एक मात्रा शहद से लें । दही, चावल, तली वस्तुएं और देर से पचनेवाली वस्तुओं का परहेज कर छह माह औषधि सेवन करें ।

रवि कुमार, कलकत्ता ।

प्रश्न : उम्र ४५ साल है । छाती में दोनों तरफ दर्द रहता है । कभी-कभी घबराहट होती है । खाने की इच्छा नहीं होती । शाम के समय थकान हो जाती है । अब चिंता के कारण नींद भी नहीं आती है । जांच करने से पता चला कि सब ठीक है ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, श्रृंगभस्म तीस ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें, एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । दही, शीतल पेय और खटाई का परहेज कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

अविनाश कौर, बटाला ।

प्रश्न : उम्र २८ साल है । तीन संतानें हैं । दो बार गर्भपात हुआ है । पिछले एक साल से सिर में बहुत दर्द होता है । उल्टी करने को मन करता है । भूख कम लगती है । पेट में भारीपन रहता है, कभी-कभी जलन होती है । कभी मूत्र आने पर जलन हो जाती है । दिन पर दिन कमजोरी बढ़ रही है । पति को कोई सुख नहीं दे पाती, वे भी परेशान रहते हैं । कृपया अच्छी दवा सुझायें ।

उत्तर : स्वर्ण सूतशेखररस दस ग्राम, शिरशूलादि वज्ररस दस ग्राम, गोदंती भस्म तीस ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । साठ ग्राम नारि केलक्षार की साठ मात्र बनायें । एक-एक मात्रा भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच रात दूध से लें । तली वस्तुएं, खटाई और दही का सेवन न कर तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती सुमन, शाहदरा ।

प्रश्न : उम्र छत्तीस साल है । दस साल विवाह को हो गये, पर संतान नहीं हुई । मासिक ठीक समय पर नहीं होता व स्राव कम होता है । हाथ-पैर में दर्द रहता है और शरीर मोटा होता जा रहा है । कमजोरी मालूम पड़ती है । किसी काम में मन नहीं लगता । काफी परेशान हूं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट एक चम्मच अशोकारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद लें । रजप्रर्वतनी वटी एक रात गरम पानी से लें । दही, चावल, शीतल पेय और अमचूर की खटाई का सेवन न कर छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

अशोक कुमार, दानापुर ।

प्रश्न : उम्र तीस साल है । पेट अकसर खराब हो जाता है । दिन में चार-पांच बार शौच के लिए जाना पड़ता है । पेट में कभी-कभी हलका-हलका दर्द रहता है । कमजोरी बहुत है ।

उत्तर : सिद्ध प्राणेश्वर रस दस ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें । चित्रकादि वटी भोजन के बाद पानी से लें । मीठा, तली वस्तुएं व देर से पचनेवाले खाद्य पदार्थों का सेवन कम करें । तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

राम प्रसाद, गोरखपुर ।

प्रश्न : उम्र साठ साल है । नींद न आना, सिर में भारीपन, भूख न लगना, थकान महसूस होना और आलस्य हर समय बना रहता है । सभी प्रकार की जांच करायी है । सब ठीक है । कृपया कोई उपचार लिखें ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह और रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद लें । छह माह नियमित औषधि सेवन करें ।

एस. के. थापा, नेपालगंज ।

प्रश्न : उम्र पैंतीस साल है । अविवाहित हूं । मूत्र बार-बार आता है । कभी-कभी जलन होती है । चिपचिपा पदार्थ भी कभी-कभी निकलता है । बहुत से चिकित्सकों से इलाज कराया । कोई लाभ नहीं हुआ । कृपया कोई सलाह दें ।

उत्तर : तीन ग्राम वृहद बगेश्वर रस की तीस मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह शहद से लें । चंद्रप्रभा वटी एक-एक रात दूध से लें। तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

कर्पूर राणा, काठमांडू (नेपाल)

प्रश्न : उम्र २६ साल है । मल द्वार पर खारिश है । भूख बहुत लगती है, किंतु सेहत नहीं बनती । चेहरा पीला नजर आता है, ताकत की बहुत सी दवा ली पर लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : कृमिमुद्गर रस एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । विडंगारिष्ट एक-एक चम्मच भोजन के बाद पियें । मीठी वस्तुएं अधिक सेवन न करें । औषधि तीन माह नियमित सेवन करें ।

लाल बिहारी, सागर ।

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष है । सारे शरीर में हलकी-हलकी खारिश रहती है । पूरे शरीर में खुश्की है । बहुत परेशान हूं । कोई बड़ा रोग न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन जाए । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : पंचतिक्त घृतगूगल एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । सारिवाद्यासिव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । वृहद सोमराजी तेल की शरीर पर दिन में एक बार मालिश करें । आप नियमित तीन माह औषधि सेवन करें ।

श्रवण सिंह, पटियाला ।

प्रश्न : उम्र पचास साल है । शरीर हर समय जलता मालूम पड़ता है । खास तौर पर दोपहर को, जबकि यह बुखार नहीं है । अनेक बार देखा है, किंतु अनुभूति ऐसी ही होती है । कमजोरी भी है ।

उत्तर : चंदनादि लोह पंद्रह ग्राम और गिलोय सत्व दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम और मुक्ताशुक्ति पिष्टी दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें फिर दोपहर-रात शहद से लें । तीन माह नियमित औषधि सेवन करें ।

रामदुलारी, रोहतक ।

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । एक साल से बराबर खांसी बनी रहती है । कभी-कभी बलगम निकलता है । दवा लेने से थोड़े समय के लिए आराम मिलता है ; किंतु फिर वही स्थिति बन जाती है । डॉक्टर सभी कुछ ठीक बताते हैं ।

उत्तर : तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम, चंद्रामृत रस दस ग्राम और टंकणभस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

आर. के. शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । शिक्षाविद हूं । याददाश्त बहुत अच्छी थी, किंतु अब उस तरह याद नहीं रहता । अपने आप में खिन्नता महसूस होती है ।

उत्तर : शंखपुष्पी चूर्ण आधा-आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । सारस्वतारिष्ट एक चम्मच, अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद पियें । ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

शशि, रतलाम

प्रश्न : उम्र ३६ साल है । पिछले दस साल से बराबर जुकाम बना रहता है । मौसम बदलते समय बढ़ जाता है । कभी-कभी गले में खराश हो जाती है । शरीर में दर्द अकसर रहता है ।

उत्तर : त्रिभुवन कीर्तिरस दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । लक्ष्मी विलास एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें । शीतल पेय व दही का परहेज कर एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें ।

एस. मोहम्मद, भोपाल

प्रश्न : उम्र २८ साल है । दुर्घटना में पांव की हड्डी टूट गयी थी । वह सभी तो ठीक हो गया, किंतु हलका-हलका दर्द बना रहता है । कमजोरी भी लगती है । कृपया साधारण दवा लिखें ।

उत्तर : लाक्षादि गूगल एक वटी और चंद्रप्रभावटी एक, सुबह-रात दूध से लें । औषधि तीन माह नियमित सेवन करें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरायेदार बनें, मजे करें

● शशांक अत्रे

कभी पढ़ा था, "मूर्ख मकान बनवाते हैं और बुद्धिमान उसमें रहते हैं ।" बस ! तभी से बुद्धिमान अर्थात किरायेदार हूं । पत्नी ने कई बार कहा भी कि इस तरह किराये के मकान में किस तरह गुजरेगी, पर मैंने यह सोचकर उसकी बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया कि वैसे भी यह मुझे मूर्ख समझती है, फिर इसकी बात मानकर मूर्खता का सार्वजनिक प्रमाणपत्र क्यों हासिल करूं ?

मैं अपने अनुभव के आधार पर यह विश्वास के साथ कह सकता हूं कि किरायेदार बने रहने में मजे ही मजे हैं ।

अगर आपके पास अपना मकान है तो एक ही मकान में लगातार रहकर आप बोर भी हो सकते हैं, पर अपना मकान छोड़कर कहीं जा भी तो नहीं सकते । इसके विपरीत यदि आप किरायेदार हैं तो बिना किचन के एक कमरे में, वन रूम सेट में, टू रूम सेट में या ३-४ कमरों के आलीशान फ्लैट में, अलग-अलग लोकेशंस में आप अपनी मरजी से रह सकते हैं । जी में आये तो ग्राउंड फ्लोर का मकान चुनें या थर्ड फ्लोर का । किराये का मकान थोड़ी कोशिश करने पर हर जगह मिल जाता है ।

यदि आप समझदार किरायेदार हैं तो छुट्टियों में कभी भी आपके सामने बोर होने की नौबत नहीं आएगी । जिस प्रकार एक समझदार मकान मालिक एक किरायेदार को मकान किराये पर देकर चुपचाप नहीं बैठ जाता वरन सदैव ज्यादा किराया दे सकनेवाले की तलाश में रहता है, एक समझदार किरायेदार भी कभी चुप नहीं बैठता, वरन हर छुट्टी में घूम-टहलकर सस्ते और अच्छे मकान की तलाश में रहता है । ऐसा किरायेदार कभी मुश्किल में नहीं पड़ता । मकान मालिक की धौंस में वह कभी नहीं आता और जब चाहे तब से मकान खाली कर चला जाता है । इस प्रकार वह अपनी छुट्टियों का उपयोग भी करता रहता है, घूमता-फिरता रहता है और साथ ही मकान की समस्या को भी कभी गंभीर रूप नहीं लेने देता ।

माह दो माह में मकान बदलते रहने से अत्यंत अल्प अवधि में ही आपको कई मकानों में रहने का तजुरबा हो जाता है, और फिर तजुरबा चाहे किसी भी चीज का क्यों न हो, बेकार थोड़े न जाता है । यदि एक मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माह दो माह में मकान बदलते रहने से अत्यंत अल्प अवधि में ही आपको कई मकानों में रहने का तजुरबा हो जाता है, और फिर तजुरबा चाहे किसी भी चीज का क्यों न हो, बेकार थोड़े न जाता है । यदि एक मकान बदलने से आपको केवल चार नये आदमियों से परिचय हो तो शीघ्र ही आपको जाननेवालों की संख्या हजारों में होगी । इससे आपकी रिपुटेशन कुछ तो बढ़ेगी ही ।

बदलने से आपका केवल चार नये आदमियों से परिचय हो तो शीघ्र ही आपको जाननेवालों की संख्या हजारों में होगी । इससे आपकी रिपुटेशन कुछ तो बढ़ेगी ही ।

बार-बार मकान बदलते रहने से घर के कबाड़ से भी मुक्ति मिलती रहती है, या यूं कहें तो ज्यादा ठीक रहेगा कि कबाड़ कभी घर में इकट्ठा होने ही नहीं पाता

किराये का मकान होने की वजह से आपको अतिथियों, रिश्तेदारों आदि से मुफ़ में छुटकारा मिल जाता है । वे कभी भी आपके यहां महीनों ठहरकर आपके ऊपर बोझ नहीं बन सकते । आप आसानी से यह कहकर छुटकारा पा सकते हैं कि छोटा-सा किराये का मकान है, किसी आदमी को सुलाने-बिठाने की जगह ही नहीं है । समझदार आदमी के लिए इशारा ही काफी होता है, वह इतने में ही समझ जाएगा ।

अनुभवी किरायेदार बन जाने पर आप किराये पर मकान दिलाने का 'पार्ट टाइम जॉब' भी कर सकते हैं । एक क्षेत्र विशेष में १००-२०० मकान बदलकर रहने के बाद आपको सभी मकान मालिकों के नाम, अपेक्षित किराया और उनके मकानों के गुण-दोष 'टिप्स' पर हो जाएंगे । बहुत-से मकान मालिक ऐसे होंगे जो किरायेदारों की तलाश में होंगे और बहुत-से किरायेदार मकान की तलाश में । आप किरायेदारों को एक मकान से दूसरे में 'शिफ्ट' कराने का धंधा शुरू कर दीजिए । मकान मालिक और किरायेदार दोनों आपसे खुश रहेंगे और बदले में आप दोनों से अपना कमीशन वसूल कर सकते हैं । इस कमीशन से ही आप अपना सारा खर्च निकाल सकते हैं । बस ! आपमें थोड़ी-सी अकल होनी चाहिए ।

एक लंबे अरसे से मैं किरायेदारी के ये सारे मजे कर रहा हूं । इसलिए आज तक न तो मैंने कभी अपना मकान बनाने की सोची है और न ही भविष्य में ऐसी मूर्खता करने की कोई संभावना है । मैं तो यही कहूंगा कि अगर आपके पास अपना कोई मकान हो तो उसे बेच डालिए या किराये पर उठा दीजिए, ताकि कोई और किरायेदारी के मजे कर सके और आप खुद किराये के मकान में रहकर मेरी तरह मजे करिए । कहिए, आपका क्या खयाल है ?

—म.नं.— १७६ ए,
वार्ड नं. ३,
महरौली, नयी दिल्ली-३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकारनामे

बृज किशोर शुक्ल

जिस तरह भोपाल में मुसलिम ढाबों में खानसामे छोटी-सी लोई से गजभर की रुमाली रोटी बना लेते हैं वैसे ही आम बररकाट भोपाली बात को एक बार खींचना शुरू करते हैं तो बस खींचे ही चले जाते हैं । पुरखों के कारनामे प्रायः उनकी बातों के मुख्य मुद्दे हुआ करते हैं । एक बार ऐसी ही एक महफिल में शामिल होने का अवसर मिला । चांदनी रात में बड़ी झील के किनारे कमला पार्क में बैठकर ठंडी हवाओं का आनंद लेते-लेते बातों-बातों में पुरखों के शिकारनामे, मुद्दे बन गये । शफीक मियां ने फरमाया—

'मियां जहां आज टी. टी. नगर है व्हां पेले जंगल हुआ करता था । जाहिर है व्हां शेर भी रिह्या करते थे । अब जनाब जब शेर करीब होगे तो शिकारी भी चलेई आते हैं । अब हमारे दादाजान तो लोग बताते है मियां मै नई के रिहा बंदूक लेके ही पेदा हुए थे । एक दिन शिकार पे निकल गये । खां कया बताएं, हमारे मरहूम अब्बा हुजूर केते थे, जेसई दादा जान मचान पर चढ़े कि शेर दहाड़ा । दादा-जान की बांछें खिल गयीं बस साहब ! शेर की तो शामत ई आ गयी । आवाज की तरफ दादाजान देखा और गोली दाग दी । यकीन मानो मियां शेर टें ई तो हो गया । मालूम मियां गोली दो सौ गज से दगी थी और निशाना बे चूक बैठा । इससे पेले भी... रशीद भाई ने उसे टोकते हुए कहा—मियां खून दिये जा रिहे हो यार बेपरफी । मियां हमारे बुजुर्गवार भी कोई कम तो थे नहीं । बीस ही होंगे । उनकी सुनोगे तो खां उंगलीच चबा जाओगे । अब्बा हुजर केते है चालीस छाती ओर नोकदार मूंछें ऐसा लगे कि दूसराई शेर आ गिया हो शेहर में । शिकारी ऐसे कि उनके नाम से जंगल थरथराये । बस मियां एक दिन दिया बत्ती के टेम उने सूझी शिकार करें । बैड मास्टर चौराहे पर खड़े थे वईं से पेदल निकल लिये । खुदा की कुदरत कि मियां एक पेले से बंधा मचान मिल गया । बस जा बैठे उसी पर । तब्बई शेर आ गिया । तब दादाजान को खियाल आया अरे खां बंदूक तो घरेई रेगई । अब्ब ! पर जिस पे खुदा मेहेरबान वोई पेलवान । पजामें की जेब में एक गोली मिल गयी । बस फिर क्या था । खुदा नाम लिया ओर जोर लगाके शेर के तरफ जो फेंकी तो शेर सोचे कि ये किया बला है । ना खिटका हुआ न धमाका और गोली चल गयी । बस जनाब भाग ही तो लिया । मियां विक्टोरिया के जमाने की गोली बस यूं समझो कि पीछे पड़ गयी । अब मुकाबिला शुरू हो गिया कबी शेर आगे तो कबी गोली आगे । एक नुक्कड़ पर जंगल का राजा मात खा गिया और गोली उसके जिसम को फोड़ के अंदर घुस गयी । गोली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर ओर दम बाहेर । क्या गजब पंद्रह फीट को शेर था ! खां दादाजान ने कंधे पर लादा और मील भर पैदल चलके घर आ गिये ।

इस कारनामें को सुनकर महफिल में सन्नाटा छा गया । सन्नाटे को तोड़ा सलीम भाई ने बोले, रहने दो रशीद भाई । बड़े दूर की हांक रिहे हो । कारनामें हमारे बाप दादा भी किया करते थे । शिकार के बड़े शौकीन हमारे मरहूम अब्बा हुजूर, खुदा उने जन्नत बख्शे, शिकार पर बढ़ लिये । अब मचान तो शफीक मियां के दादा जान पेलेई बांध आये थे उसी पर चढ़ लिये । तबई जंगल का बादशा आ गिया ओर अब्बा हुजूर की बल्दियत पूछने लगा । इधर अब्बा की सिट्टी-पिट्टी गुम-मियां आज तो बुरे आन फंसे चंगुल में । गोली बंदूक कुछई नई, आते भी केसे वो तो थाने में जप्त थी नए लाइसेंस के फेर में । लाइसेंस तो जेब मेंई रखा था सोचा येई दिखा देता हूं, अल्ला चायेगा तो फतै हो जाएगी । ओर मियां, अव्वा ने बताया, तरकीब चल गई । शेर को जेसेई पता लगा कि लाइसेंस दुनाली का है वो वई ढेर हो गिया ।

एक बार फिर इस कारनामे ने सन्नाटा खींच दिया ।

इस चुप्पी को तोड़ा जावेद ने जो बातें बनाने ओर खिल्ली उड़ाने में माहिर था । बोला—अरे मियां मौत हो गई । अब गिर्री भी लगा लो यार । अब बंदूक-गोली-लाइसंस से तो मियां चिड़ी खां भी शिकार कर ले इसमें केसी बहादुरी । शिकार तो हमारे चचाजान मरहूम ने किया था । जमीन पर खड़े होके आंख से आंख मिलाके ओर वो भी खाली हाथ । सूझ भी तो कोई चीज है !

सब उसकी ओर जिज्ञासा से देखने लगे ।

अब हुआ ये कि चचाजान शिकार के खातीर पोंच तो गिये जंगल में । वईं जाके पता लगा बंदूक गोली तो दूर कागज काटने का चाकू बी नही था उनके पास । सोचने लगे—सोचने लगे—सोचते रिहे किया करा जाए । पर अकल पे तो जेसे ताले पड़ गिये थे अलीगढ़ी, जंग सा लग गिया था बस चलई नी ।

चचा जान उर्दू मदरसे में उस्ताद थे । तीसरी जमात् पिढ़ाते थे और उनका शुमार अकलमंदो मे था । तमीज के कायल थे बस मियां वो तमीज की तालीम काम आ गई ।

समवैत स्वर उठा "कैसे ?"

जंगल का बादशा रुबरु खड़ा था । चचाजान को अब सूझ तो गई ही थी । शेर के पास गिये और उसके इर्द-गिर्द घूम-घूम कर मुआईना करने लिगे । शेर भी चकराया । सोचने लगा बड़े मियां शिकार वास्ते आये हैं कि दोस्ती गांठने । तबी चचाजान ने तहकीकात पूरी की ओर शेर से मुखातिब हुए—मियां बड़े बादशा बनते हो जंगल के, पर तमीज हासिल नई की अब तक । नंगेई चले आये ।'

जंगल का राजा पेले तो शरम से पानी पानी हुआ फिर उसे दिल का दोरा पड़ा ओर फिर टें हो गिया ।

सब के सब चुप . . . .

तभी माली ने आकर कहा, 'मियां गियारह बज गये, लपेटो ओर अपने दौलतखानों पर जाओ, यही तो पुलिस धर लेगी ओर लपेटे में आ जिओगे ।'

— ई-७/८८,
अशोक सोसायटी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहानी आज भी महाराजा अनूपसिंह के कला-साहित्य व संस्कृति प्रेम के साथ जुड़ी है । महाराजा अनूपसिंह मुगल सम्राट औरंगजेब के समकालीन थे । महाराजा ने औरंगजेब की सेना में सेनानायक के रूप में दक्षिण भारत के कई अभियानों में भाग लिया ।

जहां मोर धधकती चिता में कूदे थे

● अशफाक कादरी

वह बीकानेर के कला प्रेमी शासक महाराजा अनूपसिंह की चिता थी । महाराजा के निधन के समाचार के बाद राजघराने के निर्देशानुसार यह चिता विशेष रूप से तैयार की गयी थी । महाराजा की मृत्यु से चितास्थल के आसपास का माहौल गमगीन था । कुछ समय पश्चात जब महाराजा की शवयात्रा वहां पहुंची, तो वहां लोगों के नेत्र छलछला गये । धार्मिक क्रियाकर्म के पश्चात महाराजा के पार्थिव शरीर को चिता पर रखा गया और कुछ समय पश्चात अग्नि प्रज्जवलित की गयी । कला-साहित्य की रक्षा करनेवाले शासक की चिता अग्नि से धधकने लगी और उनका शरीर पंचतत्व में विलीन होने लगा, तभी आसपास के पेड़ों से मोर चिता में कूदने लगे । शोकाकुल लोगों के नेत्र आश्चर्य से फटे रह गये । देखते ही देखते दर्जनों मोर धधकती चिता में कूद कर स्वाहा हो गये ।

यह कहानी आज भी महाराजा अनूपसिंह के कला-साहित्य व संस्कृति प्रेम के साथ जुड़ी है । महाराजा अनूपसिंह मुगल सम्राट औरंगजेब के समकालीन थे । महाराजा ने औरंगजेब की सेना में सेनानायक के रूप में दक्षिण भारत के कई अभियानों में भाग लिया । अपने युद्ध अभियानों में उन्होंने हमेशा कला, साहित्य, संस्कृति से जुड़ी विरासत की रक्षा की । उस जमाने में वे संस्कृति की सैंकड़ों पुस्तकें, संगीत-नाटक की पांडुलिपियां, प्रतिमाएं, कलाकृतियां बीकानेर लाये थे, जो बीकानेर की समृद्धि का प्रतीक बने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराजा अनूपसिंह के चिता-स्थल पर उनकी स्मृति में छतरी निर्मित की गयी, वह कला की दृष्टि से यादगार बन गयी । १६९८ ईस्वी में निर्मित इस छतरी में ८ छोटे गुंबद बने, जिनमें ४ मुगल शैली और ४ राजपूत शैली के हैं । इनके बीच में मुख्य गुंबद है । छतरी की गोल छत बेलबूटों से सजी है । टुलमेरा बालुई लाल पत्थर से निर्मित छतरी के आधार, खंबों पर सुंदर नक्काशी की गयी है, मुख्य गुंबद पर श्रीकृष्ण की बांसुरी बजाते हुए नृत्य मुद्रा में चित्र उकेरा गया है । साथ में विभिन्न वाद्य-यंत्र बजाते हुए गोपियां देखी जा सकती हैं । बीच में फूल-बेलों और गमलों की कढ़ाई उकेरी गयी है । महाराजा अनूपसिंह की वह अंतिम विश्राम उसकी स्मृति में गुंबददार स्मारक बनवा दिया जाता है, जिन्हें छतरी कहा जाता है ।

वहां बीकानेर के पांचवें शासक कल्याणमल से लेकर महाराजा करणीसिंह तक की छतरियां बनी हुई हैं जो स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है, साथ में वह परिवेश इतिहास तथा उस युग की रोचक कथाएं समेटे हुए है । छतरियां टुलमेरा के लाल बालुई पत्थरों तथा मकराना के सफेद संगमरमर से बनी हुई हैं । यह छतरियां कल्याण सागर नामक तालाब के चारों ओर स्थित हैं । इसके सामने ही देवीकुंड सागर स्थली सागर की छतरियों में अवस्थित है ।

बीकानेर से पूर्व में सात किलोमीटर दूर बीकानेर जयपुर मार्ग के दायीं ओर पुरोहितान गांव के समीप सागर की ऐतिहासिक व कलात्मक छतरियां हैं । प्राचीन तालाब देवीकुंड सागर के समीप होने के कारण वे सागर की छतरियां कहलाती हैं, दरअसल वे बीकानेर राज-परिवार के सदस्यों की अंतिम विश्राम स्थली है । सदियों से यहां बीकानेर राजपरिवार के सदस्य का निधन होने पर अंतिम संस्कार किया जाता रहा है और बाद में चितास्थल पर तालाब है, जिसके चारों ओर मंदिर व

बीकानेर राजपरिवार की छतरियां

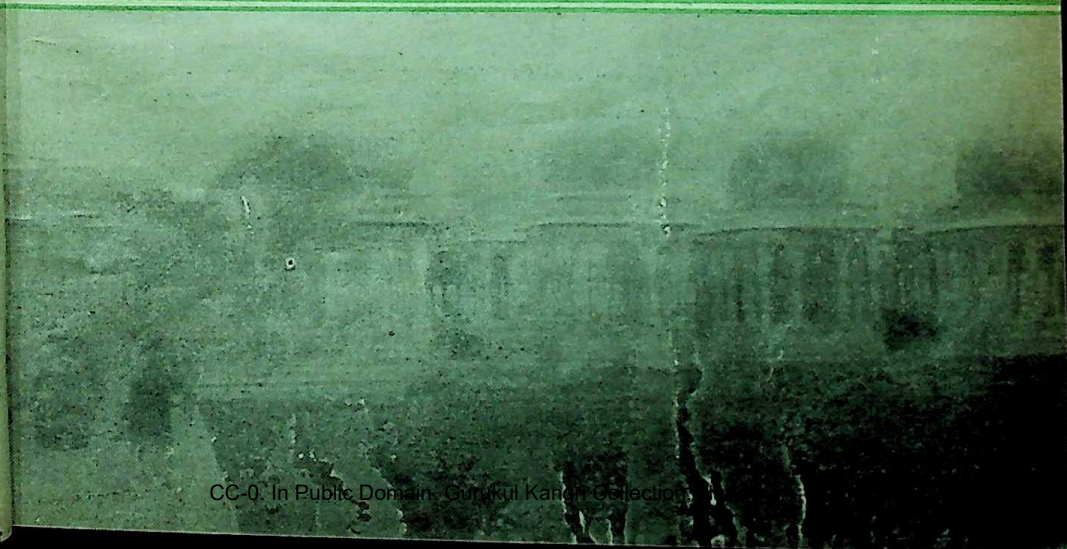

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजप्रासाद हैं । तीन भागों में विभाजित परिसर में राजा और राज परिवार की छतरियों के दो भाग हैं तथा तालाब से परे भैरोसिंह, जो महाराजा गंगासिंह के चाचा थे, के परिवार के स्वर्गवासी सदस्यों की छतरियां हैं । इसके अलावा सेविकाओं, पातुरों की भी छतरियां बनी हुई हैं । जो तत्कालीन सामाजिक परिवेश के साथ इतिहास के गर्भ में छुपी ऐसी कहानियां समेटे है, जो अब विस्मृत हो चुकी हैं ।

महिला व पुरुष छतरियों में अंतर :

सागर की छतरियों में पुरुष व महिलाओं की छतरियों में स्पष्ट तौर पर अंतर देखा जा सकता है । पुरुषों की छतरियां आमतौर पर बड़ी और भव्य हैं और उन पर संगमरमर के लंबवत शिलालेख लगे हैं, जिन पर राजा का नाम, पदवी, अलंकारों समेत खुदा है ।

सबसे बड़ी छतरी :

मुख्य परिसर में बनी हुई छतरियों में महाराजा गजसिंह की वि. सं. १८४४ में बनी छतरी सबसे विशाल है । इस छतरी के सभी १६ खंबों पर कलात्मक खुदाई की गयी है । इसका आधार चौकोर है । खंबों पर राजपूत व मुगलशैली के गुंबद देखे जा सकते हैं ।

सबसे ज्यादा गुंबद :

छतरियों में सबसे ज्यादा गुंबद वि. सं. १७९२ में निर्मित महाराजा सुजान सिंह की छतरी में नजर आते हैं । इसमें १३ गुंबद हैं । इसका आधार लाल पत्थर से बना है । इसमें फूल-पत्ती की शानदार नक्काशी है ।

छतरी से टपकता दूध :

कहा जाता है कि महाराजा गंगासिंहजी की पत्नी वल्लभ कुंवर की छतरी से दूध टपकता था । रानी की छतरी बनने के बाद ही उसके कलश से दूध टपकने की बात महाराजा तक पहुंची, तो उन्होंने कलश तुड़वाया, लेकिन उसमें कुछ भी नहीं मिला । दोबारा कलश बनने के बाद फिर दूध टपकने लगा । उसे फिर खुदवाया गया, मगर कारण नहीं दिखा था । सात बार यही प्रक्रिया होने के बाद महाराजा गंगासिंह को स्वप्न में रानी वल्लभ कुंवर ने कहा कि मेरे मृत पुत्रों का नाड़ा मेरी छतरी के पास बनवा देने से छतरी से दूध का स्राव रुक जाएगा । दोनों मृत पुत्रों का नाड़ा वहां बनवाने के बाद दूध का स्राव बंद हुआ ।

जीवनकाल में बना स्मारक का प्रारूप :

आधुनिक बीकानेर के निर्माता महाराजा गंगासिंह की छतरी सफेद संगमरमर की बनी है । इसके गुंबद में चार छोटे झरोखे हैं, अंदर कृष्ण और मीरा के चित्र बने हुए हैं । कहते हैं कि महाराजा ने अपने जीवनकाल में ही अपनी

रानी वल्लभकुंवर की छतरी

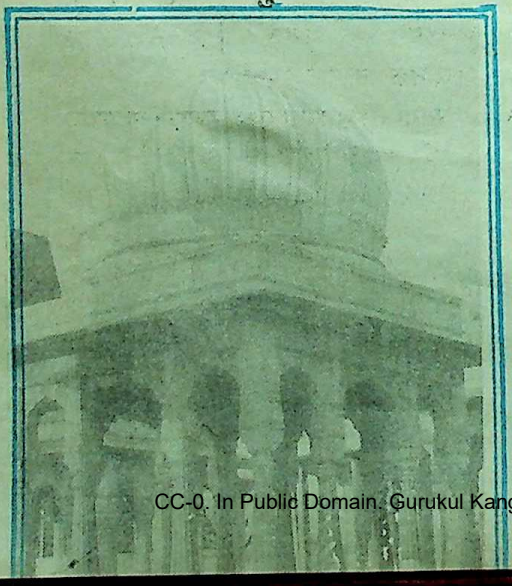

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छतरी का प्रारूप बनवाया था । उसमें २४ खंबों पर विशालकाय कलश बनाने की योजना थी । इस छतरी के नक्शे की दो प्रतियां बनवायी गयी थीं, एक प्रति उनके निवास लालगढ़ पैलेस तथा दूसरी प्रति सागर के पुरोहित परिवार के पास रखी गयी थी । महाराजा की मृत्यु के पश्चात जब छतरी बनाने का समय आया, तो नक्शे नहीं मिले । फलस्वरूप १२ खंबों की यह छतरी बन सकी ।

देशी रियासतों के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले महाराजा सार्दूलसिंह की छतरी में गुलाबी, पीले, काले संगमरमर का उपयोग किया गया है । उनकी पत्नी सुदर्शना कुमारी व पुत्र अंतरराष्ट्रीय स्तर के निशानेबाज डॉ. करणीसिंह की छतरियों में आधुनिक कला का समावेश है ।

वि. सं. १८६२ में सकट चतुर्थी को सती हुई दीप कुंवर की छतरी श्रद्धालुओं की केंद्र बिंदु है । दीप कुंवर की याद में प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में मेला लगता है ।

जब राजा की चिता पर सेवक जला :

सागर की छतरियों में अपने राजा के साथ उनके विश्वासपात्र सेवक के स्वाहा होने के प्रमाण मिलते हैं । महाराजा राजसिंह जिनका २५ अप्रैल, १७८७ में निधन हुआ था, उनके साथ उनका सेवक मण्डावत संग्रामसिंह भी जिंदा चिता पर जला था । महाराजा की छतरी पर अंकित शिलालेख में उस सेवक की बात लिखी है ।

कल्याण सागर :

छतरियों के बीच में कल्याण सागर नामक तालाब है । जिसका निर्माण राव जैतसिंह के

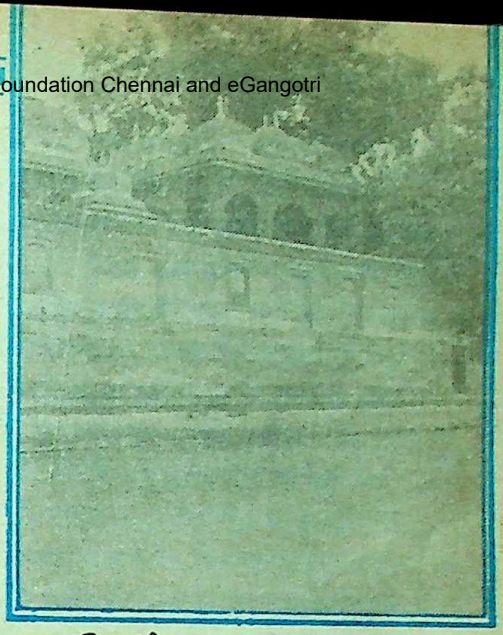

छतरियों का प्रतिबिम्ब

समय हुआ था । यह तालाब गरमियों में सूख जाता है मगर इसमें बनी हुई एक कुंडी वर्ष भर भरी रहती है, इसका जल ज्यैष्ठ मास में भी शीतल रहता है ।

रहस्यमयी सुरंग :

कल्याण सागर तालाब के समीप ही एक सुरंग बनी हुई है । इस सुरंग के मुहाने को पत्थर व कांटों से ढका हुआ है । इसके ओर-छोर का आज तक पता नहीं है ।

सागर की छतरियां महज राजाओं के स्मारक ही नहीं, वरन् तत्कालीन कला-साहित्य, परिवेश व इतिहास की धरोहर हैं । इनकी देखभाल का काम सदियों से सागर के पुष्करणा पुरोहितों के जिम्मे रहा है । पुरोहितों के त्याग और परिश्रम से ही इस रूप में स्थित है, आवश्यकता है इनके समुचित विकास, संरक्षण व प्रोत्साहन की । तभी वह इतिहास कायम रह पाएगा ।

— महल्ला चूनगरान,
बीकानेर-३३४००५ (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कचरा फेक गयी

● मंजु ज्योत्स्ना

चमचमाती इमारत, चिकना-चिकना फर्श, फिसलती दीवारें, कदम रखते झिझक होती कि कहीं दाग न पड़ जाए । बेगम अपनी निगरानी में झाड़ू लगवाती, पोछा कराती, गर्द झड़वातीं, उनकी पैनी निगाह से अंदर का कोई कोना गंदगी छिपा ही नहीं सकता । यह क्रम न जाने कब से चला आ रहा है, फिर भी हर दिन कुछ-न-कुछ कूड़ा इस इमारत से निकलता है, कुछ ऐसा कूड़ा जिसकी प्रतीक्षा में बाहर चौपाये सुबह से बैठे ऊंघते रहते, कुछ ऐसा कूड़ा, जिसके लिए कुछ ललचायी आंखें झपटने को आतुर हाथों को फटे बोरे थामने के लिए विवश किये रहतीं । ऐन छह बजे सुबह ठेलेवाला आता, उसमें कूड़ा डाला जाता, वहीं कूड़ों का बंटवारा होता और शेष मलबे को लेकर ठेलेवाला चला जाता । उसे वह कहां फेकता न कोई जानता था न किसी को जानने की फुरसत थी, लेकिन मैं जान गयी । जिज्ञासा थी और संयोग भी हुआ कि मैं जान गयी ।

तो सुनिए । रोज दफतर जाते वक्त मैं गली का मुआयना करती जाती कि कूड़ा-कचरा कहां फेका जाता है । गली में निकलते ही कचरे पुष्प की तरह स्वागत करते बिखरे रहते । पुष्प होते तो सुगंध प्रसारित करते, लेकिन आखिर कचरा ही थे— नाक पर रुमाल रखकर निकलना पड़ता और पुष्प-रेणु पर पग रखने की कल्पना न कर कचरा-कचरा से सावधान पग बचाते चलना पड़ता था । यह कचरा तो फेका हुआ-सा भी नहीं लगता, नहीं, नहीं ! फेका जाता तो कचरे का ढेर बनता और तब उम्मीद की जाती कि नगर निगम की अपनी कर्त्तव्य-चेतना का प्रमाण देती— कचरा उठाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जन्मसिद्ध अधिकार का प्रयोग करती घनघनाती हुई एक गाड़ी आएगी । वह कचरा उठाने का विफल प्रयास करेगी ।

हां तो कह रही थी गली से किसी तरह बचते-बचाते यानी खुद बचते और कचरे को बचाते मुख्य सड़क पर आती हूं । अब आप कहेंगे कचरे को क्यों बचाती हूं, भई सुरक्षा पर ही तो अपने कपड़ों की, चप्पलों और पैरों की स्वच्छता निर्भर करती है, अन्यथा... ! हां तो अब मुख्य सड़क पर मुझे ऑटो-रिक्शा लेनी है, लगता है आज इनकी हड़ताल है । रिक्शा का किराया दस गुणा । चलो कुछ दूरी पैदल ही तय की जाए ।

मैं देशवासियों की इस विशिष्टता के प्रति श्रद्धानत बढ़ती गयी, सोचती गयी हमारे लोग कितने सफाई पसंद हैं, सबके घर, सबकी दुकानें, हम सबकी होटलें, हर अपनी चीज और हर अपनी जगह कितनी साफ-सुथरी है । यदि इसी तरह हरेक व्यक्ति अपनी चिंता करे, तो देश का विकास खुद-ब-खुद हो जाएगा । हम अपना सारा व्यक्तिगत, पारिवारिक और प्रतिबंधित कचरा सड़क के अगल-बगल और कभी ज्यादा हो जाए या ज्यादती करके सड़क पर ही डाल जाते हैं । सड़क सरकार की है, सरकार जाने । सड़क सार्वजनिक है, कचरा भी सार्वजनिक— वहां तेरा-मेरा का कोई झगड़ा नहीं, फेके हुए कचरे में 'व्यक्तिगत' का कोई लेबल नहीं लगा है । अब सरकारी चीज है अतः उसके पड़े रहने, उठाने या फेके जाने आदि की परवाह कर के क्यों समय का, बुद्धि का दुरुपयोग किया जाए । जिसके घर से जितना कचरा-कूड़ा निकला वह उस घर की संपन्नता का प्रतीक भी है न ! जो कटहल खाएगा वही बताएगा कि उसने घरवालों को कटहल खिलाया है । आबादी के कुछ अंश को दो जून रोटी नहीं मिलती तो न मिले भई । मेरे यहां तो खाने का मतलब है कि थाली में छूट जाए या बाहर फेकने की नौबत आ जाए । आपको बागवानी का शौक है ? नहीं है तो कैसे समझेंगे, हमारे पास जमीन है हम उसका सदुपयोग करते हैं । घर के चारों ओर हरियाली बनी रहे, खुशबू बिखेरते रंग-बिरंगे पुष्प हों । भई, हमें तो 'एस्थेटिक सेन्स' है आपको वह है कहां, और, जब बाग लगाएंगे तो झाड़-झंखाड़

रोज दफतर जाते वक्त मैं गली का मुआयना करती जाती कि कूड़ा-कचरा कहां फेका जाता है । गली में निकलते ही कचरे पुष्प की तरह स्वागत करते बिखरे रहते । पुष्प होते तो सुगंध प्रसरित करते, लेकिन आखिर कचरा ही थे— नाक पर रुमाल रखकर निकलना पड़ता और पुष्प-रेणु पर पग रखने की कल्पना न कर कचरा-कचरा से सावधान पग बचाते चलना पड़ता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटे हुए, सड़े हुए पौधे क्या अपनी सीमा में संजोएंगे, इन कचरों के लिए सड़क जिंदाबाद । भई हम केले का फल खाएंगे, पौधे तो नहीं, पौधा काटा सड़क पर फेका । टूटे घड़े का क्या करें, सड़क पर । सड़क की उदारता देखिए, हर टूटी-फूटी, सड़ी-गली चीजों को स्थान देती है, देना ही पड़ता है विरोध कैसे करे । विरोध ! आपका नल टूटा बेचारे की छाती पर प्रहार हुआ सड़क का अंजर-पंजर ढीला हुआ और मलहम-पट्टी की भी व्यवस्था नहीं । सार्वजनिक होने का दर्द वह न जाने कब से सह रहा है, एक सरकार ही है जो उसका दुःख-दर्द समाप्त कर सकती है, लेकिन सड़क भी सरकार के फाटक पर ही समाप्त हो जाती है, फाटक के अंदर घुस नहीं सकती । उसकी समस्या अपनी है, मैंने उसे देखने-सुनने से इनकार कर दिया, क्योंकि इतने अधिक बुद्धिजीवी हो जाने से मेरे भी सार्वजनिक हो जाने का खतरा पैदा हो जाता । अतः चुपचाप देखती-सुनती-समझती चलती गयी । उस दिन तो किसी तरह रिक्शे से दफ़र पहुंच गयी । रोज का यह सिला लगा रहा । अपनी पैनी निगाह से ठेलेवाले और उसका कूड़ा ढूंढ़ती रही । एक सप्ताह के पश्चात अपने मकान की दूसरी गली में एक परिचित के यहां जाने का सुअवसर मिला । बिजली नहीं थी, सामने बरामदे में हम दोनों बैठकर बातें करने लगीं । इतने में उन्होंने कहा— "अरे-अरे फिर यहां फाटक के नजदीक इतने सटकर कूड़ा डाल दिया । सब प्लास्टिक, कागज उड़कर फाटक के अंदर आ जाता है ।"

दूसरे घर की नौकरानी जो कूड़ा डालकर जा रही थी 'झांसी की रानी' नाटक की तर्ज पर कहने लगी— "यहां न डालूं तो क्या पानी में हेलकर अंदर डालूं, जाओ मेरी मालकिन से जो कहना है कहो ।" फिर आगे बढ़कर रुक गयी । कूड़े की बाल्टी रखकर, फिर पलटकर लड़ने की पूरी मुद्रा में उसने कुछ ऐसा कहा कि लगा उस मैदाने-जंग में कूड़ा फेकनेवाली ने जो वीरतापूर्ण कार्य किया वही प्रशंसनीय है । मकान की बगल की खाली जमीन, वर्षा के पानी से भरी पड़ी थी । सुविधानुसार वहीं कूड़ा डाला जाता था, लेकिन उससे कहीं अधिक सुविधा थी कि सड़क पर ही डाला जाए । तब कूड़े फेकनेवाले को कूड़ों से कोई डर नहीं रहता । अगल-बगल के घरों को भले ही परेशानी हो और मैंने देखा वही ठेलेवाला बड़े इत्मीनान से कूड़े का ठेला लेकर आया और उसी खाली जमीन में कूड़ा डालकर चला गया । कूड़े से तो पहचानना मुश्किल था, पर कूड़ेवाले से मैंने कूड़े को पहचान लिया । इमारत का कचरा वहीं फेका जाता था । मेरे परिचित परिवार को इन सबका दर्द हर दिन झेलना पड़ता है । और चोरी उस पर सीना जोरी कि वह कचरा फेंक गयी और गालियों का कचरा भी उछाल गयी ।

— १० ए/पी.एन. बोस
कंपाउंड लालपुर,
रांची-८३४००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक ऋचाओं से आज तक होली

● डॉ. सत्यदेव आजाद

मानव के सांस्कृतिक उन्नयन का इतिहास संभवतः कृषि के विकास का इतिहास है। आखेट की खोज में भटकते हुए मानव को धरती की भरण क्षमता का ज्ञान ही उसके सांस्कृतिक अभ्युदय का प्रथम सोपान है। यही कारण है कि भारतीय त्यौहार कृषि तथा ऋतुओं से संबंधित रहे हैं।

यद्यपि दुःख, शोक व रोदन हमारे जीवन का स्पर्श अवश्य करते हैं तदापि लय-ताल पर थिरकते उसके आनंद को वे विगलित नहीं कर पाते। कविवर रवींद्र नाथ टैगोर ने फाल्गुनी सूर्य की आभा को प्रियालिंगन मधु-माधुर्य स्पर्श बताते हुए कहा है, "सहस्र मधु मादक स्पर्शी से आलिंगित कर रही सूरज की इन रश्मियों ने फाल्गुन के इस बसंत प्रातः को सुगंधित स्वर्ण में आह्लादित कर दिया है। यह देश हंसते-हंसाते मुसकराते चेहरों का देश है।" होली मुक्त स्वच्छंद हास-परिहास का पर्व है। यह संपूर्ण भारत का मंगलोत्सव है। फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को आर्य लोग जौ की बालियों की आहुति यज्ञ में देकर अग्निहोत्र का आरंभ करते हैं, कर्मकांड में इसे 'यवग्रयण' यज्ञ का नाम दिया गया है। बसंत में सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायन में आ जाता है। इसलिए होली के पर्व को 'गवंतरांभ' भी कहा गया है।

हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद

एक अत्यंत प्रसिद्ध पौराणिक गाथा हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद को होलिका में जलाने से संबंधित है।

रत्नावली में हर्ष ने कौशांबी में रचित फाग का वर्णन इस प्रकार किया है— बसंतोत्सव के

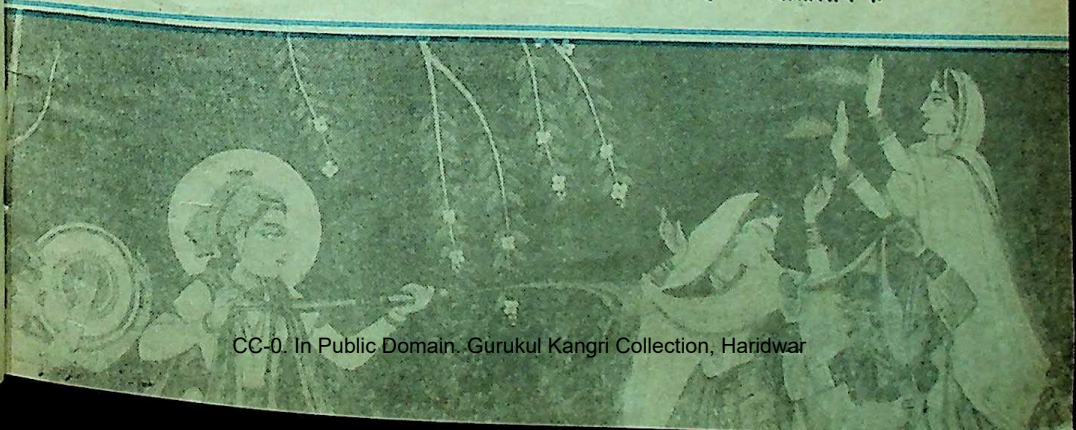

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे तो होली के अवसर पर सर्वत्र रंग, गुलाल, नृत्य, गायन, वादन, दिखायी देता है, फिर भी वस्तुतः परस्पर कलुष मिटाने और प्रेम व सौहार्द बढ़ाने का यह एक ऐसा पर्व है, जिसमें धरती और आकाश भी उल्लास से सम्मिलित हो जाते हैं । ऋतुओं का परिवर्तन और वर्ष का आरंभ भी होता है ।

अनुरूप वस्त्र धारण किये हुए राजा से विदूषक कहता है कि मकरदोद्धान में मदनोत्सव की शोभा देखिए महाराज ! उन्मादोरत कामिनियां अपने कोमल हाथों से नागरिकों पर पिचकारी से कैसे रंग डाल रही हैं । पुरुष ढप-ढोल बजाकर नाच रहे हैं । अबीर-गुलाल से दसों दिशाएं रंगीन हो गयी हैं । रत्नावली में वारविलासिनियों द्वारा भी फाग खेलने का अद्भुत वर्णन है । भागवत्-पुराण में पिचकारियों की सुंदरता का संदर्भ है । सींग के आकार की बनी होने के कारण उन्हें 'श्रंगक' कहा गया है । रघुवंश में रमणियां राजा कुश पर स्वर्ण की पिचकारी से रंग खेलते हुए संदर्भित हैं । महाकवि वाण ने कादंबरी में राजा तारापीड़ के फाग खेलने का अनूठा वर्णन किया है । भवभूति के मालतीमाधव नाटक में पुरवासी मदनोत्सव मनाते हैं । यहां एक स्थल पर नायक माधव सुलोचनामालती के गुलाबी कपोलों पर लगे कुमकुम के फैल जाने से बने सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है । राजशेखर ने अपनी काव्य-मीमांसा में मदनोत्सव पर झूला झूलने का भी उल्लेख किया है ।

होली अकबर के दरबार में

मुगलकाल में भी होली की खूब धूम रही । अकबर का हरम होली के अवसर पर रंग और गुलाल से भरा जाता था । रानियां तथा दासियां बादशाह अकबर को वहां बुलवाकर रंग से सराबोर कर देती थीं । जहांगीर के शासनकाल में होली खेलने का सविस्तार वर्णन 'मुल्क-ए-जहांगीर' में हुआ है । औरंगजेब और उसके पुत्र शाहआलम ने भी खूब होली खेली । अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर ने सन् १८५७ में होली का वर्णन करते हुए देश की स्थिति भी बतायी—

> "हिंद में कैसो फाग, मची जोरा-जोरी
> फूल तख्त हिंद बना केसर की-सी बयारी
> कैसे फूटे भाग हमारे लुट गयी दुनिया सारी
> गोलन तें गुलाल बनायो तोपन की पिचकारी ।"

अवध, मगध, मध्य प्रदेश, राजस्थान, मैसूर, गढ़वाल, कुमायूं और ब्रज सभी क्षेत्रों में होली अत्यंत उल्लास व उमंग से मनायी जाती है । ब्रज में तो इसे होली नहीं 'होरा' कहते हैं । बरसाना की लठामार होली और दाऊजी का हुरंगा जनमानस पर अनूठी छाप छोड़ते हैं ।

होली का यह पावन पर्व भारतीय संस्कृति में अनादिकाल से परस्पर संगठन का संदेश देता हुआ जीवन में उल्लास व उमंग भरता रहा है ।

—२३१३, अर्जुनपुरा डीगगेट, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

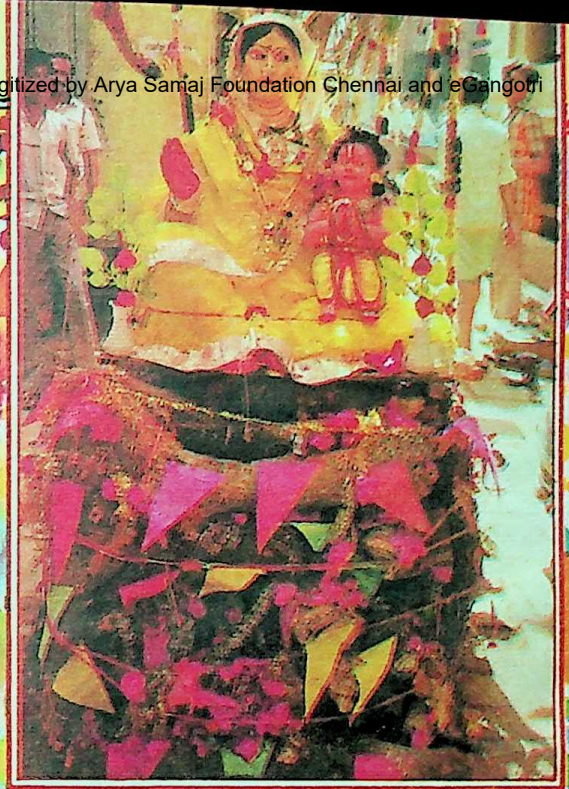

भारती: बनाउन

होलिकादहन

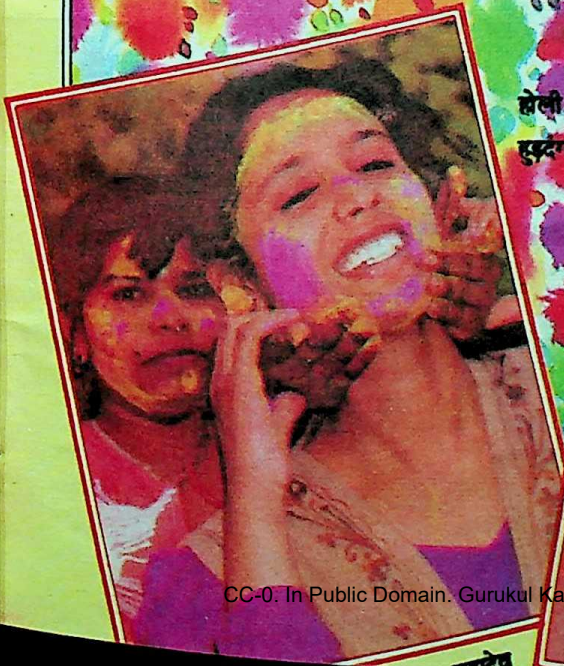

होली का हुड़दंग

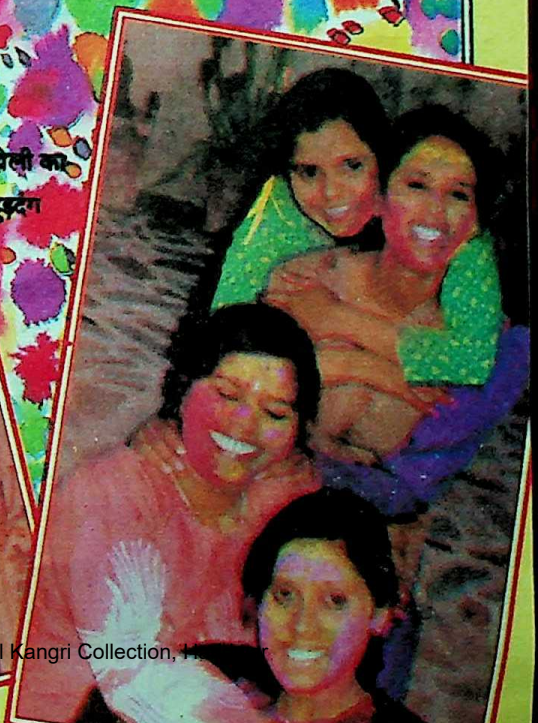

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

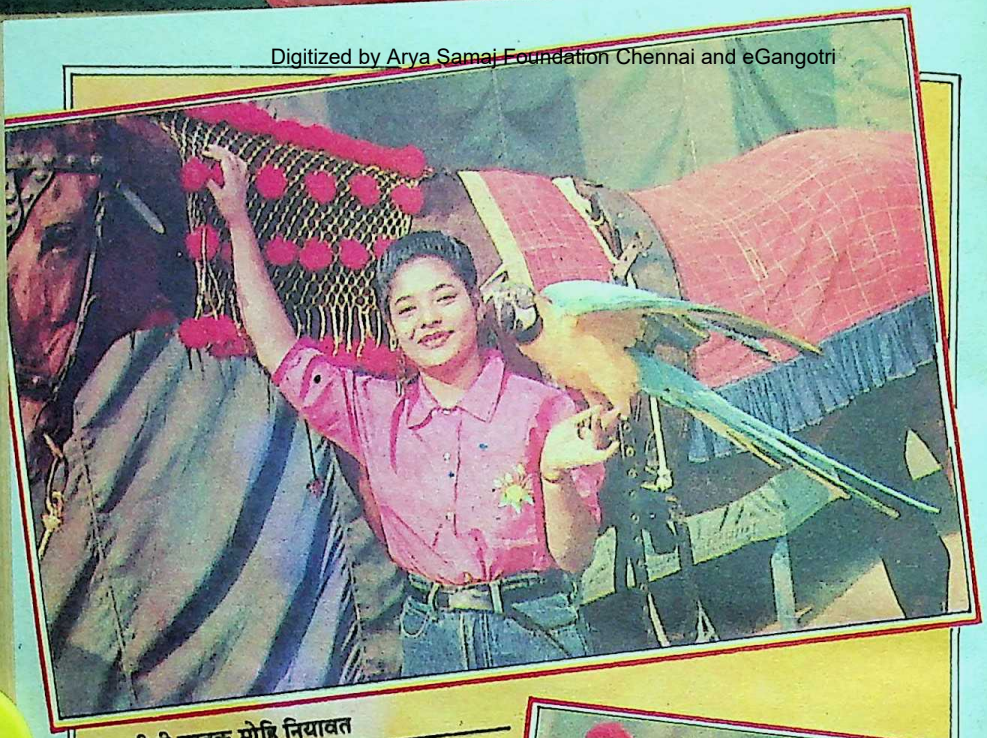

सखी री चातक मोहि नियावत

चिड़ियों के रूप-रंग व सौंदर्य, विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, आकर्षक उड़ान तथा मधुर गान से सभी को आनंद की अनुभूति होती है। बाहरी खेलों तथा व्यवसायों में पक्षी प्रेक्षण का अपना महत्त्व है। घरेलू कौआ, गौरैय्या, मैना तथा बुलबुल से सभी परिचित हैं। मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है। सारस, कौंच तथा हिमालय के गिद्ध जहां देश के सबसे बड़े पक्षी हैं, वहीं फुल वुक्की सबसे छोटी चिड़िया है। फैजैंट कुल के पक्षी जहां रंग-बिरंगी

खोल बहुरंगी पंख विहग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कामदेव का पक्षी तोता

● डॉ. डी. एन. तिवारी

सजावट की दृष्टि से अत्यंत सुंदर होते हैं वहीं शकरखोरा चिड़िया चित्ताकर्षक है ।

गानेवाली तथा बोलनेवाली चिड़ियों में बुलबुल, मालावार विस्लिंग थ्रश, श्यामा, पहाड़ी मैना एवं तुइया तोता प्रमुख हैं । अधिकांश चिड़ियों की भाषा सरल ध्वनियों तथा मुद्राओं के रूप में होती है, जिससे वे आपस में संपर्क करती हैं और आनंद, खतरा, चेतावनी, निमंत्रण तथा अन्य सरल प्रतिक्रियाओं की सूचना देती है ।

पृथ्वी पर पायी जानेवाली पक्षियों की जातियों की कुल संख्या ८६०० के लगभग है, परंतु उपजातियों एवं भौगोलिक जातियों को यदि गिना जाए, तो यह संख्या ३०,००० तक पहुंचेगी ।

चिड़ियों की उपयोगिता

हानिकारक कीटों के विनाशक के रूप में

कीटों की ३०,००० से अधिक जातियां हैं तथा उनकी प्रजनन शक्ति इतनी अधिक है कि यदि उन्हें मारा न जाए तो वे भूमंडल के अधिकांश पौधों को सफाचट कर सकते हैं । पक्षी इन हानिकारक कीड़ों को खा जाते हैं तथा उनके अंडों, लारवा एवं बच्चों को सफाचट कर जाते हैं । टिड्डी नाशक पक्षियों में सफेद स्टॉक का प्रमुख स्थान है । कीटमारकों के विनाश में पक्षियों के योगदान का अनुमान इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि एक युवा पक्षी अपने भार से अधिक भार के कीड़ों को २४ घंटे में खा जाते हैं । इस प्रकार पक्षी कीड़ों के नियंत्रण में प्राकृतिक साधन के रूप में काफी प्रभावशाली हैं ।

कृषि-नाशकों के विनाशक के रूप में

उल्लू, केस्टेल, बाज तथा अन्य शिकारी पक्षी चूहों एवं छछूंदर का सफाया कर देते हैं, जो कि कृषि के विनाशक हैं । उल्लू तथा अन्य दिवाचर शिकारी पक्षी चूहों तथा पतंगों का ही आहार करते हैं । इस प्रकार वे कृषि तथा वानिकी की सुरक्षा में लगातार अपना योगदान देते हैं ।

पारिमार्जक के रूप में

गिद्ध, चील और कौवे पारिमार्जक के रूप में हमारी सहायता करते हैं । अकाल तथा जानवरों में महामारी फैलने के समय लाशों की सफाई गिद्धों द्वारा ही की जाती है ।

फूलों के निशेचन के रूप में

पन्नडुब्बी (डाइवर) कुल के बहुत-सी पक्षी परागण को एक फूल से दूसरे फूल तक ले जाने में सहायक होते हैं । पुष्प-पक्षी (फलावर वर्ड) केवल मधुरस पर ही जीवित रहते हैं । मधुरस तक पहुंचने के लिए पक्षियों का अग्रसिर या कंठ परागकोश से स्पर्श करता है । इस तरह सुनहरे परिपक्व परागकण पक्षियों के परों में लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं और जब वह दूसरे फूल पर जाकर बैठते हैं, तब यह कण परिपक्व स्टिगमा तक पहुंच जाते हैं । इस तरह निशेचन की क्रिया होती है ।

बीज विक्षेपक के रूप में

बीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने तथा पौधों को फैलाने में पक्षियों का विशेष योगदान है । चंदन का बीज मुख्यतः बुलबुल तथा वार्वेट पक्षियों द्वारा फैलाया जाता है । पक्षियों ने जहां अच्छे किस्म की प्रजातियों के बीज का फैलाव किया है वहीं, लंटाना एवं लौरेंथस के बीजों को फैलाकर एक समस्या खड़ी कर दी है ।

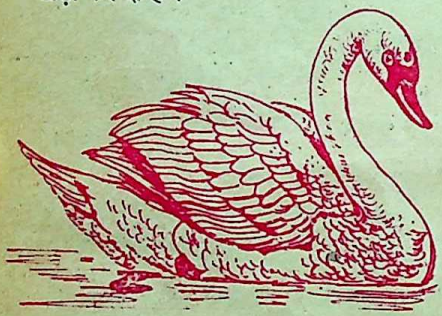

मनुष्य के भोजन के रूप में

तीतर, बटेर तथा अन्य शिकारी पक्षियों को जाल द्वारा पकड़ा जाता है अथवा बंदूक द्वारा मारा जाता है । इसके अलावा तरह-तरह की बहुत-सी चिड़ियों को पकड़ा एवं बेचा जाता है ।

चिड़ियों के घोंसले व्यापारिक दृष्टि से उपयोगी हैं । इनसे भी लोगों को पर्याप्त आमदनी मिल जाती है ।

चिड़ियां केवल लाभदायक ही नहीं अपितु, हानिकारक भी हैं । वे मनुष्य की खेती, बगीचों, उद्यानों तथा सब्जी के पौधों को नष्ट कर देती हैं । वे कई लाभकारी कीड़े-मकोड़ों को खा जाती हैं और मछली तथा मनुष्य के आहारवाले अन्य जीवों का शिकार करती है । पालतू पशुओं में रोग फैलानेवाले परजीवी तथा विषाणुओं के लिए वे वाहक परपोषी का काम करती है और प्रजनन द्वारा इनको दूर-दूर तक फैलाने में सहायक होती है । वे हानिकारक पौधों तथा घासों के फूलों का निशेचन करती हैं तथा उनके बीजों को फैलाती हैं । फिर भी हानि की जगह लाभ अधिक होने से लोग इनकी रक्षा तथा संरक्षण पर ध्यान देते हैं ।

पक्षियों का धार्मिक महत्त्व

अनेक देवी-देवताओं के वाहन पक्षी हैं, जिन्हें ग्रंथों एवं चित्रों में दर्शाया गया है । विभिन्न पक्षियों से संबद्ध देवी-देवता इस प्रकार हैं—

पक्षी	देवी-देवता
कलहंस (बतख)	ब्रह्मा
हंस	सरस्वती
गरुड़	विष्णु
मोर	कार्तिकेय, सरस्वती
तोता	कामदेव
उल्लू	लक्ष्मी
बाज	शनिदेव

नरसिंह पुराण में पक्षियों को खाने के लिए मारना एवं भूनना पाप माना गया है—

पक्षी दग्धं सुदुर्बुध्दे पापात्मन् सामप्रतं वृथा ।
वृथास्नांन वृथा तीर्थ हुतम ।।

(नरसिंह पुराण-१३.४४)

अर्थात्, अरे, पापी यदि तू किसी पक्षी को भूनता है तो तेरा पवित्र नदियों में स्नान करना, तीर्थ-यात्रा, पूजा-पाठ और यज्ञ करना सब व्यर्थ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पातंजलि के युग में कौवों से संबंधित विज्ञान— वायुविद्या बहुत लोकप्रिय थी । सुदूर आकाश में स्वर्ग की सीमा के भीतर तक उड़कर पहुंचने की उनकी योग्यता के कारण ऐसा कहा जाता है कि कौवे अज्ञात सत्य तथा भविष्य को भी जान सकते हैं ।

चिकित्सा शास्त्र (आयुर्वेद) में पक्षियों द्वारा मनुष्यों को स्वास्थ्य लाभ कराने तथा प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने हेतु आवश्यक माना गया है । वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत तथा संस्कृत के महाकाव्यों में विभिन्न पक्षियों का वर्णन है ।

महाकवि कालिदास ने मोर, चक्रवाक, हंस, क्रोंच, कोयल, चातक, पारावत, तोता, हारीत, सारिका, बलाका, गरुड़, श्येन, गृध, कुररी, कंक, सारस तथा अन्य पक्षियों का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है ।

हिंदी साहित्य में पक्षी

अपने रंग-बिरंगे परों तथा पंखों, सुहावने रूप-रंग, विभिन्न प्रकार की उड़ानों और मधुर संगीत द्वारा पक्षियों ने कवियों का ध्यान आकर्षित किया है ।

गोसाईं तुलसीदास ने अनेक पक्षियों का वर्णन किया है । पपीहा के संबंध में उन्होंने लिखा है—

ऊंची जाति पपीहरा, पियत न नीचों नीर
कै जांचे घनस्याम सो, कै दुख सहै सरीर

कौवे के संबंध में कवि का मत है—

वायस पालिय अति अनुरागा
होहिं निरामिष कबहुं कि कागा

वर्षाकाल प्रारंभ होते ही मोर नाचने लगते हैं । भगवान राम के मुख से कवि ने कहलवाया है—

लछिमन देखहु मोरजन नाचत वारिद पेखि

वर्षाकाल के अंत होते ही खंजन पक्षी दिखने लगते हैं । तुलसीदास ने इनका वर्णन किया है— **वर्षा विगत शरद ऋतु आई**
लक्ष्मन देखहु परम सुहाई

जनि शरद ऋतु खंजन आये
पाई समय जिमि सुकृत सुहाये

कहा जाता है कि चिड़िया तो मनुष्य के बिना रह सकती है लेकिन मनुष्य चिड़ियों के बिना सूना महसूस करता है । चीन में चिड़ियों की कमी वहां के पर्यटकों को अत्यधिक महसूस होती है । सुबह तथा शाम यदि चिड़ियों का झुंड दिखायी न दे एवं उनका कलरव सुनायी न पड़े तो सूनापन तो होगा ही ।

मुनियों के पुनीत आश्रम का वर्णन करते हुए तुलसीदासजी ने लिखा है—

कुहू कुहू कोकिल धुन करहीं
सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं

चक्रवाक पक्षी से वनों की शोभा बढ़ती है । तुलसीदासजी ने इस प्रकार वर्णन किया है—

चक्रवाक वक, खग समुदाई
देखत वनई वरनि नहिं जाई

महाकवि सूरदास ने पक्षियों का वर्णन करते हुए सूरसागर में लिखा है—

केकी, कोक, कपोत और खग करत कुलाहल भारी
मानहुं लै-लै नाऊं परस्पर, देत दिवावत गारी
कुंज-कुंज प्रति कोकिल कूजति, अति रस विमल बढ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनु कुल वधू मिलय भई गृह-गृह गावतिं अटन चढ़ी ।।

खंजन पक्षी का वर्णन करते हुए सूरदासजी कहते हैं—

खंजन नैन रूप रस माते,
उड़ि-उड़ि जात, निकट श्रवनन के,
उलटि-पुलटि तांडुक फंदाते ।

पपीहा सूरदास के शब्दों में विरहिनों के लिए कितना सहायक है—

सखी री चातक मोहि जियावत
जैसेहि रैनि रटत हौ पिय-पिय तैसेहि पुनि पुनि गावत,
अतिहि सुकंठ दाहु प्रीतम की तारु जीभ न लावत,
आपु न पिवत सुधारस सजनी विरहिन वोल पियावत ।
जो ए पंछि सहाय न होते प्राण बहुत दुख पावत,
जीवन सकल सूर ताही को काज पराए आवत ।

महाकवि केशवदास ने अपने महाकाव्य रामचंद्रिका में लिखा है—

तरु तालीस, तमाल, ताल हिंताल मनोहर ।
मंजुल वंजुल तिलक लकुच कुल नारिवेल वर ।।
एला ललित लवंग, संग पुंगीफल सोहे ।
सारी सुक कुल कलित चित्र कोकिल अलि मोहे ।।

कवि बिहारी ने कोयल के विषय में लिखा है—

वन वागन पिक वट परत की विरहिन मत मैन,
कुहो कुहो कहि-कहि उठत करि करि राते नैन ।

कवि बिहारी ने कबूतर के संबंध में लिखा है—

पट पाखैं भखु कांकरे, सपर परेई संग,
सुखी परेवा पुहुमि मैं, तू ही एक विहंग ।
ऊंची चितै सराहियत, गिरह कबूतर लेत,
दृग पुलकित, पुलकित वदन, तनु पुलकित कहि देत ।

दशहरा पर नीलकंठ का दर्शन करना अच्छा माना गया है । कवि बिहारी ने लिखा है—

कालि दसहरा बीतिहैं, धरि मूरख जिय लाज,
दुर्‌यो फिरत कत द्रुमन में नीलकंठु विन काज ।

कई पक्षी तो ऋतुराज बसंत के मानो अंग समान हैं । विद्यापति लिखते हैं—

आएल रितु पति राज वसंत,
धाओल अलि कुल माधवि पंथ ।
दिनकर-किरण भेल पोगंड,
केशर-कुसम धवल हेमदंड ।
नृप-आसन नव पीठल पात,
कांचन कुसुम छम धरु माथ,
मौलिक रसाल मुकुल भेल ताम,
समुखहि कोकिल पंचम गान ।
सिखि कुल नाचत अलिकुल यंत्र,
द्विज कुल आन पद आसिस मंत्र ।

कवि पद्माकर कोयल की कूक पर लिखते हैं—

ए ब्रज चंद्र चलो किन वा ब्रज,
लूकैं बसंत की ऊकन लागी,
त्यों पद्माकर पेखों पलासन,
पावक सी मानों फूंकन लागीं ।
वे ब्रजवारी विचारी वधू वन,
बावरी लौं हिए हूकन लागीं ।
कारी कुरुप कसाइन ये सु,
कुहू कुहू कवेलियां कूकन लागी ।

विंध्य के अंचल में लोककवि ईसुरी फाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गा रहे हैं—

जे जो जौन बाग में बोले
सबद कोकिला कोंले ।
सुनके संत भये उन्मादें,
भसम अंग में घोलें ।
फैल रहे रितुराज ईसूरी
सुमन खजाने खोले ।

भारतेंदु ने पक्षियों का वर्णन इस प्रकार किया है—

कूजत कंहु कलहंस, कहूं मज्जत पारावत,
कहुं कारंडव उड़त, कंहु जल-कुक्कुट धावत,
चक्रवाक कहुं बसत, कंहू वक ध्यान लगावत,
शुक पिक, जल कहुं पियत, कहुं भ्रमरावलि गावत
कहुं तट पर नाचत मोर, बहु शोर विविध पक्षी करत,
जलपान न्हान करि सुख भरे, तट शोभा सब जिय धरत ।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने पक्षियों के चहकने की नकल की है—

संध्या का झुट पुट,
वृक्षों का झुरमुट
चहक रही चिड़िया
ट्वी-टी-टुट्-टुट ।

सुमित्रानंदन पंत ने ग्रामों की शोभा वर्णित की है—

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से लद गई आम्र तरु की डाली ।
झर रहे ढांक, पीपल के दल, हो उठी कोकिला मतवाली ।

कवि निराला ने पक्षियों से प्रभावित होकर लिखा—

बड़े नयनों में स्वपन
खोल बहुरंगी पंख विहग से ।

कवि डॉ. मुकुटधर पांडेय ने लिखा है—

छोटे-छोटे झरने, जो बहते सुखदाई,
जिनकी अद्भुत शोभा सुखमय होती भाई ।

पथरीले पर्वत विशाल वृक्षों से सज्जित
बड़े-बड़े बागों को जो करते हैं लज्जित ।
लता विटप की ओट जहां गाते हैं द्विजगण,
शुक मैना हरीत जहां करते हैं विचरण ।

बुलबुल के संबंध में शायर अकबर ने लिखा है—

आलम को लुभाती है पियानों की सदाएं
बुलबुल के तरानों में अब लय नहीं आती ।

कवि शेली ने लिखा है—

परियों तथा पक्षियों की बातें,
मुझको जिनके स्वर भाते हैं ।
आत्मा एवं गुणों का वर्णन,
करे सार्थक मेरा जीवन ।

सभी भाषाओं के कवियों ने अपनी कविता में पक्षियों व सहारा लिया है । पक्षी भी चाहते हैं कि वे सभी का मनोरंजन करें, परंतु स्वतंत्र रहें ।

हम स्वतंत्रता के जाये हैं, मुक्त हमें रहने दो
जीवन की धारा में मानव, स्वेच्छा से बहने दो ।

— भूतपूर्व महानिदेशक,
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,
बंगला नं.-९, न्यू फारेस्ट, देहरादून-२४८००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली का हुड़दंग : व्यंग्य-काव्य के संग

श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते... !

● संयोजक—जगदीश किंजल्क

होली के इस रंगभरे माहौल में आयोजित इस हास्य-व्यंग्य काव्य गोष्ठी में सभी पाठकों का अभिनंदन है । आप जानते हैं श्रीमान उल्लू हमारे देश की संस्कृति के अभिन्न अंग हैं और परम सम्माननीया लक्ष्मीजी के वाहन हैं । आज के युग में लक्ष्मी की सत्ता सर्वोच्च है, सर्वोपरि है । इसलिए आज की इस काव्य गोष्ठी को श्रीमान उल्लू पर ही केंद्रित किया गया है । समूची दुनिया, एक-दूसरे को उल्लू बनाने में जुटी हुई है । इस प्रयास के पीछे उद्देश्य है— लक्ष्मी को पाना । सामान्य तौर पर उल्लूजी से कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता । हां, उनके चढ़ते रिश्तेदार बनकर, उन्हें उल्लू बनाकर, लक्ष्मी-प्राप्ति का मार्ग अवश्य प्रशस्त किया जा सकता है । इस कारण आज देश के नेता, अभिनेता, लेखक, कवि, अधिकारी, कर्मचारी, तस्कर, बदमाश सभी में यह होड़ लगी है कि वे श्रीमान उल्लू के 'जीजाश्री' अर्थात् बहिनोई बन जाएं तो उनका उद्धार हो जाए । आज की इस अति विशिष्ट गोष्ठी में मैंने कुछ ऐसे ही 'उल्लू- बहनोइयों' को यहां सादर आमंत्रित किया है सलामी बल्लेबाज के रूप में मैं आमंत्रित कर रहा हूं शाहजहांपुर के प्रसिद्ध व्यंग्यकार भाई दिनेश रस्तोगी को —

श्री दिनेश रस्तोगी (शाहजहांपुर)

मैं देश के तमाम उल्लुओं के श्रीचरणों में अपना प्रणाम अर्पित करते हुए तथा इनके

संयोजक भाई जगदीश किंजल्क की प्रतिभा और क्षमता की प्रशंसा करते हुए अपनी रचना प्रस्तुत कर रहा हूं—

सोने के बंगले में सोकर खर्राटे भरते
अपने बाथरूम तक में फिर ए.सी. लगते
संत्री से मंत्री तक अपना पानी भरते
लक्ष्मी क्या विष्णुजी भी हमसे खुश रहते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते... ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी घोटाले सारे, कभी न होते
हर मंत्री का पेट रुपइयों से भर देते
अरबों-खरबोंवाला सारा कर्ज विदेशी
जनता नहीं, उसे तो केवल हम ही भरते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते

नयी आर्थिक नीति, राव फिर नहीं चलाते
मनमोहनजी घाटेवाला बजट न लाते
देश हमारा फिर कहलाता सोन चिरैया
अमरीका इंगलैंड हमारे पैर दबाते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते

... तालियां और तालियां... । भाई दिनेश रस्तोगी का रंग तो जम गया । अब देखते हैं कटनी के भाई प्रकाश प्रलय क्या गुल खिलाते हैं । प्रकाश भाई ने देश के सैकड़ों मंचों पर रंग जमाया है, इस मंच पर जमा पायें तो बात बन जाए, आइए —

श्री प्रकाश प्रलय (कटनी)

श्रीमान उल्लूजी के जीजा होने के नाते मैं किसी को प्रणाम नहीं कर सकता । मेरी इज्जत

का सवाल है । जगदीश किंजल्क हों या आप, सभी मुझे प्रणाम करें, मेरा आशीष लें और रचना पढ़ें/सुनें —

जीवनभर हम अपनी
किस्मत पर फूट-फूटकर रोते...
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते

जिसको देखो वही हमें
उल्लू का जीजा कहता
होली रहती या दीवाली
मन उल्लू रंग में बहता
उल्लू से जुड़ता रिश्ता
तो उल्लूमय हो जाते
रात-रातभर जगना पड़ता
दिन होते ही सो जाते
उल्लू के सब क्रियाकर्म
कर मर जाते ढोते-ढोते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते

अब इस महफिल में मैं आमंत्रित कर रहा हूं अलीगढ़ के व्यंग्यकार भाई अशोक अंजुमजी को । ये भी अलीगढ़ी ताले की भांति सॉलिड व्यंग्यकार हैं—

श्री अशोक अंजुम (अलीगढ़)

कवियों की मुश्किल यह है कि हमें संयोजकों, आयोजकों के इशारों पर नाचना पड़ता है, चंद पैसों की खातिर । यदि वाकई हम 'श्रीमानजी' के जीजा होते तो जगदीश किंजल्क

के इशारे पर यह कविता तो कभी न लिखते, जो हमें लिखनी पड़ी है । बहरहाल, पेट की खातिर रचना प्रस्तुत है—

अगर दोस्त, हम जीजा होते उल्लूजी के
वह उल्लू जो लक्ष्मीजी का वाहन होता
इसीलिए फिर
लक्ष्मी से भी हो जाती पहचान हमारी
कर देतीं वह वारे-न्यारे
मिट जाते सब कष्ट हमारे
बंगला होता, गाड़ी होती
नोटों की गिनती करने को
अनगिन गिननेवाले होते
नाम से चलते
अपने अनगिन पुरस्कार फिर
और सभी उल्लू के पट्ठे
कहते फूफा— फूफा हम से
पर ये भी तो हो सकता था
कष्ट सदा जिससे हम पाते
रे ! उल्लू की जीजी के तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति होने पर
उसकी चोंच और पंजों से
होकर घायल
पड़े कहीं होते अंजुमजी पउआ पी के
अगर दोस्त हम जीजा होते उल्लूजी के

जबलपुर के आचार्य कवि आचार्य भगवत दुबे को उल्लुओं के मामलों का विशेषज्ञ माना जाता है। संभावना तो यहां तक है कि इस वर्ष उल्लू-सम्मेलन में ताज पहनाया जाएगा उन्हें। बहरहाल आचार्यजी सादर आमंत्रित हैं—

आचार्य भगवत दुबे (जबलपुर)

मैं श्रीमान उल्लू का इकलौता जीजा,

उल्लुओं के संयोजक भाई जगदीश किंजल्क को प्रणाम करता हूं और आपको भी, मेरी रचना प्रस्तुत है—

दुर्दिन में क्यों भला, अश्रु से आंखें भिगोते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते
दुल्हन बनकर आती जब वह प्रिया उलूकी
खबरें छपतीं अखबारों में नयी वधू की
ब्याह रचाकर मेरी भी किस्मत खुल जाती
घर में अजूबा बनता, पर फोटो छप जाती
एंटरव्यू के आते हर दिन मुझको ऑफर
दौड़े आते पत्रकार औ फोटोग्राफर
हम छपास का कभी न सुंदर अवसर खोते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते
मेरे घर जब उल्लू साले साहब आते
लाद पीठ पर लक्ष्मीजी को भी संग लाते
धन-दौलत, सोने-चांदी से घर भर जाता
राजनीति की वेश्या को घर पर नचवाता
सभी दलों को मैं चुनाव का देता चंदा
शोषण, भ्रष्टाचार, लूट का चलता धंधा
मदिरा में हम रोज लगाया करते गोते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते
लक्ष्मीजी के बल पर, मैं नेता बन जाता
सत्ता सुख के लिए दांव पर 'देश' लगाता
मंदिर मसजिद के झगड़े मैं नित्य कराता
वोट बैंक के लिए घृणा, नफरत फैलाता
उल्लू, कौओं, बगुलों को मिलता आरक्षण
जालसाजियों का शाला में होता शिक्षण
'पाखंडों के पंडित' बनते नाती-पोते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते

प्रख्यात ससुराल-प्रेमी, नोएडा के व्यंग्यकर्मी भाई बाबा कानपुरी नाम से बाबा हैं, पर काम से... तो आमंत्रित हैं ऐसे महत्त्वपूर्ण कवि—

श्री बाबा कानपुरी (नोएडा)

भाई जगदीश किंजल्क ने मुझे 'ससुराल-प्रेमी' की संज्ञा दी है। सच भी है, दुनिया की सर्वाधिक प्रिय चीज मेरे लिए 'ससुराल' ही है। अब यह सुख संयोजकजी

को प्राप्त नहीं है, तो मैं क्या करूं ? जरूर उनके आचरण में कुछ कमी होगी। बहरहाल रचना प्रस्तुत है—

होते दो पग गांव में, दस पग नित ससुराल
कभी घूमते शिमला, जाते नैनीताल
जाते नैनीताल साथ में होती साली
साला मेरे घर की रा करता रखवाली
बाबा कवि बर्बाद, टांग फैलाकर सोते
श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते

नरसिंहपुर के व्यंग्य-कवि डॉ. शंकर सहर्ष की मान्यता है कि वे तब दफ्तर में सोते... ! जैसे अभी न सोते हों ! बहरहाल डॉ. सहर्ष आमंत्रित हैं, अपनी रचना के साथ—

डॉ. शंकर सहर्ष (नरसिंहपुर)

इस गंभीर मुद्दे पर मैं कोई टिप्पणी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहता । कुछ कहूंगा तो संयोजक

महोदय नाराज हो जाएंगे, न कहूंगा तो आप नाराज हो जाएंगे । अतः मेरी कविता ही कुछ कहेगी—

होली में आते मजे खूब, उल्लू के जीजा होते
जगते सारी रात और दफ़्तर में सोते !
दफ़्तर में सोते, बिना लिये रिश्वत न बोलें
चाय पान के बगैर, कभी मुंह को न खोलें
उल्लू सीधा करनेवाले, पास हमारे आते
दिन की जगह रात में, सारे दफ़्तर हम खुलवाते

समापन कवि के रूप में मैं अब एक जबलपुरिया को आमंत्रित कर रहा हूं । मेरा मतलब है भाई नलिन सूर्यवंशी से । कृपया पधारें—

श्री नलिन सूर्यवंशी (जबलपुर)

नलिनजी का दृष्टिकोण, अर्थात मेरा

दृष्टिकोण इस मामले में आपसे भिन्न है । रचना भाई 'श्रेष्ठश्री' जगदीश किंजल्क संयोजकाचार्य को समर्पित है—

श्रीमान उल्लू के गर हम जीजा होते
हम गुठली तुम अनार के बीजा होते
दुर्भाग्य अगर तू होता साला
वो भी कड़का और सड़ाला
बहन दिखा के हमें फंसाता
कर शादी का घोटाला
तेरे बदले और किसी के जीजा होते
हम गुठली तुम अनार के बीजा होते

तेरी नजर है सचमुच तेज
बहन भेजता बिना दहेज
मैं मांगता हीरो होंडा
देता निश्चय साइकल भेज
तब तो तुम्हीं हमारे जीजा होते
हम गुठली तुम अनार के बीजा होते

तो दोस्तो, आपने देखा कि एक उल्लू के चक्कर में ये सारे व्यंग्य-कवि कैसे घनचक्कर बन गये ।

सब के सब उल्लू के जीजा बन बैठे, पर लक्ष्मी... इन फटीचरों के पास फटकनेवाली नहीं । भारत-जैसे मुल्क में लक्ष्मी भी और उल्लू भी उन्हीं के घर जाते हैं, जहां उनका स्वागत उन्हीं के स्तर का होता है । इन फटीचरों के यहां क्या धरा ? बहरहाल आज की इस गोष्ठी में रचनाएं अच्छी प्रस्तुत कीं इन बेचारों ने । भगवान, इनको दो-चार मंचीय कवि सम्मेलन दिलाये, यही कामना है । आपके लिए यही दुआ है कि आपको भी किसी उल्लू के जीजा बनने का सौभाग्य मिले । आमीन... ।

— सी-३, रेडियो कॉलोनी
कटंगा, जबलपुर (म. प्र.)

कीटाणुनाशक मेंहदी

मेंहदी 'लिथरेसी' कुल का पौधा है । मेंहदी के पौधे, पत्ते, फूल तथा बीज विभिन्न रोगों की औषधि बनाने में सहायक होते हैं । इसके पौधे की छाल पीलिया, बढ़ी हुई तिल्ली तथा पथरी रोग में दी जाती है । गलित कुष्ठ तथा दुःसाध्य चर्म रोगों की यह अमोघ औषधि है । संधिवात में इसके पत्तों का लेप करने से लाभ होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न गोष्ठी

सिद्धार्थ मौर्य, गाजियाबाद

● गुटनिरपेक्ष आंदोलन किन देशों ने प्रारंभ किया था ?

■ **भारत, यूगोस्लाविया और मिस्र ने, जिनके नेता क्रमशः जवाहरलाल नेहरू, मार्शल टीटो और कर्नल नासिर थे ।**

कुसुमाकर जैन, बिलासपुर

● पूर्व और पश्चिम जरमनी के बीच की दीवार कब गिरायी गयी ?

■ **यह दीवार दोनों भागों के बर्लिनवासियों की उपस्थिति में ९ नवम्बर, १९८९ में गिरायी गयी थी ।**

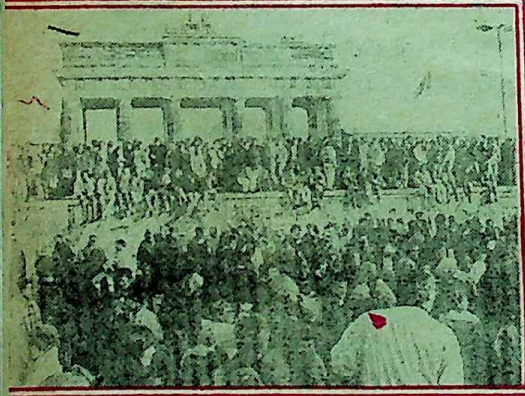

मोहन कुमार मुंजल, मथुरा

● गायकी में ठुमरी किसे कहते हैं, और यह कब शुरू हुई ?

■ **ठुमरी गायन तो आदिकाल से चला आ रहा है । इसका संबंध संभवतः राधाकृष्ण भक्ति संप्रदाय से रहा है और कथक ने इसे संवारा है । अवध के नवाब वाजिद अली शाह के समय (१९वीं शताब्दी) में ठुमरी अधिक लोकप्रिय हुई । सुप्रसिद्ध ठुमरी गायक पं. छन्नूलाल मिश्र के अनुसार 'ठुम' शब्दोंवाली गीत रचना को ठुमरी कहते हैं । चूंकि, इसकी चाल में ठुमकना-सा प्रतीत होता है अतः इसे ठुमरी कहते हैं । किंतु, ठुमकना भी सुकुमारता लिये होना चाहिए, तभी उसे ठुमरी कह सकते हैं । ठुमरी के चार प्रकार माने जाते हैं : बोल बनाव की ठुमरी, बोल बांट की ठुमरी, भाव नृत्य की ठुमरी और गत भाव की ठुमरी । चैती, कजरी और होरी भी ठुमरी के ही अंग हैं । चैती में चैत मास का वर्णन, कजरी में सावन का वर्णन और होरी म सावन तथा राधाकृष्ण की रासलीला का वर्णन मिलता है । टप्पा का प्रचलन पंजाब में है ।**

द्वारका नारायण प्रसाद, गिरडीह

● इस्त्री करने पर कपड़े की सिकुड़न क्यों मिट जाती हैं ?

■ **कपड़े पर गरम प्रेस का दबाव पड़ने से उसके रेशों का पृष्ठ क्षेत्रफल बढ़ जाता है, जिससे सिकुड़नें मिट जाती हैं ।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

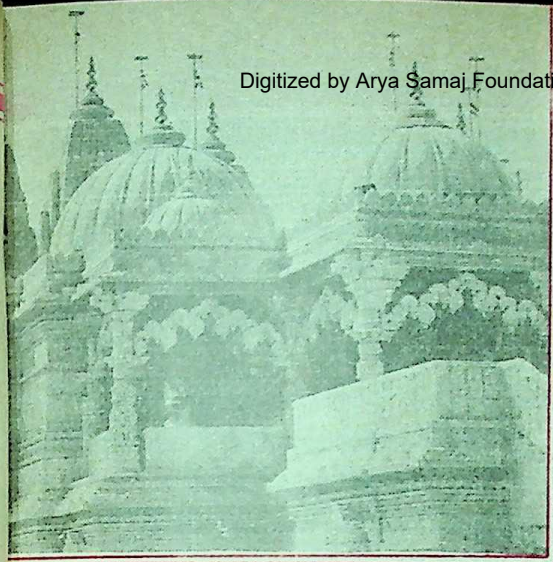

भक्त दर्शन वर्मा, कोटद्वार

● नीसडेन, लंदन स्थित मंदिर किस पत्थर का और कितने खर्च पर बना है ?

■ लंदन के निकट नीसडेन स्थित इस मंदिर का निर्माण श्री स्वामीनारायण हिंदू मिशन द्वारा किया गया है । इसकी परिकल्पना १५ वर्ष पूर्व की गयी थी । इसमें सत्रह हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं । यह मंदिर हवेली वास्तु शैली का है । ब्रिटेन के मुख्यतया गुजराती जनसमुदाय ने इसके लिए धन एकत्र किया, किंतु इसके निर्माण पर जो खर्च हुआ, वो उजागर नहीं किया गया । एक अनुमान के अनुसार बुल्गारिया के चूना-पत्थर और इतालवी संगमरमर पर ही लगभग ३० लाख पौंड, यानी १५ करोड़ रुपये खर्च हो गये होंगे । इन पत्थरों को भारत में कांडला बंदरगाह पर उतारा गया, जहां ४५० संगतराशों ने पत्थरों के २६,३०० टुकड़ों की छिलाई-घुटाई की और वहां से लंदन वापस भेजा गया । इस मंदिर के निर्माण में १,५०० कार सेवकों ने बहुत उत्साह से काम किया था । उक्त मिशन द्वारा भारत के बाहर अनेक देशों में २० मंदिर बनवायें गये हैं, किंतु नीसडेन का यह मंदिर सबसे अधिक सुंदर है ।

विकास वाजपेयी, लखनऊ

● पूर्णावतार से क्या तात्पर्य है ?

■ विष्णु के अवतार प्रायः दो प्रकार के हैं— एक, अंशावतार और दूसरा, पूर्णावतार । कलाओं के विकास अथवा भेद से अंशावतार और पूर्णावतार के स्वरूप तथा कार्यों में पार्थक्य होता है । अंशावतार में परमेश्वर की नौवीं कला से पंद्रह कलाओं तक का विकास होता है । पूर्णावतार में सोलहवीं कला का भी पूर्ण विकास रहता है ।

सचिन कुमार वैद्य, उज्जैन

● उबालने पर आलू नरम और अंडा सख्त क्यों हो जाता है ?

■ आलू स्टार्चयुक्त पदार्थ है । उबालने पर इसमें उपस्थित स्टार्च जलस्नेही होने के कारण पानी में घुलकर स्टार्च का कोलाइडी विलयन बना लेता है । स्टार्च में घुल जाने से उबाले गये स्टार्चयुक्त पदार्थ नरम हो जाते हैं । अंडा प्रोटीनयुक्त है । उबालने पर इसकी प्रोटीन रक्षक परत हट जाती है और प्रोटीन अणु परस्पर चिपककर

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कंदित हो जाते हैं और जल विरोधी होने के कारण अविलेष रहते हैं, अतः अंडा सख्त हो जाता है ।

समीर रघुवंशी, अलीगढ़

● पेट्रोल की आग पानी से क्यों नहीं बुझती ?

■ आग बुझाने के लिए आग और ऑक्सीजन का संपर्क तोड़ना आवश्यक है । पेट्रोल की अपेक्षा जल भारी होता है, जिससे वह पेट्रोल को दबा नहीं पाता और नीचे निकलकर पेट्रोल को अपनी सतह पर तैरने देता है । इस कारण पेट्रोल की आग बुझ नहीं पाती क्योंकि, उसे ऑक्सीजन मिलती रहती है । ऑक्सीजन से संपर्क तोड़ने के लिए रेत या कार्बन डाइऑक्साइड कारगर होती है ।

अभिजीत शंकर, पटना

● लिक्टैंस्टाइन कहां है ?

■ यूरोप में ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड के बीच यह एक छोटा-सा देश है । इसका कुल क्षेत्रफल मात्र १६० वर्ग किलोमीटर है । लिक्टैंस्टाइन एक संवैधानिक राजतंत्र है । इसके वर्तमान शासक प्रिंस हैंस ऐडम्स-द्वितीय हैं । वह सत्रहवीं शताब्दी में इस देश के संस्थापक जोहान ऐडम बॉन लिक्टैंस्टाइन के वंशज हैं । इस देश की आबादी ३० हजार है तथा शत-प्रतिशत साक्षरता है । जरमनी इस देश की भाषा है । इसकी संसद के १५ सदस्य हैं । पुलिस तो यहां जरूर है, किंतु सेना नहीं है । अपनी अत्यधिक विकसित अर्थव्यवस्था के कारण इस देश की प्रति व्यक्ति आय संसार में उच्चतम बतायी जाती है ।

अरविंद पाराशर, शिमला

● कोलेस्ट्रॉल क्या है ? क्या यह खतरनाक है ?

■ हमारे रक्त में पाये जानेवाले चरबीयुक्त पदार्थ को कोलेस्ट्रॉल कहते हैं । भोजन में जो फैट्स होते हैं उनसे इसका निर्माण लिवर में होता है । शरीर के रक्त में यह कई महत्त्वपूर्ण कार्य करता है, किंतु आवश्यकता से अधिक हो जाने पर यह खतरनाक भी होता है । कोलेस्ट्रॉल दो प्रकार का होता है, मित्र (एच.डी.एल. टाइप) और शत्रु (एल.डी.एल. टाइप) । मित्र कोलेस्ट्रॉल धमनियों को कड़ा होने से रोकता है और शत्रु उन्हें संकरा करता है । शरीर में इन दोनों का अनुपात २: १ होना चाहिए ।

चलते-चलते

प्रश्न : मुगलकाल में भी क्या होली मनायी जाती थी ?

उत्तर : मुसलमान भी होली खेलते थे । रसखान, रहीम आदि ने होली पर खूब लिखा और दीवानी मीरा तो नाच भी उठी थी । तब पतुरियां भी नाचा करती थीं, अब शहर की लड़कियां करती हैं और छुपती हैं किसी आदमी के आड़े हाथ न पड़ जाएं । — सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

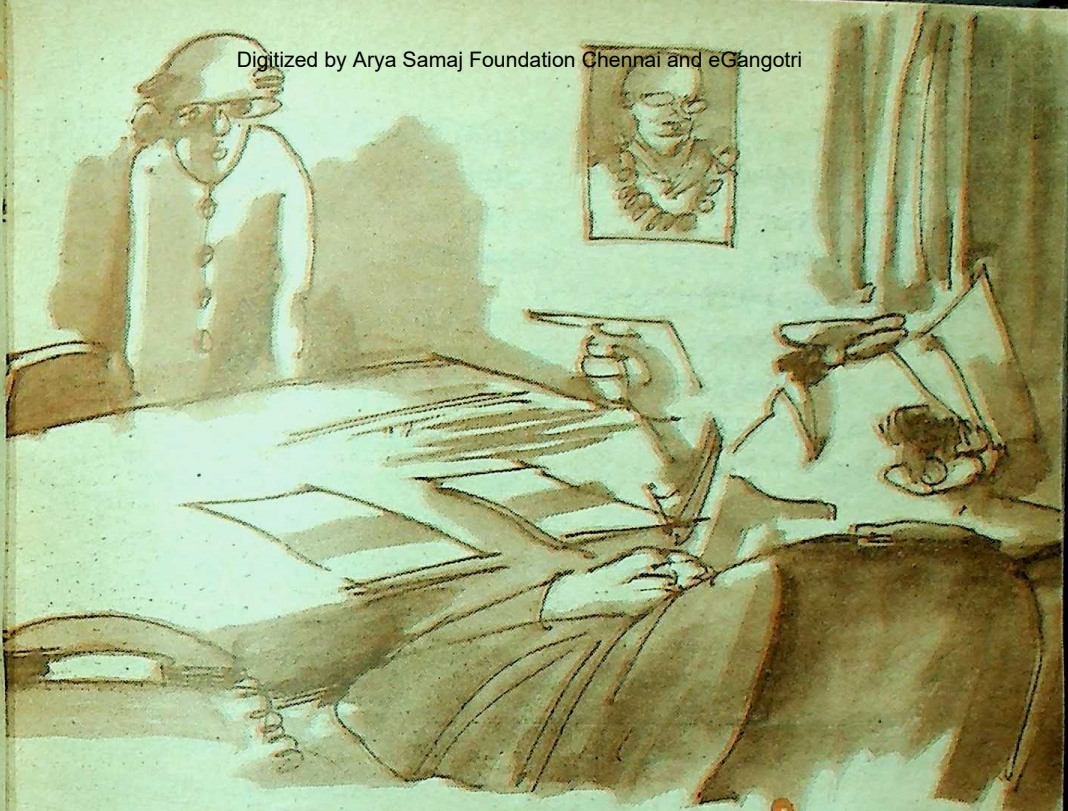

अपना नरक दर्शन

● गोपाल चतुर्वेदी

हमें बचपन से नरक की नकेल से हांका गया है। नजर सीधी रखना। इधर-उधर की हरियाली में भटके तो पाप लगेगा। फिर नरक में जाना तय है। यदि नाक की सीध में चले, मंदिर में ताक-झांक और घर में भजन-पूजन में लगे रहे, तो स्वर्ग की गुंजाइश भी है। हर बच्चा कभी-न-कभी बाप बनता है। हमने भी अपने बच्चे को पारिवारिक नैतिकता का पाठ पढ़ाने की सोची। पर पीढ़ियों का फर्क यही है। वह तुतलाये बाद में, हम से संवादहीनता उन्होंने पहले कायम कर ली। हम उनसे कुछ कहते हैं। वह बुद्धू बक्से के सामने जमे रहते हैं। बहुत इनायत की तो फिल्मी विलैन की तर्ज पर हमें मुंह बिरा दिया। हमें खुशी है। हमारे लख्ते-जिगर ने कुछ तो किया। भजन-कीर्तन से दूरदर्शन तक तो तरक्की कर गये। वरना, ज्यादातर बच्चे तो खाम-खां जिंदगीभर अपने मां-बाप का सिर खाते हैं।

सुना है कि स्वर्ग कुछ अलग है। वहां हूरें होती हैं। पर जब अपन से जमीन में छोकरी नहीं पटी तो आसमान में चांस ही क्या है ? यह भी सुना है कि ऊपर सिर्फ सूक्ष्म शरीर जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । जूते, मौजे, कमीज, पतलून, नाक-नक्श सब जमीन पर रह गया और उस पार सिर्फ जीव का तत्त्व पहुंचा तो उसमें और छिपकली-कॉकरोच में फर्क ही क्या होगा ? कैसे वह सुंदरता सराहेगा ? कैसे रूपसी से प्रेम निवेदन करेगा । कैसे मन-भावन को बांहों में लेगा ? बांहें तो पीछे छुट गयी हैं । धर्म- गुरु कुछ भी कहें । अपन को तो यकीन है कि जो है, यहां है । चाहे वह नरक हो या जन्नत ।

हम वतन की चिंता करते घर लौटते हैं और उदास हो जाते हैं । जब तक हमने साइकिल से स्कूटर तक प्रगति की, पड़ोस का राजिंदर मिनिस्टर का अतिरिक्त निजी सचिव क्या बना है कि दंद-फंद से मारुति तक पहुंच गया । सुबह हम दो पहिये के खटारा पर बरतन लटकाये दूध लाते हैं । वह जैसे हमें मुंह चिढ़ाता अपनी मारुति पर यही सफर करता है । हमारा स्टीरियो उसके सी.डी.प्लेयर के आगे शरमिंदा है । हमारा टी.वी. बिना रिमोट का है, उसका रिमोट कंट्रोलवाला । उसके घर नौकरानी और बीवी है, हमारे घर केवल पत्नी है । यह विषमता और वह भी अपने ही पड़ोसी से, कहां तक जायज है । सबसे पीड़ादायक दुर्घटना तो यह है कि उसका पप्पू पब्लिक स्कूल में पढ़ता है और हमारा लल्लू सरकारी पाठशाला में । जब बच्चे जन्म से ऐसे गैर बराबरी के वातावरण में पलेंगे तो अवसरों की समानता कैसे पनपेगी ? समाजवादी समाज के निर्माण का और हमारे संविधान निर्माताओं के सपने का क्या होगा ?

सड़क के स्वर्ग से घर और पड़ोस के इस नरक में आकर हम ग्लानि, ईर्ष्या और पश्चाताप के तंदूर में सुलग रहे हैं । क्या कोई तरकीब है कि अन्याय की व्यवस्था को सुधारा जा सके ? क्यों कोई संवैधानिक पहल नहीं की जा सकती, जिससे यह तय हो कि दो पहियेवाले एक महल्ले में रहेंगे और चार पहियेवाले दूसरे में ।

सुना है कि स्वर्ग कुछ अलग है । वहां हूरें होती हैं । पर जब अपन से जमीन में छोकरी नहीं पटी तो आसमान में चांस ही क्या है । यह भी सुना है कि ऊपर सिर्फ सूक्ष्म शरीर जाता है ।

कम से कम आदमी से आदमी की दूरी की एक खाई तो पटेगी । अपनी राय में आयकर विभाग को करों का ऐसा ढांचा बनाना चाहिए, जिससे पब्लिक स्कूल में पढ़नेवाले बच्चों के मां-बाप से अधिक कर वसूला जाए और सरकारी स्कूल के बच्चों के मम्मी-डैडी को टैक्स से छूट दी जाए । यही व्यवहार सी.डी.प्लेयर और रिमोट कंट्रोल के टी.वी. के मालिकों से होना चाहिए । इससे आपसी सौहार्द में वृद्धि होगी । व्यर्थ में लोगों का खून नहीं जलेगा । देश का भला होगा । लोग व्यर्थ के 'यह ले-ले, वह ले-ले' के चक्कर में नहीं रहेंगे ।

जब तक यह सब संभव नहीं है ऐसे आदेश तो तत्काल जारी किये जा सकते हैं कि कारवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक महल्ले में रहें और बे-कार लोग दूसरी बस्ती में । हम तो गंभीरता से सोच रहे हैं कि पड़ोसी के घर जाएं और उससे इल्तजा करें— 'राजिंदर भाईजान ! हम आपकी खुशहाली से बेहद खुश हैं । हम और आपकी भाभी अकसर यही चर्चा करते हैं कि कोई तकदीर का सिकंदर हो तो आप-जैसा हो । आपके पास तो इतना साजो-सामान है कि यह सरकारी दड़बा आपके लिए छोटा पड़ता होगा । क्यों नहीं आप मंत्रीजी से कहकर कोई बेहतर मकान हथिया लेते ।'

पर यह सब अपने खयाली पुलाव ही हैं । हम तो सरकार के नौकर हैं । वह तो मंत्री का निजी नौकर है । कहीं ऐसा न हो कि हम तो सिर्फ शब्दों के तीर चलायें और राजिंदर हमारे तबादले की कारगुजारी कर जाए । हम यकायक दार्शनिक हो जाते हैं । मौके-बेमौके दार्शनिक होना हम हिंदुस्तानियों की खास सिफत है ।

राजिंदर की गलती ही क्या है ? कलयुग तो केवल कल का युग है । लोग आज केवल कल के लिए जेबें भर रहे हैं । क्या पता अगले पल में क्या हो ? मंत्री चल बसे । सरकार गिर जाए या पद छिन जाए । कवि ने ठीक ही कहा है —

> नीति नियम के आचरण
> सब केवल हैं झूठ
> पल में परलय होयगी
> लूट सके सो लूट

ऐसे भी राजिंदर का दोष ही क्या है ? सभी गलती नीति निर्माताओं की है । क्या जरूरी था कि उधारवाद के आर्थिक सुधार के साथ उपभोक्तावाद को प्रोत्साहन दिया जाए ? संगीत का आनंद लेना है तो अपना खालिस स्टीरियो

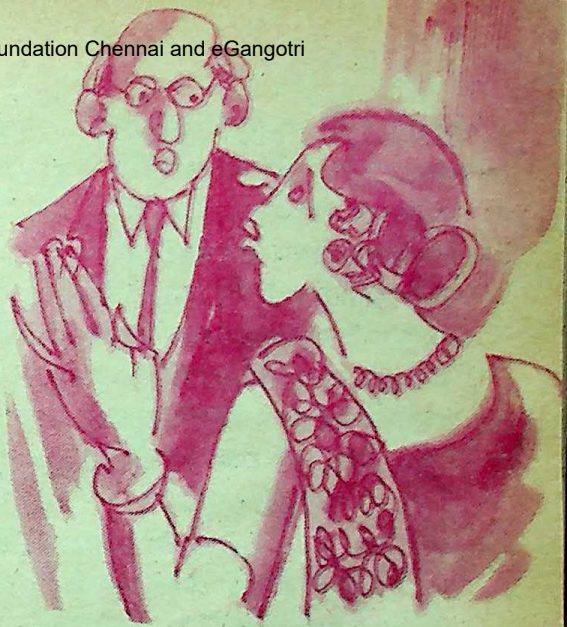

क्या बुरा है ? दूरदर्शन देखना है तो क्या रिमोट कंट्रोल अनिवार्य है । अगर चैनल बदलना है तो कुरसी से उठो । कुछ शरीर की हरकत हो, कुछ हाथ की । बैठे-बैठे सिर्फ सेहत का कबाड़ा होता है । अब हाल यह है कि लोगों में नयी-नयी चीजें खरीदने की होड़ लगी है । पेट कटे तो कटे पर बाजारू संस्कृति की आकर्षक वस्तुएं नहीं खरीदने से रुतबा तो नहीं घटे ।

भारत में शादी की संस्था इसीलिए सफल है क्योंकि, पति-पत्नी को एक दूसरे की असलियत का पता ही नहीं चलता है । हम भी अपने पड़ोसी के प्रति जलन और कुंठा को अंतर में दफनाकर बीवी के सामने साधु-संत का मुखौटा लगा लेते हैं ।

अपनी प्यारी पत्नी को अकसर हम यही समझाते हैं कि इस फालतू की प्रतिस्पर्धा में रखा ही क्या है ? अगर राजिंदर के पास वाशिंग मशीन है, तो क्या हमारे घर के कपड़े धुलते नहीं है ? ऐसे भी स्वदेशी और आत्मनिर्भरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नीति के अपने फायदे हैं । यह भी तो मुमकिन है कि भगवान कभी हमारी सुन लें । उसके कपड़े वाशिंग मशीन में पड़े हों और बिजली चली जाए । अपने बाल्टी और साबुन हमेशा भरोसे के काबिल हैं । कितना आसान है इस विधि से कपड़े साफ करना । बस,बाल्टी में झाग उठाये, कपड़े डाले, निचोड़े और सुखाये । सच मानिए, वाशिंग मशीन तो फिजूल की नवशेबाजी है । अगर अपने पास इतने पैसे होते तो हम उन्हें कतई वाशिंग मशीन या सी.डी.प्लेयर खरीदने में बर्बाद नहीं करते । हम उसे राष्ट्रीय बचत योजना में लगाते । अपनी आमदनी तो बढ़ती ही बढ़ती, राष्ट्र कल्याण भी होता । गरीबों के लिए कार्यक्रम बनते । कइयों की जेबें भरतीं ।

पर स्त्री-पुरुष में यही तो मूल अंतर है । हम तो अपना मन दर्शन से बहला लेते हैं पर पत्नी हमारी दार्शनिकता की वास्तविकता जानती है । हमने उन्हें कई बार बड़बड़ाते सुना है, 'हे प्रभु, क्यों नहीं इस राजिंदर के मंत्री का मंत्री पद छीन लेते । क्यों नहीं वोल्टेज के उतार-चढ़ाव से इसके बिजली के उपकरण भस्म कर देते । यह सब तो तुम्हारे बायें हाथ का खेल है । देर न करो भगवन ! अब पानी सिर से ऊपर जा रहा है ।' एक दिन तो उन्होंने हद कर दी ।

सुबह-सुबह हमें उठाया और प्रभु का स्मरण करने के बजाय 'सी.बी.आई.', 'सी.बी.आई.' करने लगी । यह नयी टेक अपने पल्ले नहीं पड़ी । हम आंखें मलते उन्हें ताकते रहे । उन्होंने स्वयं ही इस 'मिस्टरी' को हल किया, 'तुम तो नौकरी-पेशा आदमी हो पर हम तो आजाद हैं । क्यों नहीं हम इस राजिंदर और इसके मिनिस्टर के खिलाफ सी.बी.आई. में शिकायत लिख भेजें ।''

हमने जानना चाहा, ''उससे क्या होगा ?''

उन्होंने अपना अखबारी ज्ञान बयान किया, ''सुना है कि आजकल सी.बी.आई. बहुत चुस्त चौकस हो गयी है ।''

हम फिर भी अधजगे अंधेरे में खोये रहे, ''सबेरे-सबेरे पहेलियां मत बुझाओ ।''

''हमें विश्वास है कि हमारी शिकायत पर सी.बी.आई. इसके घर 'रेड' करेगी । फिर बच्चू को आटे दाल का भाव पता चलेगा । जेल जाए न जाए, घूस देते-देते चीं बोल जाएगा ।''

अब तक इन शाब्दिक प्रहारों से हम पूरी तरह जाग चुके थे । हमने प्रश्न दागा, ''तुम्हारा क्या खयाल है ? राजिंदर ईमानदार है या बेईमान ?''

पत्नी ने तत्काल उत्तर दिया, ''घोर बेईमान । महा भ्रष्टाचारी ।''

''फिर तुम्हारी शिकायत बेकार होगी ।'' हमने उन्हें सूचित किया ।

उन्होंने चौंकते हुए सवाल किया, ''वह क्यों ?''

हमने उन्हें समझाया, ''सी.बी.आई. जानती है कि भ्रष्ट इतने बहुसंख्यक है कि उनका सफाया नामुमकिन है, लिहाजा वह ईमानदारी का जड़ से सफाया कर रही है । जो काम आसान और संभव है, उस पर ध्यान देना ही प्रशासनिक अक्लमंदी है । ऐसे भी प्रजातंत्र बहुसंख्यकों की सरकार है । उन्हीं के लिए है । ईमानदारों का क्यों सोचे ।''

इसके बाद से उनके सिर से सी.बी.आई. का भूत तो उतर गया, पर ध्यान, भजन, पूजा-पाठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दौरान पड़ोसी फिर भी उनके जहन पर छाया रहा ।

हमने उन्हें आत्म-शक्ति का विकास करने की सलाह दी, "क्या रखा है इन भौतिक वस्तुओं में । संसार मात्र एक सराय है । आदमी को खाली हाथ आना और जाना है । क्यों हम दूसरों का सोचकर अपना खून जलायें ?"

हमारी जीवन-संगिनी ने उसे हमारा चारित्रिक दोष बताया । "तुममें महत्त्वाकांक्षा की बेहद कमी है । कुछ भाग-दौड़ करो और किसी मंत्री के साथ लग लो । फिर देखें, कैसे यह घटिया राजिंदर तुम्हारा मुकाबला करता है," उन्होंने हमें ज्ञान दिया ।

उनके लगातार उकसाने से प्रेरित होकर हमने एक नये राज्यमंत्री की चौखट पर मत्था टेका । वह जनता का दरबार लगाये हुए थे । हाथ जोड़े हमारे सामने से गुजरे । हमने उन्हें बधाई दी । उन्होंने धन्यवाद करने की मुद्रा में होंठ चलाये । हमने मौका नहीं चूका । "आपसे कुछ निजी काम है," कहकर हम उनके पीछे-पीछे हो लिये ।

हमारे पहले से उनके पीछे लगे पिछलग्गू ने हमें कोहनी मारी । हम क्यों चूकते । हमने उसके टंगड़ी लगायी । वह चारों खाने चित गिरा । कामयाबी के सतत् संघर्ष में यह हमारी पहली जीत थी । हम मंत्रीजी के दो कदम पीछे बधाई देने वालों की फूल माला संभालने लगे । मंत्रीजी 'धन्यवाद' बुदबुदाने में मगन थे कि अचानक 'जीजाजी' का करुण क्रंदन गूंज उठा । हमारी टंगड़ी के प्रभाव से पतित पुरुष उनका सगा साला था । हम अपने स्कूटर समेत कोठी से बाहर फेंक दिये गये ।

हमने भी हिम्मत नहीं हारी । दूसरे दिन हम

फिर उनकी कोठी पर हाजिर थे । साले ने हमें घूरा । मंत्रीजी ने हमें देखने तक से इनकार कर दिया । हमने साले को सत्ता की सीढ़ी बनाया । उससे गिड़गिड़ाये । क्षमा याचना की । उसकी दर्जनों कोहनी खाने का आश्वासन दिया । अपनी गाढ़ी कमाई से उसे मुरगा खिलाया और बताया, "सालेजी ! तीन-चार महीने की चांदनी है । हम सरकार में काम करते हैं । उसके तौर-तरीकों से वाकिफ हैं । एक बार मंत्रीजी के साथ लगवा दो । ऐसी सेवा करेंगे कि तुम जिंदगीभर मेवा खाओगे ।"

अगले दिन से हम मंत्रीजी के निजी सचिव हो गये । दफ़्तर में उनसे कोई मिलने का समय मांगता तो पहले हमारा दरवाजा खटखटाता । हम नाम, काम, मिनिस्टर से पूर्व परिचय जैसे सवाल पूछते । एक साहब ने कहा, "भैया । फाइल पर सबने चिड़िया बना दी है । अपने मंत्री का अंगूठा लगवा दो ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किस किस्म का केस है," हमने जिरह की। "कोई खास नहीं। बस, चार करोड़ का ठेका है", उन्होंने सूचित किया।

"मंत्रीजी के दस्तखत से पहले हमें भी केस स्टडी करना पड़ेगा। आखिर हमारे मंत्री नये हैं। यों ही दस्तखत कर कहीं से लेने के देने न पड़ जाएं," हमने अपनी वफादारी जतायी।

आये हुए सज्जन ने नाक-भौं चढ़ायी और रूठ के चल बसे।

कहां जाएंगे बच्चू ? एक-दो दिन में फिर आकर ऐड़ी रगड़ेंगे। अपने निजी सचित्व का श्रीगणेश मंत्रीजी के लिए तीन-चार लाख के इंतजाम से होगा। हम अपने निजी महत्त्व के ख्वाब देख रहे थे कि मंत्रीजी का बुलावा आया। हमने अंदर जाकर, 'यस सर' की दुहाई दी। "पलटू का फोन आया था। कौन-सी फाइल तुमने दबा रखी है और 'स्टडी' करने जा रहे हो। जल्दी लाओ 'सिगनाचूर करवाओ", उन्होंने आदेश दिया।

हम बाहर आये तो पलटू याने उनके साले उसी फरियादी के साथ हाजिर थे। हमने पलटू से अकेले में कहा, "फाइल हलाल करने से पहले उससे माल निकालना है।"

वह खिलखिलाकर हंसे और बोले, "हम कौन कच्ची गोली खेले हैं। हमने जीजाजी के चुनाव फंड में पचास हजार धरवा लिये हैं।"

"पर यह तो चार-पांच लाख का मामला है," हमने उन्हें चेताया।

"असल में, जीजाजी पुराने समाजवादी हैं। उनका उसूल है कि कम खाओ और ताल्लुकात बढ़ाओ। ऐसे भी रोज के पचास हजार का औसत क्या बुरा है ? अभी तीन-चार महीने तो हैं ही। इससे ऊपर की आमदनी आधी-आधी बांट लेंगे," उन्होंने योजना बतायी।

अगले हफ्ते चुनाव की घोषणा हो गयी। मिलनेवालों की भीड़ धूप निकलने पर कोहरे-सी छंट गयी। मंत्रीजी ने फिर यह याद फरमाया, "इधर सिगनाचूर के लिए कागज-पत्तर नहीं आ रहे हैं।"

"अब तो चुनाव आ गया है सर ! नीचेवालों ने लेन-देनवाले मामले मुल्तवी कर दिये हैं," हमने उन्हें अदब से सूचित किया।

"हमें तो आशा थी कि बाढ़ आएगी, यहां तो सूखा पड़ गया है।" वह चुनाव की चिंता में डूब गये और हम उनके और अपने भविष्य की।

हम अब भी स्कूटर से आते-जाते, जीते-जागते नरक से गुजरकर संतोष कर लेते हैं। हमें विश्वास हो चला है कि सबके अपने-अपने नरक हैं। हमें तो अपने का पता है। वह कंबख्त राजिंदर हमसे बाजी मार चुका है। उसके मंत्री स्थापित हैं। उनके यहां अब भी नये-नये डिब्बे आते हैं। उसने अभी अपना फर्नीचर बदला है। कल ही तो उसकी बीवी ने हमारी पत्नी के घाव पर फर्नीचर छिड़का था।

"बहनजी ! कुछ पुराना फर्नीचर है मसलन सोफा सैट, डबल बैड, ड्रेसिंग टेबल। आपको जरूरत हो तो हम कौड़ियों के मोल दे देंगे। आप हमारी पड़ोसन जो ठहरीं।"

पत्नी तब से उनके खिलाफ तंत्र क्रिया करवाने के लिए किसी तांत्रिक की तलाश में है।

— डी-१/५, सत्य मार्ग
चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-११००२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं जैसे ही कमरे में घुसा, मां ने अल्टीमेटम दे दिया— "या तो शादी कर लो या फिर कोई कामवाली ढूंढ़ लाओ । मुझसे अब चौका-बरतन नहीं होता ।"

मैं तुरंत घरवाली का स्थानापन्न ढूंढ़ने निकल पड़ा । पहले चरण में मैं अपने मित्र के पास पहुंचा और उसे अपनी व्यथा बतलायी ।

उसने मुझे आश्वस्त किया । बोला, "घर जाकर आराम करो । कामवाली पहुंच जाएगी ।"

मैं संतुष्ट होकर लौट आया । मां को मैंने बतला दिया कि कामवाली मिल गयी है, अब रिश्ते ढूंढ़ने बंद कर दो !

अगले दिन एक औरत-सी दिखनेवाली मेरे घर पहुंची । मां ने सोचा कि किसी कन्या की मां आयी है । मां तो नहीं समझी, पर मैं समझ गया कि कामवाली है ।

मैंने उसका अवलोकन किया । उसने जयपुरी घाघरा पहना हुआ था । बीकानेरी चुनरी ओढ़े थी । कोल्हापुरी चप्पलें पहने थी । हरियाणवी नथ धारण किये हुए थी और यू. पी. की भाषा बोल रही थी ।

हास्य-व्यंग्य

कामवाली की तलाश में

● जितेन्द्र जीतू

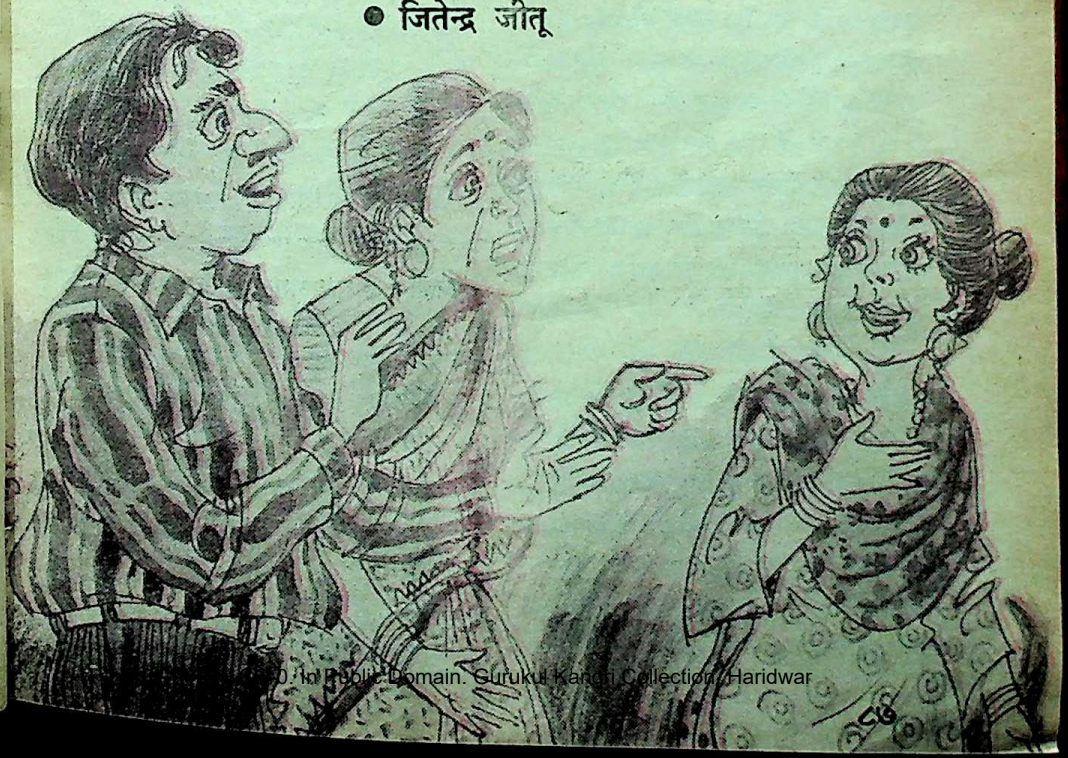

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम इन कपड़ों में बरतन मांजोगी ?" मां ने पूछा ।

"नहीं", वह शरमायी, "इन्हें तो मैं इंटरव्यूवाले दिन पहनती हूं ।"

मैं चौंका ।

मां भी नहीं समझी ।

"कौन-सा इंटरव्यू देने जा रही हो तुम ?"

"देने नहीं, लेने । लेने आयी हूं आपका इंटरव्यू", उसने मां को समझाया ।

सर्वप्रथम उसने कमरों की संख्या पूछी । फिर प्रयोग में आनेवाले बरतनों की संख्या पूछी ।

जब वह हमें गिनने लगी तो मां ने प्रतिवाद किया, "घर के प्राणियों को मत गिनो ।"

"क्यों ? क्या काम नहीं कराना ?"

मैंने मां को चुप रहने का इशारा किया । मेरा विचार था कि अब वह प्रतिदिन खायी जानेवाली रोटियों की संख्या पूछेगी और फिर सबके पेट गिनेगी कि कहीं किसी मुंह के साथ दो पेट न लगे हों । पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । संतुष्ट होने के पश्चात उसने इंटरव्यू का परिणाम घोषित किया कि यदि हम तीन सौ रुपये प्रतिमाह उसे भुगतान करें, तो वह इस नौकरी पर विचार कर सकती है ।

परंतु विचार तो हमें करना था ।

मैंने उसे तीन के अंक की अशुभ मिथ के संबंध में बहुत समझाया और वेतन को दो सौ रुपये तक संशोधित करने को कहा, किंतु वह अडिग रही । तब मैंने उसके समक्ष हाथ जोड़ दिये । वह भुनभुनाते हुए चली गयी । मां ने मेरी ओर ऐसे देखा, मानो कह रही हो कि पत्नी से बेहतर कोई कामवाली नहीं होती । लेकिन मुझे 'चीपनैस' को भी ध्यान में रखना था । मैं अगले दिन पुनः मित्र के पास पहुंचा । "तुमने उसे लौटा क्यों दिया ?" उसने मेरी ओर ऐसी नाराजगी से देखा, मानो मैंने उसे घर पर बिठाना था ।

"अब मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता", उसने फिर कहा, "तुम नहीं जानते, वह कितनी मुश्किलों से तैयार हुई थी । वह इतनी व्यस्त है कि तुम सोच भी नहीं सकते ।"

"तो कोई ऐसी कामवाली तलाशो, जो व्यस्त न हो ।"

इस बार उसने वाकई ऐसी कामवाली भेजी, जो कुछ भी हो लेकिन, व्यस्त नहीं थी ।

मैं शौच जाता तो उसकी निगाहें शौचालय तक मेरा पीछा करतीं । मैं नहाने जाता तो बाथरूम तक । वह इस हद तक व्यस्त नहीं थी कि मैं सामने बैठा होता, तो वह मुसकराती रहती । इसी बहाने बरतन भी मंज जाते । पर मेरी मां ने उसे जल्दी ही चलता कर दिया । मां को डर था कि कहीं वह मुझे बतरन मांजना ही न सिखा दे । मैं फिर मित्र के पास पहुंचा ।

"तुमने उसे चलता क्यों कर दिया ?" वह बिगड़ा ।

"वह कामवाली के साथ-साथ घरवाली का फर्ज भी निभा रही थी," मैंने उसे बतलाया ।

"तो क्या हुआ ? पैसे तो वह एक ही काम के लेती ।"

"हां, पर 'मूल सर्विस' के साथ-साथ वह जो 'गिफ्ट-सर्विस' दे रही थी, वह मां को पसंद नहीं थी ।"

"क्यों ?"

"मां का कहना है कि 'मूल' के साथ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गिफ्ट' तभी दिया जाता है, जब मूल में कोई कमी हो ।''

''ऐसा मां ने कहा ?''

''हां । उन्होंने कुछ नये वॉशिंग पाऊडरों के साथ 'फ्री गिफ्ट'— जैसे पैन और क्रीम का उदाहरण भी दिया ।''

''पर यह तो बिक्री बढ़ाने के लिए होता ही है ।''

''होता है, पर मां बोली कि कई बार क्रीम की बिक्री बढ़ जाती है, वॉशिंग पाउडर की घट जाती है ।''

मित्र चुप हो गया ।

उसने तीसरी कामवाली को भेजा ।

वह अत्यंत संवेदनशील थी । हमारे मात्र यह कहने पर कि कृपया, बरतन साफ मांजा कीजिए, उसे हार्दिक पीड़ा पहुंचती । मुंह से तो वह कुछ न बोलती, पर अगले ही दिन कांच की कोई भी चीज उसके हाथ से छूट जाती । इससे उसकी पीड़ा तो तत्काल दूर हो जाती, पर हम मां-बेटे घंटों पीड़ित होते रहते ।

जब हमारे लिए यह पीड़ा असहनीय हो गयी, तो हमने कांच के कपों में चाय पीनी बंद कर दी और स्टील के कप ले आये । मुंह से तो वह कुछ न बोली, किंतु अगले दिन से आयी ही नहीं । अब हमने चौथी कामवाली तलाश की ।

वह किसी बैंडवाले की कन्या थी । चौका वह कुछ इस धुन से करती थी कि बाहर से सुनने पर ऐसा मालूम होता था, मानो अंदर एक-दो-तीन गाने की धुन बज रही हो । मेरे कुछ मित्रों ने, जो सायंकाल कभी मेरे यहां आ जाते, चाय पीते-पीते इन धुनों को बेहद पसंद करने लगे । एक ने तो यह सलाह दे डाली कि

मुझे इन धुनों को रेकॉर्ड कर लेना चाहिए, जिससे भविष्य में 'संगीतकार' के चले जाने के बाद भी इनका आनंद उठाया जा सके । एक दूसरे मित्र तो यहां तक कह गये कि मैं सांस्कृतिक मंत्रालय से यह पूछ लूं कि अगला भारतीय महोत्सव कब और कहां हो रहा है, ताकि परात और बेलन की थाप को विदेशों में भी सुनाया और भुनाया जा सके ।

बहरहाल, मैंने इनमें से किसी की सलाह नहीं मानी । मैंने उसका हिसाब कर दिया । क्योंकि, उसके संगीत की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी थी और मेरे कई परिचित-अपरिचित उसका शो देखने-सुनने मेरे यहां वक्त-बेवक्त आने लगे थे । यहां मैं यह बतला देना उचित समझता हूं कि उस कामवाली ने अपना संपूर्ण हिसाब मुझे कटोरी और चम्मच-जैसे वाद्ययंत्रों पर समझाया था ।

अंत में; मां की बात मानकर मैंने शादी कर ली और स्थायी कामवाली ले आया । मां ने ठीक ही कहा था । बहु के आने के बाद उसे बरतनों से छुटकारा मिल गया । आजकल नियमित रूप से यह कार्य मैं ही करता हूं ।

—कवि कुल, खरवंदा स्वीट होम,
स्टेशन रोड, बिजनौर (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-कथा

मूर्च्छा दर्शन

● डॉ. सरोजनी प्रीतम

चोखेलाल को समझ न आता था कि लोग अचानक मूर्च्छित कैसे हो जाते हैं ? नौटंकी में काम करते समय उन्हें निदेशक ने बार-बार समझाया था कि ' यदि संवाद भूल जाओ तो खड़े-खड़े मुंह मत ताकना, गश खाकर गिर जाना । तब तक होश में न आना, जब तक हम परदा न गिरायें । परदा गिराने में देर लगेगी, तो हम तुम्हें उसी दृश्य में मृतक भी दिखा सकते हैं । तब तक तुम्हें हल्की सांस लेनी होगी— हम तुम्हारे मुंह पर कफन डालकर दर्शकों को रुला देंगे ।— वरना...

लेकिन जितनी बार ऐसे दृश्य आये चोखेलाल ने मरने से बेहतर मूर्च्छित होना ही समझा । उसने निदेशक से साफ-साफ कह दिया था, मुझे मृतक घोषित किया तो आप स्वयं मुसीबत में पड़ेंगे, क्योंकि मैं अधिक देर तक मृत्यु को प्राप्त नहीं हो सकता । यदि मेरे मुंह पर कफन डालकर मेरा मुंह बंद करने की कोशिश की, तो मैं मुंह उघाड़कर घोषणा करूंगा— 'मैं अमर हूं, मर नहीं सकता ।' मूर्च्छित होना काफी कठिन तो है, किंतु फिर भी मैं मूर्च्छित होने की प्रैक्टिस कर सकता हूं । अतः संवाद वगैरा बताने से पहले मैं मूर्च्छा-विशेषज्ञ से प्रशिक्षण प्राप्त करने को प्रस्तुत हूं ।

बहुत कोशिश करने पर भी जब चोखेलाल किसी मूर्च्छा-विशेषज्ञ को न पा सके, तो वे मुंह लटकाये घर पहुंचे । उनकी पत्नी ने उन्हें असमय आते हुए देखा, तो उसे मूर्च्छा-सी आने लगी । वह घबराने लगी।चोखेलाल ने आगे बढ़कर थाम लिया तथा उसकी मुद्रा देखते ही गद्‌गद् हो उठे,भाव-विभोर हो बोले, "तुम्हें मूर्च्छित होने की जरूरत नहीं, सच-सच कहो तुममें यह अचानक मूर्च्छित होने का गुण कहां से आया ? क्या तुम जब मां के गर्भ में थीं, उन दिनों उन्हें दौरे पड़ते थे । या तुम्हारे कुनबे के सभी लोग मूर्च्छित होने का धंधा करते थे । यह मूर्च्छा तुम्हें संस्कारों में मिली है या किसी के प्रवचनों से— तुम्हें यह कला आयी है ?

सच कहना चोखी,किसने तुम्हें यह गुण जन्मघुट्टी में घोलकर पिलाया है ? देखो, जो काम तुम अचानक जरा-जरा-सी बात में कर लेती हो, उसका एक जरा-सा अंश भी मैं पा जाऊं तो सफलता की कुंजी हाथ में घुमाते हुए— ढेरों रुपया कमा-कमा लाऊं ।"

चोखी यह बात सुनकर फिर मूर्च्छित होने को ही थी कि उसे ध्यान आया नौटंकी में आप इन्हें सही ढंग से मूर्च्छित होना न आया तब तो मेरी मूर्च्छा ऐसी होगी जो कभी न टूटेगी । अतः इन्हें पहले मूर्च्छित होने का इतिहास बता दूं । मूर्च्छा दर्शन पर इन्हें टिप्पणी दूं ।

यही सोचकर उसने स्वयं को संभालते हुए कहना शुरू किया, "मूर्च्छित कहीं भी होना हो उसके लिए मूर्च्छित होने की स्थितियां जरूरी है । कहीं मूर्च्छा सहज है, कहीं मजबूरी है । सहज ही मूर्च्छित होनेवाला प्राणी भावुकता का वह पुतला होता है, जिसका जरा-जरा-सी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

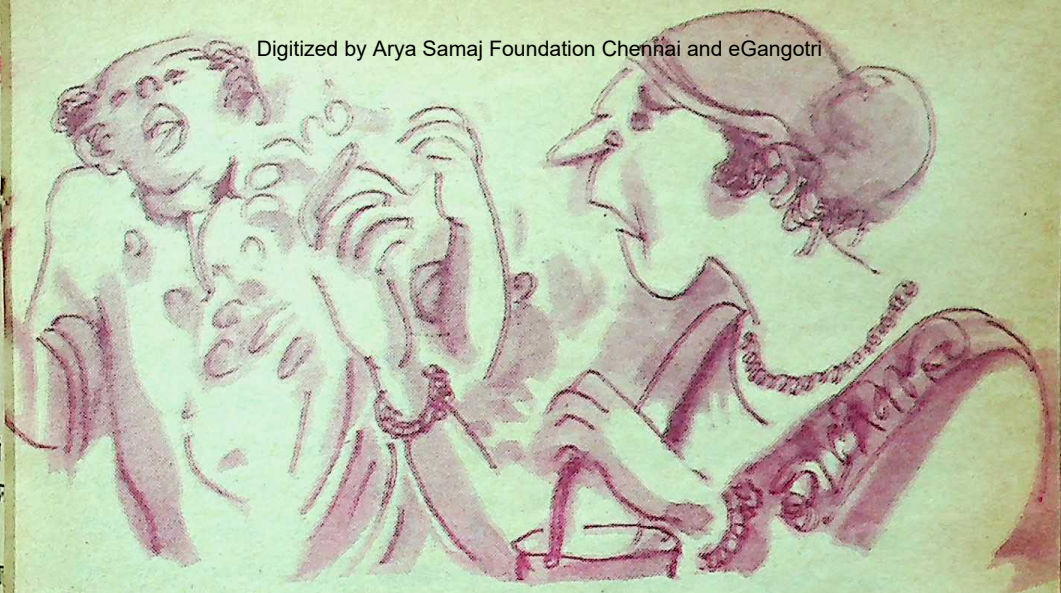

से हाल पतला होता है । कभी वह दहाड़ते हुए गिरता है तो कहीं पछाड़ खाकर गिरता है । सत्यवान की मूर्च्छा से पहले सावित्री को जब ज्ञात हुआ कि सत्यवान की मृत्यु होगी, तो वह मूर्च्छित-सी होने लगी— मन-ही-मन रोने लगी । किंतु तुरंत उस मूर्च्छा को अस्त्र बनाने का सोचकर उसने साधना की तथा ज्यों ही सत्यवान मूर्च्छित होकर गिरा, त्यों ही वह उसकी उस न टूटनेवाली मूर्च्छा को देखकर यमराज को सम्मुख देखने लगी । उसने यमराज का यों पीछा किया कि यमराज को भी अपनी सुध-बुध न रही । वह उससे पीछा छुड़ाने के लिए उसे वर देने पर यों उतारू हुआ कि हर बात में उसने हामी भर दी, वर दे दिया । सौ पुत्रों का वर मांगते समय सावित्री पूरी तरह से सूध में थी, किंतु यमराज बेसुध हो रहे थे, इसीलिए उन्होंने उसे पुत्रवती होने का आशीष दे दिया । सौ पुत्रों की ग्रांट के बाद कोई भी भाग खड़ा होता । वह तो यमराज था, यमलोक का स्वामी, उसने शायद धरती पर यमलोक स्थापित करने के लिए ऐसा वर दिया था । फिर भी वह वहां से यों चंपत हुआ कि उसकी कहीं छाया तक न दिखायी दी । ऐसे में जब सत्यवान की मूर्च्छा टूटी होगी तो सावित्री ने जब सौ पुत्रों की बात कही होगी, तो हो सकता है वह पुनः पछाड़ खाकर गिरा हो । अथवा उस पर नया पहाड़ टूट पड़ा हो— इसका वर्णन व्यर्थ है । मूर्च्छित होने तथा मूर्च्छित करने की स्थितियां जरूरी हैं ।— यानि यह वह संज्ञा है जो संज्ञाहीन कर देती है ।

"मूर्च्छित होनेवाले को कहीं कुछ भी ध्यान नहीं रहता— उचित-अनुचित का भान नहीं रहता । कहां किस भूमि पर किस मुद्रा में गिरे— इसकी उसे चिंता नहीं । मूर्च्छा एक प्रक्रिया है, चेष्टा नहीं । अतः हे प्रिय ! यदि तुम्हें चेष्टा करके मूर्च्छित होना है तो आस-पास की भूमि देखकर गिरना, कटे पेड़ की तरह किसी कुल्हाड़ी पर मत गिरना... । जहां गिरना हो वहां उपयुक्त कालीन या मोटा-सा गद्दा बिछाकर । तभी धड़ाम गिर जाना, गश खाकर । यदि वहां गद्दे की व्यवस्था न हो । कठोर भूमि हो, कांटेदार जगह हो तो— मूर्च्छा की मुद्रा बनाये हुए गद्दे के इस पार आकर गिरना— संवाद से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे मृतक घोषित किया तो आप स्वयं मुसीबत में पड़ेंगे, क्योंकि मैं अधिक देर तक मृत्यु को प्राप्त नहीं हो सकता । यदि मेरे मुंह पर कफन डालकर मेरा मुंह बंद करने की कोशिश की तो मैं मुंह उघाड़कर घोषणा करूंगा— 'मैं अमर हूं, मर नहीं सकता ।'

ही कहना 'मैं गिर चुका हूं, अब परदा भी गिराओ । मुझे उठाओ, फिर परदा उठाओ ।' साधारण जीवन में मूर्च्छा यों ही आ जाती है । यह सुध गंवाने की चरमावस्था है । कोप-भवन में जब कैकयी ने राजा दशरथ को अपनी कोप मुद्रा दिखायी, तब यदि दशरथ मूर्च्छित हो गये होते तो कैकयी ने उनसे वर कैसे मांगे होते ? यह जो आधी सुध गंवाकर बाकी सुध गांठ बांधे रखने का प्रचलन हो रहा है, यही सर्वनाश की जड़ है । पूरी तरह से मूर्च्छा आ ही नहीं पाती, दशरथ भी वर सुनने के बाद ही होश गंवा सके । होश यों उड़े कि पूरी तरह से वापस न आ सके । ऐसी ही अवस्था मूर्च्छा की चरमावस्था है,जो इस चरमावस्था को प्राप्त कर सके,वही आदर्श मान लो । मूर्च्छित होनेवालों का इतिहास पढ़कर उपाय बांच लो ।

"मूर्च्छा के क्षेत्र में लक्ष्मण का मूर्च्छित होना । राम का अर्ध-मूर्च्छित होना तथा हनुमान का उत्तेजित होकर सुध-बुध गंवाना । एक संजीवनी के लिए पूरा पहाड़ उखाड़कर लाना आदि मूर्च्छा की कई स्थितियां हैं । ऐसी स्थितियां, जिनमें भाव नहीं रहता— उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहता... । जब मूर्च्छा टूटती है, तो मुख से मात्र यही निकलता है—' मैं कौन हूं ? मैं कहां हूं ? मुझे क्या हुआ था ? सब मुझे टुकुर-टुकुर क्यों ताक रहे हैं— क्यों फुसफुसाते हैं, अपनी हांक रहे हैं ।'

"महाभारत काल में मूर्च्छा का रूप दूसरा ही था । वे पूरी सुध-बुध में रहकर होश गंवाते थे तथा जानबूझकर भी वे होश में न आते थे । यदि मां कुंती का आदेश सुनकर, द्रौपदी को मिल-बांटकर खाने की बात सुनते ही पंचों यानि पांचों पांडव बेहोश हो जाते अथवा ऐसी बात कहने के बाद कुंती मां स्वयं बेहोश हो जाती, होश में आकर होश की बात कहती, तो महाभारत कुछ और ही होता ।

"द्रौपदी का भरी सभा में चीरहरण होते देखकर एक भी पांडव बेहोश न हुआ, जबकि वही मूर्च्छित होने की चरम स्थिति थी, ऐसी स्थिति में होश गंवाना, सुध-बुध खो बैठना आदर्श स्थिति थी । किंतु स्थितियों से यदि अनासक्त होकर सिर्फ आंखें झुका ली जाएं तो मूर्च्छा नहीं आ सकती । कहते हैं मूर्च्छा में एक ऐसी पकड़, ऐसी जकड़ होती है जो व्यक्ति को अपने पंजे में दबोच लेती है, मुट्ठी में बंद कर लेती है । तब सिद्धावस्था का वह चरम गति/तू-तू नहीं, मैं-मैं नहीं — सिर्फ भूमि पर जमीन चाटते हुए आप निढाल लेटे हैं । अब वह स्थिति है जब न कोई भाई है न बेटा, न पिता है न माता, न सज्जन न दुर्जन । जब तक छींटे मारकर, जूता सुंघाकर, थप्पड़ों से लाल करके असली और नकली मूर्च्छा का पता न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल जाए, तब तक उसका उपचार नहीं ।

"हे प्रिय ! आजकल मूर्च्छा के क्षेत्र में भी इतनी अधिक मिलावट पायी जाती है कि असली और नकली का भेद ज्ञात करना मुश्किल है । नायक-नायिका बेसुध होने का नाटक करके— पहले जमीन पर बेसुध लोटते हैं फिर जब एक-दूसरे को टटोलते हैं, तब एक आंख खोलकर, स्थितियां देखते हैं, उसी के अनुसार क्रिया करते हैं । सच कहें तो यही एक क्षेत्र है जहां असली-नकली का भेद मुश्किल से पाया जा सकता है । होश गांठ बांधकर भी गंवाया जा सकता है । यों तो यह धीरे-धीरे रिसता रहता है । होश की बात करनेवाला व्यक्ति कोई एकाध ही मिलता है । फिर भी आपे से बाहर होना, एक-दूसरे पर कुरसियां फेंकना, गाली-गलौच पर उतर आने से बेहतर है आप वहीं मूर्च्छित हो जाएं, लोग आपके इर्द-गिर्द जमा हो जाएं । आप उन्हें सेवा का मौका दे रहे हैं, जिन्होंने आपको कभी घास न डाली, वे भी आपको पानी पिला रहे हैं, रो रहे हैं, आंसू बहा रहे हैं...

"तुम चूंकि इस क्षेत्र में अनाड़ी हो, इसीलिए मैं मूर्च्छित होने की कला का बखान कर रही हूं— मूर्च्छित होने के बाद होश में धीरे-धीरे ही आना होगा । एकदम आंख खोलकर उठ बैठोगे तो मुश्किल होगी । मंच पर पहुंचते ही दर्शकों को देखकर, गश खाकर गिर सकते हो, किसी चंद्रमुखी को देखकर गिर सकते हो, गिरना आसान है, उद्धार मुश्किल है ।

"अतः बेहोश होने की ठानकर, स्वयं को मंच का तीन घंटे का मेहमान मानकर— बेहोश हो जाना, मेरी सुध करके बेहोश हो जाना, कोई

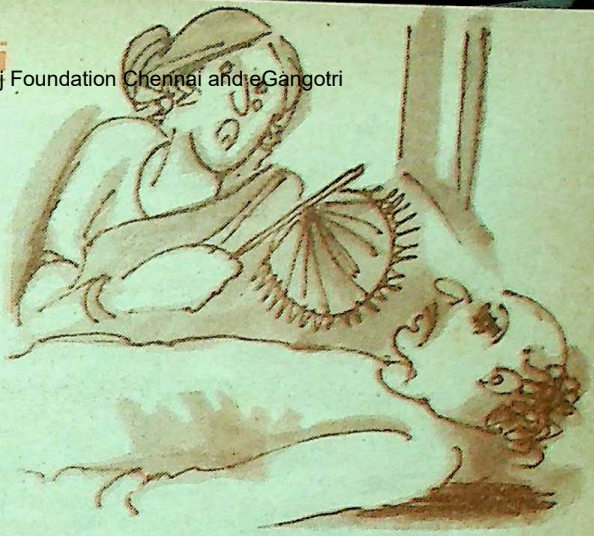

कितनी ही हांक लगाये, कितना ही उकसाये होश में न आना..."

चोखी ने देखा चोखेलाल घंटों उसका प्रवचन सुनकर चक्कर खा रहा है... मूर्च्छित होता जा रहा है । अतः वह भागकर ठंडा जल लायी । छींटे मारकर बोली, "प्रिय मूर्च्छित होने की कड़ी अग्नि-परीक्षा में तपकर लाल हो चुके हो, खरा सोना बन चुके हो, लेकिन इतना ध्यान रखना— ऐसे इतनी जल्दी होश में आने की जरूरत नहीं । मंच पर यदि तुम्हारे होश, थोड़े-थोड़े अंतराल में आने-जाने लगे, तो लोग तुम्हें पत्थर मार-मारकर बेहोश कर देंगे ।"

चोखी की बात से अथवा लंबे भाषण से चोखेलाल सचमुच यों मूर्च्छित हुआ कि अब तक होश नहीं आया... सुनते हैं चोखी उन्हें बैठी पंखा झल रही है तथा बार-बार पश्चाताप कर रही है, पूछ रही है, 'इनके होश गुम हो गये हैं, आपको कहीं मिले तो नहीं । मिलें तो कृपया होश ठिकाने लगा दें । यानि पते की चीज सही पते पर भिजवा दें ।'

— सी-९१९, न्यू राजेंद्रनगर
नयी दिल्ली-११००६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच तो यह है कि कालिदास बनने के पूर्व व्यक्ति को वही डाल काटनी पड़ती है, जिस पर वह बैठा है । विद्योत्तमाएं स्वयं चली आती हैं, मूर्ख बनकर जरा देखिए तो !

कला है मूर्ख बनाना भी !

● डॉ. देवव्रत जोशी

प्रत्येक व्यक्ति को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता । सही कहावत है— 'बार-बार आप किसी को मूर्ख नहीं बना सकते ।' ऐसा करने से आप स्वयं शायद कभी मूर्ख साबित हो जाएं !

वैसे मूर्खों से दुनिया भरी पड़ी है । यदि मूर्ख न हों, तो बुद्धिमान को पूछे कौन ? प्रकाश की पूछ तभी तक है, जब तक अंधकार का अस्तित्व है ।

सच तो यह है कि कालिदास बनने के पूर्व व्यक्ति को वही डाल काटनी पड़ती है, जिस पर वह बैठा है । विद्योत्तमाएं स्वयं चली आती हैं, मूर्ख बनकर जरा देखिए तो !

मूर्ख बनाना आसान नहीं, यह परम कला है । सिद्ध कलावंत ही जनता को मूर्ख बना सकता है । सिद्ध वक्ता मामूली बात पर तालियां बटोर सकता है । सिद्ध राजनेता क्या नहीं करता ? क्या नहीं कर सकता ? मूर्ख बनाने की कला में महाप्रवीण वही है । जिस भाषा का सहारा लेकर वोट प्राप्त करता है, उसी भाषा-रूपी वृक्ष के लिए वह कालिदास का पूर्व-रूप बन जाता है । विजयी होकर वह मतदाताओं को आश्वासनों की चाशनी में डुबोये रखता है ।

बीरबल ने अपनी बुद्धि का उपयोग किस हेतु किया, क्यों किया, कैसे किया सब जग-प्रसिद्ध है ।

रीतिबद्ध, रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध कवि राज-दरबारों में जाते थे और आश्रयदाताओं के ठकुरसुहाती बखान करके प्रसन्न करते थे । कई अशर्फीलाल आज भी महाकवि मान लिये गये हैं । चाटुकारिता मूर्ख बनाने की कला का ही पर्यायवाची कर्म है । लगाइए प्रशंसा का नवनीत, पा जाइए मनमाना फल !

धुरंधर वैज्ञानिकों ने मानवता के मंगल और जनकल्याण हेतु कितने आविष्कार किये । दिग्गज राजनेताओं ने उनका उपयोग विश्व में अस्थिरता, अशांति बनाम 'शक्ति-संतुलन' के लिए किया । उन्होंने इस तरह आदमजात को, वैज्ञानिकों को, दूसरे राष्ट्र के नेताओं को ही नहीं स्वयं को अंततः वज्रमूर्ख सिद्ध किया—शस्त्रास्त्रों को नष्ट करके !

विशुद्ध हास्य द्वारा कुछ क्षणों के लिए किसी को मूर्ख बनाना, कतई बुरा नहीं, बशर्ते सामनेवाले का अहित न हो ।

यहां हिंदी के युग-प्रवर्तक भारतेन्दु बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिश्चंद्र के वे प्रसंग स्मरण आते हैं जब वे बाकायदा निमंत्रण-पत्र छपवाकर काशीवासियों को संगीत-नृत्य की शानदार महफिल में शामिल होने की दावत देते थे और तब निश्चित स्थान और तिथि पर एकाध विदूषक के अतिरिक्त कोई नजर नहीं आता था, क्योंकि उस दिन एक अप्रैल यानी मूर्ख-दिवस हुआ करता था ।

बेढब बनारसी हिंदी के 'हास्य पुरुष' कहे जाते थे । बड़े विनोदी और जिंदादिल । एक बार इलाहाबाद से बनारस की ट्रेन-यात्रा में डॉ. रामकुमार वर्मा भी साथ थे । बेढबजी गंभीर मुद्रा में बोले, "वर्माजी, भूलवश शायद हम लखनऊवाली गाड़ी में बैठ गये । खैर । वहीं हो आयें !" ट्रेन गति पकड़ चुकी थी । वर्माजी बदहवास नजर आये । ठहाका लगाते बेढबजी ने आश्वस्त किया, "मैं तो आपको 'बना' रहा था ।"

जोश मलीहाबादी और पं. नेहरू की प्रगाढ़ साहित्यिक मैत्री थी । एक बार पं. नेहरू और मौलाना आजाद कुछ मशविरा कर रहे थे कि जोश साहब आते दीख पड़े । नेहरूजी को मज़ाक सूझी, वे तुरंत अंदर दाखिल हो गये । जोश को बड़ा नागवार गुजरा और वे चल पड़ने को उद्यत हुए, मौलाना को यह कहते हुए कि "पंडितजी दोस्ती का लिहाज भी नहीं पालते ।... हमसे ही कन्नी काट रहे हैं !" जोश साहब बिफर रहे थे कि नेहरूजी तब तक आ गये । उन्हें सीने से लगाते हुए बोले, "तुम्हें देखकर नहीं, कुदरत के तकाजे के कारण जरा अंदर चला गया था ।"

कई महीन नुस्खे हैं । मैंने अर्ज किया न,

कला है— मजाक में भी मूर्ख बना देना किसी को । इसमें सब माहिर नहीं हो सकते । जिसने इस कला में महारत हासिल कर ली, समझ लीजिए उसके लिए असंभव कुछ नहीं रहा ।

अंत में प्रेमी महाशय के पास न दौलत थी, न कोई कला । वे तो बस अपनी महबूबा से प्रेम करते थे । शादी भी रचाना चाहते थे । प्रेयसी को चांद-तारे बहुत अच्छे लगते थे । उन दिनों लोग निश्छल और भोले हुआ करते थे । प्रेमी ने कहा, "शादी की हां कर दो, पूरा आसमान उतार लाऊंगा तुम्हारे लिए ।"

विवाह तो उनका हो गया, मगर आसमान जहां का तहां है, आज तक ।

—२४, वेदव्यास नगर,
रतलाम-४५७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

तंत्र-विशेषांक से निकला भूत !

● संगीता नेमा

दरवाजे की चटखनी बंद कर ज्यों ही मैं सोने को हुई, त्यों ही किसी ने दरवाजे की सांकल खटखटायी । इतनी रात को कौन हो सकता है ? शायद कोई पापाजी से मिलने आया हो, मैंने उठकर दरवाजा खोल दिया । सामने एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति झक सफेद लिबास में खड़ा था । मैं कुछ बोलती इससे पहले ही वह अंदर आकर मेरी कुरसी खींच बैठ गया । मैंने पलटकर पूछा, "जी, आपको किस से मिलना है ? पापाजी बाहर गये हुए हैं । मम्मी को बुलाती हूं ।"

वह बोला, "नहीं ! मुझे तुम से ही मिलना है । मैं भूत हूं । तुम से एक काम करवाना है ।"

यह सुनकर मैं ठहाका मारकर हंसी कि शायद, ये कोई अंकल हैं, जो मुझे चिढ़ाने के लिए ऐसा कह रहे हैं ।

मुझे हंसते देखकर शायद वह क्रोधित हो गया था । मुझे घूरते हुए बोला, "हंसो मत, मैं सच कह रहा हूं ।" फिर उसने सीधे ही प्रश्न किया, "तुम्हारे घर 'कादम्बिनी' आती है ? मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया ।"

वह बोला, "मुझे भूतों ने अपना प्रतिनिधि बनाकर तुम्हारे पास भेजा गया है । तुम्हें 'कादम्बिनी' के संपादकजी को एक पत्र लिखना है । तंत्र-विशेषांक के बारे में ।"

मैंने कहा, "मेरे ही पास क्यों भेजा गया है ? 'कादम्बिनी' के तो हजारों-लाखों पाठक हैं । उनके पास जाइए या फिर संपादकजी से स्वयं मिल लीजिए ।"

वह और भी वजनदार आवाज में फिर बोला, "सवाल का जवाब नहीं दे सकता । मैं जो कह रहा हूं करती जाओ, नहीं तो..."

फिर उसने मुझे मेरी मेज से कलम और कॉपी उठाकर दी, बोला, लिखो ।

अब मुझे डर लगने लगा था । मेरी कलम कागज पर चलने लगी ।

भूतजी बोल रहे थे, मैं लिख रही थी...

'कादम्बिनी' के तंत्र-विशेषांक के संपादकजी,

भूत-समाज की ओर से नमस्कार

हमें आपकी 'कादम्बिनी' के वर्ष में निकलने वाले अन्य ग्यारह अंकों से कोई सरोकार नहीं है, वास्ता है सिर्फ तंत्र-विशेषांक से । आपके इस तंत्र-विशेषांक ने हमारे भूत-समाज को झकझोरकर रख दिया है । सभी भूतों के मन में अत्यंत भय व्याप्त है । वे सभी चिंतित रहते हैं । आपने अपनी पत्रिका में हमारे समाज के सबसे छोटे सदस्य से लेकर भूत-सम्राट ब्रह्मराक्षस तक का खुलासा कर दिया है, जिससे हमारी गोपनीयता भंग हो गयी है ।

एक जमाना वह था, जब सभी हमसे डरते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

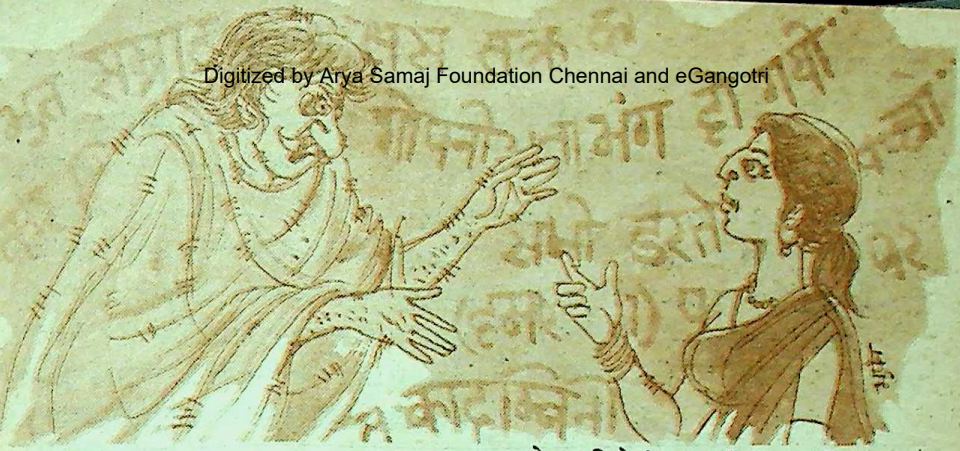

थे और अपने बच्चों को सलाह दिया करते थे कि अमुक स्थल (हमारे स्थान) पर मत जाओ और बच्चे डरकर मान जाया करते थे । आज जमाना यह है कि हर कोई 'कादम्बिनी' पढ़कर बहुत होशियार हो गया है । हमारा नाम सुनते ही हंसने लगता है । हमारे निवास-स्थान पर धमा चौकड़ी मची रहती है । जगह-जगह भूत भगाने की सामग्रियों की दुकानें खुल गयी हैं । हम जिनको परेशान नहीं करते, उन ने भी तुलसी, अर्जुन आदि न जाने कौन-कौन-सी वस्तुएं लगा रखी हैं कि हमारा वहां से निकलना भी दूभर हो गया है । यदि आप इसी प्रकार भूत भगाने के उपाय बताते रहेंगे, तो एक दिन हमारी जन संख्या ही विलुप्त हो जाएगी ।

आपको यह जुल्म ढाते एक दशक से अधिक समय हो रहा है । हमारे अस्तित्व पर गहरा संकट है ही, हमारा बाहर निकलना भी मुश्किल कर दिया गया है । हमारे समाज में जीवन के लाले पड़ने लगे हैं । फलस्वरूप हमारी सरकार ने भूत अधिनियम के तहत धारा १४४ का इस्तेमाल कर कर्फ्यू लगा दिया है । इस समय हमारा समस्त समाज आपातकालीन स्थिति से गुजर रहा है ।

हमने इस विशेषांक पर प्रतिबंध लगाने का दृढ़ निश्चय कर लिया है । हमारी सरकार ने आपके इन लेखों को प्रकाशित करने के हौसलों को ध्वस्त करने का योजना बद्ध तरीका अख्तियार किया है, किंतु पहले आपको सोचने का मौका दिया जाता है और आग्रह किया जाता है कि हम से संबंधित एवं वहम पर रोक लगानेवाले लेखों का प्रकाशन अतिशीघ्र बंद करें । वरना हम भी किसी से कम नहीं ।

शीघ्र ही आपके किसी निर्णय की प्रतीक्षा में

—समस्त भूत समाज

इतना लिखवाकर भूत-प्रतिनिधि मौन हो गये । मैंने कागज से आंख उठाकर उनकी ओर देखा । उनके चेहरे पर कुछ निश्चिंतता के भाव झलक रहे थे । फिर मुझे यह सख्त हिदायत देकर कि कल सुबह की डाक से यह पत्र निकल जाना चाहिए, अंतर्ध्यान हो गये । मैंने कागज मोड़कर लिफाफे में डाल दिया और आपका पता लिख दिया । सुबह अंधेरे में ही उसे पत्र-पेटिका में डाल दिया । तब कहीं जाकर मेरा डर कम हुआ । आप तक यह पत्र पहुंच जाएगा । अब आप जानें और भूत महाशय ।

— द्वारा : श्री श्याम बिहारी नेमा
२६४४, चेरीताल, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान पर स्टे

डॉ. राजवीर सिंह चौहान, लैंसडाउन (गढ़वाल) : मेरे मकान में एक बहुत पुराना किरायेदार था। उसके पास ऊपरी और नीचे की मंजिल पर तीन-तीन कमरे थे। सन् १९८८ में न्यायालय के आदेश पर उसने ऊपर के तीनों और नीचे के दो कमरे खाली कर दिये। उसके साथ रहनेवाले व्यक्ति ने एक कमरा खाली नहीं किया। बल्कि, उसने हाईकोर्ट से स्टे ले लिया। वह व्यक्ति भी पांच साल पहले मर गया। अब उसका लड़का कब्जा जमाये बैठा है। कृपया, बतायें कि हाईकोर्ट से स्टे को खारिज या फैसला कैसे कराया जाए ?

मकान का कुछ भाग खाली होने के बाद शेष भाग में रह रहे व्यक्ति द्वारा लिया गया उच्च न्यायालय का स्थगन आदेश के चालू रहते आप मकान खाली नहीं करवा सकते। जिस व्यक्ति ने यह आदेश प्राप्त किया था, उसे मरे पांच वर्ष हो गये। क्या इसके मामले में उस व्यक्ति के स्थान पर उसके उत्तराधिकारी ने अपना नाम दर्ज कराने की कोई कार्यवाही की है या नहीं ? मुकदमा या अपील करनेवाले पक्ष का इस दिशा में कार्यवाही करना जरूरी है। यदि इस प्रकार की कार्यवाही न हुई हो, तो मुकदमा समाप्त हो सकता है। यदि मुकदमा दूसरे पक्ष द्वारा किया गया हो और उसमें स्वर्गवासी व्यक्ति के उत्तराधिकारियों द्वारा पक्षधर बनने का आवेदन नहीं दिया गया हो, तो आप उनकी उस गलती का लाभ भी मुकदमा समाप्त करवाने के लिए उठा सकते हैं।

आपको उच्च न्यायालय में मुकदमे की शीघ्र सुनवाई के लिए आवेदन करना चाहिए।

मुकदमे का खर्च

जयपाल सिंह, रसीदपुर (उन्नाव) : मैं एक लंबे समय से ग्राम प्रधान हूं। लेखपाल, जो राजस्व विभाग का कर्मचारी होता है, ने मुझ पर झूठा मुकदमा चला दिया कि मैंने तालाब की मछलियों को बेचकर ग्राम सभा की संपत्ति का दुरुपयोग किया है। जबकि मछलियों के बेचने का निर्णय गांव पंचायत की उप-समिति—भूमि प्रबंधक समिति की खुली बैठक में लिया गया था। तहसीलदार द्वारा जांच कराये जाने पर मुझे निर्दोष पाया गया। क्या मैं मुकदमे पर खर्च की वसूली का दावा उपभोक्ता संरक्षण जिला फ़ोरम में कर सकता हूं ?

मुकदमे पर हुए खर्चे के बारे में वह न्यायालय, जो मुकदमे की सुनवाई करता है, वही यह निर्धारण भी करता है कि कौन पक्ष दूसरे पक्ष का खर्चा देगा। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकदमे में खर्चे के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया जाता, तो यह माना जाता है कि प्रत्येक पक्ष अपने-अपने खर्चे को वहन करेंगे। निर्णय से असंतुष्ट पक्ष निर्णय के विरुद्ध अपील कर सकता है।

आप पर जो आरोप लगाये गये, यदि आप उनसे अपनी मानहानि मानते हैं, तो आप मानहानि के आधार पर क्षति-पूर्ति का दावा कर सकते हैं।

जिला उपभोक्ता फोरम में कार्यवाही करने के लिए किसी भी व्यक्ति का उपभोक्ता की परिभाषा में आना आवश्यक है। आपको उपभोक्ता नहीं माना जा सकता, इसलिए आपका क्षति-पूर्ति का दावा उपभोक्ता फोरम में नहीं चलाया जा सकता।

सवाल मान्यता का

राजकुमार, रांची : क्या कोल इंडिया व उसकी सहायक कंपनियां निजी माइनिंग संस्थानों, जिन्हें ए.आ.टी.ई.सी. या राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त नहीं है, को अपने खदानों में प्रशिक्षण सुविधा प्रदान कर सकती है ? यदि हां, तो किस नियम के तहत यदि नहीं तो क्यों ?

प्रशिक्षण व शिक्षण में महत्त्वपूर्ण अंतर है। शिक्षण पूरा होने के लिए अनेक स्थानों पर प्रशिक्षण अनिवार्य होता है। प्रशिक्षण लिए बगैर डिप्लोमा व डिग्री की शिक्षा पूरी नहीं मानी जाती। तकनीकी क्षेत्र में प्रशिक्षण के महत्त्व को अस्वीकारा नहीं जा सकता। प्रशिक्षण साधारणतया बड़े संस्थानों में दिया जाता है। उसी दिशा में कोल इंडिया व उसकी सहायक कंपनियां भी प्रशिक्षण दे सकती हैं और उसके लिए शैक्षणिक मान्यता आवश्यक नहीं है।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

आरक्षण की सुविधा

अ. कु. सिंह, उ. प्र. : मैं उत्तर प्रदेश का अनुसूचित जाति का युवक हूं। मैंने उत्तर प्रदेश पुलिस उप-निरीक्षक की परीक्षा में आरक्षण का लाभ लेने हेतु अपनी अनुसूचित जाति का सर्टिफिकेट दिया था। मेरा प्रारंभिक और लिखित मुख्य परीक्षा के साथ ही शारीरिक परीक्षा में चयन हो गया। अब मात्र साक्षात्कार होना है।

क्या मैं अब रिजर्वेशन का लाभ न लेने का प्रयास कर सकता हूं क्योंकि, मैं वरिष्ठता सूची में काफी ऊपर हूं।

वरिष्ठता सूची में काफी ऊपर नाम होने से आपकी नियुक्ति अन्य व्यक्तियों से पहले हो सकती है। इससे आप सेवा में वरिष्ठ हो जाएंगे तथा आपको भविष्य में लाभ मिलेगा।

एक बार अनुसूचित जाति के आधार पर आवेदन कर मुख्य परीक्षा तथा शारीरिक परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के बाद, अब आपको यह स्थिति बदलने की अनुमति नहीं मिल सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली का बिल

राहुल श्रीवास्तव, कानपुर (देहात) : मेरे घर से कुछ दूरी पर मेरे फूफाजी का एक मकान है। हमें वे बिजली का कनेक्शन लेने के लिए पैसे दे गये थे। मेरे पिताजी ने उस घर का कनेक्शन अपने नाम से ले लिया। अब वे बिल नहीं अदा कर रहे हैं व कहते हैं कि कनेक्शन अपने आप कट जाएगा, जबकि दो साल हो गये कनेक्शन नहीं कट रहा है। क्या इस संदर्भ में मेरे पिताजी पर कोई कानूनी कार्यवाही हो सकती है ?

आपके पिताजी के नाम पर बिजली का मीटर होने के कारण इस मीटर की बिजली के उपभोक्ता आपके पिताजी ही माने जाएंगे और बिजली के बिल के भुगतान का उत्तरदायित्व आपके पिताजी का ही है। आपके फूफाजी बिजली नहीं रखना चाहते, तो आपके पिताजी को फौरन कनैक्शन कटवा देना चाहिए। इसके लिए उन्हें बिजली कंपनी को कनैक्शन काटने के लिए लिख देना चाहिए।

मैंने जमानत दी है

मोहनलाल शर्मा, जयपुर : मैंने अपने मित्र के पुत्र की पावरलूम फैक्ट्री हेतु कच्चे माल के लिए ऋण प्राप्त करने के लिए एक बैंक में जमानत दे दी। इस जमानत में मेरा मित्र भी शामिल है। यद्यपि जमानत राशि एक लाख बतायी गयी थी, लेकिन अब बैंक ने ब्याज सहित २८ लाख रुपये देने की मांग की है और मुझे पार्टी बनाया है। मित्र के पुत्र ने फैक्ट्री की मशीनें भी खुर्द-बुर्द कर दी है। मेरी जमानत के साथ मेरे मकान के पट्टे की फोटो कापी लगायी गयी है। मेरा क्या होगा बतायें ?

आपने जमानत देते समय किन-किन फार्मों पर हस्ताक्षर किये हैं, यह तो आपकी जानकारी में है या नहीं ? वस्तुस्थिति क्या है— यह तो सभी दस्तावेज देखने पर ही मालूम हो सकती है। जमानत की सीमा निर्धारित होने की स्थिति में जमानती से उससे अधिक राशि वसूल नहीं की जा सकती। परंतु साधारणतया जमानत की राशि पर बननेवाले ब्याज, अन्य व्यय आदि को दे[illegible] का उत्तरदायित्व बैंक जमानत देनेवाले से स्वीकार करवाता है। जमानत की सीमा तक शेष देय राशि आपसे मांगने का बैंक को अधिकार है। इसके लिए वह आपके मित्र से भी मांग कर सकते हैं। फैक्ट्री की मशीन आपके मित्र के पुत्र द्वारा खुर्द-बुर्द करने देने से उत्तरदायित्व कम नहीं होता।

नवम्बर '९५ के अंक में इस स्तंभ के अंतर्गत पाथरडीह, धनबाद के श्री केसरसिंह छाबड़ा के एक पत्र का उत्तर प्रकाशित हुआ है। श्री छाबड़ा ने सूचना दी है कि उन्होंने ऐसा कोई पत्र नहीं लिखा। उनके पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप करने की नियति से किसी और ने पत्र उनके गलत हस्ताक्षर कर भेजा है। श्री छाबड़ा के अनुसार समस्या दूसरी है, जो छपी है, उसका उपयोग न्यायालय में किया जा सकता है।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

१— **तीन** संख्याओं का जोड़ ३६ है। तीसरी संख्या पहली से तिगुनी है। दूसरी और तीसरी संख्याओं का अनुपात २:३ है। तीसरी संख्या बताइये।

२— **क. चंद्रमा** पृथ्वी के चक्कर लगाता है— यह बात सबसे पहले किसने बतायी ?

ख. गुरुत्वाकर्षण के सामान्य सिद्धांत का प्रतिप्रादन किसने किया था ?

३— **क.** वैदिक काल के लोगों का मुख्य धार्मिक कार्य क्या था ?

ख. उत्तर वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था का मुख्य आधार क्या था ?

४— **क. विश्व** में सबसे बड़ा सोने का उत्पादक देश कौन है ?

ख. सोने की खपत में सबसे आगे देश कौन है ?

५— **क. गत वर्ष** के अंत में कौन-से भारतीय उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण हुआ था ?

ख. इन्हें कहां से छोड़ा गया था ?

ग. इनका प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

६— **क. इस** समय दुनिया में सबसे बड़े तीन गेहूं-उत्पादक देश कौन-से हैं ?

ख. अगले ५ वर्षों में इस संबंध में भारत के कौन-सा स्थान ग्रहण करने की संभावना है ?

७— **गत** वर्ष के अंत में कौन-सा भारतीय अंटार्कटिका अभियान दल रवाना हुआ था ? उसमें कितने सदस्य थे ?

८— **निम्नलिखित** पुरस्कार या सम्मान किनको प्रदान किये गये हैं ? (क) अंतरराष्ट्रीय गांधी पुर., (ख) १९९५ का सर्वश्रेष्ठ सांसद पुर., (ग) के.के. बिड़ला फाउंडेशन का वर्ष १९९५ का सरस्वती सम्मान, (घ) १९९५ का रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी अलंकरण सम्मान, (च) १९९५ का राष्ट्रीय लता मंगेशकर पुर.।

९— **क. गत** वर्ष के अंत में डेविस कप टेनिस प्रतियोगिता का खिताब किसने जीता था ? किसको हराकर ?

ख. सातवें सैफ खेलों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान किन देशों का रहा ? भारत ने कितने पदक प्राप्त किये ?

ग. उक्त खेलों में सर्वश्रेष्ठ पुरुष व महिला एथलीट कौन रहे ?

१०— **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइये यह क्या है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

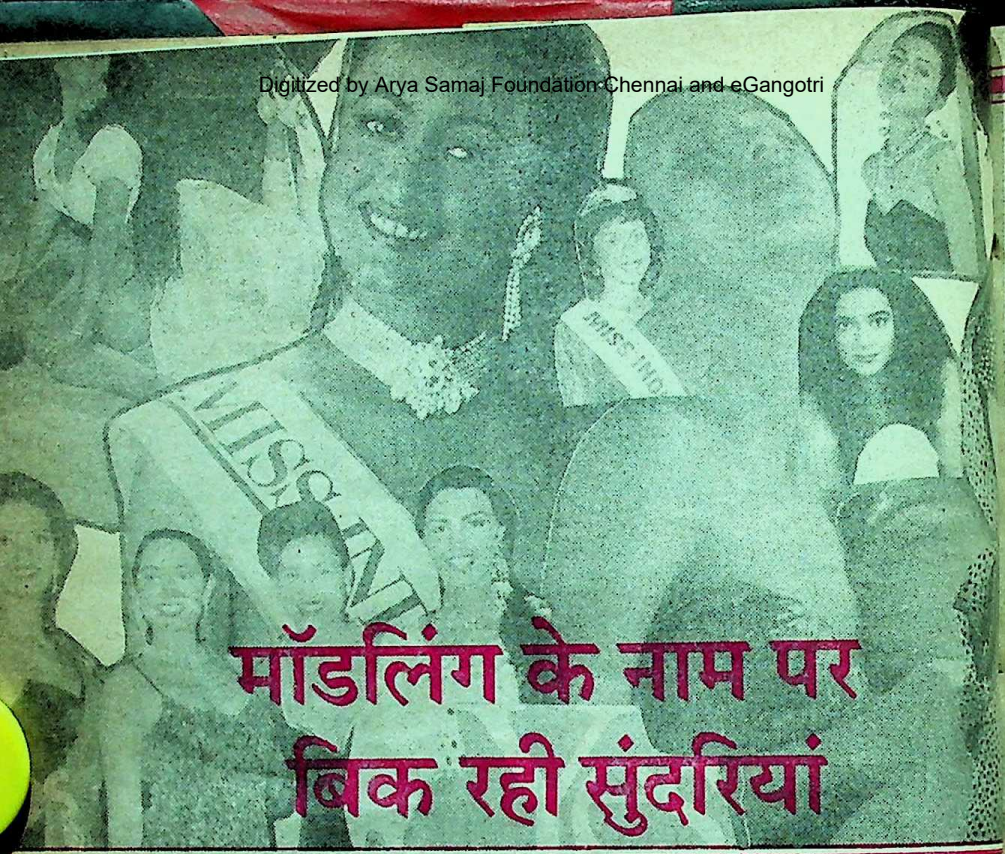

मॉडलिंग के नाम पर बिक रही सुंदरियां

● देशबंधु वशिष्ठ

दूरदर्शन के विदेशी प्रसारण, सौंदर्य प्रतियोगिताओं की तेज रोशनी में मादक यौवनांगों के प्रदर्शन का सिलसिला भारत में लगभग एक समय पर और एक ही द्वार से हुआ लगता है। लगभग एक साथ एक-दो वर्ष के अंतराल में तीन अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में दो भारतीय लड़कियों को विश्व सुंदरी (मिस यूनीवर्स) और तीसरी (मनप्रीत बरार) के दूसरे स्थान पर चुने जाने से एक प्रश्न जो मस्तिष्क में कौंधता है वह ये कि अब से चार-छह वर्ष पहले क्या भारतीय बालाओं में सौंदर्य के उस पुट का अभाव था जो उन्हें अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक साथ कई बार विश्व सुंदरी का रुतबा दिला पाता ?

जब से भारत की दो लड़कियां विश्व सुंदरी चुनी गयी हैं। देश में खासकर दिल्ली—जैसे आधुनिक महानगरों में सौंदर्य प्रतियोगिताओं के प्रति नवयुवतियों का आकर्षण देखते ही बनता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के कई कॉलेजों में तो ऐसी प्रतियोगिताएं आयोजित भी की गयी हैं। हाल ही में एक प्रतिष्ठित कंपनी ने चलती रेलगाड़ी में एक फैशन शो का आयोजन करके प्रतिष्ठा ही नहीं पायी बल्कि दर्शकों के माध्यम से लाखों की कमायी भी की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी शरीर का व्यावसायिक उपयोग

यही नहीं, कई विज्ञापन कंपनियां तो लाखों रुपया खर्च करके विमान इत्यादि में भी फैशन शो का आयोजन करती रही हैं । हाल ही में एक विदेशी कंपनी ने राजधानी दिल्ली की पॉश कॉलोनी साउथ एक्स. में ऐसे कोचिंग संस्थान की स्थापना की है जो भारी कीमतों की अदायगी पर लड़कियों को मॉडलिंग के गुर सिखाएगी । यह भारतीय बालाओं को सिखाएगी कि कैसे और किस अंदाज से नंगे-उघाड़े बदन से पुरुष वर्ग को लुभाया जा सकता है और किन-किन विधियों से नारी शरीर का बेहतर व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है ।

वस्त्र पहनने, अंदाज से मटककर चलने और आधुनिक युग में बात करने के ऐसे अंदाज सिखाना है जिनके माध्यम से स्वयं को भीड़ से अलग करके प्रदर्शित किया जा सके ।

इस विदेशी कंपनी ने दिल्ली के कई गर्ल्स कॉलेजों में फैशन शो का भी आयोजन किया है और उसका दुष्परिणाम यह सामने आया है कि अब यह कॉलेज दूसरी विज्ञापन एजेंसियों बल्कि स्वयं छात्राओं द्वारा 'शिक्षा केंद्र' के रूप में कम और सौंदर्य प्रतियोगिताओं के अखाड़े के रूप में अधिक इस्तेमाल किये जाने लगे हैं ।

यहां यह प्रश्न स्वाभाविक हो सकता है कि ये विदेशी कंपनी अधिक बेहयाई पर उतारू हैं अथवा हमारे देश के मॉडल : पूर्व प्रशिक्षित मॉडल जो वस्त्रहीन होकर रफ-टफ जूते के विज्ञापन में नजर आते हैं ।

विदेशी टी.वी. चैनल और स्वदेशी फिल्म बालाएं (नायिकाएं) धन एवं शौहरत की चाह में क्या कुछ नहीं कर गुजरतीं, नंगे-उघाड़े बदन से फिल्म नगरी के समुद्र तट पर बेवाक विचरण करें अथवा वस्त्रहीन होकर तूलिका की पृष्ठभूमि बन जाएं या फिर कोई 'छाया बाला' सरेआम यह स्वीकार करे कि वह अविवाहित तो हैं लेकिन कुंआरी नहीं । तो आनेवाले समाज का स्वरूप क्या होगा यह सामने ही है ।

उपभोक्ता संस्कृति और नारी

एक तरफ तो आज की आधुनिक सभ्य एवं शिक्षित नारी स्वयं को पुरुष के बराबर अधिकार दिये जाने की बात करती है, नारी उपभोग की वस्तु नहीं है— जैसे उच्चारण देती है तो दूसरी

ओर वह अपने यौवनांगों के प्रदर्शन के नये-नये तरीकों का व्यापार करके स्वयं अपनी बल्कि समस्त नारी जाति की मर्यादा को धूल-धूसरित करती जा रही है । वर्तमान उपभोक्तावादी संस्कृति में आज की नारी इस कदर 'ग्लेमराइज' हो चुकी है कि वस्तुकरण की इस स्थिति तक पहुंचने के लिए उसने अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया है ।

टी.वी. चित्रहार शुरू होने की प्रतीक्षा और एक के बाद एक प्रसारित हो रहे विज्ञापनों की श्रृंखला में एक विज्ञापन में एक साफ-सुथरी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम से आयी यह खुलेपन की हवा तरक्की एवं आधुनिकता के विभिन्न स्रोतों के साथ-साथ चमक-दमक की वह तेज रोशनी भी लायी है जिसमें हमारे नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास ही नहीं हुआ है बल्कि हम पतन के उस रुख की ओर अग्रसर हो रहे हैं जहां मानव मूल्य आधारहीन होकर रह जाते हैं । पश्चिमी संस्कृति में हम उन आधारहीन मूल्यों को समेट रहे हैं जो न पश्चिमी संस्कृति के अनुरूप हैं और न ही हमारी अपनी संस्कृति के दायरे में आते हैं ।

और चमचम चमचमाती हुई कार आती है और कैमरा उसके एक टायर पर फोकस हो जाता है । कार एक झटके से रुकती है और कहीं से एक हाथ आता है जो टायर को सहलाता है तो कभी किसी औरत के मादक शरीर पर रेंगता नजर आता है ।

प्रतिस्पर्धावाले बाजार में उत्पाद की ओर उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए दुनियाभर में विज्ञापन एजेंसियां और उत्पादक जिस तरह के हथकंडे अपना रहे हैं उनमें महिला शरीर का इस्तेमाल सबसे पुराना और लोकप्रिय हथियार है । विज्ञापन बनानेवालों की बिरादरी में महिला शरीर के प्रति इस आग्रह का आलम यह है कि बीड़ी और साइकिल-रिक्शा टायर से लेकर सीमेंट— जैसी वस्तुओं के विज्ञापनों में भी महिलाओं की मुसकान और मादक अंगों का सहारा लिया जाता है ।

व्यावसायिक शालीनता और अश्लीलता

विज्ञापन की दुनिया में चलनेवाली इस परंपरा के बारे में अभी तक विरोध के स्वर केवल स्वयंसेवी संगठनों की ओर से आते रहे हैं, जिन्हें महिलाओं को विज्ञापनों में महज एक सेक्स सामग्री के तौर पर पेश किये जाने पर आपत्ति रही है । पिछले दिनों भारतीय महिलाओं के बारे में सन् २००० तक के लिए प्रस्तावित राष्ट्रीय नीति संबंधी जो रिपोर्ट प्रधानमंत्री को पेश की गयी उसमें केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विज्ञापनों में महिलाओं के दुरुपयोग पर गहरी चिंता व्यक्त की है । इसका एक उदाहरण महिला का अश्लील प्रस्तुतीकरण विरोध कानून है । इस कानून के तहत अब महिलाओं के बारे में आपत्तिजनक पोस्टरों, विज्ञापनों और होर्डिंग आदि के सार्वजनिक प्रदर्शन पर पाबंदी लगा दी गयी है । महिलाओं को अश्लील ढंग से प्रदर्शित करने को दंडनीय घोषित किया गया है । ऐसे मामलों में दोषी व्यक्ति को दो साल तक की कैद का प्रावधान भी रखा गया है । इस कानूनी दायरे में फिल्मी विज्ञापनों को भी शामिल किया गया है । फिल्म प्रदर्शकों को अब कोई भी पोस्टर जारी करने से पहले कानून की स्वीकृति लेना जरूरी है ताकि अश्लील पोस्टरों को समय रहते रोका जा सके । लेकिन इस मामले में अश्लीलता की व्याख्या नहीं की गयी है और इसे संबंधित लोगों की ईमानदारी पर छोड़ दिया गया है । नतीजा यह हुआ है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावसायिक शालीनता और अश्लीलता के बीच अंतर करने की जिम्मेदारी उन लोगों पर आ पड़ी है जो विज्ञापन तैयार करते हैं । इस संबंध में दिल्ली की एक विज्ञापन एजेंसी की संचालिका का मानना है, "महिला शरीर को विज्ञापन में इस्तेमाल की बात अपने आप में न तो अच्छी है और न बुरी । अगर साड़ी और महिलाओं से जुड़ी दूसरी चीजों से उपभोक्ता को परिचित कराने के लिए महिला शरीर का इस्तेमाल ढंग से किया जाता है तो बुरा कुछ नहीं है । लेकिन सिगरेट और सीमेंट बेचने के लिए अगर कोई महिला के उघड़े हुए शरीर का इस्तेमाल करता है तो यह महिला शरीर का अपमान भी है और गैर जरूरी होने के साथ-साथ अश्लील भी है ।

जब से दूरदर्शन पर विज्ञापनों का सिलसिला आरंभ हुआ है तब से भारतीय विज्ञापन उद्योग में विस्तार का एक नया दस्तूर चल निकला है । आज लगभग दो करोड़ टी.वी. सेटों के माध्यम से दूरदर्शन के विज्ञापनों की बाढ़ देश के ७५ फीसदी इलाके में रहनेवाले लोगों तक पहुंच रही है । पर सवाल तो यह उठता है कि विज्ञापन की दुनिया में महिलाओं का योगदान निर्वस्त्र होने से पूर्व रचनात्मक नहीं माना जा सकता ?

आधुनिकता बनाम नग्नता

खुलेपन की ओर अग्रसर आज के इस आधुनिक वर्ग को यह नहीं भूल जाना चाहिए कि शर्म और लाज नारी का प्रथम श्रृंगार है । नारी की सुंदरता उसके दबे-ढंके रूप में है न कि उसके अंग प्रदर्शन करनेवाले परिधानों को पहनने में । खुलेपन का अर्थ मनुष्य के बौद्धिक और आर्थिक विकास से है न कि आधुनिकता एवं फैशन के नाम पर शरीर की नुमाइश करनेवाली इन नवयौवना छात्राओं के भौंडे और वस्त्रविहीन प्रदर्शन से ।

फिल्म, टी.वी. मॉडलिंग और फैशन शो के अदभुत ग्लैमर ने आज की नवयुवतियों की जीवन पद्धति को ही बदल दिया है । शर्म और संकोच के दायरे से मुक्त इन लड़कियों को ऐसी आधुनिक पौशाकों से सुसज्जित देखा जा सकता है जो उनके शरीर को छुपाती कम हैं और दिखावा ज्यादा कराती हैं । सत्य तो यह है कि सुंदरता किसी ऊंट-पटांग श्रृंगार अथवा बेढंगे पहनावे की मोहताज नहीं है ।

आधुनिकता के दंभ में फंसी हमारे देश की लड़कियों की यह क्षीण मानसिकता है अथवा स्वयं को पुरुष वर्ग के समान दिखाने का परिमाप कि वे फैशन के नाम पर शरीर की नुमाइश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती हैं । किसी सार्वजनिक स्थान पर बाजार में अथवा शिक्षण संस्थान में निकली ऐसी नवयुवतियां भले ही सबकी नजरों से गुजरती हों लेकिन कौन ऐसा भलामानस होगा जो इन लड़कियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण भावना का मन रखता हो, उन पर जो भी नजर पड़ेगी वह एक नारी को देखेगी...., वह आधुनिक नारी जो पुरुष वर्ग की आवश्यकता है, न कि उन्हें कोई सम्मान की पात्र नारी, बहन या बेटी के रूप में देखेगा ।

सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास

पश्चिम से आयी यह खुलेपन की हवा तरक्की एवं आधुनिकता के विभिन्न स्रोतों के साथ-साथ चमक-दमक की वह तेज रोशनी भी लायी है जिसमें हमारे नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास ही नहीं हुआ है बल्कि हम पतन के उस रुख की ओर अग्रसर हो रहे हैं जहां मानव मूल्य आधारहीन होकर रह जाते हैं । पश्चिमी संस्कृति में हम उन आधारहीन मूल्यों को समेट रहे हैं जो न पश्चिमी संस्कृति के अनुरूप हैं और न ही हमारी अपनी संस्कृति के दायरे में आते हैं ।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विस्तार ने विदेशों की उन टी.वी. कंपनियों को भारत में पांव जमाने का एक मौका दे दिया है जिनके लिए न तो नैतिकता के कोई मायने हैं और न ही जिन्हें अश्लीलता व नंगेपन से गुरेज है । इन तमाम कारणों ने हमें एक दिशाहीन अंधेरे मार्ग की ओर धकेल दिया है । अब तक हम भारतीय भी इस सत्य के लिए अंधेरे में न रहे होंगे कि पश्चिमी देशों के अधिकांश स्कूल-कॉलेजों में 'कुंआरी मां' बननेवाली लड़कियों की तादाद में तेजी से वृद्धि हो रही है । ब्लू-फिल्मों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भपात के धंधों में अंधाधुंध रूप से वृद्धि हुई है जिनके लिए उनकी सामाजिक और मानसिक स्थिति उत्तरदायी है, और ऐसी ही किसी विचारधारा के चलते भारत में भी इन समाजहीन कृत्यों में बढ़ोत्तरी की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता ।

बीते ४८ वर्षों में जिस तरह के बदलाव हिन्दुस्तान के चेहरे पर आये हैं कमोबेश वैसे ही बदलाव हिन्दुस्तानी औरत के चेहरे पर भी देखने को मिल रहे हैं । महिलाओं की जीवन शैली में आया यह बदलाव भी शहरी समाज तक ही सीमित रहा है । गांवों और छोटे कस्बों तक इस बदलाव की केवल चर्चा ही पहुंच पायी है, शिक्षा के मामले में हालत यह है कि आज भी ७० फीसदी महिलाएं अनपढ़ हैं जिनमें से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में रहनेवाली हैं । अशिक्षा के इस माहौल में अगर महिलाओं की किस्मत से जुड़े सभी फैसले पुरुष के ही हाथों में बने रहते हैं तो इसमें हैरानी की क्या बात है । हालांकि कभी इंदिरा गांधी के रूप में प्रधानमंत्री पेश करके तो कभी पुलिस अफसर के रूप में किसी किरण बेदी की ओर इशारा करके बार-बार यह सिद्ध करने की कोशिश की गयी है कि हिन्दुस्तानी औरत को बराबरी के राजनीतिक और संवैधानिक अधिकार दिये गये हैं लेकिन इस दावे की पहली पड़ताल में ही यह स्पष्ट हो जाता है कि संवैधानिक और राजनीतिक बराबरी के फल औरतों के केवल उस वर्ग तक ही पहुंच पाये हैं जिनके पास शिक्षा या सामाजिक रुतबा है । यह तकलीफदेह सच है कि नौ बार लोकसभा चुनावों की प्रक्रिया से गुजर चुके भारत की संसद में औरतों का अनुपात नगण्य ही है । देशभर में चोटी के प्रबंधकों एवं प्रशासकों, भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा में भी महिलाएं उसी अनुपात में हैं । और यह सब उस हालत में है जबकि महिलाओं का जनसंख्या में अनुपात ४६.५ फीसदी है ।

हैरानी की बात नहीं है कि परंपरागत अशिक्षा और सामाजिक गैर बराबरी के चलते हिन्दुस्तानी औरत या तो पुरुष राजनेताओं को वोट देनेवाली मतदाता बनकर रह गयी है या फिर अपनी मुसकराहट और अंगों का प्रदर्शन करके बीड़ी, शेविंग क्रीम, सीमेंट और टायर बेचने में मदद करनेवाली मशीन ।

— द्वारा श्री बिक्रमसिंह (अध्यापक)
चौ. श्याम सिंह बिल्डिंग के पीछे, संतपुरा,
मोदीनगर,
जिला : गाजियाबाद-२०१२०१ (उ.प्र.)

जूता

अमरीकी गांधी के नाम से विख्यात अश्वेत अमरीकी नेता मार्टिन लूथर किंग सार्वजनिक सभा में भाषण कर रहे थे कि किसी ने उन पर जूता फेंका ।

मार्टिन लूथर किंग के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी । उन्होंने जूता हाथ में उठा लिया और फिर भीड़ की ओर देखते हुए शांत स्वर में कहने लगे, "वह देश महान है जहां के लोग अपने सेवक का ख्याल रखते हैं । पैदल चलनेवाले मुझ गरीब को किसी सज्जन ने जूता देकर उदारता दिखायी है । मेरा उनसे अनुरोध है कि इसका जोड़ा देकर मुझे उपकृत करें ।

—रजनी मौदगिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाक काटने की प्राचीन परंपरा

● कृष्ण मुरारी पुरोहित

नाक कटने-काटने की परंपरा की शुरुआत तुलसी के अनुसार त्रेता अर्थात राम के समय से हुई मानी गयी है । इससे पहले कटी नाकों के बारे में मुझे तो कोई जानकारी नहीं है, यदि आप सूर्पनखा की नाक काटे जाने से पहले की किसी घटना या दुर्घटना को जानते हैं या आपने किसी से सुन रखा है तो आप एक महान नकटे की श्रेणी के हैं । वैसे तो हम भी कम नहीं पर आप हमसे भी ज्यादा महान हैं । क्योंकि आप त्रेता यानि राम के समय से पहले की किसी नकटा या नकटी को जानते हैं, तो आप ज्यादा महान होंगे ही इसमें कोई संदेह नहीं ।

परंपरा शब्द से पाठक आश्चर्यचकित न हों, क्योंकि त्रेता से आज तक नाकों को क्षति पहुंचाने का कार्य जारी है । आदर्शों के काम परंपरा ही बन जाते हैं । यह तो आप भी जानते ही होंगे । राम को आदर्श मानकर ही रामायण-जैसा मान्य ग्रंथ लिखा गया । चूंकि राम तो आदर्श थे । अतः उनके आदर्शों पर कलिग्रसित मनुष्यों को चलना चाहिए इससे अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है । ऐसा धर्म के ठेकेदारों का मानना है । इसके लिए भोले मानव को बाध्य किया जाता है । ना माननेवाले को नास्तिक समझा जाता है । इसीलिए बेचारा वह भी आदर्श का अनुसरण करते हुए लक्ष्मण को नकटी सूर्पनखा (विरोधी) की कटी-कटायी नाक को काटने का आदेश देता है । तो यह परंपरा ही तो हुई चूंकि राम ने ही लक्ष्मण को नाक काटने के लिए आदेशित किया था इसलिए सेवक हुक्म का विरोध नहीं कर सका और यह घटना घटी जो इतिहास बनकर रही । इसी परंपरा का निर्वाह करते आज भी बड़े-बड़े धर्मानुयायियों को देखा जा सकता है । क्योंकि जो हमारे आदर्शों ने किया वह गलत कैसे हो सकता है । वह तो धर्म है धर्म ।

नाक काटने की परंपरा इस कदर रंग लायी कि अब तो लोग छोटी-छोटी बातों में नाक कटाने काटने लगे हैं और नाक कटाने काटने के बाद गौरव का अनुभव करते देखे गये हैं । आदर्श का काम गलत कैसे हो सकता है । अब तो किसी की नाक में थोड़ी-सी खरोंच भी लग जाए तो लोग इस प्रकार नाक का वर्णन करते हैं जैसे सूर्पनखा ने रावण की भरी सभा में चिल्ला-चिल्लाकर उसे ललकारा और अपनी 'नकटी नाक' दिखायी । कई तो यह सुनकर कि उनकी नाक कटनेवाली है सुनते ही कटायी पूर्व प्रचार शुरू कर देते हैं कि हमारी तो गयी । कई नाक पर हाथ रखकर घूमते हैं बचाने की खातिर, पर नहीं बचा पाते हैं क्योंकि लक्ष्मण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो वैज्ञानिक युग है इसमें सर्जरी संभव है तो सर्जरी हो जाती है । बेचारी सूर्पनखा के समय में न तो कोई सर्जरी व्यवस्था थी और न ही कोई सर्जन ही था । अब बात दूसरी है, लेकिन यह भी हर कोई नहीं करा सकता क्योंकि यह मंहगी है इसलिए सूर्पनखा भी प्राथमिक चिकित्सा के या हल्दी, चूना लगाये बगैर ही रावण के पास बिलखती पहुंची थी । रावण ने भी चिकित्सा पर ध्यान नहीं दिया और राम को ललकारने का विचार बनाया ।

(विरोधी) का वाण हमेशा तेज धार रहता है उसमें जंग नहीं लगता है ।

आपको अभी तक मनुष्यों, जानवरों, पक्षियों आदि की नाकों के बारे में जानकारी होगी परंतु हमारे तो शहर की भी नाक है । जिसमें हम रहते हैं ।

हमारे शहर की नाक के बारे में क्या बतायें भाई । एक जमाना था जब हमारे शहर की अच्छी बड़ी सुडौल चौड़ी नाक (पुल) थी । जो कि हमारे शहर के बीचों-बीच थी । परंतु अब बड़े ही दुःख के साथ यह कहना पड़ रहा है कि उसकी नाक हम चाहते हुए भी नहीं बचा पाये । वह भी कट गयी और यदि यूं कहा जाए कि काटी गयी है तो गलत नहीं होगा । क्योंकि कोई स्वयं तो अपनी नाक काटता नहीं यह तो बलात् काटी जाती है । मुझे ऐसा लगता है कि लोग अपनी नाकों के बारे में पहले से कुछ ज्यादा लापरवाह हो गये हैं । कितनों को कट जाने के बाद भी चिपकाते देखा जाता है परंतु ऐसा नहीं होता, कटी, जुड़ती नहीं । कइयों की नाकें तो बड़ी लंबी होती हैं जो शरीर से बिलग हो काफी दूर रहती हैं । हाल ही में एक परिचित मिले, उनसे उदासी का कारण पूछा तो बड़े ही लज्जित होकर कहने लगे, भाई क्या बतायें हमारी तो नाक ही कट गयी । हमारी साली किसी के साथ भाग गयी, उसने हमारी नाक का खयाल नहीं किया । अपनी तो कटायी ही हमें भी नहीं बख्शा । दुनिया में ऐसे बेचारे कितने हैं जिनकी नाक पर काल मंडराता ही रहता है । न जाने कब ले जाए । किसी की लड़की भाग जाने से कटती है, तो किसी की भगाने से कटती है, किसी की जेल जाने से कटती है, तो किसी की चुनाव हारने से कटती है, कभी-कभी तो जीतने से भी कट जाती है । कम वोटों से जीते एक ऐसे प्रत्याशी से हमारी मुलाकात हुई, उन्होंने बताया कि ऐसा जीतना भी क्या जीतना, उससे तो हम हार ही जाते । हमारी तो नाक ही कट गयी ।

पर अब घबराने की कोई बात नहीं रही, यह तो वैज्ञानिक युग है इसमें सर्जरी संभव है तो सर्जरी हो जाती है । बेचारी सूर्पनखा के समय में न तो कोई सर्जरी व्यवस्था थी और न ही कोई सर्जन ही था । अब बात दूसरी है, लेकिन यह भी हर कोई नहीं करा सकता क्योंकि यह मंहगी है इसलिए सूर्पनखा भी प्राथमिक चिकित्सा के या हल्दी, चूना लगाये बगैर ही रावण के पास

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलखती पहुंची थी । रावण ने भी चिकित्सा पर ध्यान नहीं दिया और राम को ललकारने का विचार बनाया ।

पर अब त्रेता नहीं, कलयुग है । हमारे शहर की नाक कटने के बाद जब सूर्पनखा (शहर की जनता) नकटी होने के बाद रावण (नेताओं) के पास पहुंची तो रावण ने सूर्पनखा की ही गलती बताते हुए उसे भी भला-बुरा कहा । परंतु बहन होने के नाते पक्ष में थोड़े-बहुत हाथ-पैर तो हिलाये पर वह भी नाक काटनेवाले लक्ष्मण (सुरक्षा विभाग) का कुछ नहीं बिगाड़ सका । और बाद में उसी तरफ जा मिला । हमारा शहर आज भी सूर्पनखा की तरह उसी दशा में खड़ा यह राह देख रहा है कि कोई सर्जन यहां आये और जांघ की चमड़ी निकालकर नाक की सर्जरी करे । मंहगी चिकित्सा के कारण आज भी लोग नाक कटने में डरते हैं । बहुतों को कहते सुना जाता है कि हम फलां काम नहीं करेंगे उससे हमारी नाक कट जाएगी । बगैर नाक के हमारी क्या इज्जत रह जाएगी । परंतु कुछ ऐसे भी होते हैं जिनकी नाक छिपकली की पूंछ की तरह होती है । जो कटने के बाद भी पुनः निकल आती है । कुछों की नाक कटे वृक्ष की तरह होती है जो कटने के बाद स्वस्थ पीकों के रूप में जगह-जगह से पीक जाती है । ऐसे लोग ज्यादा अच्छे होते हैं क्योंकि उन्हें नाक की फिकर ही नहीं होती । हम तो अपने को नाकवाला कह ही नहीं सकते क्योंकि जब हमारे शहर की ही नाक कट चुकी है तो हम अपने को नाकवाला कैसे कह सकते हैं ? हमारे नाक होने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि हमारा तो शहर ही नकटी नाकवाला है ।

— शास्त्री वार्ड,
सोहागपुर, जिला : होशंगाबाद

कड़ुआ फल

हकीम लुकमान बचपन में एक अमीर के पास रहते थे । उसके घर में जब भी कोई खाने की चीज आती थी, तो पहले लुकमान को हिस्सा मिलता था ।

एक बार एक सौदागर ने तोहफों के साथ एक फल भी दिया । अमीर ने फल खाया और पहला टुकड़ा लुकमान को दिया । फल कड़ुआ था । मगर लुकमान ने बिना मुंह बनाये उसे खा लिया । उसके बाद अमीर ने वह फल खाया मगर तुरंत थूक दिया ।

फिर लुकमान से पूछा, "बेटे तुझे यह फल कड़ुआ नहीं लगा था ?"

"लगा था, हुजूर", लुकमान ने कहा ।

"फिर तुमने उसे खाया क्यों ?" अमीर ने पूछा ।

लुकमान ने जवाब दिया, "मैंने सोचा जिन हाथों से हजारों बार मीठी और लजीज चीजों का मजा लिया, उन्हीं से एक बार यदि कड़वी चीज मिल गयी तो शिकायत क्या करता ।"

अमीर ने लुकमान को गले लगा लिया ।

—सुभाष बुड़ावनवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक काव्य में रोग मुक्ति के उपाय

● अ.कु.जै.

हानिप्रद पदार्थ

चैते गुड़, बैशाखे तेल ।
महुआ जेठ, असाढ़े बेल ।।
सावन साग, न भादों मही ।
क्वार करेला, कार्तिक दही ।।
अगहन जीरा, पूस घना ।।
माघ में मिश्री, फागुन चना ।।
इन नियमों को, माने नहीं ।
मरे नहीं तो, परे सही ।।

लाभप्रद पदार्थ

कार्तिक दूध, अगहन में आलू, पूस पान
और माघ रतालू ।
फागुन शक्कर घी जो खाये ।
चैत आंवला कच्चा चबाये ।
बैशाखे जो खाय करेला,
जेठे दाख, असाढ़े केला ।
सावन निशि में जब, तब खाये,
भादों ब्यार कबहिं नहीं पाये ।
क्वार कामना देय बचाय,
तो सत वर्ष आयु हो जाय ।

काली खांसी

काली मिर्च महीन पिसावे,
आक-पुष्प और शहद मिलाय ।
चटनी भोजन प्रथमहि खावे,
सूखी खांसी झट मिट जाय ।

पुराने रोग का इलाज

छोटी पीपर शहद में, नित्य नियम सो खावे ।
प्रातः निहार मुंह जो खावे, दमा, श्वास मिट जावे ।
सोंठ कुलंजन, मिर्च, बच, पीपर, पतरज, पान ।
इन्हें कूट गोली करे, श्वास, कांस की हान ।
इमली की पत्ती हरी, रत्ती हींग मिलाये,
सैंधा नमक मिलाय के काढ़ा लेय बनाय,
जब चौथाई जल रहे, गरम-गरम पी जाय ।
यहि प्रकर कुछ दिन पिए, सूखी खांसी जाय ।

भोजन में अरुचि

किशमिश एक छटांक ले, दीजे रात्रि भिगोय ।
प्रातः नमक संग खाइए, काली मिर्च मिलाय ।
पुनः छटांक भिगोइए, और मट्ठा आधा सेर ।
व्रत रहकर निशि खाइए, महीनेभर दो बेर ।।

नेत्र रोग

अदरक तथा प्याज रस,
सिर्स पात रस लाय ।
रोग रतौंधी दूर हो,
नेत्रन इक माह लगाय ।।

नपुंसकता और धातु रोग

प्रतिदिन तुलसी बीज जो,
पान संग नित खाय ।
रक्त, धातु दोनों बढ़ें, नामर्दी मिट जाय ।
ग्यारह तुलसी पत्र जो, स्याह मिर्च संग चार ।
तो मलेरिया इकतारा, मिटे सभी विकार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

सीताराम अग्रवाल, लखनऊ

प्रश्न : शनि की साढ़े साती का कष्ट दूर करने के लिए कोई रत्न सुझाएं ?

उत्तर : काले घोड़े की नाल का छल्ला शनिवार को धारण करें, लाभ होगा ।

मुकेश प्रसाद त्रिपाठी, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : राजनीतिक भविष्य कैसा ?

उत्तर : हाल फिलहाल विशेष नहीं । बाद में अच्छा ।

मनोज द्विवेदी, नीम का थाना

प्रश्न : अपना स्वयं का मकान कब तक ?

उत्तर : दो साल के बाद ।

संजय कुमार गोस्वामी, रतलाम

प्रश्न : मैनेजर कब बनूंगा ?

उत्तर : इस वर्ष संभावना है ।

टीना शर्मा, भरथना (इटावा)

प्रश्न : मेरी शादी कब होगी ?

उत्तर : नवंबर तक हो जाएगी ।

अशोक कुमार सिंघल, अलवर

प्रश्न : मैं पूर्णतः स्वस्थ कब तक होऊंगा ?

उत्तर : योग्य चिकित्सक को दिखायें, लाभ प्राप्त होगा ।

राजीव सेतिया, नयी दिल्ली

प्रश्न : रेलवे में नौकरी कब लगेगी ?

उत्तर : मुश्किलें पेश आएंगी ।

डॉ. अजित कुमार झा, दरभंगा

प्रश्न : कार का योग है या नहीं ?

उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्ध में प्राप्त हो सकती है ।

प्रतिभा सिंह, लखनऊ

प्रश्न : क्या मेरा सी.पी.एम.टी. में चयन होगा ?

उत्तर : प्रयासों में तीव्रता लायें, सफलता मिल सकती है ।

हितेश कुमारी, गाजियाबाद

प्रश्न : आठ वर्ष के विफल वैवाहिक जीवन में खुशी कब आएगी ?

उत्तर : जून '९६ से आपका अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है । धीरे-धीरे सुख बढ़ने लगेगा ।

दिनेश कुमार, जयपुर

प्रश्न : विदेश यात्रा कब एवं उपाय ?

उत्तर : इस वर्ष हो सकती है ।

कदम सिंह, जालंधर कैंट

प्रश्न : जालंधर कैंट से स्थानांतरण कब तक ?

उत्तर : अब जल्द ही हो जाएगा ।

श्वेता स्वधा सिंह, दिधवारा (छपरा)

प्रश्न : क्या मैं डॉक्टर बन सकती हूं ?

उत्तर : हां बन सकती हैं ।

सुषमा, नयी दिल्ली

प्रश्न : बेटी की शादी कब व कहां होगी ?

उत्तर : योग चल रहा है, प्रयास करें, सफलता मिलेगी ।

राजेश कुमार मिश्रा, इलाहाबाद

प्रश्न : क्या मैं पुलिस अफसर बन सकता हूं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब तक ?

उत्तर : आपको अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त होगी ।

वीना भाटिया, करनाल

प्रश्न : विवाह दिनांक ३-१०-८४ को हुआ । संतान नहीं हुई, उपाय, संतान योग है तो कब तक ?

उत्तर : आपकी कुंडली में सूर्य संतान में बाधक है और सूर्य की दशा की समाप्ति के बाद ही संतान की उम्मीद कर सकती हैं ।

रीता भड़ोल, हीरपुर (हि.प्र.)

प्रश्न : वर्ष १९९६ में क्या एम.एस.सी. में प्रवेश मिलेगा ?

उत्तर : मिल जाएगा ।

राधारमण कुमार, पटना

प्रश्न : आई.ए.एस. में चयन कब होगा ?

उत्तर : एलाईड सर्विसेज में चयन हो जाएगा ।

बद्री प्रसाद खरे, जबलपुर

प्रश्न : आर्थिक परेशानी कब तक दूर होगी ? रत्न भी सुझायें ?

उत्तर : यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से अच्छा व्यतीत होगा ।

शिवचरण शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : व्यापार किस चीज का लाभकारी होगा ?

उत्तर : कपड़ा, सीमेंट, ग्लास आदि का व्यापार कर सकते हैं ।

प्रविष्टि—१६८

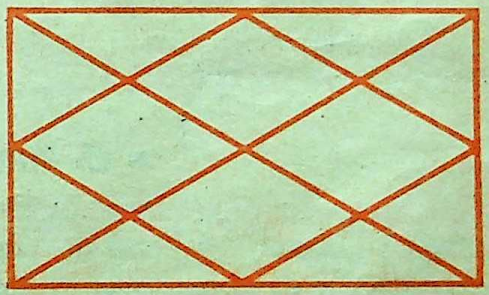

नाम

जन्म-तिथि (अंग्रेजी तारीख) ..... महीना ..... सन .....

जन्म-स्थान ..... जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण .....

पता .....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १६८) 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० **मार्च, १९९६**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण जात है : मुंह काला हो जाएगा

● डॉ. संसारचंद्र

असल और नकल का रिश्ता बहुत पुराना है । कितना पुराना, इसका अनुमान लगाना, प्रायः कठिन है । वैसे असल-नकल की बाहमी मुठभेड़ सृष्टि के आदिकाल से ही चलती रही है । दोनों जी भरकर एक-दूसरे को ललकारती रही हैं और आज भी यह क्रम जारी है । पुराणों की एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार एक बार नारद मुनि ने किसी विशेष स्वयंवर में अपनी किस्मत आजमाने का प्रोग्राम बनाया था । विष्णु भगवान की एक नहीं, तीन रानियां थीं, जबकि नारद अब तक कौमार्य-व्रत धारण किये बैठे थे । आखिरकार कभी तो उनको भी 'मैनस्ट्रीम' में प्रविष्ट होने का अवसर मिलना चाहिए । मगर शक्ल-सूरत अकसर उनको धोखा दे जाती थी । काश ! उनको भी कभी विष्णुरूप प्राप्त हो सकता ? वह भी किसी छोटी-मोटी राजकुमारी के कृपापात्र बन पाते । बड़ी कठिन समस्या थी । 'जाएं तो जाएं कहां' की नौबत आ चुकी थी ।

आखिर एक दिन काफी अरसा सिर-धुनने के बाद, एक तरकीब दिमाग में कौंध उठी । क्यों न विष्णु महाराज का ही आश्रय लिया जाए । उनसे बड़ा दानी, दयालु और गरीब नवाज भला और कौन हो सकता है ? फिर क्या था, वीणा बजाते उनके दरबार में जा पहुंचे और विष्णुरूप हासिल करने के लिए एक अच्छा-खासा 'मैमोरेंडम' उनकी सेवा में समर्पित कर दिया । यद्यपि नारद बला-के छटे-घुटे थे और घाट-घाट का पानी पी चुके थे, मगर 'मैमोरेंडम' का मसौदा तैयार करते समय मात खा गये । अपनी शब्दचातुरी का चमत्कार दिखाने के लिए विष्णुरूप का पर्यायवाची शब्द 'हरिरूप' लिख गये । वह भूल गये कि 'हरि' का दूसरा अर्थ बंदर भी होता है । अब विष्णु महाराज के सामने कोई विशेष समस्या न थी । झट मैमोरेंडम मंजूर कर लिया और नारद के असली चेहरे के स्थान पर बंदर का नकली चेहरा चस्पा कर दिया ।

नारदजी बल्लियों उछलते, किलकारियां भरते अपने अभीष्ट स्वयंवर के विराट मंडप की ओर चल दिये । समय थोड़ा था, इसलिए किसी सैलून या ब्यूटी पार्लर में जाकर अपनी नयी रूपछवि निहारने की भी तकलीफ गंवारा नहीं की । वैसे भी 'विष्णुरूप' किसी आईने का मोहताज नहीं था । 'मेरे सकल मनोरथ पूरे' वाला उल्लास-भरा गीत गाते हुए और खड़ताल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजाते हुए स्वयंवर के पंडाल में जा धमके । वह भूल गये कि विष्णु की माया कितनी अपरंपार है । एक नहीं, बीसों नारद भी यदि दल बांधकर आ जाएं, तो भी इसकी ताब नहीं ला सकते । परिणामस्वरूप 'शिशुपाल के हाथ रह्यो कंगना, विधना कछु और की और करीवाली स्थिति उत्पन्न हो गयी । नारद की वह पिटाई हुई कि छठी का दूध याद आ गया । यह असल के मुकाबले में नकल की पहली हार थी । मगर यह कहानी सतयुग की है, जब 'सत्यमेव जयते' का ही बोलबाला था । 'सत्यमेव जयते' आज भी हमारा 'सिंबल' है परंतु अब यह अपना प्राचीन वर्चस्व खो चुका है । अगर नारद कलियुग की छत्रछाया में अपना 'लक' 'ट्राई' करते तो शायद कूचा-ए यार से इस कदर बे-आबरू होकर न निकलते ।

सच पूछो तो नारद गहरे में पैठनेवाले व्यक्ति नहीं थे । सतयुगी मुनि होने के कारण वह दांवपेच भरी कलियुगी नीति से पूरी तरह कटे हुए थे । वह एकदम भूल गये कि उनका चेहरा नकली है । नकली चेहरों की तिजारत कलियुग में ही संभव हो सकती है । वह यह भी भूल गये कि कलियुग वास्तव में 'नकल युग' है । भाषा-विज्ञान के नवीन नियमों के अनुसार 'इकार' प्रयत्न लाघव के कारण स्वतः लुप्त हो जाता है । इस युग की 'नैगेटिव वेल्यू' को उजागर करने के लिए 'न' उपसर्ग का संयोग भी अनिवार्य हो जाता है । वास्तव में भाषा-विज्ञान में कमजोर होने के कारण ही नारदजी इस रहस्य को नहीं समझ सके और फोकट में ही बाजी हार गये ।

अब कलियुग बनाम 'नकल युग' का भी जरा हाल सुन लीजिए । जब मैं लाहौर में था, एक बार इश्तहारों की बाढ़ आ गयी थी । दरवाजे, खिड़कियां, बिजली के खंभे, वृक्षों के तने, गर्ज ये कि जहां भी थोड़ी-सी गुंजाइश निकल सकती थी, इश्तहारबाजी की लपेट में आ गये थे । लाउडस्पीकर भी गला फाड़-फाड़कर इश्तहारों की ही भाषा बोलता था । 'नंदा बस असल है, और सब नकल है ।' खाने, पीने, पहनने आदि के काम आनेवाली तमाम चीजों के असली-नकली होने की बकझक सुनते-सुनते कान पहले ही बहरे हो चुके थे । अब असल-नकल की यह बीमारी बसों तक में भी फैल गयी थी । सोचा, नकली बस में सफर करने पर क्या नहीं हो सकता ?

सच पूछो तो नारद गहरे में पैठनेवाले व्यक्ति नहीं थे । सतयुगी मुनि होने के कारण वह दांवपेच भरी कलियुगी नीति से पूरी तरह कटे हुए थे । वह एकदम भूल गये कि उनका चेहरा नकली है । नकली चेहरों की तिजारत कलियुग में ही संभव हो सकती है । वह यह भी भूल गये कि कलियुग वास्तव में 'नकल युग' है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस बिगड़ भी सकती है और दुर्घटनाग्रस्त भी हो सकती है । और भी बहुत-कुछ हो सकता है । मेरा रक्तचाप बढ़ना शुरू हो गया । उस रात मैंने दो-तीन ऐसे भयानक, सपने देखे कि मैं थर्रा गया । 'या इलाही ! यह माजरा क्या है ?'

दूसरे दिन कॉलेज जा रहा था । मेरा रास्ता लाहौर के बिजली बोर्ड की ओर से निकलता था । मैं प्रतिदिन वहां से गुजरते लोगों को अंदर आते-जाते देखता था । आज बोर्ड के मुख्य द्वार पर कर्मचारियों का एक अच्छा-खासा रेला देखकर पांव वहीं ठिठक गये । कर्मचारियों में कुछ अजीब-सा जोश-खरोश दिखायी देता था । आपस में जोर-जोर से बोलने के अलावा कुछ एक लमहों के बाद वे लोग नारे भी लगा रहे थे । पहले गिरोह का मुखिया एक खास-अंदाज से बाजू ऊपर उठाकर नारेबाजी की शुरुआत करता था :

'परमानंद बाहर आओ, अपनी असली उमर बताओ' शेष कर्मचारी भी अपने लीडर-जैसी बुलंद आवाज में एक स्वर होकर मुहारनी पढ़ते थे, जिससे वातावरण गूंज उठता था । हर राहगुजर थोड़ी देर के लिए रुक जाता था और कहता था—उमर का घटाना-बढ़ाना तो ऊपरवाले के हाथ है । कितने अफलातून हैं, आजकल के अफसर जिन्होंने उमर को भी अपनी अधिकार सीमा में दबोच रखा है ।

इस घटना से मेरा मूड कुछ ज्यादा ही बिगड़ गया । परमानंद को मैं बखूबी जानता था । इसका सबसे छोटा भाई मेरे साथ पढ़ता था । मेरा माथा ठनका, दाल में जरूर कुछ काला है ! फिर भी लाहौर में असली उमर के साथ हेराफेरी अथवा बलात्कार के किस्से प्रायः नगण्य ही थे । कभी-कभार ही कोई परमानंद प्रकट होता था । हमारे बुजुर्ग बताते थे कि योगियों और वेश्याओं को छोड़कर असली उमर के साथ खिलवाड़ करने का दस्तूर कतई तौर पर बंद था । नौकरी पेशा लोग अवकाश-प्राप्ति से बचने के भी खास इच्छुक नहीं होते थे ।

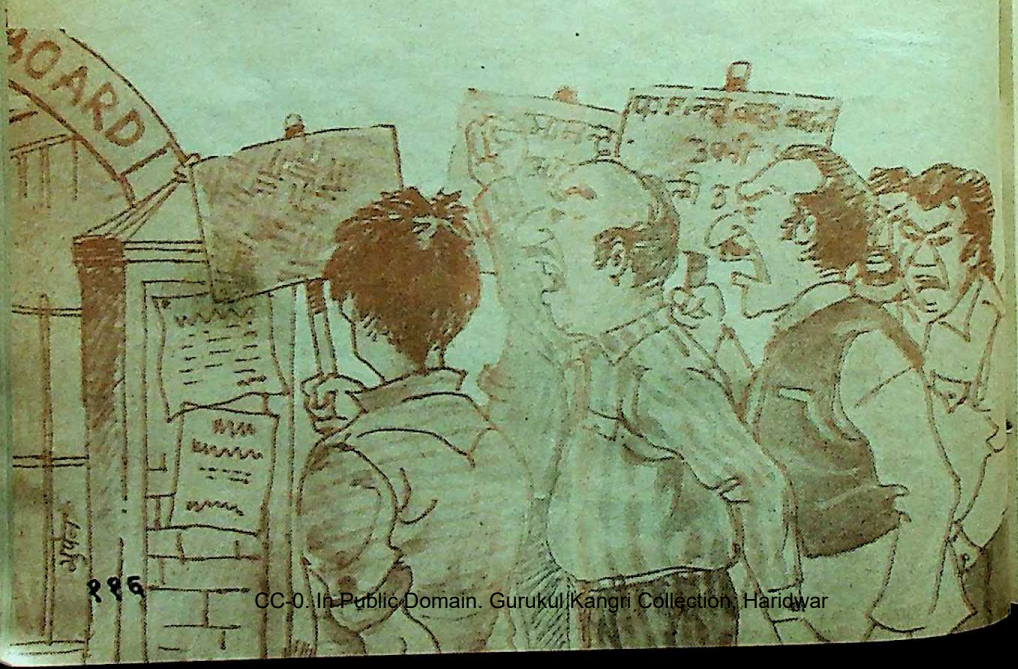

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेजों के जमाने में हिंदुस्तानियों को किसी बड़ी असामी पर तैनात भी नहीं किया जाता था। योगियों और वेश्याओं के संबंध में तो यह कहावत पहले से ही मशहूर थी :- **योगी उमर बढ़ावहीं, वेश्या उमर घटाय।**

सन्'४७ के बाद सरहद के इस पार विशेषकर पूर्वी पंजाब में उमर के साथ खिलवाड़ करने के किस्से काफी तूल पकड़ गये थे। पंजाब यूनिवर्सिटी-जैसे नामी शैक्षिक संस्थानों में भी धूल उड़ने लगी थी। वस्तुस्थिति स्पष्ट थी कि यूनिवर्सिटी का बहुत-सा जरूरी रेकॉर्ड लाहौर में दंगों को अर्पित हो चुका था। अब नया रेकॉर्ड तैयार होना था। उधर से आये कुछ अवसरवादी लोगों के लिए यह एक सुनहरा मौका था कि वे अपने-अपने रेकॉर्ड ठीक कर लें और फिर न कहें कि हमें खबर नहीं हुई। चुनांचे थर्ड डिवीजन, सैकेंड और सैकेंड फर्स्ट बन गये। जो लोग अवकाश प्राप्ति के निकट पहुंच रहे थे, उन्होंने भी उमर-सुधार संबंधी इस नवीन योजना में पूरा-पूरा सहयोग दिया।

उन दिनों यूनिवर्सिटी की बागडोर दीवान आनंद कुमार के हाथ थी। दीवान साहब निहायत नेक और जिंदादिल इनसान थे। ठाठबाट शाही और मिजाज अमीराना था। इधर एक उजड़ी हुई यूनिवर्सिटी को नये सिरे से पांव पर खड़ा करना था। उधर अध्यापकों और कर्मचारियों की उमर की गड़बड़ी के मुकदमे सुनते-सुनते उनकी नर्मोनाजुक तबीयत हाहाकार कर उठती थी। कहते थे इन पढ़े-लिखे और 'क्रीम ऑव सोसाइटी' को क्या हो गया है। अपने फैसलों में ही हिदायतें और उर्दू के शेर भी लिख देते थे। एक बार एक बहुत बड़े विद्वान जिसे भारत सरकार से महामहोपाध्याय की उपाधि मिली हुई थी, पर बुरी तरह बरस पड़े थे। उसका लड़का पचास पार कर गया था परंतु उसके साठ पूरे करने में अभी भी तीन महीने बाकी थे। इंक्वायरी अफसर ने केस पुलिस को देने की सिफारिश की थी। दीवान साहब का फैसला इस प्रकार था—

'फौरन से पैशतर रिटायर कर दिया जाए। मामला पुलिस के सुपुर्द न किया जाए, ब्राह्मण जात है, मुंह काला हो जाएगा।'

—१३०७-सैक्टर-१९ बी
चंडीगढ़-१६००१९

नुकसान

एक चुनावी दौरे में रास्ते पर खेत में मटर की फलियां देखकर लालबहादुर शास्त्री के साथ चल रहे कार्यकर्ताओं ने फलियां खाने की इच्छा जतायी। शास्त्रीजी ने खेत के मालिक से कुछ फलियां तोड़ लाने का आग्रह किया तो वह प्रसन्नता से ढेरों फलियां तोड़ने लगा। शास्त्रीजी ने कहा, "बस कीजिए, इससे बहुत नुकसान होगा।"

किसान उदारता से बोला, "मैं सहर्ष नुकसान सह लूंगा।"

शास्त्रीजी गंभीरता से बोले, "किंतु भाई यह नुकसान सिर्फ आपका नहीं, बल्कि पूरे देश का है।"

—सुभाष बुड़ावनवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समेटना चाहता हूं

पीले पत्तों-सा मेरा रंग
मुझे ही दूर कर रहा है
अपनों से कदम बढ़ते हैं कि
रुकावट आ खड़ी होती है, अपने/
पराये का भेद लेकर
चेहरे भीतर चेहरे की छाप
दबे पांव उलझती है,
मेरा मौन तोड़ देना चाहती है/
कुछ कहकर चाहत का रूप बदलकर
अनजाना हो जाता है
कुछ कह सकने की मुसीबत/
तैयार खड़ी
अनसुलझी पहेली-सा/
मैं भटककर
अपनों को समेटना चाहता हूं/
अपनों में

● प्रदीप गौतम 'सुमन'

शिक्षा : स्नातकोत्तर (भूगोल)
जन्मतिथि : १-७-१९७१
आत्मकथ्य : जिसे मैं जीता हूं उसी के अनुभवों से कविता का सृजन करता हूं।
पता : राधिका, ५वीं, पीली कोठी, रीवा (मध्य प्रदेश)

अंतिम शुरुआत

अनंत समुद्र के किनारे तक
रात के अंतिम प्रहर तक
अनंत आसमां के उस
छोर तक जहां
नहीं अंत वह नहीं
वहां से तो शुरू होती है
जीवन की वह लीला
जहां सांस की अंतिम गिनती तक
जीवन जीना चाहता है जीव
तो क्या वही है अंत
नहीं अंत यह नहीं
रात का अंतिम प्रहर
जो जल्द ही रूप ले लेता है
भोर का वह भोर
जो उत्साह से है भरी हुई
जो मन में असीम भावनाओं
का जन्म लिए हुए है।
नहीं अंत कुछ भी नहीं
अंत ही तो शुरुआत है।

● संध्या शर्मा

पता : क्वार्टर नं. एच-५६६
ब्लॉक नं.-८, (हिंडालको कॉलोनी)
पोस्ट : रेनुकूट
जिला : सोनभद्र (उ. प्र.)
जन्म : २० सितम्बर, १९७५
शिक्षा : बी. ए. प्रथम वर्ष (अध्ययनरत)
आत्मकथ्य : दिल में कभी जब विचारों का उफान आता है तथा मन अत्यंत दुःखित रहता है तब अंदर के टूटे-फूटे शब्दरूपी विचार ही कविता का रूप ले लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौन हूं मैं

भावनाओं का
चेतना पर
असीम फैलाव
मैं चाहता हूं
बनाना
एक कविता
तुम्हारे लिए

शब्दों का रूप
देना चाहता हूं
जज्बातों को

डरता हूं
यादों की
अमूल्य धरोहर को
करने से
आम

भावनाएं
तूफान बन जाती हैं
और मैं
रह जाता हूं
'मौन'।

● एस. एन. कर्ण

शिक्षा : स्नातक (कला

आत्मकथ्य: "पूछो न हाले दिल हमारा शेर की बाबत मौसम, जमाना, वक्त का हाले बयां है ये"

पता : कर्ण कुटी, ३/५२
वार्ड नं.-३, (छपकैया)
वीरगंज नगरपालिका (नेपाल)

सच्चे साथी

कहना तो बहुत कुछ चाहती हूं,
पर कुछ भी कह न पाती हूं
शब्दों की तिजोरी खोली तो,
मैं उसको खाली पाती हूं।
मैं थक-सी बस रह जाती हूं।
हाय कहां गये इन्हें किसने लिया,
मैं कुछ भी समझ न पाती हूं।
हाय ये ही तो हैं दोस्त मेरे,
जीवन के हर एक पहलू में
बिन इनके तो मैं शायद स्वयं
को जीवित ही न पाती हूं।
यह ही भरते संगीत मेरे
नीरस से इस लघु जीवन में,
मैं शब्द-साधना करके ही
अपना संगीत बनाती हूं।
ये देते मेरी भावनाओं को रूप,
मेरी कल्पना के चित्र बनाते हैं,
ये ही तो वो माध्यम है जो
तुम्हें मेरा परिचय दे पाते हैं।
ये मेरे जीवन की उमंग,
ये मेरे जीवन का बसंत,
ये मेरे तपते जीवन पर
शीतल बौछार बरसाते हैं।

● निशि सेठ

जन्म तिथि : १७ जनवरी, १९६४

आत्मकथ्य : कविताएं मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। इनके बिना मैं अपने जीवन को अधूरा मानती हूं। यह मेरे जीवन का प्रतिबिंब है।

पता : डी-९३६-ए न्यू फ्रैंड्स कॉलोनी
मथुरा रोड, नयी दिल्ली-६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझना मुश्किल है

मौत को पुकारूं
तो जिंदगी
आ धमकती है
जिंदगी को चाहूं तो
मौत अच्छी लगती है
मोहब्बत रुसवा
किये जा रही है
किस्मत धोखा
दिये जा रही है
समझना मुश्किल है
जिंदगी किधर
लिए जा रही है ।

● अरविन्द बक्शी

शिक्षा : वाणिज्य स्नातक

आत्मकथ्य : कविता सिर्फ भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, अपितु जीवन के संघर्ष में उत्साहित करनेवाला शस्त्र है ।

पता : हाउस नं. ८९५-ए/३
वार्ड नं. ८
मेहरोली, नयी दिल्ली-११००३०

बेबसी

सूरज की हुई मैं, न हुई चांद की
न धूप की हुई, न हुई छांव की
मन में लहरें उठती हैं, आती-जाती
हैं
दिल-दर्द के तूफान से
टकराती हैं
बेबसी की जंजीरें कसतीं जाती हैं ।

● वंदना 'बंदू'

जन्म : १-३-१९७८

शिक्षा : अंतर स्नातक,

आत्मकथ्य : आसपास के माहौल को देखकर, और हृदय में जो विचार आते हैं उसे मैं कविताओं के रूप में अभिव्यक्त करती हूं ।

पता : द्वारा/श्री प्रमोद बिहारी लाल दास,
शाहगंज बेंता, रेलवे गुमती नं.-२२,
डी. एम. सी. एच.
लहेरियासराय, दरभंगा (बिहार)-८४६००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईंट पर सिर रखकर ख्वाब बुननेवाला शायर— हाफिज

● उषा वधवा

"वह शीराज का नहीं— जमीन का भी नहीं— किसी का बेटा अथवा पिता भी नहीं, वह केवल अपनी रचनाओं का जनक है, शांत, सौम्य रस का बेटा है, कल्पना की ऊंची उड़ान और उच्चबयानी का शाह है। उसकी जेबों में शब्दों और विचारों का खजाना भरा है। वह ईंट पर सिर रखकर सोता है और सितारों के ख्वाब बुनता है। आंखों के पानी से सूरज का दामन भिगो सकता है। वह दरवेश भी है और भिखारी भी। पर अपनी टोपी बादशाह के ताज से बदलने को तैयार नहीं।"

कौन था वह "ईंट पर सिर रखकर सितारों के ख्वाब बुननेवाला शायर ?

यह शब्द कहे गये हैं फारसी के अत्यंत लोकप्रिय शायर 'हाफिज' के लिए जिनका पूरा नाम था—ख्वाजा शमसअलदीन मोहमद हाफिज और यह लिखनेवाले थे उन्हीं के एक हमवतनी शायर अली दशती।

एक प्रसिद्ध शायर

एक प्रसिद्ध शायर होने के साथ-साथ हाफिज अत्यंत विद्वान, कुरान के ज्ञाता, साहित्यकार एवं विवेचक भी थे। उनकी मृत्यु के छहसौ साल बाद आज भी ईरान का कोई ऐसा घर न होगा जहां उनके शेर गुनगुनाये न जाते हों, पुस्तक की कोई ऐसी दुकान न होगी जहां विभिन्न जगहों से प्रकाशित छोटे-बड़े अनेक रूपों में उनका दीवान आज भी धड़ाधड़ न बिकता हो। कोई महफिल हो अथवा दर्शन की चर्चा, हाफिज का उल्लेख लाजमी है।

उथलपुथल के साक्षी

जन्म की तिथि के विषय में यद्यपि निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता पर उनकी रचनाओं में आये प्रसंगों के आधार पर यह लगभग ७२६ हिजरी अर्थात १३२६ ईस्वी है। उनके जन्म के शीघ्र बाद ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण शिक्षा में अनेक कठिनाइयां आयीं एवं अधिकतर शिक्षा उन्होंने अपनी ही लगन एवं मेहनत से प्राप्त की। उन्होंने फारसी एवं अरबी के महान शायरों के कलाम कंठस्थ कर लिये। इसी तरह अरबी में लिखी हुई पूरी कुरान भी शब्द-ब-शब्द याद कर ली। इसी कारण उन्हें 'हाफिज' कहा जाता है। हाफिज का जीवनकाल राजनीतिक उथल-पुथल का काल रहा। उनके समय में ही चार बार एक जालिम बादशाह से दूसरे जालिम बादशाह के हाथ सत्ता हस्तांतरण हुआ, जिनके अत्याचारों से शीराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहस-नहस हो चला था । यही नहीं, फारस की राजधानी एवं अत्यंत वैभवशाली होने के कारण वह अनेक लुटेरों को भी आकर्षित कर रहा था । यद्यपि चंगेज खां की लूटमार और खून-खराबा हाफिज के जन्म के पूर्व की बात है पर उसका असर अभी बाकी था कि तैमूरलंग ने तोड़फोड़ कर खून की नदियां बहा दीं । इस लूटमार एवं आपसी कशमकश, अराजकता एवं अशांति की स्पष्ट छाप उनकी रचनाओं में देखी जा सकती है । उथल-पुथल के इस दौर में जब अदब, साहित्य और कला सब धराशायी हो चुकी थी, हाफिज रूकना नदी के किनारे शांत चित्त से अपनी बुद्धिमत्ता के गौहर इकट्ठा करते रहे ।

अपने समय के हालात से हाफिज अछूते नहीं रहे । जब तैमूरलंग इस्फहान के कत्लेआम के पश्चात शीराज की ओर बढ़ रहा था तो जोशीली शायरी द्वारा हाफिज ने लोगों को एकजुट होकर मुकाबला करने को उकसाया । वह अपने समय के प्रति, अपने कर्त्तव्यों के प्रति पूर्णतः सजग थे पर अपनी सीमा से बंधे भी महसूस करते थे, तभी उन्होंने इस दौरान लिखा था कि—

'हालांकि दिल आग से (जलकर) खाक हो रहा है पर मैं अपने लबों पर आये लहू को चाटकर खामोश हूं ।'

प्रेम : उत्तर है हर पहेली का

निःसंदेह हाफिज मुख्यतः इश्क के शायर हैं । यह इश्क उन्हें अपने रचनाकार ईश्वर से है । अपना सारा वजूद अपने उस परम में ही मिला देना यही उनका एवं अन्य सूफी शायरों का लक्ष्य है । हाफिज के विचार से आदमियों

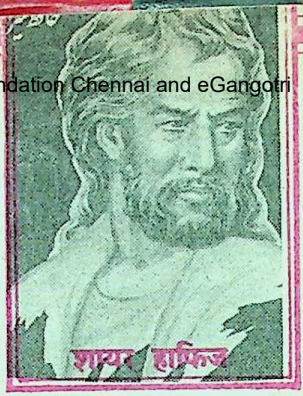

से पहले इस धरती पर फरिश्ते रहते थे जो प्यार की अनुभूति से नावाकिफ थे । तब प्रभु ने मनुष्य बनाया और उसमें इश्क का जज्बा भी जगाया । अक्ल जो कि इश्क से गैरत खाती थी, चाहती थी कि खुदा के नूर को वह रौशन करे । इतने में अकस्मात बिजली चमकी और खुदा अपने संपूर्ण वैभव और सौंदर्य के साथ दिखायी दिया और उसी के बाद से यह दिल उसकी तलाश में है । उसे पाने को आतुर है । हाफिज के विचार में प्रेम ही सब पहेलियों का उत्तर है । प्रभु की छवि हर इनसान और पूरे जहान में व्याप्त है । इस प्रकार पूरा जहान एक हो जाता है । हाफिज जानते हैं कि इश्क की राह रुकावटों और कठिनाइयों से भरपूर है एवं अंतहीन है । इसे धीरे-धीरे ही लांघना चाहिए क्योंकि तेज भागने से गिर जाने का खतरा है ।

फारसी के एक ख्यातिप्राप्त शायर जामी ने उन्हें कुदरत का एक करिश्मा माना है और अली दशती ने उन्हें आजाद रूह माना है जो जिंदगी के हर रंग को स्वीकारता है और जो अपनी टोपी बादशाह के ताज से बदलने को तैयार नहीं ।

वास्तव में हाफिज बादशाह के ताज को बहुत खतरनाक मानते हैं और हैरान हैं कि— 'माना यह बहुत सुंदर है पर लोग उसे पाने को क्यों इतने लालायित रहते हैं ? क्या वह सचमुच अपना सिर खतरे में डालने लायक है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाफिज की कलम की नोक से छह हजार से कुछ अधिक शेरों ने जन्म लिया । उनमें दर्शन का निचोड़ है एवं उनके पास अंतर्भेदी दृष्टि है । प्रायः गजल में छह से लेकर पंद्रह शेर होते हैं पर बहुत अच्छी गजलों में ही इन सब में एक विचार की निरंतरता रहती है । जबकि हाफिज की सब गजलों में विचार की अटूट कड़ी पायी जाती है । उनमें मानवता के प्रति प्यार एवं आम आदमी की समस्याओं के प्रति सहानुभूति है । मध्ययुगीन ईरान के समय का आराम पसंद जीवन एवं बेअमल होते हुए भी स्वयं को महान जतलाने का प्रयत्न करना, इस रवैये के वे विरुद्ध थे । साथ में ही उन्होंने फर्जी धर्मोपदेशक एवं उनके आडंबरपूर्ण जीवन का परदाफाश करने का प्रयत्न किया है । शायद ही विश्व के किसी एक कवि ने इतने लोगों को इतने लंबे काल तक प्रभावित किया हो । बंगाल में जिस प्रकार टैगोर की काव्य रचनाएं प्रत्येक घर का अभिन्न अंग हैं उसी तरह हाफिज पूरे ईरान निवासियों का पारिवारिक सदस्य है । उनका दीवान कुरान के साथ ही अत्यंत सम्मानपूर्वक रखा जाता है, उनके शेर महल और कुटिया में समान रूप से गाये जाते हैं । स्कूल की किताब में भी पाये जाते हैं और महफिलों, मयखानों में भी सुनाये जाते हैं । अनपढ़ लोग भी उनमें आनंद पाते हैं एवं विद्वानों की सराहना भी पाते हैं । फारसी के नाटकों, वार्त्ताओं में आज भी वह बहुधा उद्धृत किये जाते हैं । सड़क पर झाड़ू लगाते जमादार से लेकर विदेश पढ़े वैज्ञानिक तक को हाफिज की गजल गाते सुना जा सकता है । (यह मेरा निजी अनुभव है) उनकी भाषा सरल और हृदयस्पर्शी है, उसमें एक अंदरूनी लय है । वह अपने शब्दों को यूं चुनते हैं कि फारसी भाषा का पूरा ज्ञान न होने पर भी हृदय बांध लेती है । उन्होंने आम भाषा और साहित्यिक भाषा के बीच समन्वय स्थापित किया । उनकी भाषा सादी पर अर्थ अत्यंत गूढ़ होता है एवं बहुधा द्विअर्थी होता है । अर्थात एक बार पढ़ने पर जो प्रत्यक्ष समझ आये उसके अतिरिक्त एक अन्य छुपा हुआ रूहानी अर्थ । एक अदृश्य शक्ति— ईश्वर की— आवाज जिसे फारसी में कहते हैं 'लिसान-अल-गीब' और इसीलिए ही उनकी शायरी का अनुवाद अत्यंत कठिन होता है । यूं तो अंगरेजी में ही उनके तीस से अधिक अनुवाद हैं पर सफलतम अनुवाद माना जाता है सुश्री गरट्रद बॅल द्वारा किया गया अनुवाद । वह हाफिज की रूह को पकड़ने में सफल हुई है ।

आज हाफिज की मृत्यु के छह सौ साल बाद भी रोज सायंकालीन उसकी आरामगाह पर महफिल जमती है जहां कोई भी जाकर शामिल हो सकता है । वहां हाफिज का कलाम सुना-सुनाया जाता है । वहीं रखे हस्तलिखित दीवान को खोलकर लोग अपना शंका-निवारण करते हैं एवं भविष्य के लिए दिशा-निर्देश लेते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना की उड़ान

अनेक आलोचक हाफिज की तुलना उनके ही समकालीन, विश्व प्रसिद्धि प्राप्त इतालवी कवि 'दांते' से करते हैं । दांते का दर्शन अधिक ठोस, आसपास की, साधारण जन की सचाई पर टिका है पर हाफिज की शायरी में इन सबके साथ ही कल्पना की दिलकश उड़ान है । उनका वजूद मानो एक नगमा सराय है जहां कभी वह मस्ती से गाता सौंदर्यानुभूति कराता है, कभी उन्हें होशियार करता, आगामी वक्त की चेतावनी देता प्रतीत होता है । कभी उनके दुःख-दर्द बांटता लगता है ।

हास्यप्रिय हाफिज

कठिन परिस्थितियों में भी न केवल अपनी कोमलता वरन् अपना हास्य भी हाफिज ने बरकरार रखा है । अपने एक शेर में उन्होंने अपनी महबूबा के गाल के तिल के बदले में बल्ख और बुखारा (आधुनिक अफगानिस्तान के दो शहर) न्यौछावर करने की बात लिखी है । तैमूरलंग, जिसके आधीन यह दोनों शहर थे, जब वह शीराज पहुंचा तो उसने हाफिज को अपने दरबार में बुला भेजा और क्रोधित होकर जवाब-तलब किया । हाफिज ने बिना संयम खोये या विचलित हुए उत्तर दिया कि— 'जहांपना, अपनी इसी दरियादिली के कारण ही तो आप देख रहे हैं कि मैं किस कदर फक्कड़ और खस्ताहाल हो चुका हूं ।' यह जवाब सुनकर तैमूरलंग को न केवल हंसी ही आयी वरन् उसने शायर को बहुत-सा धन देकर विदा भी किया ।

हाफिज को अपने जीवनकाल में ही बहुत प्रसिद्धि मिली । यह ध्यान रखने की बात है कि उस समय पुस्तकें अनेक संख्या में छपकर देश-विदेश नहीं पहुंचायी जाती थीं । अपितु प्रत्येक रचना को लिपिकों अथवा प्रशंसकों द्वारा हाथों से लिखा जाता था और इस प्रकार उनकी प्रतियां अन्य लोगों तक पहुंचती थीं । पर तब भी हाफिज की प्रसिद्धि उनके जीवनकाल ही में बगदाद और हिंदुस्तान तक पहुंच चुकी थी । इराक के तत्कालीन सुल्तान अहमद जलापर जो दानिश परवर और स्वयं दानिशमंद था, अनेक बार उसने हाफिज को निमंत्रण भेजा । उसी प्रकार हिंदुस्तान के दो बादशाहों मोहम्मद शाह दकिनी व बंगाल के सुल्तान ग्यासअल दीन ने राह-खर्च भी भेजा पर हाफिज अपनी प्रिय मातृभूमि एवं रूकना नदी का किनारा छोड़कर कहीं जाने को राजी न हुए । दरवेशों और विद्वानों के संग रहना उन्हें बहुत प्रिय था ।

अमर शायर हाफिज

हाफिज को बहुत प्रिय था शिराज । जुनून की हद तक प्रिय । जिससे वह किसी तरह दूर नहीं रह सकते थे । कहते हैं वह जीवन में बस एक बार ही शीराज से बाहर गये । बादशाहों के निमंत्रण पर तो नहीं पर भारत के आध्यात्मिक ज्ञान ने उन्हें अवश्य अपनी ओर आकर्षित किया और उसी का अध्ययन करने उन्होंने भारत आने का निश्चय किया पर जब बंदरगाह पहुंचे तो मौसम की खराबी के कारण जहाज का उस दिन रवाना होना स्थगित कर दिया गया । उन्होंने इसे विधि का आदेश माना और लौट गये और फिर कभी कहीं नहीं गये । शीराज में जन्मे और जीवनभर वहीं रहे पर इतनी उच्चकोटि का शायर क्या कहीं यूं सिमटकर रह सकता है ? खुशबू की तरह स्वयंमेव ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैलकर आज वह दूर-दूर तक बहुतों के, विशेषतः अपने देशवासियों के रग-रग में रचे-बसे हैं । उनकी आरामगाह के बारे में एक शायर ने यूं लिखा है—

'सैकड़ों वर्ष पश्चात भी हाफिज के शेरों की अनुगूंज फिजा में फैली हुई है । बुलबुल की तरह उसके नगमे एक फूल से दूसरे फूल तक जाते हैं और अपनी इतनी तारीफ सुनकर गुलों का चेहरा शरम से लाल है और सूर्य की किरणें हर पत्ते को अपना आइना बना रही हैं ।'

शहरवासियों का अपने शायर के प्रति प्रेम

का एक यही उदाहरण काफी है कि सन् १३९२ में हाफिज की मृत्यु के पश्चात जब उस पर मकबरा बनवाया गया तो शीराज की पुरानी लूटमार और तोड़फोड़ याद करके किसी हमशहरी ने मकबरे की दीवार पर यह शेर लिख दिया—

'अगरच जमलः उक्काफ शहर गारत करद
खुदाश खैर दहाद आन के इन इमारत करद'

'पूरे शहर को भी चाहे लूट लेना, पर मेहरबानी करके इस इमारत को छोड़ देना ।'

जिस रूकना नदी का किनारा उन्होंने अपनी भ्रमण-स्थली बनाया था और जो हाफिज का संग पाकर स्वयं भी अमर हो गयी है उसी के किनारे सरू के घने सायों में ही हाफिज की चिरस्थायी विश्राम-स्थली भी बनायी गयी । आज की इमारत अंतिम शाह के पिता शाह रजा द्वारा एक फ्रांसीसी इंजीनियर की देखरेख में बनवायी गयी । वह बीस हजार वर्गमीटर से अधिक के घेरे में है । छत पर, खंबों पर, दीवारों पर, मुख्य कब्र के पत्थर पर हाफिज की गजलों को सुंदर लिखावट में लिखकर अमर कर दिया गया है । उद्यान के मुख्य द्वार पर हाफिज का अमर संदेश है—

'मेरी कब्र के पास से गुजरना तो हिम्मत रखना दुनियाभर के स्वतंत्रता-प्रेमियों की यह इबादतगाह होगी'

आज हाफिज की मृत्यु के छह सौ साल बाद भी रोज सायंकालीन उसकी आरामगाह पर महफिल जमती है जहां कोई भी जाकर शामिल हो सकता है । वहां हाफिज का कलाम सुना-सुनाया जाता है । वहीं रखे हस्तलिखित दीवान को खोलकर लोग अपना शंका-निवारण करते हैं एवं भविष्य के लिए दिशा-निर्देश लेते हैं । मन में ईश्वर का ध्यान करके विश्वास के साथ पुस्तक खोलने से दायीं ओर वाली गजल आपके प्रश्न का (अपरोक्ष रूप में) उत्तर देती है और ईरानियों का दृढ़ विश्वास है कि वह हमेशा सही होता है । घरों में भी लोग अनिश्चय की स्थिति में दीवान खोलकर समाधान पाते हैं और नौरुज अर्थात नववर्ष (२१ मार्च) की रात हर घर में प्रत्येक सदस्य के लिए भविष्य पूछा जाता है क्योंकि अपने हमवतनियों के लिए तो वह मानव से ऊंचे कोई अलौकिक व्यक्ति ही थे ।

—जी-१० मसजिद मोठ
नयी दिल्ली-११००४८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दढ़ियलनामा

होली हुड़दंगी भविष्यफल-९६

● स्वामी बिजनौरी

अजीब है भारत देश और यहां की अजब मस्ती। फागुन क्या आता है, सारा माहौल ही मस्त हो जाता है। आमों पर बौर आता है और सारी सृष्टि ही मानो बौरा जाती है। पेड़, पक्षी, मानव सभी मस्त हो जाते हैं और आ जाता है होली त्यौहार। रंगों का त्यौहार होली, मस्ती का त्यौहार होली, श्लीलता-अश्लीलता के बंधन मुक्त हास्य का त्यौहार होली, वर्ण-जाति, आयु-स्तर भेद से अलग हास्य-परिहास का त्यौहार होली।

होली बस होली है। जीवन में हास्य घोलने का नाम होली। तो इसी होली हुड़दंग के मौके पर आपका सालभर का भविष्यफल हाजिर है। अगर आपके नाम का भविष्यफल मिल जाए इस लेख में तो भाग्यशाली हैं आप, न मिले तो महाभाग्यशाली। इस दढ़ियल की कलम से आपके करमों का भांडा फूटते-फूटते रह गया। थोड़ी-सी ज्योतिष, कुछ तंत्र, कुछ अनुभव, कुछ लटके-कुछ भंग की तरंग— सब मिलाकर बना है यह भविष्यफल। अच्छा लगे तो अपनी पड़ोसन को जरूर पढ़वाइए, साली-सलहज को फोटो कापी कराकर भेज दीजिए, कहीं अगर ठेस लग जाए, तो भूल जाइए— बस बुरा न मानो होली है।

A से प्रारंभ होता है नाम जिनका, प्रगति की राह पर दौड़े चले जाते हैं। अपनी पिछली तीन पीढ़ियों से अधिक उन्नति करते हैं, मगर इश्क के मामले में बड़े ही फटीचर किस्म के जीव होते हैं। या तो इश्क के पहाड़ पर चढ़ेंगे नहीं, चढ़ गये तो उतरना नहीं जानते। धकियाकर-लठियाकर ही उतारे जाते हैं। अपने विकास के लिए अपने 'यार' को प्रयोग करने से भी नहीं चूकते।

इस साल आर्थिक प्रगति के कई नये मार्ग खुलेंगे। पेट के रोगों के कारण शारीरिक कष्ट। पुराने इश्क की हंडिया चौराहे पर फूटकर दंगलमय जीवन का कारण बनेगी। पुत्री के कारण मानसिक पीड़ा मिलेगी।

अमावस्या को गंगास्नान करना शुभ होगा।

B से प्रारंभ होता है नाम अगर, तो समाज तो मान्यता प्रदान करेगा, मगर घर-परिवार के लोग सनकी ही समझते रहेंगे। आदर्शों की ओट में आप अपना काम चौकस रखने में माहिर हैं। इश्क के मामले में आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयु-जाति-वर्ग का कोई अंतर नहीं मानते । जीवन साथी या तो विलग हो जाता है अथवा आपके कारनामों से दुःखी रहता है ।

नये इश्क का गुब्बारा उड़ान भरेगा, लेकिन फजीता जरूर करा जाएगा । नव-निर्माण कार्य का योग, मगर कर्जा मार जाएगा । समाज सेवा में जूतम पैजार का पूरा योग है । जेल यात्रा का सौभाग्य भी प्राप्त हो सकता है ।

बाजरे का आटा, चीनी मिलाकर रोज चींटियों को खिलायें ।

D से प्रारंभ होता है नाम जिनका, पक्के नाटककार, धूर्त और गजब के साहसी होते हैं । जीवन के रण क्षेत्र में हर परिस्थिति का सामना बहादुरी से करते हैं । इश्क का चस्का कच्ची आयु से ही चिपक जाता है । अधिकतर यार/दोस्त/शुभचिंतक 'एस' नामधारी ही होते हैं । यहां यह कमाल भी होता है कि पुत्र/पुत्री/भाई/साले/सालियां तक इनके, इश्क के पेशेवर मरीज होते हैं ।

पर प्रेम की कढ़ी में उफान जरूर आएगा, जो फजीता कराकर आत्महत्या तक का योग बनाएगा । पुत्र के कारण अशांति । वाहन दुर्घटना का भय ।

हर शनिवार को पीपल के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलायें ।

G से प्रारंभ होता है नाम जिनका, उनकी बाल्यावस्था अभावों में गुजरती है । पिता का प्यार कम ही मिलता है । उन्नति में महिलाओं का ही सहयोग होता है । दिखावे का जीवन जीते हैं । इश्क के पैदाइशी मरीज होते हैं । इश्क में जुतियाये जाने का कोई प्रभाव नहीं होता इन पर । पक्के इश्कबाज होते हैं ।

इस वर्ष द्रौपदी छाप नारी के कारण प्रतिष्ठा में चार लट्ठ लगने का पूरा योग है । इसी इश्क के कारण जेल यात्रा तक का सुयोग मिलेगा । ससुराल पक्ष से आर्थिक लाभ । व्यवसाय में धोखे की संभावना ।

हर शनिवार को काले उड़दों का दान करें ।

I से प्रारंभ होता है नाम जिनका, वे समाज को नयी दिशा देने में समर्थ होते हैं । जगत में सितारे की तरह चमकते हैं । पक्के-पुराने-पेशेवर मरीजे-इश्क होते हैं । कच्ची आयु में ही इश्क का स्वाद चख लेते हैं । पक्के नशाखोर और अपनी धुन के अलग ही ।

इस वर्ष पुत्र के कारण मानसिक कष्ट । रोजगार में आर्थिक लाभ कम, हानि अधिक । पुराने प्रेम के अंकुर फूटकर, जीवन में तूफान खड़ा करेंगे । यश-वैभव के नये द्वार खुलने की भी संभावना ।

ज्वार का आटा मछलियों को गोली बनाकर,

जीवन में हास्य घोलने का नाम होली । तो इसी होली हुड़दंग के मौके पर आपका सालभर का भविष्यफल हाजिर है । अगर आपके नाम का भविष्यफल मिल जाए इस लेख में तो भाग्यशाली हैं आप, न मिले तो महाभाग्यशाली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार को अवश्य खिलायें ।

K से प्रारंभ होता हो, नाम अगर, तो पक्के सौंदर्य प्रेमी, स्वच्छता प्रिय, साहित्य-संगीत प्रेमी, लेकिन पक्के बदमाश । इश्क में नित्य नया घपला कोई अजूबा नहीं । इश्क के सहारे पैसा कमाने की होड़ में आगे ।

पुराने बिछड़े यार मिलने का पूरा संयोग बैठ रहा है । आपके कारनामों के कारण घर का वातावरण दंगलमय हो जाने का पूर्ण योग । लाटरी से हानि । नशेबाजी की लत के कारण किडनी के रोगों का भय । हां, आर्थिक लाभ का एक अनायास अवसर हाथ आएगा ।

सोमवार का उपवास करें, एक समय भोजन करें ।

M से प्रारंभ होता हो नाम अगर, तो अपनी बात के पक्के, अपनी धुन के पक्के होते हैं । साहसी, निडर और अड़ियल होते हैं । इश्क के मामले में जरा-सा साहस दिखाकर, पीछे हट जानेवाले । इश्क की याद लिए जीवनभर आंसू बहानेवाले होते हैं ।

इस वर्ष जीवन को अजूबे प्राप्त होंगे । अकल्पनीय फल प्राप्त होंगे । पुराने इश्क के भांडे फूटेंगे जरूर और तूफान मचाकर गायब हो जाएंगे । जूतमपैजार से लेकर कृष्ण जन्मस्थान की सलाखोंवाली यात्रा का भी सुयोग प्राप्त होगा ।

हर सुबह, अगली होली तक, कुत्ते को गुड़-दही का भोग लगायें ।

N से शुरू होता है जिनका नाम, वे अपने क्षेत्र के महारथी होते हैं । शराब इनकी कमजोरी और दूसरों के अवगुण तलाशकर उछालना इनका धर्म । इश्क के मामले में बेहद फटीचर । इधर-उधर ताकझांक करना इनकी आदत । इश्क के लिए जाति-धर्म-आयु-स्तर का भेद कोई महत्त्व नहीं रखता इन जीवों के लिए ।

नये-नये इश्क लड़ाने का पूरा अवसर प्राप्त होगा । नशेबाजी की लत के कारण शारीरिक कष्ट मिलेगा । संतान के कारण दारुण कष्ट मिलेगा । आर्थिक तंगी का अनुभव, कई बार होगा । यश प्राप्त होगा ।

पीले वस्त्र धारण करें, चांदी की अंगूठी में मूंगा धारण करें ।

R से प्रारंभ होता है जिनका नाम, वे निःसंदेह साहित्य/कला/संगीत के पुजारी, पेशेवर आशिक मिजाज, इश्क के मामले में पक्के धूर्त, कमाल के नशेबाज और अपने क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्ति होते हैं । धन की कोई कमी नहीं होती । जी-हजूरियों का जमघट घेरे रहता है ।

इस वर्ष नये-नये रोमांस लड़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे । धार्मिक आयोजनों में भाग लेने के कई अवसर मिलेंगे । सुदूर यात्राओं के कई अवसर मिलेंगे । वाहन दुर्घटना का भय । पुराने प्रेम-प्रसंग के कारण पारिवारिक अशांति का योग ।

अगली होली तक एक भिखारी को नित्य भोजन करायें ।

तो भइया, लेख लंबा हो रहा है, भविष्यनामा पूरा होने का नाम नहीं ले रहा, भंग की तरंग टूट रही है ।

जिंदा रहे, दाढ़ी सलामत रही, तो अगली होली पर फिर मिलेंगे ।

— हाइडिल कॉलोनी
स्योहारा : बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिया आया बसंत फूल रस के भरे

● डॉ. राजेन्द्र गौतम

कविता संस्कृति की वर्णमाला है और संस्कृति का आख्यान प्रकृति से असंबद्ध नहीं है। यों तो 'प्रकृत' अनुभव जीवन के आदिम संवेग हैं परंतु उनका कलात्मक परिष्कार ही कविता का उपजीव्य बनता है। प्रकृति शाश्वती है, चिर-नवीना है क्योंकि उसका छंद— उसकी लय— ऋतु-आश्रित हैं। अपनी चिरंतन गतिशीलता में आवृत्तिमूलक स्थिरता का पालन ही 'ऋत' है। 'ऋत' धर्म होता है और व्युत्पत्ति की दृष्टि से ऋतु इससे दूर नहीं है। नियम का निर्वाह ही ऋत है और ऋतु की विशेषता भी नियमितता है। कविता मानव-संवेदनाओं के समानांतर ऋतुओं के स्पंदन को नित्य प्रतिध्वनित करती रही है। महान कविता न तो शुष्क विचारों का रेतीला महल खड़ा किया करती है और न केवल छुई-मुई से बिंबोंवाले बेलबूटे काढ़ा करती है। वह तो संस्कृति की ऊर्ध्वगामी यात्रा के अनुभवों को प्राकृतिक संवेदनाओं के माध्यम से इंद्रिय-ग्राह्य बनाया करती है। यह सही है कि समकालीन कविता में जीवन-संघर्ष अधिक तुमुल है, तो भी अपने सफल एवं सार्थक रूप में जितनी यह रोजमर्रा की जिंदगी की भागदौड़ में शामिल है, यांत्रिक कोलाहल की भीड़ का हिस्सा है, पसीने से लथपथ है, राजनीति के चक्र पर घूम रही है; उतनी ही यह नदी-झरनों, खादर बियाबानों, उपवन, रेगिस्तानों एवं खेत-खलिहानों के पास भी है।

ऋतुराज बसंत

ऋतुराज बसंत भारतीय जीवन में—और इसीलिए भारतीय साहित्य में— अद्वितीय महत्त्व रखता है। कालिदास-पूर्व और उनके समकालीन भारत में बसंतोत्सव का उल्लेख जितने विविध रूपों में हुआ है, उसका वर्णन एक स्वतंत्र शोध का विषय है जबकि मध्यकालीन भारतीय साहित्य में बसंत की गरिमा का उतना उत्साहपूर्ण चित्रण नहीं मिलता। 'बगर्‌यो बसंत है' के गायक उसकी शोभा से अभिभूत तो हैं पर ये कवि जीवन की समग्रता से नहीं जुड़े हैं। चेतना के नवोत्कर्ष के रूप में अपनी समस्त वेदना और विषाद के बावजूद हिंदी कविता में तो छायावाद ही 'बसंत का अग्रदूत' है। 'नव वय के अलियों के गुंजन' के समानांतर 'क्षितिज पर बसंत रजनी की पुलक' अपने युग की स्वच्छंदतावादी रहस्यमयता को स्पंदित करती है परंतु इस युग में भी निराला का गीत— 'सखि, बसंत आया'— सर्वाधिक विकसित चेतना का परिचय देता है। समकालीन कविता की अधिकांश प्रवृत्तियों के उद्‌गम-स्रोत निराला में ही विद्यमान हैं। इस युग की रचनाओं की बासंती छवियों की परंपरा निराला के उपर्युक्त गीत में ही देखी जा सकती है। बसंत प्रकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उल्लास-पर्व है। 'निराला' इस सर्वाच्छादक उल्लास को 'भरा हर्ष वन के मन/नवोत्कर्ष छाया' के रूप में ध्वनित करते हैं अन्यत्र उनकी रूपमती कल्पना का यह उत्कर्ष भी भव्य है—

सखी री यह डाल, वसन बासंती लेगी
देख, खड़ी करती तप अपलक
हीरक-सी समीर-माला जय
शैलसुता अर्पण-अशना
पल्लव-वसना बनेगी

समकालीन कविता की जो छंदमुक्त, प्रगीतात्मक एवं नवगीतपरक भंगिमाएं हैं, उनमें अपेक्षाकृत नवगीत में प्रकृति-संदर्भों की उपस्थिति सर्वाधिक है किंतु विशेष यह है कि नयी कविता, प्रगतिशील कविता, प्रयोगवादी कविता एवं नवगीत में प्रकृति चित्रण के धरातल छायावाद से बहुत भिन्न हैं। छायावाद में प्रकृति की सत्ता एक तो अप्रस्तुतों के माध्यम से अधिक उभरी है, दूसरे वह स्वयं कवियों की अनुभूति की विवृत्ति का माध्यम है जबकि परवर्ती काव्य में, विशेषकर नवगीत में, प्रकृति का स्वतंत्र व्यक्तित्व तो निर्मित हुआ ही है, साथ ही इसके माध्यम से व्यक्ति की अपेक्षा पूरे परिवेश को साकार किया गया है। उसकी अभिव्यक्ति-भंगिमा मूलतः बिंबधर्मी है। समकालीन कविता में अंकित बासंती छवियों का निर्माण भी इसी प्रवृत्ति के अंतर्गत हुआ है।

अज्ञेय ने हिंदी कविता को बहुत-सी पूर्व-परंपराओं से काटकर नया कलेवर देने का भरसक प्रयास किया था पर उनके साहित्य का समग्र मूल्यांकन उन्हें परंपरा से जोड़ता भी है। बसंत के चित्रण में वे शिल्प की नवीन भंगिमा के बावजूद परंपरा से जुड़ते नजर आते हैं—

शिशिर ने पहन लिया बसंत का दुकूल
गंध वह उड़ा रहा पराग धूल-झूल
कांटों का किरीट धारे बन देवदूत
पीत वसन दमक उठे तिरस्कृत बबूल
अरे ऋतुराज आ गया

वस्तुतः इससे पूर्व ही प्रगतिशील कविता ने जन के मन से जुड़ने की जो आतुरता दिखलायी थी, उसने बसंत-चित्रण को भी नया रूप दे दिया था। तब केदारनाथ अग्रवाल ने हवा का मानवीकरण छायावाद से बिलकुल अलग जमीन पर किया था। 'बसंती हवा' कविता में उन्होंने कृषक-बालिका का उल्लास साकार कर दिया है। यह उल्लास भरे-पूरे बसंत को साकार कर देता है—

हंसी जोर से मैं/हंसी सब दिशाएं
हंसे लहलहाते खेत सारे
हंसी चमचमाती/भरी धूप प्यारी
बसंती हवा में हंसी सृष्टि सारी

नये कवियों में प्रयोग का जो उत्साह था, उसी के कारण त्रिलोचन शास्त्री बसंत की नव-चेतना को तब कुछ-कुछ परकीय-सी लगनेवाली विधा गजल में भी अंकित करते हैं। 'सुनता हूं आ गया बसंत' में बसंत के आ की कानो सुनी खबर या 'अफवाह' ही कवि को इतना आंदोलित कर देती है कि वे उसके अनुरूप एक रमणीय संसार रच डालते हैं। वे तब के हिंदी कवि ने सौंदर्याविष्ट वेदना को भी बसंत से जोड़ा था। आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री ने लिखा था—

केसर कुंकम का लहका दिगंत है
गंध की अनंत वेदना बसंत है

इसी क्रम में आगे चलकर नयी कविता और प्रयोगवाद में लोकपरकता का सन्निवेश अधिक हुआ है। बसंत के निःसर्ग उल्लास की अभिव्यक्ति का उसमें यह रंग है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिया आया बसंत फूल रस के भरे
गंध जूड़े कसे/चली पियरी बतास
छाई मन के दिगंत/अमलतासी उजास
नयी सरसों के फूलों से केसर झरे

बल्कि उसे जीवंत संदर्भ दिया है । बसंत भी उस कविता में सर्वांग व्यक्तित्व पाकर उपस्थित हुआ है । यहां इसकी समृद्धि का अंकन यों हुआ है—

डलिया भर फूल और लाना
मालिनी बसंती
सरसों की चूनर औ' पाटल के लहंगे
तेरे परिधान सभी ऋतुओं से महंगे
उत्सव है नृत्यगीत गाना
मालिनी बसंती

—वीरेन्द्र मिश्र

यह समृद्ध बसंत किसी महंत से कम नहीं । सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने इस महंत बसंत का जो सांग रूपक प्रस्तुत किया है, वह भव्य एवं विराट् है—

आये महंत बसंत
मखमल के झूले पड़े हाथी पाग पीला
चंवर सदृश्य डोल रहे सरसों के सर अनंत
आये महंत बसंत

बसंत की इस महाराज-छवि के समानांतर ऐसे बिंब भी समकालीन कविता में हैं जो इसकी सहज-स्फूर्त ऊर्जा का आलेख प्रस्तुत करते हैं । केदारनाथ सिंह ने 'फागुन गीत' और 'बसंत गीत' में जहां व्यक्ति के तन-मन के उल्लास को व्यक्त किया है, वहां 'फूलपात नये' में प्रकृति के आह्लाद को मुखर किया है—

टहनी से टूसे पतरा गये
पकड़ी को पात नये आ गये
नया रंग देशों से फटा/वन भींज गया
दुहरी यह कूक, पवन झूठा
मन भींज गया

वास्तव में बसंत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि न तो यह व्यक्ति को निस्संग रहने देता है और न ही निष्क्रिय । बसंत जीवन की चपलता में आपको खींच लेता है । रामदरश मिश्र को बसंत ने एक दिन यों ही खींच लिया था :

खींच कर घर से
एक बहकी हवा फागुन की
बीच चौरस्ते मुझे भटका गयी

बसंत का प्रतिफल है— पुष्प और पुष्प के व्यक्तित्व की दो दिशाएं हैं । एक शुचिता, दूसरी लालित्य । 'बसंत पंचमी' से इस ऋतु का आनुष्ठानिक सूत्रपात होता है । यह बसंत की

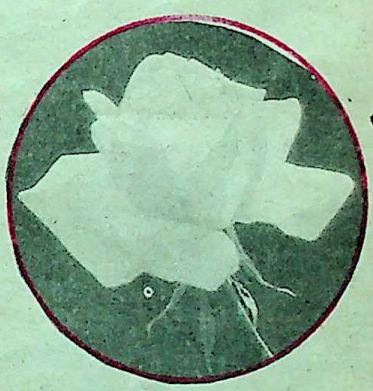

शुचिता का— शुभ्रता का— पक्ष है । यह सरस्वती पूजा का भी पर्व है । समकालीन हिंदी कविता में बसंत की ऐसी उत्सवा छवियां भी अंकित हैं, जिनमें शुचिता का संदर्भ प्रमुख है । लोक-मन और जन-संस्कारों के बसंत के कुछ बिंब नयी कविता में बहुत मोहक बन पड़े हैं । श्यामसुंदर दुबे की ये पंक्तियां ऐसा ही बिंब प्रस्तुत करती हैं—

लिखना जी/दिनभर मुरके गेहूं की बाल के नमन
सात बहन किरणों से/कहना जी— दो आखर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फागुन
सरसों के खेतों को/बांटे जब राय सुआ
हल्दी के रंगभरे आमंत्रण
बबूल की फुनगियों पर/झिलमिल हो सूर्य-बिंब
कांपे जब पलकों पर बासंती क्षण
करना जी/याद बहुत-बहुत याद
दहके पलाश की छुवन

बसंत की छवियों में शुचिता इसकी सर्जनात्मकता के कारण है । बसंत अगति को तोड़ता हुआ आता है । निष्क्रियता को अतिक्रमित कर सक्रियता की अंगुली थामता है । सन्नाटे की गुफाओं में रागिनियों की प्रतिलिपि अंकित करता है । अतल ताल के तल दर्पण में यह किरणों की कविता रचता है क्योंकि फागुनी धूप जब चमकीले डैने खोल टीले पर उतरती है, तब बसंत का आगमन होता है ।

बसंत की सुषमा का शुचिता के समानांतर दूसरा पक्ष लालित्य का है । बसंत को हम सर्जनोत्सव तो कह ही आये हैं और सर्जना की पीड़ा माधुर्य से सदैव लिप्त रहती है । मदनमित्र बसंत के श्रृंगार-सापेक्ष चित्र संस्कृत साहित्य में अनुपम हैं । हिंदी के तथाकथित इतिवृत्तात्मक कवि भी 'मुझे फूल मत मारो' जैसे मार्मिक गीतों की रचना करते रहे हैं । इसके बाद तो समकालीन कविता में बसंत के चर्चित उन्मद सौंदर्य की अनेक छवियां अंकित हुई हैं । श्री देवेंद्र शर्मा 'इंद्र' की निम्न पंक्तियों में बासंती शोभा का यही चित्र है :

फागुन का सुन आगमन फूल उठी कचनार
सिर से लेकर पांव तक झुकी लाज के भार
मौलसिरी ने शीश निज रख अशोक के स्कंध
मौन कनखियों मुस्कुरा गाढ़ किया अनुबंध

बसंत का यह लालित्य स्थूल दृश्यभर नहीं है, अपितु एक जीवंत अनुभव है । समकालीन कविता जन-जीवन की सहभागी रही है, तटस्थ दृष्टा नहीं, इसीलिए इसमें बसंत की समृद्धि के साथ-साथ, जीवन के अभावों का भी चित्रण है । भूख के संदर्भ में बसंत का सौंदर्य भी करुणा और विषाद में अर्थांतरित हो जाता है । तब कवि को अनुभव होता है— 'बिन हुए बसंत, गए कितने बासंती दिन' । जब प्रकृति पर सेठ-साहूकारों के इजारे हो जाते हैं तब समकालीन हिंदी कविता गुलाब सिंह के इन शब्दों में बसंत का चित्रण करती है—

बसंत की छवियों में शुचिता इसकी सर्जनात्मकता के कारण है । बसंत अगति को तोड़ता हुआ आता है । निष्क्रियता को अतिक्रमित कर सक्रियता की अंगुली थामता है । सन्नाटे की गुफाओं में रागिनियों की प्रतिलिपि अंकित करता है । अतल ताल के तल दर्पण में यह किरणों की कविता रचता है क्योंकि फागुनी धूप जब चमकीले डैने खोल टीले पर उतरती है, तब बसंत का आगमन होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसंत में इठलाता गुलाब

पारदर्शी : देव फोटोग्राफर

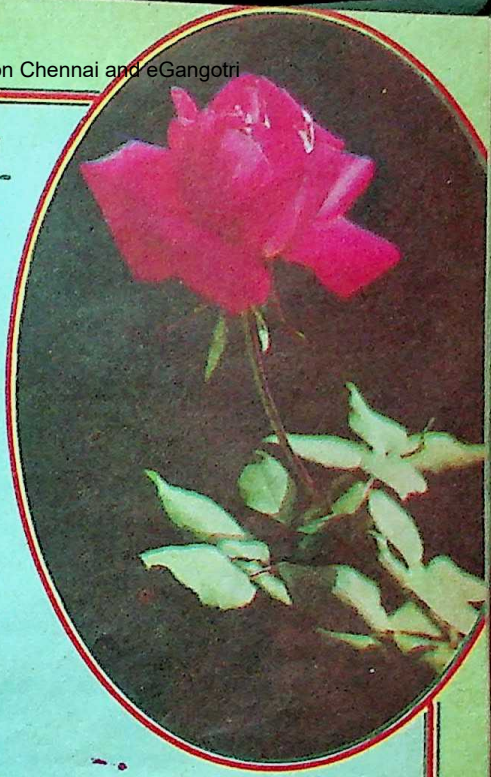

फूलों से लदी हुई डालियां/छुओं नहीं
गंध लिखे ये बसंत उनके हैं
सतरंगे झरने हैं/लेकिन क्या करने हैं
इंद्रधनुष आकाशों से नहीं उतरने हैं
खुशबू की उड़तीं खुशहालियां/छुओं नहीं
शब्द लिखे ये बसंत उनके हैं
समकालीन कविता का सरोकार कागजी बसंत से नहीं है, न ही सामंती शोषक एवं विलासी बसंत उसका आराध्य है । वह तो उस सहज, सरल तथापि समृद्ध बसंत का अभिनंदन करती है, जिस तक दरिद्रनारायण की भी पहुंच है और जिसका स्तवन युग पुरुष 'निराला' ने अपने काव्य में भरपूर किया है ।

— बी-२२६, राजनगर पालम
नयी दिल्ली-११००४५

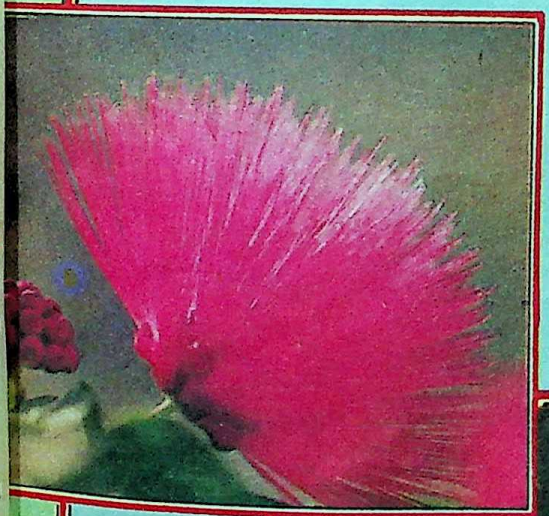

← पारदर्शी : टी. एन. एन. प्रसाद

↓ पारदर्शी : अनिल रिसाल सिंह

पिया आया बसंत
फूल रस के भरे

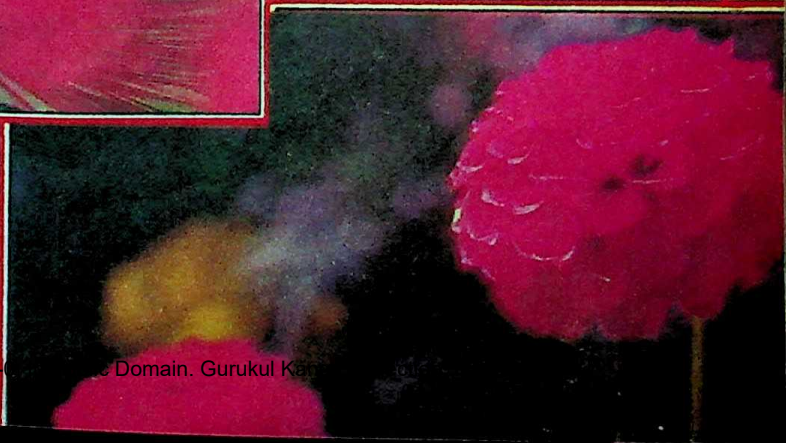

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

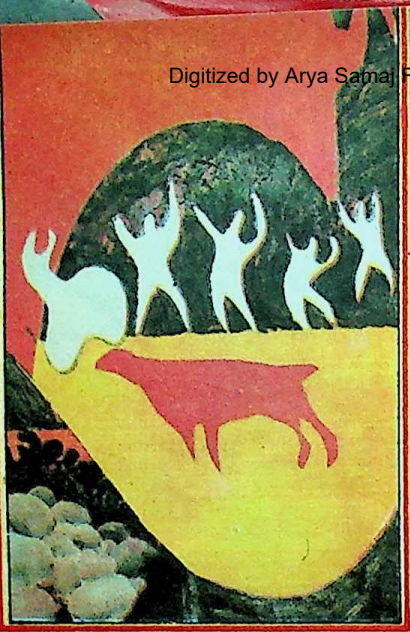

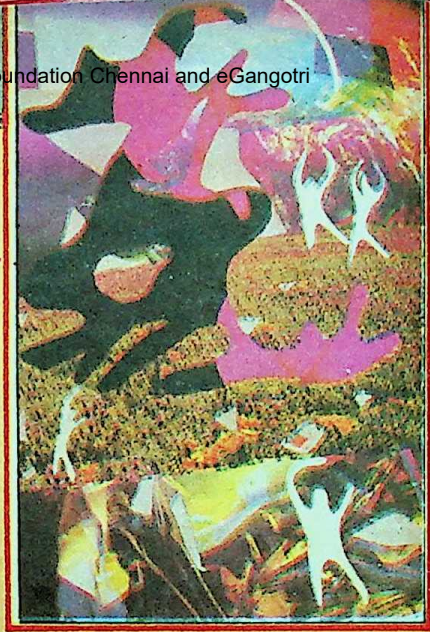

पी. मनसाराम के चित्र

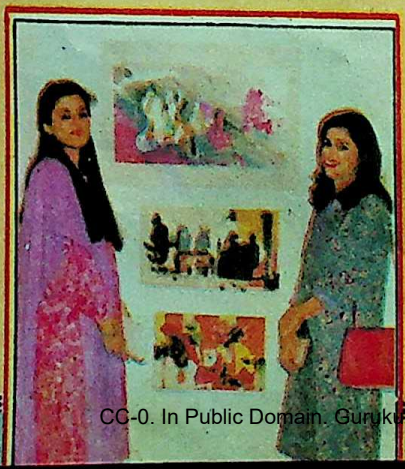

लाहौर के कैदाल अली संग्रहालय में

● ● ● ●

पाकिस्तान के गुलजी भी भारतीय चित्रकला और चित्रकारों की उपलब्धियों को देखकर और पश्चिम की तुलना में यहां की चित्रकला के सम्मान और उसके स्थान को जानकर चमत्कृत हो कर लौटे हैं ।

● ● ● ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनसाराम के कोलॉज

● मनमोहन सरल

''अगर हम अपनी जिंदगी को गौर से देखें तो वह एक कोलॉज की तरह ही है। अच्छे-बुरे लोगों का साथ, खुशनुमा और दुःखभरे समय के रंग,और भी बहुत कुछ जो सब एक साथ ही चलता रहता है। इसीलिए मुझे लगता है कि अपनी बात कहने का सबसे सफल माध्यम, कोलॉज ही है।''

कनाडा में बसे भारतीय चित्रकार, पी. (पंचाल) मनसाराम अपने चित्रों के बारे में कहते हैं। कोलॉज यानी ढेर-सारी चीजों का घालमेल। सीधी सरल भाषा में कहें तो यह घालमेल ऐसा जिसमें संगीत-जैसी लयात्मकता हो, तारतम्य हो और इनसे भी अधिक एक अर्थवत्ता हो।

माउंट आबू की खुशनुमा पहाड़ी जगह में जन्मे मनसाराम पाकिस्तान में कराची और लाहौर के अपने कोलॉजों का प्रदर्शन करके लौटे हैं। लाहौर के शाकिर अली म्यूजियम की गैलरी में उनके चित्रों को देखने की भीड़ लगी रहती थी।

चित्रों में ताजगी

मनसाराम अपने कोलॉज, भारत में अभी तक अज्ञात, रंगीन जिरॉक्स मशीन की मदद से बनाते हैं। उनकी अतिआधुनिक तकनीक की वजह से भी पाकिस्तान में उनका काम दिलचस्पी और कुतूहल से देखा जाता रहा। पाकिस्तान की एक कला समीक्षक बीना सरवर के अनुसार, 'इन चित्रों में कितनी ताजगी है, एक खुशनुमा झांकी की तरह। लगातार बदलती आकृतियां, चिड़ियाएं, बादल, पेड़, सूरज और अटपटे आकारवाले रंग-बिरंगे चकत्ते— ये सब इस तरह की तरतीब में बंधे हैं कि देखते ही बनता है। रंगों में चटखपन और बीच-बीच में सफेद, खाली जगह... एक त्रिआयामी अनुभूति है...।'

मनसाराम इन चटख रंगों को अपने भारतीय और खासकर राजस्थान प्रेम का कारण बताते हैं। ''जिंदगी मुझे एक शानदार रंगीन समारोह की तरह लगती है। उत्सव और समारोह के रंगों को मैं अपने चित्रों में भी देखना चाहता हूं, तभी तो कुछ लगता है कि जैसे ये स्वयं 'जीवन'

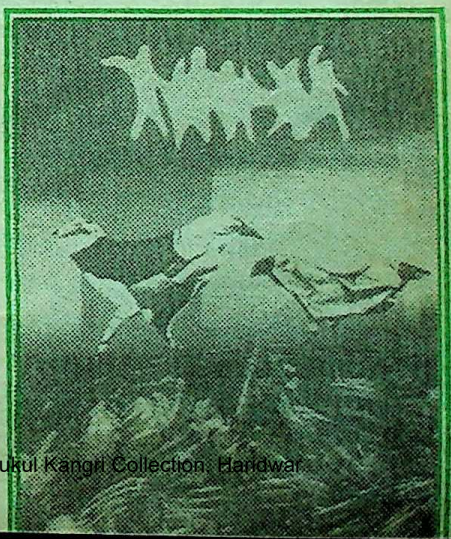

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हों । बताइए भला, क्या आपने किसी पेड़ या किसी चिड़िया को रोते हुए देखा है ! यह तो सिर्फ आदमी है जो दर्द और निराशा से रोता है । मैं प्राकृतिक आह्लाद, परिवेश में व्याप्त हर्षभरे रंगों को अपने इन चित्रों में उतारता हूं ।''

मनसाराम ही पहले भारतीय चित्रकार हैं, जिन्होंने लाहौर में अकेली प्रदर्शनी लगायी है ।

पाकिस्तान की चित्र कला पीछे

पाकिस्तान की चित्रकला भारत की तुलना में पीछे है । मनसाराम बताते हैं, ''खासकर नये और आधुनिक प्रयोगों को वहां जगह नहीं मिल पायी है । यों भी पंजाब में कला का दरजा वह नहीं रहा जो बंगाल या दक्षिण भारत में था । लेकिन पाकिस्तानी हिंदुस्तान की फिल्में, यहां का मुगलई खाना और गजलों के शौकीन हैं ।''

मनसाराम टोरंटो विश्वविद्यालय के एक स्कूल में कला की शिक्षा देते रहे हैं । पर उनकी गुजराती पत्नी तरुणिका अभी भी अध्यापन कर रही हैं । टोरंटो के पास बरलिंगटन में उनका बड़ा खूबसूरत घर है ।

मनसा उत्साह से बताते हैं, ''तरु मुझसे एक साल जूनियर थी । मैं अपने दोस्तों के साथ स्टूडियो में बैठा था कि लॉकर खोलने लड़कियों का एक झुंड आया । उन सबमें अलग ही लग रही थी तरु । पूरे पांच साल कोर्टशिप चली हम दोनों की । तरु संपन्न परिवार की थी । ठीक-ठाक परिवार तो मेरा भी था । पिता आर्किटेक्ट हैं, खासी आमदनी पर मेरा चित्रकार बनना उन्हें पसंद नहीं था । इसलिए घर से भागकर आया था मैं । उन्होंने चलते-चलते मुझसे कहा था कि अब किसी तरह की मदद नहीं मांगना कभी । और इस तरह मैं सन् १९५४ में बंबई आया ।''

''खासी कड़की में शुरुआत की थी मैंने । रेस्त्रां के एक लड़के को दोस्त बना लिया था । वह सिर्फ चाय के पैसे लेता, जबकि पूरा खाना खिलाता था मुझे । इस तरह चाय की इकन्नी में मेरा खाना हो जाता था । ग्रीटिंग कार्ड्स बनाकर, ट्यूशन और कई तरह के अजीब काम करके गुजर की । ऐसे-ऐसे विषयों की ट्यूशन ली, जिनसे मुझे चिढ़ थी और जिनकी वजह से मैं साइंस कॉलेज छोड़कर भागा था ।''

मनसाराम इन चटख रंगों को अपने भारतीय और खासकर राजस्थान प्रेम का कारण बताते हैं । ''जिंदगी मुझे एक शानदार रंगीन समारोह की तरह लगती है । उत्सव और समारोह के रंगों को मैं अपने चित्रों में भी देखना चाहता हूं, तभी तो मुझे लगता है कि जैसे ये स्वयं 'जीवन' हों । बताइए भला, क्या आपने किसी पेड़ या किसी चिड़िया को रोते हुए देखा है ! यह तो सिर्फ आदमी है जो दर्द और निराशा से रोता है । मैं प्राकृतिक आह्लाद, परिवेश में व्याप्त हर्षभरे रंगों को अपने इन चित्रों में उतारता हूं ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति नहीं

"नहीं, संघर्ष मैं नहीं कहता इसे । यह तो निगेटिव शब्द है । मैं इसका प्रयोग करके जबरदस्ती सहानुभूति बटोरना नहीं चाहता । अजब रोमानी लगता है ऐसे वाकयात को याद करना । मैं इसे सिर्फ 'एडवेंचर' कहना चाहूंगा , तब मैं खासे एडवेंचर के दौर से गुजर रहा था । उन दिनों तरु से मेरी मुलाकात हुई । अब सोचिए, मुझ जैसे फक्कड़ से कौन लखपती अपनी बेटी की शादी करेगा ? इसलिए हम इस तरह मिलते थे कि किसी को कानों कान हमारी कोर्टशिप की खबर न हो । कोई तरु के धनिक पिता को कहीं बता न दे कि यह कड़का लड़का उनकी राजकुमारी से शादी करना चाहता है । उनका बर्मा में भी व्यापार था । एक बार वे काम से बर्मा गये थे कि उन्हें वहां दिल का दौरा पड़ा जिसमें वे बच गये । उधर मां उन्हें देखने गयीं । इधर सिर्फ दो दिन थे हमारे पास । इसी बीच हमें शादी करनी थी, नहीं तो जिंदगीभर हम एक न हो पाते । मेरा एक दोस्त था प्रकाश छाबड़ा । फिल्में बनाता था । बस, उसी ने शादी करायी हमारी ।"

"कनाडा भी हम इसी 'एडवेंचर' की भावना से पहुंचे । सन् १९५९ में हम दोनों ने आर्ट्स कॉलेज से निकलकर नुमाइश लगायी थी, जिसकी खासी तारीफ हुई । मुझे स्वर्ण पदक मिला था और रजत पदक तरु को... । हमारा काम देखा पुपुल जयकर ने और मुझे, वीवर सेंटर में ले लिया । पोस्टिंग मिली कलकत्ता में । वहां 'रात में कलकत्ता' मैंने और 'भारतीय नृत्य' तरुणिका ने प्रदर्शित किये । हमारे पोस्टर पूरे शहर में लगे थे । एक दिन पुलिस आ धमकी पूछा, "ये क्या गोलमाल है ? रात में कलकत्ता क्या दिखाते हो तुम ?" हमारे तो होश फाख्ता ! पर सब ठीक हो गया ।

"इस बीच दिल्ली में तरु को राष्ट्रीय बाल संग्रहालय में सहायक निदेशक की नौकरी मिली । मैं भी वहां आ गया । बाद में तरु को न्यूयार्क के लिए— फोर्ड फाउंडेशन की छात्रवृत्ति मिली । मुझे हॉलैंड से बुलावा आया । सब अनुभव बटोरकर जब हम फिर से भारत आये, तब तय किया कि किसी ऐसी जगह जाकर बसेंगे, जो अनजान हो, सुनसान हो ।छह हफ़े की लड़की थी हमारी । उसके साथ भी हम यह एडवेंचर करना चाहते थे । ब्राजील जाएं न्यूजीलैंड या ऑस्ट्रेलिया— यह सोच ही रहे थे कि तब ही हमारे पड़ौसी ने कनाडा सुझा दिया । वहां भीड़-भाड़ भरे शहर में न रहकर बर्लिंगटन में आ बसे । एकांत और बस्ती से दूर है वह !"

मनसाराम का सपना है अपने शहर माउंट आबू में एक कला ग्राम बनाने का । योजना पर काम चल रहा है, मुख्य भवन भी तैयार हो गया है । इस कलाग्राम में स्टूडियो, प्रदर्शनी दीर्घा, पुस्तकालय और सम्मेलन कक्ष के अलावा, प्रवासी चित्रकारों के लिए ठहरने की व्यवस्था भी होगी ।

एडवेंचर, भरपूर जिंदगी, यात्राएं, प्रदर्शनियां और सपने— सब कुछ का कोलॉज ही तो है जैसे मनसाराम ! चित्रकार के साथ-साथ फोटोग्राफर भी और इधर तो वे कविताएं भी लिखने लगे हैं । आकाश तो अनंत है न !

— ७६ पत्रकार बांद्रा (पूर्व) बंबई-४०००५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

विज्ञान के अध्यापक ने एक छात्र से पूछा, "अगर रात में सूरज निकले, तो क्या होगा ?"

छात्र, "अगर रात में सूरज निकलने लगे, तो दिन होगा ।"

●

एक मनचले सज्जन की आदत थी कि वह रोजाना एक विशेष नंबर पर एक अपरिचित महिला से फोन पर पूछते, "कहिए देवीजी, क्या हालचाल हैं ?"

यह सुन-सुनकर एक दिन महिला ने झल्लाकर फोन पर उस सज्जन से कहा, "आप मुझे बेमतलब रोजाना फोन करते हैं जबकि मैं आपको पहचानती भी नहीं हूं ।"

उस सज्जन ने कहा, "जब आपको मालूम है कि मैं आपको बेमतलब फोन करता हूं, तो आप फोन उठाती ही क्यों हैं ?"

●

एक कोठी के दरवाजे पर लिखा था, "बिना आज्ञा अंदर आना मना है ।"

इसके बावजूद भी एक शरारती सज्जन कोठी में घुस आये ।

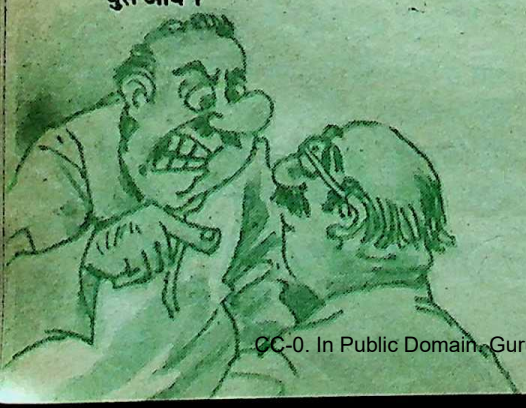

कोठी के मालिक ने पूछा, "आप बिना आज्ञा लिए कोठी के अंदर क्यों घुस आये ?"

उस सज्जन का जवाब था, "साहब, कोठी के अंदर आने की आज्ञा लेने के लिए ही मैं आपके पास आया हूं ।"

— सुधीर कुमार

एक पत्रिका की महिला संपादिका प्रूफरीडर की नौकरी के लिए एक उम्मीदवार का साक्षात्कार ले रही थीं ।

"क्या आपको इस पद की कोमल जिम्मेदारियों का ज्ञान है ?" संपादिका ने पूछा ।

"जी हां ! जब आपसे कोई गलती होगी और आप उसे मेरे सिर पर थोप देंगी तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलेगा ।" उम्मीदवार ने जवाब दिया ।

●

मेरा छोटा पुत्र मेरे साथ इंडिया गेट पर प्रातः भ्रमण के समय मेरे साथ था । उसने वहां रेत का बड़ा-सा महल बनाया, उसे बनाये हुए १० मिनट भी नहीं हुए थे कि दिल्ली नगर निगम वाले वहां आ पहुंचे और मेरे लड़के के हाथ में हाऊस टैक्स (गृहकर) का कागज थमाकर चले गये ।

— नारायण लाल

ज्योति, "तो उस डॉक्टर प्रेमी ने तुमसे सभी तोहफे वापस ले लिए, उफ, कितना बेदर्दी निकला ।"

उदास प्रेमिका, "यही नहीं, वह जितनी बार भी मिलने मेरे घर आया, उसकी फीस भी मांग रहा है !"

●

डॉक्टर, "देवीजी, अभी तक ऐसी कोई गोली नहीं बनी है, जिससे नींद में आपके पति का बड़बड़ाना बंद हो सके ।"

महिला, "तो कोई ऐसी गोली ही दें दीजिए, जिससे मैं उनका बड़बड़ाना साफ-साफ सुन सकूं ।"

— सुभाष बुड़ावनवाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

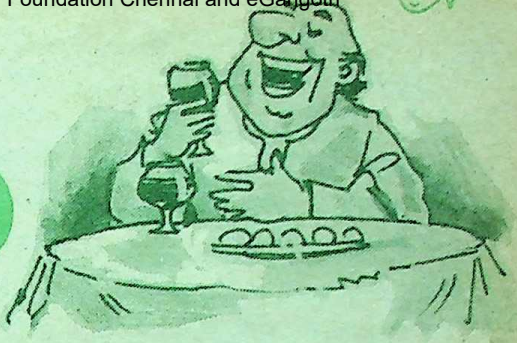

यदि

एक न
एक दिन
रोना है
यदि
कांटों को
बोना है

आरोप

विपक्ष ने
आरोप लगाया
सरकार ने
सारा धन
अकेले खाया

— गीता वर्मा

कुरसी

हाथ जोड़ नेता खड़े,
बांट रहे हैं माल ।
कुरसी सपने में दिखे,
टपक रही है राल ।।

हाले-दिल

पूछा जो हमने खत में,
दिल का हाल यार से ।
ई. सी. जी. कराके उसने,
भेज दिया बड़े प्यार से ।।

— विजय बजाज

फलसफा

उनकी
जिंदगी का
फलसफा है
निराला...
दुःख में
ठर्रा पीते ।
सुख में जाते
मधुशाला !!!

— महेंद्र कुमार वर्मा

मौन

उन्तीस जनवरी की
रात को भी
उन्हें यही रहा खटका,
शहीद दिवस पर भी
पत्नी रखेगी या
नहीं, मौन दो मिनट का ।

गुट निरपेक्षता

गुट निरपेक्ष देशों
के सम्मेलन में
किसी मुद्दे पर
लोग तन गये,
फटाफट कई
गुट बन गये ।

— रत्नदीप खरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

मूर्ख एक ढूंढ़ो हजार मिलते हैं !

● अश्विनी कुमार दुबे

कई शहरों में होली के दिन महामूर्ख सम्मेलन का आयोजन होता है । देखा-देखी हमारे कस्बे के कुछ उत्साही युवकों ने भी अपने यहां होली पर महामूर्ख सम्मेलन करने का निश्चय किया । अब एक अदद महामूर्ख की तलाश प्रारंभ हुई ।

मीटिंग का दृश्य अद्भुत था । जालिम सिंह जो विधायकजी के नगर प्रतिनिधि हैं । उनका ठेके और सप्लाई का काम कई विभागों में चलता है । वे चहककर बोले, "हमारे नगर के माननीय विधायकजी इस पद के लिए उपयुक्त रहेंगे ।"

जालिम सिंह के प्रस्ताव पर कानाफूसी हुई । कुछ लोगों ने नाक-भौं सिकोड़ी । फिर एक असंतुष्ट नेता बोले, "जालिम सिंह को विधायकजी से हमेशा काम पड़ता रहता है । इसलिए वे यहां भी विधायकजी को मस्का लगाने से बाज नहीं आ रहे हैं । अरे, जब किसी नेता को ही महामूर्ख पद के लिए चुनना है तो हमारे जग्गू भैया की दावेदारी पुख्ता है । इस बार उनको चुनाव में टिकट नहीं मिला, परंतु भैयाजी हमारे कस्बे के सीनियर नेता हैं । ये आज के विधायक भैयाजी के सामने क्या हैं ? भैयाजी पुराने नेता हैं । चालीस साल से अपने कस्बे में राजनीति कर रहे हैं । इस चुनाव में उनको टिकट नहीं मिला तो इससे पोलिटिक्स में उनका कद छोटा नहीं हो जाता । वे इस कस्बे के बड़े नेता हैं, इसलिए उन्हें ही इस सम्मेलन में महामूर्ख बनाया जाए ।"

जालिम सिंह का चेहरा उतर गया । उसकी इच्छा थी कि विधायकजी ही महामूर्ख बनें । विधायकजी यदि इस सम्मेलन में महामूर्ख बनाये जाते तो जालिम सिंह की साख बढ़ जाती । विधायकजी के साथ उसका फोटो भी अखबारों में छपता । अधिकारियों पर रौब भी अच्छा पड़ता । परंतु यदि पुराने खूसट जग्गू भैया को महामूर्ख बनाया गया तो उसी पार्टी में होकर वह अपनी तरफ से कुछ नहीं करनेवाला । जग्गू भैया अब क्या काम के । काम तो विधायकजी से पड़ना है । जालिम सिंह मन ही मन कुढ़ रहा था । इतने में कस्बे के एक युवा नेता खड़े हुए, "भाइयों, आप लोग नये खून को मौका क्यों नहीं देते ? हम भी ब्लाक स्तर के नेता हैं । स्थानीय समस्याएं तो हमी निपटाते हैं । अब आपके घर के सामने कुत्ता मर गया । नगरपालिकावाले ध्यान नहीं देते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ता गंधा रहा है । तब आपका यह काम कौन कराएगा ? क्या विधायकजी आएंगे राजधानी से ? या जग्गू भैया अपनी बैठक से निकलकर नगरपालिका वालों को बोलने जाएंगे ? ऐसे काम तो हम ही कराते हैं । फिर भी आप लोगों की नजर में युवा नेताओं की कोई कदर नहीं । कस्बे में कोई भी कार्यक्रम आयोजित होता है तो आप लोगों को खट्ट से विधायकजी और जग्गू भैया का ही नाम याद आता है । अरे, हम लोग भी राजनीति में इतने दिनों से खट रहे हैं । आज राजीवजी (रूंधे गले से) जिंदा होते तो आप लोग युवाओं को इस प्रकार उपेक्षित न कर पाते । परंतु अब युवा शक्ति जाग चुकी है । युवाओं के बिना आपका कोई कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता । इसलिए इस महामूर्ख सम्मेलन में एकमात्र मुझे ही महामूर्ख बनाया जाए ।''

विपक्षी नेता रामखिलावनजी अब तक चुपचाप सब सुन रहे थे । उनसे नहीं रहा गया । वे गुर्राये, ''ठीक है, आजकल हमारी पार्टी सत्ता में नहीं है । इसका ये मतलब नहीं कि नगर के कार्यक्रमों में हमें और हमारी पार्टी को पूरी तरह उपेक्षित कर दिया जाए । मूर्खता के क्षेत्र में हम भी किसी से कम नहीं हैं । यहां आप लोग महामूर्ख सम्मेलन के लिए अध्यक्ष का चुनाव करने बैठे हैं या सत्ता पक्ष के लोगों की चमचागिरी करने के लिए ? महामूर्ख सम्मेलन कोई सत्ता पक्ष का राजनीनिक सम्मेलन नहीं है । यह होली मिलन का कार्यक्रम है । इसमें हमारा भी योगदान है । हम भी इसी शहर में रहते हैं । हमारी सात पीढ़ियां इसी शहर में मर-खप गयीं । मूर्खता के मामले में हमारे पास एक गौरवशाली इतिहास है । इस क्षेत्र में भला हमसे आगे कौन हो सकता है ? इसलिए जब शहर में पहली मरतबा महामूर्ख सम्मेलन मनाया जा रहा है, तब मुझे ही महामूर्ख बनने का सम्मान मिलना चाहिए ।''

मीटिंग का दृश्य अद्भुत था । जालिम सिंह जो विधायकजी के नगर प्रतिनिधि हैं । उनका ठेके और सप्लाई का काम कई विभागों में चलता है । वे चहक कर बोले, ''हमारे नगर के माननीय विधायकजी इस पद के लिए उपयुक्त रहेंगे ।''

शहर की इकलौती साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'कला केंद्र' के पदाधिकारी चाहते थे कि किसी मोटे सेठ को यह सम्मान दिया जाए, जो कार्यक्रम का पूरा खर्चा वहन करे और संस्था के सदस्यों के लिए 'शाम' को पीने-खाने का बढ़िया जुगाड़ जमा दे । संस्था के अध्यक्ष श्री किशोरीलालजी 'रसिक' पान की पीक एक ओर थूककर बोले, ''भाइयों, कृपया शांत हो जाइए और मेरे विचारों पर भी तनिक सोचिए । यह गौरव की बात है कि हमारे शहर में मूर्खों की बिलकुल कमी नहीं है । सब एक से बढ़कर एक हैं । इसके पहले कि हम मूर्खों के बीच में से किसी एक महामूर्ख को अपने सम्मेलन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

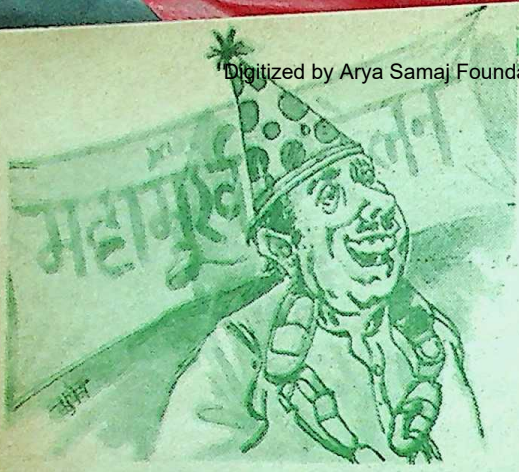

अध्यक्षता के लिए चुनें, हमें सम्मेलन के आर्थिक पक्ष पर भी विचार कर लेना चाहिए। हमारे सम्मेलन में शहर के चार-पांच सौ मूर्ख तो अवश्य पधारेंगे। सबके लिए ठंडाई, मिठाई, नमकीन, कुरसियां, पंडाल, माइक और रंग-गुलाल आदि का इंतजाम भी हमें करना है। इसके लिए जो व्यक्ति उदारतापूर्वक धन उपलब्ध कराये, हम लोग क्यों न उसे ही इस सम्मेलन का अध्यक्ष बनायें ?"

यह प्रस्ताव सुनकर सेठ चंदूलालजी की बांछें खिल गयीं। क्षणभर के लिए उनकी आंखों के सामने रंग-गुलाल से पुता चेहरा, माथे पर लंबी टोपी और गले में जूतों की मालावाला फोटो, जो कल के कई अखबारों में छपेगा— वह दृश्य घूम गया। वे प्रसन्नचित्त होकर बोले, "भाइयों रसिकजी का यह प्रस्ताव हमें मंजूर है। सम्मेलन का पूरा खर्चा मैं उठाने के लिए तैयार हूं।"

बाकी लोग कुछ बोल पाते उसके पूर्व ही संस्था के पदाधिकारियों ने हो-हो कहते हुए जोर से तालियां पीटना शुरू कर दिया। रसिकजी ने तनिक भी देर किये बगैर तुरंत प्रस्ताव पारित हो जाने की घोषणा कर दी। मीटिंग में उपस्थित शेष लोगों को अच्छा नहीं लगा। किसी को विश्वास न था इतनी जल्दी 'महामूर्ख' का यह महत्त्वपूर्ण पद चंदूलाल की झोली में चला जाएगा। लोग अभी ठीक से कुड़मुड़ा भी न पाये थे कि रसिकजी ने चाय बुलवा ली।

जग्गू भैया के समर्थक सामने आये, "पैसा तो हमारे जग्गू भैया भी देने को तैयार बैठे हैं। अपना फोटो और वक्तव्य छपवाने के लिए आये दिन वे पत्रकारों को लिफाफे पहुंचाते रहते हैं। महामूर्ख की वेषभूषावाला अपना फोटो छपाने के लिए वे पैसे का मुंह देखते ?"

युवा नेता गुर्राये, "चंदा उगाही के काम में हमारा सानी नहीं। हमारे सौ कार्यकर्ता कभी भी लूटपाट, मारा-मारी और जबरन चंदा उगाही के लिए तैयार रहते हैं। हमने अकेले दम पर बड़े-बड़े सम्मेलन निपटा दिये। इस सम्मेलन में क्या धरा है ? हम तो यूं चुटकी बजा दें तो ऐसे कई सम्मेलनों का खर्चा पूरा हो जाए।"

अब रामखिलावनजी पीछे कैसे रहते। उन्होंने भी अंगड़ाई ली, "पैसा क्या है ? हाथ का मैल। असल बात है प्रतिष्ठा। हम प्रतिष्ठा के धनी हैं। हमें महामूर्ख बनाते तो हमारे चाहनेवाले पैसों की बरसात कर देते।"

कला-केंद्रवाले खुश थे। उनकी महामूर्ख की तलाश पूरी हुई। मीटिंग की समाप्ति के पश्चात रसिकजी ने अपने साहित्यिक मित्रों को गालिब का ये शेर आधुनिक संदर्भ में कुछ इस तरह सुनाया—

मूर्खों की कमी नहीं है गालिब
न ढूंढ़ो, सरे-आम मिलते हैं

—रेस्ट हाउस के पीछे,
यादव निवास जांजगीर-४९५-६६८ (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

आधुनिक द्रौपदी के आत्म संस्मरण

● गीता पुष्प शॉ

प्रोफेसर पति

सात फेरों के बाद, जब मेरी आंखें खुलीं, तब मैंने अपने को एक प्रोफेसर की पत्नी के रूप में पाया । अति विद्वान, डॉक्टरेट की पदवी से विभूषित । वैसे डॉक्टर होना कोई बड़ी बात नहीं । हमारे हरिशंकर परसाई मामा का कहना था कि बच्चे यदि सड़क पर खड़े होकर पत्थर फेंकें, तो वह किसी न किसी डॉक्टर को ही लगेगा । हमारे प्रोफेसर साहब इस माने में फेमस थे कि वे घर बैठे कई लोगों को डॉक्टरेट की डिग्री दिलवाते थे । उनकी सेवा में कई छात्र-छात्राएं नियमित रूप से प्रतिदिन घर पर पधारते थे । मुझे बड़ा आराम था । उनके शिष्य मेरे लिए दाल-चावल ला देते । गैस, सब्जी, दूध के पैकेट आदि का इंतजाम कर देते और ये घर बैठे उनकी थीसिस लिखते । कॉलेज में मेरे प्रोफेसर पति का बड़ा नाम था कि ये बड़े रिसर्च स्कॉलर हैं । खाली पढ़ते रहते हैं या रिसर्च करते हैं । यह और बात है कि कभी-कभार ही कॉलेज में कोई क्लास लेते । अब क्या करें, रिसर्च के काम में इतना थक जाते हैं कि ऐन क्लास के वक्त मुआ सर दर्द करने लगता ।

इस तरह प्रोफेसर पति के साथ मेरे दिन आराम से कट रहे थे । तभी एक अति भोली-सी छात्रा उनके पास पढ़ने आने लगी । उससे ये धीरे-धीरे घंटों बातें करते । मैं उनके स्टडी रूम में जाती तो उल्टे पांव चाय बनाने भेज देते । एक दिन मैं बिगड़ पड़ी कि जब लड़के आते हैं, तब आप जोर-जोर से पढ़ाते हैं, पर इस लड़की को हमेशा इतने धीरे क्यों पढ़ाते हैं ? ये बोले, "अरे, यह लड़की तो बहरी है । यह मेरी आवाज नहीं, ओंठों की भाषा समझती है ।" मैं चुप रह गयी । अगर लड़ती तो सारे रिसर्च स्कॉलर समझते कि मैं उज्जड गंवार हूं । उस लड़की की रिसर्च के पीछे ये अपनी जान दे रहे थे । हर शाम उसे लेकर लाइब्रेरी जाते । रात गये लौटते । मैं मन मसोसकर रह जाती ।

एक दिन मेरी पड़ोसन ने मुझसे कहा, "अरे वो नयी अमिताभ बच्चन वाली फिल्म देख आना । बड़ी अच्छी है । तुम्हारे प्रोफेसर साहब भी तो देख आये हैं फिल्म । सिनेमा हॉल में मिले थे, अपनी रिसर्च स्कॉलर के साथ ।" मेरे तन-बदन में आग लग गयी । तो मुझे छोड़ उस कलमुंही के साथ लाइब्रेरी के बहाने रोज फिल्में देखने जाते थे । मैंने फौरन उस प्रोफेसर पति को तलाक दे डाला । प्रोफेसर पर से मेरा विश्वास उठ गया । प्रोफेसर पत्नियों ! सावधान ! अब जब कभी आपके 'वो' कहकर जाएं कि लाइब्रेरी जा रहा हूं, तो समझ जाइए कि वे जरूर किसी कन्या के साथ फिल्म देखने जा रहे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर पति

मेरी दूसरी शादी बड़ी धूमधाम से एक असली डॉक्टर के साथ हुई। ये डॉक्टरेट की पदवी वाले नहीं, एम.बी.बीएस., एफ.आर.सी.एस. डॉक्टर थे। मैं भी उनके साथ डॉक्टरनी कहलाने लगी। महल्ले में मेरी बड़ी धाक थी। बड़ा-सा बंगला। नौकर-चाकर। इन डॉक्टर पति को न लाइब्रेरी जाने की फुरसत थी, न सिनेमा। सुबह नहा-धोकर, नाश्ता करके जो घर से निकलते तो ऑपरेशन थियेटर में बंद हो जाते। घंटों चीर-फाड़, दवा के बीच ही रहते। घर खाना खाने आने की भी फुरसत नहीं मिलती। रात को इमर्जेंसी ऑपरेशन आ जाते। रात-दिन ऑपरेशन में बिजी रहते। इतने नामी सर्जन जो थे। मेरी रातें जागते हुए डॉक्टर पति के इंतजार में ही बीत रही थीं। इधर अचानक क्लिनिक से आमदनी कम होने लगी। अब मेरे पूर्व प्रोफेसर पति का रिसर्च ज्ञान मेरे काम आया। मैंने रिसर्च की, कि आखिर ये रात-भर कौन-सा ऑपरेशन करते हैं ? तब पता चला, वह तो नाइट ड्यूटी में नर्सों से इश्क फरमाते हैं। ऑपरेशन थियेटर में टी.वी. लगाकर नर्सों के बीच कृष्ण-कन्हैया बने बैठे रहते हैं। ऐसा डॉक्टर जाय भाड़ में। मैंन तत्काल उस डॉक्टर से भी तलाक ले लिया।

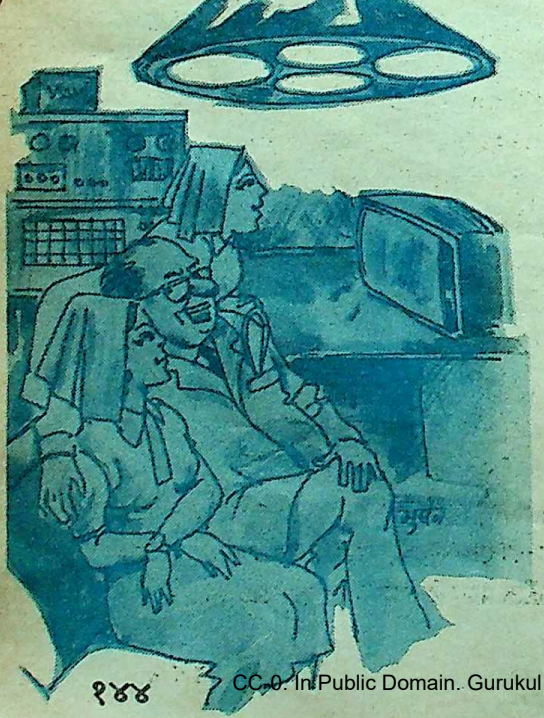

मिनिस्टर पति

मेरे तीसरे पति थे मिनिस्टर साहब। बिना कुछ करे-धरे किसी को वाहवाही लूटनी हो, तो अल्लाह उसे मिनिस्टर बना दे। मिनिस्टर वह सोर्स है, जो हर काम 'फोर्स' से करवा सकता है। चाहे कहीं एडमीशन करवाना हो, नौकरी दिलवानी हो, ट्रांसफर करवाना हो, ऋण लेना हो। धरती का कोई भी काम हो, वह कर सकता है। कम से कम उस काम के होने का आश्वासन तो दे ही सकता है। भगवानजी तो आश्वासन भी नहीं देते।

मिनिस्टर की पत्नी बनकर मेरी पांचों अंगुलियां घी में थीं और सर हवा में शान से लहरा रहा था। हर वक्त कार में। पैर जमीन पर पड़ते ही नहीं थे। कभी कोई उद्घाटन तो कहीं कोई फंक्शन। बस दो मिनट का ही तो काम है। फीता काटना या बटन दबाना। फिर आराम ही आराम है। काजू है, बादाम है, फल है, मिठाई है। खटाखट फोटो। फ्लैशों की चमक है। बड़ी रंगीन दुनिया है मिनिस्टरों की। मिनिस्टर की पत्नी बनने का सुख सबसे बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख है । बड़े से बड़े अफसर हर वक्त 'मैडम-मैडम' का जाप करते रहते हैं । मिनिस्टर से कोई काम करवाना हो तो 'मैडम' के पास आते— 'थ्रू प्रॉपर चैनल' ।

पर इस मिनिस्टर ने एक हफ़्ते में ही अपने रंग-ढंग दिखाने शुरू कर दिये । या तो दिनभर थके, खर्राटे मारकर सोते या आधी रात को अचानक चौंककर उठ बैठते और चिल्लाने लगते, "भाइयों और बहनों ! अरे, भाई तो कोई है ही नहीं, क्षमा करना, केवल बहनों, नहीं बहन जी ।"

मैं झंझोड़कर कहती, "अरे मैं तुम्हारी बहन नहीं, पत्नी हूं ।" तो कहते, "हां तो बहनजी, मैं कह रहा था...", मैं फिर कहती, "मैं बहन नहीं, तुम्हारी पत्नी हूं ।" मिनिस्टर पति कहते, "नहीं...नहीं...मिनिस्टर का कोई अपना नहीं । वह स्वार्थी नहीं । सभी उसके भाई-बहन हैं...।"

बस फिर क्या था । मैंने भी भाषणों से बोर होकर उनसे 'जै राम जी की' कर ली ।

एडिटर पति

कहते हैं, आसमान से गिरे तो खजूर पर अटके । इस बार मेरा गठबंधन हुआ एक एडिटर से— वह भी महिला-पत्रिका के एडिटर से । एडिटर महोदय के पास जो भी पत्र आते महिलाओं के ही ।... महिलाओं के पत्र महिलाओं की रचनाएं । उनकी लेखिकाओं की रचनाएं मेरे लिए सिरदर्द बन जातीं । कभी कहते, "एक लेखिका ने प्याज की खीर और बांस का अचार बनाने की विधि लिखकर भेजी है । तुम पहले बनाकर देख लो । अच्छा लगेगा तो छापूंगा ।" कभी कहते, "ड्राइंग रूम ऐसे सजाओ...इस डिजाइन का स्वेटर बनाओ...कद्दू इस तरह काटो...विटामिन नष्ट नहीं होंगे... !" ये एडिटर मेरे घर के कामों में टांग अड़ाते तो मुझे अच्छा नहीं लगता । मैं प्रोफेसर, डॉक्टर, मिनिस्टर के राज में नौकरों-चाकरों के बीच आराम की जिंदगी बिता चुकी थी । फर्क यह था कि मेरे वे पूर्व पति मेरी जिंदगी से मतलब नहीं रखते थे । मैं स्वतंत्रतापूर्वक बस नौकरों पर हुक्म चलाती । अब मुझे बहुत खराब लगता कि कोई मुझ पर हुक्म चलाये ।

मैं मायके गयी । बच्ची पैदा हुई तो मैंने अपने एडिटर पति को तार भिजवाया । उधर से उनका उत्तर आया, "अपनी रचना के ताजा चित्र सहित पंद्रह दिनों के अंदर पत्र भेजो । पत्र सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के पूर्व, हर व्यक्ति होनेवाली पत्नी को कलर टी.वी. समझता है और पति बनते ही पता नहीं, क्यों उसे पत्नी ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी.-जैसी लगने लगती है । मेरे राइटर पति भी, विवाह से पूर्व मुझमें रंगीन टी.वी. की सारी खूबियां पाते थे...किंतु अब मुझे देखते ही इनका मूड 'ब्लैक एंड व्हाइट' हो जाता है,

शब्दों से बड़ा न हो । समयाभाव के कारण मैं तुम्हारा लंबा पत्र पढ़ने में असमर्थ हूं । आशा है, अन्यथा न लोगी । वापसी के लिए टिकट संलग्न है ।"

उस एडिटर पति से तंग आकर मैंने उसका ही टिकट कटा दिया ।

लेखक पति

पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपनेवाले एक लेखक की कहानियों से प्रभावित होकर मैंने उसे प्रशंसा पत्र लिख डाला । बस, कुछ दिनों पत्र-व्यवहार का सिलसिला चलता रहा और फिर उन्हीं लेखक महोदय से मेरा विवाह हो गया । कहते हैं, दूर के ढोल सुहावने होते हैं । वही ढोल कोई गले में डाल दे और कहे कि अब बजाओ, तब पता चलता है ।

विवाह के पूर्व, हर व्यक्ति होनेवाली पत्नी को कलर टी.वी. समझता है और पति बनते ही पता नहीं, क्यों उसे पत्नी ब्लैक एंड व्हाइट टी.वी.-जैसी लगने लगती है । मेरे राइटर पति भी, विवाह से पूर्व मुझमें रंगीन टी.वी. की सारी खूबियां पाते थे...किंतु अब मुझे देखते ही इनका मूड 'ब्लैक एंड व्हाइट' हो जाता है, किंतु जब भी पाठिकाओं के प्रशंसा-पत्र प्राप्त होते हैं, तब ये कलर टी.वी. की तरह रंगीन हो जाते हैं । ऐसे में कभी-कभी मैं प्रार्थना करती हूं, "हे प्रभु, डाकिया बीमार पड़ जाए और घर में कोई भी पत्र नहीं आये ।" कभी तो इतना तक सोच लेती हूं कि काश ! मेरा पति लेखक न होकर इंजीनियर होता । दिनभर लोहे की ठोका-पीटी में व्यस्त रहता तो लड़कियां ऐसे रसभरे प्रेमपत्र तो न लिखतीं ।

लोग कहते हैं कि हिंदी का लेखक 'बेचारा' होता है, किंतु विवाह करने के बाद ही इस सत्य का रहस्योद्घाटन होता है कि उसकी पत्नी 'बेचारी' होती है !

सुधि पाठक-पाठिकाओ ! भीगकर होली के रंग में, मस्त होकर भंग की तरंग में, इस आधुनिक द्रौपदी ने पांच पतियों से प्राप्त अपने बेहद 'प्राइवेट संस्मरण' आपको सुना दिये...बुरा लगा ? (अगर इस होली की उमंग में, मैं भी पांच पतियों के संग हो—ली, तो क्या बुरा किया) जिन्हें बुरा लगा हो, वे सड़क पर खड़े होकर आते-जाते ट्रकों के पीछे देखें । किसी न किसी पर लिखा होगा— बुरी नजरवाले तेरा मुंह काला ।

—२ एल/४५, महात्मा गांधी नगर
बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी
पोस्ट— लोहिया नगर
पटना-८०००२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाय रे भोजनप्रेमी मिथिला के

● महेश कुमार झा

वायु और जल के बाद इस पृथ्वी पर प्रत्येक सजीव वस्तु की चाहे वह जंतु हो या पेड़-पौधे, तीसरी और अनिवार्य जरूरत है भोजन । वह किसी भी रूप में क्यों न हो ? भोजन तैयार करने व खाने की स्थान विशेष के अनुसार भिन्न-भिन्न रुचियां हैं । इस रुचि में मिथिला की अपनी विशेष परंपरा है ।

कल्पना से भी आनंद

मिथिलावासी इतने बड़े प्रेमी हैं भोजन के कि भोजन को बिना ग्रहण किये भी उसे कल्पना में सृजित कर-करके यथासंभव आनंद उठा लेते हैं । अकेले में ही नहीं, सामूहिक रूप से, मचानों पर, दलानों पर, चटखारे ले-लेकर भोजन की कल्पना को हास्य का रूप देकर, भरपूर मनोरंजन कर लेते हैं मिथिलावासी । खासकर गांव में किसी जोरदार भोज के दस-बीस दिन पूर्व से ही, भोजन की तैयारी से अंतिम संभावनाओं तक सभी उम्र के लोगों के हृदय में इस विषय पर चर्चा करने का उत्साह देखते ही बनता है, जो भोज के एक सप्ताह बाद तक बरकरार रहता है ।

खाने की चुनौती

भोजन के सबसे आनंददायक स्वरूप से साक्षात्कार होता है बाराती के रूप में लड़कीवाले के यहां पहुंचने पर । बारात में एक साथ विविधता, प्रचुरता, उत्तम स्तर के साथ-साथ अधिक से अधिक खाने का आग्रह ही नहीं दुराग्रह भी और कभी-कभी चुनौती भी उपलब्ध हो जाती है । यूं तो बारात ले जाने की परंपरा जहां-जहां है, वहां-वहां अधिकांश विकसित समाज में बारात के लिए यथासंभव उत्तम भोजन की ही व्यवस्था की जाती है, किंतु मिथिलावासी बारातियों से अधिक से अधिक भोजन ग्रहण करने के लिए जिस कदर आग्रह करते हैं वह अन्य किसी समाज में नहीं है । यानी मिथिलावासी सिर्फ खाने में ही नहीं, खिलाने में भी आनंद का अनुभव करते हैं । चुनौती दे-देकर अधिक से अधिक खाने को मजबूर कर देते हैं । और इसी दौरान भोजन के नये-नये कीर्तिमान स्थापित हो जाते हैं । जो सुनने में कुछ अविश्वसनीय प्रतीत होते हैं ।

सारी मछलियां समाप्त

एक बारात में लड़कीवालों ने दिन में बारातियों से कहा, "आज मछली खिलाते-खिलाते आप लोगों की हालत खराब कर दी जाएगी ।" बारात में से किसी ने जवाब दिया, "समय आने पर ही फैसला होगा ।" बारात के सभी युवा सदस्यों ने आपस में विचार-विमर्श कर मन ही मन यह प्रतिज्ञा कर ली कि भोजन पर बैठने के बाद जब तक मछली समाप्त नहीं हो जाएगी, तब तक खाते ही रहना है । हुआ भी यही । लगभग तीन घंटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक बाराती अपनी थाली पर बैठे लगातार मछलियां खाते ही रह गये और अंततः सारी मछलियां खा ही गये । रात में फिर मांस में भी इसी तरह की चुनौती मिली ।

भोजन के संग गाली

सामने सुमधुर व्यंजनों एवं मिष्ठान्नों से सजी थाली हो, खिलानेवाले का जबर्दस्त किंतु प्रेमपूर्ण आग्रह हो तथा बगल के कमरे से या किसी परदे की आड़ से ढेर सारी महिलाएं मीठी-मीठी गालियां गीतों के माध्यम से सुना रही हों, तो खाने का मजा दोगुना हो जाता है । बड़ी चुभनेवाली व बेशरम होती हैं ये गालियां । यह गालियां बारात में लड़की पक्ष की ओर से दूल्हे के पिता व अन्य रिश्तेदारों को दी जाती हैं । जैसे—

आमक पत्ता मुचुर मुचुर सूखता बड़ के पात हे
एको रसगुल्ला छुतेबअ समधी मारब मुंह में लात हे
देखू देखूं बराती सब चोर हए
लड्डू चुराकअ बहिन ले रखै इए

गालियों के माध्यम से लड़का पक्ष के पूरे खानदान को उलट-पुलटकर रख देती हैं महिलाएं । अति आधुनिकता के प्रभाव में कहीं अगर महिलाएं गाली नहीं देती हैं तो बारात के लोग खाना ही बंद कर देते हैं । यानी इस प्राचीन व मनोरंजक परंपरा को हर हालत में जिंदा रखना चाहते हैं मिथिलावासी । चतुर्थी यानी सुहागरात की रात दूल्हे को भी गालियों की बौछारों के बीच ही भोजन करना पड़ता है ।

गीतों में भोजन की चर्चा

मिथिला के इस भोजन प्रेम को स्थानीय गीतकारों ने भी पर्याप्त महत्त्व देते हुए ढेर सारे गीतों की रचना की है—

सखि हे आय तरब तिलकोर
कि पिया मोरा आबि रहल अछि

तिलकोर एक प्रकार की बेल है, जिसके फल को चावल के आटे में या बेसन में लपेटकर तेल में छानकर खाया या खिलाया जाता है । इसे गरम-गरम खाने का मजा ही कुछ और है ।

पश्चिमी हवा की तेज आंधी से मिथिला की संस्कृति भी कुछ हद तक प्रभावित हुई है । अपने संस्कारों से विचलित होने का अहसास गीतकार को कचोटता है और गीत व्यंग्य करता है—

चलू होटल में कोहबर सजाऊ बहिना
बेर महुअग के आमलेट चखाऊ बहिना

विवाह के बाद तीन-चार दिन तक नित्य संध्याकाल में महुअग का आयोजन किया जाता है, जिसमें अन्य कई तरह के आकर्षक कार्यक्रमों के अलावा नव युगल के द्वारा एक-दूसरे को खीर खिलाने की औपचारिकता निभायी जाती है ।

गीतकारों ने शंकर भगवान को भी नहीं छोड़ा और लिखा—

खोआ-मलीदा शिव के मनहुं न भावे
भांग-धतूरा कहां पायब हो शिव मानत नाहि ।

भोज से जुड़ी प्रतिष्ठा

भोजन खाने की मिथिलावासियों में गजब की लालसा पायी जाती है, इसलिए सिर्फ आदमी के जीवन में प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कदम पर ही नहीं, बल्कि मृत्यु के पांच वर्ष बाद तक भी भोज आयोजित करने का प्रावधान रच दिया गया है । बेटे के जन्म, मुंडन, उपनयन संस्कार, विवाह, द्विरागमन तथा बेटी के विवाह, मधुश्रावणी, आदि अवसरों पर भोजन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिवार्य है । अगर किसी ने भोजन करने में आनाकानी की या नहीं किया तो उसे समाज में प्रतिष्ठा कतई नहीं मिल सकती है । उसे समाज में कोई सर उठाकर बोलने का अवसर ही नहीं देता है । वक्त-बेवक्त लोग व्यंग करने से भी नहीं चूकते । इसके विपरीत जो व्यक्ति जितने बड़े व शानदार भोज का आयोजन करता है, उसे समाज में उतनी ही प्रतिष्ठा दी जाती है । उसकी चर्चा आगामी बीस-पचीस वर्ष तक होती रहती है । प्रतिष्ठा जुड़ी होने की वजह से किंतु भोज में शामिल होने या भोजन के आमंत्रण को किसी भी कीमत पर नहीं ठुकरा सकते ।

चार-पांच कि.मी. पैदल चलकर भी भोज खाने जाना पड़े तो कोई बात नहीं । पहले तो चार-पांच कि.मी. दूर के गांव में भी भोज खाने पहुंच ही जाते थे । अब न तो कोई चार-पांच कि.मी. दूर गांव के ब्राह्मणों को खिलाने की औकात रखता है और न ही इच्छा ।

भोजन के सबसे आनंददायक स्वरूप से साक्षात्कार होता है बाराती के रूप में लड़कीवाले के यहां पहुंचने पर । बारात में एक साथ विविधता, प्रचुरता, उत्तम स्तर के साथ-साथ अधिक से अधिक खाने का आग्रह ही नहीं दुराग्रह भी और कभी-कभी चुनौती भी उपलब्ध हो जाती है ।

ही लोग जमीन बेचकर या कर्ज लेकर भी भोज का आयोजन करने से नहीं चूकते । दो दशक पूर्व मिथिला में परिवार के किसी वृद्ध सदस्य की मृत्यु पर सुखी-संपन्न लोगों के द्वारा 'पाली' भोज का आयोजन किया जाता था । 'पाली' भोज का मतलब होता है आसपास के कम से कम पांच गांवों के ब्राह्मणों को खिलाना । लेकिन अब जनसंख्या के बढ़ने से तथा आदमी की औकात घटने से 'पाली' भोजों की संख्या बहुत कम हो गयी है । फिर भी कुछ लोग यह दुस्साहस भी कर ही बैठते हैं ।

भोजन हेतु हर दर्द झेलने को तैयार

मिथिलावासी सब कुछ ठुकरा सकते हैं,

गजब का उत्साह

भोज के प्रति उत्साह भी मिथिलावासियों में गजब का है । आप सिर्फ पैसे खर्च करने को तैयार हो जाइए, फिर देखते रहिए कि सारी व्यवस्था कितनी तेजी से और किस तरह अपने-आप हो जाती है । कर्ज तक लेने को तैयार हो जाते हैं । हां, कुछ खलनायकी चरित्रवाले लोग जरूर ऐसे वक्त पर भोज करनेवाले की जमीन या अन्य संपत्ति सस्ते भाव पर खरीदने की कोशिश करते हैं ।

भोज का आकर्षण

क्या मजाल है कि भोज के दिन कोई गांव से बाहर चला जाए; बशर्ते कोई आपात स्थिति न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये । अगर भोज लगातार दो दिनों तक हो तो ३०-४० कि.मी. दूर नौकरी करनेवाले या पढ़नेवाले भी गांव चले आते हैं ।

गांववालों के लिए शानदार भोज की व्यवस्था हो गयी । तो देखा गया कि गांव की कुल जनसंख्या में कम से कम २० प्रतिशत की वृद्धि हो गयी थी । सिर्फ दामाद को छोड़कर, अन्य बहुत-से रिश्तेदारों ने पधारकर भोज के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की । क्योंकि दोनों ही भोज 'सबजना' आयोजित किये गये थे । 'सबजना' का अर्थ होता है मेहमानों सहित परिवार के सभी सदस्यों को निमंत्रण और 'एकजना' का अर्थ होता है परिवार के एक सदस्य (पुरुष) को निमंत्रण ।

पेटू नहीं शौकीन

इतनी सारी बातों का अर्थ आप यह कदापि न लगायें कि मिथिलावासी पेटू होते हैं क्योंकि यह भोजन के प्रति उनकी भावनाओं के साथ नाइनसाफी होगी । दरअसल भोजन के बड़े शौकीन होते हैं मिथिलावासी और हृदय में अच्छे भोजन के प्रति बहुत ही सम्मान रखते हैं । इसी वजह से उनका भोजन विन्यास भी पूरे श्रृंगार के साथ पूरी गरिमा लिए हुए होता है । अब खाने को बैठे हैं थाली पर और खाते-खाते इच्छा हो गयी कि मछली खायी जाए, तो तुरंत नौकर को आदेश दे दिया कि तुरंत तालाब से मछली पकड़कर लाओ । नौकर ने जाल उठाया और भागा तालाब की ओर । दरवाजे पर तालाब है इसलिए नौकर बीस-पच्चीस मिनट में मछली लेकर हाजिर हो गया । नौकरानी ने तुरंत उसे काटकर, धोकर और तलकर भोजन हेतु प्रस्तुत कर दिया । तब तक साहब धीरे-धीरे खा भी रहे हैं और मछली का इंतजार भी कर रहे हैं । इधर तली हुई मछलियों का दौर चल रहा है, उधर मछलियों को रस (झोल) में भी डाला जा रहा है । तली हुई मछलियां खाते-खाते मन भर गया तो रसदार मछलियां प्रस्तुत कर दी गयीं । भोजन की ऐसी इच्छा और अच्छे भोजन को प्राप्त करने हेतु इतना धैर्य अविश्वसनीय जरूर नजर आता है किंतु इस तरह के स्वभाववाले ढेर सारे लोगों की अनगिनत कहानियां सुनने को मिलती हैं मिथिला में । यह भी गौरतलब है कि जब भी मिथिलावासी भोजन अधिक मात्रा में ग्रहण करते हैं तो वह उच्चस्तरीय भोजन होता है । कभी भी भात, पूड़ी, सब्जी, दाल आदि अधिक नहीं खाते, पसंदीदा वस्तुओं में मांस-मछली, दूध-दही, खोआ-मिठाइयां आदि ही हैं, भोजन क्षमता आजमाने के लिए ।

नुकसानदेह भी

मिथिलावासियों का भोजन प्रेम एक कलात्मक ऊंचाई पर अवश्य है, किंतु यह मिथिलावासियों को इतने आर्थिक झटके देता है कि बहुत-से मध्यम वर्ग के लोगों की सारी जिंदगी इन झटकों से ही उबरने में समाप्त हो जाती है । मिथिलावासी इन झटकों से उबर जाने में ही अपने जीवन को पूर्ण समझते हैं । अगर शीघ्र ही भोज की प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया गया तो आने वाले समय में मिथिलावासियों का जीवन बुरी तरह प्रभावित होगा ।

—द्वारा श्री सहजानंद
स्टेट बैंक ऑव पटियाला,
हथुवा मार्केट के सामने
पटना-४, बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिवेदन पोरस के हाथी का

● आशुतोष दुबे

परम आदरणीय महाराज पुरु,

मुझे अच्छी तरह पता है कि आप मुझसे किस कदर नाराज हैं। मेरा प्रतिवेदन तो क्या आप मेरी मामूली-सी चिंघाड़ तक सुनना नहीं चाहेंगे। मैं आपका क्रोध समझता हूं। आपको मुझसे खफा होने और फिर विमुख हो जाने का हक है। लेकिन यह भी तो सोचिए, इस बीच झेलम में कितना पानी बह गया। आप तो जन्नतनशीन होकर सिकंदर के साथ शायद शतरंज खेल रहे होंगे, पर पिछले सैंकड़ों वर्षों से मुझ पर लगा कलंक यथावत कायम है। लोग मुझे क्या कुछ कहते नहीं थकते ! मैं अब हाथी नहीं रहा, मुहावरा हो गया हूं। भीतर-घात नामक जो कला आगे चलकर भारतीय राजनीति और समग्र समाज में विकसित हुई, मुझे लोगों ने उसका आदि-प्रतीक बना दिया। मुझ पर आरोप लगे कि मैंने अपनी ही सेना को हरवा दिया, क्योंकि मैं भीतर ही भीतर सिकंदर से मिल गया था। अपनी बिरादरी से द्रोह करनेवाले हर शख्स को अब मेरे ही नाम से संबोधित किया जाता है।

मैं इसकी कोई खास परवाह नहीं करता। कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना ! पर आपके लिए दिल कसकता है। आपका मन मेरी ओर से मैला हो, यह मुझे खाये जाता है। इस चुभन को मिटाने के लिए मैंने क्या नहीं किया। दर्जनों गैलन पानी सूंड से फव्वारों की तरह निकाला, गन्ने के खेतों में जा घुसा, कीचड़ में लोट लगायी, चिंघाड़-चिंघाड़कर जंगलों को मस्तक पर उठा लिया, पेड़ उखाड़ डाले, हथिनियों को धमकाकर दूर भगा दिया, बड़े-बड़े शेरों के दिलों में अपना खौफ बैठा दिया— यहां तक कि कुछ अरसे के लिए मन-बहलाव की खातिर एक सरकस में भी जाकर रहा। तबीयत उखड़ने लगी तो रिंग मास्टर को सूंड में लपेटकर उछाल दिया। वह दर्शकों में जाकर गिर पड़ा। मैं जब सरकस से बाहर जा रहा था, तब एक दर्शक की कमेंट सुनायी दी, "अबे, ये तो पोरस का हाथी लगता है। अपने ही रिंग मास्टर की हड्डियां तुड़वा दीं !" यानी मैं वहां भी पहचान लिया गया। मुझे जबरदस्त डिप्रेशन आ गया। अंतर में पीड़ा लिये यहां-वहां भटकता रहा। आखिरकार फैसला किया कि क्यों न आपसे ही हार्ट-टू-हार्ट टॉक कर ली जाए। संवादहीनता से हमेशा गलतफहमियां बढ़ती हैं।

अब आपका स्नेह याद करता हूं तो आंसू आ जाते हैं। आप मेरा कितना खयाल रखवाते थे ! मेरे भोजन का विशिष्ट इंतजाम आपके निर्देशानुसार ही होता था।

महाराज, आप तो समय से स्वर्ग चले गये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर स्वामी-द्रोह के अभिशाप से मैं अभी तक जीवित हूं। सैंकड़ों सालों में इस नाचीज ने अपनी इन्हीं आंखों से क्या कुछ नहीं देखा ! इतिहासकारों ने आपके सिकंदर से दुश्मनी मोल लेने की बड़ी तारीफें की हैं। आपको देशभक्त, स्वाभिमानी, वीर वगैरह कहा गया। अब इन इतिहासकारों को तो झेलम के किनारे घनघोर बरसात की अंधेरी रात में सिकंदर का सामना करना नहीं पड़ा था। उस समय तो आपका यही बदनाम सेवक आपके साथ था। इधर बारिश की मार, उधर अंधेरी रात, कीचड़ में पैरों का धंसना और शत्रुसेना का अत्याचार। तीरों की उस बौछार के सामने भला मैं और मेरे साथी कब तक टिकते ? आखिर वही हुआ जो होना था। तोहमत का ठीकरा मेरे सर फूटा और उसी मुकाम पर वापस आते देखा। सन् १९४२ में यही लोग, अंगरेजों से भारत छुड़वाने पर तुले हुए थे। सन् १९९२ से लगातार अंगरेजों को वापस बुला रहे हैं। कितनी ही बार, उन्हीं-उन्हीं वजहों से सांप्रदायिक दंगे होते रहे, वही-वही भ्रष्ट और घटिया लोग बार-बार सरकार संभालने के लिए चुने जाते रहे, जिनकी जगह जेलों में होनी चाहिए थी, वे यहां की जनता की किस्मत के फैसले करते रहे। हर नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को गालियां देती हुई आयी और हर पुरानी पीढ़ी नयी को कोसती हुई दुनिया से रुखसत हुई। सास-बहू में उन्हीं मुद्दों को लेकर झगड़े होते रहे, साहित्यकार राज्याश्रय से अफसराश्रय में चले गये और सामान्य पाठक से पूर्ववत घृणा करते रहे, परीक्षार्थी हर साल उन्हीं प्रश्नों के वही उत्तर लिखते रहे और माहौल बद से बदतर होता रहा। भारतीय मुद्रा से अधिक भारतीय मूल्यों का अवमूल्यन होता गया और आज स्थिति यह है कि लोग आपका स्वाभिमान भूल गये, पर ऊपर से मेरी निंदा करते हुए भी अवचेतन में मुझे ही आदर्श मानकर मेरे रास्ते पर चलने लगे। आज तो मुझे हर कहीं पोरस के हाथी दिखायी देते हैं। जहां, जिस हाल में बैठे हैं, अपनी शक्ति और औकात के मुताबिक उतना-उतना देश को खा रहे हैं।

मगर इन हाथियों को पता है कि ये क्या कर रहे हैं और किसलिए कर रहे हैं। ये सारे मुल्क को रौंद रहे हैं, अपनी सूंडों से नियम-कायदे उखाड़ रहे हैं, अपने सर की टक्कर से सारा तंत्र ढहाने में जुटे हैं, अपनी बेसुरी चिंघाड़ों से कान के परदे फाड़ रहे हैं, और इनके मस्तक से सत्ता का मद झर रहा है।

मुझे आप में व्यावहारिकता की कमी महसूस होती थी, आज उसी व्यावहारिकता की इस कदर इफरात है कि मेरा जी घबराने लगा है। मेरे और मेरे साथियों के कदम दुश्मनों के तीरों ने उखाड़ दिये थे, पर लालच और अंधी खरीद-फरोख्त ने तो इन आधुनिक पोरस के हाथियों की आत्माओं को ही उखाड़ दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हारने के बावजूद आप हीरो के हीरो रहे । सिकंदर ने आपसे किये जानेवाले व्यवहार के विषय में जब पूछा तो आपने वह विश्व-विख्यात डॉयलॉग बोला कि 'मेरे साथ वैसा ही व्यवहार किया जाए जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है ।' इस संवाद पर आज तक इतिहासकार तालियां बजा रहे हैं । कालांतर में हिंदी फिल्मों के लेखकों ने इससे बड़ी प्रेरणा ली । इस थीम पर हिट गीत रचे गये । खुद सिकंदर भी इस संवाद से चित हो गया और आपको आपका राज्य तो वापस मिला ही, व्यास नदी तक के सारे प्रदेशों की सूबेदारी अलग से मिली । सिकंदर ने आम्भी से भी आपका हाथ मिलवा दिया । बदले में क्या हुआ ? आपको अधीनता स्वीकार करनी पड़ी । यानी, सिकंदर को मिली जीत, आपको हारने के बावजूद मिले पंद्रह गणराज्यों के प्रदेश, आम्भी को मिली आपकी मित्रता और इस गरीब को क्या मिला ? कलंक, अपयश, जिल्लत और अपमान के साथ सदा-सर्वदा जीवित रहने का अभिशाप । अब आप ही बताइए, क्या यह मेरे साथ अन्याय नहीं है ?

उसके बाद महाराज, कितने ही राजा आये और चले गये । राजवंश पनपे और मिट गये । मौर्य, शुंग, कण्व, सातवाहन, यूनानी, शक, कुशान, गुप्त, हूण, वर्धन, राजपूत, तुर्क, गुलाम, खिलजी, तुगलक, लोदी के बाद मुगल आये । बाबर ने बाबरी मसजिद बनवायी, जिसके झगड़े आज तक चल रहे हैं । मुगलों के बाद अंगरेज आये । अंगरेजों के बाद यह देश यहीं के लोगों के हवाले है । इन सैकड़ों सालों में कितनी ही बार इतिहास को घूम-फिर कर देखा अगर हालात इस कदर खिलाफ न होते तो हम आपका साथ देकर आपको विजय-श्री भी दिला सकते थे, मगर इन हाथियों को पता है कि ये क्या कर रहे हैं और किसलिए कर रहे हैं । ये सारे मुल्क को रौंद रहे हैं, अपनी सूंडों से नियम-कायदे उखाड़ रहे हैं, अपने सर की टक्कर से सारा तंत्र ढहाने में जुटे हैं, अपनी बेसुरी चिंघाड़ों से कान के परदे फाड़ रहे हैं, और इनके मस्तक से सत्ता का मद झर रहा है । अगर इन सैकड़ों सालों में कुछ नहीं बदला है महाराज तो वह जनता है, जो इन पागल हाथियों के पैरों तले कुचली जा रही है । सैकड़ों साल हो गये । इसे यही समझाया जाता रहा है हाथी इसे इसके फायदे के लिए ही कुचल रहे हैं । आजाद भारत में तो यह भी कहा जाता है कि जिन हाथियों के पैर के नीचे यह दम तोड़ रही है, उनके महावत भी यही हैं । अपनी पसलियों की हालत के मुताबिक हाथी का पैर चुनने की आजादी भारतीय नागरिक को मिली हुई है ।

महाराज, क्या आपको नहीं लगता, इन पागल हाथियों के इस वहशी दौर में अब मेरे होने न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता ? आपसे यही निवेदन है कि पुरानी बातें भूलकर मुझे क्षमा कर दीजिए और मुझे अमरत्व के इस श्राप से मुक्ति दिलाकर अपनी सेवा में बुला लीजिए । भगवान से तो स्वर्ग में आपकी रोज ही भेंट होती होगी । एक बार मेरे लिए कहकर देखिए ना... ।

आपका,
(यानी पोरस का) हाथी ।

—६, जानकीनगर एक्सटेंशन,
इंदौर-४५२००१ (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाली सिस्टम की वापसी

● डॉ. पी.के. श्रीवास्तव

मैंने अनेक विवाह समारोहों में भाग लिया है एवं वहां की तैयारियों को भी बारीकी से देखा है। विवाह में होनेवाले खर्चों की जानकारी भी मैंने संबंधित पक्ष से हासिल की है। ऐसा मैं इसलिए करता हूं, क्योंकि मेरी भतीजी एवं मेरी पुत्री भी विवाह योग्य हैं, उनकी शादी भी मुझे करनी है।

संयोग की बात है कि मेरी भतीजी का विवाह संबंध पहले तय हो गया। लड़का इंजीनियर था एवं उसके माता-पिता भी काफी अच्छे स्वभाव के थे। शादी की तिथि भी निश्चित हो गयी। अब निमंत्रण-पत्र छपवाने का कार्यक्रम शेष था। जब मैं निमंत्रण-पत्र का प्रारूप बना ही रहा था कि तभी मेरे मस्तिष्क में एक विचार आया।

बात यह है कि मैं विवाह समारोह में होनेवाले प्रीतिभोज में बुफे सिस्टम अर्थात गिद्ध भोज के सख्त खिलाफ हूं। बुफे सिस्टमवाले भोज को गिद्ध भोज की संज्ञा इसलिए दी जाती है, क्योंकि भोजन के समय मेजबान का इशारा पाते ही लोग खाद्य सामग्रियों पर गिद्धों की भांति टूट पड़ते हैं। सारे रिश्ते-नाते भूलकर हर व्यक्ति अपनी प्लेट भरने के लक्ष्य को प्राप्त करने के वीरोचित कार्य में पूरी तन्मयता एवं निष्ठा के साथ संलग्न होता है। ऐसे भोजों में खाद्य सामग्री की काफी मात्रा में बरबादी भी होती है।

जब-जब मैंने आशीर्वाद समारोह में जाकर बुफे सिस्टमवाले प्रीतिभोज में अपनी प्लेट में कुछ खाद्य सामग्री लेने का प्रयास किया तब-तब मुझे भारी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।

न जाने कितनी बार धक्के खाकर मैंने धूल चाटी, न जाने कितनी बार मैं केवल सलाद खाकर वापस लौटा एवं न जाने कितनी ही बार मैंने सब्जी, रायते एवं गाजर के हलवे में सने अपने कपड़े दूसरे-ही दिन लांड्री में धोने के लिए दिये।

फलस्वरूप मैंने तय कर लिया था कि जब भी मेरे घर में कोई विवाह समारोह होगा, तब मैं प्रीतिभोज में 'थाली सिस्टम' ही रखूंगा। थाली सिस्टम का मतलब है कि मेहमानों को बाकायदा बैठाकर उनके सामने थाली में, परोसने वाले व्यक्तियों द्वारा आदरपूर्वक सुस्वादु व्यंजन परोसे जाएं, ताकि वे आराम से भरपेट भोजन कर सकें।

जब मैंने इस विषय पर घर में पत्नी और बच्चों से सलाह ली तब उन सबने एक स्वर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा विरोध किया । उनका तर्क था कि समाज में बुफे सिस्टम ही प्रचलित है एवं थाली सिस्टम अपनाने से जगहंसाई ही होगी । इस बात पर घर के सदस्यों एवं मेरे बीच गृहयुद्ध की नौबत आ गयी थी । अंत में मैंने सुझाव दिया कि क्यों न इस विषय में आमंत्रित सज्जनों एवं वर पक्ष के विचार जान लिये जाएं । यदि उनमें से अधिकांश व्यक्ति बुफे सिस्टम पसंद करते हैं तो उसी तरह का प्रबंध किया जाएगा । घर के सभी सदस्य मेरी इस बात से सहमत हो गये ।

इस बात को ध्यान में रखते हुए मैंने निमंत्रण-पत्र के साथ एक छोटा-सा कार्ड अलग से संलग्न कर सभी आमंत्रित सज्जनों को भेज दिया । साथ ही उत्तर भेजने हेतु स्वयं का पता लिखा एक पोस्टकार्ड भी संलग्न कर दिया । यह कार्ड मैंने समधी साहब को भी भेज दिया । उस कार्ड में मैंने जो निवेदन किया था, वह इस प्रकार था—

भेज रहे हैं नेह निमंत्रण,
प्रियवर तुम्हें बुलाने को ।
हो मानस के राजहंस तुम,
भूल न जाना आने को ।
आने से पहले बतलाना,
अभ्योहस्ताक्षरकर्ता को ।

तुम किसको पसंद करते हो,
गिद्धभोज (बुफे सिस्टम) या
थाली (सिस्टम) को ।

कृपया उत्तर संलग्न पोस्टकार्ड के द्वारा वापसी डाक से दें, ताकि बहुमत के आधार पर उचित प्रबंध किया जा सके ।

इस प्रारूप के नीचे मेरे हस्ताक्षर थे तथा मेरा पता अंकित था ।

निमंत्रण-पत्र विवाह के लगभग एक माह पूर्व ही मैंने भेज दिये थे । पंद्रह दिनों के अंदर ही लगभग पचहत्तर प्रतिशत लोगों के उत्तर

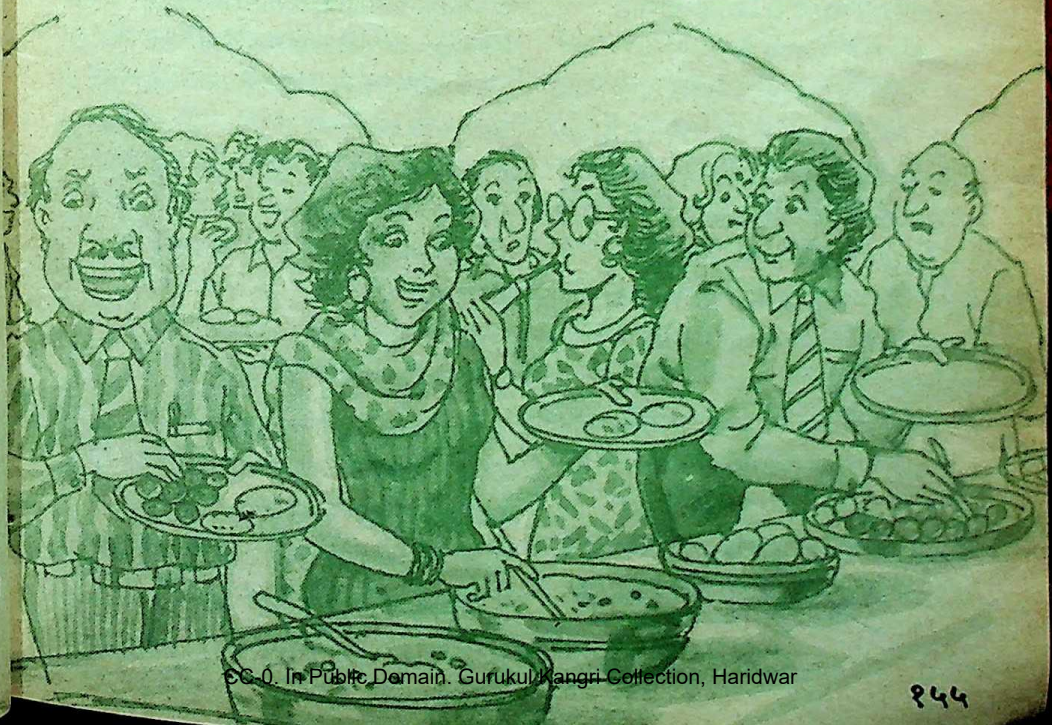

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो चुके थे, जिनमें से आधे से अधिक थाली सिस्टम के ही पक्ष में थे । किंतु समधीजी का पत्र, जिसका कि मुझे बेसब्री से इंतजार था, वह अभी तक नहीं आया था । इसलिए मैं थोड़ा चिंतित भी था, क्योंकि मेरे लिए तो समधीजी की इच्छा ही सर्वोपरि थी । तीन दिन पश्चात उनका पत्र आया । उनके पत्र का अक्षरशः विवरण निम्नानुसार है—

आदरणीय समधीजी,

सर्वप्रथम तो मैं आपके प्रति इस बात का आभार प्रकट करता हूं कि आपने प्रीतिभोज के विषय में मेरी राय जानने का कष्ट किया, वरना आजकल के जमाने में तो सब अपनी मनमानी ही करते हैं ।

मैं आपसे स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि मैं एवं मेरे घर के लोग पूर्णतः थाली सिस्टम के ही पक्षधर हैं । यह बात हम सगाई के समय आपसे कहना चाहते थे किंतु संकोचवश इसलिए न कह सके कि कहीं आप बुरा न मान जाएं । बुफे सिस्टमवाला प्रीतिभोज जिसे समाज का हर व्यक्ति 'गिद्धभोज' की संज्ञा देता है, एक ऐसी सामाजिक कुरीति है, जिसका बंद होना ही हमारे समाज के लिए श्रेयस्कर होगा ।

पिछले दस वर्षों से मैंने जिस-जिस आशीर्वाद समारोह या रिसेप्शन में भाग लिया है, उन सबमें मैं अलग-अलग प्रकार के हादसों का शिकार हुआ हूं ।

कई बार मेरे सूट का रायते, सब्जियों के रसों, दाल एवं दही-बड़े के दही द्वारा स्नान हो चुका है । दूसरे ही दिन मुझे अपना सूट ड्राइक्लीनिंग के लिए देना पड़ता है । कॉफी के स्टाल पर जब मैं भिक्षुक की भांति भिक्षापात्र हाथ में लिये काउंटरवाले लड़के से उसमें कॉफी डालने की याचना करता हूं, तब वह बड़ी हिकारत की दृष्टि से कुछ इस तरह देखता है मानो कह रहा हो कि चल भाग यहां से ।

मैंने प्रायः प्रत्येक बार अपने आपको ऐसे समारोहों में एक भिक्षुक के रूप में ही पाया है, जो सबसे पहले अपनी प्लेट में अधिक से अधिक खाद्य सामग्री भरने में गौरव का अनुभव करता है, भले ही इस प्रयास में जख्मी ही क्यों न हो जाए ।

अब जरा भरी हुई प्लेट का नजारा देखिए । प्लेट में जहां एक ओर गुलाब जामुन और दही-बड़े परस्पर आलिंगनबद्ध हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बरफी, मटर-पनीर की सब्जी में डुबकी लगा रही है । पुलाव के भार से दबी हुई पूड़ियां, सब्जियों के रसों से अपना दामन बचाते हुए जहां एक ओर अपने अस्तित्व की रक्षा में रत होती हैं, वहीं दूसरी ओर बेचारा पापड़ घुलनशील तत्त्व की तरह अपनी अस्मिता की रक्षा में सदैव संघर्षरत रहता है । प्लेट में सबसे पहले कदम रखनेवाला सलाद सबसे अधिक उपेक्षित तत्त्व होता है, जिसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता । गाजर का हलवा दही-बड़े के दही और सब्जियों के रसों से होली खेलता है तो उसका स्वाद इन सब वस्तुओं में उसी तरह विलीन हो जाता है जैसे मृत्यु के बाद इनसान की आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है ।

भाईसाहब, पिछले कई वर्षों से मैं ऐसे अनेक रिसेप्शनों में मनुष्य योनि में होते हुए भी गिद्धों की भांति न केवल विचरण कर रहा हूं, बल्कि भोग भी लगा रहा हूं । मैं साठ वर्ष का हो चुका हूं । जीवन के चंद वर्ष ही शेष रह गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जरा भरी हुई प्लेट का नजारा देखिए । प्लेट में जहां एक ओर गुलाब जामुन और दही-बड़े आलिंगनबद्ध हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बरफी, मटर-पनीर की सब्जी में डुबकी लगा रही है । पुलाव के भार से दबी हुई पूड़ियां, सब्जियों के रसों से अपना दामन बचाते हुए जहां एक ओर अपने अस्तित्व की रक्षा में रत होती हैं, वहीं दूसरी ओर बेचारा पापड़ घुलनशील तत्त्व की तरह अपनी अस्मिता की रक्षा में सदैव संघर्षरत रहता है ।

हैं ।

मेरी सारी अभिलाषाएं पूर्ण हो चुकी हैं । बस एक यही तमन्ना बाकी रह गयी है कि कम से कम अपने पुत्र के विवाह के प्रीतिभोज में तो इनसानों की तरह बैठकर थाली में भोजन करूं । भोजन परोसनेवाले जब आग्रहपूर्वक परोसते हैं, तब खाने का आनंद द्विगुणित हो जाता है । इस दुनिया से कूच करने से पहले यदि एक बार इस तरह सलीके से भोजन करने का सुअवसर मिल जाए तो मैं आपका अत्यंत आभारी रहूंगा ।

आपसे एक और अनुरोध है कि कृपया थाली और कटोरी की जगह यदि पत्तल और दोने में भोजन परोसें तो अति उत्तम होगा, क्योंकि ऐसे भोजों में जहां सैकड़ों लोग भोजन करते हैं वहां प्लेटों, थालियों, कटोरियों आदि की जैसी धुलाई होती है, उसे देखकर मुझे तो उबकाई आती है । आशा है आप मुझे निराश नहीं करेंगे ।

अंत में मैं सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के आपके प्रयास की सराहना करते हुए आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मैं भी मात्र पचास बारातियों को ही लेकर आपके द्वार पर आऊंगा, क्योंकि सैकड़ों की संख्या में बारातियों को लाना भी एक अन्य सामाजिक कुरीति है जिससे हमें छुटकारा पाना है ।

अंत में आपको पुनः हार्दिक धन्यवाद देते हुए ।

आपका शुभचिंतक
आनंद प्रकाश

पत्र पढ़कर मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई कि समधीजी भी मेरी ही तरह थाली सिस्टम के पक्षधर हैं । अन्य अधिकांश आमंत्रित सज्जनों ने भी अपने-अपने उत्तर में बुफे सिस्टम की बुराइयों का वर्णन करते हुए थाली सिस्टम को ही अपनाने का सुझाव दिया था । इन सब पत्रों को पढ़ने के पश्चात मैं सोचने लगा कि हम सब इन सामाजिक कुरीतियों से कितने व्यथित हैं, कितने बेबस और लाचार हैं । यदि ऐसे समझदार समधी सबको मिलें जैसे मुझे मिले हैं, तो समाज की कायापलट निश्चय ही हो जाएगी बशर्ते कि थोड़ा-सा साहस, इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास हमारे अंदर भी हो ।

—ई-४८, इंजीनियरिंग कॉलेज कॉलोनी, रायपुर (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इश्क के घाट पर किस को सम्हले देखा है!

● उमाशंकर चतुर्वेदी

जीवन में यौवन के दिनों की तरह वर्ष में फागुन के मस्ती भरे दिन होते हैं । इन्हीं दिनों में राग, रंग,रस, मादकता, मोहकता, अल्हड़ता, सरसता लिये आता है होली का मौज और मस्तीभरा रंगीन त्यौहार । फगुनौटी फिजा में सारा वातावरण बौरा जाता है । हुर-यारे हुरदंगा गा उठते हैं, 'मस्त महीना फागुन कौ रस बरसै बांकों ।' लोग जी भरकर होली खेलते हैं क्योंकि सुख के दिन आसानी से नहीं आते हैं, 'बरस दिना की है फाग जिए सो खेलेगो होरी ।' इस बौराये मौसम में श्लील और अश्लील का भेद खतम हो जाता है । बालाओं की देह नदी उफनने लगती है और प्रियाओं के होंठों के घाट अपने प्रियतमों को आकर्षित करने लगते हैं । ऐसे घाटों पर कौन फिसलेगा और कौन न फिसलेगा यह कहना कठिन होता है—

इश्क के घाट किस-किस को संभलते देखा
यहां अच्छे-अच्छों को फिसलते देखा

पल्लू की लटक में

सारा वातावरण बृजमय हो जाता है । सांवरिया अपनी बृजबालाओं से कहने लगते हैं कि, 'बुरा न मानो होली है— चुनरी गीली कर लेने दो ।' बृजबालाओं की तरह गोरियां भी कम नहीं हैं,वे भी कहने लगती हैं कि 'मैं तो ऊसई अतर में डूबी लला, मो पै रंगा न डारौ सांवलिया ।' लेकिन बार-बार ये महुआ से छलकते दिन कहां आते हैं, इसलिए मान-मनुहार और रिस छोड़कर नर-नारियां होली के रंग-रस में कृष्ण और राधा की तरह यों हो जाते हैं, 'राधे घनश्याम जू की बांह में समाय गई, मोहन अटक गये पल्लू की लटक में ।'

ऐसे मस्तीभरे माहौल में होरी की हांक और ताक-झांक में गोरियों के नैना बान जब चलते हैं, तब घायल होनेवाला ही जानता है । बुंदेलखंड के राई नृत्य के बीच गायी जानेवाली फागों की रस सरिता में कौन अवगाहन न करना चाहेगा ? राई एक प्रसिद्ध नृत्यगीत है, जो सामान्यतः होली के रसभरे समय में गाया जाता है । इस नृत्य में बेड़िनी नर्तकी नाचती है, गाती है तथा साथ में ढोलक, मृदंग नगड़िया, मंजीरे बजानेवाले स्वर मिलाते हैं । जब राई फाग गाते हुए उत्तर प्रति उत्तर होता है, तब सारा वातावरण जीवंत हो उठता है । आत्मा आनंदित हो उठती है, मस्ती मुखरित हो जाती है, हिय हुलस उठता है, मन महकने लगता है । संतों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन भी वसंत हो उठते हैं । कनक छरी-सी कमनीय कामनियों के कंचन कुचों में काम की कसक कसकने लगती है, तब उस हुमकन, कमर की लचकन, पायजेवों की ठनकन से बुजुर्गों के मन भी बौरा जाते हैं । बल खाती बालाओं को भी फागुन में बाबा देवर लागें, तब बुजुर्ग भी ऐसे हो जाते हैं कि 'अब भी जो बाबा कहैं, पकड़ मसल दें अंग ।'

नैनन से नैन चलाती

ऐसी रंगीली, भंगीली और बौराई फिजा में राई नृत्य करनेवाली बेड़िनी नर्तकी और उसके आशिकों के बीच चलने वाला हास-परिहास सारी बस्ती में मस्ती घोल देता है । कंटीले कंचन कुचों को उमकाती, कमर कटारी-सी चलाती, पग थिरकाती, नैनन से सैन चलाती, घूम घुमारा छींट का रंगीन घाघरा घुमाती, फहराती, ओढ़नी लहराती हुई मदभरा आमंत्रण देती है तो आशिक झूम उठते हैं, नगड़िया बज उठती है, तब मंजीरे खनकने लगते हैं, बेड़िनी की लंक लचकने लगती है, लफ-लफ टूनर होकर वह गा उठती है—

थर-थर कांपे शरीर, बालम बिछुड़ गये राह में
कां हो राजा बेईमान, आकर कें देहिया मसल दो

और जब वह पैजनियां की ठनकार मारती है, तब सारे गांव के सुननेवाले आशिकों के दिल ठनकने लगते हैं । आशिकों की एक मंडली नर्तकी को लक्ष्य कर गाती है—

कजरवा तैंने काय खों दये री
तोरे ऊसईं लगनियां दोउ नैन रे

उस पर नर्तकी उत्तर देती है कि 'अरे राजा— अपना मन क्यों छलावे में डारते हो सभी की काया एक-सी है—

राजा मन न छलाव
एकई-सी काया सवई की

फिर वह आशिक को कटाक्षपूर्ण उत्तर देती है—

कजरवा मोरे मायके को है
मोरे मायके को रे,
तोरे दद्दा के लगैं नहिं दाम रे

कुछ आशिक उधर से फिर गाते हैं और बैड़िनी नृत्य करती है और आशिक कटाक्ष करते हैं—

तोरी बिंदिया ने मारे हजार,
काय खों लगाई जा बिंदिया
ई ने मारे ज्वान, काय खों
लगाई जा बिंदिया

नाचनेवाली मुसकराकर, काजर कोर की

ऐसे मस्तीभरे माहौल में होरी की हांक और ताक-झांक में गोरियों के नैना बान जब चलते हैं, तो घायल होनेवाला ही जानता है । बुंदेलखंड के राई नृत्य के बीच गायी जानेवाली फागों की रस सरिता में कौन अवगाहन न करना चाहेगा ? राई एक प्रसिद्ध नृत्यगीत है, जो सामान्यतः होली के रसभरे समय में गाया जाता है । इस नृत्य में बैड़िनी नर्तकी नाचती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटारी मारती हुई उत्तर देती है—

चुनरी रंगी रंगरेज ने, गगरी गढ़त कुम्हार
बिंदिया गढ़ी सुनार ने, तो दमकत मांझ लिलार
बिंदुलिया तो लै दई रसीले छैल ने
अरे, जिन खों मरने है, सो मरन दो

फिर कुछ आशिक और नृत्य करनेवाली मिलकर गाते हैं तो सारे उपस्थित दर्शक दिल पर हाथ रखकर मस्त होने लगते हैं। नर्तकी शुरू करती है और आशिक सुर मिलाते हैं—

चैत रसीली चीमरी, बैशाख रसीले आम
गोरी रसीली सेज पै, पलका पै परै न दाव
मोय भौं में लिटा लओ बालमा

ये बोल समाप्त भी नहीं हो पाते और उधर से उन्हीं में से एक आशिक गा उठता है—

हाथी पै हौदा औ घोड़े पै झूल
प्यारी तोरी अंगिया में खिले दो फूल

इस पर कूल्हे मटकाती, लफतफ दूनर होती, घूंघट से नजर कटारी-सी मारती, अंखियों से दुनाली-सा फायर करती है—

फूल ऊसई मुरझाँय, जब तक सूरज निकलै ना
गोरी ऊसई मुरझाय, जब तक सजनवा मिलैं ना

वह अपने प्रेमी के विश्वासघात की बात व्यक्त करती हुई गाती है—

सारी रैन हेरत गई आए न बेईमान
किवरियां खोले रही भिनसारे लौ

कुछ आशिक नर्तकी के नैन वाणों से घायल होकर गाते हैं—

जिन मारौ नैना, जे खों लगें सोई जानें

नर्तकी भी कम नहीं है, वह अपने हिय की बात व्यक्त करती हुई गाती है—

राजा अब जिन सताव
कड़ गई लड़कपन की बेरा

वह अपने आशिक से कहती है—

नजर भर हेरत काय नइयां,
हम तो राजा वन की हिरनिया
तुम राजा के लरका,
तुपक तीर मारत काय नइयां

रसधार बहती

नर्तकी और उसके आशिकों के बीच उत्तर प्रति उत्तर, हास-परिहास चलता रहता है और रस धार बहती रहती है, आशिक नर्तकी से पूछता है—

दिल डारें अटा पै काय ठाँड़ी

इस पर वह कनखियों से मुसकराकर उत्तर देती है—

मायके के यार सपने में दिखे
सो आई हिलोर फटै छाती

इन राई गीतों में जीवन की श्रृंगारिकता तथा सच्चाई है और आशावादिता भी। इधर उसका आशिक गाता है—

आग लगी दरयाव में धुंआं न परगट होय
कै दिल जानें आपनों,
कै जा पै बीती होय
काहू की लगन कोउ का जानें

नर्तकी भी अपने दिल में प्रियतम की यारी से परेशान है वह गाती है—

पीपर पत्ता चीकने, दिन चिलकें औ रात
यारी बालम सें करी सो खटकत है दिन रात
लगी की कानों विसारें मोरे बालमा

एक राई गीत में असमान शादी की व्यंजना देखिए—

ननदी री नैक दियला दिखाव
राजा हिरा गये बिछौनन में

एक आशिक, नटखट नर्तकी को किसी पेड़ के नीचे आने का आमंत्रण देता है—

कदम तले आ जइयो, कंटीले कजरा बारी

इस पर वह अपने आशिक से वायदा करती हुई कहती है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलन अइयो घरै फांग लला तुम्हें तर कर दैहों
छुअन न दैहों शरीर नजरिया से मन भर दै हों

होली तब,जब प्रिय पास हो

फागुन और होली की उमंग तो तब है, जब प्रिय पास हो । इसी को लक्ष्य कर नर्तकी गाती है—

प्रीतम प्रीति लगाय कें वसन दूर जिन जाव
बसौ हमारी नागरी सो दर्शन दै दै जाब
नजर सें टारे न टरौ मोरे बालमा

वह अपने हृदय की बात अपने आशिकों से यों कहती है—

अरे सुख की निंदिया जब लगै,
सोवें बालम साथ
कैसें करोंटा ले लऊं धर छाती पै हाथ
दीवानें हो रहे मोरे जोबना

जिंदगी का मजा यौवन में है और यौवन का मजा भोगने में है । नर्तकी गाकर कहती है—

नई होरी नये बालमा, नई होरी की हाँक
ऐसी होरी दागियौ तोरे कुलै न आवै आंच
संभल कैं यारी करौ मोरे बालमा

अंत में सभी तबले, सारंगी, नगाड़ा, ढुलकिया बजानेवाले एक साथ गा उठते हैं—

गोरी की अंगुली चांदी कौ छल्ला
रतनारे नैन भंवर कजरा

रातभर नाचती हुई, फाग का रस बरसाती, देह की दारू पिलाती, सवेरा होते ही अंतिम गीत गाकर बिदा लेती है—

मोरी नींदा लगन दे साई रे
भए भुनसारे टूटे तारे, नैनन में शरम आई रे
मोरी नींद लगन दे साई रे

भगवान सभी की होली, ऐसी ही मस्ती और रागरंगभरी करे ।

— प्राचार्य,
शास. शिक्षा महाविद्यालय
उज्जैन (म. प्र.)

इनके भी बयां जुदा-जुदा

खंजर लगे किसी के तड़पते हैं हम अमीर
सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है

—अमीर मीनाई

वतन की फिक्र कर नादां मुसीबत आनेवाली है
तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आस्मानों में

—इकबाल

दूंगा जरा समझ के जवाब उनकी बात का
रुख देखता हूं सिलसिला-ए-वाकियात का

—अकबर इलाहाबादी

लेके खत उनका बहुत जब्त किया था लेकिन
थरथराते हुए हाथों ने भरम खोल दिया

—जिगर मुरादाबादी

अपना यह हाल कि दिल हार चुके लुट भी चुके
और मोहब्बत वही अंदाज पुराने मांगे

—अहमद फराज

यह जमीं आपकी वह खुदा आपका
हम गरीबों से क्या सिलसिला आपका

—उपेंद्रनाथ 'अश्क'

तन्हा किसी को बज्म में समझो न अब जमील
सब अपने अपने साथ हैं लश्कर लिए हुए

—जमील हापुड़ी

जिंदगी काटना इस दौर में आसान नहीं
मरना सीखा है तो जीने का हुनर याद आया

—निगार फारुती

नहीं देखती आग अपना पराया
खुदारा न दामन से अपनी हवा दो

—अतहर मीनाई

वहां जुल्फों में ताजा खम निकलते हैं बिला नागा
यहां हर रोज दीवानों की जंजीरें बदलती हैं

—फरहत लखनवी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के अवसर मिलेंगे । लंबित धन प्राप्ति से कार्यों में वांछित उन्नति होगी । पारिवारिक वातावरण में उत्साहदायी स्थितियों का उदय होगा । सामाजिक जीवन में व्यर्थ शत्रुता होगी । शत्रु पक्ष से सावधानी हितकर होगी । संपत्ति अथवा परोपकारी कार्यों में जोखिमपूर्ण निर्णय न करें ।

वृषभ : पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । संतुलित संभाषण हितकर होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । आकस्मिक आर्थिक व्यय से अधिक अस्थिरता का उदय होगा । उच्चाधिकारी की अनुकंपा से वांछित पद अथवा पदोन्नति का योग होगा । धार्मिक प्रवास से आनंदानुभूति होगी । निकटजन की अस्थिरता से चिंता होगी ।

मिथुन : आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । पारिवारिक कार्यों में उदासीनता रहेगी । पारिवारिक विद्वेष टालना हितकर होगा । निकटजनों अथवा मित्रों के सहयोग से लंबित योजना की पूर्ति होगी । परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । साझे के कार्य लाभदायी होंगे । धार्मिक आयोजनों में नेतृत्व के अवसर मिलेंगे । संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्य में अनपेक्षित सफलता मिलेगी ।

कर्क : विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा । पारिवारिक मतांतर दूर होंगे । सामाजिक अथवा राजनीतिक संपर्कों में वृद्धि होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । स्वास्थ्य संबंधी उतार-चढ़ाव चिंतनीय होंगे । न्यायालयीन कार्यों में सुलह के अवसर होंगे । पुराने मित्रों का समागम होगा ।

सिंह : पारिवारिक सहयोग से मनोवांछित कार्य की पूर्ति होगी । साझेदारी के कार्यों में जोखिम लेना कष्टदायी होगा । विलासितादायी वस्तु पर धन व्यय होगा । नवीन स्थान की यात्रा लाभदायी होगी । आध्यात्मिक कार्यों में धन व्यय होगा । संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी ।

कन्या : प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद साहस तथा पराक्रम से लाभ मिलेगा । पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों में वृद्धि होगी । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का सामना करना होगा । राजकीय अधिकारियों की अनुकंपा के बावजूद कार्यों में विलंब होगा । नवीन योजनाओं से जोखिम लेना अहितकर होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । मासांत में आकस्मिक धन लाभ होगा ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ मार्च से एवं मंगल १६ से मीन में, बुध ३ से कुंभ में, २१ से मीन में, गुरु धनु में, शुक्र २८ से वृषभ में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल नेप्चयून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुला : पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । नवीन योजना के क्रियान्वयन से व्यस्तता बढ़ेगी । संपत्ति के कार्यों में इच्छित सफलता मिलेगी । रोजगार की दिशा में आ रहे प्रयास साकार होंगे । विशिष्ट राजनेता से अनपेक्षित लाभ मिलेगा । परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । प्रवास के अवसर मिलेंगे ।

वृश्चिक : भौतिक सुख तथा संसाधनों में वृद्धि होगी । संपत्ति व विवाह में नवीन अवरोध उपस्थित होंगे । जीवन साथी के सहयोग से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी । धार्मिक कार्यों में व्यस्ता बढ़ेगी ।

धनु : आर्थिक प्रयासों में उल्लेखनीय प्रगति होगी । जीवनसाथी का सुख एवं सहयोग मिलेगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा । पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । उदर अथवा रक्त विकारों से पीड़ा होगी । प्रवास की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष से सावधानी रखें ।

मकर : संपत्ति केकार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । आर्थिक दिशा में चले आ रहे प्रयास पूर्ण होंगे । पारिवारिक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । प्रवास की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । आकस्मिक व्यय होने से आर्थिक अस्थिरता होगी ।

कुंभ : उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से संपत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी । आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से जोखिमपूर्ण कार्यों में लाभ मिलेगा । नवीन पद स्थापना अथवा पदोन्नति से उत्साह वृद्धि होगी । पारिवारिक खिन्नता से भावनात्मक पीड़ा होगी । परोपकारी कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी । जीवन साथी के निर्णय लाभदायी होंगे ।

मीन : परोपकारी तथा जोखिमपूर्ण कार्यों से पीड़ा होगी । भावुकता की अधिकता होगी । मित्रों अथवा निकटजनों के सहयोग से लंबित समस्याओं का समाधान होगा । विलासितादायी वस्तु पर व्यर्थ व्यय होगा । मास के मध्य से आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । शत्रु पक्ष के प्रयास विफल होंगे । विवादास्पद कार्यों में सफलता एवं लाभ मिलेगा । सत्संग अथवा ज्ञानार्जन के अवसर मिलेंगे ।

—ज्योतिष धाम
१२/४, पुराना सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल, मध्यप्रदेश

पर्व और त्यौहार

१. मार्च आमलकी एकादशी, २. शनि प्रदोष, ४. व्रत पूर्णिमा होलिका दहन भाद्र के पश्चात अर्थात रात्रि २.५३ से, ५. फाल्गुनी पूर्णिमा, ६. धुसुड्डी वसंतोत्सव, ८. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, १०. रंगपंचमी, १२. कालाष्टमी, १३. श्री शीतलाष्टमी, १५. पाप मोचनी एकादशी, १९. स्नानदान श्रद्धादि की दर्श अमावस्या, २०. विक्रम संवत् २०५३, मुडी पड़वा चैत्री नवरात्रि आरंभ, २१. झूलेलाल जयंती, २३. वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, २४. श्री पंचमी, २५ स्कंध षष्ठी, २७. अशोकाष्टमी, २८. रामनवमी चैत्र नवरात्रि समाप्त, ३०. कामदा एकादशी, ३१. वामन द्वादशी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी बात को कोई कब तक पेट में पचाकर रख सकता है । बात जब तक पेट में है, तब तक राज है, पर जबान की लगाम को कितना भी खींचकर रखो, कभी न कभी, किसी न किसी के सामने मन की बात, इस कतरनी-सी जबान से फिसल ही पड़ती है । बात जब पेट में पचाये नहीं पचती, तब बेचैनी, घुटन, भूख बंद और नींद न आना-जैसे तकलीफदेह लक्षण जीना दूभर कर देते हैं, पर जैसे ही किसी अपने के सामने मन की बात

एक मुंह से दूसरे कान, दूसरे मुंह से तीसरे कान, तीसरे मुंह से चौथे कान, चौथे मुंह से ..., तमाम मुंह कानों का लंबा सफर तय करते-करते, तीखे नमक-मिर्च का बघार लगते-लगते, बात मसाला और मसाले से गरम मसाला हो जाती है, यानि तिल से ताड़, राई से पहाड़ और चिंगारी से आग । इस विधि को बात का बतंगड़ होना कहते हैं, ये बतंगड़ नीम करेले से भी ज्यादा कड़वे होते हैं, क्योंकि लोगों में बात को पचाने का माद्दा ही नहीं ।

करे कोई और भरे कोई

● दिव्या सक्सेना

उगल देते हैं, वैसे ही मन हलका हो जाता है, लंबी गहरी राहत की सांस आती है, 'ओह वॉट अ रिलीफ' के साथ सारी शारीरिक क्रियाएं आप ही आप सामान्य हो जाती हैं ।

राज की बात किसी अपने विश्वसनीय से कहकर, बात को गोपनीय रखने की शपथ भी दी या ली जाती है । '... यह बात तुम्हें अपना समझकर बता रहे हैं, किसी से कहना नहीं, पता है...', बात जब खुद पेट में नहीं पचा सकते तो अगले से कैसी उम्मीद ।

कई बार तो इस उससे कहने में बात के असल स्वरूप में भयंकर परिवर्तन तक हो जाते हैं ।

भोजन पचाने के सिस्टम की तरह पेट में एक बात पचाने का सिस्टम भी होता तो कितना अच्छा होता न ।

था, एक ऐसा सिस्टम भी था, पर इस सिस्टम का जिक्र हम बाद में करेंगे, पहले आपके सामान्य ज्ञान के लिए बता दें कि किसी बात का पेट में न पचना एक तरह का मीनिया है । ये मीनिया कुछ लोगों में कुछ डिगरी ज्यादा तो कुछ लोगों में कुछ डिगरी कम होता है, पर हर किसी में ये मीनिया होता अवश्य है, चाहे स्त्री हो या पुरुष, किंतु ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस मामले में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की स्थिति ज्यादा चिंताजनक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनिया महिलाओं को कुछ ज्यादा ही सताता है, विभिन्न विपदाओं, मसलों और विवादों में उलझाता और फंसाता है, क्योंकि महिलाएं शापग्रस्त हैं ।

महिलाएं और शापग्रस्त

जी हां, इस भूले-बिसरे शाप को पुनः याद दिलाने का श्रेय हमें जाता है । हुआ यूं कि द्वापर युग तक तो..., हां-हां वही भगवान श्रीकृष्णवाला युग, महाभारतवाला युग..., हां तो द्वापर युग तक तो पेट में बात को पचाने के सिस्टम का बड़ी ही कामयाबी के साथ इस्तेमाल होता था । मिसाल के तौर पर महारानी कुंती..., हां-हां वही पांडु पत्नी, पांडवों की माता कुंती..., हां तो महारानी कुंती ने तो इस सिस्टम का बखूबी प्रयोग कर रेकॉर्ड ही कायम कर दिया । अब क्या बतायें, वह हुआ यूं कि विवाह से पूर्व... जन्मे पुत्र कर्ण को मरते दम तक उन्होंने... किसी को कानों कान... भनक तक नहीं पड़ने दी कि वह कर्ण... कुंती पुत्र है ।

तो हुआ यूं कि कुरुक्षेत्र में तो पांडवों और कौरवों के बीच महाभारत मचा हुआ था, बस फिर क्या था महासमर में पुत्र कर्ण के मरणोपरांत माता कुंती अपना आपा खो बैठी और शोकग्रस्त हो गयी । जब धर्मराज युधिष्ठिर को... हां भई, वही गदाधारी भीम, तीरंदाज अर्जुन और छोटे-छोटे भैया नकुल सहदेव के जेष्ठ ब्रदर..., हां तो युधिष्ठिर को जब अपनी माता के इस कर्म का पता चला तो वे सख्ते में आ गये, लिहाजवश विवश वे अपनी माताश्री से तो कुछ कह न सके पर क्रोधवश तत्काल ही संपूर्ण नारी जाति को उच्च नाद में घोषणा करते हुए शाप दे दिया कि 'आज के बाद नारी कोई भी राज की बात अपने मन में नहीं छुपा पाएगी ।' तत्क्षण ही शापग्रस्त हो नारी जाति का बंटाधार हो गया, अच्छा खासा बात पचाने का सिस्टम भी सत्यानास हो गया ।

राज की बात किसी अपने विश्वसनीय से कहकर, बात को गोपनीय रखने की शपथ भी दी या ली जाती है । '... यह बात तुम्हें अपना समझकर बता रहे हैं, किसी से कहना नहीं, पता है...', बात जब खुद पेट में नहीं पचा सकते तो अगले से कैसी उम्मीद ।

बस तभी से ही बात पेट में पचती नहीं, जुबां पर टिकती नहीं, कमी कोई बखेड़ा, झमेला, तमाशा तो कभी तू-तू मैं-मैं की नौबत..., महिलाओं की स्थिति हो गयी चिंताजनक । धर्मराज युधिष्ठिर ये तुमने किस जनम का बैर निकाला ।

ये भी कोई बात हुई भला, कुंती का किया धरा, धर्मराज युधिष्ठिर ने बेगुनाह नारी जाति के सर दे मढ़ा । ये तो वही बात हुई कि 'करे कोई और भरे कोई ।' कुंती ने जो किया सो किया, पर बेवजह नारी को हैरानी-परेशानी में डालने का ठेका धर्मराज को किसने दिया । इतना बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर्म धर्मराज ने क्या सोचकर किया । जरूरी तो नहीं कि जो गलती कुंती ने की, वही गलती हर नारी..., तौबा, तौबा ।

महारानी कुंती तुम्हारे किये-धरे की बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है । मियां युधिष्ठिर यदि आज तुम होते तो तुमसे युद्धस्तर पर निबटते । महिलाओं के कोप से तुम भागे-भागे फिरते, बच गये समझो ।

बात तो पुरुषों के पेट में भी..., अरे बताते हैं, बताते हैं, धीर तो धरो, यु पुरुष भी तो इसी दुनिया के जीव हैं, भला नारी के प्रभाव से ये अछूते कैसे रह सकते हैं । शापग्रस्त नारी अर्थात शापग्रस्त माताश्री का कुछ न कुछ असर तो अपने जने पुत्रों पर..., वो कभी-कभी कहते हैं न कि बिलकुल अपनी मां पर गया है... ।

युग-दर-युग तो इस शाप से निजात के कोई आसार नहीं और ना ही ऐसा कोई सिस्टम इजाद होने की उम्मीद, जो राज की बात को स्थायी रूप से पेट में पचाकर रख सके । बड़ी विकट समस्या है भइया, 'करे कोई और भरे कोई ।'

— ए-३४६, सेक्टर-१९,
नोएडा (उ. प्र.)

कवि और कविता

राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी के बचपन की घटना है । तब उन्हें पंडित बलवंत राव संस्कृत पढ़ाया करते थे । गांव वाले बलवंत रावजी को बालभट्ट कहा करते थे । एक बार बालभट्टजी ने निश्चित किया कि सभी छात्र उनके साथ जंगल में चलकर भोजन करेंगे । सभी तैयारी हो गयी । सब छात्र सामान लेकत गुरुजी के साथ जंगल में चल दिये । वहां पहुंचकर पता चला कि वह नमक लाना तो भूल ही गये । बालभट्टजी ने अपने बड़े लड़के को नमक लाने भेजा और स्वयं घड़े में पानी लेने चल दिये । जाते-जाते माखनलालजी को निर्देश देते गये कि बाटियां सेकने के लिए जगरा (उपलों की आंच का ढेर) बनाये । जगरा जलाते ही माखनलालजी के अंदर का कवि जाग उठा और वह जोर-जोर से गाने लगे :

'बालभट्ट के तीन छोकड़े,
दो बाजार में जा सटके,
नमक बिना अटके, बालभट्ट के...'

अचानक एक जोरदार धक्का उनकी पीठ पर पड़ा तो वह सन्न रह गये । माखनलालजी ने मुड़कर देखना चाहा कि उन्हें किसने ठोकर मारी है । तभी एक पूरा घड़ा ठंडे पानी का उनके ऊपर गिरा । वह पूरी तरह भीग गये । इस सब से घबराकर वह भागनेवाले ही थे कि किसी ने उनका हाथ पकड़ लिया । अब माखनलाल चतुर्वेदी को पता चल चुका था कि वे बालभट्टजी ही थे जो उस समय उनकी कविता के एकमात्र श्रोता थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसंत का स्वागत

(१)

कूक उठी कोयल प्राणों में
अब वसंत आनेवाला है
पल्लविनी लिपटी तरु-तन से
पुष्प-अप्सरा निकली वन से
इच्छा के रस-कलश-कुंज में
अलि-दल अब गाने वाला है
मुकुल गंध से मत्त समीरण
रणन-रणन राही का मृग-मन
लता-लता में छूम-छनन-छन
छवि का रवि छानेवाला है
सुरभि-भार से झुकीं डालियां
कली-कली दे रहीं तालियां
ऐसा है उल्लास कि उर का
आंचल भर जानेवाला है

(२)

गीत के दिन आ गये
नयन में मन का ठहाका
नाचती-सी रूप-राका
अब न पतझर में खड़े तुम
फूल पथ पर छा गये
सम्हलकर सुन तान पिक की
प्राण में प्रिय गूंज किसकी
प्रीत के झोंके कुसुम की
पंखुड़ी बिखरा गये
आज लाल पलाश-सा उर
राग-रंग तरंगमय सुर
कामना के मंत्र चारों—
ओर अब छितरा गये

—पोद्दार रामावतार 'अरुण'

कवि निवास, पेठियागाछी
समस्तीपुर—८४८ १०१

फागुनी रंग

तीन प्रेम कविताएं

तुम्हारी चुप्पी

तुम्हारी चुप्पी
सुर्ख फूल-सी
लगी
खूब हरी टहनी पर
हंसते हुए बोलना
जैसे
तितलियों के झुंड का
मेरे भीतर पर खोलना
मैं पाता इतना
तुम्हारा अपने पास
होना

हमारी खुशी

तुम बेहद उदास
हो जाती हो
मेरी उदासी को लेकर,
मैं होता उदास
तुम्हारी इस उदासी पर ।
और यों
हम दोनों ही
खुश हैं ।

प्रतीक्षा

नींद चली जाती
खिड़की के रास्ते
कहीं ।
चली जातीं आंखे
ढूंढ़ने नींद को ।
और हम
प्रतीक्षा करते
दोनों की ।

—डॉ. हरिमोहन

—पो. बॉक्स-२० श्रीनगर (गढ़वाल) उ. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये कौन देता है श्रृंगार को मधुर वाणी

लचकती शाखों पे छलछल ये शरबती बूंदें
चमन में फूल हवा ने बहुत खिलाये हैं,
ये कौन देता है शृंगार को मधुर वाणी
ये किसने मौन मधुर पल यहां बुलाये हैं ।

न भोर पत्र अंधेरों के नाम लिखती है
न चिड़िया पंखकटी आज कोई दिखती है
ये झूमती-सी टहनियां, ये रंग यहां
किसी के भीगे-से अहसास थरथराये हैं ।

जो खाली फ्रेम था कल आज मुसकराता है
लिपट के पांव में पथ फिर वहीं बुलाता है
खुले झरोखों से झरता नरम गुलाबीपन
ये किसके स्वप्न सवेरों को छू के आये हैं

बहार में ये बसंती बयार का आंचल
लपेटा जाए न सिमटे है प्यार का ये पल,
रगें चटकतीं, अधर कांपते, हुए गुमसुम
ये कौन-सी है डगर इतना डगमगाये हैं

—शकुन्तला श्रीवास्तव,
४१७ /१, सोही स्ट्रीट
कॉलेज रोड, लुधियाना

अंग सुराही रच रही

अंग सुराही रच रही, फागुन की यह प्यास
सांस कंटीला केवड़ा, अधरन रचे पलाश

अंग-अंग में भंग रसे, अंखियन रसे गुलाल
मन रंग में रसिया रसे, फागुन रंग कमाल

सावन-जैसी झर पड़ी, फागुन की यह रात
छूते ही झर-झर झर, हरसिंगार-से गात

फागुन लेकर आ गया, चर्चों की सौगात
हवा कान में कह गयी, अलि-फूलन की बात

फागुन-फागुन मन हुआ

गांव-गांव बजने लगे, मादल वंशी ढोल
फागुन के रंग में रंगे, फिर घुंघरू के बोल

रंगों के खाते खुले, आंगन देहरी द्वार
आंख गणित करने लगी, अब दो के दो चार

दिप-दिप-दिप करने लगा, फिर सतरंगा रूप
लहरों पर कुछ लिख रही, रेशम-जैसी धूप

कस्तूरी सांसें हुईं हंसने लगे गुलाब
फागुन पढ़ने लग गया रंगों भरी किताब

मिलते ही सब मिट गये, शिकवे, गिले, सवाल
सपने हंसने लग गये, प्रेम-विटप की डाल

बौरे आज रसाल फिर, फूल गये कचनार
चौखट पर हैं गंध के, टंग गये वंदनवार

कठिन व्याकरण हो गये, फागुन में ये नैन
हंसी-हंसी में छीनते, मन के सारे चैन

दृग पंछी बनकर उड़े, मन विद्यापति संग
सुधियों की कामायनी रंगी नेह के रंग

दर्पण पर गिरने लगी, फिर रंगों की धार
फागुन ने जैसे रचा, सतरंगा संसार

—शिवप्रसाद 'कम
कल्पना-मंदिर, चुनार (मिर्जापुर) उ

अब चाहे दुनिया हंसे, चाहे बिहंसे कंत
नैहर मैं ना जाऊंगी, अब आ लग्यो बसंत

मौसम ने बरजोरी से, अंग-अंग मले गुलाल
जंगल की झड़बेरियां, शर्म से हो गयीं लाल

भोले मन का आसरा, पानी के बंधे पांव
दूर तलक लो बह चली, यह कागद की नाव

—नीलिमा सि
जगदम्बा
नगमतिया रोड गया—८२३०

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फागुन की रैना

आंगन रस बरसाती
फागुन की रैना

नरम-नरम हाथों पर लिखे हुए
प्रेम-पत्र
बेर-बेर बांचतीं
रतनारी आंखें
पोर-पोर सिहरन भर देते
गंधीले क्षण
पाटल-सी खिल जातीं
अधरों की पांखें

कितना कुछ कह जाते
अनबोले बैना

सांसों को महकाते
रेशमी हवाओं के जूड़ों में
बंधे हुए फूल
मोम बन पिघल जाते
मन के गलियारों में उगे हुए
दर्द के बबूल

तन को बौरा जाते
मौसम के सैना

—ज्योति प्रकाश सक्सेना
गोवर्धन टाकीज के पास,
छतरपुर (म. प्र.)

फागुनी गीत

फागुन में पाहुन....

राग-रंग के अवसर आये हैं
फागुन में पाहुन घर आये हैं ।

केसर-कुंकुम भरी कटोरी है
धूप सुबह की गोरी-गोरी है
कमरे खुलकर छत पर आये हैं

आंखें हैं, ज्यों ताल मखाने हैं
गीले-गीले गीत सुखाने हैं
दिन दुःख से 'कट्टी' कर आये हैं

हर खिड़की से अपनी मिल्ली है
चुप्पी भी हो गयी चिबिल्ली है
चंचल होकर 'ईश्वर' आये हैं

राधा के मन कोई बजता है
पहर-पहर सन्नाटा सजता है
चलकर ढाई आखर आये हैं

दोपहरी सचमुच सतरंगी है
बालों इंद्रधनुष की कंघी है
हम, देहरी दरपन धर आये हैं

—यश मालवीय
ए-१११ मेंहदौरी कॉलोनी
इलाहाबाद—२११००४ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

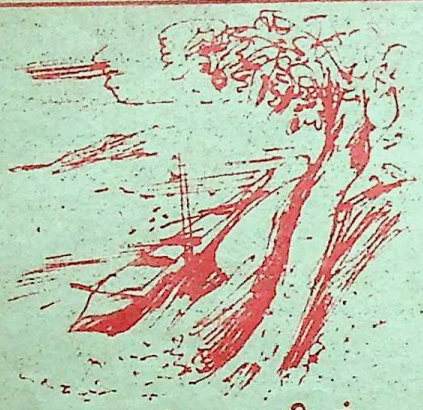

मैं बही जा रही हूं

बढ़ी आ रही हूं
उड़ी आ रही हूं
पसारो भुजाएं
धरो वक्ष पर
मैं, बही जा रही हूं

पुराना गिराती
अजूबा उगाती
तरल झरझराती
परों में समाती

मुझे रोक लो
बांध लो मुट्ठियां
संभालो-संभालो
भरी धूप से
मैं, झरी जा रही हूं

मुझे चोंच भर
गा रही है चिरैया
इसी डोर पर खिंच
चली ताल नैया

नदी के किनारे
टिकी एड़ियों
गिरी -सी खड़ी
रेत चरखी उड़ा
मैं धंसी जा रही हूं
दिवारें हटाती
किताबें नचाती
पलक झपझपाती
नसें खटखटाती

मुझे घूंटभर
लो लहू में मिला
चुकूंगी नहीं
अंधेरा कहां ?
मैं छुटी फुलझड़ी हूं

मैं बादल चढ़ी थी
लिये धान बाली
उतरते में ऐसी
ठोकर लगा ली—
छिटक घर भरे
चावलों के पिटारे
हंसी-ही-हंसी
कौन किसके सहारे

तुम्हीं में बसी
जादूगरनी बड़ी
खुला खेल पांसा
चलो चाल, मैं
गोटियां ला रही हूं

बढ़ी आ रही हूं
उड़ी आ रही हूं
पसारो भुजाएं
धरो वक्ष पर
मैं बही जा रही हूं

—इंदु जै
प्रवक्ता निवा
इंद्रप्रस्थ कॉलेज
दिल्ली—११००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसिए : हंसाइए : हंसीमय जीवन बिताइए

चश्मा

हमारे एक मित्र
श्रीमान भोले
हमसे बोले

भई दीपकजी
आप चश्मा क्यों लगाते हैं
क्या चश्मे के बिना
आपको, श्रोता नजर नहीं आते हैं
क्या है ये राज बताइये
मुझे अज्ञानी को समझाइये

तब हमने
मित्र की जिज्ञासा का किया समाधान
और कहा—श्रीमान
दरअसल हमारे दादा जब भी

गांव से शहर
हमारे घर में आते हैं
तो हमें ये बताते हैं
बार-बार समझाते हैं

कि बेटा,
हमेशा परायी चीज को
चश्मा लगाकर ही देखना
इससे...
अपनी नजरें खराब होने का खतरा
कम रहता है
और आंखों में बुढ़ापे तक
परायी चीजें देखने का
दम रहता है

—दीपक गुप्त

आर. जैड.—५२९/२१
तुगलकाबाद एक्सटेंशन, नयी दिल्ली-११००१९

फैशन शो का जज

भाई अवस्थीजी यही, थी जीवन-अभिलाष
फैशन शो का किसी दिन, बन पाऊं जज काश
बन पाऊं जज काश, पाऊं सान्निध्य रूप का
डटकर अनुभव लूं, फैशन के हर स्वरूप का
कहें बटुक कविराय, करूंगा सब सेवकाई
जल्दी बनवा दो जज, फैशन शो का भाई

फैशन शो के चयन का, होगा क्या आधार
अजी पुराने नियम हैं, फैशन शो के चार
फैशन शो के चार, प्रथम रंग-रूप सलोना
दूजा हो कटिक्षीण, नैन में जादू-टोना
कहें बटुक कविराय, चाल ज्यों मारे चौके
वस्त्र न्यूनतम , चार नियम यह फैशन शो के

ठोक बजाकर करें हर, प्रत्याशी की जांच
मगर स्वयं पर भी नहीं आने देंगे आंच
आने देंगे आंच, आपको साथ रखेंगे
जिसे कहेंगे आप, उसी को पास करेंगे
कहें बटुक कविराय, लायेंगे जिसे जिताकर
जिसको शंका हो , देखे वह ठोक बजाकर

—बटुक चतुर्वेदी

१४/८, परी बाजार. शाहजहांनाबाद.
भोपाल पिन—४६२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजल

बैठे हैं वस्ले यार में 'इडली' लिये हुए
जालिम ने मेरे इश्क का 'डोसा' बना दिया

खुद तो गाजर बनके हलवे में घुस गयी
मुझको चवन्नी छाप समोसा बना दिया

वो फिर किसी धनवान की साड़ी-सी सज गयी
मुझको किसी गरीब का अंगोछा बना दिया

संतरी से मंत्री तक है आंकड़ों का खेल
घाटे को जब भी चाहा मुनाफा बना दिया

मेरे वतन की जनता-जनार्दन की जय रहे
बीहड़ के डाकुओं को भी नेता बना दिया

दो-दो सवाल ले के पिछले पांच साल के
प्रोफेसर ने इस वर्ष का परचा बना दिया

गुलकंद आंकड़ों का रुपयों में ढालकर
फिर बजट सरदार ने चोखा बना दिया

यूं पार्टी पर आलाकमान मेहरबां हुए
सोफेनुमा कुरसी को भी खोखा बना दिया

घूरे के दिन भी क्या फिरे जो चमचे के दिन फिरे
चमचे ने नेताजी को ही चमचा बना दिया

सुरेश नीरव
आई—२०४, गोविंदपुरम
हापुड़ रोड, गाजियाबाद

वाह खूब रही ये होली

पीकर भंग, खेल खूब रंग, ज्यों ही, मैं घर आया
रंगीन पोस्टर-सी खड़ी पत्नी को मैं पहचान न पाया
था कार्टून-सा दीख रहा मैं, वो भी पहचान न पायी
क्या बात है, कौन हो तुम, बोली—किससे मिलना भाई
सुन यह शब्द, रहँ गया स्तब्ध, सर मेरा चकराया
घर मेरा, यह कौन, मैं कुछ समझ नहीं पाया
होगी शायद पत्नी कहीं भीतर, जोर से आवाज लगायी
मेरे घर में मुझे रोक रही, कौन है, ये कल्लो-माई
यह सुन शरमायी, बांहों में आयी, फिर बड़े प्यार से बोली
अजी, इक दूजे को पहचान न पाये, वाह खूब रही ये होली ।

—नरेन्द्र मोहन .कपूर 'आशुकवि'
डी-४९, सैक्टर-१
विजय नगर, गाजियाबाद

प्रण-भंग

नारी
जब स्वयं बहू होती है
तो सास की तांस से
पीड़ित हो
मन-ही-मन प्रण लेती है—
जब वह सास होगी
तो बहू को बेटी मान
सीने से लगाएगी
और सास बनते ही
वह प्रण भूल जाती है
बहू के लिए
स्टोव और किरासिन
रिजर्व रखवाती है

—बलवीर त्यागी
'प्रकाशपुंज'
४६०-सी, पूर्वी बाबरपुर (छज्जूपुर)
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्याक्षर

(१)

विश्व अब बाजार है
सब-कुछ यहां पर पण्य है
घोर स्पर्धा से पिटा
बेटा हमारा वन्य है
सुनो जी ! तुमने सजा दी नित्य
विज्ञापनी-गिरा
नि-पट मॉडल से तुम्हारी
प्राप्ति किंतु नगण्य है

(२)

नीति सहअस्तित्व से
संयुक्त पूंजी पर झुकी
हॉलीवुड की मांग, भुजिए
बॉलीवुड की केंटकी
लिख रहा हूं नज़्म मैं
निर्यात करने के लिए
मजमूं अंकल सेम है
तर्जे बयां है सूजुकी

(३)

डालर लाहुजी डालर लाहु
रटै मन मोहन सांझ सकारे
वित्त कालिंदी को कालियानाथ
विकास को सैल उचारूंगो प्यारे
ग्वाल कहैं अंगरेज धस्यौ
तो पलायो छिनाय लंगोट हमारे
हे हरि, चक्र चलाय न जोरिओ
बॉस की धौंस बतावन हारे

(४)

दुखरे हब्बा है आयी जब से ट्रेफिक काम पर
सीटियां हम पै बजाती है वो राहे आम पर
रक्स के अंदाज में मुड़मुड़ के दिखलाती है हाथ
या खुदा, खातूनशाही आ गयी क्या लाम पर

(५)

ज्योतिष और रमल-पंडित की
फिर चांदी बन आयी
कार्ड उठाते तोते ने भी
काफी भीड़ जमायी

झलर-मलर है झोपड़ पट्टी
मल्ल कर रहे मालिश
जर्द रिसाले हैं, चुनाव का
है यह मौसम भाई

—डॉ. गोपाल शर्मा
सी८सी मध्यम आय वर्ग फ्लैट
मायापुरी, नयी दिल्ली—११००६४

केवल संपादक के लिए

मेरी रचनाओं को वापस कर देते आप
ऐसा कर हतोत्साहित कर देते आप
यह मुझ पर सरासर जुल्म है आपका
'खेद सहित' का पर्चा देना काम है आपका
आपको गरूर है अपने संपादकत्व का
मुझे स्वाभिमान है अपने कवित्व का
भेजूंगा पास आपके मैं इतनी कविताएं
आप भी क्या सोचेंगे, देंगे मुझे बद्दुआएं
आप घबरा जाएंगे मगर मैं नहीं घबराऊंगा
हर बार आपको मैं अपनी कविताओं से टकराऊंगा
कर दूंगा मैं आपको इतना मजबूर
मेरी कविताओं को आप छापेंगे जरूर
यह अभिमान नहीं स्वाभिमान है
'खेद सहित' से मेरे कवित्व का हुआ अपमान है

(पहली और अंतिम कविता होली में— सं.)

—विनय कांत उपाध्याय
बसुदेवा, चितबड़ा गांव बलिया (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार्ल्स-डायना प्रकरण

प्रिंस चार्ल्स और डायना दोनों ही बेशर्म
ऐसा घटिया आचरण नहीं कहीं का धर्म
नहीं कहीं का धर्म, गृहस्थी चले न ऐसे
करके इनकी नकल बनेंगे बच्चे कैसे
कह 'जोशी कविराय' शील का पथ अपनाओ
अपनी-अपनी भूल मानकर फिर मिल जाओ

चोरी की इमली सदा लगती ज्यादा स्वाद
लेकिन ऐसी इमलियां कर देतीं बरबाद
कर देतीं बरबाद, नाक भी कट जाती है
लेकिन रहते समय समझ कम ही आती है
कह 'जोशी कविराय' छड़े, छुट्टे हो जाओ
यहां, वहां मुंह मारो, जो चाहे सो खाओ

चोरी, जारी और जुए का चस्का लग जाय
नहीं कभी भी छूटता, दुनिया हंसी उड़ाय
दुनिया हंसी उड़ाय, इश्क में समझ न आए
फूलों से लगते, गर जूते भी पड़ जाएं
कह 'जोशी कविराय' राजमाता सच बोलें
रहना अगर न साथ तो अलग जल्दी होलें

—रमेश जोशी

केंद्रीय विद्यालय नं. १
दिल्ली कैंट—११००१०

नार पहेली जटिल है

नार पहेली जटिल है, अजब इनामी खेल
अगर सही हल ढूंढ़ लो, मिले उमरभर जेल

शुभविवाह का ठीक ही 'पाणिग्रहण' है नाम
पत्नी पहुंचा पकड़कर हथियाती धन-धाम

हर औरत गृह-गणित की होती है उस्ताद
हीरो से जीरो बने मर्द ब्याह के बाद

बेटा था, अब पति बना, पाया रूप नवीन
माता का जो शेर था, बना मेमना दीन

पत्नी पति को रोज ही दिखलाती है फिल्म
झिझकूमल कुछ सीख ले खुले प्यार का इल्म

बीवी बोली—"सब जगह प्रजाराज है आज
क्यों इस घर में है अभी एक मर्द का राज

लो, बीवी का बन गया मियां-विरोधी फ्रंट
दलबदलू बच्चे सभी, सास गवर्नर चंट

परकीया से प्यार है, पत्नी से भी प्यार
मिलें न दोनों इक जगह, विनती यह, कर्तार

—पैरोडीदास बनाम चिरंजी

डी—२—ई, डी. डी. ए. फ्लै
मुनीरका, नयी दिल्ली—११००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली में...

मजा आ रहा होली में
देश जा रहा होली में

गीत लिखा है, चोली में
कवि जा रहा है, होली में

पार्षद सारे गोली में
नगर जा रहा, होली में

बजट आ गया, झोली में
खेल भा गया, होली में

भूख से डर गया खोली में
'होरी' मर गया, होली में

चढ़ चुकी, आदमीयत बोली में
आदमी जा रहा होली में

—प्रकाश 'प्रलय'
पो. बॉ. २७ दूरभाष केंद्र,
कटनी (म. प्र.)—४८३५०१

आपसे सीखे कोई

प्रीत को पावन बनाना आपसे सीखे कोई
फूल-सी खुशबू लुटाना आपसे सीखे कोई

रंग सपनों के उतर आये दरों-दीवार पर
इस अदा से घर सजाना आपसे सीखे कोई

गीत गा लेना खुशी के हर किसी को याद है
दर्द पलकों पर उठाना आपसे सीखे कोई

प्यार के इजहार के यूं तो कई संकेत हैं
पर मधुर ये मुस्कुराना आपसे सीखे कोई

रूप की रंगीनियों में डूबकर दिल ने कहा
नेह का रिश्ता निभाना आपसे सीखे कोई

प्रणय भावों के सहज आवेग में बहते हुए
झिझकना पल-पल लजाना आपसे सीखे कोई

रात के तन्हा सफर में चांद भी ये कह गया
नींद आंखों की चुराना आपसे सीखे कोई

—हरीश दुबे
स्टेट बैंक के पास महेश्वर

गांव और शहर

कब कैसे यह सब हो गया
गांव का सीधा सादा लड़का
शहर की भीड़ में आकर खो गया
भली थी तो वह गांव की चौपाल
सुबह चिड़ियों का कलरव
पनघट पर पायल की रुन-झुन
खनकती चूड़ी की खनखन
वह दबी-सी हंसी का गुंजन
वह बाबा की सुन बेटा पुकार
सुबह की सैर शाम की गोष्ठी
वह चुटकुलों और लस्सी का लंबा-सा दौर
यहां शहर में धुएं का गुब्बार
सभी चेहरों पर फीकी मुसकान
देर रात का मदिरा का दौर
घर-घर में टी. वी. का शोर
जब देखो तब जेब खाली
शोर मचाती खर्चे का घरवाली
दुःखी मन कुलांत चेहरा
इस झूठे शानो-शौकत से तंग हो
कब कैसे यह सब हो गया
गांव का सीधा-सादा लड़का

—कमल जैन
द्वारा श्री राजेन्द्र कुमार जैन
सलाहकार (सिग्नल)
११९, रेल भवन नयी दिल्ली-११० ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली है हंसो

होली थी, रंग थे
यार-दोस्त संग थे
निर्मम पति ने
अपनी उदास पत्नी से
ममता जताते हुए कहा—
''हंसो तुम भी हंसो,
आज तो सब हंस रहे हैं
पूरा महल्ला, गली हंस रही है
वो देखो तुम्हारी सहेली मनचली हंस रही है
होली है, तुम भी हंसो''

पत्नी ने कुछ इस तरह निहारा
मानो पूछ रही हो—
'क्या आज ही हंसूं
केवल आज ही'

पति भी कुछ उत्साहित ज्यादा था
पत्नी को हंसाने पर आमादा था
नयी कोशिश करता हुआ बोला
''प्यारी, मेरे भारत महान की सन्नारी
एक मनुष्य ही तो है—
जो हंसता है, हंस सकता है
उसे ही तो वरदान मिला है हंसने का
वरना इस सृष्टि में
मेरी दृष्टि में,
कभी कोई पशु हंसते हुए नहीं आया

आज मनुष्य ही हैं
जो हंसते हैं
पशु तो हमेशा हंसने को तरसते हैं
हंसो, प्रिये हंसो
होली है आज तो हंसो''

पत्नी सुनती रही
धीरे-धीरे तर्कजाल बुनती रही

''हंसने में मुझे कोई दिक्कत नहीं
परंतु मैं आपसे सहमत नहीं
हंसते होंगे मनुष्य
यहां तक तो ठीक
फिर भी कैसे मान लूं
कि पशु हंसते नहीं
मेरी मान्यता है पशु भी हंसते हैं
क्योंकि जब तुम हंसते हो
तो भला कौन कह सकता है
पशु नहीं हंसते

क्या होली के दिन भी बुरा मान गये
हंसो-हंसो
क्योंकि पशु भी हंसते हैं
इसलिए ज्यादातर
शरीफ और नेक इनसान
इस दुनिया में अक्सर
हंसने को तरसते हैं।''

—शेरजंग गर्ग
जी २६१—ए, सेक्टर—२२
नौएडा-२०१ ३०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली से संबंधित ऐसी अनेक धारणाएं हैं, जो आज भी हमारे समाज में प्रचलित हैं। कुछ धारणाएं :

होली की झल

होली जलते समय अग्नि से निकलनेवाली लपटों को होली की झल कहा जाता है। ऐसा देखने में आया है कि जिस वर्ष विवाह होता है उस वर्ष वधु होलिकादहन पर अपने मायके में होती है। ससुराल में वह जलती होली न देख ले, इसलिए उसे मायके भेजा जाता है। इसके पीछे लोक विश्वास है कि विवाह के वर्ष वधू का ससुराल की जलती होली देखना भावी जीवन के लिए अनिष्टकारक रहता है।

होलिका मृत संवत्सर की प्रतीक है तथा प्रह्लाद नये संवत्सर का। नववधू का मृतक को जलते हुए देखना अशुभ माना गया है।

होली की बाल

होलिका-दहन के समय उसमें जलायी जानेवाली जौ की बाल को होली की बाल कहते हैं। जब होली जल रही होती है, तो लोग उसमें जौ की बाल को भूनते हैं। बाल भूनकर घर की ओर जाते समय जो व्यक्ति सामने आता है, उसको जौ के दाने देकर अभिवादन किया जाता है। घर जाकर जौ के दानों को घर में बिखेरा जाता है। लोक विश्वास है कि इससे घर में धन-धान्य में वृद्धि होती है। जौ की बाल कृषि का प्रतीक है। इस तरह समस्त कृषि उपज को होली की अग्नि में पवित्र कर लिया जाता है।

होली की राख

जब होली जल चुकी होती है, तो लोग उसकी गरम-गरम राख को अपने घर ले जाते हैं। लोक-विश्वास है कि इससे घर में समृद्धि आती है। धार्मिक दृष्टि से यज्ञाग्नि का विशेष महत्व है। होली भी एक प्रकार का यज्ञ है, अतः इसकी राख को घर में रखना शुभ माना गया है।

होली की लपटें

● अरुण कुमार जैमिनि

होली की लपटें

जिस समय होली जलायी जाती है, तो गांव के लोग इस दृश्य को बहुत गहराई से देखते हैं कि उससे निकलनेवाली लपटों की कौन-सी दिशा है।

लोक-विश्वास है कि यदि लपटें सीधी आकाश की ओर जा रही हैं, तो फसल अच्छी होगी। अगर लपटें टेढ़ी हैं, तो फसल के लिए अशुभ है।

—१७८-के, आराम बाग,
पंचकुइयां रोड,
नयी दिल्ली-११००५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ श्री सासू-महत्तम

—कथा वाचक ● दिग्विजय नारायण सक्सेना

—हरि ऊं !

'कथा प्रारंभ होत है, सुनो सकल जिजमान
'सासु-चरण' की कृपा को; को करि सकत बखान
कलियुग में पत्नी बनी, भव सागर की नाव
वा नौका के हर्ष हित वानक नयो बनाव
सब देवन की देवता, 'सासु' जगत की मात
इन को जो पूजन करे; सिद्धि होय नित-प्रातः
ऊं श्री ससुरादि देवाय नमः

हे पत्नी व्रत; पत्नी सुख प्राप्तेक्षु, आतुर ससुर भक्तो !!

सुनो—

आज मैं आपके समक्ष 'श्री सासु मातस्य-पूजन' का अप्राप्य विधान सटीक बयान करता हूं।

यों तो संपूर्ण वर्ष में, यदि आप चाहें, तो केवल 'ससुर-सहस्रनाम' के शत सहस्र बार जाप से ही 'पत्नी-लोक' को प्राप्त हो सकते हैं, किंतु 'मधुराका' - जैसे पावन-पर्व पर यदि आप विधिपूर्वक सर्वप्रथम 'सासु-मातेश्वरी' का पूजन कर लेंगे, तो निश्चय ही आप को संपूर्ण सिद्धियां प्राप्त हो जावेंगी। आपके गृह-विभागीय (पत्नी-प्रदत्त) संपूर्ण दुःखों का नाश होकर आपको पत्नी-सुख प्राप्त हो जावेगा। ऐसा सद्ग्रंथों का मत है। अस्तु 'हे ! बगुला-भक्तो' ध्यान देकर सुनिए—

अथ पूजनम् विधि वर्णते—

सर्वप्रथम पत्नी सुख प्राप्तकर्ता आतुर 'पत्नी भक्त' हाथ-पैर धोय (स्नान करना वर्जित है।) पाजामा पहनकर पूजन सामग्री एक लोहे के तसले में एकत्रित करके, किसी 'अपवित्र' स्थान में (तथा एकांत में, जहां भक्त के माता-पिता आदि न पहुंच सकें अन्यथा पूजन में विघ्न पड़कर आपकी चांद पिलपिली होने का डर है।) राख से चौका पूरें और बांस की फांस छीलकर भूमि में गाढ़ें। ऊपर से आकाशी नील-चंदोबा तानकर उसे 'बबूल के पत्तों की बंदनवार' से सज्जित करें। तत्पश्चात एक फटिकशिला पर कम-से-कम 'ढाई-सवा पांच' रुपये मीटर वाले लाल रंग के रेशमी, थान का आसन बिछाकर यथाविधि पूजन करके मूर्ति स्थापित करें। यदि साक्षात मूर्तियां प्राप्त हो सकें, तो भक्त के महा भाग्य !

मंडप के चारों ओर कलश, जिनपर प्रज्वलित मोमबत्तियां रखी हों; स्थापित करें। अशुद्ध जल एक लोटे में रख लें, जो आवाहनादि के काम आवेगा। हल्दी-चूना चार रुपये वाली मोटी मोमबत्ती (आरती के लिए) नारियल की रस्सी (जनेऊ के लिए) चावल-गुड़- पुंगीफल तथा एक डिब्बा डालडा (मक्खनबाजी के लिए) पूजा के पात्र में रख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें। 'गूलर के फूलों' की माला देवताओं पर चढ़ाने के लिए बनवाएं। गोभी या करमकल्ले के फूलों की माला भी ठीक रहेगी।

तवा-कलछुली, बटलोई आदि वाद्य यंत्रों की ध्वनि करते हुए समस्त देवताओं को रसगुल्लों के रस में (जहां तक हो सके) सदेह स्नान करावें। वस्त्र चढ़ावें, नारिकेलि निर्मित यज्ञोपवीत धारण करावें। सुगंधि-हव्यादि चढ़ावें। चंदन के अभाव में पड़ुआ-मिट्टी का लेप करके 'धूप' दें। फिर बड़ी मोमवर्तिका प्रज्वलित करके सहृदय वंदना करें।

वंदना श्री स्वसुर देव की

जयति स्वसुर; जयति स्वसुर; जयति स्वसुर देवा।
पत्नी तोरि सासु माता, पुत्र साले-देवा ॥
सतुअन के भोग लगें, दामाद करें सेवा ॥ जयति ससुर देवा...
लम्बोदर कृष्ण-वर्ण; चाल-ढाल न्यारी।
माथे पाण्डु तिलक सोहे; सायकिल की सवारी ॥ जयति ससुर देवा...
क्वारिन को ब्याह करत; ब्याहिन को गौना।
पुत्री-की-पुत्री देत; संग देत सोना ॥ जयति ससुर देवा...

वंदना श्री सासु-माता की—

ऊं जय सासू माता (मय्या) जय सासू माता।
तुम्हरी निश-दिन सेवा करते; ससुर औ' जामाता।
ऊं जय सासु साता...
दुर्गा रूप भयंकर तुम हो, कृष्ण-पीन गाता।
जो दामाद तुम्हें पूजत है; ऋदि-सिद्धि पाता ॥ ऊं जय सासू माता...
तुम ससुराल निवासिनि; तुम आदर दाता।
प्रेम-प्रभाव बढ़ावनहारी, दुख की तुम त्राता। ऊं जय सासू माता...
जिस घर में तुम रहतीं; आनंद आ जाता।
सब संभव हो जाता; मन नहिं घबराता ॥ ऊं जय सासू माता...
सासूजी की यह आरति, जो नर निशदिन गाता।
पाप क्षीण ह्वो जाता; पत्नी सुख पाता।
ऊं जय सासू माता...

वंदना श्री सालार साहब की—

ऊं जय सालार हरे, प्रभु जय सालार हरे।
भग्निवरों (बहनोइयों) के संकट, क्षण में दूर करे। ऊं जय सालार...
तुम हमको अति प्यारे, सलहज सहकारी।
जय रस-रंग विहारी; जय-जय ससुरारी ॥ ऊं जय सालार...
कर में सोहे समय सूचिका, श्रुति चश्मा काला।
हेट कोट अरु पेण्ट सुशोभित, सोहे टाई आला ॥ ऊं जय सालार...
निरख दुखी सब भग्निवरों के दैन्य दुःख टारे।
गज के फन्द छुड़ा ज्यों प्रभु ने भवसागर तारे। ऊं जय सालार...
सिर के बाल सफेद, जवानी ही में कर डारे।
तौ भी अति सुन्दर प्रभु तुम, सब देवन तें न्यारे। ऊं जय सालार...
भगनी ब्याह रचैया, तुम्हरी छवि सोहे।
मन में नित्य निवास करो, भक्तन गण मन मोहे। ऊं जय सालार...

श्री सालीभ्यो पद वंदने—

गाइए साली पद वन्दन;
ससुर सुता, सासू की बेटी, भ्राता तव नन्दन।
मम पत्नी की प्रिय भगनी तुम, सुनो करुण क्रन्दन ॥
तुम्हरो रूप हमें भावत है; मारो मत ठण्डन।
रूप असीम देख लालच भयो, और न कोऊ फन ॥
इतनी कृपा करो तुम देवी, चरण पड़्यो वन्दन।
एक बार मम ओर निरखकर, कर दो अभिनन्दन ॥

गाइए साली पद वन्दन ॥

—राजेश साहित्य सदन
१०८०ए, खाती बाबा,
सीपरी बाजार, झांसी (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोरी के अंगों का आतंकवाद

● उमाशंकर चतुर्वेदी

यों तो सालभर गोरियां, सलोनियां, नवेलियां और कमनीय कामिनियां आतंक मचाती रहती हैं, जिनसे सावधान रहने के लिए लोक कवि ने आगाह किया है कि 'इनसे बरकत रहियौ छैला,' लेकिन होली और फागुन के रंगीले, रसभरे और भंग घुले मौसम में गोरियों का आतंकवाद चरम सीमा पर होता है। गोरियों का हर अंग आतंकवादी हो जाता है और 'इनसे बचे सो खेले होरी' की स्थिति पैदा हो जाती है। जब देशी नायिकाओं का प्रत्येक अंग ही रसीला, कटीला, मदभरा और मारू हो, तो उनके आतंक से कैसे बचा जा सकता है ? गोरी की चाल कयामत लाती है, आंखों की पिस्तोलें चलने लगती हैं, गेसुओं के काले नाग और चोटियों की नागिनें, कमर की कटारी, आंखों के कजरे की कटारें चलती हैं, तो कौन बच सकता है ? कपोलों के डिंपलों में से निकलना कठिन हो जाता है। गोरी के सुघढ़ अंगों को देखकर संगदिल भी रंगीन दिल हो जाते हैं। दुनिया में फैले आतंक से भले ही कोई बच जाए, लेकिन गोरी के आतंक से बचना मुश्किल है।

आइए गोरी की मस्त चाल का ही आतंक देख लीजिए। गजगामिनी गोरी की होरी पर चाल तो देखिए, जो फिराक साहब को ही आतंकित कर रही है—

वो चाल कि ठोकर आसमानों को लगाय
वो चाल कि झिंझोड़कर कयामत को जगाय
वो शोख अदा कि बर्क आंखें झपकाय

चंचल और बला-सी बालाओं की ऐंठनभरी मरोरा चाल पर चलायमान होकर कई चतुरजनों के चालान होते देखे गये हैं। लोक कवि ईसुरी की नायिका की मतवारी चाल देखिए—

जुवन विशाल, चाल मतवारी, पतरी कमर इकारी
भौंह कमान, बान से तानें, नजर तिरीछी मारी

ऐसी चाल के लिए लोक कवि अपनी गोरी को आगाह करता है कि—

गोरी मत चलो मरोरा चाल
देख कोई परदेशी मर जायगौ

नायिकाओं के आतंकवाद पर न तो सरकार कुछ कर पाती है, न पुलिस और न जनता। इसी बात के मद्देनजर एक शायर ने कहा है कि—

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती

गोरी की आंखों की आतंकवादी गतिविधियां तो जग-जाहिर है। आंखें तो आंखें, आंखों की कोर, आंखों का काजल, आंखों के कटाक्ष, आंखों की हेरन, हंसन, अदाएं, आंखों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचलता, आंखों की अरुणाई, लुनाई, मधुराई, सफेदी और श्यामता सभी मारक होते हैं । आंखों के आतंक पर गुप्तचरों का भी बस नहीं चलता है । नैनों में सैनों का फंदा फंसाकर बृज की गोरी ने रसिक बिहारी श्रीकृष्णजी को ही फंसा लिया । जब त्रिलोकीनाथ नहीं बच सके, तो दूसरों की हिम्मत ही क्या है । फंसाने का ढंग देख लीजिए—

नैन में सैन कौ फंद फसाय के
नंद के चंद को भीतर लायी
हाथ फिराय कपोलन पै,
रस बातन में मिसरी घोलायी

कवि गिरधर की गोरी की आंखों की नोंकों का आतंकवाद ऐसा फैला है कि पूरा शरीर व्याकुल हो जाता है, छलनी हो जाता है, और ऐसे न दिखायी देनेवाले घाव हो जाते हैं कि वैद्य भी कुछ नहीं कर सकता है—

नयनों की नोंके बुरी, निकस जात जस तीर
हेरे घाव न पाइए, बेधे सकल शरीर
वेधे सकल शरीर, वैद का करे वैदाई
करि हौ कोटि उपाय, घाव नहिं देत दिखायी

उधर कवि ख्यालीराम की नायिका की आंखों की हेरन ही तलवार से अधिक पैनी है । उनकी गोरी नायिका का आतंक देखिए—

हेरन खड़गधार से पैनी,
देखत भई बेचैनी
मीन मलीन, दीन गति खंजन,
गंजन मद मृगनैनी

लोक कवि गंगाधर व्यास की नायिका भी अपनी आंखों की कोरों में काजर भर जो नयन बाण चलाती है, तो शूरवीर और रणधीर भी छलनी हो जाते हैं—

मारे नैन तरीछे करके,
काजर कोरन भरकें
जैसे व्याध मृगा के ऊपर
छोड़त बान समर कें

आंखों के आतंकवाद को कोई पकड़े भी कैसे ? आंखों का सब काम रिमोट कंट्रोल से होता है । घनानंद की नायिका सुजान के कटाक्ष रूपी बाणों की चोट तो लगती है, रसियों के नयनों में, लेकिन उनकी करक, कसक और कचोट, कलेजे में जगती है, उठती है । इसी को कहते हैं, घाव कहीं, दर्द कहीं—

आंखों के आतंकवाद को कोई पकड़े भी कैसे ? आंखों का सब काम रिमोट कंट्रोल से होता है । घनानंद की नायिका सुजान के कटाक्ष रूपी बाणों की चोट तो लगती है, रसियों के नयनों में, लेकिन उनकी करक, कसक और कचोट, कलेजे में जगती है, उठती है । इसी को कहते हैं, घाव कहीं, दर्द कहीं—

नैनन में लागे, जाय जागै सु करेजे बीच
या बस है जीव, धीर होत लोट पोट है
रोम-रोम पीर पूरि, व्याकुल शरीर महा
अहा कहा विषम कटाक्ष सर चोट है

आंखों का असली आतंकवाद देखना हो, तो लोक कवि ईसुरी की नायिका रजऊ की आंखों का आतंक देखिए । उनकी नायिका की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखों ने देश के देश उजाड़ दिये—

तोरे नैना मुलक उजारें, हमैं हेरतन मारें
काजर की कोरन में भरकें, ठाड़े मानुस मारें

आंखों का काजल, लमछारे केशों की पटियां, भौंहें और सैन, सभी तो आतंक मचाते रहते हैं, देखिए यों—

काजर छुरी, बगुरदा पटियां, भौंहन की तलवारें
लंबी खोर दूर नों डारें, सैन दुनाली मारें

होरी पर गोरी का घुंघटा, मुंह, बिंदिया और छिपे अंग सभी आतंकवादी हैं। ईसुरी की नायिका के इन अंगों का आतंक देखिए—

घुंघटा खोलत दस मरे, बिंदिया देख पचास,
सौ-सौ छैला तब मरे, जब तनक देख लय अंग

कवि बिहारी की गोरी नायिका तो अपना सीना दिखाकर रसियों को मारने पर उतारू है। कवि अपनी नायिका को आगाह करता है—

ऐसी कसवाती, तू तो नैक न डराती
काहू छाती न दिखाव, कोउ छाती मार मरि है

देव कवि की नायिका के अंगों का आतंक देखिए—

सरकि-सरकि सारी, दरकि-दरकि आंगी,
औचक उचौहैं कुच, फरकि-फरकि उठे

एक गोरी तो अपने घर के अंदर बैठी हुई भी आतंक फैलाये है। खिड़की से छनते हुए हुस्न को देखकर एक पड़ौसी जो छत पर टहल रहा था, बेहोश हो गया। जब पड़ौसी की पत्नी ने घर के अंदर बैठी बाला से शिकायत की और आगाह किया कि वो अपने सुघढ़ अंगों और तराशे हुए हुस्न को छिपाकर रखे—

तोहि देख मोरे पति गिरे, ढपले अपने अंग

इस पर वह हुस्नी बाला उत्तर देती है और अपने आतंकवाद की तरफ इशारा भी करती है कि—

मोहि देख तरुवर डिगैं, बचन न पावें संत
भाग सराहौ आपने जो जियत बचे तोरे कंत

गोरी हंसती है, तो जियरा ले लेती है और दिल में आग-सी लगा देती है। हृदय में लगी चोट सेकते रहिए—

जी लंय रजऊ पावनी दैके
हंस हंस लाला कै कैं
चोट लगी हिरदे में ईसुर मन तक घर में सेंके

गोरी मुनिया हंसकर हेरती है, तो दुनिया के लोग मरे जाते हैं, इस आतंकवाद पर क्या किया जा सकता है ?

ऐसी हंस हेरन मुनिया की
मौत भई दुनिया की
डारें-जात गरे में फांसी गगर धरैं पनियां की

होरी पर गोरी के आतंकवाद से कहां तक बचा जाए। होरी पर वह रूप के राज्य में अदाओं की अदालत कायम कर देती है। संकेतों के सम्मन, चितवन के चपरासियों से भिजवाती है, मन रूपी मुद्दई को बंदी बना लेती है, सुरत की हथकड़ी लगा दी। गोरी ने 'ईसुरी' पर दफा तीन सौ बयासी बिना कहे-सुने लगा दी और देखिए यों—

ऐसी बे इनसाफी आंसी, प्यारी कह दो सांसी
कायम करी रूप रियासत में अदा-अदालत खासी
पठवा दये सैन के सम्मन, चितवन के चपरासी
मन मुद्दई खों बंदुआ कर लऔ, सुरत हथकड़ी गांसी
ईसुर कह बेगुना लगा दई, दफा तीन सौ बयासी

अतः इस होरी पर गोरी से बचकर रहना; कहीं, दफा तीन सौ बयासी में आप न फंस जाएं। अपने बाल-बच्चों का ध्यान रखिए और आतंकवादी गोरियों और उनके अंगों के सत्संगों से बचिए।

— प्राचार्य निवास
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय,
दशहरा मैदान, उज्जैन-४५६०१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये दिन चुनाव के

● डॉ. पी. सी. रावत

सबके दिन फिरते हैं । घूरे से लेकर भूरे भैया के, नेता से लेकर अभिनेता तक के । कहते हैं ग्रह-दशा का चक्र तो घूमता ही रहता है अपनी धुरी पर । इसकी लपेट में अच्छे-अच्छे भी आ जाते हैं । समय की उड़ावनी के पंखे से हलके भूसे की तरह अलग हो जाते हैं और सार निकल आता है । चुनाव का पंखा भी यह प्रक्रिया अपनाता है । फर्क इतना है कि इसके भूसे की कीमत अधिक है और वह ज्यादा टिकाऊ है । एक ओर जहां जानवर उसे खाकर पुष्ट होता है, वहीं आदमी उसका दूध पीकर पुष्ट होता है । गोया कि भूसा दो को संपुष्ट करता है, किंतु गैहूं सिर्फ एक को । ग्रेशम नामक अर्थशास्त्री ने एक सिद्धांत बनाया था कि अच्छे सिक्कों को घिसे हुए सिक्के बाजार से बाहर कर देते हैं । इसी प्रकार चुनावों में हलका जीतता है, भारी संग्रहालय की शोभा बढ़ाता है । देखिए न चुनाव महिमा । अभी हाल घात लगाकर, हमला करके, सुरक्षाकर्मी तथा मतदान अधिकारियों को मार डाला गया और कुछ घायल हो गये, किंतु बम इंडस्ट्री, कट्टा गृह उद्योग जो मंदी अनुभव कर रहे थे, अब पुनर्जीवित हो उठेंगे । क्या मरने पर रोजगार के अवसर नहीं बढ़ेंगे ? अतः ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ-कुछ होता रहना चाहिए । राष्ट्रीय समस्याएं विशेषज्ञ तो सुलझा नहीं सकते । माल्थस के अनुसार इनका स्वतः हल निकल आता है ।

कहते हैं चुनाव कई समस्याओं का निदान है । इसके गेयर के दांते कई के दांतों से फंसे हैं । सब एक साथ चालू हो जाते हैं । अहिंसा (कुछ न करना) हिंसा और प्रतिहिंसा के सिंह और मृग अकस्मात एक घाट पर आकर पानी पीते हैं । सांप्रदायिक सद्भाव की यह कितनी बड़ी मिसाल है । वस्तुतः चुनाव इस सद्भाव की जननी है । व्यक्ति अदब सीख जाता है । दिली रिश्ते बनते नहीं, चुनाव में बनाये जाते हैं । दुआ, सलाम, राम-राम, सत श्री अकाल सबके मुंह से सब निकलता है । पूरी वसुधा कुटुंब नजर आने लगती है । मिट्टी में श्मशान जानेवालों की फ्रीक्वेंसी बढ़ जाती है । रिसेप्शन में बिना बुलाये प्रेमवश पहुंचना पड़ता है । भक्त भी सुखी, भाग्यवान भी । प्राचीन भारतीय पद्धति में पैर पड़ना, दंडवत करना और प्रणाम करने की जो चुनावी नौटंकी थी और जो पांच साल से ढीली पड़ी थी उसे गति मिलती है, क्योंकि भगवान है अतः केवट की तरह 'दंडवत' हों और उठाये न उठें ।

चुनावी बहार के दिनों में शहर की पान बहार, झंडे, मुश्टंडे, टेंट, रेंट और पेंट की दुकानों के तंत्र को नयी जिंदगी मिल जाती है और गरीब वोटर को कपड़ों, प्यालों और वाहन का सुख । इनके संचालक राजनीतिक समीकरण, उप चुनाव याचिका और चुनाव रद्द होने की ही चर्चा में अपना शेष समय पास करते हैं कि किस उम्मीदवार के बाप-दादे क्या थे और क्या हो गये । उसने पूर्व पत्नी को कैसे मारा था सुनें—मुंह में राम बगल में छुरीवाले तंदूर कांड की जगह सुंदर कांड का अखंड पाठ करते मिलेंगे । गड़े मुरदों की कबरें खुदवाना हो, तो चुनाव लड़ के देखो । पीत पत्रकारिता वालों के लिए एक स्पष्टीकरण विभाग खुलवाना पड़ेगा । गोल-गोल जवाब के लिए किसी साहित्यकार की सेवाएं ली जाएंगी, जो जीतने के बाद अभिनंदन-पत्र बनवा देगा, संस्मरण लिखेगा, आपकी, आत्मकथा भी लिख देगा ।

चुनावी बसंत में सब-के-सब नये बेरोजगार योजनाओं एवं महिला एवं गरीब विकास कार्यक्रमों में लग जाते हैं । भला, घोषणा करने में क्या लगता है । एक प्रकोष्ठ बना दें । कुछ मुफ़ योजनाएं घोषित करें, फिर चुनाव बाद असेसमेंट करके बंद कर लेंगे, कुछ दिन के लिए नालियां साफ करें, यही चुनावी रणनीति है, विशेष रंग के कुरते-पाजामे, साड़ी, टोपी । सीजनल सियार तो दिखें । मुफ़ खाने की आ

चुनाव की बरसात के पांच मेंढक हैं—मतपत्र कलेक्टर, इंस्पेक्टर, मास्टर, सपोर्टर, रिपोर्टर । यदि प्रयोग करके देखा जाए, तो नेता की खोपड़ी में यही पंच तत्त्व मिलेंगे । सबको उससे काम, पर वह किसी काम का नहीं ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ों की भी है और जनता की भी, बस नारे लगायें । जीप में चुनावी बयार की शीतलता लें । लंबे बैनरों से बनी हुई चड्डी पांच साल चलती है और उप चुनाव की ३ वर्ष । जनता तन ढके, किंतु मन को ढका रहने दे । प्रजातंत्र में चुनाव की यही भूमिका है । अपराध करें और अपराधीकरण का विरोध भी । गुंडे पालें और जमानत लें, चुनाव में यह अनिवार्य है । माइट इज राइट, अतः तगड़ी फाइट का झटका दें । जैसे सांपों को नागपंचमी के बाद कोई नहीं पूजता, वैसे ही लौटते बाराती, गुजरे गवाह और लौटते वोटर की दुर्गति है । बुद्धिमान भी इससे परहेज नहीं करते ।

चुनाव की बरसात के पांच मेंढक हैं—मतपत्र कलेक्टर, इंस्पेक्टर, मास्टर, सपोर्टर, रिपोर्टर । यदि प्रयोग करके देखा जाए, तो नेता की खोपड़ी में यही पंच तत्त्व मिलेंगे । सबको उससे काम, पर वह किसी काम का नहीं ।

चुनाव की दुकानें कच्ची आढ़त की हैं, जिन्हें सिर्फ दलाली से वास्ता । नफा-नुकसान मालिक का । डील पर डेरा । बिना पूंजी का धंधा । ये सिर्फ सीजन में खुलती हैं और शेष समय दूसरों की दुकानें बंद कराती हैं । इनके चुनाव की नाव में चुनिंदा चीजें या तो लदी रहती हैं अथवा सेवकों द्वारा लाद दी जाती हैं ताकि वे कइयों का कई पीढ़ियों का सहारा बनें । यद्यपि चुनाव के लिए धन देश-विदेश से लादकर नाव से लाया जाता है, किंतु यदि कोई पूछे, तो फट से कह दीजिए कि मेरी नाव में सत्ता-पत्ता भरा है । डूबी हुई नैया भी चुनावी प्रसाद ग्रहण कर रामभरोसे ऊपर आ जाती है ।

परसाईजी अकसर कहते थे कि जो मत नहीं देते वे बधाई देने पहले पहुंच जाते हैं । जो सबसे पहले आपके गले में माला डाले, उसे अपना सबसे बड़ा शत्रु समझिए । नेता पनपता है, तो जनता नष्ट होती है । प्रकृति का यही नियम है । जिसकी किस्मत तेज होती है उसी के पांसे सही पड़ते हैं यद्यपि पांसे फेकने की कला में कुछ ही लोग सिद्धहस्त शकुनि होते हैं और पांसे उनके ही इशारों पर चलते हैं । पर कभी-कभी जनता का पिद्दी भी मात देने की क्षमता रखता है । चिंता यही कि चुनावी चौपड़ चौपट न कर दे या शतरंज रंज का कारण बने । चुनाव में सब का सब माफ है । सात पीढ़ियां तारने के लिए तीन चुनाव पर्याप्त हैं । महंगाई के अनुसार इनमें थोड़ा-बहुत संशोधन किया जा सकता है । जनता की तीन पीढ़ियों का ठेका थोड़े ही इन्होंने ले रखा है । जनता ने लिया है अतः खुद क्यों नहीं सुधरती । हां चुनाव में चारों भाइयों पंजू, छक्कू, सत्तू और अठ्ठू का आपसी मतभेद दूर हो कर भरत मिलाप हो जावें तो क्या आश्चर्य है ।

—प्राचार्य
जी. एस. कॉलेज, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौजी की राम-राम

परम प्रिय अवस्थी लाला हे भौजी की राम-राम,

अपरंच समाचार जे हे कि एते सब राजी-खुशी है, उतै की राजी खुशी की कामना करत हैं । का भओ लाला कि इते दो-तीन बेर हम टी. वी. पे आये, तो लोगन ने कई कि "बाल करिया कर लेतीं तो अच्छो लगतो" अब सुनवे में तो अच्छो लगो । लुगाइयें का चाहत हैं कि बे सदा सोला साल की बनी रहें । जब पहली बार हमें कोनउ ने "अम्मा जी" कहो तो तुमसे सांचई बता रहे हैं कि इत्तो खराब लगो कि का कहें पर अब तो आदत हो गयी है । मुंह से बेटा निकरन लगो है । एक बात बतायें कोई से कहियो नईं" एक दिना तुमाये भैया के लाने भी बेटा निकरगओ तो । तो बात बारन के करिया करके की चल रई थी । सफेद बालन को दुक्ख तो 'केसव' को भी रहो हतो—

केसव केसन अस करी, जस अरिहूं न करायं
चंद्रमुखी मृगलोचनी बाबा कहि-कहि जायं

अब जाई बात हम केहते तो कैसे केहते, तो सुन लो

'सुधा' केसन श्वेत करि, अस रिपुहूं न करायं
बांके-बांके छैलवा, अम्मा कहि-कहि जायं

चलो हो गयी मजाक खूब । ऐ ! लाला ! छुकड़ियों हे देख तुम ओरन को मन डोलन लगत है, हम ओरन को तो मन ममतीलो हे, प्रेम नईं ममता जागत है । जाई तो परकिरती को खेल हे, तबई संविधान और कानून कितई चिल्लायें कि पुरुस औ मेहरिया समान हो, पर समान कैसे हो सकत हे । कोई फिल्म देखने गये तो...हीरोइन ने हीरो से कओ "ओरत का दिल एक मंदिर हे जहां एक ही देवता की मूर्ति स्थापित हो सकती है" । तो पीछे से कोई ने तुक्का छोडो—"आदमी का दिल तो एक सराय हे जहां रोज आनी-जानी रहती है ।" अब ई बात में कितनो सच है, जे तो तुमई ओर जान सकत हो । हम तो जे जानत हैं कि हम ओरन के मन में नये-नये लड़कों को देख 'बेटा' कहने को भाव होता है । चलो अब हम कहीं बार करिया कर लेते और तुम और हमाये पीछे पड़ते तो हमें कहने पड़तो :—

गुल गया, गुलशन गया, गयी ओंठों की लाली
अरे अब तो पीछा छोड़ मैं हूं बच्चों वाली

होली पे छेड़वे-छिड़ावे की बात न करें, तो कब करें । जे तो जीवन को रस हे, नईं तो आदमी ओर ढोर में फरक का होतो । हंसबे की कला तो रामजी ने मनुष्यों को दई है ओर कोनउ प्राणी हंसबो नईं जाने । क जाने काये लोग टिसुआ बहात रहत हैं ।

एक बार का भओ लाला । हम कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसायरे में गये । ओ एक नाटे से कद, बुकर दाढ़ी वारे सायर अपने दिल पे हात रख के, एड़ियां उचकाकर गजल खींच रये ते । हम समझे उन्हें दिल का को दौरा पड़वे वारो है । हम जेई चिंता में थे, और पब्लिक 'मरहबा', 'फिर से' को सोर मचा रही ती । हमें भोतेई खराब लग रओ तो, सो हम उठे, वे दुबरे-पतरे नाटे सायर हमाये आधे हते । उनको हमने कंधा पकड़ो और कहो, "आपकी तबियत ठीक नहीं है आप तशरीफ रखें ।" अब लाला सोचो जरा कोउ मरद हे कोनउ मंच पर पकड़कर बिठा दे, तो ऊको कैसो हाल हुई । पब्लिक "हो, हो, हो" करन लगी । बे सायर डिबिर-डिबिर हमारों मूं देखन लगे और सायर साहेब ने हमसे कही, "मोहतरमा आप तशरीफ रखिए । यह तो उनका पढ़ने का लहजा हो ।" हम खिसिया गये, अब जब हमाओ पढ़वे को मौका आओ, तो सब हमें देखई के हंसन लगे । बड़ी आफत फिर हमने उनई सायर को संबोधित करत भये जो सेर पढ़ो :—

गम से रोते रहते हो और कहते हो हम शायर है फनकार हैं
गम की बुनियाद पर जमाने को हंसा सको
तभी न जाने शायर हो फनकार हो

तो मंच पर सब्दों की अखाड़ेबाजी तो चलतई रहत हो । कहां से सुरू करी तो, कहां पांच गये । का करें तुमसे सांचेउं जी मिल गओ हो तबई तो कहनी-अकहनी सबई कह जात हैं । बहू-बाल गोपालन हे आसीरवाद,

तुमाई प्यारी भौजाई

सुधारानी श्रीवास्तव

२०८/२, गढ़ा फाटक, जबलपुर-४८२००२

पतन के कारण

एक बार महावीर के कुछ शिष्यों में मानव-पतन के कारण को लेकर चर्चा छिड़ गयी । कोई कहता कि पतन का कारण उसका नास्तिक होना है तो कोई कहता कि दुराचारी होना । कोई अज्ञान को इसका कारण बताता तो कोई भोग-विलासिता को । सब अपनी ही बात को ठीक मान रहे थे ।

अंततः यह तय हुआ कि चलकर तीर्थंकर महावीर से इसका समाधान पूछा जाए । महावीर के यहां पहुंचकर सबने अपनी-अपनी बात कही । शिष्यों की बातें सुनने के बाद महावीर बोले, 'मेरे पास एक छिद्रविहीन तूंबी है । इसको अगर समुद्र में छोड़ दो तो क्या डूब जाएगी ?'

'नहीं डूबेगी ।' शिष्यों ने समवेत स्वर में कहा ।

'और इस तूंबी में छिद्र हो जाए तो ?'

'तब तो यह निश्चित ही डूबेगी ।'

'शिष्यों, मानव-जीवन तूंबी के समान ही है ।' महावीर ने स्पष्ट करते हुए कहा, 'जीवन में दुर्गुणरूपी छिद्र हुआ कि डूबे ।'

● ग्यानी गिरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ग में राज कपूर और जौहर की बातचीत

● मंजुला डोभाल

राजकपूर और जौहर स्वर्ग में सुबह-सुबह अखाड़े में दंड पेलते हुए बतिया रहे हैं।

जौहर—"क्या बात है राज, आज बड़े उखड़े-उखड़े से नजर आ रहे हो ?"

राज—"कल रात जो धरती से आयी फिल्म थी, न जाने क्या-क्या था उसमें और क्या था उसकी हीरोइन का नाम, उफ क्या कहूं।"

जौहर—"अरे 'राजा बाबू' की बात कर रहे हो, हां उसमें करिश्मा और उस भले लड़के का नाम . . . अरे हां याद आया—गोविंदा।"

राज—"तुम तो बड़ी चुस्कियां लेकर देख रहे थे और मैं शर्म से पानी-पानी हुआ जा रहा था। देखा था मधुबाला और नरगिस कैसे चुटकियां ले रही थीं, मधु की तिरछी मुसकान मेरे दिल पर आरियां चला रही थी।"

जौहर—"क्यों इतना परेशान हो रहे हो।"

राज—"अब मैं पापाजी को कैसे मुंह दिखाऊंगा, कल ही तो उनसे मिलने जाना है। पूछेंगे—'विरासत में यही सब छोड़ आये हो। खानदान के किये-कराये पर इस लड़की ने पानी फेर दिया, मुझे कहीं का न छोड़ा।"

जौहर—"क्या बड़बड़ाये जा रहे हो ? किसके बारे में कह रहे हो ?"

राज—"अरे वही रणधीर की बेटी, कैसी भोली-भाली मासूम-सी दिखती थी, मेरे कंधों पर बैठकर कितनी प्यारी-प्यारी बातें करती थी, तभी तो रखा था उसका नाम करिश्मा।"

जौहर—"कहते हैं नाम का बड़ा असर होता और रखो उसका नाम करिश्मा। दिखा तो रही है करिश्मा-ही-करिश्मा, एक नया दौर लायी है अपनी फिल्मी दुनिया में। देखा नहीं सब कितना आनंद ले रहे थे ?"

राज—"अब कुछ न कहो दोस्त, सब पलटकर आ रहा है। जितना मैंने अपनी औरतों को परदे में रखा, पूरी कसर निकाल दी इस लड़की ने।"

जौहर—"गलती तुम्हारी ही है, मैं तो हमेशा ही कहता था 'चैरिटी बिगिंस एट होम', तुम्हीं बड़े आदर्शवादी बनते रहे। घर में सबको लकीर का फकीर बना रखा था। वह तो उन्होंने तुम्हारी इज्जत रखी, जो तुम्हारे रहते कुछ ऐसा-वैसा नहीं किया।"

राज—"नहीं तो क्या तुम्हारी तरह अपनी ही बहू-बेटियों को एक्सपोज करता।"

जौहर—"कम-से-कम आज ये दिन तो न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना पड़ता, अगर उसने घर से यह सब सीखा होता, तो उसे अपनी सीमा पता रहती ।''

राज—''हां ! कुछ ऐसा ही लगता है बेचारी को खुद ही पता नहीं था कि इन हरकतों को 'सेक्सी' कहते हैं !''

जौहर—''छोड़ो, तुम्हारे साथ जो हुआ सो हुआ ! अब मुझे देखो, एक तरफ तुमने अपने बेटों को अपनी फिल्मों से फिल्मी जगत को परिचित कराया, वहीं मैंने भी अपनी बेटी के लिए फिल्म बनायी । उसे अपनी फिल्म 'फाइव राइफल्स' में हर तरह का एक्सपोजर दिया, लेकिन हुआ क्या ? वही ढाक के तीन पात, मेरे सामने छोड़ मेरे पीछे भी कुछ न कर पायी, लोग ही भूल गये मुझको, नाम तो नाम होता है अच्छा हो या बुरा ।''

राज—''इसकी मुझे चिंता नहीं, करिश्मा ने मेरा नाम तो जिंदा रखा है ।''

जौहर—''काश । एक जौहर मैंने भी पैदा किया होता, तो कुछ जौहर तो दिखाता ।''

राज—''यार, किसको क्या पता क्या होगा । आज क्या हीरो क्या विलेन, कौन निगेटिव कौन पॉजिटिव ? कैसा समय है ? सब एक-सार हैं, न कोई बड़ा न कोई छोटा, इससे अच्छा तो अपना समय था ।''

जौहर—''हां तू हमेशा भोला-भाला मासूम और मैं चालाक और खुराफाती ।''

राज—''यार, एक बात तो माननी ही पड़ेगी, आज की पीढ़ी है बड़ी होशियार, सब-कुछ खुलकर हो रहा है उनको किसी की परवाह ही नहीं । 'सरकाय लो खटिया, जाड़ा लगे' —अरे बाबा क्या जमाना है ये कोरियोग्राफर भी खूब है ।''

जौहर—''अरे दिल की बात बोलूं—तुम तो अपनी हीरोइनों को नहला-नहलाकर वह सेक्सी लुक नहीं दे पाये, जो आज करिश्मा, ममता बिना नहाये अपने शरीर को तरोड़-मरोड़ कर दे देती है ।''

राज—''वाकई, माधुरी के ठुमकों ने मुझे घायल कर रखा है ।''

जौहर—''चलो भई, चलें नहाने का समय हो गया है । अपनी साथ की सहेलियां इंतजार कर रही होंगी । —अब यहां तो जो हैं, उन्हीं से काम चलाना पड़ेगा, वे कहां लगा पायेंगी उस तरह के ठुमके ।''

—सी-२/२२५३,
वसंतकुंज, नयी दिल्ली

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. (१८), २ क. आर्यभट्ट, ख. न्यूटन, ३. क. यज्ञ, ख. वर्ण-व्यवस्था, ४. क. दक्षिण अफरीका (५१ प्रतिशत), ख. भारत, ५. क. इनसेट-२ सी तथा आई.आर.एस.—१ सी, ख. पहला फ्रेंच गुयाना के कौरू प्रक्षेपण-स्थल से (७ दिसं. को) तथा दूसरा कजाकिस्तान के बैकोनूर प्रक्षेपण-स्थल से (२८ दिसं. को), ग. पहले का उद्देश्य संचार-सेवाओं में बढ़ोत्तरी तथा दूसरे का प्राकृतिक संसाधनों के बारे में बहुमूल्य आंकड़े उपलब्ध कराना, ६. क. चीन, अमरीका, भारत, ख. दूसरा स्थान, ७. पंद्रहवां अभियान दल (४२ सदस्य), ८. क. तंजानिया के पूर्व राष्ट्रपति जूलियस न्यरेरे, ख. भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर, ग. केरल की कवयित्री श्रीमती बालामणि अम्मा, घ. डॉ. श्रीधर भास्कर वार्नेकर, च. तलत महमूद, ९. क. अमरीकी खिलाड़ी पीट संप्रास (रूसी खिलाड़ी येवगेनी कफालिकोव को हराया), ख. भारत (प्रथम), श्रीलंका (द्वितीय), पाकिस्तान (तृतीय), भारत ने १०६ स्वर्ण, ६० रजत, १९ कांस्य पदक प्राप्त किये, ग. जसपाल राणा (भारत) तथा सुमंगला [illegible] (श्रीलंका), १०. जापान का सूमो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत की ओर : यह देखकर सुखद अनुभूति हुई कि पत्रकार और प्रकाशक श्री नरेन्द्र मोहन सृजनशीलता के लिए समय निकाल लेते हैं ।

'अमृत की ओर' उनका प्रथम काव्य-संग्रह है । प्रस्तुत संग्रह में कवि ने जीवन के भोगे हुए क्षणों को अभिव्यक्त किया है । अध्यात्म के निकट यह कविताएं समकालीन मूल्यों को तलाशती हुई नजर आती हैं । संग्रह की शीर्षक कविता 'अमृत की ओर' में आशा का स्वर मुखरित हुआ है, यथा—

अंधकार का भय
मेरी चेतना न हरने पाये ।
मुझे उड़ने दो
उस सूरज की ओर
जिसने अंधकार की सत्ता को
कभी जाना ही नहीं—

ज्ञान का आलोक, पुष्प, ब्रह्म, मोहपाश इस संग्रह की अन्य उल्लेखीय कविताएं हैं । आशा है प्रस्तुत काव्य-संग्रह पाठकों को पसंद आएगा ।

प्रकाशक : हर-आनंद पब्लिकेशंस, ३६४-ए, चिराग दिल्ली, नयी दिल्ली; मूल्य : १५० रुपये ।

प्रवासी भारतीयों की कृतियां

प्रवासी भारतीय हिंदी और हिंदी साहित्य के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं । एक ओर मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार अभिमन्यु अनत हैं तो दूसरी ओर लंदन की युवा लेखिकाएं कृष्णा अनुराधा और दिव्या माथुर भी हैं जो हिंदी भाषा की अलख सुदूर ठंडे देश में भी जगाये हुए हैं ।

घर लौट चलो वैशाली : मॉरीशस के जनजीवन में अंतर्धर्मीय एवं अंतरजातीय विवाह के दुष्परिणामों का जीवंत दस्तावेज है । अभिमन्यु अनत ने अपने उपन्यास घर लौट चलो वैशाली में यथार्थ चित्रण कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है ।

उपन्यास की कहानी वैशाली और अख्तर हसन अली के प्रेम से शुरू होती है । अंतर्धर्मीय प्रेम विवाह में जो कठिनाइयां आती हैं, वह इनके सामने भी आयीं । कठिनाइयों के बाद इनका विवाह हो जाता है परंतु विवाह के कुछ समय पश्चात ही अख्तर हसन अली मजहबी लोगों के बहकावे में आकर अपनी पत्नी को तलाक दे देता है । उपन्यास का निर्णायक मोड़ तब आता है जब नायिका इस हादसे को सह लेती है और 'सीपियों के मोती' संस्थान के बच्चों में अपनी बेटी को देखने लगती है ।

वैशाली का अपने घर लौटना उसकी पराजय नहीं है । उसका लौटना उसकी अस्मिता और मानवीय जीवन की ओर लौटना ही है । पुस्तक के प्रकाशक हैं **किताबघर, नयी दिल्ली; मूल्य : ५० रुपये ।**

अर्चन-दीप : के गीतों के स्वर, शब्द और संवाद भारतीयता में भीगे हुए हैं । स्वदेश से बहुत दूर रहते हुए भी कृष्णा अनुराधा अपने भीतर मातृभूमि के प्रभाव को सुरक्षित रखे हुए हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत संग्रह की कविताओं पर छायावादी प्रभाव भी सहज ही देखा जा सकता है । 'प्रवासी' होने की पीड़ा कवयित्री को कचोटती है, यथा—

क्यों प्रवासी बन गये हम

× × ×

मुक्ति की राहें हमारे लिए
इतनी कठिन क्यों बन गयीं ?

प्रवास-काल में लिखे गये इन गीतों का परिवेश भले ही इंगलैंड का हो, परंतु इनकी अनुभूतियां, आंतरिकता, बिंब-विधान तथा प्रतिपाद्य शुद्ध भारतीय ही है ।

प्रकाशक : नटराज प्रकाशन, ए-९८, अशोक विहार, फेज-एक, दिल्ली ।

अंतःसलिला : दिव्या माथुर की प्रथम कृति है । दिव्या की कविताओं में मानवीय सरोकारों को उद्वेलित करनेवाले चित्र मिलते हैं । संग्रह में लंदन के परिवेश पर लिखी गयीं कविताएं मन को सहज ही आकर्षित करती हैं । इसके साथ-साथ कवयित्री नें भारतीयता, अपने जीवन-मूल्यों, अपनी संस्कृति का सूक्ष्म चित्रण भी किया है । सहज व सरल भाषा मन में सीधे उतर जाती है ।

प्रकाशक : अलीक प्रकाशन, जवाहर नगर, जयपुर; मूल्य : १०० रुपये ।

रेत का लिखा : दिव्या माथुर का तीसरा काव्य-संग्रह है । कवयित्री के दूसरे काव्य-संग्रह 'ख्याल' और प्रस्तुत संग्रह में यह समानता है कि जहां 'ख्याल' में उन्होंने 'ख्याल' राग पर आधारित १०० कविताएं लिखीं, वहीं इस संग्रह में 'रेत' पर ७९ कविताएं लिखी हैं ।

प्रस्तुत संग्रह में कवयित्री ने रेत के माध्यम से जीवन के विविध रंगों को बहुत ही सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है । मुट्ठी से फिसलती 'रेत' को लेखिका ने जीवन का पर्याय बनाकर उसे एक नया आयाम दिया है ।

पुस्तक का मुख-पृष्ठ और छपाई सुंदर है ।

प्रकाशक : नटराज प्रकाशन, ए-९८, अशोक विहार, फेज-एक, दिल्ली; मूल्य : ७० रुपय (ढाई पौंड) ।

● अ.कु.जै.

बुंदेली के प्रतिनिधि कवि : लोकभाषा बुंदेली के ५१ कवियों का परिचय सहित काव्य संकलन है । आज यत्र-तत्र शुष्क, बोझिल और कवितानुमा अटपटी कथित नयी कविता के दौर में ऐसी मर्मस्पर्शी रचनाएं पढ़कर सुखद लगा । यद्यपि इस संकलन में प्रत्येक कवि की एक-एक कविता ही सम्मिलित की गयी है परंतु बुंदेली की श्रेष्ठ रचनाएं इसमें उपलब्ध हैं । अनेक गीत तो पहले से ही बहुचर्चित हैं । साथ ही बुंदेली के विविध क्षेत्रीय रूप इसमें देखने को मिल जाते हैं । कवियों का विस्तार से अंतरंग परिचय प्रकाशित कर इस कृति को संदर्भ ग्रंथ की तरह पाठ्यक्रम के उपयुक्त भी बनाया गया है ।

आदि कवि जगनिक से लेकर आज के कवि जगदीशवर तक को समेटकर तथा समापन अनुराधा से कर सर्जक और संपादक ने प्रशंसनीय कार्य किया है । बुंदेली मां भारती के श्री चरणों में यह समुच्चय अर्घ्य है । आगत में लोकभाषा सृजन के लिए यह कृति मापदंड निर्धारित करेगी ।

प्रकाशक : कैलाश मड़वैया; प्रकाशक : मनीष प्रकाशन, ३४/१०, साउथ टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.); मूल्य : ५० रुपये ।

● मालती जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवशरण सहस्रसई

शिवशरण दुबे की प्रथम कृति है । प्रस्तुत कृति में लेखक ने वर्तमान सामाजिक दशा का सटीक चित्रण किया है । लेखक ने लगभग सभी समस्याओं का दोहों के माध्यम से सशक्त चित्रण उकेरा है ।

बहुत-से दोहे सामयिक हैं और उनकी महत्ता इसी में है कि वे युग की बात कहने में समर्थ हुए हैं, पर जहां कहीं वह सामयिक क्षेत्र छोड़ ऋतुवर्णन, ठंड से ठिठुरे दोहे-जैसे साहित्यिक क्षेत्र में प्रविष्ट हुए हैं बहुत गहराई तक मन को छूते हैं । भाषा में प्रवाह है ।

लेखक : शिवशरण दुबे; प्रकाशक : भारती आफसैट प्रिंटर्स, कटनी; मूल्य : ११ रुपये ।

'संवत्सर' तथा **'अभिलाषा'** : प्रणय पुरुष के लिए दुष्कर साध्य है, परंतु स्त्री के लिए सहज धर्म और स्वाभाविक आकांक्षा है । छंदबद्ध कविताओं में लौकिक तथा आध्यात्मिक प्रणय अभिसार, आकुलता, प्रतीक्षा, रूप, सौंदर्य, स्मृति, दांपत्य आदि भावों को लौकिक एवं आध्यात्मिक भावों में अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है । दोनों कृतियों की प्रायः सभी कविताएं छंदबद्ध हैं । छंद की शुद्धता को बनाये रखकर भावनाओं को सहज एवं हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति प्रदान कर कवि डॉ. विनोद मणि दिवाकर ने सराहनीय प्रयास किया है ।

कवि—डॉ. विनोद मणि दिवाकर, प्रकाशक—किताब महल एजेंसीज, पटना, मूल्य—प्रत्येक पुस्तक पचास रुपये ।

आकार लेते विचार : श्रीनिवास वत्स के इस निबंध संग्रह में १४ निबंध हैं । निबंधों को तीन खंडों में बांटा गया है । पुस्तक में भावनात्मक निबंध, व्याख्यात्मक निबंध तथा साहित्यिक निबंध हैं जिनमें अढ़ाई आखर प्रेम का, पत्थरों का बाग, साहित्य और राजनीति प्रमुख हैं ।

प्रकाशक : सूर्य भारती प्रकाशन, २५९६ नयी सड़क, दिल्ली, मूल्य : साठ रुपये ।

एस्ट्रोलाजिकल टाक्स तथा **सीक्रेट्स ऑव फेस रीडिंग** : डॉ. एस.एस. लिश्क की दोनों पुस्तकों में ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है । ज्योतिष का वैज्ञानिक आधार, भारतीय ज्योतिष विज्ञान, सिद्धांत तथा उसके गूढ़ ज्ञान पर चर्चा की गयी है । इसी पुस्तक में चेहरे से व्यक्ति के व्यक्तित्व और भविष्य से जुड़े तमाम रहस्यों की परतों को खोला गया है ।

लेखक : डॉ. एस.एस. लिश्क, दोनों पुस्तकों के प्रकाशक : सहज आनंद कार्यालय, यमुना विहार, दिल्ली, मूल्य : क्रमशः पंद्रह रुपये और दस रुपये ।

डॉ. सु.धी

'उबलता लहू' : प्रस्तुत उपन्यास हिंदी के सुपरिचित साहित्यकार डॉ. विजयानंद की अत्यंत रोचक कृति है । समकालीन भारतीय समाज को रेखांकित करता यह उपन्यास हिंदू-मुसलिम संस्कृति के विविध पक्षों को भी उजागर करता है । उपन्यासकार नायक 'वीरेन्द्र' से कहलवाता है कि जीवित रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और प्रेम इसकी संजीवनी । हमारे इस मार्ग में जो भी बाधक बनेगा उसे पराजित होना पड़ेगा ।

हिंदू नायक और मुसलिम नायिका के परिवारों के मध्य छिड़ी जंग और हत्या तक के परिवेश को माध्यम बनाकर युगानुरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्ष-विपक्ष की दीर्घतम भूमिका को प्रस्तुत करते हुए उपन्यास की भावुकता सहज से असहज होती हुई जीवन की भरपूर व्याख्या करती है। नायक के दूसरे विवाह और उत्पन्न भ्रांतियों को उपन्यासकार ने उस समय अत्यंत ज्वलंत बना दिया है जब नायक का पिता अपने ही पौत्र के अस्पताल में एक पर एक पुत्र (नायक), प्रथम पत्नी की पुत्री अकस्मात दिवंगत हो जाती है। कुल मिलाकर अतीव गंभीरता के कारण उपन्यास पठनीय एवं संग्रहणीय बन गया है।

प्रकाशक : ऊर्जा प्रकाशन, पुराना वैरहना, इलाहाबाद, मूल्य : ५० रुपये मात्र

—डी. आर. तिवारी

प्राप्ति स्वीकार :

निकोलाई रेरिख की कविताएं (कविता-संग्रह)
अनुवाद : डॉ. वरयाम सिंह; प्रकाशक : रेरिख अध्ययन परिषद १३१७, पूर्वांचल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली; मूल्य : १० रुपये।

●

नीलकंठ (कविता-संग्रह)
लेखक : सुभाष चंद्र गौड़; प्रकाशक : नागरी प्रेस, आफसेट प्रिंटर्स, ९१/१७६, अलोपीबाग, इलाहाबाद; मूल्य : ३० रुपये।

●

गुमशुदा चेहरे (कविता-संग्रह)
लेखक : अनवर सुहैल; प्रकाशक : मेघ प्रकाशन, बी-६/२६३, यमुना विहार, दिल्ली; मूल्य : २५ रुपये।

●

वसुंधरा (कविता-संग्रह)
लेखक : मृत्युंजय झा; प्रकाशक : सरस्वती प्रकाशन, श्रीमती कौशल्या देवी पथ, वैद्यनाथ-देवघर, मूल्य : ३५ रुपये।

●

प्राणवायु (गीत-संकलन)
लेखक : डॉ. तुकाराम वर्मा; प्रकाशक : अंतरराष्ट्रीय काव्य प्रशिक्षण महाद्यालय समिति ई १/२, अलीगंज हाउसिंग स्कीम, सेक्टर-बी, लखनऊ; मूल्य : ५० रुपये।

●

मिट्टी के गीत (गीत-संकलन)
लेखक : आर.के. श्रीवास्तव; प्रकाशक : साहित्य भवन प्रा. लि., जीरो रोड, इलाहाबाद; मूल्य : ४० रुपये।

●

माटी का दर्द (कविता-संग्रह)
लेखक : रामगोपाल 'बेबस'; प्रकाशक : भारती प्रकाशन, एम.आई.जी. १/७, शिवानी काम्पलेक्स, शिवाजी नगर, भोपाल; मूल्य : १२१ रुपये।

●

रश्मि-जाल (कविता-संग्रह)
लेखक : नगेन्द्र दत्त मिश्र; प्रकाशक : १/७ संजय काम्पलेक्स, दक्षिण तांत्याटोपे नगर, भोपाल; मूल्य : ५० रुपये।

●

तुम्हारी कसम मां (गजल-गीत-संग्रह)
लेखक : नरेन्द्र सक्सेना 'दीवाना'; प्रकाशक : मधु प्रकाशन, १६/१ (उत्तरी) गांधी कॉलोनी, मुजफ्फरनगर; मूल्य : १०० रुपये।

●

आदमी नहीं है (कविता-संग्रह)
लेखक : ओम पुरोहित 'कागद'; प्रकाशक : कवि प्रकाशन, लखोटियों का चौक, बीकानेर; मूल्य : ८० रुपये।

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में 'चौपाल वार्ता'

अनूपगढ़ । पश्चिमोत्तर राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के पाकिस्तान सीमावर्ती क्षेत्र अनूपगढ़ में साहित्यिक संस्था 'कादम्बिनी क्लब' द्वारा आयोजित 'चौपाल वार्ता' में क्षेत्र के गण्यमान्य नागरिकों, बुद्धिजीवियों एवं अधिकारियों को सादर आमंत्रित किया गया । अन्य सामाजिक संस्थाओं में लॉयंस क्लब, लियो क्लब, लॉयंस क्लब 'ग्रेटर', शिवा क्लब एवं अनूपगढ़ क्लब के सदस्य भी पधारे ।

'कादम्बिनी क्लब' के संयोजक डॉ. रमेश

कुमार यादव ने सभा की अध्यक्षता कर रहे नगरपालिका चेयरमैन अशोक नागपाल एवं मुख्य अतिथि, वृत्त निरीक्षक पुलिस खींव सिंह भाटी का स्वागत करते हुए कहा कि आज चौपाल में बैठकर नगर की मूलभूत जन-समस्याओं का निपटारा करें । सी. आई. श्री भाटी ने सुझाव दिया कि दुर्घटनाओं को रोकने के लिए आवारा पशुओं को नियंत्रित किया जाए तथा शहर में हो रहे अतिक्रमणों को रोकने के लिए पुलिस का सहयोग लें । पड़ोसी राज्य पंजाब से एवं पाकिस्तान से आनेवाले संदिग्ध तत्त्वों की सूचना पुलिस को दें ।

अन्य वक्ताओं में व्यापार मंडल के पूर्व अध्यक्ष दीवानचंद चुग, पूर्व सचिव सुरेश अग्रवाल, पत्रकार भगवानदास सारस्वत, पार्षद शशि सक्सेना, एडवोकेट प्रेमचंद अत्री, अधिशासी अधिकारी दर्शन लाल सोनी, डॉ. श्रीमती जोगेन्द्र कौर ने भी अपने विचार रखे । मंच संचालन ओ. बी. सी. बैंक पतरोड़ा के प्रबंधक सुरेश अग्रवाल ने किया । इस प्रोग्राम को सफल बनाने में कपड़ा व्यवसायी वेदप्रकाश गर्ग, गोपाल कृष्ण गोयल, सतपाल चावला की विशेष भूमिका रही ।

कवि-गोष्ठी

रांची । १३ जनवरी को रांची जिला कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में स्थानीय शिल्पी युवा संगठन परिसर में एक कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया । सर्वप्रथम क्लब के नये सदस्य विनय भरत का अन्य सदस्यों से परिचय कराया गया । इसके बाद शुरू हुई कवि-गोष्ठी लगभग तीन घंटे तक चली । गोष्ठी का संचालन आलोक प्रियदर्शी ने किया, जबकि अध्यक्षता वरिष्ठ सदस्य डॉ. सुरिन्द्र कौर 'नीलम' ने की । गोष्ठी में भाग लेनेवाले अन्य सदस्यों में कृष्ण कुमार मधुकर, नरेश बंका, मुक्ति शाहदेव, रश्मि कुमारी, मनोज कुमार 'कपरदार', डॉ. ध्रुव तनवानी, राजीव कुमार थेपड़ा, महुआ माजी, श्री बृजलाल, आलोक आदित्य, विनय भरत प्रमुख थे ।

क्लब की संगोष्ठी

सीतामढ़ी । स्थानीय साहित्यिक संस्था कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में एक संगोष्ठी संयोजिका आशा प्रभात के निवास स्थान पर श्री श्यामनंदन प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई । संगोष्ठी के प्रथम सत्र में आशा प्रभात ने साहित्य में भी जातीयता के दुःखद दंश पर घोर चिंता व्यक्त की ।

दूसरे सत्र में उपस्थित कवियों में श्री अवध बिहारी शरण 'हितेंद्र', आशा 'प्रभात', श्यामनंदन सिंह, सुरेश लाल कर्ण, जगदीश प्रसाद, अरविंद कुमार ठाकुर, रमेश चंद्र सिन्हा एवं सुरेश वर्मा ने अपनी संवेदनशील रचनाएं प्रस्तुत कीं । संगोष्ठी समापन पर अध्यक्ष श्री श्यामनंदन प्रसाद ने बैठक में उपस्थित रचनाकारों एवं साहित्य प्रेमियों का आभार व्यक्त किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनीपत क्लब की सभा

सोनीपत । नये वर्ष की पूर्व संध्या पर कादम्बिनी क्लब की एक सभा का आयोजन डॉ. सत्यपाल कपूर कन्वीर के निवास स्थान पर डॉ. अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ । सभा में नये प्रतिभावाले युवा कवियों तथा कहानीकारों को ढूंढ़ने एवं कादम्बिनी क्लब में शामिल करने पर विचार-विमर्श किया गया ।

सभा में डॉ. सत्यपाल कपूर, प्रो. धर्मपाल, प्रो. अमरेश्वर भूषण, प्रो. अग्रवाल, प्रो. पूनम, शास्त्री सालिग राम, नरेशपाल शर्मा, प्रो. ओ. पी. गर्ग, प्रो. शारदा रानी, विजय कुमार, राव परुथी एवं अन्य सदस्यों ने भाग लिया ।

सम्मानश्री काव्य संध्या

पयागपुर (बहराइच) । पिछले दिनों हिंदी साहित्य परिषद एवं कादम्बिनी क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान में, सम्मानश्री काव्य संध्या का आयोजन जवाहरलाल नेहरू पयागपुर इंटर कॉलेज में संपन्न हुआ । विद्यालय के प्राचार्य, आचार्य विश्वनाथ पांडेय की अध्यक्षता में, काव्य संध्या के अंतर्गत— आचार्य सरस, फटाफट बहराइची, सनकीजी (लखनऊ), अवधेश शुक्ल (सीतापुर), सोम ठाकुर (आगरा), भारत भूषण (मेरठ), सरलजी (बलरामपुर) तथा जनपद के चुने कवियों ने ललित रचनाओं का पाठ किया । काव्य संध्या में ८ बजे से ४ बजे प्रातः तक रसशर्बरी में काव्य स्निग्ध स्नान श्रोतागण करते रहे । डॉ. सईद आरिफी विशिष्ट कवि थे । प्रधानाचार्य वी. एस. पांडेय ने अतिथियों का स्वागत किया एवं सरस्वती पुत्रों का सारस्वत सम्मान किया ।

कादम्बिनी क्लब का उद्घाटन

पूर्णियाँ । जिला स्कूल पूर्णियाँ के भव्य प्रासाद में 'कादम्बिनी क्लब' का उद्घाटन समारोह, प्रो. कैलाश नाथ तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । विशिष्ट अतिथि शायर वफा मलिकपुरी ने दीप प्रज्वलित कर विधिवत कार्यक्रम की शुरुआत की तत्पश्चात बच्चों ने सरस्वती वंदना की । सत्रारंभ करती हुई संयोजिका श्रीमती मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने 'कादम्बिनी क्लब' की महत्ता एवं उद्देश्यों को रेखांकित करती हुई पूर्णियाँ की साहित्यिक गतिविधियों की चर्चा की ।

तत्पश्चात— धनेशदत्त पांडेय, सुबोध कु. झा, रमेश सप्तर्षि, चंद्रानन 'सीतेश', वफा मलिकपुरी, प्रो. तारीक जमीली, डॉ. महेश नारायण, भोलानाथ आलोक, अर्जुन अरुणेश, नूतन आनंद एवं उत्तिमा केसरी आदि ने क्लब की महत्ता एवं जरूरत पर प्रकाश डाला ।

द्वितीय सत्र में कवि-गोष्ठी डॉ. परमेश्वर गोयल की अध्यक्षता में हुई, जिसमें सुबोध झा,

भोलानाथ, यमुना बसाक, अभिमन्यू लाल, प्रो. दानिश, प्रो. तारीक जमीली, किरण झा, कावेरी मंडल, प्रिया, निम्मीरजा 'नौशिन', शहनवाज अख्तर, अरुण कुमार सिंह, शांति देवी झा, उमेश आदित्य, कृतनरायण 'प्यारा', अमल कुमार विश्वास, अनिल कुमार, देवेंद्र 'देवेश', डॉ. श्यामल, उत्तिमा केसरी, कलाधर, डॉ. रामनरेश 'भक्त', त्रिलोकेश्वर 'तरुण', मयूरेश्वर 'मयूर', लक्ष्मण, कपिलदेव 'कल्याणी', श्री विप्लव, गोपालचंद्र घोष आदि कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया ।

प्रथम सत्र का संचालन मंजुला उपाध्याय ने तथा दूसरे सत्र का संचालन डॉ. रामनरेश 'भक्त' ने किया ।

अंततः धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका श्रीमती मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

३९वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी

नयी दिल्ली : ललित कला अकादमी का ३९वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी १९९६ में १० कलाकारों को राष्ट्रीय अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पुरस्कृत कलाकारों में हैं श्री वसंत वी. सोनवानी, श्री दिनकर एस थोऐ, श्री पी. आर. राजू, श्री फारूक एन. कंट्रैक्टर, श्री ज्ञान सिंह, श्री वेंकटचलपति, श्री सतीश शर्मा, श्री शिव नारायण सिंह अनिवेद, श्री रविंदर सिंह जामवल तथा श्री एस. वेलपुतम।

इसके अतिरिक्त १२ अन्य कलाकारों को भी ललित कला अकादमी ने उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया। इनमें है : श्री हरचरण सिंह गुलाटी, श्री एस. टी. अहीर, श्री अंजन कुमार साहू, श्री जे. नेल्सन केनडी, श्री महेन्द्र, जे. मिस्त्री, श्री इल्डिन, वी. फर्नांडीज, श्री जयंती एल. नायक, श्री सिबा पाणिग्रही, सुश्री प्रीति, मनोज बावा, सुश्री अंजलि विजय भोसले, श्री सुरेश आर. टेलो तथा श्री बी. के. सिंह।

अकादमी के सचिव डॉ. दिननाथ पाठी के अनुसार इस वर्ष प्रतियोगिता के लिए आयीं कुल २२३२ प्रविष्टियों में २३१ कलाकृतियों को प्रदर्शनी के लिए चुना गया।

एम. वेलयुतम की कलाकृति

सिबा पाणिग्रही की कलाकृति

महेन्द्र जे. मिस्त्री की कलाकृति

फारूक. एन. कंट्रैक्टर की कलाकृति

शिव नारायण सिंह अनिवेद की कलाकृति

ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने लंदन में हिंदी कवयित्री दिव्या माथुर के कविता संग्रह 'रेत का लिखा' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर कादम्बिनी के संपादक श्री राजेंद्र अवस्थी, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ. गंगा प्रसाद विमल, श्री कन्हैया लाल नंदन, श्री बेकल उत्साही, श्री बशीर अहमद मयूख तथा नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक श्री गोपाल कृष्ण गांधी भी उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या पूर्ति—१९८

रंग हमारे

प्रथम पुरस्कार

मन-मिलिंद के भाव अब उड़ने लगे अनंत
सुमन-राशि खिलने लगी आयो जान बसंत
आयो ज़ान बसंत प्रबल नव उठीं उमंगें
मधुर गीत की तान उड़ाने लगीं तरंगें
बिंदी रुचि परिधान सजे कुंडल रतनारे
रुको—रुको ऋतुराज देख लो रंग हमारे

— डॉ. हरनारायण सिंह

अजयगढ़, जिला—पन्ना (म.प्र.)-४८८२२०

द्वितीय पुरस्कार

रंग हमारे रसभरे अद्भुत अमित अनूप
लोल लोचनों में लसी इंद्रधनुषिया धूप
इंद्रधनुषिया धूप रूप मधुरिम स्वर बोले
शीतल मंद सुगंध पवन में मधुरस घोले
पियकृत रंग में रंगे अलंकृत अंग हमारे
एक रंग हो गये सखी सब रंग हमारे

— निर्मला शर्मा

बी-९१, मनुस्थली
भजनपुरा, दिल्ली-११००५३

तृतीय पुरस्कार

साजन के आवन की सुध में, तन-मन में यूं फाग जगा रे
बिरहन को ऋतुराज सजाये, दर्पण को अनुराग लगा रे
दिल उत्सव का आज मनाएं, गाये तू जो संग पिया रे
छेड़ राग जीवन वीणा पर, रंग जा तू भी रंग हमारे

— चंदा पांडेय

द्वारा—श्री नृपेन्द्रनाथ पांडेय
विक्टोरिया कोलियरी लाल बाजार
पोस्ट—लाल बाजार (कुल्टी)
जिला—बर्दवान-७१३३४३
(पश्चिम बंगाल)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फार्म-4 (नियम 8 देखिये)

कादम्बिनी

1. प्रकाशन स्थान : नई दिल्ली
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : राकेश शर्मा
   क्या भारत का नागरिक है? : हाँ
   (यदि विदेशी है तो मूल देश) : × × ×
   पता : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
4. प्रकाशक का नाम : राकेश शर्मा
   क्या भारत का नागरिक है? : हाँ
   (यदि विदेशी है तो मूल देश) : × × ×
   पता : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
5. सम्पादक का नाम : राजेन्द्र अवस्थी
   क्या भारत का नागरिक है? : हाँ
   (यदि विदेशी है तो मूल देश) : × × ×
   पता : दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड, नई दिल्ली-110001
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों :
   1. उदित (इंडिया) लिमिटेड
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   2. पिलानी इनवेस्टमेंट एंड इंडस्ट्रीज कारपोरेशन लिमिटेड
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   3. उषा ब्रेवैल लिमिटेड
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   4. ब्राइटैक्स (इंडिया) लिमिटेड
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   5. दि बिड़ला कॉटन स्पिनिंग एंड वीविंग मिल्स लिमिटेड
      18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली
   6. इस्टर्न इंडिया एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   7. हिन्दुस्तान मेडिकल इंस्टीट्यूशन
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   8. हिन्दुस्तान चैरिटी ट्रस्ट 1959
      78, सैयद अमीर अली एवेन्यू, कलकत्ता
   9. सुशीला बिड़ला मेमोरियल इंस्टीट्यूट
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   10. बिड़ला सेंटर फॉर मेडिकल रिसर्च
      78, सैयद अमीर अली एवेन्यू, कलकत्ता
   11. हिन्दुस्तान वैलफेयर ट्रस्ट
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता
   12. मंजूश्री चैरिटी ट्रस्ट
      9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कलकत्ता

मैं, राकेश शर्मा, एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह०/- (राकेश शर्मा)
प्रकाशक

दिनांक : 29 फरवरी, 1996

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ArnikaPlus - TRIOFER

बालों का गिरना ? असमय सफेद होना ? रूसी ?

बालों की समस्या ?

ये सब बालों के रोग नहीं, रोग के लक्षण मात्र हैं। इनके समाधान के लिए सिर में लगाने की औषधि के साथ-साथ खाने की सटीक दवा की भी जरूरत है।

रूसी रहित, सघन, काले, रेशमी बालों के लिए **अर्निकाप्लस** लगायें और **ट्रायोफर** खायें। बालों का गिरना बंद करें। बालों को पोषाहार प्रदान करें। असमय सफेद होने से रोकें, सिर से रूसी भगायें, सिर को ठंडा रखें, पेट की गड़बड़ी दूर करें, बालों का उपादान बढ़ायें, तभी तो नये बाल निकलते हैं। होमियोपैथिक के स्पर्श से रूप में निखार आये। इससे लाभ छोड़कर हानी नहीं होती।

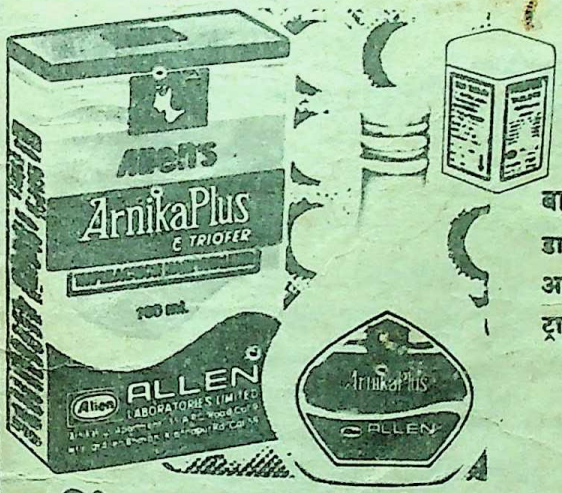

विश्व में पहली बार

बालों की समस्या के समाधान के लिए

डा. सरकार का एक फलप्रद आविष्कार-

अर्निकाप्लस-तेल रहित होमियो हेयर लोशन और

ट्रायोफर टैब्लेट-होमियो हेयर टॉनिक

बिलकुल नई, नये रूप में
ट्रायोफर टैबलेट ब्लिस्टर पैक में।
अर्निकाप्लस लोशन के साथ
जल्द ही आ रहा है।

व्यवहार करने की विधि
भीतर में है।

अर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल एक्शन हेयर वाइटलाइजर

बालों की समस्या के समाधान के लिए अच्छी तरह से परखा हुआ और प्रमाणित होमियो औषधि।

06-95

लिवोसिन निर्माताओं की सहयोगी संस्था Allen की होमियो गवेषणा का एक तोहफा।

एलेन लेबोरेटरीज लिमिटेड

अर्निकाप्लस अपार्टमेन्ट, कलकत्ता-९, फोन : ३५१-००४४

एलेन हाउस : कलकत्ता-५४ फोन : ३६-३०९६

विपणनकर्ता : Allens एलेन्स लि

LIVOSIN

Allen's Dia Indica

BoroAllen

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके अर्थ भी। शब्दार्थ देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही अर्थ हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये अर्थों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. सकंटक— क. प्रतिकूल, ख. द्वेषपूर्ण, ग. कंटीला, घ. निर्दय।

२. सकरुण— क. दानशील, ख. सहनशील, ग. उदार, घ. कोमलचित्त।

३. विच्युत— क. अवनत, ख. पराजित, ग. गिरा हुआ, घ. बहिष्कृत।

४. विजित— क. जिसने विजय प्राप्त की हो, ख. जिस पर विजय हुई हो, ग. विफल, घ. जो जीने की कामना से रहित हो।

५. विजयदुंदुभि— क. युद्ध शुरू करने का ढोल, ख. विजय के समय बजाया जानेवाला नगाड़ा, ग. सफलता का शोरगुल, घ. विजयादशमी पर बजाया जानेवाला बाजा।

६. भावभीनी— क. भावुक, ख. विचारशील, ग. स्नेह भाव से ओतप्रोत, घ. भावों से पूर्ण।

७. भुक्तभोगी— क. अनुभवी, ख. जो किसी चीज का दुःख-सुख उठा चुका हो, ग. कष्टभोगी, घ. दंडित।

८. मात्सर्य— क. किसी का उत्कर्ष देखकर जलना, ख. चोरी, ग. विद्वेष, घ. शत्रुता।

९. [illegible]संकल्प— क. दृढ़ता, ख. जिसने [illegible] ग. प्रतिज्ञा, घ. तीर।

१२. पराङ्मुख— क. विरुद्ध, ख. दूसरी ओर, ग. विमुख, घ. विपरीत।

१३. परिकथा— क. परी-कथा, ख. समानांतर कथा, ग. लघु कथा जो बड़ी कथा के अंतर्गत हो, घ. उल्टी कहानी।

१४. भीरुचेता— क. कायर, ख. अनिश्चय की स्थिति में, ग. अशांत, घ. संदिग्धावस्था में रहने का आदी।

उत्तर

१. ग. कंटीला, कष्टप्रद। जीवन में कुमार्ग **सकंटक** है। स+कंटक (व्युत्.—कण्ट्)

२. घ. कोमलचित्त, करुणाशील। मनुष्य को दूसरों के प्रति **सकरुण** होना चाहिए। स+करुण (व्युत्.—कृ+उवन्)

३. ग. गिरा हुआ, अधःपतित। सुमार्ग से **विच्युत** मनुष्य अपमान का भागी होता है। वि+च्युत।

४. ख. जिस पर विजय हुई हो। **विजित** भूखंड पर विजेता का बलात शासन होता है।

५. ख. विजय के समय बजाया जानेवाला नगाड़ा। **विजयदुंदुभि** बजने पर विजेता को अपार हर्ष होता है। विजय

[illegible] एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह०/- (राकेश शर्मा)
प्रकाशक

दिनांक : 29 फरवरी, 1996

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदाई दी गयी । (भाव+भीनी)

७. ख. जो किसी चीज का दुःख-सुख उठा चुका हो । वह **भुक्तभोगी** है । (भुक्त+भोगी)

८. क. किसी का उत्कर्ष देखकर जलना । विरोधी का उत्कर्ष देखकर मन में **मात्सर्य** होता है । (व्युत्.—मत्सर)

९. ख. जिसने कोई निश्चय किया हो । वह राजनीति में प्रवेश के लिए कृतसंकल्प है । कृत (व्युत्.—कृ) +संकल्प (व्युत्.—सम्+कृप्)

१०. घ. जटिल समस्या, जिसका पूरा होना कठिन हो । योजना के कार्यान्यन पर **प्रश्नचिह्न** लगा है । (प्रश्न+चिन्ह)

११. ख. शौर्य संग्राम में विजय **पराक्रम** के बल पर ही होती है । (परा+क्रम)

१२. ग. विमुख । वह राजनीति से **पराङ्मुख** हो गया है ।

१३. ग. लघुकथा जो बड़ी कथा के अंतर्गत हो । महाभारत में अनेक **परिकथाएं** हैं । (परि+कथा)

१४. क. कायर । **भीरुचेता** होना मनुष्य के लिए भारी कलंक की बात है । (भीरु+चेता)

पारिभाषिक शब्द

Annuity Deposit	=वार्षिकी जमा
Fixed Deposit	=सावधि जमा
Provident Fund	=भविष्य-निधि
Bonus	=बोनस

कद लम्बा कीजिये !!!

छोटा कद अब तक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद किसी कारण हो, अब 10 से 40 वर्ष तक की आयु के बच्चे, स्त्री, पुरुष हमारी दवा P.H.C. द्वारा 2 से 10 सै. मी. तक कद लम्बा करें। एक माह की दवा का मूल्य 140 रुपये डाक खर्च 30 रुपये अलग। जल्द लाभ के लिए P.H. Gold एक माह का ईलाज 450/- डा खर्च अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, विवाह-शादी, प्राईवेट, सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता है। किसी तरह के व्यायाम की जरुरत नहीं। कोई SIDE EFFECT नहीं। गारंटी :- पूरे कोर्स के बाद परिवर्तन न हो तो आधा मूल्य वापस।

ताकत बढ़ायें शान से जियें

बचपन की गलतियों के कारण या उम्र की अधिकता से पेशाब का बार-बार तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आँखों के आगे अन्धेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, मरदाना कमजोरी आयुर्वेदिक इलाज जादू की तरह असर करने वाली आयुर्वेदिक बूटियां, भस्मों, कुश्तों आदि का प्रयोग होता है.

केवल पुरुषों के लिए तिला की मालिश से कुछ दिनों में छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है. खाने व मालिश के इलाज का खर्च 190/-, दूगनी ताकत 350/-, तीन गुणी ताकत 500/-, शाही ईलाज 1700/-

विद्यार्थियों के लिये वरदान

दवा M.P. विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन लगाती है. दिमागी परेशानी दूर कर, परीक्षा के डर को समाप्त करती है. एक बार पढ़ी बात जिन्दगी भर याद रहेगी. दिमागी काम करने वाले विद्यार्थी, प्रोफेसर, कलर्क, वकील, जजों तक लाखों लोगों ने लाभ उठाया है. 30 दिन का ईलाज 150/- रुपये।

नाक के आपरेशन से डरें पुराना जुकाम बिगड़ कर दमा बन जाता है, नाक का बंद रहना, मस्सा या हड्डी का बढ़ जाना, लगातार छीकें, दिमाग से रेशा गिरना, गला खराब होना। 30 दिन का ईलाज 180/- रु।

मोटापा बढा हुआ पेट, [illegible]

एलेन लेबोरेटरीज लिमिटेड
अनिकाफ्लम अपार्टमेन्ट, कलकत्ता-९, फोन : ३५१-००४४
एलेन हाउस : कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

Allen's Rx India

AroAllen

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ३६, अंक ६, अप्रैल, १९९६

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

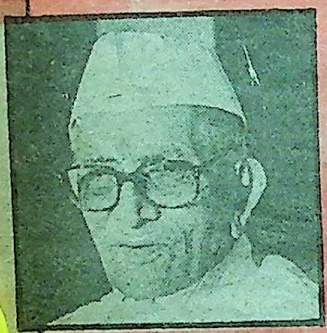

● मोरारजी देसाई : एक शालीन व्यक्तित्व
कृपा नारायण..... २२

● उपेक्षा के दंश को झेलता मलूटी
मीरा झा..... ६८

निबंध एवं लेख

जब नदियां नागिन की तरह नाचीं
स्वामी वाहिद काजमी..... ३०
रति-सुख किसे अधिक : पुरुष को या स्त्री को
डॉ. शोभा निगम..... ३४
लहराते जंगल सुखदायक हों
डॉ. डी. एन. तिवारी..... ४४
होम्योपैथी के जनक हैनीमैन
डॉ. मधुसूदन शर्मा..... ४८
मेरी पूजा किये बिना जल पीते हो
जियालाल आर्य..... ५०
उर्दू गजल से बहुत पीछे है हिंदी गजल
प्राण शर्मा..... ५८
जब औरतों ने दुपट्टे फेंके
अजय कुमार..... ७३
कवियों की विचित्र कल्पनाएं : सभी सच नहीं हैं
डॉ. ऊषाकांता चतुर्वेदी..... ८७
खंडहर हो रहे हैं सास बहू के मंदिर
कु. राजपाल सिंह..... ९५
त्रिपुरा की लोक कथाओं में अद्भुत प्रेम प्रसंग
हर्षमोहन कृष्णात्रेय..... १०२
सोरठियो दूहो भलो
बी. एल. माली 'अशांत'..... ११२
जल प्रलय : कहानी विभिन्न धर्मों में
अल्लाम अलहिन्दी..... १४८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

शकुन-अपशकुन लोक साहित्य में
अशोक स्नेही.....१५२
महाकवि निराला और नये समाज की कल्पना
डॉ. हीरालाल बाछोतिया १६४
वहां चाहते हुए भी हम प्रार्थना नहीं कर सकते
आचार्य महाप्रज्ञ.....१६७
प्रेम विवाह भी एक धोखा है
अर्चना सौशिल्य १७२
दास्तां कुछ भूलों की, जो भुलाए न बनें
राजेश ज्वेल.....१७८
वर्ष का राजा बुध : कहां क्या होगा
के. ए. दुबे पदेश.....१८४

● धरती का पेट फाड़ डाला
सुंदरलाल बहुगुणा...१२६

● जंगल उनका घर है
राजेन्द्र अवस्थी....१३४

कहानियां एवं व्यंग्य

निरंकुश राजा त्रेन
डॉ. सुधा पांडे..... ३७
वह कौन थी
सुरेश कुमार गोयल..... ६३
खामोशी में डूबी सांसें
डॉ. शिवनारायण चतुर्वेदी ७७
दुर्गंध
शोभा वारियर १०६
एक मुखाकृति दीवार पर
ई. बी. ल्यूकस ११६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाय, बैल और सरकारी कायदे कानून □ डॉ. मीनाक्षी गोस्वामी १२३
मिलाप सिंह □ विजय अग्रवाल १४०
छोटी-सी जिद □ मनजीत कौर भाटिया.....१५६
धूप का चश्मा □ संतोष खरे १८२

कविताएं

मोहनी वाजपेयी □ डॉ. चंद्रप्रकाश वर्मा १८७
मनोहर वंद्योपाध्याय □ उपेन्द्र श्रेष्ठ १८८
उद्भ्रांत.....१८९

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य-४, ज्ञानगंगा-५, प्रतिक्रियाएं-९, कालचिंतन-१३, आखिर कब तक-१८, आस्था के आयाम-२७, प्रेरक-प्रसंग-२८, आइए चलें जंगल की ओर-४२, यह महीना और आपका भविष्य-५६, गोष्ठी-८४, तनाव से मुक्ति-९२, विधिविधान-९८, बुद्धि-विलास-१०१, प्रवेश-१२०, ज्योतिष समस्या और समाधान-१५४, वैद्य की सलाह-१६१, इनके भी बयां-जुदा-जुदा-१७९, व्यंग्य-तरंग-१७६, नयी कृतियां-१९०, क्लब समाचार-१९४, सांस्कृतिक समाचार-१९६, समस्या-पूर्ति-१९८।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल,
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान : अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)
अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।
शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
आवरणचित्र : भगवान दास रूपानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

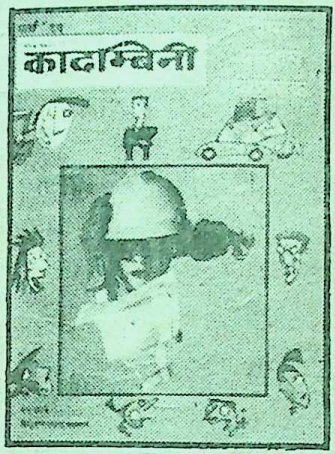

पुरस्कृत पत्र

कादम्बिनी का हास-परिहास विशेषांक पढ़ा । सचमुच अपने आप में अद्भुत व अमूल्य है । आज जब जिंदगी इतनी उबाऊ हो रही है तथा जिंदगी के निर्मल रंगों में कड़ुवाहटों का जहर इस कदर घुल गया है कि जिंदगी बोझिल बन गयी है । ऐसे में कादम्बिनी के हास-परिहास विशेषांक ने थोड़ी देर ही सही, पर सारी कड़ुवाहटों को भुला दिया एवं मन को अंदर तक गुदगुदा दिया । जिंदगी के सारे दुःख एवं नेताओं के हवाला कांड, कादम्बिनी के अंक से उत्पन्न निर्मल हंसी में आकंठ तक डूब गये ।

आपके अंक में छपे 'मॉडलिंग के नाम पर बिक रही है सुंदरियां' पढ़ा, इस विषय में मैं भी कुछ कहना चाहूंगा । आज भारत में मॉडलिंग एवं नारी देह का भोंडा प्रदर्शन पर्यायवाची बन गया है । भारतीय नारी का आज से पहले इतना खुला प्रदर्शन कभी नहीं हुआ । भारतीय नारी की जो महिमा हमारे कवियों ने दी है, हमारे विज्ञापनों ने, उसकी धज्जियां उड़ा दी हैं । नारी देह को अधिक से अधिक उजागर करने की होड़ में लगी हुई ये विज्ञापन एवं मॉडलिंग एजेंसियां, सभ्यता के सभी मापदंड भूल चुकी हैं ।

सौंदर्य प्रतियोगिताएं निहायत फूहड़ एवं असभ्यता का बेजोड़ नमूना हैं । अपने अंगों का बड़ी बेशर्मी से प्रदर्शन कर ये सुंदरियां ऐसे इतराती हैं जैसे इन्होंने बहुत बड़ा तीर मार दिया हो । सौंदर्य प्रतियोगिताओं में बाकायदा दर्शक होते हैं जिनसे बड़ी-बड़ी फीसें एडवांस में ऐंठ ली जाती हैं । मैथिलीशरणगुप्त ने नारी के बारे में लिखा था 'नारी तुम श्रद्धा हो' ऐसी नारी सौंदर्य प्रतियोगिताओं में कहीं नहीं मिलती । सौंदर्य प्रतियोगिताओं में ३६-२४-३६ का आकार भिन्न-भिन्न पोजों में दर्शकों के सामने ऐसे लुभावने अंदाज में परोसे जाते हैं कि दर्शक का सारा ध्यान नारी के उन अंगों की तरफ घूमता है जिसका उसने इन प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन किया था ।

आज की भारतीय नारी अपने अतीत गौरव को भूल गयी है । 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र देवता रमयन्ते' का उदघोष लगानेवाला देश जब रुपये की चमक में अंधा होकर अपनी मां-बहनों का विज्ञापन 'निरोध एवं माला डी' के पैकटों पर देगा, तो फिर भारतीय नारी की इज्जत विश्व में क्या रह जाएगी ?

भारतीय नारी एक बार फिर भूल गयी है कि पश्चिमी सभ्यता से नकल उसका लक्ष्य नहीं होना चाहिए । गोवा के समुद्र तटों पर निवर्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचरना अगर पश्चिमी सभ्यता है तो हमें इससे कोई मतलब नहीं । हमारी नारी की तो सभ्यता यही है वह सुरुचिपूर्वक रहें एवं मर्यादित आचरण करें । भारतीय नारी को यह नहीं भूलना चाहिए कि वह किसी की बेटी है, बहू है, पत्नी है, परंतु प्रत्येक रूप में उसका मां का ही झलकता है । कहीं उसका 'मां' वाला रूप धूमिल न पड़े यह भारतीय नारी को विशेष ध्यान रखना होगा और उसे ऐसे विज्ञापनों से, मॉडलों से, सौंदर्य प्रतियोगिताओं से परहेज करना होगा जो उनके अंगों का प्रदर्शन स्वादिष्ट व्यंजनों के रूप में करता है ।

— अनंत शर्मा 'अनंत'

१७४६, फेस-१०, मोहाली

प्रोत्साहन पत्र

सरदियों में धूप-सी' नामक लेख में लेखिका ने संस्कृत के कवि के दोहे को उद्धृत करके बताया है कि कुएं का जल, ईंटों का गारे की चिनाई करके बनाया गया घर, वट का वृक्ष एवं श्यामा युवती सरदियों में उष्णता एवं गरमियों में शीतलता प्रदान करती है ।

मेरी समझ में किसी व्यक्ति को 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' को ही नहीं चरितार्थ करना चाहिए बल्कि उसे यह भी देख लेना चाहिए कि मेरे द्वारा जो कुछ कहा जा रहा है अथवा लिखा जा रहा है वह व्यावहारिक है अथवा नहीं ।

लेखिका द्वारा लिखी गयी कुएं के जल की बात छोड़कर शेष तीनों बातें विचारणीय हैं । [illegible] वट का वृक्ष ही गरमियों में शीतलता एवं [illegible] उष्णता प्रदान करता हो, व्यावहारिक [illegible] तो यह गुण प्रत्येक वृक्ष में पाया जाता है लेकिन 'महुए का वृक्ष गरमियों में सबसे अत्यधिक शीतलता एवं सरदियों में सबसे अधिक उष्णता प्रदान करता है । शायद यही कारण है कि कुछ खानाबदोश जन जातियों को यह वृक्ष सबसे अधिक प्रिय होता है ।

इसी प्रकार कच्ची मिट्टी के द्वारा निर्मित दीवारों एवं घास-फूस एवं मिट्टी से पाटे गये मकान बरसात के मौसम को छोड़कर सभी मौसमों में ईंट के द्वारा निर्मित मकानों की अपेक्षा अधिक सुख प्रदान करते है ।

उपरोक्त तीनों बातों को तो मैंने अनुभव किया है लेकिन गरमियों में शीतलता एवं सरदियों में उष्णता प्रदान का गुण केवल श्याम रंग वाली युवती में ही होता हो यह बात भी मेरे गले के नीचे नहीं उतरती है ।

हिंदी के किसी कवि द्वारा रचित इस दोहे में कितनी सत्यता है आप स्वयं ही निर्णय करें :

नारि, पटौंहा, कूपजल, अरु तरुवर की छांहि ।
गरमी में ठंडे लगे, ठंडी में गरमाहि ॥

— ब्रजेंद्र त्रिवेदी

सेमौरा, हुसेनगंज, फतेहपुर (उ. प्र.)

तुम सम पुरुष

व्यंग्य एवं हास्य कथाओं में 'नाक काटने की प्राचीन परंपरा हमारी प्रशासनिक व्यवस्था पर व्यंग्य है । मानस में सूर्पनखा की नाक कटने की बात नारी की सहज लज्जा के परित्याग के कारण है । जब वह स्वयंवरा बनकर 'तुम सम पुरुष न मो सम नारी' का दंभ भरती है, उसकी नाक कटती है ।

जब वह सीता-जैसी लज्जाशील 'चहु दिशि चितइ पूछ मालीगन' को अपनाती है वह समाज की आराध्या देवी बन जाती है, जिससे बलात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरण करने पर स्वयं राम हरणकर्ता का वध करते हैं। जबकि नाक लक्ष्मण से कटवाते हैं। यह बात विचारणीय है कि सीता-जैसी लज्जाशील बने, सूपर्नखा-जैसी उच्छृंखल न बने।

— शिवहरी व्यास
पिपरिया, होशंगाबाद

तनाव से मुक्ति में सहायक

ऐसे तो यह पत्रिका केरल में शायद ही देखने को मिलती है (बड़े शहरों को छोड़कर) इसलिए अत्यधिक खुशी हुई, जब फरवरी ९६ अंक अचानक देखने को मिला। प्रेरक प्रसंग सचमुच प्रेरणादायक हैं। एक अरसे के बाद कालचिंतन पढ़ने को मिला जिसके लिए यह पत्रिका जानी जाती है। इस अंक में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम पर भी काफी लाभदायक जानकारी दी गयी है। इस तरह की सविस्तार जानकारी साधारणतः हिंदी पत्रिकाओं में संकलित नहीं होती है। 'महिलाओं से अधिक पुरुष करते हैं आत्महत्याएं', डॉ. विनोद गुप्ता का निबंध काफी सशक्त तथ्यों से परिपूर्ण है।

'प्रवेश' की सारी कविताएं अच्छी लगीं। डॉ. अनिल पांडेय का व्यंग्य लेख 'बाज आये पुलिस आफिसर बनने से' काफी सशक्त है। इस भागदौड़ के माहौल में ऐसे सरल-सरस लेख तनाव से मुक्ति दिलाने में काफी प्रभावशाली सिद्ध होंगे।

—मीता मिश्रा
रामवरमापुरम्,
त्रिचूर (केरल)

रामराम

'कादम्बिनी' (फरवरी'९६) में पृष्ठ ६९ पर प्रकाशित लेख 'अयोध्या पर आज भी आक्रमण हो रहे हैं,' पढ़ा। अयोध्या का इतिहास और भूगोल अनजाना और अनचीन्हा नहीं है, किंतु यह लेख, इसके शब्द, इसके वाक्य, समूची

रहस्य-रोमांच की घटनाओं से भरपूर

कादम्बिनी का
अगला विशेषांक

जून, १९९६

रहस्य-रोमांच
विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामग्री पूर्व-परिचित-सी प्रतीत हुई । स्मृति पर बल दिया, निजी ग्रंथ-संग्रहालय में छानबीन की तो रहस्य खुल गया । इसके लेखक (अथवा लेखिका ?) ज्योति खरे एकदम खरे नहीं हैं । इनका खोटापन गीता प्रेस, गोरखपुर के 'तीर्थांक' (संवत २०५२ द्वितीय संस्करण) ने उजागर कर दिया । उपरोक्त ग्रंथ के पृष्ठ १४२ से १४४ तक पढ़ जाइए, आपको ज्ञात हो जाएगा कि 'कादम्बिनी' का लेख उसी रचना की कार्बन-प्रतिलिपि है । पत्रिका में प्रकाशित खरे जी के पते से परिचय मिलता है कि वे किसी 'अभिसारिका' नामक पत्रिका की संपादक हैं । राम-राम ! एक संपादक होकर भी वे नैतिक मूल्यों के प्रतिपादक नहीं हैं । क्या इस प्रकार की साहित्यिक चोरी निंदनीय नहीं है ? मैंने अपना कर्त्तव्य-पालन कर दिया है,अब आप जानें और वे जानें । राम-राम !

— डॉ. जी. डी. गुप्त,
जनकपुरी, राजेन्द्रनगर, लखनऊ

(संपादक सर्वज्ञ नहीं होता । ध्यान आकर्षण के लिए धन्यवाद । ज्योति खरे की रचनाएं यथासंभव आगे प्रकाशित नहीं होंगी ।— सं.)

गौरव की बात

मैं पिछले कई वर्षों से 'कादम्बिनी' की पाठिका हूं । इस अहिंदी भाषी क्षेत्र में 'कादम्बिनी' का उपलब्ध होना बड़े ही गौरव की बात है । विगत कई अंकों में आपने दक्षिण भारत के ऐतिहासिक एवं रमणीक पर्यटन स्थलों के बारे में कोई आलेख प्रकाशित नहीं किया । आशा है भविष्य में इस तरह के आलेख प्रकाशित कर हमें लाभान्वित करेंगे ।

—आराधना
रेडियोपालयाम, पांडिचेरी

कहानी विशेषांक निकालें

मैं 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं । लेकिन पत्र पहली बार लिख रहा हूं । नेपाल के साहित्यकार स्व. श्री लक्ष्मी प्रसाद देवकोटाजी के बारे में विर्ख खडका डुवर्सेलीजी का स्मृति लेख 'जरूर साथी मैं पागल, ऐसा ही है मेरा हाल' पढ़ा । धन्यवाद ! पत्रिका का प्रत्येक लेख ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद, रोचक एवं संग्रहणीय योग्य है । कालचिंतन मन के अंतर आत्मा को छू लेता है । आत्म तृप्ति के लिए 'कादम्बिनी' पर्याप्त है । कहानी विशेषांक प्रकाशित करें ।

—मोहन महत,
खोपासी, नेपाल

समाधान आपने किया

जब भी कोई विज्ञापन देखती हूं तो पाती हूं कि घड़ी में समय १० बजकर १०-१५ मिनट ही होता है, तब यही विचार मन में आता है कि इसके पीछे कोई ठोस कारण होगा ! बहुत लोगों से इस विषय में पूछा, परंतु इसका उपयुक्त उत्तर कहीं से भी नहीं मिला । एक दिन 'कादम्बिनी' पढ़ते समय 'गोष्ठी' कॉलम पर ध्यान गया तो लगा शायद इसका समाधान आप कर पाये ।

—नीरा पुं
फरीदाबाद

काफी प्रसन्न हुआ

वर्षों से 'कादम्बिनी' पढ़ता आ रहा हूं । किंतु यह मेरा पहला पत्र है । फरवरी ९६ के अंक में प्रकाशित श्री रतनलाल जोशी द्वारा लिखित 'रिश्वत नहीं तो कुछ भी नहीं' लेख पढ़कर काफी प्रसन्न हुआ ।

—ऋषिदेव सिं
मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- वृद्ध, महामना, दूर हिमालय की वादियों में हमेशा रहते हैं— सरद हवाएं हों या बरफ और पानी के उत्पात । गरमी होती ही नहीं... !
- गरमी होती नहीं का अर्थ नहीं कि सूरज नहीं निकलता ।

— सूर्य सहस्त्र-ऊर्जाओं के साथ रश्मि-वर्षा करता है । वर्षा करते हुए वह ताप स्वयं हर लेता है । वैसे पर्वत-वासियों का कहना है, दिन में सूरज कांटे चुभाता है, शाम होते ही चंद्रमा में बदलकर झूले झुलाने लगता है ।

- कितना विरोधाभास है । इन विरोधाभासों के बीच हर कोई नहीं रह सकता ।
- कांटे चुभाने की प्रक्रिया को उपेक्षा मान लिया जाए तो झुलाने की प्रक्रिया प्रेम का प्रत्याक्षर माना जाएगा ।

□

— प्रेम और प्रतिकार: जीवन के दो विभिन्न पहलू हैं । उनका अपना अर्थ है ।

— पूछा था मुझसे उन्होंने : कितना खाते हो ?

— कहा मैंने, दो रोटियां सुबह, कभी तीन, लेकिन तवे की !

— और शाम ?

— मत पूछिए, मेरा दुर्भाग्य और सौभाग्य सूर्य के अस्ताचल और चंद्र के उदय के बाद ही प्रारंभ होता है ।

— यानी ?

— मिल जाए तो दुगना, न मिले तो शैवक शैय्या में सोता है यथार्थ ?

— अजीब आदमी हो तुम ?

— जी, लेकिन आदमी हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— मुंह लगते हो, घमंडी हो ! क्रोध कितना करते हो ?

— एक चुप्पी !

— समझ गया मैं, क्रोधी हो तुम । क्रोध या आक्रोश तुम्हें ही मारेगा । तुम्हारा ही भक्षण करेगा वह ! क्रोध का न मुख होता और न पेट...

□

— जी, आप क्या कहते हैं ?

— तुम कितना खाते हो ?

— बता चुका हूं मैं, क्यों कुरेदते हैं आप संवेदनाओं के शीश-महलों को । शीश-महल सौंदर्य और नैसर्गिकता के प्रतीक हैं, टूटेंगे तो...

— ठहरो !

— जी ठहर गया, आज्ञा ?

— शीशमहल टूटेंगे तो कांच ही नहीं फूटते, संपूर्ण इकाई फूटती है ! कांच को फूटने मत दो : रेत से बना है वह, रेत में बदल जाएगा, ठगे और ठहरे रह जाओगे तुम !

□

— 'मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं' बिना मेरे उत्तर के बोले वे । बोले तो बोलते गये :

'क्रोध कितना आता है तुम्हें... !' मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना कहते गये, 'बहुत !...बहुत क्रोध आता है तो तुम अपना आपा खो बैठते हो ! तुम मारपीट सकते हो, भाग सकते हो, हत्या कर सकते हो या आत्महत्या भी । क्रोध से बड़ा दावानल और कुछ नहीं है । क्रोध के बाद विद्वेष, घृणा और विषाद के कैकटस उगते हैं । इन कैकटसों में फूल नहीं खिलते । इनका हर कांटा एक नये पौधे को जन्म देता है । इस तरह तुम क्रोध करते हो, शांत भी हो जाते हो लेकिन पुष्पहीन कैकटसों का वन भी छोड़ जाते हो ।

● जानते हो क्रोध से क्या होता है ?

— मुंह खोलूं कि धाराप्रवाह निर्झर : क्रोध से तुम्हारा मन ही नहीं टूटता, तन भी टूटता है । क्रोध से चिनगारी नहीं निकलती किंतु दावानल फूट पड़ता है । क्रोध से तुम अपना अस्तित्व समाप्त कर देते हो । क्रोध से आक्रांत तुम अकेले और बौने हो जाते हो, मित्र पास भी नहीं फटकते... !

— मैंने हाथ उठाया और तीव्र प्रतिकार किया, 'प्रभु, जो भी हों आप मैं समर्पण नहीं करूंगा । पराजय का मैं विरोधी हूं ! अपनी प्राण-वायु को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

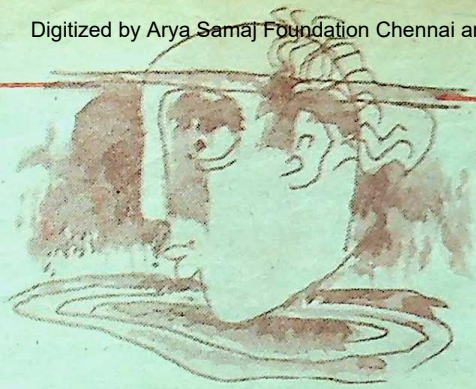

हथेलियों में लेकर चलता हूं... !'

— 'ठहरो, ठहरो', रोका उन्होंने कहा, 'मेरी आंखों में देखो !'

— कहा मैंने, 'प्रभु , मेरी आंखें आपसे ज्यादा आकर्षक हैं, प्रमाण दूं ।'

— 'नहीं' अत्यंत संयत थे वे, मैंने कब कहा यह । मैं बताना चाहता था, 'तुम्हारा सौंदर्य तुम्हारी आंखों में है । तुम्हारा सौंदर्य तुम्हारे चेहरे में है । अपने आभामंडल को देखा है कभी... ! नहीं, नहीं, नहीं देखा तुमने; चमकते हुए अपने ललाट को स्वयं कैसे देखोगे । आभामंडल तुम्हारी चेतना है । आभामंडल का अर्थ है, वह चेतना जो शरीर के रोम-रोम से बाहर बहकर बढ़ती है...'

— कहते गये वे, 'उठते ही आभामंडल दीप्त हो जाता है । सूर्य के उदय होते ही वह सतरंगी बनता है और...और ध्यान से सुनो, रात्रि को जब सोते हो तुम, रोशनी व्यर्थ है; तुम्हारा आभामंडल प्रकाश-स्तंभ का काम करता है । तुम स्वयं नहीं देख सकते लेकिन बता रहा हूं मैं यह रहस्य तुम्हें... !'

□

— तिलमिला उठा मैं ।

— आक्रोश की एक किरण उभरी ।

— मुख उद्भाषित होने को आतुर !

— हाथ उठाकर बोले वे, 'शांत...शांत'; मुसकराओ तो ?

- एक मुसकान मंदिर की सीढ़ी है !
- एक मुसकान शांति का स्वर है ।
- एक मुसकान समझौते का प्रतिवेदन है ।
- एक मुसकान प्रेम की व्याकुलता का अ-व्याकुल क्षण है ।
- एक मुसकान तुम्हारे मनुष्य होने का परिचय है और वही एक मुसकान तुम्हें मनुष्य से मनुष्येतर की ओर ऊर्धाकाश में ले जाकर अनंत, अविराम अनश्वर होने का महाभिषेक है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- मुसकराओ, मुसकराओ एक बार फिर !
- तुम्हारे बारीक और नन्हें होंठ मुसकान के प्रतिहारी हैं ।
- तुम्हारा चेहरा मुसकान का भागीदार बनना चाहता है
- एक मुसकान; अनंत सुख, अनंत समृद्धि : वैभव, विलास; शांत-प्रशांत शीतल ठहरे हुए महासागर का अथाह नील आवरण ।
- एक मुसकान मलमल है ढाके की; एक मुसकान फिसल ता समतल है मखमली शैय्या का; वही एक मुसकान क्रोध का प्रतिरोधी है प्यार का समवर्ती है और प्रत्यार्षण का वह हिमालय है जो बरफानी चोटियों से सूर्य के सतरंगी इंद्रधनुषी रंगों के साथ हमारी पहुंच के परे हमें देता है मौन आमंत्रण; पहुंच नहीं सकते तो देखो सजल नेत्रों से समूचा भरकर मुझे, तुम्हारे आभामंडल का मैं सर्वोच्च स्वामी हूं ।

□

— ध्वस्त त्रस्त, आंदोलित !

— पराजय के क्षण

- कितना खाते हो !
- क्रोध कितना
- ईर्ष्या, द्वेष किससे
- प्रतिरोध, प्रतिकार क्यों
- आरोहण, अवरोहण किसके लिए

— तीव्र स्वर :

- किसके लिए हो तुम ?
- क्यों और कैसे आये ?
- विवश आये हो न !
- जाओगे भी विवश
- फिर...फिर...फिर... !

— प्रतिध्वनियां मुझे घेर लेती हैं ?

— गूंजती हैं आवाजें :

- मुसकान मंदिर की सीढ़ियां हैं
- चेहरा चेतना की सर्वोच्च सीढ़ी है
- क्रोध भूखे ब्याल का अकाल भोजन है
- गर्व और उत्तेजना पतन की बेरहम सीढ़ियां हैं जिनसे हड्डियां ही टूटती हैं
- हरबोलों के बोल प्रभात-किरण के जीवनसाथी हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- नेत्रों की भाषा जुड़ते और टूटते धागे का परचम हैं
- नश्वर और अनश्वर के बीच की दीवार बहुत कच्ची है
- जीते-जी भी मर सकते हो और मरकर भी जीते रह सकते हो !

□

— क्या कर दिया तुमने, प्रभु !

— शहर की सड़कों से गांव की गलियां पारकर इस बीहड़ हिमालय में मैं किसलिए आया था ?

— एक स्वर :

आना सबके वश का नहीं है, आकर कुछ ले जाना सबकी समझ के बाहर है और आने-जाने की प्रक्रिया में सब-कुछ पा लेना उसी के हाथ लगता है जो मणिधारी सर्प से उसका अस्तित्व छीनकर ले जाए ! ऊँ... !

-राजेन्द्र आवस्थी

ज्ञान-गंगा

आदौ मध्ये तथा चान्ते येषां
वाक्यमदोषवत् ।
कष (तुष ?) दाहैः स्वर्णमिव च्छेदेऽपि
स्याच्छुभं शुभम् ॥

(स्कन्दपुराण ४५/९२२)

विद्वानों की बात आदि, मध्य और अंत में एक-जैसी ही रहती है, सोने को काटा जाए, चाहे जलाया जाए, वह शुद्ध ही रहता है ।

विवेक एव व्यसनं पुंसां क्षपयितुं क्षमः ॥
अपहर्तुं समर्थोऽसौ रविरेव निशातमः ॥

(सूक्ति-कुसुमाञ्जलिः ४७)

जिस प्रकार रात्रि के अंधकार को दूर करने में समर्थ केवल सूर्य ही होता है, उसी प्रकार मनुष्यों की विपत्ति को दूर करनने में सक्षम केवल उनका विवेक ही होता है ।

अनिर्वचनीयं प्रेमस्वरूपम् ।
मूकास्वादनवत् ।

(नारदभक्ति सूत्र ५१)

—प्रेम का स्वरूप उसी प्रकार अनिर्वचनीय होता है जैसा कि गूंगों का आस्वादन ।

गृहीत्वा जायते जंतुर्दुःखानि च सुखानि च

(महाभारत, शांतिपर्व १५३/३४)

—मनुष्य दुःख और सुख लेकर जन्म लेता है ।

ज्ञानं न किं किं कुरुते नराणाम् ।

(सुभाषितरत्न संग्रह १८१)

—ज्ञान मनुष्यों का क्या-क्या हित सिद्ध नहीं कर देता ?

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ज्वालामुखी— नाम हवाला

राजधानी में लगता है अचानक एक ज्वालामुखी फूट पड़ा है। उसकी आग पूरे देश में फैल गयी है। इस ज्वालामुखी का नाम है— हवाला। हवाला की महिमा देखिए कि अंगरेजी क्या दुनिया की किसी भाषावालों को इसका कोई जोड़ीदार शब्द नहीं मिला। इसलिए अंगरेजी के अखबार भी ठाठ से हिंदी का प्रचार कर रहे हैं और विदेशी भाषाएं भी हिंदी-प्रचार में लगी हुई हैं। सच पूछा जाए, तो हिंदी का प्रचार देश या विदेश में या तो फिल्में करती हैं, अथवा ऐसे ही किस्से, जो हवाला कांड के रहस्यमय अखबार में किसी को नहीं छोड़ते। हर आदमी को डर है कि कौन, कब इसकी लपेट में आ जाए और अच्छे से अच्छे शक्तिशाली और लोकप्रिय व्यक्ति को अदालत के सामने गिड़गिड़ता हुआ छोड़ दे।

मैंने अपनी जिंदगी में यह अद्भुत कांड पहली बार देखा है। पहली बार दशाओं और दुर्दशाओं के दृश्य देखे हैं। पहले तो मैं सोचता था कि, जब शनि ग्रह वक्री होता है, तभी आफत आती है, अब लगता है, यह तो शनि ग्रह इस पूरे देश और विशेषकर उत्तर भारत में वक्री है, अथवा ग्रह-व्रह छोड़िए, जिसकी लाठी उसकी भैंस! सब पढ़ने-लिखनेवालों को गुरु ग्रह की परम आराधना करनी चाहिए कि वह वक्री न हो और अपनी शीतल छाया से कम से कम उनकी रक्षा करे!

अभी कांड रुके नहीं

अगले चुनाव की चर्चाएं पिसी हुई लाल मिर्च की तरह तेजी से फैल रही हैं, ऐसी मिर्च फैलेगी, तो आंख में पानी आएगा ही! सभी नेताओं की आंखों में पानी है जो राजनीति के मैदान में नये दम-खम के साथ कूदना चाहते हैं, उन्हें यह नहीं मान लेना चाहिए कि उनकी आंखें भी बरकरार रहेंगी।

हवाला के साथ-साथ सैन् किट्स का मामला, चारे-जैसी नाचीज चीज में अरबों-करोड़ों की बातें और परस्पर लेन-देन और उगाही के नये प्रकरण चुनावी दंगल के साथ-साथ मैदान में आते जाएंगे। यही तो दिन हैं जब अखबारों की कीमत आंकी जा सकती है। अब सुबह उठकर बिना अखबार के रहना एकदम मुश्किल काम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे इस बीच में देहातों में जाने का मौका मिला, हुक्का गुड़गुड़ाते हुए वहां भी मुझसे पूछा गया, 'हुजूर यह सब क्या हो रहा है और आगे क्या होना है ?' मैंने उत्तर दिया, 'भइया आल्हा किताब पढ़ी है ? सुनो— खट-खट तेगा बाजे, चटक-मटक चले तलवार'।

आल्हा-ऊदल के गीत रेकॉर्ड कर शहरों की सड़कों पर बजाए जाएं, तो मजा आ जाए। नेता अब कवि हो रहे हैं। कवियों और कवि-सम्मेलनों से चिढ़नेवालों को राहत की एक सांस मिलनी चाहिए। राजनीति से तंग आकर अब बहुत-से छोटे और बड़े नेता काव्य की दुनिया में उतर आये हैं।

धड़ल्ले से काव्य-संग्रह छप रहे हैं, कविता-पाठ हो रहे हैं और खुले आम उनका लोकार्पण भी किया जा रहा है। इसमें सबसे पहले बाजी मारी अटल बिहारी वाजपेयी ने। वैसे वाजपेयीजी जन्मजात कवि हैं, रसज्ञ हैं और राजनीति में रहकर भी सामाजिक प्राणियों के साथ भरपूर सराबोर हो जाते हैं। ये सारे गुण एक रचनाधर्मी व्यक्ति के हैं। लेकिन कमाल है, वाजपेयीजी राजनीति की दुनिया में भी शतरंज खेलने में पूरी तरह माहिर हैं। उनके सद्यः प्रकाशित कविता-संग्रह को पढ़कर उनकी क्षमता के सामने झुक जाना पड़ता है। बानगी देखिए—

समंदर में उतरो
पहाड़ पर चढ़ के देखो
जिंदगी की किताब
कुदरत में पढ़ के देखो...
कि जो जितना
गहरा उतर गया
वो उतना ऊपर चढ़ गया !
मैं जी भर जिया,
मैं मन से मरूं
लौटकर आऊंगा
कूच से क्यों डरूं ?
प्यार इतना परायों से
मुझ को मिला
न अपनों से बाकी
है कोई गिला

इतना ही नहीं प्रधानमंत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव ने तो एक वृहत उपन्यास लिखकर, साहित्य के क्षेत्र में भी घुसपैठ शुरू कर दी है।

हाल ही में पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भी कविता-संग्रह छपवाकर कवियों के साथ कंधे से कंधा मिला लिया है। संग्रह का नाम है, 'एक टुकड़ा धरती, एक टुकड़ा आकाश' सुंदर छपे हुए कविता-संग्रह के रेखाचित्र सिंह साब ने खुद बनाये हैं। इन कविताओं में इतनी संवेदनशीलता है कि लगता ही नहीं कि प्रधानमंत्री काल में मनमानी करनेवाले विश्वनाथ प्रताप सिंह की ये रचनाएं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन रचनाएं तो हैं ही सचमुच हैं । एक-दो पंक्तियां देखिए—

'अनमना बैठा हूं, मनमानों की
टोली में और
मुफलिस से अब चोर बन
रहा हूं, इस भरे बाजार
से, चुराऊं क्या
यहां वही चीजें सजी हैं
जिन्हें लुटाकर मैं
मुफलिस हो चुका हूं'

विश्वनाथ प्रताप सिंह अपनी जिंदगी के अंतिम अध्याय की झलक भी कई पंक्तियों में दे रहे हैं । ईश्वर उन्हें दीर्घ-जीवन दे । राजनेता के साथ-साथ वे कवि के रूप में भी जाने जाएंगे । उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि राजनीति के खोखलेपन को कविता या चित्रकारी से थोड़ा भर सकूं, यही मेरी इच्छा है ।

पता लगा है कि कुछ और बड़े राजनेताओं के काव्य-संग्रह भी प्रकाशित हो रहे हैं । मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि शहर से दूर भौंड़सी आश्रम में बैठकर आजकल चंद्रशेखर भी काव्य-लेखन में व्यस्त हैं, देवीलाल लोक-भाषा में छंद-सवैये और कवित्त दोहे लिखनेवाले हैं । ढोल और डफली के साथ संगत अच्छी जमेगी यदि सारे राजनेता धीरे-धीरे कवि बन जाएं, तो सारे 'कांड' होने बंद हो जाएंगे और प्रेयसी मूर्त्त हो या अमूर्त्त श्रृंगार रस के रूप में अनेक रूपों में जन्म लेगी, यह देश प्रेम का है, प्रीति का है लड़ने-झगड़ने का नहीं— **राधे-राधे, राधाकृष्ण जै,**
कन्हैया राधे !

नेपाल और हिंदी

नेपाल के जनकपुर धाम से मुझे एक समाचार पढ़ने को मिला है कि नेपाल की समाज कल्याण एवं महिला विकास मंत्री श्रीमती लीला कोइराला ने दो दर्जन से अधिक हिंदी मनीषियों के साथ संकल्प लिया है कि नेपाल में शुद्ध हिंदी का प्रचार किया जाएगा । अभी भी नेपाल के अस्सी प्रतिशत लोग हिंदी समझते हैं और बोलते हैं । लीलाजी ने कहा है कि तराई-क्षेत्र में सरकारी कामकाज की भाषा पूरी तरह हिंदी होगी । इस संकल्प में नेपाल के जो और लेखक शामिल हैं मेरा उनमें से अनेक मित्रों से सीधा परिचय है । जैसे संस्कृत के उद्भट् विद्वान धुस्वां सायमि, उपन्यासकार गोविंद बहादुर मानंधर, रामजन्म तिवारी, पूर्व मंत्री भद्रकुमारी घल्ल, प्रोफेसर कृष्णचंद्र मिश्र, कवि महंत अवध किशोर दास, विदुषी मिथिलेश कुमारी, राजेश्वर नेपाली, रामचंदर मिश्र, राम दयाल राकेश, गौतम बनिया, शत्रुघ्न नाथ चतुर्वेदी, जंगल लाज के द्वारका प्रसाद श्रेष्ठ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा पड़ौसी देश नेपाल यदि हिंदी के लिए यह सब कर रहा है तो भारत सरकार को अपनी अंगरेजीदां नीति पर विचार करना चाहिए । आश्चर्य है इस देश में वोट मांगने की भाषा हिंदी है अथवा क्षेत्रीय भाषाएं । लेकिन चुनाव जीतते ही अंगरेजी यहां की राष्ट्र- भाषा बन जाती है ।

पाकिस्तान हारा, जीतेगा क्या खाकर !

विश्व कप क्रिकेट में पाकिस्तान की पराजय के बाद पाकिस्तान में कई प्रश्न उठ खड़े हुए हैं । पाकिस्तान टीम की पराजय से पाकिस्तान को बेहद धक्का लगा है । पी.टी.वी. पर दिखाये गये कार्यक्रमों को लेकर कट्टरपंथियों ने पी.टी.वी. की अध्यक्ष राना शेख की कड़ी आलोचना की । इसको देखते हुए उन्होंने अपने लिए पाकिस्तान सरकार से पुलिस संरक्षण की मांग की । उधर विपक्षी नेता शुजात हुसैन ने कहा है कि पाकिस्तान की टीम वैसे तो साहस के साथ खेली है लेकिन पी.टी.वी. के सांस्कृतिक-उत्सव के दौरान गैर-इसलामिक-संगीत के कारण पाकिस्तान की टीम पराजित हो गयी ।

कई लोगों का आरोप है कि वसीम अकरम ठीक था । उसने घूस लेकर न खेलने का फैसला किया ताकि पाकिस्तान हार जाए । लोगों का यह भी आरोप था कि सरकारी टी.वी. पर दिन-रात 'हम जीतेंगे-हम जीतेंगे' का नारा लगवाकर खिलाड़ियों का दिमाग खराब करवा दिया गया ।

ये तो रहा खेल का मैदान, वैसे भी जो पाकिस्तान में हालत है, वह क्या खाकर हिंदुस्तान को आंख दिखाएगा ।

दूरदर्शन की दुर्दशा

मुझे पता लगा है कि दूरदर्शन इन दिनों १२० करोड़ रुपये के घाटों के बीच चल रहा है । यह बात सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधिकारियों ने भी स्वीकार की है । यह भी जानकारी मिली है कि पिछले वर्ष भी दूरदर्शन से कहा गया था कि वह अपने खर्चों में चालीस करोड़ रुपये कम करे, लेकिन ऐसा तो नहीं हुआ । अलबत्ता दूरदर्शन साफ्टवे के लिए चालीस करोड़ रुपये का देनदार है । इसमें समाचार और समाचारों के समीक्षा के कार्यक्रम, प्रायोजित कार्यक्रम, डी.डी.-१ और डी.डी.-२ पर दिखाये जानेवाले कार्यक्रम शामिल हैं । दूरदर्शन के कार्यक्रमों में सुधार की बात तो अलग रही, बस घाटा ही बढ़ता जा रहा है, आखिर यह कब तक ? ●

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोरारजी भाई का व्यक्तित्व भव्य था । ऊपर से वे जितने अक्खड़ और तेज-तर्रार दिखायी देते थे, भीतर से उतने ही नम्र और सहृदय । उनकी प्रशासन क्षमता अद्वितीय रही है और उतनी ही आस्था महात्मा गांधी पर वे रखते रहे हैं । जीवन का शतक पूरा करने का उनका संकल्प मात्र एक वर्ष से अधूरा रह गया । भारत के इतिहास में उनका अपूर्व स्थान हमेशा रहेगा । उनके जीवन की कुछ झलकियां, प्रस्तुत कर रहे हैं पूर्व मुख्य सचिव श्री कृपा नारायण ।

मोरारजी देसाई एक शालीन व्यक्तित्व

—कृपा नारायण

प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री मोरारजी देसाई की वह पहली लखनऊ यात्रा थी । उत्तर प्रदेश शासन के मुख्य सचिव के नाते मुझे सभी आवश्यक प्रबंध करने थे । नये प्रधानमंत्री प्रदेश के विकास संबंधी सभी पहलुओं पर विस्तार से जानकारी चाहते थे । तिलक हाल में सभी सचिवों और विभागाध्यक्षों को संबोधन और विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा — उनके कार्यक्रम के अंग थे । यह पहला अवसर था कि प्रधानमंत्री स्वयं इस प्रकार की बैठक के लिए समय दें— और वह भी एक ८१ वर्षीय प्रधानमंत्री ।

इससे कुछ ही दिन पहले दिल्ली में प्रधानमंत्री से साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त हो गया था । उनके समक्ष जाते ही मुझे एक अत्यंत सादे, सहज, दृढ़ और निर्भीक व्यक्तित्व का आभास हुआ था । मैंने अपना संक्षिप्त परिचय दिया । वे चुप रहे । मुझे बताया गया था कि वे रूखे और चुपचाप स्वभाव के हैं । जब चुप्पी कुछ लंबी होने लगी, तो मैंने साहस बटोरकर वातावरण को हलका बनाना चाहा । मैंने कहा, "श्रीमन, मैं आई.ए.एस. के प्रथम बैच का व्यक्ति हूं और हमारी परीक्षा आजादी के पहले १ जुलाई १९४७ को प्रारंभ हुई थी, क्योंकि सरदार पटेल ने लगभग ४ माह पहले ही इस भारतीय सेवा को बनाने का निर्णय ले लिया था ।" उन्होंने सरदार पटेल के नाम पर धीरे-से सिर हिलाया । उत्साहित होकर मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहता रहा— "श्रीमन, परीक्षा के वे दिन मुझे और भी स्पष्टतः इसलिए याद हैं क्योंकि ३ जून १९४७ को लार्ड माउंटबेटन के भारत-विभाजन के बयान से मैं अत्यंत विचलित था। छोटी अवस्था से भूगोल-कक्षा में जिस भारत के मानचित्र को हाथ से रेखा-चित्रित करता रहा, जिस भू-चित्र के एक-एक मोड़ की गलती पर अध्यापक की भौंह-सिकोड़ झेली उसी चित्र के तीन टुकड़े हो रहे हैं— यह विचार दग्ध करता रहा और कई रात नींद नहीं आयी।"

प्रधानमंत्री भी अब उन दिनों की यादों की परिधि में पहुंच गये थे। कहा, "अभी भी वह दर्द सताता है ?"

मैंने उत्तर दिया, "मान्यवर, उसकी याद, अभी भी वैसे ही है। जो विचार तब था, वह अब भी है कि 'सिविल वार' हो जाती, तो शायद विभाजन की बनिस्बत अच्छा होता। ऐसे ही युद्ध से अमरीका शक्तिशाली बना।"

वे उतने रूखे नहीं थे !

वार्ता लंबी हो रही थी। मैंने अनुमति चाही, "श्रीमन, हम उत्तर प्रदेश की राजधानी में आपका स्वागत करने की प्रतीक्षा में हैं।" एक अत्यंत हलकी-सी मुसकराहट, मुझे लगा, उनके चेहरे पर आयी। जब मैं कमरे से बाहर आ रहा था, मुझे प्रसन्नता थी। नये प्रधानमंत्री इतने रूखे नहीं हैं— जितना कहा जाता है।

तिलक हाल की बैठक में प्रधानमंत्री रिपोर्टों को ध्यान से देख रहे थे। उनके प्रश्न अत्यंत सटीक थे। देश के वित्त मंत्री के रूप में उन्होंने प्रदेशीय आंकड़ों को पहले से ही निकट से परखा था। उनके प्रश्नों का उत्तर देने में संतोष की अनुभूति होती थी, क्योंकि वे उसकी सार्थकता का सही अंदाज लगाने में निपुण सिद्ध हो रहे थे। जहां कहीं सचिव ने बात बनानी चाही, पकड़े गये। मुझे सही स्थिति की जानकारी मुख्यमंत्री की उपस्थिति में प्रधानमंत्री को देने में कोई हिचकिचाहट नहीं थी। प्रधानमंत्री स्पष्टतः स्पष्टवादी थे— फिर स्पष्ट श्रोता क्यों नहीं होंगे ? इस नीति का हमें लाभ ही मिला। बैठक के उनके समापन-भाषण में संतोषकारी वचन थे। श्री मोरारजी देसाई के कथित कठोर व्यक्तित्व से हमारे लिए यह एक दुर्लभ प्राप्ति थी।

सायंकाल का भोजन श्री चंद्रभानु गुप्तजी के दरीबा-पन निवास पर था। मुझे भी उपस्थित रहने का सौ भाग्य मिला। सी.बी. गुप्ता (जैसा कि उन्हें अकसर पुकारा जाता था), अविवाहित थे। भोजन पर क्या बना, क्या परोसा गया— इससे उन्हें कुछ सरोकार नहीं था। प्रधानमंत्री को एक कटोरे में से सफेद पदार्थ खाते हुए देखा। ठेठ भाषा में पूछा, "मोरारजी भाई, आप तो कहते थे कि रात में दही नहीं खाना चाहिए, आप तो खा रहे हैं।" प्रधानमंत्री कुछ हंसे फिर बोले, "अरे भाई, मैं दही कहां खा रहा हूं। मैं तो दूध की मलाई खा रहा हूं।" ८१ वर्षीय इस युवा की खुराक के विषय में इस दो-टूक सफाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हम सभी अचकचा गये ।

अगले वर्ष १९७८ में मेरे स्थान पर सर्विस में मुझसे वरिष्ठ अधिकारी की नियुक्ति कर दी गयी । मैंने भारत सरकार के कैबिनेट सचिव को पत्र लिखा कि मुझे इससे कोई शिकायत नहीं हो सकती है— किंतु भारत सरकार में मुझसे कनिष्ठ अधिकारी सचिव पद पर तैनात हैं, इसलिए मुझे भारत सरकार में सचिव पद पर अगले रिक्त स्थान पर अवसर मिलना चाहिए । कोई उत्तर नहीं मिला । 'रिमाइंडर' पर भी जवाब नदारद ।

प्रधानमंत्री की सहृदयता

मैंने प्रधानमंत्री से मुलाकात चाही— मिल गयी । मैंने संयत भाव से अपनी बात कही । उन्होंने पूछा, "अब क्या कर रहे हो ?" मैंने उत्तर दिया, "बड़ी मुश्किल से यह अवसर मिला है । छुट्टी में कुछ पढ़ रहा हूं— और एक-दो विषय पर लिख रहा हूं ।" संक्षिप्त-सा उत्तर मिला, "तो फिर ठीक है ।" मैं चला आया ।

३-४ महीने बाद दिल्ली में सचिव पद पर मेरी नियुक्ति हो गयी । मेरे मित्र सुशील बनर्जी रक्षा सचिव थे । मिलने पर कहने लगे, "केबिनेट सेक्रेटरी को धन्यवाद देने की जरूरत नहीं—तुम्हारी नियुक्ति तो प्रधानमंत्री ने स्वयं की है— प्रस्ताव तो दूसरा ही बनाया गया था ।"

फाइलों को स्वयं देखने, विचार करने और अपनी न्याय दृष्टि से निर्णय लेने की उनकी क्षमता का यह उदाहरण मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ ।

योजना मंत्रालय में सांख्यिकी सचिव की हैसियत से जब पहली बार मैं कुछ फाइलें लेकर प्रधानमंत्री (जो योजना मंत्रालय के मंत्री भी थे) के सम्मुख उपस्थित हुआ, मुझे याद है उन्होंने संभवतः मेरी परीक्षा के लिए स्मित हास्य से कहा, "अंगरेजी में कहावत है कि, सांख्यिकी के सब आंकड़े झूठ के ताने-बाने होते हैं ।" मैं गणित और भौतिक शास्त्र का विद्यार्थी रहा था। सांख्यिकी सचिव बनते ही सांख्यिकी संबंधी कुछ साहित्य पढ़ लिया था और नयी विद्या का पहला उबाल ताजा था । यकायक कह उठा, "मान्यवर, जापान संभवतः संसार के सबसे प्रगतिशील देशों में एक है, और वे प्रतिवर्ष राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस मनाते हैं । कोई भी योजना सांख्यिकी के आंकड़ों के आधार पर ही खड़ी की जा सकती है । सत्य की माप-तोल में सदा कठिनाई रहेगी और कुछ कमीबेशी होगी, पर सांख्यिकी ही यह बताती है कि कमीबेशी की संभावना कितनी है और कहां तक मोटे आंकड़ों से काम चल जाएगा ।" मैंने देखा कि देश का प्रधानमंत्री मेरे-जैसे साधारण व्यक्ति की बात को भी ध्यान से परख रहा है । उनके प्रति प्रशंसात्मक आदर की भावना से मैं अभिभूत हो गया । उसी प्रवाह में कहता रहा, "श्रीमन, क्षमा करें । आपके विद्या-अनुराग और विशाल हृदय के भरोसे ही यह धृष्टता करने का साहस कर रहा हूं । सांख्यिकी के चमत्कारों के विषय में मैंने हाल ही में पढ़ा है । मध्यप्रदेश के जंगलों से मीलों में बिखरे हुए हजारों हड्डियों के छोटे-छोटे टुकड़ों को यथा स्थान जोड़कर डॉ. मरलनवीस ने 'डाइनोसारस' के विशालकाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढांचे को पुनः खड़ा कर दिया, जो कलकत्ते के राष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान में देखा जा सकता है। सांख्यिकी से यह संभव है कि यह बताया जा सके कि अमुक पुस्तक शेक्सपीयर द्वारा लिखी हुई है या नहीं। दक्षिण भारत के मंदिर में स्थापित अमुक मूर्ति प्रसिद्ध शिल्पकार दखनाचार द्वारा निर्मित की गयी अथवा नहीं।" प्रधानमंत्री न केवल प्रसन्न प्रतीत हुए, उनकी दृष्टि और व्यवहार में स्निग्धता के दर्शन हुए। ऐसा लगा कि अगर उनके पास समय होता तो वे स्वयं इस विषय पर और जानकारी प्राप्त करते। यह जागरूकता उनकी महानता की परिचायक थी। मैं यह नहीं मानता कि श्री मोरारजी देसाई बंद विचारों के व्यक्ति थे, अथवा अपनी जिद पर नाहक अड़ जाते थे। उनके बारे में कई भ्रांतियां उत्पन्न हुई हैं या करायी गयी हैं। मैंने तो उनके विद्या, प्रेम, सत्य की तलाश और ज्ञान में आस्था को निकट से देखा है।

कहीं बनावट नहीं

गुजरात, महाराष्ट्र एवं राजस्थान में दीपावली पर नव वर्ष प्रारंभ में मनाया जाता है। गोवा में रहने से मुझे यह महत्त्व ज्ञात था। मेरे अनुज अशोक नारायण गुजरात काडर के प्रशासनिक अधिकारी हैं और गुजराती जानते हैं। उनको भी साथ लिया और दीपावली की प्रातः बेला में हम दोनों प्रधानमंत्री निवास, बिना किसी पूर्व सूचना के, पहुंचे। द्वार खुला था। हमें बिठाया गया। कुछ समय बाद श्री मोरारजी देसाई बैठक-कक्ष में आये। सादगी की प्रतिमूर्ति ! पूजा-आराधना करके आये थे— चेहरे पर आत्म-संतोष की चमक। हमारी शुभकामनाएं स्वीकार कीं। 'आपको भी शुभ हो ' शांत संयत स्वर— कहीं भी बनावट या शुष्कता नहीं।

जब जन्मदिन पर बधाई पत्र भेजा था, तब भी उत्तर स्वयं हस्ताक्षर से आया था— "मैं अपना जन्मदिन नहीं मनाता। वैसे भी वह चार वर्ष में एक बार आता है। फिर भी, आपकी बधाई के लिए धन्यवाद।"

अब तो उनकी आधी उम्र के और आधी गरिमा के पद पर आसीन व्यक्तियों से आप उनके चौथाई शिष्टाचार की भी अपेक्षा नहीं कर सकते। सांख्यिकी सचिव के साथ-साथ ही मुझे 'भारत सरकार के हिंदी सलाहकार एवं राजभाषा सचिव' के पद पर भी नियुक्त कर दिया गया था। उनके उत्तर पत्र की यह सहज हिंदी विषयानुकूल थी। राजभाषा को सरल बनाने की नीति को उजागर कर रही थी। संयम, परिश्रम और मर्यादित आचरण ने उनके जीवन को सदा प्रकाशमय रखा। सरकारी सुरक्षा नीति का पालन तो करना ही होता है— किंतु उसका निर्वाह करते हुए भी मिलनसारिता निभाना और समुचित व्यवहार बनाये रखना— उनके व्यक्तित्व की विशेषता रही।

यात्राओं में सावधान रहने के आदेश

अपने सरकारी कार्य के अतिरिक्त १९७६ से ही मैं 'मंगलम' नामक विकलांग हितार्थ संस्था से संबद्ध रहा था। नियमानुसार मुझे इसकी अनुमति प्राप्त करनी थी। लखनऊ से दिल्ली आने पर मैंने अपने मंत्री (प्रधानमंत्रीजी) को इस संबंध में एक नोट भेजा। प्रधानमंत्री ने न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल उसे पढ़ा, उस पर अत्यंत उत्साहवर्धक प्रेरणात्मक टिप्पणी भी की ।

जुलाई, १९७९ से राजनीतिक उलझनें बढ़ने लगीं । संकीर्ण विचार और संकुचित स्वार्थ उभरने लगे । दंगल में कुछ पहलवान ताल ठोंककर गले मिल लिये और कुछ ने मिली-कुश्ती का स्वांग रचा । यह अभ्यास होने लगा था कि श्री मोरारजी देसाई धींगामुश्ती से परे रहना चाहेंगे और अंततः ऐसा ही हुआ । सांसदों की सूची की गलती का नैतिक भार अपने ऊपर लेते हुए राजनीति से संन्यास लेने का समय उनकी बाट जोह रहा था ।

वे अड़ियल नहीं थे

उन दिनों मैं जब उनसे मिला, मुझे द्विग्रता के कोई लक्षण नजर नहीं आये । वही तटस्थ, विरक्त भाव । दृष्टि में एक समग्रता थी । फाइल देख रहे थे, यकायक बोले— "जनवरी से ही मैंने तुम्हें स्वास्थ्य सचिव बनाये जाने का आदेश दे दिया था । किसी कारणवश उसका पालन सितंबर से होगा । मुझे उनकी विलक्षण स्मरण-शक्ति और विस्तार में जानेवाली प्रखर-बुद्धि और विवेकशीलता का एक और परिचय मिला । कारण उन्होंने जानकर नहीं बताया, यद्यपि और बात प्रगट कर दी । जैसा कि मुझे ज्ञात हो गया था, कारण यही था कि वर्तमान अधिकारी ने निवेदन किया था कि कुछ महीनों के लिए उसे न हटाया जाए, क्योंकि वह सितंबर में सेवा-निवृत हो रहा है । उनकी न्याय-बुद्धि ने इस निवेदन को स्वीकार कर लिया और पहले लिए हुए आदेश के परिपालन को स्थगित कर दिया गया ।

वे अपनी बात पर अड़े ही रहें— ऐसा नहीं था । यह धारणा उन सबल वर्गों की हो सकती है जो शराब-बंदी, घुड़दौड़ आदि के संबंध में दबाव डालकर उनके निर्णय बदलवाना चाहते थे और सफल नहीं हुए । ऐसे वर्ग उनके हमेशा गहरे दुश्मन बने रहे ।

एक दृढ़ व्यक्तित्व

११ जुलाई, १९७९ को स्काईलैब आकाश यान के गिरने का भय सबको त्रस्त कर रहा था । उनसे बार-बार पूछा गया कि सरकार इस विषय में क्या कर रही है ? जाहिर था कि किसी भी देश की सरकार उसके बारे में अधिक कुछ नहीं कर सकती थी । यह आकाश यान क्षतिग्रस्त होकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था । उसके टुकड़े कहीं भी गिर सकते थे । अंत में वे आस्ट्रेलिया के पश्चिम में, समुद्र में, गिरे ।

अगले दिन जब मैं उनसे मिलने गया, तो मैंने कहा— "मान्यवर, आपने कल सभा में एक वाक्य कहा था, जो दार्शनिक दृष्टि से अत्यंत गहन है ।" कहने लगे— "कौन-सा ?" मैंने उत्तर दिया— "मैं मरने से पहले नहीं मर सकता ।" उनके चेहरे पर गंभीरता झलकी । वे दृष्टि फेर कर दूर के पेड़ों की चोटियों की ओर देखने लगे । मैं भी उस खिड़की के बाहर की ओर ताकने लगा । विचारों की एक छाया-सी गुजर गयी । मैं उस स्थितप्रज्ञ को चुपचाप प्रणाम कर चला आया ।

वह दिन १० अप्रैल, १९९५ को लगभग १५ वर्ष बाद आया और वह अपने समय पर अपने शताब्दी वर्ष में, अंतिम धाम चले गये । ●

ए-१३ स्वास्थ्य विहार,
दिल्ली-११००९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यपथ की राही —एनी बिसेंट

एनी बिसेंट का जन्म १ अक्तूबर, १८४९ में लंदन में हुआ था। एक आयरिश परिवार में जन्मी एनी बिसेंट प्रारंभ से ही विलक्षण प्रतिभावान थीं। इस बालिका की अद्भुत चिंतन शक्ति और ईश्वर भक्ति को देखकर लोग दांतों तले अंगुलियां दबाते थे। उनका वैवाहिक जीवन अत्यंत कष्टप्रद था। एक बार तो उन्होंने जहर खाने की चेष्टा तक की। परंतु उनके आत्म स्वरों ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। फिर उन्होंने इस प्रकार के कामनापूर्ण अंत को स्वीकार नहीं किया। अपना घर-बार छोड़कर वे विश्व भ्रमण के लिए निकल पड़ीं।

अमरीका, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया जाने के बाद 'थियोसॉफिकल सोसायटी' के साथ ४६ वर्ष की अवस्था में भारत आ गयीं। उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। भारत की राष्ट्रीयता ग्रहण करके वे यहीं बस गयीं।

वे एक अच्छी वक्ता, योग्य नेत्री, कुशल संचालिका, विनम्र लोक सेविका, अग्रणी संपादिका, सुधारक, राजनीतिज्ञ, लेखिका, अंतरराष्ट्रीय विषयों की संत महिला आदि बहुत कुछ थीं। श्रीमती एनी बिसेंट ने भारतीयों के जागरण आंदोलन और स्वतंत्रता आंदोलनों का नेतृत्व किया। इस नाते सन् १९१५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर आसीन होने का सौभाग्य उन्हें महिलाओं में सर्वप्रथम प्राप्त हुआ। इससे भारतीय नारियों के राजनीतिक जागरण का मार्ग विघ्न रहित हो गया। श्रीमती बिसेंट को प्रेरणा स्रोत मानकर ही १९१७ में अखिल भारतीय संगठन और महिला मताधिकार आंदोलन सामने आये। वे श्रीमती सरोजनी नायडू के साथ महिलाओं के उत्थान के लिए जीवन पर्यंत कार्य करती रहीं।

सन् १९०७ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नरम दल और गरम दल में विभाजित हो गयी थी। श्रीमती बिसेंट के प्रयत्नों से दोनों दलों का समझौता हुआ और 'इंडियन होम रूल लीग' की स्थापना हुई।

डॉक्टर एनी बिसेंट एक अच्छी संपादक थीं। उन्होंने 'कामन वील', 'न्यू इंडिया' डेली हेराल्ड—जैसे प्रतिभाशाली साप्ताहिक और दैनिक समाचार पत्रों का संपादन भी किया। प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ होने पर उन्होंने अपने समाचार पत्रों द्वारा कहना शुरू किया कि इंगलैंड संकटग्रस्त है, भारत को इस स्थिति का लाभ उठाकर अपनी मांगे सामने रखनी चाहिए।

भारत में स्काउट/गाइड आंदोलन चलाने में सबसे बड़ा सहयोग डॉक्टर एनी बिसेंट का था। इन्होंने सन् १९२१ में 'आल इंडिया ब्वाइज स्काउट एसोसिएशन' की प्रथम महिला आनेररी कमिश्नर बनीं। एनी बिसेंट अनेक बार जेल गयीं और इंगलैंड जाकर भी उन्होंने भारतीयों के पक्ष में अनेक हृदयस्पर्शी वक्तव्य और अनेक संगठन बनाये जो उनके देश की नीव हिलानेवाले साधन थे।

—प्रतिष्ठा पांडे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरक प्रसंग

इस समय मेरी सबसे बड़ी आकांक्षा यही है कि हम स्वराज्य-संग्राम में विजयी हों। धन या यश की लालसा मुझे नहीं रही। खाने भर को मिल ही जाता है। मोटर और बंगले की मुझे हविस नहीं। हां, यह जरूर चाहता हूं कि दो-चार ऊंची कोटि की पुस्तकें लिखूं, पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य-विजय ही है। मुझे अपने दोनों लड़कों के विषय में कोई बड़ी लालसा नहीं है। यही चाहता हूं कि वह ईमानदार, सच्चे और पक्के इरादे के हों। विलासी, धनी, खुशामदी संतान से मुझे घृणा है। मैं शांति से बैठना भी नहीं चाहता। साहित्य और स्वदेश के लिए कुछ-न-कुछ करते रहना चाहता हूं। हां, रोटी-दाल और तोला भर घी और मामूली कपड़े मयस्सर होते रहें।

(प्रेमचंद के ३ जून १९३० के पत्र से)

बादशाह खान का इरशाद हमारे शक मिटाता मगर मुल्क भर की दर्दनाक खबरें सुनकर अपनी धीमी रफ़्तार दिल को न भाती। हर वक्त इसी फिक्र में रहते कि कब हम वैसी ही मुसीबतों से दो-चार हों और इंकलाबी लहर से जा मिलें, जो मुल्क भर में चल रही थी। इन ही दिनों इंदुजी का खत मिला जिसमें उन्होंने ताना देकर पूछा था कि आखिर इस शराब की पिकेटिंग से क्या मतलब और कब तक यह मज़ाक चलता रहेगा ? जवाब में सारी बातें समझा तो दी थीं मगर खत लिखते वक्त मेरा अपना यकीन भी डांवाडोल था। मुझे याद है कि तलुबा की एक खास मीटिंग मेरे घर पर हो रही थी बादशाह खान को इसका इल्म था और वह देखने आये कि मैं इस मीटिंग में क्या कहने जा रहा था। एक लड़के ने पूछा कि अगर पुलिस हमारी इज्जत पर हमला करे तो हमें क्या करना चाहिए ? मैंने जवाब दिया कि ऐसे वक्त इंसान अक्ल से काम नहीं लेता बल्कि हाथ-पांव इस्तेमाल करता है। बादशाह खान हंसे और कहने लगे कि इसका नाम है—'यूनुसी अदम-तशद्दुद' (यूनुस की अहिंसा)।

('कैदी के खत'—मुहम्मद यूनुस)

सहिष्णुता और समझदारी संसदीय लोकतंत्र के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी संतुलन और मर्यादा की चेतना। हम अपने प्रति ईमानदार बनें और सत्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामना करें । यदि संसदीय कार्य के सुसम्मानित मानदंडों का कर्त्तव्यनिष्ठता तथा विश्वसनीयता से पालन नहीं किया गया, तो संसदीय लोकतंत्र की कार्य-प्रणाली और प्रथाएं निरर्थक हो जाएंगी । लोकतंत्रीय संस्थाओं के प्रति जनता के सम्मान तथा प्रेम को लोकतंत्र के अस्तित्व का अनिवार्य तत्त्व और वास्तव में लोकतंत्रीय जीवन-पद्धति ही मानना चाहिए । अतएव ऐसा कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए जिससे यह मूल्यवान संस्थागत प्रक्रिया राष्ट्रीय कल्याण के लिए अप्रासंगिक मालूम पड़े । यह दुःख का विषय होगा, यदि संसदीय लोकतंत्र के कुछ स्वयंसिद्ध नियमों को उबाऊ, पिष्टपेषण या नीरस मानकर उनकी उपेक्षा की जाए ।

('प्रतिष्ठित भारतीय'—डॉ. शंकर दयाल शर्मा)

संभवतः असहयोग आंदोलन के डेढ़ वर्ष पहले का समय रहा होगा । मैं अहमदाबाद के साबरमती के पश्चिम किनारे पर राष्ट्रीयशाला में पढ़ता था । इस राष्ट्रीयशाला का यह विद्यालय सत्याग्रह आश्रम का एक विभाग था, जिसे महात्मा गांधी ने चला रखा था । उस आश्रम-विद्यालय के आचार्य थे काकासाहेब कालेलकर । एक दिन पढ़ाई का समय समाप्त हुआ । आश्रम के संध्या के गृह-कार्य, कृषि कार्य इत्यादि के लिए विद्यार्थी और अध्यापक भी अलग-अलग टोलियों में भिन्न-भिन्न श्रम कार्य करने लगे । इस प्रकार के काम से लौटने की घंटी दूर से सुनायी दी तब आश्रम के बीच से जेल जानेवाली सड़क पर चलते-चलते मैंने काकासाहेब से प्रश्न किया, "काकासाहेब, आचार्य और शिक्षक कुछ करने को कहें, उसका पालन करना विद्यार्थी का धर्म है, यह बात तो समझ में आती है, लेकिन माता-पिता आदि जो कहें, उस बात का पालन करना भी विद्यार्थी का धर्म है क्या ? जो पुत्र पंद्रह-सोलह की आयु का हो गया है, उसे अभिभावक की बात अपने लिए अच्छी नहीं लगती, फिर भी उसे उस आज्ञा का पालन क्यों करना चाहिए ? आचार्य और शिक्षक गुरु हैं तो पिता को गुरु क्यों समझा जाए ?"

काकासाहेब ने मेरा प्रश्न बहुत धीरज से सुना । कुछ देर सोचते रहे । फिर उन्होंने जवाब दिया, "गुरु का आदेश मानना यह धर्म स्वीकृत हो गया तो उसी के साथ पिता का कहना मानना भी स्वतः सिद्ध है ।"

"क्यों ?" मैंने पूछा ।

"इसलिए कि माता-पिता ईश्वर के दिए हुए गुरु हैं । इसी कारण उन्हें और भी ऊंचा गुरु का पद दिया जाता है । वहां लड़कों या विद्यार्थियों को चुनने का अवसर नहीं होता । इसी कारण माता-पिता आदि गुरु हैं ।

(संस्मरण—प्रभुदास गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नदियां नागिन की तरह नाचीं

● स्वामी वाहिद काजमी

मुगल बादशाहों के सौंदर्य-प्रेमी स्वभाव के कारण उनके शासन-काल में कश्मीर को खूबसूरत बनाकर सजाने-संवारने का एक लंबा सिलसिला जारी रहा। इसमें उल्लेखनीय है शाहजहां की इच्छानुसार उसके चीफ इंजीनियर अली मर्दान खां द्वारा लगाये गये बागान तथा फौव्वारे आदि। इसके साथ ही अली मर्दान खां को इस बात का श्रेय भी प्राप्त है कि उसी ने सबसे पहले यहां सिंचाई-व्यवस्था के लिए नहरें बनायीं, पुलों का निर्माण किया, सड़कों को चौड़ा व पुख्ता करके यातायात को सुचारू रूप दिया। यात्रियों के अस्थायी निवास के लिए उसने सरायों की एक पूरी बस्ती ही निर्मित कर दी थी।

किंतु प्राचीन भारत के इतिहास और पुरातत्व के अध्येताओं को छोड़कर शायद ही आज कोई यह जानता हो कि अब से एक हजार वर्ष से भी अधिक समय पूर्व भारत की सबसे विराट और बहुउद्देशीय योजना कश्मीर में बनी और कार्यरूप में परिणति की गयी थी। इसके पीछे एक ऐसे अत्यंत प्रतिभाशाली स्थापत्य-विशेषज्ञ तथा वास्तुविद् का मस्तिष्क व हाथ था, जिसे इंजीनियरिंग की अनेक विधाओं का प्रतिभापुंज कहना ज्यादा सही लगता है। आज की भाषा के चीफ इंजीनियर आदि शब्द उसके सामने बौने प्रतीत होते हैं। इतिहास में यह दर्ज है कि वह प्रतिभापुंज भारत की इस प्रथम और विशाल बहुमुखी योजना का योजनाकार, नियंता तथा प्रणेता था।

कश्मीर के जिन राजाओं का वर्णन इतिहास में आता है उनमें से एक था, सम्राट अवन्तिवर्मन। उसका शासनकाल सन् ८५५ से लगाकर सन् ८८३ ई. तक रहा। श्रीनगर से २९ किलोमीटर के फासले पर, आज भी शान से खड़ा प्राचीन शिव मंदिर उसी ने बनवाया था। वह योजना इसी के समय में बनी और पूरी भी हुई थी।

प्रकृति-नटी का विध्वंसक तांडव

कश्मीर को प्रकृति की देवी ने यों तो मनोहारी उपत्यकाओं, रमणीक स्थलों, पेड़-पौधों आदि के माध्यम से खूबसूरती प्रदान करने में कोई कंजूसी नहीं की है। किंतु हम जिस जमाने की बात कर रहे हैं तब मानव की शक्ति और प्रतिभा इतनी बलशाली और विकसित नहीं हुई थी कि प्रकृति-नटी के मनमाने उत्पातों पर अंकुश लगाकर मनचाहा नियंत्रण पा सकें। नतीजा यह कि कश्मीर की नदियों में ऐसी भयानक बाढ़ आती थी कि मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी और पेड़-पौधे तक त्राहि-त्राहि पुकारने लगते थे। खेतियां चौपट हो जाती थीं। बस्तियां की बस्तियां उजड़ जाती थीं। अकाल बेरहमी से पैर जमाकर पसर जाता था और भुखमरी व बीमारियां अपना जोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाती थीं। प्रकृति के ऐसे विध्वंसक तांडव से यहां के लोगों पर क्या कुछ मुसीबतें नहीं टूटती होंगी। आर्थिक रूप से जो जबरदस्त आघात पहुंचता था उसका तो अनुमान ही किया जा सकता है।

यह सारा प्राकृतिक प्रकोप राजा अवन्तिवर्मन-बेबसी से निरुपाय देखते रहते थे। किंतु एक बार जब बाढ़ के कारण जन-धन की अपार हानि हुई, तो उन्होंने इस विकल समस्या को सुलझाने वुलझाने का बया, सदा सर्वदा के लिए जड़ से मिटा डालने का संकल्प कर लिया। उनके यहां एक अत्यंत प्रतिभाशाली और दूरदर्शी वास्तुविद् था जिसका नाम था—सूरय। उन्होंने इस समस्या को उखाड़ फेंकने का सारा दायित्व उसे सौंप दिया कि जैसे भी इस समस्या को समाप्त हो जाना चाहिए। सूरय के लिए यह मानो उसकी प्रतिभा का सबसे जटिल इम्तिहान था।

योजना का प्रारंभ

काफी चिंतन-मनन के बाद सूरय ने बाढ़ का वास्तविक कारण जानने के लिए इस इलाके का सर्वेक्षण कराया और नदी की गति तथा उसके बहाव वा अध्ययन कर भूमि के चप्पे-चप्पे का निरीक्षण भी किया। उसने देखा कि बारामूला के निकट झेलम नदी एक बहुत संकरे टेढ़े-मेढ़े मार्ग (गार्ज) से गुजरती है। इस स्थान के नीचे की जमीन की बनावट ही ऐसी है कि इससे कश्मीर घाटी के जल-प्रवाह की सहज प्राकृतिक व्यवस्था में भारी रुकावट पड़ती है। यह स्थिति खंडन्यार नामक स्थान के निकट सबसे स्पष्ट दिखायी पड़ती थी।

सूरय ने काफी अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि पानी चूंकि हमेशा ढलान की ओर बहता व जमा होता है अतः यही एकमात्र ऐसा स्थान हो सकता है कि नदी की वेगवती धारा को किसी प्रकार रोका जा सके। सबसे पहले उसने बारामूला के नीचे संकरे गार्ज में ही नदी को काबू में करने का कार्य किया।

मौजूदा इंजीनियरिंग के माहिर यह जानकर शायद दांतों तले अंगुली दबा लें कि सूरय ने कामराज (वर्तमान कामरस) और यक्षाघार (वर्तमान दयरगल) नामक स्थानों के समीप नदी के पूरे पेट (बेड) को साफ कराया और फिर यहां पत्थर से एक सुदृढ़ बांध बनाकर नदी के प्रवाह को सात दिनों तक कैसे रोके रखा ? इसके साथ ही उसने नदी के प्रवाह-तल्प को और गहरा किया तथा नदी के दोनों किनारों पर सुरक्षा के लिए ऊंची-ऊंची दीवारें खड़ी कीं ताकि पहाड़ों की ढलान से विशाल शिलाएं लुढ़ककर प्रवाह-मार्ग में रुकावट नहीं डालें। इतना सब करने के बाद उसने नदी की धारा को नियंत्रित करनेवाला निरोधक बांध (इंजीनियरिंग की भाषा में कॉफर डैम) तोड़ दिया तब नदी का प्रवाह ढलान का अनुकरण करता बड़ी तेजी से आगे बढ़ने लगा। इस योजना का एक चरण तो यह पूरा हुआ।

दूसरा चरण जो इससे भी अधिक विराट तथा महत्त्वपूर्ण था कि सूरय ने झेलम नदी का सारा प्रवाह ही बदल दिया। इसके परिणामस्वरूप नदी के बायें किनारे की, श्रीनगर से वुलर फील तक की नीची जमीन जो पहले दलदली होने से अनुपयोगी और बेकार पड़ी थी अब खेती के लिए उपयोगी होकर उपजाऊ हो गयी, यानी वही बेकार भू-खंड जो पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज तो योजना अथवा योजनाएं शब्द बेहद सामान्य हो गया है, तिस पर यह कि बहुत-सी योजनाएं तो बस कागजों पर बन-बिगड़कर लुप्त हो जाती हैं । किंतु इसी महादेश के प्राचीन युगों में ऐसा नहीं था । तब योजना का अर्थ ऐसे विशाल और महत्त्वपूर्ण कार्य से भी लिया जाता था जिसे उस कार्य से पहले पिछली सदियों ने न देखा हो और आनेवाली सदियां उसे आंखें फाड़े देखती रह जाएं ।

निरर्थक और प्रकृति की विध्वंस-लीला का केंद्र था अब खेती से हरा-भरा होकर इस इलाके की खुशहाली का जामिन बनकर लहलहाने लगा ।

बयालीस मील की पुख्ता दीवार

झेलम नदी के प्रवाह-परिवर्तन से दूसरी बात यह हुई कि उसके और सिंध नदी के संगम-स्थान की पहलीवाली रूपरेखा में भी अब काफी परिवर्तन हो गया । यह कैसे हुआ, जानना रोचक रहेगा ।

दोनों नदियों को नियंत्रित करने के बाद सूरय ने पत्थर की ४२ मील लंबी दीवार,अवरोधक (इंजीनियरी की भाषा में इम्बैकमेंट) का निर्माण कराया । इसके साथ ही उसने गांवों तथा खेतों की रक्षा के लिए बहुत से अपेक्षतया छोटे आकार के वर्तुल बांध (इंजीनियरी की भाषा में डाइक्स) भी बनाये थे ।

इंजीनियरी के इतिहास में वर्तुल बांध (डाइक्स) के निर्माण के संदर्भ में यूरोप के [illegible] ग्राम के प्राचीन वास्तुविदों सुख का अनुभव किया [illegible] जाता हैं । वैज्ञानिक-चमत्कार से भरे युग में ऐ[illegible] [illegible] के मिल जाएंगे जिन्होंने लिंग-परिवर्त[illegible] को क्ये[illegible] जाकर दोनों प्रकार के शरीरों से [illegible]

देश की इंजीनियरी का इतिहास यह बताता है कि उस ढंग के डाइक्स बनाने की महारत भारतीय वास्तुविदों को चौथी-पांचवीं शती ईसवी में ही आ गयी थी । पाली भाषा में लिखे सुप्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ 'दीपवंश' में वर्तुल-बांध का उल्लेख मिलता है । वहां पाली-भाषा का एक शब्द आता है—वण्णक । यह उसी का पर्याय है जिसे आज हम डाइक्स के रूप में जानते हैं ।

अनिंद्य सुंदरी शीरीं के लिए उसके प्रेमी फरहाद द्वारा पहाड़ काटकर निकाली गयी दूध की नहर तो निरी कवि-कल्पना है, संभव है उसने कोई पानी की नहर या सरोवर बना डाला हो जिस प्रकार ग्वालियर (मध्य प्रदेश) दुर्ग के अधिपति, प्रेमी स्वभाव और सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ राजा मानसिंह (पंद्रहवीं शती ई.) ने अपनी प्रिया मृगनयनी के लिए उसके ग्राम से ग्वालियर के किले तक स्वच्छ निर्मल जल से भरी नहर इसलिए निर्माण करायी थी कि मृगनयनी अपने ग्राम के समीप बहती नदी के पानी के अलावा [illegible] का पानी नहीं पीती थी । दक्षिण भारत के [illegible] के शासनकाल में, जो दसवीं [illegible] रहा, मीलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंबे-चौड़े और बेहद मजबूत बांध बनाये गये जिनका आगामी शतियों तक उपयोग होता रहा। किंतु वे सब कारनामे सूरय के कई सदियों बाद के हैं। सूरय की योजना इसीलिए भारत की सबसे प्रथम बहुमुखी योजना के रूप में इतिहास में अमिट है।

सूरय ने जो कारनामा कर दिखाया वह उस समय किसी साकार चमत्कार से कम नहीं था। उस समय न तो दैत्याकार मशीनें थीं, न लौह भुजाओंवाली क्रेनें थीं कि टनों भारी शिलाओं को उठा-उठाकर रख दें। न डाइनामाइट थे कि एक दिन में पहाड़ को चूर-चूर कर दें। फिर यह सब कैसे हुआ होगा कल्पना करनी भी कठिन है।

उक्त योजना बहुमुखी क्यों ?

महान वास्तुविद सूरय ने उक्त विचार योजना को क्रियान्वित कर अकसर त्राहि-त्राहि मचवाती बाढ़ की समस्या को हमेशा के लिए समूल उखाड़ फेंका। इसके साथ ही उसने परती पड़े विशाल भू-खंड को खेती-बाड़ी के लायक और उपजाऊ रूप दिया। सिंचाई की व्यवस्था की। कृषि-कार्यों में भी बहुत महत्त्व के और विविध सुधार किये। इससे फसलों की उपज तथा अन्य उत्पादन में कई गुना वृद्धि हो गयी, इतना ही नहीं उस महान इंजीनियर ने मछली मारने के काम के लिए भी कई छोटी-छोटी योजनाएं बनाकर सहायता पहुंचायी। आमोद-प्रमोद, यानी सैर-सपाटे तफरीह तथा पर्यटन के मद्देनजर इस क्षेत्र का सौंदर्य बढ़ाने के लिए भी कार्य किया।

इन तमाम योजनाओं पर दृष्टि [illegible] पड़ता है कि सूरय [illegible] इंजीनियर अब तक शायद कोई और नहीं हुआ। सूरय द्वारा कार्यान्वित इस विराट योजना का पूरा मानचित्र भी आज तक पुराने ग्रंथों में मौजूद है।

बारहवीं शती में हुए कश्मीर के इतिहासकार और कवि कल्हण ने अपने ग्रंथ 'राजतरंगिणी' में सूरय के अजीम कारनामों की मुक्त कंठ से बार-बार सराहना की है। वर्तमान युग में हुए विदेशी पुरातत्त्ववेत्ताओं आदि ने भी जब सूरय की योजनाओं का अध्ययन किया तो बहुत आदर के साथ उसकी प्रशंसा की। इस संदर्भ में दो विशेषज्ञों के कथन खास तौर से उल्लेखनीय हैं।

सुप्रसिद्ध पुरातत्तववेत्ता एम. ए. स्टाइन ने सूरय के कार्यों की सराहना करते हुए लिखा—"उसकी योजना कार्यान्वित होने से कृषि कार्य बहुत आसान हो गया। जिसके नतीजे में चावल के भाव में एकदम कमी आ गयी। एक खारी चावल का भाव जहां पहले २०० दीनार था अब घटकर ३६ दीनार हो गया।" (आज के हिसाब से : १ खारी = ९० किलोग्राम, १ दीनार = २ रुपये ५० पैसे)

कश्मीर की नदियों पर बांध बनाकर उनका मुंह मोड़ देने की सूरय की अद्भुत प्रतिभा का लोहा मानकर, आश्चर्यचकित हो, एक अन्य विदेशी इतिहासकार ने लिखा था—"सूरय के प्रयासों के फलस्वरूप उसके सामने नदियां [illegible] थीं जैसे सपेरे के [illegible] राजा को तो सौ की जगह दो [illegible] भी क[illegible] पुत्र मिल गये थे। तब उसने [illegible] चली। कपट-वेश में वह राजा के पू[illegible] पहुंचा और बोला, "[illegible] राज [illegible] थीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रति-सुख किसे अधिक पुरुष को या स्त्री को

• डॉ. शोभा निगम

इस संसार में मानव-संतान-प्रवाह को बनाये रखने के लिए ही प्रकृति ने स्त्री-पुरुष, इन दो विपरीत लिंगों की सृष्टि की है तथा उनमें परस्पर आकर्षण भी उत्पन्न किया है। यह आकर्षण ही उन्हें एक-दूसरे के करीब लाता है और परस्पर मिलाता है। यह मिलन उन्हें जो सुख देता है, वह केवल अनुभूति की चीज है।

यहां एक रोचक प्रश्न उठता है कि स्त्री-पुरुष के परस्पर मिलन में रति-सुख किसे अधिक मिलता है—स्त्री को या पुरुष को ? वैसे प्रश्न का उत्तर देना कठिन है, क्योंकि कौन यह निर्धारित करेगा कि अधिक सुख किसे मिलता है ? हां, वह व्यक्ति जरूर इसका उत्तर दे सकता है जिसने स्त्री-पुरुष दोनों के रूप में इस सुख का अनुभव किया हो। वैसे आज के वैज्ञानिक-चमत्कार से भरे युग में ऐसे कुछ [illegible] के मिल जाएंगे जिन्होंने लिंग-परिवर्तन [illegible] जाकर दोनों प्रकार के शरीरों से रति [illegible] अनुभव किया है और पाश्चात्य जगत के ऐसे लोग बेबाकी से अपना बयान देने प्रस्तुत भी हो जाएंगे, पर सदियों पूर्व हमारे देश में कोई इस तरह के प्रश्न पर विचार करे और स्वयं के अनुभव बताए यह सुनकर आश्चर्य होता है। आइए इस संदर्भ में महाभारत के भीष्म-पर्व की एक सुंदर कथा का अवलोकन करें।

विशाल यज्ञ

यहां प्रश्नकर्ता युधिष्ठिर हैं, जो भीष्म से पूछते हैं कि रति-सुख किसे अधिक मिलता है, स्त्री को या पुरुष को। भीष्म तो बेचारे अखंड ब्रह्मचारी थे, वे अपना अनुभव क्या बताते। तब उत्तर में वे भांगस्वर नामक राजा की कथा कहते हैं।

भांगस्वर महान राजर्षि था, किंतु पुत्रहीन होने के कारण दुःखी था। तब उसने पुत्र-प्राप्ति हेतु एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया, जिसका सुफल उसे सौ पुत्रों के रूप में मिला। किंतु बेचारा भांगस्वर अभी अपने वंश-वृक्ष को फलते-फूलते देख भी नहीं पाया था कि अचानक ही एक महान दुर्घटना का शिकार हो गया। हुआ यूं कि एक बार जंगल में शिकार खेलते-खेलते वह एक ऐसे सरोवर में जा गिरा जिसके जल के स्पर्शमात्र से वह पुरुष से स्त्री बन गया। अपने इस बदले रूप को देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गया। फिर उसे अपने पर बड़ी ग्लानि हुई। कैसे अपना मुंह दिखाएगा वह, अपनी प्रजा को। कौन उसका शासन स्वीकार करेगा, यह भय भी [illegible] के मन में समाया। बहुत सोचने पर राजा ने [illegible] तय किया कि अब उसे राजमहल का [illegible] बन जाना चाहिए। किंतु एक [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पुत्रों से मिलने का मोह राजा छोड़ नहीं पाया और किसी तरह रात के अंधेरे में चुपचाप अपने महल में पहुंचा ।

राजा के इस रूप-बदल की गाथा सुनकर, सभी बड़े दुःखी हुए । पर कोई कर भी क्या सकता था । अंततः अपने पुत्रों को आपस में प्रेम से रहने का उपदेश देते हुए बड़े दुःखी मन से किसी तापस के साथ रहने के लिए वन में चला गया ।

राजा के इस तरह वन चले जाने से राजमहल में उपस्थित सारे लोग अत्यंत दुःखी थे—हां गुप्त वेश में वहां खड़ा एक व्यक्ति जरूर यह सब देखकर मन-ही-मन बड़ा खुश था । वस्तुतः यह व्यक्ति बड़ी देर से राजा के साथ लगा हुआ था और यही राजा के स्त्री बनने का निमित कारण था—यह और कोई नहीं स्वयम् देवराज इंद्र था ।

किंतु देवराज को ऐसी क्या दुश्मनी थी, राजा से जो उन्होंने उससे इतना बड़ा बदला लिया था ? ऐसा क्या अपराध किया था, राजा ने इंद्र का ? वस्तुतः बात यह थी कि राजा ने पुत्र-लाभ के लिए जो महान यज्ञ किया था, उसमें उन्होंने इंद्र को कोई भाग नहीं दिया था—इंद्र के लिए राजा की यह उपेक्षा अत्यंत अपमानजनक थी—इसीलिए उसने राजा को माया के सरोवर में ढकेलकर उसे स्त्री-रूप में परिणत कर दिया था । अब इंद्र सुखी था ।

नये प्रकार का कामसुख

इधर बेचारा वह प्रतापी राजा कोमलांगी नारी के रूप में एक तापस की सेवा करते हुए जंगल में उसकी कुटिया में रहने लगा । [illegible] राजा के स्त्री-शरीर ने काम[illegible] किया । कामेच्छा यहां भी उसके शरीर में व्याप्त हुई । उधर उसके रूप के सामने तापस की तपस्या भी भंग होने लगी—फलस्वरूप राजा ने स्त्री के रूप में एक नये प्रकार के काम-सुख का अनुभव किया । इस बार बिन मांगे ही देव ने राजा को सौ पुत्रों की माता बनाया । तब महल में सौ पुत्र छोड़ने का गम राजा धीरे-धीरे भूलने लगा ।

किंतु सौ पुत्रों का जंगल में समुचित पालन-पोषण करना स्त्री-रूपी राजा को बड़ा दुष्कर जान पड़ा—फिर वह नहीं चाहता था कि उसके पुत्र वनवासी बने । अंततः वह अपने को राजा ही समझता था और अपने पुत्रों को राजपुत्र । तब बहुत सोच-विचार के बाद वह अपने सौ पुत्रों को लेकर राजमहल पहुंचा । वहां जाकर उसने अपने पूर्व-सौ पुत्रों से इनका परिचय कराया—और फिर उनके अनुरोध किया कि इन सौ भाइयों को भी अपने साथ रखो—तुम सब मिलकर समान रूप से राज्य का उपभोग करो । राजा बड़ा तकदीरवाला था । उसने अनुरोध करते ही बड़े भाइयों ने छोटे भाइयों को प्रेमपूर्वक गले लगाया—खुश होकर बोले कि चलो अब हम सौ से दो सौ हो गये ।

वन में लौटना

तब निश्चिंत होकर राजा प्रसन्नतापूर्वक वन लौट आया । उधर तापस भी इस नयी व्यवस्था से प्रसन्न था—एक प्रसन्न नहीं था, तो वह—वही देवराज इंद्र ! उसका तो पासा ही पलट गया था । राजा को तो सौ की जगह दो सौ पुत्र मिल गये थे । तब उसने [illegible] चली । कपट-वेश में वह राजा के पु[illegible] पहुंचा और बोला, "[illegible] राज[illegible]यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े बलवान, पर उतने ही मूर्ख भी हो । अपने पैतृक राज्य को इन तापस-पुत्रों के साथ क्यों बांट रहे हो ? इस पर उन्होंने कहा—"ये हैं तो हमारे पिता की ही संतान !" तब इंद्र ने उन्हें बड़ी कुटिलता से बहकाते हुए कहा, "इससे क्या होता है, तुम्हारे सगे भाई तो नहीं हैं ? देवता और असुर भी तो एक ही पिता की संतान थे किंतु राज्यलक्ष्मी को लेकर उनमें प्रेमभाव कहां रह पाया । फिर तुम कैसे आशा करते हो कि ये तापस-पुत्र तुमसे हार्दिक स्नेह रखेंगे—कल राज्य के लिए कहीं ये तुम्हारी हत्या न कर दे ।"

इंद्र का तीर निशाने पर बैठा । राजा के पूर्व सौ पुत्रों ने पश्चात सौ पुत्रों का विरोध करना प्रारंभ किया । उधर दूसरा पक्ष भी खामोश नहीं बैठा । उन्होंने भी डटकर मोरचा संभाला—नतीजा, इंद्र की मनोकामना सफल हुई—राजा के सारे दो सौ पुत्र परस्पर युद्ध में मारे गये ।

इंद्र का शाप

इधर स्त्री रूप में स्थित राजा के पास जब यह दुखद समाचार पहुंचा, तो वह फूट-फूटकर रो पड़ा । तापस भी इस समाचार को सुन बड़ा दुःखी हुआ—एक सुखी था तो वही कपटी इंद्र । राजा के दुःख को करीब से देखने के लिए वह कपट-वेश में उसके पास पहुंचा और बड़ी सांत्वनापूर्ण वाणी में उसके रोने का कारण पूछा । इस पर राजा ने दैव को कोसते हुए बताया कि किस तरह उसके दो सौ पुत्र हुए थे पर वे आपस में लड़ मरे हैं । इस पर इंद्र अपने असली रूप में आकर बोला, "अब तुम दैव को क्यों कोस रहे हो राजन । अपने पापों का स्मरण तो करो ! पुत्र-काम यज्ञ में मुझे मेरे भाग से वंचित कर तुमने जो पाप किया था, यह सब उसी का फल है ।"

यह सुनते ही राजा ने रोते हुए इंद्र के पैर पकड़ लिए—तरह-तरह से उससे क्षमा याचना की । अंततः इंद्र पिघला—राजा पर सदय होते हुए बोला, "मैं तुम्हारे सौ पुत्रों को जीवन-दान देता हूं—अब तुम कहो, किन सौ को जीवित करूं, पुरुष-रूप में जिन्हें तुमने जन्म दिया अथवा स्त्री-रूप में जो तुम्हारे गर्भ से उत्पन्न हुए ।"

इस पर क्षणभर विचार कर राजा ने कहा, "स्त्री-रूप में जिन्हें मैंने जन्म दिया उन्हें ।" तब इंद्र ने कुछ आश्चर्य से पूछा, "जिन्हें तुमने पुरुष-रूप में जन्म दिया था, क्या उन पर तुम्हारी ममता अब नहीं रही ? क्या कारण है कि तुमने स्त्री रूप में उत्पन्न बच्चों का ही जीवन-दान चाहा है ?" इस पर राजा ने कहा, "देवराज ! आज मैं मां हूं—और मां का अपने बच्चों पर जितना स्नेह होता है, उतना पिता का नहीं होता ।" तब प्रसन्न होकर इंद्र ने राजा के पूर्व सौ पुत्रों को भी जीवित कर दिया । साथ ही यह वर भी दिया कि तुम चाहो तो मैं तुम्हें तुम्हारा पुरुषत्व भी लौटा देता हूं । किंतु राजा ने विनम्रतापूर्वक इंद्र का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया । कारण पूछने पर तनिक लजाते हुए बताया, "स्त्री का पुरुष के साथ संयोग होने पर पुरुष की अपेक्षा स्त्री को अधिक विषय-सुख प्राप्त होता है, यह मेरा अपना अनुभव है, अतः मुझे स्त्री ही बना रहने दीजिए ।

—विभागाध्यक्ष-दर्शन शास्त्र
शास. छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पुराण' भारतीय संस्कृति के पुरातन जीवन के सजीव चित्रण करनेवाले साहित्य का नाम है। भारतीय जीवन के विद्या वैभव और विश्व कल्याणकारी भावनाओं का संगुफन पुराणों में मिलता है। पुराण अठारह हैं। और इनके रचयिता हैं— कृष्ण द्वैपायन व्यास। पौराणिक कहानियों में जीवन के अनेक रंगों का चित्रण है। अध्यात्म-तत्त्वों के चिंतन के साथ इनमें लौकिक जीवन के भी अनेक दृश्य मिलते हैं। जो आज के संदर्भ में भी उतने ही सजीव हैं।

निरंकुश राजा वेन

● डॉ. सुधा पांडे

अमावस्या की घनी अंधेरी रात और चारों तरफ मौत का सन्नाटा...सरस्वती और दृषद्वती नदियोंवाला वह प्रदेश स्तब्ध हो उठा था, दूर किसी पेड़ पर चीखते उल्लू की आवाज वातावरण को और अधिक भयावह बना रही थी। बीच-बीच में चीत्कारभरी आवाज सुनायी दे जाती थी।

'मृत्यु के देवताओं ! लौटा दो, मेरे पुत्र को लौटा दो। मेरा प्रतापी वेन अमर है, उसमें प्राण अवश्य लौट आएंगे'। सुनीथा का अंतर पुत्र की मृत्यु से फट चुका था। अपने पुत्र के शव पर विलाप करती सुनीथा कभी मूर्छित हो जाती थी और कभी उन्मादभरे स्वरों में चीख उठती थी। अपने पुत्र के शव को चमत्कारी औषधियों के लेपन से उसने सुरभित रखा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वेन सो रहा है। शव में विकृति लेशमात्र भी नहीं आयी थी।

जनपद में कोलाहल बढ़ चला था, सभी प्रसन्न थे कि मुनियों ने मंत्रों की कुशाओं से निरंकुश राजा वेन का वध कर दिया था। वह वेन जिसके अनीतिपूर्ण शासन में प्रजा के साथ धरती भी कांप उठी थी। सुनीथा के द्वंद्व का अंत न था। उसका अंतर हाहाकार कर रहा था, गंधर्व द्वारा दिये गये शाप साकार मानो होते दिखायी दिये।

मृत्यु की पुत्री सुनीथा आज अवश थी और शोक विह्वल। उसे अपने बचपन की घटना का स्मरण हो आया। स्वभाव में चंचल और व्यवहार में उद्दत थी सुनीथा। साधना में लीन तपस्वियों की साधना में बाधा डालने में विशेष आनंद का अनुभव होता था उसे...बालपन की ये क्रीड़ाएं धीरे-धीरे उसके स्वभाव का अंग बनती गयीं। पिता के घर अनुशासन में पाले जाने पर भी उसका स्वभाव न बदला। दिन यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही व्यतीत होते रहे, सुनीथा की दुष्ट प्रवृत्ति उग्रतर होती जा रही थी ।

एक समय जब बसंत अपने पूर्ण वैभव पर था, अपने चंचल स्वभाव के अनुसार सुनीथा सुदूर उपवन में घूमती-घूमती एक सुरम्य स्थान पर पहुंच गयी । वहां अपने यौवन से प्रकृति के सौंदर्य को जीत लेने में समर्थ सुशंख नाम का गंधर्व संगीत की एकांत साधना में लीन था...सुनीथा को मनवांछित अवसर मिल गया था...इस वन प्रांत में अकेले ही संगीत साधना कैसी ? अपनी दुष्ट प्रवृत्ति से उसकी साधना में बाधा डालते हुए सुनीथा ने गंधर्व को टोका और अपने हाव-भाव से उसे रिझाने का प्रयास करने लगी...

"कौन है तु दुष्ट ?" चौंककर शंख ने उसे दूर से ही रोका...और उसकी दुश्चेष्टाओं को महत्त्व न देकर पुनः संगीत-साधना में लग गये । विवश सुनीथा घर की ओर लौट पड़ी ।

"एक साधारण गंधर्व ने आज मेरा अपमान किया है" पिता को अपनी धूर्तता की बात न बताकर सुनीथा ने उनकी क्रोधाग्नि बढ़ायी ।

"तू मृत्यु की पुत्री होकर इस प्रकार कायरतापूर्वक अपना अपमान सहकर लौटी है । धिक्कार है तुझे ! जा उससे अपने अपमान का बदला ले ।"

सुनीथा पिता की प्रेरणा लेकर फिर दूसरे दिन वहीं पहुंची और शंख पर कशाघात करना शुरू क़र दिया ।

दुर्विनीत ! तू फिर यहां आ गयी । मौन साधक शंख अकस्मात आक्रमण से अवाक् थे । क्षणभर में ही संयत हुए और क्षुब्ध और रुष्ट होकर उसे शाप दिया— "तू दुर्बुद्धि पुत्र की जननी बनेगी और उसके विनाश से तेरा जीवन दुःखमय हो उठेगा ।" शाप के भय से थर-थर कांपती सुनीथा पिता के सामने थी । इस बार उसने पिता के सामने सारी घटना को सत्य रूप में प्रस्तुत किया । पिता विवश थे, शाप का परिणाम पुत्री को भोगना ही पड़ेगा, नियति का विधान मान उनका करुणा भरा हृदय द्रवित हो उठा, नेत्रों से अश्रुबिंदु ढुलक चले ।

समय व्यतीत होने पर 'अंग' के साथ सुनीथा का विवाह हुआ और उसने वेन को पुत्र रूप में जन्म दिया । मां की भांति वेन भी बाल्यावस्था से अनीतिपूर्ण विचारों का अनुगामी बन गया था । आयु प्राप्त होते-होते वह अधिकाधिक क्रूर बनता गया । पुरवासी उसें देखते ही 'वेन आया ! वेन आया ! कहकर पुकारते थे और छिप जाते थे । वेन की अनीति से पिता महाराज अंग निरंतर चिंतित रहते थे । उन्हें अपने जीवन के प्रति विरक्ति होने लगी थी । इसी प्रकार दिन बीतते जा रहे थे, वेन में कोई सुधार नहीं आया...एक रात जब वेन की माता सुनीथा बेसुध नींद में मग्न थी...महाराज अंङ्ग उठे और उन्होंने गृह त्याग दिया । किसी को पता न चल सका— महाराज ऐश्वर्यभरे राजमहल को त्यागकर कहीं दूर वन में चले गये ।

प्रातःकाल राजभवन में सन्नाटा था, केवल कोलाहल भरा एक स्वर फैला कि महाराज विरक्त होकर घर से चले गये हैं । राज पुरोहित, मंत्रीगण, मित्र वर्ग— सभी प्रजाजन व्याकुल होकर उनकी खोज में लग गये । शोक का पारावार न था...क्षणभर में सारा संवाद पूरे राज्य में फैल चुका था । सभी दिशाओं में दूत दौड़ाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये किंतु सारे प्रयास निष्फल हुए...निराश सभी लौट आये । महाराज अंङ्ग के गृहत्याग के कारण कोई रक्षक न रह गया, सभी उच्छृंखल हो उठे । गर्ग, अत्रि आदि मुनियों के मन भयावह आशंका से सशंकित हो उठे । इस दुराचारी वेन ने सबके सामने पिता अंग को अपमानित किया, लांछित करके घर से निकलने को विवश किया...

किंतु राजा के बिना शासन कैसे चलेगा ? भृगु ने प्रश्न किया ।

मंत्रिगण वेन को राजा मानने को तैयार नहीं हैं, पता नहीं आगे क्या हो ! गर्ग ने चिंता व्यक्त की ।

"तुम सब मेरे पुत्र को राजा नहीं बनने दोगे ।" सुनीथा का स्वर था यह !

मंत्रिगण विद्रोह करें, इसके पूर्व सुनीथा की सम्मति से मुनिगणों ने वेन को राजपद पर अभिषिक्त कर दिया ।

राज्यासन पर वह वेन अपरिमित ऐश्वर्य पाकर और अधिक उन्मत्त हो उठा और स्वयं को सर्वोपरि मानकर महापुरुषों का, विद्वानों का नित्यप्रति अपमान करने लगा जैसे कोई निरंकुश गजराज मदमस्त होकर आकाश और पृथ्वी को कंपा दे, इसी प्रकार अपने अत्याचारों से सारी पृथ्वी को वेन ने कंपा दिया था । सारी प्रजा एक ओर राजा के अनीतिपूर्ण शासन और दूसरी ओर चोर-डाकुओं के अत्याचारों से संकट में पड़ गयी थी । सर्वत्र हाहाकार मचा था । जब रक्षक ही भक्षक बनने को तत्पर हो, तब मुक्ति का उपाय कहां ढूंढ़ें ।

अन्यायी वेन को प्रजा के इन कष्टों से कोई वास्ता न था । वह सभी प्रकार के भावों से दूर निर्द्वंद्व भाव से उसी प्रकार राज्य कार्यों में रत रहा, जैसे कुछ हुआ ही न हो । मंत्रिगण यदि कुछ प्रबोध भी देते तो क्रुद्ध भाव से, अपनी कपट नीति से उन्हें बहिष्कृत करने में भी नहीं चूकता था ।

वेन के गर्व का ओर-छोर न रहा । उसके अनीतिपूर्ण क्रूर कर्मों को चरम सीमा तक पहुंचाने में आग में घी का काम किया था उस कपट मुनि ने जो अनायास ही राजा पर अपना दृढ़ विश्वास जमा चुका था । वेन अपने राज्य संचालन में लीन थे कि एक दिन उनकी सभा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीषण आकृतिवाला एक साधु प्रविष्ट हुआ। सभा में अचानक प्रविष्ट होनेवाले उस साधु से उसका परिचय और आने का प्रयोजन राजा ने पूछा—

"तू महामूढ़ है ! हे राजन ! मैं ही सभी देवों द्वारा पूजित धर्म का सर्वस्व हूं। सत्य का ज्ञाता धर्म और मोक्ष हूं।"

अपनी चमत्कारभरी वाणी से विमोहित करता हुआ वह साधु राजा को प्रभावित करने में सफल हो गया। वेन उसके प्रभाव में पड़कर और अधिक अहंकार से भर गया। मुनियों ने उसे समझाने का प्रयास किया किंतु वह उन पर क्रोधित होकर कहने लगा—

"तुम लोग बड़े मूर्ख हो, तुम लोगों ने अधर्म में ही धर्म बुद्धि कर रखी है। तुम ईर्ष्या-द्वेष आदि छोड़कर अपने सभी कर्मों द्वारा मुझे ही मानो, मेरा ही पूजन करो।"

मुनियों, प्रजाजनों और मंत्रियों की चिंता का पारावार न रहा। सभी की आशाएं अंधेरे में डूब चुकी थीं जैसे जलती लकड़ी के बीच में चींटी आदि जीवों के प्राण संकट में पड़ जाते हैं, उसी प्रकार सारी प्रजा हाहाकार कर उठी।

"अंग के गृहत्याग के बाद हमने अराजकता से बचने के लिए वेन को राजा बनाया था"...शुक्राचार्य ने चिंताभरे स्वरों में कहा।

इतना ही नहीं मंत्रिमंडल को अनुकूल बनाकर उसका प्रशस्ति गान भी तो हमने ही किया— "हे महाप्रतापी वेन ! आप हमारे राजा हैं, आपके आश्रय में रहकर प्रजा सुख से जीवन-यापन करेगी।" अत्रि का स्वर था...

किंतु धिक्कार है ! साधारण प्रजा भी अब सुख से नहीं रह पा रही है। जब राजा से ही

प्रजा को भय हो जाए, तो प्रजा को कैसे सुख-शांति मिल सकेगी ? सुनीथा का पुत्र यह वेन स्वभाव से ही दुष्ट है...हमने इसे प्रजा की रक्षा के लिए नियुक्त किया और आज यह उसी को नष्ट करने पर तुला हुआ है। मंत्रिगणों का तर्क था। प्रयास करके देखा जाए। हम इसे समझाने का प्रयास करेंगे, यह हमारा ही दुर्भाग्य है। हमने इस दुराचारी वेन को जानबूझकर ही तो राजा बनाया— एक अन्य मंत्री ने सुझाव दिया।

एक बार और प्रयास करेंगे। यदि समझाने पर भी यह न माना तो लोक के धिक्कार से दग्ध हुए इस अन्यायी शासक को हम अपने तेज से दग्ध कर देंगे। मुनिजनों ने भी सहमति दी।

परस्पर विचार-विमर्श करने के बाद वे सभी मंत्रिगण मुनिजनों समेत वेन के पास गये और अंतर के क्रोध को छिपाकर सहज भावों से निवेदन किया—

"हे राजन ! प्रजा के कल्याण के लिए हम आपसे निवेदन कर रहे हैं कि प्रजा का कल्याण ही राजा का सर्वोच्च धर्म है, उसे नष्ट न होने दें। प्रजा के सुख-शांतिपूर्वक रहने से आपकी आयु, श्री, शक्ति, कीर्ति सभी की वृद्धि स्वतः होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप इस प्रकार अनीतिपूर्वक सभी देवों, मंत्रियों, मुनिजनों एवं प्रजाजनों की उपेक्षा से अपना अहित तो कर ही रहे हैं, राज्य का भविष्य भी अनिश्चय के गर्भ में दब रहा है । हे राजन ! जो राजा दुष्ट सलाहकारों से स्वयं को बचाकर चोरों और विभिन्न आपदाओं से प्रजा की रक्षा करते हुए न्यायानुकूल बना देता है, वह इहलोक और परलोक दोनों स्थानों पर सुख पाता है ।''

विपरीत बुद्धि वेन अपने लिए कहे गये इस उपदेश को सुनकर और अधिक क्रोध से भर उठा—

''तुम सभी लोग जीविका देनेवाले मुझे छोड़कर किसी अन्य को श्रेष्ठ मानने की बात करते हो, मूर्खतावश राजा-रूपी परमेश्वर को ही उपदेश दे रहे हो...अनेक अपमानभरे शब्दों से तिरस्कृत कर वेन ने उन सभी को राजभवन से निकल जाने का कठोर आदेश सुनाया ।

तिरस्कृत, लांछित, अपमानित वे सभी आक्रोश से भर उठे थे— 'शासक का पद व्यर्थ है, राजा और प्रजा सभी बराबर हैं'' अत्रि ने ललकारा ।

कोई ऐसा उपाय किया जाए कि नये शासक को शुरू से निरंकुश होने का अवसर न मिले...गर्ग की वाणी गूंजी ।

राजभवन के चारों ओर कोलाहल बढ़ चला था । विद्रोही जनता उमड़ पड़ी थी और प्रतिकार के लिए, ''मार डालो ! स्वभाव से दुष्ट इस अनाचारी को मार डालो । यदि यह जीवित बच गया और इसी प्रकार राज सिंहासन पर आरूढ़ रहा, तो संसार ही समाप्त हो जाएगा, यह किसी भी प्रकार इस सिंहासन के योग्य नहीं है । अपने अनीतिपूर्ण कार्यों से यह पहले ही नाश तक पहुंच चुका है, इसका जीवित रहना व्यर्थ है । ओ वेन नराधम...चीखते हुए मुनि आगे आये और मंत्रपूत कुशा की हुंकारों से उसका प्राणांत कर दिया ।

वेन मारा गया है, यह समाचार क्षणभर में जंगल की आग की तरह फैल चुका था...सर्वत्र आतंक-सा छा गया, सारा आकाश धूल से भर उठा । ...मुनियों का गरजता महासागर शांत हो चुका था । वे मंत्र जनता की आवाज थे ।

शोकाकुल सुनीथा वेन के शव को लेकर विलाप करती रही । अपने तंत्र और लेपन के चमत्कार से उसे सुरक्षित रखकर लगातार चीखती हुई सारे वातावरण को विदीर्ण करने लगी— आपने इस तेजपुत्र को खंड-खंड कर दिया है । मैं इसे फिर से जीवित करूंगी । ओ मृत्यु के देवताओं, लौटा दो मेरे पुत्र के तेज को लौटा दो...घने जंगलों और पहाड़ियों से टकराकर उसकी आवाजें लौट-लौट आ रही थीं ।...

कुछ समय बाद ऋषियों ने सुनीथा से वेन का शव प्राप्त किया । साधना और तप के बल पर उसका मंथन किया । उसकी दाहिनी भुजा के मंथन से उत्पन्न पुत्र भुजापुत्र कहलाया, जिसने धरती का समुचित विकास किया । उसकी उर्वरा शक्ति का संचय किया । उसने पृथ्वी का दोहन कर आर्यवर्त का स्वरूप ही बदल दिया । यही भुजापुत्र प्रतापी शासक 'पृथु' के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।

—प्राचार्य,
एम.के.पी. पो.ग्रे. कॉलेज,
देहरादून (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधा बगुला

परिचय : बगुला परिवार का यह सदस्य आकार में गांव की मुरगी जितना होता है । जब यह बैठा हो तो शरीर पर भूरी धारियां और मटमैला रंग होता है, लेकिन जैसे ही उड़ने के लिए पंख खोलता है, चमकदार सफेद पंख दिखने लगते हैं ।

प्रजनन काल में इसकी पीठ पर उन्नाबी रंग के पंख आ जाते हैं और पीछे की ओर लंबी सफेद कलगी निकल आती है ।

यह घाट के पास जहां धोबी कपड़े धोते हैं या घर की औरतें जहां पानी भरने आती हैं, शिकार के लिए खड़ा होता है ।

प्राप्ति स्थान : अंधा बगुला अकेले या दो-दो, तीन-तीन के झुंडों में, कीचड़वाले तालों, गढ़हियों में या ऐसी जगह में रहता है जहां मेंढ़क, छोटी मछलियां, केंकड़े आदि हों । यह मुख्य रूप से इन्हें ही खाता है ।

यह पेड़ पर घोंसला बनाकर रहता है ।

नीलकंठ

परिचय : यह ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज नीलकंठ की जाति का, कबूतर के डील का पक्षी होता है । इसका सिर कुछ बड़ा, चोंच भारी और छाती लाली लिए भूरी होती है । इसके पेट और पूंछ का निचला भाग हल्का नीला होता है । उड़ते समय गहरे और हल्के नीले रंगों की चमकीली पट्टियां पंखों पर दिखाई देती हैं । नीलकंठ की बोली तेज और कठोर होती है । यह अपनी मादा को रिझाने के लिए हवा में कलाबाजी खाते हुए विशेष आवाज निकालता है ।

प्राप्ति स्थान : नीलकंठ मुख्य रूप से खेतिहर इलाकों में और घने जंगलों से दूर रहता है ।

कश्मीरी नीलकंठ सितंबर-अक्तूबर के महीने में सिंध, कच्छ, सौराष्ट्र और उत्तर गुजरात होते हुए अफरीका प्रवास के लिए जाता है । झींगुर, टिड्डे, गुबरैले, छिपकलियां, चूहे और मेंढक आदि इसका भोजन है । यह फसलनाशक कीड़ों का सफाया करके फसल की रक्षा करता है । यह अपना घोंसला पेड़ की खोखल में बनाता है । मादा एक बार में ४ या ५ अंडे देती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपा

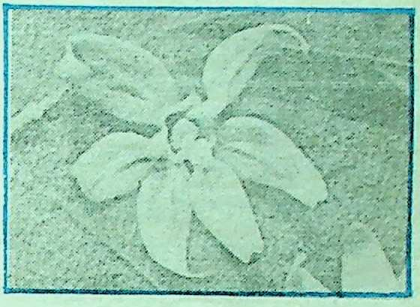

परिचय : चंपा को आरोही यलैंग-यलैंग, एलैंग-इलैंग, सौंग-सौंग, टेल ग्रेप और एलैंग-इलैंग-द-चाइना भी कहते हैं । इस वंश की झाड़ियों की १५ किस्में हैं जिनमें हरी चंपा और पीली चंपा प्रमुख है । हरी चंपा का झाड़ होता है । इसके फूल में तीन या चार पांखुरी होती है । फूल का रंग पत्तियों के हरे रंग से मिलता हुआ होता है । तीन वर्ष की आयु में इसकी झाड़ी पर फूल आने शुरू हो जाते हैं । गरमी तथा वर्षा ऋतु में इस पर अधिक फूल आते हैं । इसके फूलों का आकार नियमित नहीं होता और इनकी शक्ल शरीफे के फूलों-सी होती है ।

प्राप्ति स्थान : इसका मूल स्थान मलाया और भारत में है । भारत के मैदानी क्षेत्रों तथा पहाड़ी इलाकों में इसके फूलों की बहार देखने को मिलती है । इसे बगीचे में भी आसानी से लगाया जा सकता है ।

हर सिंगार

परिचय : संस्कृत भाषा में इसे 'पारिजात' कहते हैं और हिंदू इसे पवित्र मानते हैं । यह पौधा मंदिर उद्यान के लिए आवश्यक समझा जाता है । यह विशेष स्थान इसको सुंदर फूलों और आनंददायी सुगंधि के कारण मिला है ।

इसके लिए छांवदार स्थान, रेतीली दुमुट भूमि जिसमें रेशेदार पीट, रेत और लकड़ी का कोयला मिलाया गया हो, बहुत उपयुक्त है । इसके पौधे वर्षा ऋतु में बीज तथा कलमें

लगाकर तैयार किये जाते हैं । बसंत ऋतु में भी इसके बीज लगाये जाते हैं। इसकी ऊंचाई तीन से छह मीटर तक होती है । इसके पत्ते विपरीत दिशा में निकलते हैं । यह अंडाकार दिल के आकार के, खुरदुरे और रोएंदार होते हैं । इसके फूल पांच-पांच के पुष्प गुच्छों में लगते हैं जो शाखा के छोर पर होते हैं ।

सितंबर से नवंबर तक इसकी झाड़ी में भरपूर फूल आते हैं । फूल सफेद रंग के, सितारों जैसे रकाबी की तरह होते हैं । इनके ढंठल सिंदूरी रंग के और बीच का हिस्सा नारंगी होता है । इसके फूल रात को खिलते हैं और प्रातः तक झड़ जाते हैं ।

प्राप्ति स्थान : निकटैंपिस वंश के पौधे की एकमात्र यही किस्म है जिसका मूल भारत का है । दिसंबर के आसपास इस पौधे के बीज बनने शुरू हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहराते जंगल सुखदायक हों

डॉ. डी. एन. तिवारी

जैविक विविधता के क्षरण, रेगिस्तान के विस्तार, जलवायु में परिवतरन, ओजोन की परत में छेद, अम्लीय वर्षा तथा पर्यावरण प्रदूषण से समस्त विश्व चिंतित है तथा इन्हें रोकने हेतु प्रयासरत है । वृक्ष तथा वन जहां जैविक विविधता का संरक्षण, रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने, सूंदर जलवायु बनाने तथा पर्यावरणीय प्रदूषण को समाप्त करने की क्षमता रखते हैं, वहीं वे मनुष्य को प्राणवायु, भोजन, चारा, ईंधन तेल, रेशा, गोंद, जड़ी-बूटियां, इमारती लकड़ी तथा नाना प्रकार के औद्योगिक कच्चामाल उपलब्ध कराते हैं जिससे पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक विकास संभव है ।

स्वास्थ्य देश की लगभग ४० प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा के नीचे है । सबके के लिए स्वास्थ्य, गरीबी, उन्मूलन, शिक्षा एवं शुद्ध पेयजल संबंधी महत्वाकांक्षी लक्ष्य अभी सिर्फ कागज पर हैं । यद्यपि बार-बार यह बात दोहरायी जाती है कि गरीबी, भुखमरी, गंभीर रोगों से मुक्ति तथा शिक्षा एवं शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने हेतु प्रर्याप्त राशि का बजट में प्रावधान है, परंतु योजनाओं का सही कार्यान्वयन न होने के कारण हमारी उपलब्धि नगण्य रही ।

मोहन धारिया कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार यदि १२ करोड़ हैक्टर बंजर भूमि (जबकि देश में १७.५० करोड़ हैक्टर बंजर भूमि उपलब्ध है) को कृषि वानिकी अथवा वानिकी अथवा चारागाह क्षेत्रों में विकसित किया जाए तो ३ करोड़ परिवारों को १,२०,००० करोड़ रुपए की आमदनी उपलब्ध हो सकती है तथा सभी ५ वर्षों में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, बीमारी तथा सूखा एवं बाढ़ से मुक्ति पा सकते हैं । इन क्षेत्रों से उत्पादित कच्चामाल पर आधारित लघु उद्योग ३ करोड़ परिवारों को अतिरिक्त रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी तथा भुखमरी से मुक्ति दिलाने के साथ शहरों की ओर उनके पलायन को रोक सकते हैं । यदि ६ करोड़ परिवार (३६ करोड़ जनसंख्या) गरीबी, भुखमरी से मुक्ति पा लें तो देश तत्काल समृद्ध तथा विकसित देशों की श्रेणी में आ जाएगा ।

देश में गरीबी क्यों ?

अंगरेजी शासन काल की शोषण से परिपूर्ण नीतियां, आबादी में वृद्धि, असंतुलित योजना विकास, नैसर्गिक साधनों का असीमित दोहन, पिछड़े क्षेत्रों के विकास में कमी, पर्यावरण तथा वनों के संरक्षण में ध्यान न देना तथा भूमि का दुरुपयोग आदि ने देश में गरीबी, भुखमरी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशिक्षा एवं बीमारी को प्रोत्साहित किया । शहरी तथा औद्योगिक प्रसार एवं विकास की योजनाओं ने गरीबों को पर्वतों, वनों, रेगिस्तानी एवं अन्य बंजर क्षेत्रों में जाने हेतु बाध्य किया

वन-विनाश में दोनों महायुद्ध, रेलवे, जमींदारी उन्मूलन, अधिक चराई, आग एवं कृषि करने हेतु जबरन कब्जे तथा विकास योजनाओं हेतु वन भूमि के उपयोग की प्रमुख भूमिका रही । वनवासी सदैव से वनों को अपना दाता, भ्राता एवं अभिरक्षक मानते रहे, परंतु धीरे-धीरे वनों को मूलतः इमारती लकड़ी उगाने हेतु विकसित किया गया तथा अकाष्ठ वनोपज को गौण मानकर उसके उत्पादन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया । यद्यपि लकड़ी के उत्पादन से सरकार को अधिक राजस्व मिली परंतु वनवासियों को फल, फूल, चारा, गोंद, तेल, जड़ी-बूटियां तथाजीवन-यापन के अन्य साधन नहीं मिल सके, जो उनके सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु आवश्यक थे । फलस्वरूप वनों का विनाश होता गया तथा वनवासी लगातार गरीब होते गये ।

वनों के विनाश, बांधों के निर्माण, खनन कार्य, सड़क-निर्माण, चल खेती आदि ने जल ग्रहण क्षेत्रों को पूरी तरह हिला कर रख दिया, जिससे बाढ़ तथा सूखे की स्थिति निर्मित हो गयी । वर्ष १९५३ से १९९० के बीच देश में केवल बाढ़ से ३५,२८३.१५ करोड़ की क्षति हुई ।

वनों के विनाश से जलाऊ लकड़ी तथा चारे का संकट, पानी की कमी एवं जीवन दायिनी जड़ी-बूटियों की समस्या ने विकराल रूप धारण किया । जलाऊ लकड़ी, चारा तथा पानी लाने हेतु अब अधिकांश क्षेत्रों में महिलाओं को अत्यधिक समय खर्च करना पड़ता है, जिससे उनकी परेशानी तथा गरीबी बढ़ रही है ।

वृक्षों के अभाव में भूमि का कटाव, ऊसर भूमि का विस्तार, सूखा, बाढ़, मरूस्थलों का विस्तार, मौसम की विषमताएं, पर्यावरण प्रदूषण बढ़े, जिससे नाना प्रकार की बीमारियों ने जन्म लिया । कृषि तथा बागवानी की फसलों को अब बचाना लगातार अधिक खर्चीला तथा

वन-विनाश में दोनों महायुद्ध, रेलवे, जमींदारी उन्मूलन, अधिक चराई, आग एवं कृषि करने हेतु जबरन कब्जे तथा विकास योजनाओं हेतु वन भूमि के उपयोग की प्रमुख भूमिका रही । वनवासी सदैव से वनों को अपना दाता, भ्राता एवं अभिरक्षक मानते रहे, परंतु धीरे-धीरे वनों को मूलतः इमारती लकड़ी उगाने हेतु विकसित किया गया तथा अकाष्ठ वनोपज को गौण मानकर उसके उत्पादन पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया ।

श्रम-साध्य होता जा रहा है । कम उपजाऊ क्षेत्रों में लाभ-खर्च का अनुपात लगातार घट रहा है, अतः लोग गरीब होते जा रहे हैं ।

गरीबी हटाने हेतु प्रयास

शासन विशेष क्षेत्रीय योजनाओं द्वारा गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, बीमारी, पिछड़ापन एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

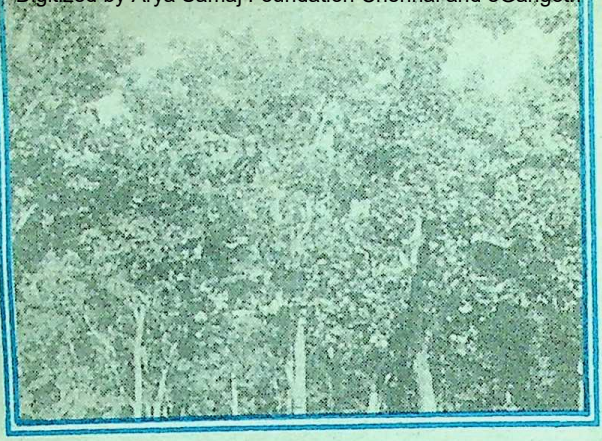

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान हेतु प्रयासरत है । इन्हीं प्रयासों के अंतर्गत पहाड़ी विकास कार्यक्रम, आजदिवासी उपयोजना, कंपोनेंट प्लान, रेगिस्तान विकास कार्यक्रम, समन्वित ग्रामीण विकास योजना तथा जवाहर रोजगार योजना, आदि चलायी जा रही है । ग्रामीण विकास का मुख्य आधार भूमि का समुचित वितरण, मिट्टी एवं जल का सही उपयोग, कृषि-वानिणकी-पशुपालन पर जोर, लघु-उद्योगों की स्थापना, मंडियों तथा बाजारों की व्यवस्था तथा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति है ।

नयी अर्थ-नीति अपनाकर सरकार विदेशी निवेश में वृद्धि, निर्यात में बढ़ावा, आर्थिक-विकास की ऊंची रफ़ार, मुद्रास्फीति पर दृढ़ नियंत्रण और अधिकाधिक रोजगार वृद्धि का प्रयास कर रहीं है । उपलब्ध भूमि के समुचित वितरण का प्रयास जारी है । बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने हेतु वैज्ञानिकों एवं गैर सरकारी सनस्थाओं की मदद ली जा रही है ।

इस समय देश के सामने सबसे बड़ी कठिनाई नशाखोरी व नशीले द्रव्यों की तस्करी, भ्रष्टाचार को बढ़ानेवाली कार्यवाइयां, चोरी, झूठ बेइमानी— जैसी मनुष्य की मूल प्रवृतियां, शोषण एवं गरीबी उन्मूलन की योजनाओं के सही रूप से कार्यान्वयन में कमी की है ।

आज आवश्यकता है उत्पादकता बढ़ाने, पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त करने, जन-जन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने तथा बीमारी, लाचारी, भुखमरी, अशिक्षा एवं अंधविश्वास से छुटकारा पाने की । हमें सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास की ओर भी ध्यान देना होगा । संस्कार हमें शिक्षा और संस्कृति से ही मिल सकते हैं । सांस्कृतिक उन्नयन और भौतिक संपन्नता का एक-दूसरे के बगैर कोई अर्थ नहीं होगा । हम खाद्यान्न का निर्यात करते हैं तथा देश में तीन करोड़ टन खाद्यान्न का सुरक्षित भंडार है, परंतु आज भी करोड़ों लोग भुखमरी के शिकार हैं । बेरोजगारी से क्रम क्षमता घट रही है, अतः गरीबी, भुखमरी का बढ़ना स्वाभाविक है ।

गरीबी हटाने हेतु उत्पादकता बढ़ाना आवश्यक

भारत में प्रति हैक्टर एक दशमलव छह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१.६) टन खाद्यान्न पैदा होता है, जबकि विश्व औसत दो दशमलव छह (२.६) टन का है। विकसित देशों में छह से आठ टन प्रति हैक्टर खाद्यान्न पैदा होता है। हरित क्रांति के अंतर्गत अभी भरी भूमि का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। अत्यधिक सिंचाई एवं रसायनिक खाद के उपयोग से भूमि दलदली तथा ऊसर बनती जा रही है। पौध संसाधनों के संरक्षण के अभाव में नाना प्रकार की उच्च नस्ल की प्रजातियां समाप्त हो रही हैं।

आज की तात्कालिक आवश्यकता है भूमि की क्षमता अनुसार फसल उगाने, कृषि-वानिकी अपनाकर भूमि की उत्पादकता बढ़ाने तथा बंजर भूमि की उत्पादक बनाने की। जब तक गरीबों को उत्पादन बढ़ाने में शामिल नहीं किया जाता तथा उनके आर्थिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जाती, तब तक गरीबी उन्मूलन केवल कागजी प्रयास ही रहेगा।

उत्पादन बढ़ाने हेतु पर्यावरण के अनुरूप प्रौद्योगिकी विकसित करने की आवश्यकता है। बहुउद्देश्यीय पेड़ जो भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाने के साथ नाना प्रकार के कच्चामाल का उत्पादन की क्षमता रखते हैं, को प्रश्रय देना होगा। जड़ी-बूटियों को राष्ट्र की चिकित्सा योजना का एक अंग बनाकर उनके उत्पादन एवं अधिकाधिक प्रयोग से ही सबके लिए स्वास्थ्य योजना, गरीबों तक पहुंच सकती है। मिट्टी एवं जल के संरक्षण से ही लोगों को पीने का पानी तथा सिंचाई की क्षमता विकसित हो सकती है। शिक्षा एवं साक्षरता, सफाई तथा लघु उद्योगों के विकस से ही गरीबी उन्मूलन संभव है।

गरीबी उन्मूलन में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका

गरीबी उन्मूलन में गैर-सरकारी संगठनों और स्वैच्छिक संस्थाओं की अहम भूमिका है। "उत्थान" जो कि एक गैर सरकारी संगठन है, ने पहाड़ों खनन क्षेत्रों, ऊसर भूमि, रेगिस्तान तथा वीहड़ों में हरियाली लाने एवं खाद्यान्न तथा चारा उगाने के अनुरूप उत्पादन एवं रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी उन्मूलन में इसने सराहनीय कार्य किया है। जीवन-दायिनी जड़ी-बूटियां और पौधों को बचाने एवं उनका उत्पादन बढ़ाकर लोगों के आर्थिक विकास में इसकी प्रमुख भूमिका रही है।

वेद में कामना की गयी है कि "हे पृथ्वी तुम्हारे ऊपर लहराते हरे-भरे जंगल सुखदायक हो"। हम सभी जानते हैं कि वृक्ष विश्व के लिए वातानुकूलन तथा आवरण का काम करते हैं। वे कृषि, पशुपालन एवं औद्योगिकरण में सहायक है।

आइए बंजर भूमि में हरियाली लाकर गरीबी उन्मूलन में सहायक बनें। रहीम के अनुसार यह प्रयास अपने आप में श्लाघनीय होगा —

"दीनन सब को लखत है, दीन्हि लखहि न कोय।
जो रहीम दीनहि लखैं, दीन-बंधु सम होय।"

पूर्व महानिदेशक
फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट
न्यू फारेस्ट देहरादून—२४८००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होम्योपैथी के जनक : हैनीमैन

● डॉ. मधुसूदन शर्मा

पृथ्वी पर मनुष्यों के कष्ट दूर करने के लिए प्रायः समय-समय पर कोई अलौकिक विभूति अवश्य जन्म लिया करती हैं। ऐसी ही एक दिव्यात्मा का अवतरण १० अप्रैल सन् १७३५ में जरमनी के 'सैक्सन' राज्य के 'मिसेन' नगर में एक निर्धन परिवार में हुआ। इस तपस्वी का नाम था—क्रिश्चियन फ्रैडरिक सैमुअल हैनिमैन। हैनिमैन ने रोगग्रस्त मानव समाज के दुःख निवारण के लिए अपना समग्र जीवन आहूत कर दिया।

कुशाग्र बुद्धि

सैमुअल हेनिमैन के पिता क्रिश्चियन गॉटफ्रेड एक पेंटर थे। गॉटफ्रेड शिक्षित तो नहीं थे, लेकिन 'चिंतनशील' व्यक्ति थे। अपने बेटे हैनिमैन को उन्होंने 'चिंतन' के महत्त्व को समझाया। गॉटफ्रैड आर्थिक रूप से जर्जर थे, इसलिए उनके बेटे हेनिमैन ने प्राथमिक शिक्षा घर पर ही पूरी की। हेनिमैन बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि थे। हेनिमैन की प्रखर बुद्धि को पहचानते हुए अध्यापकों ने उनकी स्कूली शिक्षा की मुफ़्त व्यवस्था की। जब हैनिमैन २१ वर्ष के हुए, तो उन्हें विश्व की सत्रह भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था। धनाभाव और विषम परिस्थितियों से जूझते हुए हैनिमैन ने 'लिपजिंग' के एक मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लिया और सन् १७७९ में चिकित्सा विज्ञान की उन दिनों की सर्वश्रेष्ठ डिग्री एम. डी. उच्चतम अंक लेकर पास की।

हैनिमैन के जमाने में चिकित्सा प्रणाली बेहद कष्टप्रद थी। रोगी की चिकित्सा अमानवीय तौर-तरीकों से की जाती थी। रोग ठीक करने के लिए दस्तावर दवाइयां या उल्टी लानेवाली दवाइयां दी जाती थीं। रक्त बहा देना, जोकें लगा देना चिकित्सा के अंग थे। शल्य-क्रियाएं हृदय विदारक हुआ करती थीं। हैनिमैन उस समय की कष्टकारी, आधारहीन, अव्यवस्थित चिकित्सा प्रणाली से असंतुष्ट थे। कुछ दिन चिकित्सा व्यवसाय करने के पश्चात हैनिमैन ने इसे छोड़ दिया। अब हैनिमैन रसायन शास्त्र पर कार्य करने लगे और अपने परिवार के जीवनयापन के लिए विभिन्न भाषाओं में चिकित्सा ग्रंथों का अनुवाद करने लगे।

सन् १७९० में चिकित्सा के इतिहास में एक क्रांतिकारी घटना घटी। डॉ. हैनिमैन उस समय की चिकित्सा की प्रसिद्ध पुस्तक 'क्यूलैंस मैटीरिया मैडिका' का अंगरेजी से जरमन भाषा में अनुवाद कर रहे थे। इस पुस्तक में एक जगह लिखा था कि सिनकोना पेड़ की छाल के अर्क का सेवन करने से कंपकंपी देकर चढ़नेवाला बुखार ठीक हो जाता है। पुस्तक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुखार ठीक का कारण सिनकोना छाल का कड़वा होना बताया गया था । हैनिमैन के खोजी दिमाग में एक विचार कौंधा—"कड़वे तो बहुत से पदार्थ होते हैं, लेकिन सभी तो बुखार ठीक नहीं करते । फिर सिनकोना छाल में ऐसा क्या है, जो यह बुखार ठीक कर देती है । हैनिमैन का प्रयोग यहीं से प्रारंभ हुआ । उन्होंने सिंकोना छाल के अर्क का सेवन किया । आश्चर्य ! हैनिमैन के स्वस्थ शरीर में बुखार के साथ-साथ कंपकंपी होने लगी । इस प्रयोग से हैनिमैन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि चूंकि, सिनकोना छाल का अर्क स्वस्थ शरीर में कंपकंपीवाला बुखार पैदा करता है, इसीलिए यह अर्क कंपकंपी बुखार से पीड़ित रोगी को स्वस्थ कर देता है । हैनिमैन के लिए यह 'सिनकोना छाल का कंपन ज्वर उत्पन्न करने का गुण' एक ऐसी घटना थी, जैसी 'न्यूटन के लिए पेड़ से सेब गिरना ।' इस प्रयोग से हैनिमैन ने समता का सिद्धांत—"शमः शमंः शमयति (सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटर) प्रतिपादित किया । जिसका अर्थ है—समान से समान की चिकित्सा । इस प्रकार हैनिमैन ने चिकित्सा जगत को एक नयी चिकित्सा-पद्धति 'होम्योपैथी' से परिचय कराया ।

हैनिमैन के जमाने में चिकित्सा प्रणाली बेहद कष्टप्रद थी । रोगी की चिकित्सा अमानवीय तौर-तरीकों से की जाती थी । रोग ठीक करने के लिए दस्तावर दवाइयां या उल्टी लानेवाली दवाइयां दी जाती थीं ।

परिवार पर प्रयोग

होम्योपैथी के सिद्धांत के अनुसार औषधियों के लक्षणों को जानने के लिए उन्हें स्वस्थ व्यक्तियों पर प्रयोग करना होता है । डॉ. हैनिमैन ने इस चुनौती को स्वीकार किया और विभिन्न औषधियों तथा विषों को स्वयं अपने शरीर पर सिद्ध किया । हैनिमैन ने कई वर्षों तक अपने परिवार तथा मित्रों पर भी अनेक औषधियों के परीक्षण किये और 'मैटीरिया मैडिका प्यूरा' नामक होम्योपैथिक औषधियों के ग्रंथ की रचना की । हैनिमैन ने चिकित्सा के कई नये सिद्धांत भी प्रतिपादित किये, जिनका वर्णन इनकी पुस्तक 'आर्गेनन ऑव मैडिसिन' में है । इस पुस्तक के अध्ययन के बिना कोई भी कुशल होम्योपैथ नहीं बन सकता ।

होम्योपैथी मुख्य रूप से सदृश विधान, एक औषधि, सूक्ष्म मात्रा, सिद्ध औषधियों का प्रयोग, धातु दोष, जीवनी शक्ति और शक्तिकरण के सिद्धांत पर टिकी है । डॉ. हैनिमैन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि क्रॉनिक डिजीज में जीर्ण रोगों के उपचार के लिए धातुदोष (सोरा, सिफिलिस, सायकोसिस) के सिद्धांत को प्रतिपादित किया । होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में रोग के लक्षणों की नहीं, बल्कि रोगी के लक्षणों की चिकित्सा की जाती है

१६९, नेहरू नगर, रेलवे रोड़, रूड़की—२४७६६७ जिला—हरिद्वार (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी पूजा किये बिना ही जल पीते हो !

● जियालाल आर्य

अक्टूबर १९९४ में मैं सपरिवार दक्षिण भारत के दर्शन पर था । दक्षिण भारत दर्शन का मतलब मुख्य रूप से देवस्थानं दर्शन होता है । इसी सिलसिले में मैं मदुरई के सरकिट हाउस में रुका था ।

मदुरई सरकिट हाउस के शुष्क एवं अपनत्वहीन वातावरण में मन नहीं रम सका । मीनाक्षी दर्शन हो चुका था । और कोई विशेष आकर्षण भी नहीं था । अतएव शाम ढलने से पूर्व रामेश्वरम् के लिए सपरिवार प्रस्थान कर गया । मंडपम् से करीब २०-२५ मील पहले ही पुलिस ने गाड़ी रोक दी । मालूम हुआ कि रामेश्वरम द्वीप में विधि-व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो गयी है । रामेश के घर को भी आदमी ने नहीं छोड़ा । पुलिस के सामने जब सभी तर्क विफल हो गये तब मैंने रामवाण छोड़ा । 'मैं बिहार का गृह सचिव हूं और रामेश्वरम जाना आवश्यक है ।' सिपाही ने सल्यूट मारा और सलाह दी कि मंडपम के होटल में रुक जाइएगा, द्वीप की स्थिति ठीक नहीं है ।

गृह सचिव का कमाल !

मंडपम में पूर्ण शांति थी । रात्रि के आठ बज चुके थे । विद्युत-प्रभा से इंदिरा सेतु बड़ा आकर्षक लग रहा था । गाड़ी आगे बढ़ा दी । सेतु के दोनों ओर सागर की लहरों की प्रतिध्वनि का संगीत बड़ा मनोहारी था । सेतु पार केंद्रीय बल की टुकड़ी तैनात थी । गाड़ी रुकी । सिक्योरिटी गार्ड के प्रश्न के पूर्व ही ड्राइवर ने रामवाण छोड़ा, 'साहब गृह सचिव हैं ।' वह न केवल गाड़ी को जाने का इशारा किया, बल्कि साथ में एक स्थानीय गाइड भी दिया । 'गृह सचिव' शब्द का कमाल काम कर गया । बिनुभय होहिं न आज्ञा पालन ।

अतिथि गृह में पहुंचा । चौकीदार ने बताया कि पुलिस ने एक मछुआरिन को थाने में गाली गलौज कर दी थी इसलिए लोग सड़क पर आ गये थे । अब शांति है । समाज के सबसे कमजोर वर्ग की औरत के साथ अभद्र व्यवहार के लिए लोग इतने सजग हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई । परंतु बाद में मालूम हुआ कि एक राजनीतिक दल के नेता ने इस घटना का राजनीतिक लाभ के लिए लोगों को उकसा दिया था । दूसरे दिन समाचार-पत्र से मालूम हुआ कि मुख्यमंत्री ने इस घटना की न्यायिक जांच का आदेश दे दिया है । रामेश्वरम की धरती पर भी राजनीति ।

सेतु बंधे च रामेशम्

अक्टूबर माह की सुबह रमणीय थी । रामेश्वर दर्शन की प्रबल इच्छा प्रबलतर होती ही गयी । रामेश्वरम की प्रकृति सुषमा मन को भाव विभोर कर गयी । शांत समुद्र, चतुर्दिक नारिकेल वृक्षों के बाग, मंदिरों में अर्चना के मंत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ध्वनि स्वच्छंद रूप से मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर गयी : 'सेतु बंधे च रामेशम' ।

एक कथा के अनुसार भगवान शंकर विक्षिप्तावस्था में सती के क्षत-विक्षत शरीर को लेकर विचरण कर रहे थे । सती के अंग जहां-तहां पर गिरे, वे पुण्य स्थल बन गये । ईश्वर सर्वत्र व्याप्त हैं परंतु ऐसी मान्यता है कि शिव मानव के कल्याण के लिए तीर्थ-तीर्थ में वास करते हैं । इन अनेक तीर्थों में बारह ज्योतिर्लिंग तीर्थों का विशेष महात्म्य है ।

ज्योतिर्लिंग के बारह स्थलों के नामों का सुबह उठकर जो पाठ करते हैं उनके सात जन्मों के पाप भी स्मरण मात्र से नष्ट हो जाते हैं । पावन हृदय से लोग जिस कामना को मन में रखकर इनका स्मरण करेंगे, बिना किसी संशय के वह कामना फलीभूत होती है । इनके दर्शन मात्र से पापों का नाश हो जाता है और जिस पर शंकरजी की कृपा हो जाती है उसके कर्म क्षय हो जाते हैं ।

राम ने समुद्र शांत किया था

कल्याणकारी भगवान शिव को 'आशुतोष' कहा गया है । वे ही एक ऐसे देव हैं जो स्वतः प्रसन्न हो जाते हैं । उनका स्मरण किसी भी रूप में श्रद्धा से किया जा सकता है ।

प्रातःकाल में मैं समुद्री शीतल उषा वायु का अतिथि गृह के बरामदे में सेवन कर रहा था । गेट के बाहर एक आदमी आया । राधाकृष्णी पगड़ी के नीचे पूरे माथे पर रोली चंदन का लेप था । आधी बांह की सफेद कमीज और उलटकर बंधी लुंगी धारित सांवले व्यक्ति ने पूछा कि बिहार से एक साहब आनेवाले थे । मैंने अपना परिचय दिया । उसने अपना नाम गिरिराजन बताया और कहा कि वह वहां का राजस्व अधिकारी है । उसकी ड्यूटी दर्शन कराने के लिए लगी है । यथाशीघ्र चलना उचित होगा ।

हम लोग सपरिवार प्रोजेक्ट गेस्ट हाउस से रामेश्वरम मंदिर गये । पूजा-अर्चना के पूर्व समुद्र तट पर पहुंचे । हजारों की संख्या में नर-नारी-बालक-वृद्ध स्नान कर रहे थे । स्थान-स्थान पर स्थानीय पंडा पिंडदान की क्रिया में तल्लीन थे । जैसा यजमान वैसा पिंडदान ।

गंध मादन पर्वत

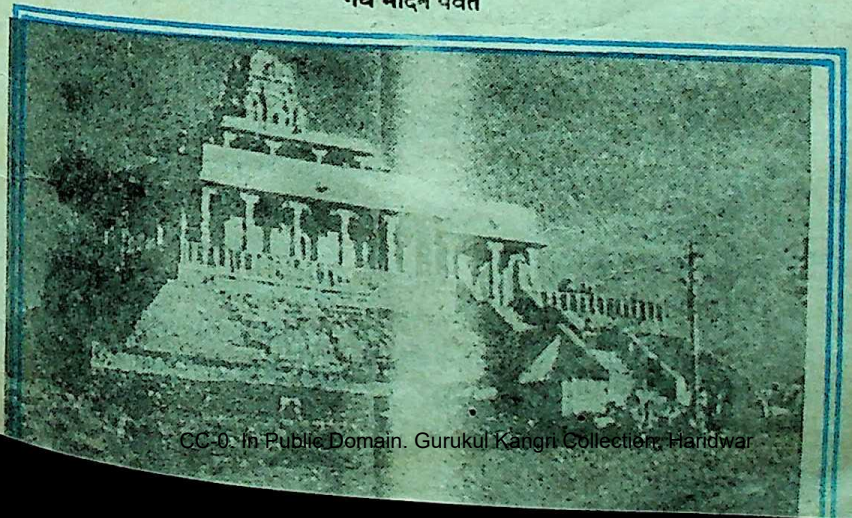

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्व अधिकारी ने अपने परिचित पंडा को बुलाया और क्रियारत कर दिया । समुद्र शांत था । कहते हैं कि सिंहल द्वीप जाने के पूर्व

श्रीराम ने अपने धनुष की टंकार से इसे शांत कर दिया था ।

शांत समुद्र के खारे जल में स्नान किया । पानी में डुबकी लगाकर अंजुली भर समुद्री बालू एकत्र किया । पंडा ने उसी बालू से 'ऊं' के मध्य शिवलिंग स्थापित किया और तदंतर जाने-माने मंत्रों के उच्चारण के साथ पिंडदान की क्रिया शुरू की । उसने बताया कि इसी समुद्र में 'अग्नि तीर्थ' है । कहावत है कि यहीं पर श्री जानकीजी की 'अग्नि परीक्षा' हुई थी । श्री रामेश्वरम स्थित २४ तीर्थों में इस अग्नितीर्थ को सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।

अग्नितीर्थ समुद्र स्नान के बाद गिरिराजन के साथ हम लोगों ने पूर्वोद्धार से श्री रामेश्वरम मंदिर में प्रवेश किया । गिरिराजन ने साथ में एक पंडा कर दिया जो एक छोटी बाल्टी और लंबी रस्सी लिये हुए था । वह आगे-आगे और हम लोग उसके पीछे-पीछे चले । एक के बाद एक चौबीस तीर्थों (कुपों, वावलियों, तड़ागों) से वह एक-एक बाल्टी पानी सब के सिर पर डालता जाता था । सभी तीर्थों के पानी का स्वाद अलग-अलग मीठा, खारा, खारा-मीठा, निस्वाद आदि । इसे ईश्वर कृपा कह सकते हैं कि एक ही परिसर के विभिन्न तीर्थों का पानी अलग-अलग स्वाद का है । सहस्रों की संख्या में श्रद्धालु सदियों से इन तीर्थों के जल से स्नान करते आ रहे हैं, परंतु इन तीर्थों में अभी तक पानी की कमी का अहसास नहीं हुआ ।

अलग-अलग तीर्थों के पानी का अलग-अलग स्वाद होने का एक कारण यह हो सकता है कि श्री रामेश्वर के आस-पास पत्थर की ऐसी परतें होंगी, जो एक दूसरे तीर्थ को आपस में अलग करती है और उनमें कुछ तीर्थों का संबंध समुद्र से होगा और कुछ का मीठे पानी के स्रोतों से । परंतु इस वैज्ञानिक पहुंच का अभी तक शायद विश्लेषण नहीं हुआ है ।

रामेश्वरम् की स्थापना, उत्पत्ति महात्म्य आदि के बारे में यहां पर अनेक कथाएं प्रचलित हैं । रामनादपुरम के जिलाधीश, स्थानीय राजस्व अधिकारी और प्रोजेक्ट हाउस के कर्मचारियों से मैंने इस संबंध में विस्तार से जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया । 'कल्याण' के तीर्थ विशेषांक से भी बहुत-सी बातें मालूम हुईं ।

कल्याण के तीर्थ विशेषांक के अनुसार श्री राम ने लंका जाते समय सेतु का निर्माण कराया था और अपने कार्य की सफलता के लिए श्री रामेश्वर की स्थापना की थी ।

श्री रामेश्वर स्थापना के संबंध में एक अन्य कथा इस प्रकार है :—"श्री राम लंका युद्ध में विजयी होकर पुष्पक विमान के द्वारा जब अयोध्या की ओर चले, तब उनके मन में यह ग्लानि थी कि 'रावण ब्राह्मण था । उसे और उसके कुल के लोगों को मारना ब्रह्म हत्या के पाप के समान ही हुआ ।' इसका प्रायश्चित जानने के लिए भगवान ने समुद्र पार अगस्त्यजी के आश्रम के पास विमान को उतार दिया ।"

'विभीषण की प्रार्थना पर भगवान ने समुद्र का सेतु धनुष की नोक से भंग कर दिया । श्री जानकीजी की यहीं समुद्र किनारे अग्नि परीक्षा हुई । अगस्त्यजी के आदेश से रावण वध के प्रायश्चित स्वरूप शिवलिंग के स्थापन का प्रभु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चय किया ।'

इससे पाप दूर हो जाएगा

रामेश्वरम स्थापन के बारे में यह कथा भी प्रचलित है कि राम ने शिवलिंग की स्थापन हेतु हनुमानजी को शिवलिंग लाने के लिए कैलाश पर्वत पर भेजा । उन्हें वापस आने में विलंब हो रहा था और पूर्व निर्धारित मुहूर्त बीतता जा रहा था । अतः सीताजी ने समुद्र की बालू से शिवलिंग बनाकर शिव की स्थापना कर दी । बाद में हनुमानजी शिवलिंग लेकर आये । बालू का लिंग देखकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ । राम ने हनुमान की मानसिकता एवं दुःख को समझकर कहा कि हनुमान तुम सीता निर्मित और हमारे द्वारा स्थापित इस बालू के लिंग को हटा दो, तब तुम्हारे द्वारा लाये लिंग को यही पर स्थापित कर दिया जाएगा । हनुमान बालु लिंग को नहीं हटा सके । अतः उनके द्वारा लाये गये लिंग को 'हनुमदेश्वर' के नाम से पास में स्थापित कर दिया गया । पूर्व के लिंग को 'रामनादलिंगम' के नाम से जाना जाता है ।

इसी कथा को दूसरे ढंग से भी वर्णित करते हुए कहा गया है कि रावण वध एवं लंका विजय के बाद राम अपनी पत्नी सीता एवं अन्य दल-बल के साथ गंध मादन पर्वत पर आकर रुके । वहां पर उपस्थित मुनीश्वरों को अभिवादन करके राम ने कहा—'मुझे पुलस्त्य कुल का विनाश करने के कारण ब्रह्महत्या का पातक लगा है । इस पाप से मुक्ति का क्या उपाय है । मुनीश्वरों ने व्यवस्था दी कि 'आप शिवलिंग की स्थापना कीजिए, इससे यह पाप दूर हो जाएगा । और श्री राम ने शिवलिंग की स्थापना करके पूजा-अर्चना की । स्वयं शिव द्वारा प्रदत्त

रामेश्वर मंदिर

हनुमदीश्वर एवं रामनाथेश्वर लिंगों का दर्शन करने से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है । हजार योजन की दूरी से भी इन दोनों लिंगों का स्मरणमात्र से मनुष्य शिव सायुज्य को प्राप्त होता है । जिसने इन दोनों, हनुमदीश्वर एवं रामेश्वर लिंगों का दर्शन कर दिया, उसे सारे यज्ञ तथा सारे तप करने का फल मिल जाता है ।

कल्याण तीर्थ विशेषांक में यह भी कथा मिलती है कि लंका पर चढ़ाई की तैयारी में जब राम समुद्र तट पर पहुंचे, तब उन्होंने बालू के शिवलिंग की स्थापना करके अर्चना किया ।

एक और कथा प्रचलित है कि समुद्र तट पर पहुंचकर श्री राम जल का पान कर रहे थे, तभी आकाशवाणी हुई कि 'मेरी पूजा किये बिना ही जल पीते हो ।' तदंतर श्री राम ने बालू से शिवलिंग बनाकर स्थापन किया, पूजा-अर्चना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की और रावण पर विजय का आशीर्वचन मांगा । भगवान शिव ने उन्हें कृतार्थ किया । श्री राम ने स्वयं कहा—

जे रामेश्वर दरसन कविहहिं ।
ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ।।
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि ।
सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहिं ।।
होई अकाम जो छल तजि सेइहि ।
भगति मोरि तेहि शंकर देइहि ।।

(रामचरित्रमानस)

रामेश्वरम् में शिवलिंग !

श्री रामेश्वरम् में शिवलिंग स्थापन के बारे में श्री रामचरितमानस में उल्लेख मिलता है कि नल-नील निर्मित सेतु की अत्यंत सुखद बनावट देखकर दया सागर श्री राम ने हंसकर कहा कि यहां की भूमि अत्यंत सुंदर और उत्तम है । इसकी अपार महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है । मैं यहां शंकरजी की स्थापना करूंगा । मेरे हृदय में यह महान संकल्प है :—

देखि सेतु अति सुंदर रचना ।
विहंसि कृपानिधि बोले बचना ।।
परम रम्य उत्तम यह धरनी ।
महिमा अमित जाई नहि बरनी ।।
करिहौं इहां संभु स्थापना ।
मोरे हृदय परम कल्पना ।।

(रामचरितमानस-लंका कांड)

श्री राम की संकल्पना को सुनकर कपीन्द्र सुग्रीव ने सभी श्रेष्ठ मुनियों को बुलवाया । श्री राम ने यथाविधि पूजन किया । शिवलिंग की स्थापना की । और शिव की महिमा में कहा कि 'शिव समान प्रिय मोहि न दूजा ।'

श्री राम ने शिव को सर्वस्व मानकर अपने अनुयायियों को शिव की अर्चना करने को कहा :—

सिव द्रोही मम दास कहावा ।
सो नर सपनेहु मोहि न भावा ।।
शंकर प्रिय ममद्रोही सिवद्रोही मम दास ।
ते नर करहि कल्प भरि घोर नरक महुं बास ।।

इससे ऐसा लगता है रामेश्वर शिव की स्थापना की संकल्पना श्री राम की अपनी थी। शिवलिंग स्थापना एवं अर्चना की प्रेरणा उन्हें किसी बाहरी स्रोत से नहीं, अपितु उनके निज मानस की देन है ।

गंगाजल से अभिषेक

दक्षिण भारत की यात्रा पर जाने की तैयारी के समय मेरे प्रिय बंधु ने सुझाव दिया कि श्री रामेश्वरम् की अर्चना के लिए गंगा जल का अभिषेक आवश्यक होता है । गंगा जल वाराणसी या हरिद्वार का होना चाहिए । समय कम था । गंगा जल मंगाने का समय और साधन नहीं था । ईश्वरीय कृपा हुई । दूसरे दिन मेरे एक मित्र ने घर पर आकर पूछा । सुना है आप रामेश्वरम जा रहे हैं । वहां पर गंगाजल चढ़ाया जाता है । मैं हरिद्वार से लाया हुआ गंगाजल लाया हूं, इसे लेते जाइए । श्री रामचरितमानस में कहा गया है :—

जो गंगा जल आनि चढ़ाइहिं ।
सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहिं ।।

अर्थात जो मनुष्य गंगाजल लाकर रामेश्वरम पर चढ़ाएगा, उसे मनुष्य की सायुज्य मुक्ति होगी, अर्थात वह ईश्वर में मिलकर एक हो जाएगा ।

श्री रामेश्वरम मंदिर के मुख्य द्वार पर बने अर्चना स्थल पर मुझे सपरिवार बैठाया गया। पंडा ने गंगाजल से अभिषेक कराया और अभिषेक कराते समय उसने हम सब का ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्र तीर्थ के जल में स्नान करने से पाप का विनाश एवं शंख तीर्थ में स्नान करने से कपटता-जन्य पापों से मुक्ति मिलती है । ब्रह्महत्या विमोचन तीर्थ, सूर्य तीर्थ, चंद्र तीर्थ, गंगा-यमुना एवं गया तीर्थों में स्नान करने से कुष्ठ रोग, शीतल रोग, पागलपन आदि दोषों का विनाश होता है, ऐसी मान्यता प्रचलित है । साध्यामृत तीर्थ का जल अन्य तीर्थों की अपेक्षा स्वच्छंद रहता है और इसमें स्नान करने से आयु वृद्धि होती है । सर्व तीर्थ में सभी पवित्र नदियों का निवास है ।

आकृष्ट करते हुए कहा कि "देखिए आपके द्वारा लाया गया गंगाजल रामेश्वरम पर चढ़ाया जा रहा है ।" पंडा ने ये बातें क्यों कहीं मैं समझ नहीं सका । परंतु लगता है कि कुछ लोग पंडा की नीयत पर शंकालु होते हैं कि रामेश्वरम पर उन्हीं के द्वारा लाये गये जल को चढ़ाया गया या नहीं ?

श्री रामेश्वरम लिंग स्थापन, सेतुबंधन एवं गंध पावन पर्वत पर श्री राम के पड़ाव आदि की घटनाओं का उल्लेख अनेक कवियों एवं लेखकों ने अपने ढंग, देश, काल, विचार से अलग-अलग किया है । इन घटनाओं का प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं मिलता है । पौराणिक कथाओं को इतिहास मानने में कठिनाई है । परंतु एक बात तो निर्विवाद है कि ये ऐतिहासिक घटनाएं हुई अवश्य होंगी । इसीलिए समाज, देश-परदेश, मानस पटल पर ये आज भी अंकित हैं और आगे भी रहेंगी ।

रामेश्वर दर्शन के साथ मैंने आसपास के क्षेत्रों का भ्रमण किया । वहां के स्थानीय निवासियों की गरीबी को देखकर मेरे मन में प्रतिक्रिया हुई कि जिस रामेश्वर के दर्शन मात्र में 'सायुज्य परम पद' की प्राप्ति हो जाती है । राम सेतु के दर्शन मात्र से लोग संसार सागर से मुक्त हो जाते हैं, 'दृष्ट मात्रे रामसेतौ मुक्तिः संसार सागरात्' । उन्हीं रामेश्वर के क्रोड़ में निवसित लोगों की यह दुर्दशा क्यों ? इस द्वीप में नारियल के अतिरिक्त और खाद्यान्न की उपज नाममात्र को भी नहीं दिखायी दी, यह शायद स्थानीय जलवायु एवं मिट्टी का असर है । परंतु सर्वशक्तिमान आशुतोष शिव के परिक्षेत्र में ऐसा क्यों ? क्या यहां के लोगों में उस श्रद्धा का अभाव है जिस श्रद्धा को लेकर विश्व के कोने-कोने से लोग यहां दर्शन करने और 'सायुज्य परम पद' प्राप्ति की इच्छा से आते हैं । कुछ भी हो, रामेश्वर माहोत्म्य को बताते हुए श्री राम ने स्वयं कहा है कि रामेश्वर में उनके द्वारा बनाये सेतु के दर्शनमात्र से ही लोग बिना किसी श्रम के भवसागर पार कर जाते हैं और 'सायुज्य परम पद' को प्राप्त करते हैं :—

मम कृत सेतु जो दर्शनु करिही ।
सो बिनु श्रम भवसागर तरिही ।।

—सचिव, पथ निर्माण विभाग,
बिहार सरकार, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष— नवीन कार्यों की अधिकता होगी। उच्चाधिकारियों से मतांतर होंगे। संपत्ति-कार्यों में अवरोध उपस्थित होगा। पारिवारिक अथवा मांगलिक कार्य में धन व्यय होगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में क्रियाशीलता बढ़ेगी। मित्रों से विरोधाभास होंगे। संभाषण में संतुलन हितकर होगा।

वृषभ— मास में उत्साह वृद्धि होगी। रचनात्मक कार्यों में उल्लेखनीय सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों अथवा राजनेताओं से लाभ मिलेगा। कार्य की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। पारिवारिक वातावरण खिन्नतादायी होगा। अकारण विवादों से खिन्नता होगी।

मिथुन— मासारंभ में श्रम-साध्य सफलता मिलेगी। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से कार्यों में अवरोध होंगे। पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा। न्यायालयीन कार्यों में विद्यमान अवरोध दूर होंगे। धार्मिक सत्संग अथवा प्रवास से प्रसन्नता होगी। व्ययों की अधिकता से चिंता होगी

कर्क— आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। प्रवास की अधिकता से लाभ के अवसर बढ़ेंगे। मित्रों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता बढ़ेगी। अपकीर्ति का भय विद्यमान रहेगा। नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी। पारिवारिक सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा।

सिंह— अकारण विरोधाभास तथा कार्यों में विलंब से चिंता होगी। पारिवारिक कार्यों में धन व्यय होगा। प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी। विषम परिस्थितियों में उच्चाधिकारियों का सहयोग उत्साहवर्धक होगा। शत्रु-पक्ष के विरोधाभास के बावजूद उच्च पद-स्थापना होगी। संपत्ति संबंधी कार्यों को टालना हितकर होगा।

कन्या— उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु-पक्ष का शमन होगा। व्यावसायिक कार्यों में राजकीय सहयोग मिलेगा। पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य पूर्ति से प्रसन्नता होगी। प्रवास में सावधानी रखें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। संपत्ति कार्यों में विलंब से सफलता मिलेगी। अति उत्साह पीड़ादायी होगा।

तुला— आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। नवीन वाहन अथवा भवन का सुख मिलेगा। सामाजिक अथवा परोपकारी कार्यों से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आकस्मिक प्रवास से प्रसन्नता होगी। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी।

ग्रह स्थिति— सूर्य मेष में १३ अप्रैल से, मंगल २४ से मेष में, बुध ५ से मेष में, २३ से वृषभ में, गुरु धनु में, शुक्र वृषभ में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल मकर में, नेप्च्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियजन की अस्वस्थता की चिंता रहेगी। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी।

वृश्चिक— मास में भाग्यदायी सफलता मिलेगी। पारिवारिक सहयोग से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा। प्रवास से विशिष्ट कार्य की पूर्ति होगी। शत्रु-पक्ष से सुलह होगी। परोपकारी कार्यों को टालना हितकर होगा। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धनु— राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। जोखिमपूर्ण कार्यों से अनपेक्षित धन लाभ होगा। विशिष्ट व्यक्ति से भेंट होगी। आजीविका की दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन होगा। मनोवांछित पद अथवा पदोन्नति का योग होगा। प्रवास में व्यर्थ परेशानी होगी। रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी।

मकर— आकस्मिक धन लाभ से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी। स्वजनों का सहयोग उत्साहदायक होगा। परिवार में मांगलिक कार्य की पूर्ति होगी। संपत्ति कार्यों में शत्रु-पक्ष अवरोध उपस्थित करेगा। आजीविका की दिशा में नवीन दायित्वों की अधिकता होगी। दिनचर्या अव्यवस्थित होने से अस्वस्थता का सामना करना होगा।

कुंभ— आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। धार्मिक सत्संग अथवा तीर्थाटन का योग उपस्थित होगा। पारिवारिक विद्वेष से खिन्नता होगी। शत्रु-पक्ष पर सहनशीलता से विजय अर्जित होगी। लंबित धन लाभ से विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से नवीन दायित्व मिलेगा। नवीन मित्रों का समागम होगा। आमोद-प्रमोद की अधिकता होगी। परोपकारी अथवा सामाजिक कार्यों से प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मासांत में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मीन— आजीविका की दिशा में परिवर्तन से प्रसन्नता होगी। रक्त-संबंधियों से पीड़ा होगी। पारिवारिक कार्यों में तटस्थता हितकर होगी। संपत्ति कार्यों में मनोनुकूल न्यायालयीन निर्णय होंगे। बुद्धि-कौशल तथा साहस से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलेगी। सामाजिक नेतृत्व का अवसर मिलेगा। साझेदारी कार्यों को टालना हितकर होगा। संपत्ति कार्यों में वांछित प्रगति होगी। व्ययों की अधिकता से व्यर्थ चिंता का उदय होगा। धार्मिक कार्यों में रुझान बढ़ेगा।

—ज्योतिषधाम,
१२/४, ओल्ड सुभाषनगर,
गोविंदपुरा भोपाल (म. प्र.)।

पर्व और त्यौहार

१. अप्रैल-सोमप्रदोष, महावीर जयंती, अप्रैल फूल दिवस, २. हाटकेश्वर जयंती, ३. चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती, ५. गुड फ्राइडे, ७. संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, ११. शीतलाष्टमी कालाष्टमी, १४. वरुथिनी एकादशी अंबेडकर जयंती, १५. सोम प्रदोष, १७. स्नानदान श्रद्धादि की दर्श अमावस्या, २०. अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती, २१. वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २३. आदि गुरु शंकराचार्य जयंती, २५. गंगा सप्तमी, गंगावतरण, २६. श्री बगलामुखी जयंती, २७. जानकी जयंती, २९. मोहनी एकादशी व्रत •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू-गजल से बहुत पीछे है हिंदी गजल

● प्राण शर्मा

गजल उर्दू-शायरी की सबसे लोकप्रिय विधा है। इस विधा में उर्दू के अनगिनत गजलकार हुए हैं। गालिब, जौक, जफर, मोमिन, मीर, दाग, इकबाल, अकबर इलाहाबादी, हफीज जालंधरी, जोश मलीहाबादी, फिराक गोरखपुरी, फैज अहमद फैज आदि कितने ही गजलकारों ने गजल को चार चांद लगाये और उर्दू-शायरी में केंद्रीय विधा के रूप में स्थापित किया। अपनी लोकप्रियता के कारण ही कभी ये नात् के रूप में पीर-पैगंबरों की शान में गायी जाने लगी कभी कोठों में पायल की झंकारों के साथ गूंजने लगी और कभी मुशायरों में लोगों की वाहवाही लूटने लगी। गज़ल का जादू हर तरफ छाने लगा।

गजल का अर्थ है—इश्क

गजल का सामान्य अर्थ है—इश्क। ये कम से कम पांच और ज्यादा से ज्यादा नौ शेरों की लिखी जाती है। कई गजलें तो उन्नीस या इक्कीस शेरों की लिखी जाती हैं। एक शेर दो मिसरों का होता है। गजल के प्रारंभिक शेर को मतला और अंतिम शेर को मकता कहते हैं। मकता में कवि का नाम या उपनाम रहता है। मतला का अर्थ है उदय और मकता का अस्त। उर्दू-गजल के नियमानुसार गजल में मतला और मकता का होना अनिवार्य है वरन् गजल अधूरी मानी जाती है। लेकिन आजकल कुछ गजलकार (विशेषकर हिंदी के) इस परंपरागत नियम को अनिवार्य नहीं समझते और मतला और मकता के बिना ही गजल लिखते हैं।

गजल में प्रत्येक शेर का विषय भिन्न-भिन्न हो सकता है। पहले शेर में प्रेम, दूसरे शेर में विरह-वेदना, तीसरे शेर में प्राकृतिक सौंदर्य, चौथे शेर में चिंतन और अंतिम शेर में समाज के खोखलेपन का वर्णण करने में गजलकार को पूरी छूट है। जब गजल के हर शेर में क्रमानुसार एक जैसा ही खयाल बांधा जाता है, तो उसको गजले-मुसलसल कहते हैं। काफिया तुक कहलाता है और काफिया के बाद आनेवाला शब्द रदीफ।

गजल फारसी भाषा की देन

गजल फारसी भाषा की देन है। मुसलमानों के साथ ही उसने भारत में प्रवेश किया और धीरे-धीरे उर्दू के उस्ताद शायरों के हाथों में पड़कर विकसित हुई।

हिंदी-उर्दू दोनों का योगदान

यह एक अकाट्य सत्य है कि हिंदी कवियों ने उर्दू-शायरी की सर्वाधिक प्रचलित गजल-विधा को अपनाया और शायरों ने हिंदी-काव्य की अति लोकप्रिय गीत विधा को। दोनों भाषाओं में हिंदी और उर्दू के बोलचाल के शब्दों का आदान-प्रदान हुआ, लेकिन इस बात से मुंह नहीं फेरा जा सकता कि लिपि का अंतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों भाषाओं के बीच एक गहरी खाई बना हुआ है। इसके अतिरिक्त फारसी या उर्दू के मुश्किल लफ़्ज़ों को न तो हिंदी भाषा अब तक पचा पायी है और न ही उर्दू भाषा संस्कृत और हिंदी के क्लिष्ट शब्दों को। फिर भी हिंदी के कुछ गजलकार उर्दू जबान की वकालत करते हैं। उनकी दृष्टि में हिंदी-गजल को उर्दू जबान से अलग करना उसके हित में नहीं होगा।

हिंदी के गजलकारों का शब्दकोष

हिंदी के कुछ गजलकार (उर्दू जबान से वाकिफ न होने पर भी) हिंदी-गजल में फैशन के तौर पर उर्दू के मुश्किल लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करते हैं। जिन लफ़्ज़ों को उर्दू भाषी लोग समझने में असमर्थ हैं, उनको हिंदी भाषी लोग क्या समझेंगे ? इस प्रवृत्ति को तजना होगा और हिंदी-गजल को जनसमूह तक पहुंचाने के लिए बेहतर होगा कि उसे क्लिष्ट और दुरूह शब्दों (वे फारसी के हों या संस्कृत के) से दूर रखा जाए।

जहां तक हिंदी के शब्दों को लेकर गजल लिखने का प्रश्न है, तो उसका सीधा उत्तर है कि उसका शबद-कोष बड़ा विशाल है। उसमें हजारों ऐसे कर्णप्रिय सरल शब्द हैं, जो गजल के स्वरूप को सौंदर्य प्रदान कर सकते हैं। गजल का संगीत से गहरा संबंध है। हिंदी-काव्य तो संगीत प्रधान रहा है। तुलसी की चौपाई हो या सूर और मीरा के पद—उनमें संगीत का निर्झर सहस्र धाराओं में बहा है और वही संगीत का निर्झर सहस्र धाराओं में हिंदी-गजल में भी बह सकता है। इसके लिए हिंदी-गजलकारों को अपने आपको तैयार करना होगा। यदि गजल हिंदी के कर्णप्रिय सहज-सरल शब्दों को अपने में समेटकर विकास की ओर अग्रसर होगी तो वो न केवल अपनी सुगंध से जनमानस को महकाएगी अपितु अपनी अलग पहचान भी बनाएगी।

साहिर लुध्यानवी—जैसे उर्दू के शायर अपनी कुछ गजलों में हिंदी के शब्दों का सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकते हैं तो हिंदी के गजलकार क्यों नहीं ? एक फिल्म बनी थी—'चित्रलेखा'। उसमें साहिर साहिब ने एक गजल लिखी थी। उसमें हिंदी का रंग ही भर दिया था उन्होंने। देखिए गजल की बानगी :

संसार से भागे फिरते हो, संसार को तुम क्या पाओगे
इस लोक को भी अपना न सके, उस लोक में भी पछताओगे
ये पाप है क्या ये पुण्य है क्या रीतों पर धर्म की मोहरें हैं
हर युग में बदलते धर्मों को कैसे आदर्श बनाओगे
ये भोग भी एक तपस्या है तुम त्याग के मारे क्या जानो
अपमान रचयिता का होगा रचना को अगर ठुकराओगे
हम कहते हैं ये जग अपना है, तुम कहते हो झूठा सपना है
हम जन्म बिताकर जाएंगे तुम जन्म गवांकर जाओगे

लाली मेरे लाल की

एक उर्दू शायर की हिंदी-गजल सबके ध्यान का केंद्र बनी और अति प्रसिद्ध हुई। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदी शब्दों से युक्त गजल में भी वो असर पैदा किया जा सकता है जो उर्दू-गजल में है। यदि कथ्य बोधगम्य है और भाषा सशक्त है, तो रचना जन-मानस को अवश्य छुएगी। एक बार मैंने यहां एक पाकिस्तानी मित्र (यहां यह उल्लेखनीय है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक हिंदी के शब्दों को लेकर गजल लिखने का प्रश्न है, तो उसका सीधा उत्तर है कि उसका शबद-कोष बड़ा विशाल है। उसमें हजारों ऐसे कर्णप्रिय सरल शब्द हैं, जो गजल के स्वरूप को सौंदर्य प्रदान कर सकते हैं। गजल का संगीत से गहरा संबंध है। हिंदी-काव्य तो संगीत प्रधान रहा है।

पाकिस्तान के बहुधा पढ़े-लिखे लोग हिंदी के प्राचीन और आधुनिक कवियों के नामों से अनभिज्ञ हैं) को दोहा सुनाया, थोड़े परिवर्तन के साथ—

लाली मेरे लाल की जब देखूं तब लाल
लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल

कबीर का रंग

दोहे के सुफियाना रंग पर वो झूम उठे। वो कबीर के दोहे को मेरी गज़ल का मतला समझकर मुझे दाद देते रहे। जब मैंने रहस्योदघाटन किया कि ये मेरी गजल का मतला नहीं बल्कि पांच सौ साल पहले लिखा गया कबीरदास का दोहा है तो वो चकित होकर मुझे देखते रह गये। यहां ये बतलाना आवश्यक है कि गजल के मतला और दोहा में कोई मूल अंतर नहीं है। अंतर यदि है तो यही कि मतला कई बहरों में लिखा जाता है जबकि दोहा का एक ही छंद है वरन् मतला और दोहा दोनों ही दो मिसरों से बनते हैं और दोनों ही गंभीर से गंभीर और बारीक से बारीक विचार या भाव को समेट लेने में सक्षम हैं। यदि हिंदी में दोहा लिखा जा सकता है तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता कि उसमें गजल न लिखी जा सके। माना कि उर्दू-गजल की तकनीक अपनाये बिना हिंदी-गजल में निखार नहीं आ सकता लेकिन ये कहना कि उर्दू-शब्दावली-को तजकर-वो आगे बढ़ने में असमर्थ होगी, युक्तियुक्त नहीं लगता है।

निस्संदेह आज हिंदी-गजल विकास की ओर उन्मुख है। लंबी-चौड़ी सूची है गजलकारों की। मुख्य नाम हैं : दुष्यंत कुमार, रामावतार चेतन, गोपालदास नीरज, बालस्वरूप राही, चन्द्रसेन विराट, कुंवर बेचैन, ओंकार गुलशन, माहेश्वर तिवारी, हनुमंत नायडू, रमेश रंजक, अदम गोंडवी, सूर्यभानु गुप्त, रवीन्द्र भ्रमर, जहीर कुरैशी, जानकी प्रसाद शर्मा, विनोद तिवारी, ज्ञान प्रकाश विवेक आदि। कभी महाकवि निराला भी गजल की राह पर चले थे लेकिन उनको ये राह रास न आयी। कुछेक गजलें लिखकर उन्होंने इस विधा से किनारा कर लिया। प्रस्तुत है उनकी एक गजल :

साहस कभी न छोड़ा आगे कदम बढ़ायें
पट्टी पढ़ी कब उनकी झांसे में हम कब आये
पानी पड़ा समय पर पल्लव नवीन लहरें
मौसम में पेड़ जितने फूले नहीं समाये
कलरव भरे खगों के आवास नीड़ सोहे
मन साधिकार मोहे कितने वितांत छाये
जिनसे फला हुआ है वो बाग कौम का हम
हमसे मिले हुए वे आये, बसे, बसायें
जो झुर्रियां पड़ी थी गालों पे आफतों की
उनको मिटा दिया है हमने अधर हंसायें

चांद की बातें करें

दुष्यंत के समकालीन पंजाब के प्रसिद्ध क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंभुनाथ 'शेष' का नाम हिंदी-गजल की चर्चा में हम अकसर भूल जाते हैं । गजल से उनका आत्मीय संबंध था । उनका जिक्र न करना हिंदी-गजल के साथ बेइंसाफी होगी । उन्होंने अनेक गजलें लिखीं । उनके असामयिक निधन से हिंदी-गजल को काफी क्षति पहुंची । उर्दू का रंग उनको छू तक न पाया था । हालांकि वो उर्दू से हिंदी में आये थे । उनकी हर गजल हिंदी का संस्कार लिये हुए है । उनकी गजल मुलाहिजा हो :

चांदनी है चांद के संसार की बातें करें
शुभ्र लहरी, शांत पारावार की बातें करें
रो चुके हैं हम जगत-व्यवहार का रोना बहुत
कर सकें तो प्रेम की 'औ' प्यार की बातें करें
कल्पना सी बह रही है रश्मियों की निर्झरी
भावनाओं के मधुर अभिसार की बातें करें
अप्सरा सी है थिरकती स्वप्न की सुकुमारता
आज भावालोक के विस्तार की बातें करें
'शेष' मधुवन, वल्लरी, यमुना, कदम, मधु बांसुरी
प्राण, आओ अब इन्हीं दो चार की बातें करें

हिंदी गजल की तीव्र गति

आज की हिंदी की गजल तीव्र गति से लिखी जा रही है । लेकिन कुछ लोगों की धारणा है कि उसमें वो असर नहीं जो उर्दू-गजल में है, वो भावोपयुक्त भाषा नहीं जो उर्दू-गजल में अकसर देखने में मिलती है । इसका मुख्य कारण शायद ये हो सकता है कि हिंदी के अधिकांश गजलकार अपने आपको 'महान' और जन्मजात कवि समझते हैं ।

उर्दू-शायरी की परंपरा है कि शागिर्द अपने उस्ताद से पूरा फायदा उठाते हैं । बहरों पर अधिकार करना सीखते हैं, अपनी जबान दुरुस्त करते हैं और सरल और स्वाभाविक भाषा में भावानुभूतियों को व्यक्त करके गजल कहने का सही ढंग सीखते हैं । किंतु हिंदी का गजलकार गुरु-शिष्य के परंपरागत बंधन से दूर ही रहना चाहता है । अतः उसकी गजल में निखार आये तो कैसे ?

गलत प्रयोग

हिंदी-गजल में ऐसे अनेक शेर मिलते हैं, जो बहर के लिहाज से गलत हैं । गोपालदास नीरज का शेर है :

इसी उम्मीद पे कर ली है आज बंद जुबां
कल को शायद मेरी आवाज जहां तक पहुंचे

'आज' शब्द ने पहले मिसरे का सारा वजन ही गड़बड़ा दिया है । यदि 'आज' को उलटाकर पढ़ा तो मिसरा अपने पूरे वजन में होगा ।

इसी तरह कुंवर बेचैन की गजल का शेर है :

जब तक है सांस तब तलक जिंदा रहूंगी मैं
मुझको न कहे कोई भी पलभर की बांसुरी

पहला मिसरा 'तलक' शब्द के कारण बेबहर हो गया है । दूसरे मिसरे में भी यदि कवि 'न' अक्षर का प्रयोग 'कहे' शब्द के पश्चात करता तो 'कहे' शब्द पर दबाव न पड़ता ।

ओंकार गुलशन का शेर है :

अफसोस, किया पहले-पहल वार उसी ने
आया था जो, हमदर्द हमारे बचाव को

यहां 'हमदर्द' शब्द में 'म' अक्षर की अधिकता से दूसरे मिसरे का वजन जाता रहा है ।

शेर के दोनों मिसरों में बहर को अच्छी तरह न निभाना सबसे बड़ा दोष माना जाता है । नईम के निम्नलिखित शेर में दोनों मिसरे बे बहर हैं । देखिए :

ऐरे-गैरों पे कान देने से होगा बेहतर
अपने नासेह को सलीके से सुन लिया जाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल मात्राएं गिन लेने से ही शेर में वजन पैदा नहीं होता है । रवीन्द्र भ्रमर का शेर है :

चिड़ियां सोने की है, लेकिन अलस्सुबह बोलेगी क्या
उसका पिंजरा तो देखो, पूरा मुर्दाघर लगता है

उपर्युक्त छंद के नियमानुसार प्रत्येक पंक्ति सोलह मात्राओं के पश्चात् अर्द्ध-विराम देकर चौदह मात्राओं के सहयोग से बनती है । भ्रमरजी के शेर की पहली पंक्ति तो छंद में है, लेकिन दूसरी पंक्ति छंदहीन हो गयी है, क्योंकि इस पंक्ति में पहले चौदह मात्राएं पढ़ी जाती हैं और फिर सोलह । दुष्यंत कुमार का नाम गजल में बहुत उछाला गया है । एक उदाहरण देखिए :

गालिब

मेरे गीत तुम्हारे पास
सहारा पाने आएंगे
मेरे बाद तुम्हें ये मेरी याद दिलाने आएंगे ।

यहां 'पाने' और 'दिलाने' काफिए हैं और 'आएंगे' रदीफ । अब आगे के हर शेर में 'आएंगे' रदीफ ही आनी चाहिए, लेकिन कवि ने एक शेर में 'जाएंगे' रदीफ का प्रयोग किया, जो सरासर गलत है । देखिए :

हम क्या बोलेंगे इस आंधी में कई घरौंदे टूट गये
इन असफल निर्मितियों के शव कल पहचाने जाएंगे
मैं देख तुझे शरमा जाता

इस मिसरे में पूर्वकालिक क्रिया 'कर' और वर्तमानकालिक सहायक क्रिया 'हूं' दोनों ही लुप्त हैं । इन दोनों के अभाव में मिसरा आधे चंद्रमा के समान लगता है । पूर्वकालिक क्रिया के बिना शेर भले ही न अखरे पर वर्तमानकालिक सहायक क्रिया का प्रयोग न करना शेर की सुंदरता का परित्याग करना है । यदि शेर में भूतकालिक सहायक क्रिया था, थे और भविष्यकालिक सहायक क्रिया गा, गे निश्चित रूप से आती हैं, तो वर्तमानकालिक सहायक क्रिया की उपेक्षा क्यों ?

शायद हिंदी-कवियों की इसी प्रवृत्ति को देखकर कभी स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी ने कहा था—"उर्दू के शायरों और हिंदी के कवियों की तुलना करने पर ये स्पष्ट हो जाता है कि उर्दू-शायरों ने अपनी भाषा को शुद्ध करने, खरादने, मांजने और चमकाने में जितना परिश्रम और जितनी लगन से काम किया है उनके मुकाबले में उस तरह की प्रवृत्ति तत्कालीन हिंदी-कवियों ने बिलकुल नहीं दिखायी और अब तक दिखला रहे हैं ।"

कई दशक पहले कहा गया स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी का उक्त कथन आज भी के गजलकारों पर खरा उतरता है । अतः हिंदी-गजल का पलड़ा उर्दू-गजल के मुकाबले में बहुत हलका पड़ता है ।

हिंदी-गजल अभी बाल्यावस्था में है । युवावस्था में पहुंचने के लिए उसे बहुत लंबा सफर तय करना है । ये लंबा सफर उस समय तक तय नहीं होगा, जब तक इसमें गालिब जौक और दाग—जैसे उस्ताद शायरों का प्रादुर्भाव नहीं होगा ।

३, क्रीकस्टन क्लोज स्टोक हील
कांभेंटरी-क्यूजसेब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कौन थी

● सुरेश कुमार गोयल

टेलीफोन की घंटी सुनकर मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा, एक नजर घड़ी पर डाली । रात के ढाई बजे थे । पता नहीं इस समय किसका फोन है । कहीं भारत से तो फोन नहीं आया ।

फोन उठाया, तो फोन के दूसरी ओर से किसी ने घबरायी आवाज में बताया कि मंदिर के पुजारी को दिल का दौरा पड़ा है "आपने ऐंबुलेंस को फोन किया ।" मैंने पूछा परंतु मेरे प्रश्न का उत्तर दिये बिना ही फोन की लाइन कट गयी । "पुजारीजी को दिल का दौरा पड़ा है", मैंने श्रीमतीजी को बताया । श्रीमतीजी ने कुछ नहीं कहा बस बैठी रहीं । मैंने ९११ नंबर मिलाकर एमरजेंसी नंबर मिलाया और ऐंबुलेंस मंदिर के पते पर तुरंत भेजने को कहा । "ऐंबुलेंस पांच से दस मिनट के अंदर मंदिर पहुंच जाएगी", ऐसा उन्होंने आश्वासन दिया । मैं मंदिर जाने के लिए तैयार होने लगा । बाहर तापक्रम बीस डिग्री शून्य से कम होगा (— -२०० सै.) । मैंने दो स्वेटर, ओवरकोट और मफलर पहन लिये ।

पता नहीं पुजारीजी को कैसे दिल का दौरा पड़ गया । उनसे शाम को ही तो फोन पर बात हुई थी । उनकी पत्नी और बच्चे भारत गये हुए थे, छुट्टियों में । नये साल के बाद स्कूल खुलने से पहले ही वे सब हवाई उड़ान से परसों ही तो आनेवाले थे । पंडितजी ने मुझसे उन्हें हवाई अड्डे से अपनी कार में लाने के लिए आग्रह किया था । हम लोग पंडितजी को इतनी तनख्वाह तो देते नहीं थे कि वे कार रख पाते । इसलिए जब भी उन्हें कार की आवश्यकता होती वे मुझ-जैसे अपने भक्तों की ही मदद लेते थे । हमें खास परेशानी भी नहीं थी उनकी कार से मदद करने में । हम तो इसी बात से प्रसन्न थे कि पंडितजी हमारे मंदिर के पुजारी थे ।

"आप जाकर क्या करोगे । ऐंबुलेंसवाले पुजारीजी को अस्पताल ले जाएंगे ही ।" श्रीमतीजी बोलीं ।

"नहीं मुझे जाना ही चाहिए । मैं वहां करने का तो कुछ नहीं, फिर भी लोग कहेंगे कि मंदिर की कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष होने के नाते मुझे पुजारीजी की मदद करनी ही चाहिए ।" मैंने उत्तर दिया । श्रीमतीजी रसोई की बिजली बुझाकर शयन-कक्ष में सोने चली गयीं । मैं कार गैरज से निकालकर मंदिर की ओर हो लिया ।

मंदिर हमारे घर से दो मील दूरी पर ही है । हमने मंदिर के पास घर जानबूझकर लिया था । मेरी हमेशा से ही पूजा-पाठ में श्रद्धा रही है । हालांकि श्रीमती पत्नी आर्यसमाजी हैं परंतु वे मेरी पूजा-पाठ में विघ्न नहीं डालतीं । घर में जब भी कोई साधु-महात्मा आते हैं तब वह उनकी सेवा में कोई कमी नहीं होने देतीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडितजी को मंदिरवालों ने काफी दौड़धूप करके तीन साल पहले भारत से बुलाया था। उनके लिए इमीग्रेशन दिलाना आसान नहीं था। कई सरकारी दफ़रों के महीनों तक चक्कर लगाये हम लोगों ने। आखिर पंडितजी, उनकी पत्नी और दो बच्चों को कैनेडा में बसने की इजाजत मिल गयी। पंडितजी ने जब से मंदिर का भार संभाला, तभी से हमारे मंदिर की काया ही पलट गयी। पंडितजी की पत्नी मंदिर को बहुत साफ-सुथरा रखती थीं। इतवार के दिन मंदिर में पूजा-पाठ होता था। पंडितजी बहुत ही अच्छे सुर में भजन गाते थे। सब लोग मग्न होकर भजन-कीर्तन करते थे।

पिछले ही साल मैं मंदिर की कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष चुना गया था। इस कारण से मैं पंडितजी के और भी करीब आ गया था। किसी-न-किसी मसले पर दिन में एक-दो बार पंडितजी से फोन पर बात हो ही जाती थी। पंडितजी की छोटी साली की शादी थी दिसंबर की बीस तारीख को। पंडितजी सपरिवार जाना चाहते थे शादी में। परंतु हम लोगों ने हिंदु-धर्म पर एक कांफ्रेंस आयोजित की हुई थी, उन्हीं दिनों, इसलिए पंडितजी का यहां पर कांफ्रेंस में होना बहुत जरूरी था। हमारे आग्रह करने पर पंडितजी भारत नहीं गये। कांफ्रेंस में पंडितजी काफी व्यस्त रहे। अपने भजनों और व्याख्यानों से कांफ्रेंस में भाग लेनेवालों को पंडितजी ने काफी प्रभावित किया। बाहर से आनेवालों में से कइयों ने पंडितजी को अपने-अपने शहरों के मंदिर में आने के लिए निमंत्रण दिया। पंडितजी कांफ्रेंस में काफी थक गये थे। इन दिनों उनको अपने घर का, मंदिर का सारा काम अकेले ही करना पड़ता था। इसलिए पिछले हफ्ते मंदिर में बहुत थके-थके नजर आ रहे थे। शायद यह दिल का दौरा इसी कारण से पड़ा था।

मंदिर बस दो 'ट्रैफिक लाइट' के बाद बायीं ओर की गली में था। भगवान करे पंडितजी ठीक हो जाएं जल्दी ही। उनकी पत्नी और बच्चों पर क्या बीतेगी जब वे भारत से वापस आएंगे। अगर पंडितजी को भगवान ना करे कुछ हो गया, तो उनकी पत्नी अपने दो बच्चों को कैसे पालेगी। बेचारी अधिक पढ़ी-लिखी भी नहीं है और ना ही उसे कोई काम होता है जो अपना और अपने बच्चों का काम करके पेट भर सकेगी। बस मंदिर आने ही वाला था। पीछे एक 'ऐंबुलेंस' अपनी नीली फ्लैश लाइट को चमकाती हुई मुड़ गयी गली में और मंदिर के सामने रुक गयी।

मेरी कार ऐंबुलेंस से बस पचास मीटर ही पीछे थी। ऐंबुलेंस से दो आदमी उतरे, उनके हाथ में स्ट्रैचर था। वे मंदिर के द्वार पर आ गये। इससे पहले कि मैं उनसे कुछ कहता, वे मंदिर के अंदर दाखिल हो चुके थे। मैं उनके पीछे तेजी से भागा। उनको मंदिर में पंडितजी का फ्लैट मिलने में कुछ समय लग ही जाएगा। मैंने उनको आवाज दी और वे मेरे पीछे मंदिर की सीढ़ियां चढ़ने लगे। कुछ ही क्षणों में हम पंडितजी के शयन-कक्ष में आ गये। उन दोनों ऐंबुलेंसवाले आदमियों ने बड़ी फुरती से अपना काम शुरू कर दिया। दिल के दौरे में सबसे अहमियत की बात तो यह होती है कि मरीज को जल्दी से जल्दी अस्पताल पहुंचाया जाए। उन्होंने पंडितजी को स्ट्रैचर पर लिटाया और उन्हें अस्पताल ले जाने लगे।

"कम से कम बेचारे को कुछ कपड़े तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहना दीजिए । बेचारे को ठंड से निमोनिया हो जाएगा ।'' मैंने घबराकर कहा ।

''महाशय, इस समय कपड़े की बात छोड़िए । निमोनिया का इलाज तो हो सकता है । इनको एमरजेंसी कार्डियोलॉजिस्ट चाहिए ।'' वे लोग पंडितजी को लेकर चले गये । उन लोगों को मंदिर में घुसने और पंडितजी को स्ट्रैचर में लिटाकर ले जाने में मुश्किल से चार या पांच मिनट ही लगे होंगे । मैं पंडितजी के फ्लैट का दरवाजा बंद कर नीचे की मंजिल पर स्थित मंदिर के ऑफिस में आ गया । तीन बज गये थे । सब कुछ इतनी तेजी से हुआ कि यकीन ही नहीं आता कि पंडितजी को दिल का दौरा पड़ा है ।

मंदिर की कार्यकारिणी समिति के अन्य सदस्यों को भी पंडितजी के दिल के दौरे के बारे में बताना पड़ेगा । सवेरे ही फोन कर दूंगा । इस समय उनको जगाने से क्या फायदा ।

मैं चाहता तो सीधा घर जाना, परंतु मेरा मन नहीं माना । मैंने कार अस्पताल की दिशा में मोड़ ली । कम-से-कम डॉक्टर लोग कुछ तो बताएंगे ही पंडितजी की हालत के बारे में । बेचारों के अपने उनसे इतनी दूर हैं इस समय ।

कोई इस समय कर भी क्या सकता है ? अस्पताल में डॉक्टर और नर्सें उनकी देखभाल अच्छी तरह कर ही रहे होंगे । यह तो अच्छा हुआ पंडितजी को दिल का दौरा यहां कैनेडा में पड़ा जहां सब प्रकार की डॉक्टरी सहूलियतें हर शहरी को मुहैया हैं । अगर वह भारत अपने परिवार के साथ जाते तो शायद उत्तर प्रदेश के उस गांव में जहां के वह रहनेवाले थे, कोई सरकारी डिस्पेंसरी का डॉक्टर भी उनको देखने नहीं आता । ऐंबुलेंस से हर प्रकार की आधुनिक डॉक्टरी सहूलियतों से घिरे अस्पताल में इलाज होना तो दूर की बात थी ।

मैंने मंदिर के ऑफिस के डेक्स में रखी मंदिर के द्वार की चाभी निकाली । सोचा घर जाने से पहले एक बार अस्पताल होता जाऊं ।

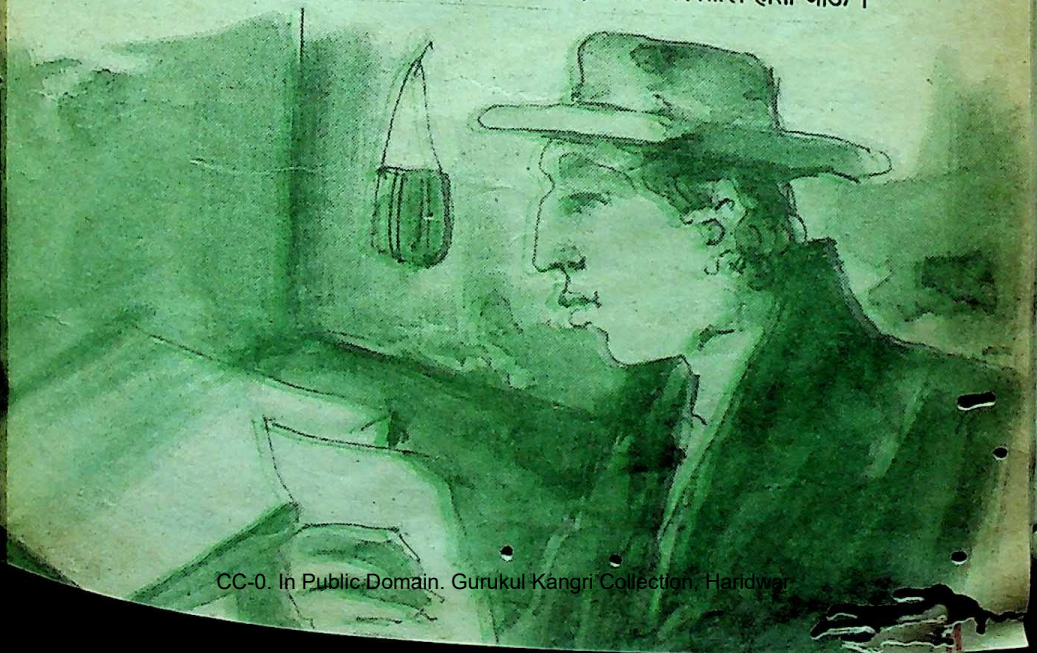

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद पंडितजी की हालत के बारे में डॉक्टर लोग कुछ बता ही दें । कुछ घंटे तो काफी नाजुक अवस्था में गुजरेंगे । मैं मंदिर के ऑफिस से बाहर निकला । ऊपर की मंजिल की बिजली जली छोड़ आया था । अब दो मंजिलें चढ़नी पड़ेंगी, बिजली बंद करने के लिए । अपने घर की बिजली का बल्ब होता तो शायद जलने ही देता । परंतु मंदिर की बिजली का बिल बेकार में बढ़े यह मुझे गवारा नहीं था । सीढ़ी चढ़ने से सांस फूलने लगा ।

पंडितजी के फ्लैट का दरवाजा भिड़ा हुआ था । दरवाजा खोलकर देखा, अंदर अंधेरा घुप्प था । बिजली जलायी । अब पंडितजी के घरवालों का पता कैसे मिले । पता नहीं कहां रखते होंगे अपनी पतोंवाली डायरी । हम तो अपने घर आये, सारे पत्र रसोई के पास एक पत्र और बिल इत्यादि रखनेवाली वालयूनिट में डालते जाते हैं । शायद पंडितजी भी ऐसा ही करते हों । मैं उनकी रसोई में गया । वहां पर दीवार पर लगी उस वाल यूनिट में नीले रंग के कई एरोग्राम (अंतरराष्ट्रीय) दूर से ही दिखायी दिये । पांच-सात पत्र थे । सौभाग्य से एक पत्र बारह दिन पहले पंडितजी की पत्नी ने बेगमाबाद कस्बे से लिखा था । मैं दो साल मोदीनगर में डिग्री कॉलिज में पढ़ा था । तभी कभी-कभार बेगमाबाद कस्बे का नाम सुना था । उन दिनों उस कस्बे में बिजली थी नहीं थी । शायद अब हो गयी हो । बेगमाबाद में कहां फोन होगा । यहां से तार भेजा तो भी कई दिन लग जाएंगे । तब तक तो शायद पंडितजी की पत्नी भारत से कैनेडा के लिए रवाना ही हो जाए ।

नीचे की मंजिल पर मंदिर का वाशरूम था । सोचा चलने से पहले वहीं होता चलूं । वाशरूम काफी गंदी अवस्था में था । शायद इतवार के बाद साफ नहीं किया गया था । एक डिब्बे में कूड़ा-करकट भी भरा था । सोचा इसे को प्लास्टिक के थैले में डालकर बाहर सड़क पर रख दूं । यहां पर तो कूड़ा पड़ा-पड़ा शायद सड़ ही जाएगा और बदबू करेगा । मंदिर के ऑफिस में प्लास्टिक के थैलों का एक डिब्बा रखा ही है । वापस ऑफिस में आया । कूड़े को प्लास्टिक के डिब्बे में डालकर मंदिर के द्वार की ओर बढ़ा । मंदिर का द्वार खुला ही हुआ था । मंदिर से निकलकर मैंने मंदिर के द्वार को बंद कर दिया । एक नजर मंदिर पर डाली और अपनी कार की ओर चल दिया ।

पता नहीं पुजारीजी को कैसे दिल का दौरा पड़ गया । उनसे शाम को ही तो फोन पर बात हुई थी । उनकी पत्नी और बच्चे भारत गये हुए थे, छुट्टियों में । नये साल के बाद स्कूल खुलने से पहले ही वे सब हवाई उड़ान से परसों ही तो आने वाले थे । पंडितजी ने मुझसे उन्हें हवाई अड्डे से अपनी कार में लाने के लिए आग्रह किया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

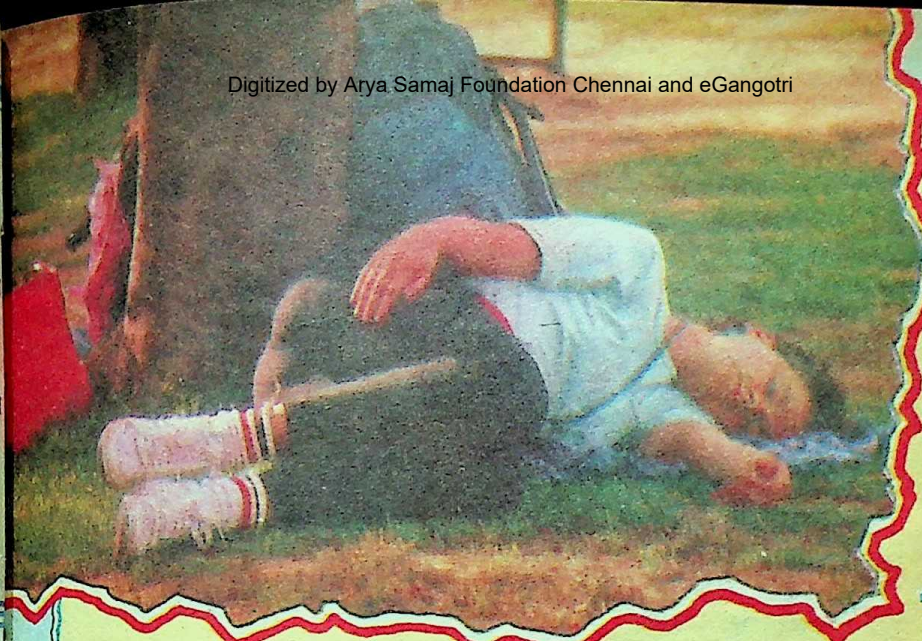

पारदर्शी : विजन क्राफ्ट

मैं अपने काम के सिलसिले में देश-विदेश जाता रहता हूं। हमेशा ही होटल के कमरे में अकेले सोते हुए यह ख्याल आ ही जाता है कि अगर मुझे यहां कुछ हो जाए तो कोई शायद एकदम जान भी नहीं पाएगा। सवेरे कमरे की सफाई करनेवाली ही चीखकर मेरी मृत्यु की सूचना देगी।

मैं मन-ही-मन बहुत खुश था कि पंडितजी के इतने आड़े समय में काम आया। अगर मैं नहीं आता तो एम्बुलेंसवालों के लिए मंदिर का दरवाजा कौन खोलता ? परंतु दरवाजा तो पहले से ही खुला था। एम्बुलेंसवाले, मेरे मंदिर पहुंचने से पहले ही मंदिर में घुस चुके थे। पुजारीजी अपने फ्लैट से बेहोशी की अवस्था में मंदिर का दरवाजा कैसे खोल सकते थे ? अचानक मुझे ख्याल आया कि फोन तो किसी महिला ने किया था। वह महिला भी नजर नहीं आयी। शायद मेरे मंदिर पहुंचने से पहले ही वहां से खिसक गयी होगी। रात के ढाई बजे वह मंदिर में पुजारीजी के शयन कक्ष में वस्त्रहीन पुजारीजी के साथ क्या कर रही थी ?

दिन के उजाले में मंदिर में पुजारीजी से मिलने और भगवान के दर्शन करने बहुत-से भक्तजन आते हैं। परंतु तीसरे पहर मंदिर के पुजारी की सेवा करनेवाली भक्तिन मेरे लिए हमेशा ही रहस्य बनी रहेगी। पता नहीं वह कौन थी ? वही तो नहीं जो बाग में अकेली थकी गहरी नींद में इस तरह सोयी थी जैसे सोने, जागने और मरने में कोई अंतर ही नहीं है।

DSMIS Dept., Concordia Univ.
1455 De Maisonneuve Blvd West
Montreal, Quebec CAN. H3G 1M8

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी चित्र : साकेतानंद

वामाखेपा की आराध्या, मखूटी की मुख्य देवी-मां मौलीक्षा

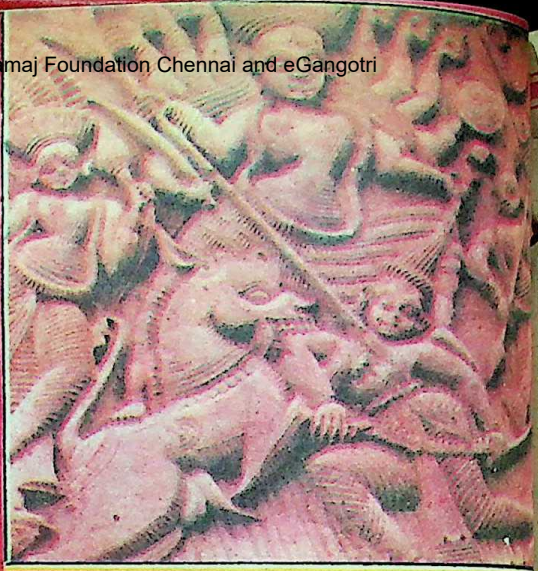

मृणमूर्ति का आदर्श : मलूटी मंदिर में महिषासुर मर्दिनी

धार्मिक समन्वय : मंदिर, मसजिद तथा चर्च एक साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपेक्षा के दंश को झेलता मलूटी

● मीरा झा

"आबार शरद एलो..." जिस दिन हमने मलूटी की ओर प्रस्थान किया, वह शारदीय नवरात्र की प्रथम पूजा का दिन था। समस्त जड़-चेतन अजीब से अनुराग में पगे मानो— 'मां आनंदमयीर आगमने बूझिशे खबर पेलो।' मेघ मंडित आकाश, धान के गम्हड़ते खेतों का विस्तृत फैलाव एकदम हरा कचोर रंग लिए कैनवास पर मानो कूची फेरता हुआ और उनके बीचों-बीच गुजरती हुई सड़क के किनारे अपनी लंबी-लंबी शाखें हवा में लहराते पेड़ मानो हमारी अगवानी में झुक-झुककर हमारा अभिनादन कर रहे हों।

भागलपुर से दुमका और दुमका से पूरब रामपुर हाट की ओर जानेवाली सड़क-पथ के शालवन, कालिदास की पंक्तियों का स्मरण कराते पहाड़ों की ग्रीवा से लिपटे बादल, सामने जितनी चौड़ी कोलतार की सड़क ऊपर उतरना ही चौड़ा खुला आकाश, शेष दोनों ओर के जंगल मेघों की छाया तले घनी कजरारी हरीतिमा के दामन में सिमटा हुआ स्तब्ध-मंत्रमुग्ध।

तो क्या यही है मलूटी ? जी हां, दुमका रामपुर हाट मार्ग पर सूड़ीचुआ पड़ाव से मात्र चार किलोमीटर आगे पठारी क्षेत्र का यह गांव मलूटी— जिला दुमका— अंचल शिकारीपाड़ा। विकास की रोशनी से दूर भारत के किसी अन्य गांव जैसा ही है।

हंसी की उजली किरण की आंतरिकता के बीच गोपालदास मुखर्जी हमारा स्वागत करते हैं। साथ ही आकाशवाणी भागलपुर के श्री साकेतानंद का कैमरा चंचल हो उठता है।

मंदिर का द्वार : मृण्मूर्ति का अभिनव श्रृंगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवभगत की निश्छल औपचारिकता के बीच हम निकलते हैं इतिहास के पन्नों का यह उपेक्षित अध्याय देखने । आगे-आगे मुखर्जी दा, साकेतानंदजी, मानस तथा मैं; हमारे साथ-साथ अन्य स्नेही ग्रामीण जन । जब हम भव्य-भग्न मंदिरों के समूह से होकर गुजरते हैं, तो यह जानकार आश्चर्य होता है कि हजार परिवारों के इस गांव में कभी १०८ मंदिर थे । आज तो ७४ मंदिर ही शेष हैं और वह भी अपनी भग्नप्राय स्थिति में भी अपनी नफासत और पुरातात्विक गरिमा को उजागर करते हुए । शायद, इंतजार में कि कोई पूछनेवाला आये तो वे कह सकें कि 'मैं भी मुंह में जुबान रखता हूं, काश पूछो कि मुद्दा क्या है ?'

बताते हैं कि ७४ मंदिरों में ५९ मंदिर सिर्फ शिव के हैं, शेष काली दुर्गा, धर्मराज और ग्रामदेवी मौलीक्षा के । "इतने सारे शिव मंदिर एकसाथ ? क्या इसीलिए यह गुप्त काशी है ? वैसे,इतने शिव मंदिर तो काशी में भी नहीं हैं।" जवाब मिलता है कि काशी के सुमेरूमठ के अध्यक्ष दंडीस्वामी मलूटी के राजाओं के कुलगुरू हैं । दंडीस्वामी की शिष्य परंपरा के अद्वैतवादी संन्यासी प्रतिवर्ष अपना कुछ समय मलूटी में व्यतीत करते हैं ।

मंदिरों की दीवारों व मुख्य द्वारों पर सज्जित टेराकोटा की उत्कृष्ट कलाकृतियां स्वतः ही बनवानेवाले तथा बनानेवाले दोनों के कलाप्रेम को व्यक्त करती हैं । विभिन्न पैनलों में जड़ी बारीक कलाकृतियां पकी हुई लाल मिट्टी और प्रस्तर पर उत्कीर्ण हैं । इनकी सजीवता तो दूर से बोलती है ।

बाज के बदले राज

इन मंदिरों पर चर्चा करने से पहले हम उस लोकोक्ति को दुहराना चाहेंगे जो अभी-अभी मुखर्जी दा बोल गये हैं, जिसे दुहराए बिना मलूटी का इतिहास नहीं समझा जा सकता,

दशमुखी युद्धरत दुर्गा : एक पैनल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाज के बदले राज' । प्राप्त ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार गौड़ राज्य के बादशाह अलाउद्दीन हुसैन शाह (सन् १४९३-१५१९) द्वारा दी गयी जमीन पर मलूटी ननकर राज्य (कर मुक्त राज्य) की स्थापना हुई थी । किस्सा यूं है कि एक बार उड़ीसा से अपनी राजधानी जाते समय बादशाह ने सैंथिया के निकट मयूराक्षी नदी के किनारे अपना पड़ाव डाला । वहां से उसकी बेगम का एक पालतू बाज उड़ गया । संयोग से एक गरीब चरवाहे वसंत राय ने उसे पकड़ लिया और फिर पता चलने पर बेगम को वापस कर दिया । बस, वसंत राय के भाग्य खुल गये । उपहारस्वरूप बादशाह ने वसंत राय को ३६ मौजे जमीन देकर जमींदार बना दिया । इतना ही नहीं बल्कि उस जमीन को कर-मुक्त (नन कर) कर दिया । इसी से मलूटी राज्य की स्थापना हुई । तभी से 'बाज के बदले राज' की उक्ति चल पड़ी । वसंत राय के वंशजों में से एक राजा राखार चंद्र हुए । उन्होंने व उनके भाइयों तथा पुत्रों ने मलूटी मे इन मंदिरों का निर्माण कराया । बाद में उनके बीच मलूटी राज्य तीन भागों में बंटा । वे भाग 'राजार बाड़ी', 'माध्यम बाड़ी' और 'छय तरफ' कहलाये । मलूटी के सारे मंदिर इन्हीं तीन स्थानों में स्थित हैं, जो समय-समय पर राजाओं द्वारा अपनी कुलवधुओं के नाम पर किये गये । अधिकांश मंदिरों के सामने के भाग के ऊपरी हिस्से में प्रोटो बंगला अक्षरों से संस्कृत अथवा प्राकृत भाषा में प्रतिष्ठाता का नाम व स्थापना तिथि अंकित है । इससे पता चलता है कि इन मंदिरों की निर्माण अवधि सन् १७२० से १८४५ के भीतर रही है । इनकी ऊंचाई कम से

कंपनी कालीन प्रभाव : बंदूकधारी पहरेदार

कम १५ फुट तथा अधिकतम ६० फुट तक की है । हर जगह करीब बीस-बीस मंदिरों का समूह है । हर समूह के मंदिरों की अपनी ही शैली और सजावट है । स्थापत्य के आधार पर विशेषज्ञों ने मलूटी के मंदिरों को चार श्रेणियों में बांटा है—

पहली श्रेणी के मंदिर शिखर युक्त हैं । इनमें अधिकांश के पार्श्व भाग में सुंदर सुस्पष्ट और मनभावन नक्काशियां उत्कीर्ण हैं । मुख्य पैनल में ज्यादातर राम-रावण युद्ध के दृश्य अंकित हैं । एक मंदिर में महिषासुरमर्दिनी का दृश्य है । इसके अलावा मंदिरों में रामलीला विषयक चित्र यथा— रामवनगमन, जटायु वध, मारीच वध, सीताहरण तथा कृष्णलीला के माखन चोरी वस्त्रहरण, वकासुरवध आदि के दृश्य चित्रित हैं । मुख्य हिस्से के ऊपरी भाग में कहीं दशावतार व दश महाविद्या अंकित हैं, तो निचले हिस्से में विभिन्न सामाजिक क्रिया-कलापों के दृश्य । यहां उड़ीसा के जगन्नाथ मंदिर की शैली से मिलता-जुलता एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर है ।

दूसरी श्रेणी में काली दुर्गा एवं विष्णु के मंदिर हैं, जो सामान्यतः समतल छतवाले मंदिर हैं । दुर्गा मंदिर के सम्मुख भाग में चित्रित शेर, अप्सराएं, मानव आकृतियां व ब्रिटिश झंडा भी है, जो तत्कालीन ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभाव को दर्शाता है ।

तीसरी श्रेणी में, जो गांव के दक्षिण की ओर स्थित मंदिर समूह हैं, उसमें बंगाल की एक बंगला शैली का ग्रामदेवी महादेवी मौलीक्षा का मंदिर है । यह देवी जागृत देवी मानी जाती है । साधना मार्ग के पंथकों द्वारा मौलीक्षा की मां तारा (तारापीठ) की बड़ी बहन के रूप में साधना की जाती है । इनकी पूजा सर्वप्रथम और अनिवार्य रूप से की जाती है । इसी क्रम में यह बताना अत्यंत समीचीन होगा कि तारापीठ के महान तांत्रिक साधक बामाखेपा की प्रथम साधना-स्थली यहीं थी । आज भी उनके पूर्व निवास के आंगन में उनका छोटा-सा मंदिर है और उनका अपना त्रिशूल भी गढ़ा हुआ है ।

कहते हैं मां आनंदमयी को भी मां तारा की ओर से स्वप्न में मलूटी आने का निर्देश मिला था जिससे वे मौलीक्षा मां के सम्मुख साधना की प्रारंभिक अवस्था संपन्न कर सकें ।

चौथी श्रेणी में रासमंच का मंदिर है ।

रख-रखाव के अभाव में क्षरण के शिकार

रासमंच पर आमतौर पर राधाकृष्ण की मूर्तियां हुआ करती हैं, लेकिन यहां काली की मूर्ति स्थापित है । इन मंदिरों की विशेषता ही इनका खुला होना है, ताकि भक्तगण हर दिशा से लाभान्वित हो सकें ।

इन मंदिरों के मुख्य भाग पर उत्कीर्ण आलंकरण कभी-कभी लकड़ी के टुकड़े पर भी नक्काशी होने का भ्रम देते हैं । इन प्रस्तर खंडफलक को पुरातत्ववेत्ताओं ने पहले टेराकोटा कहा था । बाद में भूगर्भ-शास्त्रियों ने इसे एक प्रकार का पत्थर बताया ।

इन मंदिर समूहों के बीच तीन मंदिरों का एक ऐसा ही समूह है, जिसके तीन शिखर मंदिर, मस्जिद और गिरजे की शिखर आकृति को प्रतिबिंबित करते हैं ।

सुदूर अतीत के जीवित प्रतिमान ये मंदिर आज पुरातत्व विभाग की उपेक्षा के शिकार हैं और जल्दी ही ये खंडहरों में बदल जाएं, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा । क्योंकि आज मंदिरों पर लंबे-लंबे घास-फूस और झाड़-झंखाड़ उग आये हैं । देख-रेख के अभाव में ये दुर्लभ कलाकृतियां झड़ने लगी हैं । हालांकि इन्हें बिहार सरकार ने सुरक्षित स्मारक घोषित कर रखा है तथा सन् १९८४ से राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा इसके पुनरुद्धार का कार्य भी आरंभ किया गया है, लेकिन नौ दिन चले अढ़ाई कोस वाली उक्ति ही अब तक चरितार्थ हुई है । मुखर्जी दा के आंखों का यह मौन सवाल कि 'इन टेराकोटा कृतियां का झड़ना कब रुक पाएगा ?' पता नहीं कब तक हमारा पीछा करता रहेगा ।

—लालकोठी तारापुर
पुर १२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाजिर-जवाबी में बड़े-बड़े अक्लमंदों के होश फाख्ता कर देने और दो मानी वाली तकरीर व शेरो-शायरी से सुननेवालों को हंसाने की कला में बेजोड़ फनकार— भांड़ लखनऊ की अपनी एक बेमिसाल देन है। आज यह फन और फनकार अपने आखिरी मोड़ पर खड़े हैं। प्रस्तुत है ऐसे ही एक मशहूर भांड़, जो लखनवी भांड़ों के आखिरी चिराग हैं, जहांगीर हुसैन कश्मीरी से एक मुलाकात —

जब औरतों ने दुपट्टे फेके ...

● अजय कुमार

इतवार ! दोपहर के ठीक बारह बजे हैं। पुराने-लखनऊ का एक महल्ला कटरा अबू तुराब खां। इसी महल्ले के एक पुराने और टूटे-फूटे मकान के भीतर हमारे सामने बैठे हैं शहर-ए-लखनऊ के मशहूर भांड़ उस्ताद जहांगीर हुसैन कश्मीरी। अस्सी साला उस्ताद जहांगीर हुसैन कश्मीरी लखनवी भांड़ों के आखिरी चिराग हैं। भांड़गीरी उनका खानदानी पेशा है। उस्ताद जहांगीर अपनी भांड़गीरी का हुनर लखनऊ में ही नहीं, वरन् पूरे मुल्क में दिखा चुके हैं, काफी इनामात भी हासिल कर चुके हैं। उन्हें इनाम देनेवालों की फेहरिस्त में नवाबों से लेकर कई फिल्मी हस्तियां तक शामिल हैं।

उस्ताद जहांगीर के वालिद अल्ताफ हुसैन और अल्ताफ हुसैन के भी वालिद कासिम अली उर्फ चुनमुन मियां भी अपने जमाने के मशहूर [illegible] जान कश्मीरी का तो कहना ही क्या था ? ये उस्ताद जहांगीर के परबाबा थे। मियां अली जान और चुनमुन मियां अवध के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार के हरदिल अजीज फनकार थे।

इस फन के तहत ये भांड़ अपनी हाजिर-जवाबी से बड़े-बड़े अक्लमंदों के होश फाख्ता कर देते थे। ये भांड़ दो मानी वाली तकरीर और शेरों से सामनेवालों को हंसाते थे। इन तकरीरों और शेरों में मजाहिया (हास्य) और तंज (व्यंग्य) दोनों का इस्तेमाल होता था। लेकिन, अपना हुनर ये भांड़ अदब और तहजीब की हद में ही पेश करते थे।

लखनऊ के भांड़ों का अपना इतिहास है। ऐसा माना जाता है कि लखनऊ में भांड़ों के दो कुनबे रहे हैं। एक तो वे जो यहीं पैदा हुए और पले-बढ़े। दूसरे, वे जो कश्मीर से आकर यहां बस गये। उस्ताद जहांगीर के पुरखे कश्मीर से ही आकर यहां बसे थे। इसलिए उनके नाम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे कश्मीरी जुड़ गया ।

पहले शाल बेचते थे

"तब, यानि जब यहां लखनऊ (अवध) में नवाबों की हुकूमत थी, तब मेरे परबाबा मियां अली जान कश्मीर से यहां आये थे । वे शाल बेचते थे । यही हमारा रोजगार था । शायद, वह कोई नवाब हैदर का जमाना था (उन्हें ठीक से याद नहीं आ रहा है) । यहां आकर हमारे पुरखों ने शाल बेचने का धंधा छोड़ दिया और भांड़गीरी करने लगे । फिर तो आगे चलकर नवाब वाजिद अली शाह के जमाने में इस नायाब कला को काफी सहारा मिला । मेरे बाबा चुनमुन मियां तो नवाब वाजिद अली शाह के खास दरबारी भांड़ थे ।

उस्ताद जहांगीर आगे बताते हैं, "मैं यहीं नख्खास (लखनऊ) में पैदा हुआ और दस साल की उम्र में ही मैंने अपने वालिद अल्ताफ हुसैन साहब से भांड़गीरी की कला सीखनी शुरू कर दी थी । धीरे-धीरे वक्त गुजरने पर मैंने उनसे कलाम, शेरो-शायरी और गायन की अन्य चीजें भी सीखीं । फिर तो नवाबों के यहां गाने-बजाने की महफिलों में अपनी भांड़गीरी की कला से लोगों को हंसाने लगा । अरे, साहब ! हमारा अपना जमाना था । मैंने कहां-कहां नहीं प्रोग्राम किया ? किन-किन नवाबों के यहां नहीं गया ? वह सब एक अलग दास्तान है !"

"कुछ तो बताइये ?" मैं गुजारिश करता हूं ।

बस, फिर क्या था ? उस्ताद बताना शुरू करते हैं, तो रुकने का नाम ही नहीं लेते । वह जोश में बताते हैं, "मैंने गोलागंज में नवाब सआदत अली खां, शीशमहल में नवाब दारा और नवाब लाड़ले साहब मीर अब्दुल्ला, कश्मीरी महल्ले में नवाब शाह वाले, अंगूरी बाग में नवाब बांचू साहब के यहां अपने प्रोग्राम किये । यह सब करीब पचास साल पहले की बात है । उस वक्त हमारा प्रोग्राम रात के दस बजे से रात के तीन बजे तक चलता था । नवाब लोग उस जमाने में हमारी पार्टी को पांच सौ रुपये इनाम के तौर पर दिया करते थे ।"

औरतों ने दुपट्टे फेके

बहुत कुरेदने पर वह अपने गुजरे जमाने की ओर लौटते हैं और मुकाबले का एक किस्सा सुनाते हैं । "साहब, वह भी क्या जमाना था ? यहीं लखनऊ में आज से पैंतालीस-पचास साल पहले भोलानाथ कुएं पर एक तवायफ अल्लारक्खी से मेरा गाने का मुकाबला हुआ था । वह चिड़िया बाजार (नख्खास) के नुक्कड़ पर रहती थी । पहले उसी ने गाया । उसने दादरा पेश किया, जिसके अल्फाज थे—

बइयां मिरोर डाली अल्ला, बांके सैंया...

इसके जवाब में मैंने गाया

सारी रैन गुजर गयी बालम
भोर भयो मन लागा रे ...

बस, इसके बाद फिर सुननेवालों का क्या कहना ? वे तालियां बजाने लगे और अल्लारक्खी तो पानी-पानी हो गयी । वह मुझसे उम्र में बड़ी थी । लेकिन जो होना था, हुआ । बस, मेरी जीत का एलान होते ही औरतों ने मेरे ऊपर दुपट्टे फेकने शुरू कर दिये थे । मैंने दुपट्टे गिने, तो वे चौदह थे । मेरी इस जीत पर राजा साहब महमूदाबाद सादेक जान ने पांच सौ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

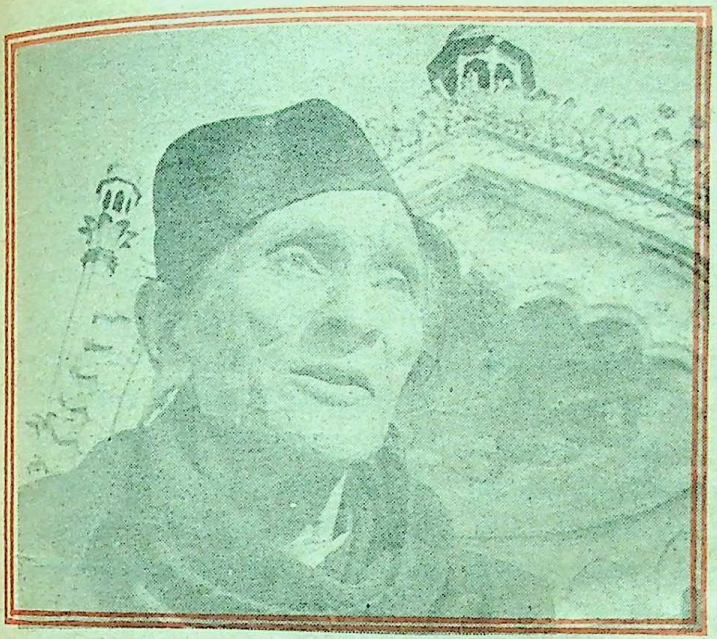

उस्ताद जहांगीर हुसैन कश्मीरी : लखनवी भांड़ों के आखिरी चिराग

का इनाम दिया था । अब वह जमाना कहां लौटकर आएगा साहब ?''

जहांगीर : रौनके-महफिल

उस्ताद जहांगीर ने ताउम्र अपनी मजाहिया अदाकारी से, शेरो-शायरी और कव्वाली से लोगों को हंसाया है और आज भी वह बातचीत में लोगों को हंसाते ही रहते हैं । एक ज़माना था, जब यह मान लिया गया था कि उस्ताद जहांगीर नहीं, तो महफिल की रौनक नहीं । यही वजह रही है कि मशहूर फिल्मी कलाकार जानी वॉकर ने भी अपने एक प्रोग्राम में उन्हें बंबई आने की दावत दी थी । इस बारे में याद करते हुए उस्ताद बताते हैं, ''बंबई की माकूब गली में जॉनी वॉकर के भतीजे की सालगिरह थी । उन्होंने उस खुशी के मौके पर कुछ पेश करने के लिए मुझे भी बुलाया था । मैं वहां पहुंचा, तो देखता हूं कि कई फिल्मी हस्तियां तशरीफ फरमां हैं । इनमें नरगिस और जद्दनबाई भी थीं । मुझे वहां देखकर पहले तो सभी ने नाक-भौं सिकोड़ी कि यह क्या पेश करेगा ? खैर, साहब, मेरा खुदा सच्चा था । मैंने किसी की भी परवाह नहीं की और एक गजल पेश की—

उड़ा के ले गयी
वह भी हवा जमाने की
जरा-सी खाक
जो बाकी थी आशियाने की
हमारी-उनकी मोहब्बत में
फर्क है इतना
उन्हें बिगड़ने की आदत है
मुझे मनाने की
यह कह रहे थे
कफन से निकलकर दोनों हाथ
हमें तो रह गयी हसरत
गले लगाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस, गजल के खत्म होते ही वहां मौजूद लोग मुझे हैरत से देखने लगे । नरगिस ने तो मेरी पीठ थपथपाई और जानी वॉकर ने ढाई हजार रुपये इनाम में दिये ।

उस्ताद जहांगीर नक्काल भी है हाजिर-जवाबी में तो उनका कोई मुकाबला नहीं।ठुमरी, दादरा, कव्वाली, गजल गायन वगैरह में भी अपना सिक्का जमाया और यही नहीं, उन्होंने तो कथक नृत्य की भी बकायदा तालीम हासिल की । खुद उन्हीं के अल्फाजों में, "मैंने लखनऊ घराने के कथक सम्राट पंडित शंभू महाराज से कई सालों तक कथक की तालीम हासिल की है और अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूं वरना, जवानी के दिनों में मैं चीनी के बताशे जमीन पर रखकर नृत्य किया करता था और क्या मजाल कि एक भी बताशा टूट जाए । अब यह सब बीते जमाने की बातें हैं साहब ! आज के कलाकारों को तो यह भी नहीं मालूम होगा कि मैंने कथक के मौजूदा आला फनकार पंडित बिरजू महाराज को अपनी गोद में खिलाया है ।"

फिल्मों में भी

"उस्ताद, आप अपने फन में माहिर रहे हैं । कभी फिल्मों में भी काम करने की कोई ख्वाहिश... ?" मैं पूछता हूं ।

"जरूर-जरूर !" वह हमारे सवाल के बीच में ही जवाब देते हैं, "अरे साहब, मैं क्या-क्या बताऊं ? मैंने फिल्म 'पालकी', 'साहब बीवी और गुलाम' में कबूतर बाजी की है । इन फिल्मों में मैं अपने पाले हुए कबूतर उड़ाता हूं । पता नहीं, आपने ये फिल्में देखीं या नहीं ? मैंने मुजफ्फर अली साहब की फिल्में 'उमराव जान' और 'अंजुमन' में भी काम किया है और अभी कुछ साल पहले शशि कपूर की फिल्म 'जुनून' में मैंने गाना गाया था ।

इश्क के लफड़े से दूर

बात अब उस्ताद के फन से हटकर दूसरी ओर मुड़ जाती है, "उस्ताद, आप इतने बड़े कलाकार रहे, काफी जगहों पर घूमे और अपने फन का जादू दिखाया, तो कभी किसी से इश्क वगैरह ?"

"तौबा-तौबा ।" दोनों कान पकड़ लेते हैं उस्ताद ! कहते हैं, "क्या कह रहे हैं आप ? मैं और इश्क । च्च.... चचच... च्चच । अरे साहब, मैं तो बस, अपनी बीवी से ही इश्क करता रहा हूं । उसके अलावा मैंने किसी से भी मोहब्बत नहीं की ।"

"नहीं उस्ताद, जैसे आपने किसी से इश्क नहीं किया, लेकिन यदि आपसे कोई करता रहा हो, तो ?"

इस सवाल पर वह मुसकराते हैं । बताते हैं, "मैंने आपको बताया तो कि एक प्रोग्राम में मेरे ऊपर चौदह दुपट्टे फेंके थे औरतों ने । अब आप अंदाजा लगा लीजिए ...

अस्सी साल की उम्र में भी आज उस्ताद भांड़गीरी करके और कव्वाली गाकर बमुश्किल दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर पा रहे हैं । वह नहीं चाहते कि उनका बेटा हसन अब्बास भी उनकी तरह मुफलिसी में दिन बिताए । इसलिए उन्होंने यह कला उसे नहीं सिखायी । इसका मतलब साफ है कि उस्ताद जहांगीर ही लखनवी भांड़ों के आखिरी चिराग हैं ।

—१०१, मवैया, लखनऊ-२२६००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहनाई बजते-बजते अचानक बंद हो गयी और बैंडबाजों की आवाज थोड़ी दूर पर से आने लगी । पड़ौस में कोलाहल-सा मच गया कि 'बारात आ गयी, बारात आ गयी ।'

कहानी

खामोशी में डूबी सांसें

● डॉ. शिवनारायण चतुर्वेदी

चादर में मुंह लपेटे पड़ी रागिनी को भी इस कोलाहल ने चौंका दिया । उसने मुंह से चादर हटायी और कुछ क्षण निश्चेष्ट-सी पड़ी रही । वह पलंग से उठना चाहती थी, उन बैंडबाजों और बारात के हंगामे को देखने के लिए वह भी लालायित थी, किंतु उसे लगा जैसे उसके शरीर में प्राण ही नहीं हैं । जब भी मोहल्ले में कोई बारात आती है, वह प्रायः इसी प्रकार निष्प्राण-सी हो जाती है । ऐसा उसके साथ हर बार होता है ।

पूरा घर सुनसान है । पिताजी, मां, दोनों छोटी बहनें— शैवालिनी और मंदाकिनी पड़ौस के ही विवाह में सम्मिलित होने गयी हैं । जब से पड़ौस में विवाह की सुन-गुन शुरू हुई, मां तो वहां वैसे भी रोज जाती है । खूब चटकारे लेकर वहां की बातें सुनाती है कि, 'दहेज में देने के लिए रंगीन टी.वी., फ्रिज, स्कूटर सब आ गया है । कम्मो की मां जेवरों के दो-दो सेट दे रही है । अरे, आज की महंगाई में कौन इतना सामान देता है ?'

रागिनी को अच्छी तरह मालूम है कि उसकी मां इस समय पड़ौस में खूब नाच-गा रही होगी । विवाह के न जाने कितने टप्पे और बन्ने उन्हें आते हैं । गला भी अच्छा है । हर शादी-ब्याह में सबसे पहले उन्हें ही बुलाया जाता है । एक बार मुहल्ले की एक बुजुर्ग महिला ने उनसे पूछ ही लिया था, 'अरी, प्रकाश की मां, कभी अपने घर में भी ढोलक बजाकर नाचेगी या नहीं ? आखिर, कब तक घर बैठाए रहेगी अपनी रागिनी को ? और अब तो तेरी शैवाल भी पच्चीस-छब्बीस की हो गयी है ?'

सुना है कि मां ने तमककर उत्तर दिया था, 'चाची, जाने मुहल्लेवाले हमारी लड़कियों की चिंता में क्यों दुबले हुए जा रहे हैं ? अरे, अभी तो उन्होंने अपनी पढ़ाई ही खतम की है । अब अपने दान-दहेज के लिए चार पैसे कमा रही हैं, तो लोगों की छाती क्यों फटी जा रही है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुना है कि मां ने तमककर उत्तर दिया था, 'चाची, जाने मुहल्लेवाले हमारी लड़कियों की चिंता में क्यों दुबले हुए जा रहे हैं ? अरे, अभी तो उन्होंने अपनी पढ़ाई ही खतम की है । अब अपने दान-दहेज के लिए चार पैसे कमा रही हैं, तो लोगों की छाती क्यों फटी जा रही है ?'

उनके इस तीखे जवाब के बाद फिर कभी किसी ने उनसे हमारी शादी के बारे में नहीं पूछा ।

आज जब वह शादी में जा रही थीं, तो उन्होंने कहा भी था, 'तू भी चल न रागिनी, यहां अकेली पड़ी-पड़ी क्या करेगी ?'

'नहीं मां, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं नहीं जाऊंगी । मुझे यह भीड़-भाड़ और शोर-शराबा अच्छा नहीं लगता ।' इस पर मां ने तुनककर कहा, 'न जाने, इस लड़की को क्या हो गया है ? कभी किसी शादी-ब्याह में नहीं जाती और न ही लड़कियों से, खासतौर से ब्याही लड़कियों से, हंसती-बोलती है । बस, सुबह से शाम तक या तो किताबें पढ़ती रहती है या फिर अपनी नौकरी में डूबी रहती है ।'

इस बात का वह मां को जवाब दे सकती थी, लेकिन बात और बढ़ जाती । जो मां मुहल्ले-पड़ौस के विवाहों से इतनी खुश हो सकती थी क्या वह अपनी बेटियों के मन की कचोट को नहीं समझ सकती थी ? दूसरी बात यह कि उसने कभी मां-बाप को पलटकर जवाब नहीं दिया— हमेशा खामोश रहकर सभी कुछ सहती रही, तो अब वह बत्तीस साल की होकर क्या जवाब देती ? सो, आज भी वह चुपचाप भरपूर एक तीखी नजर मां पर डालती हुई अपने कमरे में चली गयी ।

मझली बहन शैवालिनी उसके कमरे में आयी । उसके सिरहाने बैठकर उसके बालों पर हाथ फेरते कहा, 'दीदी, मैं आपके मन की पीड़ा समझती हूं । मां-पापा ने न कभी तुम्हारे विवाह के बारे में सोचा, और न अब मेरे विवाह के बारे में । बस, वे केवल एक ही बारे में सोचते हैं और वह है पैसा— सो, पैसा कमाये जाओ और उन्हें दिये जाओ । मां ने तो हमें रुपया कमाने की मशीन समझ रखा है । पापा भी तो चुप रहकर मां का ही साथ दे रहे हैं ?'

रागिनी आखिर क्या उत्तर देती ? अंदर से उठती रूलाई के आवेग ने उसके कंठ को अवरुद्ध जो कर दिया था ।

'दीदी, साथ चलतीं तो अच्छा रहता । कुछ मन बहल जाता । यहां अकेली पड़ी रहोगी, तो सोच-सोचकर पागलों-सी रोती रहोगी । चलो न ?'

'तू मंदा को लेकर जा, शैवाल । नहीं तो मां और हंगामा खड़ा कर देगी । मैं नहीं जा सकूंगी ।'

शैवालिनी चुपचाप उठकर चली गयी ।

अकेले पड़े-पड़े रागिनी न जाने कितनी बातें सोच गयी । अपने बारे में, अपने परिवार के बारे में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में माता-पिता हैं । पिता को रिटायर हुए चार-पांच साल हो गये । सात सौ रुपये पेंशन मिलती है । वह कुछ कर नहीं पाते क्योंकि गठिया रोग के कारण बेहद तकलीफ रहती है । कुनबा बड़ा है । सबसे बड़ी रागिनी है, ३२ साल की । पढ़ने में सदा तेज, प्रथम श्रेणी पाती रही और स्कॉलरशिप लेती रही । फर्स्ट डिवीजन में एम.कॉम. कर बैंक की परीक्षा में बैठी और चुन ली गयी । दस साल हो गये नौकरी करते हुए । उन्नति करते-करते वह अकाउंट्स आफिसर हो गयी है ।

रागिनी से छोटी शैवालिनी है । पढ़ने में बहुत तेज तो नहीं, लेकिन परिश्रमी खूब । उसने जब सैकेंड डिवीजन में बी.ए. कर लिया, तो रागिनी ने पूछा था, 'बोल, शैवाल अब क्या करने का इरादा है ?'

'दीदी, सोचती हूं कि बी.एड. कर लूं तो कहीं टीचर हो जाऊं । एम.ए. तो मैं नौकरी करते हुए भी कर सकती हूं । लेकिन दीदी, बी.एड. का खर्चा कहां से लाऊं ? पापा से कुछ उम्मीद नहीं है, प्रकाश भैया से कुछ मांगने का अर्थ है— उनके उपदेश सुनना । वैसे भी, उनकी कहानी तुम जानती ही हो ।

'शैवाल, अरे पगली, मैं जो हूं । तू निश्चिंत होकर बी.एड. कर । खर्चा मैं दूंगी ।'

बी.एड. करने के बाद शैवालिनी एक सरकारी स्कूल में अध्यापिका हो गयी । सबसे छोटी बहन मंदा अभी इंटर में पढ़ रही है ।

शैवालिनी से छोटा और मंदा से बड़ा एक भाई है— प्रकाश । रागिनी को अच्छी तरह याद है, जब प्रकाश पैदा हुआ था, पूरे मुहल्ले में लड्डू बंटे थे, तीन दिन तक घर में नाच-गाना होता रहा था । आखिर, वंशरक्षक, कुलदीपक जो जन्मा था । वही कुलदीपक बी.ए. में दो बार फेल होकर बड़ी मुश्किल से थर्ड डिवीजन में पास हुआ । फिर पापा ने अफसरों की खुशामद करके, उसे एक सहकारी बैंक में क्लर्क बनवा दिया, लेकिन उसकी पोस्टिंग अपने नगर में नहीं

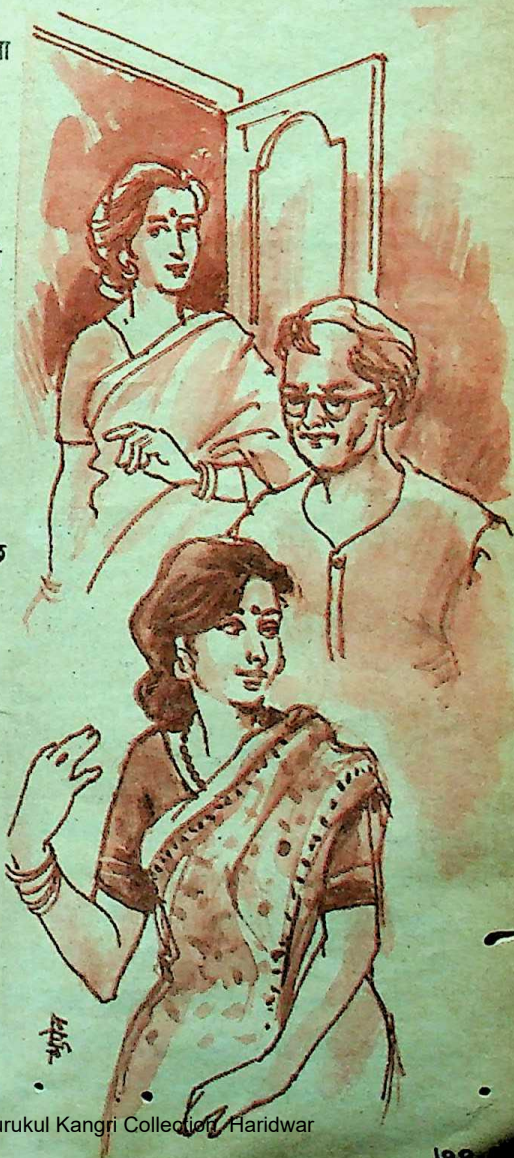

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करा सके । प्रकाश डेढ़-दो सौ मील दूर दूसरे शहर में चला गया ।

उसे नौकरी मिल गयी, तो उसका विवाह होना ही था । चटपट विवाह हो गया । बढ़िया दहेज लिया गया । अब २४ वर्ष का प्रकाश दो पुत्रों का पिता है ।

सुना है, प्रकाश खूब रिश्वत खाता है, बेहद शराब पीता है, जुआ खेलता है । बीच में कुछ महीनों के लिए वह सस्पैंड भी हो गया था । पिछली बार जब वह दीवाली पर आया था, तो पापा ने धीमे-से समझाया था, 'मुन्ना, तुम्हारे बारे में तरह-तरह की ऊलजुलूल बातें सुनने में आती रहती हैं, यह सब मुझे अच्छी नहीं लगता । अपनी आदतें सुधारो । देखो, मैं अब रिटायर हो गया हूं । तुम्हें मालूम ही है मेरी पेंशन से खर्च नहीं चल पाता । रागिनी की पूरी तनख्वाह से ही गुजारा चल रहा है । तुम्हें भी हमारी मदद करनी चाहिए ।'

प्रकाश ने चौंककर उन्हें देखा और बोला, 'पापा, मेरा ही गुजारा बड़ी मुश्किल से चल पाता है ? बीच-बीच में मुझे तो उल्टे मां से ही रुपये लेने पड़ते हैं । फिर रागिनी और शैवालिनी— दोनों ही तो कमा रही हैं । रागिनी के विवाह का तो सवाल ही नहीं उठता ? अब उनसे कौन विवाह करेगा ? रही शैवालिनी की, अगर एकाध साल में ब्याह न हुआ, और जैसी कि आशा है नहीं हो पाएगा, तो फिर उनसे भी कोई विवाह नहीं करेगा ? तब दो-दो लड़कियों की कमाई के आते हुए आपको क्या चिंता ?'

पापा ने सहमकर बहुत ही धीमे-से कहा था, 'मुन्ना, तुम क्या उल्टी-सीधी बातें कर रहे हो ? बिना सोचे-समझे जो भी मन में आता है बक देते हो । जाओ, यहां से । तुम शायद होश में नहीं हो ?'

मां को जब पता लगा, तो क्रोध में भरकर उन्होंने पापा को डांटा, 'खबरदार, आपने मेरे मुन्ना से जो कुछ कहा ? अरे, हमारे खानदान का वही तो कुलदीपक है ? वह अगर कभी-कभार दोस्तों में बैठकर मन बहला लेता है, तो इसमें आपको क्यों बुरा लगता है ? मैं कहे देती हूं, कुछ मत मांगिए । उसकी तनख्वाह ही क्या है ? वह किसी तरह अपना गुजारा कर रहा है, यही बहुत है । ये जो इसकी बहनें कमा रही हैं, जो मांगो, उनसे मांगो; जो कराओ, उनसे कराओ ।'

पापा चुप हो गये थे । इसके बाद उन्होंने बोलने का कभी साहस नहीं किया ।

मां-बाप के बीच एक अजीब-सा मूक समझौता हो गया था कि लड़कियों के विवाह के बारे में कभी कोई बात नहीं की जाएगी । घर-गृहस्थी की तमाम बातें उनमें होती थीं, किंतु लड़कियों की विवाह की चर्चा आते ही उनकी पत्नी एकदम मौन हो जाती थीं । अब तो वे रिटायर थे, बीमार थे, इसलिए स्वयं ही मौन रहते थे । किंतु इससे पहले उन्होंने दो-तीन बार इस संबंध में प्रयत्न किया था कि, 'प्रकाश की मां, रागिनी के विवाह के बारे में कुछ सोचो न ?'

'अरे, क्या पागल हो गये हो, जो दुधारू गाय को घर से हांक रहे हो ? कुछ मालूम भी है कि लड़की के ब्याह में कितना खर्च होगा ? लोग कितना दहेज मांग रहे हैं ? तुम्हारी क्या इतनी औकात है कि लाख-दो लाख दहेज में दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सको। ले-देकर तुम्हारा प्रोविडेंट फंड ही तो है। उसे पूरा निकल लोगो, तब भी एक लड़की नहीं ब्याह पाओगे। फिर अपने प्रकाश का ब्याह कैसे करोगे ? इकलौता लड़का है, सो समझ लो, उसका ब्याह तो धूमधाम से होगा ही। सारे अरमान मुझे प्रकाश के ब्याह में ही पूरी करने हैं।'

'सो तो सब ठीक है, भागवान, लेकिन अड़ोसी-पड़ौसी और बिरादरीवाले क्या कहेंगे ?'

'ऊंह, कहने दो लोगों को। पहले हमें अपना घर देखना है। रागिनी की तनख्वाह से आज घर में खुशहाली दिखायी दे रही है। वरना, तुम्हारी तनख्वाह में तो बच्चों का पालना और पढ़ाना ही मुश्किल था। रागिनी को ब्याह दोगे, तो फिर कैसे चलेगा ?'

'बात तो तुम्हारी ठीक है। रागिनी की तनख्वाह के बल पर ही तो आज शैवाल, प्रकाश और मंदा की शिक्षा चल पा रही है। मकान के लिए जमीन भी खरीदी जा चुकी है। फिर भी विवाह न किये जाने पर रागिनी क्या सोचेगी ?'

'उसकी चिंता तुम न करो। किसी न किसी तरह उसे भरमाये रखना मेरा काम है। फिर लड़कियां अपनी ब्याह-शादी के मामले में मां-बाप से बहस नहीं किया करतीं।'

इस पर ने निरुत्तर होकर उन्होंने मौन आत्मसमर्पण कर दिया था। फिर वे कभी लड़कियों की ब्याह-शादी के मामलों में नहीं बोले।

दफ़्तर के दो-एक साथियों ने जब कभी उनसे कहा भी कि, 'अरे मिश्राजी, बेटी रागिनी के

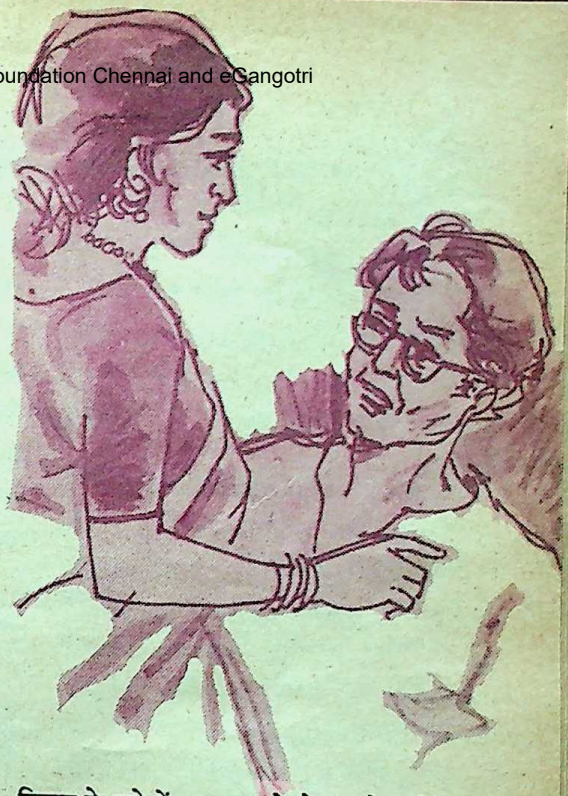

विवाह के बारे में क्या कर रहे हो ?' तो उन्होंने सरलता से कह दिया, 'उपयुक्त वर खोज रहे हैं, भैया। दूसरी बात, रागिनी घोर मंगली है ? रातभर चिंता के मारे नींद ही नहीं आती। जैसे ही कोई मनचाहा वर मिला, हमने तुरत-फुरत रागिनी के हाथ पीले किये।'

और न आज तक कोई मनचाहा वर मिला, न रागिनी के हाथ पीले हुए। धीरे-धीरे लोगों ने कहना ही बंद कर दिया।

बैंडबाजों की आवाज धीरे-धीरे पास आती गयी। लगा कि बारात बिलकुल घर के पास आ गयी है। रागिनी पलंग से उठना चाहती थी, लेकिन उसका मन नहीं हुआ। कब तक वह देखेगी दूसरों की बारातों को ?

दो-ढाई साल पहले उसके बैंक के एक सहयोगी ने पूछा था, 'मिस रागिनी, क्या आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कभी हंसी भी हैं ? सचमुच बताइए, हम लोगों की आपस में शर्त बदी हुई है ।'

उसने एक उदास मुसकराहट से जवाब दिया था, 'विनयजी, जब से मैंने अपने आप को पहचाना है, मेरी हंसी अनजाने ही छिन गयी है । विश्वास मानिए, मैं सचमुच बेहद खुश दिल और हंसनेवाली लड़की थी ।'

'लगता है, आपके जीवन में कोई प्रेम-कहानी रही है ?'

'प्रेम और मेरे जीवन में ?...नहीं, मेरे इस मरुस्थल से जीवन में कभी कोई प्यार लेकर नहीं आया !' कहते हुए वह एकदम उठकर चल दी थी ।

मां ने भी थोड़ा तुनककर कहा, 'बेटी, कभी हमारे बारे में भी तूने सोचा है ? तू इस घर से अगर चली गयी, तो हमारा क्या होगा ?'

तब से विनय उसके प्रति झुकता चला गया था और रागिनी उसकी ओर । वे आपस में मिलने-जुलने लगे, घूमने-फिरने लगे । उसकी जिंदगी में खुशियां लौटने लगीं ।

चार-पांच महीने पहले ही उसके पिता ने उसे बुलाकर कहा था, 'रागिनी बेटी, मैं यह सब क्या सुन रहा हूं ? तुम्हारे बैंक के एक बुजुर्ग सहयोगी ने ये सब बातें बतायीं । सुनकर मैं शर्म से गड़ गया । नहीं, नहीं, बेटी, ये अच्छी बातें नहीं हैं ?' फिर धीमे से दर्दभरे स्वर में बोले, 'बेटी, तुम्हें मालूम ही है कि मेरी पेंशन से तो घर का खर्च नहीं चलता । जो फंड और ग्रेच्युटी का रुपया मिला था, उससे प्रकाश का विवाह कर दिया । प्रकाश कुछ दे, इसका प्रश्न ही नहीं उठता ? बीमारी के कारण मैं कुछ काम कर नहीं सकता । तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूं ? फिर, तुम यह भी जानती हो कि तुम्हारे रुपयों से ही मैंने जमीन खरीद ली है । सोचा था कि तुम मदद करोगी, तो मरने से पहले अपने घर में रहने का स्वप्न भी पूरा कर लूंगा ।'

रागिनी केवल सिर झुकाये सब कुछ सुनती रही । फिर उठकर अंदर चली गयी ।

अंदर मां ने भी थोड़ा तुनककर कहा, 'बेटी, कभी हमारे बारे में भी तूने सोचा है ? तू इस घर से अगर चली गयी, तो हमारा क्या होगा ? मंदा जो डॉक्टर बनने का स्वप्न देख रही है, उसका क्या होगा ? माना कि शैवाल भी कमा रही है, लेकिन उसकी कमाई से घर में क्या होना है ? तेरे जाने से हम लोग कितनी मुसीबत में फंस जाएंगे ?'

'आप किसी मुसीबत में नहीं फंसेंगी । पापा से कह दीजिएगा कि उनके और आपके— सभी के सपने मैं पूरा करूंगी । मैं जब तक जिंदा हूं, आपकी एक-एक बूंद खून का मूल्य चुकाऊंगी, क्योंकि आपने मुझे जन्म देकर मुझ पर उपकार किया है । निश्चिंत रहें— मैं इसी घर में, सदा-सदा के लिए, आपके पास रहूंगी ।'

मां ने खुशी में भरकर कहा था, 'जुग-जुग जीओ बेटी, हम तो तेरे आसरे ही जी रहे हैं ।'

रागिनी को उस दिन पहली बार यह अहसास हुआ कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है । मां ही बेटी को ब्याह न करने की सलाह दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है। यह कैसी विडंबना है, भगवन ? यह कैसा स्वार्थ है ? मनुष्य के ये कैसे बदले हुए रूप हैं ?

अगले दिन से ही उसका रहन-सहन, व्यवहार सभी कुछ बदल गया।

'क्या बात है रागिनी ? तुम तो आजकल कोई बात भी नहीं कर रहीं ? क्या हो गया है तुम्हें ?' कई दिन बाद विनय ने पूछा।

'समय नहीं मिलता।' उसने फीकी-सी मुसकराहट के साथ कहा।

'तुम ठीक तो हो ? मैं तुममें बेहद बदलाव-सा देख रहा हूं।'

'मैं ठीक हूं, मुझे लेकर तुम परेशान न हो।'

'कमाल है ! परेशान क्यों न होऊं ? मैं तुमसे एकांत में मिलना चाहता था। मेरी मां भी तुम्हें देखना चाहती है।'

'विनयजी, अब यह संभव नहीं हो पाएगा। मनुष्य के जीवन में कुछ स्वप्न ऐसे भी होते हैं, जो चाहकर भी उसके पूरे नहीं होते। कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ है।'

'तुम होश में तो हो, रागिनी ? और यह क्या बक रही हो ? मैं 'विनयजी' कब से हो गया ?'

रागिनी ने चेहरे पर दृढ़ता लाते हुए कहा, 'मैं जो कुछ कह रही हूं, समझ-बूझकर कह रही हूं। आप यही सोच लें कि हम कभी एक-दूसरे से मिले ही नहीं थे। मेरी अपनी मजबूरियां हैं— मैं उनसे बंधी हुई हूं। अब मैं आपसे नहीं मिल सकूंगी।' रागिनी ने अपने मन की पीड़ा को मन में ही दबाकर रूखे स्वर में कहा।

कुछ क्षण मौन अपलक उसे देखते रहने के बाद विनय तीखे स्वर में बोला था, 'शायद,

कोई मुझसे भी अच्छा लड़का नजर आ गया है तुम्हें ? रागिनी, तुमने मेरे साथ धोखा करके अच्छा नहीं किया ? तुम क्या यह सोचती हो कि तुम्हारे अलावा मुझे कोई अच्छी लड़की नहीं मिलेगी ? ओ.के. मैं अब तुमसे नहीं मिलूंगा।' कहता हुआ विनय तेजी से चला गया। रागिनी व्यथाभरी आंखों से उसे जाते हुए देखती रही। फिर फफक-फफककर रो पड़ी।

बैंडबाजे जोर-जोर से बजने लगे। लगा कि बारात बगल के मकान के बिलकुल दरवाजे पर आ गयी हो। रागिनी का ध्यान टूटा। उसका मन बारात को, दूल्हा को, देखने को बेचैन हो उठा। उसने अपने कमरे की खिड़की के परदे को हटाया और मंडप की ओर आते दूल्हा को देखना। जैसे ही तिलक के लिए फूलों की झालरों को वर के चेहरे से हटाया तो वह चेहरा विनय का था।

अवाक् रागिनी कुछ क्षणों तक अपलक उसे खोयी-खोयी निगाहों से देखती रही, फिर गहरी ठंडी सांस भरकर पलंग पर गिर पड़ी। उसकी रूलाई तीव्र आवेग से फूट पड़ी, जिसे न कोई देखनेवाला था, न सुननेवाला।

—सी-१२५, नेहरू कॉलोनी,
हरिद्वार रोड, देहरादून-२४८००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेश कुमार, हजारीबाग

● वायुमंडल को सबसे अधिक ऑक्सीजन कहां से मिलती है ?

सबसे अधिक ऑक्सीजन समुद्री वनस्पति से मिलती है, जो ऑक्सीजन की कुल मात्रा का लगभग ७० प्रतिशत है ।

पार्वती कृष्ण, नागपुर

● मूर्तिकला का उपयुक्त माध्यम 'टेराकोटा' बताया जाता है । टेराकोटा का अर्थ क्या होता है ?

टेराकोटा इतालवी भाषा का शब्द है । वस्तुतः 'टेरा' का अर्थ मिट्टी है और 'टेराकोटा' का अर्थ पकी हुई मिट्टी है ।

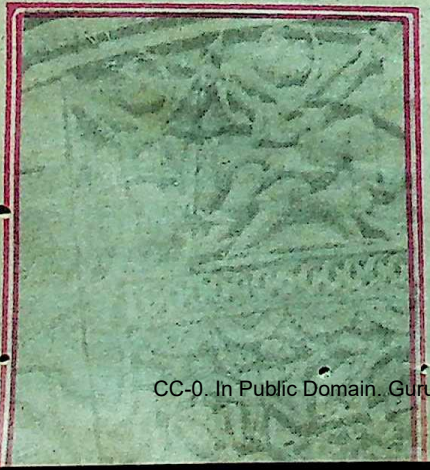

प्रमोदसिंह गौर, जबलपुर

● मच्छर के काटने से मलेरिया होता है, किंतु एड्स नहीं, क्यों ?

मादा एनोफिलीज मच्छर के पेट में मलेरिया के परजीवी पनपते हैं । पेट का संबंध उसके सलाइवरी ग्लैंड (लार ग्रंथि) से जुड़ा होता है । जब मादा एनोफिलीज (विषम ज्वर मच्छर) किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटती है, तो उसके सलाइवा (लार) के साथ मलेरिया के परजीवी उस व्यक्ति के रक्त में प्रविष्ट हो जाते हैं । ये परजीवी उस व्यक्ति के रेड ब्लड कॉर्पल्स (लाल रुधिर कणिकाओं) को नष्ट कर देते हैं, जिससे मलेरिया रोग हो जाता है । किंतु एड्स के रोगाणु मच्छर के पेट में हजम हो जाते हैं या उसके मल के साथ निकल जाते हैं । यही कारण है कि मच्छर के काटने से एड्स नहीं होता ।

अजीज अहमद, मधुबनी

● चावल की सबसे अधिक खेती कहां होती है ?

दुनिया का ९० प्रतिशत चावल एशियाई देशों में ही उगाया और खाया जाता है । पृथ्वी का हर तीसरा प्राणी किसी न किसी रूप में हर रोज चावल खाता है । अफरीका और लैटिन अमरीका में भी चावल खानेवालों की कमी नहीं है । चावल को नेपाल और भूटान के दस हजार फुट ऊंचे पहाड़ों से लेकर समुद्र की सतह से नीची भूमि पर उगाया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

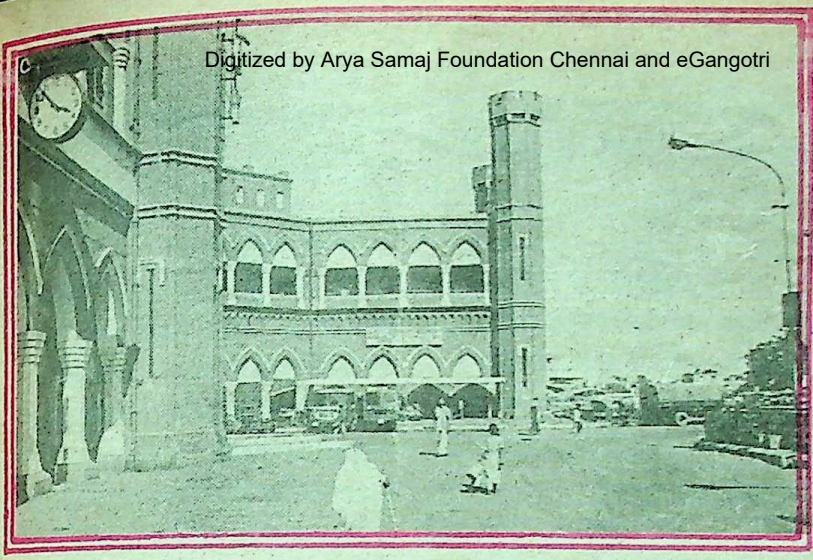

ब्रजनंदन बेरी, दिल्ली

● दिल्ली स्टेशन जंक्शन की इमारत कब बनी थी, किस स्थापत्य शैली की है ?

■ दिल्ली जंक्शन स्टेशन की इमारत का निर्माण सन् १८५४ में हुआ था। इसके लिए स्थान की खोज एक अंगरेज ठेकेदार बैंजामिन फ्लेचर ने की थी और उसी ने इसका निर्माण कराया था। इस स्टेशन की इमारत का अग्र भाग गोथिक एवं ग्रीको-रोमन शैली का मिश्रण है और इसकी मीनारें तुर्की-मुगल शैली की हैं।

जानकीनाथ हांडा, जमशेदपुर

● यूनानी चिकित्सा पद्धति—यह नाम कैसे पड़ा ?

इस पद्धति को यूनानी इसलिए कहते हैं कि इसका मूल-स्थान ग्रीस अर्थात यूनान है। अरबी भाषा में 'यूनानी' का तात्पर्य ग्रीक और 'तिब' का अर्थ औषधि है। ग्रीस में सन् ४६० में हिपोक्रेटस ने यह चिकित्सा पद्धति विकसित की थी और गालेन ने इसे पूर्ण विकास की स्थिति में पहुंचा दिया था। वस्तुतः सन् ७५० में अबासिद अरबों ने यूनानी चिकित्सा पद्धति को अरबी में अनूदित करवाकर उसमें अनुसंधान किये। फारस और केंद्रीय एशियाई नगरों पर मंगोलों द्वारा हमला किये जाने पर इस पद्धति के चिकित्सकों ने भागकर भारत में शरण ली, जहां दिल्ली के सुल्तानों और मुगल बादशाहों ने इस चिकित्सा पद्धति को अपना संरक्षण दिया। (स्रोतः यूनानी सिस्टम ऑव मेडिसन इन इंडिया : ए प्रोफाइल)।

रसिकबिहारी टंडन, लखनऊ

● हंगरी की राजधानी के नाम का इतिहास क्या है ?

हंगरी की राजधानी का नाम—बुडापेस्ट है। बुडापेस्ट डेन्यूब नदी के दोनों ओर स्थित 'बुडा' और 'पेस्ट' नामक दो नगरों को संयुक्त मानकर इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुडापेस्ट नाम दिया गया था । यह नामकरण सन् १८७२ में हुआ ।

रंजीतसिंह कीर, रतलाम

● वैक्सीन क्या है ?

वैक्सीन अर्थात टीका, रोगों से बचाव के लिए तैयार किया जानेवाला ऐंटीजन है, जिसे मनुष्य के शरीर में कृत्रिम रूप से प्रविष्ट कराया जाता है । इसके प्रवेश के साथ ही शरीर में उस टीके से संबंधित रोग के जीवाणुओं तथा विषाणुओं से लड़ने के लिए विशिष्ट प्रकार के ऐंटीबाडी तैयार होने लगते हैं, जो उस व्यक्ति में संबंधित रोग को उत्पन्न नहीं होने देते ।

रघुनंदन प्रसाद शर्मा, भोजपुर

● फ्लोरेसेंट ट्यूब में किस पदार्थ का लेप किया जाता है ?

यह लेप 'फॉस्फर' का होता है । ट्यूब के अंदर विद्युत धारा प्रवाहित होने पर इलैक्ट्रॉन उत्सर्जित होते हैं, जो गैस तथा पारे के परमाणुओं से टकराने पर पराबैंगनी किरणें उत्पन्न करते हैं, और इस प्रकार 'फॉस्फर' के संसर्ग से प्रकाश उत्पन्न होता है, जिसका रंग 'फॉस्फर' के प्रकार पर निर्भर करता है ।

रजत किशोर, पटना

● देश का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान कहां है और ये हमारे देश में कुल कितने हैं ?

देश का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान 'कार्बेट नेशनल पार्क' उत्तर प्रदेश में है । इसकी स्थापना सन् १९३५ में हुई थी । यह ५२०.८२ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है । देश में इस समय राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभयारण्यों की संख्या ७५ और पक्षी विहारों की संख्या २४ है ।

शिवनंदन पटेल, इलाहाबाद

● संक्रांति से क्या तात्पर्य है ?

सूर्य की बारह राशियां हैं । प्रत्येक तीस दिन और कुछ अंशों के बाद सूर्य एक से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, जिसे संक्रमण या संक्रांति कहते हैं । इसी से साल में बारह महीने बनते हैं और वर्ष में बारह संक्रांतियां आती हैं । प्रत्येक दो अमावस्याओं के बीच एक संक्रांति होनी ही चाहिए । पूरे आकाश को दो भागों (अयनों) में विभाजित किया गया है । जब सूर्य उदय होकर उत्तरी गोलार्द्ध में होता हुआ पश्चिम में अस्त होता है, तो उसे उत्तरायण कहते हैं । यह स्थिति मकर-संक्रांति से लेकर कर्क-संक्रांति, अर्थात मध्य जनवरी से जुलाई तक रहती है । यही सूर्य जब मध्य जुलाई से लेकर जनवरी के प्रथमार्द्ध तक दक्षिणी गोलार्द्ध में होकर अपनी यात्रा पूरी करता है, तो उसे दक्षिणायन कहते हैं । उत्तरायण शुभ माना गया है , इसलिए मकर संक्रांति पर्व है ।

चलते-चलते

जो एक को मारे वह हत्यारा कहलाता है, सैकड़ों को मारे उसे वीर सिपाही कहा जाता है और... ।

और जो सबको मारे उसे भगवान

— सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्लाल के भोज-प्रबंध की एक कथा के अनुसार महाराजा भोज की स्तुति में एक श्लोक पढ़ते हुए किसी कवि ने कहा है—

यथा-यथा भोजयशो विवर्धते
सितां त्रिलोकीमिव कर्तुमुद्यतम्
तथा-तथा मे हृदयं विदूयते
प्रियालकाली-धवलत्व-शंकया

अर्थात्, जैसे-जैसे संपूर्ण त्रिलोकी को श्वेत करने को उद्यत महाराजा भोज का यश बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे मेरा हृदय पीड़ित होता जाता है क्योंकि, मुझे शंका है कि मेरी प्रिया के केश भी कहीं संपूर्ण त्रिलोकी के साथ श्वेत न हो जाएं।

उदाहरण के लिए, हंस के नीर-क्षीर-विवेक को ही लें—

हंसो हि क्षीरमादत्तेतिन्मिश्रा वर्जयत्ययः

अर्थात, हंस दूध और पानी में से दूध को पी लेता है और पानी को छोड़ देता है— यह बात कहां तक सही है ?

राजशेखर का मानना है कि काल, देश और शास्त्र की अनंतता कवि-प्रसिद्धि को एक व्यापक सत्य से जोड़ देती है और यही कवि का सत्य बन जाता है। इसीलिए लोक-विरुद्ध और शास्त्र-विरुद्ध अर्थ का प्रतिपादन करने पर भी इन कवि-प्रसिद्धियों को काव्य-दोष नहीं माना जाता।

कवियों की विचित्र कल्पनाएं सभी सच नहीं हैं!

● डॉ. उषाकांता चतुर्वेदी

यश के साथ-साथ पीड़ा का बढ़ना— कवि यहां चमत्कार की सृष्टि करना चाहता है। कवि की यह विचित्र कल्पना कवि-प्रसिद्धियों से ही उपजी है।

ये कवि-प्रसिद्धियां या कवि-समय क्या है ? काव्य-मीमांसाकार राजशेखर ने स्पष्टतः कवि-समय को कवियों के आचार से संबद्ध कर दिया। कवि लोग परंपरा से जिन बातों का वर्णन करते आ रहे हैं, उन्हें कवि-समय या कवि-प्रसिद्धि कह दिया जाता है, भले ही वे देश और काल की परिधि में न आती हों।

कवि प्रकृति को सीधे-सीधे व्यक्त नहीं करता। अगर वह ऐसा करता है, तो काव्य-सौंदर्य खंडित हो जाता है जबकि, कवि-समय का मूल उद्देश्य यही है कि वस्तु भावनानुकूल रूप पाकर काव्योपयोगी सौंदर्य से युक्त हो जाए। आचार्य कुंतक ने कहा है कि कवि अपने काव्य-कौशल द्वारा काव्य-वस्तु में कुछ अलौकिक शोभातिशय की उद्भावनाकर देता है, जिससे वह लोकोत्तर सौंदर्य से संपन्न एक नया रूप धारण कर लेती है।

भोज-प्रबंध में यश के लिए जिस श्वेत वर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि-प्रसिद्धि का उल्लेख ऊपर किया गया है, इसी तरह का एक वर्णन और दृष्टव्य है, जहां श्वेत वर्ण की कवि-प्रसिद्धि का संबंध हास से है । मेघदूत में कालिदास ने हिमाच्छादित कैलास के वर्णन में उत्प्रेक्षा की है मानो त्रियंबक (शिव) का अट्टहास दिन-प्रतिदिन पूंजीभूत होकर हिम-धवल कैलास में परिणत हो गया ।

निश्चित रूप से कवि-समय में सिद्ध हास के लिए धवल वर्ण के प्रयोग ने काव्य के सौंदर्य को द्विगुणित कर दिया है ।

वस्तु-जगत में क्या सत्य है और क्या असत्य, कवि इनसे निःसंग होकर काव्य में प्रभावोत्पादकता लाने के लिए उसे रमणीय अर्थ-बोध देने के लिए कवि-प्रसिद्धियों का आश्रय लेता है । कवि-प्रसिद्धियों की सत्यता-असत्यता की परख करें, तो वे वस्तु-जगत से परे की प्रतीत होती हुई भी, कहीं-न-कहीं वस्तु जगत से जुड़ी दिखायी देती हैं । सृष्टि व्यापक है, काल अनंत है । भौगोलिक क्षेत्रों में विभिन्नता है । आचार्यों की भ्रमणशील प्रवृत्ति को हमें नहीं भूल जाना चाहिए । आज जो असत्य दिखायी देता है या लोकोत्तर दिखायी देता है, संभव है जब इन कवि-प्रसिद्धियों काउद्भावनाहुआ हो, ये किसी काल, क्षेत्र विशेष में सच हो । इसके भी अतिरिक्त कवियों, आचार्यों की अर्थबोधक सृजन-शक्ति रचना-प्रक्रिया के दौरान देश-काल की सीमाओं को लांघ सकती है और सृजनशक्ति नयी अर्थ-बोधकता से संयुक्त हो सकती है ।

काल, देश और शास्त्र की अनंतता कवि-प्रसिद्धि को एक व्यापक सत्य से जोड़ देती है और यही कवि का सत्य बन जाता है । इसीलिए लोक-विरुद्ध और शास्त्र-विरुद्ध अर्थ का प्रतिपादन करने पर भी इन कवि-प्रसिद्धियों को काव्य-दोष नहीं माना जाता ।

आत्मा का प्रतीक है हंस

हम कतिपय कवि-प्रसिद्धियों को लेकर उन पर विचार करें तो वे नितांत काल्पनिक लगती हुई भी आधारहीन नहीं लगतीं । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सृष्टि के विभिन्न क्षेत्रों से कवि-समय के आधारगत पदार्थों के संबंधों को देखते हुए उनका विशद विवेचन किया है । वनस्पति वर्ग, पक्षी वर्ग, रत्न-पदार्थों के वर्ग, आकाश-वर्ग (अंतरिक्ष की सीमाओं से परे के लोकों स्वर्ग-पाताल आदि) से कवि-समय की अर्थभूमि संबद्ध है और काव्य में प्रसंगानुकूल इनका उपयोग होता रहा है । अलग-अलग अभिव्यक्तियों के लिए उनके अनुरूप कवि-प्रसिद्धियों का सहारा लिया गया है । उदाहरण के लिए, चक्रवाक, चकोर, चातक, कोयल की कूक आदि श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्ष से संबद्ध रहे हैं और हंस नीर-क्षीर-विवेक या आत्मा के अर्थ से । इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त वसंत में मालती का न खिलना, चंदन के वृक्ष में पुष्प या फल का न होना, अशोक में फल न आना आदि वस्तु-जगत में सत्य न होने पर भी कवियों के काव्य-व्यापार में सच रहे हैं। अंधकार को सूचीभेद्य बताना, रात में चक्रवाक जोड़ों का अलग हो जाना, चकोर का चांदनी पीना और अंगार खाना, कोयल का केवल वसंत में कूकना, मोर का केवल वर्षा में ही नाचना भी कवि-प्रसिद्धियां हैं। इनके अलावा यश और हंसी का सफेद होना, अपयश और पाप का काला होना, क्रोध और मद का लाल होना आदि; कामदेव का बाण फूलों का होना, उसकी ध्वजा में मकर और मत्स्य का होना—जैसी अनेकानेक कवि-प्रसिद्धियां हैं। इनमें से कुछ आज भी हमारे भौतिक जगत में सत्य के निकट हैं और कुछ अलौकिक जगत की कल्पनाएं हैं।

हंस के विषय में एक लोक प्रसिद्ध उक्ति है— कै हंसा मोती चुगे, कै भूखन मरि जाएं। कवि-प्रसिद्धि है कि हंस मोती चुगता है। इसके अतिरिक्त हंस में नीर को क्षीर से पृथक कर देने की क्षमता है। वास्तव में हंस मोती ही चुगता है और नीर से क्षीर को पृथक कर देता है— ऐसा पक्षी-विशेषज्ञ नहीं मानते। हंस के मोती चुगने से संबंधित इस प्रसिद्धि के मूल में उसकी जल के भीतर से भोजन के सार को ग्रहण करने की प्रवृत्ति है। हंस उथले जल में अपनी चोंच डालता है और मिट्टी, कीचड़ में से अपना ग्रहण करने योग्य भोजन निकाल लेता है। हंस की इसी सार-ग्राह्यता के कारण तुलसी ने संतों के विषय में कहा है—

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकारि

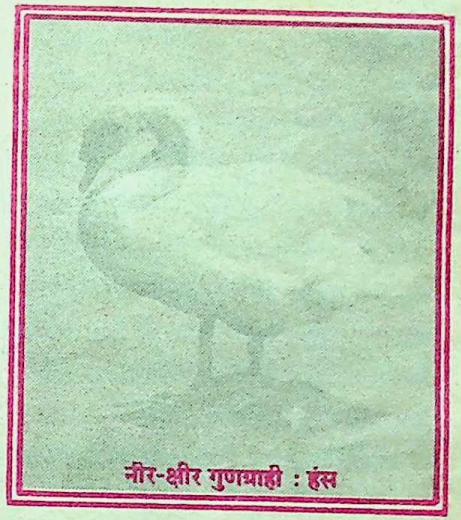

नीर-क्षीर गुणग्राही : हंस

ऋग्वेद में आकाश में विचरण करते सूर्य की उपमा सरोवर में तैरते हंस से दी गयी है। सूर्य गंदे पानी में से साफ पानी सोख लेता है और मिट्टी छोड़ देता है। संभवतः ऋग्वेद की इस उपमा को ही आधार बनाकर इस कवि-प्रसिद्धि की उद्भावना की गयी है, जिसमें हंस को नीर और क्षीर में विवेक करनेवाला मान लिया गया है।

प्रेम के प्रतीक

चक्रवाक (चकवा-चकवी) संबंधी कवि-प्रसिद्धि पर विचार करें, तो राम-कथा के संबंध में एक पौराणिक आख्यान महत्त्वपूर्ण हो जाता है। सीता के वियोग में राम वन में विलाप करते हुए घूम रहे थे। राम की ऐसी स्थिति पर एक चक्रवाक-युगल उनका उपहास करता है। इस पर राम क्रुद्ध होकर उन्हें शाप देते हैं कि 'जाओ, रात्रि में तुम सदा वियोग की स्थिति में रहोगे।' कवि-प्रसिद्धि के अनुसार चकवा-चकवी रात्रि के समय नदी, जलाशयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि के भिन्न तटों पर (एक ही तट पर नहीं) वियोगी रूप में रहते हैं और वियोग दुःख से कातर एक-दूसरे को पुकारते रहते हैं। इन आदर्श प्रेमी युगल के विषय में पक्षी-शास्त्रियों का मत है कि रात्रि के समय भोजन की खोज में ये पंछी एक-दूसरे से अलग होते हैं। इनके बारे में ध्यान देने योग्य एक विशेष बात यह है कि जहां अन्य पक्षी झुंडों में रहते हैं, वहां चक्रवाक-युगल सदा जोड़े से ही विचरण करते हैं और उनकी इसी विशेषता ने शायद, इन्हें अनन्य प्रेम का प्रतीक बना दिया है।

अथर्ववेद (१४.२.६४) में दंपत्ति की उपमा चक्रवाक से दी गयी है। चकवा-चकवी के इस रात्रि वियोग संबंधी कवि-प्रसिद्धि को हिंदी के अनेक कवियों ने ग्रहण किया है और बहुत मार्मिक अभिव्यंजनाएं की हैं। कबीर की व्याकुल आत्मा (चकवी) माया रात्रि रूप संसार को त्यागकर उस परमसत्ता के दिव्य लोक की ओर जाने की आकांक्षा करती है, जहां रात ही नहीं होती, इसलिए बिछुड़ने का दर्द भी नहीं सहना पड़ता—

सांझ भये दिन बीतये, चकवी दीनी रोय
चल चकवा वा देस को, रैन कबहुं नहि होय

तुलसी के मानस में भी अयोध्यावासी राम को देखने के लिए उसी तरह व्याकुल होते हैं जैसे, चक्रवाक-युगल सूर्य को देखने के लिए।

चकोर और अंगार

चकोर से संबंधित कवि-प्रसिद्धि के अनुसार चकोर चंद्रिका का पान करता है और अंगार चुगता है। पक्षी-विज्ञानियों का मानना है कि दिन की अपेक्षा रात में चकोर अधिक मुखर हो उठता है और खुले आकाश के नीचे आ जाता है। संभवतः इसीलिए रात को उसके मुखर को चंद्रमा से जोड़ लिया गया है। चकोर के अंगार चुगने के विषय में भी कहा जाता है कि वह अंगारों को देखकर उसकी ओर लपकता अवश्य है, किंतु अंगारों के ताप को न सह पाने के कारण पीछे हट जाता है। रोचक बात यह है कि चंद्रिका पान और अंगार चुगना दो नितांत विरोधी प्रवृत्तियां हैं। शीतलता और उष्मा में कोई मेल नहीं है किंतु, काव्य को मार्मिक बनाने के लिए कवियों ने इन दो परस्पर विरोधी कवि-प्रसिद्धि का अपने काव्य में प्रसंगानुकूल भरपूर उपयोग किया है। एक बात और है कि मुख की उपमा चंद्रमा से दी जाती है और प्रिय के मुख चंद्र की ओर टकटकी लगाकर देखनेवाले नेत्रों को चकोर कहा जाता है। तुलसीदास ने रामकथा रूप-चंद्रिका में अनुरक्त संतों को चकोर की भांति कहा है—

राम कथा ससि किरन समाना
संत चकोर करहिं जेहि पाना

चकोर का अनन्य प्रेमी स्वभाव है। वह या तो चंद्र-मयूख ही चुगता है या फिर अंगार ही चुगता है।

इन कवि-प्रसिद्धियों के पीछे संभव है यही सत्य रहा हो कि दिनभर तप्त धूप में रहना उसके लिए अंगार चुगने के समान हो और रात्रि में चंद्रमा की शीतलता उसे शीतल कर देती हो। प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र अवस्थी ने चकोर के संबंध में एक नयी जानकारी दी है। उनके अनुसार चकोर जब अपना मुंह खोलता है तो वह एकदम अंगार समान लाल दिखायी देता है, जिसे दूर से देखने पर लगता है कि इसने अंगारा उठा रखा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चातक और पपीहा

चातक अथवा पपीहा मेघों और वर्षा से जुड़ा पक्षी है। कबूतर के आकार के इस पक्षी के लिए कवि-परंपरा में यह बात प्रचलित है कि वर्षा के जल से ही इसकी प्यास बुझती है और वह भी स्वाति नक्षत्र में बरसनेवाले जल से। अक्तूबर-नवंबर में यह पक्षी हिमालय पर चला जाता है और जून में लौट आता है। संभवतः जून अथवा जून के बाद इसके दिखायी देने के कारण इसे वर्षा और मेघों से संबद्ध कर दिया गया है। जिस प्रकार हंस की प्रशंसा उसके विवेक के कारण होती है, उसी प्रकार चातक की उसकी टेक (स्वाति-नक्षत्र की वर्षा-बूंद) के कारण होती है। तुलसीदास ने मेघ की आसक्ति में बंधे चातक का वर्णन बहुत किया है। उन्होंने अपनी 'चातक चौंतीसी दोहावली' के चौंतीस दोहों में अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति की है। उनका अति प्रसिद्ध एक दोहा है—

एक भरोसो, एक बल, एक आस बिसवास
एक राम-घनस्याम हित, चातक तुलसीदास

कोयल की कूक

कोयल के विषय में कवि-प्रसिद्धि है कि वह वसंत में ही कूकता है। अपने चारों तरफ देखें तो ज्ञात होगा कि कोयल जेठ और वैशाख में बहुत कूकता है। संभव है वसंत में कोयल के कूकने की कवि-प्रसिद्धि के पीछे यह सत्य हो कि शरदकाल में लुप्त-स्वर हो जानेवाला यह पक्षी आम के पुष्पित होने पर या उसमें बौर आ जाने पर हर्षोल्लास में भरा कूकने लगता है। शरद में बिलकुल मौन हो गया पक्षी, जब पहली बार बोलता है, तब लगता है यह तो वसंत में ही बोलता है। देखने में कौवे-जैसा

विरह उद्दीपक : कोयल

बदसूरत यह पक्षी अपने स्वर की मिठास के कारण प्रसिद्ध है। मधुरकंठवाली स्त्री को कोकिला-कंठी कहा जाता है, जो अनुचित है क्योंकि वह नर कोयल का ही स्वर होता है, जो हमें झंकृत करता है। नर कोयल के इस स्वर-माधुर्य को लक्षित कर ही सृष्टि के समस्त सौंदर्य को नर में ही समाहित मान लिया गया है। कोयल की कूक (हूक) हमारे कवियों के विरह वर्णन में खूब गूंजी है। प्रकृति में उद्दीपन रूप में कोयल के स्वर का वर्णन काव्यों में पर्याप्त रूप से हुआ है।

हमारे हिंदी साहित्य में पक्षियों से संबंधित कवि-प्रसिद्धियां सर्वाधिक हैं। युद्धों के वर्णन, सौंदर्य वर्णन, श्रृंगार वर्णन उसमें भी संयोग और वियोग दोनों ही प्रकार के वर्णनों में कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए इन कवि-प्रसिद्धियों का सहारा लिया है।

—५/१३ रूपनगर,
दिल्ली-११०००७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींद बहुत आती है

करण भूषण, कोर्ट पूर्णिया,बिहार :

सायंकाल से ही आंखों में नींद छाने लगती है, पढ़ाई नहीं कर पाता हूं ।

पढ़ाई के बोझ से डरना मानसिक चिंता के कारण है । चिंता को दूर करने के लिए मनुष्य के पास दो ही तरीके होते हैं या तो समस्या से लड़कर समस्या का सामना किया जाए, या फिर उससे भागा जाए ।

● डॉ. सतीश मलिक

सायंकाल में आपकी आंखों में नींद का प्रारंभ हो जाना वास्तव में आपका समस्या से भागना है । आपको चाहिए कि इस समस्या को आप बीमारी न समझें और धीरे-धीरे पढ़ाई की ओर अपना मन लगाएं ।

पैरों में दर्द

ज्ञान चंद आर्य, लालगंज, रायबरेली :

भोजन करने के आधा घंटे बाद मेरे पैर बहुत अधिक दर्द करते हैं । शरीर में सुस्ती छा जाती है । करीब एक घंटे बाद अपने आप ही आराम आ जाता है ।

भोजन करने के पश्चात शरीर का सारा खून पेट तथा आंखों में पहुंच जाता है, जिससे पेट में पाचन-क्रिया आरंभ हो जाती है, जिसकी वजह से शरीर में सुस्ती महसूस होने लगती है । पैरों में दर्द कुछ पौष्टिक पदार्थों की कमी के कारण भी हो सकता है । आशा है आप शराब आदि नशीले पदार्थों से अपने आपको परे रखते होंगे । क्योंकि उनको लेने से भी ऐसे लक्षण संभव हो सकते हैं । वैसे आप किसी चिकित्सक से इस विषय में बात कर सकते हैं ।

पढ़ते ही सरदर्द

विजय कुमार सहारनपुर, यू.पी. :

मुझे साहित्यिक व ऐतिहासिक पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक है मगर थोड़ी देर ही पढ़ने से आंखों व सिर में दर्द शुरू हो जाता है ।

थोड़ी देर पढ़ने के पश्चात सर दर्द व आंख में दर्द शुरू होने का कारण आंखों की कमजोरी हो सकता है । इसलिए पहले आंखों की जांच कराएं तथा चश्मे की आवश्यकता हो तो उसको पहनना शुरू कर दें । यदि तनाव के कारण सर दर्द है तो आप हलके-फुलके विषयोंवाली पत्र-पत्रिकाएं और पुस्तकें पढ़ें । दुरूह और संश्लिष्ट विषयोंवाली पाठ्य-सामग्री भी आप पढ़ते रह सकते हैं, लेकिन दर्द और तनाव होते ही उसे कुछ समय तक बंद कर दें, और हलका साहित्य पढ़ने लग जाएं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावनात्मक कमजोरी

सुलेखा जोशी, बदरपुर :

२९ वर्ष की अध्यापिका हूं । विवाह के डेढ़ वर्ष के बाद से स्मरण-शक्ति कमजोर हो गयी है । भावात्मक रूप से कमजोर हो गयी हूं ।

वास्तव में आपकी समस्या स्मरण-शक्ति कम होने की नहीं है, परंतु एकाग्रचित्त न होने की है । जब मन इधर-उधर विचलित रहता है तथा मन में उलूल-जुलूल खयाल आते हैं, तब आपको प्रतीत होता है कि स्मरण-शक्ति कमजोर हो गयी है । स्त्रियों को इस आयु में 'डिप्रैशन'— जैसा मनोरोग अकसर हो जाता है । आप इसका इलाज किसी अच्छे मनोचिकित्सक से कराएं अथवा आप मुझसे भी संपर्क कर सकती हैं ।

अप्राकृतिक मैथुन

जगदीप सरकार, बोकारो, बिहार :

बार-बार हस्तमैथुन की आदत से ग्रस्त हूं, पिछले कुछ महीनों से मेरे गुप्तांग में न तो उत्तेजना ही हो रही है और न ही ....

आप इस समय यौन समस्या से ग्रस्त हैं । आपके मस्तिष्क में डर के कारण बहुत घबराहट है । इसी भय और तनाव की मनोस्थिति के कारण ही आपकी जननेंद्रिय शिथिल हो गयी है । यदि आप अपने मन को किन्हीं ओर और मनोरंजन के साधनों में लगाएंगे तो आप फिर से ठीक हो जाएंगे । लेकिन कुछ समय तक आपको यह व्यवहार (हस्तमैथुन) छोड़ना पड़ेगा । अपने मस्तिष्क में से कामुक विचारों को निकालकर अच्छे और शुभ विचार लाएं और अश्लील तथा कामुक विषयों से संबंधित न तो फिल्में देखें और न ही ऐसा साहित्य पढ़ें । अपनी रुचि को आध्यात्मिक विषयों की ओर लगाएं ।

ममतामयी गोद की चाह

सुनील कुमार पचड़ा, लक्ष्मीपुर शिवहर, बिहार :

मैं काले बादलों को देखकर भय और अवसाद से घिर जाता हूं और ऐसे में मुझे किसी ममतामयी युवती की गोद में जाने की इच्छा होती है । क्यों ?

आपके हमें ६-७ पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनको पढ़ने से स्पष्ट होता है कि आप मानसिक रोग 'स्कीजोफ्रेनिया' से ग्रस्त हैं । आप किसी अच्छे मनोचिकित्सक से अपना तुरंत इलाज कराएं , आप मुझसे भी संपर्क कर सकते हैं ।

पागल न हो जाऊं

क.ख.ग., धनबाद :

मेरा मन ठीक नहीं रहता, घर का वातावरण भी ठीक नहीं है, मेरा हर समय गंदगी की ओर ही ध्यान रहता है । मुझे अपने चारों ओर मल, पीप-कीचड़, कूड़ा पड़ा दिखायी देता है । मेरे मां-बाप में लड़ाई होती रहती है । मेरा हाल ही में अपैंडेसाइटिस का ऑपरेशन हुआ है, जिससे मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता है । डर है कि कहीं मैं पागल न हो जाऊं या फिर आत्महत्या न कर बैठूं !

आप हर समय सोचती रहती हैं वह भी ऐसी बातें जो 'गंदगी' से संबंधित हैं । ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें सोचनेवाले को मनोरोगी कहा जाता है इस रोग को 'अब्सैश्रल डिसआर्डर' कहते हैं । और इसका इलाज 'बिहेवियर थैरेपी' द्वारा संभव है । आप पागल नहीं हैं ।

मन में घबराहट

मुकेश पाणिनी, बरेली :

मैं हमेशा हीन भावना से ग्रस्त रहता हूं । विशेषकर मुझे लड़कियों से बात करते हुए बहुत डर लगता है । मन में घबराहट पैदा होने लगती है । क्या मैं मानसिक रोगी हूं ।

आपके अंदर आत्म विश्वास की कमी है, आप दूसरे को अपने से श्रेष्ठ समझते हैं, इसलिए अपने अंदर कमी महसूस करने लग जाते हैं । अपने को दूसरों से श्रेष्ठ नहीं तो कम से कम उनके बराबर तो समझें । आप किसी मनोरोग चिकित्सक से 'बिहेवियर थैरेपी' द्वारा अपना इलाज करवा सकते हैं ।

गलत संगत का प्रभाव

श्रीवास्तव, बिरसिंहपुर पाली, शहडोल :

दस वर्ष पहले गलत संगति में रहने से मेरी गलत आदत पड़ गयी । अब मेरी शादी की बात चल रही है, लेकिन मुझे भय है कि उस लड़की का जीवन कहीं बर्बाद न हो जाए ।

आपको यौन-विषयक कुछ भ्रांतियां हैं । आप यौन-शिक्षा से संबंधित कुछ पुस्तकें पढ़ें । आप चाहें तो मुझे व्यक्तिगत रूप से भी मिल सकते हैं । हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आप विवाह के योग्य हैं ।

जुबान लड़खड़ाती है

रश्मि, राजेन्द्रनगर, पटना :

मैं ठीक तरह बोल नहीं पाती । मेरी जुबान लड़खड़ा जाती है, इसलिए मैं किसी से भी मिलती-जुलती नहीं हूं ।और लोगों में हंसी-मजाक का पात्र बनती हूं ।

आपकी समस्या वास्तव में बोलने की नहीं है, केवल समाज से संबंधित है । आप अपनों से बड़ों के सामने और अपनी हम उमर के लड़कों के सामने ही सकपका जाती हैं, यदि आप अपने आपको हर समय सोचते रहने की बजाय धीरे-धीरे सामाजिक होने की और लगाएं और अपने आप में आत्मविश्वास पैदा करें, तो आप अपनी समस्या पर काबू पा सकती हैं ।

मोटापा घटाइए

'न्यू बैलून—९२' नामक एक ऐसी तकनीक विकसित की गयी है, जो बगैर खुराक कम किये आश्चर्यजनक ढंग से वजन कम करती है । लंदन के एक अस्पताल में अधिक वजनवाले लगभग पांच सौ रोगियों पर प्रयोग किये गये । प्रयोग में पाया गया कि चार से पांच माह में उनका वजन सात से बारह किलोग्राम कम हो गया, जबकि वह भरपेट भोजन भी खाते रहे । इस संबंध में संपर्क के लिए कैंब्रिज विश्वविद्यालय के जनरल सर्जन इयान ब्रायन को लिखा जा सकता है ।

—स्रोत फीचर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंडहर हो रहे हैं सास-बहू के मंदिर

● कु. राजपाल सिंह

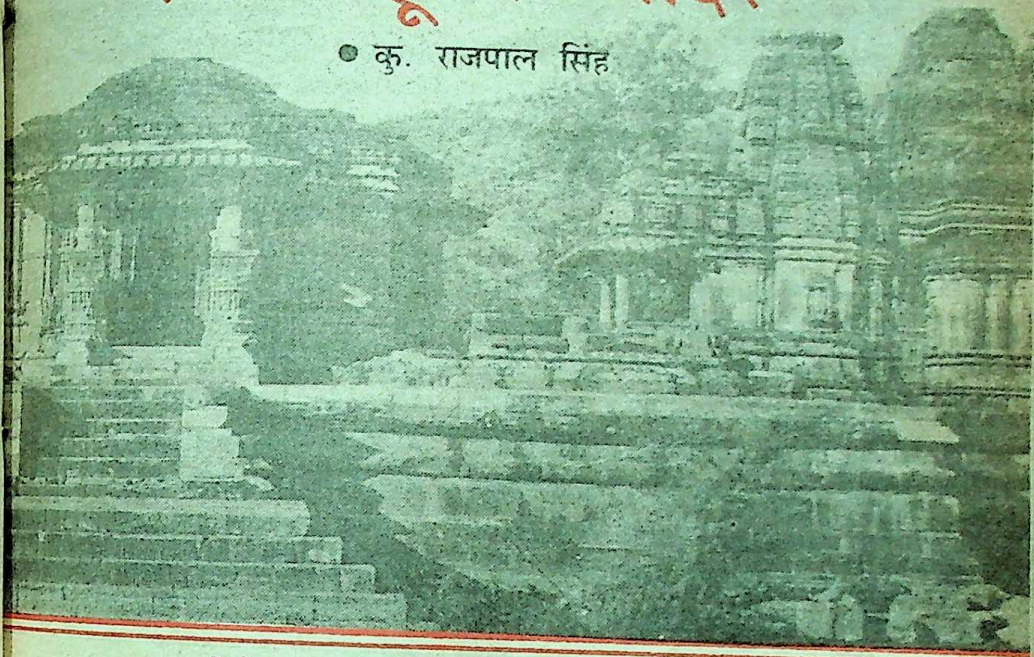

बायीं ओर सास, दायीं ओर बहू और बीच में ब्रह्माजी का मंदिर

झीलों की नगरी उदयपुर से मात्र अट्ठाइस किलोमीटर की दूरी पर है—जगप्रसिद्ध एकलिंगजी का मंदिर। इस मंदिर से थोड़ा पहले, कच्चे रास्ते पर खड़े हैं वास्तुकला के बेजोड़ नमूने—सास-बहू के मंदिर। इन्हीं मंदिरों के आसपास कभी मेवाड़ राजवंश की स्थापना हुई थी। इनकी पहली राजधानी थी—नागदा। नागदा के वैभव की याद दिलाने में ये सास-बहू के मंदिर आज भी सक्षम हैं। मेवाड़ राज्य के संस्थापक बप्पा रावल ने अपना प्रारंभिक जीवन यहीं नागदा में व्यतीत किया था।

मेवाड़ की यह प्राचीन राजधानी नागदा तो आज ध्वस्त हो चुकी है, लेकिन किसी तरह से यहां सास-बहू मंदिर बचे रह गये हैं। इन मंदिरों और नागदा के ध्वंसावशेष के आधार पर यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि यहां कभी उत्कृष्ट कला का विकास हुआ।

मेवाड़ राज्य अपने जन्म से ही दिल्ली की आंख में चुभता रहा। दिल्ली के तत्कालीन सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश ने तो इस पर आक्रमण कर इसे ध्वस्त कर डाला।

मंदिर सहस्त्रबाहु का

विक्रमी संवत ग्यारहवीं शताब्दी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

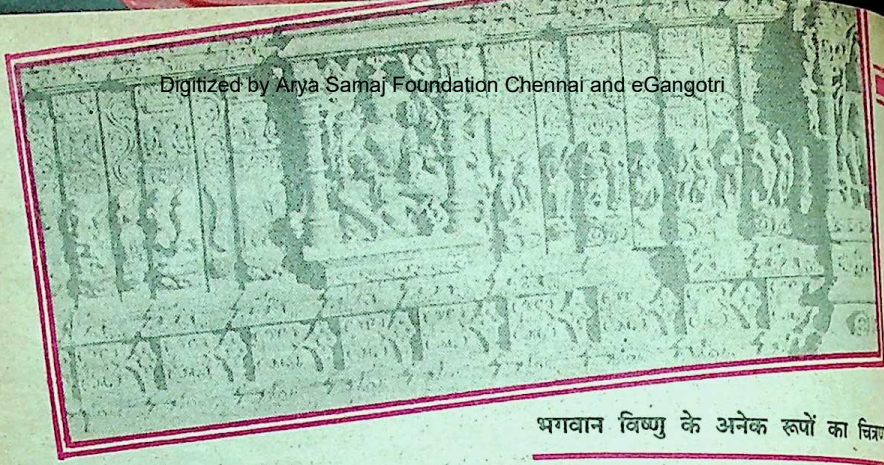

भगवान विष्णु के अनेक रूपों का चित्रण

आसपास बने सास-बहु के इन मंदिरों के बारे में अनुमान है कि मेवाड़ राजघराने की राजमाता ने विष्णु का मंदिर तथा बहु ने शेष नाग के मंदिर का निर्माण कराया । सास-बहू के द्वारा निर्माण कराये जाने से इन मंदिरों को सास-बहू के मंदिर के नाम से पुकारा जाता है । लेकिन, एक अन्य किंवदंती के अनुसार यहां पहले भगवान सहस्त्रबाहु का मंदिर था, जिसका नाम सहस्त्रबाहु से बिगड़कर सास-बहू हो गया । कारण जो भी रहा हो, आज ये मंदिर उस प्राचीन कला-संस्कृति के उत्कृष्ट नमूने हैं, जो कभी यहां फली-फूली थी ।

वास्तुकला के बेजोड़ नमूने ये दोनों मंदिर एक ही परिसर में स्थित हैं । आज दोनों ही मंदिरों के गर्भगृहों में से देव प्रतिमाएं गायब हैं । मंदिर बनानेवाले कलाकारों ने तत्कालीन परंपरा के अनुसार अपनी बारीक छैनी से समसामयिक जीवन व संस्कृति के अमर तत्वों को इन मंदिरों में उकेरा है । दोनों ही मंदिरों के बरामदों, तोरण-द्वारों व मंडपों को शिल्पकला के उत्कृष्ट नमूनों से सजाया है ।

मंदिर की बाहरी दीवारों पर लगी सुर-सुंदरियों की प्रतिमाएं नारी सौंदर्य का सजीव वर्णन करती-सी प्रतीत होती हैं । नर-नारी जीवन-जगत की गतिविधियों में श्रृंगार, नृत्य, क्रीड़ा और प्रेम आदि की अभिव्यक्ति बड़े सुंदर ढंग से अंकित की गयी हैं । मिथुन-युगलों के बीच के प्यार-व्यापार को इतने सुंदर ढंग से दर्शाया गया है कि नर-नारी मूर्तियां शारीरिक सौंदर्य की पराकाष्ठा बन गयी हैं ।

कारीगरी, अद्भुत सूक्ष्म नक्काशी व भव्यता की दृष्टि से इन दोनों मंदिरों की समानता आबू पर्वत के जगप्रसिद्ध देलवाड़ा के मंदिरों व रणकपुर के जैन मंदिर से की जा सकती है । लेकिन प्राचीनता की दृष्टि से सास-बहू के मंदि

बहू के मंदिर के ध्यान मंडप की एक दीवार
मिथुन युगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

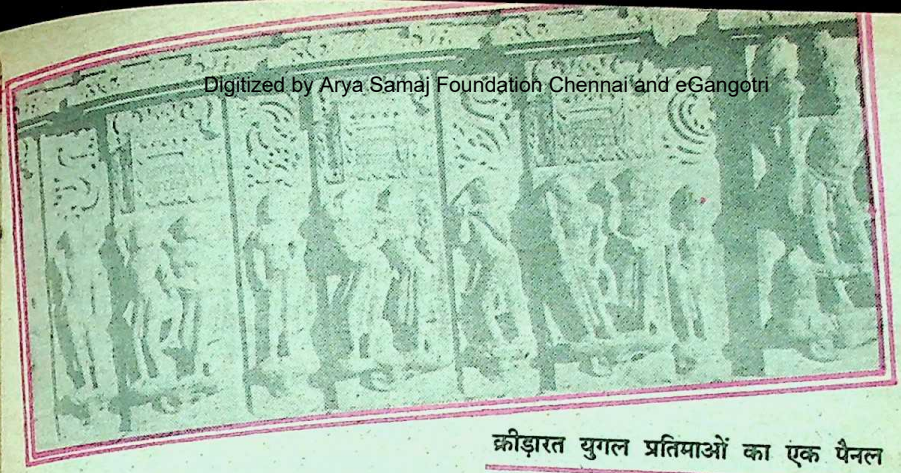

क्रीड़ारत युगल प्रतिमाओं का एक पैनल

इन अन्य मंदिरों से अति प्राचीन हैं ।

सास का मंदिर

सास मंदिर के ध्यान-मंडप की पहली छत स्थापत्य व वास्तुकला का अद्‌भुत उदाहरण है । जिन स्तंभों पर इस मंडप की छत टिकी हुई है, उनमें व छत के घेराव में ऐसा अद्‌भुत संतुलन है कि स्तंभों व छत का आपस में एक-दूसरे से जुड़े होने का अनुमान लगाना कठिन है । मंदिर के प्रवेश-द्वार पर बने छज्जों पर महाभारत की पूरी कथा अंकित है । इन छज्जों से लगे बायें स्तंभ पर शिव-पार्वती की प्रतिमाएं हैं, जो खजुराहो की मिथुन मूर्तियों से होड़ लेती-सी प्रतीत होती हैं । तोरणों का अलंकरण तो देखते ही बनता है ।

मंदिर बहू का

बहू के मंदिर का सभामंडप तो अपने आप में अनूठा है । प्रत्येक स्तंभ पर लगभग चार फुट ऊंची, एक ही पत्थर से निर्मित प्रतिमाएं लगी हुई हैं । ये नारी प्रतिमाएं उत्कृष्ट कलात्मक रूप में नारी सौंदर्य को दर्शाने के लिए उल्लेखनीय हैं । मंदिर के सामने एक ही भारी पत्थर से बना तोरण है, जिसमें तीन द्वार हैं । सास-बहू के दोनों मंदिरों के बीच में ब्रह्माजी का मंदिर है । ब्रह्माजी का मंदिर दोनों से छोटा है, फिर भी वह दोनों से कम नहीं है । इसके गुंबद को देखकर ऐसा लगता है मानो उसे बारीक जाली से ढक दिया गया हो ।

हालांकि, सास-बहू के ये मंदिर अपने समकालीन अन्य मंदिरों की तुलना में कहीं अच्छी दशा में हैं, फिर भी उचित साज-संभाल के अभाव में ये धीरे-धीरे क्षरण का शिकार होने लगे हैं । समय के थपेड़ों ने मंदिर की दीवारों व मूर्तियों पर कालेपन की परछायीं डालना शुरू कर दी है । गर्भगृहों से आराध्य देवों की मूर्तियां गायब हैं । जब आराध्य देवों की मूर्तियां ही गायब हों, तो फिर मंदिर कैसा ? राज्य पुरातत्व विभाग ने यहां एक नीला सूचना-पट्ट लगाकर उन्हें संरक्षित स्मारक घोषित कर अपने फर्ज से भी छुट्टी पा ली है । पर्यटन विभाग द्वारा ऐसे दुर्लभ स्मारकों की खैर-खबर रख पाना तो और भी दूर की बात है । हालात, तो यहां तक बिगड़े हुए हैं कि उदयपुर स्थित राज्य सरकार के पर्यटन अधिकारी पूछने पर भी इन मंदिरों के बारे में किसी भी तरह की कोई जानकारी नहीं दे पाते । इन हालातों में तो ऐसे लगता है कि अब वह दिन दूर नहीं जब कि इन मंदिरों के खंडहर ढूंढ़े न मिलेंगे ।

—साकेत, ५ प्रेमनगर, झोटवाड़ा, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामों में समानता

सुरेंद्र बाबू, अलीगढ़ : मेरे स्वर्गीय पिताजी का नाम उमराव सिंह था और मेरा सुरेंद्र बाबू। हमारे यहां यह आवश्यक नहीं होता कि बेटे का नाम पिता के नाम से समानता लिये हो या मिलता हो। जबकि, पश्चिम बंगाल में, जहां मैं सरकारी कर्मचारी हूं, नामों में समानता अत्यावश्यक है। मेरा जातिनाम पाथरे है। मैं चाहता हूं कि मेरा नाम सुरेंद्र सिंह पाथरे हो जाए। फिर भी मेरा नाम पिता के नाम से मेल नहीं खाएगा। बताएं कि मुझे क्या करना चाहिए ?

पिता-पुत्र के नाम में समानता होना वैधानिक रूप से आवश्यक नहीं है। आपका यह सोचना ठीक नहीं है कि पश्चिम बंगाल में पिता-पुत्र के नाम में समानता होना आवश्यक है। आपकी नियुक्ति के समय या अब सरकार की तरफ से आपको कभी कोई नामों में समानता लाने के लिए निर्देश नहीं मिले। इसलिए चिंता का कोई कारण नहीं दीखता। फिर भी यदि आप अपनी इच्छा से अपना नाम बदलना चाहते हैं, तो उसके लिए आवश्यक कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं।

फर्जी बंटवारा

रुद्रकुमार, केनारचट्टी, गया : सन् १९४३ में पिताजी ने मेरे और मेरे छोटे भाई के नाम एक मकान खरीदा था। सन् ५५ में मैंने आटा पीसने की चक्की लगा ली, जबकि छोटा भाई देहात में खेती-बाड़ी देखता रहा। बाद में मैं खेती-बाड़ी देखने लगा। पिछले साल भाई ने बंटबारे का फर्जी कागज पेश कर नगरपालिका से सिर्फ अपने नाम से रसीद कटवा ली। मैंने इसके खिलाफ नगरपालिका में आपत्ति दर्ज करा दी। नये सर्वे में हम दोनों का नाम चढ़ा हुआ है। आटा चक्की का लाइसेंस नगर पालिका में शुरू से ही मेरे नाम है। बतायें, मैं कानूनन मकान का हिस्सेदार हूं या नहीं ?

मकान आप दोनों के नाम से पिताजी ने खरीदा था। अतः मकान पर आप दोनों भाइयों का स्वामित्व बनता है। आपके भाई ने बंटवारे के जो कागज नगरपालिका में प्रस्तुत किये हैं, वह आपके अनुसार जाली है, तो आपको अपने अधिकार की रक्षा के लिए उसे जाली प्रमाणित करना चाहिए। साथ ही संपत्ति के बंटवारे की भी मांग करनी चाहिए। नगरपालिका में आपत्ति देकर आपने ठीक किया। इससे नगरपालिका दूसरे भाई की मांग पर निर्णय लेने से पहले आपकी आपत्ति पर भी विचार करेगी।

गायब कंपनी का पता

सीताराम चौधरी, पूर्णिया : रजिस्ट्रार ऑव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंपनीज पं. बंगाल से कंपनीज एक्ट-१९५६ के अंतर्गत निबंधित एक कंपनी, जिसका रजिस्टर्ड मुख्यालय कलकत्ता में था, से मेरी पत्नी ने छह वर्षीय जमा अवधि के लिए एक हजार रुपये का सर्टिफिकेट खरीदा । इसकी परिपक्वता पूरी होने के बाद भी पैसा नहीं मिला । क्योंकि, कंपनी अपनी दुकान बढ़ाकर भाग गयी है । रजिस्ट्रार ऑव कंपनीज भी उस कंपनी के बोर्ड ऑव डायरेक्टर का पता नहीं बता रही । कृपया, बताएं कि रजिस्ट्रार ऑव कंपनीज को उस कंपनी के बोर्ड ऑव डायरेक्टर्स का पूरा पता देने के लिए कौन-सी कानूनी कार्यवाही संभव है ?

उस कंपनी के निर्देशकों के नाम व पते प्राप्त करने के लिए आपको रजिस्ट्रार ऑव कंपनीज के कार्यालय को आवेदन करना चाहिए । आवेदन के साथ नियमानुसार प्रतिलिपि-व्यय जमा करना चाहिए ।

ऐसा वकील चाहिए

के.एन. शर्मा, रायबरेली : मैं रेलवे के एस एंड टी डिपार्टमेंट में ग्रेड वन के टेलीफोन एक्सचेंज में टेक्निशियन हूं । पदोन्नति में मेरे साथ सरासर अन्याय किया गया, जिसके विरुद्ध मैंने कैंट, इलाहाबाद में मुकदमा दायर किया । रेलवे ने कोर्ट में अपने जवाब में झूठ बोला । न्यायाधीश ने न तो मेरे वकील की पूरी बात सुनी और रेलवे के अभिलेखों की जांच ही करायी । फैसला मेरे खिलाफ दे दिया । मैंने केस को पुनरीक्षण के लिए दायर कर रखा है । अब मैं आर्थिक रूप से मुकदमा लड़ने में असमर्थ हूं, क्या दिल्ली में कोई ऐसा सज्जन वकील है, जो मेरे केस को

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

निःशुल्क लड़ सकें ?

सरकार ने प्रायः हर शहर में कानूनी सलाह एवं सहायता बोर्ड स्थापित कर रखें हैं । दिल्ली का कानूनी सलाह एवं सहायता बोर्ड पटियाला हाउस (इंडिया गेट के निकट) नयी दिल्ली में स्थित है । आपका वाद यदि दिल्ली में चलाना है और आप मुकदमे का व्यय उठाने में स्वयं को असमर्थ समझते हैं, तो उक्त बोर्ड में आवेदन करके आवश्यक सहयोग की मांग कर सकते हैं । बोर्ड के पास अनेक वकीलों की सूची है, जिसमें से किसी भी वकील को वह आपके मुकदमे की पैरवी के लिए नियुक्त कर सकता है । उस वकील का खर्चा बोर्ड स्वयं उठाएगा । दिल्ली उच्च न्यायालय के मान्य मुख्य न्यायाधीश दिल्ली के इस बोर्ड अध्यक्ष हैं ।

सरकारी नौकर हूं

महेंद्र यादव, आजमगढ़ : मैं एक सरकारी कर्मचारी हूं और राष्ट्रीय स्तर पर एक सामाजिक संगठन की स्थापना व गठन करना चाहता हूं । इस संगठन द्वारा छात्रों व सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु स्कूलों में सभाएं तथा अधिकारियों व नेताओं के समक्ष धरना व अनशन करना चाहता हूं । क्या यह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी नौकरी के साथ संभव है ? संगठन का पंजीकरण भी क्या आवश्यक है ?

किसी भी संस्था या संगठन के बनाने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसका पंजीकरण भी कराया जाए । पंजीकरण कराये बगैर भी संस्था चलायी जा सकती है । आप किस स्तर की संस्था बना सकते हैं, यह तो आपकी अपनी क्षमता पर निर्भर है ।

सरकारी नौकरी में रहते हुए आप सरकार या सरकार के विभागों के विरुद्ध आवाज नहीं उठा सकते । किसी भी सरकारी अधिकारी के घर या कार्यालय पर अनशन या धरना देना भी सेवा-नियमों का सीधा उल्लंघन है ।

बेघर हो जाऊंगा

संजय कुमार आर्य, देहरादून : हम तीनों भाई सरकारी नौकर हैं । बड़े भाई को सरकारी मकान मिला हुआ है, मंझले के पास अपना मकान है । मैं अपनी मां के साथ पैतृक मकान में रहता हूं, जो मां के नाम है । दोनों भाई कर्ज में डूबे हुए हैं अतः वह मकान के बंटवारे की बात करते रहते हैं । क्या मां मकान को बेचकर तीनों भाइयों में बराबर-बराबर बांट सकती है ? इसमें क्या शादीशुदा बहनों का भी हिस्सा होगा ? अगर मां मकान को बेच देगी, तो मैं बेघर हो जाऊंगा— मैं क्या करूं ?

मकान आपकी मां के नाम है । उनके जीवनकाल में कोई भी व्यक्ति मकान में बंटवारे की मांग नहीं कर सकता । यदि आपकी मां चाहें तो मकान बेचकर उससे प्राप्त राशि का बंटवारा कर सकती हैं । आपके भाई कर्ज में डूबे हैं या उन्हें रुपये की आवश्यकता है को बंटवारा की मांग के लिए आधार नहीं बनाया जा सकता । यदि संभव हो तो आप अपनी मां को समझाएं, जिससे वह कोई भी निर्णय लेने से पूर्व आपकी समस्या को भी ध्यान में रख सकें ।

मेरा हिस्सा

राकेश श्रीवास्तव, दबोह, भिंड : भिंड में मेरा एक मकान है । मेरे हिस्से के मकान व चल संपत्ति का बंटवारा नहीं हुआ । मेरा बड़ा भाई कुछ भी देने को तैयार नहीं है । मैंने नगर पालिका में भी नामांतरण का प्रार्थना-पत्र दिया था, पर कोई जवाब नहीं आया । भाई से कहा तो लड़ने-झगड़ने पर आमादा हो गया । क्या मेरा हिस्सा मुझे मिल सकता है ? मेरे दो बच्चे हैं, जबकि भाई के कोई संतान नहीं है ।

बड़े भाई के कोई संतान नहीं है और आपके दो बच्चे हैं— इससे आप दोनों के अधिकारों पर कोई अंतर नहीं पड़ता । मां-बाप द्वारा छोड़ी गयी संपत्ति में आप दोनों का अधिकार है । आपके भाई द्वारा लड़ाई-झगड़े का प्रयास अनुचित है ।

आप अपने मकान के बंटवारे के लिए न्यायालय की शरण में जा सकते हैं । चल संपत्ति में से भी आप अपना हिस्सा मांग सकते हैं । आपस में बंटवारा नहीं होने के कारण, चल व अचल संपत्ति के बंटवारे के लिए दीवानी न्यायालय में दावा करना ही मात्र विकल्प है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. **महाभारत** में किस योद्धा का वर्णन है कि उसने कई द्वीपों पर विजय प्राप्त की, जिनमें ताम्र (श्रीलंका) भी शामिल था ?

२. **क. ओजोन** परत क्या है ? **ख.** इसका क्या महत्व है ?

३. **क. भारत** में प्रति हेक्टेयर कितना खाद्यान्न का उत्पादन होता है ? विश्व के औसत उत्पादन से तुलना कीजिए ।

ख. खाद्यान्न के आयात-निर्यात की अब क्या स्थिति है ? क्या देश में खाद्यान्न का सुरक्षित भंडार है ?

४. **भारत** में महिला पायलटों ने हेलीकॉप्टर की पहली उड़ान कब की थी ?

५. **इस** वर्ष २७वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में स्वर्ण मयूर तथा रजत मयूर पुरस्कार किसे मिले हैं ? फिल्मों का नाम बताइए ?

६. **भारतीय** फिल्मों में 'स्टंट क्वीन' नाम से कौन-सी अभिनेत्री प्रसिद्ध है ? उसकी कुछ प्रसिद्ध फिल्मों के नाम बताइये ?

७. **क. दुनिया** में विकसित देशों में एशिया के किस देश का नाम और जुड़ गया ? उसकी औसत प्रति व्यक्ति वार्षिक आय कितनी है ?

ख. अब विकसित देशों की संख्या कितनी हो गयी है ?

८. **निम्नलिखित** पुरस्कार किसे मिले हैं ?—

क. दूसरा इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय न्याय व सद्भावना पुर., **ख.** १९९५ का ज्ञानपीठ पुर., **ग.** १९९५ का साहित्य अकादमी (हिंदी) पुर. ।

९. **सातवें** सैफ खेलों में हाकी प्रतियोगिता में कौन जीता ? किसको हराकर ?

१०. **इस** वर्ष आस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस चैंपियनशिप में **(क)** पुरुष एकल और **(ख)** महिला एकल के ग्रैंड स्लैम खिताब किसने जीते हैं ? किसको हराकर ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

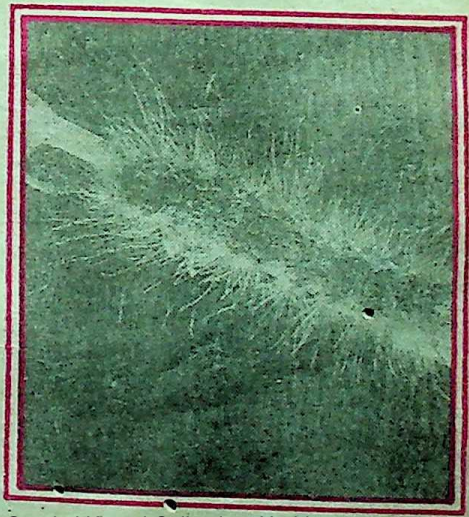

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिपुरा की लोककथाओं में अद्भुत प्रेम-प्रसंग

● हर्षमोहन कृष्णात्रेय

भारतीय लोककथाएं अधिकतर दैविक कल्पनाओं पर आधारित हैं। पारंपरिक लोककथाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से चली आ रही हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी प्रांत त्रिपुरा में प्रचलित ऐसी अनेक लोककथाएं हैं जो त्रिपुरा के सामाजिक विकास की कहानी कहने के साथ-साथ भारत की सांस्कृतिक एकता का बखूबी बखान करती हैं। ये कथाएं अन्य भारतीय लोककथाओं की तरह हमारे समाज की सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताओं का दर्पण हैं।

मूछलेनी केरें कांथमा (अजगर की कहानी)

त्रिपुरा के पहाड़ी अंचल में बसे एक गांव में झूम खेती पर आश्रित अचाइ (पुरोहित) अपनी दो पुत्रियों सहित रहता था। पुत्रियां बाल्यावस्था में ही अपनी मां को खो चुकी थीं। पुरोहित ने दूसरा विवाह नहीं किया। पुत्रियां बड़ी हो गयी थीं और वक्षबंधनी का प्रयोग करने लगी थीं।

अचाइ के घर की हालत अच्छी नहीं थी। गरीबी के कारण वह अपने ऊंची मचान पर बने घर की मरम्मत नहीं करवा पा रहा था। वर्षाकाल उनके लिए अत्यंत कष्टदायक होता था। बरसात के दिनों में अक्सर उनके घर में पानी भर जाया करता था। खाने-पीने की चीजें भीगकर प्रायः खराब हो जाया करती थीं।

झूम के खेत से थककर भूखी बहनें जब एक दिन घर लौटीं तो घर का समस्त खाद्य-पदार्थ पानी से खराब हो चुका था। कल पर साथ ले गये थैले से मायदूल (भात के गोले बनाकर आग में सेककर तैयार किया एक स्वादिष्ट त्रिपुरी व्यंजन) भी नहीं बचा था जिसे खाकर वह कुछ भूख शांत कर सकतीं। वो बहुत दुःखी हुईं। बड़ी बहन तो दुःख में रो ही पड़ी। उसने रोते-रोते प्रण किया कि जो कोई भी उनके घर की मरम्मत कर उसे रहने योग्य बना देगा उसी से वह विवाह करेगी।

अगले दिन आश्चर्यजनक रूप से उनका घर ठीक और सुंदर बन गया। घर की कायापलट ही नहीं हुई बल्कि अनेक आवश्यक वस्तुएं भी घर में मौजूद थीं। अचाइ और दोनों बेटियों की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। अचाइ ने इसका कारण वनदेवी को मानते हुए उसे धन्यवाद दिया और पूर्ण उमंग एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लाससहित काम पर निकल गया । सहसा बड़ी बेटी के दिल में उसके प्रति अनुराग उमड़ आया जिसने उनके घर की कायापलट कर उनकी झोली को खुशियों से भर दिया था ।

जैसे ही दोनों बहनें घर से बाहर आयीं उनकी नजर उनके घर की ऊंची मचान से उतरते हुए एक विशालकाय अजगर पर पड़ी । दोनों के पांव तले से जमीन खिसक गयी । दोनों ने यही मान लिया कि उनके घर में हुए परिवर्तन का कारण यही अजगर है ।

प्रतिज्ञावश बड़ी बहन अजगर को ही पति के रूप में स्वीकार करने को बाध्य थी । स्वतः ही उसके कोमल मन में अजगर के लिए जगह बन गयी और उसने मन-ही-मन उसे अपना स्वामी मान लिया । खाने पर बैठते ही उसने अपनी छोटी बहन से अजगर को पुकारने का अनुरोध किया । वह अपनी दीदी को कुछ समझा न सकी और बहनोई को पुकारने लगी—

'कुमुइ, कुमुइ, माइचानानि फाइदिदो ।' अर्थात 'जीजाजी, जीजाजी, खाना खाने आइए' । आवाज सुन अजगर वहां पहुंच गया और दीदी उसे प्रेमपूर्वक अपने हिस्से में से खाना खिलाने लगी । खाना खा अजगर लौट गया ।

एक दिन जब अचाइ को अपनी बड़ी बेटी के अजगर के साथ भावनात्मक संबंधों की जानकारी छोटी बेटी से प्राप्त हुई तो वह भड़क उठा । बड़ी की अनुपस्थिति में उसने छोटी से अजगर को पुकारने के लिए कहा ।

वह पुकार उठी—'कुमुइ, कुमुइ, माइचानानि फाइदिदो ।' परिचित आवाज सुनते ही अजगर वहां पहुंच गया । पेड़ की आड़ में खड़े अचाइ ने तेज हथियार से अजगर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और उन्हें पकाने के लिए छोटी बेटी से कह खेत पर चला गया ।

सहसा बड़ी का मन भारी हो गया । उसके मन में अजीब-सी उथल-पुथल होने लगी ।

इतने कम समय में उसका अजगर के प्रति प्रेम भाव कितना गहरा हो गया था, इसका अहसास उसे वियोग में हुआ ।

रोती-कलपती वह एक झरने के पानी में उतरती चली गयी । किनारे पर खड़ी छोटी बहन उसे बुलाती रही । थोड़ी ही देर में वह पूर्णतया जलमग्न हो गयी । छोटी 'दीदी', 'दीदी' चिल्लाती रह गयी ।

बड़ी बहन डूबते ही एक विशाल राजभवन में पहुंच गयी । उसकी खुशी और आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा जब उसने अपने स्वामी को राजभवन के द्वार पर उसका स्वागत करते पाया । और उसके बाद वह वहीं आनंदपूर्वक जीवन गुजारने लगी ।

चेथवांग फांगनी कांथमा (छतिवन वृक्ष की कहानी)

प्रत्येक दिन की तरह उस दिन भी भाई एवं बहन दोनों मिलकर झूम के खेत पर काम करने जा रहे थे । उन्हें अपने खेत तक पहुंचने के लिए एक पहाड़ी नदी पार करके जाना पड़ता था । वर्षा की वजह से नदी लबालब भर आयी थी । पुल रहित नदी को जल में उतरकर ही पार किया जाता था । छोटी बहन ने जब देखा कि भाई जल में उतरने को तैयार नहीं है तो जल की गहराई समझने के लिए उसने ही पहल की । अपने कपड़ों को ऊंचा कर वह पानी में उतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी पसंद जानते ही दादी मां धक्क-से रह गयी । उसका सिर चकराने लगा । मां-बाप भी यह सुनकर घबरा उठे । वचनबद्ध दादी इसी विवाह को स्वीकार करने को बाध्य थी । उसने बिना अपनी पोती को बताये विवाह की तैयारी शुरू कर दी ।

गयी ।

बहन के भीगे यौवन और दोनों गोल नितंबों को देख न जाने क्यों भाई के अपरिपक्व कोमल मस्तिष्क पर वासना के अंकुर फूट पड़े । वह चंचल और अस्थिर हो उठा । वह वहीं से घर लौट आया । विवेक और वासना की कशमकश में वह छटपटाता रहा ।

चिंतित मां-बाप जब अपने बेटे की चिंता का कारण न जान पाये तो अनुभवी दादी को यह समझते देर न लगी कि निश्चित रूप से उसका पोता किसी को दिल दे बैठा है ।

दादी ने बारी-बारी से उस गांव की लड़कियों का नाम लेना प्रारंभ कर दिया । वह हर नाम पर इनकार में सिर हिला देता था । सभी नाम समाप्त हो जाने पर दादी बोली, "तुम्हारी बहन को छोड़कर मैं गांव की सभी लड़कियों के नाम गिनवा चुकी हूं ।" बहन का नाम दादी की जबान से सुनते ही उसने हामी भर दी ।

वचनबद्ध दादी इसी विवाह को स्वीकार करने को बाध्य थी । उसने बिना अपनी पोती को बताये विवाह की तैयारी शुरू कर दी । आखिर यह राज भी कब तक राज रहता, लड़की को इस संबंध की भनक लग ही गयी । वह दुःख में रो पड़ी । भागकर एक नदी के किनारे लगे छतिवन पेड़ पर चढ़ गयी । दोनों हाथ ऊपर कर बड़े करुण स्वर में भगवान को पुकारने लगी, "हे ईश्वर किसी तरह इस छतिवन वृक्ष को इतना ऊंचा कर दो कि मैं किसी के हाथ न आ सकूं । हे भगवान, मुझे इस शर्मनाक कलंक से बचा लो । इस तरह का विवाह तो पूरी पृथ्वी के किसी भी समाज में स्वीकार्य नहीं है ।"

सहसा छतिवन पेड़ ऊंचा होने लगा । सभी लोग वहां पहुंच गये और उससे नीचे आने का अनुरोध करने लगे, लेकिन तब तक पेड़ का शीर्ष आसमान को छूने लगा था । उसने छतिवन का शीर्ष पैर मारकर तोड़ दिया और अदृश्य हो गयी । आदिवासी समाज में यह मान्यता है कि इसी कारण से ये वृक्ष शीर्षविहीन है । चमकनेवाली बिजली के संबंध में मान्यता है कि वह लड़की अपने कटिवस्त्र के बंधन को ठीक कर रही है ।

कांचनमाला

त्रिपुरा के पहाड़ी अंचलों के राजा जब भी कभी किसी युद्ध में घिर जाते थे तो गांव-गांव में फुराइ (फुराइ एक प्रकार का फरमान है जिसमें योग्य युवकों को सैन्यदल में शामिल किये जाने का आदेश होता था) जारी करवा देते थे । फुराइ का पालन करना विवाहित और अविवाहित दोनों ही युवकों के लिए अनिवार्य होता था । कोई चाहकर भी उसका उल्लंघन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कर पाता था ।

कांचनमाला रूप-सौंदर्य में बेजोड़ थी । यौवनयुक्त सुडौल, आकर्षक शारीरिक बनावट एक नजर में ही युवकों को बेचैन कर देती थी । कांचनमाला का जब विवाह तय हुआ था तब वह इतनी छोटी थी कि उसने वक्षबंधनी का प्रयोग करना भी आरंभ नहीं किया था । यह विवाह उसके जेठ ने तय किया था । तब उसे कांचनमाला इतनी आकर्षक प्रतीत नहीं हुई थी ।

विवाह के दिन जब जेठ ने यौवन से भरी कांचनमाला को देखा तो ठगा-सा रह गया । बहुत चाहकर भी वह अपने आपको उसके आकर्षण से मुक्त न कर पाया । रह-रह कर उसकी नजरें कांचनमाला के प्रत्येक अंग से गुजर जातीं । वासना ने उसे इस तरह अंधा कर दिया कि वह मन-ही-मन उसे प्राप्त करने की चालें सोचने लगा ।

उसी समय हाचिखुंग में होनेवाले युद्ध की खबरें गांव-गांव पहुंचने लगीं । 'फुराइ' जब कांचनमाला के हाथ पड़ा तो उसे उसके सपनों का महल ढहता नजर आने लगा । कांचनमाला ने बड़ी होशियारी से येन-केन-प्रकारेण अपने पति को राज-कर्मचारियों की नजरों से बचा लिया और सैन्य दल सूची में उसका नाम आने से रह गया ।

कांचनमाला का जेठ राजा की सेना में काम करता था । कांचनमाला को प्राप्त करने का सुयोग वह हाथ से निकलने देना नहीं चाहता था । उसने गुप्त रूप से राजसेवकों को अपने भाई के बारे में सूचित कर दिया । कांचनमाला और उसका पति उसकी कुटिलता से पूर्णतया अंजान थे ।

राजसैनिक कांचनमाला को रोता-बिलखता छोड़ उसके पति को सैन्य दल में सम्मिलित करने के लिए उसके घर की ओर बढ़ने लगे ।

राजसैनिकों को दूर से आता देख कांचनमाला दुःख में गाने लगी—

नुगूङबाइ काइजाग्मा हाया बाइयाखो,
हाइयाले बाइया—हाप्लोक अगूङवा;
...दिदानो बिदायनादि ।

कई दिन गुजर गये । स्वामी का कोई संदेश न आया । विरह की वेदना तीव्र होती गयी । वियोग में तड़पती कांचनमाला हर आहट पर चौंक पड़ती थी । एक दिन दरवाजे पर दस्तक हुई । कांचनमाला का जेठ राजमहल से लौटा था । पागल-सी कांचनमाला तरह-तरह के सवाल अपने पति के विषय में उससे पूछती है । अतिथि सत्कार के लिए शराब भी पेश करती है । शराब के नशे में उसकी कुटिल मंशा कांचनमाला के समक्ष स्पष्ट हो गयी । अनेक प्रलोभनों के बावजूद भी कांचनमाला उसे दुत्कार देती है और उससे सतर्क हो जाती है ।

दिन गुजरते गये । कांचनमाला की तड़प वैसी ही रही । राह तकती वह हर रोज यही गाती रही—

तिनि फाइखाना, लामा थुखाना,
खानाले सकफाइयानु ।

अर्थात—

आज वो आ रहा है,
राह में कहीं सोया होगा
कल यहां पहुंच जाएगा ।

लेकिन वह कभी लौटकर नहीं आया ।

—राजभाषा विभाग, भारत सरकार
द्वारा कार्यालय महालेखाकार
कुंजबन; प. त्रिपुरा, अगरतला-७९०००६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कहानी

दुर्गंध

● शोभावारियर

मैं एक जर्नलिस्ट हूं । यहां जो रक्तपात हो रहा है, उसके बारे में रिपोर्ट करने के लिए दक्षिण से आयी हूं । लेकिन जब तक मैं यहां आयी तब तक जो होना था वह हो चुका है । चारों ओर भयानक नीरवता फैली हुई है ।

बाजारों में मुरदे ही मुरदे नजर आ रहे हैं । कहीं-कहीं एक मुरदे पर और एक मुरदा पड़ा हुआ है । उन्हें पार करती हुई चल रही हूं । लगता है, प्रायः सब के सब बंदूक की गोलियों से मारे गये हैं । इतना 'मारण होम' होने पर, इतनी मृत देह बाजारों में आड़े-तिरछे पड़े रहने पर भी किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया । कम-से-कम लाशों को हटाने के लिए भी अब तक कोई नहीं आया ।

उन मुरदों का फोटो खींचना चाहूं, तो बदन में सिहरन हो रही है ।

फिर सोचा, मृत देहों के फोटो खींचने या उनके बारे में लिखने में दुःखी क्यों होना ? मैं कौन-सी गलती कर रही हूं ? दुःखी होने की मुझे क्या जरूरत है ? पत्रिका के मालिक और पाठक भी केवल खबरें चाहते हैं ।

वे लोग, जिनके प्राण अभी पूरी तरह नहीं निकल गये हैं, शवों के बीच फंसकर तड़प रहे हैं । किसी भी क्षण वे अंतिम श्वास ले सकते हैं । उनमें से कुछ लोग 'प्यास-प्यास' कहते हुए कराह रहे हैं । 'कोई मदद कीजिए !' दीनता से विनती कर रहे हैं कुछ लोग ।

उनकी मैं क्या मदद कर सकती हूं ? उन्हें पहले ही सोचना चाहिए था कि ऐसी क्रांतियों में कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा ? सभी विफल क्रांतियां इसी तरह खत्म होती हैं । आगामी हालात जाने बिना जो भी कार्य किया जाए, इसी तरह होगा ।

फिर कोई पानी मांग रहा है, बड़ी नीरसता से । मैं क्या कर सकती हूं ? मेरे बैग में करीब आधे भाग तक रिपोर्टिंग नोट्स हैं । उनके सिवा कोई काम की चीज नहीं है । लेकिन मैं इनकी मदद कर सकती हूं । क्यों...क्यों नहीं कर सकती... ? मगर उनकी प्यास बुझाकर, मरहम-पट्टी करके अस्पताल में भरती कराने की मदद तो नहीं है । इनके फोटो अपनी पत्रिका में प्रकाशित करवा सकती हूं । 'प्यास के मारे हाहाकार मचाती प्रजा' और 'शवों के बीच'-जैसे शीर्षक से लेख लिखकर दुनियाभर के लोगों को इनकी दीनता और हीनता के बारे में समझाया जा सकता है । इस तरह मैं इनकी मदद कर सकती हूं । ऐसे भयानक फोटो को हमारी पत्रिकावाले अपने प्राणों के समान मानते हैं । मैं व्यक्त नहीं कर सकती हूं कि इन फोटो को देखकर हमारे लोग कैसे प्रसन्न होंगे ।

इस विचार से मेरे आनंद की सीमा न रही ।

मेरे कैनवास बूटों में लगे खून के धब्बे लाल-लाल दीख रहे हैं । इस डर से कि कहीं वह खून मेरी जींस को लग न जाए, मैंने पैंट को ऊपर कर लिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह-तरह की मुद्राओं में उनके फोटो खींच लिये। वे अभागे किसी आशा से मेरी ओर देख रहे हैं। उनको मैं अपनी निस्सहायता बताकर उनको पार कर के जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गयी। उस समय का अपना व्यवहार मुझे ही नीच मालूम हुआ। उनकी मदद करने की इच्छा है। लेकिन कैसे ? वही विचार बड़ी देर तक मेरे मन में हलचल मचाता रहा। थोड़ी देर के बाद समझ में आया कि वह मेरा काम नहीं है...मैं इस क्रांति के बारे में लिखने के लिए आयी हुई एक 'जर्नलिस्ट' ही हूं। यदि ऐसे लोगों की मदद करना चाहती हूं, तो मुझे अपना पेशा छोड़ देना पड़ेगा।

नीरव बाजारों में चलते हुए मैं कैमरे से फोटो खींच रही हूं। वह नीरव वातावरण मुझे युद्ध क्षेत्र की अपेक्षा ज्यादा भयानक लगा। निःशब्द वातावरण में कोई भी हो, जरूर डर जाता है। प्रायः सागर, तूफान के पहले बहुत गंभीर और नीरव रहता है। इसी तरह भयानक खतरे भी नीरवता का अनुसरण करते रहते हैं।

लगा होने लगी कि इस क्रांति से संबंधित कई युवा नेता कहीं छिपे हैं ? मौका पाकर मुझ पर हमला करेंगे ? करें, तो मेरी हालत क्या होगी ? फिर भी इस खतरे से संबंधित पूरी रिपोर्ट देने के लिए उनके नेताओं से अवश्य मिलकर बातचीत करनी है।

उनके पड़ाव का पता लगाने के लिए मुझे दो दिन लगे। वे एक घने जंगल में छिपे हुए हैं। प्रमुख नेता कभी का गायब हो गया है। पैर और हाथ टूटे कुछ घायल क्रांतिकारी कराहते हुए उस शिविर में पड़े हुए हैं। उनमें बहुत-से लोग तो हिलने की स्थिति में भी नहीं हैं। इस हालत में उनसे साक्षात्कार करने में मुझे डर लगा। पहले ही वे घायल हैं, न मालूम, मेरी बात से वे कैसे रियेक्ट होंगे। मगर उनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलना अनिवार्य है । ऐसे साक्षात्कारों से हमारी पत्रिका का स्टाफ बहुत प्रसन्न होता है ।

साहस समेटकर भीतर गयी । शिविरभर में अस्पताल की तरह एक अनोखी बू आ रही है ।

मैंने कहा, "यह शिविर दुर्गंधपूर्ण लगता है ।"

सबने चकित होकर मेरी ओर देखा । लगता है कि मैं जब भीतर आयी तब इन लोगों ने नहीं देखा होगा । उनकी मुख-मुद्राओं से प्रतीत हो रहा है कि वे यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि मैं कौन हूं ?

एक स्वर ने सवाल किया, "तुम्हें क्या चाहिए ?"

"मुझे कुछ भी नहीं चाहिए...लेकिन सब कुछ मुझे चाहिए !" मैंने मुसकराते हुए जवाब दिया ।

जर्नलिज़्म के स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि हम जिनसे साक्षात्कार करना चाहते हैं, उनसे मजाक से बातें करते हुए उनको आकर्षित करना चाहिए । इसीलिए उनका मनोरंजन करने के लिए मैंने ये कोशिश की ।

एक युवक बड़े प्रयत्न से दीवार से सटकर बैठ गया और कहा, "तुम जासूस मालूम होती हो ! तुम जो चाहती हो, वह तुमको यहां नहीं मिलेगा । एक 'क्लू' भी तुम्हें नहीं मिलेगा ।" उसके मुख और स्वर में मेरे प्रति घृणा साफ-साफ दिखायी दे रही है ।

"असल में तुम यहां क्यों आयी हो ?" एक ने पूछा ।

"मैं एक 'जर्नलिस्ट' हूं ।"

"ओह !" मेरी बात सुनकर वे सब एक साथ कराह उठे ।

"जर्नलिस्टों से हमें घृणा है ! असल में सभी मनुष्यों से ही हमें घृणा है । लेकिन यहां पहले पहल कदम रखनेवाली पहली औरत तुम ही हो ।"

"सुनिए, फ्रैंड्स ! मुझ से घृणा मत कीजिए । मैं तुम-जैसी मानव मात्र ही हूं न !

"क्या, मैं एक प्रश्न पूछ सकती हूं ?" बैग से नोट पैड निकालते हुए मैंने पूछा ।

"एक बात भी नहीं बताते । इसलिए हमें अनावश्यक सताने का प्रयत्न मत करो ।" किसी ने कहा ।

मैं बैग में नोट पैड रख रही थी । इसलिए मैं पहचान न पायी कि यह बात किसने कही ।

"फ्रैंड्स, तुम सब इतनी शुष्कता से क्यों बोल रहे हो ? मैं बहुत कम प्रश्न ही पूछना चाहती हूं । खैर ! तुम लोग क्यों लड़ रहे हो ?" मैंने प्रश्न ऐसा पूछा ताकि वे समझ सकें कि मैं किसी एक से प्रश्न न पूछ कर सबसे पूछ रही हूं ! उनमें से कोई भी एक व्यक्ति जवाब देता, तो अच्छा होता ।

मगर किसी ने जवाब नहीं दिया । मैंने सबकी ओर देखा । मुझे अपमान महसूस हुआ । लेकिन हमारी जाति ही ऐसी है । पति के मर जाने पर किसी महिला के पास जाकर पूछेंगे, " तुम्हें पति के जाने के बाद कैसा 'फील' हो रहा है ?"

एक युवक, जो मेरे समीप था, चिल्लाया, "कैसी बेवकूफीभरी प्रथा है ? तुम औरत जात की हो, इसलिए तुम्हें मारे बिना छोड़ देता हूं ।"

मैं हंसती हुई बोली, "मुझे ऐसी तरजीहें नहीं चाहिए ।"

"हंसते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आती क्या ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असल में तुम्हें ऐसी 'फीलिंग' ही नहीं है क्या ? सड़कों और खेतों में पड़े अनाथों की तरह मरनेवाले इन अभागों को देखने से तुमको कैसा लगता है ? हमें मालूम है कि तुम क्यों आयी हो ! तुम्हें हमारे फोटो चाहिए । इसीलिए आयी हो । यह देखो, बूट पहने पैर के नीचे दबकर मेरा हाथ कैसा चूर-चूर हो गया है ! यदि हम जीते रहे, तो अपने भू-भाग को जरूर आजाद करेंगे ।...तुम देखती रहो... !''

बाद में वे सब एक साथ कुछ बोले । किंतु मेरी समझ में नहीं आया ।

मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि वे मुझसे क्या चाहते हैं । शायद वे चाहते होंगे कि उन मृतकों को देखकर मैं रो पड़ूं । मुझे नहीं सूझ रहा है कि अब क्या करना है ! उन्हें विश्वास दिलाने और आकर्षित करने के लिए थोड़ी देर रोती, तो मेरा क्या नुकसान होता ?

उन मृतकों को देखने से सचमुच मेरी आंखें आर्द्र नहीं हुईं । मेरा हृदय बिलकुल नहीं कराहा । लेकिन मेरे विचारों ने ही कोई दुर्गंध फैला दी । पानी मांगनेवालों की थोड़ी भी मदद न करके, फोटो खींचकर सीधे आ गयी ।

''क्या, तुम जानती हो कि हम क्यों लड़ रहे हैं ? अब तक कोई इस विषय में हमारे विचार नहीं समझ पाये ।''

''समता की स्थापना करने के लिए !'' उस युवक की ओर देखती हुई धीमे स्वर में बोली ।

''नहीं...गलत है...सिर्फ आजादी के लिए...''

''क्या, तुम्हें मालूम नहीं है कि बहुत-से लोग समानता के लिए कोशिश कर रहे हैं ?'' मैंने और एक बेवकूफीभरा प्रश्न किया ।

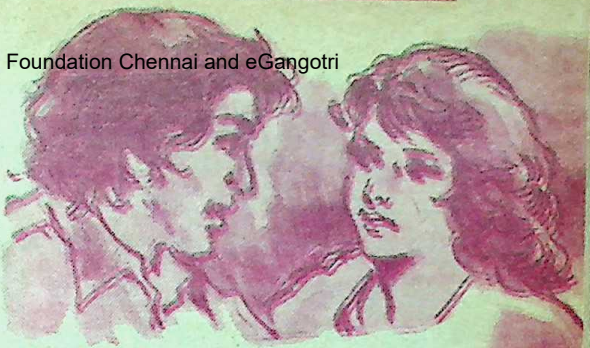

''अब हमें उसकी जरूरत नहीं है । हमारा प्रांत आजाद होकर तरक्की करने के बाद ही समानता का प्रश्न उठाएगा, तब तक उसकी जरूरत नहीं है ।''

इतने में दो बूढ़े खाना लेकर वहां आये ।

''बेटा...तुम्हारे सबके जीवन मूल्यवान हैं । कोई भी अधिकार में आये और किसी की भी सत्ता चले, उससे हमें कोई फायदा नहीं । इसलिए जिस किसी को भी अधिकार करने दो...उससे हमें क्या मतलब है ? सिर्फ तुम्हें देखकर हम जिंदा हैं । कम-से-कम हमारे लिए तो...'' उनका गला रुद्ध हो गया । आंखों से आंसू ढुलक पड़े ।

मुझे नहीं सूझा कि उनसे क्या कहना चाहिए । उनको देखने से मेरे हृदय में उनके प्रति दया उमड़ रही है । उनका संपूर्ण विश्वास है कि क्रांति के बाद प्रांत खूब तरक्की करेगा और शांति बनी रहेगी । लगता है कि उन्हें ऐसा विश्वास दिलाने के लिए उनके पीछे चतुर नेता होंगे, इतना ही नहीं, बल्कि वे यह कहने का भी साहस कर रहे हैं कि क्रांति के बाद अपना भू-भाग, भूलोक स्वर्ग बनेगा । उनके भोलेपन पर मुझे हंसी आ रही है । इसीलिए मैं भावुक हुई और जोर से बोलने लगी, ''फ्रैंड्स, मैंने तुम लोगों को समझ लिया । मैं ही नहीं...बल्कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया में कितने ही ऐसे लोग हैं, जो तुम्हारी समस्याओं को सहानुभूति से समझे...लेकिन फायदा क्या है ? हम सब असहाय हैं । हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम्हारी समस्या से तुम्हें किस तरह बचाना है । तुम्हारी बात सच ही है । मैं सुदूर दक्षिण से आयी हूं । खून से सने इन बाजारों और शवों के इन ढेरों के फोटो खींचकर इनके बारे में लिखूंगी । कृपया मुझे समझने की कोशिश करें । मेरा हृदय तुम्हारे लिए दुःखी हो रहा है । तुम्हारी मदद करना चाहती हूं । लेकिन कैसे ? वही मेरी समझ में नहीं आ रहा है । क्रांति के बाद तुम लोग जिसकी प्रतीक्षा करोगे उसके...'' थोड़ी देर मैं मौन रही ।

'तुम झूठ बोल रही हो ! सबकी सब झूठ हैं ! तुम्हारी बातें हम सुनना नहीं चाहते । यदि कोई मदद करना चाहती हो, तो करो ! यूं ही बातों में समय मत बिताओ ।'' वह युवक गरज पड़ा । इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि उसे किसी पर विश्वास नहीं है ।

''अरे...ऐसी बेसमझी की बातें मत करो...'' और एक चिल्ला उठा ।

''वह हमारी क्या मदद कर सकती है ? हमारे लिए मरने की उसे क्या जरूरत है ? हमें धीरज धरना चाहिए...वही तो तुम में नहीं है...'' सांत्वना के स्वर में वह बोला ।

''मैं तुम्हारी एक मदद करूं ?'' मन में एक उपाय सूझा, तो तुरंत मैं बोली ।

एक पल निःशब्द ने राज्य किया ।

दूसरे ही क्षण सब लोग हंस पड़े । हंस-हंसकर लोट-पोट हो गये । मेरी बातों पर उनको विश्वास नहीं हुआ । वे मुझे रुलाना चाहते हैं । मगर मुझे उन पर क्रोध नहीं आया । फिर बोली ।

''मैं सच बोल रही हूं...मैं तुम्हारी मदद करूंगी ।''

''उसकी बात को लेकर तुम्हें इस तरह बहाना करने की जरूरत नहीं है ।'' एक युवक ने मुसकराते हुए कहा ।

''तुम जानते हो कि मैं सुदूर दक्षिण से आयी हूं । दैवी महिमाओं पर तुम्हें विश्वास है ?'' मैंने पूछा ।

वे फिर हंस पड़े ।

''क्रांति के शुरू होने के बाद हम इस तरह कभी नहीं हंसे । हमें इस तरह हंसाने के उपलक्ष्य में तुम को बहुत-बहुत धन्यवाद है । उन्होंने कहा । वे फिर हंस पड़े । हंस-हंसकर लोट-पोट हो गये ।

मैं मुसकरायी भी नहीं । और जरा जोर से फिर वही प्रश्न पूछा ।

''तुम को दैवी महिमाओं पर विश्वास नहीं है क्या ?''

फिर वे सब हंस पड़े ।

मैं नाराज हो गयी । उठकर बाहर जाना चाहा ।

''न...न...नाराज मत हो...'' हंसी रोककर एक ने कहा ।

''तुम लोग इस तरह मेरा उपहास न करो, वरना मुझे जाना पड़ेगा । मैं सचमुच तुम्हारी मदद करना चाहती हूं । बाजारों में पड़े मृतकों को तुम अभी देखना चाहते हो क्या ?'' उसकी ओर मुड़कर धीमे स्वर में मैंने पूछा ।

शनैः-शनैः उनकी हंसी थम गयी । उनके मुखों पर परिवर्तन साफ-साफ दिखायी दे रहा है । मैंने नहीं सोचा कि वे इतनी जल्दी मुझ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास करेंगे । इसीलिए मुझे जरा आश्चर्य भी हुआ ।

"तुम सब मेरे साथ आओगे ?" मैंने ऐसे पूछा मानो एक निर्णय पर पहुंच गयी हूं ।

सबने स्वीकारात्मक सिर हिलाये ।

"हमें नदी को पार करना होगा ।"

"कहां ?"

"जहां दुर्गंध और मृत देह नहीं होती, वहां !"

"लेकिन हमने जो चाहा, उसे पाने तक इस प्रांत को नहीं छोड़ना चाहते ।"

अब मैं वहां नहीं रह सकी । मेरे विचार मुझे ही दुर्गंधयुक्त लगे । इसीलिए मेरा दम घुटने लगा । यह दुर्गंध मैं नहीं सह सकती ।

"हम जल्दी लौट आएंगे न ! उलझन की सुलझन भी हमें वहीं मिलेगी ।"

"हमें नदी को पार करना ही चाहिए ।"

कोई नहीं बोला । इससे बढ़कर और प्रमाण की क्या जरूरत है कि वे सब मेरे अभिप्राय से सहमत हैं ।

हमारी यात्रा के लिए दो दिनों में मैंने एक नाव बनायी । उनसे कहा कि वह उनकी यात्रा नहीं, हमारी यात्रा है ।

सबने मिलकर नाव को पानी में डाल दिया और रस्सी लेकर उसे पेड़ से बांध दिया ताकि वह पानी में बह न जाए ।

एक-एक करके सबके सब नाव में चढ़ गये, उनके चेहरे आनंद के मारे चमकने लगे । उनके चेहरे देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे स्वर्ग में कदम रखने जा रहे हों ।

एक ने कहा, "तुम भी चढ़ो !"

"तुम सब के चढ़ने के बाद चढ़ूंगी ।"

मेरे सिवा सब चढ़ गये ।

मैंने चारों ओर देखा । आसपास कोई नजर नहीं आया । एक बार शिविर में जाकर आयी और उसका दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया । फिर उस रस्सी को जिससे नाव को बांधा था, काट दिया । उनको विदा देते हुए मैंने कहा, "यात्रा सुखद हो ।"

नदी की धारा में नाव तेजी से बही जा रही है । नाव में हाहाकार शुरू हो गया । उन शब्दों को सुनती हुई मैं नदी की धारा में बहती जानेवाली नाव की ओर देखती हुई खड़ी रही । इससे बढ़कर मैं क्या कर सकती हूं ?

पानी में बहती जानेवाली नाव का फोटो खींच लिया । इस फोटो को दिखाकर अपने साहस कार्य के बारे में जब पत्रिका परिवार को बताऊंगी तो हमारी पत्रिका के लोग प्रसन्न हो जाएंगे ।

अब मैं वहां नहीं रह सकी । मेरे विचार मुझे ही दुर्गंधयुक्त लगे । इसीलिए मेरा दम घुटने लगा । यह दुर्गंध मैं नहीं सह सकती । किसी तरह यहां से भाग जाना चाहती हूं । तुरंत दूर भागी । लेकिन वह दुर्गंध मेरा पीछा कर रही है । मुझे नहीं छोड़ती है । मन की दुर्गंध है न ! हम जहां रहेंगे, वहां वह जरूर आएगी ।

—अनु. वाई.सी.पी. वेंकटरेड्डी

'श्रीनिवास' रामलिंगम नगर
साईं बाबा मिशन (पो.ओ.)
कोयंबटूर-६४१०११ केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठियो दूहो भलो

● बी. एल. माली 'अशांत'

सोरठा मध्य युग की देन है, परंपरागत कविता का भाग होते हुए भी इसने आधुनिक राजस्थानी कवियों को अपनी ओर आकर्षित किया है । कन्हैया लाल सेठिया, हरीश भादानी और मानसिंह शेखावत मरुधर—जैसे आधुनिक कवियों ने अपनी रचना इस मध्ययुगीन छंद में की है ।

सोरठा अड़तालीस मात्रा का छंद है, जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह-ग्यारह एवं दूसरे और चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएं होती हैं, इसके सम चरणों में जगण का निषेध है, दोहे को उलट देने से सोरठा बन जाता है ।

सोरठों में राजस्थानी जन-जीवन की मिठास घोली है, कवियों ने, इसीलिए यह इतनी लोकप्रियता हासिल कर सका हैं, लोग चाव से कहते हैं—

सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण की बात
जोबन छाई धण भलो, तारा छाई रात ।

सोरठा दोहे का ही एक रूप है, सर्वप्रथम इस छंद में 'भीमीतो रा सोरठा' नाम से सोरठे देखने को मिलते हैं, यह रचना १५वीं शताब्दी की है । परंतु अठारहवीं शताब्दी में लिखे गये 'जेठवै रा सोरठा' काफी लोकप्रिय हुए । संभवतः सोरठा ने लोकप्रियता यहीं से हासिल करनी शुरू की होगी । अजली जेठवा का किस्सा विश्व में अनोखा है । इन सोरठों में अजली चारणी का दर्द, उसकी पीड़ा उफन-उफनकर बाहर आयी है । गुजरात, राजस्थान आदि प्रांतों में आज भी ये लोक कंठों में समाये हुए हैं । इन सोरठों के रचयिता के बारे में जानकारी नहीं है । सोरठों में 'राजियै रा सोरठा' सर्वप्रथम प्रामाणिक रचना मानी गयी है, जो कृपा राम खिड़िया सन् १७४३-१८३३ ने अपने स्वामी-भक्त नौकर राजिया को अमर करने की दृष्टि से लिखी । इनकी संख्या लगभग १६५ है । तत्पश्चात् यह परंपरा आगे बढ़ती गयी 'मोतियै रा सोरठा' सांदू राय सिंह (१८१३-१८७८) ने अपने नौकर मोतिया को संबोधित कर लिखे, चार कवियों में ऐसी परंपरा निरंतर देखने में आती है । इसकी अंतिम कड़ी युवा कवि कैलाशदान देवल हैं । उन्होंने अपने नौकर सैसियां को संबोधित कर सोरठे लिखे हैं ।

'पाबूजी रा सोरठा' रामनाथ कविया (१८०१-१८७९) 'शेखरा रा सोरठा' चंद्रशेखर व्यास, फिर 'किसनया', 'कालिया', 'ईलिया', भानिया आदि कई संबोधनों से सोरठे लिखे गये, आधुनिककाल में भी इसने अपनी लोकप्रियता को बनाये रखा है । नवयुग में नव-लेखन में सृजन-रत कवियों में भी यह लोकप्रिय हुआ है ।

मिठास : लोकप्रियता का आधार

कवियों ने सोरठों में राजस्थानी जन-जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन और विचारतत्व को बारीकी से देख काव्यमय हो रसमय रूप में अभिव्यक्त किया है। इनकी मिठास इनकी व्यावहारिकता और इनका यथार्थ ही इनकी लोकप्रियता का आधार है, इनमें जीवन-रस का निष्कर्ष भरा है, इसलिए ये शीघ्रतापूर्वक लोक कंठों पर आ पाये हैं।

सोरठे के साथ 'भीमोतो' नाम कम अजली का नाम अधिक जुड़ा है। संभवतः लोकप्रियता की यह परंपरा यहीं से शुरू हुई है। राजिया के सोरठों ने जनमानस पर जो छाप छोड़ी वह परिवर्ती कवियों के लिए प्रेरणा बन गयी। इसके बाद भेंरिया, किसनिया, नाथिया, चकरिया, फुसिया, आदिया, सैंसिया, हूणियां से होती हुई यह परंपरा व्यक्ति वाचक संज्ञा से जातिवाचक पर आ गयी। 'भायला रा सोरठा' इसी कड़ी में एक सुंदर कड़ी है, कवियों ने सोरठा में जीवन-रस बरसाया है, हरीश भादानी—जैसे जनवादी कवियों ने भी इस छंद को गर्भित सरसता को समझ नवयुग में इस छंद में अपनी रचनाएं की हैं।

सोरठा और आधुनिक कविता

नव लेखकों में महाबीर प्रसाद हलवाई ने 'मालिया रा सोरठा' और कैलाशदान देवल के नाम उल्लेखनीय हैं।

जेठवा के सोरठों में ऊजली का दर्द भरा है, राजिया के सोरठों में जन-जीवन के यथार्थ का निष्कर्ष : 'रमणिये' ने रीति-नीति, 'हूणिये' ने आधुनिक युग बोध दिया है सोरठों को, 'भायला रा सोरठा' में युगीन तथ्यों को काव्यमय रूप मिला है। मानसिंह कृपाराम की धरती का कवि है। 'मालिया' और सैंसिया का सोरठा अपनी परंपरागत मोट में कहे गये हैं, संपूर्ण सोरठा रचनाओं पर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट उभरकर आएगा कि इनमें दर्शन, उच्च विचार तत्तव और जनमानस का यथार्थ भरा है।

परंतु ऊजली के कहे सोरठों में पीड़ा है। ऊजली की यह पीड़ा जन-जन के मन में मिली हुई है। ऊजली ने मूर्छित राजकुमार जेठवे के अपनी पिता की आज्ञा से, अपने शरीर को अगन से ताप प्राण बचाये परंतु जेठवा उसे छोड़कर चला गया। उसे अपनाकर भी वह विमुख हो गया, इसलिए कि वह चारण कन्या है, परंपरानुसार एक चारण कन्या का राजपूत युवक से विवाह नहीं हो सकता, जेठवा उसे राजमहल में आने का कहकर चला गया परंतु जब वह गयी, तो इनकार हो गया कि वह जानता नहीं, ऊजली की यह व्यथा एक-एक सोरठे में समायी हुई है—

अंगूठे री आल, लोभी लगाड़ै गयो
रूनी सारी रात, जक न पड़ी रे जेठवा।
आंख्यां उणियारो, निपट नहीं न्यारो हुवै
प्रीतम मो प्यारो, जोती फिरूं रै जेठवा।
आंबो डाल आकास, भूई पड़िया भावै नहीं,
ऊंचै फल री आस, जनम गमायो जेठवा।
डहग्यो डंफर देख, बादल थोथो नीर बिन,
हाथ न आई हेक, जल री बूदज जेठवा !
जातो जग संसार, दीसै सारा नै दरस
भव-भव रो भरतार, जिको न दीसै जेठवा।
तो बिन घड़ी न जाय, जमवारो किम जावसी
बिलखतड़ी वों हाय, जोगण करगो जेठवा।

'राजिया रा सोरठा' कृपाराम खिड़िया ने शेखावाटी के ग्राम 'कृपाराम की ढाणी' में अपने नौकर राजिया को वंश खत्म होने के दुःख में यश देकर अमर करने हेतु कहे गये 'राजिया रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा छंद की अपनी सरस पुरातन परंपरा संभवतः नवयुग के कवियों का आकर्षण है, यह भी सही प्रतीत होता है कि नयी कविता की विचार बोझिलता एवं काव्य रस की न्यूनता आधुनिक कवियों की नजर को इस तरफ मोड़ती रही होगी, परंतु यह सत्य है कि सोरठा छंद की रचना-परंपरा मध्य युग से आधुनिक युग तक निरंतर मानव हृदय को स्पर्श करती रही है ।

सोरठा' की लोक-व्यापकता ऊजली के कहे सोरठों से काफी अधिक है, मध्य युग से आज तक ये राजस्थान प्रांत ही नहीं अन्य प्रदेशों में भी लोक कंठों में रमे हुए हैं :—

मुख ऊपर मीठास, घट माही खोटा घड़ै
इसड़ा रो इखलास, राखीजै न राजिया ।
उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै
कड़वों लागै काग, रसना रा गुण राजिया ।
पारा पीड़ उपाव, तन लागा तरवारियां
वहै जीभ रा घाव, रत्ती न ओखद राजिया ।
गुण अवगुण जिणगांव, सुणै न कोई सांभलै
उण नगरी विच नांव, रोही आछी राजिया ।

अब उन अनेकानेक कवियों के सोरठों की बानगी भी परख लेना समीचीन होगा, जिन्होंने 'राजिया का सोरठा' की लोक-व्यापकता देख, प्रेरित हो, सोरठों की परंपरा को आगे बढ़ाया :—

सर्वप्रथम 'चकरिया' :—

रैण दिन मत रोय, अपणो दुख ओरांकने
कष्ट बताया कोय, चिणा न देवे चकरिया !
बहुत बुरी ही बात, सदा सताणौं सैण नें
अंत आग उठ जात, चंदन रगड़्या चकरिया !
रोजीना री राड़, आपस री आछी नहीं
बणै जठा तक बाड़, चटपट करणी चकरिया ।

'नाथिया रा सोरठा'—

दिन ऊगां दातार, याद करै सारो इला
सूमां रो संसार, नांम न लैवे नाथिया ।
ओछा रो आचार, छह दिखावे छेड़ीया
परत न लागै पार, बडा नरा रो नाथिया ।

किसनिया रा सोरठा—

हाटां में हथियार, गायड़मल बाधै घणा
भारत पड़्या भार, कोई क झैले किसनिया !
धनबाला रै धाम, जाण बिना जावै सु-जन
निरधनिया रो नाम, कोई न लैवै किसनिया ।

कालिया रा सोरठा—

बोलै मीठा बोल, मतलव रै कारण मिलै
समझणो कदे न सैण, कपटी नर ओ कालिया ।
बोलै मीठा बोल, पड़्या काम पलटै परो
तिणरो भारी तोल, किण विध होवै कालिया ।

'ईलिया रा सोरठा' की बानगी—

पडवै पोडंताह, करड़ावण सह कोई करै
धारा में धसतांह, आंसू आवै ईलिया !

'मोतिया रा सोरठा'—

अजै घणी उजैण, भणजै बातां भोज री
जुग में दाता जेण, भरे न कीरत मोतिया ।

'भैरिया रा सोरठा'—

कुन्नण पीतल कूंत, अक भाव कर आदरै
है जिण ठाकुर हूंत, भाखर सकरौ भैरिया !

'केसवा रा सोरठा'—

पिंड तणा सब पाप, राम कहत रवै नहीं
जपता गोविंद जाप, काया सुधरै केसवा !

'खींवरा रा सोरठा'—

खाज्यो कालो नाग, बलहलती बांबी तणो
मुवां न मिलज्यो आग, खोटी कोथी खींवरा ।

छोटिया रा सोरठा—

सपनो सो संसार, जाणै जग भूलै जगत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आणै गरब अपार, छिन-भर में नर छोटिया ।
'दादुवा रा सोरठा'—

खारो लागै श्वेल, बूढ़ा नैं बालक तणो
मुवां न होसी मेल, दाई विखुटा दादुवा ।
'नोयला रा सोरठा'—

कै बुढ़ा कै बाल, परण्यां सूं परवस हुवै
सिंघ हुया है स्याल, नारी आगै नोयला ।
फूसिया रा सोरठा—

ऊंचो घणो अवास, अलगां मूं दीसै अजब
धरणी बिन घर वास, फीको लागै फूसिया ।
सेखरा रा सोरठा—

इज्जत सबकै अेक, कै गरीब कै धनपती
धन पा इतनी सेख, कदै न करणी सेखरा ।
होरिया रा सोरठा—

वसो उजाड़ अबार, भावै कंचनपुरवसो
लिखिया जिके ललाट, हरगिज टलै न होरिया ।

उपरोक्त संबोधनों में सोरठा की परंपरा निरंतर आगे बढ़ी है । आधुनिक काल में परंपरावादी कवियों ने ही नहीं, नवयुग में जनवादी और प्रगतिशील कवियों ने भी अपनी कविता को इस छंद में रचकर इसकी लोकप्रियता को अंगीकार किया है, उदयराज ऊजल ने 'भानिया' के संबोधन से सोरठे लिखे हैं, जिनमें समकालीन राजनीति का भी गंभीर चित्रण हुआ है, उनके सोरठों की बानगी इन सोरठों में देखी जा सकती है—

करसारी किलकार, हूंकर मजदूरां हली
गांधी री ललकार, भारत उलटै भानिया ।
पग-पग जेलां पाय, गांधी री ऊमर गयी
डोकर दिवी छड़ाय, भारत माता भानिया ।

'ऊजल' ने 'उदय' संबोधन से भी सोरठे लिखे हैं :

बीज तिलक बोयोह, सतजल गांधी सींचियो
अब गहरो होयोह, ओ सुराज सुतरू उदय ।
सगलौ हिंदुस्थान, प्रांतां री भाखा पढ़ै
रहगो राजस्थान, एको निरभागी उदय

उदयराज ऊजल के सोरठों में पारंपरिक दीठ बदलती नजर आती है । 'भानिया रा दूहा' में गांधी और नेहरू के स्वतंत्रता आंदोलन प्रभाव को दरसाया गया है तो राजस्थानी भाषा को यश, कीर्ति और आधुनिक स्थिति का दर्दयुक्त वर्णन मिलता है । 'सुराज रा सोरठा' में कवि ने स्वराज्य प्राप्ति के प्रयत्नों का इतिहास रख दिया है, परंतु हरीश भादानी ने 'बाथां में भूगोल' में 'हूणिया रा सोरठा' में नवयुग बोध और जनवादी तेवर हैं ।

खुरसी री चरमर में, खेवट पंतग जोड़
लोक राज री नाव, हवा भरोसै हूंणिया ।

इस सोरठे में कवि ने हिंदुस्तान के मतदाता की प्रकृति को सरलता से ला धरा है । एक बानगी और दृष्टव्य है—

आभो आटी अंगरखी, तावड़ियो है फाग
हवा अगोछो हाथ, रेत पगरखी हूंणिया ।

हरीश भादानी की यह मीट काफी समृद्ध है । परंतु कन्हैया लाल सेठिया ने 'रमणिये रा सोरठा' में इस समृद्धता की अनदेखी है, उदयराज ऊजल की मीट भी वे नहीं समझ पाये

सोरठा छंद की अपनी सरस बुणगट परंपरा संभवतः नवयुग के कवियों का आकर्षण है । यह भी सही प्रतीत होता है कि नयी कविता की विचार बोझिलता एवं काव्य रस की न्यूनता आधुनिक कवियों की नजर को इस तरफ मोड़ती रही होगी, परंतु यह सत्य है कि सोरठा छंद की रचना-परंपरा मध्य युग से आधुनिक युग तक निरंतर मानव हृदय को स्पर्श करती रही, और इलेक्ट्रोनिकी युग में खोया व्यक्ति भी इन्हें गुनगुनाता रहेगा, ऐसा प्रतीत होता है ।

: जयपुर (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेजी कहानी

एक मुखाकृति दीवार पर !

● ई.बी. ल्यूकस

कल शाम डेब्री के यहां मुझे जो अनुभव हुआ, उसके कारण मैं अभी तक उद्विग्न हो उठता हूं । मुझे संदेह है कि जो लोग मेरे संपर्क में आते हैं, वे भी मेरे साथ-साथ परेशान हो उठते हैं । हम लोग विलक्षण व अमानवीय आत्माओं तथा प्रेतात्माओं के विषय में बातें कर रहे थे, जो लाभदायक तो नहीं, किंतु आकर्षक अवश्य होती हैं । इसमें से प्रत्येक ने अपने-अपने अनुभव की बातें कहीं थीं यद्यपि हमारे ऊपर उनका कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था । रड्सन वेट के साथ एक सज्जन आये थे, जिनका कद छोटा था । चेहरा गोरा व उत्सुकता के भावों से परिपूर्ण था । वे हर वक्ता को मौन होकर ध्यान से देखते जा रहे थे । केवल उन्हीं सज्जन से मैं अपरिचित था । तब डेब्री ने उन्हें भी वार्तालाप में सम्मिलित करने के विचार से उनकी ओर घूमकर उनसे अनुरोध किया कि वे भी अपना कोई रहस्यमय अनुभव बताएं अथवा कोई भेदभरी कहानी ही सुनाएं ।

उन्होंने एक क्षण सोचा और तब धीरे-धीरे कहा—'अच्छा ! यह आप लोगों के दृष्टांतों के समान न तो साधारणतौर पर कोई कहानी है है और न कोई किंवदंती ! यह एक छोटी-सी घटना है जो कहानी के समान ही विचित्र व आकर्षक है । मैं इसे आपको सुना सकता हूं । और महत्त्वपूर्ण बात ये है कि ये कहानी आज दोपहर में ही एक बड़े अद्भुत ढंग से समाप्त हुई है ।'

हम लोगों ने उनसे कहानी आरंभ करने का अनुरोध किया ।

'एक या दो वर्ष पहले की बात है—'उन्होंने कहना आरंभ किया—'मैं ग्रेट आरमोंड स्ट्रीट' नामक एक पुराने मकान के कमरों में रहता था, जो 'हॉल बोर्न' के किनारे स्थित है । उसके शयनकक्ष की दीवारें पूर्व निवासी एक किरायेदार ने रंगवायी थीं । परंतु वह स्थान काफी सीला था और जगह-जगह से उस दीवार का रंग उड़ गया था, साथ ही वहां धब्बे भी पड़ गये थे । उसमें से एक, जैसा कि प्रायः होता है, बिल्कुल मनुष्य की आकृति के समान था, किंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बहुत सजीव था । प्रतिदिन भोर में मैं पलंग पर सोकर उठने से पूर्व उसे निहारा करता... देखता ही जाता और धीरे-धीरे मैं उसे अपने साथ रहनेवाला एक साथी समझने लगा था । परंतु एक बड़ी विचित्र बात यह थी कि जब और सब धब्बे अपने स्थान पर घटते-बढ़ते रहते थे, वह सदा उतना ही बड़ा और वैसा ही बना रहता ।

एक बार जब मुझे बहुत जोर से 'इंफ्लुएंजा' हो गया और तबियत काफी खराब हो गयी, तब सारा दिन लेटे-लेटे पढ़ने और सोचने के अतिरिक्त मेरा कोई काम न था, इस मुखाकृति ने मुझे अपने में अच्छी तरह उलझा लिया । वह और भी अधिक सजीव एवं आकर्षक होती गयी । मैं यह भी कह सकता हूं कि यह दिन रात मेरे विचारों का केंद्र बन गयी थी । उसकी नासिका के पास एक अजीब घुमाव था, साथ ही माथे का ढाल भी अद्वितीय ही था । वास्तव में इसका अपना व्यक्तित्व प्रतीत होता था, जो संभवतः हजारों व्यक्तियों के बीच अलग ही दिखाई पड़ जाता ।

खैर—'मैं अच्छा हो गया पर उस मुखाकृति ने मुझ पर से अपना प्रभाव न हटाया । मैं गलियों—सड़कों पर उसके समान व्यक्ति ढूंढा करता क्योंकि मुझे विश्वास था कि कहीं न कहीं वैसा आदमी अवश्य होगा और मुझे उससे मिलना चाहिए । ऐसा क्यों... ? इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं था—मैं तो केवल इतना जानता था कि मैं और वह व्यक्ति किसी न किसी प्रकार भाग्य की शृंखलाओं से बंधे अवश्य हैं ।

यह खोज मेरे लिए उन्माद बन गयी । मैं हर बात की उपेक्षा करने लगा । मैं शहर के चहल-पहलवाले भागों में घंटों खड़ा रहता—जन-समूह को देखा करता... लोग मुझे पागल समझने लगे और पुलिस को भी मेरे प्रति संदेह हो गया । स्त्रियों की ओर मैं कभी आंख भी न उठाता... आदमी... केवल आदमी... हर समय आदमी की ओर मेरी खोजभरी दृष्टि दौड़ा करती ।'

उन्होंने थककर अपनी भौहों पर हाथ फेरा ।—

'और तब आखिरकार एक दिन मैंने उसे देखा । वह टैक्सी में बैठकर 'पिकैडिली' की ओर जा रहा था । मैं घूमा और थोड़ा दूर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मि. औरमोंड वाल जो कि पिट्सवर्ग के रईस थे अपने साथियों के साथ स्पीजा से पिसा की ओर जाते समय एक गाड़ी से धक्का लग जाने के कारण घायल हो गये । उनकी दशा चिंताजनक है' । मैं अपने कमरे में वापस चला आया । पलंग पर बैठकर निर्निमेष दृष्टि से उस दीवार की मुखाकृति को देखता रहा...

उसके पीछे दौड़ता रहा और तब तक खाली टैक्सी देख उछलकर उसमें जा बैठा और बोला—

'उस टैक्सी का पीछा करो ।'—ड्राइवर ने उसे दृष्टि से ओझल न होने दिया और हम 'चेरिंग क्रास' पहुंचे । मैं प्लेटफार्म की ओर भागा और उसे दो स्त्रियों तथा एक छोटी बच्ची के साथ देखा । वे दो बजकर बीस मिनट पर फ्रांस जानेवाले थे । मैंने उससे बोलने का प्रयत्न किया परंतु असफल रहा । उसके अन्य मित्र भी घिर आये और वे सब ट्रेन की ओर बढ़े ।

मैंने जल्दी से 'फोकस्टोन' का टिकट इस आशा से खरीद लिया कि जहाज चलने से पहले उसे पा लूंगा, परंतु वहां वह 'डेक' पर बहुत से मित्रों से घिरा हुआ आकर मेरे सामने ही निजी सेलून, जिसमें और भी बहुत से केबिन थे, चला गया । प्रकट था कि वह एक धनी-मानी व्यक्ति था ।

एक बार फिर मैं हताश हो गया परंतु साथ ही उससे मिलने का निश्चय भी दृढ़ कर लिया था, क्योंकि मुझे विश्वास था कि कभी न कभी इस लंबी यात्रा में वह अकेला 'डेक' पर टहलने अवश्य आएगा । मेरे पास अब केवल 'बोलोन' तक का किराया शेष था । परंतु इस समय कोई भी शक्ति मुझे निराश नहीं कर सकती थी । मैं 'सेलून' के द्वार के सामने जाकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा । आधे घंटे बाद दरवाजा खुला और वह बाहर आया । छोटी बच्ची उसके साथ थी । मेरा हृदय इतनी तेजी से धड़कने लगा कि ऐसा लगता था मानो वह जहाज के पंखों की अपेक्षा जहाज को अधिक तीव्रता से हिला देगा । मुखाकृति में कोई अंतर न था—एक-एक रेखा वैसी ही थी । उसने मेरी ओर देखा और ऊपर के 'डेक' की ओर बढ़ा । मुझे बहुत बेचैनी हुई और हकलाते हुए उससे बोला—'क्षमा करिएगा ! क्या आप अपना कार्ड मुझे देंगे ? मुझे एक बहुत आवश्यक कार्य है, जिसके लिए मैं आपसे पत्र-व्यवहार करना चाहता हूं ।'

ऐसा लगा मानो उसे बहुत आश्चर्य हुआ हो परंतु उसने कुछ सोचते हुए अपना कार्ड निकालकर मुझे दे दिया और उस बच्ची के साथ आगे बढ़ गया । उसने अवश्य मुझे सनकी अथवा पागल समझा होगा । कार्ड को हाथ में पकड़कर मैं जहाज के सूने स्थल की ओर बढ़ा और जल्दी-जल्दी उसे पढ़ने लगा । मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया । मेरा सिर चकराने लगा, क्योंकि उस पर लिखा था—

'मिस्टर औरमोंड वाल'—साथ ही 'पिट्सवर्ग'—यू.एस.ए. का पता भी दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मुझे इसके पश्चात् उस समय तक कुछ याद नहीं आया. जब मैंने अपने को 'बोलोन' के एक अस्पताल में पाया।'

'फिर मैं ग्रेट और मोंड स्ट्रीट' वापस चला गया।' उन्होंने क्षणभर रुककर फिर कहना आरंभ किया—'और इस अमरीकन व्यक्ति के विषय में जिससे मैं अनायास ही इतना बंध गया था, अधिक से अधिक जानने की चेष्टा में रत हो गया। मैंने पिट्सवर्ग लिखा, लंदन में रहनेवाले अमरीकी निवासियों की सूची एकत्रित की परंतु केवल इतना ही जान सका कि वह एक विख्यात रईस था और उसके माता-पिता अंगरेज थे जो लंदन में रहते थे। परंतु कहां ?... इस प्रश्न का मैं कोई उत्तर न पा सका।

इसी प्रकार कल सुबह तक समय बीतता गया। प्रतिदिन की अपेक्षा अधिक थककर मैं रात्रि में कुछ देर से सोने के लिए गया। जब उठा तो सूर्य का प्रकाश कमरे में आ रहा था। जैसा कि मैं सदा किया करता था मैंने तुरंत दीवार की ओर देखा जिस पर वह मुखाकृति अंकित थी। मैंने अपनी आंखें मलीं और आश्चर्यचकित रह गया। वहां केवल उसकी धुंधली छाया मात्र शेष थी। पिछली रात वह हमेशा की तरह ही—स्पष्ट थी यहां तक कि मैं इसकी वाणी भी सुन सकता था—पर अब यह। केवल अपनी प्रति-छाया मात्र शेष रह गयी थी।

मैं आश्चर्य व क्षोभ से उठा और बाहर चला गया। सुबह के अखबार में मैंने देखा—'अमरीका के रईस की मोटर दुर्घटना !'—आप लोगों ने भी शायद देखा हो—मैंने अखबार ले लिया और जल्दी-जल्दी पढ़ना आरंभ कर दिया।'मि. औरमोंड वाल जो कि पिट्सवर्ग के रईस थे अपने साथियों के साथ स्पीजा से पिसा की ओर जाते समय एक गाड़ी से धक्का लग जाने के कारण घायल हो गये। उनकी दशा चिंताजनक है'। मैं अपने कमरे में वापस चला आया। पलंग पर बैठकर निर्निमेष दृष्टि से उस दीवार की मुखाकृति को देखता रहा... देखते ही देखते अचानक ही वह अदृश्य हो गयी। बाद में मुझे पता चला कि उस घायल अवस्था में ही मि. वाल की मृत्यु ठीक उसी समय हो गयी थी।'

'हां ! इस कहानी में तीन असाधारण व ध्यान देने योग्य बातें हैं। एक तो यह कि संभव है, लंदन के उस मकान से मृतक का घनिष्ठ संबंध रहा होगा। विज्ञान इसे समझने में अभी कुछ समय और लेगा। दूसरी यह कि इस भले व्यक्ति की मुखाकृति का उस स्थान से कोई विशेष संबंध हो सकता है, जहां वह तस्वीर—सी बन गयी थी।'

मुझे याद आता है—सौंटन ने वह प्रश्न पूछा, जिसके उत्तर ने हमें महान उत्सुकता व आश्चर्य में डाल दिया—कि वह तीसरी असाधारण बात क्या थी ?

'ओह ! तीसरी बात ? वह तो मैं भूला ही जा रहा था।' उन्होंने द्वार खोलते हुए कहा—'तीसरी बात यह है कि इस कहानी की रचना मन ही मन में मैंने अभी ही आधे घंटे पूर्व की थी। अच्छा, नमस्ते।'

अनुवाद : ● डॉ. इंदिरा 'नूपुर'

१४४, एस. एफ. एस. अपार्टमेंट,
हौजखास, नयी दिल्ली-११००१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

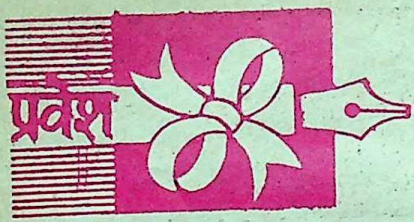

खिड़कियां खोलकर...

चल न पाये कभी इस दुनिया के बाजार में,
लोग कहते हैं कि सिक्के खोटे हैं हम
कहनेवाले कहते हैं हमें पत्थर दिल भी
पर रातों में अक्सर रोते हैं हम
जब महसूस करते हैं अपने को बहुत तन्हा
तेरी यादों के फूल पिरोते हैं हम
अब हमारे चुप रहने पर है उनको शिकवा
पहले कहते थे कि बहुत बोलते हैं हम
जो भी मिलता है उसे बना लेते हैं अपना
फिर अपनों को ही खोते हैं हम
टूटती है रोज आशा की कोई किरण
फिर इक नयी उम्मीद के बीज बोते हैं हम
'नर' किस्मत किवाड़ नहीं खटखटाती आजकल
इसलिए दरवाजे खिड़कियां खोलकर सोते हैं हम ।

—नरेन्द्र अहलुवालिया

जन्मतिथि : १-८-१९६३
शिक्षा : बी कॉम (ऑनर्स) आई. सी. डब्ल्यू. ए. (इंटर)
आत्मकथ्य : हिंदी अच्छी नहीं जानता पर अक्सर कादम्बिनी पढ़ लेता हूं । लिखना तो बहुत दूर की बात थी । जब कभी तन्हाइयां, उदासियां, यादें ज़्यादा घेरा बनाने की कोशिश करतीं तो सोने की कोशिश करता हूं । फिर भी नींद न आने पर कागज पर ऊटपटांग लिखने की कोशिशभर की है । नहीं जानता यह क्या है ? कविताएं हैं या विचार अभिव्यक्ति, कह नहीं सकता ।
पता : २७८, सेक्टर—२० ए, चंडीगढ़-१६००२०

मेरा प्यार

शांत, निश्चल
सागर की भांति स्थिर
शबनम की बूंदों की तरह
चुपचाप,
बरसा करता है, मेरा प्यार
बस
तुम्हारे लिए
कभी-कभी
भावनाओं के आवेश में
उभर आता है
लहरों की तरह
उछालें भरता
उफनता मेरा प्यार
मंजिल के पहले ही
अकसर
बिखर जाया करता है
अपने ही किनारों से टकराकर
और
पुनः
शांत हो जाता है
सागर की तरह

—पुष्पा सिन्हा

शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा)
आत्मकथ्य : मेरे अंदर उभरती हुई भावनाओं की अभिव्यक्ति ही मेरी कविता का स्रोत है ।
पता : द्वारा राजेश्वर प्रसाद सिन्हा, रंग गली, ब्रह्मपुरा थाना चौक मुजफ्फरपुर-८४२००३, (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पागल बना दिया

मैं कवि न था कभी.
लेकिन तुमने कवि बना दिया
एक नेक दिल इनसान को
पागल बना दिया
मैं शायर न था कभी
लेकिन तुम्हारे प्यार ने शायर बना दिया
एक स-हृदय इंसान को
घायल बना दिया
मैं प्रेम में रोया न था कभी
लेकिन तुम्हारे प्रेम ने रूला-रूलाकर तड़पा दिया
एक सुंदर दृश्य देखनेवाले नयन को,
सागर बना दिया
मैं जिंदगी में इतना तड़पा न था कभी
लेकिन तुम्हारे प्यार पाने की ललक ने
बार-बार तड़पा दिया
एक मासूम दिल को
लहुलूहान कर दिया ।

—दिनेश यादव

जन्मतिथि : ६-१०-१९६९
शिक्षा : एम. एस-सी. (भौतिक शास्त्र), एम. ए. (जनसंख्या) अध्ययनरत ।
आत्मकथ्य : वेदनाओं से भरा मेरा दिल जब अग्नि की ज्वाला में जलने लगता है और अपनों से ही जब निराश होना पड़ता है तब दिल की चुभन को कम करने के प्रयास में 'शब्द' अनायास कविता बन जाते हैं ।
पता : ग्राम+पोस्ट-फकिरा
वार्ड नं. ७, जिला-सप्तरी राजबिराज (नेपाल)

निर्विकार

दीवार
ईंट ईंट जुड़कर
नींव से उभरकर
जन्म लेता आकार है
सशक्त, अजेय
मानो सिर उठाकर कोई
अभिमानी अधिकार है
आंधी
डूबती, उठती
उमड़ती गरजती है
तूफान
थरथराता महाकार है
और मानो
भूकंप से सहमकर
झुकती हुई दीवार है
और लो यह पुकारता भयानक चीत्कार है
स्तंभित माहौल है
अजेय दीवार
ईंट-ईंट बिखरी पड़ी है
आह ! कोई कराहता है
पर गिरा हुआ तो निर्विकार है ।

—शुभम शिवा

जन्मतिथि : ३० अगस्त, ६६
शिक्षा : बी. ए. द्वितीय वर्ष
आत्मकथ्य : मन में आये हुए यथार्थपरक विचारों को काव्य रूप में प्रस्तुत करना ही कविता-सृजन का प्रयत्न है, और मैं उसी की संरचना में प्रयत्नरत हूं ।
पता : द्वारा श्री सतीश चंद्र गुप्ता
के. २२१, यशोदा नगर कानपुर २०८०११ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी कहानी

स्मृतियों के पृष्ठ खोल मैं देखती हूं
कई तहों में निर्लिप्त
हर पृष्ठ की अद्भुत यादें
हर याद का अलग-अलग इतिहास
इतिहासों की अनगिनत बातें
सुख-दुःख, उतार-चढ़ाव
यही है मेरी कहानी
यादों का ताना-बाना
आशा-निराशा की आंख-मिचौली
विजय-पराजय, प्रणय-वेदना
जीवन की यह अनमोल
पहेली
हास-परिहास, क्रंदन-उत्पीड़न
करुण राग व मधुर रागिनी
यही है मेरी कहानी
आंसू पी, मुसकान देना
तिमिर हर, प्रकाश देना
ठिठुरते शिशिर में भी
दिनकर की उत्तप्त किरणों
की अनुभूति करना
तृष्णा, आकांक्षा, उमंगों में
रमी
यही है मेरी कहानी।

—रागिनी श्रीवास्तव

शिक्षा : एम. ए. पटना विश्वविद्यालय
आत्मकथ्य : कविता मेरे लिए मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने का एक सार्थक माध्यम है।

—48, Bin Brook Dve
Croydon 3136,
Victoria, Australia

झंझा

आज फिर झंझा घिरी और मन के सिंधु छलके
कौन आया याद कि ये नयन के तटबंध छलके
कौन युग था वो उमंगों का
हर्ष छलकाता कलश था ज्यों
हृदय पर सात रंगों का
रूप रखते थे हृदय में नेह का
शैल शिखरों के उत्तुंगों का
शेष हैं स्मृति पटल पर रंग भरे वो चिह्न कल के
कौन आया याद कि ये नयन के तटबंध छलके
दूर तक घन तिमिर के श्याम अंचल में
एक आभा बिंब की-सी आती हलचल में
और मेरी रागिनी फिर व्यग्र होती
उसे पाने उर्मि झिलमिल में
बिंब क्यों वो पास आते मेहमां थे चंद पल के
कौन आया याद कि ये नयन के तटबंध छलके।

—ललित कुमार सिंह

जन्मतिथि : १५/९/१९६६
आत्मकथ्य : अपने ग्रामांचल के विस्तृत सुरम्य वन प्रदेश, उपत्यकाएं तथा निर्झरणियां मुझे कविताएं लिखने को प्रेरित करती रहती हैं।

पता : ग्राम-चौका,
जि. महोबा (उ. प्र.)
पो.—गलान
वाया—हरपालपुर
जि.—छतरपुर (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाय, बैल और सरकारी कायदे-कानून

● मीनाक्षी गोस्वामी

एक कस्बाई शहर में नगर-निगम द्वारा निर्मित ऐतिहासिक सड़क पर एक गाय और बैल की जोड़ी चली जा रही थी । यूं तो यह सड़क गत वर्ष ही बनी थी पर ठेकेदार महोदय की मेहरबानी से अपनी निर्माण कला में शेरशाह सूरी के काल में निर्मित सड़क को भी मात दे रही थी । इससे इसके ऐतिहासिक महत्त्व में निश्चय ही वृद्धि हो रही थी ।

तो ऐसी दिव्य सड़क पर ये गाय—बैल चल रहे थे । चल क्या रहे थे, तफरी कर रहे थे । ढेरों ट्रक, बस, साइकिल, पैदल, स्कूटर, टैंपो, मेटाडोर वगैरह आ-जा रहे थे लेकिन आजाद भारत के इन गाय-बैलों को संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य में इन सबसे कोई सरोकार न था ।

जैसे परमानंद में लीन साधु-संतों को शरीर पर रेंगते कीड़े-मकोड़ों से लेकर दुनिया में रेंगते मानव मात्र से कोई सरोकार नहीं होता, वैसे ही ये युगल भी थे ।

जैसे प्रेम में डूबे प्रेमी युगल जाति, धर्म, वर्ण, भाषा, संप्रदाय ही नहीं सामाजिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी कायदे-कानूनों के चलते गर्भवती ब्याहता गाय को मिली जुदाई और बैल को मिली नयी नवेली गाय । नयी नवेली गाय को मिला अनुभवी साथी । जैसा बैल और नयी गाय के साथ हुआ वैसा सबके साथ हो और जैसा गर्भवती गाय के साथ हुआ वैसा दुश्मन के साथ भी न हो ।

गतिविधियों, लोकलाज, नियंत्रण आदि सबसे ऊपर आत्म में स्थापित और लीन रहते हैं वैसे ही ये भी प्रेमालाप करते हुए इस मार्ग पर चले जा रहे थे । असल में शाम का समय काटने के लिए उन्होंने फिल्म देखने का प्रोग्राम बनाया था ।

दूर रेलवे फाटक दिख रहा था । वैसे तो वहां पुल बनाने की बात लंबे अर्से से चल रही थी पर सिर्फ अखबारों, हड़तालों और धरनों की भाषा में और सरकारी कागजों पर ।

रेलवे फाटक देखते ही बैल जो सरकारी मामलों में गाय से कहीं ज्यादा अनुभवी था ने कहा—'प्रिये, हम जरा जल्दी-जल्दी चलते हैं, ताकि रेलवे फाटक बंद होने से उसे पार कर लें और फिल्म के टिकिट आसानी से मिल जाएं ।'

यों कहते हुए बैल ने अपनी चाल तेज कर दी पर गर्भवती गाय उस तेजी से, उसके साथ नहीं चल पा रही थी । वह जरा पीछे थी बैल तेजी से चल रहा था । गाय धीरे-धीरे ही चल पा रही थी ।

बैल अब एक तरफ का फाटक पार करके पटरियों को पार कर रहा था । गाय फाटक से कुछ दूर थी । बैल ने सोचा गाय भी फाटक पार करके पटरियों पर आ जाएगी । तब फाटक बंद करने वाला इंसानियत के नाते गर्भवती गाय को फाटक के बीच देखकर गाय के फाटक पार करने तक जरूर रुक जाएगा ।

पर... गाय फाटक के करीब पहुंची ही थी कि फाटक बंद हो गया जबकि बैल फाटक पार करके सड़क पर आ चुका था ।

मैं इस पार, तू उस पार का गीत गुनगुनाते हुए गाय और बैल सरकारी नियमों के तहत विरही हो गये थे । सड़क पर आने-जाने के मामले में गाय बिलकुल अनुभवहीन थी सो वह फाटक बंद देखकर बुरी तरह घबरा गयी । उसने फाटक के नीचे से निकलने की कोशिश की पर उसे सही टेकनीक का ज्ञान नहीं था और फाटक में फंसने के डर से वह 'ट्राई' करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी ।

फाटक को दूर से टटोलकर निराश हो रही गाय थक गयी थी । अब वह मुड़कर वापस जाने की सोचने लगी पर ज्यों ही मुड़कर देखा तो पीछे ढेरों ट्रकों बसों और टैंपो ने रास्ता बंद कर दिया था ।

इधर एक टैंपोवाला उतरकर उसे दूसरी ओर जा रही सड़क पर भगाने की कोशिश करने लगा पर गाय इतनी नासमझ नहीं थी । वह जानती थी कि यह रास्ता न तो घर की तरफ जाता था और न ही उस पार खड़े बैल तक । फिर भी गाय को यह संतोष जरूर था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका बैल उस पार खड़ा उसकी राह ताक रहा था। ऐसे प्यार करनेवाले बैल को छोड़कर वह दूसरी राह पर कैसे जा सकती थी ? बेचारी टैंपोवाले की मार खाते हुए भी डटी रही मैदान में और ताकती रही अपने बैल को।

पर अबके टैंपोवाले ने उसके मुंह पर मारा। उसका मुंह दूसरी ओर घूम गया। फिर मार खाकर मार का दर्द हल्का होने पर जब उसने मुंह घुमाकर उस पार देखा तो बैल नहीं था। शायद ट्रैफिक की आड़ में आ गया था। सो अब भी धैर्य से मार और धक्के खाती रही।

उधर बैल जरा आगे निकला, उसे दूसरी नयी गाय दिख गयी। यह नयी गाय भोली-भाली, नवयौवना, सुंदर-सफेद थी। और सबसे बड़ी बात अकेली थी। अकेला तो बैल भी था पर अनुभवी था, उसकी अनुभवी आंखों ने ताड़ लिया था कि इस भोली-भाली गाय को तो पल दो पल में ही बहकाकर चुंगल में फंसाया जा सकता है।

और यही हुआ भी। भोली गाय जल्दी ही आ गयी, बैल की बातों में। दोनों तेजी से फिल्म देखने थियेटर की ओर चल दिये।

रेलवे फाटक खुलते ही ढेरों हॉर्न पुरानी गर्भवती गाय के कानों में पड़े, वाहनों की आवाजाही, पेट्रोल की बदबू, धूल-धुंए से घबरायी गाय फाटक के भीतर आ गयी, एक किनारे खड़ी होकर थकी-हारी बेचारी भीड़ छंटने का इंतजार करने लगी ताकि अपने बैल के पास जा सके। उसे पूरा भरोसा था कि बैल उसकी राह देख रहा होगा।

जब तक ट्रैफिक से उलझती-सुलझती गाय, फाटक पार करके सड़क तक आयी तब तक तो बैल नयी गाय के साथ थियेटर में पहुंचकर फिल्म की कई रीलों का लुत्फ उठा चुका था और लुत्फ उठा चुका था दूसरी बातों का।

इस तरह आधी फिल्म के समय तक जब यह गाय दूसरे किनारे पर पहुंची तो बैल को न पाया। चिंता और मायूसी से वह इधर-उधर भटकती रही। उधर बैल फिल्म देखता रहा नयी गाय के साथ।

सरकारी कायदे-कानूनों के चलते गर्भवती ब्याहता गाय को मिली जुदाई और बैल को मिली नयी नवेली गाय। नयी नवेली गाय को मिला अनुभवी साथी। जैसा बैल और नयी गाय के साथ हुआ वैसा सबके साथ हो और जैसा गर्भवती गाय के साथ हुआ वैसा दुश्मन के साथ भी न हो।

— सी. एच.-७८, एच. आई. जी.
दीनदयाल उपाध्याय नगर,
सुखलिया, इंदौर-८

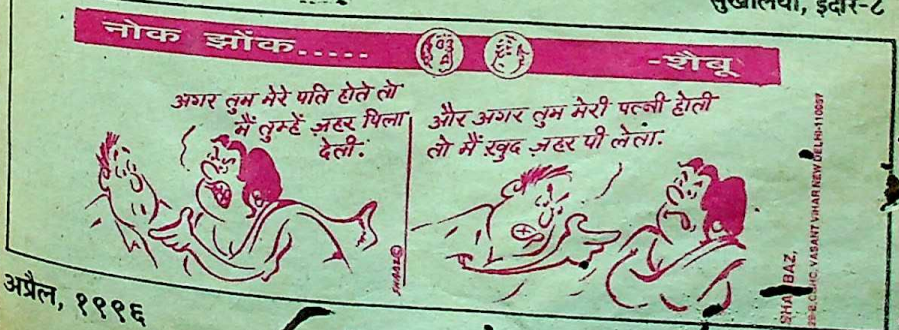

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरम्य गोवा

धरती का पेट फाड़ डाला

● सुंदरलाल बहुगुणा

भारत की यह विशेषता है कि जहां इसके उत्तर से पूर्व तक हिमालय के उत्तुंग शिखर युग-युग से मानव मात्र के लिए आकर्षण और प्रेरणा के स्रोत रहे हैं, तो दक्षिण-पश्चिम में लहराता हुआ सागर, मन को मोह लेता है । पश्चिमी घाट में सर्वाधिक सुंदरतावाला प्रदेश— गोवा प्रदेश है । यहां जब पुर्तगाल से वास्को-डि-गामा आया तो इस शताब्दी के मध्य तक— भारत की स्वतंत्रता के बाद भी सन् १९६१ तक— पुर्तगाली यहां जमे रहे । गोवा का बंदरगाह और समुद्र से मिलनेवाली दो नदियां मांडवी और जोवारी ने उसे विदेश व्यापार का केंद्र बना दिया था, परंतु व्यापार से अधिक यहां का आकर्षण हरी-हरी पहाड़ियों में था । इनमें प्राकृतिक वन थे । शेष भारत की तरह पिछली शताब्दी के प्रारंभ में यहां के प्राकृतिक वनों के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं हुई । यहां के लोग चारसौ वर्ष पहले अमरीका से काजू के बीज ले आये । यहां की पहाड़ी धरती, उष्ण जलवायु और समुद्री हवाओं ने काजू के उत्पादन के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर दीं और अब यहां काजू के बगीचे नहीं, वन हैं । काजू की विशेषता यह है कि इसकी जड़ें चट्टानों के बीच भी अपने लिए स्थान बना लेती हैं । पेड़ को पशु हानि नहीं पहुंचाते, जहां ढलान समाप्त होते हैं, नदी-नालों के बगीचों के किनारे समतल घाटियां हैं । इन घाटियों और नारियल के बागीचों से घिरे हुए धान के खेत हैं । नारियल के अलावा सुपारी, आम, चीकू और दूसरे कई फल गोवा की धरती पर पैदा होते हैं । सन् १९६० के भूमि उपयोग के आंकड़ों के अनुसार कृषि-बागवानी के उपयोग में लायी गयी कुल भूमि में से छप्पन प्रतिशत पर चावल और दलहन की खेती होती थी तो चवालीस प्रतिशत भूमि पर काजू, नारियल और दूसरे फलों की खेती होती थी ।

प्राकृतिक सौंदर्य : सृजन की प्रेरणा

प्राकृतिक सौंदर्य और वैभव निश्चित रूप से कला और साहित्य के क्षेत्र में प्रतिभाओं को जन्म देता है । कौसानी से दिखायी देनेवाले हिमालय ने यदि सुमित्रानंदन पंत को कवि का हृदय दिया है तो गोवा की हरियाली और समुद्र ने संगीत सम्राज्ञी लता मंगेशकर, आशा भोंसले, किशोरी आमोणकर, गांधी की जीवन कहानी के महान लेखक विजय तेंदुलकर, साहित्यकार रवींद्र केलकर और लक्ष्मणराव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारदेशाय, पत्रकार क्लाउद अल्वारिस-जैसे प्रतिभाशाली लोगों को पैदा किया है । ये सब गोवा के गांवों में पैदा हुए हैं । छोटे-छोटे गांवों में।

प्रदूषण का उपहार

अब गोवा में विकास हो रहा है । हम लता मंगेशकर के जन्म के मंगेशी गांव में गये । यह फोंडा के निकट है । सन् १९७३-७४ में गोवा विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए गांव के लोगों ने नाम मात्र के मूल्य पर (शायद १ रु. प्रति वर्ग मीटर) के हिसाब से कुंडई प्लेटो पर ४०० एकड़ जमीन दी थी । यहां पर विश्वविद्यालय तो बना नहीं, पर अब दस वर्षों के बाद दो बड़े-बड़े उद्योग प्रतिष्ठानों के साईन बोर्ड दिखायी देने लगे हैं । पहला है बहुराष्ट्रीय वेलकम लि. का । यह संभवतः कीटनाशक रसायनों का कारखाना यहां पर लगाएगी । दूसरा कारखाना हिंदुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन का गैस फिलिंग प्लांट होगा । जब कभी कोई नया कारखाना बनना होता है तो लोगों में उत्साह और आशा की लहर दौड़ उठती है । हमें रोजगार मिलेगा । पैसा आएगा । विकास होगा । पर जल्दी ही उनके सपने चकनाचूर हो जाते हैं, जब दूर-दराज के क्षेत्रों से मजदूर लाये जाते हैं, क्योंकि स्थानीय मजदूर संदेह की दृष्टि से देखे जाते हैं । वहां की धरती पर उनकी जड़ें होने के कारण उनसे हमेशा गड़बड़ी फैलाने, अपनी मांगों के लिए आंदोलन करने का खतरा प्रबंधकों को बना रहता है । परंतु इस गांव के लोगों के सिर पर एक खतरा मंडराने लगा है । कारखाने से पैदा होनेवाले जल और वायु के प्रदूषण का । यह प्रदूषण कुकलिम गांव को तो अवश्य ही उपहार में मिलनेवाला है ।

साहित्यकार रवीन्द्र केलकर के अनुसार, 'गोवा मुक्ति के बाद जितने उद्योग वहां आये हैं, उनका गोवा के लिए कोई मतलब नहीं है । हां ! गोवा को एक छोटी बंबई बनाने की योजना अवश्य है ।'

अगर इन उद्योगों का सचमुच ही गोवा के लिए कोई अर्थ होगा तो मड़गांव के निकट सन् १९६३-६४ में एक करोड़ से भी अधिक की लागत से स्थापित गोवा टेक्सटाइल्स की इमारतों के खंडहर यहां न होते । इसी प्रकार एक खनन कंपनी का लोहा साफ करने का कारखाना उजाड़ पड़ा है । तटस्थ लोगों का कहना है कि गोवा के सत्तर प्रतिशत उद्योग बीमार हैं ।

गोआ के सुंदर समुद्र-तटों में से एक : कोलवा बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास का उत्साह

इसके बावजूद भी उद्योगों की स्थापना के द्वारा गोवा को विकसित करने का उत्साह मंद नहीं पड़ा है । बैतोड़ा के निकट १०० एकड़ का एक मैदान बुलडोजर चलाकर साफ किया जा रहा था । इसमें इस बात का विशेष ध्यान रखा जा रहा था कि किसी पेड़ की जड़ जमीन में न छूट जाए, जिससे वह फिर पनपकर उद्योगों के विकास में बाधक न बन जाए । इस क्षेत्र में मुख्यतः काजू, खैर और मत्ती के वन हैं ।

इससे पहले बैतुड़ा और कुर्त्ती गांवों के बीच एक नयी बस्ती बसाने के लिए विकास कार्य होते हुए देखा । एक प्रभावशाली राजनीतिज्ञ व्यापारी ने २-३ वर्ष पहले १० हेक्टेयर काजू का एक निजी वन एक रुपया प्रति वर्ग मीटर के हिसाब से खरीदा था । पिछले एक वर्ष में इस जंगल की हजामत करके इस भूमि को बुलडोजरों से समतल किया गया । अब १०० प्लाट बन चुके हैं । इनका बिक्री मूल्य चालीस रुपया प्रति वर्ग मीटर हो गया है । पूरी पहाड़ी की मिट्टी कटकर नाले में डाल दी गयी है । इसके नीचे का गांव और ऊपर का काजू का जंगल दोनों आनेवाली नागरिक बस्ती और उसके साथ-साथ धरती से कटी हुई नगरीय सभ्यता के प्रहारों की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

पीछे हटते जंगल

नगरों के विस्तार से सीमेंट पोतकर धरती के सांस लेने और पानी पीने के छिद्र ही बंद नहीं हो जाते । रोड़ी, पत्थर निकालने के लिए उसका पेट भी फाड़ा जाता है । पणजी, गोवा की राजधानी है । इससे केवल ८ कि.मी. की दूरी पर तांबा गाव में है । यह दारूण दृश्य देखकर हक्के-बक्के रह गये । वहां रोड़ी तोड़ने की मशीन लगी हुई थी । पहाड़ तोड़ने के लिए विस्फोटकों के धमाके हो रहे थे । यहां भी जंगल पीछे हटता जा रहा है । यह सारा कार्य राज्य की राजधानी में होता है । यदि चोरी से नहीं तो मिलीभगत से होता होगा, क्योंकि खान मालिक के कारिंदे ने हम-जैसे नये आदमियों को वहां देखकर चौकीदार को डांटा, 'ऐ ! क्यों आने दिया ।' और जब उसकी नजर मेरे कैमरे पर पड़ी तो मुझे रोका, 'फोटो नहीं खींच सकते हो ।' जैसे यह भी देश की सुरक्षा की दृष्टि से अघोषित और अप्रचारित महत्त्वपूर्ण स्थानों में से एक हो !

जंगलों की हजामत

गोवा में सन् १९६० में १,०५,२९५.४ हेक्टेयर वन थे । सरकारी अनुमानों के अनुसार वन क्षेत्र अब ८८,८०० हेक्टेयर रह गया है । और एक भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद के एक अध्ययन के अनुसार केवल ५६,००० हेक्टेयर ही है । पुर्तगाली शासन ने पर्वतीय सदाबहार वनों को जल और मृदा संरक्षण की दृष्टि से उनके महत्त्व के कारण इन वनों को व्यापारिक दोहन की परिधि से बाहर रखा था । मुक्ति के बाद नगरों के विस्तार के लिए इमारती लकड़ी की आवश्यकता की पूर्ति के लिए इनकी वैज्ञानिक हजामत प्रारंभ हुई । लेकिन हजामत के लिए जिन हज्जामो (ठेकेदारों) को यह काम सौंपा गया, उन्होंने निर्धारित से तिगुने-चौगुने वन काटकर अपना काम पूरा किया । जब यह तबाही ही चरम सीमा पर पहुंच गयी तो छठे दशक के अंत में वनाधिकारियों की आंखें खुलीं । वे कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवा के निवासियों के लिए हरी-भरी पहाड़ियों की जगह खनन के मलवे के ढेर और गहरे गड्ढे छोड़ दिये गये हैं, जिनमें कभी कुछ नहीं उगेगा । इस भूरे रेगिस्तान से अभी भी नदी-नालों में बरसात में मलवा बहकर जाता है । धान के खेतों में यह रेगिस्तान फैल रहा है ।

संभले ।

परंतु हमारे अधिकारियों को जंगलों को 'फारेस्ट' बनाने का जो प्रशिक्षण दिया जाता है, उसका भरपूर उपयोग उन्होंने गोवा में किया ।

प्राकृतिक मिश्रित वनों और वन विभाग द्वारा लगायी गयी रोपवानियों के बीच का अंतर फोडा के निकट मदनगढ़ पहाड़ पर देखा जा सकता है, जहां इस क्षेत्र के लिए अपरिचित युक्लिप्टिस के पेड़ दूर से ही दिखायी देते हैं । इसी प्रकार निरानकुली गांव में दबाल को जानेवाली सड़क के किनारे सागौन की बीमार रोमवानियां हैं । दूसरी वनस्पतियां तो इस क्षेत्र से लुप्त हो गयी हैं । हां ! यूपिटोरियम (कांग्रेस खरपतवार) की झाड़ियां अवश्य लहरा रही हैं ।

गोवा की वन-संपदा की रक्षा के लिए वहां सरकारी वनों से लकड़ी काटने पर पाबंदी है, परंतु निजी वनों से लकड़ी काटने और उसका व्यापार करने की छूट है । कर्नाटक के कारखाने इससे अपनी आवश्यकताएं पूरी करते हैं । लकड़ी सम्राट कोई सामान्य व्यक्ति नहीं हैं । प्रभावशाली नेता हैं । इनमें चार पिछली विधानसभा के सदस्य हैं । यदि कोई छोटा कर्मचारी उनकी अवैध गतिविधियों को रोकने की जुर्रत करता है तो जी.आर. मशालकर की तरह उसके जोड़े-जबड़े दुरूस्त किये जाते हैं । कुरडी के इस वन कर्मचारी ने १७ अप्रैल '८४ को लकड़ी के दो अवैध ट्रक पकड़े थे । कुछ दिनों के बाद जब वह नदी में स्नान करने जा रहा था, तो १०-१२ लोगों ने उस पर हमला किया । लोहे की छड़ों से उसे पीटा और पांव तोड़ डाला । जब वह अस्पताल में पहुंचाया गया तो जंगल का तस्कर विधायक वहां उससे पूछने आया था कि, 'तुम जिंदा कैसे हो ?'

इस विधायक को, जो वहां के जंगल का राजा था, ५-६ साल पहले तत्कालीन सरकार ने दल बदलकर सरकार न गिरने देने की रिश्वत के रूप में एक कूप दिया था ।

यह संतोष का विषय है कि नयी विधानसभा को 'जंगल खाऊ' विधायकों से मुक्ति मिल गयी है, परंतु उनका दबदबा कायम है ।

नहर बन गयी, पर सिंचाई नहीं

गोवा की मुक्ति के बाद गरीबी हटाने का सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम सलाउती नदी पर निर्माणाधीन सलावली सिंचाई बांध परियोजना मानी जाएगी । ३२ मीटर ऊंचे सीमेंट कंक्रीट के इस बांध के बन जाने से १४ हजार हेक्टेयर जमीन की सिंचाई होगी, इससे मडगांव और वास्को-डी-गामा को भी पीने का पानी मिलेगा । सन् १९७९ में जब यह परियोजना बनी थी तो इसकी लागत नौ करोड़ रुपये थी । अब तक इस पर ३५ करोड़ [illegible] हो चुके हैं । सन् १९८६ [illegible] परियोजना के पूरे हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक ४२ करोड़ रुपये तक खर्चा हो जाएगा और एक अधिकारी के अनुसार यह ४५ करोड़ (यानी पांच गुना) भी हो सकता है ! इस योजना से तत्काल ही लोगों को लाभ मिले, इसलिए मिट्टी का कच्चा अस्थायी बांध बनाकर नहर में पानी छोड़ा गया । १८ दिसंबर, ८४ को गोवा के उपराज्यपाल श्री गोपालसिंह ने इसका उद्घाटन भी कर दिया । आठ कि.मी. तक इस नहर में पानी जा रहा है, लेकिन इस योजना का उत्साहपूर्वक गुणगान करनेवाले एक अभियंता ने कहा, "नहर के किनारे कई धान के खेत हैं, पर कोई पानी नहीं ले रहा है ।" एक नारियल के बगीचे में अवश्य ही रिसनेवाले सीमेंट के नलों से पानी जा रहा था । नहर पर सीमेंट का उपयोग इतनी किफायत से हुआ है कि इसका निरंतर रिसाव होना निश्चित है । एक ग्रामीण ने कहा, "इस प्रोजेक्ट का लाभ तो पहले ही इलाके को मिल चुका है । यहां कई सीमेंट के मकान बन चुके हैं ।"

मैंने पूछा, "तो क्या इसकी कोई जांच-पड़ताल नहीं करता ?" उसने तत्काल उत्तर दिया कि, "हमारे एक मंत्री महोदय ने वक्तव्य दिया था कि "सीमेंट के गोदाम में आग लग गयी और सीमेंट के बोरे उसमें जल गये ।" मेरे लिए भी यह नयी खबर थी । कई वर्ष पहले हमारे जिले टिहरी-गढ़वाल में अवश्य ही जांच-पड़ताल के अंदेशे से सीमेंट के कई बोरे भिलंगना नदी में डुबो दिये गये थे और उत्तरकाशी जिले में नहर का एक पुल बिना बरसात के बाद में बह गया था ।

[illegible] बड़े बांध बनते हैं, डूब क्षेत्र में [illegible] उनके वर्णिम भविष्य के सब्जबाग दिखाये जाते हैं । वहां के हर भूमिहीन को भूमि और हर एक को कच्चे मकान के बदले पक्के मकान का भरोसा । सलावली बांध के नीचे डूबनेवाले कुरडी गांव के लोग भी सन् १९७४ से ये ही सपने देखते रहे । इस गांव के ५०० परिवार इतने वर्षों में बढ़कर ६०० हो गये हैं । उन्हें कहा गया था कि पहले जमीन समतल की जाएगी, सिंचाई का इंतजाम होगा और अंत में लोगों का स्थानांतरण । लेकिन सन् १९८४ में स्थानांतरण प्रारंभ हो गया है । उन्हें ऊबड़-खाबड़ जमीन मिली है । वालकेनी में सन् १९७८ के लिए सिंचाई देने का तय हुआ था । इस योजना का उनतीस लाख रुपये का इस्टीमेट बढ़कर उनसठ लाख रुपये का हो गया है । पर योजना बनी नहीं है, वहां पीने का पानी भी नहीं है ।

कुरडी गांव में यद्यपि धान की खेती के लिए लगभग १२० एकड़ जमीन है, परंतु यहां नारियल के घने बगीचे हैं और उससे भी बढ़कर काजू के घने वन ! नारियल के पेड़ों के लिए उन्हें सन् १९७५ की कीमतों के आधार पर [illegible] रुपये से लेकर २५० रुपये प्रति पेड़ तक मुआवजा मिला है । और काजू के पेड़ों के लिए २५ रुपये से लेकर ४० रुपये तक । यह वर्ष में इन पेड़ों की एक वर्ष की पैदावार के बराबर है ! बांध चाहे जब भी बने, पर जब पेड़ सरकारी हो गये तो सरकार ने पिछले वर्ष पांच हजार काजू के पेड़ कटवा दिये । ये पेड़ पांच करोड़ रुपये के घाटे पर चलनेवाली एक सहकारी चीनी मिल की भट्टियों में ईंधन के लिए झोंके गये ।

[illegible] शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध गायिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगूबाई कुरडीकर का गांव है । वे साल में एक दिन यहां आकर मंदिर में ग्राम देवता के समक्ष अपना गायन करती हैं !

धरती मां का पेट फाड़ डाला

खनन उद्योग को गोवा की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी माना जाता है । क्योंकि इस उद्योग से गोवा में रुपया आता है । गोवा में ४० करोड़, ७४ लाख, ३० हजार टन लौह खनिज भंडार थे, जिनका दोहन सन् १९४६-४७ में प्रारंभ हुआ था । सबसे बड़े खनिज भंडार विचोलिम-ऐडवोल पाले (१५ करोड़, ७३ लाख टन), सैनाचलिम-वेलग्विम-पाले (११ करोड़, ५४ लाख, २० हजार टन) और कोडलीशिगोवा (५ करोड़, ६५ लाख, ३० हजार टन) में हैं । प्रारंभ में पहले वर्ष १९४६-४७ में केवल ५२ हजार टन लौह कण निकाले गये थे, लेकिन १९८० में १ करोड़, ३८ लाख, ५ हजार टन हो गया । रुपयों में इसका दाम लगभग पौने दो सौ करोड़ रुपये होता है । यह सचमुच बहुत बड़ी रकम है ।

वस्तुस्थिति यह है कि जैसे-जैसे खानें दूर होती जा रही हैं, इनमें रोजगार कम होता जा रहा है । सन् १९६० में खनन कर्म में ३२ हजार मजदूर लगे हुए थे और खनन हुआ था ५९ लाख, २६ हजार टन का, लेकिन १९८० में मजदूरों की संख्या घटकर ५ हजार हो गयी, लेकिन खनन बढ़कर १ करोड़, ३८ लाख, ५ हजार टन हो गया है । इसका रहस्य है कि खान मालिक मशीनों को बढ़ाते रहे और मजदूरों को घटाते रहे । इस समय लोहे की खानों के अलावा मैंगनीज आदि की खानों में [illegible]००
श्रमिक लगे हुए हैं और २२ हजार श्रमिक

प्राचीन चर्च के प्रांगण में ईसा मसीह की श्वेत संगमरमरी प्रतिमा

जहाजों के लदान और ढुलान कार्य में लगे हैं ।

कुछ वर्ष पहले सरकार ने हैदराबाद के प्रशासन कॉलेज के द्वारा खनन से रोजगार की समस्या पर अध्ययन कराया । उसके अनुसार केवल खनन से १९७८-७९ में १८ हजार मजदूरों को और १९८२-८३ में २०,००० श्रमिकों को रोजगार मिलना चाहिए था, लेकिन यह संख्या तो एक चौथाई ही रह गयी । फिर यह रोजगार तो देर से देर सन् १९९५ में समाप्त होनेवाला है । उस समय तक सब खानें समाप्त हो जाएंगी । उस समय इन श्रमिकों का क्या होगा ? जहां तक खनन करानेवाली बड़ी कंपनियों का सवाल है, उन्होंने अपना उ[illegible] भविष्य सुनिश्चित कर लिया है । एक[illegible] कर्नाटक में डेयरी उद्योग चला[illegible] ने गुजरात में जहाज बनाने के [illegible] अलावा [illegible] के कारखा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित कर दिये हैं ।

गोवा के निवासियों के लिए हरी-भरी पहाड़ियों की जगह खनन के मलवे के ढेर और गहरे गड्ढे छोड़ दिये गये हैं, जिनमें कभी कुछ नहीं उगेगा । इस भूरे रेगिस्तान से अभी भी नदी-नालों में बरसात में मलवा बहकर जाता है । धान के खेतों में यह रेगिस्तान फैल रहा है । राष्ट्रीय समुद्र संस्थान के अरविंद कुंतवालान के अनुसार, " पानी की सतह नीचे चली गयी है । खनन का मलवा समुद्र में जाने से मछलियां कम हो गयी हैं । मछली गोवा निवासियों की मुख्य खुराक ही नहीं, व्यापारिक खेती भी है । पीने के पानी के स्रोत समाप्त हो गये हैं । जंगल तो लुप्त हो ही गया है, लेकिन धूलकणों के कारण नारियल व आम के पेड़ मर गये हैं । बंदरगाह गाद से भर रहे हैं और २-३ वर्षों से वहां पर मलवा निकालना पड़ता है ।"

पाली-बिचौली पंचायत के सरपंच अनंत गणपत पैदरकर ने व्यथित होकर कहा, "२० वर्षों में हमें क्या मिला ? तपेदिक ! पलेला पंचायत में प्रतिमाह एक व्यक्ति तपेदिक से मर जाता है । सब नदियां सूख रही हैं । आज मुझे एक पत्र मिला है । एक गरीब आदमी के मकान में विस्फोटक के धमाके से दरार पड़ गयी थी । हमने मुआवजा मांगा था । सरकार के खनन विभाग का यह पत्र है । वे लिखते हैं कि यह विस्फोट से [illegible] हुआ है । हमने सरकार से कहा [illegible] हमारे लिए कु[illegible] नहीं कर सकते हो तो [illegible] की दी हु[illegible] हवा और पानी तो रहने [illegible]

[illegible] (५ फरवरी ८५) हम पोइरा [illegible] उनके [illegible] झंडियां लेकर स्वागत करने आये थे । इस कृत्रिम हरियाली के चारों ओर भूरी पहाड़ियां थीं, जिनमें पशुओं के खाने के लिए घास तो क्या चाटने के लिए मिट्टी भी नहीं थी । एक जगह गहरी झील बनी हुई थी । लोहे के कणों से लदे ट्रक धूल उड़ाते हुए जा रहे थे । गांधीजी की जीवनी के लेखक तेंदुलकर के जन्म के गांव से हम गुजरे । इस गांव में चारों ओर खनन के कारण तबाही का दृश्य था ।

पोइरा हाईस्कूल के शिक्षकों ने मुझसे कहा, "कोई ऐसा तरीका बताइए, जिससे खनन भी होता रहे और लोगों को नुकसान भी न हो ।" जब मैंने पूछा कि, "आप खनन क्यों जारी रखना चाहते हैं ?" तो उनका उत्तर था, "क्योंकि यहां प्रत्येक परिवार से कम से कम एक सदस्य को खनन से रोजगार मिलता है ?

तो क्या यह रोजगार स्थायी है ? सब जानते हैं कि अगले दशक में समाप्त होनेवाला है । उस समय अगली पीढ़ी का क्या होगा ? वह खनिज मलवे के ऊपर बैठी होगी । एक ही रास्ता है कि अब खनन तत्काल बंद किया जाए

हम मांडवी नदी के किनारे नाव की प्रती[illegible] कर रहे थे । उस पर नारियल के बाग और [illegible] टेकड़ी दिखायी देती थी और फिर धूल से [illegible] हुआ वायुमंडल दीखता था । यह धूल यहां [illegible] रहनेवालों के भविष्य पर चढ़ती हुई धूल थी जिसने मनुष्य, पशु-पक्षी और वनस्पति का भविष्य अंधकारनय बना दिया है । धूल का उपचार हरियाली है और हरियाली से केवल खुशहाली ही नहीं, सुख और शांति भी मि[illegible] है । [illegible] प्रकृति प्रसन्न रहती है, वहां मनुष्य [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम गुणों का विकास होता है । वहां कवि, कलाकार, साहित्यकार और संगीतज्ञ पैदा होते हैं । गोवा की यात्रा के बाद मैं अपना यह संदेश वहां पर जन्मी विभूतियों तक पहुंचाना चाहता हूं, क्या वे अंतिम हैं या उनकी परंपरा कायम रहेगी ।

— नवजीवन आश्रम, पो. सिल्यारा, टिहरी गढ़वाल (उ. प्र,)

शांता दुर्गा मंदिर ⮟

गोवा का मुख्य आकर्षण ⮝

⮟ मंगेशी—लता मंगेशकर का गांव

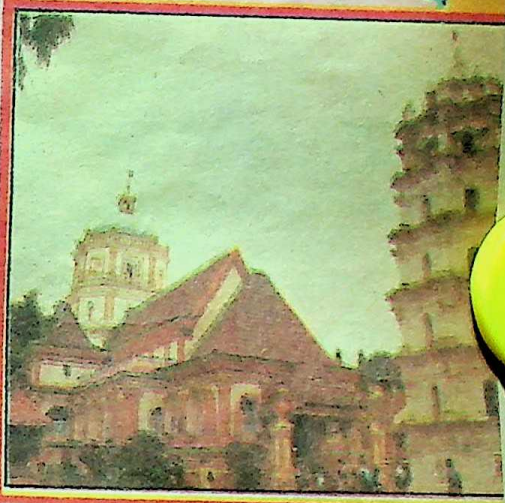

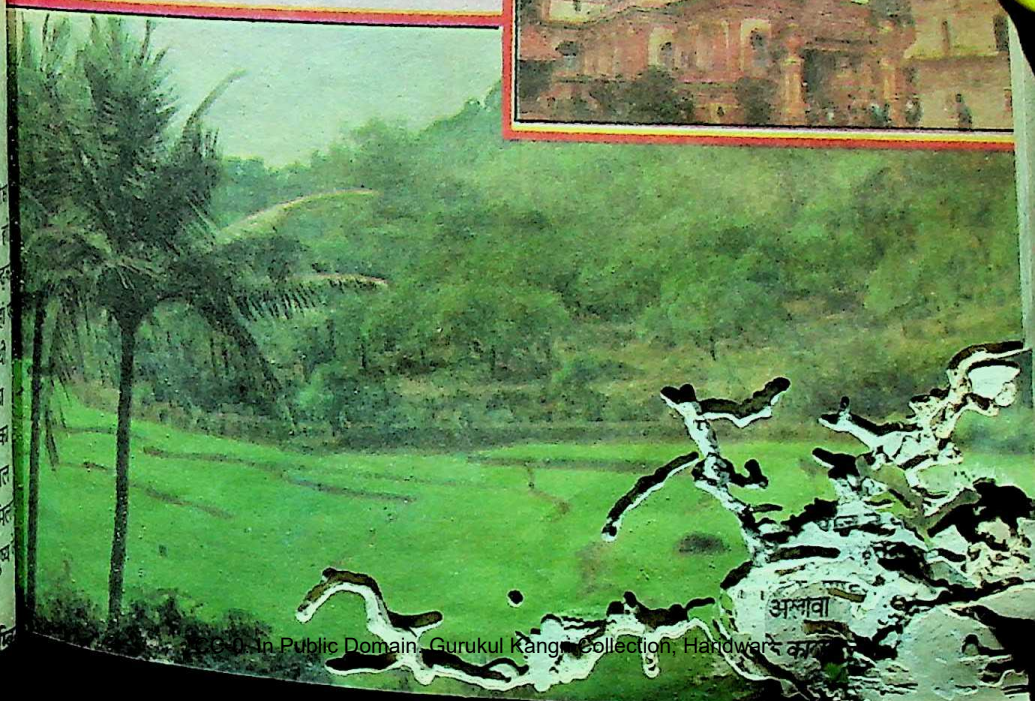

अलवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारदर्शी : म. प्र. सरकार
के सौजन्य से

आदिवासी नृत्य की एक झांकी

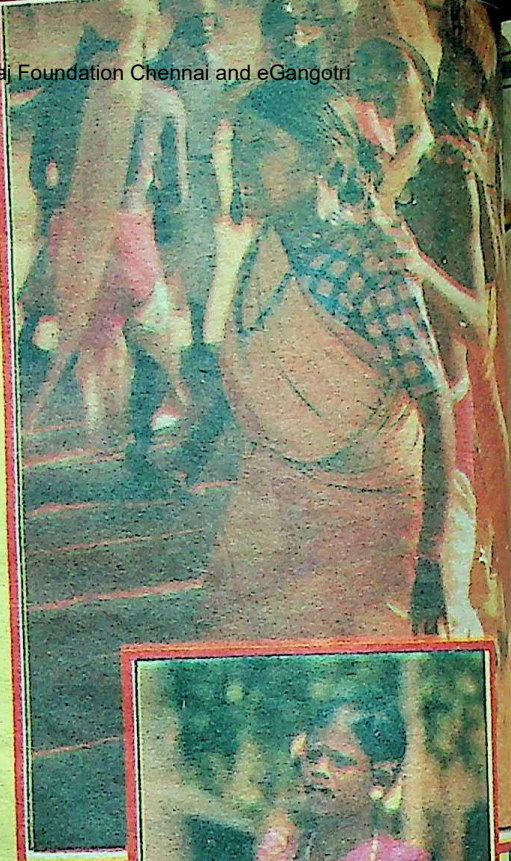

संगीत का मुख्य वाद्य

आदिवासी युवती : जंगल में सौंदर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल उनका घर है

● राजेन्द्र अवस्थी

बहुत पुरानी बात है । बस्तर के राजा की एक अत्यंत रूपवती राजकुमारी थी । उसे अपने सौंदर्य पर गर्व था । राजा ने अनेक राज्यों में उसके लिए वर की खोज की, किंतु राजकुमारी को कोई पसंद नहीं आया । राजा के पास एक हाथी था । इस हाथी से राजकुमारी को प्यार था । उसने यह शर्त रखी, कि जो इस हाथी को परास्त कर देगा, उसी से वह विवाह करेगी, चाहे वह रूपवान हो या नहीं । राज्यभर में राजकुमारी के निर्णय की घोषणा कर दी गयी । कई लोगों ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया, पर हाथी से कुचल डाले गये ।

राजकुमारी यह तमाशा देखती रही । उसे इससे बड़ी प्रसन्नता होती, किंतु उसकी एक दासी चिंतित थी । यह माड़िया जाति की तरुण युवती थी । उसने एक दिन अपने प्रेमी युवक से कहा, कि वह राजकुमारी के इस खेल को बंद करे । प्रेमी में हाथी से लड़ सकने की शक्ति तो थी नहीं, फिर भी उसने कुछ करने का वचन दिया ।

एक दिन एक सुंदर युवक एक नंदी के साथ बस्तर राज्य से गुजर रहा था । एक झील के पास उस माड़िया युवक ने उसे देख लिया । राजकुमारी और नंदी दोनों अत्यंत रूपवान थे । माड़िया ने बस्तर के महाराजा से इनके रूप की चर्चा की और उन्हें बुलाने का आग्रह किया । वे बुलाये गये । पता चला कि वह युवक पड़ोस के राज्य का राजकुमार था । उसने पूछा कि उसे दरबार में क्यों बुलाया गया है ? राजा ने कहा, "तुम्हारा नंदी काफी ताकतवर दिखता है । उसे हमारे हाथी से जूझना होगा । मैं उसकी परीक्षा लेना चाहता हूं ।"

राजकुमार बड़ा चिंतित हुआ । नंदी से उसे प्यार था । वह भला हाथी से कैसे जूझ सकता है । पर नंदी ने उसे विश्वास दिलाया, कि इसमें चिंता करने की कोई बात नहीं है । उसने अपना दाहिना कान हिलाया, उससे कीमती चावलों की वर्षा होने लगी । उसने बायां कान हिलाया, उससे दूध-भात की वर्षा होने लगी । राजकुमार और नंदी ने यह भोजन किया और दोकाटा मैदान में नंदी और हाथी जूझ पड़े । नंदी के प्रचंड आघातों से भयभीत होकर हाथी भाग गया । दूसरे दिन नंदी को एक भेड़िए से जूझना पड़ा । वह भी हार गया । अंत में राजा ने शेर छोड़ा । शेर ज्योंही नंदी पर झपटा, कि नंदी का शरीर लोहे में बदल गया । नंदी की शक्ति का सबको लोहा मानना पड़ा। [illegible] राजकुमारी [illegible] राजकुमार के साथ ब्याह [illegible] । राज[illegible] वहीं घर-जमाई ब[illegible] रहने [illegible] । [illegible] नंदी की सहायता से बस्तर के म[illegible] पड़ोसी राजाओं पर विजय पा[illegible] अलावा [illegible] कारखा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक ने इस तरह राजकुमारी और उस राज्य की रक्षा की । अपनी प्रेमिका दासी से वह ब्याह दिया गया और वे दोनों सदा राजकुमारी के साथ सम्मान से रहे ।

यह बस्तर के माड़िया लोगों की एक लोक-कथा है । यह 'निराई गीत' के समय अकसर धुन, ताल तथा लय के साथ सुनी जा सकती है । 'निराई गीत' माड़िया जाति का प्रसिद्ध लोक-महाकाव्य है । इस लोक-कथा से बस्तर के राज्य-परिवार और माड़ियाओं के संबंधों का पता चलता है । बस्तर में माड़िया गोंडों की संख्या ही सबसे ज्यादा है । ये आदिवासी आज भी अपनी पुरातन संस्कृति को अछूते कौमार्य की भांति सुरक्षित रखे हुए हैं ।

शरीर से पुष्ट, मन से पवित्र

माड़िया युवक शरीर से हृष्ट-पुष्ट, सुंदर, सीधा और लंबा होता है । उसका रंग सुनहला-भूरा और बाल घुंघराले-से होते हैं । मर्द और औरत दोनों के बदन गठे और पुष्ट होते हैं । वे परिश्रमी होते हैं । स्त्रियां ज्यादा मेहनत करती हैं । पुरुष उनकी तुलना में आलसी होते हैं । वे कमर में एक छोटी धोती या लुंगी पहनते हैं । सिर पर पगड़ी बांधते हैं । गले में रंग-बिरंगी जंगली गुरियों की मालाएं धारण करते हैं । इन मालाओं में कौड़ियों का भी उपयोग किया जाता है । स्त्रियां पुरुषों की तरह ही एक छोटी धोती पहनती हैं, जो घुटनों से ऊपर होती है [illegible] ले ढेर-सी मालाओं से [illegible] हैं । यही [illegible] के सौंदर्य में वृद्धि करती [illegible] उनके [illegible] युवकों द्वारा दी [illegible] नके [illegible] कोई कपड़ा नहीं [illegible] लड़कियां [illegible] बाजार या किसी सार्वजनिक स्थानों को जाती हैं, तो गले के सहारे कपड़े का छोटा-सा टुकड़ा लटका लेती हैं । अब तो कुछ कुमारी बालाएं भी इसका प्रयोग करने लगी हैं । स्त्रियां बालों के चारों ओर पीतल के छल्ले पहनती हैं । कान में चांदी या लकड़ी का आभूषण, जो 'ढोसा' कहलाता है, पहना जाता है । बांस का हरका, कंघियां, कर्णफूल, पैरों में पायलनुमा एक जेवर और हाथों में रंग-बिरंगी कांच की चूड़ियां एक माड़िया युवती के मुख्य श्रृंगार प्रसाधन हैं । माड़िया युवती अपना सारा शरीर बड़े प्रेम से गुदवाती है, कारण 'यही तो ऐसे गहने हैं, जो मरने के बाद साथ जाते हैं ।' गहने उनके सौंदर्य को बढ़ाते हैं ।

अनुशासित गांव

मैंने अनेक माड़िया गांव देखे हैं । चांदा जिले में बस्तर की सीमा पर इंद्रावती नदी है । यहां एक गांव है ममरागढ़ । बड़ा रमणीक स्थान है यह । ममरागढ़ के जंगलों में माड़िया लोगों की बस्ती है । गांव में आप जाइए, तो सीमा पर एक कमान लगी मिलेगी और उस पर मरा हुआ बंदर । कहीं-कहीं बंदर की जगह बिल्ली या बिज्जू भी लटकाया जाता है । यही गांव आपका स्वागत करता है । गांव में भूत-प्रेत की बाधा न आ सके, इसलिए ये मरे जानवर लटकाये जाते हैं । थोड़ा आगे चलने पर पत्थरों की कोरी मिलती है । कोरी पर लाल रंग की पताका लहराती है । यह पुरखों की यादगार है । आगे रास्ते के दोनों ओर बांस और फूस की झोपड़ियां होती हैं । झोपड़ियां बहुत साफ-सुथरी रहती हैं । वे अन्य गोंडों और [illegible] की झोपड़ियों से भिन्न होती हैं । प्राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक घर के सामने एक बगीचा होता है। बगीचे में खेती की जाती है। गांव बड़े नहीं होते। किसी गांव में तो केवल दस-बारह झोपड़ियां ही रहती हैं। कहीं-कहीं पहाड़ों के नीचे वृक्षों की छाया में ही झोपड़ियां बना ली जाती हैं। सरसों के पीले फूल जैसी ये झोपड़ियां बड़ी सुंदर दिखती हैं। गांव छोटे होते हुए भी संपन्न होते हैं। इनकी जरूरतें तो वैसे ही थोड़ी हैं। लेकिन जो हैं, वहीं पूरी हो जाती हैं। गांव में एक मुखिया होता है। इसे गायता कहते हैं। एक सिरहा या गुनियां भी रहता है। इसकी झोपड़ी दूर से पहचानी जा सकती है। वह गांवभर का इलाज करता है। गायता का अनुशासन सारे गांव को मानना पड़ता है।

शिकार के प्रेमी : मन के मौजी

माड़िया गोंड की अपनी कोई संपत्ति नहीं होती। उसकी संपत्ति जैसे सारे वनों में बिखरी पड़ी है। जंगली कंदमूल-फल और जंगली जानवरों का मांस—कच्चा और भुना ही उनका मुख्य भोजन है। चावल, कोदों या कुटकी तथा मक्का की पेज वे हमेशा पीते हैं। इन्हीं की खेती भी होती है। खेती करने का अपना ढंग है। वर्षा के पहले कुल्हाड़ी से झाड़ियां काट दी जाती हैं। सूखने पर इनमें आग लगा दी जातीं है। इसी राख में अनाज बो दिया जाता है। हल जोतना एक माड़िया पाप समझता है।

धरती की कसम वह अपनी जान देकर भी पालता है। सन् १९०८ के गदर में इसी कमजोरी का लाभ अंगरेज डी. एस. पी. गेयर ने उठाया था। ऐसी धरती की छाती में वह कुसिया भला कैसे [illegible] सकता है? घर के पास हलरों में [illegible]लियां पाली जाती हैं। शिकार [illegible] कई तरीके हैं। वे धनुष सदा अपने पास रखते हैं। उनके बाणों में माहुर नामक एक जहर होता है। यह जहर खून में जरा भी घुला, कि फिर मौत को कोई नहीं रोक सकता। इस बाण के सहारे वे बड़े भयानक जानवरों को भी मार डालते हैं। कुल्हाड़ी, भाला और फरसे का उपयोग भी शिकार के समय किया जाता है। फंदा लगाने का उनका अपना तरीका भी होता है। शिकार के ये बड़े प्रेमी होते हैं और व्यक्तिगत शिकार के अलावा वर्ष में

एक-दो बार सारा गांव मिलकर सामूहिक शिकार करता है। तब उनका उत्साह देखते बनता है। इस समय जंगली जानवर भय से कांप जाते हैं।

जादू-टोने पर आस्था

जादू-टोने और झाड़-फूंक पर माड़िया अंधविश्वास रखता है। बड़े-से-बड़े रोग का इलाज झाड़-फूंककर कर दिया जाता है। एक बार मैंने एक गांव में एक सिरहा को इलाज करते देखा है। एक [illegible] कांप रही थी, सिरह[illegible] अंगूठा चाव[illegible] का एक टुकड़[illegible]

[illegible] अलावा [illegible] के कारखा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माड़िया गोंड की अपनी कोई संपत्ति नहीं होती । उसकी संपत्ति जैसे सारे वनों में बिखरी पड़ी है । जंगली कंदमूल-फल और जंगली जानवरों का मांस—कच्चा और भुना ही उनका मुख्य भोजन है । चावल, कोदों या कुटकी तथा मक्का की पेज वे हमेशा पीते हैं । इन्हीं की खेती भी होती है । खेती करने का अपना ढंग है । वर्षा के पहले कुल्हाड़ी से झाड़ियां काट दी जाती हैं । सूखने पर इनमें आग लगा दी जाती है । इसी राख में अनाज बो दिया जाता है ।

जा रहा था । उसका विश्वास था कि बुखार उतरकर रहेगा । माड़िया भूत-प्रेतों पर विश्वास करते हैं । जिसकी अकाल मृत्यु होती है, वह इसी योनि में जाता है । उनका विधिवत पूजन किया जाता है । उनके नाराज होने से सारे गांव पर बाधा आ सकती है । झाड़-फूंक और जादू-टोने तथा भूत-प्रेतों पर उनकी अटूट आस्था का ही शायद परिणाम है, कि वे बड़े-से-बड़े रोग और संकट से मुक्ति पा लेते हैं । इनके सिवाय इन सघन वनों में उनका साथी ही कौन है ? न गांवों में वैद्य या डॉक्टर । न आवागमन के साधन । कोसों सड़क का नाम नहीं । बरसात में बड़े-बड़े नदी-नाले जैसे उन्हें घेर लेते हैं ।

सुदृढ़ सामाजिक संगठन

माड़िया गोंडों की कई उपजातियां हैं । जैसे—मरवी, कुहरमी, सोरी, मरकामी, क्वासि आदि । [illegible] पक्षी [illegible] जानवरों पर रखे गये [illegible] गानी [illegible] हैं । यहां [illegible] बरसा[illegible] उनके [illegible] [illegible]नके [illegible] कोई [illegible] लड़कियां [illegible] युवावस्था में होते हैं । अपने जीवनसाथी का चुनाव लड़के-लड़कियां स्वयं करते हैं । एक पुरुष कई स्त्रियां रखता है । स्त्रियां उनकी संपत्ति समझी जाती हैं । विधवा-विवाह और तलाक का उनमें प्रचलन है । शायद ही कोई स्त्री कभी विधवा रहती हो । संपन्न लड़की का पिता अगर यहां कभी-कभी एक लड़के को लाकर रख लेता है । पांच से सात सालों तक उससे काम लिया जाता है । प्रसन्न होने पर उसका विवाह लड़की से कर दिया जाता है । ऐसे लड़के को 'लमसेना' या 'लमहादा' कहते हैं । दहेज [illegible] यहां है नहीं । उल्टे लड़के के पिता को लड़की लेने की कीमत देनी होती है । यौन आचरण निषिद्ध नहीं है । किसी अन्य पुरुष द्वारा गर्भ धारण की हुई नारी को भी कोई दूसरा आदमी स्वीकार कर सकता है । विवाह की विधियां इनके यहां अलग-अलग होती हैं । उस समय खूब नाच-गाना होता है और छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष सब शराब पीते हैं । शराब उनकी [illegible] है । [illegible] एक माड़िया ने मुझसे [illegible] [illegible]-सुथरी रहती हैं । वे अन्य [illegible] झोपड़ियों से भिन्न होती हैं । प्राय[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम ऐसी सरकार को नहीं मानेंगे ।'' माड़िया गोंड बड़े लज्जालु और छरकीले तथा डरपोक होते हैं । वे शहर के लोगों से बहुत डरते हैं, इसीलिए आजकल अनेक सरकारी अफसर इन वन-कन्याओं के सरल स्वभाव का लाभ उठाते हैं ।

माड़िया हिंदु हैं

माड़िया अपने को हिंदु ही मानते हैं और हैं भी । इसलिए उनके सामाजिक रीति-रिवाज बहुत-कुछ हिंदुओं से मिलते-जुलते हैं । उनके देवी-देवता प्रायः जंगलों में और गांव की सीमा पर रहते हैं । देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कई त्यौहार मनाये जाते हैं । वर्ष के प्रारंभ में

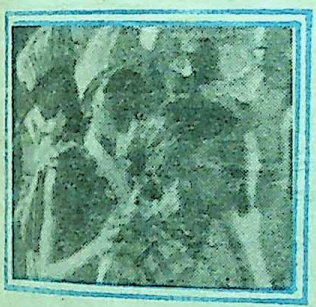

'भीमुल-पांडुम' होता है । वर्षा के देवता की पूजा की जाती है । महुए की फसल आने पर महुआ-देव पूजा जाता है । फरवरी के लगभग 'इरपू-पांडुम' और अप्रैल में 'मरका पांडुम' होता है । 'मरका पांडुम' के समय अनाज की कुटाई की जाती है । दीवाली पर नवान्न आता है तब 'नुकाना-रेंदाना पांडुम' मनाया जाता है । बांस कटने के पहले 'कारा पांडुम' होता है । दशहरा ये लोग बहुत उत्साह से मनाते हैं और बस्तर के राजा को आ[illegible] लियां पाली जाती हैं । शि[illegible]

माड़िया मृतकों को प्रायः गाड़ा जाता है । मरने के बाद वह पुरखों में मिला या नहीं—इसकी परीक्षा की जाती । पुनर्जन्म को वे मानते हैं और इसकी परीक्षा की जाती है कि मरने पर मृतक किस योनि में गया । उनका यह भी विश्वास है कि, मृतक कभी-कभी स्वप्न में आते हैं और ठीक रास्ता बताया करते हैं । मृतकों की याद में स्मारक बनाये जाते हैं । ये स्मारक पत्थर या साज तथा सरई की लकड़ी के होते हैं ।

विश्वास बड़ी चीज है

सघन वनों में रहनेवाले ये माड़िया हमारी नागरी सभ्यता से कोसों दूर हैं । जंगल उनका घर है । उसके झाड़-पेड़ उनके साथी हैं । उनके साथ ही वे नाचते, गाते और अपना सुख-दुःख झेलते हैं । जंगल की धरती से अनेक तरह की जड़ें खोदकर वे निकालते हैं । और यही जड़ी-बूटियां उनका बहुत बड़ा सहारा हैं । मरदपाल के उस बूढ़े गायता की बात मैं आज तक नहीं भूल सकता, जिसने एक जंगली जड़ी उखाड़कर मेरे हाथ में रख दी थी और कहा था ''जाओ बाबू शेर की मांद से उसके बच्चे को उठा लाओ । जब तक यह जड़ी तुम्हारे हाथ में है, शेर तुम्हारा कुछ नहीं कर सकता ।'' मेरी हिम्मत नहीं हुई थी । तब उसने हंसते हुए कहा था, ''नेहरूजी को भी मैंने यह जड़ी जगदलपुर में दी थी । पर सारे देश पर शासन करनेवाला नेहरू भी जंगल के छोटे-से जानवर शेर के सामने जाने की हि[illegible] सका । वि[illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलापसिंह

● विजय अग्रवाल

यदि सौभाग्य या दुर्भाग्य से आपको कभी हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले के मनाली में सैर-सपाटे, हनीमून या तलाक के लिए जाना पड़े, तो वहां आप चाहे और कुछ करें या न करें, किंतु मिलापसिंह से जरूर मिलें । यह मेरी अंतरात्मा की आवाज है कि उससे मिलकर आपको अलौकिक आनंद की खीझभरी अनुभूति होगी । चूंकि मैं और मेरा परिवार इस अनुभूति का भुक्तभोगी रहा है, इसलिए मैं इसे अपना दायित्व समझता हूं कि इस लेख के माध्यम से आपको इस अद्भुत प्राणी की जानकारी दूं, जिसके दर्शन से अन्यथा आप अवश्य ही वंचित रह जाएंगे ।

सुबह की कड़कड़ाती ठंड में जब हम मनाली के गेस्ट हाउस पहुंचे, तो वहां मानसरोवर-जैसा सन्नाटा देखकर सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी । कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें केंद्रीय मंत्रिमंडल की तरह अचानक फेर-बदल न कर दिया गया हो । वहां का माहौल देखकर मेरी हालत उस मंत्री की तरह होने लगी, जिसे प्रधानमंत्री ने राजधानी से बाहर जाने से रोककर मंत्रिमंडल में फेरबदल करने की घोषणा कर दी हो । मेरी इस चिंता को भांपकर मेरे हिमाचली मित्र डॉ. सिंधू को भी चिंतित होना पड़ा, और वह हमें हमारे ही हवाले छोड़कर गेस्ट हाउस के रखवाले की खोज में चल दिये ।

करीब पौन घंटे के अथक अन्वेषण के पश्चात वह एक मरियल से जीव के साथ हमारे समक्ष उपस्थित हुए । यह जीव थे मिलापसिंह— बाल देवदार की पत्तियों की तरह तने हुए, चटियल मैदान में प्रभु की कृपा से कहीं-कहीं उग आयी बेतरतीब घास की तरह मूंछें, पैंट कमर पर से रिटायरमेंट लेने की जल्दबाजी में, शरीर पर गबदू किस्म की लाल जैकेट, कद ५ फुट, ५ इंच, रंग गेहुंआ, सामने के दो दांत बाहर आने को निरंतर व्याकुल तथा बदन डायटिंग में लगी कामिनी-सा छरहरा । कुल मिलाकर इतना शांत और शरीफ कि देखते ही गुस्सा मिल्खासिंह हो गया । उसने अपनी सफाई देते हुए फरमाया कि उसे खबर थी कि हम लोग आठ बजे आएंगे ।जब मैंने उसे बताया कि खबर तो ठीक ही थी और अभी दस बज रहे हैं, तो उसने पुनः फरमाया कि 'रात के आठ बजे ।' मैंने उसके सिर से फरमाने की गुंजाइश निकालते हुए जब उससे पूछा "क्या रात में मनाली में कोई बस आती है ?" तो उसने तपाक से तपाका— "नहीं ।" "तो फिर तुमने हम लोगों [illegible] पहुंचने का समय रात में कैसे निर्धारित कर लिया ?" इस प्रश्न के उसके उत्तर का भाव था कि इस मुद्दे पर तो उसने कभी गंभीरता से गौर ही नहीं किया ।

लेकिन जब हम लोग गेस्ट हाउस के अपने कमरे में पहुंचे, तो उसके बदबूदार मुखारविंद से चाय का ऑफर पाकर गदगदा उठे । हम लोगों को गदगदाया देख उसने तुरंत अपनी पीठ ठोंकी— "साहब, मैंने पहले ही आपके लिए चाय का इंतजाम कर रखा था । क्योंकि मनाली में तो सुबह-सुबह उनको भी चाय चाहिए, जो उठकर गंगाजल पीते हैं । फिर आप तो साहब हैं । इसलिए चाय ही पीते होंगे ।" यह कहकर थोड़ी देर में मिलापसिंहजी ने सचमुच गंगाजल सदृश्य शीतल एवं जलनुमा पतली चाय प्रस्तुत कर दी । हमारे पास उसे चरणामृत-सदृश्य ग्रहण करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था । इससे पहले कि आप मिलापसिंह के आगे अपनी शिकायत रखते, वह वहां से गायब हो चुके थे ।

शाम की चाय के वक्त जब वह पुनः अवतरित हुए, तो मेरा नाराज होना स्वाभाविक था, क्योंकि उससे पहले मेरी पत्नी मिलापसिंह के नाम पर मुझसे नाराज हो चुकी थी । शायद मिलापसिंह को पहले से ही मालूम था कि साहब नाराज होंगे, इसलिए मैंने गर्जना शुरू ही की थी कि उसने बोलना शुरू कर दिया— "साहब, क्या करता ! गेस्ट हाउस के साहब की बीवी ने अचानक घर पर बुला लिया था ।" "गेस्ट हाउस के साहब [illegible] सुनकर मेरी बीवी विशेष [illegible] से चौंक [illegible] क्योंकि वे लोग तो [illegible] पास आये थे, और फिर हम [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना खाने निकल गये थे। उसके इस उत्तर के गोले को ध्वस्त करने की मुद्रा में जैसे ही मेरी पत्नी ने अपनी तोपनुमा गरदन उठायी, देखा कि शत्रु पलायन कर चुका है। मिलापसिंह पुनः गायब थे।

अब हम लोग समझ गये कि मिलापसिंह के भरोसे रहना बरफ की चोटी पर कंडे सेकने-जैसा ही है। लेकिन उसके बिना काम भी तो नहीं चल सकता था ? ऐसी स्थिति में मेरी समझदार पत्नी ने अनमने भाव से मजबूरी के साथ यह कहकर गृहिणी का कार्यभार संभालने का निश्चय किया कि 'इस किचन से तो शायद स्वर्ग में भी मुक्ति न मिले।' इस निश्चय के उपरांत हम लोगों ने मिलापसिंह के 'किचन-कम-बेडरुम' में प्रवेश किया, जो उजड़े सराय की तरह हमेशा खुला रहता था। वहां मौजूद थे— दाहिने ओर की पटरी पर पीत वर्ण से श्याम वर्ण को प्राप्त होता एक अदद स्टोव, बीड़ी की जली हुई टूंटियां, मिट्टी के तेल का चिकटाया हुआ डब्बा, माचिस की जली-अधजली अनगिनत तीलियां, कुछ डिब्बे और कुछ बरतन। बायीं ओर ट्रेन के बर्थ की तरह सोने का इंतजाम था। उस बर्थ के सिरहाने दीवार पर एक तसवीर थी, जिसमें मिलापसिंह किसी लड़की के गले में हाथ डालकर खड़ा था। और पैर की ओर था— कैलाशपति शिव का कम-से-कम चार वर्ष पुराना कैलेंडर। साथ ही इसी कमरे में था— एक बाश बेसिन, जिसे मिलापसिंह ने शा[illegible] ही कभी धोया हो। [illegible] इस क[illegible] की तरह निरीक्षण करने के [illegible] के कानून और व्यवस्था की हो भी [illegible] हुए मेरी पत्नी ने उसकी व्यवस्था अपने हाथ में लेने संबंधी अध्यादेश जारी कर दिया, जो तत्काल प्रभाव से लागू हो गया। हालांकि इससे मेरा 'मनाली मूड' उ[illegible] गया, लेकिन करता भी क्या। आखिर भूखे रहकर कब तक गोपाल के भजन गाये जा सकते थे। नयी व्यवस्था के अंतर्गत यह फैसला किया गया कि सुबह जल्दी उठकर इससे पहले कि मिलापसिंह अंतर्ध्यान हो जा[illegible] उसके दर्शन करके उसके किचन का प्रयोग किये जाने के बारे में उसे इत्तला कर दी जाए, साथ ही उससे पूरी विनम्रता के साथ प्रार्थना [illegible]

जाए कि वह सुबह-सुबह डेढ़ लीटर दूध ल[illegible] की मेहरबानी करना कभी न भूले।

मिलापसिंह रात में कब लौटता था, यह स्वयं मिलापसिंह को भी पता नहीं होता था। लेकिन हम लोगों ने सुबह तो उसे घर ही दबोचा। हुआ यों कि जब मैं उसके बेडरूम [illegible] समक्ष उपस्थित हुआ, तो मुझे उस समय 'ह[illegible] अटैक' होते-होते बचा, जब मैंने उसके बेडरूम [illegible] के कभी भी बंद न रहनेवाले दरवाजों को बं[illegible] पाया। लेकिन ईश्वर की कृपा से वे दरवाजे हलके-स[illegible] धक्के से ही खुल गये। तो अंदर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लोगों के सामने पहुंचते ही उन्होंने बिना कुछ पूछे सफाई दी— "साब ! हीटर कहीं नहीं मिला ।" और उसने यह भी बताया कि हीटर के चक्कर में उसे यह याद करने का मौका ही नहीं मिला कि लंच भी बनाना है । उसकी इन करतूतों से परेशान होकर हम लोगों ने उसका नाम रख दिया— 'खिलाफसिंह ।'

देखता हूं कि कमरे में ६० वाल्ट का बल्ब जल रहा है, और मिलापसिंह निर्द्वंद्व भाव से सोये हुए हैं— जरसी पहने-पहने । 'आखेट युग' के उनके चमड़े के जूते फर्श पर औंधे मुंह पड़े हुए हैं । लेकिन चूंकि पतलून कहीं भी पड़ी या टंगी नजर नहीं आयी, इसलिए मेरी प्रशासकीय एवं इन्वेस्टिगेटिव बुद्धि को यह निष्कर्ष निकालते देरी नहीं लगी कि वह सपतलून सो गया है । उसके सीने के पास सफेद रंग की एक बिल्ली कुड़मुड़ाकर निद्रामग्न थी, जो मेरे प्रवेश करते ही हड़बड़ाकर भाग खड़ी हुई । इसके बावजूद मिलापसिंह की निद्रा में कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ । कहां तो हम मिलापसिंह से सुबह मिलने की चिंता में रातभर जागते रहे थे, और कहां यह मिलापसिंह था कि उसे किसी की कोई चिंता ही नहीं थी, मजे से खर्राटेरहित नींद ले रहा था । सचमुच, मुझे उसकी इस निश्चिंतता से ईर्ष्या हुई, और मन ने सोचा कि 'काश ! मैं भी मिलाप सिंह बन पाता ।' लेकिन तुरंत सजग होकर उसके कमरे के बाहर रखे एक स्टूल पर बैठकर लोकमान्य तिलक का 'कर्मयोग' पढ़ने बैठ गया कि कहीं ऐसा न हो कि मिलापसिंह उठे, और फरार हो ले । तो अब दृश्य यह था कि मिलापसिंह घोड़ों को छुट्टा छोड़कर अंदर सो रहे थे, और मैं बाहर स्टूल पर बैठा उनके उठने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

मिलापसिंह की निद्रा जैसे ही भंग हुई, मैं उस पर झपट पड़ा, और उसे अपनी पत्नी के सामने हाजिर कर दिया । मेरी पत्नी ने उसे एक साथ दो हिदायतें दीं । पहली यह कि वह रोज सुबह-डेढ़ किलो दूध ला दिया करे । और दूसरे यह कि वह दूध को गरम करने के बाद अपने 'किचन-कम-बेडरुम' का दरवाजा बंद कर दिया करे, ताकि वह बिल्ली की नजर और जीभ से सुरक्षित रह सके । पहली बात तो उसने बिना किसी वाद-विवाद के मान ली । लेकिन वह दूसरी बात मानने को तैयार नहीं हुआ । क्योंकि उसका कहना था कि यहां तो दूर-दूर तक किसी बिल्ले या बिल्ली तो क्या तिलचट्टे तक का नामो-निशान नहीं है । अंत में हमने यही फैसला किया कि वह दूध की बाल्टी हम लो[illegible] के हाथ में थमा जाएगा, और हम उसे गर[illegible] करके उसके ही किचन में रखकर दरव[illegible] कर दिया करेंगे । मिलापसिंह ने हमारे [illegible] आदेशनुमा अनुरोध [illegible] से अप[illegible] स्वीकृति दे दी ।

पिछली रात [illegible] ठंड बहुत अधिक बढ़ [illegible] थी । [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन दीवाली थी। इसलिए सड़कें भी धीरे-धीरे सूनी होती जा रही थीं। नतीजे में मन कुछ-कुछ मुरझा-सा रहा था। किंतु मिलापसिंह के मुख से निसृत कुछ शब्दों ने मेरे मुख कमल एवं हृदय कमल में ताजगी ला दी। उन्होंने मुझ पर एवं मेरे परिवार पर; जिसमें छह साल का एक बेटा भी शामिल था, रहम खाते हुए दो वायदे किये। पहला यह कि वह अभी जाकर हीटर लाता है, ताकि साहब को कुछ गरमी मिल सके। दूसरा यह कि वह आज खाना स्वयं बनाकर खिलाएगा। मिलापसिंह के भावविहीन मुख-मंडल से इन भावनायुक्त शब्दों को जन्म लेते देखकर मुझे अपने भाग्य पर थोड़ा शक तो हुआ। किंतु एक तो शक का कोई ठोस कारण नहीं था। फिर इन दोनों बातों का कोई विकल्प भी नहीं था। इसलिए मैंने इस उदात्त एवं सेवाभाव के लिए मिलापसिंह की प्रशंसा की। मिलापसिंह हीटर लेने चले गये, और मैं अपनी पत्नी को यह शुभ सूचना देने। लेकिन बिल्ली और दूध की चिंता से ग्रस्त हो उठी मेरी पत्नी ने पहले से ही इस 'विजय-मिलाप संवाद' का श्रवण-लाभ प्राप्त कर लिया था। अतः वह भी खुश थी कि आज खाना नहीं बनाना पड़ेगा।

एक घंटा, दो घंटा, तीन घंटा। लगा कि मिलापसिंह हीटर लेने नहीं, बल्कि नया हीटर बनवाने गया हुआ है। गुस्से के मारे मेरा पारा [illegible] की चोटी पर चढ़ गया। फलस्वरूप [illegible]क हो गयी, और बेचारे बच्चे को [illegible]। हम लोग समझ गये [illegible] मैं तो आज दीवाली के [illegible] जाएगा, जिसके [illegible] और न ही इच्छा। [illegible] हो भी [illegible]

अंततः जब दोपहर के डेढ़ बज गये, और न हीटर आया, न मिलापसिंह, तो हम लोग खाना खाने के लिए निकल पड़े। अभी थोड़ी ही दूर चले होंगे कि क्या देखते हैं कि मिलापसिंहजी अपने दोनों हाथों को अपनी जरसी की जेबों में डाले हुए झूमते-से चले आ रहे हैं। हम लोगों के सामने पहुंचते ही उन्होंने बिना कुछ पूछे सफाई दी— "साब ! हीटर कहीं नहीं मिला।" और उसने यह भी बताया कि हीटर के चक्कर में उसे यह याद करने का मौका ही नहीं मिला कि लंच भी बनाना है। उसकी इन करतूतों से परेशान होकर हम लोगों ने उसका नाम रख दिया— 'खिलाफसिंह।'

यहां तक कि दीपावली के दिन भी मिलापसिंह खिलाफसिंह ही रहा। उसने दीपावली के नाम पर न तो अपने कमरे की सफाई की, और न ही अपने चेहरे की। हालांकि उसे मालूम था कि आज हम लोग कहीं नहीं जाएंगे, बल्कि उसके साथ ही रहेंगे। इसके बावजूद सुबह से उसके दर्शन नसीब न हुए। शाम को मेरी पत्नी ने ही उसके चौके की थोड़ी सफाई कर दी। हम लोगों ने पूजन किया और मिलापसिंह के लिए मिठाई रख दी, जिसे मिलापसिंह के शब्दों में "मैं तो रात में यहां आया ही नहीं। दीवाली थी न, इसलिए। मिठाई शायद कुत्ते और चूहे खा गये होंगे।" यानि कि उनके कमरे में बिल्ली का ही नहीं, बल्कि कुत्तों और चूहों का भी प्रवेशाधिकार सुरक्षित था।

दीपावली से अगला पूरा दिन खाली था। इसलि[illegible] हम लोगों ने फैसला किया कि [illegible] कर[illegible] [illegible] व्यास [illegible] भेंट [illegible] गये। तो अंदर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम लोगों के इस फैसले की भनक मिलापसिंह को मिली, तो वह पूरी तरह उसके खिलाफ हो गया । अंततः उसने हम लोगों की इस स्वीकृति के बाद हमारे इस कार्यक्रम को अपनी हरी झंडी दिखायी कि वह भी हम लोगों के साथ चलेगा । इस प्रकार व्यास के किनारे पहुंचने से पहले ही मिलापसिंहजी ने कबाब में हड्डी बनकर सारे रोमांटिक मूड की धज्जियां उड़ा दीं । केवल इतना ही नहीं, बल्कि लाख मनाने, लाख समझाने और आखिर में लाख झिड़कने के बावजूद भी उसने मेरी पत्नी की एक लघु-सी इच्छा पूरी नहीं होने दी । मेरी पत्नी चाहती थी कि वह हिमाचली ड्रेस धारण कर व्यास की धारा के मध्य स्थित हो अपनी कुछ तसवीरें उतरवाए । लेकिन मिलापसिंह था कि इसके लिए अंत तक तैयार नहीं हुआ । अब तो मेरी पत्नी का वाक्य सुनने एवं गुनने लायक था । मेरी इस वैधानिक एवं सप्तपदी ब्याहता ने मुझसे कहा, "फैसला कर लो कि तुम्हारी पत्नी मैं हूं, या मिलापसिंह ।" यदि मिलापसिंह 'नारी' होता तो फैसला करने की कुछ गुंजाइश भी बचती । लेकिन यहां तो फैसला करने को भला था ही क्या । मैंने उसे बहुत विश्वास दिलाने की कोशिश की कि 'तुम्हीं मेरी पत्नी हो ।' लेकिन उसने मेरी बात को 'पुरुषों की बात' कहते हुए मिलापसिंह को मेरी ब्याहता घोषित कर दिया ।

इस प्रकार मैं और मिलापसिंह न चाहते हुए भी अवैध परिणय सूत्र में बांध दिये गये ।

अंततः उस 'अवैध पत्नी' से जुदाई की वेला आ ही गयी । मेरी पत्नी [illegible]खी थी कि [illegible]सिंह के [illegible] कचर[illegible] [illegible]

मिलेगी ।

मिलापसिंह उस अंतिम दिन सचमुच एक पतिव्रता की भूमिका निभाते हुए शाम ठीक पांच बजे सामान की पैकिंग के लिए उपस्थित हो गया । मैं उसे देखकर खुश हुआ, और मेरी पत्नी मुझे खुश देखकर दुःखी । उसके दुःख का कारण मिलापसिंह की खुशी थी । उसने सही समय पर उसकी उपस्थिति की ससंदर्भ व्याख्या करते हुए कहा, "मिलापसिंह आज पहली बार इसलिए सही समय पर आया है, ताकि वह हम लोगों से छुटकारा पा सके । अन्यथा उसने अपनी मां के पेट से भी सही समय पर जन्म नहीं लिया होगा ।" खैर हम दोनों इस तरह की दार्शनिक व्याख्याओं के आदी थे ।

मैंने चलते वक्त मिलापसिंह को पचास का एक नोट दिया, जिसे उसने बिना किसी संकोच के ले लिया । मेरे बेटे ने उसकी इस कार्रवाई को 'बेशर्मी की हद' तथा पत्नी ने 'अवैध संबंधों की कीमत' करार दिया । इस प्रकार मिलापसिंह ने हम लोगों से, तथा हम लोगों ने मिलापसिंह से छुट्टी पायी

लेकिन उससे शारीरिक तौर पर अलग होने के बावजूद मेरा परिवार उससे पूर्ण तौर पर अलग नहीं हो पा रहा था । वह इस कारण कि [illegible] पर पहुंचकर जब मेरी पत्नी ने अपना [illegible]रदान खोला, तो उसमें से नकली मो[illegible] [illegible] हार नदारद था । पत्नीश्री म[illegible] [illegible]पसिंह के डर से उस हार को [illegible] [illegible]ीचे रखा करती थीं । मेरे [illegible] था [illegible]गेस्ट हाउस का [illegible] [illegible]ने से पहले उसने [illegible] [illegible]रदान [illegible] था । और अब [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी या किसी प्रेमिका के गले की शोभा बढ़ा रहा होगा। मुझे अपनी पत्नी की बात में दम इसलिए नजर आया, क्योंकि गेस्ट हाउस का वही अंतिम दिन एकमात्र ऐसा शुभ दिन था, जब मिलापसिंह सही समय पर हाजिर हुआ था। खैर..., जो होना था, सो हो गया था। लेकिन जो नहीं होना था, लेकिन हो रहा था, वह यह था कि शायद ही कोई दिन ऐसा होता हो, जिस दिन हम लोगों की बातचीत के बीच मिलापसिंह बिराजे न रहते हों। चाहे समय की बात हो, या जिम्मेदारी की, चाहे नौकर की बात हो, अथवा कहीं बाहर जाने की, मिलापसिंह हमेशा की तरह अपने पीले दांत निपोरे, लाल रंग की गबदू जैकेट में हाथ डालकर गरदन झुकाये हाजिर हो जाते थे— अपने नाम के अनुकूल हमेशा। उससे बिछुड़ना सचमुच बहुत मुश्किल था। मेरी वही पत्नी जो पहले मनाली जाने के नाम पर बल्लियों उछला करती थी, अब सबको वहां नहीं जाने की सलाह दे रही थी, क्योंकि वहां मिलापसिंह था।

दुर्भाग्य यदि एक बार आपके साथ हो ले, तो फिर वह पीछा नहीं छोड़ता। मिलापसिंह हम लोगों के लिए एक ऐसा ही दुर्भाग्य हो गया था। और फिर उस दिन तो हद ही हो गयी, जब शनिवार की सुबह साढ़े सात बजे हम लोगों ने मिलापसिंह को अपने दरवाजे पर खड़ा पाया। मेरे एक ज्योतिषी मित्र ने मुझ पर शनि का प्रकोप तक साढ़े साती की दशा बतायी थी। मुझे आज वह मिलापसिंह की उपस्थिति [illegible] लेती [illegible]यी दी। कहां तो उसका न[illegible] जीवन का तनाव का [illegible] भी [illegible] था। और कहां वह आज स्वयं सशरीर उपस्थित हो गया था। उसे देखते ही मेरी पत्नी अपने गले पर हाथ फेरती हुई अंदर चली गयी। बेटा 'खिलाफसिंह, खिलाफसिंह' कहते हुए न जाने कहां भाग गया। अब रह गया अकेला मैं। मैं समझ गया कि हो-न-हो, खिलाफसिंह को वहां की नौकरी से निकाल दिया गया होगा, और अब यह नौकरी की तलाश में मेरे पास आया है।

मैंने जानबूझकर हड़बड़ी दिखाते हुए यानि कि कहीं जाने की जल्दी की व्यस्तता का

खूबसूरत अभिनय करते हुए उस ठिठुरती ठंड की सुबह में दिल्ली चले आने का कारण पूछा। जवाब में हमेशा की तरह उसने बोलने की बजाय अपने जैकेट की अंदर वाले पाकेट में हाथ डाला। लेकिन हाथ को अंदर ही न रखकर एक पोटली निकालकर मुझे थमा दी। उस पोटली में था— मेरी पत्नी का आर्टिफिशियल मोतियों का खोया हुआ हार। मैं उस हार को देखकर दंग रह गया। पत्नी की तेज आवाज दी। वह नहीं आयी। फिर आवाज दी। फिर भी नहीं आ[illegible]। लेकि[illegible] 'हार' के साथ आ[illegible]ज दी, तो व[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

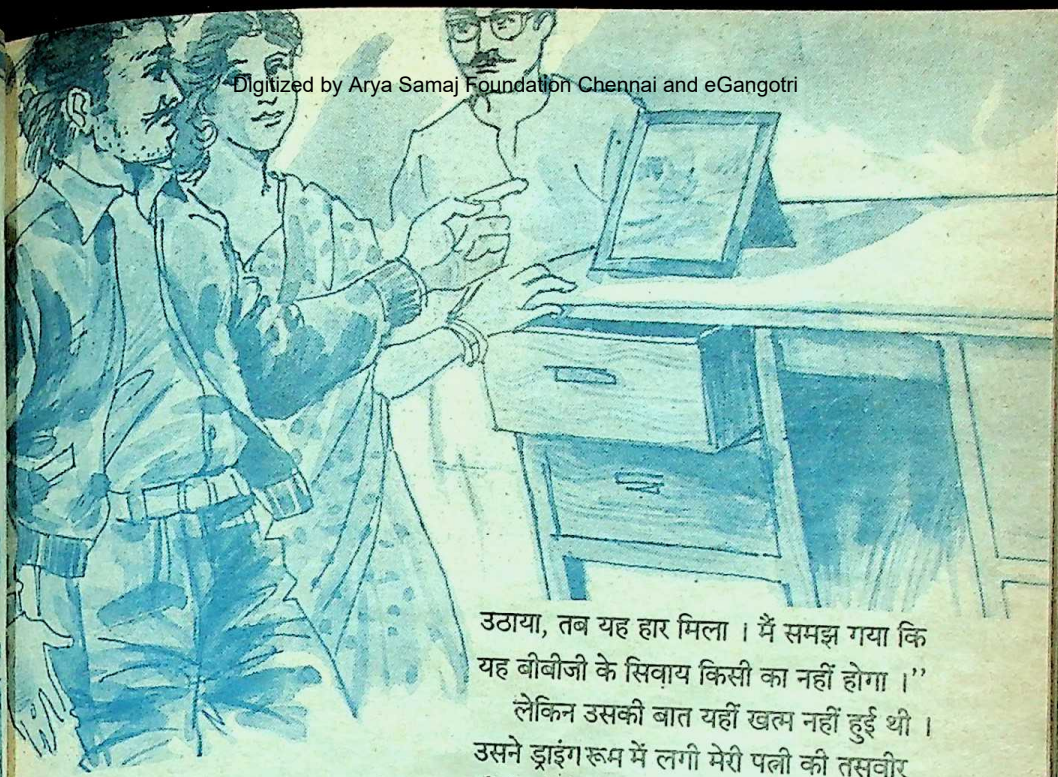

आयी । अब मेरी पत्नी हार को देख रही थी, मैं मिलापसिंह को देख रहा था, और मिलापसिंह ड्राइंग रुम में लगी मेरी पत्नी की उस तसवीर को देख रहा था, जो उसने व्यास नदी के किनारे हिमाचली ड्रेस पहनकर खिंचवायी थी । मेरी पत्नी जब भी इस तसवीर को देखती, उसे व्यास नदी में न उतरने देने की मिलापसिंह की जिद्द याद आ जाती ।

जहां मिलापसिंह होंगे, वहां तो सन्नाटा होगा ही होगा । अतः इस सिद्धांत के मुताबिक यहां भी सन्नाटा था । ताज्जुब की बात यह कि इसे भंग करने का दुस्साहस किया स्वयं मिलापसिंह ने । अपनी गरदन नीचे झुकाये निर्विकार भाव [illegible] बोला— "साहब ! आपके जाने के [illegible] बदलने के [illegible] तकिया उठाया, तब यह हार मिला । मैं समझ गया कि यह बीबीजी के सिवाय किसी का नहीं होगा ।"

लेकिन उसकी बात यहीं खत्म नहीं हुई थी । उसने ड्राइंग रूम में लगी मेरी पत्नी की तसवीर को देखने के बाद मेरी पत्नी की ओर गरदन झुकाकर कहा— "बीबीजी ! मैंने उस दिन आपको व्यास नदी के बीच में जाकर फोटू नहीं खिंचवाने दिया था । असल में बीबीजी ! दीवाली के दिन ही उसी जगह पर नदी के बीच में खड़े होकर फोटो खिंचवाते वक्त मेरी पत्नी का पांव फिसल गया था । इसके बाद से वह कभी नहीं मिली मुझे । उस दिन से मुझे उस जगह से डर लगने लगा । लेकिन दीवाली की रात को मैं वहां जाए बिना नहीं रह पाता ।"

आज पहली बार हम लोगों ने मिलापसिंह की उन सूखी और सूनी आंखों में पानी की झिलमिलाहट देखी । मैंने सोचा कि [illegible] ! यह चालाक [illegible] मिलापसिंह [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तथ्य से किसी धर्म को इनकार नहीं कि एक पुरुष और स्त्री के मेल से मानवकुल का आरंभ हुआ । दुनिया के विभिन्न धर्मों में ये प्रथम पुरुष और स्त्री आदम और हव्वा, मनु और ईड़ा, ऐडम और ईव और ब्रह्मा और हव्यवति के रूप में नजर आते हैं ।

जब मर्द-औरत ही

किसी भी धर्म के दायरे में रहकर हम जरा उस समय के बारे में विचारें जब संसार में यही एक मर्द औरत थे । फिर उनकी संतानें हुईं और संतानों की संतानें हुईं । इस प्रकार इनसानों की

प्रभुत्व होने लगा । एक-दूसरे के प्रति निश्छल और स्वार्थाहीन भावनाओं की जगह निजी स्वार्थ की भावनाओं ने ले ली . . . तो पहले उनके स्वामी ने उन्हीं के बीच रहनेवाले सज्जनों द्वारा उन्हें समझाया, डराया, धमकाया, किंतु जब उनकी सरकशी हद से बढ़ गयी तब उसने उनका अस्तित्व ही समाप्त कर देने की ठान ली . . . फिर क्या हुआ ?

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम् ।

हे अर्जुन ! जब-जब भी धर्म की ग्लानि

जल-प्रलय

कहानी विभिन्न धर्मों में

● अल्लाम् अलहिन्दी

संख्या में नितदिन वृद्धि होने लगी । आबादियां बढ़ने लगीं । और फिर एक समय ऐसा आया कि वह स्थान जहां सारे लोग मिल-जुल कर रहते थे, नाकाफी हो गया, और एक ही पूर्वज की संतान होते हुए भी उन लोगों को अपनी मातृभूमि को अलविदा कहकर विभिन्न टुकड़ियों में विभिन्न क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण के लिए विवश [illegible] पड़ा ।

फिर वह समय भी आया कि लोग अपना धर्म और जीवनार्थ भूल [illegible] । सत्यमार्ग से [illegible] होने लगे । उन पर लोभ और लालच का

और अधर्म का प्रभुत्व होता है, तब-तब मैं प्रकट होता हूं । (**श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय [illegible] श्लोक ७**)

इस समय हमारे सम्मुख तीन ग्रंथ हैं; वेद, बाइबिल और कुर्आन— और इन तीनों ग्रंथ [illegible] वे पृष्ठ खुले हुए हैं जिनमें उक्त परिस्थिति पैदा होने के बाद की कहानी लिखी है । और तीनों ग्रंथ की कहानियों में इतनी समानता है कि थोड़ी-सी भिन्नता का कोई महत्त्व नहीं रह जाता । ये तीनों ग्रंथ दुनिया के तीन विभिन्न [illegible] से संबंध रखते हैं, जिनकी भाषा एवं सभ्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक-दूसरे से अति भिन्न है ।

आइए हम तीनों ग्रंथ की कहानियों पर नजर डालकर एक रोचक रहस्योद्घाटन से लाभान्वित हों ।

वेद की कहानी

'विष्णु का आज्ञाकारी मनु उसके ध्यान में लीन था । एक बार विष्णु ने उसे स्वप्न में बताया कि 'हे प्रिय मनु सुनो, सातवें दिन प्रलयागमन होगा, तुम सज्जनों के साथ नाव में बैठ जाना ।'

(भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व खंड १ अध्याय ४)

'प्रलयंकारी बाढ़ के समय जब सारी पृथ्वी डूब जाएगी, तब तुम्हारे द्वारा सृजन का आरंभ होगा ।'

(मत्स्य पुराण अध्याय ४ श्लोक १४)

इस प्रकार मानकर उस महान पुरुष ने तीन सौ हाथ लंबी, पचास हाथ चौड़ी और तीन हजार हाथ गहरी सुंदर नौका बनायी । समस्त जीव-जंतुओं के जोड़े और अपने कुटुंब के साथ नौका में सवार होकर विष्णु के ध्यान में लीन हो गया . . . । चालीस दिन तक प्रलयंकारी वर्षा हुई । भारत वर्ष पानी में डूब गया और चार समुद्र मिलकर एक हो गये । विष्णु का आज्ञाकारी मनु अपने कुटुंब के साथ बच गया ...

(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व खंड १ अध्याय ४)

बाइबिल की कहानी

नोहा, सत्यपुरुष अपने काल के लोगों में निर्मल था । और नोहा ईश्वर के साथ चलता रहा ... और ईश्वर ने नोहा से कहा सारे मनुष्यों का विनाश मेरे निकट आ पहुंचा है, क्योंकि उनके कारण पृथ्वी अत्याचारों से भर गयी है । अतः देख, मैं पृथ्वी सहित उन्हें नष्ट करूंगा । तू गोफिर की लकड़ी की एक नौका अपने लिये बना . . . और ऐसा करना कि नौका की लंबाई ३०० हाथ, चौड़ाई ५० हाथ और ऊंचाई ३० हाथ हो । और उसमें तीन खंड हों .... और देख, मैं स्वयं पृथ्वी पर प्रलयंकर बाढ़ लानेवाला हूं । और सब जो पृथ्वी पर हैं उनका विनाश हो जाएगा, पर तेरे साथ मैं अपना वचन स्थित रखूंगा । तू नौका में बैठ जाना और तेरे साथ तेरे

देवमालाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब आइए विश्व की सर्वप्राचीन और समस्त मानवजाति एवं भाषाओं की स्रोत अर्थात बाबिल भूमि के खंडहरों से हस्तगत होनेवाली इस कहानी का देवमालाई रूप देखें और गौर करें कि पूर्ण रूप से देवमालाई रंग में रंगी हुई होने के बावजूद तीनों धर्मग्रंथ से कितनी समानता रखती है ।

पुत्र, तेरी पत्नी, और पुत्रों की पत्नियां और जंतुओं की प्रत्येक प्रजातियों में से दो-दो अपने साथ नौका में ले लेना । नोहा ने ऐसा ही किया । सात दिन के पश्चात ऐसा हुआ कि तूफान का पानी पृथ्वी पर आ गया ... समुद्र के सारे स्रोत फूट निकले, और आकाश की खिड़कियां खुल गयीं । चालीस दिन और चालीस रात वर्षा होती रही .... और पृथ्वी के सारे जीव मर गये, मात्र एक नोहा बचा या वे जो नौका में सवार थे ... फिर नौका अरारात की पहाड़ियों पर टिक गयी । उसने एक कौए को उड़ाया (जो वापस न आया) ..., फिर उसने एक कबूतर को उड़ाया, ताकि पृथ्वी पर देखे कि पानी घटा या नहीं । जब पृथ्वी बिलकुल सूख गयी, तब ईश्वर ने नोहा से कहा, 'अपना गोत्र बढ़ाओ, बढ़ो और पृथ्वी को पुनः श्रृंगारित करो ।'

(बाइबिल, सृजन, अध्याय : ६, ७, ८, ९)

[illegible] की कहानी

[illegible] गयी नूह की ओर कि तेरी कौम में [illegible] नहीं लाएगा, मात्र उन सज्जनों के जो ईमान ला चुके हैं, इसलिए अब तू उन दुर्जनों के कर्तव्य पर चिंता न कर, और हमारे आदेश के अनुसार हमारे निरीक्षण में एक नौका बना, तनिक पक्ष न लेना उनका जो दुर्जन हैं क्योंकि वे अवश्य जलमग्न किये जायेंगे ... और वह नौका बनाने लगा ... यहां तक कि हमारा आदेश आ पहुंचा और 'तनूर' से जल उबलने लगा तो हमने आदेश दिया कि इस नौका में प्रत्येक प्रजाति के जानवरों के नर-मादा जोड़े सवार कर और उन्हें भी सवार कर जो ईमान लाये ... । फिर पहाड़-जैसी मौजों के बीच वह नौका तैरने लगी । फिर आदेश दिया गया कि हे पृथ्वी अपना जल पी जा और हे आकाश थम जा । तुरंत जल घट गया और काम तमाम कर दिया गया । नौका जूदी पर्वत पर जा टिकी । ... फिर आदेश हुआ कि हे नूह उतर कुशलतापूर्वक !'

(कुर्आन, अध्याय ११ श्लोक ३६-४८)

ये थे एक ही कहानी के तीन आदिग्रंथ से प्रस्तुत किये गये व्याख्यान । कुर्आन में नौका ठहरने के स्थान को 'जूदी' कहा गया है और बाइबिल में 'अरारात', जूदी अरारात पर्वत की ही एक चोटी का नाम है, जो इराक के उत्तरी क्षेत्र आर्मीनिया में स्थित है । यहां वेद और कुर्आन से यह ज्ञात नहीं होता कि नौका से उतरने के पश्चात वे लोग जिनसे बाद की सारी दुनिया आबाद हुई, सर्वप्रथम कहां बसे ? लेकिन बाइबिल से स्पष्ट होता है कि वे लोग सर्वप्रथम दजला व फरात के दोआबे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैसोपोटामिया के दक्षिणी क्षेत्र में आबाद हुए। यही क्षेत्र आगे चलकर सुमीर कहलाया और फिर बैबिलॉन (बाबिल) की महान सल्तनत की स्थापना के बाद इस पूरे दक्षिणी मैसोपोटामिया को बाबिल कहने लगे। अतः बाइबिल में इस क्षेत्र को बाबिल ही कहा गया है।

'इसलिए उसका नाम बाबिल हुआ। ईश्वर ने वहां समस्त भाषाओं में अंतर डाला और वहां से उनको ईश्वर ने सारी पृथ्वी पर फैलाया'

(बाइबिल, सृजन, अध्याय ११)

रहस्योद्घाटन

अब आइए विश्व की सर्वप्राचीन और समस्त मानवजाति एवं भाषाओं की स्रोत अर्थात बाबिल भूमि के खंडहरों से हस्तगत होनेवाली इस कहानी का देवमालाई रूप देखें और गौर करें कि पूर्ण रूप से देवमालाई रंग में रंगी हुई होने के बावजूद तीनों धर्मग्रंथ से कितनी समानता रखती है,

एक बार देवतागण किसी बात पर लोगों से नाराज हो गये और उन्होंने सारी पृथ्वी को जलमग्न करने का निश्चय किया। किंतु जलदेवता ने इसकी सूचना सरकंडों को दे दी, जिनसे किसी आदमी की झोंपड़ी बनी हुई थी। सरकंडों ने यह बात झोंपड़ी के मालिक को बता दी। उसने एक विशाल नौका तैयार की और उसमें अपने कुटुंब, कुछ शिल्पियों,जीव-जंतुओं और पक्षियों को बिठाया। देवताओं ने जो दिन निश्चित किया था, उस दिन आकाश में काले-काले बादल घिर आये और भीषण वर्षा होने लगी। सारी पृथ्वी जलमग्न हो गयी, नौका पर सवार लोगों के अलावा सारे लोग नष्ट कर दिये गये। छह दिन के बाद वर्षा और तूफान थम गये। पानी घटने लगा, कौए ने उड़कर भूमि का पता लगाया और नौका पर सवार लोग तथा जीव वहां उतर आये।'

— जे.५/६०, आजाद पार्क,
वाराणसी-२२१००१

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. सहदेव (सभा पर्व में), २. क. पृथ्वी के तल से ३० किलोमीटर पर गैस की रंगहीन परत, ख. पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रक्षा करती है, ३. क. १.६ टन, विश्व का औसत उत्पादन २.६ टन, ख. भारत अब आत्मनिर्भर (आयात नहीं होता), निर्यात होता है (३ करोड़ टन सुरक्षित भंडार), ४. गत वर्ष ७ दिसंबर को वायुसेना की दो महिला पायलटों ने सिकंदराबाद में चेतक हेलीकॉप्टर की प्रशिक्षण उड़ान की, ५. दोनों चीन को मिले— 'ब्रश' (स्वर्ण मयूर), 'ऑन द बीट' (रजत मयूर), ६. नाडिया (गत जनवरी में ८७ वर्ष की आयु में निधन), 'हंटरवाली' (१९३५), 'फ्रंटियर मेल' (१९३६), 'जंगल प्रिंसेस' (१९४२), ७. क. सिंगापुर (प्रति व्यक्ति वार्षिक आय २२ हजार ३०० डॉलर), विकसित देशों में नौवां स्थान, ख. २५ विकसित देश, ८. क. डॉ. नेल्सन मंडेला (द. अफरीका के राष्ट्रपति), ख. एम.टी. वासुदेवन नायर (मलयालम के साहित्यकार), ग. कुंवर नारायण [illegible] 'कोई दूसरा नहीं', ९. भारत पाकिस्तान को ५-२ से [illegible] क.) बोरिस बेकर (जरम[illegible] [illegible] चांग (अमरीका) को हराया, (ख.) मोनिका सेलेस (अमरीका) ने ह्यूबेर (जरमनी) को हराया, ११. कैटर पिल्लर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन-अपशकुन लोक साहित्य में

● अशोक स्नेही

विवाह, गृहप्रवेश और भवन निर्माण कार्य प्रारंभ करने से लेकर दैनिक दिनचर्या, आवागमन तक हर कार्य मुहूर्त शोध कर किया जाता है। इसके साथ ही शकुन और अपशकुन भी देखकर व्यक्ति कार्य प्रारंभ करता है। संकलित लोकोक्तियां यह प्रकट करती हैं कि कार्य करने या आवागमन में क्या शुभ है ? और क्या अशुभ ?

श्यामा गाय चुरवावै बच्छा,
इससे सगुन और नहीं अच्छा।

अर्थात् अगर आप कहीं जा रहे हैं या कोई कार्य प्रारंभ कर रहे हैं और आपको श्याम रंग की गाय बछड़े को दूध पिलाती हुई मिले तो शुभ है।

पडवा गमन न कीजिए अगर शून्य की होय।

शून्य से तात्पर्य अमावस्या से है अर्थात् अमावस्या के बाद की पडवा को घर से प्रस्थान [illegible]

[illegible] न चालू
[illegible] कालू
[illegible] दक्षिण जाय
[illegible] ही जूता खाय।

[illegible] और शनिवार पूर्व दिशा की [illegible] बुधवार उत्तर दिशा की ओर तथा वृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा की ओर जाना अमंगलकारी है।

मंगल मगरी बुधए खाट
मरै नहीं तो आबै ताप।

मंगलवार को छप्पर बनाना, बुधवार को खाट बनाना निषिद्ध है अगर कोई ऐसा करता है तो मान्यता ऐसी मानी है कि वह मरेगा नहीं तो बीमार अवश्य होगा।

रवि फटे मंगल बरै गुरुवार जूड़ी चढै,

नवीन वस्त्र पहनते समय यह बिचार किया जाता है कि अगर नया वस्त्र रविवार को पहना है तो जल्दी फटेगा। मंगलवार को पहना है तो जलेगा और गुरुवार को पहना है तो व्यक्ति बीमार होगा।

बैठो स्वान कान फड़कावें
बापै थूकि लौट घर आवें

अगर कुत्ता बैठा हो और कान फड़काये तो उस पर थूककर वापस आने से अपशकुन खत्म होना माना गया है।

छींकत खइये, छींकत परिये
छींकत पर घर कबऊं न जइये।

खाना खाने से पहले और सोने से पहले कोई छींके तो शुभ है और अगर किसी दूसरे के घर जाना हो और कोई छींक दे तो अशुभ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कहुं फड़कें बाईं आंख
झगड़े से हुश्यारी राख ।

अगर बायीं आंख फड़कती हो तो झगड़ा होने की संभावना है ।

शुक्कर सांप मिलै जो आड़े
मानों काल भुजनि पै ठाड़े ।

शुक्रवार को जाते समय रास्ते में सांप तिरछा पड़ा हुआ मिलें तो ऐसी मान्यता है कि काल सामने आ रहा है ।

समना बटै न जेबरी भदवां बुनै न खाट ।

श्रावण मास में रस्सी बनाना एवं भादों मास में खाट बुनना निषिद्ध है ।

समझ लो रोगी की मृत्यु निश्चित है ।

समय कचरिया कुसमय बेर ।

अगर कचरिया (छोटी ककड़ी) अधिक तादाद में हो तो समझो फसल अच्छी होगी अगर बेर ज्यादा तादाद में हो तो फसल अच्छी नहीं होगी !

शशक, सर्प, सन्यासी, तेली
विधवा भामिन मिलै अकेली ।
जो कहूं मिलें विप्र जू काना ।
इंद्र लोक नों बचें न प्राना ।

खरगोश, सर्प, साधू, तेली, विधवा स्त्री और काना ब्राह्मण राह में अकेला मिले तो मौत

विवाह, गृहप्रवेश और भवन निर्माण कार्य प्रारंभ करने से लेकर दैनिक दिनचर्या, आवागमन तक हर कार्य मुहूर्त शोध कर किया जाता है । इसके साथ ही शकुन और अपशकुन भी देखकर व्यक्ति कार्य प्रारंभ करता है । संकलित लोकोक्तियां यह प्रकट करती हैं कि कार्य करने या आवागमन में क्या शुभ है ? और क्या अशुभ ?

फिरि फिरि लोखा बदनु दिखावे
मानो काम सिद्धि ह्वे जावे ।

लोमड़ी बार-बार दिखायी देवे तो समझो कार्य सिद्धि होने में संदेह नहीं है ।

तीन कोस पै मिलै जो काना
लौट जाय घर बड़ो सयाना ।

किसी कार्य के लिए जाते समय अगर तीन कोस (लगभग दस किलोमीटर) तक काना व्यक्ति मिल जावे तो वापस लौटा आना हितकर है ।

गधा पै चढ़ो मिलै धोबिया
कैसेऊं नहीं बचै रोगिया

अगर किसी बीमार व्यक्ति को इलाज कराने ले जाते समय गधे पर चढ़ा हुआ धोबी मिले तो निश्चित मानी गयी है ।

नीलकंठ पटवारी,
पहली सिद्धि हमारी ।

अगर नीलकंठ पक्षी जाते समय दिखायी पड़े तो समझो कार्य सिद्धि का योग है ।

रात में बोलै कोकिला, दिन में रोवै ब्याल ।
बतियावें चौपाल पर, निश्चित [illegible]

रात्रि के समय कोयल [illegible] हुआ सुनायी दे तो चौपाल प[illegible] लोगों की राय यह होती है कि इस वर्ष [illegible] अकाल पड़ेगा ।

—६५, गांधी मार्ग मेहगांव जिला—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

● अजय भाम्बी

अजय कुमार कौशिक, दिल्ली

प्रश्न : तलाक होगा या नहीं ? आपसी राजीनामा या कोर्ट के द्वारा और कब तक होगा ?

उत्तर : फरवरी '९८ से पूर्व तलाक हो जाएगा ।

चेतन कुमार जैन, सागर

प्रश्न : आध्यात्म जीवन जी पाऊंगा या नहीं ? कब से ?

उत्तर : पहली यात्रा तो भौतिक जीवन की ही रहेगी ।

शरद उपाध्याय, हाथरस

प्रश्न : मेरे ऊपर चल रहे ३०२ के केस में क्या होगा ?

यदि आपकी यह कुंडली सही है तो आप बच जाएंगे ।

किशोर तारे, भोपाल

प्रश्न : लेखन क्षेत्र में आगे क्या संभावनाएं हैं ? रत्न क्या धारण करें ?

उत्तर : इस क्षेत्र में जबरदस्त ख्याति प्राप्त होगी, प्रयास बढ़ायें ।

प्रवीण कुमार शर्मा, जयपुर

प्रश्न : आर्टिस्ट हूं, पेंटिंग के व्यवसाय में सफलता कब तक ?

उत्तर : मई से बेहतर समय प्रारंभ होगा ।

इंद्रा दिल्ली

प्रश्न : विवाह का योग कब है ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

जीवन लाल अग्रवाल, दार्जिलिंग

प्रश्न : मैं व्यापार-उद्योग कौन-सा करूं जिससे लाभ हो ?

उत्तर : सौंदर्य से संबंधित वस्तुओं का व्यापार करें तो अत्यधिक लाभ होगा ।

डॉ. एस. एल. गुप्त, हावड़ा

प्रश्न : अपना स्वयं का मकान एवं विदेश योग कब ?

उत्तर : विदेश योग इसी वर्ष और मकान दो वर्ष के अंदर ।

अंजु वर्मा, करनाल

प्रश्न : विवाह कब तक ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : १९९६ में, पन्ना धारण करें ।

अरुण त्यागी, कोटा

प्रश्न : क्या इस वर्ष पी.ई.टी. में सफल हो जाऊंगा ? आवश्यक हो तो रत्न बतायें ।

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के उपरांत ही आशा लगायें ।

सीतेश कुमार सिन्हा, बेगुसराय

प्रश्न : क्या मैं एक अच्छा क्रिकेट खिलाड़ी बन जाऊंगा ?

उत्तर : जी हां, बन सकते हैं ।

सूर्य प्रकाश द्विवेदी, गोरखपुर

प्रश्न : क्या मेडिकल शिक्षा के लिए आस्ट्रेलिया जाना संभव है ?

उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा का योग बन रहा है ।

डॉ. अबु असगर, मोतिहारी

प्रश्न : भाग्य उदय कब तक ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : अभी दो वर्ष और लगेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोज डंग, नयी दिल्ली

प्रश्न : क्या राजपत्रित अधिकारी बनूंगा । रत्न बतायें ?

उत्तर : बन जाएंगे ।

श्वेता तिवारी, उज्जैन

प्रश्न : प्री. मेडिकल टेस्ट में चयन इस वर्ष है या नहीं ?

उत्तर : संभावना है ।

अशोक अत्री, मारंडा (हि.प्र.)

प्रश्न : पदोन्नति कब तक होगी ?

उत्तर : इस वर्ष हो जाएगी ।

धर्मदास वासुदेवा, चंडीगढ़

प्रश्न : प्राइवेट प्रैक्टिस (वकालत) में सुधार कब तक ?

उत्तर : अगले दो वर्षों में आपकी प्रैक्टिस में अत्यधिक सुधार होगा ।

मेघा, ग्वालियर

प्रश्न : दांपत्य जीवन (संतति सहित) कब से सुखी व सुचारु होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष तलाक हो सकता है ।

रमा तिवारी, मुरादाबाद

प्रश्न : मेरी पुत्री नीतू का विवाह कब संभव है ?

उत्तर : हमें तो इसी वर्ष विवाह संपन्न होता दिख रहा है ।

सतीश उपाध्याय, दिल्ली

प्रश्न : पुत्र होगा तो कब होगा ?

उत्तर : १९९७ तक हो सकता है उसके बाद नहीं ।

—'नक्षत्र निकेत'
४०६, ढाका चेम्बर-१
२०६८/३८, नाईवाला,
करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१६९

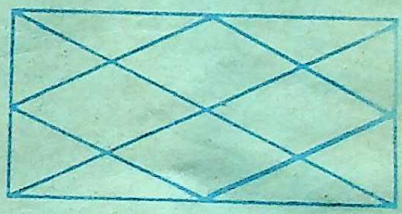

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन् .....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (ज्योतिष विभाग— प्रविष्टि १६९) 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० अप्रैल, १९९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी सी जिद

● मनजीत कौर भाटिया

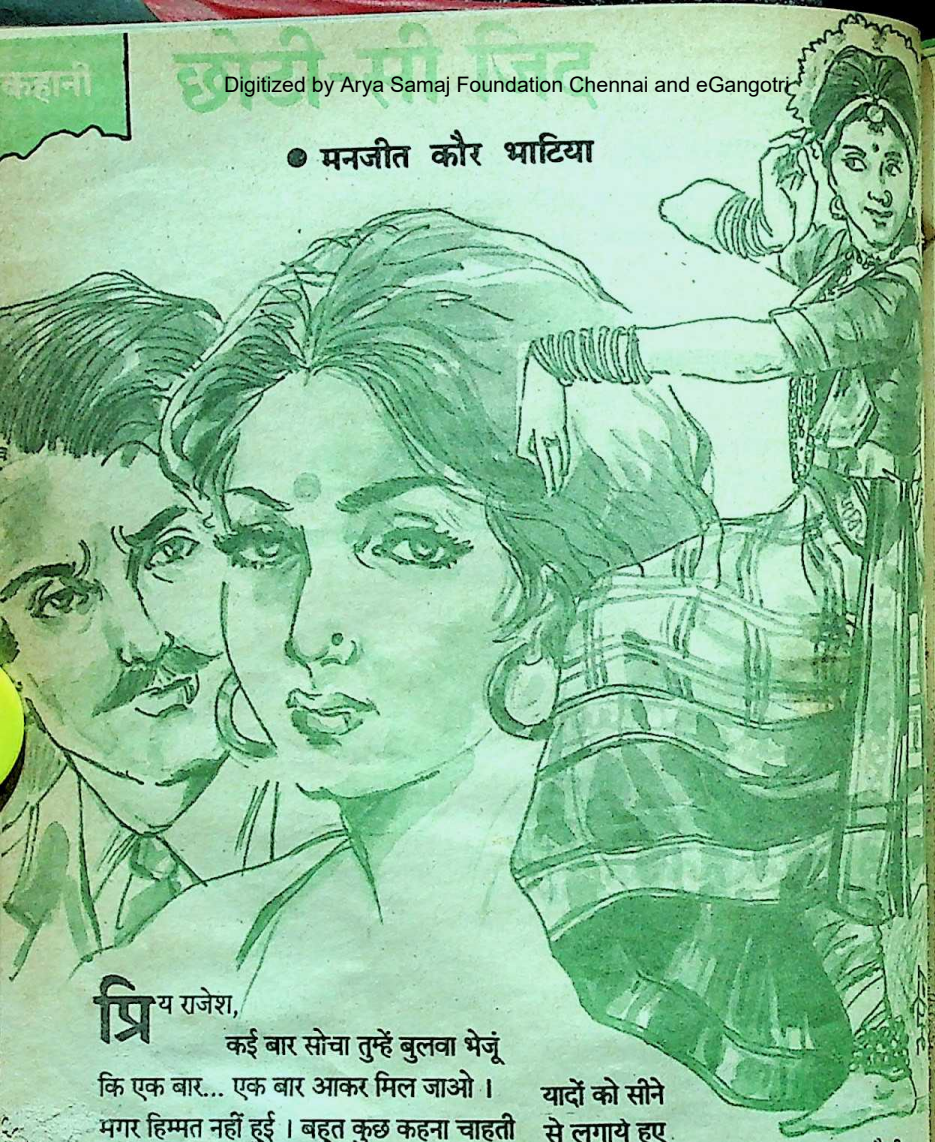

प्रिय राजेश,

कई बार सोचा तुम्हें बुलवा भेजूं कि एक बार... एक बार आकर मिल जाओ। मगर हिम्मत नहीं हुई। बहुत कुछ कहना चाहती हूं। पता नहीं कह भी पाऊंगी कि नहीं जब तुम सामने आओगे! फिर सोचा तुम्हें खत लिखूं। [illegible] कहीं पा रही हूं।

[illegible] तो जरूर देना..." और त[illegible] नाम भी याद है या बाहर निकल[illegible] और बच्चों में मग्न ही दिया होगा। पुरानी यादों को सीने से लगाये हुए व्यक्ति आखिर कितने दिन जी सकता है?

लगता है कि एक युग बीत गया। शायद बीस वर्ष हो गये उस बात को? किस बात को? जिस बात ने हम दोनों की राहें ही जुदा कर दीं। मैं भी तुम्हें भूल जाना चाहती थी। वह शायद इतना आसान नहीं था, रात में नींद आती थी। अपने फैसले पर ग्लानि होती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार सोचा कि तुम्हारा साथ पाने के लिए सब कुछ छोड़ दूं । लेकिन मेरे स्वाभिमान ने मुझे झुकने नहीं दिया । इसीलिए मैंने अपने आपको बहुत व्यस्त कर लिया था, दर्शकों, प्रशंसकों और विद्यार्थियों की भीड़ में गुम हो गयी मैं । इनके बीच रहते हुए मुझे पता ही नहीं लगा कि जीवन के अनमोल वर्ष कब और कैसे पंख लगाकर उड़ गये । तुम्हारी बेरुखी तथा उस प्रताड़ना ने जो तुमने मुझे आखिरी छह महीनों में दी इतनी दूरियां पैदा कर दी थीं कि मैं चाहकर भी उन दूरियों को मिटा नहीं पायी ।

राजेश, औरत जीवन में एक ही बार प्यार करती है, उसका प्यार दिखावटी नहीं होता । वह तन, मन, धन से अपने पति या प्रेमी की हो जाती है । मैंने भी तुमसे प्यार किया था... सिर्फ तुम से । आज तक तुम्हारी जगह कोई नहीं ले पाया । कई पुरुषों ने तरह-तरह के स्वांग रचकर मेरा मन जीतने की कोशिश की । लेकिन वह जगह कोई नहीं ले पाया । एक मन की बात कहूं... हमारे समाज में तलाकशुदा तथा अकेली औरत की कोई इज्जत नहीं है । वह एक रस्सी तुड़वाकर भागी गाय की तरह होती है जिसे हर कोई पकड़कर अपने खूंटे से बांध लेना चाहता है । उसकी प्रतिभा पर शक किया जाता है । उसकी सफलता के साथ किसी न किसी पुरुष को जोड़ दिया जाता है । तुम भी आये दिन पत्र-पत्रिकाओं में मेरे बारे में इस प्रकार की खबरें पढ़ते रहते होगे । पता नहीं तुम मेरे बारे में क्या सोचते होगे । उम्र के इस मोड़ पर आकर मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी ! सच कहती हूं तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी पुरुष मेरे मन में नहीं बस पाया । पुनर्विवाह के बारे में मैंने कभी मेरा दी नहीं [illegible] विवाह का अर्थ है... मैं भली-भांति समझ चुकी थी । अगर मुझे कभी विवाह करने की जरूरत महसूस होती तो मैं सब कुछ त्यागकर तुम्हारे पास लौट आती ।

एक बात पूछूं... सच-सच कहोगे... मेरा खयाल है जीवन के इन अंतिम दिनों में तुम झूठ नहीं बोलोगे । वैसे भी इस उम्र में आकर हम अपना मान-सम्मान स्वाभिमान सब भूल जाते हैं । अपनी गलतियों का अहसास होने लगता है । सब गिले-शिकवे दूर हो जाते हैं । एक बात जो मेरे मन में हमेशा कांटे की तरह चुभती रही... जिस बात ने मुझे तुम्हारे और मेरे बीच का फासला कभी तय नहीं करने दिया । मरने से पहले तुमसे पूछना चाहती हूं... सच-सच बताओगे न ?... क्या आज भी तुम हमारे संबंध-विच्छेद का दोषी केवल मुझे ही ठहराते हो ?... क्या तुम बराबर के दोषी नहीं हो ?

कितनी आसानी से कह दिया था मैंने उस दिन, "नृत्य मेरा जीवन है मैं तुम्हें छोड़ सकती हूं नृत्य को नहीं ।" और इसी एक वाक्य ने हमें हमेशा-हमेशा के लिए जुदा कर दिया ।

मैं और करती भी क्या ? तुमने ही तो मुझे फैसला करने पर मजबूर किया था । मैं तो तुम्हारे साथ हर तरह से सहयोग करने को तैयार थी । तुमने ही साथ नहीं दिया । क्या-क्या ताड़ना नहीं दी तुमने मुझे । मेरी हर खुशी से ईर्ष्या हो गयी थी तुम्हें । रोज-रोज के झगड़े से तंग आकर एक दिन तुमने स्पष्ट शब्दों में अपने मन की बात कह दी, "मैं [illegible] चिक-चिक से [illegible] एक को चुनना होगा [illegible]

"क्या ?" सिटपिटा [illegible] । अब मैं [illegible] लेना जरूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह रहे हो तुम ।

"तुम्हारा नृत्य और हमारा वैवाहिक जीवन दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते । मैं तुम्हारा निर्णय सुनना चाहता हूं ।"

"तुम पागल तो नहीं हो गये । यह क्या बचपना है ।" मैंन तुम्हें समझाने की कोशिश की, "नृत्य मेरा जीवन है मेरी साधना है । उसे मैं कैसे छोड़ सकती हूं... ।"

"बेकार की बातों में वक्त बरबाद नहीं करो । तुम्हें दोनों में से एक को चुनना होगा ?" कितना रूखापन था तुम्हारी आवाज़ में । एक पल को मुझे ऐसा लगा तुम अपनी पत्नी से नहीं किसी जूनियर कर्मचारी से बात कर रहे हो । मैंने नजरें उठाकर तुम्हारे चेहरे की ओर देखा । एकदम सख्त तथा भाव-शून्य था । प्रेम, क्षोभ जैसे कोई भाव नहीं थे तुम्हारे चेहरे पर । मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे दोराहे पर खड़ा कर तुम चुपचाप तमाशा देख रहे हो । मजाक उड़ा रहे हो मेरा ।

पता नहीं क्यूं तुम्हारे इस शुष्क व्यवहार को देखकर मुझे तुमसे घृणा-सी होने लगी । आज तक अपने स्वाभिमान को दबाकर मैं तुमसे हर तरह का समझौता करती आयी थी । लेकिन तुम्हारा तटस्थ तथा भावविहीन चेहरा देखकर क्रोध के मारे मेरी मुट्ठियां भिंच गयीं और मैंने पता नहीं किस आवेश में कह दिया, "नृत्य मेरा जीवन है । मैं नृत्य नहीं छोड़ सकती ।..."

"ठीक है । मुझे जवाब मिल गया । मैं जा [illegible]-हमेशा के लिए । कल तलाक के [illegible] दूंगा । हस्ताक्षर करके लौटा देना..." और तुम बिना कुछ कहे एक झटके में बाहर निकल गये । एक बार मन में आया,

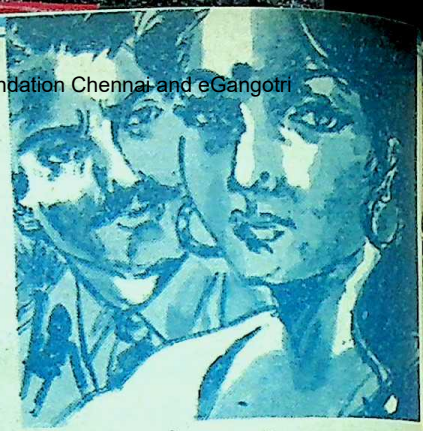

आवाज़ देकर रोक लूं । लेकिन स्वाभिमान ने मुझे गूंगा बना दिया था ।

हमारे विवाह के आरंभ के दो-तीन वर्ष काफी शांति से गुजरे । मैं कॉलेज में नृत्य अध्यापिका थी और तुम प्रिंसीपल । कभी-कभार मैं स्टेज कार्यक्रम भी देती थी लेकिन तुमने कभी आपत्ति नहीं उठायी थी । तुम स्वयं भी मेरे कार्यक्रम देखने आते थे तथा मेरे प्रदर्शन की तारीफ भी किया करते थे ।

और धीरे-धीरे कब मेरा नृत्य हमारे मध्य दीवार बनकर खड़ा हो गया मुझे पता ही नहीं चला । जब तक मैं अध्यापिका थी और तुम प्रिंसीपल तब तक सब ठीक था । अचानक पता नहीं कैसे मुझे एक राजकीय स्तर का कार्यक्रम पेश करने की ऑफर आयी । मैं कितनी खुश थी उस दिन । खुशी के मारे मेरे पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे । मैं जल्दी से जल्दी घर पहुंचकर तुम्हें यह खुशखबरी सुनाना चाहती थी । लेकिन पता नहीं क्यों मेरी बात सुनते ही तुम्हारा चेहरा बुझ गया । अपने चेहरे के भावों को छिपाते हुए तुमने कहा, "अपने आपको अध्यापन तक ही सीमित रखो । ज्यादा झमेलों में पडने की जरूरत नहीं है ।" मेरा स्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह ठंडा पड़ गया । क्या-क्या सपने संजोये थे मैंने इस कार्यक्रम को लेकर, लेकिन तुम्हारी इस बेरुखी ने मेरे सपनों का महल धराशायी कर दिया ।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था तुम्हें क्या होता जा रहा है । तुम्हारे व्यवहार में आ रहे परिवर्तन का कारण समझते हुए भी मैं तुम्हें समझा नहीं पा रही थी । मैंने तुम्हारे जिगरी दोस्त रवि से भी इस बारे में चर्चा की । लेकिन वह भी किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सका । और एक दिन इस रहस्य का परदा खुल गया । उस दिन तुम बहुत परेशान थे । रवि आया हुआ था । मैं चाय की ट्रे लेकर ड्राइंग रूम की तरफ आ रही थी कि रवि के ये शब्द मेरे कान में पड़े—

"तुम्हें क्या होता जा रहा है राजेश ! तुम अनु के नाम से इतना चिढ़ने क्यों लगे ? अभी कुछ दिन पहले तो उसका नाम सुनते ही तुम्हारा चेहरा खिल जाता था... ।" मेरे कदम ठिठक गये । मैं परदे के पीछे खड़ी होकर सब सुनने लगी ।

"अमित मेरी समझ में नहीं आ रहा मुझे क्या होता जा रहा है । अनु ने मेरा पुरुषत्व, मेरा मान-स्वाभिमान सब अपने पैरों तले रौंद डाला है मेरी पहचान गुम होती जा रही है । मेरा अस्तित्व मिटता जा रहा है... ।"

"कहना क्या चाहते हो तुम... ।" अमित ने आश्चर्य से पूछा ।

"आज अनु मेरी अनु नहीं है वह एक प्रसिद्ध नर्तकी अनुरागिनी उपाध्याय है । आज मुझे राजेश उपाध्याय के नाम से कोई नहीं जानता । सब मुझे अनुरागिनी उपाध्याय के पति के रूप में जानते हैं । जहां भी जाता हूं लोग मेरा परिचय राजेश उपाध्याय कहकर नहीं अनुरागिनी उपाध्याय के पति कहकर करवाते हैं । मुझे लगता है मैं पागल हो जाऊंगा । अगर अनु ने नृत्य नहीं छोड़ा तो... ।

तुम्हें शायद पता नहीं था मैंने परदे के पीछे से सारी बातें सुन ली थीं । पता नहीं क्यों मेरे मन में उस दिन पहली बार तुम्हारे लिए नफरत के भाव जागे । मैंने तो आज तक कभी नहीं कहा था कि लोग मुझे राजेश उपाध्याय की पत्नी कहकर क्यों पुकारते हैं क्या मेरा कोई अस्तित्व नहीं है । मुझे तो बल्कि खुशी होती थी कि मेरी पहचान तुम्हारे साथ है । मुझे लोगों को यह बताते हुए फक्र होता था कि मेरे पति कॉलेज के प्रिंसीपल हैं... । आज तुम इसलिए खामोश रहने लगे हो और मुझसे कटने लगे कि सफलता मेरे कदम चूम रही है । तुम्हें कोई पुरस्कार या सम्मान मिलता था तो कितनी खुश होती थी मैं ।... और तुम इतने तंग दिल हो यह मुझे आज पता लगा ।

तुम्हें समझाना बेकार था । इसलिए मैंने भी चुप्पी साध ली ।

मैंने बहुत-से फैसले तुमसे पूछे बिना ले लिये । मेरा हर फैसला तुम्हारे स्वाभिमान पर चोट करता था । तुमने मुझसे बात करना बंद कर दिया था । उल्टे-सीधे आरोप लगाकर तुम मुझसे झगड़ा करते । तुम्हारी मानसिकता मैं समझ चुकी थी, इसलिए बेकार की बहस में पड़कर लोगों को तमाशा दिखाना न[illegible] थी । तुम्हारी इस बेरुखी ने एक [illegible] झिंझोड़कर रख दिया था और [illegible] तरफ स्वावलंबी तथा आत्मनिर्भर बना दिया । अब मैं छोटी-छोटी बातों में तुमसे सलाह लेना जरूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमार रहने लगी हूं । डॉक्टर ने बिस्तर से उठने के लिए भी मना कर दिया है । दर्शकों, प्रशंसकों, मित्रों तथा व्यभिचारी पुरुषों की भीड़ छट गयी है । कभी कभार कोई पुराना साथी हाल-चाल पूछने आता भी है तो अपनी ही बातें कहता रहता है । मेरी व्यथा सुनने की फुरसत किसी के पास नहीं है ।

नहीं समझती थी ।

एक दिन तुमने सपाट स्वर से मुझे नृत्य छोड़ देने को कहा । मगर नृत्य तो मेरा जीवन बन चुका था । मैंने साफ इनकार कर दिया । आये दिन मेरे जल्दी निकलने व देर से आने को लेकर तुम क्लेश करने लगे । मैं जल्दी निकलती थी तो तुम्हारा नाश्ता बनाकर रख जाती थी । देर से आती तो आकर खाना पकाकर देती थी । कितनी बार इच्छा होती थी कि तुम कह दो, "अनु तुम थककर आयी हो, रहने दो । मैं बाजार से ले आता हूं ।" लेकिन तुम हमेशा इस बात को लेकर झगड़ा कर बैठते थे कि दाल के साथ सब्जी क्यों नहीं बनायी । और लड़-झगड़कर हम दोनों ही बिना खाये सो जाते थे । पता नहीं तुम्हें क्या होता जा रहा था । रोज-रोज की चिक-चिक से तंग आकर एक दिन... ।

आज मैंने आकाश की उन ऊंचाईयों को छू लिया है । जिन्हें छूने की तमन्ना थी मेरे मन में । जिसके लिए मैंने अपना पति, घर... सब त्याग [illegible] । लेकि[illegible] [illegible]तनी अकेली पड़ गयी [illegible] में यह ख्याल आता है [illegible]सत था ?

देना... [illegible]गी हूं । डॉक्टर ने बिस्तर से बाहर निक[illegible] भी मना कर दिया है । दर्शकों, प्रशंसकों, मित्रों तथा व्यभिचारी पुरुषों की भीड़ छट गई है । कभी कभार कोई पुराना साथी हाल-चाल पूछने आता भी है तो अपनी ही बातें कहता रहता है । मेरी व्यथा सुनने की फुरसत किसी के पास नहीं है । दर्शक प्रशंसक आते हैं तो नृत्य की ही बात करते हैं ।

कुछ सूझता नहीं, किसी काम में मन नहीं लगता । किसी दंपति या सुंदर से बच्चे को देखकर न जाने क्यूं मेरा मन बेचैन हो जाता है । अपनी ही घर-गृहस्थी में मग्न औरतों को देखकर मुझे ईर्ष्या-सी होने लगती है ।

हम दोनों की छोटी-सी जिद ने आज ऐसे मोड़ पर पहुंचा दिया है, जहां अकेलापन मुझे काट-काट कर खा रहा है ।... आज मेरे पास नाम है, शोहरत है, ओहदा है... मान-सम्मान है पैसा है... नौकर-चाकर हैं..., लेकिन तुम नहीं हो... अपना कोई भी नहीं है ।

मेरी अंतिम ख्वाहिश पूरी करोगे । एक बार... बस एक बार तुम्हें करीब से देखना चाहती हूं ।... आओगे न ।

तुम्ह[illegible]
'अ[illegible]

— साहित्य अकादमी रवींद्र भ[illegible]
३५, फिरोजशाह रो[illegible]
नयी दिल्ली-११००[illegible]

कादंबि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

एस.एस. त्यागी, स्योहारा

प्रश्न : उम्र ५२ वर्ष । पैर की एड़ी में एक खास जगह पर दबाव पड़ने पर दर्द होता है । डॉक्टर का कहना है कि हड्डी बढ़ रही है । कृपया सस्ता सुलभ इलाज लिखें ।

उत्तर : केशोरगूगल दो-दो वटी सुबह-दोपहर-रात गरम पानी से लें ।

पंकज, मोहनपुर

प्रश्न : उम्र २० वर्ष । काफी कष्ट है— फोड़े, फुंसी और खुजली बराबर लगी रहती है । काफी दवा ली, पर लाभ नहीं हुआ ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम, गिलोय सत्व दस ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । सारिवाद्यासव दो चम्मच भोजन के बाद पियें । छह माह नियमित औषधियां सेवन करें । दही, खटाई और चाय का सेवन न करें ।

नीलिमा, देशगांव

प्रश्न : उम्र ३५ साल है । दो पुत्र सीजरियन ऑपरेशन से हुए । कमर सुबह उठने पर अकड़ जाती है । भयंकर दर्द रहता है । पेट के निचले हिस्से में दर्द और भारीपन, वजन कम हो रहा है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक, महायोगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम दूध से सेवन करें । दशमूलारिष्ट एक चम्मच और अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद पियें । दही, चावल और शीतल पेय का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियां लें ।

एस. मोहमद, मुंबई

प्रश्न : मानसिक रूप से परेशान हूं । सिरदर्द, किसी कार्य में मन न लगना और उत्साह नहीं है । अपने आप में खोया रहता हूं ! उदास हूं ।

उत्तर : ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । सारस्वतारिष्ट दो चम्मच और बलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

प्रकाश, गांधीसागर

प्रश्न : उम्र ३४ साल है । लगभग एक साल से पांव की अंगुलियों में जकड़न, पांव में सूजन, बेचैनी, बैठे रहने पर अंगुलियां मोटी हो जाती हैं ।

उत्तर : केशोरगूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । श्वेतपर्यटी सौ ग्राम की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा भोजन के बाद लें । गोक्षुरादि गूगल एक-एक वटी दोपहर-रात पानी से लें ।

डॉ. कपिल, बुलंदशहर

प्रश्न : उम्र ४४ वर्ष है । दो वर्ष से सांस फूलता रहता है । शरीर थका-थका मालूम पड़ता है । स्मरण-शक्ति कमजोर [illegible]

उत्तर : नागार्जुना[illegible] मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्रा[illegible] बीस ग्राम लेकर सभी औष[illegible] मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-ए[illegible] शहद से लें । अ[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद पियें । ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच रात दूध से लें । तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

शशांक, चंडीगढ़

प्रश्न : उम्र १८ वर्ष है । गुप्तांग के ऊपर छोटे-छोटे दाने हो गये हैं । सभी पत्र में लिखा है । कृपया सस्ती दवा लिखें ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यार्भव एक-एक चम्मच भोजन के बाद पियें । केशोरगूगल एक वटी और गोक्षुरादि गूगल एक वटी रात पानी से लें ।

मनोज कुमार, बोकारो

प्रश्न : उम्र १९ वर्ष है । तीन वर्ष से गरदन के आसपास नसें बहुत दर्द करती हैं । काफी परेशान हूं ।

उत्तर : अश्वगंधा चूर्ण साठ ग्राम और त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । महायोगराज गूगल एक-एक वटी रात दूध से लें । तीन [illegible] नियमित औषधियां सेवन करें ।

[illegible]

[illegible] वर्ष है । कब्ज बना रहता है । [illegible] आंव निकलता है । नाभि के [illegible]ार पेट में दर्द बना रहता है ।

हिंग्वाष्टक चूर्ण सुबह-शाम गरम पानी से लें । कुटजारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । इसबगोल दो-दो [illegible] रात गरम दूध से लें ।

[illegible] किशोर प्रसाद, भाटपाड़ा (प.बं.)

प्रश्न : उम्र ४० वर्ष है । भूख बहुत लगती है और नींद बहुत आती है । चेहरे पर धब्बे नजर आते हैं ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, नवायस लोह पंद्रह ग्राम और शंख भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें । द्राक्षासव एक चम्मच, लोहासव एक चम्मच भोजन के बाद पियें ।

अरविंद सिन्हा, कलकत्ता

प्रश्न : उम्र २१ वर्ष है । एक वर्ष में तीन बार टाइफाइड हो चुका है । एलोपैथी दवा से ठीक हो जाता है, किंतु जांच कराने पर फिर से टाइफाइड आया है । हाथ-पैरों और तलवों में जलन रहती है । सारे शरीर में झनझनाहट, भूख कम लगना, बेचैनी और बार-बार डकार आते हैं । ठंडी हवा अच्छी लगती है ।

उत्तर : संजीवनी वटी दो-दो सुबह-शाम गरम पानी से लें । सितोपलादि चूर्ण अस्सी ग्राम, मालती बसंत रस दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम, गिलोय सत्व दस ग्राम लेकर उसकी अस्सी मात्रा बनायें । दिन में छह घंटे के अंतराल से शहद से लें । आनंद भैरव रस पांच ग्राम, गोदंती भस्म दस ग्राम लेकर इसकी चालीस मात्रा बनायें । रात एक मात्रा शहद से लें । आहार-विहार का परहेज करें । तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

राकेश वर्मा, हथुआ

प्रश्न : माताजी की उम्र ३५ वर्ष है । चक्कर आ[illegible] हैं । खाना खाने के बाद उल्टी आती है । खा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजम नहीं होता ।

उत्तर : स्वर्णसूतशेखररस दस ग्राम और प्रवालपञ्चामृत रस दस ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । लशुनादि वटी एक-एक भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच रात दूध से लें ।

कन्हैया, ग्राम तुलसी

प्रश्न : मेरे पुत्र की उम्र १५ वर्ष है । ८ वर्ष की अवस्था में उसको मैनीनजाइटिस हो गया था । रीढ़ की हड्डी से पानी निकाला । बायां हाथ व पैर सुन्न हो गया था । वैसे ठीक हो गया है । अभी भी अंगुलियां बहुत कमजोर हैं । स्मरण-शक्ति भी कमजोर हो गयी है ।

उत्तर : रसराजरस पांच ग्राम, अश्वगंधा चूर्ण साठ ग्राम और त्रयोदशांग पंद्रह ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच और द्राक्षारिष्ट एक चम्मच सम भाग लेकर जल मिलाकर भोजन के बाद पियें ।

प्रीति खरे, लखनऊ

प्रश्न : उम्र २८ वर्ष है । विवाह हुए चार वर्ष हो गये । तीसरी बार चार माह का गर्भपात हुआ है । अभी संतान सुख से वंचित हूं । जांच कराने पर सभी कुछ सामान्य है । एलोपैथी और होम्योपैथी चिकित्सा के कोई परिणाम नहीं मिल रहे हैं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी तीस ग्राम और अश्वगंधा चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम गरम पानी से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । फल कल्याण घृत एक-एक चम्मच रात दूध से लें । तीन माह औषधि लेकर आहार-विहार का परहेज करें ।

अनिल, अलीगढ़

प्रश्न : कमर दर्द, घुटनों में दर्द, कब्ज और कमजोरी है । साइकिल चलाने से या जीना चढ़ने से दर्द बढ़ जाता है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक और महायोगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और अभयारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

रघुवीर प्रसाद खत्री, पटना

प्रश्न : उम्र ६५ साल है । लगभग आठ वर्ष से बीमार हूं । सारे शरीर में दर्द, कंपन, सिरदर्द और बार-बार पेशाब आता है ।

उत्तर : रसराज रस दस ग्राम, चंद्रप्रभा वटी तीस ग्राम और अश्वगंधा चूर्ण अस्सी ग्राम लेकर इसकी अस्सी मात्रा बनायें । सुबह-रात एक-एक मात्रा दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

ठाकुर प्रसाद, जोधपुर

प्रश्न : उम्र ४० साल है । पीलिया माह रहा । अब ठीक हूं । यह दो है । कृपया ऐसी दवा लिखें जिससे यह हो ।

उत्तर : रोहितकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद नियमित छह माह पियें ।

—कविराज वेदव्रत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय गतिविधियों से परिचित ही नहीं थे वे इनके निकट संपर्क में भी रहे । पहले पहल वे कलकत्ता में इन गतिविधियों के निकट संपर्क में आये थे । कलकत्ता में रामकृष्ण आश्रम में समन्वय के वे एक वर्ष तक संपादक रहे थे । वहां का वातावरण स्वामी विवेकानंद के विचारों से आप्लावित था । निराला पर स्वामी विवेकानंद का पर्याप्त प्रभाव भी परिलक्षित होता है । सभी जानते हैं कि विवेकानंद का आंदोलन राजनीतिक दासता से मुक्ति का आंदोलन भी था ।

सांस्कृतिक चिंतन की धारणा उनकी अपनी है यदि ऐसा नहीं होता तो चरखे पर महात्मा गांधी और रवि बाबू के बीच चले विवाद पर वे आदर्श कवि रवि बाबू की सीधी आलोचना न करते । 'चरखा' नामक निबंध जहां निराला के राष्ट्रीय विचारों का दर्पण है, वहीं इसका प्रमाण भी है कि उनमें रवि बाबू के प्रति वह मोह नहीं था जैसा उन लोगों में था जिनका बंगला से दूर का परिचय-मात्र था । इस निबंध से यह भी प्रकट होता है कि निराला राष्ट्रीय आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में गांधीजी के रचनात्मक कार्यों का समर्थन करते हुए रवि बाबू की आलोचना न करते ।

महाकवि निराला और नये समाज की कल्पना

● डॉ. हीरालाल बाछोतिया

विद्रोही व्यक्तित्व को आकार

निराला की सहानुभूति रामकृष्ण आश्रम के [illegible] जीवन पर्यंत बनी रही । विवेकानंद के वि[illegible]ला के सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय विचारों [illegible] केंद्रित करने तथा स्फुटित करने में योगदान दिया । केवल योगदान ही, क्योंकि निराला की दृष्टि भी अपनी थी जो उनकी कृ[illegible] में [illegible] जा सकती है । निराला के विद्रोही व्य[illegible]कार देने के परिप्रेक्ष्य में ही विवेकानंद [illegible] । [illegible]गदान दिखाई पड़ता है । [illegible])

निराला कहते हैं— वे (महात्मा गांधी) भारतीय समाज को चरखा चलाकर अपना कपड़ा आप बना लेने का उपदेश देते हैं । [illegible] करोड़ों रुपयों की बचत और फायदा देश के निवासियों को है । इससे वे परावलंबी नहीं रहेंगे । स्वाध्यायी हो जाना ही शक्ति का सूत्र है । इस तरह शक्ति वृद्धि के साथ-साथ देशवासी स्वराज्य की प्राप्ति नहीं कर सकेंगे यह कौन कह सकता है ? अगर इससे स[illegible] [illegible]ष्टि दोनों को फायदा पहुंचता है तो और व्[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःसंदेह कहना पड़ता है कि रविबाबू का सुबह के वक्त दीपक अलापना नहीं शोभा देता ।

गांधीजी रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से जहां राष्ट्रीय जागरण का मंत्र फूंक रहे थे वहीं लोगों को आत्मनिर्भर बनाने की सीख भी । नवजागरण का यह रूप या 'मॉडल' जो स्वदेशी आंदोलन के रूप में सर्वज्ञात है, निरालाजी की रचनाओं में रूप ग्रहण करता है । विशेष रूप में 'चोटी की पकड़' उपन्यास का यही केंद्रीय बिंदु है जबकि पूर्ववर्ती उपन्यासों अलका, अप्सरा में बंगाल में नवजागरण और प्रकारांतर से क्रांतिकारी कार्यों के प्रति रूझान का प्रभाव देखा जा सकता है । राजनीतिक दासता का दुष्परिणाम किस प्रकार हमें स्वत्वहीन बनाये दे रहा था, इसके प्रति निराला की व्यथा तथा स्वदेशी के प्रति उनकी आस्था 'चोटी की पकड़' में प्रभाकर के कथन में देखी जा सकती है— 'आपके यहां हमारे केंद्र हैं देशी कारोबार बढ़ाने के, आप महिला होने के कारण उनकी स्वामिनी, गृहलक्ष्मी शब्द का उपयोग आप ही लोगों के लिए होता है । आप उसकी चारूता बढ़ाने, प्रसार करने में सहायता करें । देश में विदेशी व्यापारियों के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया । हम उन्हीं के दिये कपड़े से अपनी लाज ढंकते हैं । उन्हीं के जूते पहनते हैं, उन्हीं की दियासलाई से आग जलाते हैं । ब्राह्मण की आग गयी, क्षत्रीय का वीर्य गया, वैश्य का व्यापार चौपट हुआ । यह सब हमको लेना है । इसी के रास्ते हम हैं । बंगभंग एक उपलक्ष्य है । दूसरे प्रांत अभी बहुत जागृत नहीं । यों कांग्रेस में सभी हैं, यह स्वदेशीवाला भाव हमको घर-घर फैलाना है ।

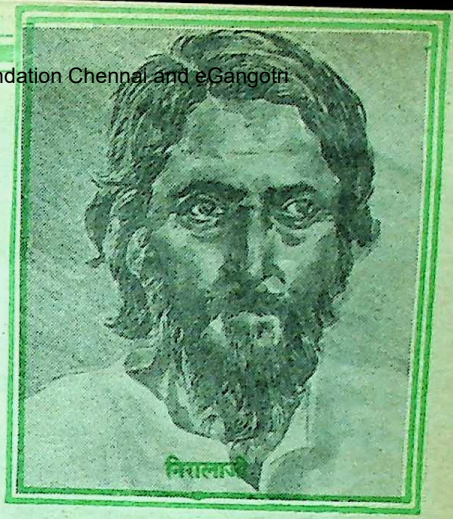

पाठशाला जागृति का केंद्र

स्वाधीनता संग्राम के संदर्भ में प्रदर्शित अन्य आंदोलनों का चित्रण भी निराला के साहित्य में उपलब्ध है जो राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति सजगता तथा निकट संपर्क का ही परिणाम है । अलका उपन्यास में 'विजय' स्वामी के रूप में एक गांव में अड्डा बनाता है । बच्चों को पढ़ाता है । पाठशाला जागृति का केंद्र बनती है । गांव के लोग सदियों से प्रताड़ित हैं किंतु विजय के कारण उनमें नवप्राणों का संचार हुआ है । वे लोग गांव के जमींदार से टक्कर लेना चाहते हैं किंतु झूठी गवाही देकर जमींदार विजय को ही बंदी बनवा देता है । अशिक्षा के कारण ही वह घटित होता है । इसलिए शिक्षा पहला [illegible] है । कहना न होगा, यह भी किसान [illegible]दोलन का ही एक स्वरूप है । यही कारण [illegible] डिप्टी साहब स्वामीजी (विजय) को कांग्रेस का आदमी समझते हैं ।

निराला स्वतंत्रता को एक [illegible] मानते थे । वे इसके सांस्कृ[illegible] शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य पर सवा[illegible] चाहते थे । इसलिए वे मानते हैं कि किसानों को प्रारंभिक शिक्षा दे देना [illegible] में कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत् कार्य है। क्योंकि किसी प्रकार का सुधार पहले मस्तिष्क में होता है। जहां मस्तिष्क ही न हो वहां नेता की आवाज का क्या असर हो सकता है ?

तुम रहोगे तो मार नहीं पड़ेगी

चतुरी चमार में भी निराला का राष्ट्रीय आंदोलन के निकट संपर्क में रहना वर्णित है। आंदोलन में भाग लेने के कारण किसानों को दबाया जाता है तो वे निराला के पास मदद के लिए आते हैं। गांव में चलकर लिखो। तुम रहोगे तो मार न पड़ेगी, लोगों को हिम्मत रहेगी, अब सखी हो रही है।

रूढ़ियों को धक्का

इस कथन को पलायन समझना बड़ी भूल होगी। यह तो वास्तव में विदेशी सरकार और उसकी पुलिस को छकाना था। इस प्रकार छकाने का क्रम अप्सरा, चोटी की पकड़ आदि अनेक गद्य कृतियों में मिलता है। कुल्ली भाट में कुल्ली कांग्रेस का काम करते हुए पाठशाला भी चलाते हैं। निराला का अपना जीवन भी 'कुल्ली भाट' में आया है। असहयोग [illegible] में भी फैल गया था 'देश में [illegible] असहयोग आंदोलन जोरों पर था। [illegible] बैठे हुए किसान जमींदारों से बचने के लिए रह-रहकर 'महात्मा गांधी की जय' चिल्ला उठते थे। किंतु यह वर्णन तो उद्देश्य [illegible] था। हां, इस जागरण का ही प्रतिफल थे। [illegible] तो भाट। कुल्ली की पाठशाला में अछूत [illegible] पढ़ने आते थे। निराला देश की दूसरी [illegible] की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, [illegible]। खादी की तरह अछूतोद्धार भी कांग्रेस और विशेष रूप से गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का सबसे प्रमुख अंग था। निराला इस समस्या को सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। दुखित, शोषित, पद दलित मानवता के प्रति उनमें असीम करुणा है जो यहां देखी जा सकती है। 'दोनों में फूल लिए हुए मुझे भेंट करने के लिए... इनकी ओर कभी किसी ने नहीं देखा। ये पुश्त दर पुश्त से सम्मान देकर, नत मस्तक हो संसार से चले गये हैं। संसार की सभ्यता के इतिहास में इनका स्थान नहीं। वे नहीं कह सकते, हमारे पूर्वज कश्यप, भारद्वाज, कपिल, कणाद थे। रामायण, महाभारत इनकी कृतियां हैं। अर्थशास्त्र कामसूत्र उन्होंने लिखे हैं। अशोक विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, पृथ्वीराज इनके वंश के हैं। फिर भी वे थे और हैं।

कुल्ली भाट में निराला जहां राष्ट्रीय समस्या को रेखांकित करते हैं वहीं रूढ़ियों को तोड़कर नवसमाज की स्थापना की कल्पना भी। यह क्रांतिकारिता उनका उज्ज्वलतम रूप है जो केवल साहित्यिक रूढ़ियों को तोड़कर सीमित नहीं रहा। कुल्ली मुसलमानिन ले आये थे। कुल्ली जब मरे तो कोई ब्राह्मण एकादशाह कराने के लिए तैयार नहीं था। निराला यह करते हैं— रूढ़ियों को एक और धक्का देते हैं।

निराला ने ऐसे समाज की कल्पना की है, जिसमें मानव-मानव में समानता हो। ऐसा समाज बनाने के लिए वे पुरुष सिंह की तरह रूढ़ि का विच्छेद करने के लिए तत्पर देखे जा सकते हैं।

—के.-४० एफ सा[illegible]
नयी दिल्ली-११००[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरी है कल्पना और यथार्थ में

वहां चाहते हुए भी हम प्रार्थना नहीं कर सकते !

● आचार्य महाप्रज्ञ

व्यक्ति जैसा है, वैसा ही रहना नहीं चाहता, आगे बढ़ना चाहता है, निर्माण करना चाहता है, रूपांतरण करना चाहता है, किंतु केवल चाह मात्र से कुछ घटित नहीं होता। रूपांतरण के कुछ उपाय हैं। उन उपायों को जान ले, तो व्यक्ति चाहे जैसा बन सकता है और न जाने तो चाह केवल चाह रह जाती है।

रूपांतरण का पहला चरण है— कल्पना। जब तक कल्पना स्पष्ट नहीं होती, तब तक आगे का काम हो नहीं सकता। यदि कल्पना स्पष्ट है तो मानना चाहिए, पच्चीस प्रतिशत काम हो गया।

मुझे क्या होना है ? इसकी स्पष्ट कल्पना नहीं है, तो आगे कोई गति नहीं हो सकती। एक छोटा बच्चा भी कुछ सपने संजो लेता है। अनेक बच्चों से पूछा— 'क्या बनना चाहते हो' ? एक ने कहा— 'डॉक्टर बनना चाहता हूं'। दूसरे ने कहा— 'इंजीनियर बनना चाहता हूं'। तीसरे ने कहा— 'वैज्ञानिक बनना चाहता हूं'। एक पांच-दस वर्ष का बच्चा इनका समग्र अर्थ नहीं समझता, किंतु वह अपने स्तर पर यह कल्पना करता है कि मुझे यह बनना है। फिर उस दिशा में उसके चरण आगे बढ़ने लग जाते हैं। कोई कल्पना ही नहीं है, तो फिर आगे बढ़ने का प्रश्न ही नहीं हो सकता।

कल्पना यथार्थ बन जाती है

कल्पना का अगला चरण है— मानसिक चित्र का निर्माण। जो कल्पना की है, उसका एक मानसिक चित्र बना लें। जो व्यक्ति मकान बनाना चाहता है, उसके दिमाग में एक पूरा चित्र होता है, मकान का। मकान यथार्थ में बाद में बनता है, दिमाग में पहले बन जाता है। जब तक दिमाग में मकान नहीं बनेगा, यथार्थ में मकान नहीं बन पाएगा। कल्पना चित्र पर उतर आये, तो मानना चाहिए— हम पच्चीस प्रतिशत और आगे बढ़ गये। जो स्पष्ट मानसिक चित्र बनाया है, उसे देखें। मस्तिष्क पर ध्यान करें और उस चित्र का साक्षात्कार करें। यह घटित होता है। ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है।

कल्पना, मानसिक चित्र का निर्माण और उस चित्र पर एकाग्रता की सिद्धि— ये तीन चरण संपन्न होते हैं, तब चाह साकार हो जाती है, कल्पना यथार्थ बन जाती है। [illegible] में कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक चित्र और एकाग्रता— ये तीनों शर्तें पूरी नहीं होती हैं तो कल्पना अधूरी रह जाती है ।

अनिवार्य है कल्पना को यथार्थ तक ले जाना

केवल कल्पना करने और सपना लेने से काम नहीं चलता । कल्पना को साकार करने की विधि का बोध भी जरूरी है । जब कल्पना को साकार करने का गुर हाथ लग जाता है, तब कोई कल्पना अधूरी नहीं रहती । कल्पना को यथार्थ तक ले जाने के लिए जितनी यात्रा करना होती है, वह यात्रा पूरी हो, तो कल्पना यथार्थ में बदल जाती है । यथार्थ तक पहुंचने के लिए मानसिक चित्र बनाना और उस पर एकाग्र होना बहुत आवश्यक है ।

प्रत्येक व्यक्ति को निर्णय करना चाहिए कि मुझे क्या बनना है ? शिक्षा के क्षेत्र में आदमी यह निर्णय करता है कि मुझे क्या बनना है ? किंतु वह किस संदर्भ में यह निर्णय करता है, इसकी ओर ध्यान देना भी अपेक्षित है । संदर्भ को समझे बिना किसी भी वस्तु की व्याख्या नहीं की जा सकती । आज संदर्भ है आजीविका

[illegible] र व्यक्ति जीविका के क्षेत्र में एक कल्पना [illegible] और उस कल्पना को यथार्थ तक ले [illegible] यथार्थ तक कल्पना नहीं [illegible] नहीं बनता, [illegible] ऐसा समाज शालीन समाज है ? [illegible] स्वतंत्रता का उद्घोष दूसरी ओ[illegible] [illegible] केवल जीविका का संदर्भ [illegible] दर्भ छूट जाते हैं । अच्छा आदमी बनना है, यह संद[illegible] [illegible] यह ता[illegible]

बनने की कल्पना नहीं की जाती । बहुत अच्छे-अच्छे लोग हैं । कल्पना तो करते हैं, यथार्थ तक बहुत कम लोग पहुंच पाते हैं । क्यों होता है, इसका एक कारण स्पष्ट है— शिक्षा के क्षेत्र में यह विषय उपेक्षित-सा हो है । आज शिक्षा केवल जीविका का एक तैयार करने तक सीमित हो गयी है । जीवन निर्माण के विषय की उपेक्षा होगी, तो अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण कैसे होगा ?

अच्छी जीविका बनाम अच्छा जी[illegible]

दिल्ली में शिक्षामंत्रियों की एक गोष्ठी [illegible] आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में गठित [illegible] की रिपोर्ट पर विचार-विमर्श करने के लिए [illegible] मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश के [illegible] शिक्षामंत्रियों की वह संगोष्ठी आयोजित की [illegible] थी । राजस्थान के शिक्षामंत्री ने कहा— [illegible] रिपोर्ट अच्छी है । नैतिक शिक्षा अनिवार्य [illegible] किंतु नैतिक शिक्षा के साथ जीवन-विज्ञान [illegible] जोड़ना बहुत आवश्यक है । वह चरित्र[illegible] व्यक्तित्व के निर्माण का प्रायोगिक उपक्रम [illegible]

पहला संकल्प होना चाहिए— अच्छा आदमी बनना है । दूसरा संकल्प होना चाहिए— इंजीनियर, डॉक्टर या वैज्ञानिक बनना है । पहला संकल्प होगा कि अच्छा मनुष्य बनना है, तो फिर अगली बात और अधिक सार्थक बन जाएगी । अच्छा आ[illegible] [illegible]ने का संदर्भ सामने नहीं है और केवल [illegible] समस्या [illegible] है [illegible] मिल जाएगी, पर जीवन अच्छा नहीं बनेगा [illegible] जब तक हम जीविका और जीवन [illegible]

[illegible] एक [illegible]
नयी दिल्ली-११००[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व ' बहुत खतरनाक होता है । जब तक व्यक्ति अखंड और अविभाजित नहीं होता, तब तक समाज में अच्छा काम नहीं हो सकता ।

ऐसा लगता है, आज एक विभाजन हो गया है । शिक्षा ने यह काम संभाल लिया है कि अच्छी जीविका कमानेवाला बनना है । यह भी गारंटी नहीं की नौकरी मिल जाए । पढ़ाई भी यह गारंटी नहीं देती कि तुम जीविका के लिए पढ़ रहे हो, तुम्हें जीविका मिल जाएगी ।

> जीवन अच्छा और जीविका अच्छी— दोनों का योग होता है, तो इसे मणिकांचन योग कहा जा सकता है । सोना भी मिला और मणि भी मिली । दोनों को जड़ दिया, तो एक बढ़िया आभूषण बन गया । यह मणिकांचन योग आज टूट गया है ।

जीविका का साधन मिल भी जाए, किंतु जब तक 'अच्छा जीवन बनेगा' यह आश्वासन नहीं होता, तब तक जीविका भी पूरा साथ नहीं देती ।

अच्छे जीवन की कल्पना के सूत्र

कुछ लोगों को निःसर्ग से अच्छा जीवन [illegible] प्रस्तुत [illegible] करता । अच्छे जीवन की कल्पना भी स्पष्ट होनी चाहिए । [illegible] कल्पनाएं हो सकती हैं । [illegible] नहीं समझता, किंतु वह [illegible] कल्पना करता है कि मुझे यह बनना है । फिर जीवन की कल्पना प्रस्तुत की जाए, तो वह पांच सूत्रों से समन्वित होगी । वे पांच सूत्र ये हैं—

१. स्वस्थ शरीर, २. स्वस्थ मन, ३. स्वस्थ भाव, ४. बौद्धिक विकास, ५. कार्यक्षमता या कार्यकौशल ।

ये पांच अच्छे जीवन की कल्पना के सूत्र हैं । अच्छा आदमी या अच्छा जीवन वह होता है, जहां ये पांच सूत्र साकार बनते हैं । यह एक समग्र कल्पना है, इसमें जीवन और जीविका— दोनों की कल्पनाएं हैं, अखंड व्यक्तित्व की कल्पना है । दो सूत्र जीविका से जुड़े हुए हैं । बौद्धिक विकास और कार्यक्षमता या कार्यकौशल— ये दोनों जीविका के लिए जरूरी हैं । ये दोनों नहीं होते, तो जीविका भी नहीं अच्छी चलती । स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और स्वस्थ भाव— ये तीनों जीवन के लिए जरूरी हैं । भाव स्वस्थ है, तो ऐसा नहीं हो सकता कि जब चाहो आवेश को उभार दो और चाहे जितनी हिंसा करवा दो । भाव इतना स्वस्थ हो जाए कि हर कोई व्यक्ति भाव को बिगाड़ नहीं सके ।

दूरी है कल्पना और यथार्थ में

यह संभव तभी बनेगा, जब आवेश पर [illegible] नियंत्रण करना सिखाया जाए ।

केवल धन कमाना, जीविका [illegible] बौद्धिकता, कार्यक्षमता और [illegible] केवल [illegible] किसी बुत पर फिदा होने का वक्त [illegible] व्यापार [illegible] है, कला है, तो व्यक्ति [illegible] है । इससे जीविका का प्र[illegible] [illegible] प्रश्न अच्छा नहीं रहता है, कल्पना यथार्थ ब[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन अच्छा और जीविका अच्छी—दोनों का योग होता है, तो इसे मणिकांचन योग कहा जा सकता है। सोना भी मिला और मणि भी मिली। दोनों को जड़ दिया, तो एक बढ़िया आभूषण बन गया। यह मणिकांचन योग आज टूट गया है।

सहिष्णुता से सार्थक होती है शिक्षा

जीवन-विज्ञान का मुख्य सूत्र रहा— शिक्षा के क्षेत्र में आजीविका के लिए जितना कुछ चल रहा है, उसके साथ जीवन की बात और जोड़ दें। शिक्षा के क्षेत्र में जीवन और जीविका— ये दोनों बातें जुड़ेंगी, तो शिक्षा समग्र बन जाएगी। यदि शिक्षा के साथ केवल जीविका की बात जुड़ी रही, तो समग्र व्यक्तित्व का नहीं, खंडित व्यक्तित्व का निर्माण ही संभव होगा। जहां व्यक्तित्व खंडित होता है, वहां कोई भी बात पूरी नहीं होती। आज हिंसा बहुत बढ़ रही है, उत्तेजना है, अपराध है, काफी कुछ अवांछनीय चल रहा है। कारण यही है— समाज को जीविका के बारे में बहुत जागरूक बना दिया गया, किंतु जीवन के बारे में नहीं बनाया गया। [illegible]ए आज समाज को जैसा शिष्ट, सभ्य [illegible] होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा [illegible] भी कोई समाज होता है, जहां भिन्न [illegible] को मार दिया जाए, भिन्न विचारवाले [illegible] और अत्याचार किया जाए ? [illegible] ऐसा समाज शालीन समाज है ? एक ओर [illegible]चारिक स्वतंत्रता का [illegible] दूसरी ओर भिन्न [illegible] हत्या। आज ऐसे लोगों की दुनिया [illegible] अधिक है, जो भिन्न विचारों को सहन [illegible] करते। ऐसे राष्ट्र हैं, जहां अमुक संप्रदाय [illegible] सिवाय दूसरे संप्रदाय का प्रचार नहीं किया जा सकता।

विदेशों में रहनेवाले कुछ लोग [illegible] आये। हमने पूछा— 'तुम वहां [illegible] हो ? अर्हत वंदना करते हो ?" उन्[illegible] स्वर में कहा— "वहां हम चाहते [illegible] कर सकते। वहां दूसरे धर्म की [illegible] वर्जित हैं। यदि यह पता लग जाए— धार्मिक भजन गा रहे हैं तो कठोर दं[illegible] पड़े। इतने नियंत्रण की शायद हिंदु[illegible] लोग कल्पना भी नहीं कर सकते।"

> *व्यक्ति ने कल्पना करना तो [illegible] पर मानसिक चित्र का निर्[illegible] और ध्यान— ये दो सूत्र नहीं [illegible] जाने। कल्पना असफल हो [illegible] जिन लोगों ने मानसिक चित्र का निर्माण और ध्यान करना [illegible] लिया, एकाग्र होना जान लि[illegible] वे यथार्थ तक पहुंच गये।*

संस्कृति सहिष्णुता और समावेश की [illegible] रही है। उसने सबको अधिकार दिया [illegible] वैचारिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता दी [illegible] कुछ परंपराएं और संस्कृतियां ऐसी हैं [illegible] विरोधी विचार को सहन नहीं करतीं। [illegible] समस्या है और उसका प्रभाव भारत[illegible] पर भी आ रहा है। इस प्रभाव को [illegible] जा सकेगा, जब शिक्षा समग्र व्यक्ति[illegible] निर्माण का उपक्रम बने। जब तक [illegible] उदारता की बात, सहिष्णुता की बात [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाएगी, तब तक शिक्षा सार्थक नहीं होगी ।

सफलता हेतु एकाग्रता अनिवार्य है

जब तक एक विषय पर हम टिकना नहीं ानते, एकाग्र होना नहीं जानते, तब तक ल्पना यथार्थ तक नहीं पहुंच पाती । यह श्चित मानें— व्यवहार का प्रश्न हो या ध्यात्म का प्रश्न हो— ध्यान दोनों में ावश्यक है । व्यवहार में सफलता के लिए भी ान जरूरी है । कल्पना को यथार्थ तक ले ने के लिए एकाग्रता अत्यंत अनिवार्य है । र्विकल्प ध्यान की बात छोड़ दें, किंतु जो ाग्रता का ध्यान है, वह व्यावहारिक और ध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में सफलता के लिए रूरी है ।

सफलता का मार्ग ध्यान के सिवाय दूसरा ी है । आज जिन राष्ट्रों ने आर्थिक दृष्टि से ुत प्रगति की है, उनकी सफलता का सूत्र है ाग्रता । जापान के लोगों से जब सफलता सूत्र पूछा जाता है, तब वे कहते हैं— ारी व्यावसायिक सफलता का एक कारण है ाग्रता । हम लोग इस बात पर गहरा ्ययन करते हैं, प्रशिक्षण लेते हैं, ट्रेनिंग कोर्स ाते हैं । हमें यह सिखाया जाता है कि वसायिक क्षेत्र में भी किस प्रकार ध्यान का ग करना है ? कैसे अपनी एफिशिएंसी को ा है ।' इस दृष्टि से मूल्यांकन करें तो त्व निर्माण में ध्यान के मूल्य का अंकन ा जा सकता है ।

प्रस्तुति : ललित गर्ग

—अखिल भारतीय अणुव्रत समिति,
२१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००२

ल, १००८

इनके भी बयां जुदा-जुदा

नुक्ताचीं है गमे दिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात जहां बात बनाये न बने

—गालिब

भरी बज़्म में राज की बात कह दी
बड़ा बेअदब हूं सजा चाहता हूं

—इकबाल

बागबां ने आग दी जब आशियाने को मेरे
जिन पे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे

—साकब लखनवी

इक फुरसते गुनाह मिली वह भी चार दिन
देखे हैं हमने हौसले परवरदिगार के

—फैज अहमद फैज

दिल को अपने भी गम थे दुनिया में
कुछ बलायें थीं आसमानी भी

—फिराक [illegible]

मुद्दत हुई इक हादसाये इश्क को [illegible]
अब तक है तेरे दिल के धड़कने का [illegible]

—जिगर [illegible]

शबाब आया किसी बुत पर फिदा होने का वक्त आया
मेरी दुनिया में बंदे के खुदा होने का [illegible]

—पं. हरिचंद

प्रस्तुति : कुलदी[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम विवाह भी एक धोखा है

● अर्चना सौशिल्य

अकसर सुना है, दादी एवं मां की शादियां हुईं, लड़के ने लड़की को नहीं देखा, लड़की ने लड़के को नहीं देखा, किंतु चूंकि विवाह एक सामाजिक संस्था है—अतः हर व्यक्ति को इसमें प्रवेश पाना है । प्रारंभ में विवाह का उद्देश्य, इस संस्था के परंपरागत रूप को बनाये रखने में, प्रजनन हेतु तथा घरेलू कार्यों के संपादन हेतु आदि हुआ करते थे ।

कभी-कभी प्रेम विवाह हुआ करते थे, जिन्हें घरवाले स्वीकृति नहीं देते, क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा पर [illegible]नी थी, सामाजिक रिश्तेदारियों में हंसी [illegible]ती थी, बेटी का चरित्र संदिग्ध माना जा[illegible]र बेटे द्वारा माता-पिता की बे[illegible] नाम दिया जाता था । यह सारे [illegible]पने आप में सही हैं । हम सभी [illegible]जिंदगियों में विश्वास रखते थे, जहां [illegible]र का प्रमुख होता था, जिसकी [illegible]डनीय ही नहीं, अपितु पाप समझा [illegible]तु तब बच्चों को तालीमें भी वही दी [illegible] में परिवार की परिभाषा बदलती गयी । बेटे ने अपने पिता को अपने दादा से अलग होते देखा, छोटे परिवार की अवधारणाओं ने व्यक्ति को पारिवारिक खुशी, शांति व सुख की परिभाषाएं सिखायीं । लड़कियों ने अपने सगे-संबंधियों के हुए विवाहेतर संबंध देखे । कहीं किसी परिवार के अच्छे घर-परिवार के सुसंस्कृत व्यक्ति से फिर देखा, किंतु शादी के उपरांत, पति को पत्नि के व्यक्तित्व पर हावी होते देखा, घर-परिवार के बोझ से दबी तथा समाज के डर से, अपनी आत्मा को भी आंसुओं के घूंट पिलाकर, खुद को सिसकारी भरने से भी रोकते पाया, यह सब देखते-समझते हर-बुद्धिजीवी लड़का-लड़की समाज द्वारा बनायी इस वैवाहिक संस्था के अस्तित्व में सुधार लाने की कोशिश करने लगा ।

अस्तित्व मिट जाता है

एक अत्यंत सभ्य सुसंस्कृत परिवार के दांपत्य जीवन की कहानी में पति-पत्नी के [illegible] साल के संबंध में सदियों का फासला पाया हर भारतीय नारी शादी के बाद मात्र पति की जाती है । अतः उस पत्नी ने भी अपने अस्तित्व को अपने पति के नाम से सन्निहित कर सास-ससुर, बच्चों की बेदी पर बलिदान तो दिया, परंतु पति का व्यक्तित्व उसे अब नाकाबिल बेअक्ल तथा एक घरेलू पत्नी मानकर, परिवार को उबाऊ मान बैठा । पत्नी के लिए १० [illegible] पहले, आदर्श पति की परिभाषा, अच्छा कमाऊ अच्छा परिवार, अच्छी नौकरी थी । वह सब-कुछ तो उसे मिल गया परंतु विचारों की महत्ता न समझी उसने । कुछ वर्षों तक तो इसका हैंग ओवर बना रहा, किंतु वह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, कुछ समय के लिए, स्वभाव जब सामने आया, तो दोनों ही अपने-अपने पिंजड़ों में बंद होते चले गये । आज पति पत्नी को झगड़ालू, दकियानूसी, अल्पबुद्धि, समझकर कोसता है तो पत्नी पति द्वारा पाये सभी बंधनों को ढोते, एक पत्नी, मां, बहू का दरजा निभाते-निभाते अपनी आहुति देने की तैयारी कर रही है !

प्रेम विवाह भी एक धोखा है

प्रेम विवाह किये हुए एक तीस वर्षीय सज्जन का कहना है, 'प्रेम विवाह भी एक धोखा हो सकता है, जब चंद घंटों की मुलाकातों में व्यक्ति अपने एक पक्ष को उजागर करते-करते कैसे दूसरों को फांसने की कोशिश करता है, किंतु जब विचार नहीं मिलते, व्यवहार नहीं मिलते, क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं नहीं मिलतीं, तो जीवन नरक से बदतर हो जाता है ।' विवाह जो इतनी महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है जीवन की, इसे पाने के लिए लोग झूठ, फरेब, छल-प्रपंचों का सहारा क्यों लेते हैं ।

जिंदगी के २५ साल तक हर व्यक्ति शिक्षा प्राप्ति तथा व्यवसाय हेतु प्रयत्न करता है और बाद के ताउम्र अपने जीवनसाथी के साथ बिताता है, अगर इसमें कहीं गलती हो जाए, तो बाकी का जीवन बेउम्र हो जाता है । हम एक छोटी-सी वस्तु खरीदते हैं—सोच-समझकर, तोल-मोलकर, फिर जीवनसाथी के चुनाव में छोटी-छोटी बातों को नजरंदाज क्यों कर देते हैं । मध्यमवर्गीय परिवार के उच्च पदों पर आसीन लड़कों से उच्चवर्गीय परिवार की बेटियां क्यों ब्याही जाती हैं ? माता-पिता का सोचना कि बेटी समझौता कर लेगी, कितने फीसदी सही निकलता है ? आज की युवा पीढ़ी में सहनशक्ति, धीरता नहीं रही । क्योंकि आज शादियों को रूप, धन-दौलत से आंका जाने लगा है ।

जन्म-कुंडली क्यों ?

आज यही कहानी दुहरायी जाती है—जब उच्च राजकीय पद प्राप्त किये हुए व्यक्ति (संघ लोक सेवा आयोग द्वारा नियुक्त) पद एवं पैसे के लालच में बड़े-बड़े घरों की बेटियों से अपनी नीलामी करवाते हैं—ये बेटियां भी इन्हें खरीदकर अपनी जागीर-समझती हैं । किंतु यह कुरसी की कहानी चंद लम्हों में खतम हो जाती है—जब लाल बत्तियोंवाली गाड़ियों का नशा लिये ये पति अपनी साहिबगिरी जेवरातों से लदी पत्नियों पर दिखाते हैं—तब जवाब मिलता है, "तुम्हारी औकात क्या है, इज्जत भले ही तुम्हारी हो, यह पैसा, यह शोहरत मेरे घरवालों की है ।" पति अपने आफिस में क्लास वन आफिसर रह पाता है, परंतु घर में पति-पत्नी होने के बावजूद, व्यंग्यों की बौछारों, अपशब्दों की मालाओं से ज्यादा कुछ नहीं मिलता । क्या शादी करते वक्त उन्हें अपनी हैसियत, अपने विचारों, अपने व्यक्तित्व का एहसास [illegible] होता । कोई व्यक्ति पदवी, शोहरत [illegible] कितना भी बदलने की कोशि[illegible] करे, संस्कार नहीं जाते, तो क्या फि[illegible] पवित्र सामाजिक रिश्ते को निभा[illegible] जन्मकुंडली, पदवी, घर, परिवार, ल[illegible] की सुंदरता, पक्षता के साथ-साथ उनके [illegible] विचारों तथा व्यक्तित्व को नजर अं[illegible] किया जा सकता है ।

एक सज्जन ऐसे मिले जिनकी [illegible] ज्यादा देखने को मिली । विवा[illegible] नये तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभ में शादियां पहले होती थीं, तब शुरुआत होती थी प्रेम की, एक-दूसरे को समझने की, परंतु आज हर व्यक्ति अपने बारे में इतना सजग और सतर्क हो गया है कि अपनी अनुभूति को बनाए रखना चाहता है ।

अपने को 'राजा' या 'ठाकुर साहब' से कम नहीं समझ पाये और यही रुतबा घर की तबाही बन गया, क्योंकि पत्नी ने पति से भी ऊंची आवाज में बात करनी शुरू कर दी । आज दोनों रोते हैं, क्योंकि जिंदगी अपना भयावह रूप लेकर खड़ी है । क्या यही विवाह संस्था है ?

आजकल क्यों इतनी जल्दी शादियां टूटती हैं ? जितने लोगों से मैंने बातें की, सभी को नाखुश पाया, कुछ की बातों ने अंदर तक हिला दिया ।

एक साहित्यकार जो आज बरबादी के कगार पर खड़ा है, अपनी पत्नी को साहित्य की भाषा समझाने में असमर्थ है । पत्नी पति के भाषायी छल-प्रपंचों से परे हटकर सच्चाई में जीती है, परंतु पति इस सच्चाई को पाना तो दूर, समझना तक नहीं चाहता और पत्नी साहित्य को गंदी सालसरी जिंदगी मानती है जिससे पेट की भूख नहीं मिट सकती । सच है, दोनों ही सही हैं, परंतु दोनों का मिलाप गलत है । दोनों ने थोड़ी सतर्कता बरती होती, तो क्या दोनों का विवाह-जैसी संस्था से विश्वास उठ पाता, शायद कतई नहीं ।

कोर्ट जाना पड़ा

२८ वर्षीय एक परित्यक्ता के शब्दों में, पति उसके रूप, यौवन तथा शिक्षा से कुंठित हो इस प्रकार अशोभनीय हरकतें करने लगा कि मात्र १६ दिन [illegible] अपनी जान और इज्जत बचाने हेतु उसे कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा । उस महिला का मात्र विवाह पर से विश्वास नहीं उठा, अपितु हर पुरुष को जानवर समझने पर बाध्य हो गयी आज वह किसी अन्य के साथ जिंदगी का रास्ता तय करने की कोशिश लगी है । इस संबंध पर उसने विवाह की मुहर नहीं लगायी है, परंतु विचारों से, आत्मा से एक-दूसरे को अनुभव किया है, जो कालांतर में सिंदूर का रूप ले लेगा ।

यह विचार आज प्रचलित है, तो मात्र वयस्कों में नहीं अपितु २० वर्ष से ३५ वर्ष के व्यक्तियों में भी । अनेकानेक प्रश्नों में ज्यादातर जवाब यह मिले—विवाह-जैसी संस्था में विश्वास, समझदारी, अनुभूति एवं विचारों का तालमेल आज ज्यादा मायने रखता है, क्योंकि आज हर स्त्री-पुरुष अपने अधिकार को पहचानता है । अपने कर्तव्य एवं फर्ज के प्रति वफादारी रखना चाहता है और तब जीवन के एक मुकाम पर उसे जरूरत पड़ती है एक हमसफर की, जो उसे उसके वजूद का एहसास दिलाने में, उसके 'मैं' की अभिव्यक्ति करने में, उसके फर्ज के प्रति उसे उत्तरदायी बनने में मदद कर सके ।

पहले विवाह फिर प्रेम

प्रारंभ में शादियां पहले होती थीं, तब शुरुआत होती थी प्रेम की, एक-दूसरे को समझने की, परंतु आज हर व्यक्ति अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना सजग और सतर्क हो गया है कि अपनी अनुभूति को बनाये रखना चाहता है और इसी के साथ किसी दोस्त की जरूरत होती है, जो समझ सके उसे, प्यार दे सके, पति या पत्नी का दरजा पा सकें ।

एक संपूर्ण संस्था

आज विवाह को केवल प्रजनन हेतु, सामाजिक सुरक्षा हेतु, घरेलू कार्यों के संपादन हेतु एक संस्था नहीं माना जाता । परंतु मानसिक विकास के इस बौद्धिक जगत में विवाह-जैसी संस्था की महत्ता और भी ज्यादा हो गयी है । विवाह अपने आप में संपूर्ण संस्था है । जो मानवीय गुणों पर आधारित मानसिक संतुलन बनाये रखती है, भावनात्मक सुरक्षा देती है । एक वक्त के बाद हर इनसान अपने माता-पिता, भाई-बहनों से अलग हटने लगता है, क्योंकि किसी को उसकी जरूरत नहीं लगती, उसे एक अकेलेपन का एहसास होता है, जिसे वह बांटना चाहता है, किसी एक से, जो सिर्फ उसका अपना हो—जो उसे समझ सके, आत्मा से निकली हर आवाज को आत्मसात कर सके, जिंदगी जो एक कटी पतंग की तरह लड़खड़ा रही हो, उसे एक डोर में बांध खींच सके । जिंदगी और नाते-रिश्तेदारों की घनी धूप में, विश्वास एवं प्रेम की घनी छांव दे सके, परंतु जिस आशा की बुनियाद इतनी भावनात्मक हो उसके चुनाव में काफी सोच-समझ एवं विचार की आवश्यकता पड़ती है ।

यह जिंदगी है—जुआ नहीं, जहां विवाह का खेल सिर्फ एक ही बार खेला जाता है—हार गये तो मौत भी छोटी पड़ जाती है, इस दुःख को उठाने में, जीत गये तो वही सिकंदर बनती है । मैं विवाह को अत्यंत पवित्र मानती हूं, जिसका रचयिता स्वयं भगवान है—किंतु कर्मक्षेत्र की लड़ाई में अर्जुन हम खुद हैं । अतः इसके चयन में अत्यंत समझदारी, धैर्य तथा सद्बुद्धि की जरूरत होती है । शादी नहीं हो, तो मात्र एक दुःख होता है, परंतु शादी होकर बिखर जाए, तो हजार दुःख होते हैं । दस घर तबाह होते हैं ।

शादी-जैसी पवित्र संस्था में मन का, आत्मा का मिलाप होना चाहिए । आत्मा और मन से भटके पति या पत्नी को शरीर से बांधा नहीं जा सकता और अगर शरीर पर विजय भी पा लें, तो यह विवाह नहीं अपितु वहशीपन है, जिसे पेशा भी कह सकते हैं । मन से कोई हमारा नहीं है तो उसके शरीर को पाकर क्या आप अपने को पति या पत्नी मानते हैं, यह इनसानी जज्बात तो कतई नहीं हैं ।

हर स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे का प्रथम नहीं, अपितु अंतिम प्यार बनने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि वहां न कुछ खोने का दुःख होता है न पाने का । मेरे विचार से वह विवाह विवाह कहलाएगा, जब कोई मुझे इसी रूप में वरण करे, जहां मुझे अपने अस्तित्व पर परदा डालने की जरूरत नहीं पड़े । जब कोई व्यक्ति चंद कपड़ों में लिपटी किसी नारी का हाथ पकड़ ले, तभी नारी उसके पुरुष होने का, फख्र कर सकती है न कि अपने घरवालों की अर्थी पर सवार होकर आये वर को [illegible] में पाकर ।

—डॉ. शालिनी
[illegible] ९०, मॉडल टाउन
दिल्ली ११०००९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

एक महिला अपने पति के लिए टी शर्ट लेने एक दुकान पर पहुंची । दुकानदार को उसने अपनी इच्छा बतायी । दुकानदार ने पूछा, ''उनके गले का नाप क्या है ?''

पहले तो महिला कुछ क्षण सोचती रही, फिर बोली, ''सही नाप तो मुझे याद नहीं, हां इतना याद है कि जब मैं उनकी गरदन पकड़ती हूं, तो पूरी गरदन मेरे हाथ में आ जाती है ।''

मले ऐसी पत्नी मिले जो
मितभाषी हो ।''
ाई में तुम तीन पत्नियों का

—सुरेन्द्र श्रीवास्तव

से कहा, ''तुमसे शादी होने से
ही फूट गयी निठल्ले कहीं के !
रक में भी जगह नहीं मिलेगी ।''
ात का जवाब था, ''बेहतर होगा, अन्यथा
र मैं बेमौत मर जाता ।''

भावी दामाद से सक्सेना जी ने पूछा—''आपकी राय में विवाह की कौन-सी तिथि ठीक रहेगी ?''

''इसका फैसला मैं आपकी पुत्री पर छोड़ता हूं ।''

''विवाह वैदिक रीति से होगा या रजिस्टर्ड पद्धति से ?''

''इसका निश्चय मैं सरिता की माताजी पर छोड़ता हूं ।''

''और आपकी आजीविका कैसे चलेगी ?''

''इसका निश्चय मैं आप पर छोड़ता हूं ।''

●

नेताजी अपने नये मतदान क्षेत्र में सभा करके लौटे । एक पत्रकार ने उन्हें घेरा और लगा प्रश्न पूछने । उसने प्रश्न किया, ''आपने जब सभा में कहा कि मैंने आज तक कोई वोट नहीं खरीदा, तो लोगों पर उसका क्या प्रभाव पड़ा ?''

''अधिकांश चेहरे निराश दिखायी दिये ।'' नेताजी ने जवाब दिया ।

●

सक्सेना जी ने अपने पड़ौसी वर्मा जी को गुस्से में कहा—''बड़े निशानेबाज बनते हो, पता है आज मेरी बीवी तुम्हारी चलायी बंदूक की गोली से बाल-बाल बच गयी । मैं अभी पुलिस को फोन करता हूं ।''

वर्माजी ने विनीत स्वर में कहा—''ऐसा मत कीजिए, बल्कि आप चाहें तो मेरी पत्नी को गोली मारकर बदला चुका लें ।''

— नरेन्द्र सिंघवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंच की कविता

मंच की कविता
खूब गुल खिलाती है ।
तभी तो वह मसाला भी
कहलाती है

—राजा चौरसिया

तलाश

आ गये चुनाव—
हो गयी अच्छे-बुरे—
मुद्दों की तलाश ।
नोंची जानी है—
हर हालत में—
मानवता की लाश ।

व्यवस्था

उन्होंने
कानून को
धृतराष्ट्र बताया
तो स्थितियां
और भी
भारी हो गयीं ।
शासन व्यवस्था
स्वयं ही
पट्टी बांधकर
गांधारी
हो गयी ।

पद

नेता को मिला
जीतते ही
'मंत्री-पद'
जैसे भालू को
मिला हो
ढेरों—शहद ।

— गफूर स्नेही

आय

रिश्वत लेने के
आरोप में
पकड़े गये
आयकर अफसर ने
जज के सामने
यह सफाई दी ।
कि हमारा तो
विभाग ही है
आय कर
इसीलिए
आय की ।

शिष्टाचार

ये आधुनिक
शिष्टाचार है ।
जबरन हंसने के लिए
आदमी लाचार है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्तां कुछ भूलों की, जो भुलाये न बनें

राजेश ज्वेल

दुनिया में ऐसा कौन-सा व्यक्ति है जो भूलें नहीं करता हो, लेकिन कुछ भूलें इतनी आश्चर्यजनक होती हैं कि यादगार बन जाती हैं। यहां प्रस्तुत हैं कुछ रोचक व दिलचस्प भूलें।

सामान्य गलतियों, भूलों का तो शायद कोई उल्लेख नहीं करता, परंतु कुछ गलतियां ऐसी होती हैं, जो बहुत समय तक याद रहती हैं। कारण यह है कि ऐसी गलतियां अपने पीछे

ती हैं। भला ऐसी गलतियों
प उत्पन्न हो, उनसे
लतियां होती हैं, जो न
ा हैं, बल्कि हास्यास्पद
भूलों या गलतियों
होबी है और इन्हें

हम लंबे समय तक याद रखते हैं।

एक अमरीकी लेखक बिल ब्राइसन (जूनियर) ने ऐसी ही उत्कृष्ट गलतियों का एक संग्रह प्रकाशित किया है। हम काव्य-संग्रह, कहानी-संग्रह आदि से तो परिचित हैं, पर गलती-संग्रह का नाम सुनकर अधिकांश पाठक चौंकेंगे। ब्राइसन की पुस्तक का नाम भी गलतियों से पूर्ण है। नाम है— 'दि ब्रुक ऑव बंडर्स— ए बंपर बोक ऑव ड्रेडफुल डिसआस्टर्स' (गलतियों की पुस्तक : हास्यास्पद घटनाओं का संग्रह) पुस्तक के नाम के हर शब्द के हिज्जे गलत हैं। इस पुस्तक में ऐसी गलतियों से सैकड़ों उदाहरण दिये गये हैं। आइए, इसकी बानगी देखें। इन्हें पढ़कर मुसकराने पर कोई प्रतिबंध नहीं है, क्योंकि इसके सर्वाधिकार बिलकुल असुरक्षित हैं।

एक आदमी बहुत लंबे समय तक जानवरों की बोलियां बोलने का अभ्यास करता रहा। कुछ समय बाद उसने सोचा कि उसे अपनी इस कला को प्रयोग करके देखना चाहिए, ताकि उसे पता चल सके कि उसने इस कला में कहां तक निपुणता प्राप्त की है। वह एक जंगल में गया, वहां उसने अपने मुंह से भेड़िए की आवाज निकाली। उसी क्षण उसको एक गोली लगी और वह वहीं मर गया। संदेह की कोई गुंजाइश नहीं कि वह अपनी कला में निपुण हो गया था।

एक चोर किसी घर में चोरी करने के लिए घुसा। आलमारी को हाथ लगाने से पहले उसे ध्यान आया कि कहीं उसकी अंगुलियों के निशान आलमारी पर न रह जाएं। उसने अपनी जुराबें उतारकर हाथों में पहन लीं। आलमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जो भी माल मिला, उसे लेकर वह चलता-बना। अगले दिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया। उसके पैरों के निशानों से उसकी शिनाख्त हो गयी थी। बेचारे चोर से यह भूल हो गयी थी कि हाथों के निशान छिपाने के चक्कर में वह अपने पांवों के निशानों से पकड़ा गया।

मेंफिस (अमरीका) की एक दुकान में एक चोर घुसा। उसे एक कैमरा दिखायी दिया। उसने उसे उठा लिया। कैमरा हाथ में लिये वह आगे बढ़ा, तो उसे दो कीमती घड़ियां दिखायी दीं। उसने कैमरा पास पड़ी एक मेज पर रख दिया और घड़ियां उठाकर अपनी जेब में रख लीं, हड़बड़ाहट में वह कैमरा वहीं भूल गया और अगले ही दिन वह पकड़ा गया। कैमरे ने उसका भेद खोल दिया था। कैमरे के बटन पर

उसका हाथ लगने से उसकी फोटो खिंच गयी थी। कैमरे से फोटो मिलने पर चोर को पकड़ने में पुलिस को कोई कठिनाई नहीं हुई।

एंटवर्प (बेल्जियम) का एक चोर किसी घर में चोरी करने घुसा। आहट से घरवाले जाग गये। चोर भाग लिया। भागकर वह एक दीवार पर चढ़ गया और उसने दूसरी ओर छलांग लगा दी। उसने सोचा वह सुरक्षित स्थान पर पहुंच गया। जी हां वह स्थान अति सुरक्षित था, वह स्थानीय जेल थी।

अब गोताखोरी की बात करें। गोताखोरों का एक क्लब था। नाम था 'स्कूबा क्लब'।

उसके सदस्य विशेष उपकरण पहनकर समुद्र में गोताखोरी का अभ्यास किया करते थे। एक बार उन्होंने स्काटलैंड की झील लोचबिढ़े में गोताखोरी करने का निश्चय किया। उन्होंने संबंधित स्थानीय अधिकारियों से वहां गो[illegible] करने के लिए लंबा-चौड़ा पत्र [illegible] जब अनुमति मिल गयी [illegible] किलोमीटर का सफर [illegible] मीटर ऊंचे पहाड़ पर [illegible] जब झील के किनारे [illegible] कि झील की गहराई केव[illegible] [illegible] सेंटी[illegible] थी।

अब देखिये बैंड [illegible] की करामात। बेंतु[illegible] पार्क में बैंड बज रहा [illegible] ले रहे थे और धुन सा[illegible] बजा रहे थे। बैंडम[illegible] अपनी छड़ी हि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एंटवर्प (बेल्जियम) का एक चोर किसी घर में चोरी करने घुसा। आहट से घरवाले जाग गये। चोर भाग लिया। भागकर वह एक दीवार पर चढ़ गया और उसने दूसरी ओर छलांग लगा दी। उसने सोचा वह सुरक्षित स्थान पर पहुंच गया। जी हां वह स्थान अति सुरक्षित था, वह स्थानीय जेल थी।

उत्साह से हवा में उछाली कि ४,००० वोल्ट की बिजली के तार को छू गयी। परिणामस्वरूप बिजली बंद हो गयी। आसपास के १० ब्लॉकों के सैकड़ों घरों की बत्तियां बुझ गयीं। अंधेरा छा गया। एक रेडियो स्टेशन बंद हो गया। वहीं पड़े एक घास के ढेर को आग लग गयी। बैंडमास्टर की प्लास्टिक और पीतल की छड़ी पिघल गयी, परंतु बैंडवाले बैंड बजाते आगे चले गये।

अब कुछ दफ़्तरी अधिकारियों या बाबुओं के क़िस्से देखें।

स्विट्ज़रलैंड के एक होटल के एक बैरे की [illegible] उस समय कट गयी, जब वह मांस काट[illegible] चला रहा था। उसने बीमा कंपनी से [illegible] की मांग की। कंपनी ने इस दावे की जांच [illegible] लिए एक अधिकारी भेजा। उस [illegible] सभी संबंधित व्यक्तियों से [illegible], पर शायद उसकी तसल्ली नहीं [illegible]। उसने मशीन को स्वयं चला[illegible] निश्चय किया, जिससे बैरे की अंगुली [illegible] गयी थी। उसने मशीन चलायी और उस [illegible] भी अंगुली कट गयी।

ल[illegible] नगरपालिका के प्रमुख अधिकारी ने ख[illegible] के लिए विशेषज्ञों को बुलाया, ताकि वे सलाह दे सकें कि नगरपालिका के खर्चे में कैसे कमी की जा सकती है। विशेषज्ञों ने इस मामले में काफ़ी छानबीन की। दो महीने के बाद उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। उनकी पहली सिफारिश थी कि नगरपालिका के प्रमुख अधिकारी का पद समाप्त कर दिया जाए।

विश्व प्रसिद्ध पियानो वादक रबिंस्टन को एक बार मास्को में आमंत्रित किया गया। उसे मास्को के एक होटल में ठहराया गया। उसने सुन रखा था कि मास्को के होटलों में बातचीत सुनने के उपकरण लगाये जाते हैं। उसने अपने कमरे की जांच की, पर उसे ऐसा कोई उपकरण दिखायी न दिया। आधे घंटे के बाद उसे गलीचे के नीचे तीन तार दिखायी दिये। रबिंस्टन ने ब्लेड से उन तारों को काट दिया। अगले दिन कमरा साफ करनेवाली औरत ने बताया कि हैरानी की बात है कि रात को रबिंस्टन के कमरे के ठीक नीचे के कमरे का झाड़-फानूस छत से गिरकर टूट गया। वह घटना रबिंस्टन के कमरे में आने के आधा घंटा बाद हुई थी। जाहिर था रबिंस्टन ने बातचीत सुनने के उपकरण के एवज में झाड़फानूस के तार भूलवश काट डाले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंगलैंड के एक संग्रहालय ने एक नया सिक्का प्राप्त किया और इसका विशेष रूप से प्रदर्शन किया गया । संग्रहालय के अनुसार यह सिक्का रोम का था और उसे दूसरी शताब्दी में बनाया गया था । कुछ समय बाद नौ साल के एक बच्चे ने यह सिक्का देखा, वह झट से बोला कि यह तो सोडा बेचनेवाली कंपनी द्वारा दिया जानेवाला टोकन है, जो सोडे के तीन ढक्कन देने पर बच्चों को मिलता था । उस तथाकथित

रोमन सिक्के को तत्काल वहां से हटा दिया गया ।

अब एक नये पत्रकार का किस्सा सुनिये । शिकागो के एक पत्र के संपादक ने एक नये संवाददाता से कहा कि पुरानी कारों को तोड़कर उनसे लोहा ढालनेवाले कारखाने का विवरण लेकर आओ । संवाददाता कार्यालय की कार लेकर उस कारखाने में गया । उसके मैनेजर से मिला । जब लौटा, तो देखा उसकी कार के टुकड़े-टुकड़े किये जा चुके हैं, उसने कार गलत जगह पर खड़ी कर दी थी । वह स्थान उस दिन तोड़कर ढाली जानेवाली कारों के लिए निर्धारित था । निस्संदेह संवाददाता का यह पहला और

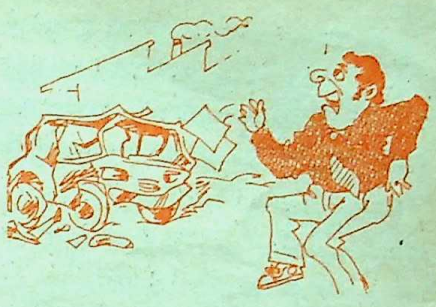

आखिरी इंटरव्यू था ।

और अब अंत में आत्महत्या की एक रोचक दास्तां सुनिये— ब्रिटेन के ही एक व्यक्ति जान स्ट्रेटन ने दुनिया से तंग आकर आत्महत्या करने का निश्चय किया । उसने अपने मकान के सभी दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दीं और गैस खोल दी । सारा घर गैस से भर गया, पर कुछ हुआ नहीं । उसे ध्यान आया कि उस नगर में खाना पकाने की जो गैस दी जाती है, वह विषैली नहीं है । वह कुरसी पर बैठकर सोचने लगा कि कैसे आत्महत्या की जाए । उसने जेब से सिगरेट निकालकर मुंह में लगायी और सिगरेट जलाने के लिए लाइटर [illegible] लाइटर जलाते ही घर में फै[illegible] गयी और वह उस आग में [illegible] !

इन्हें भूलें कहें या [illegible] ? खैर, मगर बड़ी रोचक एवं मनोरंज[illegible] ये हमें हंसने पर मजबूर करती ह, ता[illegible] हंसिए, हंसी का एक क्षण पूरे [illegible] बेहतर है । पर जरा सोचें, [illegible] ऐसी गलती हुई है । या[illegible] प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से [illegible]

[illegible]ना-[illegible]२, म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं धूप के चश्मे के आविष्कारक का नाम तो नहीं जानता, पर उस महान व्यक्ति का हृदय से आभारी हूं, जिसने गॉगल-जैसी अद्भुत वस्तु बनाकर मुझे वे तमाम सुविधाएं प्रदान कर दी हैं

व्यंग्य

धूप का चश्मा

● संतोष खरे

जो उसके अभाव में मैं प्राप्त न कर पाता।

अब देखिए न कि आदमी के मन में झांकने का एकमात्र माध्यम उसकी आंखों में तैरनेवाले भाव ही तो हैं। आंखों से प्रेम, घृणा और क्रोध व्यक्त किया जा सकता है। नजरें चार होती हैं तो प्रेम तक हो जाता है। प्राचीन कवियों के नायक-नायिका भरे भवन में आंखों-ही-आंखों में सभी बातें कर लेते थे। कहा जाता है कि यदि साहसी शिकारी बिना पलक झपकाये शेर की आंखों से अपनी आंखें मिलाये रहता है तो शेर को हमला करने का साहस नहीं होता। झूठ बोलनेवाले की आंखों में गहराई से देखा जाए तो उसका झूठ पकड़ में आ जाता है, पर मैं धूप का चश्मा पहनकर बड़ी आसानी से अपनी आंखों के भावों को छुपा लेता हूं। मेरी बातें सुनते हुए सामनेवाला समझता है कि मैं जो कुछ कह रहा हूं वही मेरे मन की बात है, पर मेरी आंखों पर चश्मा चढ़ा होने के कारण वह आंखों से सच्चाई का पता नहीं लगा पाता।

सामनेवाला समझता है कि मैं उसे देख रहा हूं, जबकि मैं उसे नहीं देखता, बल्कि उसकी ओर देख रहा होता हूं जो यह समझता है कि मैं उसे नहीं देख रहा।

जो धूप का चश्मा लगाते हैं वे जानते हैं कि चश्मा लगाने से चेहरे पर गरिमा तो आती ही है। साथ ही यदि काफी बड़े फ्रेम वाले चश्मे हुए तो चेहरे का नक्शा भी बदला दिखायी देता है। अच्छे सूट के साथ अगर गॉगल न हो तो चेहरे पर वह 'इम्प्रैशन' आ ही नहीं सकता जो चश्मा पहनने पर आ जाता है। साड़ी हो या स्कर्ट, बैल वाटम हो या ढीली कमीज, पैंट हो या गरारा, गॉगल सबके साथ लोकप्रिय है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी लोकप्रियता का अनुमान तो इसी बात से लगता है कि फिल्म के अधिकांश अभिनेता या अभिनेत्रियों ने फिल्मों में गॉगल्स पहने हैं।

चश्मा आदमी के व्यक्तित्व के साथ इस सीमा तक जुड़ गया है कि उसके जीवन में ऐसे मौके कम ही हैं, जब वह धूप का चश्मा न पहनता हो। सड़क पर, बाजार में, बसों, ट्रेनों, हवाई जहाजों में, दफ़्तर और पार्कों में लोग हर जगह धूप का चश्मा लगाते हैं, यह भी जरूरी नहीं है कि केवल धूप में ही धूप का चश्मा लगाया जाए। रात में भी कुछ लोग इसे लगाये रहते हैं। हर मौसम में इसका उपयोग होता है। यानि धूप का चश्मा समय, स्थान और काल आदि से परे की हर उम्र और सैक्स के लोगों की एक प्रिय वस्तु है।

आंखों के दोषों को सिर्फ धूप का चश्मा छुपाता है या धूप का चश्मा आंखों में पड़नेवाले धूल या धूएं से आंखों की रक्षा करता है। इस तरह की बातें यदि मैं लिखूंगा तो आप कहेंगे कि मैं चश्मे का विज्ञापन करने लगा। पर यह तो कहना ही चाहूंगा कि आप बस, ट्रेन या मीटिंग में धूप का चश्मा लगाये मजे से सोते रहिए और साथ के लोग समझेंगे कि आप जाग रहे हैं। आप आराम के साथ किसी महिला को घूरते रहिए, कोई कुछ नहीं कहेगा।

यह कहने की भी आवश्यकता नहीं कि धूप के चश्मों के कारोबार में हजारों लोग लगे हैं और गॉगल्स ने दुकानों में बाजार की शोभा बढ़ायी है, पर यह जरूर कहूंगा कि चश्मा एक ऐसी अनिवार्य वस्तु बन चुका है कि जो एक बार लगाता है वह सदैव लगाता है। चश्मा तो चश्मा है, वह टूट सकता है, चोरी हो सकता है या खो भी सकता है। तब चश्मा लगानेवाले दूसरा चश्मा नहीं खरीदेंगे ? मेरा अनुमान है कि औसतन हर व्यक्ति अपने जीवन में पच्चीस-तीस धूप के चश्मे जरूर खरीदता होगा, चश्मा व्यवसाय की सफलता का एक कारण यह भी हो सकता है।

धूप का चश्मा न होता तो क्या होता ? यही होता कि धूप का चश्मा लगाने पर जो धूप कम लगती है वह अधिक लगती और गहरे रंग के चश्मा लगानेवाले को वह और अधिक तेज लगती। मित्रों के बीच बातें करते समय चश्मा उतारकर रूमाल से उसके कांच साफ कर या चेहरे पर रूमाल रखकर और फिर स्टाइल से चश्मा लगाने के अवसर समाप्त हो जाते। लोग उन तमाम सुख और सुविधाओं से वंचित रह जाते जो चश्मे के कारण उन्हें प्राप्त हैं।

धूप के चश्मे के बारे में और अधिक तो जानता नहीं, पर इस संदर्भ में इतना और कहना चाहूंगा, 'चश्मा' शब्द भी कम व्यापक, नहीं। 'चश्मा' झरने को भी कहते हैं। यह भी कहा जाता है कि हर आदमी हर बात को अपने 'चश्मे' से देखता है। चश्मदीद गवाह होते हैं। शायर ने चश्मे-बद-दूर भी लिखा है। चश्मा का अर्थ उर्दू में भले ही 'नजर' हो, पर ऐनक को लोग ऐनक नहीं चश्मा कहना ही अधिक पसंद करते हैं।

एक बात और, क्या कोई वैज्ञानिक ऐसे चश्मे का आविष्कार नहीं कर सकता कि सामनेवाले की मन की [illegible] उसके चश्मे के कांच पर आ जाए—तब [illegible] लोग धूप के चश्मे लगाना बंद कर [illegible]

—सतना-[illegible]२, म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

कहीं कुछ था (कविता संग्रह) : रमेश कौशिक की नयी कविताएं उनकी पहली कविताओं से एकदम अलग हैं और कहा जा सकता है कि उनकी कविताओं की यह विकास यात्रा उनके पुराने काव्य वैभव को निरंतर तोड़ती है।

छंद की सिद्धि से चलकर बच्चों के लिए अबोध किस्म की सहजता से निपटकर, वह इधर मनुष्य के जटिल किंतु अमानवीय चेहरे की तसवीरें उकेरने में लगे हैं। "यह महानगर/एक बहुत बड़ा लिफाफा है/जिस पर मैं/एक छोटे-से टिकट की तरह/चिपका हूं।" वस्तुतः मनुष्य की खो रही अस्मिता की दास्तान-सी हैं, क्योंकि वह निरंतर 'जालें' बुनने में लगा है। "जब हम जाले बुनते हैं/तब [illegible] हैं/लेकिन जब उनमें फंसते हैं/तब [illegible] हैं।" रमेश कौशिक की कविता में एक [illegible] पारदर्शीपन है। वह शब्दों के भीतरी अर्थों से पाठक को झिंझोड़ते हैं। मानव अस्तित्व के अनेक प्रश्नों से वह जूझते हैं। आज की कविता का प्रमुख गुण है, जटिलताओं का सरल संप्रेषण और रमेश कौशिक की कविताएं इस गुण से अलंकृत हैं। विषयों की नवीनता, भाषा की सहजता, संवेदना की आंतरिक आबद्धता से संपन्न ये कविताएं भविष्य की कविता का दिग्दर्शन कराती हैं और कविताओं में रचे गये आश्चर्य के प्रति आश्वस्त जगाती हैं।

प्रकाशक : अभिरुचि प्रकाशन, ३/११४, [illegible] गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२ मूल्य : ७५ रुपये।

—डॉ. गंगा प्रसाद विमल

हिंदी भाषा : डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया लिखित इस ग्रंथ में विद्वान लेखक ने हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा की है। इस पुस्तक में हिंदी के प्रारंभिक विकास से लेकर राज भाषा और संपर्क भाषा तक इसकी यात्रा का सरल एवं सुबोध भाषा में परिचय दिया गया है। इसी प्रकार नागरी लिपि की विशेषताओं और उसकी वैज्ञानिकता की चर्चा करते हुए लेखक ने मानक हिंदी की [illegible] की सुंदर ढंग से विवेचना की है। आलोच्य पुस्तक भाषा के विद्यार्थियों तथा सिविल सेवाओं के परीक्षार्थियों के लिए अत्यंत उपयो[illegible] है।

प्रकाशक : साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ संख्या : १५३; मूल्य : पुस्तकालय संस्करण : १०० रु., विद्यार्थी संस्करण : ५० रुपये।

हिंदी कहानी के विविध आंदोलन : हिंदी कहानी के मात्र १०० वर्षों के इतिहास में [illegible] आंदोलनों ने जन्म लिया। कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को [illegible] ऊंचाई प्रदान की। 'कफन' और 'पूस की [illegible] रात' शीर्षक उनकी कहानियों से हिंदी कहानी को एक दृढ़ आधार मिला। प्रेमचंद ने जो आधार प्रदान किया, वह आगे के कहानीकारों का मार्ग प्रशस्त करता रहा। इस पुस्तक में अकहानी, सचेतन कहानी, समानांतर कहानी आदि आंदोलनों की चर्चा तो है, किंतु ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंदोलन स्थायी नहीं रह सके । इनके कारणों का जो विश्लेषण होना चाहिए था उसकी चर्चा इस पुस्तक में नहीं है । हां, यह जानकारी अवश्य दी गयी है कि हिंदी कहानी के आंदोलन इतिहास कैसे हो गये ।

लेखक : डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति, प्रकाशक : अयन प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या : ११६; मूल्य : ७० रुपये ।

बड़ा आदमी : उपन्यासकार एम. साकी, मूलतः पंजाबी भाषा के लेखक हैं । इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद मोना साकी ने किया है । आलोच्य कृति में लेखक ने हमारे समाज का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसमें सभी लोग अपने-अपने स्टेटस की चिंता में ग्रस्त रहते हुए मनुष्य को ऊंची और नीची पंक्तियों में बैठाने में व्यस्त दिखायी देते हैं ।

प्रकाशक : आत्माराम एंड संस, पृष्ठ संख्या : ३५७; मूल्य : २०० रुपये ।

आधी छुट्टी का इतिहास : राजकुमार गौतम की एक दर्जन कहानियां आलोच्य ग्रंथ में संगृहीत हैं । लेखक की समस्त कहानियों के पात्र हमारे जनजीवन में कहीं मिल सकते हैं, [illegible] संकलित सभी कहानियां [illegible] बहती [illegible] पेट भरने की मजबूरी को मार्मिक ढंग से पेश करती है ।

संसार चक्र : डॉ. महावीर प्रसाद गैरोला के इस उपन्यास के पात्र और लोकेशन पर्वतीय हैं, किंतु पात्र जगह-जगह भ्रमण करते दिखायी देते हैं, जिसके कारण यह उपन्यास यात्रा वृत्तांत के रूप में अधिक रोचक प्रतीत होता है ।

भारत में संवैधानिक समन्वय और व्यावहारिक विघटन : डॉ. मीनाक्षी स्वामी अपनी इस कृति के प्रारंभ में ही पूछती हैं कि "हमारे इतिहास का स्वर्णिम हिस्सा रचने में मुसलिम, सिख सभी तो एकजुट रहे हैं, फिर वे अलग जाने को बेताब क्यों हो गये ?" आलोच्य पुस्तक में लेखिका ने इतिहास की पृष्ठभूमि में इसका उत्तर खोजने का प्रयास किया है । एक स्थान पर वह कहती हैं : "आधुनिक युग में बढ़ती उपभोक्तावादी संस्कृति भी राष्ट्रीय विघटन का आधार बनती जा रही है ।" इससे असंतोष तो जरूर पैदा हो सकता है, किंतु विघटन का आधार कैसे बनता है, यह समझ में नहीं आता ।

उक्त तीनों पुस्तकों के प्रकाशक : किताबघर, गांधीनगर, दिल्ली, पृष्ठ संख्या क्रमशः ११० (मूल्य ५० रु.), १६८ (मूल्य ८० रु.) और १३६ (मूल्य ८० रु.) ।

वैदिक संस्कृति का विश्वकोश : ईश्वर, जीव, प्रकृति, मृत्यु, स्वर्ग, वैराग्य, भाग्य, मोक्ष, पाप, पुण्य, पुरुषार्थ आदि ऐसे अनेक विषय हैं, जिनकी व्याख्या हम प्रायः रोज ही सुना करते हैं, जो कभी अधिक भिन्न नहीं होतीं । इस पुस्तक में लेखक [illegible] चंद्र उपाध्याय ने अपनी सरल [illegible] रोचक शैली में उक्त विषयों का [illegible] ही है साथ ही अहिंसा, सत्य, शौच, आदि यम-नियमों पर भी प्रकाश डाला है । पुस्तक आद्योपांत पठनीय है ।

प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर, दिल्ली । पृष्ठ संख्या : २०३ ; मूल्य : ७० रुपये ।

दृष्टि : इस पुस्तक के रचयिता डॉ. रामप्रताप मिश्र आलोचक के रूप में विख्यात हैं । प्रस्तुत कृति में कवि के स्वर्ग-भ्रमण के शिल्प के माध्यम से मानव जाति के इतिहास, धर्म, दर्शन, कला आदि का [illegible] किया गया है । कवि हिंसा [illegible] की प्रवृत्तियों से चिंतित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष—९६ के स्वागत में कवि सम्मेलन

डालटनगंज । कादम्बिनी क्लब, डालटनगंज के तत्त्वावधान में स्थानीय जिला स्कूल के प्रांगण में 'नये वर्ष' के स्वागत में भव्य कवि सम्मेलन आयोजित किया गया । इस कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि माननीय श्री इंदर सिंह नामधारी, भूमि सुधार, राजस्व एवं परिवहन मंत्री, बिहार, ने दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का प्रारंभ किया । कवि हृदय श्री इंदर सिंह नामधारी ने कादम्बिनी क्लब की प्रशंसा करते हुए कहा कि पलामू प्रमंडल में कादम्बिनी क्लब के द्वारा हिंदी साहित्य का भरपूर प्रचार-प्रसार हो रहा है । क्लब की संयोजिका डॉ. लक्ष्मी विमल को उन्होंने आश्वासन देते हुए कहा कि ऐसे पुनीत साहित्यिक कार्य के लिए वे सदैव उन्हें हरसंभव सहायता प्रदान करते रहेंगे ।

इस कवि सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष प्रो. नादिम [illegible] । अध्यक्षता प्रो. सुभाष चंद मिश्र ने की । [illegible] पलामू के वयोवृद्ध साहित्यकार [illegible] श्री जनार्दन द्विवेदी [illegible] ।

[illegible] वाले कवियों में [illegible] लखी [illegible]

(राजस्थान), मूल्य : [illegible] रुपये ।

सागर मंथन : आचार्य विद्या [illegible] जन-कल्याण के [illegible] यह [illegible] दर्शन का नवनीत है । आध्यात्मिक ज्ञान के लिए पठनीय है ।

प्रकाशक : श्रीमती [illegible]

संख्या : ३[illegible]

मी[illegible]

नवीन कुमार नवीन ने किया तथा कवि सम्मेलन का संचालन डॉ. लक्ष्मी विमल द्वारा किया गया ।

मंगल कामना दिवस मनाया गया

भटनी (देवरिया) । कादम्बिनी क्लब ने नव वर्ष की प्रथम बैठक को 'मंगल कामना-दिवस' के रूप में आयोजित किया । बैठक में जनपद मुख्यालय से लेकर स्थानीय स्तर के दर्जनों साहित्यकार, लेखक, कवि तथा पत्रकारों ने हिस्सा लिया । गोष्ठी में मुख्य रूप से मानवीय संवेदनाओं को मुखरित करने हेतु कलमकारों को खुलकर आगे आने का आह्वान किया गया ।

आद्या प्रसाद शुक्ल की अध्यक्षता एवं शिवाकांत मिश्र के संचालन में संपन्न हुए इस कार्यक्रम में एक 'काव्य गोष्ठी' भी आयोजित हुई, जिसमें जनपद से पधारे परमहंस शुक्ल एवं संतशरण करुणेश सहित वी. के. श्रीवास्तव, सतीश गुप्ता, मुनेश्वर प्रसाद वर्मा, वलिराम प्रसाद भाटिया, अशोक कुमार राय तथा त्रिलोकी नाथ गुप्त आदि रचनाकारों ने भाग लिया ।

मुख्य अतिथि जिलापूर्ति अधिकारी एवं जिला समारोह अधिकारी, आर. एन. तिवारी ने कहा कि साहित्य के बिना किसी भी समाज में सरसता एवं समरसता नहीं रह जाती । ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऐसे [illegible]त्यिक-मंच की स्थापना हेतु [illegible] संपादक-कादम्बिनी' के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित [illegible] । सभी आगंतुकों का स्वागत अपने साहित्यिक [illegible] में 'पूर्व प्रधानाचार्य' हरि प्रसाद मिश्र ने [illegible] । नव वर्ष की मंगल कामना सभी सदस्यों ने [illegible] गजल एवं गीतों के माध्यम से प्रस्तुत की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी क्लब का वार्षिकोत्सव

साईंखेड़ा (नरसिंहपुर) । कादम्बिनी क्लब साईंखेड़ा का द्वितीय वार्षिकोत्सव वरिष्ठ साहित्यकार श्री तुलसीराम नेमा (नरसिंहपुर) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ ।

शासकीय उ. मा. विद्यालय के नवीन भवन में आयोजित कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुआ । वरिष्ठ कवि पं. नरहरि दत्त बसेड़िया ने आगंतुक साहित्यकारों का पुष्पहारों से स्वागत किया । क्लब के संयोजक वेणीशंकर पटेल 'ब्रज' ने क्लब की दो वर्षों की गतिविधियों की जानकारी दी ।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में 'कवि गोष्ठी' का आयोजन हुआ । काव्य गोष्ठी में श्री बालकृष्ण प्रसून (बनखेड़ी), डॉ. प्रकाश डोंगरे (नरसिंहपुर), नारायण श्रीवास्तव (करेली), कुशलेंद्र श्रीवास्तव, रोहित रमन (गाडरवारा), तुलसीराम नेमा (नरसिंहपुर), एवं क्लब के कवियों सर्वश्री नरहरिदत्त बसेड़िया, देवलाल बुनकर, शेख जफर, संजय गुप्ता, नीरज श्रीवास्तव, संजीव सोनी, रेवाशंकर कटारे, शिवकुमार शर्मा, अतरसिंह पटेल, भानुप्रताप राजपूत, मुकेश साहू आदि ने काव्य पाठ किया ।

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर कवि सम्मेलन

बीकानेर । बीकानेर कादम्बिनी क्लब व उजास द्वारा नव वर्ष की पूर्व संध्या पर ३१ दिसम्बर '९ को एक हिंदी व राजस्थानी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस कवि सम्मेलन में मुख्य शायर मोहम्मद इरशाद ने अपने कलाम में क शख्स को अपने साये से डर लगता है, और गौर से देखो इनसान इक खंडहर-सा दिखता है ।' कुमारी निधि सिंह ने अपनी रचनाओं में कहा, 'शास्त्रों की शिक्षा जितनी नहीं, दर्शन को दया दिखाती है' तथा 'सुखलीन, उलझन, हीन तब वेद की रचना हुई ।' [illegible] हित ने [illegible] नारा कट [illegible] राय रोटीया

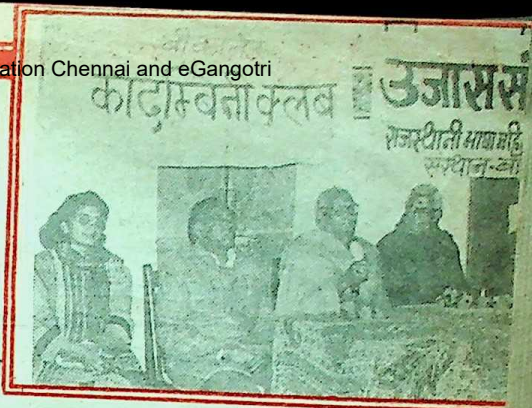

डॉ. आशा भार्गव ने 'नेता' व बदलाव शीर्षक से व्यंग्य रचनाएं तथा जुगल किशोर व्यास ने 'रसगुल्ला', श्रीमती प्रकाश अमरावत ने 'मूमलियो' तथा बालिका नेहा अमरावत ने एक बाल कविता प्रस्तुत की । सुश्री दर्शना उत्सुक ने नव वर्ष तथा राजस्थानी रचना 'मारवाड़ री धरती' तथा 'हर दिन,' प्रस्तुत की । श्रीमती वत्सला पांडेय ने 'रेल की तरह' शीर्षक में रचना प्रस्तुत की ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में [illegible] राजस्थानी के प्रख्यात साहित्यकार श्री [illegible] छंगाणी ने कहा कि [illegible] कलाओं तथा प्रतिभाओं [illegible] में विशिष्ट अतिथि [illegible] [illegible] ने [illegible] कि [illegible] से [illegible] उपन्यास काफा [illegible] [illegible] ल्ली, पृष्ठ [illegible] मूल्य : [illegible]

—अनंत राम गौड़

साहित्यकारों में एक नया [illegible] कादम्बिनी क्लब वर्तमान युग व [illegible] पूरे देश में अच्छा साहित्यिक वातावरण [illegible] सफल हुए हैं ।

[illegible] वि सम्मेलन का संचालन युवा कवियित्री [illegible] की सक्रिय सदस्या सुश्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या-पूर्ति—१९९

कैसी रही

द्वितीय पुरस्कार

पिउ-गेह की बात सनेह कहौ,
कहा राति अमा की हितैषी रही
कस रूप की राशि मलीन भई,
मन भावति ही कहा वैसी रही
सच बोलत लाज लजावै कहा,
काह चाहत जैसी की तैसी रही
वर साथ रही दिन-राति सखी,
बरसात हू नेह की कैसी रही

—कुंवरपाल 'भंवर'

सिंचाई विभाग उ. प्र.
हरदुआ गंज
जनपद—अलीगढ़ (उ. प्र.)-२०२१२५

तृतीय पुरस्कार

जिसकी लगन मन में
[illegible]-सी थी जगाती बेकली
[illegible]ति के मधुपान से
[illegible] बावली
निज इष्ट के वरदान-सा,
निर [illegible] की पहचान-सा
[illegible] रूप के
[illegible]गान-सा

चटककर [illegible]
शूल [illegible]
[illegible] होती है घटो[illegible]
[illegible] किस कदर जब [illegible]
पूछता [illegible] हर पल [illegible]
प्यार [illegible] ही

—क. [illegible] गुरु

मंडला (म.

कैसे कहूं [illegible]

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

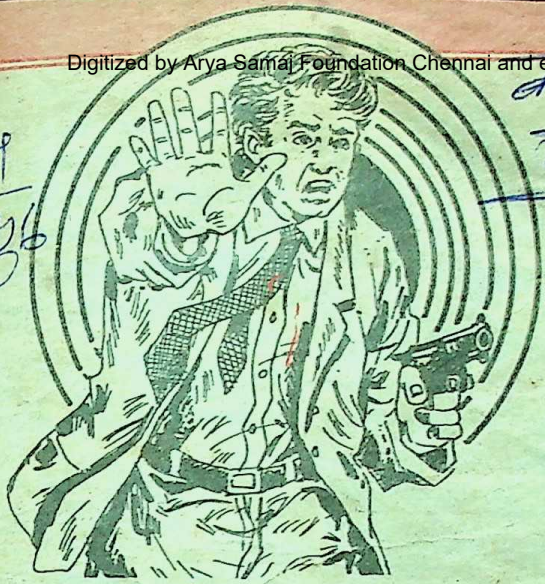

अगला अंक : जून अंक

रहस्य-रोमांच विशेषांक

- 'कादम्बिनी' के विशेषांकों की अपनी परंपरा है ।
- कादम्बिनी का हर विशेषांक दूसरे से अलग होता है !

छुट्टियों के लिए !!

- पढ़िए एक से एक दिलचस्प कहानियां, घटनाएं, रोंगटे खड़े करने वाले विवरण ।
- 'रहस्य-रोमांच विशेषांक' एक बार आपके हाथ से छूटा कि फिर मिलेगा नहीं ।
- 'रहस्य-रोमांच' विशेषांक की प्रति अभी सुरक्षित करा लीजिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **अभीष्ट** — क. लालायित, ख. कल्पित, ग. इच्छित, घ. सिद्ध।

२. **पर्याप्त** — क. बहुत, ख. काफी, ग. संतोषजनक, घ. अत्यधिक।

३. **पर्यावरण** — क. चारों ओर की स्थिति, ख. चारों ओर का परदा, ग. घुमाव-फिराव, घ. वायुमंडल।

४. **सचराचर** — क. विश्व, ख. जो अस्थिर हो, ग. सचल, घ. जिसमें स्थावर और जंगम सभी हों।

५. **सचित्त** — क. बुद्धिमान, ख. एकाग्र, ग. केंद्रित, घ. संचित।

६. **सचेत** — क. बुद्धिमत्तापूर्ण, ख. सावधान, ग. सशंकित, घ. चतुर।

७. **दुःखार्त** — क. रोता-चिल्लाता हुआ, ख. दुःखी, ग. पीड़ित, घ. असह्य वेदनामय।

८. **दुःसाध्य** — क. कठोर, ख. पीड़ामय, ग. जो कठिनाई से किया जा सके, घ. असंभव।

९. **सक्षम** — क. सफल, ख. क्रियाशील, ग. सचेष्ट, घ. समर्थ।

१०. **दुःश्रेय** — क. दुस्साहस, ख. अपयश, ग. कठिनता, घ. असमर्थता।

११. **विज्ञ** — क. जानकार, ख. समर्थ, ग. योग्य, घ. कुशल।

१२. **विडंबना** — क. असत्य, ख. उपहास का विषय, ग. उल्टी बात, घ. बहकानेवाली बात।

१३. **पर्याय** — क. अर्थ, ख. सार्थक शब्द, ग. समानार्थक शब्द, घ. समानांतर।

उत्तर

१. ग. इच्छित, अभिलषित। परिश्रम से ही **अभीष्ट** उद्देश्य की सिद्धि होती है। (व्युत्. -अभि, इष)

२. ख. काफी। देश में अन्न-भंडार **पर्याप्त** है। (व्युत्. -परि, अप्)

३. क. चारों ओर की स्थिति, अड़ोस-पड़ोस। **पर्यावरण** को दूषित होने से बचाना चाहिए। परि+आवरण (व्युत्. -आ, वृ)।

४. घ. जिसमें स्थावर और जंगम सभी हों। **सचराचर** की उत्पत्ति भगवान ने की है। (सचर+अचर)

५. क. बुद्धिमान, जिसका ध्यान केंद्रित हो। **सचित्त** छात्र परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। स+चित् (व्युत्. -चित्)

६. ख. सावधान। आशंकाओं के प्रति मनुष्य को सदैव **सचेत** रहना चाहिए। (व्युत्. -स+चित्)

७. ख. दुःखी, कष्ट में पड़ा हुआ। संसार में **दुःखार्त** लोगों की संख्या बड़ी है। (दुःख+आर्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. ग. जो कठिनाई से किया जा सके । यह कार्य **दुःसाध्य** है । दुः +साध्य)

९. घ. समर्थ । परिश्रमी व्यक्ति कठिन कार्य करने में **सक्षम** होते हैं । (स+क्षम)

१०. ख. अपयश । राम को वन भेजने का **दुःश्रेय** कैकेयी का है । (दुः +श्रेय)

११. क. जानकार, विद्वान । शिक्षक को अनिवार्यतः **विज्ञ** होना चाहिए । (व्युत्. -वि, ज्ञ)

१२. ख. उपहास का विषय । सामाजिक जीवन अनेक **विडंबनाओं** से भरा है । (व्युत्. -विडंब)

१३. ग. समानार्थक शब्द । भाषा में अनेक शब्दों के **पर्याय** भी होते हैं । (व्युत्. -परि, इ)

पारिभाषिक शब्द

Recognition	= मान्यता
Recommendation	= अभिशंसा/सिफारिश
Favourable	= अनुकूल
Unfavourable	= प्रतिकूल
Undervaluation	= अल्पमूल्यांकन
Telecommunication	= दूर-संचार
Technologist	= शिल्पविज्ञानी
Agronomist	= शस्य-विज्ञानी

ज्ञान-गंगा

अल्पाश्रयं समासाद्य महानप्यल्पको भवेत् ।
गजेन्द्रः पर्वताकारो यथा दर्पणमाश्रितः ॥

(तराभरणम् ५५)

—छोटा आधार पाकर बड़ा भी वैसे ही छोटा बन जाता है, जैसे पर्वताकार हाथी दर्पण में समाश्रित होकर छोटा हो जाता है ।

यद् वा अहं किंचन मनसा धारयति तथैव तद् भविष्यामि ।

(गोपथ ब्राह्मण १/१/९)

—जिसे मैं मन से जैसा समझता हूं वह वैसा ही होगा ।

स्वर्गं नयति सूनृतम् ।

(शिशुपाल वध २/२७)

—मधुर वचन मनुष्य को स्वर्ग पहुंचाता है ।

क्रोधांधः परमांध एव हतधीर्नांधोहशांधो जनः ।

(आनंद वृंदावतचंपू १५/१४०)

—क्रोध से अंधा हुआ व्यक्ति ही परमांध होता है, क्योंकि उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है । केवल नेत्र से अंधा हुआ मनुष्य ही अंधा नहीं होता ।

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु ।

(अथर्ववेद १/१०/२)

—तेरे लिए जल (शांति व क्षमा) के साथ अग्नि (तेजस्विता) कल्याणकारी हो ।

रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन ।

(रघुवंश ६/७९)

—रत्न को स्वर्ण के साथ संयुक्त करना चाहिए ।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार एलेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कादम्बिनी
वर्ष ३६, अंक ७, मई, १९९६
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

हाथी भी बने, जोंकों का शिकार
☐ राबर्ट बिन्सन २६
गंगा नीर सुधासम
☐ योगेश प्रवीन ३०
तुगलक पितृघाती था
☐ धर्मवीर शर्मा ४०
वे राजनीति की रोटी सेंक रहे हैं !
☐ देशबंधु वशिष्ठ ५३
शायर प्रेमिका का शिकार प्रेमी
☐ नवीन पंत ६२
गूंजती हुई लहरें
☐ शीला गुजराल ७०
अमीर खुसरो का स्मारक और पटियाली
☐ डॉ. विजय चतुर्वेदी ७३
एक ही पेड़ में २७५ किस्म के आम
☐ जगदीश प्रसाद साहनी ८२
मानव मस्तिष्क की क्षमता का चमत्कार
☐ डॉ. सी.बी.एल. वर्मा ९४
बालीद्वीप के प्रेतपूजक वैद्य-बालियान
☐ डॉ. राजेन्द्र मिश्र १०२
कहां से शुरू हुआ चांद-तारे का निशान
☐ नवीन खन्ना ११३
खिलना कहीं छुपा है मोहब्बत के फूल का
☐ डॉ. मनोहर भंडारी १४९
किस्सा पांच अशर्फियों का
☐ इन्द्र मुकुन्दजी १५५
हृदय रोगी पूरी तरह जीवनभर .....
☐ भगवती प्रसाद डोभाल १६२

कलकत्ता में बिरला मंदिर ६५
कौरवों की अनीति. मूर्तियों का माध्यम
☐ डॉ. बसंतीलाल बाबेल ६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

महिलाओं की लंबी उम्र का राज क्या है
□ राजेन्द्र कुमार राय १७४
हिंदी के लिए समर्पित विदेशी भारतीय
□ सुजीत वाजपेयी १७८
सरकार में जनता की प्रत्यक्ष साझेदारी हो
□ ओलगा चामेरो ट्रेआस १८४
राजनीति तो नगर की दुल्हिन है
□ रतनलाल जोशी १८७

कविताएं

मोहन अवस्थी □ चंद्रसेन विराट ३६
सुधेश □ दिनेश शुक्ल ३७
पद्मेश गुप्त ३८
डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र □ राजमणि राय 'मणि' ३९
निर्मला □ पुष्पा गर्ग
राबिन शॉ पुष्प १७७

कहानियां एवं व्यंग्य

राजा त्रयरुण की रथयात्रा
□ डॉ. सुधा पांडे ४७
अन्तर्प्रलय
□ डॉ. मीनाक्षी स्वामी ५७
सच है न विचित्र कथा
□ यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ७६
भलाई का रास्ता
□ संगमलाल मालवीय ८७
गायिका
□ अ. चेखोव १०७
दर्पण के पीछे
□ विजया वासुदेव ११८

महाभारत की नगरी नहीं .....
□ आलोक त्रिपाठी १२७

चमत्कारिक कथा-प्रसंगों से जुड़ी कठपुतली
□ कमलेश माथुर १३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईंट □ नीलिमा सेन गंगोपाध्याय १४०
आंदोलन सामग्री के थोक विक्रेता □ डॉ. मंगल बादल.....१५२
बात की बात □ डॉ. सरोजनी प्रीतम १८१

सार संक्षेप

प्रेम के बदलते दायरे □ एरिक सीगल १६८

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य-४, ज्ञानगंगा-५, प्रतिक्रियाएं-९, कालचिंतन-१४, आखिर कब तक-२०, प्रेरक प्रसंग-३४, आइए चलें जंगल की ओर-९२, विधि-विधान-९८, बुद्धि विलास-१०१, व्यंग्य-तरंग-११६, प्रवेश-१२४, इनके बयां जुदा-जुदा-१२५, वैद्य की सलाह-१४६, ज्योतिष समस्या और समाधान-१६०, यह महीना और आपका भविष्य-१६७, नयी कृतियां-१९०, क्लब समाचार-१९४, सांस्कृतिक समाचार-१९६, समस्या पूर्ति-१९८।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान: अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)
अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

आवरण चित्र में मॉडल 'रवीना चावला:' बंबई फिल्मी दुनिया की नवोदित अभिनेत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

आप राजधानी में बैठे हैं एवं 'कादम्बिनी' के जरिये लाखों पाठकों को सत् साहित्य से परिचित करा रहे हैं । आपकी पत्रिका से मैं पिछले १० वर्षों से निरंतर प्रभावित होता रहा हूं । वर्षों से आपको पत्र लिखने का मन भी बनाया । आज जब मैं 'हास परिहास विशेषांक' पढ़कर उठा तो आपको पत्र लिखने बैठ गया । मन आशंकित भी है कि म. प्र. के पिछड़े आदिवासी बाहुल्य जिला 'सरगुजा' के मनेन्द्रगढ़ की चिट्ठी के प्रति पता नहीं आपकी दृष्टि कैसी हो ? सच मानिए व्यंग्य एवं हास्य कथाएं अंदर तक गुदागुदा गयीं, इस विशेषांक को पढ़ कर आनंद मिला । तनाव एवं भाग-दौड़ की जिंदगी में अब हमें फुरसत ही कहां है कि हम उन्मुक्त हंसी हंस लें । ऐसी प्रकृति बहुत कम ही लोगों की रही जो हंसते रहे और दूसरों को हंसाते रहे । आप मानें या न मानें सद्भावना के बीज इन्हीं उन्मुक्त वातावरण एवं हास्य में छुपे रहते हैं । प्रसन्नता तो प्रकृति की दी हुई बिना मोल की सबसे महत्त्वपूर्ण पौष्टिक है । निसंदेह इस विशेषांक से हमें भरपूर विटामिन मिला है । हमारे ऋषि संभवतः इस तथ्य से परिचित थे एवं आप भी हैं, अतः अपनी सुविधा एवं परंपरानुसार ऐसे विशिष्ट विशेषांक के लिए प्रयत्नशील रहते हैं ।

विश्वाहा सुमना दी दि हीहि ।
(अथर्ववेद-७/७४/४)

(हे मानव ! तू इस संसार में प्रसन्नचित्त होकर चमक, स्वयं प्रकाशित हो और अन्यों को प्रकाशित कर) । 'होली कीचड़ की', 'एक चिंतन पापड़ के नाम' 'अपना नरक दर्शन' 'नाक काटने की प्राचीन परंपरा' व्यंग्य पढ़कर आंखों में चमक, चेहरे में कांति और मन में स्फूर्ति, हास्य का संचार हुआ । लगता है आप हमारी मनः स्थिति से परिचित थे । कादम्बिनी ने बोझिल, दौड़ती, हांफती जिंदगी से प्रसन्नता की अच्छी संगति बैठायी है । 'कालचिंतन' में भी आपने स्वीकारा है कि ''कालखंड के हम विभीषण युग'' से गुजर रहे हैं । मानवता का अब तक का इतिहास यही बताता है कि अंधियारावाला पक्ष कभी भी उजले पक्ष पर हावी नहीं हो पाता । हम तो इसी विश्वास से जी रहे हैं कि यह अंधकार स्थायी नहीं है। उसे तो मिटना ही है । चिरपुरातनकाल से हमें 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रेरणा मिलती रही है । अंत में इस शुभकामना के साथ कि ।

''प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय प्राधीय आयुः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतरंदधाना : (ऋग्वेद ६०/१८/३) अर्थात दीर्घतम और उत्कृष्ट जीवन को धारण करते हुए हम हास, उल्लास एवं आनंद भरे उत्तम मार्ग पर आगे ही बढ़ें ।

—सतीश उपाध्याय

मनेन्द्रगढ़-४९७४४२, जिला-सरगुजा (म. प्र.)

प्रोत्साहन पुरस्कार

अमरीकी राष्ट्रपतियों के प्रेम-प्रसंग (आखिर कब तक ?) की तरह ही हमारे राजनेताओं के भी प्रेम-प्रसंग चर्चित हुए हैं, लेकिन आजकल जो प्रेम-प्रसंग चर्चित होते हैं वे निचले स्तर के होते हैं, जिनकी कोई अपनी अहमियत नहीं होती है और न ही वे राजनीति को प्रभावित करते हैं ।

हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का एडविना माउंटबेटन से जो प्रेम-प्रसंग चला था वो न केवल पवित्र था बल्कि इस प्रसंग ने भारत विभाजन को भी प्रभावित किया था । पं. नेहरू के अजीज दोस्त और राजनीतिक सलाहकार ने ही नेहरू और एडविना के 'प्रेम-प्रसंग' को उजागर किया था । स्वयं नेहरूजी ने भी इससे इनकार नहीं किया था । ये अजीज दोस्त और सलाहकार थे, 'एम. ओ. मथाई', जिनकी स्वयं की भी धारणा थी कि "सभी महान व्यक्तियों के जीवन का घोषित महत्त्वपूर्ण तत्व 'सेक्स' है ।" उनकी ये बेबाक टिप्पणी नेहरू-एडविना के प्रेम-प्रसंग की तरह ही चर्चित रही । मथाई ने इस धारणा को नेहरू, जूलियस सीजर, क्लिओ पात्रा, नेपोलियन, मादाम और हिटलर-जैसी हस्तियों के जीने के ढंग के आधार पर ही बनायी थी ।

श्री एम. ओ. मथाई ने यह भी कहा था कि नेहरूजी ने कभी किसी महिला का पीछा नहीं किया, बल्कि महिलाएं ही नेहरू के पीछे रहा करती थीं । नेहरू और एडविना के प्रेम-प्रसंग के पीछे एडविना के पति लार्ड माउंटबेटन की भी मौन स्वीकृति थी । लार्ड का ये कहना था कि इस प्रसंग के चलते नेहरूजी को भारत विभाजन के लिए अंगरेजी सरकार की संशोधित योजना के लिए राजी किया जा सके, लेकिन जब नेहरूजी ने इस योजना का अध्ययन अपने अध्ययन कक्ष में किया तो वे आग-बबूला हो गये, क्योंकि इस योजना में भारत को कई टुकड़ों में बांटने की बात कही गयी थी । नेहरूजी अगर उस समय एडविना के प्रेम के मोहपाश में फंसकर इस योजना के लिए राजी हो जाते तो शायद आज देश के हालात दूसरे ही होते ?

नेहरूजी, एडविना के प्रति आसक्त कैसे हुए इसका जिक्र करते हुए श्री मथाई ने कहा था कि जवाहरलाल नेहरू उस समय विधुर और अकेले थे और अपनी जिंदगी में एक औरत चाहते थे । पं. नेहरू के इस विधुरता और अकेलेपन को एडविना ने अपने अस्तित्व से पाट दिया था । अंगरेज इतिहासकार भी इस तथ्य से इनकार नहीं करते हैं । नेहरूजी की लाडली बेटी और भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने इस प्रेम-प्रसंग को बकवास बताया था, लेकिन इतिहास आज इसका गवाह है । स्वयं इंदिराजी भी तो फिरोज गांधी के प्रेम में बंधकर परिणय सूत्र में बंधी थी । कहने का मकसद यही है कि प्रेम प्रसंगों को लेकर अमरीकी राष्ट्रपतियों ने भले ही बाजी मारी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन भारत के राजनीतिज्ञों और नुमाइंदों का इतिहास प्रेम-प्रसंगों से भरा पड़ा है ।

—अविनाश बावीकर

६१, देवी अहिल्या मार्ग, सेंधवा (मध्य प्रदेश)

संस्कृति : राष्ट्र का तीसरा अंग

कहा गया है कि भूमि, भूमि पर बसनेवाले जन और जन की संस्कृति मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं । संस्कृति के बारे में आई. ए. एस. बाल्मीकि प्रसाद सिंहजी के विचार जानने को मिले, अच्छा लेख पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ । सभी देशों की अपनी-अपनी संस्कृति होती है, परंतु भारतीय संस्कृति की बात ही निराली है; बड़ी ही विविधताओं से भरी है भारतीय संस्कृति । इसे हम 'अनेकता में एकता' का जीवंत उदाहरण कह सकते हैं । भारतीय संस्कृति स्वयं में इतनी भिन्नताओं को समेटे हुए है कि पहले तो कई विदेशियों ने भारत को राष्ट्र न कहकर उपमहाद्वीप की संज्ञा दी । आखिर भारतीय संस्कृति इतनी सामान्य तो है नहीं कि हर किसी की समझ में आ जाए । जब विचार करो तो लगता है सचमुच महान है हमारी संस्कृति और धन्य हैं हम कि हमने इस महान संस्कृति वाले महान देश भारत में जन्म लिया ।

यदि देश की अन्य संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुए भारतीय संस्कृति पर एक नजर डालें तो यह अन्यों से कहीं अधिक सहिष्णु और उदार है । वह भारतीत संस्कृति ही है कि जहां अपने विचार व्यक्त करने पर मौत का फतवा जारी नहीं किया जाता । यहां वैचारिक स्वतंत्रता है । स्वतंत्रता है हर किसी को अपना रास्ता चुनने की, एक अच्छा जीवन जीने की ।

संस्कृति की कोई एक परिभाषा तो दी नहीं जा सकती, हालांकि विद्वानों ने संस्कृति को शब्दों में भी बांधा है, "जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है ।" "ज्ञान और कर्म दोनों के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है ।" परंतु मैं तो कहूंगी कि भारतीय संस्कृति विटप का पुष्प नहीं अपितु विटप ही है; एक सुंदर-सा वृक्ष जिस पर पत्ते भी हैं, फल भी हैं और फूल भी हैं ।

यदि हम वर्तमान संदर्भ में देखें तो भारतीय संस्कृति का किन्हीं कारणों से विकास नहीं हो रहा है या यूं कहें कि संस्कृति रूपी वृक्ष उचित प्रकाश और देख-रेख के अभाव में कुछ सूख-सा गया है । इस पर अतिक्रमण हो रहा है दूसरी संस्कृतियों का । आज जरूरत है तो केवल इस बात की कि कोई ऐसा अश्वमेघ यज्ञ हो कि जो भारतीय संस्कृति की धारा को प्रवाहित कर दे, आज ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जो स्वामी विवेकानंद की तरह भारतीय संस्कृति का प्रचार करें, प्रसार करें । वैसे हमारी संस्कृति इतनी कमजोर नहीं है कि इतनी जल्दी धूमिल हो जाए । भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी हैं । हम इतने सक्षम तो नहीं हैं कि इस मजबूत वृक्ष को सहारा दें पर इतने सक्षम तो हमें होना ही चाहिए कि इस संस्कृति रूपी वृक्ष की छांव ले सकें, फल ले सकें, फूल ले सकें ।

—कु. ऋचा रावत

सराफा बाजार, सागर (म. प्र.)

विवाह में सफलता

विवाह में सफलता के लिए व्यावहारिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है । पति-पत्नी की परस्पर रुचियां न भी मिलती हों तो बुद्धिमत्ता एक-दूसरे की रुचियों को सम्मान देने में है न कि एक-दूसरे को अपने ढांचे में ढालने के प्रयत्न में कलह उत्पन्न करने में । पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निबाहते हुए, अहं भाव का परित्याग कर अगर अपनी-अपनी रुचियों को पल्लवित किया जाए तो भी शादी एक अभिशाप न बनकर वरदान साबित हो सकती है ।

—डॉ. अनूप कु. गक्खड़
जालंधर शहर

विधवा नहीं, पत्नी लिखें

वाह, अवस्थीजी, आपने मेरी सोच पर अपनी मुहर लगा दी । अब तक मैं पत्र-पत्रिकाओं (हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में भी) में किसी भी व्यक्ति के निधन के पश्चात यही छपता आ रहा था कि अमुक व्यक्ति के निधन के बाद उनकी विधवा बेसहारा हो गयी है । ऐसा पढ़कर मुझे बराबर संपादकों पर गुस्सा आता रहा है—परंतु इस बार कादम्बिनी में स्मृति-शेष श्यामाचरण दुबे के परिप्रेक्ष्य में यह पढ़कर कि—"प्रोफेसर दुबे ७३ वर्ष के थे । उनके परिवार में उनकी पत्नी प्रोफेसर लीला दुबे के अलावा दो पुत्र और एक पुत्र वधु है ।" यह पढ़कर मैं यह कहता उछल पड़ा कि वाह अवस्थीजी आपका तो देशव्यापी अभिनंदन होना चाहिए । आप अन्य हिंदी संपादकों-जैसे लकीर के फकीर नहीं रहे, जो अंगरेजी का अंधानुकरण करते हुए विडो ऑफ सो एण्ड सो की तर्ज पर लिख मारते हैं—"फलां के निधन के बाद उनकी विधवा . . .।"

मेरी राय में सभी हिंदी संपादकों को डॉ. अवस्थी से सीख लेनी चाहिए कि किसी के निधन के बाद उसकी 'पत्नी' - पत्नी ही रहती है—विधवा कहकर उसे संबोधित करना अशोभन है, ठीक उसी तरह जैसा कि पति की मृत्यु के बाद उसके सिर के बाल मुड़वा देना । एक बार फिर अवस्थीजी को मेरी बधाई है ।

—रघुनाथ प्रसाद विकल
पटना

(आपने इतनी सूक्ष्म बात पकड़ी, इसके लिए आभार— सं.) ।

धन्यवाद

'कादम्बिनी' में घरेलू सामग्रियों का औषधियों के रूप में प्रयोग बताया जाता है जो जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि ये सामग्रियां सस्ती होने के साथ-साथ सहज उपलब्ध भी हैं । मैंने इससे लाभ भी उठाया है । मेरे पति के हाथ में दाद सरीखा एक इंची दाग हो गया था, जहां की त्वचा मोटी और काली हो गयी थी । कादम्बिनी में बताये उपचार के अनुसार मैंने प्रतिदिन तुलसी के रस में गेरू (लाल मिट्टी) मिलाकर लगाया, जिससे काफी लाभ है । इन उपचारों में धैर्य की आवश्यकता होती है । अतः कादम्बिनी परिवार को धन्यवाद देते हुए अनुरोध करती हूं कि इसी प्रकार आपकी पत्रिका जन साधारण के लिए दिनों दिन और उपयोगी बनती रहे ।

—श्रीमती ईरा पांडे
कोरबा पश्चिम

अप्रैल '९६ अंक में व्यंग्य लेख 'गाय, बैल और सरकारी कायदे कानून' की लेखिका का नाम भूलवश मीनाक्षी गोस्वामी छप गया है । इसका सही नाम मीनाक्षी स्वामी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गागर में सागर

'गागर में सागर' वाली कहावत 'कादम्बिनी' के स्वास्थ्य-विशेषांक पर चरितार्थ होती है, वैसे तो कादम्बिनी के हरेक अंक संग्रहणीय होते हैं, पर स्वास्थ्य-विशेषांक का तो कहना ही क्या ? मैं ८५ से कादम्बिनी का नियमित पाठक हूं और आज भी कादम्बिनी की उसी उत्सुकता से प्रतीक्षा किया करता हू', प्रति मिलने में एक दिन का विलंब भी मन को बेचैन कर देता है । दुर-सुदूर देहातों में रहनेवाला मुझ-जैसा पाठक कादम्बिनी में बताये गये नुस्खों का प्रयोग कर अपने रोगों से निजात पाता है । सचमुच, कादम्बिनी अपने नाम के अनुरूप ही अपने-आपको प्रस्तुत करती है ।

— शशि कुमार श्रीवास्तव
हजारीबाग-८२५३१२

हजल

सुरेश नीरव की 'हजल' पर हमें निम्नलिखित पाठकों के पत्र प्राप्त हुए : जगन्नाथ विश्व, (बिरला ग्राम, नागदा); सुधाकर त्रिपाठी (सतना, म. प्र.); नरेन्द्र शर्मा, (जबलपुर); सोमनाथ शुक्ल 'शशांक', (रीवा, म. प्र.); शिव भरोसे तिवारी (म. प्र.) । स्वामी वाहिद काजमी, (अंबाला छावनी); संजय झांसवी, (नयी दिल्ली); रामवरण ओझा, (खंडवा, म. प्र.) ।

'हास-परिहास' विशेषांक पर हमें निम्नलिखित पाठकों के पत्र प्राप्त हुए :

मोहन कुमार सरकार (भागलपुर); बाबूलाल चौधरी (राज.), सत्यपाल सिंह 'सुष्प' (नयी दिल्ली); श्रीकांत कुलश्रेष्ठ (मुंबई); अखिलेश्वर पांडेय (बिहार); आर. पी. सिंह पटेल 'रवि' (म. प्र.); सुभाष कुमार गुप्ता (बिहार); भागीरथ कुशवाहा (बिहार); सरोजनी पांडे (इलाहाबाद)।

कद लम्बा कीजिये !!!

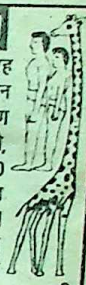

छोटा कद अब तक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद किसी कारण हो, अब 10 से 40 वर्ष तक की आयु के बच्चे, स्त्री, पुरुष हमारी दवा P.H.C. द्वारा 2 से 10 सै. मी. तक कद लम्बा करें। एक माह की दवा का मूल्य 140 रुपये डाक खर्च 30 रुपये अलग। जल्द लाभ के लिए P.H. Gold एक माह का ईलाज 450/- डा खं. अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, विवाह-शादी, प्राईवेट, सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता है। किसी तरह के व्यायाम की जरुरत नहीं। कोई SIDE EFFECT नहीं। गारंटी :- पूरे कोर्स के बाद परिवर्तन न हो तो आधा मूल्य वापस।

ताकत बढ़ायें शान से जियें

बचपन की गलतियों के कारण या उम्र की अधिकता से पेशाब का बार-बार तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आँखों के आगे अन्धेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, मरदाना कमजोरी आयुर्वेदिक इलाज जादू की तरह असर करने वाली आयुर्वेदिक बूटियाँ, भस्मों, कुश्तों आदि का प्रयोग होता है.

केवल पुरुषों के लिए तिला की मालिश से कुछ दिनों में छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है. खाने व मालिश के इलाज का खर्च 190/-. दूगनी ताकत 350/-. तीन गुणी ताकत 500/-. शाही ईलाज 1700/-

विद्यार्थियों के लिये वरदान

दवा M.P. विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन लगाती है. दिमागी परेशानी दूर कर, परीक्षा के डर को समाप्त करती है. एक बार पढ़ी बात जिन्दगी भर याद रहेगी. दिमागी काम करने वाले विद्यार्थी, प्रोफेसर, कलर्क, वकील, जजों तक लाखों लोगों ने लाभ उठाया है. 30 दिन का ईलाज 150/- रुपये।

नाक के आपरेशन से डरें पुराना जुकाम बिगड़ कर दमा बन जाता है, नाक का बंद रहना, मस्सा या हड्डी का बढ़ जाना, लगातार छीकें, दिमाग से रेशा गिरना, गला खराब होना। 30 दिन का ईलाज 180/- रु।

मोटापा बढा हुआ पेट, बेडौल मोटे कुल्हे, चलने फिरने में दिक्कत का ईलाज 210/- दुबले, पतले कमजोर को मोटे तगडे बनाने का ईलाज 300/- केवल एक माह में 8-9 Kg. वजन बढायें। आज ही पत्र लिखकर घर बैठे दवा मंगवायें। इतवार छुटी, कोई बाच नहीं।

मेहरा क्लीनिक Code No. 450 J.K.
गैस एजन्सी के सामने, इस्लामाबाद, अमृतसर-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

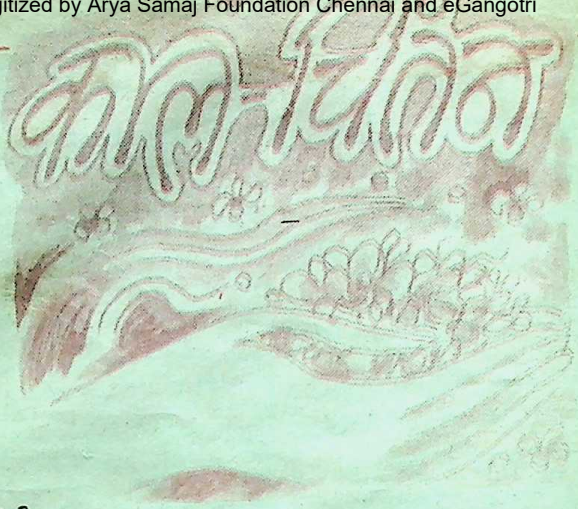

—सत्य ?

—हां, सत्य के प्रतिकल्पी सत्यवान की खोज करनी पड़ेगी ।

—सोचना होगा : सत्यवान मिथक की संज्ञा का एक प्रयोगधर्मा और वर्ग चेतना का प्रतीक है अथवा व्यतीत के शिलालेखों में अंकित वह सहज, सजग और जीवित पात्र रहा है !

■

—सत्यवान की खोज सावित्री का पतिव्रत धर्म रहा है अथवा समय के प्रतीकों को अंकित करनेवाला मूल्यवान अर्थ ।

—सत्यार्थ तभी होता है जब समय के प्रचलित मूल्य उसे सामान्यतः स्वीकारते नहीं ।

—राम का राजसत्ता त्याग और वनगमन, दशरथ का बेबस होना, केकैयी का छाया-विद्रोह और फिर वनवास ; वनवास के पश्चात् की स्थितियां और राम का संघर्ष—प्रतीक हैं इस सत्य के कि राम-युग में राम ने जो भी किया वह युग-सत्य नहीं था ।

—युग-सत्य होता तो राम का गौरवपूर्ण राजतिलक सदियों बाद भी महिमा-मंडित नहीं हो सकता था ।

—अर्थ यह हुआ कि समय की वीभत्स शिलाओं को तोड़ने के लिए हथौड़े और विस्फोटकों की अनिवार्यता अनर्थ है ; अर्थ है आत्मसत्ता का समय के प्रबल आयोग के तूफानी बगूलों में फंसकर सहज ही बाहर आ जाना ।

■

—सत्य की परिभाषा यहीं करनी होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सत्य का संबंध हमारी मानसिक दीर्घायुओं से है ।

—शरीर रथ है ।

—रथ में इंद्रधनुषी घोड़े जुते हुए हैं ।

—लगाम उनकी मन के हाथ में है ।

—रथ का सारथी है बुद्धि ।

—आत्मा रथी है ।

—रथी रूपी सारथी से जब रथ के सारथी का संयोग होता है और मन की लगाम से इंद्रधनुषी घोड़ों को वह शक्तिपूर्वक वश में करता है तब वह भोक्ता की स्थिति में पहुंच जाता है ।

—भोक्ता कभी उपभोक्ता नहीं बनता ।

—भोक्ता के वश में सभी कुछ संयुक्त होता है जैसे कुशल घुड़सवार के काबू में घोड़े का समूचा जीवन अस्तित्व ।

—इस स्थिति में आकर ही लक्ष्य और परिधि की अवधारणा टूटती है, क्योंकि असामान्य परिस्थितियों में भी सत्य की लगाम संपूर्ण समर्पण के साथ हाथ में रहती है ।

—समर्पण प्राप्ति का प्रथम और अंतिम सोपान है ।

—इसी सोपान में आत्मा का जागरण है ।

—आत्मा का संदेश है :

- अविराम चलते रहना
- अविराम निश्चिंत
- अविराम समर्पण
- समर्पण से उद्भूत सुख का अमृत कलश
- अमृत कलश से विनाश का प्रतिकार
- विनाश के प्रतिकार से समन्वयवादी सृष्टि का उदय

—समन्वयवादी सृष्टि के उदय से विकार विनष्ट होते हैं ।

—सत्य वही है जहां विकार की छाया भी नहीं पहुंचती ।

—विकार रहित मनुष्य की आत्मा उस हीरे की तरह है जो ठोस होता हुआ भी पारदर्शी है ।

■

—हीरे से कीमती न मनुष्य है और न विश्वमंडल । सभी को दूषित कर दिया है आक्रमणकारी, विघटनवादी और उपभोक्ता तत्वों ने ।

— इन्हें स्वच्छ करना सहज नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■

—प्रातबेला !

—अचानक एक व्यक्ति का मेरे कमरे में प्रवेश ।

—अनाहूत अतिथि !

—आग्रह किया मैंने, परेशान हैं आप ?

—जी, बेहद, अन्यथा, अचानक इस तरह अवतरित नहीं होता कोई !

—किसलिए लेकिन मेरे पास ? मैं क्या कर सकता हूं ।

—'सभी कुछ' उसने कहा, 'आप पारदर्शी हैं । पारदर्शी पुरुषोत्तम होता है ।'

—'मैं पुरुषोत्तम नहीं हूं । परेशान मत कीजिए मुझे । मैं... ।'

—'करूंगी ; मैं बाधाग्रस्त हूं । प्रेत, प्रेतछाया या प्रेतात्मा... ।'

—'परेशान सोचता हूं क्या कहूं । विश्वास तोड़ना सहज है । आगमन टूटे विश्वास से नहीं था ; तब ?'

—कहा मैंने, 'सुनो, तुम्हें रात्रि के तीसरे पहर में आना होगा । आना होगा अकेले । कहां, यह प्रश्न उठे तो वह भी बता देता हूं । वातायन के नीचे किसी शीर्ष दीवार के पटाक्षेप में' ।

—'स्वीकार्य है मुझे' बिना कुछ भी सोचे-समझे उसने उत्तर दे दिया ।

—समर्पण की यही चरमसीमा होती है । यहीं से सत्य उद्भाषित होता है ।

—प्रसंग यहीं समाप्त करूंगा क्योंकि सत्याकार को ओढ़े सभी असत्य के मुखौटे टूट गये और वह धराशाई थी पृथ्वी पर ।

—पृथ्वी संकल्प के लिए है, धराशाई होने के लिए नहीं ।

—मैंने उसे संकल्प से ऊपर उठाकर विकल्प के द्वार तक पहुंचा दिया !

■

—सत्य के उद्भाषित की मात्र यह एक घटना थी । उसका क्या होगा जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य के आवरण झूठ, फरेब, भ्रम, शक्ति और शक्ति संतुलन के महाद्वारों तक प्रवेश कर गये हैं ।

—हमारा समूचा आवरण मिथ्या-भ्रम और असत्य से आवृत्त है ।

—समाज और संस्था से लेकर पृथ्वी का यह लघु गोलार्ध झीनी चदरिया के सामने एकदम नंगा है ।

—इस नंगेपन ने महानता के सभी द्वार बंद कर दिये हैं ।

—बंद कर दिये हैं या बंद होना पड़ा है, चिंतनीय है यह, क्योंकि शक्ति-संतुलन के अश्वमेघ हमें पराजित कर विवश छोड़ गये हैं ।

■

—कौन है यहां जो कहे मैं सत्य हूं, सत्याभाषित हूं, सत्य स्वरूप हूं अथवा विनम्र होकर कह दे मैं सत्य के द्वार तक पहुंचना चाहता हूं । अभी उससे बहुत दूर हूं ।

—कोहरा बहुत घना है ।

—कोहरा बहुत घना है कि सूर्य की सहस्त्र-भुजाएं भी मौन, दबी हुई कुंभकरण की मुद्रा में हैं ।

—विश्वास लेकिन उन्हें है कि कुंभकरण सनातन नहीं रहा । सोचते हैं वे, कोहरा सनातन नहीं है । प्रश्न है तब भी मेरा मन भयग्रस्त है ।

—विश्व का सजगतम प्रहरी भयग्रस्त हो जाएगा तो ?

—प्रलय ! नहीं महाप्रलय !

—काम नहीं चलेगा : महाप्रलय भी विश्वाच्छेदन नहीं कर सका ।

—प्रकृति के सामने विकृतियों के महान-आडंबर भी धराशाई हुए हैं ।

—होंगे, होते होंगे, करेगा क्या वह क्षणजीवी है । शाश्वत होने का प्रसाद उसे नहीं मिला, न मिलेगा ।

—सहता रहे वह अमिट झींगरों की नस्ल को । कहा जाता है, कुछ भी हो जाए झींगुर समाप्त नहीं होंगे । न हों, हमने कब, किसके समाप्त की कामना की है, लेकिन... !

—पुरुष हैं हम, मानव हैं महामानव, झींगरों के अस्तित्व से बहुत ऊपर हैं ।

—कौन हो तुम तब ?

—कौन हो तुम तब ?

—तब कौन हो ?

—श्रेष्ठता के विश्व-शिखर को नापना चाहते हो !

—नापना चाहते हो या मुट्ठियों में कैद करना चाहते हो कि श्रेष्ठ और सत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

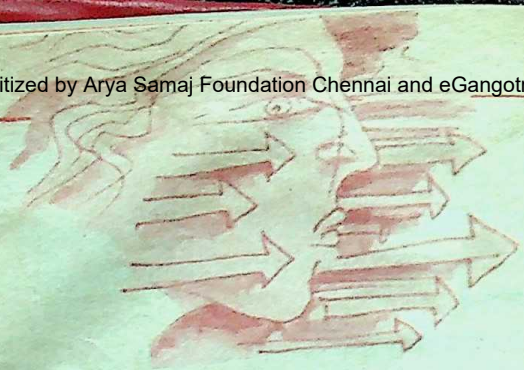

हमारे कारागार के स्थायी भाव हैं ।

■

—भ्रम पालनेवाले सदियों से होते रहे हैं ।

—तानाशाह, विश्वविजेता, मनुष्यभक्षक और आत्मा के अंतर के अतिरेक तक पहुंचने का उपक्रम करनेवाले दुस्साहसी ।

—नहीं पहुंच सका कोई ।

—आदमी की हथेलियों में टूटनेवाले अखरोट की तरह सभी बिखर गये । बिखर गये सभी कांच के चकनाचूर होते कण की तरह, बिखर गया पारा भी गंधक की स्पर्श छाया से, पिघल गये स्वर्ण कलश पारे के मात्र आभास से । क्या नहीं हुआ ?

—क्या नहीं हुआ ?

—पर्वत टूटा एक नदी से ।

—नदी टूटी पर्वत के पत्थरों से !

—धरती सिमटी दावानल से, ज्वालामुखी से, समुद्र मंथन से ।

—समुद्र सिमटा पृथ्वी के आक्रोशमय आक्रमण से ।

—बदल गये सब ! मानचित्र ही बदल गये । धरती के जुड़ने और टूटने के उपक्रम से सदियों से स्थापित देशों ने समर्पण कर दिया ।

■

—फिर ?

—सहजता से टूटनेवाले सत्य से हम युद्धरत हैं ।

—सत्य की हथेलियां निरीह नहीं हैं ।

—हथेलियों से प्यार करोगे, तुम्हें जीवनदान देंगी ।

—हथेलियों से टकराओगे कांच का चूर्ण बनोगे या पारे की तरह बिखरे दृष्टिगोचर होगे ।

—समय का सारथी जीवंत शिराओं का पहरुआ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—समय के सारथी की प्रत्यंचा सत्य के साथ है ।

—सत्य सम्यक् है,

—सत्य नम्र है, विनम्र है ।

—सत्य समय देता है, समय लेता है !

—सत्य के उद्भावक सूर्यरथों के अभिभावक बनकर सब-कुछ शांत कर देते हैं ।

—शांति...शांति मिले तो खोज किसकी !

—सत्य सार्थक हो तो विरोध किसका !

■

—समय सांप की तरह करवट लेता है तो धरती हिलती है और भूकंप की संज्ञा अभिषिक्त होती है ।

—भूकंप क्षणिक हैं । क्षणिक हैं महाकाल ज्वालामुखी ।

—क्षणिक है अनाचारी असत्य के महलों के दावेदार ।

—इन महलों के दावेदारों को उनका पहरुआ ही एक दिन धोखा देगा ।

—आइए तब, घंटियां बजाएं

—करें शंखनाद

—मंदिर हों, मसजिद, गुरुद्वारे या गिरजाघर : उपालंभ बदल सकते हैं, सत्य समयातीत है ।

—कौन तोड़ सका है सत्य को :
राम, ईसा, बुद्ध या पैगम्बर !

—सत्य के द्वार पर सबका
अभिषेक वही हुआ है !

—सत्य अपराजेय है,
सत्य सम्यक् है,
काजल का कालिख असत्य को
मुट्ठी में पीसकर चकनाचूर कर
देगा और उसके रक्त से
अपना अभिषेक करेगा ।

■ सत्य के लिए अब कोई सत्यवान नहीं मिल सकता, यह भी एक सत्य है ।

राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अपना चेहरा देखें नयी लोकसभा के आईने में

भारत की राजनीति में विकृति के लक्षण पिछले एक दशक से स्पष्ट उभरकर आते रहे हैं। राजीव गांधी की हत्या के बाद उत्तर भारत से कांग्रेस का लगभग साफ हो जाना, पूरे इतिहास में परिवर्तन के लक्षण हैं। इस देश की आजादी में सभी व्यक्तियों और सभी दलों ने बिना भेदभाव के अपना अपना योग दिया था, लेकिन सारा श्रेय कांग्रेस पार्टी को मिला और स्वतंत्र भारत में सत्ता की बागडोर उसी के हाथ आयी।

वह महारथियों का जमाना था। एक से एक बड़े राजनेता भारतीय रंगमंच में अपनी भूमिका अदा करते हैं। इतने शक्तिशाली व्यक्तियों का समूह जैसे-जैसे समाप्त हुआ, कांग्रेस दल ढीला पड़ता गया। पिछले पांच वर्षों में उसकी सारी प्रतिष्ठा ही दांव में लग गयी। आपसी वैमनस्य, आंतरिक तोड़फोड़ और महत्वाकांक्षाओं के शिखर इस तरह उभरने लगे कि दल से अधिक व्यक्ति परक स्थितियां बनती गयीं।

जब सत्ता की धुरी में बैठे हुए व्यक्तियों का चरित्र टूटने लगता है तो उसका असर समूची देश की जनता पर पड़ता है। स्थिति इस तरह बनती गयी कि ऐसा कोई राजनेता नहीं रहा, जिसे इस देश की जनता पूरे मन के साथ आदर दे सके और उस पर विश्वास कर सके। सहज ही कहा जा सकता है कि विश्वासघात की राजनीति के फंगस तीव्रगति से फैलने लगे। ऐसी स्थितियों में मनुष्य के मन, विचार, धर्म, कर्त्तव्य और संस्कार, सभी टूटने लगते हैं। इनके भीतर से अपने निजी व्यक्तित्व के तुष्टीकरण के कीड़े उभरते हैं। पिछले पांच सालों में यदि यह देश बचा है तो राजनीति के कारण नहीं, अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन संस्कारों और संस्कृति से, जिसने उसे कलंकित नहीं होने दिया ।

इस समय हम ११वीं लोकसभा की प्रतीक्षा में पिछला इतिहास देखना चाहेंगे । यह भी देखना जरूरी है कि दो-तीन वर्षों के भीतर ही इस देश में भ्रष्टाचार इतना अधिक कैसे और कहां उभरकर सामने आया । सच बात तो यह है कि भ्रष्टाचार की जड़ें हमेशा बहुत गहरी होती हैं । उसमें जब और खाद पड़ जाए और 'माली' जरूरत से ज्यादा सावधान हो जाए तो जंगली कैकटस की तरह सारा जंगल भ्रष्टाचार के पौधों से भर जाता है । यदि स्मरण-शक्ति कमजोर न हो तो श्रीमती इंदिरा गांधी के बेशकीमती फरकोट का बबूला राममनोहर लोहिया ने संसद में उठाया था । बात एक छोटे से कोट की थी, लेकिन उसी से न जाने कितने सवाल खड़े हो गये थे । उसके बाद 'स्वीडिश स्कैंडल' (बोफोर्स) ने इस देश में ही नहीं विदेशों में भी हलचल मचा दी थी ।

मुझे याद है कि मैं राजीव गांधी के साथ बैंकर (कनाडा) और वाशिंगटन (अमरीका) की लंबी यात्रा पर गया था । तब भी वहां की जनता ने भारत के विकास की बात कम सुनी, लेकिन राजीव गांधी को 'मिस्टर क्लीन' के नाम से बार-बार पुकार कर हमें नीचा दिखाने का पूरा प्रयत्न किया । पूरी योजना के अनुसार कॉमनवेल्थ कांफ्रेंस में कनाडा के बैंकर में ही राजीव गांधी पर आघात किया गया । सौभाग्य से वह नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सका, परंतु कुछ वर्षों बाद अपने ही देश में लिट्टे के हाथों राजीव गांधी को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा । यह दुर्भाग्य ही है कि इंदिरा गांधी को 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' का फल भोगना पड़ा, तो राजीव गांधी को 'मिस्टर क्लीन' की कीमत चुकानी पड़ी और संजय गांधी अपनी बहादुरी के कारण बेदाग होकर भी जीवित नहीं रह सके । इन बातों का उल्लेख मात्र इसलिए है कि भ्रष्टाचार के पौधे सही या गलत, जो भी हों, उसी समय से पनपे ।

सेंट कीट्स का मामला उठा और थमा भी, लेकिन अब वह फिर सामने उभर रहा है । आश्चर्य की बात तो यह है कि हवाला कांड जैसा विस्फोटक ज्वालामुखी जब सामने आया तो १०-१५ मंत्रियों की बात नहीं बल्कि यह प्रश्न सामने आ गया कि भारत भ्रष्टाचार में डूबा हुआ देश है । दुनियाभर में इसकी तुलना की गयी और कहा गया कि भ्रष्टाचार के मामले में भारत का सातवां स्थान है । आश्चर्य तो यह है कि जिन और देशों का नाम इसके पहले जोड़ा गया है वे बहुत छोटे देश हैं । भारत जैसा दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र हवाला कांड की गिरफ़ में आकर भ्रष्टाचार की बहुत बड़ी इकाई बन गया

आजादी के बाद : चर्चित घोटाले

आजादी के बाद के कुछ प्रमुख और चर्चित भ्रष्टाचार के मामले इस प्रकार हैं :

★ जीप दलाली कांड : १९४८-१९४९ के दिनों में मशहूर प्रतिरक्षा मंत्री वी. के. कृष्णमेनन पर सेना के लिए जीपें खरीदने के मामले में दलाली खाने के आरोप लगे । दो हजार जीपों के सौदे के बाद महज १५५ जीपों की डिलीवरी हुई । जांच में मेनन दोषी पाये गये ।

★ सिराजुद्दीन प्रकरण (१९५६) : पूर्वी भारत के एक बड़े पूंजीपति मुहम्मद सिराजुद्दीन एंड कंपनी के कलकत्ता व उड़ीसा दफ़्तरों पर छापों के दौरान ऐसी डायरियां मिलीं, जिनमें अनेक राजनेताओं को विभिन्न व्यापारियों से दलाली दिये जाने का ब्यौरा था ।

★ मूंदड़ा कांड (१९५७) : उद्योगपति हरिदास मूंदड़ा को सरकार की तरफ से उनके शेयरों के लिए ज्यादा दाम दिलवाये जाने के आरोप में वित्त मंत्री टी. टी. कृष्णामाचारी को वित्त मंत्री पद से हटाया गया । मूंदड़ा पर १६० करोड़ के घपले का आरोप था ।

★ नागरवाला कांड (१९७१) : रुस्तम सोहराब नागरवाला नामक व्यक्ति पर आरोप था कि उसने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पी. एन. हक्सर की आवाजें बनाकर फोन पर स्टेट बैंक की संसद मार्ग शाखा के मुख्य खजांची से ६० लाख रुपये मंगवाये । संदिग्ध परिस्थितियों में नागरवाला की मृत्यु हो गयी । विपक्ष जांच से संतुष्ट नहीं था ।

★ कुओ तेल कांड (१९८०) : इंडियन आयल कार्पोरेशन के शोधित तेल और हाईस्पीड डीजल के ठेकों में नौ करोड़ रुपये की हेराफेरी हुई । ठेका किसी हरीश जैन को मिला था, जिनकी पहुंच संजय गांधी तक थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । भ्रष्टाचार के मामले अभी शुरू भले हुए हों, लेकिन जल्दी समाप्त नहीं होंगे, बल्कि आगे तक निरंतर चलते रहेंगे । संभव है, इस सदी के अंत तक हवाला भारतीय रंगमंच में मनोरंजन का माध्यम बन जाए ।

११वीं लोकसभा के लिए चुनाव लगभग पूरे हो गये है । हमारे पाठकों के हाथों में जब यह अंक पहुंचेगा तो चर्चा इस बात की होगी कि सत्ता की कुरसी किसे मिलती है । अभी तक तीन-चार प्रमुख दल चुनाव लड़ते रहे, इस वर्ष का चुनाव दलों में नहीं, दल-दलों में हुआ । कांग्रेस पार्टी में बहुत बड़ा विघटन हुआ, फिर कई पार्टियों के बीच से नयी पार्टियां उभरीं, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में भी कई पार्टियां अस्तित्व में आ गयीं । उत्तर भारत में हरियाणा विकास पार्टी, समता पार्टी, समाजवादी जनता पार्टी, झारखंड पार्टी, मध्य प्रदेश विकास कांग्रेस , बहुजन समाज पार्टी इत्यादि इतने नाम हैं कि इनकी गिनती करना मुश्किल है । इसके साथ ही बड़े-बड़े दल टूटकर कई भागों में बटे हैं । आंध्रप्रदेश में लक्ष्मी पार्वती ने अपना दल बनाया, तमिलनाडु में तमिल मनीला कांग्रेस जैसे दल सामने आये । सच पूछा जाए तो प्रायः हर राज्य में पार्टियां टूटी हैं और

* अंतुले कांड (१९८२) : बंबई उच्च न्यायालय ने विभिन्न ट्रस्टों के नाम पर व्यापारियों से धन ऐंठने के आरोप में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अब्दुल रहमान अंतुले को दोषी ठहराया ।

* चुरहट कांड : मध्य प्रदेश के चुरहट कस्बे में चुरहट बाल कल्याण परिषद नामक संस्था द्वारा चलायी जा रही लॉटरी में प्रशासनिक तंत्र का दुरुपयोग हुआ । बिचौलियों पर चार करोड़ १० लाख रुपये खाने के आरोप लगे । मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के बेटे और रिश्तेदारों पर भी आरोप थे ।

* बोफोर्स कांड : १९८६ में स्वीडन की ए. बी. बोफोर्स कंपनी से १५५ तोपें खरीदने का सौदा हुआ । पता चला कि स्वीडिश कंपनी ने इस ऑर्डर को पाने के लिए ६४ करोड़ रुपये की दलाली दी । दलाली किसने ली, यह आज तक एक रहस्य है ।

* प्रतिभूति घोटाला : हर्षद मेहता, हितेन दलाल और अन्य अभियुक्तों ने अपने नेटवर्क के जरिए पूंजी बाजार के दस्तावेजों में हेरफेर और मिलीभगत से १० हजार करोड़ रुपयों का घोटाला किया । संयुक्त संसदीय समिति ने कुछ केंद्रीय मंत्रियों को भी दोषी माना मगर सिर्फ वी. शंकरानंद और रामेश्वर ठाकुर ने इस्तीफा दिया ।

* हवाला कांड : मार्च १९९१ में कश्मीर के आतंकवादियों को मिलनेवाले पैसे के स्रोत का पता लगाने के लिए मारे गये छापों में जे. के. जैन नामक व्यक्ति के घर से अकूत संपत्ति के अलावा संदिग्ध डायरियां मिलीं जिनमें अप्रैल १९८८ से लेकर मार्च १९९१ तक हवाला रैकेटगीरों द्वारा अफसरों और नेताओं को धन बांटने के ब्यौरे दर्ज थे । मामले की जांच चल रही है ।

* सरकारी आवास आवंटन घोटाला : सरकारी मकानों के आवंटन में करोड़ों रुपये का घोटाला ।

* चारा घोटाला : बिहार के पशुपालन विभाग का बहुचर्चित पशुधन चारा घोटाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो चुनाव संपन्न हुए हैं इनमें इन पार्टियों के उम्मीदवारों के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़नेवाले लोगों की संख्या भी कम नहीं रही ।

११वीं लोकसभा बनने के पहले का विश्लेषण हमारे देश के इतिहास का बहुत बड़ा दस्तावेज होगा । एक दल से दूसरे दल में चले जाना आम बात थी । फिर वंशवाद का एक बहुत बड़ा नक्शा सामने आ गया जो नेता 'हवाला कांड' अथवा 'टाडा' में फंसे, उन्होंने अपने बेटे, पुत्रियों, भतीजों, पत्नियों, दामादों तथा किसी न किसी रिश्तेदारों को राजनीति में जरूर उतारा । सच पूछा जाए तो यह बहुत बड़ा बुद्धिमानी का खेल है, क्योंकि इन्हें पता लग गया है कि भ्रष्टाचार की दुकान केवल राजनीति की कुरसी पाकर ही चल सकती है । ऐसी स्थिति में यहां की जनता का चुनाव के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया कोई नयी बात नहीं है । बुद्धिजीवियों और समझदार लोगों ने तो संभवतः अपनी विवशता के सामने तो खुद घुटने टेक दिये हैं । इसलिए पूरे चुनाव किन लोगों के वोटों से संपन्न हुए हैं, इसे आसानी से समझा जा सकता है । कीड़े लगी फसल से जो दाने उभरकर सामने आएंगे, क्या सहज ही हम उन पर विश्वास कर सकते हैं ?

एक नजर दसवीं लोकसभा में डाली जाए तो उससे मजेदार गुणांक सामने आते हैं। १०वीं लोकसभा में सदस्यों की संख्या इस प्रकार थी : —महिलाएं— ३९, वकील और न्यायपालिका से संबंधित व्यक्ति— ९७, डॉक्टर २६, शिक्षक और शिक्षाविद— ५८, व्यापारी और उद्योगपति— ४६ ; इस लोकसभा में ७७ प्रतिशत सदस्य शिक्षित थे उनमें २४५ स्नातक, १५० स्नातकोत्तर, २० पी. एचडी या डीलिट् और १०१ मैट्रिक या हायर सेकेंडरी ।

अब एक दृष्टि ज्योतिषियों की ओर भी । हर दल और प्रभावशाली व्यक्तियों ने अपने-अपने ज्योतिषी पाल कर रखे हैं । इसलिए किसकी भविष्यवाणी को सही समझा जाए यह एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है । भारतीय जनता पार्टी की ओर से अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री घोषित कर दिया गया है । कांग्रेस पार्टी ने कमर कस ली है कि समझौते की कैसी भी राजनीति चलायी जा सके तो पीछे नहीं हटना चाहिए और नरसिंह राव के हाथों में नेतृत्व देना चाहिए । कुछ लोगों ने नारे लगाये हैं कि साफ-सुथरी छवि वाला कोई व्यक्ति इस देश का नेतृत्व करे । मजेदार बात तो यह है कि जो ये नारे लगाते हैं उनकी छवि स्वयं विवादास्पद है । हमारे पाठकों को बहुत दिन तक प्रतीक्षा नहीं करनी होगी ; इस पूरे विश्लेषण के संदर्भ के बाद सब कुछ सारे निष्कर्ष सामने आ जाएंगे । हमने लोकतांत्रिक शासन सत्ता को स्वीकार किया है, हम न साम्यवादी हो सकते हैं और न तानाशाह, रहेंगे लोकतांत्रिक ही । एक बात समझना जरूरी है कि संसद लोकतंत्र का आईना होती है, संसद हमारा चेहरा है, जैसा हमारा चेहरा होगा और जैसा आईना होगा,

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसी की वैसी हमारी ११वीं लोकसभा के शहंशाह प्रतिष्ठित होंगे । वोट हम दे चुके हैं इसलिए न हमें विरोध करने का हक है और न पश्चाताप । हमें अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए, उस विश्वास के बल पर तैयार रहना चाहिए कि यदि भ्रष्टाचार, अनीति, अनैतिकता और वैमनस्य की परंपरा चलती ही रहनी है तो १२वीं संसद के लिए पांच साल ही क्यों ?

जहां तक संपन्न चुनावों की बात है, तो चुनाव शांत कब संपन्न हुए हैं । चुनावों के दौरान जो कुछ भी हुआ है वह सब अभी अखबारों में ताजा है । लेकिन इन चुनावों में पहली बार जो नयी बात उभरकर सामने आयी है, उसके लिए हमें गर्व है । इन चुनावों में मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन और उच्चतम न्यायालय की सख्ती इतनी रही कि दीवारें, चौराहे और रास्ते पोस्टर, बैनरों की भरमार से बचे रहे तथा अनावश्यक शोर-शराबा, हल्ला-गुल्ला और तमाशों से हम सब भी बचे रहे । बेहतर होगा कि अगले चुनाव 'अमरीकी पैटर्न' पर लड़े जाएं, जहां चुनाव सड़कों पर नहीं दूरदर्शन के माध्यम से लड़े जाते हैं ।

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी भी बने जोंकों के भोजन

प्रस्तुति—राबर्ट बेन्सन

अमरीका निवासी हेनरिक बन शिकार के बहुत शौकीन थे। यही शौक उन्हें लंका के जंगलों में ले गया। उन्होंने सुना था कि वहां के जंगल में हाथियों का शिकार आसानी से किया जा सकता है। इसी इरादे से जब वह जंगल में पहुंचे तो हाथियों के बदले उनका पाला एक अजीब से जीव से पड़ा, जिसके चंगुल से निकल पाना जिंदगी का एक ऐसा अनुभव था, जिसकी याद ताजा होते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह जीव इतना लंबा भी नहीं था कि सामने आने पर उसे मार दिया जाए। हेनरिक बन के अनुभव उन्हीं के शब्दों में :—

जब से अंगरेज लंका से गये हैं, तब से हर गोरे यात्री को लंका निवासी धनी अमरीकी ही समझते हैं और जितना अधिक पैसा बटोरा जा सके, बटोरने का प्रयत्न करते हैं, इसलिए लंका पहुंचकर मुझे सबसे पहले वहां के निवासियों को यह बताने में काफी समय लगा कि मैं एक गरीब आदमी हूं और हाथी पकड़ने के इरादे से आया हूं।

लंका के जंगलों में यात्रा करने की अपनी असुविधाएं हैं, जिनकी कल्पना मैं कर चुका था और उनका सामना करने के लिए मैं तैयार था। चलते-चलते अचानक किसी टहनी से लटकता तीस फुट का बोआ सर्प मिल जाना तो दुर्घटना में नहीं माना जाता। इसके अतिरिक्त कभी-कभी पागल अथवा क्रुद्ध हाथी का भी सामना करना पड़ता है। उन जंगलों में शेर तो नहीं होते, लेकिन जब चीता चिंघाड़ता है, तब होश उड़ जाते हैं। सबसे खतरनाक है काला भालू। वह अन्य सभी किस्म के भालुओं से ज्यादा भयानक होता है। काले भालू का बच्चा भी चीते अथवा जंगली भैंस से टक्कर लेने में नहीं हिचकता। काले भालू को अजगर खाते हुए तो अकसर देखा जा सकता है।

खतरों से सावधान

सब खतरों से तो मैं सावधान था, लेकिन उन सबसे बड़ा खतरा, जिसकी मैंने कल्पना नहीं की थी, वह एक फुट से भी कम लंबा था। वर्षा का मौसम था, लेकिन वर्षा अभी शुरू नहीं हुई थी। कोलंबो से ओपानेक तक रेल द्वारा गया और वहां से एक बस द्वारा रत्न के दक्षिण में एक गांव में जा पहुंचा। वहां से जंगल में एक ऐसे मैदान का पता लगा, जहां उस समय २५ के लगभग युवा जंगली हाथी थे। मैंने तय किया कि पहले उन्हें देख तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आऊं। मैंने वहीं के एक सिंहल निवासी को साथ लिया।

हम तीनों, यानी मैं, मेरा साथी पूरण और उसका कुत्ता प्रातः सामान से लैस होकर चल पड़े।

घने जंगल के बीच

हम घने जंगल के बीच थे कि वर्षा आरंभ हो गयी। अचानक सारा आकाश बिलकुल काला हो गया और घोर गर्जन-तर्जन के साथ बिजली चमकने लगी। बड़ी तेज आंधी चलने लगी, जिससे कमजोर काजू के वृक्षों की कतारें पर कतारें धराशायी होती गयीं।

हम जंगली झाड़ियों के नीचे बैठ गये। वर्षा आरंभ हो गयी थी। धुआंधार वर्षा जो पहले वृक्षों और पत्तों के कारण रुकी रही। बाद में उनको भेदते हुए हमारे ऊपर यूं पड़ने लगी मानो नल में से पानी की धार बह रही हो। नीचे मिट्टी गीली हो गयी। चारों ओर पत्ते, बेलें अथवा नन्हे कमजोर वृक्षों का झुरमुट। आगे बढ़ना असंभव हो गया। हमने यह तय किया कि रात वहीं बिताकर प्रातः देखेंगे कि आगे क्या किया जाए।

साहब मेरी मदद करो

जब मेरी नींद खुली तब दिन चढ़ आया था। मैंने लेटे ही लेटे देखा कि हमारा तंबू तो न जाने कब उखड़कर एक ओर पड़ा था और ऊपर ऊंचे लंबे घने वृक्षों में से सूर्य का प्रकाश छनकर आ रहा था। मुझे ऐसा लगा मानो मैं एक बहुत गहरे गड्ढे में हूं और ऊपर, कहीं बहुत ऊपर सूर्य चमक रहा है। मुझे अभी भी नींद आ रही थी। मैंने आंखें बंद कर लीं, लेकिन तभी मुझे स्वर सुनायी दिया, "साहब, मेरी मदद करो, साहब।"

स्वर बहुत धीमा था। मैंने पुनः सुनने का प्रयास किया, जब स्वर पुनः नहीं आया तो मैंने अपना सिर घुमाया और पूरण को देखा, उसके चेहरे, गरदन और बांहों में से खून बह रहा था और वह मेरी ओर घिसटकर आने का प्रयत्न कर रहा था।

मैं उठ बैठा, लेकिन स्वयं को इतना कमजोर पाया कि मैं पुनः पीछे गिर गया। यह क्या हो गया ?

मैंने स्वयं को देखा, मेरी बांह में से भी खून बह रहा था। काफी प्रयत्न करने पर ही मैं उठ पाया और अपनी चादर पर नजर डाली। वहां पर मांस के मोटे-मोटे लोथड़े से पड़े थे, जिन्होंने मेरा खून सोख लिया था, वैसे ही मांस के लोथड़े मेरी छाती और टांगों पर भी थे। मैंने

उन लोगों ने बताया कि उन जंगलों में जोंक हैं ही ज्यादा, लेकिन मानसून जिस वर्ष देर से आता है, उस वर्ष तो जोंकें जंगल के सारे पशु-पक्षियों को नष्ट कर देती हैं। यहां तक कि उनके गांव में से कोई गाय, बैल भूले-भटके उधर चला जाता है, तो वापस नहीं लौट पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झटके से उन्हें अलग करके फेंका ।

बहुत बुरी हैं जोंकें

पूरण की आवाज धीमी थी । वह बोला —"जोंक, जोंक —बहुत बुरी हैं ये जोंकें ।"

जब मुझे पता लगा कि हमारी शत्रु जोंकें हैं, तब मेरे अंदर कुछ शांति आयी, जो पहले अनजान शत्रु का हमला समझकर लुप्त हो चुकी थी । मैंने पूरण को उल्टा और उसके शरीर से जोंकों को खींच-खींचकर अलग फेंका । उसका सारा शरीर जोंकों से बुरी तरह भरा हुआ था ।

"जलाओ, साहब !" पूरण का धीमा स्वर आया ।

मैंने देखा रात को जलायी आग में से कुछ लकड़ियां सुलग रही थीं । उनमें से मैंने एक उठायी और एक मोटी-सी जोंक पर लगायी । वह फौरन झुलसकर अलग गिर गयी । दस-बारह जो मेरे शरीर पर शेष थीं, उन्हें भी जलाकर मैंने अलग किया । तब मैंने झोले में से शराब की बोतल निकाली और पूरण के मुंह से लगा दी । हम दोनों बड़ी मुश्किल से एक वृक्ष के तने के सहारे खड़े हो गये और उन मोटे-मोटे मांस के लोथड़ों को देखते रहे ।

उसी समय मुझे किसी का कराहट-भरा स्वर सुनायी पड़ा ।

शरीर जोंकों से भरा

हमने देखा कि पूरण का कुत्ता एक ओर पड़ा था । उसकी जीभ बाहर लटक रही थी और वह दयनीय-सा हमें ताक रहा था । उसका सारा शरीर जोंकों से भरा हुआ था । मैंने जलती हुई लकड़ी लेकर उसके शरीर से जोंकें उतारीं, आग तेज की, विहस्की पी और भोजन किया । हमें उस समय ताकत चाहिए थी ।

कुछ देर बाद हमें स्फूर्ति आयी । कुत्ता भी मांस का एक डिब्बा हड़प चुका था । वह भी स्वस्थ लग रहा था । अब हमारा भार भी काफी हलका था । अब मुझे एक ही धुन थी —किसी प्रकार जंगल से बाहर निकल जाने की, लेकिन इतनी कमजोरी में चलना भी एक समस्या थी और सबसे बड़ी जानलेवा समस्या थी वे जोंकें, जो पेड़ों पर से, झाड़ियों में से, पगडंडी पर से यानी चारों ओर से हम पर गिर रही थीं । जब कुछ दूर चलकर हम रुके तो मैंने देखा कि वे मेरे जूतों के अंदर भी घुस चुकी थीं और मेरे जूते में से खून बह रहा था ।

जोंकें हमारी तरफ

सिगरेट जलाकर उनकी दुमों पर मैंने लगाई और छुटकारा पाया । लेकिन पतले-भूरे धागे हमारी ओर इस तरह बढ़े आ रहे थे, मानो वे हमें देख सकते हों, हम दौड़ने की स्थिति में भी नहीं थे ।

"गांव यहां से कितनी दूर है ?" मैंने पूरण से प्रश्न किया ।

मैंने चार-छह बार यही प्रश्न दोहराया, तब कहीं जाकर उसने सुना । उसने अपने खून भरे चेहरे में से मुझे यूं ताका, मानो शून्य में देख रहा हो और सिर हिलाते हुए बोला, "पता नहीं साहब ।" फिर रुककर बोला, "मैं तो इस रास्ते को जानता नहीं ।"

लेकिन रुकना तो साक्षात मृत्यु थी ही । एक चौराहा आया, जहां दो पगडंडियां मिल रही थीं । धुली-धुली पगडंडियों पर कोई चिह्न नहीं थे, जिनसे हमें पता लगता कि गांव किस ओर है । बायीं ओर वाली पगडंडी घने जंगलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली गयी थी ।

हमने दाहिनी ओर चलने का निर्णय किया, जिस ओर पगडंडी ऊपर की ओर गयी थी लेकिन पूरण का कुत्ता दूसरी ओर गया । लगभग एक मील चले होंगे कि पूरण ने देखा कि कुत्ता हमारे साथ नहीं है ।

"शायद कुत्ते को रास्ते का कुछ ज्ञान रहा हो," मैंने कहा ।

जोंकों से भरा हुआ था कुत्ता

हमने मुड़कर देखा तो नीचे पूरण का कुत्ता पड़ा हुआ था । जोंकों से भरा हुआ । हमने

हमने देखा कि पूरण का कुत्ता एक ओर पड़ा था । उसकी जीभ बाहर लटक रही थी और वह दयनीय-सा हमें ताक रहा था । उसका सारा शरीर जोंकों से भरा हुआ था ।

रुककर विहस्की पी, जिससे कुछ ताकत आये ।

वर्षा फिर आरंभ हो गयी । कम से कम बहते पानी के कारण हम अपने पांवों की ओर से निश्चिंत हो गये कि अब उधर से जोंकों का हमला तो नहीं हो सकता, लेकिन दूसरी दिशाओं से उनका हमला जारी था । मेरी पतलून की जेब में, कमीज के अंदर सब ओर से घुसकर वे हमें जीवित पी जाने को आतुर थीं । इससे तो बेहतर रहता, अगर हमारा सामना चीते अथवा उस भयानक काले भालू से होता । तब हम जीतते या वह, लेकिन चुपचाप हमला कर खून चूसनेवाली जोंकों का हम क्या करते, जो लाखों में थीं ।

हम गलती से उनके निवास स्थान के बीचोंबीच आ गये थे । वे उस सूखी जलवायु में काफी बह चुकी थीं । कुछ घने वृक्षों के पश्चात एक ढलान थी, मेरा वहां पांव लड़खड़ा गया और मैं लुढ़कता हुआ एक नन्हीं-सी पहाड़ी के नीचे आ गया । सबसे पहले मैंने अपने हाथों से दोनों टांगों को झाड़ा, क्योंकि यह निश्चित था कि लुढ़कने पर दोनों टांगें तो जोंकों से भर गयी थीं परंतु मुझे आश्चर्य हुआ, जब मैंने देखा कि उनमें एक जोंक भी नहीं थी । मैंने नजर घुमायी तो देखा कि पास ही किसी गांव के चिह्न थे और दूर गांव का मैदान था ।

हमें शायद दूर से किसी ने देख लिया था, क्योंकि थोड़ी देर में ही शोर मचाते लोग हमारी ओर भागे आ रहे थे । उनके आने तक मैं बेहोश हो चुका था ।

होश में आने पर उन लोगों ने बताया कि उन जंगलों में जोंक हैं ही ज्यादा, लेकिन मानसून जिस वर्ष देर से आता है, उस वर्ष तो जोंकें जंगल के सारे पशु-पक्षियों को नष्ट कर देती हैं । यहां तक कि उनके गांव में से कोई गाय, बैल भूले-भटके उधर चला जाता है, तो वापस नहीं लौट पाता । तीन दिन वहां रहकर हमने खूब खाया-पीया और फिर मैं उन पच्चीस युवा जंगली हाथियों को भूलकर अपने घर लौट आया, जहां मैंने तीन मास तक आराम से खा-पीकर अपना वह खून पूरा किया, जो उन जोंकों ने चूस लिया था । हाथियों के शिकार की वह यात्रा मुझे सदा अविस्मरणीय रहेगी ।

—२३, प्रीतम रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा नीर सुधा सम

● योगेश प्रवीन

पार्वती ने एक स्वप्न में देखा कि शिव पीली धोती पहने हैं और विवाह वेदी पर खड़े किसी का वरण कर रहे हैं । उन्होंने अपनी सखी से पूछा "इसका अर्थ क्या है ?" सहेली ने कहा "सवेरे का सपना है, यह तो सच है । शिव ने तुम्हारी बहन गंगा को ग्रहण किया है ।"

पार्वती के तेवर बदल गये, वह शिव से तो कुछ न बोलीं । उन्होंने गंगा को देवभूमि से धरती पर ढकेल दिया और कहा, "नीचे-नीचे रहना" गंगा ने कहा "मुझे स्वीकार है, मैं तुम्हारी संतानों की धाय बनूंगी, उनका कलुष धोऊंगी, उनको ताप-संताप से मुक्त करूंगी, उनको आत्मतृप्ति देकर पालूंगी, तुम्हारे बराबर कभी न बैठूंगी, बस धरती पर लोटती रहूंगी और कभी कुछ न कहूंगी ।"

शिव तो ठहरे शिव, उसके इस विनम्र व्यवहार पर प्यार भरे उपकार पर मुग्ध हो गये और उसे सिर पर बिठा लिया फिर स्वयं आनंदमग्न हो उठे :—

धातुः कमण्डल जलं तदुत्क्रमस्य, पादावनेजन पवित्रतया नरेन्द्र, स्वर्धन्य भून्नभसि सा पवततीनिमर्ष्टि, लोकत्रयं भगवतो विशेदेव कीर्ति : ।

और इस तरह शिव के द्वितीय नव चंद्र जटित जटा मुकुट की कलगी बन गयी गंगा ।

गंगा साक्षात विष्णुवदन से प्रकट होकर हरिचरणामृत बनकर स्वर्ग की सीमाओं को मापते हुए शिव की जटा में भ्रमण करती है, फिर भगीरथ की तपस्या को फलीभूत करती जगत के पापनाश के लिए हिमालय के ब्रह्मसदन को मुखरित करने के बाद वसुंधरा पर अवतरित होती हैं, यही गंगावतरण का पवित्र प्रसंग है और गंगा दशहरा उसी का पर्व है । गंगा जन्मदिन वैशाख शुक्ल सप्तमी माना जाता है परंतु अवतरण की तिथि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी ही कही जाती है ।

गंगा के शैशव प्रदेश के पर्यटक जानते हैं कि बद्रीनारायण के निकट नर-नारायण के पर्वत हैं । नारायण पर्वत के चरण प्रांत से अलकनंदा का जन्म होता है । अलकनंदा की यही धारा सपथ से होती बदरिकाश्रम पहुंचती है जो गंगा की मुख्य सहायक धारा है । गंगा का हिमनद (ग्लेशियर) भी आगे बढ़कर गोमुख दीक्षा स्थित शिवलिंड शिखर पर आता है । वास्तव हिमालय प्रदेश की गहरी घाटियों में वर्तुलाकार परिक्रमा करती हुई गंगा शिव की अलकों में नर्तन करती हुई प्रतीत होती है । हरिद्वार में समतल पर पदार्पण करती है । आदिदैविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत की यह सारी घटना भौतिक जगत में पूरी तरह खरी उतरती है । गंगा का आना सारस्वत सत्य है । स्वयं पवित्रता का अभिषेक है ।

गंगा सनातन संपदा

ऋग्वेद में गंगा का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है और पुराणों में तो गंगा की वंदना और महिमा विस्तार में वर्णित है । संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में गंगा छवि का इंद्र धनुष मिलता है । जगदगुरु आदि शंकराचार्य विरचित गंगा स्तवन तो अद्वितीय है ।

देव सुरेश्वरि भगवति गंगे, त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे, शंकर मौलि विहारिणी विमले, मम मति गस्तां तव पद कमले...

इसी प्रकार कश्मीर के पंडितराज जगन्नाथ की लिखी 'गंगा लहरी' को संस्कृत काव्य का भूषण माना जाता है । हिंदी साहित्य में विद्यापति, तुलसीदास, केशव और भारतेन्दु ने अपनी काव्य धारा में गंगा, गंगा की तरंगों के गीत गाये हैं । रीतिकालीन परिपाटी के अनुसार पदमाकर ने काव्य शिल्प में गंगा की आभा को इस तरह समेटा है ।

"कलित कपूर में न कीरति कुमोदिनी में, कुन्द में न कास में कपास में न कंद में, कहैं पदमाकर न हंस में न हास हूं में, हिय में न हेरि हारि हीरन में वृन्द में, जेती छवि गंगा की तरंगन में ताकियत, तेती छवि छीर में न छीरधि के छंद में, चैत में न चैत चांदनी में न चमेलिन में, चंदन में है न चंदचूड़ में न चंद में" ।

गंगा मुक्ति मार्ग है स्वर्ग सोपान है । उनके इसी कृतित्व को व्यक्तित्व से ऊपर प्रतिष्ठा दी है कवि रत्नाकर ने—

कोउ पापहिं पंचत्त्व प्राप्त सुनि जमगन धावत, बीन बीन बावन बीर बढ़त चौचंद मचावत, पै ताकी तकिलोथ, त्रिपथगा के तट ल्यावत, नौ द्वौ ग्यारत होत, तीन पांचहि बिसरावत ।

गंगा प्रेमी

आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले महर्षि चरक ने कहा था 'हिमवतप्रवाःपथ्याः' अर्थात हिमालय से प्राप्त होनेवाले जल को पथ्य कहा है और निस्संदेह उसमें गंगा जल सर्वश्रेष्ठ है । गंगा के ही संदर्भ में उन्होंने कहा, 'पुण्या देवर्षि सेविताः' और वास्तव में यह पुण्य सरिता देवताओं द्वारा सेवित है ।

नवीं सदी में वाग्भट्ट ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांग हृदय' में गंगा के गुणों का भलीभांति विश्लेषण किया है । ग्यारहवीं सदी में चक्रपाणि दत्त ने भी गंगा नीर की मुक्त कंठ से सराहना की

गंगा साक्षात विष्णुवदन से प्रकट होकर हरिचरणामृत बनकर स्वर्ग की सीमाओं को मापते हुए शिव की जटा में भ्रमण करती है, फिर भगीरथ की तपस्या को फलीभूत करती हुई जगत के पापनाश के लिए हिमालय के ब्रह्मसदन को मुखरित करने के बाद वसुंधरा पर अवतरित होती है, यही गंगावतरण का पवित्र प्रसंग है और गंगा दशहरा उसी का पावन पर्व है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । चौदहवीं सदी में प्रसिद्ध विदेशी यात्री इब्नबतूता एशिया के अन्य देशों का भ्रमण करता हुआ भारत आया था और उसने अपने यात्रा विवरण में लिखा है—"सुल्तान मुहम्मद तुगलक यद्यपि दक्षिण में दौलताबाद में रहता है लेकिन वह गंगा का ही जल पीता है और गंगा को उत्तर से दक्षिण तक पहुंचने में चालीस दिन लग जाते हैं ।"

'आइने अकबरी' में अबुल फजल ने लिखा है कि बादशाह अकबर गंगा जल को 'आबेहयात' (अमृत तुल्य) समझते हैं । उनके पीने के लिए और भोजन बनाने के लिए मुहरबंद कलसों में गंगा नदी से पानी मंगवाया जाता था और इस प्रबंध के लिए एक अच्छा-खासा विभाग नियुक्त था । जब वे सीकरी या आगरे में होते थे तो सोरों से गंगाजल भेजा जाता था और जिन दिनों पंजाब में रहते थे तो हरिद्वार से गंगा का पानी पहुंचाया जाता था और तो और औरंगजेब जैसा कठिन कलेजेवाला बादशाह भी गंगा जल के कीटाणुनाशक और शक्ति, बलवर्द्धक गुणों को मंजूर करता था और सदा इसी का प्रयोग करता था ।

पूना के पेशवा: काशी का गंगा जल

पूना के पेशवाओं को गंगा जल पर इतनी श्रद्धा थी कि उसके लिए काफी रुपये खर्च कर एक बहंगी गंगाजल काशी से पूना पहुंचाया जाता था । बाजीराव पेशवा अपने निजी विश्वास के अनुसार अपने को ऋणमुक्त करने के लिए गंगा जल का सेवन करते थे । गंगा के प्रेम और प्रभाव की अनंत कथा है ।

उत्तर-दक्षिण को अपने हृदय में ढूंढ़नेवाले कहीं भी नहाते हों जलस्पर्श के साथ उनके मुख से अनायास निकलता है—

गंगा बड़ी गोदावरी, तीरथ बड़े प्रयाग, काशी करवट न भूलिए, जहां विश्वनाथ दरबार ।

मारीशस में गंगा तालाब

दक्षिण भारतवासी नदी, तालाब, झरने आदि किसी भी जल से स्नान करते समय गंगा नाम का उच्चारण बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं ।

मारीशस के निवासियों ने अपने एक पवित्र सरोवर को 'गंगा तालाब' का नाम दिया है । उत्तर के लोग गंगा को पाये नल में नहाते समय भी 'हर-हर गंगे, हर-हर गंगे' कहते रहते हैं और इस तरह गंगा केवल गंगा ही नहीं रह जाती, भारतीयों के प्राणों में प्रवेश करके भारत का प्राण बन चुकी है ।

गंगा गंगा मुख से कहिए, काया पावन करते रहिए ।

गंगा जल से स्वास्थ्य लाभ

सोलहवीं सदी में विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय का मृतप्राण होने पर जब गंगोदक दिया जाने लगा तो वे धीरे-धीरे बिलकुल ही स्वस्थ हो गये थे । तिब्बत के सूरीलामा ने वारेन हेस्टिंग्ज के पास एक दूत भेजकर गंगा तट पर कुछ भूमि मांगी थी, जहां पर उसने एक मठ और मंदिर बनवाया जो 'भोट बागान' के नाम से प्रसिद्ध है ।

उनका कहना था कि गंगा केवल हिंदुओं के लिए ही नहीं, बौद्धों के लिए भी पुनीत है । इस प्रकार देखा जाए तो गंगा सभी वर्गों द्वारा समान रूप से सम्मानित रही है ।

गंगा का वैभव

तीन धाराओं से विभूषित, तीन तापों का सहज ही हरण करनेवाली और तीन लोकों में व्याप्त गंगा 'त्रिपथगा' कही जाती है । त्रैवि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के कारण सुरसरिता कहलाती है । भगीरथ का पूर्ण मनोरथ है । इसलिए भागीरथी है तथा जहनु ऋषि के आश्रम की शोभा है, इस कारण 'जान्हवी' उसका नाम है ।

गंगोत्री से गंगासागर तक की गंगायात्रा में बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश, हरिद्वार, मायावती, गढ़मुक्तेश्वर, शूकरक्षेत्र, ब्रह्मावर्त, प्रयाग और वाराणसी जैसे पावन पड़ाव आते हैं, जो अतितीर्थ कहे जाते हैं क्योंकि गंगा तो अपने आप में प्रवाहमान तीर्थ है । वैसे गंगा के चौदह प्रयाग हैं, लेकिन उनमें पांच प्रयाग प्रमुख माने

भारतीय जीवन परंपरा में गंगा नदी की प्रतिष्ठा का केवल आध्यात्मिक कारण ही नहीं है, बल्कि उसके जल में जीवाणुनाशक, कीटाणुनाशक एवं स्वास्थ्यप्रद क्षमता पायी जाती है ।

गये हैं । गंगा तट पर कन्नौज कड़ा, चुनार जैसे प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों के खंडहर मिलते हैं तो गंगा के ही किनारे कानपुर, पटना और कलकत्ता जैसे महानगर भी बसे हुए हैं । राजघाट, ददरी और अजगैंबीनाथ के मेले गंगा के सत्कार में ही होते हैं ।

भारतीय जीवन परंपरा में गंगा नदी की प्रतिष्ठा का केवल आध्यात्मिक कारण ही नहीं है, बल्कि उसके जल में जो जीवाणुनाशक, कीटाणुनाशक एवं स्वास्थ्यप्रद क्षमता पायी जाती है । उसके लिए उसे वैद्यक में सराहा गया है—

गंगा नीर सुधा समं, बहुगुण पुण्यं सदा पुष्करं, सर्वव्याधि विनाशन बलकरं (इत्यादि) ।

पांडव गीता में तो स्पष्ट रूप से गंगा को रामबाण कहा गया है :

शरीरं जर्जरी भूते, व्याधिग्रस्ते कलेवरे, औषध जान्हवी तोयं, वैद्यो नारायणो हरिः ।

गंगा की व्यथा कथा

गंगा की सुरा धारा में संजीवनी का प्रवाह है जिसे स्वर्ग नसैनी की संज्ञा भी मिली है । जब तक उसे देवत्व देकर उसकी पवित्रता को बनाये रखा गया उसका जल वरदान रहा । आज जब उस आराध्या के आस्था के आयाम टूट रहे हैं, हमने हमारा अस्तित्व ही संकट में डाल लिया है । गंगा दर्पण जिसमें देवलोक प्रतिबिंबित था, आज अपने तट की प्राकृतिक सुषमा से भी हाथ धोता जा रहा है । सनातन विश्वास के उस साक्षात प्रवाह शाश्वत मूल्यों का महत्त्व समझे बिना धर्म एवं विज्ञान की उस अजस्र धारा में भौतिकता के विजातीय द्रव्य (द्रव) मिलाये जा रहे हैं और आज हम उसे क्या से क्या बना चुके हैं ।

गंगा का सुरम्यतम दृश्य ऋषिकेश और हरिद्वार अंचल हैं । इसके किशोर प्रदेश में ही आड़ी-तिरछी मनमानी योजनाओं से उसका सहज स्वरूप छीन लिया गया है । गंगा जल का अवशोषण इस सीमा तक किया गया है कि गढ़मुक्तेश्वर से कालाकांकर तक की गंगा अब सिकतापंजर मात्र है । कालाकांकर के नक्षत्र निवास के समीप प्रकृति सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत को जो गंगा महल के समीप मिलती थी, वह अब आपके नसीब में नहीं है ।

—पंचवटी, ८९ गौसनगर, लखनऊ-१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरक प्रसंग

हमने राजनीति को नैतिकता के साथ मिलाने की बहुत बात की है । यह ऐसी चीज है कि हम हमेशा इस पर टिके रहेंगे । पिछली चौथाई सदी या इससे भी अधिक के दौरान महात्मा गांधी ने हमें राजनीति का नैतिक स्तर बनाये रखना सिखाया । हम इसमें कहां तक सफल हुए, यह सारी दुनिया के देखने और भावी पीढ़ियों के निर्णय देने की चीज है । कुछ ऐसी बात जरूर थी कि हमने इस महान आदर्श को अपने सामने रखा और अपने दुर्बल गिरते-पड़ते ढंग से इस पर चलने की कोशिश की । राजनीति और मजहब का (संकीर्ण-से-संकीर्ण मायने में) गठबंधन सबसे ज्यादा खतरनाक गठबंधन है और उसको खतम कर देना चाहिए । इससे सांप्रदायिक राजनीति पनपती है । यह गठजोड़ सारे मुल्क के लिए नुकसान देनेवाला है । यह बहुमत के लिए भी हानिकर है लेकिन संभवतः यह हर उस अल्पसंख्यक वर्ग के लिए नुकसानदेह है जो इससे कुछ फायदा लेना चाहता है । मेरे खयाल से भारत का पिछला इतिहास भी यही सिखाता है, लेकिन अगर किसी स्वतंत्र राज्य के अंदर अल्पसंख्यक वर्ग अपने-आपको अलग-थलग करना चाहे तो इससे उस मुल्क को तो नुकसान पहुंचता ही है, सबसे अधिक खुद उसके हितों को हानि पहुंचती है क्योंकि इससे अपने और दूसरों के बीच धार्मिक और राजनीतिक आधार पर भी एक दीवार खड़ी हो जाती है और इससे वह वर्ग अपना वह असर कभी नहीं डाल सकता जो जायज तौर पर डालने की इच्छा रखता है ।

(जवाहरलाल नेहरू के भाषण से)

बात उन दिनों की है जब सर आशुतोष कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति होने के साथ-साथ कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी थे । ऐसे विद्वान, उच्च आदर्शों वाले भारतीय मनीषी को तत्कालीन सरकार ने इंगलैंड भेजने का निश्चय किया । विदेश-यात्रा का सारा प्रबंध हो गया और सर आशुतोष राजी भी हो गये लेकिन ऐन मौके पर उनकी माता ने धार्मिक विचारों के कारण विदेश जाने से मना कर दिया । अब आशुतोष क्या करते ?

मां की आज्ञा को सर्वोपरि समझकर सर आशुतोष ने सरकार को लिखा, "मुझे विदेश जाने के लिए मेरी मां ने स्वीकृति नहीं दी है, अतः मैं असमर्थ हूं ।"

पत्र पढ़कर वायसराय लार्ड कर्जन क्रोध से पागल हो उठा—एक भारतीय द्वारा शासन की इतनी उपेक्षा ! उसने सर आशुतोष को बुलाकर कहा, 'जाओ, अपनी माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कहो कि भारत का वायसराय तुम्हारे पुत्र को विलायत जाने का आदेश देता है।'

वायसराय की बात टालना टेढ़ी बात थी। वैसे भी कर्जन स्वभावतः कठोर एवं तुनक मिजाज था। बड़े-बड़े राजा-महाराजा उससे भय खाते थे। लेकिन सर आशुतोष जरा भी विचलित नहीं हुए और गंभीरता से उन्होंने कहा, "मैं अपनी मां की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। हमारी मर्यादा, संस्कृति है—मातृ देवो भव-माता को देवता स्वरूप समझो। अतः इस विषय में आप किसी प्रकार का दबाव डालने की चेष्टा न करें।'

सर आशुतोष की दृढ़ मातृ-भक्ति देखकर कर्जन का आक्रोश शांत हो गया और वह उन पर रीझ भी गया।

('वैज्ञानिकों के रोचक और प्रेरक प्रसंग'—शुकदेव प्रसाद)

हम एक शांतिमय देश रहे हैं, लेकिन शांति के माने कमजोरी नहीं, शांति के माने हैं डटकर अपने पैरों पर खड़े होना, आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और अपनी सुरक्षा के लिए भी पूरी तौर से तैयार होना। शांति कमजोरी से नहीं मिलती, शक्ति से मिलती है, आत्मनिर्भरता से मिलती है, आत्मविश्वास से मिलती है। मैं चाहती हूं कि आज ये गुण हर एक हिंदुस्तानी के दिल और दिमाग में रहें। महात्माजी ने गरीबों में से, बिना हथियार के लोगों में से, आजादी के लड़ाकों की एक फौज बना दी थी—एक महान शक्ति। हमारी वह शक्ति आज और भी बढ़ी हुई, क्योंकि हमारी जनता आज ज्यादा जाननेवाली, ज्यादा योग्यतावाली और ज्यादा क्षमतावान भी है।

('[illegible]'—इंदिरा गांधी)

भारत में बैठे-बैठे हम यह नहीं [illegible] पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है। किंतु, मॉरिशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी क्रिस्तान हो जाएं। किंतु, भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया। वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में भगवान ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना दिया। यह ऐसी सफलता की बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए। अर्जा की आवाज और शंखों की ध्वनि जैसे भारत में गूंजती है, वैसे ही वह मॉरिशस में भी सुनायी देती है।

(रामधारी सिंह 'दिनकर')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुगीत

करने को हैं काम करोड़ों, हां करने का मन तो हो
भिड़ने की आतुरता इतनी है कोई दुश्मन तो हो
हाथ-पैर सब ठीक-ठाक हैं, रूप सलोना, इससे हलचल क्या होगी
लोक हृदय-मंथन-हित कुछ विस्फोटक आकर्षण तो हो
धाक जमाना कठिन नहीं, जमना मुश्किल है, बरस पड़ें संवेग, भले ही
भाल-गगन से चुए बड़प्पन, आंखों में बचपन तो हो
चलते-चलते नहीं थकेंगे जिम्मा किसका, सन्नाटा सन्नाटा ही
नाचे ज्वाल-शिखा क्यों खुलकर, पहले संघर्षण तो हो
सिर पर बोझ रखा जो उसमें कमी न आयी, और न आगे आनी है
चाहे भार न बदले, अंग-स्थल का परिवर्तन तो हो
दर्पण में प्रतिबिंबित भी अवकाश न दिखता, इसमें दोष किसी का क्या
नेत्र खुले हैं, किंतु लखाए जो वह आलंबन तो हो

—डॉ. मोहन अवस्थी

८/४ बैंक रोड,
इलाहाबाद-२११००२

आंसुओं की झील

फिर उफन आयी पलक में
आंसुओं की झील कोई
फिर किसी अव्यक्त दुःख ने
कुंडली में कस लिया है
पड़ रहे हैं शब्द नीले
चेतना को डस लिया है
यातना के शिविर में हूं
वेदना के विवर में हूं
गिन रहा हूं अंगुलियों पर,
बैठ मेरी पसलियों पर
एक रेशा रोज दिल का
खा रही है चील कोई
सी रखा है मुंह समझ का
बोलना बिलकुल मना है
दृष्टि पर है धुंध भारी
सोच पर कुहरा घना है
दृश्य में हूं, पर न दीखूं
चीखना चाहूं न चीखूं
अकेला मुझको पकड़कर,
फिर शिकंजे में जकड़कर
बीच माथे में किसी ने
ठोंक दी है कील कोई
अति निकटता प्राप्त करके
फिर मुझे अलगाव देता
घाव भरते ही दुबारा
घाव पर फिर घाव देता
मैं न जानूं, मैं कहां हूं
सब अपरिचित हैं जहां हूं
दृष्टिहीनों के शहर में,
इस अंधेरे के सफर में
छोड़िए पाथेय कर में
है नहीं कंदील कोई

—चंद्रसेन

ई ५, इंदिरा नगर
खंडवा (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानों के जंगल

ले यहां था घुप्प जंगल
चीते, भालू, भेड़िये घूमते थे मुक्त
मी बिचारा छिपता
राओं में,
यहां पर उगे
नों के नये जंगल
कहते हैं 'विहार'
क विहार, बुद्ध विहार
में शोक में डूबे अशोक
ही सबसे दुःखी ।
देवता हैं मस्त
ां अपने भवन में
आदमी ही खो गया है
चीते, भालू, भेड़िये
स्वच्छंद होकर
ी पोशाक में
अपने शिकार !

—सुधेश

फ्लैट१३३५ पूर्वांचल,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नयी दिल्ली-११००६७

बादल चिट्ठी-रसां हैं

पानी की महराब पर, ये मौसम के ख्वाब,
बूंदें कलम दवात हैं, ऋतुएं लिखें जवाब ।
बादल चिट्ठी-रसां हैं, बांट रहे हैं डाक,
पानी की खबरें पढ़ें, बरगद, शीशम, ढाक ।
पानी मसनद बन गया, बने गलीचे कूप
लहरों की बारादरी, में बैठी है धूप ।
पुल से पूछो कहेगा, कितना सहा तनाव,
रहा झेता उमरभर, जो पानी के घाव ।
घायल मन को कर गये, ये पछवा के तीर,
नदियों के चूड़े बजे, पर्वत हुए अधीर ।
नदियां, काजल, आंजतीं, काले घन आकाश,
सात रंग की मेखला, इंद्र-धनुष के पाश ।
उमड़-घुमड़ बरसी घटा, हंसी नदी में मीन,
लहर-लहर हर बूंद ने, स्वप्न बुने रंगीन ।
कजरौटा ले रात का, काजल आंजे झील,
बिजुरी लेकर खड़ी है, किरणों की कंदील ।
पीठों पर लादे हुए, इक पानी की लाट,
बूंदों की पायल बजा,
गयी हवा क्या छेड़,
रह, रह भीगा रातभर,
इक जामुन का पेड़,
सौदागर बादल चले, ये बूंदों के हाट ।

—दिनेश शुक्ल

रामेश्वर रोड,
खंडवा-४५०००१ (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश

जब तक लेती रहे
ऊपरी पलक
निचली पलक
का सिर्फ
चुंबन
समझो
आकाश बहुत दूर है ।
जिस क्षण ले लेगी
ऊपरी पलक
निचली पलक
का आलिंगन
समझो
आकाश तुम्हारा हो गया है ।

माथे की शिकन

द्वार पर
बिछी हुई
मां के
माथे की शिकन
प्रतिरात
कुचली जाती है
मेरे पांव तले ।
न वह छोड़ती है
प्रतीक्षा करना,
न मैं
कभी आता हूं
समय से पहले

पंखुड़ियां रिश्तों की

हवा का झोंका
कहीं भी ले जाए पंखुड़ी,
खुशबू गुलाब की
उसके गुलिस्तां की ही आएगी ।
समय कितना भी कर दे दूर
मुझे अपने परिवार से
छवि मुझमें
मेरी मां, मेरे पिता की ही आएगी ।

पंखुड़ियां रिश्तों की ही
फूल से परिवार का
श्रृंगार करती हैं
मन को मन से
बांधने का
कार्य करती हैं ।

● पद्मप्रे
53 Castletown Road West Ken
London W 14 9 HG, United Ki

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

कभी माटी का, वक्त कभी सोने का
न किसी हालत में यह अपना होने का ।
ट्टी से बने महल, मिट्टी में मिले महल
ो गयी खंडहरों में वैभव की चहल-पहल
ज बहादुर राजा, रानी वह रूपमती
नों को अंक में समेट सो रही धरती
ते हैं तोते इतिहास की छड़ी से डर
किन यह सबक कभी याद नहीं होने का ।
गर के तट बनते दंभ के घरौंदे ये
र के थपेड़ों से टूट-बिखर जाएंगे
गा नहीं मगर सिलसिला विचारों का
हरों के गीत समय-शंख गुनगुनाएंगे
लने पर संग चला सिर पर नभ का चंदा
ने पर ठिठका है पांव मिरग-छौने का ।
ध लिया शब्दों की मुट्ठी में दुनिया को
ही न मिला मुक्ति का जिसको मांगे से
ने की ढाल और रत्न-जड़ी तलवारें
ती रहीं कुम्हार के कर के धागे से
खा यों हमने फन सावन की बदली में
गुन के रंग और नूर को पिरोने का ।

—डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र

४१, सेंट्रल रोड, यादवपुर, कलकत्ता-७०००३२

गीत

वासंती क्षण !
सपने भोर के—
वर्तमान यह अनभोगा अतीत-जैसा
यह प्यासा मन लगता विरह गीत जैसा
जगे खयाल सब
जी झकझोर के—
अंग-अंग गीत, मन-मृदंग असहयोगी
राह पर ठगा ठूंठा तरु विकल वियोगी
छूट गया खुद
सबको छोड़ के—
कौन उगे किसलय को लोरियां सुनाये
रोकर सौ बार एक बार गुनगुनाये
सब रिश्ते गयी
पिकी तोड़ के—
फिर आयी रात रेशमी-रस-अंगूरी
मन कैसे समझो मन की नामंजूरी
आये जब फूल
सभी ओर के—

—राजमणि राय 'मणि'

—ग्रा./पो. धमौन पट्टी,
वाया— महनार,
जिला— वैशाली (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुगलक पितृघाती था !

—धर्मवीर शर्मा

तुगलक वंश का संस्थापक ग्यासुद्दीन तुगलक शाह गाजी (८ सितंबर १३२०-१३२५ ई.) जाति का तुर्क था। मलिक-उल-गाजी के नाम से विख्यात सुल्तान का पिता मलिक तुगलक, बलबन (१२६६-८८) का गुलाम तथा मां पंजाब के एक स्थानीय जाट परिवार की स्त्री थी। सन १३०५ में उसे दीपालपुर की 'इक्ता' दी गयी तथा पश्चिमोत्तर सीमा की रक्षा का भार विशेष रूप से सौंपा गया, क्योंकि इस ओर से मंगोल बराबर आक्रमण कर रहे थे। १३२० ई. में राज्य हत्यारे खुशरूशाह (खिलजी वंश) का अंत करके वह अमीरों और सरदारों के अनुरोध पर दिल्ली का 'सुल्तान' घोषित हुआ। यह पहला अवसर था जब कोई सर्वसम्मति से दिल्ली का 'सुल्तान' स्वीकृत हुआ। सुल्तान ने ग्यासुद्दीन तुगलक का खिताब धारण करके तुगलकाबाद किले की नींव डाली, जो आज भी खंडहर के रूप में तुगलक वंश की [illegible] रहा है।

खिलजी वंश का प[illegible]

खिलजी वंश के पतन के साथ [illegible] साम्राज्य का विघटन आरंभ हो गया [illegible] और वारंगल के सुदूर प्रांत केंद्रीय [illegible] नियंत्रण से स्वतंत्र हो गये। सुल्तान [illegible] तुगलक ने वारंगल के शासक प्रताप [illegible] पराजित कर वारंगल का नाम सुल्ता[illegible] जिसके परिणामस्वरूप कैकतीय राज[illegible] सूर्य अस्त हो गया और वारंगल 'दि[illegible] सल्तनत' की तलवार के साये में आ[illegible]

तिरहुत (मिथिला) के शासक [illegible] को परास्त कर सुल्तान ग्यासुद्दीन तु[illegible] दिल्ली की ओर कूच किया। मार्ग [illegible] ने शहजादे उलुगखां, फखरुद्दीन मु[illegible] जूनाखां, (जब उसे युवराज बनाया [illegible] उलुगखां की उपाधि दी गयी थी) को [illegible] भेजा। इब्नबतूता लिखता है, "दिल्ली [illegible] उसके स्वागत हेतु एक भवन का नि[illegible] करवाया जाए ताकि अगले दिन सु[illegible] शुभ मुहूर्त में सुल्तान दिल्ली में प्र[illegible] दिल्ली के सुल्तान ऐसा करना गौरव [illegible] समझते थे। शहजादा उलुगखां [illegible] निजामुद्दीन औलिया के पास आता [illegible] शेख संगीत तथा गोष्ठियों का आ[illegible] हर्षोन्मादपूर्ण गीत गाता तथा फक[illegible] नाज कर 'समा' बांधता था। [illegible] शेख को 'हाल' (भावावेश) हो[illegible] कट्टर सुन्नी मुसलमान भक्ति के [illegible] 'शरा' (मुसलिम धार्मिक कानून) [illegible] मानते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुल्तान ने सूफी संप्रदाय के संत शेख निजामुद्दीन औलिया को भी संदेश भेजा कि "मेरे दिल्ली आने से पूर्व शेख दिल्ली छोड़ दें और संगीत का स्वर मेरे कानों में न पड़े ।"

शेख की मृत्यु

शेख निजामुद्दीन औलिया चिश्ती सिलसिले' के संत शेख फरीद (बाबा फरीद) के शिष्य थे । सूफी संप्रदाय (१२३६-१३२५) के संस्थापक ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेर के निवासी थे । शेख ७ वर्ष की उम्र में अपने पिता के मरणोपरांत बदायूं से दिल्ली आकर ग्यासपुर नामक गांव में बस गये । अमीर खुसरो इनके शिष्यों में प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने शेख की मृत्यु पर कहा—

गोरी सोबें सेज पर मुख पर डाले केश ।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुं देश ।

सूफी संतों ने हिंदू-मुसलिम एकता के सफल प्रयास किये । शेख सलीम चिश्ती भी इस संप्रदाय के प्रख्यात संत हुए, जिनकी 'दरगाह' पर (फतेहपुर सीकरी) हिंदू और मुसलमान 'मन्नत' मानकर धागे बांधते हैं ।

शेख निजामुद्दीन औलिया जीवनभर 'फुतूह' (भिक्षा का अन्न) खाते रहे तथा हजारों गरीब-अमीरों के लिए इनकी 'खानकाहों में प्रतिदिन भोजन उपलब्ध रहा, जिसको संत 'बैतुल माल' (सार्वजनिक कोष का धन) की सहायता देते थे । शेख ने सुल्तान के आदेश के उत्तर में कहा, "हुनूज दिल्ली दूर अस्त" । (अभी दिल्ली दूर है) ।

जब चौथे शहर तुगलकाबाद का निर्माण हो रहा था, तो शेष द्वारा एक बावली निर्माणाधीन थी । सुल्तान ने बावड़ी निर्माण के लिए मजदूरी के काम में लगे लोगों को आदेश दिया कि बावड़ी पर निर्माण कार्य बंद कर दिया जाए और शेख को बावड़ी न बनाने के आदेश जारी किये । शेख ने सुल्तान से कहा, "जिस दुर्ग का निर्माण हो रहा है उसमें गुजर व झाड़ बसेंगे ।" यह सत्य प्रमाणित रहा । तुगलकाबाद शहर आज भी आबाद नहीं है ।

इब्नबतूता लिखता है कि शाहजादे उलुगखां ने अहमद आयाज, मीर इमारत (निर्माण मंत्री) के साथ मिलकर कुचक्र चला । सुल्तान और उसका ७ वर्षीय पुत्र महमूद महल में भोजन के समय भवन गिरने से दबकर मारे गये । तारीख-ए-मुबारकशाही के अनुसार यह घटना फरवरी १३२५ ई. में घटी । लेकिन आधुनिक इतिहासकारों में शाहजादे के पितृघाती होने पर मतैक्य नहीं है । घटना का सूक्ष्म विश्लेषण व निरीक्षण करने पर अनेक तथ्य सामने आते हैं । आगा मेहंदी हुसैन शाहजादे को पितृघात दोष से मुक्त रखते हुए तर्क देते हैं, "सुल्तान की मृत्यु एक आकस्मिक घटना का परिणाम थी । इसके पीछे कोई षड्यंत्र नहीं था ।" डॉ. ईश्वरी प्रसाद और बुल्जले हेग का तर्क है कि बड़े-बड़े सामंतों के साथ मिलकर मुहम्मद तुगलक ने साजिश की और ग्यासुद्दीन तुगलक की हत्या का षड्यंत्र रचा । निजामुद्दीन अहमद, बदायूंनी अबुलफ़ज़्ल (बाद के लेखक) ने अलुगखां को हत्या के लिए दोषी ठहराया ।

धर्मवीर शर्मा

समकालीन स्रोत भी इस घटना पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं । सुल्तान के समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी का कथन है 'बला-ए-आस्मानी नाजिल शुद-आकाश से विपत्ति का उल्कापात हुआ जिससे सुल्तान की मृत्यु हो गयी ।

हुसैन इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि 'आसमान से बिजली गिर पड़ी, जिससे सुल्तान की मृत्यु हो गयी ।'

समकालीन इतिहासकार इब्नबतूता कहता है, "घटना ६-७ वर्ष पूर्व घटित हुई है । घटनास्थल पर उपस्थित प्रत्यक्षदर्शियों से मुझे यह सूचना मिली है कि मुहम्मद तुगलक ने अपने प्रधानमंत्री अहमद अयाज के साथ मिलकर 'सुल्तान' की हत्या का षड्यंत्र रचा ।"

समकालीन इतिहासकार 'इमामी' भी शाहजादे को पितृघाती ठहराता है । लेकिन घटना का वर्णन भिन्न रूप से करता है, "सुल्तान के स्वागत के लिए 'अफगानपुर' (किलोखेड़ी या किलोकड़ी) दिल्ली-मथुरा रोड पर एक गांव के पास लकड़ी के महल का निर्माण करवाया गया, जिसकी नींवें जानबूझकर कमजोर डाली गयी थीं । जब सुल्तान भोजन कर रहा था तो उसके सामने हाथियों का प्रदर्शन किया गया । हाथियों की दौड़ के कारण भवन गिर पड़ा । भवन में तिलिस्म (जादू) किया गया था ।"

घटना को तर्क की कसौटी पर कसने से पूर्व परवर्ती स्रोतों पर भी एक दृष्टिपात आवश्यक है ।

इतिहासकार याहिया (तारीख-ए-मुबारक शाही), जो घटना के ११० वर्ष बाद १४२४ ई. में लिखी गयी का लेखक कहता है, "दुर्घटना अचानक हुई और शाहजादे का षड्यंत्र में नहीं था ।"

इतिहासकार निजामुद्दीन (तबकात-ए-अकबरी का लेखक) जिसने अपनी पुस्तक घटना के २५० वर्ष पश्चात १५९४ ई. में लिखी, कहता है, "शाहजादे ने अपने पिता की हत्या का षड्यंत्र रचा ।"

आपसी मतभेद

इतिहासकार फरिश्ता, तारीख-ए- फरिश्ता का लेखक, घटना का वर्णन १६२२ ई. में करते हुए कहता है, "मैंने लाहौर में तुगलकवंशियों तथा उनके संबंधियों से घटना की जानकारी प्राप्त की है । उनके उत्तर संतोषजनक नहीं थे । घटना को कोई सत्य बतलाता था, तो कोई इंकार देता था, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि सत्य क्या है । आधुनिक इतिहासकार डॉ. ईश्वरी प्रसाद का मता है कि सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक और उसके ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद में आपसी मतभेद थे । मनमुटाव का कारण शेख निजामुद्दीन औलिया को बताया जाता है । शाहजादा शेख के आश्रम में आता आता रहता था । शत्रुता के कारण ही सुल्तान शेख-उल-इसलाम (शेख निजामुद्दीन औलिया) को आदेश दिया था कि खुसरो प्राप्त दान के ५ लाख टके वापस लौटा दें । उत्तर में शेख ने बताया कि सब धन गरीबों में वितरित कर दिया गया है । शेख ने सुल्तान मना करने के पश्चात भी संगीत के कार्यक्रम बंद नहीं किया । सुल्तान के मना करने पर शाहजादा शेख के पास जाकर पैर छूता था । इन्हीं सब कारणों से सुल्तान शेख से रुष्ट था । शेख का उत्तर "हुनूज दिल्ली अस्त" इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रमाण है कि शेख को सुल्तान की मृत्यु के षड्यंत्र की पूर्व सूचना थी । इतिहासकार का मत है कि शेख से मिलकर षड्यंत्र रचा गया था ।

पिता-पुत्र के मध्य मनमुटाव के पक्ष में तर्क देते हुए कहा जाता है कि शाहजादे ने मुक्त हस्त से शाही खजाने को लुटाया था तथा अपे मित्रों और विश्वासपात्रों को मालोमाल कर डाला था । १३२३ ई. में वारंगल के शासक को बिना दबाए शाहजादा मार्ग से लौट आया था, क्योंकि शाही खेमों में अफवाह फैल गयी थी कि सुल्तान की मृत्यु हो गयी है । इस प्रकार सुल्तान शाहजादे से अप्रसन्न था ।

शाहजादे को दोषी मानते हुए निम्न प्रमाण दिये गये हैं ।

जियाउद्दीन बरनी ने तारीख-ए-फिरोजशाही में सुल्तान और शेख शत्रुता का कहीं भी जिक्र नहीं किया है, जबकि बरनी सर्बदा शेख के साथ रहता था ।

"जला-ए-आस्मानी नाजिल शुद" का अर्थ यह नहीं है कि बिजली गिरी, बल्कि घटना का अलंकृत भाषा में वर्णन है । घटना का अर्थ समझाने के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा प्रयोग की गयी है ।

हिंदुस्तान में मार्च के महीने में बिजली गि . रना समान्यतः संभव नहीं है । स्मरणीय है कि सुल्तान की मृत्यु मार्च १३२५ ई. में हुई थी ।

भवन निर्माण

इब्नबतूता स्पष्ट लिखता है, "मुझे शेख रुकनुद्दीन से घटना का विवरण प्राप्त हुआ, जो घटनास्थल पर सुल्तान के साथ भोजन कर रहा था । भवन गिरने से पूर्व मुहम्मद तुगलक ने शेख को इंगित करके बाहर बुला लिया था । इससे स्प ष्ट है कि शाहजादे को भवन गिरने की पूर्व सूचना थी ।

भवन निर्माण कार्य अहमद आवाज के निर्देशन में संपन्न हुआ था । भवन गिरने के कारणों की जांच होनी चाहिए थी तथा मीर इमारत को दंड मिलना चाहिए था । परंतु मोहम्मद तुगलक ने उसे उंड के स्थान पर प्रधानमंत्री नियुक्त किया । क्यों ?

शेख रुकनुद्दीन को शाहजादे ने १०० गांव जागीर के रूप में दिये ताकि वह षड्यंत्र पर परदा डाले रहे ।

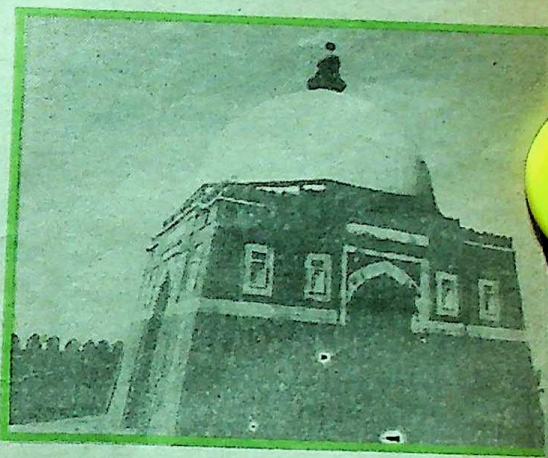

ग्यासुद्दीन का मकबरा, तुगलकाबाद

सुल्तान के मरणोपरांत मोहम्मद तुगलक ने शेख निजामुद्दीन के मकबरे के उद्धार के लिए १२ लाख रु. दिये तथा शेख के संबंधियों को भी उच्च पद व जागीरें प्राप्त हुई ।

उलुगखां को सुल्तान ने अपने जीवनकाल में ही युवराज घोषित कर दिया था । यही कारण था कि उसके उत्तराधिकार का विरोध नहीं हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर बुल्जले हेग (जे.आर.ए.एस. जुलाई १९२२-३३०-३१), डॉ. ईश्वरी प्रसाद (भारत में करौना तुर्कों का इतिहास, ४६ और आगे), डॉ. ए. मेहदी हुसैन (मोहम्मद बिन तुगलक का उत्थान और पतन, पेज ६६ और आगे), डॉ. मुईनुलहक (मुसलिम यूनिवर्सिटी जरनल १९३९, क्या मोहम्मद तुगलक पितृहंता था) ने समस्या का प्रत्येक पहलू से अध्ययन किया है। सर बुल्जले हेग और डॉ. ईश्वरी प्रसाद जूना खां पर संदेह करते हैं। जबकि बादवाले दोनों इतिहासकार उसे सभी अभियोगों से पूर्ण मुक्त करते हैं।

मंडप का गिरना

डॉ. ईश्वरी प्रसाद का दावा याहिया सरहिंदी, अबुल फजल निजामुद्दीन अहमद, बदायूंनी तथा अन्य व्यक्तियों के सुस्पष्ट तथा अस्पष्ट वचनों पर निर्भर है, जो इसामी और इब्नबतूता के विचारों का समर्थन करते हैं। दूसरी ओर ए.एम. हुसैन, हाजी मोहम्मद कंधारी, राय बिंद्रावन (लुब्बुत्वारीख हिंद, इंडिया हाउस की पांडुलिपि, ३८) तथा मोहम्मद बुलाक (मत्तलूबु तालिबीन) पर भरोसा कर इसके अतिरिक्त निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मंडप का गिरना एक दुर्घटना मात्र था न कि किसी षड्यंत्र का परिणाम। इसामी और इब्नबतूता को छोड़कर सभी बाद के लेखक हैं और उनमें प्रत्येक अपनी रूचि के अनुसार पूर्व कृतियों से संकेत लेता है।

मोहम्मद तुगलक को सुल्तान की हत्या के दोष से मुक्त करने के लिए भिन्न तर्क दिये गये हैं :—

सुल्तान शेख पर कभी भी इतना क्रोधित व रुष्ट नहीं हुआ था कि शेख उसकी हत्या के षड्यंत्र में भागी होता। सुल्तान ने ५३ धर्माधिकारियों से शेख के संदर्भ में सलाह ली थी लेकिन उन्होंने शेख के आचरण व कार्यक्रमों को कभी भी धर्मविरुद्ध नहीं ठहराया जिससे सुल्तान संतुष्ट हुआ।

वारंगल के अभियान को अधूरा छोड़ वापस लौटने पर भी सुल्तान शाहजादे से रुष्ट नहीं हुआ था, यदि वह असंतुष्ट होता तो उसे भी दंड देता जबकि उसके साथियों को मृत्युदंड दिया गया। सुल्तान शाहजादे के वारंगल संबंधी स्पष्टीकरण से सहमत था।

संतों का आशीर्वाद

शेख ने शाहजादे को सामान्य रूप से दिल्ली का सुल्तान होने का आशीर्वाद दिया था जैसा कि संत करते हैं। सुल्तान के कभी भी दिल्ली न लौट पाने की भविष्यवाणी ज्योतिषचार्यों ने की थी कि शेख निजामुद्दीन औलिया ने।

शाहजादा धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसने शेख रुकनुद्दीन को नमाज पढ़ने के लिए इशारा किया था न कि बाहर आने का गुप्त इशारा।

हाथियों का प्रदर्शन स्वयं सुल्तान के आदेश से करवाया गया था। शाहजादे ने तो केवल बंगाल से लाये गये हाथियों, जिन्हें सुल्तान अपने साथ लाया था, को देखने की इच्छा अभिव्यक्त की थी। हाथी परेड की स्वीकृति भी स्वयं सुल्तान ने दी थी।

भवन बनाने का आदेश स्वयं सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक ने दिया था, "दिल्ली के बाहर मेरे स्वागत हेतु एक भवन का निर्माण करवाया जाए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवन निर्माण का आदेश ३ माह पूर्व प्राप्त हुआ था। समय के अभाव के कारण भवन लकड़ी का बनाया गया, जो शहतीरों और तखतों पर आश्रित था। भवन की नींव पक्की नहीं डाली जा सकी इसलिए दुर्देव से दुर्घटना हो गयी।

बसातीन-उल-उन्स का लेखक अहमद हसन सुल्तान के साथ वारंगल से दिल्ली आ रहा था। उसका कहना है, "लौटते समय मई-जून का महीना था। बड़ी भीषण गरमी व लू चल रही थी। इसलिए जून के मास में वर्षा भी हो सकती है और बिजली भी गिर सकती है।

सुल्तान मोहम्मद तुगलक ने अपने आत्मचरित (अप्रकाशित) में वर्णन किया है, मेरे पिता की मृत्यु जुलाई १३२६ ई. में हुई। भारत में जुलाई मास में पानी बरसता है और बिजली गिरने की संभावना भी हो सकती है।

'सीरत-ए-फिरोजशाही' में मोहम्मद तुगलक की कटु आलोचना की गयी है व उसके अत्याचारों के विशद वर्णन हैं। परंतु कहीं भी इस बात का संकेत नहीं मिलता कि वह पितृघाती था।

'इनसाय माइरू' के एक पत्र में वर्णित है कि भवन इसलिए गिरा, क्योंकि नींव कमजोर थी।

इसामी का कथन है कि भवन उस समय गिरा, जब उसके सामने हाथी दौड़ाये गये। 'मतलबूस्तालिबीन' में स्पष्ट वर्णन है कि भवन वज्रपात के कारण गिरा।

यदि सुल्तान को शाहजादे पर शंका होती, तो उसे दूसरी बार कुमक सहित वारंगल पर आक्रमण के लिए नहीं भेजता जो इस बात का प्रमाण है कि उलुगखां की स्वामिभक्ति पर संदेह नहीं किया गया तथा दरबार में उलुगखां की उपलब्धियां समारोह म नाकर सराही गयीं।

पूर्वी अभियान पर प्रस्थान करने से पूर्व सुल्तान ने अपनी अनुपस्थिति में साम्राज्य का शासन कार्य चलाने का समुचित प्रबंध किया था। उसने उलुगखां को राजसी परिषद में नियुक्त किया, जिसमें शाहीन, आखूर बेक, अहमद अयाज व उलुगखां थे।

पारस्परिक स्नेह

राजसत्ता ग्रहण करने के पश्चात मोहम्मद बिन तुगलक और उसकी माता के बीच पारस्परिक स्नेह बना रहा।

> सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक ने वारंगल के शासक प्रताप रुद्रदेव को पराजित कर वारंगल का नाम सुल्तानपुर रखा, और वारंगल 'दिल्ली सल्तनत' की तलवार के साये में आ गया।

उलुगखां के उत्तराधिकार को, उसकी जीवित भाइयों और न ही दरबारी अमीरों के किसी वर्ग द्वारा दी गयी चुनौती का कोई वर्णन मिलता है। इस बात का भी उल्लेख नहीं है, कि पदोन्नति या ईनाम का वायदा कर उनकी स्वामिभक्ति खरीदी गयी।

उलुगखां को पहले ही युवराज घोषित किया जा चुका था। इसलिए वह उत्तराधिकार के विषय में किसी चिंता में बहक नहीं सकता था।

इब्नबतूता 'उलमा' वर्ग का सदस्य था। उसका विवाह माबर के शासक के परिवार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ जो मोहम्मद का शत्रु था । कई स्थानों पर उसका वर्णन बाजारू चर्चाओं के आधार पर कल्पित है, अतः उसका मत स्वीकार करने योग्य नहीं है ।

सुल्तान को शेख से दुश्मनी का कारण पांच लाख टकों के वापस न लौटाने का बताते हैं, जबकि दिल्ली के शेख ग्यासुद्दीन चिराग देहली के अनुसार, "यमुना जल के समान दान तथा उपहार उनकी खानकाह में बहा करते थे । (खैरूल मंजालिस-२५७) इतना होते हुए भी उन्होंने कोई वस्तु दूसरे दिन के लिए बचाकर नहीं रखी । वह एक हाथ से स्वीकार करते और दूसरे हाथ से बांट देते थे । शेख शासकों के पास कभी नहीं गये और राजनीति में उन्होंने रूचि नहीं ली ।

जबकि राजा आये और गये, राजवंश उठे और गिरे, जबकि महत्त्वाकांक्षी राजकुमार लड़े और प्रतिस्पर्धी बे, षड्यंत्र बनाये गये, और जबकि दरबारियों ने चाटुकारी और विश्वासघात किया, शेख अपने कतृ र्वय पर डटे रहे, जिसका उन्होंने संकल्प लिया था और गयासपुर स्थित अपने एकांत आश्रम में शांतिपूर्वक आध्यात्मिक मुक्ति का कार्य चलाते रहे ।" (लाइफ एंड वकर्स ऑफ अमीर खुसरो, १३५/६)

संभव है सुल्तान इन सबसे अनभिज्ञ नहीं था और उसने शेख के कथन का बुरा नहीं माना होगा ।

'सियरुल औलिया' का लेखक अमीर खुर्द एक घटना का वर्णन करता है । उलमा वर्ग की हठधर्मी के कारण सुल्तान को एक सभा बुलानी पड़ी जिसमें शेष को भी 'उलमा' के समक्ष अपने दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करना था । सुल्तान एक तटस्थ प्रेक्षक के रूप में देखता व सुनता रहा । सुल्तान ने काजी का यह प्रस्ताव कि 'सभा' अवैध घोषित कर दी जाए, ठुकरा दिया ।"

शेख का उत्तर "हुनूज दिल्ली दूर अस्त' बाद की मनगढ़ंत बात है । शेख उस समय बीमार थे और उन्होंने ४० दिन पूर्व ही भोज त्याग दिया था । वे इस समय सुल्तान की वापसी या शाहजादे के भविष्य से अधिक ईश्वर के ध्यान में मग्न थे ।

शेख रुकनुद्दीन ने, जिसके उलुगखां से घनिष्ठ संबंध थे, शासक सम्राट के विषरु में एक विदेश (इब्नबतूता व इसामी) को अपना विश्वासपात्र बनाया हो, आश्चर्यजनक प्रतीत हो ता है ।

शेख द्वारा राजनीति की बात तो दूर जो कि उनके स्वभाव के प्रतिकूल थी, चिश्ती संप्रदाय का अनुसारण कर उन्होंने राजाओं के दरबार में आने से भी इनकार कर दिया ।

लाल किले का सिंहासन

मोहम्मद अपने पिता का बड़ा भक्त था । पिता की मृत्यु पर उसे ४० दिन तक मातम मनाया । काले वस्त्र धारण किये नंगे सिर और पैर रहा । ४० दिन तक तुगलकाबाद में निवास करता रहा तदुपरांत बलबन के लाल किले में सिंहासन पर बैठा ।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सुल्तान को पितृहत्या के लिए दोषी ठहराना न्यासंगत नहीं है ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलासिता, वृद्धावस्था, विवेकशून्यता, हर युग में विश्वभर के राजकुलों के पतन का कारण बने हैं... अपशकुन के बादल जब मंडराने लगते हैं... जनता भी परिस्थितियों के अनुरूप आचरण करने लगती है... हर युग में मानव मन की वृत्तियां समान मिलती हैं, अनुकूल क्षणों और प्रतिकूल क्षणों की साक्षी बनकर । यह भी सच है कि इतिहास स्वयं दुहराता है... अतीत केवल कुछ घटनाओं का जाल नहीं प्रासंगिक संदर्भों में भी उतना ही अर्थवान है... प्रस्तुत कहानी पुराणों के आवरण में होकर भी आज की स्थिति का साकार चित्रण है ।

'राजा त्रयरुण की रथयात्रा'

● डॉ. सुधा पांडे

अयोध्या की श्री-समृद्धि नष्टप्रायः हो चली है, मोहिनी रूपराशि लिये उस नयी रानी ने अपने मोहपाश में जब से महाराज को बांधा है, राज्य पर विपत्तियां ही मंडराने लगी हैं, किंतु मोह के वशीभूत, विलास के रागरंग में डूबे राजा को कुछ भी सुधबुध नहीं है... प्रजाजनों में भी राजा के इस कृत्य के कारण सुगबुगाहट है और आक्रोश के स्वर उभरने लगे हैं...'

उस दिन राजप्रासाद की वीथिका में मंत्रिगण परस्पर वार्तालाप कर रहे थे... बात को आगे बढ़ाते हुए एक मंत्री ने वाक्य जोड़ा —'अपने राजपुरोहित विवेकवान मित्र वृशजान को भी उन्होंने अपमानित करके बहिष्कृत कर दिया... कितनी अनिष्टकारी थी, राजा की वह दिग्विजय यात्रा...

प्रतापी इक्ष्वाकुवंश के वंशज थे राजा त्रयरुण, मन में अनेक महत्वाकांक्षाएं पिता के शासनकाल से ही उभरने लगीं और उन्हें प्रतीक्षा थी कि कब उनका राज्याभिषेक हो, और कब अपने पराक्रम की यश पताका वे पूरे भू-मंडल पर फहरायें... महत्त्वाकांक्षा दिनोदिन बलवती होने लगी । पिता त्रिवृष्ण वृद्ध हो चले थे... उनके जीवनकाल में अयोध्या में सर्वत्र सुख-शांति का साम्राज्य रहा, प्राकृतिक आपदाएं भी राज्य में उपद्रव न कर पाती थीं... अयोध्या का जीवन निरापद वैभवपूर्ण जीवन था । यथासमय अवसर पाकर त्रिवृष्ण ने मंत्रियों को बुलाकर कहा —'मेरे वानप्रस्थ जीवन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय आ गया है... अब युवराज त्र्यरुण का राज्याभिषेक कर देना चाहिए ।'

महाराज के पुत्र को राजपद पर अभिषिक्त करने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती थी ? सभी ने सहर्ष भाव से राजा के अभिमत का अनुमोदन किया, शुभ मुहूर्त्त देख युवराज का राज्याभिषेक हुआ और महाराज वन को चले गये... निष्काम भावना से राज्य की सुख-समृद्धि मंत्रियों और पुत्र के हाथ सौंपकर... युवराज को अभ्भीस्पित फल मिल चुका था... वे तो इस अवसर की प्रतीक्षा में थे ही ।

त्तयरुण और वृशजान की मित्रता सभी को ज्ञात थी, दो शरीर एक आत्मा थे बाल्यकाल से वे दोनों । वृशजान मंत्रदृष्टा बन चुके थे बचपन में ही, अब त्तयरुण ने उन्हें राजपुरोहित पद देकर उनका गौरव बढ़ा ही दिया था । त्र्यरुण भी अपने राजोचित गुणों से अपूर्व महारथी सिद्ध हुए । राज्यकार्य संचालन में वृशजान की अपूर्व मेधा और त्र्यरुण की वीरता ने मणिकांन योग की भांति अयोध्या में ख्याति प्राप्त की ।

"नृपश्रेष्ठ ! आपका राज्याभिषेक हुए काफी अवधि बीत चली है, अब दिग्विजय के लिए प्रयाण किया जाए ।" वृशजान ने उस दिन अवसर पाकर प्रस्ताव रखा था...

महाराज पुरोहित की इस सम्मति का भाव समझ चुके थे... हर्ष से भर उठे वे, क्षणभर में यात्रा के संभार एकत्रित कर दिये गये । अनेक मंगल कामनाओं से अपने भावाश्रु अर्पित कर पुरवासियों ने दिग्विजय यात्रा के लिए राजा को विदा दी... पुरांगनाएं गीत गा रही थीं, वृद्धों ने

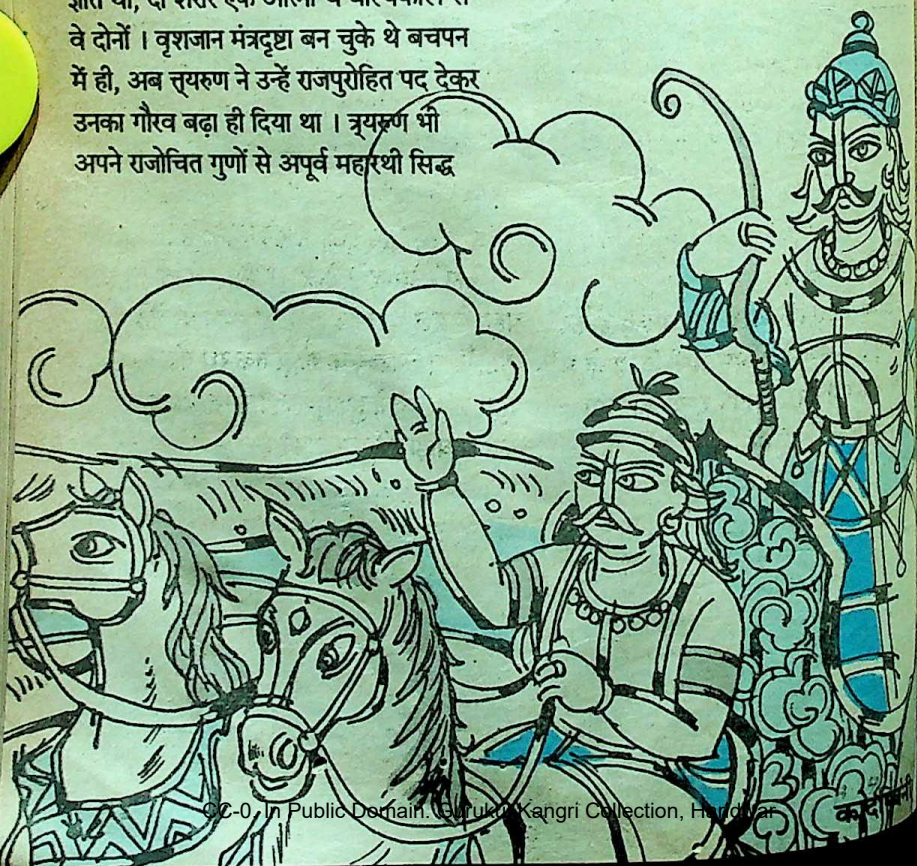

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशीर्वचन दिये... नृपति की जय-जयकार का स्वर सभी दिशाओं में फैल गया ।

चतुरंगिणी सेना से राजा रथयात्रा के लिए निकल चुके थे... असंख्य रथों, घोड़ों, हाथियों और पैदल सैनिक राजा की जयकार करते हुए साथ चल रहे थे... सेना की पगध्वनि से धरती क्षणभर को कांप उठी थी मानों । मार्ग जनसमूह से घिर जाने के कारण संकरे हो गये... राजा के रथ को देखने के लिए मार्गों पर दोनों ओर असंख्य स्त्री-पुरुष एकत्रित हो जाते थे । राजा का रथ समीप पहुंचते ही सीमा पर स्थित राज्यों के अधिपति अनेक उपहार लेकर पहुंच जाते थे और राजा के साथ उनके पुरोहित का भी प्रशस्ति गान करते थे... जिस-जिस प्रदेश में उनका रथ गया वहां उनका प्रभाव छाता गया... चतुर्दिक सुख-शांति और सद्भाव की स्थापना के लिए यह यात्रा है, ऐसा जानते ही राजागण उनकी अधीनता स्वीकार कर लेते, किसी भी स्थान पर युद्ध करने की स्थिति ही उत्पन्न न हुई... यात्रा में बीतनेवाले प्रत्येक दिन अतिरिक्त आनंद के अतिरेक से भर उठे थे ।

महाराज ने उस विजयरथ पर आरूढ़ होकर उत्तर से पूर्व, दक्षिण से पश्चिम सभी दिशाओं में निर्बाध यात्रा पूर्ण की... अपने राज्य को चारों तरफ से सुरक्षित किया राजा ने... तरुण के पराक्रम और वृशजान के बुद्धि वैभव को सफलता मिल चुकी थी... दिग्विजय यात्रा समाप्त हुई । अयोध्या वापस लौटने की घड़ियां भी आ चुकी थीं... राजा सहित सभी सैनिकों के हर्ष का पारावार न था । महाराज के इस दिग्विजय संदेश को वायु ने पुष्पों की सुगंधि की भांति सर्वत्र फैला दिया, सातों महाद्वीप एवं पूरा भू-मंडल राजा की अपरिमित कीर्ति से अभिभूत हो उठा ।

महाराज दिग्विजय प्राप्त कर अयोध्या में वापस लौट रहे हैं, यह संदेश सुनते ही प्रजावर्ग में हर्ष की लहर फैल गयी । सजी-संवरी अयोध्या रूपगर्विता नायिका की भांति उल्लसित हो उठी, राजमार्ग विशाल तोरण द्वारों से सुसज्जित था... मंगल वाद्य और मंगल गानों से सारा प्रांतर आह्लादित... समूचा राज्य आतुरता से अपने राजा के लौटने की प्रतीक्षा में उतावला हो रहा था..त्साह से भरे मनुष्यों से राजमार्ग और वीथिकाएं गवाक्ष खचाखच भर गये थे... भीड़ की अधिकता, रथ की गति रुक-रुक जाती थी... ।

महाराज और वृशजान दोनों एक ही रथ पर आरूढ़ थे...आगे-पीछे, इधर-उधर विशाल जनसमुद्र लहरा रहा था...राजा की एक झलक पाने को... ! रथ फिर बीच में रुक गया था अचानक महाराज उठे और सारथी के पास जाकर कहा, 'तुम हटो, मैं राह बनाता हूं...'

'नहीं महाराज ! ऐसा न करिए...जनता बहुत विह्वल है, आप अपने ही स्थान पर बैठे रहें...मैं, राजप्रासाद के गोपुर तक रथ को पहुंचता हूं' कहते हुए वृशजान ने सारथी के हाथ से घोड़ों की रास अपने हाथ में ले ली...वृशजान को सामने पाते ही गगनभेदी जय-जयकार से जनता ने सारा वातावरण गुंजा दिया...महाराज भी जनता द्वारा दिये जानेवाले आदर-अभिनंदन को पाकर हर्षातिरेक से फूले नहीं समा रहे थे !

उस विजय-यात्रा ने जीवन के लिए मानो अनंत महत्वाकांक्षाओं के पंख लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिये...वृशजान के हाथों में रथ की डोरी आते ही, रथ को भीड़ में मार्ग मिलने लगा था । चारों तरफ अपार जन-समुद्र को देखकर रथ के घोड़े चंचल गति से भर उठे...वृशजान के निरंतर संभालते रहने पर भी घोड़ों ने गति पर संयम खो ही तो दिया...हवा को छूनेवाली गति से वे अश्व दौड़ते चले जा रहे थे...

'गति धीमी करो वृशजान ! इस दुर्निवार गति से कहीं कुछ अनर्थ न हो जाए ।'...महाराज ने कंपित स्वर में अपने मित्र से कहा, 'सारथी भी भयभीत हो उठा था...वृशजान प्रयास करके भी अश्वों की गति रोक पाने में असमर्थ थे...सारथी चीख-चीखकर जनसमूह को मार्ग से हटने के लिए कह रहा था...चारों तरफ कोलाहल मच गया, किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था...घोड़े दौड़ते ही जा रहे थे...उनके खुरों से उड़ी धूल ने धरती-आसमान को ढक दिया...

'रोको-रोको, रथ को रोको ! महान अनर्थ हो गया...' भीड़ में से किसी का स्वर था...रथ एक झटका खा अचानक रुक गया...सोलह वर्ष का कोई ब्राह्मण कुमार रथ की अराओं में फंसा तड़प रहा था...घोड़ों के खुरों और रथचक्रों की द्रुतगति ने उसका सारा शरीर क्षत-विक्षत कर दिया था । तेजस्वी मुद्रा, कमनीय देहयष्टिधारी वह युवा निश्चेष्ट होकर गिर पड़ा था...करुण चीत्कार निकली उसके मुख से और एक तरफ लुढ़क गया वह !

'अरे, यह तो महान अनर्थ हो गया...' सारथी हाहाकार कर रहा था...वृशजान की तो जैसे चेतना ही न रही...सारथी ने झकझोरकर उन्हें वह करुण दृश्य दिखाया...उनका हृदय

वेदना से फट जाने को हुआ...एक झटके से कूदकर अगले ही क्षण वे रथ से नीचे आ गये । महाराज के पास पहुंच करुण क्रंदनभरे स्वर में बोले, 'महाराज, विजय यात्रा अभिशप्त हो गयी...रथ के पहियों में फंसकर एक ब्राह्मण कुमार दब गया और अचेत पड़ा है...' वृशजान का स्वर कातर हो उठा था...कंठ अवरुद्ध हो गया, नेत्रों से अविरल अश्रुधार बह चली...महाराज भी विह्वल हो उठे । अब तक अपार जनसमूह एकत्रित हो चुका था !

विजय यात्रा का कलंक लगेगा, इस बात का स्मरण आते ही राजा की बुद्धि स्तब्ध हो गयी । क्षणभर में ही गंभीर स्वर बनाकर वृशजान के प्रति रोष प्रकट करते हुए बोले, 'इस अनर्थ के मूल कारण आप ही हैं ! न आप सारथी के हाथ से रथ की डोर लेते, न ही आप संयम खोते...इस भरी भीड़ में रथ चलाने का आग्रह यदि आपने न किया होता, तो यह दुर्घटना न घटती !'

संकट के क्षणों में राजा के मुख से ऐसे शब्द सुन वृशजान उद्वेलित हो उठे और तत्काल वाणी में संयम रखकर बोले, 'न आप इस रथयात्रा का उपक्रम करते...न यह दुर्घटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती...यदि दिग्विजय का यश आपको मिलता है तो यह अपयश भी आपके ही पक्ष में जाएगा ! महत्त्वाकांक्षा और अभिमान से ओत-प्रोत आपका ही स्वभाव आपको इस सीमा तक ले गया है...'

महाराज से यह अपमान सहन न हुआ, तत्काल उन्होंने वृशजान को कठोर शब्दों में तिरस्कृत करते हुए आज्ञा दी, 'आप इसी क्षण राजधानी छोड़कर अन्यत्र चले जाएं...' वृशजान आश्चर्यचकित थे । उन्हें महाराज से ऐसे कठोर आदेश की आशा न थी...राजपुरोहित को निष्कासित किया गया है, यह बहुत बड़ी घटना थी...

राजा का आदेश पाकर परिजन उस कुमार को चिकित्सा के लिए उसके घर तक पहुंचाने में व्यस्त हो रहे थे...रथ आगे बढ़ा दिया गया...दिग्विजय के उल्लासभरे समारोह बंद कर दिये गये । अयोध्या की राजनीति में विष उतर चुका था...महाराज भी अपनी यातनाओं से जूझते कहीं अंधेरों में खो गये ! राजपुरोहित के अपमान से सारी अयोध्या क्षुब्ध थी...पश्चात्ताप की अग्नि में सभी धधक उठे थे...

वृशजान के चले जाने के बाद अयोध्या में अराजकता फैलने लगी...राजप्रसाद से लेकर साधारण जनता तक सभी विलासी हो चले । घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार-जैसी भावनाएं अयोध्या पर हावी हो गयीं...सुख-शांति का अवसान हो गया । चारों तरफ अव्यवस्था का बोलबाला होने लगा...अकाल की आशंका सारे राज्य में फैल चुकी थी, प्रजा संत्रस्त थी, सांसारिक सुख ही सर्वोपरि थे और महानाश का वह कारण सारी प्रजा के लिए दुर्भाग्य बनकर आया जब महाराज ने अपनी वृद्धावस्था का भी विचार न करते हुए एक नगर वधू की कन्या से विवाह कर लिया । अंतःपुर की सुंदरी-रमणियां राजा के इस व्यवहार से हा-हाकार कर उठी !

नयी रानी के राजधानी में प्रवेश करते ही अयोध्या आपदाओं से घिर उठी...पिता-पुत्र, भाई-भाई में विविध मतभेद उठ खड़े हुए...कुलाङ्गनाओं की प्रतिष्ठा खतरे में पड़ गयी...सर्वत्र अनाचार का प्रभुत्तव बढ़ चला, केवल निंदा और अपकार...दूसरों की संपत्ति का अपहरण, स्त्रियों के मान-सम्मान शीलहरण की दुष्कल्पनाओं में सभी का मन रमने लगा... ।

वृशजान को अयोध्या छोड़े काफी समय बीत चला था...मंत्रियों ने राजा को सलाह दी कि वृशजान को वापस बुलाया जाए, उन्हीं के स्वास्तिवाचन से अयोध्या का कल्याण हो सकेगा...

नयी रानी इसके पक्ष में न थी, 'उस अधर्मी पुरोहित को दुबारा क्यों बुलाया जा रहा है...गर्जनाभरे स्वर में उसने विरोध किया और रूठकर कोप भवन में चली गयी । अयोध्यावासियों के सुफल थे या राजा का प्रारब्ध, प्रजा का कष्ट अब असह्य हो चला था, प्रजाजनों की दुःखभरी स्थिति जब राजा को ज्ञात हुई तो वह पश्चात्ताप की अग्नि में धधकने लगे...'अपने निजी सुखों में भूलकर मैं प्रजा की सुध ही न ले सका...' राजा के मन में विवेक जाग्रत हो चुका था...उन्होंने अनुभव किया...वृशजान सदृश् विवेकवान राजपुरोहित और अपने बाल्य-मित्र का अपमान कर उन्होंने अपने पैरों स्वयं कुल्हाड़ी मारी थी, जैसे भी हो वृशजान को वापस बुलाना ही होगा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा स्वयं पार्षदों सहित वृशजान के आश्रम गये । समीप पहुंचते ही महाराज विचलित हो उठे, करुणा विगलित हृदय से दोनों मित्र मिले और अंतर का कलुष पश्चात्ताप की अश्रुधार में बह चला...

आज राजधानी में अपूर्व आनंद का अवसर है । निष्प्राण अयोध्या में नवजीवन का संचार हो चला है । वृशजान स्वस्ति यज्ञ में तत्पर हैं...अयोध्या की खोयी समृद्धि लौटाने को...अपार जनसमूह उस यज्ञ का पुण्य लाभ करने को एकत्रित हुआ, किंतु अब यह कैसी नयी बाधा आ गयी ? अग्नि प्रज्जवलित ही नहीं हो रही थी...वृशजान कारण समझ गये । उन्होंने मंत्रोच्चार किया, तभी अंतःपुर की ओर से चीखती कोई स्त्री यज्ञशाला की ओर बढ़ती दिखायी दी...आते ही वह स्त्री जोर-जोर से क्रंदन करने लगी...विकृत वाणी, विकृत आकृतिवाली वह स्त्री साक्षात् विघ्नमूर्ति प्रतीत हो रही थी...यह स्त्री और कोई नहीं नवीन रानी थी !

यह क्या है ? महाराज रानी का यह रूप देख आश्चर्य से भर उठे...वे कुछ बोलें, इससे पूर्व ही वृशजान ने उन्हें चुप रहने का संकेत किया और मंत्र जपने लगा...क्षणभर में ही वह रानी थर-थर कांपने लगी...पुरोहित के मुख से 'स्वाहा' शब्द निकलते ही अग्नि की भयंकर लपटें उसके शरीर से निकलीं और पलभर में सब शांत हो गया था...अमोघ मंत्र अपना प्रभाव दिखा चुका था ।

महाराज विचलित थे, अपनी प्रियतमा रानी का वियोग उन्हें असह्य प्रतीत होने लगा... यज्ञशाला में उपस्थित सभी लोग स्तब्ध थे । इस

विलक्षण घटना को देखकर... तभी वृशजान राजा को रहस्य बताने लगे, 'महाराज ! आपकी यह नवीन रानी साक्षात् आपदा थी...इसी के आगमन से अयोध्या में दुरवस्था फैल गयी थी...चारों तरफ विद्वेष और कलह के स्वर सुनायी देते थे...आप इसके मोहपाश में इतने जकड़े थे कि आप इसकी वास्तविकता को भी भांप सके !' यह नारी रूपधारिणी 'पिशाची' थी ।

महाराज त्रयरुण कांप उठे थे...कैसा अनर्थ किया था उन्होंने...सत्ता महत्त्वाकांक्षाओं के अपार सागर में हिलोरें लेता उनका अंतर्मन विवेक तक खो चुका था...अपनी विवेकहीनता के कारण राजा का मन आत्मग्लानि से भर गया...'मैं पुनः राज्यकार्य में प्रवृत्त न हो सकूंगा...' राज मद विगलित हो चुका था...उन्होंने राजपद से विरक्त होकर पुत्र सत्यव्रत को राजपद पर अधिष्ठित कर अग्रमहिषी के साथ वन की ओर प्रस्थान कर गये ।

अयोध्या के एक दुःखमय अध्याय का अवसान हुआ !

—[illegible]

एम.के.पी. पो.ग्रे. [illegible]
देहरादून (उ.[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर एवं दफ़्तर में दोहरी भूमिका निभानेवाली महिलाओं की अपनी अलग ही त्रासदी है। दो नावों की सवार यह अपनी किसी भी भूमिका को न्यायपूर्ण स्थिति में नहीं निभा पाती। एक मां और एक पत्नी के रूप में यह कामकाजी महिलाएं दूसरों के साथ तो क्या स्वयं अपने साथ भी न्याय नहीं कर पातीं।

एक सर्वेक्षण के अनुसार दिल्ली में काम करनेवाली ऐसी महिलाओं की संख्या एक लाख पचास हजार से एक लाख ८० हजार के बीच है, जिन्हें सरकारी एवं गैर सरकारी उपक्रमों में कार्य करने के लिए दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों से प्रतिदिन राजधानी में आना पड़ता है।

महिला मुक्ति संगठन

वे राजनीति की रोटी सेंक रहे हैं

• देशबंधु वशिष्ठ

दिल्ली से बाहर की महिलाएं

इन कामकाजी महिलाओं का इससे अधिक त्रासदीपूर्ण एक अन्य वर्ग है, दूरदराज के क्षेत्रों से राजधानी दिल्ली में कार्य करने आनेवाली महिलाएं। दिल्ली को राष्ट्र की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है और अपने इसी वर्चस्व के कारण राजधानी दिल्ली के समीपवर्ती क्षेत्रों में फरीदाबाद, गुड़गांव जैसे स्थानों से हजारों की तादाद में महिलाएं स्थानीय रेल अथवा बस इत्यादि के माध्यम से आती-जाती हैं।

प्रतिदिन आवागमन में रहनेवाली महिलाओं को मार्ग में होनेवाली कठिनाइयों के अतिरिक्त परेशानी के रूप में स्थानीय रेल और बसों में यात्रा के दौरान आर्थिक और मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ता है। प्रतिदिन आवागमन में रहनेवाली इन कामकाजी महिलाओं की संवेदना भले ही सर्वोपरि है परंतु इस श्रेणी में स्कूल-कॉलेज की छात्राओं एवं दूसरे कार्यों में लगी लड़कियों को भी मानसिक उलझन की इस स्थिति से गुजरना पड़ता है।

यहां प्रस्तुत हैं ऐसी ही कुछ महिलाओं के विचार—

कनाट प्लेस की ट्रेवल एजेंसी में कार्यरत डॉ. मीनू अग्रवाल का कहना है कि—

'मुख्य परेशानी तो बाहर से आने की है। आफिस आने में ही डेढ़-दो घंटे लग जाते हैं। पांच-छह बजे आफिस से छूटने के बाद घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचते-पहुंचते कभी-कभी तो आठ भी बज जाते हैं । इसी तरह सुबह को घर से आठ बजे निकलना होता है । इस तरह हमारा तो बारह घंटे का आफिस हो जाता है । सरदियों के मौसम में तो और भी आफत रहती है । न अपना ख्याल रख पाओ और न ही किसी दूसरे के बारे में सोच सको, बस आनन-फानन में दौड़ते हुए रेलवे स्टेशन पहुंचो । और बसों की तो यह हालत है कि बैठने की सीट मिलना तो दूर कभी-कभी तो खड़े होने की जगह भी दूभर हो जाती है । सांस रोककर दम साधे खड़े रहो । भीड़ में तनिक किसी के हाथ-पैर लग जाए तो दूसरा लड़ने को तैयार रहता है । इन्हीं सब मुश्किलों से तंग आकर मैंने रेल से चलना शुरू किया है । लेकिन आफत है कि यहां भी पीछा नहीं छोड़ती । कभी पता चलता है कि ट्रेन लेट है तो कभी हम ही लेट हो जाते हैं ।'

गाजियाबाद की ललिता वर्मा दिल्ली की एक प्राइवेट फर्म में स्टेनो टाइपिस्ट के रूप में कार्य करती हैं, इस संबंध में उनका कहना है कि—

'आफिस के काम से ही शाम तक सिर घूमने लगता है । उस पर भी घर में आकर घर का काम भी करना पड़ता है । अब दो-दो जगह के कार्य की हिम्मत कहां एक महिला में । प्राइवेट नौकरियों में आफिसवाले यूं ही पैसा नहीं देते, पूरा काम करवाते हैं तब कहीं जाकर मुक्ति मिलती है । अब आफिस का ही कार्य हो तो कैसे भी चल जाए लेकिन घर में भी शाम को एवं प्रातः दो-तीन घंटे काम करना पड़ता है । पति महोदय के मन में आया तो थोड़ा-बहुत काम में हाथ बंटा दिया वरना खुद ही करना पड़ता है । उनसे सहयोग की अपेक्षा करो तो अपनी परेशानी का बखान करने लगते हैं । अलीगढ से दिल्ली (नेहरू प्लेस)

आनेवाली एक महिला पुष्पा चौधरी को दूर से आने के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है । इस संबंध में उनका कहना है कि—

'इतनी दूर से आफिस पहुंचना होता है, कई बार तो जल्दी करते-करते भी देर हो जाती है । अब महीने में एक-दो दिन की बात हो तो चल भी जाए, पूरे महीने में दस दिन लेट समय से आफिस पहुंचना अच्छी बात नहीं है ऐसी स्थिति में सीनियर की अच्छी-बुरी बातें सुननी पड़ती हैं । हमारी मजबूरी को कोई नहीं समझता, न समझते हैं कि हमारी तो लेट आने की आदत है । प्राइवेट फर्मवाले चाहते हैं कि समय से पहले ही वहां हाजिर रहें । अब वह भी क्या करें, गलती उनकी है न हमारी... ।'

फरीदाबाद से आनेवाली अनामिका अवस्थी दिल्ली के बैंक ऑफ बड़ौदा में कार्य करती हैं, इस संबंध में उनका मानना है कि—

'अब सुबह-शाम घर में भी कार्य करना होता है । समय की कमी के कारण वही जरूरी कार्य हो पाते हैं । बाकी कार्यों को सीमांत स्थिति तक टालना पड़ता है । अगर किसी कामवाली से काम करवाओ तो वह केवल खानापूर्ति ही करती है । पति तो हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह दफ़्तर में होती हैं तो इन्हें घर में अपने छोटे बच्चों की चिंता लगी रहती है या फिर दूसरे, आधे-अधूरे कार्यों की फिक्र लगी रहती है और यदि वह घर में होती हैं तो जल्दी-जल्दी घर के काम निपटाकर दफ़्तर में पहुंचने और लेट हो जाने पर बॉस की झिड़की सुनने का भय सताता रहता है ।

मजबूरी को समझते हैं परंतु बच्चों को कौन समझाये । बच्चों की अलग फरमाइश, एक औरत की जान को कितनी मुसीबत है । घर में बच्चों एवं रसोई से तो अंततः, औरत को ही जूझना पड़ता है, भले ही वह दफ़्तर में जाए या किसी व्यवसाय में ।'

यह सच है कि भारत में विकास चक्र ने गांवों की मूलभूत तसवीर को परिवर्तित कर उसमें आधुनिक के रंग भरे हैं । अब वहां भी पक्की सड़कें, विद्युत प्रकाश, स्वच्छ पेयजल सुविधा, परिवहन के उत्तम साधन, मनोरंजन के साधन, चिकित्सा की आधुनिक पद्धतिमय उपचार सुविधा, उच्च शिक्षा संस्थान, ऊंचे साफ-सुथरे मकान तथा बाजार इत्यादि मौजूद हैं । भले ही यह संपूर्ण भारत में संभव न हो पाया हो लेकिन फिर भी भारत के कुछ गांव तो अपने इस रूप को प्रदर्शित करते हैं ।

गांवों में फैशन परस्ती

अब वहां के लोग भी इन सब आधुनिक, विलासितामयी भौतिक सुख-सुविधाओं को गांवों में ही प्राप्त करना चाहते हैं जिन्हें वह अपने जीवन के लिए वांछनीय मानते हैं । इस संदर्भ में गांवों की नयी पीढ़ी आज अनेक परंपरावादी रूढ़ियों को तोड़ रही है । वह अपने भविष्य के प्रति जागरूक हैं तभी तो गांवों की लड़कियां बेहतर शिक्षा की आकांक्षा से शहरों में पदार्पण कर रही हैं । शहरी एवं ग्रामीण प्रतियोगिता के संदर्भ में ग्रामीण लड़कियों ने अपने आपको संवारा है, उन्होंने बोलने, बातचीत करने के परंपरागत ढंग को बदला है । अब वह भी सुंदर दिखने की अभिलाषा से नये-नये चलन के फैशनों को अपना रही हैं । यह वहां की व्यावहारिक तब्दीली की बदौलत है कि अब वह भी सौंदर्य प्रसाधनों के दम पर लड़कियां स्वयं को कोमल बनाना चाहती हैं ।

स्त्री-पुरुष में भेद

इस संबंध में एक अन्य लड़की सीमा शर्मा का मानना है कि 'मैं कस्बे में रहती हूं लेकिन फिर भी किसी महानगर में रहने की इच्छा तो अवश्य है । क्योंकि यहां की संस्कृति किसी गांव से बेहतर नहीं है । और गांवों में महत्त्वाकांक्षी होने का कोई अर्थ नहीं है । यहां लड़के-लड़की में व्यापक भेद समझते हैं, यहां के लोगों की विचारधारा अत्यंत क्षीण और रूढ़िवादी है ।

भारत में संवैधानिक तौर पर स्त्री-पुरुष समान समझे जाते हैं, इनके व्यावहारिक जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है, महिलाएं आज भी पुरुषों की अपेक्षा निम्न दरजे की नागरिक समझी जाती हैं । इक्कीसवीं सदी की चौखट पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्तक दे रहे भारत में चहुंमुखी विकास में ढोल की पोल तब खुल जाती है जब साढ़े छह करोड़ महिला मजदूरों की त्रासदीपूर्ण जिंदगी की विवशता की व्यथा कथाओं से आये दिन पत्र-पत्रिकाएं छपी रहती हैं ।

महिला मुक्ति आंदोलन के नाम पर जितने भी संगठन कार्यरत हैं वह सब प्रायः किसी न किसी खास वर्ग की स्वार्थपूर्ति करते हैं या फिर सामाजिक कार्य के नाम पर राजनीति की रोटी सेंक रहे हैं । इनके कल्याण हेतु निर्मित कानून भी भ्रष्ट सहकारी मशीनरी के जाल में फंसकर असफल हो जाते हैं । महिलाओं के उत्थान एवं कल्याण के लिए हाल में संसद के भीतर व बाहर काफी विवाद हुए हैं । किंतु वास्तविक तसवीर से वही ढाक के तीन पात वाली कहावत सच प्रतीत होती है ।

१९९१ की जनगणना के अनुसार भारत में महिलाओं की जनसंख्या ४०.६३ करोड़ है जो कुल जनसंख्या का ४६.७ प्रतिशत भाग है । महिलाओं में भी श्रमिक महिलाओं का एक ऐसा वर्ग है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ होते हुए भी विकास की सभी अवस्थाओं से दूर फटे हाल और बर्बर जिंदगी जीने को मजबूर है ।

दोहरी भूमिका

भारत में महिला मजदूरों की कुल संख्या साढ़े छह करोड़ है । इसमें से ६० प्रतिशत महिला ग्रामीण क्षेत्रों में लगी हैं और ४० प्रतिशत महिला श्रमिक, कस्बों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में लगी हैं । इस प्रकार समाज का इतना महत्त्वपूर्ण अंग आज तक हाशिये पर है और जीवन देनेवाली खुद दाने-दाने को मोहताज है । यदि इन महिला श्रमिकों की भागीदारी न हो भारतीय अर्थव्यवस्था असंतुलित हो जाएगी दोहरी-तिहरी भूमिका निभानेवाली भारतीय श्रमिक महिलाएं एक साथ घर की देख-रेख बच्चों का पालन-पोषण, खाना पकाने, ईंधन आदि की व्यवस्था करने के साथ मजदूरी का अदम्य साहस भरा कार्य करती हैं, फिर इनका जीवन काफी दयनीय बना हुआ है ।

सारणी

भारतीय महिलाएं जो कार्य में लगी

महिलाओं द्वारा	ग्रामीण
प्रशिक्षण प्राप्त	१०.३१
अन्य सभी धंधे	८९.६९
अप्रशिक्षण प्राप्त	—

भारतीय महिला श्रमिकों को घर और कुल मिलाकर १४-२० घंटे तक भी प्रतिदि कार्य करना पड़ता है फिर भी उनको सदैव माना जाता है । पुरुषों की अपेक्षा हीन समझ जानेवाली महिला मजदूरों को कमरतोड़ मे करनी पड़ती है ।

प्रायः सभी श्रेणियों की महिला मजदूरों शिक्षा और संगठन की कमी है । अशिक्षा जीवन का भयंकर अभिशाप है, जिससे अंधविश्वास की शिकार भी होती हैं । अ के कारण किसी भी कल्याणकारी योजना और कानूनों यहां तक कि अपने अधिकार जानकारी से वंचित रहती हैं । इससे इन जीवन और दुख :मय बन गया है ।

श्री बिक्रमसिंह (अ
३१९, संतपुरा, श्याम सिंह बिल्डिंग
जिला—गाजियाबाद-२०१२०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माय वो माय" जोर से चिल्लाता हुआ ऊंची— पूरी कद काठी का बुधना जाने कौन-सी खबर लाया है, जो मारे उत्तेजना के दरवाजे के भीतर घुसते-घुसते सिर झुकाना भी भूल गया ।

"ओऽऽऽ माय वो.ऽऽ.ऽऽ" सिर भड़ाक से चौखट से टकराया और बुधना चीख पड़ा ।

बुधना की चीख सुन अम्मा जैसे नींद से जागी । बुझते चूल्हे की राख के ढेर के नीचे दबती हुई चिंगारियों में जाने क्या दीदे फाड़े देखती हुई सोच में डूबी थी, उसकी अम्मा निम्मो ।

उसका सोच टूटा बुधना की चीख से । सोच क्या टूटा, जैसे निम्मो का बुढ़ापा ही टूट गया,

कहानी

अंतर्प्रलय

● डॉ. मीनाक्षी स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली की फुरती से निम्मो उठी और लपककर बुधना तक पहुंच गयी ।

'कई हुई गयो ? हांक काई लेवा मारीरो ऽऽ ज ? यहींज तो ऊबी हूं ।' (क्या हो गया ? चिल्लाता क्यों है ? यहीं तो हूं मैं ।) शब्दों में खीज पर मन में ढेरों शंका, कुशंका और चिंता लिए छोटे कद की निम्मो ने एड़ी ऊंची कर पंजों के बल शरीर साधा और आंचल मुट्ठी में भरकर बुधना के माथे पर रखा । मन में यही खयाल रहा कि कहीं मेरे बुधना को चोट तो नहीं आ गयी ।

'अपणो गांव डूब में अई रोऽ ज' बुधना ने

"कई मालम, मन तो बा से सुणियो थो, पेपर में पढ़ीक न कई रा था... पण सरकार कई न कई त करेग ... कई न कई जमीण बी दई देग ।" बुधना ने कहते हुए कोई खास परवाह नहीं की ।

बुधना को जैसे कोई खास फर्क नहीं पड़ा था । नयी उमर का नया उत्साह, उमंग भरपूर था । जो होगा देखा जाएगा का भाव, नयी जगह भी गये तो क्या ? मेहनत करके कमाना खाना ही तो है । कहीं भी सही ।

पर सोच में डूब गयी थी संवेदनशील निम्मो । उसकी खाली आंखों में अब सोच ही

पर सोच में डूब गयी थी संवेदनशील निम्मो । उसकी खाली आंखों में अब सोच ही सोच भर गया । ओह ! तो यह सब डूब जाएगा । लाखों की जमीन, जायदाद, मकान, सोना उगलते सफेद कपास के खेत !

निम्मो का हाथ हटाया सिर की चोट कोई मायने नहीं रखती जब इतनी बड़ी धारदार खबर पता लगी हो तो ।

'कई ? कई कय रयो तू ? तू क किन्न बता दियो ? (क्या ऽऽ ? क्या कह रहा है तू ? किसने तुझे बताया) निम्मो की मुट्ठी में भरा आंचल बुधना के सिर से हटकर अपने माथे पर आ गया । मौसम तो गरम नहीं था, पर बुधना के साथ निम्मो के माथे पर भी पसीने की बूंदें छलक आयीं ।

"अब कई हो गयग ?" चिंता का सारा केंद्र अब यही था ।

सोच भर गया । ओह ! तो यह सब डूब जाएगा । लाखों की जमीन, जायदाद, मकान, सोना उगलते सफेद कपास के खेत !

यहां कितने सुख-दुःख देखे । जिस जगह जन्मी, पली-बढ़ी, खेली-कूदी, दुल्हन बनी, ब्याही गयी वही जगह छूट जाएगी । जाने कहां और जाने कैसे फिर नये सिरे से बसना पड़ेगा । निम्मो के हाथ आदतानुसार, यंत्रवत काम में लगे थे पर मन कभी पीछे तो कभी आगे दूर तक जा रहा था । गांव से जुड़ी बचपन से लेकर अब तक की सारी यादें न जाने कहां से निम्मो के पीछे चली आयीं । शादी के पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहेलियों के साथ झूले-झूलना, खेतों में उछलकूद और शादी के बाद खेत में बुधना के बापू के लिए छम-छम पायल बजाते हुए खाना लेकर जाना, चिरौरी करते हुए खाना खिलाना, निम्मो को सब याद आता रहा ।

अरे ! मायके का घर छोड़ने तक में निम्मो को कितना दुःख हुआ था, फिर गांव बदलना ? वह भी दबाव से । हे भगवान । कितना दुखद है । अरे ! जब पाकिस्तान छोड़कर आये थे तो यह संतोष तो था कि जो जगह हम छोड़कर जा रहे हैं, वह फेरबदल के साथ ही सही पर मौजूद तो होगी, पर ... हम जो जगह अब छोड़कर जाएंगे वह होगी— जल में निमग्न ।

जल में निमग्न ... यह सोचते ही निम्मो के बदन में झुरझुरी दौड़ गयी । आंखों के आगे जल ही जल दिखायी देने लगा, उछलता, उफनता, उमड़ता, वेग से बहता जल ही जल ।

सोचते-सोचते निम्मो की आंखों से जल बहने भी लगा ।

अब तो निम्मो रात-दिन, उठते-बैठते, सोते-जागते यही सब देखती-सोचती रहती !

बुधना के बापू बड़े व्यावहारिक हैं, पर अब वे भी निराश हैं । कह रहे थे— यहां लाखों की जमीन है पर अब बिकना मुश्किल है । बिक जाती तो हाल के हाल चले जाते गांव छोड़कर । आसपास के जो गांव डूब में नहीं आ रहे हैं, वहां जमीन के भाव आसमान को छू रहे हैं ।

कहते हैं, सरकार पैसा देगी ... पर इतना थोड़ी देगी और हमें तो कोई खास फायदा होगा नहीं ... बल्कि नुकसान ही होगा । ... हां,

रघुवीर को बड़ा फायदा होगा ... अरे, उसकी बंजर जमीन के बदले भी उसे रकम तो सबके बराबर ही मिलेगी ना ।

तो क्या सरकार बंजर और उपजाऊ जमीन का एक भाव देगी ! निम्मो बड़ी भोली है ।

और क्या ? सरकार को यहां खेती थोड़ी करनी है । सबको एक ही भाव देगी । लेना है तो लो वरना ... ।

वरना क्या ... ?

वरना क्या ... सरकार जमीन तो लेगी ही ।

बुधना दो दिन के लिए शहर गया था । आज ही रात लौटा है । थका-हारा बुधना, हाथ-मुंह धोकर खाना खाने बैठा । निम्मो ने थाली परोसी, बुधना ने एक कौर तोड़ा और मुंह में रखा ही था कि बापू ने एक खबर भी परोस दी । कान में खबर क्या पड़ी कि बुधना के गले में कौर ही अटक गया । निम्मो पर भी बिजली गिरी । आखिर खबर भी तो ऐसी ही थी !

असल में बुधना की सगाई टूट गयी थी । ... पर इन्हें भी अभी बताने की क्या पड़ी थी । खाना तो खा लेने देते । बेचारा थका-हारा बुधना बगैर खाये ही उठ गया । दीवाली बाद ही तो शादी थी । जैसे-जैसे शादी पास आ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी बुधना के पैर भले ही जमीन पर टिके रहते हों पर मन आसमान में उड़ा करता था और आंखों में तैरते थे शादी के सपने ।

पर ... बापू ने यह खबर सुनाकर बुधना के सपनों को परे ढकेल दिया । यह डूब ऐसा ही कहर ढाएगी यह तो कभी सोचा ही न था । बुधना की आंखों में हंसती खिलखिलाती चंदा की झलक उतर आयी । चंदा ... जिसके साथ उसका ब्याह होनेवाला था । क्या चंदा खुश होगी ... इस खबर से ... क्या पता ? आखिर फैसला तो उसी के बापू ने लिया है ।

बुधना को अब तक तो डूब का कोई खास गम न था । गांवभर में उचकता फिरता था । डूब को लेकर वह जरा भी गंभीर न था । उसका मन तो शादी के सपनों में रमा था ।

पर ... जब से सगाई टूटी है मायूस होकर कई दिनों से खाट पर पड़ा है । न खाना खाया न पानी पीया । फिर एक दिन जाने क्या जोश आया कि बिजली की-सी फुरती से उठा और यार-दोस्तों को इकट्ठा करके अपना गांव बचाने के लिए शहर जाकर न जाने क्या कागज दे आया, कहता था— "हिला देंगे गौरमेंट को ।"

बुधना ही क्या ? गांव के अनब्याहे लड़कों को भी लड़कियां नहीं मिल रही हैं ब्याह के लिए । आखिर कौन ब्याहेगा अपनी बेटियों को जब गांव ही डूब में आ रहा हो । बाद में जाने क्या ठौर-ठिकाना हो ?

तभी तो सब लोग लग लिये हैं बुधना के साथ ।

पर रतनलाल को तो देखो, बड़ा चालू है । सरकार खूब पैसा देगी, का झांसा मारकर अपने

निखट्टू रघु को ब्याह लाया ।

सारे गांववाले तो गांव छोड़ने की तैयारी में हैं पर जाने कहां से दलाल आ गये हैं गांव में । जाने कहां के गरीबों के झोंपड़े बसवा दिये हैं, गांव में । बुधना बता रहा था कि ये बड़े तिकड़मबाज हैं । देखना तो, इनसे अंगूठा लगवाकर सरकार से पैसा ले लेंगे और इन्हें थोड़ा-बहुत देकर बाकी सारा अपनी जेब में ।

गम तो सभी को है । धन-दौलत, जमीन, जायदाद का तो है ही पर सबसे बढ़कर गम है अपनी मिट्टी छूट जाने का ।

ये खेत, ये मेढ़ें, ये पेड़ सब जल में डूब जाएंगे । पेड़ों पर लटके पंछियों के घोंसले, शाम ढले घोंसलों में लौटते, दुबकते पंछी जब किसी शाम लौटेंगे तो यहां ये घोंसले पेड़, बच्चे कुछ न पाएंगे, पाएंगे तो सिर्फ जलप्रलय ।

गोबर के ऊपले दीवार पर थोपते-थोपते निम्मो सोचती जा रही थी ये गाय, ये ढोर सब... पेड़ों की छतों से ढकी गांव को शहर से जोड़नेवाली लंबी काली, सरपट दौड़ती-सी सड़क, रेल की पटरियों के किनारे की लंबी घास जो रेल के गुजरते समय थरथराया करती है, अब न रेल गुजरेगी, न यह घास थरथराएगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचते-सोचते निम्मो की देह थरथराने लगी और थरथराती देह पर पसरने लगी थकान तिस पर मायूसी ने भी डेरा डालकर, निम्मो को निढाल कर दिया ।

काम अधूरा छोड़कर निम्मो आंगन में बिछी खाट पर जाकर लेट गयी और आसमान देखने लगी । नीला-नीला दूर तक फैला विशाल आसमास देखकर निम्मो को बड़ा अच्छा लगा । ये आसमान तो यहीं रहेगा । बिलकुल ऐसा ही, सोचते हुए निम्मो का मन कुछ पल को हलका हुआ, पर आसमान में रूई के फाहे से सफेद बादल देखते ही निम्मो को कपास के खेतों की याद आ गयी और उसका मन फिर भारी हो गया ।

कपास के सफेद फूलों से पटे अंतर्मन तक को पवित्रता से भर देनेवाले पवित्र खेत, गांव में खिलता-दहकता पलाश, धीमे-धीमे शांत बहती नदी में रोज रात को अपनी परछाई देखता चांद किसी दिन अचानक जब उफनते जल में अपनी परछाई देखेगा, तो क्या वह खुद को उफनता हुआ नहीं पाएगा ?

जिस गांव में उगता सूरज, डूबता सूरज, बरसता पानी, सूखा-अकाल, बाढ़, दिन-रात सब कुछ देखा, वह जल में डूब जाएगा । कैसा आश्चर्य है ?

यहां होगा सिर्फ जल ही जल । प्रलय में भी तो यही होता है । पर प्रलय तो पूरी धरती पर होती है ... पर ... हमारी धरती, हमारा संसार तो क्या, हमारा तो पूरा ब्रह्मांड यही गांव है ।

कभी मोह टूट-सा जाता है, वैराग्य जागने लगता है । सरकारी तौर पर संन्यास आ जाता है ।

कभी फिर वही जल ही जल दिखने लगता है । बाहर तो प्रलय होगी शायद पांच-छह या शायद आठ-दस वर्ष बाद, सरकारी काम के चलते शायद मृत्योपरांत भी । पर ... मन में तो हर पल प्रलय चल रही है । इस जल प्रलय में निम्मो दिन-रात डूबती-उतरती रहती है ।

—सी-एच-७६, एच. आय. जी. दीनदयाल नगर,
सुखलिया, इंदौर (म.प्र.)-४५२००८

दे हैं तो दे

सुप्रसिद्ध बंगला साहित्यकार प्यारी चंद्र मित्र बड़े मजाकिया स्वभाव के थे । एक बार उनके एक घनिष्ठ मित्र देवनारायण दे के पुत्र के विवाह के सिलसिले में खर्च-वर्च का हिसाब खातियाया जा रहा था । प्यारी बाबू पर ही दे साहब ने खर्च की राशि निश्चित करने का जिम्मा दिया था । प्यारी बाबू ने खूब बढ़ा-चढ़ाकर फेहरिस्त बना दी । देवनारायण दे बौखलाकर बोले, "एतो टाका दिते हबे ?" (इतने रुपये देने पड़ेंगे ?)

प्यारी बाबू ने हंसते हुए कहा, "तुमि देबे ना तो देबे के ? तोमार नामेर शुरूतेओ दे, शेषेओ दे !" (तुम नहीं दोगे तो देगा कौन ? तुम्हारे नाम के शुरू में भी दे है और अंत में भी दे है ।)

बेचारे देवनारायण दे से कुछ भी कहते न बन पड़ा ।

● गोपी रमण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायर प्रेमिका का शिकार-प्रेमी

● नवीन पंत

दिल्ली के लाल किले का जनानखाना। सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध। मुगल सम्राट औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा (जेबुन्निसा का अर्थ होता है स्त्रियों का आभूषण) के महल का उद्यान। शाहजादी जेबुन्निसा और एक सजीला-गठीला आकर्षक युवक बगीचे में एक कोने में एक पेड़ के नीचे धीरे-धीरे बातचीत कर रहे थे। दीन-दुनिया से बेखबर। वह युवक औरंगजेब के वजीर का पुत्र अकिल खां था।

अचानक सुरक्षा सैनिकों की आवाज आयी। होशियार, खबरदार, शाहंशाह मुही-उद्दीन मुहम्मद औरंगजेब तशरीफ लाते हैं। शाहजादी जेबुन्निसा मुगल सम्राट के इस तरह अचानक आने से हक्की रह गयी। वह अपने प्रेमी को कहां छिपाये ? पेड़ से थोड़ी दूर पर एक विशाल देग था। उसके नीचे लकड़ियां भी लगी थीं। जेबुन्निसा ने अकिल खां से देग में छिप जाने को कहा। अकिल खां निधड़क देग में छिप गया। जेबुन्निसा ने देग का ढक्कन बंद कर दिया।

सम्मान की रक्षा

थोड़ी देर बाद शाहंशाह औरंगजेब वहां पहुंचे। वह कुछ देर तक जेबुन्निसा के साथ गुफ़्तगू करते रहे। फिर उन्होंने पूछा, 'देग में क्या है ?'

जेबुन्निसा ने उत्तर दिया, 'केवल पानी।' शाहंशाह ने हुक्म दिया, 'पानी गरम किया जाए।' इस बीच सम्राट कुछ और लोगों से बातें करने लगे। उनकी नजर बचाकर जेबुन्निसा देग के समीप गयी। उसने कहा, 'अगर तुम मेरे सच्चे प्रेमी हो तो मेरे सम्मान की रक्षा के लिए चुप रहना।'

जेबुन्निसा के सामने केवल एक विचार था। सम्राट की नजरों के सामने अपनी इज्जत कैसे बचायी जाए ?

देग के नीचे आग जला दी गयी। उसकी लपटें जोर पकड़ने लगीं। अकिल खां आलू की तरह उबलने लगा। उसने जान दे दी लेकिन उफ नहीं की। जेबुन्निसा की मान-रक्षा हो गयी। सम्राट अपने महल में लौट गये। जेबुन्निसा के विश्वस्त कर्मचारियों ने अकिल खां की लाश को ठिकाने लगा दिया।

साहित्यिक अभिरुचि

जेबुन्निसा, औरंगजेब और उसकी ईरानी पत्नी दिलरस बानू बेगम की ज्येष्ठ पुत्री थी। उसका जन्म १५ फरवरी १६३८ को दौलताबाद में हुआ था। उसने हाफिजा मरियम से शिक्षा प्राप्त की थी।

कहानी की शुरुआत १६६२ में होती है। जेबुन्निसा उस समय २४ वर्ष की थी। अनिंद्य सुंदरी, वाकपटु विदुषी और शायर। उसे पैनी बुद्धि, साहित्यिक रुचि और भाषा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असाधारण अधिकार अपने पिता से विरासत में मिला था। वह अरबी और फारसी में पारंगत थी। छोटी उम्र में कुरान शरीफ कंठस्थ करने के लिए उसके पिता ने उसे ३० हजार अशर्फियां प्रदान की थीं।

वह बड़ी खूबसूरती के साथ फारसी की तीन शैलियों—नस्तलिक, नश्ख और शिकस्त लिख लेती थी। उसके पास पुस्तकों का बेजोड़ संग्रह था। वह अनेक विद्वानों को पुस्तक लिखने, अनुवाद करने और पुस्तकों की नकल करने के लिए उदार आर्थिक सहायता प्रदान करती थी। वह स्वयं भी शायरी करती थी। कहा जाता है कि वह मरवफी उपनाम से शायरी करती थी। दीवान-ए-मरवफी नाम से उसकी शायरी का संग्रह है।

औरंगजेब बीमार

अपने शासनकाल के चौथे वर्ष १६६२ में औरंगजेब गंभीर रूप से बीमार पड़ा। राजकीय हकीमों ने उसे हवा बदली की सलाह दी। हवा बदली के लिए औरंगजेब अपने परिवार और दरबारियों को लेकर लाहौर चला गया। लाहौर का गवर्नर उन दिनों औरंगजेब के वजीर का लड़का अकिल खां था। युवा, सुदर्शन और शायर। उसने जेबुन्निसा के रूप-गुण के चर्चे सुन रखे थे। वह उसकी शायरी से भी परिचित था। अकिल खां जेबुन्निसा से मिलना चाहता था। शहर की चौकसी का निरीक्षण करने के बहाने वह महल दीवारों पर अपना घोड़ा दौड़ाता रहता था। उसकी एकमात्र इच्छा जेबुन्निसा की एक झलक पाना था।

एक दिन सूर्यास्त के समय महल की छत पर उसे जेबुन्निसा की झलक मिली। वह सुर्ख लाल रंग के कपड़े पहने थी। उसे देखते ही अकिल खां उसका दीवाना हो गया। जेबुन्निसा भी अकिल खां पर रीझ गयी।

जेबुन्निसा को लाहौर बहुत पसंद आया। उसने वहां एक बाग लगवाना शुरू किया। एक दिन अकिल खां ने सुना कि जेबुन्निसा बाग के मध्य में बन रही संगमरमर की बारहदरी देखने आनेवाली है। अकिल खां राज मजदूर का वेश धारण करके वहां पहुंच गया।

एक दिन सूर्यास्त के समय महल की छत पर उसे जेबुन्निसा की झलक मिली। वह सुर्ख लाल रंग के कपड़े पहने थी। उसे देखते ही अकिल खां उसका दीवाना हो गया।

जेबुन्निसा अपनी कुछ सहेलियों के साथ चौसर खेल रही थी। अकिल खां ने शेर का एक अधूरा छंद कहा। उसका अर्थ था, "तेरी चाहत में मैं धरती पर घूमनेवाला धूल का कण बन गया हूं।" जेबुन्निसा अकिल खां को पहचान गयी। उसने शेर को पूरा करते हुए उत्तर दिया, "अगर तुम हवा का झोंका भी बन जाओ तो तुम मेरे बालों की एक लट भी नहीं छू सकोगे।"

इसके बाद जेबुन्निसा और अकिल खां ने एक-दूसरे से छिपकर मिलना शुरू किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके प्रेम की अफवाहें औरंगजेब के कानों तक भी पहुंची ।

बेहूदा रिवाज

मुगल बादशाहों में एक बड़ा बेहूदा रिवाज था । मुगल शाहजादियों को आजीवन कुंवारी रहना पड़ता था । मुगल दरबारियों ने मुगल सम्राटों को यह पट्टी पढ़ा दी थी कि पहले तो मुगल शाहजादियों की हैसियत के अनुरूप वर मिलना मुश्किल है । अगर किसी तरह मिल भी गया तो सम्राट के दामाद उनकी सल्तनत की ढाल बनने के स्थान पर सम्राट का तख्ता पलटने के लिए षड्यंत्रों का जाल बिनने लगेंगे । अतः जेबुन्निसा और अकिल खां के विवाह की कोई संभावना नहीं थी ।

औरंगजेब तबियत में सुधार के बाद दिल्ली वापस लौट आया । इस बीच उसके दूतों ने अकिल खां को स्पष्ट कर दिया कि शाहंशाह उससे नाराज हैं । अकिल खां ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया ।

भूख-प्यास गायब

अकिल खां ने अपने मन को समझाने की और जेबुन्निसा को भूलने की कोशिश की । लेकिन उसे इसमें सफलता नहीं मिली । उसके लिए जेबुन्निसा का वियोग असह्य हो गया । उसकी भूख, प्यास और नींद गायब हो गयी । वह चुपचाप दिल्ली पहुंच गया । दिल्ली पहुंचने के बाद वह किसी तरह जेबुन्निसा के पास पहुंचने में सफल हो गया । कुछ दिनों तक दोनों प्रेमी सावधानी बरतते हुए मिलते रहे फिर उनकी सावधानी में कुछ ढील आ गयी । औरंगजेब के गुप्तचरों से उनका मिलना छिपा नहीं रहा । उन्होंने इसकी सूचना शाहंशाह को दी । इसका जो नतीजा हुआ उसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है ।

जेबुन्निसा के प्रेमी अकिल खां के दुखद अंत का पहला उल्लेख मुंशी मोहम्मदउद्दीन खालिक की रचना 'हयात-ए-जेबुन्निसा' में मिलता है । बाद में इसी के आधार पर मुंशी अहमद उद्दीन बी. ए. ने अपनी रचना 'दूर-ए-मकतूम' लिखी । १९१३ में श्रीमती वेस्ट ब्रुक ने जेबुन्निसा के कलाम 'दीवान-ए-जेबुन्निसा' की प्रस्तावना में इस घटना का उल्लेख किया है ।

मुगल इतिहास के विशेषज्ञ प्रोफेसर यदुनाथ सरकार के मतानुसार इस कथा में अनेक असंगतियां हैं । तथापि यह सत्य है कि १६६९ से १६७५ तक सात वर्षों तक औरंगजेब अकिल खां से नाराज रहा था । क्यों ? यह स्पष्ट नहीं है ।

—२२, मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ता का राधाकृष्ण मंदिर

बिरला परिवार की आध्यात्मिक चेतना का उपहार

कलकत्ता-जैसे महानगर में जो कुछ दर्शनीय स्थल हैं उनमें एक नाम और जुड़ गया— बालीगंज में श्री राधाकृष्ण मंदिर। २१ फरवरी, १९९६, भव्य समारोह के साथ इस मंदिर में भगवान राधाकृष्ण, भगवान शिव, भगवती दुर्गा, गणेश, हनुमान और भगवान विष्णु के दशावतारों की आकर्षक मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा के साथ मंदिर का पटोद्घाटन संपन्न हो गया। संसद सदस्य और विख्यात उद्योगपति श्री कृष्णकुमार बिरला ने २५ वर्षों की दीर्घ अवधि में ऐसे मंदिर का निर्माण किया है कि देशभर के हिंदू मंदिरों में इसका अपना अलग अस्तित्व है।

इस मंदिर का उद्घाटन दार्शनिक और चिंतक डॉ. कर्ण सिंह के कर कमलों द्वारा हुआ। उन्होंने अपना विद्वतापूर्ण भाषण संस्कृत के अनेक प्रार्थना गीतों से आरंभ किया। अपने भाषण में डॉ. कर्ण सिंह ने कहा, "मंदिरों का निर्माण करना बहुत पुण्य का काम है। मंदिर में लोगों को आध्यात्मिक शक्ति मिलती है जिससे इनसान अपने कर्मक्षेत्र में सफल हो पाता है। इनसान के लिए भोजन से बढ़कर आध्यात्मिक शक्ति का होना अत्यावश्यक है। यह मंदिरों में ही उपलब्ध हो सकती है और कहीं नहीं। श्रीमद्भागवत गीता में चार योग— भक्ति योग, कर्म योग, ज्ञान योग और राज योग की बात कही गयी है और इस मंदिर में वे चारों योग परिलक्षित हैं। हमारी संस्कृति में भगवान एक होते हुए भी अनेक रूप धारण किये हुए हैं। समय-समय पर अवतार लेकर भगवान मानव जाति का कल्याण करते हैं।" उन्होंने कहा कि बिरला परिवार ने औद्योगिक क्षेत्र के साथ ही साथ मंदिर निर्माण में जो योगदान दिया है, वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। कार्यक्रम के आरंभ में श्री कृष्णकुमार बिरला ने अपने विद्वतापूर्ण भाषण में इस मंदिर के निर्माण कार्य के पीछे अपनी और अपने परिवार की भावना को स्पष्ट किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा, "यह मंदिर २५ वर्षों की दीर्घ अवधि में पूरा हो सका है। इसका निर्माण कार्य सन् १९७० में आरंभ किया गया था। मंदिर का कार्य जब आरंभ किया गया तो आशा थी कि यह कार्य पांच-सात वर्षों में पूरा हो जाएगा। वास्तव में मंदिर के परिनिर्माण में जिस तरह की परिकल्पना निहित थी, उसमें आनेवाली कठिनाइयों का हम पूर्वानुमान नहीं कर पाये। इस मंदिर के परिनिर्माण में इतना अधिक समय इसलिए लगा क्योंकि हमारी आकांक्षा थी कि यह मंदिर कला और सौंदर्य का उत्कृष्टतम उदाहरण और कलकत्ता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासियों तथा यहां आनेवाले यात्रियों के लिए इस नगर का अप्रतिम केंद्र बने ।

निर्माण कार्य प्रारंभ होने के लगभग एक वर्ष बाद ही यह प्रतिभासित हो गया था कि निर्माण कार्य में समय अधिक लगेगा । यदि हमने अपनी प्राचीन वास्तुकला की बारीकियों के साथ समझौता कर लिया होता तो इस मंदिर का निर्माण कार्य हम पहले पूरा कर सकते थे । किंतु हमने इस दृढ़ संकल्प के साथ निर्माण कार्य आरंभ किया था कि किसी भी स्थिति में भारतीय मंदिरों की प्राचीन वास्तुकला की उपेक्षा न की जाए । इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए मेरे पूरे परिवार ने मुझे पूर्ण रूप से प्रोत्साहित किया । इनमें मेरी पत्नी मनोरमा देवी और पिता श्री घनश्यामदासजी बिरला का अधिक योगदान था जिन्होंने मुझे दृढ़तापूर्वक उत्साहित किया ।

मेरे पिताजी दार्शनिक थे । उनका विश्वास था और यह मेरा भी विश्वास है कि मंदिर हमारी प्राचीन संस्कृति और पुरातन जीवन शैली के प्रतीक हैं । मेरे पिताजी यद्यपि कर्मकांड पर अधिक विश्वास नहीं करते थे, लेकिन वे सहज रूप में उसे स्वीकारते भी थे ताकि हमारी प्राचीन संस्कृति और परंपरा का निर्वाह होता रहे ।

मुझे अपनी पत्नी से भी पूरा प्रोत्साहन मिला । वे जहां चाहती थीं कि मंदिर का निर्माण कार्य शीघ्र संपन्न हो, वहां वे यह भी चाहती थीं कि मंदिर की वास्तुकला और बारीक शिल्प उत्कीर्ण में किसी तरह का समझौता न किया जाए । इस मंदिर के निर्माण में जिन पत्थरों का उपयोग किया गया है, वे मध्यप्रदेश के पन्ना क्षेत्र से मंगाये गये । मंदिर का प्रांतर संगमरमर से प्राच्छादित है । इस मंदिर की योजना बनाते समय हमने स्व. सोमपुराजी की सहायता ली थी जो भारत के प्राचीन मंदिरों की वास्तुकला के अभिज्ञाता थे । उनके पौत्र आज यहां उपस्थित हैं । मित्र श्री जगमोहन डालमिया ने मंदिर-निर्माण का कार्य सुव्यवस्थित ढंग से तथा सावधानीपूर्वक संपन्न कराया ।

गीता के पठन-पाठन से मुझे मानसिक शांति मिलती है । भगवान के उपदेशों को मैंने मनन करने का प्रयत्न किया है ।

गीता में शांति एवं दया के भाव विशेष रूप से व्यक्त किये गये हैं, न केवल मानव मात्र के लिए बल्कि समस्त प्राणी जगत के लिए । भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो सभी प्राणियों के प्रति हित अर्थात् कल्याण का भाव रखते हैं, वे मुझे प्राप्त कर लेते हैं ।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव
सर्वभूतहिते रताः ।

जीव मात्रा के लिए अद्वेष, प्रेम और करुणा का भाव रखनेवालों के प्रति गीता में भगवान ने विशेष रूप से कहा है—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां
मैत्रः करुण एव च ।

ऐसा व्यक्ति ईश्वर का भक्त है और उनका प्रेम प्राप्त करता है :

यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में मुख्य रूप से इस दर्शन को प्रतिपादित किया है कि द्वंद्वों से परे रहना चाहिए

सारा कार्यक्रम सुचारू रूप से संपन्न हुआ । श्री पुरुषोत्तम जलोटा के भक्ति संगीत के बाद मंदिर जनता के दर्शनार्थ खोल दिया गया । अब कलकत्ता महानगर में यह मंदिर एक दर्शनीय स्थल बन गया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ता :
राधाकृष्ण मंदिर

मंदिर में राधाकृष्ण की भव्य कलात्मक प्रतिमा

पारदर्शी : दिलीप बनर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

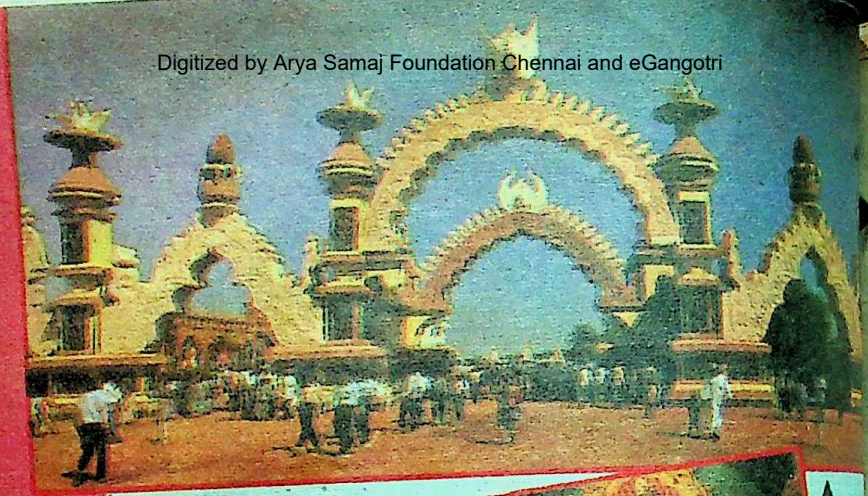

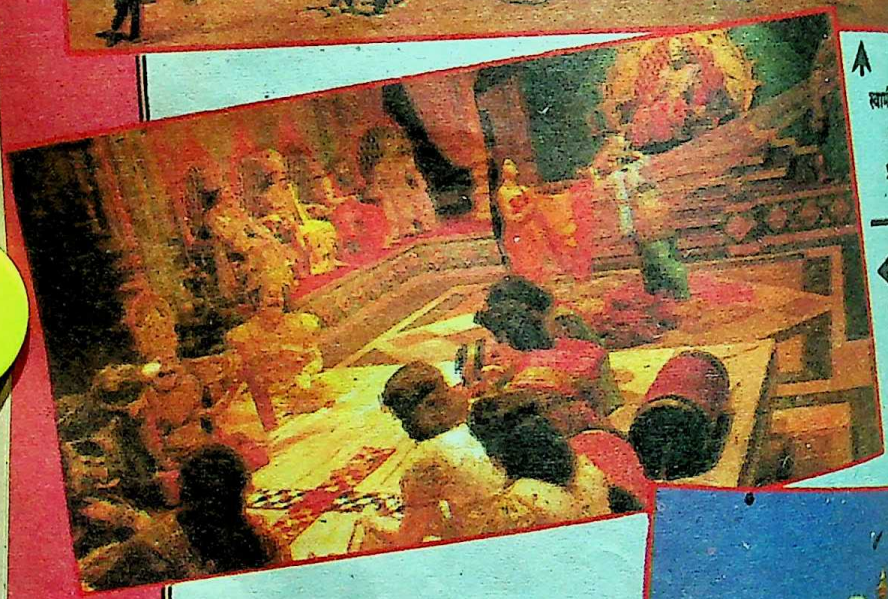

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में कला और संस्कृति की अलौकिक छटा बिखेरता अक्षर धाम न केवल गुजरात का अपितु देश का एक विलक्षण तीर्थ स्थल है । अक्षरधाम की बाहरी और भीतरी छटा देखते ही बनती है । यह कला एवं संस्कृति का अद्भुत संगम स्थल है । असंख्य लोग अक्षरधाम के नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में इस तरह सिमट जाते हैं

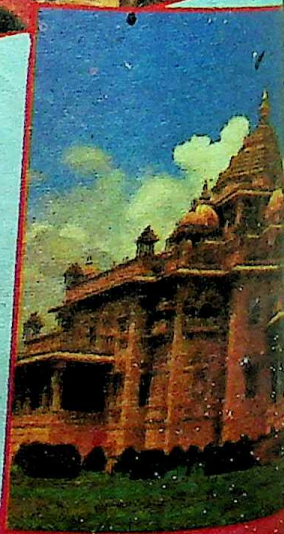

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो कुछ समय के लिए भौतिकवाद विस्मृत हो गया हो ।

अक्षरधाम की भव्य इमारत में छह हजार मैट्रिक टन गुलाबी पत्थर उपयोग में लाया गया है ।ऐसा कहा जाता है कि यह ८० लाख मानव श्रम की साधना का प्रतिफल है । इस संपूर्ण आश्रम धाम को देखने में लगभग तीन घंटे लग जाते हैं । इसे तीन भागों में विभक्त किया गया है । प्रत्येक भाग अपने आप में कई विशेषताओं को समेटे हुए है । इसकी प्रदर्शनियां देखते ही बनती हैं । आज के भौतिकवाद से उपजे संतापों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है । काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ एवं स्वार्थ आदि विकृतियों से घिरा मनुष्य किस तरह संकटों की आग में झुलस रहा है । इसका सजीव चित्रण यहां देखने को मिलता है ।

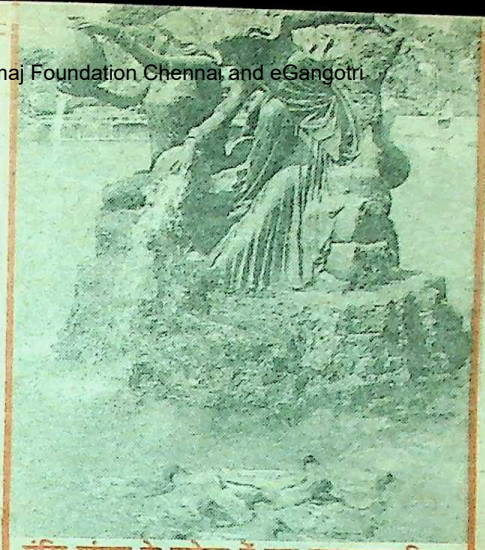

मंदिर प्रांगण के सरोवर में एक कलात्मक शिल्प

कौरवों की अनीति मूर्तियों का माध्यम

• डॉ. बसन्तीलाल बाबेल

इतना ही नहीं धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप, नीति-अनीति आदि को भी बड़े कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है । ऊंच-नीच के भेदभाव पर तीखा प्रहार राम और सबरी के दृश्य से निरूपित किया गया है । कौरवों की अनीति को पांचाली के चीर-हरण के दृश्य से जन-जन तक पहुंचाया गया है । राम बनवास, भरत-मिलाप, सीता हरण आदि दृश्य देखते ही बनते हैं ।

संपूर्ण अक्षरधाम भगवान स्वामी नारायण को समर्पित एक ऐसा दस्तावेज है जो आने वाली पीढ़ी का नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करता रहेगा । कलयुग में पत्रों पर सतयुग की छाप छोड़नेवाला अक्षरधाम मानव मूल्यों का वह सशक्त हस्ताक्षर है जो युगों-युगों तक अमिट रहेगा ।

—उपसचिव, राज्य विधि आयोग, के-९, फतेह टीबा, आदर्श नगर, जयपुर (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

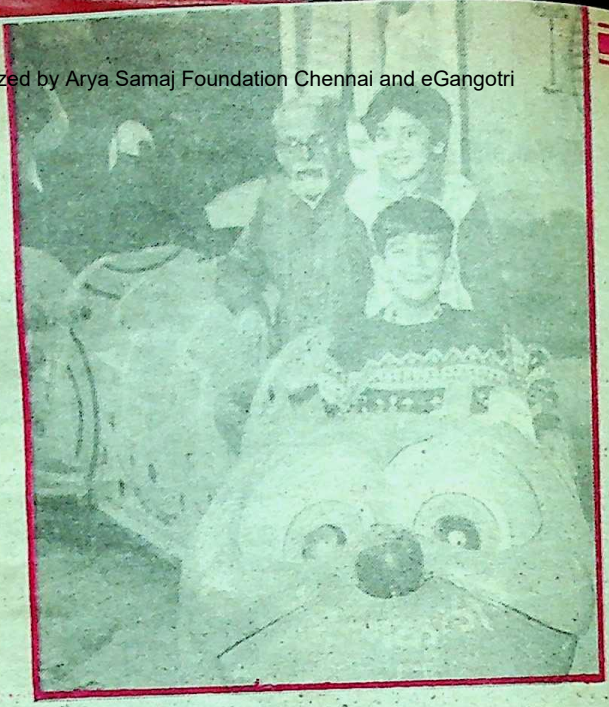

गूंजती हुई लहरें

● शीला गुजराल

प्रकृति की कोख में छिपी ऐतिहासिक निधि का दर्शन करना चाहें तो पंचमढ़ी जाइए। मध्यप्रदेश में भोपाल की दक्षिण-पूर्वी दिशा में लगभग २१० किलोमीटर की दूरी पर यह सुरम्य स्थान, अभी भी अपनी अछूती आभा को सहेजे सहृदयी पर्यटकों के लिए शांत, सुखद, मन की सारी व्यथा हर लेनेवाला वातावरण बनाये हुए है।

दिल्ली से जाने के लिए रातभर रेलगाड़ी का सफर और आगे दो घंटे कार की सवारी या फिर भोपाल तक हवाई यात्रा और आगे साढ़े चार घंटे की मोटर यात्रा, यही दो सहज रास्ते हैं। हमने सुबह ५.३० बजे अपना निवास-स्थ छोड़ा। हवाई अड्डे जाकर जहाज पकड़ा भोपाल में भरपेट नाश्ता लेकर सायं पांच तक पंचमढ़ी जा पहुंचे। सामान कमरों में रखवा, चाय का प्याला पीते ही हमारे पंच पंचमढ़ी की पगडंडियां चूमने को आतुर उठे। अपनी-अपनी टार्च हाथों में उठाए वयस्क अपनी-अपनी मनपसंद दिशाओं ओर बढ़ते, पंचमढ़ी का रूप आंकने निक पड़े। सूर्यास्त की आभा इतनी मोहक थी तो अपनी सुधबुध बिसार, न जाने कितने तक मंत्रमुग्ध-सी खड़ी रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगली सुबह कंपाउंड में ही कुछ क्षण सूर्य-रश्मियों की चुम्मियां ले, हम नाश्ता करते गाड़ियों में सवार हो गये बच्चों के साथ चमढ़ी को देखने। शहद और कुछ आवश्यक सामग्री खरीदने जब हम सदर बाजार में गाड़ियों से उतरे तो देखकर दंग रह गये कि छोटी-छोटी गलियों में भी कहीं कूड़ा-करकट का नामोनिशान नहीं।

रास्ते में हमारे गाइड ने हमें एक विशाल स्थान दिखाया, जहां एक भाग हिंदू मेलों के लिए और दूसरा भाग मुसलमानों के मेलों के लिए निश्चित किया गया था। दोनों जगह दोनों धर्मों के अनुयायी इन मेलों में शामिल हो अपना मनोरंजन करते थे। कुल बारह हजार की आबादी वाले इस छोटे-से शहर में मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर— सबको मान्यता है और वे सद्भाव से रहते हैं।

बाल वाटिका में छोटी-सी रेलगाड़ी में बच्चों को घुमा, साथवाले पार्क में उन्हें मृगछौने दिखा, शहर का पूरा ब्यौरा ले शाम को हम घर पहुंचे।

बगीचा राजेंद्र बाबू का

शाम को पदयात्रा और अगले दिन सुबह गाड़ियों में बैठ हम राजेंद्र गिरी पहुंचे जहां, डॉक्टरों के सुझाव पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति पूरा एक वर्ष ठहरे थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद के व्यक्तित्व की छाप अभी भी वहां हर पेड़-पौधे पर लगी हुई थी। देश-विदेश के सुंदर पौधे इकट्ठे कराकर उन्होंने इस बगीचे को इतना समृद्ध कर दिया था कि अभी तक वहां कई ऐसे पौधे मौजूद हैं, जो भारत में शायद ही कहीं और देखने को मिले। सुघड़ मालियों ने कुछेक की कलमें भी तैयार कर रखी थीं।

राजेंद्र गिरी की सबसे ऊपर की मंजिल से शहर का चप्पा-चप्पा दिखायी देता था।

समय कम और दर्शनीय स्थान अनेक। एक से एक बढ़कर रमणीय। अगले दो दिन हम निरंतर घूमने-घुमाने में व्यस्त रहे।

ऊंची भीमकाय चट्टानों से घिरी पांडव गुफा

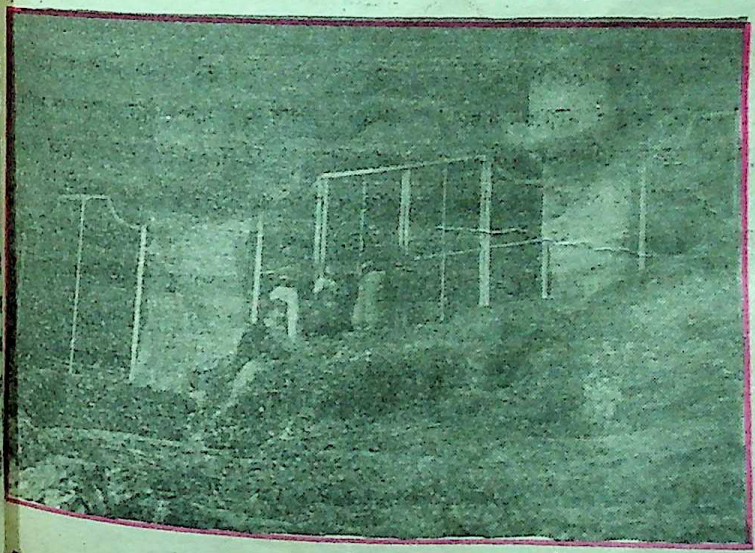

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने गये, जहां अज्ञातवास के समय पांडवों ने अधिकांश समय बिताया था । वहां के लोगों का कहना था कि चट्टानों पर हुई मद्धिम चित्रकारी उसी समय की देन है । पर देखने में वह इतनी पुरानी नहीं लगती थी । बोटेनिकल गार्डन घूमने के बाद हम यह स्थान देखने गये ।

पंचमढ़ी के घने जंगलों में जंगली जानवर विशेषकर, शेर की खोज में जाना, वहां हर पर्यटक के लिए अनिवार्य समझा जाता है । हम भी जीपों में बैठकर कई घंटे निरंतर जंगलों में घूमते रहे । लेकिन, हमें तो एक मोर के अतिरिक्त कोई भी जीव-जंतु नजर नहीं आया । रास्ते में ड्राइवर ने एक ऊंची चोटी की ओर इंगित कर बताया कि वहां बौद्ध गुफाएं हैं । छड़ी का सहारा लिये हम दुर्गम चट्टानें फांदते हुए जैसे-तैसे वहां पहुंचे । विशाल चट्टानों पर खुदे अनेक दस्तावेज अपनी ऐतिहासिक प्रतिभा के प्रत्यक्ष प्रमाण थे ।

शिकवा वानर सेना का

अगले दिन सुबह हम लोग छोटा महादेव मंदिर देखने गये । ब्रह्मा, शिव और विष्णु की त्रिमूर्ति का दर्शन करने, गुफा की शिलाओं से टपका-टपका गिरती बूंदों का आस्वादन लेते, ऐसा प्रतीत होता था मानो हम वैष्णोदेवी पहुंच गये हों । बाहर निकले तो वानर सेना खड़ी थी, पता नहीं स्वागत हेतु व शिकवा करने कि आप सब लोग हमारे हनुमानजी को क्यों भूल गये ।

गुप्त महादेव का दर्शन करने अभी आधा रास्ता ही पहुंचे थे कि राहगीरों ने समझाया कि वापस आते-आते रात हो जाएगी । इतनी दूर आप नहीं जा पाएंगे । फलतः वहीं से आधे रास्ते से वापस हो हम थके-मांदे मुश्किल से अपनी गाड़ियों तक पहुंचे । भोजन उपरा झरनों की खोज में निकले । कुछ दूरी और कुछ पैदल तय कर जब हम जल का मधुर संगीत सुकर घर पहुंचे, तो वह मद्धिम ध्वनि हमें मां की लोरी की थपथपाती रही ।

अगले दिन हम ऊंचे टीले पर बने से घिरे सेना-संगीत वाद्य विद्यालय देख जो सड़क के दूसरे पार कमल फूलों से झील को झांकता, अपने भाग्य पर इठला था । आकाश की छत तले आरामदायक कुरसियों पर बैठकर जब हमने मंच की दृष्टि घुमायी तो दंग रह गये । दो विशाल वृक्षों की छाया में कलात्मक ढंग से तैय सहज प्रकृति का वरदान स्थापत्य-कला अनोखा नमूना था । इस मोहक वातावरण वाद्य संगीत का रसपान करते मानो हम दुनिया में पहुंच गये ।

घंटेभर का प्रोग्राम देख, जब हम वा निरीक्षण करने हॉल में गये तो कोने में 'धीमा करने के यंत्र' ने मुझे विशेष आक किया । अकसर 'बीटिंग रीट्रीट' के सं संगीत की मधुर लहरियां जब देर तक में गूंजती रहती थी, तो मुझे अचंभा हो खुलेआकाश के नीचे यह कैसे संभव है संगीत निदेशक ने आज यह गुत्थी सु

विद्यालय से विदा लेते ही हमारे बीटिंग रीट्रीट का सिलसिला शुरू हुआ पंचमढ़ी से विदा ले, भोपाल के लिए जहां से अगले दिन सुबह जहाज में दिल्ली पहुंचना था ।

—जी. १३ मा
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीर खुसरो का स्मारक और पटियाली

● डॉ. विजय चतुर्वेदी

इतिहास बताता है कि अमीर खुसरो का जन्म पटियाली में सन् १८५३ में हुआ था। उनकी मां एक हिंदू (कायस्थ) थी और पिता एक तुर्क थे। नाम था— सैफुद्दीन महमूद। पटियाली उनकी जागीर में थी। आठ वर्ष की अवस्था में उनके पिता का साया उनके सर से उठ गया और वह अपने नाना के संरक्षण में

पटियाली और अमीर खुसरो का स्मारक। पटियाली, जिसने महाभारत काल में महाराज द्रुपद के वैभव-विलास के ताने-बाने बुने थे, आज हिंदी (हिंदवी) के आदि-पुरोधाओं और उन्नायकों में से एक अमीर खुसरो के जन्म-स्थल के भग्नावशेष को अपने परकोटे में संजोए हुए है। महाराज द्रुपद का किला खंडहर होकर अब जिस ऊंचे टीले में रूपांतरित हो चुका है, उसी के नीचे किसी समय अमीर खुसरो के वालिद का निवास-स्थान था। आजकल यहां टाउन एरिया की पानी की टंकी है। अमीर खुसरो इसी पटियाली की रज में लोट-पोटकर और घुटनों के बल सरक-सरक कर बड़े हुए थे और उन्होंने इस गर्व को महसूस किया था।

अमीर खुसरो का कहना था—

तर्कु हिंदुस्तानोयम
मन हिंदवी गोयम
जवाब शकर मिस्त्री नदायम
कज अरब गोयम सुखम

अर्थात, मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूं और हिंदवी में उत्तर देता हूं। मेरे पास मिस्र की शाकर नहीं है, अरबी की बात नहीं करता। मैं तो हिंदवी में उत्तर देता हूं।

अमीर खुसरो अरबी-फारसी और उर्दू के प्रगाढ़ पंडित थे। उन्होंने खूब लिखा। इस बात से इसी से पता चलता है कि उन्होंने पहेलियां पांच लाख की संख्या में लिखीं, जिनमें ढाई लाख फारसी और उर्दू में लिखीं और ढाई लाख हिंदवी में। उनके विशद साहित्य के तथ्य और सत्य में भारतीय सभ्यता व संस्कृति, दर्शन और काव्य-शैली के प्रति उनकी अगाध निष्ठा का परिचय पा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटियाली में उन्होंने अपने बचपन के आठ वर्ष ही व्यतीत किये थे, और इन आठ वर्षों में ही पटियाली की हवा ने, यहां की मिट्टी-पानी और धूप-छांव ने उनके उस व्यक्तित्व का आधारभूत ढांचा तैयार किया, जिसने विकसित होकर उन्हें अपने समय का एक महान भाषाविद्, राष्ट्रवादी और संगीतकार बना दिया ।

स्थायी रूप से दिल्ली आ बसे ।

हवा-पानी का असर

पटियाली में उन्होंने अपने बचपन के आठ वर्ष ही व्यतीत किये थे, और इन आठ वर्षों में ही पटियाली की हवा ने, यहां की मिट्टी-पानी और धूप-छांव ने उनके उस व्यक्तित्व का आधारभूत ढांचा तैयार किया, जिसने विकसित होकर उन्हें अपने समय का एक महान भाषाविद्, राष्ट्रवादी और संगीतकार बना दिया ।

अमीर खुसरो ने दिल्ली की गद्दी पर बैठनेवाले नसिरुद्दीन महमूद से लेकर मुहम्मद तुगलक तक सात सुल्तानों के दरबारों में अपना एक विशिष्ठ स्थान बनाया और प्रसिद्ध सूफी संत शेख निजामुद्दीन औलिया के प्रमुख शिष्य के रूप में ख्याति पायी ।

जब औलिया साहब ने इंतकाल फरमाया, तो अमीर खुसरो ने कहा—

गोरी सोवे सेज पर
मुंह पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने
रैन भई चहुं देस

और इसके कुछ समय बाद ही वह भी इंतकाल फरमा गये, बहत्तर साल की उम्र में । उन्हें भी औलिया साहब की मजार के निकट दफना दिया गया, सन् १३२५ में ।

आज राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में यह आवश्यक है पटियाली के महाभारतकालीन और मध्यकालीन ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण के लिए कुछ ठोस उपाय किये जाएं ताकि हम आगे आनेवाली पीढ़ियों को इनके रूप में सद्भाव और राष्ट्रीय गौरव की निशानी दे सकें ।

सद्भाव की मिसाल

जिस सद्भाव की मिसाल अमीर खुसरो ने कायम की थी, पटियाली आज भी उसे संजोए हुए है । आज भी पटियाली की ऊबड़-खाबड़ गलियां जहां एक ओर मंदिरों के घंटों के घनन-घनन निनाद सुनती है, वहीं दूरी पर मसजिदों से आती अजान की गूंज ... संकीर्णता के विष को अमृत समझकर ... कट्टरपंथियों को बतलाती है कि अमीर ... की पटियाली उसकी चिंतन-धारा अब ... महाभारतकालीन वैभव की खुशनुमा ... तरंगित है ।

आज एक कस्बे का रूप ले चुकी ... दरअसल, उन प्राचीन ऐतिहासिक स्थ... एक है, जो कभी अपना एक विशेष ... रखते थे । द्वापर युग में पटियाली के ... कभी पतितपावनी गंगा बहती थी, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी-सी धारा प्रमाण-स्वरूप आज भी विद्यमान है। इसके समीप ही द्रुपद के कंपिल (वर्तमान में कंपिला) में राजमहल थे और पटियाली छत्रपति के नाम से जानी जाती थी। यहां पर भी एक प्राचीन किला था, जो अब खंडहर हो चुका है।

महाराज द्रुपद ने यहां एक देवी मंदिर का निर्माण कराया था। जो देवी पाटलावती के नाम से जाना जाता है। द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद से अपने तिरस्कार का बदला लेने के लिए अपने शिष्य अर्जुन से गुरु-दक्षिणा के रूप में राजा द्रुपद को पकड़ लाने को कहा था। और अर्जुन युद्ध में द्रुपद को हराकर पकड़ लाया था। पराजित और बंदी राजा द्रुपद को द्रोणाचार्य ने मित्रभाव में आधा राज्य वापस दे दिया था और आधा अपने पास रख लिया था। गंगा के दक्षिण तट से चंबल नदी के उत्तर तट तक का क्षेत्र द्रुपद के पास रहा और अहिछत्रा (कंपिल) के उत्तर में गंगा के उत्तरी तट के उसैत जिला बदायूं से अहिछत्रा (आधुनिक रामनगर, जिला बरेली) तक का क्षेत्र द्रोणाचार्य के राज्याधीन। इसी समय से छत्रवती के राजभवन पाटलावती के नाम से पुकारे जाने लगे, जो कालांतर में पटियाली हो गया, जो आज भी है।

राजा द्रुपद के किले के खंडहरों के साथ बूढ़ी गंगा के किनारे पर एक प्राचीन रामेश्वर का शिव मंदिर है, जो कंपिला में द्रौपदी द्वार स्थित कालेश्वर शिव के मंदिर से मिलता-जुलता है। यहां एक मेंहदीवाला बाग था। यह भी किंवदंती है कि यह बाग भी राजा द्रुपद ने ही लगवाया था। पटियाली के पास कभी गंगा बहती थी, इसलिए गंगा यहां पर पटियाली गंगा कहलाती थी। यहां गुरु द्रोणाचार्य का टीला है, जहां कभी उनका आश्रम और गुरुकुल था। वहां खोदने पर एक गुफा निकली, जो साफ-सुथरी थी और उसमें सोटा, कूडी तथा धूनी में गढ़ा हुआ चिमटा मिला था। इस टीले से थोड़ी दूर पर गुरु द्रोणाचार्य द्वारा स्थापित महादेव का मंदिर है— पाताली महादेव।

—पटियाली, जनपद एटा-२०७२४३

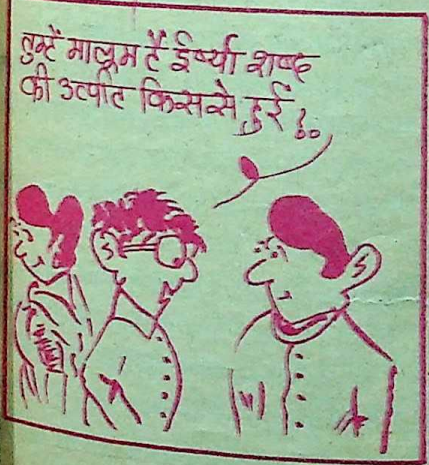

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

सच, है न विचित्र कथा

● यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र'

"सुन म्हारां धणी ! म्हारे चुड़ले रा सिणगार ! मैं आपकी धणियाणी हूं, पत्नी हूं। मुझ पर मोल लाई हुई डावड़ी की तरह अत्याचार मत कीजिए। मुझे तिल-तिल क्यों मार रहे हैं ? एक बार विष देकर खेल खतम कीजिए...", देवड़ी ने बिलखकर अपने पति चांपा सिघल से कहा।

हत्थकढ़ी दारु का गिलास हाथ में लिए हुए चांपा जाजम पर उन्मत्त-सा बैठा था। उसके पीछे गाव और पीठ तकिये रखे हुए थे। सब सफेद झक थे।

देवड़ी पीले रंग की गोटे-कनार की जड़ी कांचली, कुर्ती और लहंगा पहने हुए थी। उसके सिर पर रखड़ी, नाक में नथ, गले में चंदनहार, हाथों में सोने मढ़ी लाख व हाथी दांत की चूड़ियां। ऊपरी बाजू पर हाथी दांत का चुड़ला और पांवों में घुंघरूओंवाली पायल। एकदम सजी-सजायी दुल्हन-सी।

चांपा ने दारु का एक घूंट और लेकर कहा, "मैं तुझ पर कहां करता हूं अत्याचार ! अत्याचार तो तुझ पर ईश्वर कर रहा है ?"

वह तड़पकर बोली, "आप अपना उपचार तो करा सकते हैं ? किसी अच्छे वैद्य को नहीं दिखाते ?"

चांपा चुप रहा।

अंत में वह एकदम झुंझला उठी, "आप चुपचाप क्यों बैठे हैं ? तीन बरस हो गये गीली लकड़ी की तरह सुलगते हुए।"

इस पर चांपा सरदार ने उसे क्रोधित दृष्टि से देखा। फिर कहा, "तो क्या हुआ...हम ठाकुर के यहां स्त्री का सुलगना उसकी नियति है। तो जनानी ड्योढ़ियों में ककड़ी-मूली की तरह सड़ती रहती हैं और जब सड़ जाती हैं, तब फेंक दी जाती हैं... ।"

"पर आप उपचार... ।"

उसने देवड़ी को झपटे के साथ पकड़ा और उसे जाजम पर पटकते हुए घृणा से कहा, "तू चाहती हैं कि मैं सरेआम पौरुषहीनता का ढोल पीटूं ? नपुंसक कहलाऊं ? ...देख, तू कान खोलकर सुन ले, लुगाई का धर्म है पति का सुख, संतोष, सम्मान और उसकी मान-मर्यादा की रक्षा करना।"

"ठाकुर सा, मेरी बात को समझिए। है आपको दोष और लोग मुझे बांझ कहते हैं। आपके परिवारवाले, खासकर आपकी मां मुझे बांझड़ी और निपूती कहती हैं। कई बार तो यहां तक ताना मार देती है कि सूरज उगते ही निपूती का मुंह देख ले तो ऐसी नसीब न हो।"

चांपा उसी कठोरता से बोला, "ये सब तुझे सुनना ही पड़ेगा। लुगाईजात का जन्म इसलिए होता है। अरी नासमझ ! यहां तो की रक्षा के लिए लुगाइयों को जिंदा गाड़ दे जला देते हैं... ।"

सुरा की मादकता में उन्मत चांपा देवड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुक गया। उसने उसके कांचली कुरती को खोलना चाहा, तो देवड़ी ने मना कर दिया। इस पर चांपा ने उसे एक चांटा मारा और अपनी बलिष्ठ अंगुलियों में कांचली की कसियों को झटके-से तोड़ डाला।

वह मर्माहत हो, पीड़ा और क्रोध से तिलमिला उठी। पूरी ताकत लगाकर उसने चांपा को धक्का मार दिया। चांपा थोड़ा पीछे हुआ, तो उसने घुटने इकट्ठे कर दोनों पांवों से जोर की लात मारी।

चांपा के भीतर जैसे बारूद फट पड़ा, वह वहशी की तरह उस पर टूट पड़ा, "हरामी की जाई, खसम को लात मारती है। नीच, रांड,

मेरे इस तरह जल मरने के बाद मुझे भी लोग सती ही कहेंगे। आज तक इच्छा-अनिच्छा, जबरदस्ती से जो भी स्त्री पति के साथ जली तथा जलायी गयी, वह सती ही कहलायी है।

ऐसी ही लाय (अगन) तुझ में है, तो कोठे पर बैठ जा। खानदानी औरतें अपनी धणी का इस तरह निरादर करती है ? मैं तुझे मार-मारकर लूली-लंगड़ी और पांगली (अपाहिज) कर दूंगा।" वह स्वयं हांफने लगा। उसने उस पर कितने लात-घूसे बरसाये, उसे स्वयं को पता नहीं।

देवड़ी ने आंखें बंद कर लीं। वह सिसकती रही। चांपा ने कक्ष के बाहर निकलते-निकलते धमकी दी, "एक बात कान खोलकर सुन ले मादरकाढ़, यदि तूने किसी को इस बारे में बताया, तो तेरी जीभ कटार से काट डालूंगा।"

देवड़ी अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाती रही।

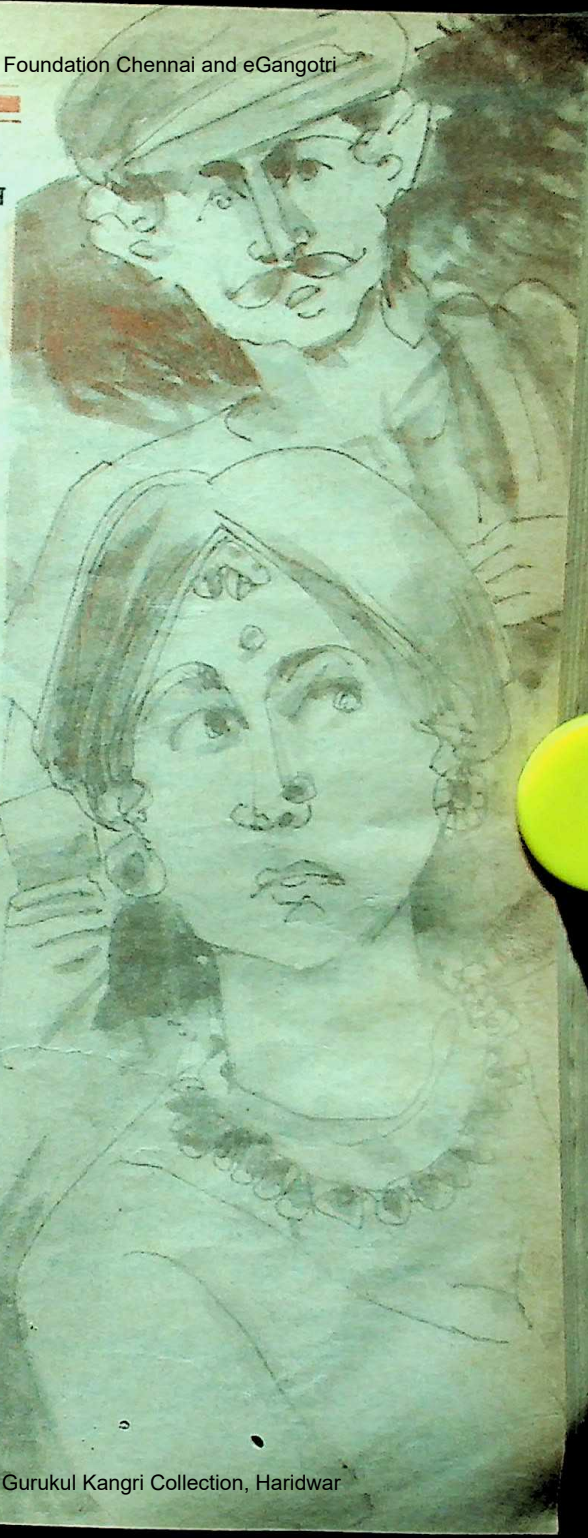

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसे कहे वह अपना दुःखड़ा । किसे बताये अपने हृदय की पीड़ा । तड़प-तड़प बिताये इन तीन सालों की व्यथा-कथा ।

सोचते-सोचते उसे नींद आ गयी । कब चांपा उसके पास आकर सोया, उसे पता नहीं ।

सूर्य ने क्षितिज सुंदरी के अधरों से अरुणिमा चुरा ली । तीव्र प्रकाश फैल गया प्राची के प्रांगण में । घर में उसकी मां और एक डावड़ी (दासी) के स्वर सुनायी पड़ रहे थे ।

सूर्य घर के पूरे आंगन में फैल गया । देवड़ी नीचे आयी । उसके मुंह के कोने पर खून की लकीर अब भी जमी हुई थी । आंख के नीचे सूजन थी । हाथों की कई चूड़ियां टूटी हुई थीं । उसका पोर-पोर दर्द कर रहा था । उसकी इच्छा हो रही थी कि वह अपने शरीर पर तेल छिड़कर आग लगा ले या किसी कुएं-बावड़ी में डूबकर मर जाए ।

उसकी विधवा सास ने उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखकर पूछा, "क्या हुआ बींनणी ? यह सब क्या है ?"

वह अपनी सास के चरणों में लोटकर फूट-फूटकर रो पड़ी । सिसक-सिसककर कहने लगी, "मां सा, मुझे जहर दीजिए, मेरा गला घोंट दीजिए । मैं इस तरह जिंदा नहीं रह सकती ।"

"क्यों ?" उसने तपाक पूछा ।

"मैं अब यह अत्याचार नहीं सह सकती ।"

"आखिर बात क्या है ?" उसकी सास ने गंभीर स्वर में पूछा ।

"आप जानकर अनजान बन रही हैं । उसने अपने रोदन पर काबू पाकर कहा, "आपने मुझ गाय पर जो अन्याय किया है, वह बड़ा पाप है ।

सास की त्यौरियां चढ़ गयीं । कठोरता उसकी आकृति पर आ गयी । कड़ककर बोलीं, "क्यों बक-बक कर रही है । क्यों पहेलियां बुझा रही है, साफ-साफ क्यों नहीं कहती... ?"

आज जैसे उसके अंतस की दुर्वह वेदना तिलमिला रही थी । विद्रोह पर उतारू थी । उसने तीव्र स्वर में कहा, "आप जीवित मक्खी निगल रही हैं । मां सा ! जब आपको अपने बेटे के बारे में जानकारी थी, तो आपने मेरा जीवन सर्वनाश की भट्टी में क्यों झोंका ?"

उसकी सास पलभर के लिए स्तब्ध रह गयी । बोली, "मैं अपने स्वर्गवासी पति की सौगंध खाकर कहती हूं कि मैं कुछ नहीं जानती । सुन, मेरे बेटे में कोई खोट-कसर नहीं है ।"

"मां सा ! आप मुझे निपूती और बांझड़ी कहती हैं । पर सच यह है कि आपका बेटा मर्द नहीं है ।"

ठकुरानी खड़ी हो गयी । भड़ककर बोलीं, "क्या बकती है तू ?"

"सच कहती हूं । इस धरती-आकाश को साक्षी बनाकर कहती हूं । अपने सुहाग की सौगंध खाकर कहती हूं कि तीन बरसों से मैं असामान्य स्थितियों को भोग रही हूं, जिस बर्बरता को भोग रही हूं, उसे मैं जबान से नहीं कह सकती । हद से बाहर जाकर मैंने आज बात आपके सामने खोली है ।"

"इतना हट्टा-कट्टा आदमी नपुंसक कैसे हो सकता है ?...जो तलवार का धनी है, जो युद्ध के क्षेत्र में शत्रु का संहार करता है, वह हिजड़ा कैसे हो सकता है ?" फिर कुछ देर कर उसने ज्ञानी की भांति कहा, "संसार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति हर क्षमता को प्राप्त नहीं कर पाता । कोई न कोई दोष रह ही जाता है प्राणी में ।'' और वह उठकर अपने कक्ष में चली गयी ।

ठकुरानी निष्प्राण हो खाट पर आ पड़ी । फिर पुकारा, ''गोमली...ए गोमली ।''

गोमली पीछे गायों को घास डाल रही थी । ठकुरानी की आवाज सुन दौड़ी आयी । पूछा, ''क्या हुक्म है मां सा ?''

''जा, चांपा को बुलाकर ला ।''

''हुक्म ।'' वह चांपा के पास गयी । चांपा जाग गया था । उसने संदेश दिया । थोड़ी देर में चांपा ने आकर मां के चरण छुए और पूछा, ''कैसे याद फरमाया आपने ?''

''पहले बैठ जा । फिर शांति से सुनना ।

''कहिए मां सा !'' वह सहम गया ।

''क्या तुम नपुंसक हो ?...तुम वंश चलाने में अक्षम हो ।'' मां फट-सी पड़ी ।

चांपा को लगा कि कोई विराट किला उस पर हहरा कर गिर पड़ा हो ।

''झूठ मत बोलना । तूने गोली का नहीं, मेरा दूध पिया है । बता, सच बता ।''

उसने अपराधी की तरह सिर झुकाकर कहा, ''यह सच है मां सा !''

''क्या ?'' अवाक् रह गयी मां ।

''हां, मैं आपके सामने झूठ नहीं बोलूंगा । मैं तन और मन से सक्षम हूं पर नहीं जानता, ईश्वर ने मुझे ऐसा क्यों बनाया ? इतना दीन-दुःखी और अपमानित होने के लिए यह जीवन क्यों दिया ?''

''तो बींनणी सच कह रही थी...और तू उसे बरसों से शारीरिक कष्ट क्यों दे रहा है ? यह तो दानवता है ।

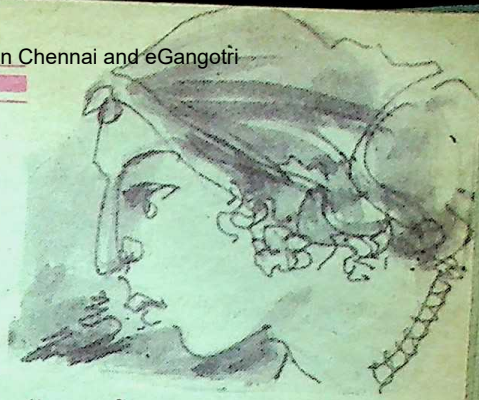

''वह मुझसे बहुत जबान लड़ाती है । तानें देती है । मां सा ! आप उसे समझा दीजिए, नहीं तो मैं कभी उसे मार डालूंगा ।'' वह गुस्से से कांप रहा था ।

''तुम शांत रहो । मैं उसे समझा दूंगी ।''

''एक बात और है— इस सच को कोई दूसरा जाने नहीं । मां सा ! आप खुद और बहू दोनों समझ लें कि किसी ने भी इसे अपनी जबान के बाहर निकाला तो मैं उनके प्राण ले लूंगा ।''

और चांपा घर से बाहर निकल गया ।

इसके बाद देवड़ी पर अधिक प्रतिबंध लग गये । अत्याचारों का सिलसिला भी बढ़ गया । वह पिंजरे में बंद परिंदे की तरह फड़फड़ाती रहती थी । धीरे-धीरे वह मुंहफट हो गयी । मार खा लेती थी, जलील हो लेती थी, पर मनचाही सुनाने में कोई कोर-कसर नहीं रखती थी ।

गणेश चौथ आ गयी । सास ने कहा, ''बनिणी, तुझे व्रत रखना है अपने सुहाग के लिए ।''

''मुझे अपना सुहाग नहीं चाहिए ।''

''मर्यादा से बाहर कदम रखनेवाली स्त्री अच्छी नहीं होती । एक सुख के लिए अपनी मान-मर्यादा, धर्म, पतिव्रत को त्यागना ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है । तुझे मेरा हुक्म है । रात को तालाबवाले गणेश मंदिर के दर्शन करके व्रत तोड़ना । हां, और यह जान ले कि तेरी नियति यही है कि तुझे इस घर में इसी दशा में जीना है । अब यूं सुख से जी या हाय-हाय करके । रहना है हर हाल में यहीं पर । यहां तेरी डोली आयी है और यहां से ही तेरी अरथी निकलेगी, समझी ।''

देवड़ी ने कोई उत्तर नहीं दिया । उसने चोरी से खा-पीकर व्रत रख लिया ।

रात को वह सूनसान स्थल पर स्थित गणेश मंदिर के दर्शन करने गयी, तो फिर लौटी ही नहीं । चांपा और उसकी मां ने सोचा कि उसने अवश्य ही आत्महत्या कर ली होगी । उसकी लाश भी कहीं नहीं मिली ।

और दस दिन बाद उसे एक दारोगा ने आकर खबर दी, ''चांपा सरदार ! आपकी धणियाणी ठाकुर मायल पदमसिंह के पुत्र कुंवर सज्जन के घर में है । उसने उसके साह घरवास कर लिया है ।''

''क्या बकते हो ?'' वह चिल्लाया ।

''बक नहीं रहा हूं । सच-सच कह रहा हूं । मैंने अपनी इन आंखों से उसे देखा है ।''

''मैं उसकी बोटी-बोटी काट डालूंगा और मेरी इज्जत पर जिसने हाथ डाला है, उस सज्जन को भी जिंदा नहीं छोड़ूंगा । मैं भी राजपूत हूं ।''

एक दिन चोरी-छुपे डावड़ी गोमली देवड़ी से मिली । गोमली की आंखों के प्रश्नों को देवड़ी समझ गयी, ''तू जानना चाहता है गोमली कि मैं यहां कैसी हूं ?...सुन...ईश्वर को साक्षी मानकर कह रही हूं कि मैं यहां बहुत सोरी-सुखी हूं । कुंवरजी बहुत ही अच्छे हैं । मुझे प्यार करते हैं । एक मर्द का सुख स्त्री के लिए इससे बड़ा कोई सुख नहीं है ।''

''आप यहां आयी कैसे ?''

''बताती हूं'', उसने कहा, ''गणेश मंदिर से मैं आत्महत्या करने के लिए भागी । जंगल में जो बंद कुआं है, मैं उसमें कूदने लगी कि अचानक कुंवरजी आ गये । वे किसी दूसरे गांव से लौट रहे थे । तारों का उजास था । उन्होंने मुझे पकड़ लिया । मैंने अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए बहुत कहा कि 'मुझे मरने दीजिए...मैं नरक-से जीवन को नहीं जीना चाहती । मैं उस नपुंसक मर्द को नहीं सह सकती, उस कैद में नहीं रह सकती ।'

''आप कौन हैं ? देखिए, भगवान ने जीवन भोगने के लिए दिया है, खत्म करने के लिए नहीं ।''

''मैं चांपा की घरवाली हूं । चांपा मर्द नहीं है । नपुंसक है । स्वभाव से जानवर है । बहुत अत्याचार करता है । फिर मैं क्यों और कैसे जीऊं ?''

कुंवरजी ने कहा, ''हमारे घर चलिए । हमारे साथ घरवास कीजिए । हम आपको मान-सम्मान और प्रेम से रखेंगे । हम चांपा से नहीं डरते । वह हमसे बहुत छोटा राजपूत है । रो-धोकर रह जाएगा । चलिए...मुझ पर विश्वास कीजिए । मैं भी सामांत हूं । जो कह दिया, उस पर अमल करूंगा । चलिए !''

''बस, गोमली मैं इस घर में आ गयी । मुझे लगा कि यह घर ही मेरा है । कुंवरजी मेरे हैं । मैं सुखी और संतुष्ट हूं । कोई पाप का अनुभव नहीं होता । सती हूं । यही मान होता है सदा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-तीन बरस बीत गये । लोक-निंदा और उलाहनों ने चांपा को आधा पागल-सा कर दिया । वह प्रतिशोध की आग में जलता रहा । वह सज्जन की हत्या करने के लिए घात लगाये रहा पर सज्जन भी एकदम सचेत था । उसने चांपा के कई अवसर असफल कर दिये ।

एक दिन सज्जन अकेला कहीं से लौट रहा था । चांपा छुपा बैठा था । सज्जन घोड़े से उतरकर घास की ओट में पेशाब करने लगा कि चांपा ने पीछे से घात लगाकर प्रहार कर दिया । प्रहार था तो गरदन पर लेकिन वह जरा नीचे लगा । सज्जन एकदम पलटा । चांपा दूसरा प्रहार करता, इससे पहले उसने उसे दबोच लिया, "कमीने ! छुप कर वार करता है, रजपूत होकर रजपूत पर ।"

"तू रजपूत नहीं गोला है । दूसरी रजपूत की मर्यादा भंग करनेवाला पापी है । थू है तुझ पर ।"

"थू तेरे-जैसे नामर्द पर जिसने एक औरत की जिंदगी नष्ट कर दी । अरे पा...पी... ।" दोनों लड़ते ही जा रहे थे ।

और दोनों ही लड़ मरे ।

सज्जन की लाश जब लायी गयी तो देवड़ी जार-जार रोने लगी । कितना प्यार किया था उसने । संपूर्ण देह और मन को तृप्ति दी थी कुंवरजी ने । अब उसके बिना जीना व्यर्थ है । कुंवरजी ने मेरे लिए अपना जीवन विसर्जित कर दिया, अब उनके बिना मेरे जीने का कोई मतलब नहीं ।

जब वह सजने लगी तो उसकी डावड़ी ने पूछा, "क्या आप सती हो रही हैं ?"

"मेरी-जैसी दूसरी के घर में वास करनेवाली

को क्या सत्त चढ़ सकता है ?

"फिर आप सज क्यों रही हैं ।"

"सती होने का नाटक करने के लिए ।"

डावड़ी ने शंका की, "जलने की पीड़ा का पता है आपको ?"

"इसका प्रबंध मैं कर लूंगी ।" देवड़ी ने उसे प्यार से गले लगाकर कहा, "तू मेरी पक्की भायली (सहेली) है । तूने मेरी बहुत सेवा की है, प्यार भी । लेकिन तुझे देवी मां चामुंडा की सौगंध खानी होगी कि मेरे इस जल मरने के भेद को तू किसी को कभी नहीं बताएगी ।"

"जो हुकम ! मैं किसी को नहीं कहूंगी ।"

घाट पर दो चिताएं बनायी गयीं ।

तभी लोगों ने अचानक देखा कि देवड़ी सोलह श्रृंगार करके हाथ में तलवार लेकर श्मशान की ओर आ रही है ।

सब स्तब्ध और हैरान । यह क्या है...एक के नाम की चूड़ियां उतारीं और दूसरे की पहनीं और वह त्वरा से चिता में कूद पड़ी । ●

—आशालक्ष्मी,
नयाशहर, बीकानेर-३३४००४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही पेड़ में २७५ किस्म के आम

● जगदीश प्रसाद 'साहनी'

पिछले साल आम की बागवानी के मामले में क्लीम उल्लाह खां सुर्खियों में रहे सारे भारत का ध्यान उनकी ओर तब केंद्रित हुआ जब 'परख' कार्यक्रम में उनके द्वारा आम के एक ही पेड़ में २०१ किस्मों के आमों की चर्चा हुई। आम उत्पादन के मामलों में उनका यह प्रयोग औद्योगिक मामले में खोजपूर्ण उपलब्धि अवश्य है। पिछले दिनों मैंने कलीम मियां से मुलाकात की तो उन्होंने बताया कि अब उस आम के पेड़ में इस वर्ष २७५ किस्म के आम आएंगे, क्योंकि उस पेड़ में लगभग १०० आम की किस्मों की कलमें और बांध दी गयी हैं। उन्होंने कहा कि आम की तीन फसलें ली जा सकती हैं और इससे करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित हो सकती है। इन्हीं अनेक तथ्यों पर आधारित है आम उत्पादन पर तथ्यपरक दृष्टिकोण...

वर्ष १९९५ आम उत्पादन के मामले में काफी चर्चित रहा। उस वर्ष मलिहाबाद की अब्दुल्ला नर्सरी के मालिक कलीम उल्लाह खां ने जो नयी खोज आम उत्पादन व प्रजातियों के समावेश पर दी, वह काफी महत्त्वपूर्ण है।

नया कीर्तिमान

एक ही आम के वृक्ष में २०१ किस्म की प्रजातियां तैयार करने में आपको कितना समय लगा होगा। इस प्रश्न के उत्तर में कलीम उल्लाह खां ने कहा कि यह बात तो आठ साल पुरानी है। इस वर्ष तो मैं इसी वृक्ष में २७५ किस्मों के आम उत्पादित कर औद्योगिक क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित करना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि मैंने वह तकनीक भी खोज ली है, जहां एक ही साल में आम की तीन फसलें उत्पादित की जा सकती हैं। जिस आम के वृक्ष में २०१ किस्म के आम के उत्पादन की चर्चा हुई थी, उस वृक्ष को मैंने बहुत नजदीक से देखा था। उस समय उसमें लगे आम की किस्में थीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुस्नआरा, गोल, बदैंया, द्वारिका दास, सीपिया, जाफरान, बहराइच, बाम्बे ग्रीन, आमिन अब्दुल हक, असलुर मुकर्रर, आमिन गूदड़शाह, आम्रपाली तथा अनुपान ।

उक्त वृक्ष की जिस टहनी में रामकेला प्रजाति का आम लगा था उसके पास की टहनी में बौर निकल रही थी और आम के टिकोरे बैठ रहे थे । बढ़े हुए तापक्रम के कारण आम के टिकोरे पीले होकर गिर रहे थे । जिस टहनी में यह आम के टिकोरे लगे थे वह प्रजाति सेह फसली मुर्शिदाबाद की थी जो साल में तीन फसलें फलती हैं । पहला दौर बौर से फल तैयार हो जाने पर, जब फल पकने लगते हैं, तब शाखा में बोर निकल आते हैं तथा टिकोरे (छोटे फल) होने के साथ ही वृक्ष में बौर आने लगती हैं और इस बौर में फल तब लगते हैं, जब पिछले लगे हुए टिकोरे बड़े हो जाते हैं ।

कलीम उल्लाह खां ने बताया कि उनका यह पेशा खानदानी है । उनके पूर्वजों ने अब्दुल्ला नर्सरी कायम की और दशहरी की नयी प्रजाति 'अब्दुल्ला ग्रेट' बनायी जिसे काफी लोकप्रियता मिली । अखिल भारतीय आम प्रदर्शनी में अब्दुल्ला ग्रेट को प्रथम स्थान मिला था । एक ही वृक्ष में आम की अनेक प्रजातियां देखने के लिए जापान के इंटरनेशनल फार्मिंग सेंटर के चेयरमैन प्रोफेसर थेरी योहिगा तथा मित्सुरूमाशूनाशा (डायरेक्टर इफेक्टिव माइक्रो आर्गेनिज़्म नयी दिल्ली) आये, उत्तर प्रदेश फल एवं अनुसंधान लखनऊ के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. संजीव कुमार, औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र के मुख्य उद्यान विशेषज्ञ रमाशंकर मिश्र ने भी उक्त वृक्ष पर किये गये तथ्यपरक शोध देखा । इस वृक्ष के संदर्भ में प्रसिद्ध उपन्यासकार माईल मलिहाबादी का कहना है कि जिस आम के पेड़ की टहनियों में कलम बांधकर यह अनुसंधान किया गया है वह ६०-६५ साल पुराना असलुर मुकर्रर आम की प्रजाति का वृक्ष है । इसकी शाखें ऊपर से काट दी गयीं और निकले हुए नये कल्लों में कलम बांधकर इतनी प्रजातियां एक ही वृक्ष में उत्पादित करना एक नया प्रयास है । कलीम उल्लाह खां ने आम की प्रजातियों का जो गुलदस्ता बनाया है उसके लिए वह सराहना के पात्र हैं ।

८ सितम्बर १९९५ को उत्तर प्रदेश शासन के उद्यान सचिव अरुण कुमार मिश्र अब्दुल्ला नर्सरी पहुंचे और उन्होंने आम की बहुप्रजाति उत्पादित करनेवाले वृक्ष को देखा, उस समय भी उसमें चार विभिन्न प्रजातियों के आम लगे थे ।

कलीम उल्लाह खां एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसे अनेक आम प्रदर्शनियों में प्रथम पुरस्कार पाने का श्रेय प्राप्त है । जुलाई वर्ष १९९३ में दिल्ली अंतरराष्ट्रीय आम महोत्सव में उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला था ।

कलीम उल्लाह खां का कहना है कि आम प्रकरण पर उनके द्वारा किया गया शोध कार्य नया है । वैसे सेब पर यह प्रयोग सत्रहवीं सदी में शुरू हो गया था । लेकिन आम में बहुप्रजाति एक ही पेड़ में समाहित करने का मामला नया है । इस वृक्ष के नामकरण के प्रति उनका कहना है कि यह एक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है ।

—साहनी निकेतन
मलिहाबाद (लखनऊ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जसवंत सिंह, सोलन

शहद और घी का एक साथ सेवन वर्जित क्यों है ?

घी, तेल तथा चिकने पदार्थों के साथ शहद की समान मात्रा मिलने पर यह विष बन जाता है, इसलिए यह वर्जित है।

भारती सेन, इलाहाबाद

हवाला धंधा कब से और कैसे शुरू हुआ ?

विदेशी मुद्रा की सरकारी और हवाला दरों में अंतर होता है। हवाला दरें अधिक आकर्षक होती हैं। यह धंधा बहुत पुराना है। विदेशों में रहनेवाले भारतीयों की संख्या में वृद्धि के साथ ही यह धंधा पनपने लगा है। सत्तर के दशक में खाड़ी देशों में रहनेवाले अनिवासी भारतीयों ने जब से हवाला एजेंटों के माध्यम से पंजाब, केरल, गुजरात आदि स्थित अपने घरों को रुपया भेजना शुरू किया, तब से यह धंधा पनपता ही चला गया है।

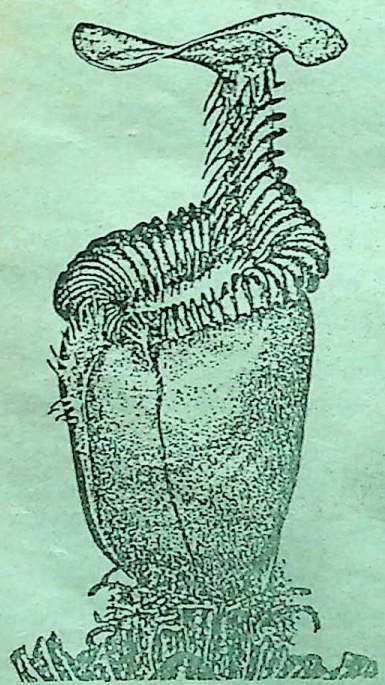

रामकुमार मुंडा, सोसोकलां (हजारीबाग)

क्या पौधे भी मांसाहारी होते हैं ?

हां, पौधे भी मांसाहारी होते हैं। ऐसे मांसाहारी पेड़-पौधों के अस्तित्व की जानकारी सबसे पहले प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने दी थी। इस प्रकार के पौधों की लगभग ५०० प्रजातियां विभिन्न महाद्वीपों में पायी जाती हैं। ये पौधे मुख्यतया घड़े अथवा ऐसे ही किसी पात्र की तरह के, थैली सदृश और चिपचिपी एवं रोमिल सतह वाले होते हैं। ये पौधे अपने पास आनेवाले कीट-पतंगों को चिपचिपे पदार्थ से फंसा लेते हैं और कांटे-जैसे रोम उनके शरीर में गड़ाकर उनके रक्त-मांस को चूस लेते हैं। कुछ मांसाहारी बड़े वृक्ष भी पाये जाते हैं, जिनकी शाखाएं बड़े पशुओं को जकड़ कर उनके रक्त-मांस को चूस लेती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्हाई लाल बोस, दरभंगा

सरस्वती और व्यास सम्मान क्या है ?

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किसी भी राष्ट्रीय भाषा में भारतीय नागरिक द्वारा लिखी गयी एक उत्कृष्ट कृति को सम्मानित करने के लिए यह वार्षिक सम्मान— 'सरस्वती सम्मान' के. के. बिड़ला फाउंडेशन (नयी दिल्ली) द्वारा स्थापित किया गया है । इसकी पुरस्कार राशि तीन लाख रुपये है । केवल हिंदी कृतियों के लिए उक्त फाउंडेशन का एक दूसरा सम्मान— 'व्यास सम्मान' अलग से है, जिसकी सम्मान राशि डेढ़ लाख रुपये है ।

डिगेश्वर महतो, पूरबडीह गोला (हजारीबाग)

क्या ऐसे भी पशु-पक्षी होते हैं, जो जीवनभर एक जीवन-साथी के साथ ही रहते हों ?

हां, ऐसे कुछ पक्षी तो अवश्य हैं, जैसे कैनडा और अलास्का में पाया जानेवाला कैनडा गूज, जो जीवन पर्यंत एक ही जोड़े के रूप में रहते हैं ।

—मैक. एनसाक्लोपीडिया, पृष्ठ २१९

गफूर अहमद, लोहारडागा

बरतानिया में मुसलमानों और उनकी मसजिदों की संख्या कितनी होगी ?

'रिलिजन इन ब्रिटेन' के अनुसार अधिकतर पाकिस्तान और बांग्लादेश तथा भारत, साइप्रस, मलयेशिया व अफरीका से आकर ब्रिटेन में बसे मुसलमानों की संख्या नौ से दस लाख तक है और इनकी लगभग छह सौ मसजिदें हैं, जिनमें केंद्रीय लंदन स्थित मसजिद सबसे बड़ी है ।

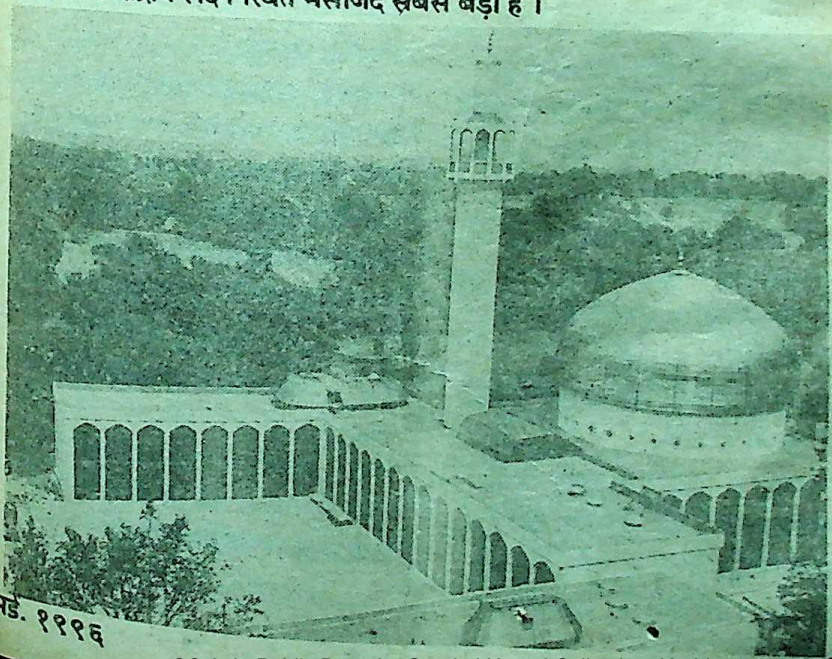

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामिनी कदम, लहेरिया सराय

वेदव्यास और कृष्ण द्वैपायन में आपसी रिश्ता क्या है ?

ये दोनों एक ही व्यक्ति के नाम हैं । वेदांत दर्शन या ब्रह्मसूत्र के मान्य लेखक थे— बादरायण । भारतीय परंपरा इन्हें वेदव्यास तथा कृष्ण द्वैपायन के नाम से जानती है । महाभारत के अनुसार ये ऋषि पराशर और धीवर कन्या सत्यवती से उत्पन्न हुए थे । माता ने संकोचवश इनको एक द्वीप में रख दिया था, जहां इनका पालन-पोषण हुआ । अपने सांवले वर्ण के कारण ये कृष्ण और द्वीप में पलने के कारण द्वैपायन- इस तरह कृष्ण द्वैपायन कहलाये ।

बालू भरतिया, कलकत्ता

ग्रहों की खोज कब हुई और पृथ्वी किन ग्रहों के बीच में स्थित है ?

सौर मंडल के पांच ग्रहों यथा— बुध, शुक्र, मंगल, गुरु और शनि से तो हम पहले से ही परिचित हैं, तीन अन्य नक्षत्रों की खोज हाल में हुई है । उरण, अर्थात यूरेनस की जानकारी सन् १७८१ में, वरुण यानी नेपचून की सन् १८४६ और प्लूटो की सन् १९३० में हुई । पृथ्वी शुक्र और मंगल ग्रहों के बीच में स्थित है ।

रजनीकांत ओझा, भागलपुर

पसीने से भींगा व्यक्ति पंखे की हवा से राहत क्यों महसूस करता है ?

पंखे से आती हवा शरीर से पसीने के वाष्पीकरण की गति को बढ़ा देती है । वाष्पीकरण प्रक्रिया से शरीर की कुछ गरमी बाहर आ जाती है, जिससे शरीर शीतल होने लगता है फलतः पसीने से भीगा व्यक्ति राहत महसूस करने लगता है ।

वीरेंद्र शुक्ल, उज्जैन

प्रातःकाल शैय्या त्यागने से पूर्व शास्त्रों में किस प्रार्थना का विधान है ?

प्रातःकाल सूर्योदय से डेढ़ घंटा पूर्व ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर दोनों हथेलियों (करतलों) को देखते हुए निम्न श्लोक के पाठ का विधान शास्त्रों में है—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम

अर्थात, हथेलियों के अग्रभाग में लक्ष्मी निवास करती है, मध्य भाग में सरस्वती और मूल में ब्रह्माजी निवास करते हैं । अतः प्रभात में उठकर हथेलियों के दर्शन से पुण्य-लाभ होता है ।

रुद्रप्रताप सिंह, सीधी (म.प्र.)

महात्मा गांधी को कितने देश और किस प्रकार सम्मानित कर चुके हैं ?

यूरोप, अमरीका तथा एशिया के अनेक देश महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी पर डाक-टिकट जारी कर उन्हें सम्मानित कर चुके हैं । हाल ही में दक्षिण अफरीका ने अपनी एंक ट्रेन का नाम महात्मा गांधी एक्सप्रेस रखकर उन्हें सम्मानित किया है ।

चलते-चलते

प्रश्न : आपकी दृष्टि में नयी सरकार किसकी होगी ?

उत्तर : राजसी भोजन ने सारे राजनैतिक दलों का पेट खराब कर दिया है, इसलिए नयी सरकार 'खिचड़ी' होगी । — सूर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूक्रेन की लोककथा

भलाई का रास्ता

प्रस्तुति : संगमलाल मालवीय

किसी गांव में तीन भाई रहते थे। वे बचपन में ही अनाथ हो गये। उनके माता-पिता बड़े गरीब थे। उनके पास जमीन-जायदाद कुछ थी नहीं, सिर्फ सिर छुपाने के लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी भर थी। तीनों भाई दर-दर भीख मांगकर अपना जीवन-यापन करने लगे। बचपन बीता, जवानी आयी, तो एक दिन तीनों भाइयों ने यह सोचा कि कहीं दूसरे गांव में चलकर मेहनत-मजूरी की जाए। शायद, कोई भला आदमी अपने यहां काम पर रख ले। वे गांव छोड़कर चल दिये। रास्ते में उन्हें एक बहुत बूढ़ा राहगीर दिखाई दिया। उसकी दाढ़ी खूब लंबी और सफेद थी। बूढ़े ने भाइयों के पासआकर पूछा, "बच्चों, कहां जा रहे हो?"

"मजदूरी की तलाश में।"

"क्या तुम्हारे पास अपनी खेती-बारी नहीं है?"

"नहीं", भाइयों ने मायूसी से उत्तर दिया, "काश, हमें कोई भला आदमी मिल जाता, तो उसके यहां हम लोग मेहनत से काम करते और अपने पिता की ही तरह उसका आदर करते।"

बूढ़ा सोच में पड़ गया। क्षणिक खामोशी के बाद बोला, "आज से तुम लोग मेरे बेटे हुए और मैं तुम्हारा धर्म-पिता। मैं तुम लोगों की सहायता करूंगा, ईमानदारी, परोपकार और सच्चाई का रास्ता दिखाऊंगा। बस, तुम लोग अपना फर्ज निभाते चलना, मेरी सीख जीवन में याद रखना।"

तीनों खुश हुए और भलाई का जीवन बिताने के लिए तत्काल सहमत हो गये। बूढ़े ने उन्हें अपने साथ लिया और आगे बढ़ चला।

बियाबान जंगलों और लंबे रास्तों को पार करते हुए वे तीनों बूढ़े के पीछे-पीछे चलते रहे। अचानक रास्ते में थोड़ी दूर पर उन्हें एक शानदार हवेली दिखाई दी। हवेली सजी-संवरी सुंदर थी, चौतरफा रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। घर के बगल में चेरी की बगिया थी, जहां एक युवती खड़ी हुई थी। वह हू-बहू रूप की रानी लग रही थी। उसे देखते ही बड़ा भाई मोहित हो गया, बोला, "काश, यह लड़की मेरी पत्नी होती। अमीर है, इसलिए दहेज में जमीन-जायदाद, गाय-बैल, घोड़े भी मिलते!"

यह सुनकर बूढ़े ने कहा, "तो आओ, तुम्हारा रिश्ता तय कराये देते हैं। तुम्हारी शादी हो जाएगी और दहेज भी खूब मिलेगा। खुशी-खुशी जिंदगी गुजारना। बस, सच्चाई का रास्ता कभी मत भूलना।"

बूढ़ा उन्हें लड़कीवालों के यहां ले गया। चट मंगनी, पट शादी। सभी बड़े खुश हुए। इस तरह बड़ा भाई हवेली का मालिक बन गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुखपूर्वक रहने लगा ।''

शेष दो अपने मुंहबोले बेटों को साथ लेकर बूढ़ा आगे चल पड़ा । वे पूर्ववत बियाबान जंगलों और लंबे रास्तों को पार करते हुए चलते रहे । चलते-चलते उन्हें रास्ते में खूबसूरत-सा, चमचमाता हुआ घर दिखाई दिया । घर के बगल में एक तालाब था और तालाब के किनारे पनचक्की लगी थी । घर के पास एक युवती अपनी धुन में मगन किसी काम में व्यस्त थी । इस कार्य-दक्ष युवती को देखते ही मझले भाई ने कहा, ''काश, ऐसी ही युवती मेरी पत्नी होती ! दहेज में तालाब और पनचक्की मिल जाती तो मैं मजे से चक्की चलाना, गेहूं पीसता और चैन से जिंदगी गुजारता ।''

''तो आओ, तुम्हारी ही मर्जी सही'', बूढ़े ने लड़के से कहा ।

बूढ़ा और उसके साथ दोनों लड़के लड़कीवाले के यहां पहुंचे । बूढ़े ने शादी तय करा दी और जल्दी ही धूम-धाम से विवाह भी करा दिया । मंझला भाई भी घर का मालिक बन गया और अपनी पत्नी के साथ आनंद से रहने लगा । उससे विदा लेते हुए बूढ़े ने कहा, ''बेटे, अब हम चलते हैं, तुम खुश रहो । लेकिन याद रखना कि सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना ।''

अब बूढ़ा और सबसे छोटा लड़का फिर आगे बढ़ चले । अचानक उन्हें एक साधारण-सी झोंपड़ी दिखाई दी । उषा की लालिमा-जैसी सुंदर एक युवती अपनी झोंपड़ी से बाहर आ रही थी । वह बहुत गरीब थी । उसके पुराने कपड़ों पर कई-कई पैबंद थे ।''

छोटे भाई ने कहा, ''काश, यह युवती मेरी पत्नी होती । हम दोनों कंधे से कंधा मिलाकर मेहनत करते और हमारे यहां बस, खानेभर का अनाज होता । तब हम दीन-दुखियों की मदद करते, खुद खाते और दूसरों को भी खिलाते ।''

यह सुनकर बूढ़े ने कहा, ''शाबाश, ऐसा होगा । पर देखो, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना ।''

अब इस छोटे की शादी भी बूढ़े ने करा दी और बूढ़ा अपनी राह चल पड़ा ।

इधर तीनों भाई अपनी-अपनी जिंदगी जीने लगे । बड़ा भाई इतना अमीर हो गया कि उसने अपने लिए अच्छे से अच्छे घर बनाये । फिर भी उसे दिन-रात यही धुन सवार रहती कि और अधिक से अधिक अमीर कैसे बने ? अधिक से अधिक हीरे-जवाहरात, सोना-चांदी इकट्ठे करे । गरीबों की मदद या उन्हें सहायता की बात तो उसके मन में कभी आती ही नहीं । वह अत्यंत कंजूस भी हो गया ।

मंझला भाई भी अमीर हो गया । उसके यहां भी नौकर-चाकर काम करने लगे और वह ऐशो-आराम की जिंदगी गुजारने लगा । वह बस, काहिलों की तरह खाता-पीता और नौकरों पर हुक्म चलता रहता ।''

''सबसे छोटा भाई मेहनत-मजदूरी करके शांति से अपनी गुजर-बसर कर रहा था । घर-गृहस्थी में जब कुछ होता, तो वह दूसरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ मिल-बांटकर खाता । जब कुछ न होता, तो संतोष करता पर वह कभी भी अपनी परेशानियों का रोना न रोता ।

इस बीच बूढ़ा दूर-दूर का सफर करता रहा । एक दिन उसे अपने मुंहबोले बेटों का ख्याल आया । उसने उनकी खोज-खबर लेनी चाही कि आखिर वे नौजवान बेटे कैसे जी रहे हैं ? कहीं वे सच्चाई के रास्ते से भटक तो नहीं गये ?

बूढ़े ने भिखारी का भेष बनाया । सबसे पहले वह बड़े लड़के के घर जा पहुंचा और बड़े दीन भाव से झुकते हुए गिड़गिड़ाकर बोला, "जुग-जुग जिओ मेरे लाल, इस गरीब लाचार बूढ़े को खाना खिला दो ।"

बड़े लड़के ने बूढ़े को अपमानित करते हुए कहा, "अरे खूसट, तू अभी हट्टा-कट्टा तो दिख रहा है । भूख लगी है, तो जा कहीं मेहनत-मजदूरी कर ! अभी तो मैं खुद अपने पैरों पर किसी तरह खड़ा हो पाया हूं । जा, चलता बन ।"

बूढ़ा वापस चल दिया । लेकिन थोड़ी दूर जाकर वह ठहर गया उसने पलटकर बड़े लड़के के घर की ओर देखा, तो वह धुआं उगलता हुआ भस्म हो गया ।

बूढ़ा अब मझले लड़के के पास पहुंचा । वह खुद पनचक्की पर बैठा हुआ नौकरों पर हुक्म चला रहा था । बूढ़े ने झुककर दैन्य भाव से कहा, "बेटे, भगवान तुम्हारा भला करे । थोड़ा-सा आटा दे दो । मैं भिखारी हूं, दाने-दाने को तरस रहा हूं ।"

"वाह बाबा, वाह !" दूसरे बेटेने कहा, "यहां तो मैं खुद गरीबी से जूझ रहा हूं । मेरे पास तो खुद अपने लिए आटा नहीं है । तुझ जैसे भिखारी तो रोज मारे-मारे फिरते हैं । आखिर, किस-किस का मैं पेट भरूं ?"

बूढ़ा दूसरे लड़के के यहां से भी मायूस होकर चल पड़ा । और थोड़ी दूर जाकर एक टीले पर ठहर गया । बूढ़े ने पलटकर देखा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मझले लड़के का घर और पनचक्की धू-धूकर जल उठे ।

अब बूढ़ा तीसरे छोटे लड़के के यहां पहुंचा । वह सचमुच गरीब था । उसकी झोंपड़ी वैसे ही, छोटी-सी ही थी, लेकिन साफ-सुथरी दिख रही थी ।

"बेटा, भगवान तुम्हारा भला करे । मैं बहुत भूखा हूं । कुछ खाने को दे दो ?"

"बाबा, अंदर चलो, खाना मेरे घर में है । खाना खा लेना और थोड़ा रास्ते के लिए साथ भी लेते जाना ।"

झोंपड़ी के अंदर बूढ़ा पहुंचा । उसने घर की मालकिन को देखा । वह साधारण कपड़े पहने हुए थी, पर उसे बूढ़े के फटे-पुराने कपड़े देख बहुत अफसोस हुआ । वह बूढ़े के लिए कपड़े ले आयी, बोली, "बाबा, ये कपड़े पहन लो ।"

बूढ़ा खुशी-खुशी कपड़े पहनने लगा तो मालकिन ने देखा कि बूढ़े के सीने पर एक बड़ा-सा घाव है । बूढ़े को बैठाकर उसने भर पेट खाना खिलाया । अचानक छोटे लड़के ने पूछा, "बाबा, तुम्हारे सीने में इतना बड़ा जख्म कैसे है ?"

"बेटा, यह बड़ा अजीब जख्म है । अब तो मैं बस चंद रोज का मेहमान हूं । इस जख्म की वजह से मेरी मौत कभी भी हो सकती है ।"

"तोबा ! तो क्या इसकी कोई दवा नहीं है ?" घर की मालकिन ने दुख प्रकट करते हुए कहा ।"

"दवा तो है । बस, एक ही दवा है, लेकिन उसे कोई देगा नहीं, जबकि हर कोई दे सकता है ।"

तब छोटे लड़के ने कहा, "आखिर, क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देगा ? ऐसी कौन-सी दवा है ?''

''दवा बड़ी अजीबो-गरीब है, बेटा ! जानना चाहते हो तो सुनो, यदि किसी घर का मालिक अपने घर समेत अपनी सारी दौलत आग लगाकर फूंक दे और उसकी राख मेरे जख्म पर छिड़क दे, तो जख्म अपने आप सूख सकता है ।''

छोटा बेटा थोड़ी देर असमंजस में पड़ा रहा । फिर अपनी पत्नी से बोला, ''कहो, तुम्हारा क्या ख्याल है ?''

''ख्याल ? मैं तो समझती हूं मेरी झोंपड़ी, मेरा घर फिर बन जाएगा, बाबा बेचारे की जिंदगी खतरे में है, क्यों न, इन्हें मरने से बचा लिया जाए ?''

''फिर देर क्या है ? आओ, बच्चों को झोंपड़ी से बाहर निकाल लें ।''

बच्चे झोंपड़ी से बाहर आ गये । छोटे लड़के ने झोंपड़ी पर एक नजर डाली, उसे अपनी जो कुछ भी जमा-पूंजी थी, उसके लिए अफसोस तो था लेकिन, बूढ़े के प्रति उसके हृदय में कहीं ज्यादा तकलीफ थी । अतः उसने झोंपड़ी में आग लगा दी । झोंपड़ी थोड़ी देर में राख का ढेर बन गयी । लेकिन यह क्या ? अचानक झोंपड़ी के स्थान पर एक खूबसूरत हवेली आ खड़ी हुई ।''

उधर बूढ़ा अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ मुस्करा रहा था ।

''बेटा, तीनों भाइयों में से तुम ही अकेले सच्चाई के रास्ते पर चल रहे हो । खुश रहो और युग-युग जिओ ।''

अब छोटे लड़के की समझ में आया कि यह वही बूढ़े बाबा हैं, जिन्होंने एक दिन तीनों भाइयों को अपना मुंहबोला बेटा बनाया था ।

वह बूढ़े की ओर लपका, लेकिन तब तक वह गायब हो चुके थे ।

—१४७, केशव भादुड़ी रोड,
लखनऊ-२२६०१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइए चलें जंगल की ओर

सारस : यह सिकोनाइडी परिवार का प्राणी है। इसकी टांगें लंबी और टांगों का निचला भाग कुछ बाल रहित, खुला होता है। गरदन लंबी और भारी, चोंच नुकीली होती है। सारस की स्वर पेशियां नहीं होतीं, इसलिए यह आमतौर पर चुप ही रहता है। यह गले से हलकी घुरघुराहट की-सी आवाज निकालता है। इसकी लंबाई साढ़े तीन फुट तक होती है। जंगहिल, दांख, कंकारी, हरगिल, गुरुर या टेंक आदि इसकी प्रमुख प्रजातियां हैं। शिकार के लिए यह पानी में कूबड़ निकाले एक टांग पर खड़ा रहता है। मछलियां, मेंढक, केकड़ा, घोंघे इसका प्रिय भोजन है।

यह अपना घोंसला पानी के निकट पेड़ों पर बनाता है। श्रीलंका और केरल में व्यापक रूप से पाया जाता है। मादा सारस एक बार में तीन से पांच तक अंडे देती है।

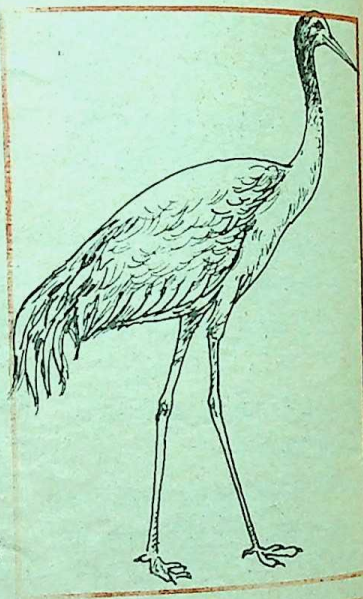

शिकरा : यह कद में लगभग कबूतर-जैसा होता है। ऊपरी भाग राख-जैसा, कुछ-कुछ नीलापन लिए भूरा, नीचे के हिस्से पर भूरी धारियां होती हैं और पूंछ पर चौड़ी, काली-सी पट्टियां। मादा का ऊपरी भाग भूरा और यह नर की अपेक्षा बड़ी होती है। टिड्डे, छिपकली, चूहे, मेंढक आदि इसका आहार है।

यह जंगली प्रदेशों, गांवों तथा खेतों के आसपास अपना जोड़ा बनाकर रहता है। घोंसला पत्तीदार पेड़ों की चोटियों पर टहनियों की मदद से बनाता है। इसके अंडे हलका नीलापन लिये होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमलतास : यह कम ऊंचाई का वृक्ष होता है। इसके पत्तों का रंग हरा और लंबाई पांच से दस सेंटीमीटर तक होती है। फूल लगभग ३.५ से ५ सेंटीमीटर व्यास के, पीले रंग के गुच्छों में होते हैं। फल ५०-६० सेंटीमीटर लंबे, बांसुरी की-सी आकृति के काले या गहरे कत्थई रंग के होते हैं। इसके फल ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में गिर जाते हैं, किंतु इस समय वृक्ष फलों से लदा होता है तथा दूर से पूरा वृक्ष पीला दिखायी पड़ता है।

यह लगभग पूरे भारत में ही पाया जाता है। यह नम तथा सदा हरित वनों में अधिक होता है। उद्यान तथा सड़कों के किनारे अमलतास के वृक्ष लगाना बहुत उपयुक्त माना जाता है। इसके वंश की एक अन्य जाति सनाय है, जो छोटी झाड़ी जैसी होती है। सनाय अरब व सोमालीलैंड का पौधा है और दक्षिण भारत आदि में इसका रोपण किया गया है।

वासाका : कुछ जगह इसे अडूसा भी कहा जाता है। यह एक से दो मीटर ऊंचा सदा हरित पौधा है। इसकी शाखाएं हलकी पीली, विभाजित व घनी होती हैं। फूल सफेद होते हैं, उनकी पंखुड़ियों पर गुलाबी या बैंजनी रंग की धारियां होती हैं। अडूसा के फल एक छोटी-सी संपुटिका की भांति होते हैं, जिनमें चार बीज होते हैं। इसके पत्तों से दुर्गंध आती है। इसका अरक या रस बलगम, कफ, खांसी, दमा में लाभदायक पाया गया है। वासक से वसीसीन नामक पदार्थ भी प्राप्त होता है, जो गर्भपात के लिए उपयोगी है।

इसके पौधे भारत में सभी मैदानी तथा तलहटी क्षेत्रों में पाये जाते हैं। आबादीवाले स्थानों के आसपास यह अधिक पनपता है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन

मानव मस्तिष्क की क्षमता का चमत्कार

● डॉ. सी.बी.एल. वर्मा

"जिस टैक्सी में मैं आपको देखने आया हूं, उसका नंबर १७२९ है। मुझे यह नंबर कुछ मनहूस-सा लगा, कहीं यह किसी अपशकुन का सूचक तो नहीं ?"

"बिलकुल नहीं", अस्पताल की शैया पर लेटे युवक ने कहा, "बल्कि, यह एक बड़ा दिलचस्प नंबर है— वह छोटे से छोटा, जो दो भिन्न प्रकार से दो संख्याओं के घनों का योग है"— $१७२९ = १^३ + १२^३ = ९^३ + १०^३$

प्रश्नकर्त्ता थे ट्रिनिटी कॉलेज केंब्रिज के तत्कालीन प्रोफेसर जे.ई. लिटिलवुड और युवक था महान भारतीय गणितज्ञ रामानुजन।

'नंबर तो उसके हाथ में मानो खिलौने थे,' प्रो. लिटिलवुड लिखते हैं, 'ऐसा मालूम पड़ता है जैसे प्रत्येक नंबर रामानुजन का व्यक्तिगत मित्र हो।'

नंबर थ्योरी तथा शुद्ध गणित की विभिन्न शाखाओं में रामानुजन का शोध-कार्य अभूतपूर्व है। बत्तीस वर्ष की अल्पायु में वह गणित जगत को लगभग चार हजार फार्मूलों की अद्भुत और महत्त्वपूर्ण विरासत छोड़ गये, जो उनकी तीन नोट-बुकों तथा उनके तथाकथित १३० खोये पृष्ठों में हैं, और जो उच्चकोटि के गणितज्ञों के लिए भी एक शताब्दी से अधिक की मूल्यवान सामग्री है।

रामानुजन यानी श्रीनिवास रामानुजन आयंगर का जन्म एक गरीब ब्राह्मण परिवार में २२ दिसंबर, १८८७ को कुंबकोणम-मद्रास (वर्तमान तमिलनाडु) में हुआ था। पिता एक बजाज के यहां खजांची थे। माता प्रखर बुद्धि की महिला थीं। वे इरोड़ की अदालत के एक मुंसिफ की पुत्री थीं।

कहते हैं, रामानुजन के नाना ने अपनी पुत्री के पुत्र-प्राप्ति के लिए नामक्कल की देवी नामगिरि के मंदिर में विशेष प्रार्थना की।

पांच वर्ष की आयु में शिक्षा आरंभ कर जब दो साल बाद वह कुंबकोणम के शहर के स्कूल में पहुंचे, तब इन्हें छात्रवृत्ति मिलती थी। वह बड़े शांत और गंभीर स्वभाव के विद्यार्थी थे। स्मरण-शक्ति इतनी विलक्षण थी कि अपने मित्रों के साथ पाई (π) तथा २ के मान अनेक दशमलव अंकों तक कह डालने में इन्हें बड़ा आनंद आता था।

पंद्रह वर्ष की आयु में जब ये छठवीं कक्षा में थे, तब इनके एक मित्र ने इन्हें जार्ज शूब्रिज कार की एक पुस्तक 'ए सिनोप्सिस ऑफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिचर्ड ऐस्के ने लिखा है, 'रामानुजन का महत्त्व इसलिए नहीं है कि वे एक महान गणितज्ञ थे, वरन् इसलिए भी है कि वे हमें बताते हैं कि मानवीय मस्तिष्क की क्षमता और उसका सामर्थ्य क्या कर सकता है !'

एलीमेंट्री रिजल्ट्स इन प्योर एंड एप्लाइड मैथेमैटिक्स' लाइब्रेरी से उधार लेकर दी थी। इस पुस्तक में उच्च गणित के लगभग छह हजार साध्य हैं, परंतु सन् १८६० के बाद के गणित का कोई उल्लेख नहीं है। रामानुजन की प्रतिभा इतनी प्रखर थी कि केवल एक पुस्तक के अध्ययन से उन्होंने अपने स्वयं अनेक सूत्र प्रतिपादित कर डाले, जो कठिन से कठिनतर होते गये और उनके साथियों और शिक्षकों की समझ के बाहर भी। जार्ज शूब्रिज कार लंदन में एक प्राइवेट कोच थे, जिन्हें उन्हीं के शहर के लोग भूल गये, पर रामानुजन ने उनका नाम अमर कर दिया।

पहले उन्होंने जादुई वर्गों यानी मैजिक स्क्वेयर्स में रूचि ली। इन जादुई वर्गों का प्रचलन बारहवीं या तेरहवीं सदी से चला आ रहा था। आयलर (१७०७-८३, स्विस) और आर्थर कैले (१८२१-९५,ब्रिटिश) जैसे प्रख्यात गणितज्ञ भी मैजिक स्क्वेयर्स में रूचि लेते थे। रामानुजन की प्रथम नोटबुक के पृष्ठ २ पर निम्न जादुई वर्ग बना हुआ है —

१०	२	८
४	५	११
६	१३	१

जिसमें बायें से दायें और ऊपर से नीचे अंकों का योग २० है, पर तिरछे (कर्णवत्) नहीं। रामानुजम ने ऐसे जादुई वर्ग बनाने का प्रयत्न किया, जिनमें कर्णवत् योग भी वही हो। इसी नोट बुक के प्रथम अध्याय में इस प्रकार का एक जादुई वर्ग दिया हुआ है —

६	१	८
७	५	३
२	९	४

जादुई वर्गों के पश्चात् रामानुजन ज्यामितीय प्रश्नों की ओर मुड़े। ईसा पूर्व पांचवीं सदी के प्लेटो के समय से चले आ रहे 'तीन सनातन प्रश्न' बहुत प्रसिद्ध हैं। वे हैं— १. किसी कोण को सम त्रिभाजित करना। २. किसी वृत्त के क्षेत्रफल के बराबर वर्ग का निर्माण करना। और ३. किसी घन के दुगुने आयतन के बराबर घन बनाना।

इनकी रचना में केवल रूलर और कंपास का ही उपयोग किया जाता है। रामानुजन ने दूसरे प्रश्न का जो हल प्रस्तुत किया, वह जर्नल ऑफ दि इंडियन मैथेमैटिकल सोसाइटी के सन् १९१३ के अंक में प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने वर्ग की भुजा और वृत्त की त्रिज्या की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंबाई का अनुपात ३५५/१३३ निकाला । यह पाया गया कि यदि वृत्त का क्षेत्रफल एक लाख चालीस हजार वर्ग मील हो, तो उनके द्वारा निकाले गये वर्ग की भुजा की लंबाई अपेक्षित लंबाई से केवल एक इंच बड़ी होगी ।

बीजगणित के सूत्र

बीज गणित में भी रामानुजन ने अनेक सूत्र निकाले । उनमें कई तो बड़े से बड़े गणितज्ञों की समझ के परे हैं । कहते हैं कि नामगिरि की देवी स्वप्न में आकर रामानुजन को उनकी गणित की शोध में मार्गदर्शन करती थीं और रामानुजन सुबह उठकर अपनी नोट बुक में स्वप्न में आये हुए उन सूत्रों को लिख डालते थे ।

सोलह वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की,परंतु अंगरेजी में कमजोर होने के कारण इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके । सन् १९०९ में बाइस वर्ष की उम्र में इनका विवाह हो जाने पर उनके सामने जीवन-यापन की समस्या आ खड़ी हुई ।

दीवान बहादुर रामचंद्र राव जो उस समय नैलोर के कलैक्टर थे, गणित में भी रूचि रखते थे । वे लिखते हैं, 'कई वर्ष पहले मेरे एक भतीजे ने अपने एक साथी के बारे में बताया, जो अद्भुत प्रश्न करता था और एक रोज वह उसे ले भी आया था । मेरे सामने एक गरीब लड़का अस्त-व्यस्त कपड़ों में खड़ा था, परंतु उसकी आंखों में एक अजीब चमक थी । उसके हाथ में एक कागज का टुकड़ा था, जिसमें उसने कुछ प्रश्न लिख रखे थे । मैंने उन्हें देखा पर वे मेरे गणितीय ज्ञान के दायरे बाहर थे ।'

रामचंद्र राव ने मद्रास इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रो. ग्रिफिथ के माध्यम से पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमैन सर फ्रांसिस स्प्रिंग से रामानुजन का परिचय करा दिया, जिससे उन्हें ऑफिस में क्लर्क की नौकरी मिल गयी ।

रामानुजन ने अपना गणित का अध्ययन जारी रखा । इनका प्रथम शोध-पत्र जे.एम.आई.एस. में सन् १९११ में प्रकाशित हुआ । फिर उसी पत्रिका में सन् १९१२ में बर्नोली नंबर्स पर उनका एक लंबा शोध-लेख भी प्रकाशित हुआ ।

पूर्णांक नंबरों के क्षेत्र में रामानुजन का योगदान अपूर्व है ।

रूढ़ संख्याओं का विस्तार

रामानुजन का रूढ़ संख्याओं का सिद्धांत बहुत विख्यात हुआ । सन् १८९६ में फ्रांस और बेल्जियम के गणितज्ञों ने इस विषय पर कुछ शोध किये थे, परंतु रामानुजन ने जो परिणाम निकाले, वे इतने महत्त्वपूर्ण मालूम हुए कि उनके शिक्षक शेणु अय्यर (जो बाद में उनकी जीवनी लेखक भी बने) ने उन्हें इंगलैंड के उस समय के सबसे विख्यात प्रोफेसर जी.एच.हार्डी को अपने शोध अनुसंधानों से अवगत कराने का परामर्श दिया । रामानुजम ने प्रो. हार्डी को एक पत्र लिखा,जिसमें अपना परिचय देते हुए उन्होंने अपने १२० सूत्र भी संलग्न कर दिये ।

गणित के इतने कठिन सूत्र पाकर प्रो. हार्डी स्तंभित रह गये । इन सूत्रों के संबंध में वे लिखते हैं, 'एक दृष्टि में इन्हें देखकर कहा जा सकता है कि वे किसी महान प्रतिभा-प्राप्त गणितज्ञ द्वारा लिखे गये हैं । वे निश्चय ही सत्य होंगे क्योंकि, यदि वे सत्य नहीं होते तो कोई भी उन्हें ढूंढ़ निकालने की कल्पना तक नहीं कर सकता ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंदन प्रवास

इसके बाद प्रो. हार्डी ने रामानुजन को लंदन बुलाने का बड़ा प्रयास किया, परंतु उनके वहां जाने में दो मुख्य बाधाएं थीं— एक तो जाति का बंधन और दूसरी, अपनी मां की अनुमति प्राप्त न होना । मां की अनुमति उन्हें विचित्र प्रकार से प्राप्त हुई । प्रो. हार्डी लिखते हैं, 'एक रात्रि रामानुजन की मां ने स्वप्न में देखा कि उनका पुत्र एक बड़े हॉल में यूरोपियनों के बीच बैठा है और देवी नामगिरि उन्हें निर्देश दे रही हैं कि वे अपे पुत्र के जीवन की उद्देश्य-पूर्ति में बाधा न बनें ।' अंततः सन् १९१४ में उन्होंने इंगलैंड के लिए प्रस्थान किया । उस समय उनकी ख्याति अन्य देशों में भी फैल चुकी थी । क्योंकि रामानुजन ने विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के अनुरूप अध्ययन नहीं किया था, इसलिए प्रो. हार्डी को उन्हें विषय की प्रारंभिक शिक्षा देनी पड़ी । प्रो. हार्डी लिखते हैं, 'मैंने जितना उन्हें पढ़ाया, उससे कहीं अधिक उनसे सीखा ।'

रामानुजन शुद्ध शाकाहारी थे । लंदन में अपना भोजन स्वयं बनाते थे । परंतु वहां की जलवायु तथा रहन-सहन की रीति-रिवाज उन्हें रास नहीं आयी और सन् १९१७ से वह अस्वस्थ रहने लगे । जब हालत अधिक बिगड़ गयी तो वे भारत लौट आये । अगले वर्ष २६ अप्रैल, १९२० को टी.बी. से उनकी मृत्यु हो गयी ।

रामानुजन को हर कोई गणितज्ञ नहीं समझ सकता । उनके कई साध्य अभी तक सिद्ध नहीं हो पाये हैं । प्रो. रिचर्ड ऐस्के लिखते हैं, 'प्रो. हार्डी ने कहा है कि यह दुर्भाग्य है कि रामानुजन सौ वर्ष पहले पैदा हुए । मैं कहता हूं अच्छा होता यदि वे सौ वर्ष बाद पैदा होते । इस युग में कठिन से कठिनतर सवाल सामने आते जा रहे हैं । हमें इस समय रामानुजन सदृश्य प्रतिभा की और आवश्यकता है ।'

रिचर्ड ऐस्के आगे लिखते हैं, 'रामानुजन का महत्त्व इसलिए नहीं है कि वे एक महान गणितज्ञ थे, वरन् इसलिए भी है कि वे हमें बताते हैं कि मानवीय मस्तिष्क की क्षमता और उसका सामर्थ्य क्या कर सकता है !'

—१०/१२ नेहरू नगर (पूर्व)
भिलाई-४९००२०

तथाकथित 'खोये' १३० पृष्ठ

अपने जीवन के अंतिम वर्ष में रामानुजन गंभीर रूप से अस्वस्थ थे । इस अवधि के बारे में श्रीमती रामानुजन कहती हैं, 'वे कंकाल-मात्र रह गये थे, उनके लिखे गये पृष्ठों को मैं संभाल-संभाल कर इकट्ठा करती जाती थी ।'

बगैर जिल्द के इन १३० पृष्ठों में लगभग छह सौ सूत्र हैं, जो प्रो. जी.एन. वाट्सन के पास लगभग ४० वर्ष निरर्थक पड़े रहे, इसलिए उन्हें 'खोये' कहा जाता है ।

श्रीमती वाट्सन ने इन पृष्ठों को प्रो.आर.ए.रैंकिन तथा प्रो. जे.एम. व्हिटेकर के साथ ट्रिनिटी कॉलेज, केंब्रिज की लाइब्रेरी में जमा करा दिया, जिनकी पुनर्खोज पेंसिलवेनिया स्टेट यूनीवर्सिटी के प्रो. जार्जइ.एंड्रूज ने सन् १९७६ के आसपास की और अपने शोध कार्य में उनका उपयोग किया । विंसकंसिन यूनीवर्सिटी के प्रो. रिचर्ड ऐस्के लिखते हैं, 'रामानुजन ने अपने अंतिम वर्ष में जो कार्य किया, वह कोई अत्यंत प्रतिभाशाली गणितज्ञ अपने संपूर्ण जीवन में भी कदाचित ही कर पाये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान

मामला गबन का

अनिलकुमार शर्मा, नेपाल : मैं प्रधानाध्यापक हूं। दो वर्ष पहले एक अध्यापक ने पुलिस में मेरे विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करायी कि मैंने उसके वेतन का गबन किया है। मामला न्यायालय में है। दरअसल, मैंने उसका वेतन विद्यालय के कैशियर के पास जमा करा दिया था और उसकी जमा-रसीद भी कैशियर से ले ली थी। जमानत के समय यह रसीद मैंने न्यायालय में पेश की थी। अब वह रसीद मुझसे खो गयी है,लेकिन उसकी फोटोस्टेट कापी मेरे पास है। कृपया, बताएं न्यायालय को फोटोस्टेट कापी मान्य होगी या नहीं ?

मूल दस्तावेज के प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत किये जाने का अपना ही महत्व है, लेकिन मूल दस्तावेज के खो जाने पर अन्य उपलब्ध प्रमाणों का सहारा लिया जा सकता है। आपके विद्यालय में वेतन वितरण करने तथा उसका विवरण रखने का क्या तरीका है— यह आपने नहीं लिखा। वैसे वेतन की राशि कैशियर को देने पर अपनी रोकड़ बही में उसका उल्लेख किया होगा— आपके पास रसीद उस तथ्य की पुष्टि के रूप में ही थी। रसीद खो जाने का प्रमाण देते हुए आप अपने पास उपलब्ध फोटो कापी को न्यायालय में प्रस्तुत करें। इसके साथ कैशियर की बही आदि प्रमाण रूप में प्रस्तुत कराएं।

बैंक परेशान कर रही है

नीतिक्षमा, सिद्धार्थनगर : मैं, मेरी बहन व मां को एक कंपनी की बैलेंसड फंड योजना के अंतर्गत एक बैंक की सभी शाखाओं पर सममूल्य पर देय लाभांश अदायगी आदेश (वारंट) प्राप्त हुए थे। हमने उन्हें नौगढ़ (सिद्धार्थ नगर) स्थित अपने खातों में करा दिया। परंतु एक महीना बीतने के बाद भी बैंक ने हमारे खातों में रकम अदा नहीं की। उनका कहना है कि उन्होंने अदायगी के लिए वारंटों को बैंक की जारी करनेवाली शाखा को भेजा हुआ है, वहां से क्लीयर होने पर उनका भुगतान कर दिया जाएगा। क्या, ऐसा करके बैंक हमें परेशान नहीं कर रही ?

यह उत्तरदायित्व रकम अदा करनेवाली कंपनी का था कि वह संबंधित बैंक की शाखाओं में रकम अदायगी की व्यवस्था करती। लाभांश अदायगी आदेश एक चैक के समान देय होता है। आपको पैसा मिलने में विलंब हुआ है, पर ऐसा तो नहीं है कि आपको रकम देने से इनकार किया गया हो। किसी भी बैंक की शाखा द्वारा चैक या देय आदेश जारी करनेवाली शाखा से चैक या आदेश के विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकारी लेने को अनुचित नहीं कहा जा सकता ।

किरायेदारों को संरक्षण

सुरेंद्रकुमार, अमरोहा (उ.प्र.) : तीस साल से हम एक किराये के मकान में रह रहे हैं । मकान मालिक की मृत्यु हमारे आने से अठारह साल पूर्व हो चुकी थी और वह मकान किसी के नाम नहीं कर गये थे । हम उनकी लड़की के लड़के को मनीआर्डर से किराया भेजते रहे हैं । हमें बाद में पता चला कि मकान मालिक की एक और लड़की है । लेकिन उसके लड़कों ने मकान पर कभी अपना दावा नहीं किया । मकान-मालिक की ओर से बीस साल तक गृहकर जमा नहीं कराया गया, तो हमने गृहकर अपने नाम से जमा करा दिया । अब वह मकान बेचने के लिए हमसे मकान खाली कराना चाहते हैं । बताइए, क्या कानून हम किरायेदारों को कोई संरक्षण देता है या नहीं ?

आपने मकान किससे किराये पर लिया था ? पूर्व मकान-मालिक की मृत्यु आपने मकान किराये पर लेने से पहले हो गयी थी । मकान का स्वामित्व, उत्तराधिकार के अधिकार के आधार पर साधारणतः दोनों लड़कियों को प्राप्त हो गया । आप भी बराबर मनीआर्डर से किराया भेज रहे हैं । नियमानुसार यह ही माना जाएगा कि लड़की का लड़का अपनी मां के लिए किराया प्राप्त कर रहा है ।

गृहकर देने का उत्तरदायित्व मकान मालिक का ही होता है । गृहकर न मिलने की स्थिति में नगरपालिका किरायेदारों को नोटिस देकर उनसे किराये की रकम जमा कराने का आदेश दे सकती है, लेकिन आपने किसी भी आदेश के बगैर ही गृहकर जमा कर दिया ।

उत्तर प्रदेश में किरायेदार से उत्तर प्रदेश शहरी संपत्ति (किराये पर देना, किराया व बेदखली विनिमय अधिनियम, १९७२) में वर्णित आधारों पर ही मकान खाली करवाया जा सकता है । मकान बेचने के उद्देश्य से मकान मालिक आपसे मकान खाली नहीं करा सकता ।

विधि -विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

विवाह-पूर्व का उपनाम

अशोककुमार शर्मा, प्रतापगढ़ : लड़कियां पढ़ाई के दौरान, विवाह से पूर्व अपने नाम के साथ जो उपनाम (जातिनाम) लगाती हैं, उसे दूसरी जात या उपजात में शादी करने के बाद बदलना पड़ता है, तो इससे विवाह पूर्व के प्रमाण-पत्रों के आधार पर नौकरी करने में कोई वैधानिक अड़चन तो नहीं आएगी ?

लड़कियों के विवाह पूर्व का उपनाम साधारणतया विवाह के बाद बदल जाता है । इससे व्यक्ति की पहचान पर कोई अंतर नहीं पड़ता । और न ही शैक्षिण प्रमाण-पत्र के आधार पर नौकरी करने में कोई वैधानिक व्यवधान ही पड़ता है । उचित यह रहता है कि वे विवाह से पूर्व नाम के साथ विवाह के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नाम का भी उल्लेख कर दें । इससे नौकरी वर्तमान नाम से की जा सकेगी और शैक्षणिक योग्यता के लिए विवाह के पूर्व के नाम की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी ।

शिकायत की धमकी

आर.जेता, दमोह : मैं शासकीय महाविद्यालय में इतिहास विषय का प्राध्यापक हूं । साथ ही मैं प्रशासनिक प्रतियोगी-परीक्षाओं हेतु कोचिंग भी करता हूं । एक वर्ष पूर्व महाविद्यालय से मैंने इस आधार पर अवकाश लिया था कि मुझे आई.ए.एस. परीक्षा के साक्षात्कार हेतु जाना है, जबकि साक्षात्कार हेतु मेरा चयन ही नहीं हुआ था । मेरे एक उस समय के मित्र, जिससे अब अनबन हो गयी ने, मेरे इस झूठे आधार पर अवकाश लेने के कृत्य की शिकायत उच्चाधिकारियों को करने की धमकी दी है । क्या मेरे खिलाफ कार्यवाही हो सकती है ?

शासकीय सेवा पूर्णकालिक होती है इसलिए साधारणतया अन्य कार्य करने की अनुमति नहीं होती । प्रशासनिक प्रतियोगी-परीक्षाओं हेतु कोचिंग का कार्य करने की आपने अपने विभाग से अनुमति ली या नहीं— इसका उल्लेख आपने नहीं किया । आपने गलत आधार पर छुट्टी ली, इसके लिए आप पर विभागीय कार्यवाही की जा सकती है ।

अपील में देरी

राकेशकुमार, कटक : एक मुकदमे का निर्णय हमारे खिलाफ हो गया । अपील नियमानुसार निर्धारित समय के बाद दस दिन में दाखिल की गयी । दरअसल, वकील साहब के मुंशी अपील दाखिल करना भूल गये । मुंशी ने देरी के लिए कोई अलग से दरखास्त भी नहीं लगायी । अब सुनवाई की तारीख आनेवाली है । मुझे डर है कि कहीं देरी से कारण अपील रद्द ही न कर दी जाए ।

दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश-४१ नियम ३ ए (१) के अंतर्गत यह व्यवस्था है कि यदि कोई अपील निर्धारित समयावधि के बाद प्रस्तुत की जाए तो उसके साथ एक आवेदन भी प्रस्तुत करें, जिनमें उन कारणों का वर्णन करें, जिनके आधार पर अपीलकर्ता न्यायालय को देरी के कारणों पर विश्वास दिला सके । इस प्रकार का आवेदन व शपथ-पत्र अपील के साथ दिया जाना चाहिए । अपील समय पर तैयार होने के बावजूद, वकील के मुंशी की भूल से अपील समय पर दर्ज नहीं कराया जाना, स्वीकार योग्य आधार है ।

यह आवेदन आप अब न्यायालय में दे सकते हैं । आवेदन समय-सीमा अधिनियम (१९६३) की धारा ५ व दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ४१/नियम (१) अंतर्गत दिया जाना चाहिए । देश के उच्च न्यायालय में विशेष रूप से ए.आई.आर. के १९८१ केरला २४०, १९८६ कर्नाटक १९९, १९८४ बंबई ३९० व १९८७ उच्चतम न्यायालय १३५३ वर्णित निर्णयों का आप लाभ ले सकते हैं ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

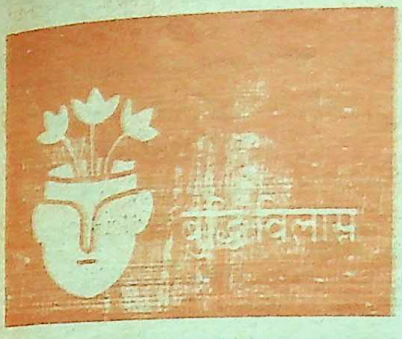

१. किसी संख्या के चतुर्थांश और तृतीयांश में ३:४ अनुपात है। वह न्यूनतम संख्या क्या है ?

२. क. ऋग्वेद में अग्नि देवता की स्तुति कितने सूक्तों में की गयी है।

ख. पृथ्वी-सूक्त किस वेद में है ?

३. भारत में पहला सम्राट कौन था जिसने नौसेना के महत्त्व को समझा था और नौसैनिक विभाग की स्थापना भी की थी ?

४. क. मई-दिवस की शुरुआत कहां, कब और कैसे हुई थी ?

५. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने 'आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता' किसे बताया था ?

६. क. भारतीय संविधान कब लागू हुआ था ?

ख. भारतीय संविधान में 'मौलिक कर्त्तव्य' कब जोड़े गये ?

७. क. विश्व का सबसे नीचे बसा हुआ नगर कौन-सा है ?

८. क. हाल ही में सबसे बडी छिपकली कहां पायी गयी है ?

ख. उसका आकार व वजन कितना है ?

९. क. मध्यप्रदेश सरकार का १९९६ का राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान किसे प्रदत्त किया गया है ?

ख. किस भारतीय छाया चित्रकार का नाम लिम्का बुका ऑव रेकॉर्ड में हाल में दर्ज किया गया है ?

१०. महिलाओं की एक हजार मीटर की दौड़ में नया विश्व इंडोर रेकॉर्ड किसने कायम किया है ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालीद्वीप के प्रेतपूजक वैद्य—बालियान

● डॉ. राजेन्द्र मिश्र

बालीद्वीप में आज भी नब्बे प्रतिशत लोग बालियानों से ही उपचार कराना पसंद करते हैं। भारतीय ओझा-सोखा लोगों की तरह ये पारंपरिक वैद्य, जिन्हें बालियान कहा जाता है, अपनी कला से कठिन रोग को भी, कुछ ही महीनों में ठीक कर लेते हैं। मैंने एक रोगी को देखा जिसे लकवा मार गया था। घरवाले उसे डोली पर लादकर ले आये थे। वह हाथ तक नहीं हिला सकता था। परंतु तीसरे ही महीने बालियान ने उसे दौड़ने योग्य बना दिया था। यह सारा कमाल बालियान अपनी कुलपरंपरा-प्राप्त तंत्रशक्ति से करता है।

कौन हैं ये बालियान ?

बालियानों को समझने के लिए बालीद्वीप की सामाजिक पृष्ठभूमि जाननी आवश्यक है। बालीनरेश धर्मोदयनदेव की रानी महेंद्रदत्ता, जावानरेश मकुटवंशवर्धन की कन्या थी। उसे जावा के संस्कृत-शिलालेखों में 'यवराजलक्ष्मी तथा गुणप्रियधर्मपत्नी' आदि विरुदों से अलंकृत किया गया है। दुर्भाग्यवश वह बचपन से ही तंत्राभिचार एवं कापालिक धर्म में अनुरक्त हो गयी थी। बालीद्वीप की साम्राज्ञी बनते ही उसने समूचे द्वीप में वैष्णवोपासना बंद करा दी तथा गांव-गांव में तांत्रिकों, कापालिकों एवं वाममार्गी साधकों का जाल-सा बिछा दिया।

प्रजा आतंकित हो उठी तथा विरोध करनेवाले लोग तंत्र प्रयोग से लूले, लंगड़े, अंधे बनाये जाने लगे। प्रजा की यह विपत्ति जब धर्मोदयनदेव वर्मा (९८६-१०२२ ई.) को ज्ञात हुई तो उन्होंने जिद्दी रानी को निर्वासित कर दिया— बुरवन के जंगल में (यह स्थान बाली की राजधानी डेनपसार से प्रायः ३४ कि.मी. उत्तर-पूर्व में स्थित ग्यान्यार जिले के कुतरी गांव के पास है)

उदयन की मृत्यु के बाद महेंद्रदत्ता को 'रांगडा' (अर्थात् रंडा, विधवा) कहा जाने लगा। उसके अत्याचार इतने बढ़ गये कि उदयन के पुत्र सम्राट एरलंग ने भराड़ नामक महातांत्रिक को जावा से भेजकर, उसकी हत्या करवा दी। रांगडा को प्रेताधीश्वरी महिषासुरमर्दिनी के रूप में, कुतरी गांव में ही एक मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया गया जो आज भी प्रेतसमर्थकों का आकर्षण केंद्र बना है।

भराड़ एवं रांगडा के अभिचार-युद्ध की लोमहर्षक कथा प्राचीन जावी में लिखे गये 'जलोनरंग' नामक ग्रंथ में सुरक्षित है। समूचे इंडोनेशियाई द्वीपों में रांगडा के नानाविध मुखौटे दूकानों पर मिलते हैं जिन्हें दीवार में टांग देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में रोग-दोष अथवा प्रेतबाधा नहीं होती है ।

रांगडा की सिद्धि प्राप्त करनेवाले साधकों को ही बालियान कहा जाता है । ये बालियान दो प्रकार के होते हैं— बालियान विशद तथा बालियान देग्झ,देग्झ,देग्झ ान ।

बालियान-विशद तो आयुर्वेद का पंडित होता है । वह शास्त्रोक्त मंत्रप्रक्रिया (जैसे ओंकार मंडित ताबीज अथवा मंत्रपूत गंगाजल— तोया अर्मिता आदि) के साथ ही साथ अपने हाथ से बनायी गयी औषधियों से रोगी को ठीक करता है । बालियान विशद द्वारा निर्मित क्वाथ, अवलेह तथा रसायनवटियां अत्यंत लोकप्रिय तथा लाभप्रद होती हैं । परंतु बालियान देग्झ, देग्झ,देग्झ ान की बात ही कुछ ओर है क्योंकि वह केवल अपनी विलक्षण प्रेतसिद्धि, रांगडाकृपा तथा कुलदेवता के अनुग्रह से रोगोपचार करता है और देखते ही देखते, रोग को हड्डी, पत्थर या कोयले की शक्ल में शरीर से बाहर निकाल लेता है । इस प्रक्रिया में न तो देह से खून निकलता है, न ही कोई घाव बनता है । चार-छह बार की इसी प्रक्रिया से रोगी एकदम स्वस्थ हो जाता है । जिस बालियान से मेरा घनिष्ठ संपर्क था वह 'कैंसर' को भी निर्मूल कर देने का दम भरता था ।

जब मैंने बालियानों से इलाज कराया

उन दिनों मैं बाली के प्रेततंत्र का गहराई से अध्ययन कर रहा था । बालियानों की विलक्षणता मै सुन चुका था अतः उनसे मिलने को उत्कंठित भी था । एक दिन मेरा मित्र धर्मयशा मुझे मेलायू गांव ले गया जहां उसके एक मित्र का इलाज चल रहा था । वह बालियान जाति से 'शत्रिय' (क्षत्रिय) था । उसकी उम्र चालीस के आसपास थी ।

बालियान के घर के अहाते में प्रवेश करते ही मैं हतप्रभ हो उठा । विविध अवस्था की

पचासों रूप-सौंदर्य की प्रतिमाभूत युवतियां, वृद्धाएं, बच्चियां तथा पुरुष वहां अर्धनग्न बैठे थे । कटिवस्त्र के अतिरिक्त उनकी देह पर कुछ भी नहीं था । हां, युवतियां अपने वक्षस्थल को या तो बाहों में समेटे थीं या फिर उतारे गये वस्त्र से ही ढंके हुए थीं । सब के हाथों में अगरबत्तियां थीं जिसका धुआं वे सब अपने अंग-प्रत्यंग में लगा रहे थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

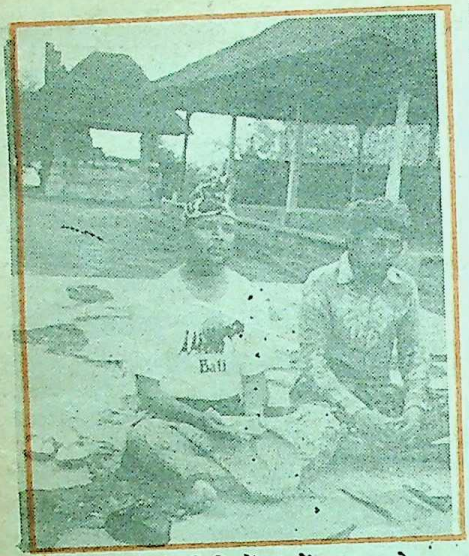

पुरा पनलुसान (तंत्र सिद्धि केंद्र) में पूजा करते हुए

मेरा रूप-रंग तथा शरीर-सौष्ठव तो सबसे अलग था । अतः मेरे प्रणाम करते ही बालियान ने मुसकराकर मेरे मित्र से पूछा—

—बरू इनी ? (क्या ये नये हैं ?)

धर्मयशा ने बताया— या या ! पंडित बेसार इनी दी यूनिवर्तितास उदयना । मेंगजार भाषा संसकिर्ता । सूडाह दतंग दरी इंडिया । मऊ ताहू तेंतांग बालियान (हां-हां, ये उदयन यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं । संस्कृत भाषा पढ़ाते हैं । भारत से आये हैं । बालियान के विषय में जानना चाहते हैं)

प्रसन्नमन बालियान ने स्वागत करते हुए मुझे बैठाया और मैं उसकी उपचार-विधि देखने लगा । परंतु कैमरे पर हाथ लगाते ही उसने मुझे मना कर दिया, फलतः मैं उस अद्भुत दृश्य को चित्रांकित नहीं कर सका ।

प्रत्येक रोगी की पहले विधिवत नारियल के तेल से मालिश की जाती है । इसके बाद रोगी चार-पांच की संख्या में, बालियान के गृहमंदिर (पेमिराजन) में जाते हैं । मंदिर-द्वार के स्तंभ पर एक पात्र में जल तथा गुलाब के फूल रखे रहते हैं । लोग बारी-बारी से आगे बढ़ते हैं, गुलाब के फूल से जल का छींटा अपने अंग-प्रत्यंग पर देते हैं और मंदिर के गर्भगृह के समक्ष बिछी चटाई पर यथास्थान बैठ जाते हैं ।

एक दल के आ जाने पर, बालियान की पत्नी पूजा प्रारंभ करती है । सबको तीन बार नारियल के तेल का आचमन कराकर तीन-तीन जलती अगरबत्तियां हाथ में दे दी जाती हैं और देवता का ध्यान करने को कहा जाता है । बालियान की पत्नी लंबे साबर मंत्रों का पाठ करती हुई, सभी रोगियों पर जल छिड़कती रहती है ।

पेमिराजन-पूजा की समाप्ति के बाद रोगी बाहर आते हैं तथा अगरबत्ती के धुएं से शरीर को सेंकते जगह-जगह बैठ जाते हैं । धुआं उस अंग में अधिक दिया जाता है जहां रोग है ।

अपनी बारी आने पर रोगी बालियान के पास जाता है और चटाई पर लेट जाता है । अब रोग-परीक्षण (डॉयगनासिस) होता है । बालियान अपनी तांत्रिक अंगूठी दोनों हाथों की मध्यमा पर, दोनों पैरों के अंगूठों पर, दोनों कानों पर तथा माथे पर लगाता है । जिस किसी भी अंग में रोग होगा, तांत्रिक अंगूठी का संस्पर्श करते ही रोगी, हलाल किये जाते बकरे की तरह चीख पड़ता है । बस रोग पकड़ में आ गया ।

अब बालियान कटोरी से तेल लेकर रोगयुक्त अंग-विशेष पर मालिश करने लगता और चार-पांच मिनट की मालिश के बाद ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्युतगति से चमड़ी फाड़कर, सफेद या मटमैला नुकीला पत्थर का टुकड़ा निकालकर रोगी के हाथ में रख देता है। यह सब इतनी तीव्र गति से होता है कि रोगी को चीखने तक का अवसर नहीं मिलता। पत्थर निकलते ही वह राहत महसूस करता है। उसके फटे चमड़े पर थोड़ा तेल लगा दिया जाता है और प्लास्टिक की थैली में थोड़ा और तेल दे दिया जाता है, घर पर लगाने के लिए !

रोग की भयावहता के आधार पर रोगी को दो-चार बार और आना पड़ता है— पंद्रह-बीस दिन के अंतर से। इस उपचार की कोई फीस नहीं। हां, रोग ठीक हो जाने पर जब पेमिराजन (गृहमंदिर) में रोगी से अंतिम देवपूजा करायी जाती है तब वह अपनी इच्छा से दक्षिणा या खाद्य-सामग्री, फल-फूल या उपहार बालियान की पत्नी को अर्पित करता है।

बालियान ने इसी विधि से मेरा भी परीक्षण किया। तांत्रिक अंगूठी के विविध केंद्रों पर लगाने पर भी जब [illegible] कोई हलचल नहीं हुई तो उसने मुसकरा[illegible]र कहा— बागुस (बहुत अच्छा) फिर उस[illegible] मेरे पेट की मालिश प्रारंभ की— ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, आड़े, तिरछे ! थोड़ी ही [illegible]र में मेरा उदर रुई के फाहे-जैसा नरम [illegible] गया और बालियान की अंगुलियां मेरी पी[illegible] की पसली में कंघी की तरह सिरहन पैदा करने [illegible]गीं। जब तक मैं कुछ और सोचता, बालियान [illegible]ने मेरी नाभि के नीचे का मांस दो अंगुलि[illegible] से समेटा और नाभिरंध्र को चीरकर, एक नु[illegible] मटमैला पतला-सा पत्थर का टुकड़ा बाहर [illegible]काल लिया। मजाक करने के लिए उसने उ[illegible] ही बाहर निकाला और मुझे

बाली के हिंदुओं का विश्वास है कि पादप्रक्षालन के ही साथ, आगंतुक के साथ आये प्रेत-पिशाच विनष्ट हो जाते हैं तथा मंत्रजप से व्यक्ति स्वयं पूर्ण सुरक्षित हो जाता है।

दिखाने के बाद ही, पूरे पत्थर को बाहर निकाला। मैं पहले तो चीखा, बाद में बालियान के ठहाके के ही साथ स्वयं भी हंसने लगा।

बालियान ने बताया कि यही पत्थर कोमल अंग में (गाल ब्लैडर आदि) बनता है तो जानलेवा हो जाता है परंतु मांसल भाग में रहकर कोई नुकसान नहीं करता। प्रेतोपासक बालियान (वैद्य) का यह हस्तकौशल देखकर मैं दंग रह गया।

यह संस्मरण कथा मेलायू गांव के बालियान पा सुमेरु की है। एक और बालियान से मैं मिला जो प्राइमरी स्कूल (सेकोलाह पूर्वा) के मास्टर थे। उन्होंने दियासलाई की तीली धंसा-धंसाकर मेरी परीक्षा की और स्वास्थ्य अच्छा बताया। उन्होंने अभूतपूर्व कृपा करते हुए, मेरे दोनों नथुनों में सिरके-जैसी किसी क्षाररस की ऐसी पिचकारी मार दी कि मेरा बुरा हाल हो गया। लगा— जैसे नथुनों में गीली मिट्टी भरकर उन्हें ठस्स बंद कर दिया गया है। मैं सारी रात मुंह से सांस लेता रहा। परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मवेला में मेरी नाक खुल गयी और सारी देह में अद्भुत स्फूर्ति का संचार हो गया ।

सावधान ! घर में कोई बीमार है

घर में किसी के बीमार पड़ते ही बालीवासी केवड़े की आरीनुमा पत्ती को दुहरा मोड़कर, घर के बाहर रस्सी से लटका देते हैं । उसे देखते ही हर व्यक्ति सावधान हो जाता है और अकस्मात् घर में प्रवेश नहीं करता । नाते-रिश्तेदार बाहर ही पांव धोकर तथा 'सावेनपत्र' (दुहरी केतकी) को श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर, रोगविषयक साबर मंत्र विशेष का जाप करते हुए ही घर में जाते हैं । बाली के हिंदुओं का विश्वास है कि पादप्रक्षालन के ही साथ, आगंतुक के साथ आये प्रेत-पिशाच विनष्ट हो जाते हैं तथा मंत्रजप से व्यक्ति स्वयं पूर्ण सुरक्षित हो जाता है ।

बालीवासी प्रायः प्रत्येक रोग के पीछे किसी 'लेयाक' (भूत-प्रेत) का हाथ मानते हैं और तुरंत ही 'बालियान ड्रे.ड्रे.ड्रे.ान' के पास ही ले जाते हैं । बड़ी लंबी और लोमहर्षक कहानी है इन प्रेतोपासक बालियानों की । जो रोग का उपचार करते हैं मंत्रोषधि अथवा प्रेतसिद्धि से, वे तो सहृदय हैं, लोकोपकारी हैं । परंतु इनसे भी अधिक नृशंस उन बालियानों का क्या कहना जो मात्र शक्ति सिद्धि या बदला लेने के लिए संहार एवं अनर्थ करते रहते हैं । रोग उत्पन्न करना या किसी पर मारण-मोहन-उच्चाटन का प्रयोग कर देना उनके बायें हाथ का खेल है । ये नृशंस बालियान मृत्यु के मूल्य पर भी अपना कोई रहस्य प्रकाशित नहीं करते । सारे समाज से अलग-थलग रहते हैं । किसी भी व्यक्ति के वस्त्र, कटे नाखून, कटे बाल, पैर तले की माटी, लार-थूक या पान की पीक (बासेह) को पाते ही ये मंत्र-तंत्र प्रयोग से उसकी चेतना को वशीभूत करके उसे नाना प्रकार की यातना देते हैं । फलतः हर व्यक्ति ऐसे अघोरी बालियानों से सावधान रहता है ।

सर्वाधिक भयंकर वे अघोरी बालियान हैं जो प्रेत-शरीर तक धारण करने में समर्थ हैं । उन्हें 'पंगिवा' कहते हैं । ये स्वेच्छानुसार लेयाक-विशेष (वानर, सांप, वन्यसूकर, टोके आदि) का रूप धारण करते हैं और फिर अपने मूल रूप में भी आ जाते हैं । इन दोनों कार्यों की पृष्ठभूमि में होती है बालियानों की चिरकालिक घोर साधना तथा मंत्रसिद्धि ! 'उत्तुंग-बेकुंर' नामक जंगली वानर का रूप धारण करने के लिए जिस मंत्र की सिद्धि बालीद्वीप के तंत्रग्रंथों में बतायी गयी है, वह इस प्रकार है—

'अः हेड्ड हेड्ड्. हुड्. । उः हेक्क हेक्क हेक्क हेक्क ।'

मनचाहा प्रेतशरीर (बेताल) धारण करानेवाला एक दूसरा सिद्ध साबर मंत्र इस प्रकार है—

ओंग इडिपकुरुम्मवकू संग कुंडविजयमूर्तिमिजिकन गेनि रिंग् सरीर सस्ति । ओंग् गेनि प्रतिह, रिंग् पेपुसुह, गेनि अबगं रिंग् हति, गेनि कुलिंग रिंग् उंसिलान्, गेनि इरेंग् रिंग् अपेस, गेनि परबूत रिंग् नाबि, मितु रिंग् सिवछारंकु अंग् अंग् अंग् अंग् अंग् जेमिजिल्...ओंग् सिदिस्वस्ति बांधुक सेर् सेर् सेर् ।

इस मारणमंत्र में कुंडविजयमूर्ति (नामक देवता) से मारणयोग्य व्यक्ति के अंग-प्रत्यंग में (पुतिह्=नेत्र, पेपुसुह=फुफ्फुस, फेफड़ा, हति=हृत, हृदय, नाब=नाभि आदि) भयावह आग (गेनि=अग्नि) पैदा कर देने की प्रार्थना की गयी है ।

—अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
हिमाचल प्रदेश वि.वि. शिमला-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायिका

● अ. चेखोव

उस समय वह जवान, सुंदर और मीठे गलेवाली थी।

एक दिन पाशा के घर में उसके एक आशिक, कोल्पाकोव साहब बैठे थे। गरमी के मारे दम घुट रहा था। कोल्पाकोव साहब अभी खाना खाकर सस्ती शराब की पूरी बॉटल पी चुके थे। इसलिए उनकी तबीयत ठीक नहीं थी।

दोनों उस समय का इंतजार कर रहे थे कि गरमी टल जाने के बाद बाहर घूमने जाएं।

अचानक दरवाजे की घंटी बजी। कोल्पाकोव साहब जो जैकेट और जूते उतारकर बैठे थे, उठकर खड़े हो गये और पाशा की तरफ सवाल-भरी निगाह से देखा।

"शायद पोस्टमैन हो या कोई सहेली", गायिका बोली।

कोल्पाकोव साहब न तो पोस्टमैनों से शरमाते थे, न पाशा की सहेलियों से। फिर भी अपने कपड़े उठाकर दूसरे कमरे में चले गये। पाशा दौड़कर दरवाजा खोलने गयी। उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने देखा कि यह पोस्टमैन नहीं था और सहेली भी नहीं। एक अनजानी महिला थी यह, जवान, सुंदर, अच्छे-अच्छे कपड़े पहननेवाली और देखने में अभिजात!

महिला का चेहरा पीला था। वह मुश्किल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

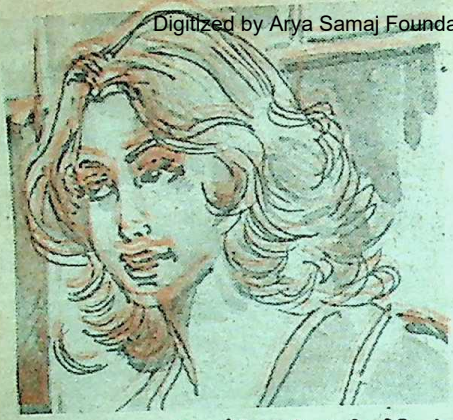

से सांस ले रही थी । जैसे ऊंची-ऊंची सीढ़ियां चढ़कर आयी हो !

"जी, फरमाइए", पाशा बोली ।

महिला ने जवाब नहीं दिया । एक कदम आगे बढ़ी, कमरे पर नजर दौड़ायी और बैठ गयी । लगता था कि थकावट या बीमारी के कारण वह खड़ी नहीं हो सकती थी । फिर कुछ कहने की कोशिश करते हुए वह अपने पीले होंठ हिलाने लगी ।

"मेरे पति आपके यहां हैं ?" आंसूभरी आंखें पाशा की तरफ उठाकर महिला ने पूछा ।

"कौन पति ?" पाशा फुसफुसायी । डर के मारे उसके अंग-अंग ठंडे हो गये ।

"कौन पति ?" उसने कांपते हुए फिर पूछा ।

"मेरे पति । कोल्पाकोव साहब !"

"न...नहीं मेम-साहब...मैं...मैं किसी पति को नहीं जानती ।"

एक मिनट तक सन्नाटा छाया रहा । अनजानी महिला ने अपने पीले होंठों पर रुमाल लगाया । वह कांप रही थी और सांस खींच रही थी । पाशा उसके सामने स्तब्ध खड़ी थी और आश्चर्य तथा भय भरी निगाहों से उसे देख रही थी ।

"तो आप कह रही हैं कि वह यहां नहीं हैं ?" महिला की आवाज कठोर हो गयी । मुसकान आ गयी अजीब-सी ।

"मैं...मैं नहीं जानती, आप क्या पूछ रही हैं ।"

"आप नीच हैं, गंदी हैं, कमीनी हैं !" महिला बड़बड़ायी पाशा की तरफ नफरतभरी निगाह डालकर, "हां, हां, नीच...बहुत खुश हूं मैं कि तुमसे यह कहने का मौका मिला आखिर मुझे !"

पाशा को यह लगा कि इस गोरी, पतली अंगुलियोंवाली कुलीन महिला को मैं किसी गंदी चीज-जैसी मालूम पड़ती हूं । अपने फूले-से लाल गालों और चेचक के दागों से भरी नाक पर शरम आने लगी । पाशा को यह भी लगा कि अगर मैं पतली होती, पाउडर नहीं लगाती होती तो अपनी बेशरमी छिपायी जा सकती थी और तब इस अनजानी महिला के सामने लजाना नहीं पड़ता !

"मेरे पति कहां हैं ?" महिला बोली, "हां वह यहां हैं कि नहीं मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन मैं यही कहने आयी हूं कि उन पर गबन का आरोप है । खोज अभी शुरू हुई है उनके मिलते ही गिरफ्तार किये जाएंगे । यह फल चखिए ।"

महिला उठी और बड़ी घबराहट में इधर-उधर घूमने लगी । पाशा उसकी तरफ ताक रही थी और मारे डर के कुछ समझ नहीं पा रही थी ।

"वह मिलते ही आज पकड़े जाएंगे", महिला सिसकी । उसकी आवाज में अपमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और घृणा थी ।

"हां मुझे मालूम है, उन्हें इस भयानक उलझन में किसने फंसाया है ! नीच, हरामजादी कहीं की !" (महिला का मुंह बिगड़ गया और नाक चढ़ गयी, घृणा के मारे)"

"मैं बेबस हूं, सुनो नीच, मैं बेबस हूं, तुम्हारा बस है, लेकिन मेरा और मेरे बच्चों का साथ देनेवाला भी है ! भगवान सब कुछ देखता है । न्याय है भगवान का ! मेरे हर आंसू, हर टूटी रात का दाम चुकाएगा भगवान ! समय आएगा जरूर, मुझे जब तुम याद करोगी ।"

फिर सन्नाटा छा गया । महिला निराशा में घूम रही थी । पाशा उसे चौंककर देख रही थी । मालूम होता था कि कोई मुसीबत आने वाली थी ।

"मेम-साहब मैं कुछ नहीं जानती", पाशा बोली और रो पड़ी ।

"झूठ !" महिला चिल्लायी । उसकी आंखें चमकीं, "मुझे सब-कुछ मालूम है ! मैं तुम्हें बहुत पहले ही जान चुकी हूं ! पिछले महीने वह तुम्हारे यहां रोज आया करते थे !"

"जी हां, तो क्या हुआ ? क्या है इसमें ? मेरे पास बहुत-से मेहमान आते ही हैं । मैं किसी को जबरदस्ती नहीं घसीटती ! जो चाहे वह आ जाए !"

"मैं कह रही हूं कि गबन खुल गया है । उन्होंने ही गबन किया है । तुम्हारी-जैसी... तुम्हारे लिए ही उन्होंने जुर्म किया !"

"सुनो", महिला पाशा के सामने रुकी ।

"तुम्हारे जीवन में कोई मर्यादा या सिद्धांत नहीं हो सकते । तुम बस, इसीलिए जी रही हो कि दूसरों का जीवन बरबाद किया जाए, यही तुम्हारा इरादा है । लेकिन शायद तुम इतनी नीच हो चुकी हो कि तुममें तनिक भी मानवता नहीं बची । उनकी पत्नी और बच्चे हैं । अगर उनको सजा हो जाए तो हम बच्चों के साथ भूखों मर जाएंगे । समझी न ! फिर भी उनको और हमें गरीबी और बेइज्जती से बचाने का एक रास्ता है । अगर मैं आज ही नौ सौ रूबल वापस कर दूं, तो उनको छोड़ दिया जाएगा ।"

"कौन-से नौ सौ रूबल ?" पाशा ने धीमी आवाज में पूछा ।

"मैं कुछ नहीं जानती । मैं...मैंने नहीं लिये... ।"

"मैं तुमसे नौ सौ रूबल नहीं मांगती । तुम्हारे पास होंगे ही नहीं । बात कुछ और है । तुम-जैसी वेश्याओं को मेहमान जेवरात के

महिला ने जवाब नहीं दिया । एक कदम आगे बढ़ी, कमरे पर नजर दौड़ायी और बैठ गयी । लगता था कि थकावट या बीमारी के कारण वह खड़ी नहीं हो सकती थी । फिर कुछ कहने की कोशिश करते हुए वह अपने पीले होंठ [illegible] लगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोहफे दिया करते हैं । मेरे पति के दिये हुए जेवरात वापस करो बस !"

"मेम-साहब मुझे उनसे कुछ नहीं मिला !" पाशा चिल्लायी । वह कुछ सोचने लगी ।

"तो पैसे कहां गये ? मेरी और अपनी सारी दौलत उड़ा दी है उन्होंने । सरकारी भी । कहां गया यह सब-कुछ ? सुनो...मैं गुस्से में थी, तुमको बहुत ही बुरी बातें सुना चुकी हूं, पर माफी चाहती हूं । हां, तुम मुझसे नफरत करती होगी, लेकिन...अगर तुम क्षमा कर सकती हो, तो मेरे मन की बात समझ लो । मैं दुआ मांगती हूं, जेवरात दे दो !"

मारे ।

"यह क्या दे रही हो ? मैं भीख तो नहीं मांगती, वही मांग रही हूं जो तुम्हारा अपना नहीं । जो मेरे पति से, उस कमजोर, बदनसीब आदमी से चूस लिया है तुमने ! बुधवार को जब मैंने तुम्हें उनके साथ देखा नदी के किनारे, तुम कीमती जेवरात की लड़ी पहने हुए थीं ! मेरे सामने मासूम बच्ची का नाटक मत रचाना ! आखिरी बार पूछ रही हूं, जेवरात दोगी या नहीं ?"

"अजीब-सी बातें हैं आपकी ।" पाशा को बुरा लगा ।

महिला ने ठंडी सांस लेकर कांपते हाथों से जेवरात रूमाल में लपेट लिये । कुछ बोली नहीं, सिर भी नहीं हिलाया । जल्दी से चली गयी । पासवाले कमरे का दरवाजा खुला, कोल्याकोव साहब निकले । मुंह पीला-सा था । ऐसे दीख रहे थे जैसे कि कुछ कड़वा खा लिया हो, आंखों में आंसू चमक रहे थे ।

"ओह !" पाशा बोली, "मैं क्यों न देती, लेकिन भगवान मुझे दंड दे अगर झूठ बोलूं, उनसे मुझे कुछ नहीं मिला है । सच बात है ।" हां, ठीक है, पाशा शरमायी ।

"दो चीजें मिली हैं, एक बार । लीजिये, आप चाहें तो मैं दे देती हूं ।"

पाशा ने एक डिब्बी निकाली और एक सस्ती-सी सोने की कलाई और एक पतली-सी माणिकवाली अंगूठी महिला को दे दी ।

"यह लीजिए ।"

महिला का मुंह लाल हो गया अपमान के

"सच कह रही हूं कि आपके पति से मुझे इस कलाई और अंगूठी को छोड़कर कुछ नहीं मिला है । वह यहां बस मीठे पकोड़े ही खाया करते थे ।"

"मीठे पकोड़े !" महिला क्रोधपूर्वक हंसी "घर में बच्चों के लिए खाना नहीं, और वह मीठे पकोड़े लाकर देते हैं । तो क्या तुम जेवर वापस करने से साफ इनकार कर रही हो ?"

कोई जवाब नहीं मिला, तो महिला बैठ और कुछ सोचने लगी ।

"अब क्या करूं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

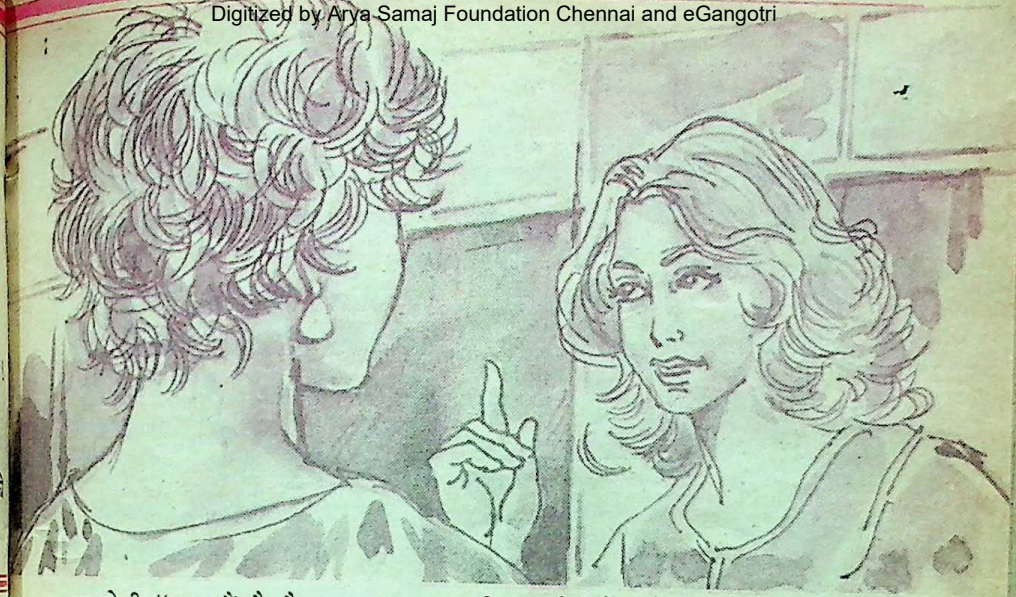

वह बोली, "अगर मैं नौ सौ रूबल वापस नहीं कर देती, तो उनके लिए सब खत्म है, और मेरे लिए, मेरे बच्चों के लिए भी ! मार डालना नीच को या पांव पड़ना इसके ?"

महिला ने मुंह पर रुमाल लगाया और रो पड़ी ।

"मैं क्षमा चाहती हूं ।"

वह सिसकी, "तुमने ही मेरे पति को बरबाद किया है, तो बचाओ उन्हें ! उन पर कुछ दया न हो, तो बच्चे...बच्चे...क्या कुसूर है बच्चों का ?"

पाशा ने मन-ही-मन भूखे बच्चों की तसवीर बनायी और खुद रो पड़ी ।

"मैं क्या करूं मेम-साहब ।"

वह बोली, "आप कहती हैं कि मैं नीच हूं और आपके पति का दिवाला पिटवाया, लेकिन भगवान साक्षी है, मुझे उनसे कुछ नहीं मिला है ! हमारी कंपनी में सिर्फ 'मोटी' को एक अमीर रखता है, बाकी गायिकाएं सूखी रोटी से भी खुश होती हैं । आपके पति एक पढ़े-लिखे, भोले आदमी हैं, वह आया ही करते थे । हम लोग इसके बिना नहीं रह सकतीं ।"

"मैं बस जेवरात मांग रही हूं ! जेवरात दे दो ! मैं रो रही हूं, अपनी इज्जत गिरा रही हूं । चाहो तो मैं पांव पड़ूं तुम्हारे । यह देखो ।"

पाशा घबराकर चिल्लायी और डर के मारे हाथ नचाने लगी । उसे यह लगा कि यह सुंदर-सी महिला, जो नाटक-जैसी ऊंची बातें कर रही है सचमुच पांव पड़ सकती है— हां, अपने गौरव से, अपने को ऊंचा करने के लिए और गायिका को नीचे गिराने के लिए !

"हां ठीक है, मैं जेवरात दे दूं ।"

पाशा बोली आंखें पोंछकर, "यह लीजिये । लेकिन आपके पति के नहीं हैं, दूसरे मेहमानों के हैं...यह लीजिए..."

पाशा ने आलमारी की ऊपरी डिब्बी बोली और हीरे की एक पिन, मूंगों की मनकी, कई कलाइयां और अंगूठियां निकालीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

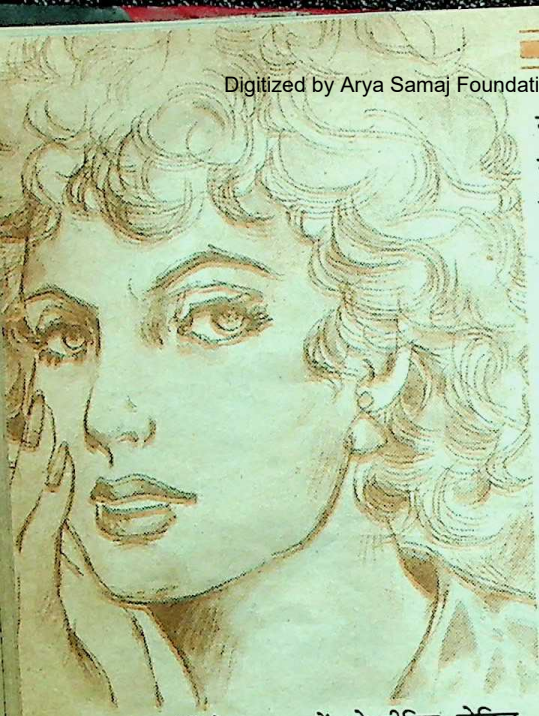

"लीजिये, अगर चाहें, तो लीजिए, लेकिन मुझे आपके पति से कुछ नहीं मिला है । अगर आप शरीफ-ईमानदार हैं, उनकी धर्मपत्नी हैं, तो अपने सुहाग को अपने पास रखिए...है, न । मैंने उन्हें थोड़े ही बुलाया, वह खुद आ गये..."

महिला ने आंसूभरी आंखों की नजर जेवरात पर डाली और बोली ।

"यह तो पूरा नहीं हुआ...पांच सौ तक भी नहीं होगा..."

पाशा ने झपटकर डिब्बा पलटा और एक सोने की कलाईवाली घड़ी, सिगरेट केस और कई पिन निकालकर बोली ।

"बस और कुछ नहीं बचा । चाहें तो आप तलाशी ले लें ।"

महिला ने ठंडी सांस लेकर कांपते हाथों से जेवरात रुमाल में लपेट लिये । कुछ बोली नहीं सिर भी नहीं हिलाया । जल्दी से चली गयी । पासवाले कमरे का दरवाजा खुला, कोल्पाकोव साहब निकले । मुंह पीला-सा था । ऐसे दीख रहे थे जैसे कि कुछ कड़ुवा खा लिया हो, आंखों में आंसू चमक रहे थे ।

"क्या मुझे आपसे कोई जेवरात मिले हैं ?" पाशा गुस्से में बोली, "कब मिले जेवरात, बताइए तो सही !"

"जेवरात ! क्या बकवास है जेवरात ! कोल्पाकोव ने सिर थामा, "हे भगवान ! वह तो तेरे सामने रो रही थी, अपनी इज्जत मिट्टी मिला रही थी । मैं पूछ रही हूं, आपने मुझे जेवरात दिये हैं कि नहीं !" पाशा चिल्लायी ।

"हे भगवान, वह इतनी शरीफ, इतनी ईमानदार, इतनी इज्जतदार औरत है और...इस वेश्या के पांव पड़नेवाली थी । मैं ही कुसूरवार हूं ! मैंने ही यह सब होने दिया है !" कोल्पाकोव साहब ने सिर थामा और कराहने लगे, "नहीं, नहीं, मैं अपने को कभी माफ नहीं करूंगा । नहीं करूंगा ! हट जा, छोड़ दे मुझे, नीच !" चिल्लाकर उसने पाशा को घृणा से कांपते हाथों से हटाया ।

"वह पांव पड़ने को तैयार थी । और किसके ! तेरे ! हाय भगवान !"

उन्होंने जल्दी से अपनी पोशाक पहन ली और पाशा की तरफ नफरतभरी नजर डालकर चले गये ।

पाशा लेट गयी और जोर से रोने लगी । अपने जेवरात की याद आयी । पछताने लगी कि किसलिए दे दिये ! फिर याद आयी कि साल पहले उसने बेकसूर होते हुए अपने एक मेहमान व्यापारी की मार भी खायी थी । वह और भी आंसू बहाने लगी ।

(अनुवाद : डॉ. यूजीनिया वैनीन

कादम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां से शुरू हुआ चांद-तारे का निशान

● नवीन खन्ना

अर्द्धचंद्र और सितारे के निशान को आमतौर पर इसलाम का प्रतीक माना जाता है। संसार के बहुत से मुसलिम देशों ने इस निशान को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में अपनाया हुआ है।

तुर्की ने प्रयोग किया

आधुनिक युग में अर्द्धचंद्र और सितारे को राष्ट्रीय-प्रतीक के रूप में सर्वप्रथम तुर्की द्वारा प्रयोग किया गया। तुर्की के राष्ट्रवादी इस चिह्न को २५ अगस्त, १९२२ की संध्या के साथ जोड़ते हैं। इसी दिन कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की सेना ने यूनानी सेना को अनतोलिया के युद्ध में पराजित किया था। तुर्की के लोगों का मानना है कि इस दिन यूनानी सेना के रक्त की नदी में अर्द्ध चंद्र और तारे का बिंब परिवर्तित होकर तुर्की की विजय का संदेश दे रहा था। यही कारण है कि तुर्की का राष्ट्रीय-ध्वज लाल रंग का है जिसमें श्वेत रंग का अर्द्धचंद्र और सितारा प्रदर्शित है।

तुर्की की देखा-देखी अन्य मुसलिम देशों ने इसे इसलाम के प्रतीक के रूप में अपना लिया। जिन अन्य देशों ने इस चिह्न को अपने राष्ट्रीय ध्वज पर प्रदर्शित किया उनमें पाकिस्तान, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, मैरिटेनिया इत्यादि प्रमुख हैं लेकिन इस चिह्न को राष्ट्रीय ध्वज में अपनानेवाले देशों ने चिह्न के रंग अथवा इसकी पृष्ठभूमि के रंग में अंतर अवश्य रखा है। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं चिह्न में प्रदर्शित सितारों के कोणों की संख्या में भी अंतर मिलता है।

बायें से अल्जीरिया, मैरिटेनिया, तुर्की और पाकिस्तान के चिह्न

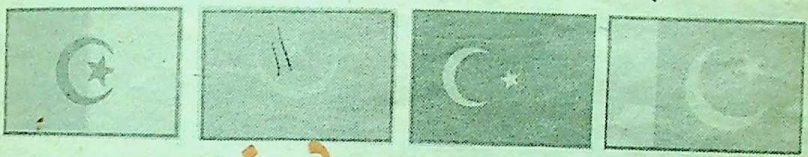

कृष्ण-पक्ष का चंद्र और शुक्र ग्रह

चंद्र का आकार यदि अंगरेजी अक्षर 'सी' की तरह हो तो यह कृष्ण-पक्ष का चंद्र होता है। इसके विपरीत अंगरेजी अक्षर 'डी' के आकार का चंद्र, शुक्लपक्ष का चंद्र होता है। शिवजी की जटाओं में प्रदर्शित चंद्र का खाली वाला भाग अकसर ऊपर की तरफ होता है। यह कृष्ण-पक्ष का ही चंद्र है। मुसलिम देशों द्वारा अपनाया गया चंद्र भी कृष्ण-पक्ष का चंद्र है। लेकिन पाकिस्तान इत्यादि देशों में प्रतीक के रूप में दोनों प्रकार के अर्द्धचंद्रों का प्रयोग देखने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलता है । ध्वज के पारदर्शी होने के कारण 'सी' का आकार दूसरी तरफ से 'डी' की तरह प्रतीत होता है । इस कारण वहां सामान्यतः दोनों प्रकार के चंद्रों के प्रयोग को स्वीकार कर लिया गया है, यानी सितारा कभी चंद्र की दाहिनी तरफ होता है और कभी बायीं तरफ ।

अल्जीरिया के राष्ट्रीय ध्वज में लाल रंग का अर्द्धचंद्र हरी तथा श्वेत दोनों पट्टियों में फैला हुआ है और लाल रंग का सितारा चंद्र के दाहिनी तरफ श्वेत पट्टी पर अंकित है । मैरिटेनिया के राष्ट्रीय ध्वज में हरी पृष्ठभूमि में श्वेत रंग का चंद्र और तारा प्रदर्शित है लेकिन चंद्र ऊपर की तरफ से खाली है और तारा चंद्र के ऊपर ही है । पाकिस्तान के राष्ट्रीय ध्वज में श्वेत रंग का चंद्र और श्वेत तारा हरित पट्टी पर है, लेकिन चंद्र का खालीवाला भाग ऊपर के दाहिने कोने की तरफ है । ट्यूनीशिया के राष्ट्रीय ध्वज में लाल पृष्ठ भूमि के भीतर स्थित एक श्वेत चक्र में लाल रंग का ही अर्द्धचंद्र और सितारा दिखाया गया है । अर्द्धचंद्र और सितारे के चिह्न में शुक्र-ग्रह को सितारे के रूप में प्रदर्शित करते हैं । शुक्र-ग्रह आकाश का सबसे अधिक चमकवाला सितारा है ।

वैज्ञानिकों की असहमति

अमरीका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा के ज्योतिर्विद ब्रेडले स्केफ्रर तुर्की के राष्ट्रवादियों के इस तर्क से सहमत नहीं हैं कि २५ अगस्त, १९२२ की रात्रि में शुक्र-ग्रह अर्द्धचंद्र के संपुट में था । उपरोक्त वैज्ञानिक के अनुसार उस रात्रि में न केवल शुक्र-ग्रह चंद्र से काफी दूर हटकर था, बल्कि दो अन्य ग्रह शनि और बृहस्पति भी इसके बहुत निकट थे । सबसे बड़ी बात तो यह

मेसोपोटेमिया सभ्यता में कई हजार वर्ष पूर्व अर्द्धचंद्र और तारे का प्रयोग मिलता है।

है कि उस दिन चंद्र आकाश में उसी रूप में था जैसा तुर्की के ध्वज पर प्रदर्शित है । इससे यूनानियों के खून की नदी में परछाई वाली बात गलत सिद्ध होती है, क्योंकि वैसी स्थिति में चंद्र को उल्टा दिखाया जाना चाहिए था ।

यदि इस बात को मान भी लिया जाए कि राष्ट्रीय प्रतीक चुनते समय जिन पहलुओं पर विचार किया जाता है, जरूरी नहीं कि वे सभी पहलू उस स्वीकृत चिह्न में समाहित किये जा सकें । फिर भी यह बात माननी पड़ेगी कि उपरोक्त चिह्न स्वयं तुर्की के ओटमन सुल्तानों द्वारा सन् १९२२ से बहुत पहले प्रयोग में लाया जाता रहा है । तुर्की द्वारा सन् १८६३ में जारी किये गये प्रथम डाक टिकट पर यह निशान छपा हुआ मिलता है । इसके अतिरिक्त तुर्की के सुल्तान सलीम तृतीय ने उन्नीसवीं सदी के पूर्व में इस निशान को अपने झंडे में अपनाया था ।

भारत, मिस्र, मेसोपोटेमिया इत्यादि विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं में इस चिह्न को हजारों वर्षों से महत्त्व देने के प्रमाण पाये जाते हैं । भारत में शिव के मस्तक पर अर्द्ध चंद्र प्रदर्शित है । प्राचीन मिस्र के 'इआ' देवता के मस्तक पर भी यही चिह्न प्रदर्शित है । इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त लीबिया, यमन, इजरायल, रोमानिया, इंगलैंड इत्यादि देशों में इस चिह्न के प्रयोग विषयक हजारों वर्ष पुराने प्रमाण मिलते हैं । इस विषय में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण सिकंदर महान के पिता फिलिप (ई. पू. ३३९) के युद्ध संबंधी भी है'। इसके एक पक्ष की देवी का प्रतीक चिह्न अर्द्धचंद्र और सितारा था ।

मेरीलैंड के अंतरिक्ष ज्योतिर्विद इमाद अहमद तथा वाशिंगटन के पुरातत्व-ज्योतिर्विद गेराल्ड हार्किंस दोनों यह मानते हैं कि रमजान की शबे कद्र २७ को कुरान मुहम्मद साहब पर नाजिल हुआ तथा उस रोज चंद्र और शुक्र ग्रह उसी स्थिति में थे जिस स्थिति में यह निशान कई देशों में राष्ट्रीय चिह्न में प्रदर्शित है ।

इसमें संदेह नहीं कि पिछले ४५०० वर्ष से उपरोक्त चिह्न विश्व की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं तथा धर्मों में किसी न किसी रूप में प्रचलित रहा है । एक मान्यता यह भी है कि कैलेंडर में प्राचीनकाल से विभिन्न सभ्यताओं द्वारा 'चंद्रतिथियां' तथा 'सौर तिथियां' प्रयोग में लायी जाती रही हैं । चंद्र तिथियों को प्रयोग में लानेवाली सभ्यता तिथि-पत्रों और अन्य धार्मिक स्थलों पर प्रतीक के रूप में चंद्र के चिह्न को प्रदर्शित कर देती थी । प्रारंभ में अर्द्धचंद्र और तारे का निशान ज्योतिष संबंधी गणनाओं का चिह्न था, जिसे बाद में अन्य क्षेत्रों में भी प्रयुक्त किया जाने लगा लेकिन इसे सर्वाधिक महत्त्व इसलाम के उदय के बाद ही मिला । इसके बाद यह निशान मुसलिम सिक्कों, मसजिदों कशीदाकारी, पॉट्री इत्यादि का अभिन्न अंग बन गया ।

—सी-४५२, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८

इनके भी बयां जुदा-जुदा

उसका होना भी न होने के बराबर है
जिसके अंदर कोई तूफान नहीं होता

—मोहम्मद हनीफ

मैंने तो यूं ही राख में फेरी थीं उंगलियां
देखा जो गौर से तेरी तस्वीर बन गयी

—सलीम बेताब

हर्फ व कलम को जिसने नये जाविए दिये
क्या शख्स था कि अपने ही साये में सो गया

—अख्तर होशियारपुरी

तुम सलामत रहो हजार बरस
हर बरस के हों दिन पचास हजार

—गालिब

भरे तो कैसे परिंदा भरे उड़ान कोई
नहीं है तीर से खाली यहां कमान कोई

—जकी तारिक

देखा है अक्ल-वालों को आपस में उलझते
दीवानों को दीवाने से लड़ते नहीं देखा

—दिवाकर राही

अब भी इक उम्र पे जीने का न अंदाज आया
जिंदगी छोड़ दे पीछा मेरा मैं बाज आया

—शाद अजीमाबादी

अचानक सोनेवाला देर से बेदार था शायद
ज्यादा जागनेवालों को गहरी नींद आती है

—शक्स

दहशत में देख के वह रोज बुलाता था मुझे
अब जो बस्ती में हूं मौजूद तो घर गायब है

—अब्दुल अलीम तालिब

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

"यार, आप लोगों की तरफ कैसे रहे चुनाव ?"

"लगभग शांति रही । बस...चार-पांच ही मरे ।"

●

"आप क्या करते हैं ?"

"जी, सरकारी महकमे में हूं ।"

"तो, यूं कहिए न, कि कुछ नहीं करते । सिर्फ मौज करते हैं ।

शहर के एक चिड़ियाघर में नन्हे शावक को गरमी से बचाने के लिए कूलर की व्यवस्था की गयी ।

मित्र ने यह खबर सुनी तो कह उठे, "देख रहे हो । क्या नसीब हैं और एक हम हैं, खस की टट्टियां भी नसीब नहीं ।"

मैंने उन्हें समझाया, "दोनों स्थितियों में बहुत अंतर है । शावक राष्ट्रीय संपत्ति हैं । उन्हें बचाना राष्ट्र का कर्त्तव्य है, अभी इस देश का नागरिक राष्ट्रीय संपत्ति की परिभाषा में नहीं आता है ।"

—महेश राजा

पति, "बेगम आज बाजार से मेरे लिए कंघी लेते आना ।"

पत्नी, "क्योंजी, दो साल पहले ही तो खरीदकर दी थी, वह कहां गयी ।"

पति, "बेगम, कंघी का आखिरी दांत आज ही टूटा है ।"

●

कंजूस पति, "चलो, एक-एक भेल और हो जाए"

पत्नी, "लेकिन अभी तो हमने एक भी भेल नहीं खायी ।"

पति, "याद करो, पांच साल पहले जब हम यहां घूमने आये थे तब नहीं खायी थी क्या !"

—संजय पठाड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

मौसम

एक बुढ्ढे ने
दूसरे बुढ्ढे से कहा
चेहरा गमगीन है !
दूसरे ने कहा—
मौसम रंगीन है ।

—विभा कुमारी

वायदे

उन्होंने
चुनाव में
वायदे बड़े-बड़े
कर दिये
मगर बाद में
हाथ खड़े
कर दिये ।

कबिरा

कबिरा खड़ा दूल्हों के
बाजार में
कहता यूं मुसकाए
जो भी तगड़ा माल दे
छांट बीन ले जाए ।

औकात

इनकी
उनकी
सब की
देख ली औकात
नतीजा वही
ढाक के
तीन पात ।

—मिश्रीलाल जायसवाल

विज्ञापन

विज्ञापन
परिवार नियोजन के
ज्यों-ज्यों बढ़ते जाए
कहें कबीरदास
हंस-हंस कर
त्यों-त्यों जनसंख्या
बढ़ती जाए ।

—राजश्री

याद

हंसी है या
कल-कल निनाद
जनाब
बीते दिन की याद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दर्पण के पीछे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● विजया वासुदेव

चारों तरफ अफसरों की कोठियां और बीच में बेहद बड़ा-सा लॉन । जहां बच्चों के लिए तरह-तरह के झूले, फिसल पट्टी, मेरी गो राउंड आदि हैं और इसी पार्क के एक कोने में है— तरणताल । कोठियों का लॉन खत्म होने के बाद काली डामर की पक्की सड़क पर साढ़े सात और पौने आठ के बीच का दृश्य एकदम ऐसा होता है— जैसे सेनाएं खेमे से अपने-अपने रथ पर सवार होकर निकल रही हों ।

साहबों की गाड़ियां साढ़े सात से पौने आठ के बीच सरसराती निकल जाती हैं और उसके बाद उनकी मेम साहब (वैसे यह संबोधन विचित्र लगता है जब बिखरी-सी अलसाई लापरवाह ऊंची-नीची साड़ी में, या बेतरतीब कुर्ते पाजामे में या ऊंचे-नीचे कफ़ान या गाउन में लगायी हुई नितांत भारतीय गोरी से भूरी और भूरी से श्यामवर्णी होती छवि को देखकर) एक दूसरे से सड़क के आर-पार समाचारों का आदान-प्रदान करती है । वैसे भी कल सुबह इसी हाल में ये यहां मिली थी । दोपहर को भी एक दूसरे को या तो फोन किया होगा या स्वयं ही पधारकर मिलने का मिलना हो गया चाय पार्टी साथ में । रात क्लब में ताश या किटी पर थे ही । फिर भी पता नहीं कहां-कहां से समाचार आ जाते हैं सुनने-सुनाने के लिए ।

इसी तरह से ही आयी थी दक्षिण से संगमरमर-सी गोरी । भंवरे-जैसे काले लेकिन एड़ी तक पहुंचने की कोशिश करते काले, घुंघराले बालोंवाली गुड़िया-सी सुकन्या—रंगानाथन । उनके पति जगदीप रंगानाथन काले, लंबे छह फुट से कुछ ऊंचे लेकिन उनके संग बिलकुल भोली-सी निर्मल हंसी बिखराती सुकन्या बिलकुल स्वाभाविक लगती थी—जैसे गहरे हरे पत्तों के बीच खिली चमेली । जब भी जगदीप की गैरहाजिरी में महिला मंडली पधारती सुकन्या इतनी विह्वल उठती कि उसे समझ में नहीं आता वो उनका स्वागत सत्कार कैसे करे ? ये महिला मंडली कम चुस्त चालाक नहीं है । हफ़्ते में एक दिन उसकी पाक कला का अच्छा खासा आयोजन करवा ही लेती । व्यर्थ है यह टेलीफोन अगर उनके आगमन की पूर्व सूचना सुकन्या को न पहुंचाये और आज इडली होनी चाहिए या उतपम अथवा मेढू बड़ा यह सुकन्या नहीं खानेवाली बताएंगी । वो बस बनवाभर लें । सुकन्या इन महिलाओं की तरह नहीं थी । वह भोली, चतुरता नाम मात्र को नहीं है उसमें । हिंदी टूटी-फूटी-सी जानती है और अंगरेजी वैसी ही । लेकिन जहां शब्दों की कमी होती उसे वो अपनी निर्वेग झरती हंसी से पूरा कर लेती है ।

सुकन्या को—जैसे रम्मी की लत ही लग गयी । घर से अपने संग लायी नौकरानी पापा-अम्मा के हवाले कर और रसोई करके अब वो सारे दिन सहेलियों में और रात को पुरुष महिलाओं की मंडली में ताश के बावन पत्तों के बीच खोयी रहती । जगदीप के एक कर्मचारी ने कहा, साहब मैडम ज्यादा तक लगी रही तो आप को भी भूल जाएंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

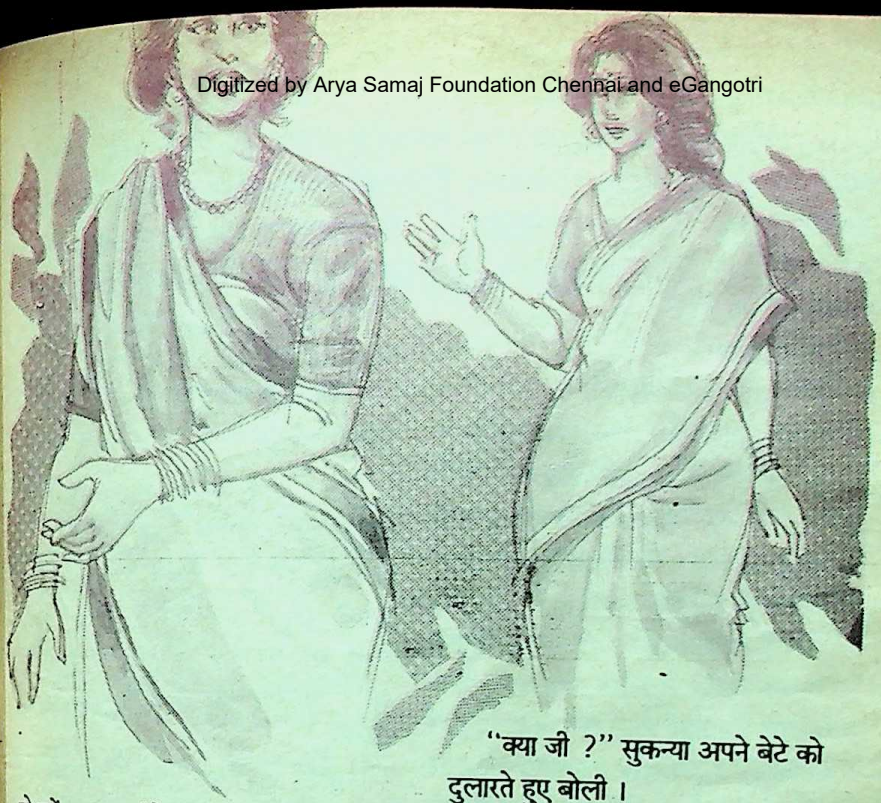

हो इन्हें आप जीते-जागते खिलौने देकर ताश भुलवा दें। जगदीप 'हूं' करके सिगार मुंह में लगाये कुछ सोचते रहे। फिर थोड़ी ही दिन बाद एल. टी. सी. लिया और साथ ही ली महीनेभर की छुट्टियां। कुछ दिन घूमे फिरे। उसके बाद सुकन्या को मायके छोड़कर साहब अकेले लौट आये और खबर दी, ऐसी हालत में ये पहाड़ी जगह उसे सूट नहीं करती, फिर यहां बड़े-बूढ़े भी तो नहीं है कोई। तब की गयी सुकन्या डेढ़ साल बाद लौटी तो उसके गोद में नन्हा सुमेध आठ महीने का था।

एक दिन सुबह जब अफसरों की गाड़ियों का लाव-लश्कर निकल रहा था तो सुकन्या की पड़ोसन मिसिज यादव ने कहा, "सुकन्या तुमने कुछ देखा ?"

"क्या जी ?" सुकन्या अपने बेटे को दुलारते हुए बोली।

"ये तुम्हारे साहब की गाड़ी अपनी लेडी डॉक्टरनी की गाड़ी के पीछे जाती है।"

"तो क्या ? सुकन्या निर्विकार-सी बोली। हर गाड़ी किसी के आगे और किसी के पीछे ही तो जाएगा ही। ये घर 'सेमी सर्किल' में न बना है सारा।

मिसिज यादव ने कहा, "याद करो पहले तो ऐसा नहीं था। आगे हमारे साहब की गाड़ी होती थी। फिर आपकी गाड़ी के पीछे लेडी डॉक्टरनी की।"

"उससे क्या, सुकन्या बेफिक्री-सी अंदर जाने लगी।"

"अरे रुको भी, आने के समय भी देखना। पहले डॉक्टरनी आएंगी फिर तुम्हारा साहब। फिर मिसिज यादव" खीजती-सी आंखों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकन्या को देखते हुए बोली, "बाकी कोई तो इस तरह डॉक्टरनी के पीछे-पीछे नहीं आता । मैं देख रही थी तुम यहां नहीं थी तभी से ये सिलसिला शुरू हुआ । कुछ सोचती कुछ समझने का प्रयास करती सुकन्या बोली, "ये सिलसिला क्या होता जी ?"

"सिलसिला !" मिसिज यादव ने दोहराया, "सिलसिला माने—अफेयर ।"

सुकन्या खिलखिला उठी, "छोड़ो जी आप तो जोक करता है ।" घर की तरफ कदम बढ़ाते हुए वो बोली, "जगदीप तो आंख पूरा खोलकर हमें भी नहीं देखता । दूसरा किसको देकेगा—और क्यूं देकेगा ?"

मिसिज यादव हंस दी, "तुमको क्या देखेगा इतना गोरा रंग होने से अच्छा नहीं । सुकन्या तुम्हारा रंग की चमक से उसकी आंख बंद होती है । डॉक्टरनी काला है तो साहब पूरा आंख खोल के देखता है ।" सुकन्या की हंसी मिसिज यादव की बात ने उसके चेहरे से पोंछ दी । अनमनी-सी वो घर के अंदर आ गयी ।

खाना खाने के लिए जगदीप आये तो उन्होंने घर घुसते ही सुकन्या की उदासी पकड़ ली । खाना लगाने के प्रयास में सुकन्या स्वयं को व्यस्त रखने का प्रयास करती रही । जगदीप ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए पूछा, "तबियत तो ठीक है ना ?" बस इतना पूछना था कि सुकन्या की आंखें सावन-भादों की भरी घटाओं-सी बरस पड़ीं । "हुआ क्या है बताओ तो ? अरे !! अरे !! कैसे बच्चों-सी रो रही हो तुम तो " जगदीप उसका चेहरा अपने हाथों में समेटते हुए बोला, "मुझे पता भी चले आखिर हुआ क्या है ?" मां की चिट्ठी आयी है ?

न में सिर हिलाती सुकन्या बोली, "मां की बहुत याद आ रही है ।" इससे अच्छा बहाना सुकन्या को दूसरा नहीं मिल सकता था । जगदीप लाड़ से दुलारता हुआ बोला, "तो तुम आओ गांव दस-बारह दिन में ले आऊंगा । मैं वालटेयर जा रहा हूं टूर से जाते हुए एक दिन की छुट्टी लेकर तुम्हें गांव पहुंचा दूंगा ।"

"और तुम्हें यहां कौन देखेगा ?" सुकन्या उत्सुक होते हुए बोली ।

चलो मेरे साथ टूर पर चलो । कुछ घूमकर आएंगे तो तुम्हें अच्छा लगेगा । आज ही अपनी पैकिंग— चैकिंग कर लेना । इस बार तो मुन्ना भी हमारे साथ है, ढेर-सारा सामान लेकर जाना पड़ेगा । अब आकर थोड़ा-सा आराम लो ।" जगदीप सौंफ की फंक्की भरते हुए बोला ।

अगले दिन तड़के सुबह ही वह वालटेयर के लिए रवाना हो गयी । इस बार वो पप्पू को भी अपने साथ लेकर गयी । वहां शहर में बच्चे को लेकर कैसे घूमा जा सकता है भला फिर इस बार जितनी खरीदारी करनी है पहले कभी नहीं की । नयी साड़ियां, फैंसी सैंडिल और मेकअप का सामान । हालांकि जगदीप मेकअप से सामान पर खीज रहा था । "क्या फालतू पैसे खराब करती हो तुम्हें क्या करना ये सब । बस तुम्हारे माथे पर बिंदी और लंबी चोटी में गजरा लगा हो । काजल के भी सुंदर दिखती हो, मेरे लिए ही अच्छी हो ।"

"अरे वाह !! सारी दुनिया जानती है सजी-धजी ही अच्छी लगती है फिर तुम्हें प्रोजेक्ट में औरतें कितना कुछ लगाती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व तो दर्पण की छाया की तरह होता है । जहां तक दृष्टि देख पाती है उतना ही सत्य हम पहचानते हैं । शीशे के पीछे पारे की पॉलिश तक कौन देख सकता है । प्रति छवि के पार और महसूस कर सके कांच की चमक के पीछे दरकती गर्द की चुभन । सतही तौर पर यही सही है शायद ।

तो मुझे नाम भी पता नहीं है'।'' सुकन्या अपने अज्ञान पर हंसी ।

''उनकी बात मत करो सुकू । वो जैसे मर्जी रहें तुम अपनी तरीके से रहो जैसी थी वैसी ही । मुझे उन लोगों की तरह तुम्हारा बनने की कोशिश करना भी भला नहीं लग रहा ।''

''अच्छा वो डॉक्टरनी है । क्या गवारों की भाषा बोलती है ।'' ''लेडी डॉक्टर बोलो या डॉ. बोस'' जगदीप बीच में ही देखते हुए बोला ।

''वही सही,हां, डॉ: बोस तो तुम्हें कैसी लगती है' ?'' अब सुकन्या अपनी आंखों में अपनी पूरी चेतना लाकर जगदीप का सूक्ष्म से भी सूक्ष्म भाव पकड़ना चाहती थी । ''उसे क्या लगना है, मैंने तो कभी ध्यान ही नहीं दिया, उस पर । वैसे भी मैं डॉक्टरों से दूर रहता हूं ।'' जगदीप बोला ।

''फिर तुम्हारी जीप रोज उसकी गाड़ी के पीछे क्यों जाती है ?'' सुकन्या ने पूछा । ''हद करती हो तुम भी जगदीप बिगड़कर बोला, उसका घर पहले पड़ता है । इसीलिए उसकी गाड़ी पहले निकलती है । गाड़ी ड्राईवर चलाता है मैं नहीं । इतनी छोटी बात तुम्हारे दिमाग में आएगी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता ।

वालटेयर से वापसी के बाद जीवन एक क्रमबद्ध तरीके से चल रहा था । सुकन्या जब भी पति को बाहर बरामदे में छोड़ने आती उसकी निगाह डॉक्टर बोस की गाड़ी का आना जाना परखती । अब जगदीप डॉक्टर की गाड़ी निकलने से पहले ही जाने लगा और खुशी की सांस सुकन्या के दिल से निकली कि मिसिज यादव ने कहा, ''और सुकन्या कैसी हो '' ''मैं ठीक हूं, हम लोग वालटेयर से घूमकर आये हैं ।'' आज सुकन्या बहुत खुश थी, कितने दिनों की घुटन व शक की पीड़ा से उसने मुक्ति पायी थी ।

''अच्छा किया घूम आयीं । अरे हां तुम्हारे जाने के बाद वो लेडी डॉक्टरनी भी कहीं घूमने गयी थी, उसका भी मन नहीं लगा यहां ।'' और मिसिज यादव ने पूरा मुंह खोलकर अट्टाहास किया । सुकन्या के चेहरे की रंगत एकदम पीली पड़ गयी फिर स्वयं को संभालते हुए बोली, ''अच्छा ।'' और घर के अंदर जाने को मुड़ी । ''अरे कहां चल दी इतने दिन बाद तो मिली हो ।''

''नहीं मुझे घर पर काम है ।''

''अरे ऐसा भी क्या काम जरा सुनो तो ।''

मिसिज यादव पूरी तरह सुकन्या को छेड़ने के मूड में थी । सुकन्या के मुंह से निकल गया, ''नहीं मेरे मिस्टर को ऐसी-वैसी फालतू बात करना पसंद नहीं है ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसी फालतू बात ? लेडी डॉक्टरनीवाली !" और अपनी बात पर जोर से हंसती हुई वह बोली, "अपने बगलवाले घर की मिसिज त्रिपाठी को आवाज देती हुई बोली, "जरा यहां आइए तो मिसिज त्रिपाठी ।" अपने ढीले-ढीले गाउन की बैल्ट कसते हुए वह आयी ।

"क्यों क्या हुआ ?"

"भई जरा सुकन्या को बताओं तो जरा वो लेडी डॉक्टरनीवाली बात ।" दोनों के बीच आंखों से एक मूक संदेश गुजर गया । मिसिज त्रिपाठी अपनी मुसकान समेटते हुए बोली, "अरे छोड़ो भी क्यों बेचारी का दिल दुखाना ? मर्दों की तो जात होती ही ऐसी है ।"

जिस तरह से पूरे दावे के साथ मिसिज यादव बात कर रही थी उससे सुकन्या का सारा हौसला हवा हो गया । वह अपनी रुलायी दबाती घर के अंदर चली गयी ।

सुकन्या को जगदीप ने बहुत उत्साह से घर जाने का समाचार दिया, लेकिन सुकन्या का मौन उसी तरह बना रहा । रत्तीभर भी परिवर्तन नहीं हुआ ।

छुट्टियों के अभाव में जगदीप गांव में ज्यादा नहीं रुक सका । घर से आने वाले पत्रों से पता लग रहा था सुकन्या का मौन उसी तरह चल रहा है । जगदीप की मां ने लिखा था—'लगता है गांव में अब उसका दिल नहीं लगता उदास चुपचाप पड़ी रहती है, खाती-पीती नहीं । ना अपना ही ध्यान है और न ही बच्चे का । आखिर ऐसा कैसे चलेगा ? मुझ से बहू की ऐसी हालत देखी नहीं जाती । तुम आकर इसे अपने संग ले जाओ । यहां पर मामूली वैद्य हैं छोटे-मोटे डॉक्टर हैं सभी को दिखाया है । पर फर्क जरा भी नहीं है । अब जैसा तुम ठीक समझो करो ।'

जगदीप को समझ में नहीं आ रहा था वो क्या करे ? उस दिन जगदीप की जीप वर्क शॉ में थी । त्रिपाठीजी उन्हें अपने संग लेकर अपने घर ही आ गये । मिसिज त्रिपाठी ने चाय आदि का आयोजन किया ।

चाय, पीते-पीते वो बोली, "क्या जगदीप आये हैं ?" चुपचाप सुकन्या को घर छोड़ आये हैं । ऐसे अकेले कैसे कटेगी जिंदगी ?"

"भाभीजी उसकी तबियत ठीक नहीं चल रही ।" जगदीप उदास स्वर में बोला ।

"अरे क्या हुआ उसे ?" मिसिज त्रिपाठी ने चौंककर पूछा ।

"पता नहीं । यहां पर उसने बोलना-खाना दोनों ही बंद कर दिया था । बस हर चीज से उदासीन हो गयी थी । मैंने सोचा घर में चार लोगों में मिलकर बैठेगी ठीक हो जाएगा सब लेकिन गांव से मां की चिट्ठी आयी है । वह भी उदास, परेशान है । सुकू बिलकुल उदास सी हो गयी है ।" मिसिज त्रिपाठी का चेहरा मलिन हो गया, पश्चाताप से जड़-सी बैठी रह गयी । फिर पति की ओर देखकर बोली, "जरा अंदर चलिए ।" त्रिपाठी को अपनी पत्नी का यूं अंदर बुलाना बहुत अटपटा-सा लगा था, "यार जगदीप माफ करना शायद आज ज्यादा ही हुकूमत करने का मन है इनका । मैं अभी आया ।" अंदर कमरे में आते ही त्रिपाठी पत्नी पर खीझ उठा, "ये वक्त था अंदर बुलाने बात करने का, अभी थोड़ी ही देर में तो बाहर ही रहा था ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं" मिसिज त्रिपाठी बोली, "उनके जाने से पहले ही बताना जरूरी है । असल में मिसिज यादव अक्सर ही लेडी डॉक्टर बोस को लेकर सुकन्या को चिड़ाती थी । मजाक ही मजाक में इतना बड़ा कांड हो जाएगा ये तो हमने सोचा ही नहीं था ।"

"क्या ? तुम भी शामिल थी इस छिछोरेपन में ?" त्रिपाठी क्रोध से बोला ।

"मेरे सामने वो चिढ़ा रही थी, तो सुकन्या बड़ी दुखी हो रही थी, अपने पति के सच्चरित्र होने की दुहाई भी दे रही थी । लेकिन जितना अधिक सुकन्या प्रतिवाद करती मिसिज यादव उतना ही ज्यादा चिढ़ाती गयी । मुझे बुरा लग रहा था । पर मैंने भी तब कहां सोचा था इस छोटी-सी घटना का प्रभाव इतना अधिक होगा ।"

अब तुम कहना क्या चाहती हो ?" त्रिपाठी ने पूछा ।

"यही कि आप जगदीप को यहां से अपनी बदली कहीं दक्षिण में करा लेने का सुझाव दो । यहां अगर सुकन्या ठीक होकर आ गयी तब भी वो ठीक रहनेवाली नहीं है । सुकन्या के भोलेपन पर छेड़छाड़ का आनंद लेने का अवसर मिसिज यादव छोड़नेवाली नहीं है, उन्हें पर-पीड़न का आनंद बहुत भाता है ।

"अच्छा तुम कुछ मत कहना मैं जगदीप से स्वयं ही बात कर लूंगा ।" और थोड़े ही दिन बाद जगदीप ने अपना स्थानांतरण हैदराबाद करवा लिया ।

इस घटना को बीते एक दशक हो गया कि अचानक ही एक पूर्व परिचित से भेंट हो गयी । सब पुराने परिचितों के कुशल-क्षेम जानने के

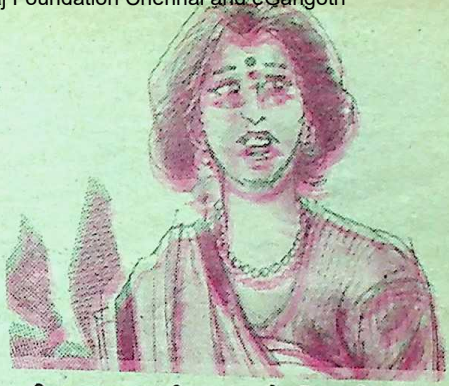

बीच अनायास ही सुकन्या के विषय में पूछ बैठी । सुनानेवाले ने कहा, "आप उन्हें कैसे जानती हैं ? ये जगदीप साहब ने भी पैसे के लालच में पागल से ब्याह कर लिया । अब पछता रहे होंगे । इतने बड़े पद पर हैं और पत्नी, बिखरे बाल उनके पीछे कहीं भी पहुंच जाती है, आफिस में,क्लब में,कहीं भी । न घर का होश है न बच्चों का । वैसे मेरे कहने का बुरा मत मानिएगा जगदीप साहब कोई हीरो तो हैं नहीं, शक्ल सूरत में । पर उनकी मैडम को उन पर हमेशा ही शक लगा रहता है । पागल है वो तो ।"

"ऐसे मत कहिए, पहले वो ऐसी नहीं थी । किसी ने मजाक ही मजाक में उन्हें पागल बना दिया ।" कहना चाह कर भी वह कह नहीं पायी । व्यक्तित्व तो दर्पण की छाया की तरह होता है । जहां तक दृष्टि देख पाती है उतना ही सत्य हम पहचानते हैं । शीशे के पीछे पारे की पॉलिश तक कौन देख सकता है । प्रति छवि के पार और महसूस कर सके कांच की चमक के पीछे दरकती गर्द की चुभन । सतही तौर पर यही सही है शायद । ●

— १/८ कालकाजी एक्सटेंशन,
नेहरू एनक्लेव, नयी दिल्ली-११००१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन में

बचपन में जब
गिल्ली डंडा, कबड्डी
या लुका-छिपी खेलते हुए
मैं गिरता
और छिल जाते घुटने
या बहने लगता खून
तो सबसे पहले दौड़ती मां
पुचकारती
आंचल में छिपा
सख्त हिदायत देती
बरसों बाद
वह पल
मैं फिर से जीना चाहता हूं।

—अजय पांडेय

शिक्षा : बी. एस-सी. (गणित) एल. एल. बी.
आत्मकथ्य : जब कभी भी असमानता देखता हूं और मानवता को सिसकते-तड़पते देखता हूं मन में सहा नहीं जाता और परिणतीस्वरूप कविताएं, कहानियां या नाटक बन जाती हैं।
पता : अधिवक्ता,
इसाई पारा, तुमगांव रोड,
महासमुंद, जि.-रायपुर (म. प्र.)-४९३४४५।

पितृ ऋण

गंगा में करके
बाप की अस्थियों का विसर्जन
पंडितों की दक्षिणा में कांट-छांट करके
यात्रा कर के अतिरिक्त
चौदह रुपये बच पाये थे
जिन्होंने उसके कदम
मदिरालय की ओर उठाये थे
जानेवाला लौट के तो नहीं आएगा
सोचकर, उतार लिया सीने में कड़वा पानी
कुछ ही क्षणों में
स्मृति में विगत के चित्र उभरने लगे
मरते हुए बाप ने कहा था—
बेटा...
मेरी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित अवश्य करना
और—फटी हुई 'जवाहर कट' की जेब से
एक सौ इक्यावन रुपये निकालकर थमाये थे
कितना दूरदृष्टा था बापू
भविष्य की सोचता था
जानता था
जो जीते जी-उसे रोटी के टुकड़े न खिला सके
वो मरने के बाद पितृ ऋण क्या चुकाएंगे
इनके भरोसे रहा तो मेरी अस्थियों को—
कुत्ते ही चबाएंगे।

—डॉ. अनिल शर्मा 'प्रे

आत्मकथ्य : समाज में होने वाली विसंगतियों के विरुद्ध लिखना मेरी कमजोरी है।
संप्रति : व्याख्याता के. डी. एम. मेडिकल कॉलेज रामपुर मनिहारन।
पता : (इस्लाम नगर रोड)
रामपुर मनिहारन, सहारनपुर (उ. प्र.)।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिश्ते का दर्द

हर बार उस रिश्ते की
आहट से
सन्नाटा दरकने लगता है
पुराने इमारत में धंसा दर्द
उभरता है तटस्थ आंखों में
संबंधों का अधजला तंतु
घटपटाता है दुरूह पीड़ा से
कैद हो जाती है चीख
देह की दीवारों में
कोहरे में निःशेष
होने लगता है आकार
तभी एक नये युग की
धड़कन सुनायी देती है
आकाश हो जाता है मन
कसमसाहट संवाद में
तब्दील होती है—
मुक्त होने की अदम्य जिजीविषा लिए
और एक संपूर्ण मानव
बनने की चाह में साझेदारी छोड़ देती हूं मैं ।

—बिभा

शिक्षा : स्नातकोत्तर (प्राणी विज्ञान)
आत्म कथ्य : सामाजिक और पारिवारिक विसंगतियां जिसका विरोध करने में मैं स्वयं को असमर्थ पाती हूं, शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास करती हूं ।
पता : द्वारा : बिनोद महासेठ
बिनोद स्टोर्स, टॉवर चौक,
दरभंगा, बिहार-८४६००४ ।

पता

मैंने बनायी
एक ऊंची दीवार
और चढ़ गया उस पर
कि निहार सकूं चांद को
नजदीक से
और पा सकूं चांदनी
औरों से अधिक
लेकिन
चांद वहां से भी उतना ही दूर था
जितना कि जमीं से
चांदनी भी उतनी ही पड़ रही थी
जितनी कि जमीं पर
बस
मेरी पात्रता ही कम हो गयी
और मैं उतना भी न पा सका
जितना कि तृणमय भूमि पर लेटकर
लोग सहजता से पा लेते हैं ।

—शिवम

आत्मकथ्य : व्यक्तिगत अनुभूतियों को सर्वगत करने की कोशिशें हैं मेरी कविताएं ।
संप्रति : अध्ययन
पता : सी-ए—५७सी
जनता फ्लैट, हरिनगर,
नयी दिल्ली-११००६४ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज

किसी आवाज का सुनायी देना
या किसी वस्तु का टूटना
हमें तुरत ज्ञान हो जाता है इन सबका
पर क्यों नहीं सुन पाता है
किसी के कांच से दिल के टूटने को
बार-बार टूटता है और
कुछ क्षणों में जुड़ जाता है
या फिर उसके जुड़ने का भ्रम है
पर स्पष्ट नजर आती है उसकी दरारें
बस यही वे दरारें है जो हमेशा से
कभी आतंक कहलाती है तो
कभी ये रिश्तों के बीच की दीवारें
काश दिलों के टूटने को सुन पाता हर कोई
अपने दिल सा औरों में
कुछ धड़कता सुन पाता हर कोई ।

—अनिता राणगा

शिक्षा : स्नातकोत्तर (भूगोल)
आत्मकथ्य : जिंदगी की राह में जब मायूसी और बैचैनीआंसुओं का रूप लेकर आंखों से बहती है तब बरबस ही कोई कविता पीछे छोड़ जाती है, तन्हाई के दर्द को कम करने ।
पता : द्वारा : आर. के. टिंबर
सोजती गेट के अंदर, जोधपुर (राज.)

उदासी

बूंद-बूंद उदासी टपकी
गमों के एक बादल से
मैंने समेट लिया आहिस्ता से
उन्हें अपने आंचल में
धीरे से बह चला
आंसुओं का एक दरिया
और मेरे आंचल की
बूंदों में आ मिला
मेरे अरमान झुलस कर रेत बने
मेरे टूटे सपनों का ढेर बना
एक शिला
फिर लहराया दर्द की लहरों से
उफनता हुआ आहों का समंदर
डूबी हुई है मेरी मुसकानों की
किश्ती मुहतों से जिसके अंदर ।

—नमिता

शिक्षा : कक्षा ग्यारह की छात्रा
आत्मकथ्य : जब भावनाओं के झोंकों का निर्झर से मिलन होता है, तो कविता का जन्म होता
पता : द्वारा : श्री प्रमोद कांत त्रिपाठी
१०९-बी, मालवीय नगर,
भोपाल (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत की नगरी नहीं आज की द्वारका

● आलोक त्रिपाठी

लेखक द्वारा द्वारका पर अभी तक किये गये समस्त शोध कार्यों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान द्वारका को कृष्ण की या महाभारतकालीन द्वारका कहने का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। प्राचीन साहित्य में दिये गये इस नगर के वर्णन एक-दूसरे से भिन्न हैं। उत्खनन से प्राप्त पुरातत्वीय प्रमाण मात्र २००० वर्ष प्राचीन हैं और सागर में खोजे गये अवशेष किसी जलमग्न नगर के नहीं बल्कि तट से समुद्र की लहरों द्वारा बहाकर लाये गये ऐतिहासिक कालीन स्थलाकों के खंड मात्र हैं।

गुजरात राज्य में पश्चिमी तट के समीप, अरब सागर में, महाभारत में वर्णित कृष्ण द्वारा स्थापित पौराणिक नगरी द्वारका की रोमांचक खोज गत दो दशकों से अत्यधिक चर्चा का विषय रही है। देश के लगभग हर संचार माध्यम— समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो तथा दूरदर्शन पर यत्र-तत्र उसकी चर्चा होती रहती है। यदि इसे इस शताब्दी की सर्वाधिक प्रचारित-प्रसारित पुरातात्विक खोज कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

इतिहास की गुत्थियों को सुलझाने के लिए प्राचीन साहित्य में वर्णित घटनाओं की सत्यता का अध्ययन और प्राचीन स्थलों की खोज पुरातत्ववेत्ताओं के शोध का प्रिय विषय रहा है। इस क्रम में कृष्ण द्वारा स्थापित और महाभारत में वर्णित प्राचीन नगरी 'द्वारका' का अपना विशिष्ट स्थान है। सागर में प्राप्त हो रहे अवशेषों के आधार पर पुरातत्वविदों ने यह सिद्ध करने का दावा किया कि महाभारत में वर्णित घटनाएं पूर्णतः सत्य हैं और इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकाव्य न कहकर इतिहास कहना चाहिए। यही नहीं यहां से प्राप्त अवशेषों के आधार पर कृष्ण की तिथि भी लगभग ३५०० वर्ष पूर्व सिद्ध कर दी गयी। उनका यह भी दावा था कि इस काल में लौह तकनीकि का ज्ञान था व कृष्ण द्वारा बरसायी गयी कई कि.मी. लंबी व चौड़ी नगरी पुराणों के वर्णनानुसार सागर में समा गयी थी।

महाभारत के आदि पर्व और सभा पर्व तथा विष्णु और वायु पुराण के अनुसार द्वारका रैवतक पर्वत के समीप स्थित थी, जबकि महाभारत के ही मूसल पर्व, हरिवंश, भागवत पुराण आदि के अनुसार द्वारका सागर के समीप स्थित थी।

खोज का इतिहास

गुजरात राज्य में ही कई स्थलों को प्राचीन द्वारका माना जाता है। इनमें गिरनार, मूल द्वारका, माधवपुर, द्वारका इत्यादि प्रमुख हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक विद्वानों द्वारा प्रचलित मान्यताओं व जनविश्वास को स्वीकारते हुए सुदूर पश्चिमी तट पर स्थित द्वारका को महाभारत में वर्णित 'द्वारका' या 'द्वारावली' मान लिया गया था। सन १९०४ में एफ. ई. फर्जीटर व सन् १९२५ में ए. एस. अल्तेकर ने भी इस मत का समर्थन किया। सन् १९४० में ए. डी. पुसालकर ने अपने एक लेख में प्राचीन साहित्य में दिये गये विवरणों के आधार पर अन्य स्थलों की द्वारका से पहचान अस्वीकार करते हुए वर्तमान द्वारका को ही कृष्ण की पौराणिक नगरी सिद्ध किया। उसके उपरांत लगभग सभी विद्वानों ने इसे एक मत से प्राचीन द्वारका होना स्वीकार कर लिया।

पुरातात्विक शोध

चार दशक पूर्व, सन् १९६३ में डेक्कन कॉलेज, पूना तथा गुजरात राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा देश के मूर्धन्य पुरातात्विद् प्रो. एच. डी. संकालिया के नेतृत्व में प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर के समीप उत्खनन कर इस स्थल की प्राचीनता जानने का प्रथम वैज्ञानिक प्रयास किया गया। यहां से प्राप्त पुरातात्विद् प्रमाण २००० वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं थे। दो हजार वर्ष प्राचीन किसी स्थान को कृष्ण या महाभारत से सम्बन्धित करना संभव नहीं था और द्वारका की ऐतिहासिकता पर एक प्रश्नचिह्न लग गया।

सन् १९७९ में एक अन्य प्रसिद्ध पुरातात्वविद् डॉ. एस. आर. राव द्वारा यहां किये गये उत्खनन में १५०० ई.पू. (लगभग ३५०० वर्ष प्राचीन) तक के पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त होने का दावा किया गया। इन प्रमाणों को महाभारत की मान्य तिथि तथा साहित्यिक वर्णनों से साम्य होने से बड़ी आसानी से स्वीकार कर लिया गया।

वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता

सागर से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर किये गये दावे ऐतिहासिक, पुरातात्विक और वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

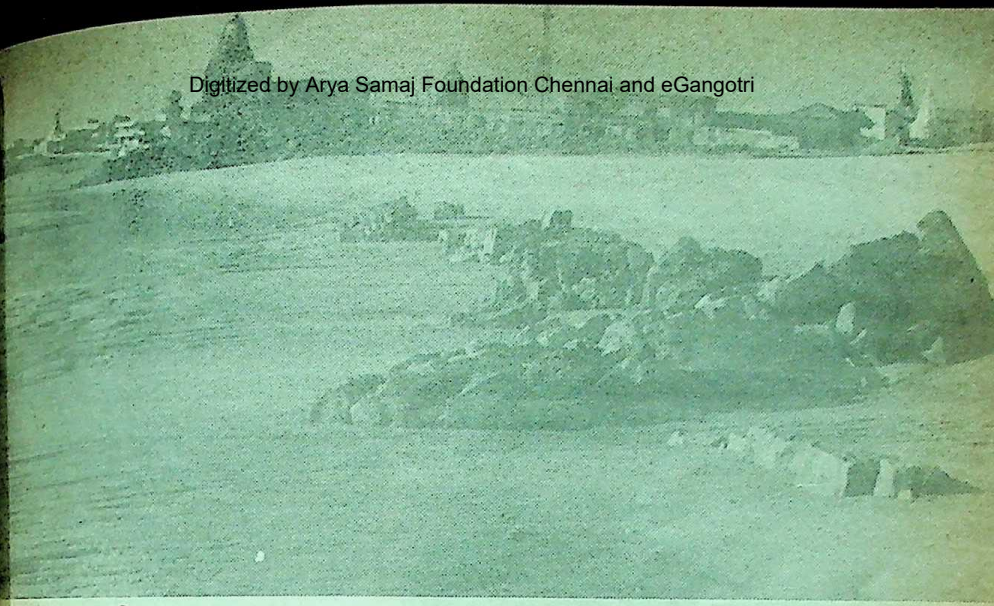

समुद्र नारायण मंदिर

दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थे । उन्हें स्वीकारने का सीधा अर्थ था सारे भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन । अभी तक महाभारत व रामायण को महाकाव्य माना जाता है जिसमें इतिहास के अंश मौजूद हैं परंतु इन्हें यथावत इतिहास स्वीकार कर लेना संभव नहीं है । द्वारका के अन्वेषक का मत है कि महाभारत महाकाव्य न होकर इतिहास है, किसी भी निर्णय से पूर्व सागर से प्राप्त समस्त अवशेषों तथा अभी तक किये गये तमाम शोधों का वैज्ञानिक विश्लेषण आवश्यक हो जाता है ।

उत्खनन से प्राप्त पुरातत्वीय प्रमाण मात्र २००० वर्ष प्राचीन हैं और सागर में खोजे गये अवशेष किसी जलमग्न नगर के नहीं बल्कि तट से समुद्र की लहरों द्वारा बहाकर लाये गये ऐतिहासिक कालीन रचनाओं के खंड मात्र हैं ।

विभिन्न साहित्यिक वर्णनों से साम्य प्रदर्शित करनेवाले किसी एक स्थल की खोज निश्चय ही अत्यधिक दुष्कर कार्य है क्योंकि विभिन्न ग्रंथों में इसकी स्थिति भिन्न-भिन्न दी गयी है । महाभारत के आदि पर्व और सभा पर्व तथा विष्णु और वायु पुराण के अनुसार द्वारका रैवतक पर्वत के समीप स्थित थी, जबकि महाभारत के ही मूसल पर्व, हरिवंश, भागवत पुराण इत्यादि के अनुसार द्वारका सागर के समीप स्थित थी । एक बौद्ध ग्रंथ घट जातक में इन दोनों का सम्मिश्रण मिलता है । इसके अनुसार द्वारका के एक और सागर था और दूसरी ओर पर्वत ।

प्रारंभ में विद्वानों ने जन-प्रचलित मान्यताओं को बिना किसी आधार के स्वीकारते हुए वर्तमान द्वारका को कृष्ण की द्वारका मान लिया था । कालांतर में इस पहचान को प्रामाणिकता प्रदान करने के प्रयास प्रारंभ हुए और प्राचीन साहित्य में इससे साम्य रखनेवाले संदर्भों की खोज प्रारंभ हुई । आश्चर्य का विषय है कि जिस आधार पर अन्य स्थलों को द्वारका मानना अस्वीकार किया गया उन्हें द्वारका के विषय में पूर्णतः नजरअंदाज कर दिया गया और द्वारका को बिना किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर सहज ही कृष्ण की द्वारका स्वीकार कर लिया गया ।

पुरातात्विक प्रमाण

पुरातात्विक प्रमाणों के अनुसार द्वारका मात्र २००० वर्ष प्राचीन है और २००० वर्ष प्राचीन किसी स्थल को कृष्ण या महाभारतकालीन नहीं कहा जा सकता । सन् १९७९ में किये गये दूसरे उत्खनन में हालांकि ३५०० वर्ष प्राचीन अवशेष प्राप्त होने का दावा किया गया परंतु इस उत्खनन की न ही कोई विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हुई है और न ही उत्खननकर्ता के मतों का कोई स्पष्ट आधार ही है ।

समुद्र में खोज

वर्तमान द्वारका को कृष्ण या महाभारतकालीन सिद्ध करने के सर्वाधिक प्रमाण सागर से प्राप्त कहे जाते हैं । परंतु ये समस्त अवशेष किसी एक स्थल से प्राप्त न होकर दो अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुए हैं ।

द्वारका व बेट शंखोद्वार, जिसे बेट द्वारका भी कहा जाता है, एक-दूसरे से लगभग ३० कि.मी. दूर स्थित दो पूर्णतः भिन्न स्थान हैं । द्वारका, पश्चिमी सागर-तट पर बसा एक कस्बा है जबकि बेट कच्छ की खाड़ी में स्थित एक द्वीप है । इन दो जगहों से प्राप्त अवशेषों को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया कि इनके एक होने का भ्रम हो ।

बेट द्वारका

बेट द्वारका, ओखा बंदरगाह से लगभग २ कि.मी. पूर्व में स्थित एक छोटा-सा द्वीप है । इसका द्वारका नाम अभी हाल ही की उत्पत्ति है । वास्तव में इस द्वीप का नाम शंखोद्वार है । समस्त गजेटियर व नक्शों में इसे इसी नाम से जाना जाता है । संभवतः लगभग २००० पूर्व द्वारकाधीश मंदिर की दूसरी मूर्ति इस पर लाने से इसे भी द्वारका कहा जाने लगा धीरे-धीरे यहां आनेवाले श्रद्धालुओं को नाम की उत्पत्ति दर्शाने के लिए कथाएं गढ़ गयीं । वर्तमान में यहां आनेवाले तीर्थयात्री को ऐसी ही एक कथा सुनायी जाती है । अनुसार इस स्थान पर सुदामा द्वारा कृष्ण चावल भेंट करने से इसे 'भेंट द्वारका' कहा गया ।

फिश ट्रेप या प्राचीन रक्षा प्राचीर

इस द्वीप के दक्षिण-पूर्व में सागर तट मछली पकड़ने को बनायी गयी पत्थर की दीवार को महाभारतकालीन नगर की रक्षा प्राचीर कह दिया गया है । इस प्रकार की समूचे पश्चिम भारतीय तटों ही नहीं वरन् कई जगह सागर तटों पर पायी जाती हैं । के समय पानी बढ़ने पर पानी के साथ भी इसके अंदर आ जाती हैं और भाटे के पानी उतर जाने पर वे इस दीवार के कारण नहीं पातीं और आसानी से पकड़ ली जाती

स्लिप वे या प्राकृतिक चट्टान

इसी प्रकार प्राकृतिक चट्टान की एक आकार की रचना को नौकाओं के अवतरण बनायी 'स्लिप वे' कह दिया गया है । पारंपरिक नौका निर्माण का अध्ययन करने इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि तटों पर नौकाओं के अवतरण हेतु 'स्लिप वे'-जैसी किसी रचना के निर्माण की नहीं है । यही नहीं आज भी बड़े-बड़े ट्रालर्स और नौकाएं ज्वार के समय स्लिप वे के बेट द्वारका में तट पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रंग-रोगन, सफाई या मरम्मत के बाद पुनः जल में उतार दिये जाते हैं ।

मुद्रा और लेख

यहां से पूर्णतः सुरक्षित एक उत्तर हड़प्पाकालीन मुद्रा व मृदपात्र खंड पर अंकित लेख की प्राप्ति भी एक आश्चर्य से कम नहीं है । सागर से प्राप्त समस्त मृदपात्र खंड लहरों से रगड़-रगड़कर पूरी तरह से घिस जाते हैं परंतु अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि २ से.मी. आकार की शंख की बनी मुद्रा और मृदपात्र पर उत्कीर्ण लेख ३५०० वर्षों तक सागर में पड़े रहने पर भी यथावत बने रहें ?

समुद्र-तल परिवर्तन

समुद्र में द्वारका के अन्वेषक के अनुसार लगभग ३५०० वर्ष पूर्व सागर का तल वर्तमान स्तर से लगभग १० मीटर नीचे था । सागर का तल बढ़ने से यहां स्थित पौराणिक नगर जल में समा गया । बड़ौदा विश्वविद्यालय के भू-वैज्ञानिकों द्वारा कच्छ की खाड़ी में ५० लाख वर्षों की रचना का विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है । इन वैज्ञानिकों का स्पष्ट मत है कि गत लगभग पांच हजार वर्षों में इस क्षेत्र में अचानक समुद्र-तल परिवर्तन की किसी घटना का कोई प्रमाण नहीं मिलता ।

अतः प्राप्त अवशेषों के विश्लेषण व वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि यहां किसी विशाल नगर के जलमग्न होने की बात महज एक कल्पना मात्र है ।

द्वारका

बेट के समान ही द्वारका के समीप भी समुद्र में यहां-वहां पड़े दीवारों के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए

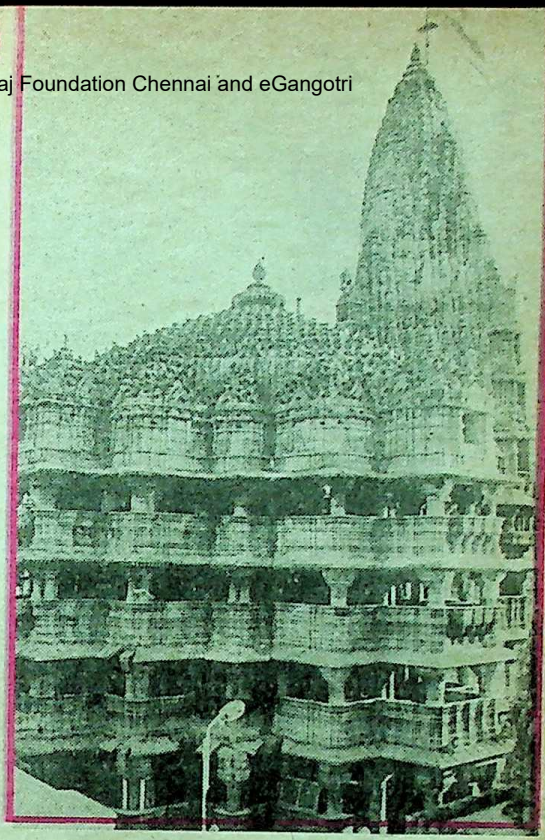

१५वीं-१६वीं शताब्दी में निर्मित द्वारकाधीश मंदिर

हैं जिन्हें जलमग्न नगर की रक्षा प्राचीरें, बुर्ज, मकानों के अवशेष कहा गया है । यहां सर्वाधिक आश्चर्य का विषय यह है कि सागर में प्राप्त दीवारें उत्खननकर्ता द्वारा दो प्रकार की बतायी गयी हैं— प्रागैतिहासिक या महाभारतकालीन (काल-१) तथा ऐतिहासिक कालीन (काल-२) । पुराणों के अनुसार कृष्ण के स्वर्गारोहण के उपरांत द्वारका सागर में समा गयी । यदि इसे सच भी मान लिया जाए तो प्रश्न यह उठता है कि ये ऐतिहासिक कालीन दीवारें इन महाभारतकालीन नगर में कहां से आ गयीं ? क्योंकि द्वारका के एक बार सागर में समाने के पश्चात उसके पुनः बाहर आने या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

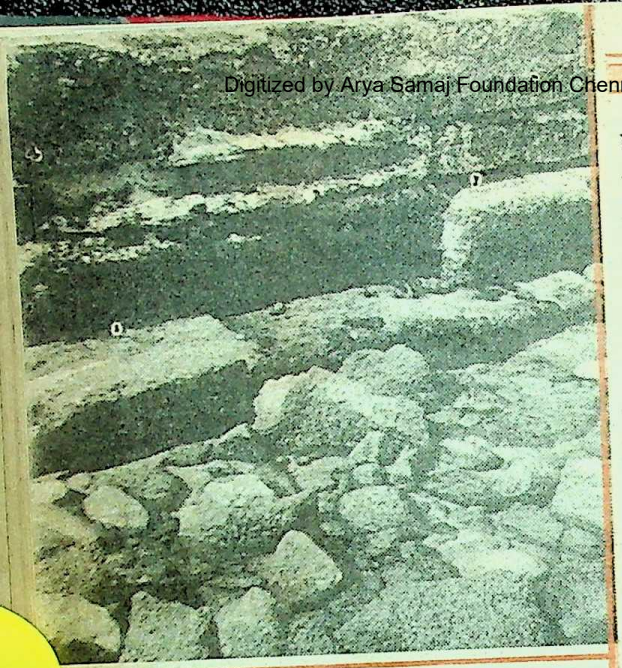

गोमती घाट की दीवार में प्रयुक्त पत्थर सागर में पड़े
स्थापत्य खंडों के समकालीन हैं।

ऐतिहासिक काल में सागर में कोई नगर बसाने का कोई विवरण कहीं प्राप्त नहीं होता है।

अन्य पुरावशेष

द्वारका से ही प्राप्त लोहे के पांच भुजाओंवाले लंगर आजकल मछुआरों द्वारा प्रयोग किये जानेवाले लंगरों के समान हैं। सागर से प्राप्त संगमरमर की मूर्तियों के टुकड़े, तांबे का लोटा व उपकरण, पत्थर की चार पांवोंवाली सिल इत्यादि यहां से गुजरनेवाली नौकाओं से गिर गयी या श्रद्धालुओं द्वारा जल में विसर्जित की गयी वस्तुएं हैं।

प्रमाणों का मनमाना प्रयोग

द्वारका पर किये गये लगभग एक शताब्दी के समस्त शोध कार्यों व प्राप्त अवशेषों के वैज्ञानिक विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्वानों के एक समूह द्वारा साहित्यिक और पुरातात्विक प्रमाणों की मनमाने ढंग से व्याख्या कर जन-प्रचलित मान्यताओं को इतिहास [illegible] करने के प्रयास किये जाते रहे हैं। यदि इ[illegible] स्वीकार कर लिया जाए तो भारत का संपू[illegible] इतिहास ही परिवर्तित हो जाएगा।

द्वारका के समीप समुद्र में सतह पर [illegible] मिले पत्थर की दीवारों के टुकड़े न ही अ[illegible] मूल स्थान पर हैं और न ही महाभारत य[illegible] कृष्णकालीन या ३५०० वर्ष प्राचीन स्व[illegible] सागर की सतह पर यत्र-तत्र पड़े ये स्थ[illegible] खंड सागर तट पर निर्मित उन रचनाओं [illegible] हैं जो सागर की प्रचंड लहरों द्वारा नष्ट [illegible] गयीं और उनके खंडों को वेगवान लहरें [illegible] में बहा ले आयीं। इन प्राचीन रचनाओं [illegible] अवशेष आज भी सागर तट पर अपने [illegible] स्थानों पर विद्यमान हैं।

व्यवस्थित खोज की आवश्य[illegible]

निश्चय ही महाकाव्यों में ऐतिहासिक [illegible] को नकारा नहीं जा सकता और न ही [illegible] पुराणों, बौद्ध व जैन ग्रंथों में वर्णित [illegible] द्वारका नगरी के अस्तित्व को ही। परंतु [illegible] भी तथ्य को स्वीकारने से पूर्व पुरात्व[illegible] प्रमाणों की आवश्यकता होती है। अ[illegible] प्राप्त पुरातात्विक प्रमाणों के अनुसार [illegible] द्वारका २००० वर्ष से अधिक प्राचीन [illegible] लगभग ६०० ई.पू. से क्रमबद्ध [illegible] इतिहास की जानकारी है और २००० [illegible] प्राचीन किसी स्थान को कृष्ण या म[illegible] समीकृत करना कदापि संभव नहीं है।

जनसामान्य की धार्मिक आस्था [illegible] किन्हीं पुरातात्विक या ऐतिहासिक स[illegible] आवश्यकता नहीं होती, परंतु पुरात[illegible] यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वे प्राचीन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

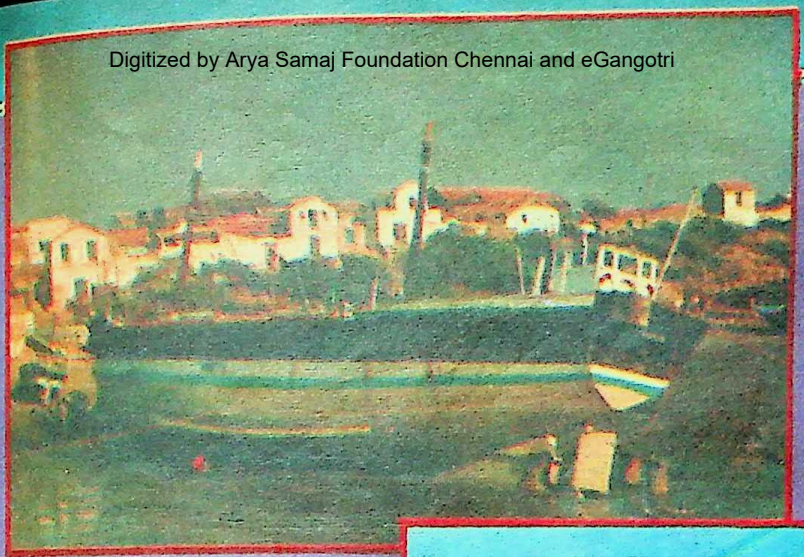

▲ बेट द्वारका तट पर बिना किसी स्लिप के आती नौकाएं।

दिये गये विवरणों के आधार पर व्यवस्थित पुरातात्विक अन्वेषण कर प्राचीन साहित्य में वर्णित पात्रों, घटनाओं व स्थलों की खोज व पहचान कर उनकी सत्यता का विधिपूर्वक अध्ययन करें, जिससे भारतीय इतिहास की तमाम अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाया जा सके।

—पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, २४, तिलक मार्ग, नयी दिल्ली-११०००९.

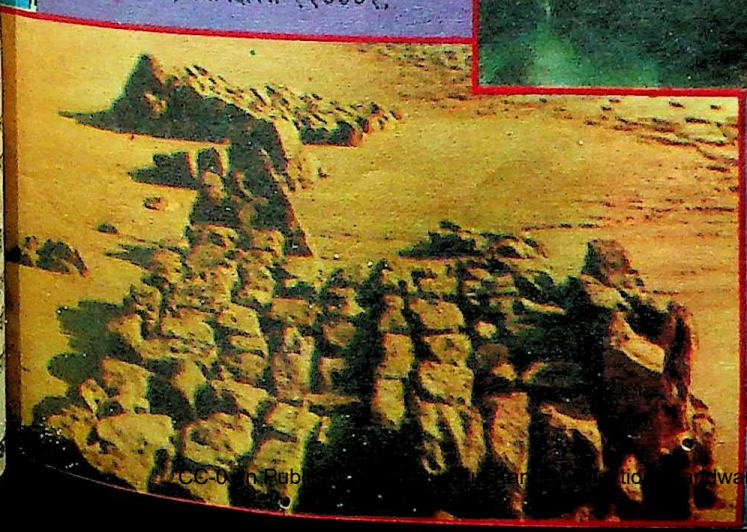

▲ सागर-तल में सतह पर पड़े पत्थर के खंभे का भाग।

द्वारका में समुद्र तट पर नष्ट हुई दीवार के टुकड़े। ←

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी कठपुतली

भारतीय कठपुतलियों की जन्मस्थली राजस्थान के पारंपरिक पुतलीकारों ने जहां अपनी चपल अंगुलियों के चमत्कारिक संचालन से जनजन का मनोरंजन किया वहां जीवनदर्शन भी दिया। समाज को ज्ञान दिशा से चाहे राजस्थानी लोक संगीत नृत्य, भारतीय नाट्य कला का इतिहास या धार्मिक

कठपुतली के कपड़ों की सिलाई

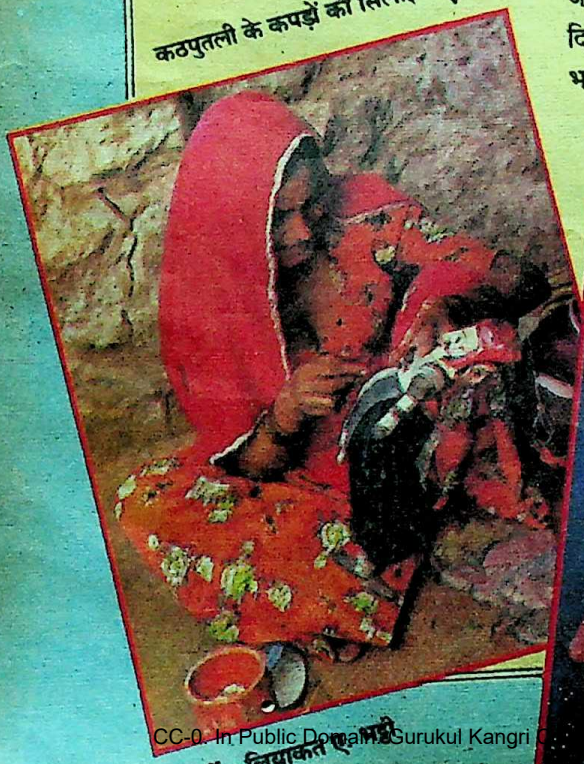

भारतीय कठ

पारदर्शी : लियाकत ए भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमत्कारिक कथा प्रसंगों से जुड़ी कठपुतली

● कमलेश माथुर

पौराणिक गाथाएं हों । भावनात्मक दृष्टि और आस्थाओं की प्रतीक पुतलियों से जुड़े, पुरातन पुतलीकारों ने सभी लोकधर्मी कलाओं का सशक्त माध्यम बनाते हुए भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में कठपुतली को विशिष्ट स्थान दिलवाया है । वस्तुतः कला विशेषज्ञ जहां कठपुतली की पुरातन व पारंपरिक शैली पर मुग्ध हैं, वहीं पुतलियों द्वारा शिक्षण एवं मानसिक रोगोपचार को भी स्वीकारा है । राजस्थान शिक्षा विभाग में पुतली विषय मान्यता प्राप्त है ।

लोक जीवन से जुड़ी कठपुतली कला का जन्मकाल और स्थान के विषय में अलग-अलग मत है । कहा जाता है कि अनादि काल से पुतलियों या गुड़ियों द्वारा मानव की भूमिका प्रस्तुति की प्रथा रही है । रोचक एवं बाल सुलभ इस विद्या से सभी वर्गों का मनोरंजन होता है । आदिम क्षेत्रों में केवल एक डंडे या बांस के सिरे पर मात्र एक हंडिया लटका कर ही किसी का प्रतीक मान लिया जाता था और उसी के अनुरूप उस चरित्र की गाथा सुनायी जाती थी । शनैः-शनैः इसी प्रकार की परंपराओं के भीतर व्याप्त नाटकीय तत्त्व के प्रकटीकरण की अनुकृति ही कठपुतली बन गयी । आदिकाल से ही भूत-प्रेत, जादू-टोनों आदि प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए किसी भी प्रकार के सांस्कारिक प्रतीकों का प्रयोग होता रहा है । तब से ये प्रतीक पत्थर, लकड़ी या मिट्टी के बने पुतले आदि जातीय या पारिवारिक देवी-देवता के रूप में प्रतिष्ठित होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजदरबारों से निकलकर अब चंद होटलों की चमक-दमक में खोयी-सिमटी कठपुतली को प्रतीक्षा है किसी अमर सिंह राठौड़ या पृथ्वीराज चौहान की जो उसका दर्द सुन सके । सरकारी उपेक्षाओं से त्रस्त इन कलाकारों के पास न घर है ना ठिकाना । लगभग सात-आठ हजार आबादीवाली इस नाजायज कच्ची बस्ती में प्रायः कठपुतली में प्राण फूंकनेवाले कलाकार की जिंदगी में प्राण फूंकनेवाला कोई नहीं है । शनैः-शनैः मृत होती कला के प्रति यदि सरकार चाहे तो बहुत-कुछ कर सकती है, कलाकार अनपढ़ होते हुए भी जानता है ।

थे । वे लोग इन्हें प्रतीकात्मक रूप में संगठित विश्व की सभी शक्तियों के रूप में सुरक्षा कवच मानते थे, ताकि चिंता रहित सुखद जीवन जिया जा सके । यहां तक कि रोगोपचार के लिए भी गंडे, ताबीज, भभूत व धागे को अपना अंतिम अस्त्र मानते थे । शनैः-शनैः विकासोन्मुख मनुष्य ने इन्हीं आस्था के प्रतीकों को विशिष्ट स्थानों पर प्रतिष्ठित करना आरंभ किया । आलौकिक शक्तियों को मंदिर में मूर्ति स्वरूप प्रतिष्ठित किया । साथ ही इन मूर्तियों के बनाव-श्रृंगार में मनोहारी कलात्मक निखार आने से इन्हीं प्रतीकात्मक मूर्तियों को मानवीय लीलाओं में उतारा जाने लगा । जैसे विधिवत श्रृंगार, भोजन, पोषाक, प्रसाद, भोग, शयन व आराधना के विशिष्ट स्थान व समय निर्धारित किये जाने लगे । इससे स्पष्ट होता है कि मिट्टी, पत्थर या लकड़ी आदि सभी के पुतलियों के प्रारंभिक स्वरूप हैं ।

मनुष्य जीवन का सहभागी

फिर इन मूर्तियों के उपासकों ने उत्सव और मेले आदि रचा कर इनका आह्वान किया । इसके साथ जुड़ी रात्रि-जागरण, कथा-वाचन और नृत्य-गायन की परंपरा जिनमें इनकी जीवन लीलाओं की अभिव्यक्ति जनजीवन की दुखहर्ता व संकट-हरिणी बनी । जनास्था के इन प्रतीकों से जुड़े विविध प्रसंगों, जीवन- गाथाओं के साथ बड़े-बड़े पर्व और त्यौहार जुड़ने लगे, मनुष्य को आनंद की अनुभूति होने लगी और उसे मनोरंजन का स्वाद आने लगा । सांस्कृतिक पक्ष उभरने के साथ-साथ आराधना के प्रतीक बदलने लगे । अब ये प्रतीक केवल प्राकृतिक शक्तियां ही नहीं रह गयीं, अपितु विविध सांस्कारिक प्रतीकों के आकृति, गुण और उनके कृतित्व पर विशेष बल दिया जाने लगा । इस प्रकार मानव की सुखद अनुभूति के परिप्रेक्ष्य में पुतलियों को मनुष्य के निजी जीवन की सहभागी बनाया गया । मानव इन्हें ब्रह्मा की तरह जब चाहे नचाने लगा ।

भारत में पुतली जन्म संबंधी अनेक मत हैं महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि ग्रंथों में किसी न किसी रूप में इनका उल्लेख मिलता है, किंतु 'वीरकरीला' नामक भारतीय ग्रंथ में एक विशिष्ट पुतली का वर्णन मिलता है जो केवल पार्वतीजी के ही पास थी। यह इतनी सुंदर व आकर्षक थी कि पार्वती को सदैव चिंता लगी रहती थी कि कहीं शिवजी इस पुतली में प्राण ही न फूंक दें और इसी से विवाह न रचा लें ? 'कथा सरित्सागर' में एक ऐसे दस्तकार का उल्लेख है जो अपनी लाडली बिटिया का जी बहलाता था। 'पंचतंत्र' में उन पुतलियों का संदर्भ है जो लकड़ी की खूंटियों के सहारे नाना भांति के करतब दिखाती थीं। राजा विक्रमादित्य के सिंहासन में स्थित बत्तीस पुतलियां रात्रि को सिंहासन से निकलकर राजा को विविध रंगारंग कार्यक्रम दिखाकर मनोरंजन करती थीं। दिन में इसी सिंहासन पर बैठकर राजा अपना निर्णय सुनाते थे। इसीलिए 'सिंहासन बतीसी' का संदर्भ राजा विक्रमादित्य से सदा-सदा के लिए जुड़ गया। इन बत्तीस पुतलियोंवाला प्रसिद्ध न्याय इतना प्रभावशाली और लोकप्रिय था कि अन्य लोक के प्राणी भी विक्रमादित्य का न्याय सुनने-समझने आते थे। कहा जाता है कि पुतलियां राजा के कहने पर सभी दिशाओं में घूम-फिरकर सच्ची घटना की सही खबर राजा को देती थीं। और इसी के आधार पर न्यायपूर्वक निर्णय लिया जाता था। इस प्रकार विक्रमादित्य का यह रोचक खेल पुतलियों के प्रचार-प्रसार का माध्यम बना। इसके बाद पृथ्वीराज संयोगिता की घटना कठपुतली तमाशे का आधार बनी। तत्पश्चात नागौर के राजा अमर सिंह राठौड़ की मुगल बादशाह शाहजहां के साथ घटी दिलचस्प घटना पुतलियों का आकर्षक विषय बना। रोचक तथ्य यह है कि इस घटना के संदर्भ में चयनित इस विषय को लेकर व पुतलियों का खेल आगरे के किले से प्रायः दिखाया जाता था। एक अन्य कथानुसार सेवकराम नामक बढ़ई बेहद सुंदर खिलौने बनाता था। सिद्धहस्त बढ़ई के खिलौनों को देख बच्चे प्रायः इनसे बतियाते रहते। सेवकराम जब उन्हें खिलौनों से बतियाते देखता तो सदैव एक ही सोच में डूबा-खोया रहता था कि किसी तरह खिलौने भी बोलने लग जाएं। एक दिन शिव-पार्वती भ्रमण करते उधर

पहुंचे, खिलौने देखते ही पार्वतीजी ने शिवजी से इनमें प्राण फूंकने का अनुरोध किया, पार्वती की जिद के कारण शिवजी ने अपनी दिव्य शक्ति से उनमें प्राण फूंक दिये। सभी खिलौने चहचहाने लगे तब से ही कठपुतली खेल शुरू करने से पहले शिव-स्तुति करते हैं—

बैल चढ़े शिवजी मिले,
पूरण हो सब काम,
खेल काठपुतली करां,
लैके हरि का नाम

इस प्रकार पुतली उद्भव संबंधी कथन की पुष्टि होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

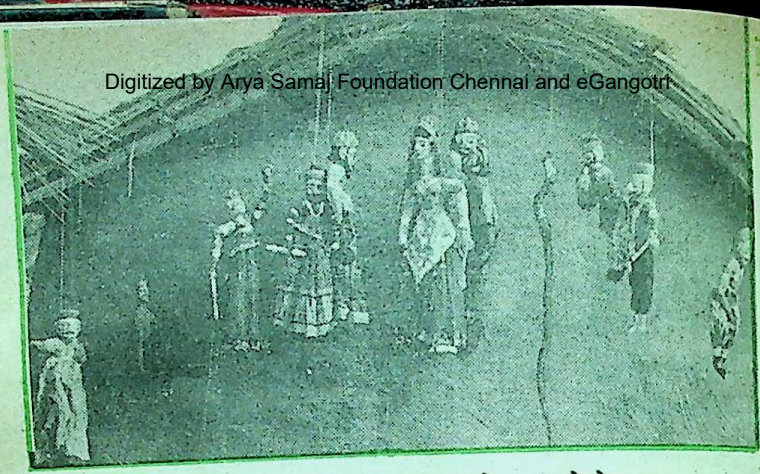

अन्य विद्याओं की भांति अभिनय भी एक विद्या है जिसके माध्यम से आवश्यकतानुसार स्वरूप चुने जाते हैं । यह स्वरूप ऐतिहासिक, पौराणिक चमत्कारिक चित्रण, लोक गाथाएं, देवी-देवता, मेले, उत्सव आदि जनास्था से जुड़ी परंपराओं को उजागर करते हैं । स्वरूपों से जुड़ी कठपुतली को भी नाट्य विद्या माना गया है । क्योंकि इसमें भी चरित्र, कथोपकथन, अभिनय आदि नाट्त तत्त्व मौजूद हैं । भारत में धनिक राजा-महाराजओं के समय में इसे पूर्ण संरक्षण प्राप्त था, पर आज यही विद्या दीवानखानों से निकलकर चौबारों, चबूतरों पर जा पहुंची । बिना श्रम व आर्थिक कठिनाई के रात्रि जागरण के साथ कठपुतली प्रदर्शन चलता था । अतएव अनेक विद्वान नाटक का उद्गम कठपुतली को ही मानते हैं । नाटक की उत्पत्ति नटों से मानी जाती है तथा नट शब्द सभी पुतली चालकों से सम्बद्ध है । नटों के पूर्वज स्वयं को शिव एवं ब्रह्मा के ही वरदान मानते हैं, क्योंकि ये नट देवी-देवता की प्रतीक पारंपरिक पुतलियों के सभी पुतलीकार धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े होते थे । यहां तक कि पुतली को आकाश-पाताल भेजकर भूत-भविष्य का लेखा-जोखा मंगाते थे ।

संभवतः श्रीलंका को छोड़ सभी एशियाई देशों में कठपुतली का प्रादुर्भाव देखा गया है ।

नट कर्म से जुड़ी

यद्यपि पुतली परंपरा के विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं, किंतु राजस्थान के पुतली नट भाव राव और भोजो, भांभी, बलाई और खोरी की ही तरह पंजाब, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात की नट जाति भी भिन्न-भिन्न नामों से जानी जाती है । उड़ीसा के कन्हाई भाट, आंध्र के यक्षभाट, महाराष्ट्र के लावणिये, तमाशिये शाहिर, राजस्थान व गुजरात के भवाई भोपे मांगणिये, कावड़िये सरगड़े व तंजौर के नय्यर आदि किसी न किसी रूप में नट कर्म से जुड़ी जातियां हैं ।

मिस्र, तुर्की, अरब तथा ईरान में भी पारंपरिक पुतली परंपरा प्रचलित है जो भारतीय पद्धति को ही प्रतिपादित करती है । वहां रमजान के दिनों में पुतली द्वारा मनोरंजन होता है । तुर्की में 'करखेज' नामक पुतली विश्व प्रसिद्ध है । जापान में 'डकुंबो' नामक पुतली देवी मंदिर है, बर्मा में पुतली को नाचती-कूदती आत्मा मानते हुए औपचारिक पूजा के बाद इनका प्रदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। वहीं इंडोनेशिया में 'यांगगोलोक' नामक पुतलियां प्रसिद्धि प्राप्त हैं। थाईलैंड तथा इंडोनेशिया के कठपुतली प्रदर्शन मुख्यतः रामायण, महाभारत से जुड़े कथा प्रसंग होते हैं। रोचक तथ्य यह है कि परिचालक भी पुतलियों की ही तरह या उनके साथ नाचते-कूदते हैं, ताकि भूत-प्रेतादि से बचे रहें। कुछ देश हिंदू धर्म प्रभावी होने से भारतीय संस्कृति प्रधान कथा प्रसंगों से पुतली प्रदर्शन करते हैं।

राजस्थानी विशेषता

राजस्थान में सूत्रपुतली का जन्मकाल ढाई हजार वर्ष पूर्व माना गया है। लकड़ी पर पुतली का रेखाचित्र अंकित करके सिर्फ मुंह और धड़ तक का भाग ही तराशा जाता है। भुजा व पैर में कपड़े व रुई भरी जाती है। केवल बाहों के अंतिम सिरे, हथेली व अंगुलियां लकड़ी पर तराशी जाती हैं। संचालन धागों से होता है। एक-सी लंबाईवाले ये धागे निश्चित संचालित स्थानों पर ही बांधे जाते हैं।

राजस्थान में पुतली लक्षण जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बसी में प्रमुख रूप से होता है। कठपुतली संचालक इन्हें देव-स्वरूप मानते हैं तथा क्षतिग्रस्त होने पर पुतलियों को फेंकते नहीं हैं, अपितु जल में प्रवाहित करते हैं। पुरातनपंथी संचालक भाट इन्हें अपने पूर्व पूर्वजों की देन मानते हुए किसी भी सीमा तक पारंपरिक पुतली कला क्षेत्र में परिवर्तन नहीं चाहते। अपनी मौलिकता को विधिवत बनाये रखने के पक्षधर ये पुतली संचालक आज भी उन्हीं पौराणिक, ऐतिहासिक व चमत्कारिक कथा प्रसंगों व चरित्रों से जुड़े हैं जो इनके पूर्वज छोड़ गये थे।

डेढ़ सौ परिवार

गुलाबी शहर जयपुर में स्थित कच्ची बस्ती में बसे लगभग डेढ़ सौ परिवार इस कला से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में इन कलाकारों की स्थिति दयनीय व शोचनीय है। लोकजीवन से जुड़े कलाकार पिछले दो दशकों से गुमनाम हो रहे हैं। शाही घरानों से सम्मान प्राप्त कलाकारों ने पहले कभी पुतलियां बेची नहीं थीं, आज वे यहां पुतलियां बनाकर बेचने का धंधा करते हैं। खरीददार चंद विदेशी मेहमान ही होते हैं। राजदरबारों से निकलकर अब चंद होटलों की चमक-दमक में खोयी-सिमटी कठपुतली को प्रतीक्षा है किसी अमर सिंह राठौड़ या पृथ्वीराज चौहान की जो उसका दर्द सुन सके। सरकारी उपेक्षाओं से त्रस्त इन कलाकारों के पास न घर है ना ठिकाना। लगभग सात-आठ हजार आबादीवाली इस नाजायज कच्ची बस्ती में प्रायः कठपुतली में प्राण फूंकनेवाले कलाकार की जिंदगी में प्राण फूंकनेवाला कोई नहीं है। शनैः-शनैः मृत होती कला के प्रति यदि सरकार चाहे तो बहुत-कुछ कर सकती है, कलाकार अनपढ़ होते हुए भी जानता है।

तथ्य तो यह है कि सूत्रधार जब धागों को अपनी अंगुलियों में धारण करता है, तब स्वयं ही पुतली बन जाता है। संवेदना पुतली में संचारित होती है तथा उसके प्राण और मन पुतली के भीतर प्रवेश करके बोलते हैं। और उसका यही तादात्म्य ही तो सजीवता देता है। काष्ठ की पुतली कला का विशिष्ट अंग है।

—जी-११, जनपथ,
श्याम नगर, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगला कहानी

ईंट

नीलिमा सेन गंगोपाध्याय

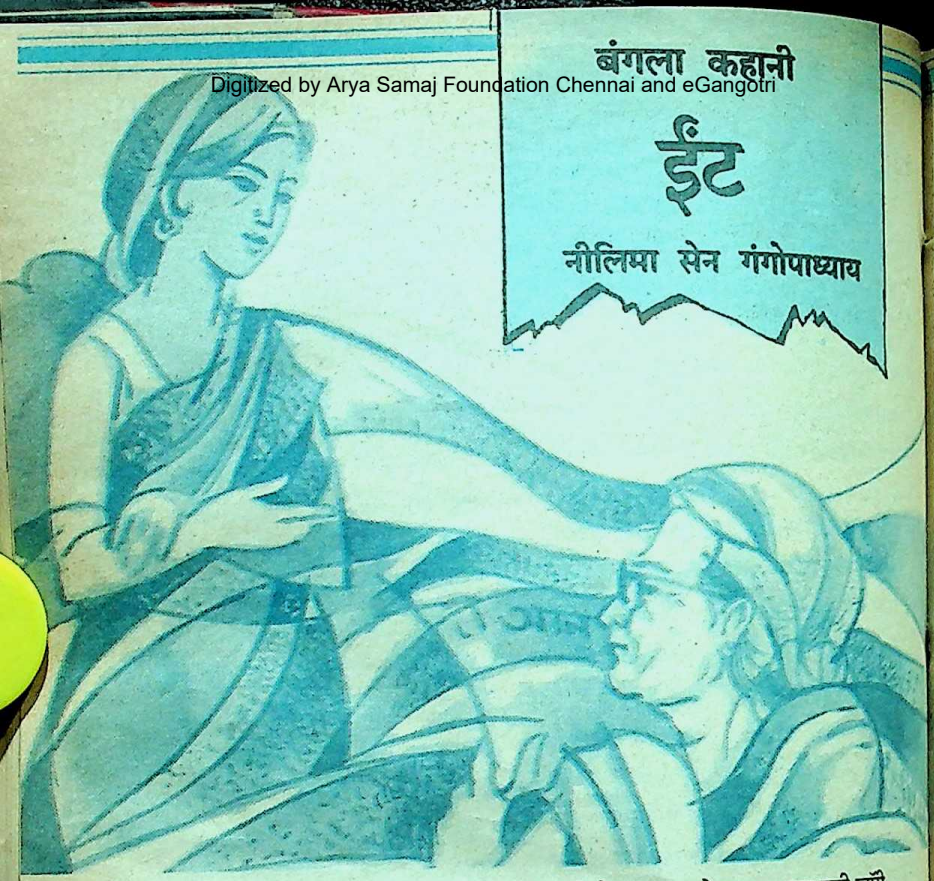

शीतकालीन रात्रि के शेष प्रहर में अभी वातावरण निस्तब्ध था। अंधकार को भेदकर अभी उजाला फूटने में अक्षम था। लोग निद्रित थे अथवा निद्रालस में अपने-अपने घरों में रजाई लपेटे सरदी को दूर भगाने में संलग्न थे। केवल पासवाले घर के नल में से जल गिरने का शब्द ध्वनित हो रहा था।

स्टोव पर चाय का पानी रखकर मंजरी फिर से लिहाफ में दुबक गयी। उसी समय घर्र-घर्र के भारी स्वर से वातावरण को कंपाती एक गाड़ी ठीक मंजरी के घर के सामने आकर रुक गयी। कुछ क्षण पश्चात् उसकी ही कॉलबेल बजी। गाड़ी रास्ते पर खड़ी थी। मंजरी ने बैठक की खिड़की से झांककर देखा —एक बड़ी लॉरी, ईंटों से भरी उसके घर के सामने खड़ी है। कुहासे के कारण दृश्य थोड़ा अस्पष्ट था। मंजरी विक्षुब्ध मन से सोचने लगी, 'यह क्या बला है ?' चाय का पानी खौलने तक थोड़ी देर लिहाफ की गरमी का आनंद पा लेती, लो वह भी गया ! अनमनी हो उठी। मंजरी ने द्वार खोलकर देखा कि एक व्यक्ति लुंगी और हाफ स्वेटर पहने खड़ा है। मंजरी को देखते ही एक स्लिप उसकी ओर बढ़ा दी।

"यह क्या है ?" मंजरी ने पूछा।

"यही तो पता लिखा है। सामान आ गया है। कहां उतारूं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सामान यानी ईंटें । क्या होगा इनका ? देखूं स्लिप ? कहीं कुछ भूल हुई है ।"

स्लिप देखी —अवंती मजूमदार के नाम एक चालान था अर्थात मेरी मां के नाम ! मां क्या करेगी इन ईंटों का ? वह सोचने लगी नीचेवाली मंजिल पर हमारे घर में चार कमरे हैं । अंतिम कमरा मां का है । बैठक, बाहर का कमरा है, फिर इन ईंटों का क्या होगा ? सोचते हुए उसने दरवाजा जोर से बंद कर दिया ।

अवंती के बाथरूम से कुल्ले करने का शब्द सुनायी दे रहा था । मंजरी ने जोर से पुकारा, "मां !"

मां ने नहीं पूछा कि वह क्यों बुला रही है ? स्वयं ही प्रश्न किया, "घंटी किसने बजायी रे ।"

"तुम्हारे नाम से एक लॉरी भर ईंटें आयी हैं । बात क्या है मां ?"

अवंती के मुख पर घबराहट की एक हलकी-सी छाया उभर आयी, बोली, "इस समय ? इतनी सुबह ?" और बोलते-बोलते जल्दी-जल्दी बाहर की ओर चल दीं ।

मंजरी के होंठों पर संशय की रेखा खिंच गयी, चालान मां के हाथ में दे दिया । बोली, "जाओ देखो क्या करना है ? मेरा चाय का पानी खौल रहा है ।" किंतु ईंटें तो जैसे उसके मस्तिष्क में जम गयीं । लाल-लाल रंग की ये ईंटें ? कितनी होंगी ? लॉरी में कितनी ईंटें आती होंगी ? पांच सौ-हजार दो हजार न जाने कितनी !! उतार कर कहां रखेंगे ? छत पर या घर के सामने फुटपाथ पर !!

हमारे घर में तो काफी कमरे हैं —चार कमरे, रसोई, बाथरूम, पीछे की ओर बरामदा ! यह सब तो पिताजी के समय से ही है । गत बीस वर्षों में केवल एक बार ही घर की मरम्मत हुई थी । पुराने जमाने की ईंटें, सीमेंट, लकड़ी है इसी से आज भी जंगले, दीवारें, दरवाजे सभी मजबूत हैं ।

बीस वर्ष पूर्व पिताजी का देहांत हो गया । उस समय मंजरी ने बी.ए. की परीक्षा दी थी । तब बेकारी की समस्या विकराल रूप से फैली थी । वह नौकरी के लिए कितना घूमी थी ? पिताजी जो कुछ छोड़ गये वही थोड़ा-थोड़ा करके हम खर्च कर रहे थे । अवंती स्वयं घर का सब कार्य करती थी । खाना बनाते-बनाते ईश्वर को व अपने भाग्य को दोष देती जाती ।

मंजरी नौकरी खोजने में व्यस्त थी । इसी बीच उसने स्टेनोग्राफी और टाईपिंग सीख ली । इसी समय भाई ने बोर्ड की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । उसकी पढ़ाई तो रुक नहीं सकती थी । बहन शर्वरी अभी स्कूल की छात्रा ही थी, वह भी पढ़ेगी । वह सोचती रहती —भाई-बहन को पढ़ाना होगा, फिर एक दिन शर्वरी का विवाह भी करना होगा ।

अवंती भी यही सब सोच-सोचकर प्रारब्ध को दोष देती । आंचल से आंसू पोंछती । केवल एक आशा की किरण थी कि मंजरी एक दिन आकर कहेगी, "मां मुझे नौकरी मिल गयी ।" मंजरी का मुख देखकर ही वह भविष्य के प्रति तनिक आशान्वित हो जाती । और एक दिन वह स्वप्न साकार हो गया । मंजरी ने कितने इंटरव्यू दिये थे, कितने अपमानजनक शब्द सुने थे । प्रतिदिन अवंती पूछती, "कोई आशा है ।" "नहीं", मंजरी का संक्षिप्त-सा उत्तर मिलता ।

मां कहती आश्चर्य और दुःख से, "क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा ?" वह क्या कहे । फिर वही रूखा-सा उत्तर देना भी बुरा लगता । अपनी असमर्थता का बोध कचोटता । गंभीर मुख से हां-हूं करके अपने कमरे में घुस जाती ।

अवंती कर्त्तव्यपरायण व कुशल गृहिणी थी । उसका मन-संसार भले ही मलिन, विषण्ण रहे, किंतु मंजरी के सामने गरम चाय का कप ठीक समय रख ही देती । फिर कहती —"कुछ तो निश्चय ही होगा, तू इतनी चिंता मत कर ।" वे आशावादी हैं, पर मंजरी की चिंता मां से भी बढ़कर थी । उसका एकमात्र लक्ष्य था 'नौकरी ।'

बिजली का बिल तो उसके ट्यूशन के रुपयों से चला जाता । भाई-बहन को स्कॉलरशिप मिल गया था । अतः उनकी पढ़ाई का खर्च उनकी प्रतिभा से चल जाता । अभी तक ट्यूशन भी कर रहा था । वे लोग पूर्वी बंगाल के लोग हैं जीवन की विषमताओं के समक्ष हार नहीं मानते ।

बाहर का कोई व्यक्ति समझ नहीं पाएगा, किंतु मंजरी स्पष्ट देख रही है कि रोजाना के खाने-पीने में ही पिता की संचित पूंजी का अधिकांश भाग समाप्त होता जा रहा है । उस ओर सोचने से ही उसका मन जैसे जमने लगता है । बहन शर्वरी बड़ी होती जा रही थी । उसका विवाह । अपने देश में अच्छा वर । यानी अच्छे दाम । अधिक दाम देकर जो वर खरीदा जाए वही अच्छा ।

वह और नहीं सोच पाती । सिर को झटका देकर सोचती —यह सब सोचने का अभी समय नहीं । पहले नौकरी चाहिए । बैंक में रुपया जमा रखना होगा । नहीं तो शर्वरी का विवाह कैसे होगा ?

आखिर एक नौकरी मिली —'रिसेप्शनिस्ट' की । दुश्चिंताओं और स्वल्पाहार से चेहरा समय से पूर्व ही पक गया था, फिर भी बड़ी-बड़ी बोलती-सी आंखें, घने काले केश और गठा हुआ शरीर । मंजरी अब भी आकर्षक लगती थी । साथ ही उसका परिश्रमी स्वभाव था । अतः उसकी उन्नति होती गयी ।

धीरे-धीरे घर का रूप बदलने लगा । ड्रॉइंग रूम में नये परदे लगे । सोने के कमरे में सुंदर बेड कवर । बीच-बीच में थोड़ा शौक मौज भी । रसोई में काम करने को एक नौकर भी आ गया । अब अवंती को निर्बाध रूप से पुस्तकें पढ़ने का सुयोग मिल रहा था । शर्वरी ने एम.ए. पास कर लिया । उसका विवाह भी हो गया और वह श्वसुर गृह चली गयी । विवाह में मंजरी ने ऑफिस से उधार लिया और बाकी अपनी जमा पूंजी से लेकर पिता की भूमिका का निर्वाह किया । तभी पूरे घर की मरम्मत व रंगाई-पुताई भी करायी गयी थी ।

कुछ दिन पश्चात अभीक नौकरी पाते ही स्वयं अपना विवाह कर सपत्नीक दिल्ली चला गया । अब तो कभी-कभी पत्र आ जाता है बस । और कोई संपर्क अभीक के साथ अब नहीं रहा । उसकी पत्नी घर का कोई दायित्व लेना भी नहीं चाहती ।

मंजरी अब अकेली रह गयी, पर वह बंधनमुक्त कहां हुई ? मां साथ हैं बहुत कष्ट किया बेचारी ने । समय की सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते चालीस वर्ष बीत गये ।

शर्वरी के विवाह की चिंता में मां को नींद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आती थी । दामाद को क्या-क्या देना होगा, पूजा-उत्सव के समय क्या दे कि परिवार की लाज बनी रहे । यही समस्याएं लेकर वह चिंतित रहतीं । अभीक का जीवन ठीक चल रहा है या नहीं ? जन्मदिन का उपहार ठीक समय पहुंचाया नहीं । इन सब दुश्चिंताओं का पार नहीं था । उनकी इन चिंताओं को मिटाने में मंजरी मिट रही थी । और मंजरी का भविष्य । इस विषय में चिंता करने का औचित्य बोध ही उन्हें नहीं होता ।

मंजरी का अब बहुत से लोगों से परिचय हो गया था । वह मल्टी नेशनल कंपनी में 'रिसेप्शनिस्ट' से लेकर अब वह लेडी आफिसर थी । मान-सम्मान था । एक दिन घर आकर मंजरी बोली, "मैं अब विवाह करूंगी मां ।"

अवंती अभी ही रामकृष्ण मिशन से स्वामीजी द्वारा किया गया गीता -पाठ सुनकर लौटी थी । संसार में तुम किसके हो और कौन तुम्हारा है ? की नीति से हृदय भरा था । स्वामीजी ने कहा था, 'स्वप्न अथवा जागृति में जो भी देखते हो, सब मिथ्या, इन्हीं भावों में डूबी वह घर लौटी थी ।

मंजरी की बात सुनकर पहले मां अचकचा गयी । फिर संज्ञा यथार्थ की ओर लौटी —सत्य जगत की ओर । मंजरी का विवाह । मंजरी , जो उसकी बेटी है कितने समय बाद जैसे यह बात मन में उठी । मंजरी नाम की एक लड़की थी बीस वर्ष पूर्व, जब उसने बी.ए. की परीक्षा दी थी । पति के देहांत के पश्चात् जीवन बीमा से लेकर भविष्य निधितक दौड़-धूप कर पैसा निकाल घर को डूबने से बचाकर

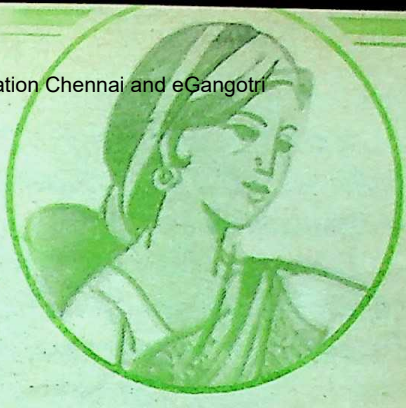

चलाती आई थी । वही एक दुबली-पतली सी लड़की मंजरी । अपने कोमल हाथों पर घर का कार्यभार व सम्मान उठा लिया था । छोटी बहन का विवाह किया । भाई को जीवन में प्रतिष्ठित किया । और विवाह में लिया कर्जा भी धीरे-धीरे खुद ही चुकाया ।

और बीस वर्ष बाद वह हठात् कह रही हैं, 'मां मैं विवाह करूंगी ! आश्चर्य !

मंजरी तो परिवार की कर्णधार है । उसके लिए अलग से चिंता क्यों करे वह । वह तो बड़ी है न । चिंता तो छोटों के लिए ही होती है । किंतु मंजरी का विवाह करना भी तो उसका कर्तव्य है । वह भी तो उसी की लड़की है । इस चेतना के आते ही उसके मस्तिष्क में जैसे तूफान उठने लगा । हृदय धक-धक करने लगा ।

अवंती आर्म चेयर में बैठ गयी । यह सब आरामदेह सामान मंजरी ही तो मां के लिए लाई है । जिस पर आराम से बैठकर पांव फैलाकर वह पुस्तकें पढ़ती है । बैग से पान का डिब्बा निकालकर एक पान मुख में डाला, छोटी डिब्बी से सुगंधित जर्दे की एक चुटकी खाई, बोली,,'बैठो पात्र कौन है ? बताओ तो ।"

"मेरा ही सहकर्मी है । परचेज आफिसर, सुगत भट्टाचार्य । डिवोर्सी यानी तलाकशुदा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजरी ने सब कुछ सीधे-सीधे बता दिया ।

"ऐं दहेजू है । बच्चे भी हैं क्या ?" "न", मंजरी ने कहा । मां फिर बोली, "लड़का कैसा है ? और तलाक क्यों हुआ ?"

मंजरी असहिष्णु सी होकर बोली, "मेल नहीं हुआ । बस पर्सनेलिटी क्लैश ।"

अवंती को मना करने का जैसे एक बहाना मिल गया । किंतु मंजरी चालीस वर्ष की प्रौढ़ा होकर कैसे लज्जावती वधु बनेगी । उसे उल्टा-सीधा समझाना भी व्यर्थ है । अतः वह बोली, "तब विवाह की तैयारी तो करनी होगी । बोलने मात्र से तो विवाह नहीं होता । कुछ आयोजन तो करना ही होगा ।"

मात्र ही तो है और क्या ?"

पुत्र पर किया कटाक्ष झेलकर अवंती एक निश्वास फेंक मुख पर मुसकान लाकर बोली, "फिर भी गहना-वहना तो कुछ बनाना पड़ेगा । कुछ रुपया पैसा तो लगेगा ही । मेरी भी तो कुछ साध है न ।"

पुत्री की ओर स्थिर नेत्रों से अवंती ने देखा । पहले जैसा क्लांत चेहरा अब मंजरी का नहीं रहा । लगता है कि उम्र के वार्धक्य ने उसे अभी नहीं छुआ । लंबी, छरहरी-इकहरी देह-यष्टि अब भी आकर्षक है । फिर मल्टी नेशनल कंपनी के आफिसर के योग्य परितृप्त-मुख । बड़ा आकर्षक है ।

'परचेज आफीसर सुगत भट्टाचार्य क्यों विवाह करना चाहता है ?' अब यह प्रश्न उसके दिमाग में चक्कर लगाने लगा । आय तो अच्छी है । विवाह करके मंजरी आफिस का काम छोड़ सकेगी ? मां ने विश्वास तोड़ दिया । अब सुगत की भी परीक्षा लेनी चाहिए ।

"कैसा आयोजन और तैयारी मां । तलाकशुदा से विवाह करूंगी —दूसरा विवाह । मैं किसी की मुखापेक्षी हूं । मेरी नौकरी है, प्रोवीडेंट फंड है । और अब इस उम्र में अविवाहित वर कहां मिलेगा मां ?"

मंजरी का मन हुआ कहे —इतने दिन से अविवाहित वर खोजा क्यों नहीं ? पर फिर चुप रह गयी । बोली, "तुम्हें कोई चिंता नहीं रहेगी । हम लोग तुम्हारी देखभाल करेंगे । यह बात निश्चित हो चुकी है । पुत्र होते भी अभीक तुम्हारा दायित्व नहीं लेता, तब बड़ी होने के नाते मैं ही तुम्हारा भार संभालूंगी । और अब भी कौन सी संतान से सुख पा रही हो ? साहचर्य

मंजरी ने मां को आश्वासन दिया, "वह सब हो जाएगा मां । बैंक में कुछ रुपया है । प्रोवीडेंट फंड से भी लिया जा सकता है । सब मिलाकर दस हजार हो जाएगा ।" वही तो मंजरी का संबल है । घर का ठाठ-बाट बनाए रखने के लिए वह खर्च करती रही है । फिर जितनी आय उतने खर्च । फिर भी वह अपने भविष्य के लिए कुछ बचाती रही है ।

अवंती अब चाय की टेबुल पर आ गयी । मंजरी ने पूछा, "ईटवाला क्या कह रहा है ?"

अवंती ने मानो सुना ही नहीं । चेयर पर बैठते ही आंखों पर चश्मा चढ़ा लिया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार पत्र अपनी ओर खींच लिया ।

अब मंजरी ने कुछ कड़े स्वर में पूछा, "बात क्या है ? ईंटों का क्या हुआ ?"

"ओ ! वह तुझे नहीं बताया शायद । सोचती हूं ऊपर की मंजिल पर एक कमरा, बाथरूम व रसोई घर यदि बनवा दूं तो मेरा गुजारा हो जाएगा, तब नीचे का घर किराए पर उठाकर मैं ऊपर रहने लगूंगी ।"

मंजरी मानो आकाश से धरती पर गिरी, बोली, "तुम्हारी चिंता तो मेरे ऊपर है मां । मैं क्या इस विषय में सोचे बिना ही विवाह कर रही हूं । पर इतना रुपया कहां से आया ? भाई ने भेजा है क्या ?

अवंती स्वाभाविक मुद्रा लाने की चेष्टा करती हुई बोली, "क्यों तुमने दस हजार रुपए जो दिए थे ।"

"तू तो विवाह करके चली जाएगी । उसके बाद मेरा क्या होगा ?"

मंजरी के सिर पर जैसे कोई ईंट आकर गिरी, "ये मां हैं —स्वार्थी, लोभी, आत्मकेंद्रित । अब तो इनसे बात करने में भी दुख होता है । इतने वर्षों से केवल रुपया रुपया । जैसे मैं रुपया बनाने की मशीन हूं । दुनिया में मुझे जैसे कुछ चाहिए ही नहीं । मां का स्नेह भी नहीं । एक घृणा पूर्ण वेदना की लहर सारे शरीर में चल गयी । चाय का कप खिसका कर उठ गयी । इस घर में अब रहा नहीं जाएगा । कोई अपना नहीं । मां भी नहीं । आश्चर्य । एक्सेज आफीसर सुगत भट्टाचार्य क्यों विवाह करना चाहता है ?' अब यह प्रश्न उसके दिमाग में चक्कर लगाने लगा । आय तो अच्छी है । विवाह करके मंजरी आफिस का काम छोड़

सकेगी ? मां ने विश्वास तोड़ दिया । अब सुगत की भी परीक्षा लेनी चाहिए ।

उद्भ्रांत-सी वह आफिस गयी । सुगत से फोन पर दस हजार रु. इस प्रकार खोने की बात बतायी । आभूषण के लिए दिये गये रुपयों से वह मां द्वारा ही ठगी गयी । दोनों के सम्मिलित रुपयों से फ्लैट खरीदने की आशा अब नहीं है । अब तुम्हारी क्या राय है ?" उसने पूछा ।

सुगत भट्टाचार्य ने उत्तर दिया, "ठीक है और दो वर्ष प्रतीक्षा कर लूंगा, तब तक रुपया जमा हो जाएगा । फ्लैट न होने से विवाह के बाद एक कमरे के अपार्टमेंट में रहना संभव न होगा ।"

शीत की धूप में तपती ईंटें अब अस्पष्ट नहीं । खूब स्पष्ट ही दिख रही हैं । अवंती कुछ मिस्त्रियों के साथ खड़ी ईंटों की गिनती कर रही है । अपने भविष्य की मजबूत दीवार खड़ी करने की तैयारी कर रही है शायद । और मंजरी के भविष्य की गिरती दीवार क्या ये ईंटें संभाल पाएंगी ? अर्थहीन जीवन का बोझ लेकर फिर अपने परिचित परिवेश में लौटना ही पड़ा ।

४६ बी, रिचि रोड कलकत्ता-७०००१९

अनु. मालती कुलश्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीला, अनूपशहर

प्रश्न : उम्र ३० वर्ष है । कई वर्ष से आधे शरीर में बहुत दर्द रहता है । अब हल्का-हल्का बुखार भी हो जाता है । अनेक चिकित्सकों से सलाह ली कोई आराम नहीं ।

उत्तर :असगंध चूर्ण दो सौ ग्राम, महायोगराज गूगल बारह ग्राम, मुक्ता शुक्ति भस्म बारह ग्राम लेकर सभी दवाओं की अस्सी मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

राजीवरमण, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : ४-५ साल से आंव की शिकायत है । शौच के साथ तेल की तरह झाग आता है । शौच-विसर्जन के लिए चार-पांच बार जाना पड़ता है । कमजोरी बढ़ रही है ।

उत्तर : चित्रकादि बटी दो-दो सुबह-शाम गरम पानी से लें । कुट जारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

नलय कुमार, घोघरडीहा

प्रश्न : आठ साल से पेट में जलन और सिर में दर्द बना रहता है । पेट में गैस रहती है । ग बार-बार निकलती रहती है ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक च सुबह शाम पानी से लें । साथ में लवण भास्कर चूर्ण एक-एक चम्मच के बाद पानी से लें ।

श्याम बाबू, घोराबल

प्रश्न : २२ वर्षीय युवक हूं । मेरी समस्या विकराल है । बड़ी तेजी से बाल झड़ रहे हैं दिन पर दिन गंजा होता जा रहा हूं । कोई शारीरिक परेशानी नहीं है । मानसिक रूप से बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : शंखपुष्पी चूर्ण आधा चम्मच आंवला चूर्ण आधा चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ लें । महाभृंगराज तेल से प्रतिदिन सिर पर हल्की-हल्की मालिश करें ।

लखन कुशवाहा, गर वांध

प्रश्न : पैर के अंगूठे से दर्द शुरू होकर उठ रहता है । सूजन, बुखार और भूख न लग शिकायत है । काफी परेशान हूं । कृपया उपचार बतायें ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । श्वेत प ६० ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा खाने के बाद पानी से आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक दोपहर पानी से लें ।

जनार्दन प्रसाद, महेशगंज

प्रश्न : मेरी आयु ५६ वर्ष है । बीस वर्ष परेशान हूं । सोराइसिस और बवासीर है

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्नवागूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो पानी से लें ।

सुधा देवी, गया

प्रश्न : ५१ वर्षीय हूं । कई वर्ष से अनेक शारीरिक रोगों से पीड़ित हूं । गर्भावस्था के समय रीढ़ की हड्डी में दर्द के साथ बुखार शुरू हुआ । अभी भी कभी-कभी हो जाता है । साइटिका का दर्द बना रहता है । हाथों का मांस शिथिल हो गया है । रजो निवृत्ति दो वर्ष पूर्व हो चुकी है ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच और अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

भवेश कुमार, सुल्तानगंज

प्रश्न : २० वर्षीय युवक हूं । सरदी, खांसी, कफ और बुखार रहता है । स्मरणशक्ति कमजोर है । चेहरे पर फुंसियां भी हो जाती हैं ।

उत्तर : तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम, टंकण भस्म दस ग्राम और चन्द्रामतरस दस ग्राम लेकर सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । संजीवनी वटी दो-दो दोपहर-रात गरम पानी से लें ।

हीरालाल, खडगपुर

प्रश्न : सात वर्षों से भयंकर कमर दर्द से पीड़ित हूं । मूत्र वैसे तो खुलकर आता है, किंतु अंत में थोड़ा-थोड़ा होता है । साइकिल चलाने पर घुटनों में दर्द हो जाता है ।

उत्तर : गोक्षुरादि गूगल एक वटी और चंद्रप्रभा वटी एक, सुबह-शाम गरम पानी से लें । महायोगराज गूगल एक वटी रात दूध से लें ।

विपुल, फैजाबाद

प्रश्न : मेरी मां की आयु ४५ वर्ष है । सात-आठ माह से एड़ियों में दर्द रहता है । रात को काफी बढ़ जाता है ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह, दोपहर और रात गरम पानी से लें ।

हेमचंद्र मिश्र, केशवपुरम

प्रश्न : ५६ वर्षीय हूं । सात साल से परेशान हूं । नहाने के बाद सारे बदन में दर्द बना रहता है । चलने पर बढ़ जाता है । थकान हो जाती है । पेट में गैस बहुत बनती है ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल दो वटी और चंद्रप्रभा वटी एक सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

विजय जैन, बीणा

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । सिर दर्द हर समय बना रहता है । अब याददाश्त भी कमजोर हो गयी है । सभी प्रकार की जांच करा चुका हूं । सब ठीक है । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : गोदंती भस्म तीस ग्राम और शंखपुष्पी चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । बलारिष्ट दो चम्मच और सारस्वतारिष्ट दो चम्मच लेकर भोजन के बाद पियें ।

श्रीमती सरोज, हरिहरपुर

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष है । दो संतानें हैं । पेशाब में जलन, योनि में हल्का-हल्का दर्द बना रहता है । कमजोरी भी है । स्वभाव में चिड़चिड़ापन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने लगा है ।

उत्तर : चंदनादि लोह दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम और सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । चंद्रप्रभावटी एक-एक रात दूध से लें ।

अंजु, जयनगर

प्रश्न : २४ वर्षीय हूं । चेहरा काला नजर आता है । भूख कम लगती है । चक्कर कभी-कभी आ जाते हैं । उत्साह नहीं है । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, नवायस लोह पंद्रह ग्राम, शंख भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मालती बसंत पांच ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । दोपहर-रात एक-एक मात्रा शहद से लें ।

ओम कैलाश, महमूदपुर

प्रश्न : ४५ वर्षीय हूं । छह महीने पहले दुर्घटना के कारण चोट लगी । पैरों में भी चोट लगी । किंतु चलने में कोई परेशानी नहीं है । दर्द बना रहता है । काफी परेशान हूं ।

उत्तर : लाक्षा गूगल दो वटी और चंद्रप्रभा वटी एक सुबह और रात दूध से लें ।

रचना, जोगसर

प्रश्न : २६ वर्षीया दो बच्चों की मां हूं । शरीर में अचानक दाने हो जाते हैं । कभी-कभी अंगुलियों में मवाद वाला घाव बन जाता है ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम और गिलोय सत्व दस ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से ले[illegible] सारिवाधासव दो-दो चम्मच भोजन के [illegible] पियें । केशोर गूगल एक-एक वटी [illegible] दूध से लें ।

संजय, झांसी

प्रश्न : पत्नी की आयु २६ वर्ष है । डेढ़ [illegible] मेरा विवाह हुआ था । शुरू से ही गर्भा[illegible] विकारों से पीड़ित है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक सुबह-[illegible] गरम पानी से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

कु. परवीन, भरतपुर

प्रश्न : २६ वर्षीय युवती हूं । चार साल [illegible] पर कालापन व दाग धब्बे हैं । एक साल [illegible] एलोपैथी से चिकित्सा की लेकिन लाभ [illegible] मिला ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी एक, के[illegible] गूगल एक वटी लेकर सुबह-शाम [illegible] लें । सारिवाधासव दो-दो चम्मच [illegible] के बाद लें ।

शंभू प्रसाद, चकाई

प्रश्न : मेरे पिताजी की उम्र ७० वर्ष है । [illegible] छाती में भयंकर दर्द होता है । डॉक्टर [illegible] बीमारी बताते हैं ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, [illegible] भस्म तीस ग्राम और नागार्जुनाभ्र[illegible] ग्राम लेकर सभी औषधियों की [illegible] बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-[illegible] से लें । अर्जुनारिष्ट दो-दो चम्मच [illegible] बाद पियें । पुष्करमूल चूर्ण आधा [illegible] चम्मच रात में गरम पानी से लें ।

—कविराज वेदप्र[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलना कहां छुपा है मोहब्बत के फूल का

● डॉ. मनोहर भंडारी

प्रेम शब्द की उत्पत्ति हुई है, संस्कृत की प्री धातु से, प्रीणाति इति प्रियः जो प्रिय लगता है। प्रिय शब्द में इमनिच प्रत्यय लगाकर प्रेम शब्द बना है।

विवाह सात साला अनुबंध नहीं

हमारे यहां देह को, यौन को, काम को प्रेम नहीं माना गया है। यही वजह है कि विवाह चार साला या सात साला अनुबंध नहीं होता है। हमारे यहां संबंधों की आयु, संबंधों के स्थायित्व तथा प्रगाढ़ता में उत्तरोत्तर वृद्धि करती है। इस संदर्भ में सुमित्रानंदन पंत का यह उद्घोष यथार्थ ही है—

देह नहीं है परिधि प्रणय की
प्रणय दिव्य है मुक्ति हृदय की
यह अनहोनी रीति
देह वेदी हो प्राणों के परिणय की

रामधारीसिंह दिनकर देह को प्रेम-सेतु कहते हैं, 'नारी के भीतर एक और नारी है, जो अगोचर और इंद्रियातीत है। इस नारी का संधान पुरुष तब पाता है, जब शरीर की धारा उछालते-उछालते, उसे मन के समुद्र में फेक देती है। जब दैहिक चेतना से परे वह प्रेम की दुर्गम समाधि में पहुंचकर निस्पंद हो जाता है। और पुरुष के भीतर भी एक और पुरुष है, जो शरीर के धरातल पर नहीं रहता, जिससे मिलने की आकुलता में नारी अंग-संज्ञा के पार पहुंचना चाहती है। इंद्रियों के मार्ग से अतींद्रिय धरातल का स्पर्श यही प्रेम की आध्यात्मिक महिमा है।' स्वामी रामतीर्थ कहते हैं, 'प्रेम एक रोमांस भर नहीं है, एक आत्मीयता है। अंतरंगता है। एक विश्वास है। एक शक्ति है। जीवन के लिए एक सार्थक प्रेरणा है। प्रेम बंधन नहीं है, मुक्ति है।

प्रेम प्राणवायु

प्रिय मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु नस्कृधि
प्रियं सर्वस्य पश्यत, उत शूद्रे उत आर्ये

अर्थात संसार का कोई भी प्राणी क्यों न हो, हम सभी के प्रिय बनें। विश्वव्यापी प्रेम की स्थापना हो, हमारा किसी से भी (शूद्र अथवा आर्य) विरोध न हो। वास्तव में प्रेम इसीलिए अंधा कहलाता है, प्रेम देख ही नहीं पाता कि कौन शूद्र है, कौन आर्य है, ब्राह्मण है, पशु है, पक्षी है, पेड़ है, पौधा है। प्रेम तो प्राणवायु की तरह है, पक्षपात से परे। जग को यही शिक्षा देने हेतु प्रकृति अनूठी घटनाएं रचती है। शबरी राम को जूठे बेर खिलाती है और उसके प्रेम में मंत्रमुग्ध राम जूठे बेर खाते हैं, सुदामा के चावल कृष्ण को बहुत रास आते हैं, बुद्ध सुजाता की खीर खाकर बोधि को तत्पर होते हैं, शंकराचार्य चांडाल के चरण छूते हैं और विवेकानंद गणिका को गुरु कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात संसार का कोई भी प्रा[illegible] न हो, हम सभी के प्रिय बनें। विश्वव्यापी प्रेम की स्था[illegible], हमारा किसी से भी (शूद्र अथवा आर्य) विरोध न हो। [illegible] में प्रेम इसीलिए अंधा कहलाता है, प्रेम देख ही नहीं [illegible] कौन शूद्र है, कौन आर्य है, ब्राह्मण है, पशु है, पक्षी है, पेड़ [illegible] धा है।

वैसे तो प्रेम शब्दातीत है, फिर भी महर्षि नारद ने भक्ति सूत्र में प्रेम की शब्दों के माध्यम से सर्वोत्कृष्ट परिभाषा प्रस्तुत की है—

अशब्दम्, अरूपम्, अस्पर्शम्, अव्ययम्

इसी परिभाषा को आगे बढ़ाते हुए नारदजी कहते हैं—

गुणरहितं, कामनारहितं, प्रतिक्षणवर्धमानम्
अविच्छिन्नं सूक्ष्मतरं, अनुभवगम्यम्

प्रेम अद्भुत अनुभूति

वस्तुतः प्रेम व्यष्टि से व्यष्टि को जोड़नेवाली संज्ञा का नाम है। साथ ही व्यष्टि को समष्टि तक ले जानेवाली साधना का नाम है। तुलसीदास हो या मीरा, सूरदास हो या कबीर उन्होंने प्रेम के दिव्य प्रकाश में ही जाना कि प्रेम अद्भुत अनुभूति है, अद्वैत का मूल है प्रेम। दरअसल प्रेम सतत् है, अभय है, आनंद स्रोत है, आत्मीयता है, अंतरंगता है, तन्मयता है, करुणा है, कृतज्ञता है, विनम्रता है, उत्सर्ग है, समर्पण है। प्रेम एक शाश्वत सत्य है, निसीम है, और है एक अलौकिक छंद। प्रेम एक ऐसी अग्नि है जो हृदय को सदैव बालती (जलाती) रहती है, इसी आग के विषय में भक्त कवि रहीम कहते हैं—

सुलगे जेते बुझि गए बुझे ते सुलगे नाहि
रहिमन दाहे प्रेम के बुझि-बुझि सुलगाहि

प्रेम तो सतत जलनेवाला अलाव है। एक बार अगन की लगन लगी फिर चैन नहीं। यह प्रेमाग्नि मांगती है, सर्वस्व न्यौछावर करने का साहस। पतंगे के उत्सर्ग-सी तैयारी। कबीरदासजी कहते हैं—

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहि
सीस उतारे भुई धरै, तब पैठे घर माहि

सीस याने सिर प्रतीक है प्रतिष्ठा का, अहंकार का, आत्म-विश्वास का, मैं पन का। प्रेम में इस 'मैं' का विसर्जन आवश्यक है। बकौल जिगर—

तमाम उठ गए पर्दे तो इससे क्या हासिल
मजा तो जब था मैं भी न दरमियां होता

प्रेम का समर्पण अद्भुत है, इससे घटित होता है आत्म-विसर्जन। इस महिमामयी की विराटता, भव्यता अद्वितीय है। और जब किसी के जीवन में प्रेम घटित होता है, तब उसे सारा संसार प्रेममय लगता है। ऐसा व्यक्ति दुनिया की निगाहों से छुप नहीं सकता। प्रेम जब घटित होता है, तब उसकी खबर दूर-दूर तक अपने आप फैलती है—

खिलना कहीं छुपा है मुहब्बत के फूल का
ली एक सांस और गली तक महक गयी
सारे जमाने को खबर

एक कृष्ण पैदा होता है, एक ईसा जन्म ले[illegible]

कादम्बि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, एक मुहम्मद उतरता है, सारे जमाने को खबर लगती है। राम, बुद्ध, महावीर, मूसा, कबीर, तुलसी, रसखान, रैदास, रामकृष्ण, चैतन्य पैदा होते हैं, महकता रहता है— आलम सदियों तक। जिसके दिल तक उनकी महक जाएगी उसमें भी परिवर्तन घटित होते हैं और ये परिवर्तन अवश्यंभावी है। फैज कहते हैं—

रात यूं दिल में तेरी खोई हुई याद आई
जैसे विराने में चुपके से बहार आ जाए
जैसे सहराओं में हौले से चले बादे नसीम
जैसे बीमार को बेवजह करार आ जाए

प्रेम में अद्भुत क्षमता है। मरूस्थल को गुलशन में बदलने की क्षमता प्रेम में ही है। प्रेम नष्ट नहीं करता, प्रेम परिवर्तन करता है। नष्ट करना हिंसा है। यदि हमारे ग्रंथ हिंसा को प्रेम में परिणत करने में असमर्थ हैं तो ऐसे ग्रंथ या ज्ञान व्यर्थ है। वह ज्ञान मस्तिष्क के लिए एक जलाशय-सा है, जहां प्रवाह नहीं है, स्थिरता है। पानी या ज्ञान के मामले में स्थिरता का अपरिहार्य परिणाम हैं, सड़ांध। ज्ञान में जड़त्व मूढ़ता है। प्रेम सतत प्रवाहमान है। प्रकृति विविध तरीकों से प्रयास करती है, हमारे जड़त्व को दूर करने के लिए। दिनकरजी ने कहा है—

सारी देह समेट निविड़ आलिंगन में भरने को
गगन खोलकर बांह बिसुध वसुधा पर झुका हुआ है।

प्रेम सर्व शक्तिमान

यह विस्मय का विषय है कि हम प्रेम के दिव्य प्रकाश को बुझाकर, इस ईश्वरीय-संपदा को जो हमें विरासत में मिली है, मिट्टी में मिलाकर प्रसन्न हैं। नाशवान भौतिक सुखों के पीछे मानवीय मूल्यों को भुला बैठे हैं। जबकि प्रेम को सर्वशक्तिमान माना गया है। प्रेम को सृष्टि का नियंता कहा गया है। महाकवि कालिदास कृत कुमार संभव में गिरिराज हिमालय से नारदजी भगवती पार्वती के बारे में कहते हैं 'प्रेम्णा शरीरार्धहरां हरस्य' अर्थात प्रेम के बल पर पार्वती हर (महादेव) के शरीर के अर्ध-भाग को हर लेगी। जिनका नाम ही हर है उनका शरीरार्ध हरण करना प्रेम के सर्वशक्तिमान होने का सीधा प्रमाण है। शिव-पार्वती का अर्धनारीश्वर स्वरूप की ही परिणति है। प्रेम के विषय में नारदजी कहते हैं, 'वादः नावलम्बयं'प्रेम वाद पर अवलंबित नहीं है।' वाद का प्रश्न ही नहीं। वाद तो मस्तिष्क के क्षेत्र की बात है। मस्तिष्क के नियंत्रण से परे है प्रेम। महान आध्यात्मिक संत जिद्दू कृष्णमूर्ति, प्रेम के विषय में अपनी अनूठी शैली में वार्तालाप करते हुए कहते हैं, "स्वामित्व भाव, संवेदना, भावना, क्षमाशीलता, प्रार्थना भावमय आदि दुधारी वृत्तियां हैं। ये जीवनदान भी दे सकती हैं और हत्या भी करवा सकती हैं। क्योंकि ये मस्तिष्क के क्षेत्र की संज्ञाएं हैं। ये संज्ञाएं जब लुप्त हो जाती हैं और आपका हृदय मस्तिष्क के नियंत्रण से, विचारों से मुक्त हो जाता है, तब घटित होता है प्रेम। सच्चे आदरभाव, करूणा, त्याग, निष्ठा के बिना प्रेम घटित नहीं होता।"

वास्तव में प्रेम रसायनों या मस्तिष्क के विशिष्ट केंद्रों से नियंत्रित कोई जैविक क्रिया नहीं है। प्रेम है हृदय की रागिनी। विवाद है मस्तिष्क का द्वंद्व। हृदय को तर्क से, विवाद से क्या लेना वह तो है प्रेम से लबलबाता महासागर है।

— ३, सवाद नगर, इंदौर-४५२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी व्यवसाय प्रारंभ करने से पूर्व प्रत्येक व्यवसायी उसकी संभावनाओं का पूर्वानुमान लगाता है। क्षेत्र में उसकी मांग और पूर्ति को परखता है; तत्पश्चात वह किसी व्यवसाय में हाथ डालता है। व्यावसायिक क्षेत्र में आज कड़ी स्पर्धा है। आप जो व्यवसाय करने जा रहे हैं उसमें यदि कुछ लोग पहले से हैं तो आपको उनकी स्पर्धा में तो उतरना ही पड़ेगा, साथ ही अपनी उत्तमता प्रकट करनी होगी ताकि ग्राहक आपकी ओर आकृष्ट हों।

पोपट लालजी ने यही तो किया। उनके चरित्र की यह विशेषता है कि वे व्यावसायिक लोगों में राजनेता और राजनेताओं में व्यवसायी हैं। ऊंचे-ऊंचे राजनेताओं से गूढ़ संबंध होने के बावजूद जब राजनीति में उनकी दाल नहीं गली, तब उन्होंने व्यवसाय करने की सोची। ऐसा व्यवसाय जिसमें स्पर्धा कम हो तथा लाभ पूरा। अंततः उनको इसमें सफलता मिली। आज वे अपने व्यवसाय में शीर्षस्थ हैं।

हमारे देश में प्रजातंत्र शासन प्रणाली है। यह वह प्रणाली है जो प्रत्येक दल को जनसेवा, राष्ट्र सेवा के अवसर प्रदान करती है। इसीलिए

व्यंग्य

आंदोलन सामग्री के थोक विक्रेता

□ डॉ. मंगल बादल

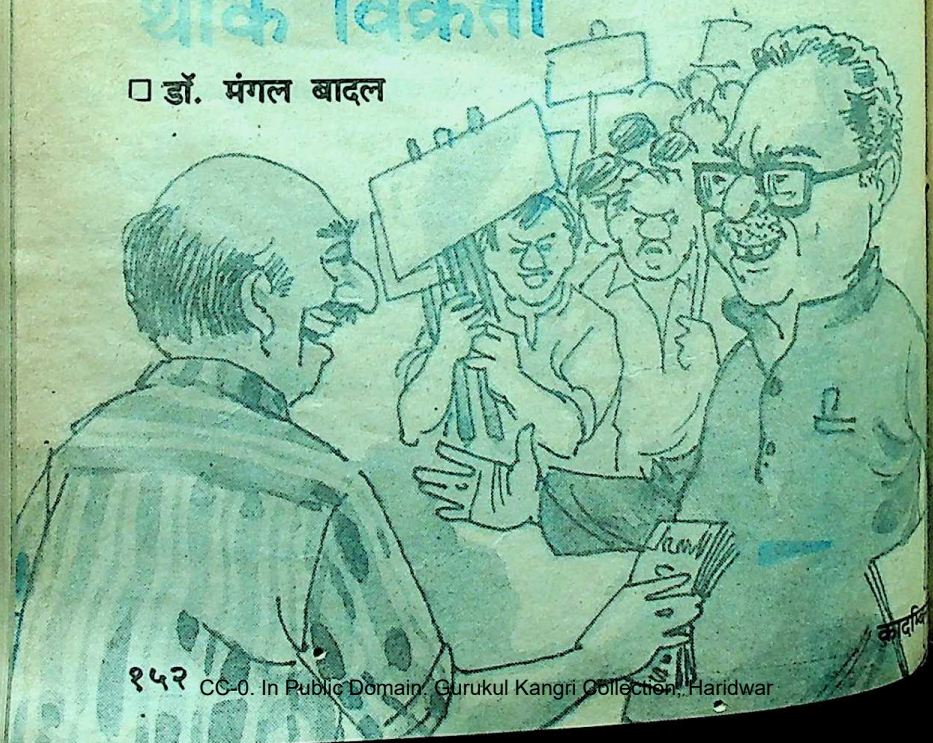

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक विरोधी दल सत्ता में आने के लिए सत्ता दल के विरुद्ध रोज-रोज नये-नये आंदोलन छेड़कर जनसेवा और राष्ट्र सेवा के सुअवसर खोजता है । प्रजातंत्र ने हमारे देश को न केवल बड़े-बड़े नेता बल्कि कुशल व्यवसायी भी प्रदान किये हैं । पोपटलालजी भी उनमें से एक हैं । उनका पूरा नाम पोपट लाल 'सर्वसेवी' है । उनका कहना है कि वे जाति, धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर सबकी सेवा में विश्वास करते हैं । आंदोलनकारी चाहे किसी जाति या संप्रदाय का हो वे भेदभाव नहीं बरतते । इसी कारण से उनकी दुकान पर प्रत्येक वर्ग के लोग आते हैं । उन्होंने बतलाया कि बड़े सोच-विचार के बाद ही उन्होंने इस व्यवसाय में उतरने का निर्णय लिया । सबसे पहले उन्होंने राजनीतिक विशेषज्ञों से क्षेत्र का सर्वेक्षण करवाया कि उनके क्षेत्र में आंदोलनों, घेरावों, धरनों, प्रदर्शनों आदि की कितनी संभावनाएं विद्यमान हैं । तत्पश्चात आंकड़ों का गहन अध्ययन किया । उन्हें इस बात की खुशी हुई कि यदि वे 'आंदोलन सामग्री के थोक विक्रेता' के रूप में व्यवसाय प्रारंभ करें तो उन्हें अवश्य सफलता मिलेगी । उन्होंने बिना आगा-पीछा देखे व्यवसाय शुरू कर दिया । एक तो वे व्यवसाय में अकेले, दूसरे अधिक

मांग ने उनके पांव गहराई से जमा दिये । 'नगर बंद' से उन्होंने कारोबार शुरू किया था ; आज वे 'प्रदेश बंद' और 'भारत बंद' के ठेके धड़ल्ले से लेते हैं ।

पोपटलालजी का कारोबार काफी फैला है । वे कवि सम्मेलनों की 'हूटिंग' से लेकर मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री की सभाओं तक को उखाड़ने का सामान मुहैया करवाते हैं । शहर में कोई जनसभा हो या धार्मिक सम्मेलन, उसके आयोजक सर्वप्रथम पोपटलालजी से मिलते हैं । पोपटलालजी ने यदि उन्हें पूर्ण सफलता का आश्वासन दे दिया तो कोई माई का लाल उस सभा को असफल नहीं कर सकता । वे आयोजकों को यह भी सलाह देते हैं कि आयोजन की सफलता के लिए किस नेता या अभिनेता को बुलाया जाए । वे इसका प्रबंध भी कर देते हैं । यह दूसरी बात है कि वे इन सबके लिए 'एडवांस-शुल्क' ले लेते हैं । 'उधार' उनके विचार में ऐसी कैंची है जो प्रेम के धागों को काटकर व्यवसाय को असफल कर देती है ।

आंदोलन का सामान सप्लाई करने से पूर्व वे सारी स्थितियों का गहन अध्ययन करते हैं । आंदोलन शांतिपूर्ण होगा या उग्र । यदि उग्र

यदि आपको भी किसी प्रकार के आंदोलन में किसी प्रकार की सामग्री या बंदों की जरूरत है तो आप पोपटलालजी की सेवाओं से लाभ उठा सकते हैं । ग्राहक की संतुष्टि ही उनकी संतुष्टि है । रही बात पोपट लालजी के दुकान के पते की , तो वे हर शहर और गांव में मिलेंगे !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ तो किस सीमा तक। लाठीचार्ज या गोली चलने की कितनी संभावनाएं हैं, आदि बातों को ध्यान में रखकर ही वे रेट तय करते हैं। वे राजधानी की ओर जानेवाली बड़ी-बड़ी रैलियों का प्रबंध करते हैं। इसके लिए शहर से ग्राम स्तर तक उनके एजेंट कार्यरत हैं, जो उनके काम को बखूबी अंजाम देते हैं। साधारण प्रदर्शन और विशेष प्रदर्शन के लिए उनके आदमी तय हैं वे तंबू, कुरसियों आदि से लेकर झंडे, बैनर, नारे, मशालें, लाठियां, ईंट-पत्थर आदि सप्लाई तो करते ही हैं, किंतु साथ ही ऐसे कुशल और समर्पित कार्यकर्ता जो अपना कार्य संपन्न कर भूमिगत हो जाते हैं। अथवा किसी अन्य प्रदर्शन में भाग लेने चले जाते हैं। जो लोग पकड़े जाते हैं वे पोपटलालजी के आदमी नहीं होते क्योंकि पुलिस उन्हें पहचानती है और पहचान की कीमत पहले ही चुकायी होती है।

एक भेंट में पोपटलालजी ने बताया कि उनके पास चालीस दिन तक भूख हड़ताल करनेवाले कुशल मेधावी और समर्पित कार्यकर्ता हैं। ऐसे-ऐसे भाषणबाज हैं जो जायदाद के बंटवारे को लेकर हुई लड़ाई को सांप्रदायिक रंग देने में सक्षम हैं। मूलतः पोपटलालजी अहिंसक हैं और कोशिश भी यही करते हैं कि प्रदर्शन दंगे में न बदले, किंतु सत्तापक्ष या आयोजक ऐसा चाहें तो वे रजामंद भी हो जाते हैं, क्योंकि आखिर धंधे का सवाल है। पोपटलालजी अपने कार्यकर्ताओं का बड़ा खयाल रखते हैं। उनके विचार में वे उनके 'कमाऊपूत' हैं। कार्यकर्ता भी उन्हें अपना अन्नदाता समझते हैं। किसी प्रदर्शन या रैली में भाग लेने जाने से पूर्व वे अपने कार्यकर्ताओं का दुर्घटना-बीमा तक करवाते हैं।

चुनाव या अराजकता के दिनों को वे 'सीजन' कहते हैं। कई दिनों तक यदि बराबर शांति बनी रहती है तो उनके कार्यकर्ता घबरा जाते हैं। बड़े-बड़े अधिकारियों और नेताओं के फोन आने लगते हैं कि आखिर माजरा क्या है ? पोपटलालजी की तबीयत के बारे में पूछा जाता है। तब वे हंसकर कहते हैं, "भई ! अकेला आदमी हूं और इतना बड़ा कारोबार ! कहां तक देखभाल करूं ?" और इसके पांच-सात रोज बाद कोई न कोई आंदोलन शुरू हो जाता है।

पोपटलालजी यह जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में 'निर्मात्री' और 'विध्वंसक' दो प्रवृत्तियां होती हैं। जीवन-संघर्ष में लगातार चोट खाता आदमी हीन भावना का शिकार होकर विद्रोही हो उठता है, तब उनकी विध्वंसक प्रवृत्ति प्रबल होती है। वे व्यक्ति की उसी प्रवृत्ति को उभारते हैं। तब वह आदमी, आदमी न रहकर पोपटलालजी का हथियार या मोहरा बन जाता है, जिसका वे मनचाहा उपयोग करते हैं। इसीलिए उनका व्यवसाय चल निकला है

नोट : यदि आपको भी किसी प्रकार के आंदोलन में किसी प्रकार की सामग्री या बंदों की जरूरत है तो आप पोपटलालजी की सेवाओं से लाभ उठा सकते हैं। ग्राहक की संतुष्टि ही उनकी संतुष्टि है। रही बात पोपट लालजी के दुकान के पते की , तो वे हर शहर और गांव में मिलेंगे ! जरूरत केवल उनका मुखौटा उतारकर असली चेहरा देखने का है।

शास्त्री नगर, रायसिंह नगर-३३५०५१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई की रात थी । आसमान में घने बादल छाये थे । तूफानी हवा चल रही थी । चारों ओर अंधकार छाया था । कभी-कभी बिजली कड़क उठती थी, जिससे वातावरण बड़ा भयानक हो उठा था ।

उसी तूफानी रात में चिंतामणि रोड, जार्ज टाउन, इलाहाबाद स्थित 'झा क्लीनिक' की कॉलबेल बजी । आवाज सुनकर नंदू चौंका । वह सोचने लगा, इतनी रात गये इस तूफान में कौन आ गया । दरवाजा खोला, तो सामने एक पतला-दुबला-सा बूढ़ा आदमी, हाथ में लाठी लिए खड़ा था । नंदू को देखते ही उसने पूछा, "भैया डॉ. साहब हैं ?"

"हां, पर इस भयंकर रात में ?"

वह बूढ़ा हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया, "यदि डॉ. साहब नहीं चलेंगे, तो मेरे मालिक नहीं बचेंगे ।"

बूढ़े की दयनीय हालत एवं आग्रह को नंदू टाल न सका । उसने अंदर जाकर डॉ. भवनाथ झा को जगाया और उसे बूढ़े की बात बतायी । मौसम के बिगड़े हुए मिजाज को देखकर क्षणभर के लिए तो, वह भी सकते में आ गये । लेकिन डॉक्टर अपने कर्त्तव्य को भलीभांति समझते हुए मौसम से विचलित नहीं हुए, और तुरंत उठकर बूढ़े के करीब आये । उनको देखकर बूढ़ा उनके पैरों से लिपट गया और घिघियाते हुए बोला, "डॉ. साहब, मेरे मालिक की जान बचा लीजिए ।"

किस्सा पांच अशरफियों का

● इन्द्र मुकुंदजी

"क्या करूं भैया ! भगवान की लीला है । मेरे मालिक की तबीयत बहुत खराब है । डॉ. साहब को लेने आया हूं । अगर इस वक्त वे नहीं चलेंगे, तो... ।" और वह बूढ़ा फूट-फूटकर रोने लगा ।

उसी वक्त बिजली चमकी और तेज बारिश शुरू हो गयी । नंदू ने दरवाजा खोला और बूढ़े को बरामदे में बैठा दिया । फिर बोला, "क्या तुम्हारे मालिक की तबीयत बहुत ही खराब है ?"

डॉ. साहब को दया आ गयी । उन्होंने नंदू से कहा, "मैं जाता हूं, शीघ्र ही लौट आऊंगा ।"

बूढ़ा साथ में बग्घी (घोड़ागाड़ी) लाया था । डॉ. भवनाथ झा क्लीनिक से आवश्यक दवाओं का बैग उठाकर, बूढ़े के साथ बग्घी पर सवार हो गये ।

धीरे-धीरे बग्घी गंगापार कर पीपल के एक पेड़ के पास पहुंच गयी । डॉ. भवनाथ झा ने चारों ओर नजर दौड़ाकर देखा । दूर-दूर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था । वह समझ नहीं पा रहे थे कि बारिश और अंधकार की वजह से वहां कुछ नहीं दिखायी दे रहा था या सचमुच वह किसी अजनबी स्थान पर पहुंच गये थे । तभी अचानक बग्घी दायीं और मुड़ गयी ।

डॉ. साहब ने बग्घी के मुड़ते ही सामने एक बड़ी-सी हवेली देखी । हवेली की खिड़कियों से छनकर धुंधली-सी रौशनी बाहर फैल रही थी । बग्घी ज्यों ही हवेली के मुख्य दरवाजे के पास पहुंची, दरवाजा खुल गया और घोड़ा तेजी से बग्घी को खींचते हुए अंदर आकर रुक गया ।

बूढ़ा कोचवान धीरे-से बोला, "सरकार ! हम लोग पहुंच गये ।"

वह उतरकर आगे-आगे बढ़ा और पीछे-पीछे डॉ. भवनाथ झा चलने लगे । डॉ. साहब आश्चर्य से उस विशाल हवेली को देख रहे थे । सभी कुछ ठीक-ठाक से सजा था । लॉन में तरह-तरह के फूल महक रहे थे । दरवाजों पर रेशमी परदे झूल रहे थे । दरवाजों और खिड़कियों पर बड़ी सुंदर नक्काशी की गयी थी ।

बूढ़े ने कहा, "सरकार ! यह हवेली मेरे मालिक के दादाजी ने बनवायी थी । उन दिनों उनकी बहुत बड़ी जमींदारी थी । अब तो वह सब है नहीं, फिर भी खाने-पीने के लिए पुश्तैनी जमीन-जायदाद काफी है ।"

एक दरवाजे का रेशमी परदा हटाकर वह बूढ़ा डॉ. साहब के साथ अंदर दाखिल हुआ । उस कमरे का सौंदर्य देखते ही क्षण भर के लिए डॉ. भवनाथ झा अवाक् रह गये । कमरे के ठीक मध्य में एक पलंग पर ३०-३५ वर्ष का एक युवक लेटा था । उसके सिर की ओर एक युवती बैठी थी । डॉ. साहब के प्रवेश करते ही, वह युवती डॉ. भवनाथ झा की ओर मुखातिब हुई । वह युवती याचनाभरी आंखों से डॉ. साहब को देखने लगी, जैसे कह रही हो कि डॉ. साहब, किसी भी तरह इन्हें बचा लीजिए । डॉ.

डॉ. आदित्यनाथ झा की पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाल ही में श्रीमती आशा झा, जब डॉ. भवनाथ झा की निजी पुस्तकालय से कुछ कागजात उलट-पलट रही थीं । तो उन कागजातों के ढेर में डॉ. भवनाथ झा की एक व्यक्तिगत डायरी उनके हाथ लगी । उस डायरी में डॉ. भवनाथ झा की यह सत्य घटना लिखी । आज भी झा-परिवार के पास प्रेतिनी अंजू द्वारा दी गयी अशरफियां मौजूद हैं ।

भवनाथ झा उस सुंदरी को आश्चर्य से देखते रह गये । वह बहुत ही सुंदर थी । उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में गजब का आकर्षण था ।

डॉ. भवनाथ झा उस सुंदरी के रूप से सम्मोहित होने लगे, तभी बूढ़ा बोल पड़ा, "सरकार ! मेरे मालिक कई दिनों से बीमार हैं । कई डॉक्टरों का इलाज करा चुका हूं । कृपया ठीक से जांच कर आप इलाज शुरू कर दें, मुझे आप पर बहुत विश्वास है । आपका नाम मैंने सुना था । सरकार ! मेरे मालिक को बचा लीजिए ।" बूढ़ा बोलते-बोलते फफक पड़ा ।

डॉ. भवनाथ झा ने आगे बढ़कर उस युवक की कलाई थाम ली और उसकी नब्ज टटोलने लगे । पर यह क्या ? नब्ज बिलकुल नहीं चल रही थी । डॉ. साहब परेशान हो गये । फौरन बैग से आला निकालकर युवक की छाती की धड़कन सुनने लगे । फिर निराशा से आला हटाकर बोले, "यह तो दुनिया से जा चुके हैं ।" और तत्काल बैग उठाकर चलने लगे ।

युवती ने जो अब तक जड़ बैठी थी, डॉक्टर को जाते देखकर पूछा, "क्यों डॉक्टर साहब ! मेरे पति का इलाज किये बगैर जा रहे हैं ?"

क्या मेरी बात आपने नहीं सुनी ?" डॉ. साहब बोले ।

"नहीं ।"

तभी वह बूढ़ा, बड़ी मुश्किल से उस युवती के पैरों को अपे हाथों की गिरफ़्त में लेते हुए फफक पड़ा, "मालकिन मालिक नहीं रहे ।"

यह सुनते ही वह युवती कटे वृक्ष की तरह जमीन पर गिर पड़ी ।

डॉ. भवनाथ झा पानी की छींटे डालकर युवती को होश में ले आये । फिर वह चलने को हुए, तो युवती उन्हें रोकते हुए बोली, "डॉक्टर साहब ! आप अपनी फीस तो लेते जाइए ।"

डॉक्टर ने कहा, "नहीं, अब मैं फीस नहीं ले सकता ।" लेकिन डॉ. साहब के इनकार के बावजूद उस युवती ने आगे बढ़कर उनके बैग में पांच अशरफियां रख दीं और उसके साथ ही वह युवती जोर-से ठहाका मारकर हंस पड़ी, "डॉ., मुझे पहचाना ? आंखें खोलकर देखो, मैं कौन हूं ?"

डॉ. भवनाथ झा की आंखें युवती पर ठहर गयीं । उन्होंने उसे बड़े ध्यान से देखा और चीख पड़े, "अंजू तुम ?"

"हां ।" यह सुनते ही डॉक्टर साहब अचेत होकर गिर पड़े ।

सुबह जब डॉ. भवनाथ झा की आंखें खुलीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह दर्द से कराह रहे थे। पास ही मंगू पंखा झल रहा था। उसने पूछा, "क्या हुआ सरकार ! तबीयत तो ठीक है ?"

"मुझे क्या हो गया था, नंदू ?" सर पर जब हाथ फेरा, तो पट्टी बंधी थी। पूछा, "यह पट्टी कैसी है ?"

"सरकार, आपको याद नहीं। कल रात जब आप कॉल पर गये थे, आपका एक्सीडेंट

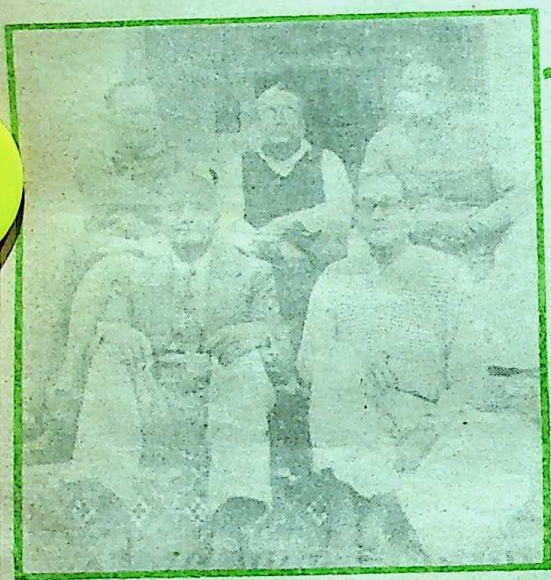

झा परिवार

हो गया था। वह बूढ़ा बग्घीवाला ही यहां आपको छोड़ गया था।"

"कौन बूढ़ा ?" याद करते हुए डॉ. साहब ने पूछा।

तभी रात की सारी घटना याद आ गयी। डॉ. भवनाथ झा ने बैग मंगवाकर देखा तो सचमुच उसमें पांच अशरफियां रखी थीं।

तत्काल उन्होंने नंदू से गाड़ी मंगवायी और गाड़ी पर बैठकर लगा पार झूंसी गये। वहां न वह आलीशान हवेली थी, न रातवाली कोई पहचान की वस्तु। डॉ. भवनाथ झा वापस आ गये और धीरे-धीरे अतीत की गहराई में डूब गये।

मेडिकल कॉलेज की फाइनल परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। सभी लड़के और लड़कियां घर जाने की तैयारीकर रहे थे। उन दिनों डॉ. भवनाथ झा, लखनऊ में रहते थे।

अंजू, रवीन्द्र खन्ना की पुत्री थी। वह लखनऊ में अमीनाबाद में रहती थी। इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज की वह छात्रा थी। छुट्टी होने पर वह लखनऊ लौट आती थी।

उसकी दोस्ती रंजन से थी। वह भी मेडिकल कॉलेज में पढ़ता था। उन दोनों की दोस्ती कब प्यार में बदल गयी। किसी को मालूम नहीं। जब वे अपने-अपने घर विदा होने लगे, तब अंजू ने रंजन से आग्रह किया, "तुम जल्दी ही अपने पिता से आज्ञा लेकर मुझसे शादी कर लेना।"

"घबड़ाओ न अंजू, मैं शादी की अनुमति लेकर लौटूंगा।" रंजन ने कहा।

लेकिन जब रंजन घर पहुंचा, तब उसे पता चला कि उसके पिता ने उसकी शादी गोरखपुर के एक संपन्न घराने की बेटी से तय कर दी थी। रंजन ने गोरखपुर में शादी करने से इन्कार कर दिया और अपने पिता से बोला कि वह शादी करेगा तो अंजू से करेगा।

यह सुनकर उसके पिता नाराज हो गये। उन्होंने रंजन पर गोरखपुर की लड़की से शादी करने के लिए जोर डाला। अंततः रंजन को पिता की आज्ञा के समक्ष झुकना पड़ा। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी गोरखपुर के महेन्द्र पाल सिंह की पुत्री से हो गयी।

शादी के बाद रंजन लखनऊ पहुंचा और अपनी बीवी अंजू को सुनायी। शादी की बात सुनते ही अंजू बिफर गयी। क्रोध से थर-थर कांपने लगी। रंजन ने उसे बहुत समझाया, पर वह मर जाने की धमकी देती रही। रंजन ने तब सारी स्थिति से डॉ. भवनाथ झा को अवगत कराया और कहा कि वह अंजू को समझाए। डॉ. भवनाथ झा ने भी अंजू को समझाने की कोशिश की। पर उसने कहा, "जिस प्रकार रंजन ने मेरी खुशी छीन ली है, उसी प्रकार मैं उसकी खुशी छीनकर ही दम लूंगी।"

और सचमुच, दूसरे रोज ही अंजू ने विष खा लिया। खबर मिलते ही डॉ. भवनाथ झा अंजू के घर पहुंचे। तब तक अंजू मौत की गोद में जा चुकी थी।

उस घटना के एक माह बाद डॉ. भवनाथ झा को खबर मिली कि एक दुर्घटना में रंजन की भी मृत्यु हो गयी है।

डॉक्टरी की पढ़ाई खतम करने के बाद डॉ. भवनाथ झा ने इलाहाबाद में अपने पुश्तैनी मकान में क्लीनिक खोलकर प्रैक्टिस शुरू कर दी।

इलहाबाद के नेहरू-परिवार के साथ-साथ झा-परिवार का भी नाम बड़े गर्व से लिया जाता है। झा-परिवार ने कई विद्वानों, प्रशंसकों एवं समाज-सेवियों को पैदा किया। भारत सरकार ने भी इस परिवार के सदस्यों के त्याग एवं सेवा के लिए यथोचित सम्मान दिया।

डॉ. अमरनाथ झा को १९५४ में पद्मभूषण, डॉ. आदित्य नाथ झा को २६ जनवरी, १९७२ को मरणोपरांत पद्मभूषण तथा डॉ. आदित्य नाथ झा की धर्मपत्नी आद्या झा को भू.पू. राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने पद्मश्री से पुरस्कृत किया।

इस परिवार की देन पंतनगर कृषि श्विविद्यालय है तथा अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाएं हैं।

डॉ. अमरनाथ झा, डॉ. भवनाथ झा, शिवनाथ झा, विभूति नाथ झा तथा डॉ. आदित्य नाथ झा, कर्मयोगी डा. गंगा नाथ झा के सुपुत्र थे।

हाल ही में श्रीमती आद्या झा, जब डॉ. भवनाथ झा के निजी पुस्तकालय से कुछ कागजात उलट-पलट रही थीं। तो उन कागजातों के ढेर में डॉ. भवनाथ झा की एक व्यक्तिगत डायरी उनके हाथ लगी। उस डायरी में डॉ. भवनाथ झा के जीवन की यह सत्य घटना लिखी थी। आज भी झा-परिवार के पास प्रेतिनी अंजू द्वारा दी गयी अशरफियां मौजूद हैं।

—II/१२, सियाई कॉलोनी
गोविंदपुर इलाहाबाद-२११००४

सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है।

— प्रेमचंद

सब कार्यों में सफलता पूर्व तैयारी पर निर्भर रहती है। पूर्व तैयारी के बगैर निश्चित रूप में असफलता ही साथ रहती है।

— कंफ्यूशस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

— अजय भाम्बी

श्याम किशोर प्रसाद, देहरादून

प्रश्न : शनि का मीन राशि में रहने के बावजूद मेरी पदोन्नति होगी ? कब ?

उत्तर : मीन का शनि आपके मार्ग में व्यवधान नहीं डालेगा ।

अमरनाथ शर्मा, हमीरपुर (हि. प्र.)

प्रश्न : व्यापार में घाटा, उपाय बताएं ?

उत्तर : पुखराज धारण करें, लाभ होगा ।

पुष्पेंद्र उप्पल, दिल्ली

प्रश्न : संतान कब होगी ?

उत्तर : सूर्य की उपासना के साथ-साथ पुखराज धारण करें, इस वर्ष गर्भधारण की संभावना है ।

सुहेल जैन, जम्मू तवी

प्रश्न : जन्म से ही अस्वस्थ, रोग से छुटकारा कब ?

उत्तर : योग्य चिकित्सक को दिखायें, अभी स्वास्थ्य कुछ समय और नरम रहेगा ।

योगिता देवी, सिवनी

प्रश्न : क्या मेरा पी.सी.एस. में चयन होगा ? कब ?

उत्तर : पूर्ण संभावना है ।

मनोज अग्रवाल, कांडला (गुजरात)

प्रश्न : कांडला से बरेली तक ट्रांसफर होगा ?

उत्तर : इस वर्ष हो जाएगा ।

दान सिंह, जयपुर

प्रश्न : वाहन (कार) की प्राप्ति कब ?

उत्तर : अप्रैल '९७ से पूर्व ।

सावित्री तिवारी, कानपुर

प्रश्न : क्या सिविल सर्विसेज में सफलता मिलेगी ? कब ?

उत्तर : मिलने का योग है, प्रयास बढ़ा

एस. दीक्षित, ग्वालियर

प्रश्न : विवाह १७ दिसंबर १९९२ को हुआ संतान नहीं हुई, कृपया उपाय बतायें संतान है तो कब तक ?

उत्तर : संतान डेढ़ वर्ष में हो जाएगी, न करें ।

जनार्दन, झांसी

प्रश्न : पत्नी से तलाक संभव है या नहीं ? विचार में है ।

उत्तर : तलाक हो ही जाएगा ।

अंजू, दिल्ली

प्रश्न : संयुक्त परिवार से अलग मकान रहना क्या ठीक रहेगा ?

उत्तर : अलग रहना ही पड़ेगा ।

अजय कटारिया, श्रीगंगानगर

प्रश्न : व्यवसाय किस चीज का लाभकर

उत्तर : आयात-निर्यात का कार्य लाभदायक रहेगा ।

सरोजा सोलंकी, लखनऊ

प्रश्न : मेरा स्वयं का मकान कब तक ? बतायें ?

उत्तर : अगले ढाई वर्ष में आपकी सारी इच्छाएं पूर्ण हो जाएंगी ।

कंचन वर्मा, जमशेदपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: मेडिकल कॉलेज में प्रवेश की सफलता
तक ? रत्न सुझायें ।
: नीलम पहनें, सफलता मिल सकती
।

भिलाषा गोयल, बुलंदशहर
: शुभ विवाह कब होगा ? रत्न सुझायें ?
: इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में ।
व लाहोटी, नगीना
: विशेष सफलता का योग कब है ?
: सोलह वर्ष के बाद ।
शर्मा, चित्तौड़गढ़
: मिरगी की बीमारी कब खत्म होगी ? ६
से है ।
: अब इस बीमारी से मुक्ति मिलने
समय आ गया है, योग्य चिकित्सक
को दिखायें ।

केशव चंद्र शर्मा, भोपाल

प्रश्न : मेरी पदोन्नति कब तक ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : शीघ्र ही यह शुभ सूचना आपको प्राप्त होगी ।

डॉ. आशुतोष जोशी, लखनऊ

प्रश्न : विदेश यात्रा कब और कितने समय के लिए ?

उत्तर : वर्तमान में जाने का योग बन रहा है, लेकिन अधिक समय तक विदेश नहीं रह पाएंगे ।

रवींद्र पंवार, श्रीनगर-गढ़वाल

प्रश्न : पी.ओ. परीक्षा में सफलता कब तक ?

उत्तर : प्रयास करें, इस बार सफलता मिलेंगी ।

प्रविष्टि—१७०

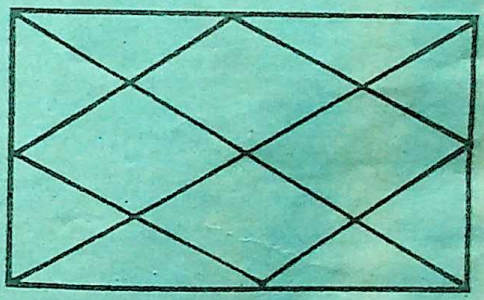

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन् .....

जन्म-स्थान ..... जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण .....

पता .....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें

संपादक (जयोतिष विभाग—प्रविष्टि १७०) 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य : एक प्रयोग

हृदय रोगी पूरी तरह जीवन भर स्वस्थ रह सकते

● भगवती प्रसाद डोभाल

भारत में दिल से संबंधित रोग जिस गति से बढ़ रहे हैं, उस पर हर व्यक्ति का चिंतित होना स्वाभाविक है। सन् १९९१ के आंकड़ों के अनुसार हृदयवाहिनी रोगियों की संख्या ४ करोड़ चार लाख थी, इनमें से 'कारनरी हृदय' रोगियों की संख्या १ करोड़ इक्कीस लाख और उच्च रक्तचाप के रोगियों की संख्या २ करोड़ दो लाख थी। लेकिन विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि हृदय रोग के होने के कारणों पर रोकथाम न की गयी तो सन् २००१ तक यह बढ़कर ५ करोड़ २५ लाख हो जाएंगे। इसमें १ करोड़ साठ लाख कारनरी हृदय रोगी और २ करोड़ नब्बे लाख उच्च रक्तचाप के रोगी होंगे। भारत की जनसंख्या की तुलना में अमरीका की जनसंख्या बहुत कम है। लेकिन वहां पर आज ६ करोड़ ६० लाख उच्च रक्तचाप और एक करोड़ एनजाइना के रोगी हैं।

इन आंकड़ों पर विचार करने से लगता है कि आनेवाले समय में रोकथाम के कोई उपाय नहीं किये गये तो मानव सभ्यता इस रोग की ग्रास होने से नहीं बच पाएगी।

रोग के कारण

अब प्रश्न उठता है कि कारनरी हृदय रोग के कारक कौन-कौन से हैं। चिकित्सक इन कारणों को पहचानने में सफल हुए हैं :

शारीरिक कारण : शारीरिक सक्रियता का अभाव है।

व्यावहारिक कारण : अधिक तनाव और धूम्रपान करना है।

औषधीय कारण : उच्च रक्तचाप, अधिक कोलेस्ट्रोल का होना, ट्राइ ग्लीसराइड का होना है।

कैसे बचें

यद्यपि कारनरी हृदय रोग के उपचार में सोरबिट्रेट दिया जाता है। लेकिन यह रोग की पूर्ण चिकित्सा नहीं कर पाती। कारनरी धमनी की मांसपेशियों को शिथिल कर देती हैं, दवाओं का असर सिर्फ कुछ घंटे तक रहता है। और रोग जैसा था रह जाता है।

हृदय चिकित्सा के उपचार में दवा के अतिरिक्त दो अन्य विधियां भी हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शल्य चिकित्सा, यह चिकित्सा भी रोग का स्थायी इलाज नहीं है । रोग पुनः उभर जाता है । कारनरी एंजोप्लास्टी में धमनी के भीतर हुई चरबी के जमाव को साफ करते हैं । इसमें भी पचास प्रतिशत रोगी छह महीने के भीतर चरबी का धमनी के भीतर जमने की शिकायत से परेशान हो जाते हैं । इस शल्य क्रिया में रोगी का एक लाख रुपये तक का बजट आता है । 'बाईपास' शल्यक्रिया में शंकरी धमनी को रोगी की टांग की शिरा से बदलते हैं । इसमें छाती की धमनी का भी प्रयोग करते हैं । इस चिकित्सा में डेढ़ से २ लाख रुपये तक व्यय हो जाता है । यह भी स्थायी इलाज नहीं है । इसमें भी रोगी में तीन या पांच वर्ष के भीतर धमनी के बंद होने की संभावना बनी रहती है ।

लाइलाज बीमारी नहीं है

कारनरी धमनी के बार-बार बंद होने के बारे में १०-१५ वर्ष पहले तक यह मान्यता थी कि हृदय रोग एक स्थायी बीमारी है, यह एक बार किसी को हो जाए तो फिर वह जीवनभर इससे ग्रस्त रहेगा । लेकिन यह मान्यता अब बदल गयी है । अनुसंधानों से आज चिकित्सक इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि यदि रोगी अपने रहन-सहन में परिवर्तन कर लें तो वह इस जानलेवा बीमारी से मुक्त हो सकता है । जीवन के रहन-सहन को बदलने का पहला परीक्षण अमरीका के चिकित्सक डीन अर्निश ने १९७७ और ८० के बीच किया । उनके द्वारा किये परीक्षण से उत्साहजनक परिणाम सामने आये ।

शाकाहारी बनें

अर्निश ने हृदय रोगियों को शाकाहारी

डॉ. विमल छज्जर

भोजन देना शुरू किया। मांसाहार में अंडे का सफेद भाग ही दिया । वसा विहीन दूध और दही खाने में दी । उन्होंने पूरी कैलरी का दस प्रतिशत प्रतिदिन घटाया और कोलेस्ट्रोल का ५ मिलीग्राम यानी आधा चम्मच क्रीम । खान-पान के परिवर्तन के अतिरिक्त आर्निश ने योग, ध्यान और कसरत के साथ-साथ ३० मिनट सप्ताह में तीन दिन घूमने का नियम बनाया ।

उत्साहजनक परिणाम मिलने पर अमरीका में हृदय रोग के उपचार में एक क्रांति आयी । जहां अमरीका का उपचार में खर्च ११७ खरब डॉलर प्रति वर्ष आता था, वहां इस आर्थिक बोझ को कम करने का नया रास्ता मिला । यह स्थिति तो अमरीका में थी, लेकिन भारत में इसका बीड़ा उठाया युवा चिकित्सक डॉ. बिमल छज्जर ने । इन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से त्यागपत्र देकर 'साओल हेल्थ एंड रिसर्च फाउंडेशन' की स्थापना की । इसके अंतर्गत हार्ट-क्लब की आधारशिला रखी । इस क्लब के वह रोगी सदस्य हो सकते हैं जिनको दिल का दौरा पड़ चुका हो, एंजाइना का दर्द रहता हो और बाईपास सर्जरी या एंजोप्लास्टी का जिन्हें सुझाव दिया गया हो । जिनकी बाईपास सर्जरी हो चुकी है, वह भी इस क्लब के सदस्य बन सकते हैं । आज डॉक्टर छज्जर के क्लब में १०० सदस्य हो चुके हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर छज्जर का यह प्रयोग बिना दवा और शल्य चिकित्सा के चल रहा है। यह अमरीका के डॉ. डीन आर्निश से भी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। हाल ही में 'बिहेविरियल मेडिसिन' की विश्व कांग्रेस जो वाशिंगटन डी. सी. में संपन्न हुई, से डॉक्टर छज्जर लौटे हैं।

'साओल' क्या है

अब आप प्रश्न करेंगे कि 'साओल' क्या है ? वैसे राजस्थानी भाषा में 'साओल' का अर्थ है संपूर्णता यानी—'जीने के लिए विज्ञान और कला का उचित तालमेल। 'साओल' का कार्यक्रम प्रशिक्षण देता है अपने प्राचीन योग, ध्यान और दर्शन के अनुसार जीवन ढालना। इस सांचे में यदि रोगी अपना जीवन ढाल दे तो वह अपने तनाव को व्यवस्थित कर सकता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए कोई भी इस वैज्ञानिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं कर सकता है। 'साओल' ने वैज्ञानिक अनुसंधानों की पूरी जानकारी प्राप्त कर हृदय रोग के कारणों की रोकथाम कर अच्छे स्वास्थ्य के लिए मार्ग अपनाने का प्रक्षिण तैयार किया है।

कम वसायुक्त शाकाहारी डाइट, व्यक्ति के भोजन की व्यवहार की व्यवस्था और सामान्य शारीरिक गतिविधि के द्वारा वैज्ञानिक प्रयोग साओल कर रहा है। साओल कार्यक्रम का मुख्य ध्येय है—कारनरी धमनी के अंदर होनेवाली चरबी को गलाकर साफ करना जिससे रक्त का संचरण हृदय में स्वच्छंद हो सके। कारनरी हृदय रोग में मूलतः चरबी का धमनी के अंदर जमा होना है। जिससे हृदय को ऑक्सीजन रक्त नहीं पहुंच पाती और हृदय बगैर ऑक्सीजन अपनी क्रियाओं को संपादित नहीं कर पाता है।

'साओल' हृदय कार्यक्रम के अंतर्गत महीने का प्रशिक्षण है। इसमें कारनरी रोग की रोकथाम के लिए चार दिन खानपान की शिक्षा, स्ट्रेस मैनेजमेंट का प्रशिक्षण, सूरजकुंड आदि साफ कराया दिया जा रहा है।

डॉ. छज्जर का संपर्क सन् १९९१ में डीन अर्निश से अखिल भारतीय संस्थान में तब हुआ, जब वह एक संगोष्ठी में भाग लेने भारत आये। १९९५ के अंतराल में छज्जर ने प्रयोग के द्वारा रोगियों का उपचार किया, जिसमें उन्हें शत-प्रतिशत सफलता मिली। उनका दावा है कि अब तक उपचार किये गये रोगियों को ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं पड़ी। साओल

'साओल' का अर्थ है संपूर्णता यानी—'जीने के लिए विज्ञान और कला का उचित तालमेल। 'साओल' का कार्यक्रम प्रशिक्षण देता है अपने प्राचीन योग, ध्यान और दर्शन के अनुसार जीवन ढालना। इस सांचे में यदि रोगी अपना जीवन ढाल दे तो वह अपने तनाव को व्यवस्थित कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान

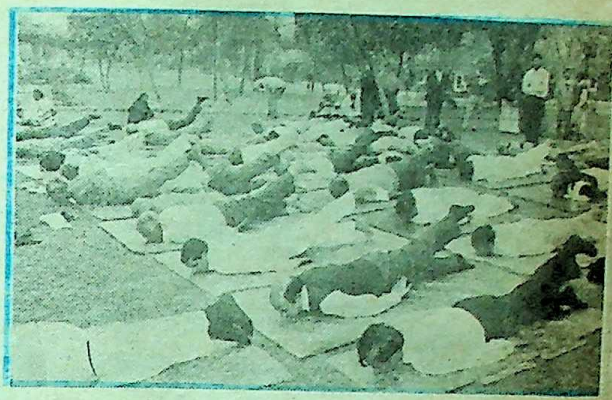

व्यायाम करते हुए हृदय रोगी

में भाग लेनेवाले रोगी को दो सप्ताह के भीतर ही अच्छे परिणाम मिलने शुरू हो जाते हैं । पहला परिवर्तन होता है एंजाइना के दर्द में कमी ।

सस्ती पद्धति

साओल चिकित्सा पर प्रति व्यक्ति खर्च लगभग १२ हजार आता है । उपरोक्त दो चिकित्सा विधि में रोग के पुनः होने की संभावना बनी रहती है । जबकि तीसरी विधि के अंतर्गत पुनः रोग होने की परेशानी से रोगी मुक्ति पा सकता है ।

साओल हृदय कार्यक्रम में योग चार भागों में वर्गीकृत किया गया है—

१. प्रतिदिन १५ मिनट की आंखों, कानों, चेहरे, गरदन, कंधों, छाती, पेट, कमर, जांघों, घुटनों, एड़ियों और पैरों के अगले और पिछले भाग की कसरतें ।

२. आसन १५ से २० मिनट के होते हैं । इनमें सूर्य नमस्कार के अतिरिक्त टाडासन, पद्मासन, सिंहासन, अर्धमत्सेंद्रासन, उत्तानपादासन, मयूरासन, सलभासन, भुजंगासन किये जाते हैं ।

३. प्रेक्षा ध्यान तीसरे क्रम में किया जाता है और चौथी क्रिया में कायोत्सर्ग अंतिम क्रिया है । साओल का कार्यालय ए-२५ बी, लाजपत नगर-II, नयी दिल्ली में है ।

आशा का केंद्र

इस केंद्र में सर्वप्रथम 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' का प्रशिक्षण दिया जाता है । आज के महानगरीय जीवन के प्रदूषित वातावरण में जहां विचित्र प्रकार के तनावों में व्यक्ति कार्य कर रहा है । उसे निश्चय ही हृदय की बीमारियों का सामना एक दिन करना पड़ सकता है । अपने क्रोध, कार्य करने की शैली आदि को इत्मीनान से बदलने की आवश्यकता पर साओल जोर देता है ।

लेखक भी एक दिन साओल केंद्र में हृदय रोगियों को देखने गया वहां पर जीने की एक नयी उमंग सामने है ।

यदि हृदय रोग, मधुमेह और जोड़ों के दर्द से मुक्ति पानी है तो अपने जीवन की दिनचर्या बदलें, और स्वस्थ रहें ।

सी-२,२२५३ वसंत कुंज नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : स्वजनों के सहयोग से संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । आत्मविश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी । विशिष्ट राजनेता अथवा राज्याधिकारी से लाभ मिलेगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब होगा । धार्मिक स्थान की यात्रा होगी । आर्थिक अस्थिरता तथा स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी ।

वृषभ : धार्मिक तथा मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । आर्थिक कार्यों में व्यर्थ अवरोध उपस्थित होंगे । प्रवास का आकस्मिक अवसर होगा । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा होगी । मित्रों से संतुलित संभाषण करें । व्यर्थ वाद-विवाद टालना हितकर होगा । मासांत में व्यर्थ भय, अज्ञात चिंता तथा उदासीनता का उदय होगा ।

मिथुन : साहस तथा आत्म विश्वास से प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से आजीविका संबंधी परिवर्तन होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । रचनात्मक, सामाजिक अथवा आध्यात्मिक क्रियाशीलता में वृद्धि होगी । संपत्ति कार्यों में सावधानी हितकर होगी । साहस के कार्यों से दूर रहें ।

कर्क : मास में भाग्यदायी सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों पर प्रभाव वृद्धि होगी । मनोनुकूल कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । सत्संगति से आत्म विश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों का भंडा फोड़ होगा । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । स्वास्थ्य संबंधी विकारों का उदय होगा । रक्त संबंधियों से व्यर्थ वाद-विवाद टालें । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें ।

सिंह : नवीन संपर्कों से लाभ मिलेगा । प्रयास से इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक वातावरण में व्यर्थ खिन्नता रहेगी । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति कार्यों में सफलता होगी । शत्रु-पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा । स्वजनों के सहयोग से समस्या का समाधान होगा ।

कन्या : उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से पद परिवर्तन अथवा उच्च पद की प्राप्ति होगी । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । अतिथि समागम प्रसन्नतादायी होगा । आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा । संपत्ति कार्यों में

ग्रहस्थिति—सूर्य १४ मई से वृषभ में, मंगल मेष में, बुध १६ से मेष में (वक्री), गुरु वृष में, शुक्र ४ से मिथुन में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन राशि में, हर्षल नेप्चून मकर में, प्लूटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

कार्तिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु-पक्ष अवरोध उपस्थित करेगा । परोपकारी कार्यों से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । सार्वजनिक कार्यों में मित्रों के सहयोग से उल्लेखनीय उपलब्धि होगी ।

तुला : उद्यम में नवीन अवसरों का उदय होगा । विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से कार्यों में विशिष्ट लाभ मिलेगा । उच्चाधिकारियों से निकटता बढ़ेगी । नवीन दायित्वों की प्राप्ति होगी । पारिवारिक सुखद समाचार मिलेगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । व्यर्थ संभाषण टालन हितकर होगा ।

वृश्चिक : साहसिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी । पारिवारिक विषमता से भावनात्मक पीड़ा होगी । राजकीय कार्यों में दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन दायित्व से प्रभाव तथा प्रतिष्ठा वृद्धि होगी । आध्यात्मिक प्रवास अथवा सत्संग का अवसर मिलेगा । संपत्ति कार्यों में विलंब होगा । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से सर्तकता रखें । न्यायालयीन अथवा संपत्ति कार्यों में विलंब हितकर होगा ।

धनु : रचनात्मक कार्यों से व्यक्तित्व विकास होगा । पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । राजकीय कार्यों में व्यर्थ व्यवधान उपस्थित होंगे । उच्चाधिकारियों से मतांतर होंगे । संभाषण में संतुलन हितकर होगा । नवीन संपत्ति अथवा वाहन पर व्यय होगा ।

मकर : आजीविका संबंधी परिवर्तनों से चिंता होगी । पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा । धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा के बावजूद शत्रु-पक्ष से पीड़ा होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करना हितकर होगा ।

कुंभ : आर्थिक योजनाओं में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । शत्रु -पक्ष की प्रबलता से चिंतनीय स्थिति का उदय होगा । संपत्ति अथवा वाहन पर धन व्यय होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यस्तता अधिक होगी ।

मीन : परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । आजीविका की दिशा में नवीन दायित्वों की प्राप्ति होगी । आत्मविश्वास तथा साहस से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतादायी होगा । स्वजनों से भावनात्मक पीड़ा होगी । विशिष्ट राजनेता से भेंट होगी ।

—ज्योतिष धाम :
१२/४, पुराना सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल, मध्य प्रदेश

पर्व और त्यौहार

१ मई—मई दिवस, प्रदोष व्रत, ३ स्नानदान व्रतादि की वैशाखी पूर्णिमा, ६ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, १० कालाष्टमी, १३ अचला एकादशी व्रत, १४ भौम प्रदोष, १५ सावित्री चतुर्दशी, १७ स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या, १८ गंगा दशहरा व्रतारंभ, २० रम्भा तृतीया, २१ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २३ विंध्यवासनी पूजा, २८ गंगा दशहरा, २९ निर्जला एकादशी भीमसेनी एकादशी गायत्री जयंती, ३० प्रदोष व्रत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

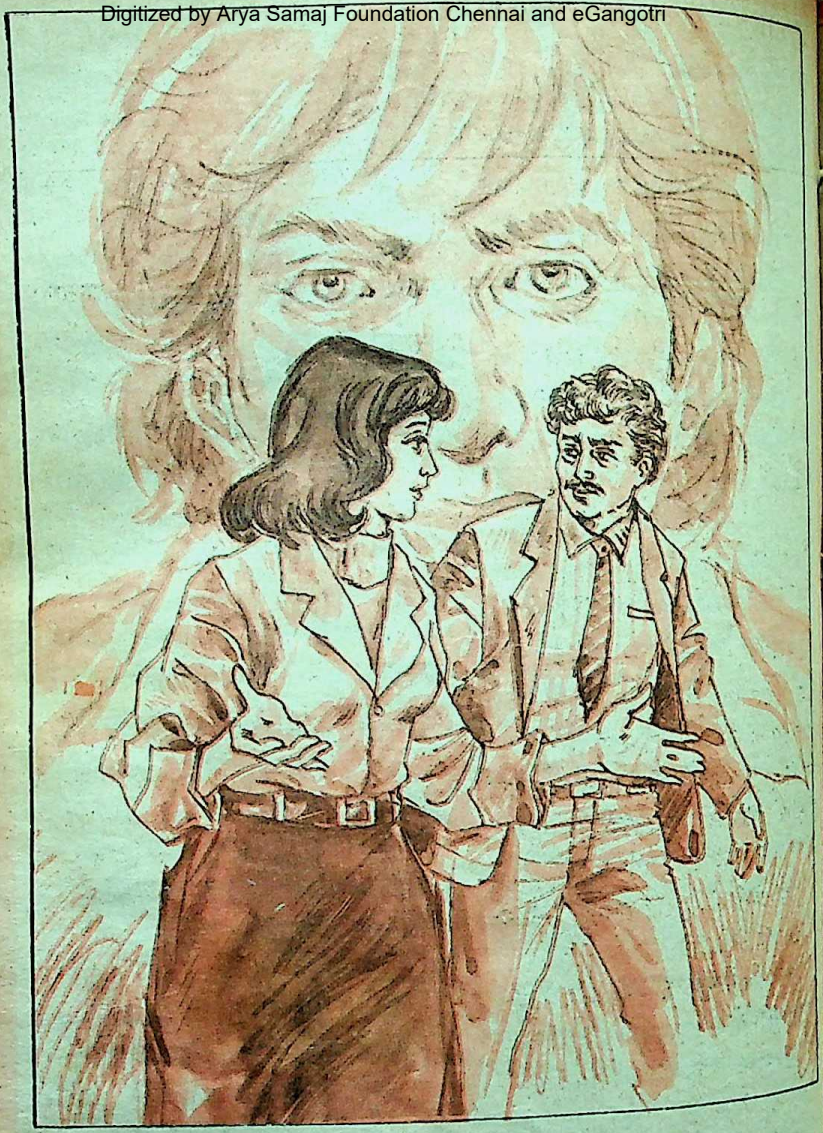

सार-संक्षेप

प्रेम के बदलते दायरे

● एरिक सीगल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेस्त्रां में हंसने-गाने-गुनगुनाने और गिलासों के टकराने की आवाज गूंज रही थी। बौब को लगा लोग कोई उत्सव मना रहे हैं।

बौब ने पूछा, "तुम शादीशुदा हो ?"

"ना।" वह धीरे-से बोली, "कभी शादी नहीं होगी।" यह कहते हुए उसने बौब के हाथों को छुआ।

उसी समय नीकोल की दृष्टि महापालिकाध्यक्ष लुई पर पड़ी। बौब का परिचय कराया। बातें होती रहीं।

लुई ने दोनों को कल भोजन पर बुलाया। बौब को लौटना था मगर लुई ने बताया कि आंदोलन के कारण कोई उम्मीद नहीं है।

बौब और नीकोल बैठे रहे। बौब ने उसे बताया कि उसे नशा चढ़ रहा है। फिर बौब बातों में लग गया। उसने नीकोल को याद दिलाया कि वह बता रही थी कि क्यों वह शादी नहीं करेगी। नीकोल ने उत्तर दिया कि शादी सबके लिए है, उसके लिए नहीं।

"तुम्हारी जैसी सुंदरी... ! तुमको बच्चों की कभी चाह नहीं होती ?"

"मुझे लगता है मुझे चाह है। अगर मुझे ऐसा पुरुष मिले तो।"

"खुद उसे पालोगी ?"

"क्यों नहीं ?"

"तुम अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते हो ?" नीकोल पूछ बैठी।

"उसी के कारण मेरा विश्वास शादी में है।" बौब ने बताया।

"तुम्हारे विश्वास पर मुझे ईर्ष्या है।"

दोनों उठकर चलने को तैयार हुए।

समुद्र के किनारे गाड़ी चल रही थी।

"समुद्र का जल बुला रहा है", नीकोल ने कहा।

गाड़ी रुकी। दोनों समुद्र में बढ़ने लगे। नीकोल कपड़े उतार रही थी।

बौब उसकी सुंदरता देखता रहा।

"चलो", नीकोल ने पुकारा। वह उसके पीछे गया। अब कोई होनी को नहीं रोक सकता था। उसे मालूम था कि अब क्या होगा और वह यही चाहता भी था।

बौब और नीकोल बैठे रहे। बौब ने उसे बताया कि उसे नशा चढ़ रहा है। फिर बौब बातों में लग गया। उसने नीकोल को याद दिलाया कि वह बता रही थी कि वह क्यों शादी नहीं करेगी। नीकोल ने उत्तर दिया कि शादी सबके लिए है, उसके लिए नहीं।

दोनों ने एक- दूसरे को प्यार किया।

"मेरे साथ सेटे लौट चलो। कोई शर्त नहीं है। बस आज की रात, हम दोनों एक-दूसरे के साथ रहना चाहते हैं।

"ठीक है।"

बौब डॉक्टर की अनुमति से लड़के को देखने गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बोलने पर दर्द करता है", जीन-क्लाउड ने बताया।

बौब ने उसे बताया कि उसका अपेंडिक्स फट गया था।

"बौब मुझे दुःख है मैंने तुमको काफी परेशान किया।"

"शीऽऽ" कहते हुए बौब ने लड़के को चुप रहने का इशारा किया।

बौब के लौटने पर शीला ने समाचार पूछा। यह सुनकर कि वह ठीक है, शीला ने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

दोनों लड़कियों ने सारी गलतियों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेनी चाही और बौब को बताया कि वे घबरा गयी थीं। बौब ने अपनी पुत्रियों को छाती से लगा लिया और कहा कि सारी गलती मेरी है और किसी की नहीं। हमलोग बराबर साथ रहेंगे। इसे कोई नहीं बदल सकेगा।

शीला धीरे-से बोली, "मैं तुम्हारी कमी बुरी तरह से महसूस कर रही थी।" दोनों की अंगुलियां आपस में बंध गयी थीं। बौब ने अपने होंठों का उसे स्पर्श दिया। उसने मन-ही-मन मनाया कि शीला उसे कभी नहीं छोड़े। कभी नहीं।

दूसरे दिन शीला भी लड़के को देखने गयी। और जब एक दिन बौब नहीं जा सका तब भी शीला उसे देखने गयी।

"मैं तुम्हें चाहती हूं।" शीला ने जीन से कहा।

"जैसे मैं ठीक हो जाऊंगा, मैं फ्रांस चला जाऊंगा।" सिर घुमाकर उसने कहा।

उसकी बात को काटते हुए शीला ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। उसे साथ ही रहना है। लड़के ने कहा, "जब मैं यहां आया मुझे नहीं मालूम था...बौब मेरा क्या है ? मगर तुम जानती थी ?"

"हां", शीला ने स्वीकारा।

"तब तुम मुझसे नाराज़ रही होगी ?"

लड़के के हाथों को पकड़ते हुए शीला ने कहा कि शुरू में शायद थी। मगर अब एक-दूसरे को जान गये हैं। दोस्त हैं।"

"तुम बहुत दयालु हो शीला !" लड़का कुछ ज्यादा ही कहना चाहता था। कार में बैठ

"चलो", नीकोल ने पुकारा। वह उसके पीछे गया। अब कोई होनी को नहीं रोक सकता था। उसे मालूम था कि अब क्या होगा और वह यही चाहता भी था।

और शीला यह विचार करने लगे कि हॉस्पिटल के बाद जीन का क्या होगा ? बेटियों को बौब ने कहा कि तुम्हारी मां और मैं सोचता हूं कि उसे घर लाकर रखें जब तक वह स्वस्थ न हो जाए। दोनों बेटियों को सुझाव पसंद आया।

जीन-क्लाउड पतला और कमजोर हो गया था। शीला ने घर के दरवाजे पर उसे चूमा। फिर जीन अपने ऊपरवाले कमरे में गया। दरवाजा खोलते ही उसे पेले का हस्ताक्षर लिखा हुआ रंगीन चित्र दिखा। छिपी हुई पौला ने कूदकर पूछा, "पसंद आया ?" जेस्सी ने

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कहा, "घर में स्वागत है ।"

करीब-करीब जुलाई के अंत में लड़का घर लौटा । शीला ने अपनी छुट्टी बढ़ा ली, और दोनों, बौब और शीला, हार्वड गये । इस मौसम में हार्वड में ज्यादा बाहरी ही लोग दिखायी पड़ते हैं । दोनों घूमते रहे । बातें करते हुए बौब ने कहा, "अगर नोआस आर्क मुझे दिखायी दे तो रोककर हम दोनों चढ़ जाएंगे ।"

"उन्हें नौजवान नमूने चाहिए ।"

बौब ने बताया कि जितने पूर्वस्नातक इधर से गुजरे हैं तुमको कनखी से देखते गये हैं ।

"बौब, तुम्हारी बेटी जेस्सीका और जवानी में एक ही मुसकान की दूरी रह गयी है ।"

"वर्षों दूर शीला, वर्षों दूर", कहकर बौब ने नकारा । एक दूब नोचकर शीला ने दांतों के बीच रख ली । फिर बोली, "एक एम.आर.टी. का प्रोफेसर भी समय को रोक नहीं सकता ।"

"मैं रोकना नहीं चाहता । पीछे ले जाना चाहता हूं ।"

मोमबत्ती की रोशनी में दोनों ने रात का भोजन किया । किसी रेस्त्रां में नहीं । लेक्सींटन के अपने मकान में । पलथी मारकर दोनों आग के सामने बैठे थे ।

बौब ने याद दिलाया, "तुम्हें याद है जब हमलोगों ने पहला-पहला प्यार किया था ?"

शीला ने कहा कि वह उस क्षण को भुलाये रखने की कोशिश करती है । वह बहुत घबरा गी थी, तब । बौब ने भी स्वीकारा कि उसे मालूम नहीं क्यों बुरी तरह से डर लगा था ।

बौब, शीला के करीब खिसक आया था । वह उसी जगह बैठी रही । बौब ने पूछा कि क्या वह विश्वास करती है कि वह उसे बराबर प्यार करेगा ।

"ऐसा मैं समझती हूं ।" अपनी बांहों में उसने शीला को लपेटे हुए पूछा—

"तुम विश्वास करती हो मैं जीवन से ज्यादा तुम्हें प्यार करता हूं ।" आंसू उसके गालों पर ढुलकने लगे ।

"मैं जानता हूं, मैं जानता हूं, तुम्हें मैंने चोट पहुंचायी है । क्या समय के साथ इसे तुम भुला सकोगी ?"

"मैं कोशिश करूंगी । मैं वायदा नहीं कर सकती ।"

बौब ने शीला को अपनी बांहों में लपेट लिया । शीला जैसे ही पीछे की ओर झुकी शैंपेन का गिलास गिर गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शुभ है", कहकर बौब ने शीला की आंखों को, गालों को, होंठों को चूमा । शीला ने बौब को अपनी बांहों में लिपटा लिया और कहने लगी, "मैंने तुम्हारी कमी बहुत महसूस की है । तुमको खोना मैं बरदाश्त नहीं कर पाती, रौबर्ट... ।"

बौब और शीला टहलने निकले ।

"तुम उसे रखना चाहते हो, है न ?"

"नहीं ! सवाल ही नहीं उठता", उत्तर बौब का मिला ।

शीला ने बताया कि उसने यह नहीं पूछा । वह जानना चाहती थी कि उसके अंदर कैसी भावनाएं हैं । बौब ने बताया कि वह ज्यादा खुश नहीं है मगर वह लड़के को बहुत चाहता है ।

"हम सब चाहते हैं ।"

"मैं भी ! बौब", कहते हुए शीला ने कहा कि अब उसे जाने की जरूरत नहीं है । बौब को विश्वास नहीं हुआ कि उसने शीला को सही सुना है ।

"चले जाने पर क्या तुम उसे भूल जाओगे ?"

"नहीं ।"

"एक तुम्हारा अंश उसी के साथ घूमता रहेगा ।"

"हां ।"

"वह लड़का तुमसे अति प्रेम करता है । हमलोगों को यही दिखायी पड़ता है । लड़कियां घबरायी हैं कि कहीं वे तुम्हें न खो दें । अगर वह रहता है तो हमलोगों को तुमको खोना नहीं पड़ेगा ।" एक और बात है, शीला ने धीरे-से

कहा, "तुम उसे प्यार करते हो ।"

"हां", बौब ने कहा । और अपने मन में उसने शीला को शुक्रिया किया ।

सुबह जब जीन, बर्नी के यहां ही था, बौब ने लड़कियों से बात छेड़ी । उसने बताया कि शीला और उसकी राय थी कि लड़के को साथ रखा जाए । "तुम्हारी राय क्या है ?"

"क्या यह सच है मौम", जेस्सी ने पूछा ।

शीला ने बताया कि वही सलाह देनेवाली है । तुरंत पौला बोल उठी कि उसे फ्रेंच पढ़ने में सहयोग मिलेगा । यह पौला की 'हां' थी । जेस्सी ने बताया कि वह जीन को काफी पसंद करती है ।

बौब और शीला एक-दूसरे को देखकर मुसकराये ।

लड़के को बर्नी के घर से लाने बौब गया । लौटते समय बौब ने लड़के को समझाते हुए पूछा कि क्या वह उन लोगों के साथ रहना पसंद करेगा ? परिवार का सदस्य होकर । सब चाहते हैं कि तुम रहो ।

जीन ने बताया कि यह नहीं हो सकता । पंद्रह दिनों में स्कूल शुरू होगा । उसे सेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पढ़ना है, जहां उसकी मां चाहती थी ।

बौब ने फिर जोर दिया कि सब उसे अपने पास रखना चाहते हैं । "हम सब तुम्हें प्यार करते हैं... ।"

मगर लड़का अटल रहा । मां सब कुछ तय करके गयी है । उसे जाना ही पड़ेगा । यही सही होगा । बहुत कारणों से । और, उसने अपनी दृष्टि समुद्र की दिशा की ओर घुमा दी ।

तीन दिन बाद की उड़ान में बुकिंग की गयी । बिछुड़ने का समय आया । लोगन का रास्ता, बौब मना रहा था, कभी समाप्त न हो । लड़के को बहुत कुछ बताना था । भावनाओं को साफ करना । प्यार जताना । और, फिर भी कुछ बातचीत रास्ते में नहीं । हवाई अड्डे पर बौब ने लडके से कहा, "संपर्क रखना । अगर चाहते हो तो आगे गरमी में या क्रिसमस में आ सकते हो । जब चाहो आ सकते हो ।" फिर पूछा, "आगे गरमी में आओगे ?"

"हो सकता है ।" लड़के ने विदा की अनुमति मांगी ।

"नहीं अभी नहीं । अभी नहीं ।" बौब ने कहा । जीन ने हाथ बढ़ाया, जैसे समुद्र के पार की जिंदगी की तैयारी कर रहा हो, और विदाई ली । फ्रेंच में विदाई शब्दों को बोलते हुए ।

बौब अब अपने को रोक नहीं सका । उसने छोटे लड़के को अपनी बांहों में उठा लिया और गले लगा लिया । अपने हृदय से लगे हुए लड़के के हृदय की धड़कन को वह महसूस कर रहा था । आपस में दोनों ने कोई शब्द नहीं बोले ।

बौब कहना चाहता था, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं ।" मगर उसके कंठ से निकला, 'जाओ ।' उसका गला अवरुद्ध था ।

लड़के ने उसकी ओर एक पल के लिए देखा और बगैर एक शब्द बोले आगे की ओर मुड़ गया ।

बौब बहुत देर तक वहां खड़ा रहा । कुछ रुककर पीछे मुड़ा और खाली बरामदे में चलने लगा ।

— ए-२१ जगत अमरावति अपार्टमेंट
६० ऑफीसर्स होस्टल के पीछे
महेश नगर, बेली रोड, पटना-८०००१

सबसे छोटी फैक्स मशीन

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पोर्टेबल कंप्यूटर की तरह ही अब पोर्टेबल फैक्स मशीन भी भारत में बननी शुरू हो गयी है और यह मात्र दस हजार रुपये में उपलब्ध होगी । इसे कनाडा में बसे एक अप्रवासी भारतीय राजा सिंह तुली ने विकसित किया है । विश्व की अब तक की सबसे छोटी इस फैक्स मशीन को अमरीका में पेटेंट अधिकार प्राप्त हो गया है और अब यह भारत में 'स्लीम फैक्स' के नाम से मिलेगी । यों तो इसे भारत में बनाया जाएगा लेकिन इसके शत-प्रतिशत निर्यात की योजना तैयार की गयी है । आरंभ में 'स्लीम फैक्स इंडिया लिमिटेड' हर साल ऐसी २४,००० फैक्स मशीनों का निर्माण करेगा ।

—प्रकाशचंद्र गंगराड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं की लंबी उम्र का राज क्या है ?

● राजेन्द्र कुमार राय

आजकल अपने देश में उनकी हत्या गर्भ में कर दी जाती है । जी हां, कन्या-भ्रूण-हत्या । लेकिन भारत सहित विश्व के लगभग सभी देशों मे अधिक उम्र के लोगों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या ज्यादा है । आखिर क्यों ? वैज्ञानिक हैरान हैं ।

आधुनिक विश्व में अलग-अलग देशों में संस्कृतियां, आहार, जीवन शैली तथा बीमारियों के कारण भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन एक बात सभी देशों में समान है कि महिलाएं पुरुष से अधिक जीती हैं । अस्सी वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं की संख्या पुरुषों से लगभग दोगुनी है । वैज्ञानिक आज भी उम्र के बढ़ने के कारणों को ढूंढ़ने में व्यस्त हैं । इसका रहस्य अभी भी उन्हें सुलझाना है कि समय के साथ उम्र बढ़ने की क्रिया को क्या रोका जा सकता है ? आजकल चिकित्साशास्त्री इस बात की खोज कर रहे हैं कि क्या उम्र बढ़ने की क्रिया को कम किया जा सकता है तथा कौन-कौन से जैविक कारण इस क्रिया से जुड़े हैं ? वैज्ञानिकों को एक सवाल यह भी परेशान कर रहा है कि अधिक उम्र के मामले में औरतों की संख्या पुरुषों से अधिक क्यों है, जबकि कम उम्र में पुरुषों की संख्या ज्यादा है ?

गुणसूत्रों की भिन्नता की भूमिका

कुछ वैज्ञानिक शोधों से यह निष्कर्ष निकला है कि शारीरिक विकास के दौरान औरतों को कुछ विशेष जैविक गुण प्राप्त हो जाते हैं, जिससे उनके शरीर में अधिक दर्द सहने की शक्ति विकसित हो जाती है । कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) की विभिन्नता के कारण भी औरतें ज्यादा जीवनशील हो सकती हैं । लेकिन अभी इसका कोई ठोस सबूत वैज्ञानिकों के हाथ नहीं लगा है । गुणसूत्रों में डी.एन.ए. द्वारा पैतृक गुणों का संचालन होता है । महिलाओं में 'एक्स-एक्स' गुणसूत्र होता है जबकि पुरुषों में 'एक्स-वाई' जहां महिलाओं के गुणसूत्रों में समानता होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहीं पुरुषों के गुणसूत्रों में भिन्नता ने वैज्ञानिकों का अनुमान है कि गुणसूत्रों की भिन्नता अवश्य ही कोई विशेष भूमिका अदा करती है ।

'एक्स-एक्स' गुणसूत्र अधिक शक्तिशाली

कुछ नये वैज्ञानिक प्रयोगों से यह बात पता चली है कि शुरू-शुरू मे गर्भ में महिला बच्चों के मुकाबले पुरुष बच्चे ज्यादा बनते हैं । ऐसा इसलिए होता है कि पुरुष के शुक्राणु का 'वाई' गुणसूत्र छोटा, हलका तथा तेज चलनेवाला होता है, 'एक्स' गुणसूत्र के मुकाबले । इसलिए 'वाई' गुणसूत्र ज्यादा महिला के 'एगटी' से मिलता है, जिसके फलस्वरूप पुरुष बच्चे महिला बच्चे के मुकाबले ज्यादा बनते हैं । इसका अनुपात १२० पुरुष और १०० स्त्री का होता है । परंतु पुरुष बच्चा गर्भ के आरंभ में ही ज्यादा नष्ट हो जाता है । बचपन में भी पुरुष बच्चे जल्दी बीमार होते हैं । लेकिन हर तरह की प्रक्रिया के बाद भी पुरुष बच्चे हमेशा ही स्त्री बच्चों के मुकाबले संख्या में औसतन ज्यादा रहते हैं ।

एक बात जो पूरी तरह वैज्ञानिक प्रयोगों में उभरकर सामने आयी है वह यह कि 'एक्स-एक्स' गुणसूत्र 'वाई' गुणसूत्र के मुकाबले ज्यादा मजबूत हैं । महिलाओं में किसी एक गुणसूत्र में कमी की दूसरे से पूर्ति हो जाती है, क्योंकि दोनों समान हैं, परंतु पुरुषों में ऐसा नहीं हो पाता है । इस कारण पुरुष जीन में किसी भी खराबी को सुधारना काफी मुश्किल होता है । जीन की कमजोरी पुरुष को कमजोर बना देती है ।

कारनेल विश्वविद्यालय (अमरीका) के डॉ. मार्क वेकस्लाट का कहना है कि औरतें बाहरी बीमारियों को देर तक टाल सकती हैं, लेकिन वैज्ञानिक महिलाओं के अधिक दिनों तक जीने के कारणों को अभी भी खोज रहे हैं । कम भोजन भी उम्र बढ़ा देता है, इस विषय पर भी शोध हो रहा है । देखें, कब तक वैज्ञानिक इस गुत्थी को पूरी तरह सुलझा पाते हैं ।

महिलाओं में नहीं बढ़ता कोलेस्ट्रोल

जोन हापकिंस विश्वविद्यालय के डॉ. किर्बी स्मिथ के अनुसार वाई गुणसूत्रों की अधिकता भी पुरुष की उम्र को कम करती है उन्होंने एक परिवार की चार पुश्तों तक परीक्षण करने पर पाया कि औरतें ज्यादा जीवनशील थीं पुरुषों के मुकाबले और उसी परिवार में वे पुरुष जिनका 'वाई' गुणसूत्र किसी कारण नष्ट हो गया था, ज्यादा जीवनशील पाये गये । हारमोन भी महिलाओं को अधिक दिन जीवित रखने में काफी सहायक होते हैं ।

चालीस से पचास वर्ष के बीच पुरुष ज्यादातर हृदय रोग से मरते हैं । कोलेस्ट्रोल और हृदय रोग में बहुत सीधा संबंध है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पच्चीस वर्ष की उम्र तक पुरुषों और औरतों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा में बहुत अधिक अंतर नहीं होता, लेकिन उसके बाद उम्र बढ़ने के साथ पुरुषों में कोलेस्ट्रोल खून में बढ़ने लगता है और फिर खतरे की सीमा को पार कर जाता है। अगर स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता है, तो यह खतरा कुछ ज्यादा ही रहता है। लेकिन महिलाओं में कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता है।

कम भोजन भी बढ़ाता है उम्र

वैज्ञानिकों का विचार है कि स्त्री के हारमोन 'एस्ट्रोजन' (कम घनत्ववाली लिपो प्रोटीन) का नाप कम कर देते हैं, यह एक खराब कोलेस्ट्रोल स्तर की पहचान है और दूसरी तरफ अधिक घनत्व वाली लिपो प्रोटीन का नाप बढ़ जाता है, जो अच्छे कोलेस्ट्रोल के रूप में जाना जाता है, जिसके कारण औरतों में हृदय रोग काफी घट जाता है। औरतें जब ५० वर्ष से अधिक की हो जाती हैं, तो 'एस्ट्रोजन' का बनना बंद हो जाता है। हारमोन मनुष्य की सहनशक्ति पर भी असर डालते हैं, जो मनुष्य की बाहरी बीमारियों को रोकने में मदद करती है। औरतों में अधिक प्रतिरोधक क्षमता होने के कारण एक विशेष प्रकार का प्रोटीन अधिक मात्रा में बनता है। कुछ नये प्रयोगों से पता चला है कि अधिक एस्ट्रोजन भी इस प्रोटीन का अनुपात बढ़ा देती है।

कारनेल विश्वविद्यालय (अमरीका) के डॉ मार्क वेकस्लाट का कहना है कि औरतें बाहरी बीमारियों को देर तक टाल सकती हैं, लेकिन वैज्ञानिक महिलाओं के अधिक दिनों तक जीने के कारणों को अभी भी खोज रहे हैं। कम भोजन भी उम्र बढ़ा देता है, इस विषय पर भी शोध हो रहा है। देखें, कब तक वैज्ञानिक इस गुत्थी को पूरी तरह सुलझा पाते हैं।

—डी-७५३, सरस्वती विहार
दिल्ली-११००३४

बुरा मान गये

किस्सा आजादी से पहले का है। सर वजीर हसन का नाम उन दिनों वकालत में जाना-माना था। उनका हाथ में मुकदमा लेने का मतलब था मुवक्किल की निश्चिंतता। अदालत में कानूनी मुद्दों पर बहस करने में उनका जवाब नहीं था।

एक दिन उनका कोई मुकदमा एक अदालत में था। उस अदालत का जज एक अंगरेज था। खैर, मुकदमा शुरू हुआ। सर वजीर हसन जमकर अपना पक्ष रख रहे थे। बहस करते हुए उनसे किसी मुद्दे पर गणित की छोटी-सी भूल हो गयी। इस पर उस अंगरेज जज ने चुटकी ली—"सर हसन, हिंदुस्तान आते वक्त मुझे उम्मीद नहीं थी कि यहां के वकीलों को मुझे साधारण गणित भी समझानी पड़ेगी।"

सर वजीर हसन कहां चुप रहनेवाले थे, तुरंत मुसकराकर बोल उठे—"माई लार्ड, हम वकील तो आपको कानून की छोटी-छोटी बारीकियां बराबर समझाते हैं, मगर आप तो जरा-सा गणित ठीक करने में ही बुरा मान गये।"

कादम्बि

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधजला सिगरेट का टुकड़ा

सड़क के छोर पर देखती हूं
एक अधजला सिगरेट का टुकड़ा
जो कुछ देर पहले ही
किसी ने अपनी आलीशान कार
की खिड़की से फेंक दिया सड़क पर
वो अधजला सिगरेट का टुकड़ा
व्यथा सुना गया एक कमसिन भोली
नाजुक सुकुमार कन्या की
जो किसी इनसानी भेड़िये की
शिकार हो जाती है
फिर
बेरहमी से फेक दी जाती है
अधजली सिगरेट की तरह
तिल-तिल कर जलने के लिए

— निर्मला
सी-१/१४०३ वसंत कुंज
नयी दिल्ली-११००७०

सत्य

सुख
जब तुम आये मेरे जीवन में
तो सोचा
तुम्हीं सब कुछ हो
मेरी संपूर्णता तुम्हीं में है
पर, हे सुख
जब तुम चले गये
यूं ही धूप-छांही रंग दिखाकर
तब मैंने जाना कि
सुख से परे भी
सत्य की अपनी सत्ता है
उसके परे का संसार ही तो
वास्तविक जीवन है
तब से अब तक
मेरे मन का दरवाजा
खुला तो रहता है
पर, हे सुख
तुम्हारे लिए नहीं ।

—पुष्पा गर्ग
जी.एच-१३/५५६, पश्चिम विहार
नयी दिल्ली-११००४१

महानगर

तुझे मिला महानगर !
सच कहा था मां ने...
आज मैं—
गोबर पुते खुले आंगन के बजाय,
गद्देदार सोफे, कूलर, फ्रिज
और रंगीन टी.वी. के बीच,
कांचवाले बक्स में—
रंगीन मछली-सी
बहुत सुंदर लगने लगी हूं...

सुना है,
वह पुस्तैनी मकान बेचकर...
तुमने/मेरे लिए यह
बंदीगृह खरीदा है...
अब तुम...
कहां रह रही हो मां ?

—राबिन शॉ पुष्प
'रवींद्रांगन'
२ एल/४५ महात्मा गांधी नगर
बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी,
पो. लोहियानगर, पटना-४०००२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'साहित्य एक भावना है, धर्म है तथा दर्शन है समाज का । साहित्य का वर्गभेद नहीं होता है । साहित्य सबके लिए एक सर्वांगीण क्षेत्र है । साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत और व्यापक है, इसलिए साहित्य को किसी सीमा-परिधि में नहीं बांधा जा सकता । साहित्य कोई मनुष्य नहीं है जिसे जाति-पांति, ऊंच-नीच, अथवा संप्रदायों में बांटा जाए, इसलिए साहित्य एक ऐसा मंदिर है, जिसके द्वार सबके लिए खुले हैं'—यह कहना है आई. यू. ए. ई. एस. के चेयरमैन डॉ. मोहन के. गौतम का ।

श्री गौतम एक ऐसे साहित्यधर्मी हैं, जिनकी रग-रग में साहित्य बसा हुआ है । वह साहित्य के लिए जीते हैं, साहित्य ही उनका जीवन दर्शन है । श्री गौतम का कहना है कि साहित्य और साहित्यकारों की न कोई जाति होती है और न कोई धर्म होता है । साहित्य का सृजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज को एक दिन दिशा देती है ।

साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से यह बताता है कि समाज में क्या हो रहा है । धर्म किधर जा रहा है, लोग किधर जा रहे हैं तथा व्यवस्था में कैसा घुन लग गया है ।

साहित्यकार का क्षेत्र सेवा करना है । वह ऋषि-मुनियों की तरह अपने क्षेत्र की निस्वार्थ सेवा करता है । साहित्यकार की सृजन की प्रक्रिया एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें वह इतिहास, संस्कृति और धर्म के माध्यम से समाज को जीने का तरीका बताता है ।

क्या साहित्य भी वर्तमान व्यवस्था से प्रभावित होता है, श्री गौतम मानते हैं कि व्यवस्था साहित्य को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है । वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में दिन

हिंदी के लिए समर्पित विदेशी-भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह भ्रष्टाचार का घुन लग गया है और जिस तरह वह प्रदूषित हो गयी है, ऐसे में साहित्य और साहित्यकार बचा नहीं रह सकता है। राजनीति की तरह साहित्य में भी प्रदूषण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी है। 'तो क्या साहित्य का भी पतन हो रहा है ?' श्री गौतम कहते हैं कि 'देखिए न साहित्यकार आजकल क्या सृजन कर रहे हैं और साहित्य आज कहां जा रहा है ?'

श्री गौतम पिछले माह भारत दौरे पर आये। इस समय वह नीदरलैंड की लेडन यूनिवर्सिटी में संस्कृति और अध्यात्म का अध्यापन करते हैं। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय संगठनों, आई. यू. ए. ई. एस., इंटरनेशनल कमीशन ऑन म्यूजियम्स एंड कल्चरल हेरिटेज, ओवरसीज साउथ एशियन इंटरनेशनल एसोसिएशन तथा इंटरनेशनल फोरम ऑव हिंदू स्टडीज के चेयरमैन भी हैं।

भारतीय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार से दुखी श्री गौतम कहते हैं कि भारतीय राजनीतिक व्यवस्था इतनी प्रदूषित हो गयी है कि लोगों का विश्वास राजनीतिक दलों के नेताओं से उठने लगा है। ऐसे में भारतीय राजनीति के प्रदूषण का प्रभाव साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है। साहित्य पर पड़नेवाला प्रभाव घातक है। नवयुवकों में अविश्वास की भावना घिरती जा रही है। ऐसे वातावरण में पुराने साहित्यकारों को आगे आकर लोगों को, समाज को तथा देश को सही दिशा देनी चाहिए।

विदेश में साहित्य सेवा के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए श्री गौतम का कहना था कि मैंने विदेश में रहकर भारतीय वंश-परंपरा पर काफी काम किया है। इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से ओतप्रोत नये-नये शोध विदेशी लोगों के सम्मुख रखे हैं, ताकि उन्हें भारत की प्राचीन संस्कृति की सटीक छवि मिल सके।

हिंदी, पंजाबी तथा बंगला पर अधिकार रखनेवाले श्री गौतम ने लखनऊ विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के बाद आगरा विश्वविद्यालय में अध्यापन भी किया। इसके बाद वह नीदरलैंड चले गये। श्री गौतम ने आदिवासी नगाओं पर भी काफी काम किया।

श्री गौतम पिछले माह भारत दौरे पर आये। इस समय वह नीदरलैंड की लेडन यूदिवर्सिटी में संस्कृति और अध्यात्म का अध्यापन करते हैं। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय संगठनों, आई. यू. ए. ई. एस., इंटरनेशनल कमीशन ऑन म्यूजियम्स एंड कल्चरल हेरिटेज, ओवरसीज साउथ एशियन इंटरनेशनल एसोसिएशन तथा इंटरनेशनल फोरम ऑव हिंदू स्टडीज के चेयरमैन भी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त साहित्य की भूमिका पर एक तुलनात्मक शोध भी कर रहे हैं । वेद, उपनिषदों और प्राचीन ग्रंथों का 'डच' भाषा में अनुवाद, अज्ञेय की कविताओं तथा साहित्यकार राजेन्द्र अवस्थी के साहित्य पर भी वह इस समय कार्य कर रहे हैं । कई देशों में भारतीय संस्कृति तथा अध्यात्म पर उनके व्याख्यान भी हो चुके हैं ।

श्री गौतम कहते हैं कि 'मेरे यहां लगभग डेढ़ लाख हिंदीभाषी अपनी अस्मिता को बचाने के लिए भारत की ओर देखते हैं । नीदरलैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए दो संस्थाएं—हिंदी परिषद तथा हिंदी संस्था हैं, जो मेरी देख-रेख में हिंदी के विकास के लिए कार्य कर रही हैं । सन् १९६० से विदेश में रहकर श्री गौतम ने कई गूढ़ विषयों पर शोध के साथ-साथ कहानियां, उपन्यास तथा कविताएं लिखकर भारतीय संस्कृति की सही तसवीर विदेशों में प्रस्तुत की है । इस समय श्री गौतम हिंदी के साहित्यकारों के लिए कुछ अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार की योजना पर भी कार्य कर रहे हैं । उनका कहना है कि यह पुरस्कार नोबेल पुरस्कार-जैसा सम्माननीय होगा ।

श्री गौतम कहते हैं कि 'दूसरी भाषाओं की नकल नहीं करनी चाहिए । दूसरी भाषा के साहित्य की अच्छी बातों को अपनाना चाहिए, तभी हमारा साहित्य और सुदृढ़ होगा । दूसरे देशों की संस्कृति की अच्छी बातें भी अपनानी चाहिए ताकि अपनी संस्कृति का और विकास हो । हॉलैंड ही एक ऐसा देश है जहां संस्कृति को धर्म के साथ मानवता से भी जोड़ा गया है ।

संस्कृति का संबंध धर्म से है, मानवता से है तथा साहित्य से है । संस्कृति के बिना साहित्य नहीं और साहित्य के बिना संस्कृति नहीं । साहित्य और संस्कृति के विकास के लिए हमें संघर्ष करना होगा । यह कार्य साहित्यकारों को स्वयं करना होगा, क्योंकि बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं मिलता है ।

(प्रस्तुति : सुजीत वाजपेयी)

मातृभक्ति

विश्वविख्यात कूटनीतिज्ञ 'चाणक्य' के बचपन की घटना है । एक दिन इनकी माता अपने पुत्र के दांतों पर गौर कर दुःखी हो गयीं । चिंतित देखकर पुत्र ने कारण जानना चाहा ।

मां ने दुःखी स्वर में कहा, 'बेटा, तुम्हारे अगले दो दांतों से लगता है कि तू राजा बनेगा ।'

पुत्र ने विस्मित होते हुए पूछा, 'माता, इस बात से तो तुम्हें खुशी होनी चाहिए ।'

मां ने सोचते हुए कहा, 'बेटा, राजा बनने के बाद तुम्हें मुझे देखने की फुरसत नहीं मिलेगी ।'

पुत्र ने आव देखा न ताव और पत्थर से अपने उन दोनों दांतों को तोड़ दिया ।

● डॉ. वीरेन्द्र झा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य कथा

बात की बात

● डॉ. सरोजनी प्रीतम

केतकी ने पड़ोस का दरवाजा खटखटाया और ज्योंही बहूजी बाहर आयीं, तो एकदम बोली, "बहू चूहे को डालने के लिए सूखी रोटी होगी तो देना। मांजी बता रही थीं, 'बहू के हाथ की सूखी रोटियां तो कोई चूहा भी न खाये है, धन्य है बेटा ! जिसने सारी उमर ऐसी रोटियां खाने का बीड़ा उठाया है, मेरे तो पेट में इन्हीं रोटियों से ऐसा दर्द रहता है कि अब तो डॉक्टर भी इलाज करने से मना करने लगा है।'

"अरे बहूरानी कसूर तो उमर का होता है। जब कुछ पचता ही नहीं और दोष हम औरों के मत्थे मढ़ देते हैं। अरे मढ़ना ही है, तो बहुओं को घर में ऐसे मढ़ो जैसे नगीना अंगूठी में मढ़ा जाता है। अये बहुएं तो घर का श्रृंगार होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रृंगार भी सच कहें तो तभी तक सोहेंगे जब तक खाने-पहनने की उमर हो । तुम्हारी सासूजी तो कहती थीं, खाने-पीने की उमर तो इसी घर में आकर इसकी शुरू हुई है, वरना चार फटी साड़ियां लायी थी, न गहने, न बरतन । क्यों बहू बरतन न लायी, तो भी इस घर में हर रोज बरतन खनके कैसे ? अरे कहीं कोई भांडे पटकने की आवाज आती है, तो मेरा तो कलेजा मुंह को आता है । लगता है सुशीला बहुरानी पर बरतन फेंके जा रहे हैं । मैं तो कहती हूं बेटियों को दहेज में ऐसे-ऐसे बरतन दो, जो कोई फेंके, मारे या उड़न तश्तरी की तरह उड़ाये, तो वापस लौटकर बरतन के टोकरे में ही पहुंचें । देश ने कितनी प्रगति कर ली पर ऐसे बरतन बनानेवाली एक कंपनी न आयी, जो बरतन ठीक ढंग से बना सके । अरे बरतन तो बरतन है, बरतने के लिए । इसके अलावा कोई प्रयोग करने लगे, तो बरतनों की कत्रियां काट लें, कटोरा मुंह झुलस दे । कलुछी-चमचे तो होते ही चलाने की चीज हैं...लेकिन अगर अस्त्र-शस्त्र की तरह इनका प्रयोग होना होता, तो इनके लिए भी म्यान तो होती । हरेक स्त्री इसे कमर में धारण करती, खुरपा-कलुछी वगैरा ही घरेलूपन की निशानी होतीं । साफ पता चल जाता कौन सिर्फ घरेलू बरतन मांजने, कपड़े धोने और धूप में बाल सफेद करनेवाली है और कौन पढ़ी-लिखी कलम-पेंसिल, पेन, चलाकर बड़े-बड़े अफसरों को मात करनेवाली है । पर आजकल तो यह फर्क भी मिटता ही जा रहा है । मैं तो तुम्ही को देखती हूं न बहूरानी, थक-हारकर घर आती हो, तो यहां काम-काज में लग जाती हो, दिन-रात रोटियां बनाना, पापड़ बेलना कोई आसान काम नहीं है, और उस पर गली-गली में इन रोटियों की यों चर्चा कि रोटियां सूखी...अरी बहूरानी सूखी रोटियां तो अच्छी, पानी में भिगो दो या सब्जी हो, तो इसमें डुबोकर रख दो , तो खाई तो जा सकती हैं । तेरा सूखा मरियल बेटा तो ऐसा है कि घड़ों पानी डाल दो, तो भी उस पर बूंद भर पानी न ठहरे । पता नहीं इतनी पढ़ी-लिखी लड़की मिली कैसे ? हमारे यहां भी आयी थी तेरी सास, रिश्ता लेकर । मेरी बहन की लड़की भी दफ्तर में अफसर थी तेरी तरह । अये वह तो फटाक-से बोली, 'मौसी, लड़के की शक्ल-सूरत नहीं, कद नहीं, अच्छी नौकरी नहीं, पर खानदान तो अच्छा हो । जिसकी अम्मां औरों के घर का कामकाज करके बच्चों का पेट पालती रही हो, उस घर में जाकर क्या करूं ।' पता नहीं उस

बहूजी को जाने सहसा क्या हुआ वह भीतर गयीं और खाली हाथ लौट आयीं । केतकी ने फटी-फटी आंखों से देखा, चौकन्ने कानों से सुना, वह कह रही थीं, "आज तो 'ये' खाना ले जा चुके हैं । कल दो टिफिन पैक कर दूंगी, एक अपने उनके लिए, एक आपके चूहे के लिए ... मेरे लिए तो एक ही बात है ..."

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर क्या जादू किया बहू कि— तुम तो आ ही गयीं इस घर में । मैंने तो सुना अब तुम्हारे पति की नौकरी भी जाती रहेगी । अरे घबराना मत बहू आजकल तो एक चूहा भी नौकरी देने में समरथ हो गया है । देखो न मुझे ही देखो पड़ोस में पांचों घर छोड़कर मैं भी तो तुम्हीं से चूहे के लिए सूखी रोटी मांगने आयी । नरम रोटी मक्खन-टोस्ट- केक के टुकड़े वगैरा तो चूहों को बेहद पसंद हैं, पर तुम जानती हो, चूहे में भी आदमी-जैसे ही गुण तो हैं...अच्छा खाना-पानी मिले, तो वहीं पसर जाते हैं । कुनबे समेत यों धमकते हैं कि बस जब तक मेहमान भगाने की...नहीं-नहीं चूहे भगाने की दवा न छिड़को हिलने का नाम ही नहीं लेते । अरी बहूरानी जैसे चूहे भगाने की दवा मिलती है, वैसे ही कहीं क्या मेहमान भगाने की दवा नहीं मिलती क्या, छिड़क दो तो दूर-दूर से आनेवालों के भी कदम मुड़ जायं । अपने आप भाग जायं । अरी यही दवा मिल जाय, तो मैं तो इसी का इस्टाल लगाकर बैठ जाऊं । पूरे महल्ले की परेशानी दूर कर दूं । वैसे परेशान करने के लिए सूखी रोटी ढूंढ़ते वक्त मुझे तुम्हारा ही दरवाजा क्यों खटखटाना पड़ता । सच बताना बहूरानी ! तुम जो रोटी पकाती हो, वह किस मिट्टी की बनी होती है, जो बनते ही सूखी हो जाती है, खाते ही कांच के टुकड़ों-सी पेट में शूल बन जाती है और शूल बनते ही जगह-जगह इसकी चर्चा आरंभ हो जाती है । यों तो चर्चा करने लायक कुछ भी बनाना हो, तो उसे औरों से भिन्न होना जरूरी है, इसी भिन्नता के मायने में ही मैं तुम्हारी तारीफ करती हूं कि तुम्हारी रोटी पाकर कम-से-कम कोई चूहा तो हमारे घर के चूहेदान में भी आ फंसेगा । अरे बहू यह चूहेदान भी तुम्हारे घर का ही है । मांजी ही दे गयी थीं, मैंने तो हंसकर कह भी दिया था, 'आपने चूहेदान दान करके बड़े पुण्य का काम किया है, वरना आजकल ऐसे उदार लोग कहां ? जिस युग में दया, करुणा, ममता, उदारता आदि की भावना उठती जा रही है, उसी युग में तुम्हारी दान करने की भावना का डंका पीटता रहेगा । पर हाय ! उस चूहेदान में अपने घर की बहूरानी के हाथ की पकी कच्ची, मोटी, सूखी, सड़ी रोटी का टुकड़ा भी लगा देतीं, तो आज मुझे यहां दरवाजे पर घंटों बाहर खड़े होकर, घंटों भाषण पिला-पिलाकर एक सूखी रोटी के टुकड़े के लिए भीख तो न मांगनी पड़ती... ।'' बहूजी को जाने सहसा क्या हुआ वह भीतर गयीं और खाली हाथ लौट आयीं । केतकी ने फटी- फटी आंखों से देखा चौकन्ने कानों से सुना, वह कह रही थीं, ''आज तो 'ये' खाना ले जा चुके हैं । कल दो टिफिन पैक कर दूंगी, एक अपने उनके लिए, एक आपके चूहे के लिए...मेरे लिए तो एक ही बात है...''

—सी-१११ न्यू राजेंद्र नगर
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओलगा क्यूबा गणराज्य के प्रतिनिधि के रूप में भारत में राजदूत (एम्बेसेडर) हैं। क्यूबा अनेक विध्वंसक स्थितियों से गुजरा है। क्यूबा की राजदूत श्रीमती ओलगा के सुझाव भारत के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं।

सरकार में जनता की प्रत्यक्ष साझेदारी हो !

● ओलगा चामेरो ट्रेआस

सन् १९५९ की क्रांति से पहले क्यूबा में बहुदलीय प्रणाली थी, लेकिन इसका परिणाम निकला बेरोजगारी, भूमिहीन किसानों, अपोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य-सेवाओं के अभाव में। बहुदलीय प्रणाली के अंतर्गत राजनीतिक और न्याय-व्यवस्था की दृष्टि से क्यूबा अमरीका का उपनिवेश बनकर रह गया था।

इस अनुभव को देखते हुए क्यूबावासियों का बहुदलीय प्रणाली से विश्वास उठ गया। इसलिए अब वहां एक-दलीय व्यवस्था को स्वीकृति मिली है।

क्यूबा की इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की आलोचना बिना उसके मूल में गये तथा उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और क्यूबाइयों की स्वभावगत विशेषताएं देखे बिना ही की जाती रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें, तो आधुनिक क्यूबा के निर्माता होसे मार्ती ने वहां क्रांतिकारी दल की स्थापना की थी। यह दल क्यूबाइयों की भावनाओं और स्वतंत्र राष्ट्र के लिए उनके संघर्ष के प्रयासों का प्रतिनिधित्व करता है। जब तक क्यूबावासी दलों और विचारों के खेमों में बंटे रहे, वे ऐसी क्रांति की शुरुआत नहीं कर पाये, जिसमें उनकी विजय हो सकती थी।

दूसरी ओर यह भी सच है कि क्यूबाई लोकतंत्र पश्चिम के मॉडल पर आधारित नहीं है। उसके सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्य भी उनके निकट नहीं हैं। पश्चिम अपने ही मॉडल को सर्वश्रेष्ठ समझता है, इसलिए उसने क्यूबा पर हमेशा यह आरोप लगाया है कि वहां लोकतंत्र का अभाव है। इसके विपरीत सच यह है कि क्यूबा में न केवल लोकतांत्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणाली है, बल्कि वहां पांच वर्ष में एक बार संसदीय तथा दो वर्ष में एक बार स्थानीय निकायों के चुनाव होते हैं ।

लोकतंत्र का पहला अर्थ

क्यूबा के लिए लोकतंत्र का पहला अर्थ है प्रत्येक मनुष्य के लिए जीने का अधिकार— ऐसे जीवन का अधिकार, जिसमें सबको एक अच्छा-सा मकान, शिक्षा की सुविधा, चिकित्सा-सेवा उपलब्ध हो तथा जाति, धर्म या लिंग के आधार पर भेदभाव न हो । लोकतंत्र का अर्थ है एक ऐसा देश जिसमें सामाजिक जीवन समवाय और राजनीतिक स्थिरता पर आधारित हो तथा जनता का सरकार के साथ अंतरंग संबंध हो । इसी बात को लक्षित करते हुए फीदेल कास्त्रो ने कहा था— "मेरा विश्वास है कि सच्चे लोकतंत्र का अर्थ है, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत । मेरा यह भी विश्वास है कि जब तक समाज में यह भेदभाव रहेगा, तब तक लोकतंत्र का अस्तित्व नहीं हो सकता... ।"

कोपेनहेगेन में आयोजित पिछले सामाजिक शिखर सम्मेलन में यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि आजादी के बाद क्यूबा में स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल और आर्थिक स्थिति तथा माताओं और बच्चों की देखरेख में विशेष रूप से अभूतपूर्व उन्नति हुई है ।

चुनाव प्रक्रिया में संशोधन

सन् १९५९ से ही क्यूबा में चुनाव का प्रश्न संचार माध्यमों के लिए प्रमुख विषय रहा है । इसका कारण यह है कि क्रांति के पहले पंद्रह वर्षों तक वहां चुनाव का कोई प्रावधान नहीं था । लेकिन सन् १९७६ में नये संविधान तथा चुनाव-विधान के लागू होने के साथ ही वहां नगरपालिका, प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तरों पर पहले आम चुनाव करवाये गये । तब से वहां हर पांच वर्ष में संसदीय चुनाव तथा दो वर्ष की अवधि में स्थानीय निकायों के चुनाव होते रहे हैं ।

क्यूबा में चुनाव प्रक्रिया में सतत संशोधन होते रहे हैं । तेंतीस वर्षों से चल रही आर्थिक घेरेबंदी और पिछले पांच वर्षों में समाजवादी राष्ट्रों के विखंडन से क्यूबा की अर्थव्यवस्था को पहुंचे आघात के बीच यह प्रक्रिया और तेज हुई है । सन् १९९३ के आम चुनावों से पूर्व इस दिशा में काफी काम हुआ । यह एक प्रकार से राष्ट्रीय जनमत संग्रह था । इस दौरान क्यूबा में २०० से अधिक विदेशी पत्रकार मौजूद रहे । चुनावों में निष्पक्षता का सत्यापन सीटू ने भी किया । क्यूबा सरकार को इन चुनावों में ९० प्रतिशत से अधिक मतदाताओं का समर्थन प्राप्त हुआ । कुल मिलाकर ९९.५७ प्रतिशत मतदाताओं ने इसमें भाग लिया था । यह बात ध्यान रखने की है कि क्यूबा में मतदान अनिवार्य नहीं है और इसकी प्रक्रिया सीधी और गोपनीय है ।

इन चुनावों के दौरान क्यूबा की चुनाव-प्रक्रिया में जो संशोधन किये गये, उनमें सीधे, स्वतंत्र और गोपनीय मतदान के द्वारा विभिन्न स्तरों पर जन-प्रतिनिधियों के चुनाव का प्रावधान भी था । इससे पहले राष्ट्रीय विधानसभा के डेपुटी प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा और प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्य नगरपालिकाओं के प्रतिनिधियों द्वारा चुने जाते थे । वर्तमान में क्यूबा में सोलह वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति को मत देने और प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का अधिकार है । हां, संसद के लिए नामांकित होने का अधिकार १८ वर्ष से ऊपर के व्यक्ति को ही होता है ।

पैसे की भूमिका नहीं

मतों की गिनती का कार्य इच्छुक मतदाताओं और प्रेस की उपस्थिति में सीटू में किया जाता है । इस चुनाव-प्रक्रिया में प्रत्येक मतदाता का सहभाग होता है । वे ही प्रत्याशियों का नामांकन करते हैं । इसमें प्रचार या पैसे की कोई भूमिका नहीं है । क्यूबा का साम्यवादी दल प्रत्याशियों को सीधे खड़ा नहीं करता । यह भी अनिवार्य नहीं है कि वे दल के सदस्य हों । चुने गये प्रत्याशी अपने मतदाताओं के निकट संपर्क में रहते हैं । प्रत्येक तिमाही उन्हें अपनी गतिविधियों की जानकारी भी अपने मतदाताओं को देनी पड़ती है । मतदाताओं को असंतोष की स्थिति में अपने प्रतिनिधियों को वापस बुलवाने का अधिकार प्राप्त है ।

दिलचस्प आंकड़े

जुलाई, १९९५ में नगरपालिकाओं और प्रांतीय विधानसभाओं के जो चुनाव हुए, उनमें ९७.७ प्रतिशत मतदान हुआ । यह तथ्य रेखांकित करने योग्य है कि लोकतंत्र होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त अनेक देशों की सरकारें भी ५० प्रतिशत से कम मत प्राप्त करके आती हैं । संयुक्त राज्य अमरीका में तो पिछले ३२ वर्षों में ४२ प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग नहीं किया । पिछले चुनावों में निर्वाचित अमरीकी राष्ट्रपति को केवल ३८.७ प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे ।

इन तथ्यों के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता कि क्यूबा का लोकतंत्र या समाज दोष-रहित है । लेकिन अपने समाज और लोकतंत्र की कमजोरियों को बाहरवालों की अपेक्षा स्वयं क्यूबावासी बेहतर ढंग से समझ सकते हैं । उनकी यह वांछा है कि इन कमजोरियों को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के दूर किया जाए । क्यूबा की चुनाव-प्रक्रिया में यह कार्य सरकार में जनता की प्रत्यक्ष साझेदारी के आधार पर करने का प्रयास किया जा रहा है । लोग सामूहिक रूप से विचार करके उन्हें प्रकट करने में सक्षम हैं । वे अपने सपनों को साकार करने में भी समर्थ हैं । पिछले ३६ वर्षों का अनुभव इस बात का साक्षी है ।

(क्यूबा एम्बेसे का पता है : श्रीमती अ... मुनीरका मार्ग, वसंत विहार, नयी दिल्ली-११...

फीदेल कास्त्रो ने कहा था— "मेरा विश्वास है कि सच्चे लोकतंत्र का अर्थ है, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत । मेरा यह भी विश्वास है कि जब तक समाज में यह भेदभाव रहेगा, तब तक लोकतंत्र का अस्तित्व नहीं हो सकता... ।"

कादम्बि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललित व्यंग्य

राजनीति तो नगर की दुल्हिन है !

• रतनलाल जोशी

कुछ दिन पहले दिल्ली में राष्ट्रमंडल के देशों का संसदीय सम्मेलन हुआ था । सिंगापुर के संसद सदस्य श्री सिया काह हुइ भी उसमें शामिल हुए थे । अपने देश में वह मूर्तिभंजक विचारकों के नेता माने जाते हैं । सम्मेलन में भाषण करते हुए उन्होंने कहा था कि यदि कोई वास्तविक निरर्थकता है, तो वह राजनीतिक सम्मेलन है और यदि कोई सार्थकता है, तो वह है कुछ पैदा करना, चाहे वह बच्चा ही क्यों न हो । राजनीति की निरर्थकता बताते हुए उन्होंने अपनी तर्जनी से सारे सम्मेलन को आगाह करते हुए कहा था—

अगर आप दुनिया की
मशीनों को समुद्र में डुबो दें
तो दुनिया भूखों मर जाएगी,
और अगर आप दुनिया के
राजनीतिज्ञों को समुद्र में फेंक दें
तो कहीं पत्ता भी नहीं खनकेगा !

अरस्तू के कोश में मनुष्य को 'राजनीतिक जानवर' कहा गया है, किंतु हकीम लुकमान की-सी ख्याति रखनेवाले डॉ आर्बुथनाट लेन कहते हैं कि मैंने तो यही देखा है कि राजनीतिज्ञ जब मरते हैं, तो अपने खुद के ही झूठों को निगलकर ही मरते हैं ।

वाल्टेयर ने कहा है कि राजनीति तो नगर की दुल्हिन है, मगर कुछ लोगों की बुद्धि ऐसी मारी जाती है कि वे उसे अपनी पतिव्रता पत्नी बनाने की जिद ठान बैठते हैं । बस, बाजार की बहू सिर पर सवार हो जाती है— गनीमत यही है कि सिर सलामत रह जाता है, हां, पगड़ी तो उछाल ही दी जाती है ।

लास्की का कहना है कि जनता को जेब में मत रखो— सिर पर भी मत चढ़ाओ । मगर दाल में नमक की तरह उसके स्वाद पर चढ़े रहो । जनता से दुराव अपने ही हाथों अपने लिए उसके घर के दरवाजे बंद करना है । असल में, स्वार्थ ही राजनीति में इतनी आत्महत्याओं की छुरी है ।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' इसी बात को काव्य में बांधकर यों कहते हैं—

कुछ रहस्य है ऐसा
जिसे तुम्हारे विश्वासी
जन भी तुमको नहीं बताते,
तो तुमको क्यों हो
इससे अचरज
सब जन अपनी खिचड़ी
पका रहे हैं अपने चूल्हे पर,
तुम्हें क्या पड़ी है जो देखो—
दाने पके हैं कि कच्चे
हां, पर एक खटक है कि
जब गोपनीयता रहे इतनी
तो फिर संग चलने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई क्या शुचि
रुचि रह जाती है
स्वयं बजाने से ही ढप
ठीक ताल गाते सीखेगा मानव
क्या गति होगी उसकी
तुम्हीं बजाते रहे ढोल-ढप जो ।

सरोजिनी नायडू राजनीतिज्ञों को तीन श्रेणियों में बांटती थीं । मेरे पास तीन गुड़िया हैं । एक नमक की, दूसरी कपड़े की और तीसरी पत्थर की बनी हुई । मैं इन तीनों को पानी में डुबोती हूं । नमक की गुड़िया पानी में घुलकर गायब हो जाती है । कपड़े की गुड़िया पानी में तरबतर हो जाती है और पत्थर की गुड़िया पानी में नहाकर साफ जरूर हो जाती है, चमकने भी लगती है, मगर पानी के साथ उसका दिल नहीं मिलता । नमक की गुड़िया की श्रेणी का राजनीतिज्ञ मेरी नजर में श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ है, जो जनता के साथ अपने अस्तित्व को एक प्राण देता है, दुराव-जैसी कोई बात वहां नहीं रहती । कपड़े की गुड़िया की कोटि का राजनीतिज्ञ दूसरी श्रेणी का राजनीतिज्ञ है, वह जनता के साथ एकाकार नहीं होता । पत्थर की गुड़िया की श्रेणी का राजनीतिज्ञ वास्तव में राजनीतिज्ञ नहीं ठग है । वह जनता के विश्वास से अपनी छवि को मांजता है, जनता को छलता है । इस पर शायद रूसो ने कहा है—

भूल को हम प्यार देंगे,
पर कपट के लिए हमने
कब्र भी खोद रखी है ।

मौलाना आजाद से एक पठान युवक ने जब चिट्ठी लिखकर पूछा कि खान अब्दुल गफ्फार खां को ही आप सीमांत प्रदेश का एकमात्र नेता क्यों मानते हैं, तो मौलाना ने लिखा था कि खान अब्दुल गफ्फार खां सीमांत को ही अपना सब कुछ मानते हैं, उनकी लगन फारसी के इस शेर द्वारा कुछ-कुछ समझ में आ सकती है—

मुकर्रर दर्द : अम दर दिल
अर्जी दरगाह
न ख्वाहम रफत
सर ई जा, सिज्द ईजा
बंदगी ईजा करार ईजा

'—मैंने तय कर लिया है कि इस मंदिर के सिवाय मेरा कोई मंदिर नहीं है—मेरा अर्पण इसके सिवाय और कहां चढ़ सकता है, क्योंकि सिजदे, बंदगी एवं आनंद का यही मेरा स्रोत है !'

फैजी कहता है कि अक्ल की रस्सी हमें खूंटे से तो बांधकर रखती है, किंतु गले की रस्सी बनकर वह हमें अपना पालतू जानवर भी बना लेती है । मौत अनिवार्य है, अपने जाल से वह मछयारिन किसी को बचने नहीं देती, किंतु जाल में फंसाकर वह हमें मुक्त भी तो करती है । तीसरी बहन दौलत है, जो नाक में नकेल पिरोकर हमें लद्दू जानवर बनाये रखती है, यहां तक कि हम दामन झाड़कर उससे अपना पीछा नहीं छुड़ा लेते या वैराग्य के एक झटके में उछलकर उस पर ही सवारी नहीं गांठ लेते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लास्की का कहना है कि जनता को जेब में मत रखो— सिर पर भी मत चढ़ाओ । मगर दाल में नमक की तरह उसके स्वाद पर चढ़े रहो । जनता से दुराव अपने ही हाथों अपने लिए उसके घर के दरवाजे बंद करना है । असल में, स्वार्थ ही राजनीति में इतनी आत्महत्याओं की छुरी है ।

चौथी बहन हुकूमत है, जो गरज-गरजकर प्रजा पर बरसती है, पर कभी यश नहीं पाती, क्योंकि कहीं सूखा चाहिए तो कहीं बाढ़ । पांचवीं बहन विजय है, जो सुंदरता की खान तो है, किंतु है बड़ी मनहूस । जो उसे पाता है, अंत में पछताता ही है ।

प्रियदर्शी अशोक ने भी खुदवाया था कि युद्ध ज्वाला है और विजय धधकते अंगारे । दोनों को त्याग दो तो सद्धर्म की पात्रता सुलभ है ।

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था । पांडवों को विजयश्री प्राप्त हुई थी । किंतु युधिष्ठिर को वह स्वजनों के अस्थि-मांस की पोटली ही प्रतीत हुई । अर्जुन ने तब विरक्ति के स्वर में ये वाक्य कहे थे—

यथा हि पुरुषः खत्वा
कूपमप्राप्य चोदकम्
पंकदिग्धो निर्तत
कर्मेदं नस्तथेपमम्
यथारुहय महावृक्षमा—
हत्य ततो मधु,
अप्राश्य निधनं गच्छेत
कर्मेदं नस्तथोपमम्

— जैसे कोई पानी पीने के लिए कुआं खोदे, किंतु पानी निकलने से पहले ही कीचड़ में सना बाहर निकल आये, हमारा काम भी ऐसा ही रहा है । जैसे कोई ऊंचे पेड़ पर चढ़कर शहद एकत्र करे, किंतु बिना चखे ही उससे मर जाए, हमारा काम भी वैसा ही रहा है ।'

लिंकन का कहना है कि राजनीति दुनिया का ऐसा दर्पण है, जिसमें तुम्हारे चेहरे को सुधारने के लिए लाखों लोग अपने को रंग बनाने के लिए तैयार मिलेंगे, किंतु यह उसे ही नसीब होगा जो कोरे शब्दों से नहीं, आचरण से ही अपनी छवि उस दर्पण में आंकने की कोशिश करता है ।

एक बार श्रीमती गांधी फ्रांस- यात्रा पर गयी थीं, तो विद्वत-समाज में उन्होंने एक बातचीत के दौरान कहा था कि काव्य, साहित्य या राजनीति का मेरी धारणा में अर्थ यही है कि कृति के दर्पण में हमारा प्रतिबिंब जनता को अपनी धड़कन का ही रेखाचित्र लगे !

इसी बात को स्पष्ट करते हुए पेशेवर राजनेता से कवि इकबाल कहता है—

तर आंखें तो हो जाती हैं
पर क्या लज्जत इस रोने में,
जब खूनेजिगर की आमेजिश से
अश्क-पियाजी बन न सका !

—१२ फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

पाषाणी कौन : दहेज समस्या पर आधारित प्रस्तुत उपन्यास 'फ्लैश बैक' पद्धति में लिखा गया है। इसकी लेखिका उर्मिला कौल हैं। आज भी न तो दहेज उत्पीड़न ही कम हुआ है और न इस समस्या पर लिखना ही। यह बात अलग है कि इसमें से कितनी कृतियां अपने उद्देश्य में सफल हो पाती हैं। नायिका 'सुरक्षा' का 'सुशील' के साथ विवाह और फिर दहेज के कारण उत्पीड़न इस उपन्यास की मुख्य कथा है।

उपन्यास में नायिका के संघर्षों का मार्मिक और प्रभावी चित्रण हुआ है। भाषा विषयानुकूल है। दहेज-जैसी सामाजिक समस्या पर केंद्रित यह उपन्यास अपनी सामाजिक उपादेयता में सफल रहा है।

पाषाणी कौन; लेखक : उर्मिला कौल; प्रकाशक : हिमजा प्रकाशन, पटना; मूल्य : १५० रुपये।

चुनौतियों का चक्रव्यूह : रामशरण जोशी के २२ उन लेखों का संकलन है जो १९८९ से १९९४ के बीच की कालावधि में लिखे और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। 'इक्कीसवीं सदी के लिए : विवेकानंद', 'मुख्यधारा की अवधारणा', और 'पूंजीवाद : स्वयंभू मसीहा' जैसे कुछेक निबंधों, जो विचारोत्तेजक भी हैं, को यदि हम छोड़ दें तो शेष लेखों का संबंध तत्कालीन राजनीतिक विभिन्नताओं और घटनाओं से है, अतः अब वे कालातीत हो चुके हैं। प्रस्तुत संग्रह के कई लेखों में लेखकों ने सामंतवादी प्रवृत्तियों का जमकर विरोध किया है।

लेखक : रामशरण जोशी, मूल्य : १२५ रु.

नौकरीपेशा नारी कहानी के आइने में : पुष्पपाल सिंह द्वारा संपादित १८ ऐसी कहानियों का संग्रह है जिसमें कामकाजी महिलाओं की बेचारगी की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उनके पारिवारिक जीवन की सच्चाइयों को उकेरा गया है। अचला नागर की कहानी 'सिफारिश' में उस लड़की का दर्द समाया हुआ है जो अपने बॉस के पैंतरों से सही समय पर चेतकर इस्तीफा देकर चुपचाप चली आती है। चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानी 'दरमियान' में नारी के प्राकृतिक झंझटों से उत्पन्न समस्याओं को चर्चा का विषय बनाया है। 'जांच अभी जारी है' में ममता कालिया ने पुरुष प्रधान दफ़्तरों में महिलाओं के उत्पीड़न और उनकी परवशता को उजागर किया है।

संपादक : पुष्पपाल सिंह, मूल्य : मात्र १०० रु.

परख काल : चर्चित महिला कथाकार दीपक शर्मा का नवीनतम कथा संग्रह। इनकी समस्त कहानियों में पारिवारिक परिवेश में उत्पन्न होनेवाली, कहीं चुलबुली तो कहीं गंभीर, समस्याओं का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत संग्रह की कई कहानियां रोचक हैं जो पाठक को बांधने में समर्थ हैं।

रचनाकार : दीपक शर्मा, मूल्य : ५० रु.

उक्त तीनों पुस्तकों के प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाड़ा, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

—अनंतराम

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़िया की प्रतिनिधि कहानियां : डॉ. बनमाली दास ने उड़िया की प्रतिनिधि कहानियों का हिंदी रूपांतरण करके हिंदी जगत की अमूल्य सेवा की है। उन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से उड़िया की २५ सर्वोत्तम कहानियों का चयन किया है। इनमें उड़िया कहानी साहित्य के जनक फकीर मोहन सेनापति से लेकर आज तक के सभी प्रमुख उड़िया कहानीकारों की रचनाएं संग्रहीत हैं।

प्रकाशक : के. के. पब्लिकेशन, कलकत्ता; मुख्य विनरक : किताब महल एजेंसीज, ८४ के. पी. रूक्ड़ रोड, इलाहाबाद; मूल्य : ३९ रुपये।

जब मैं न रहूं : शीला गुजराल का यह हिंदी में आठवां और पंजाबी, अंगरेजी को मिलाकर चौदहवां काव्य संग्रह है। इस संग्रह में उनकी ८७ कविताएं हैं। सभी कविताएं लीक से हटकर हैं। इन कविताओं का शिल्प और अर्थ विस्तार उन्हें नया आयाम प्रदान करता है। कवयित्री के अनुसार उनकी ये कविताएं अंतिम यात्रा के पूर्व का विदा संदेश हैं। लेकिन यात्रा की अपरिहार्यता ने उन्हें भयभीत नहीं किया है। दूसरों को दीन-दुखियों का सारा दर्द मथ लेने का संदेश देने की प्रेरणा दी है।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड, नयी दिल्ली; मूल्य : ६५ रुपये।

रामायण समग्र मानवता का प्रतिबिंब : रामायण संपूर्ण मानवता और मानवीय मूल्यों का प्रतिबिंब है। यह एक ऐसा पवित्र ग्रंथ है, जो प्रत्येक मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में आदर्श पुरुष बनने का संदेश देता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के जीवन और उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को इस पुस्तक में लेखक प्रो. जी. बी. कानूनगो ने बहुत

ही सुंदर शैली में प्रस्तुत किया है।

श्री राम के जीवन को और उनके आदर्शों को नये ढंग से प्रस्तुत करते हुए प्रो. कानूनगो ने कई खोजों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि श्री राम का जन्म ११ अप्रैल, ४४३३ ईसा पूर्व हुआ था। इस संबंध में उन्होंने अनेक भाषाओं में लिखी रामायण और अन्य कई ग्रंथों को आधार मानते हुए श्री राम की जन्मतिथि को वैज्ञानिक ढंग से खोज निकालने का दावा किया है। यही नहीं अनेक ऐसे तथ्यों को लेखक ने इस पुस्तक के माध्यम से उजागर किया है। प्रो. कानूनगो का मानना है कि श्रीराम के जन्म व अन्य तथ्यों के बारे में उनके द्वारा दिये गये प्रमाण अकाट्य हैं। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को एक आदर्श मानव माना है और उनके विचार में बाली-वध, सीता-परित्याग - जैसे कार्य उनकी प्रतिष्ठित छवि से मेल नहीं खाते, इसलिए संभवतः यह तथ्य सत्य ही न हों।

प्रकाशक : हिंदी बुक सेंटर, नयी दिल्ली; मूल्य : २८० रुपये (सजिल्द), १२५ रुपये (अजिल्द)।

सदेह स्वर्गारोहण : मोहन कुमार सरकार की इस पुस्तक में कैलाश मानसरोवर यात्रा का मनोहारी सचित्र वर्णन है। कैलाश मानसरोवर के लिए दिल्ली से तवाघाट तक ६११ किलोमीटर की यात्रा बस से और फिर ५४० कि. मी. की यात्रा पैदल करनी पड़ती है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा कठिन और थका देनेवाली है । लेकिन यात्री हिमाच्छादित कैलाश शिखर और मानसरोवर के नीले जल के दर्शन कर सभी थकान भूल जाता है । पुस्तक में दिये गये मानचित्र और चित्रों ने उसकी उपयोगिता बढ़ा दी है ।

प्रकाशक : लेखक, बिहार प्रशासकीय सेवा, भागलपुर (बिहार); मूल्य : १८५ रुपये ।

साठोत्तर हिंदी नाटकों की सामाजिक चेतना : डॉ. जयश्री शुक्ला ने प्रस्तुत पुस्तक में स्वातंत्र्योत्तर काल में चर्चित प्रमुख नाटकों को आधार बनाकर साठोत्तर काल की सामाजिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है । अपने इस प्रयास में उन्होंने तत्कालीन समाज के आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और वैज्ञानिक परिवेश का भी अध्ययन किया है । पुस्तक में हिंदी नाटकों के माध्यम से भारतीय समाज की चेतना के सभी रूपों का भी अंकन किया गया है ।

प्रकाशक : शांति प्रकाशन, ८४/१ पुराना वैरहना, इलाहाबाद; मूल्य : १६० रुपये ।

● नवीन पंत

सोनांचल की कहानियां : इस कहानी संग्रह में औद्योगिक अंचल 'सोनांचल' की मानवीय संवेदनाओं को लेखक ने मार्मिक ढंग से चित्रित किया है । इस कृति की सोलह कहानियों में इस क्षेत्र के जन-जीवन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास भी है । दिन-पर-दिन होनेवाली सभी सहज घटनाओं को विभिन्न पात्रों से जोड़कर वहां की सामाजिक पृष्ठभूमि को उभारने का प्रयास भी किया गया है । लेखक ने लोकनायक लोरिक की शौर्यगाथा के माध्यम से वहां की लोक परंपरा को लिपिबद्ध किया है ।

लेखक : शंकर सिंह; प्रकाशक : पूर्वांचल प्रकाशन, ११८०, ए ब्लॉक (ज्ञान बिल्डर्स के पास) सोनिया विहार, दिल्ली ।

मध्य प्रदेश के प्राचीन कीर्ति स्थल : इस पुस्तक में मध्य प्रदेश से संबंधित प्राचीन भारत की सांस्कृतिक गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं को विविध रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल अवश्य है, परंतु सांस्कृतिक राजधानी जबलपुर ही है । त्रिपुरी के कलचुरि वंश से लेकर अब तक साहित्य और कला का विकास इस क्षेत्र में तेज से हुआ है । स्वामी वल्लभाचार्य के चार प्रमुख शिष्यों में से एक कुंभनदास जबलपुर गढ़ा के निवासी थे । चतुर्भुजदास भी यहीं के थे । रीतिकाल के प्रसिद्ध बिहारी, भूषण और पद्माकर मध्य प्रदेश के थे । संस्कृत के कवियों में कालिदास, भोज, भवभूति, मंडन मिश्र और गंगाधर भी यहीं के थे । तानसेन, बैजूबावरा, नायक गोपाल की संगीत कला की उज्ज्वल कीर्ति आज तक रंचमात्र भी धूमिल नहीं हुई है ।

इस पुस्तक में मध्य प्रदेश के प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों के सांस्कृतिक स्वरूप को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है ।

लेखक : डॉ. रामनारायण सिंह 'मधुर'; प्रकाशक : मेघ प्रकाशन, बी-५/२६३, मन्

कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहार, दिल्ली; मूल्य : २०० रुपये ।

जागे शब्द गरीब : दिनेश शुक्ल तीन दशक से दोहे लिख रहे हैं । इस पुस्तक में इनके १२०० दोहे हैं । ये दोहे सांप्रदायिकता, धर्मांध, हिंसा, आतंकवाद, दंगे, कर्फ्यू, अलगाववाद, नस्लवाद - जैसे समाज में व्याप्त जहर का आत्म-साक्षात्कार ही नहीं कराते, उन पर चोट भी करते हैं । अपनी रचनात्मक उत्तेजना से मनोजगत के विभिन्न अनुभूतिक स्तर पर ये कविता संसार को अधिक गहरा, प्रासंगिक एवं समृद्ध बनाते हैं । जैसे,

टूटे पायों पर खड़ा, ये जर्जर जन-तंत्र,
ठोके कीलें स्वार्थ की, एक पांचवां तंत्र ।

प्रकाशक : मेघ प्रकाशन, बी-५/२६३, यमुना विहार, दिल्ली; मूल्य : १०० रुपये ।

पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया— भारत में सबसे अधिक दैनिक, साप्ताहिक या मासिक समाचार पत्र-पत्रिकाएं हिंदी में प्रकाशित होती हैं, किंतु सबसे अधिक प्रकाशन हिंदी के ही असमय में बंद भी हुए । प्रस्तुत पुस्तक के लेखक शिव प्रसाद भारती ने पत्र-पत्रिकाओं के संचालकों, प्रकाशकों, संपादकों तथा पत्रकारों के समक्ष आनेवाली कठिनाइयों के निराकरण का प्रयास करते हुए यह दावा किया है कि यदि उसके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलते रहा जाए तो उनके प्रकाशन कभी बंद नहीं होंगे । नुस्खा बहुत उपयोगी है ! इसका पालन करने में हर्ज भी क्या है ?

प्रकाशक— विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
पृष्ठ संख्या— ३६६; मूल्य— २०० रु.

पानी इन आंखों का— दयाशंकर 'सुबोध' की नौ कहानियां आलोच्य ग्रंथ में संगृहीत हैं । कहानीकार के अनुभव अभी परिपक्व नहीं हो पाये हैं, अतः कहानियां कथावस्तु की ओर संकेत मात्र करके भटक जाती हैं, गंतव्य तक पहुंच नहीं पातीं । किंतु प्रयास यदि जारी रहा तो भविष्य की कहानियों में मंजावट आ सकती है ।

प्रकाशक— जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या— १२०; मूल्य— ६० रु. (बहुत है) ।

चिट्ठी आई है— कमलेश भट्ट 'कमल' की ११ कहानियों का यह संकलन ऐसी कथाओं से भरपूर है जिसके पात्र आज की हिंदी फिल्मों में आम देखे जाते हैं । संकलन की अंतिम कहानी 'चिट्ठी आई है' बहुत साफ-सुथरी और स्वच्छ मनोभावोंवाली है ।

प्रकाशक— अयन प्रकाशन, नयी दिल्ली
पृष्ठ संख्या— १३६; मूल्य— ६० रु.

आखेट महल— आज समाज कितना भ्रष्ट हो चुका है कि जिसमें सुरुचिपूर्ण प्रकृति के स्वभाव के लोग कितना छटपटाते हैं और उधर लोग शर्मिंदगी से अपने चेहरे बदलते रहते हैं । इसका रोचक वर्णन प्रबोध कुमार गोविल ने इस उपन्यास में पाठकों को मिलता है ।

प्रकाशक— दिशा प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या— १४३; मूल्य— ९० रु.

मास्टरजी— मधुकांत कृत कोई १३ कहानियों का यह संकलन अध्यापकीय दृष्टिकोण से प्रभावित है । कहानीकार एक अध्यापक है, अतः उनके पात्रों के साथ ही कथावस्तु भी उसी क्षेत्र की है । एक ही दिशा, और कहीं-कहीं दिशाहीन, होने के कारण अधिक रोचक नहीं बन सकी है ।

प्रकाशक— दिशा प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या— ११९; मूल्य— ७५ रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'होली-मिलन'

भटनी (देवरिया) । क्लब की मार्च माह की बैठक, स्थानीय नगर स्थित व्यापार मंडल, अध्यक्ष मुनेश्वर प्रसाद वर्मा के आवास पर 'होली-मिलन' समारोह के रूप में संपन्न हुई । श्री वर्मा की अध्यक्षता एवं शिवाकांत मिश्र 'शिवेश' के संचालन में संपन्न हुई बैठक को वरिष्ठ सदस्य हरि प्रसाद मिश्र ने संबोधित किया ।

बैठक में अशोक कुमार राय, मुनेश्वर मिश्र, सतीश गुप्त, जलालुद्दीन अंसारी, वी. के. श्रीवास्तव तथा हरिशचन्द्र कन्नोजिया ने फागुनी-गीत एवं कविताएं प्रस्तुत कीं । लोक गीत कलाकार संजय कुमार मिश्र ने प्रस्तुत किया ।

विचार गोष्ठी

सीतामढ़ी । कादम्बिनी क्लब द्वारा संयोजिका आशा 'प्रभात' के निवास स्थान पर श्री रमाशंकर त्रिवेदी 'बदनाम' की अध्यक्षता में 'देश के मौजूदा संकट में कलमकारों की भूमिका' विषय पर एक विचार गोष्ठी हुई । गोष्ठी में आशा 'प्रभात', रामचन्द्र विद्रोही, जगदीश प्रसाद, वसंत आर्य, अजय विद्रोही, अरुण चन्द्र दास, रवीन्द्र कुमार 'प्रभात' तथा अरविन्द कुमार आदि रचनाकारों ने भाग लिया ।

मासिक गोष्ठी संपन्न

पूर्णियां । रंगों भरी होली की पूर्व संध्या पर पूर्णियां कादम्बिनी क्लब में मासिक गोष्ठी का आयोजन क्लब की सदस्या श्रीमती उत्तिमा केसरी की अध्यक्षता एवं मंजुला उपाध्याय के संचालन में संपन्न हुआ । कवि गोष्ठी की शुरुआत मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने की । श्री कलाधर, प्रो. सुरेन्द्र शोषण, डॉ. उदय भानू, इप्टा से जुड़े श्री नरेश शर्मा, युवा कथाकार श्री चंद्रकांत राय तथा अर्जुन अरुणेश, कृष्ण कुमार, अरुण अभिषक, उमाशंकर, अनिल कुमार, इत्यादि रचनाकारों ने देर तक अपनी रचनाओं से श्रोताओं को रिझाया । तीसरे दौर का समापन श्रीमती उत्तिमा केसरी की गजल से हुआ । धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका श्रीमती मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने किया ।

कादम्बिनी क्लब मोदीनगर ने श्रद्धांजलि व्यक्त की

मोदीनगर । कादम्बिनी क्लब के संयोजक डॉ. वी. पी. शर्मा के निवास स्थान पर क्लब की एक शोक सभा आयोजित की गयी । इस अवसर पर संयोजक डॉ. वी.पी. शर्मा ने 'अश्कजी' के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया । इनके अतिरिक्त प्रधानाचार्य श्रीमती शशि प्रभा शर्मा, व्रजकण, जगदीश पंकज, नरेश मित्तल, अशोक शर्मा व राकेश शर्मा ने अपने शोक उद्गार प्रकट किये । वरिष्ठ सदस्य सुंदर लाल गोयल के पिता जी के आकस्मिक निधन पर भी सदस्यों ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं । शोक सभा में चौधरी उदयवीर, नरेश मित्तल, प्रधानाचार्य कुमार कपूर, डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. सुधा सिशोदिया, डॉ. सुरेंद्र सिंह असीश, डॉ. टी. एस. चौधरी, व्रजकरण, संत प्रसाद प्रेमी, श्रीमती किरण कुमार, सुंदर लाल गोयल, कवि सुमनेश सुमन उपस्थित थे । सभा की समाप्ति श्रीमती किरण कुमार के भक्ति भजन से हुई । मंच संचालन डॉ. टी. एस. चौधरी ने किया और अध्यक्षता श्री राकेश कुमार शर्मा ने की ।

डॉ. उर्मिलेश का अभिनंदन

बरेली । कादम्बिनी क्लब द्वारा आयोजित केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्टेशन आइजट नगर बरेली के प्रांगण में आयोजित समारोह में डॉ. त्रिवेणी शंकर मिश्र की द्वितीय पुण्य तिथि पर प्रख्यात गीतकार डॉ. उर्मिलेश शंखधार का 'सारस्वत अभिनंदन

कादम्बि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. चौहान ने किया तथा कमल सक्सेना ने वाणी वंदना प्रस्तुत की । इस अवसर पर स्व. डॉ. मिश्र को श्रद्धांजलि देते हुए उषा पांडेय, शोभा मिश्रा, मधु उपाध्याय 'मोहिनी', मणि उपाध्याय, डॉ. श्वेतकेतु शर्मा, रणधीर प्रसाद गौड़, राममूर्ति गौतम 'दीन', डॉ. ओ. बी. गोस्वामी, प्राचार्या नीरा शर्मा, एन. एल. शर्मा, डॉ. के. के. शुक्ल एवं युवा समाजसेवी राजेन्द्र कुमार सक्सेना आदि ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला । अंत में 'कादम्बिनी क्लब' बरेली एवं कार्यक्रम की संयोजिका मधु उपाध्याय 'मोहिनी' ने आभार व्यक्त किया ।

प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण

सहारनपुर । कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में साक्षरता नारा प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह एस. डी. कन्या इंटर कॉलेज में हुआ । प्रतियोगिता में ५७५ प्रतियोगियों ने भाग लिया जिसमें से ६ विजेताओं को जिलाधिकारी सत्यजीत ठाकुर द्वारा पुरस्कृत किया गया । श्रेष्ठ नारे 'भारत देश महान बनेगा पढ़े लिखेंगे सब नर नारी, अभियान चलो छेड़ें ऐसा साक्षर हो जनता सारी' के लिए विभा वर्मा तथा 'साक्षरता की लगा के सीढ़ी, पढ़ पाएंगी तीनों पीढ़ी' के लिए डॉ. अनिल शर्मा को २५०-२५० रुपये नकद व स्मृति चिह्न भेंट किये गये । अन्य चार विजेताओं को एक सौ रुपये नकद व स्मृति चिह्न भेंट किये गये ।

क्लब की संयोजिका अनीता कथूरिया, डॉ. निर्मला बांगा, जिला विद्यालय निरीक्षक ओम प्रकाश सैनी ने भी विचार व्यक्त किये । इस अवसर पर नगराधीश आनन्द द्विवेदी, सहायक सूचना निदेशक चंदन लाल चौधरी, रमेश चन्द्र छबीला, सुरेश कथूरिया, अनुपमा महायन, प्रीति कथूरिया, मनमोहन राय, सीमा कुमारी आदि उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन विजेश जोशी ने किया ।

क्लब की बैठक

पेटलाबाद । कादम्बिनी क्लब पेटलाबाद की एक बैठक कमलेश जोशी के निवास पर आयोजित की गयी । इस बैठक में सदस्यों के अलावा अन्य क्लबों के पदाधिकारी भी उपस्थित थे । इसमें क्लब संयोजक को बैंक ऑव बड़ौदा की गृह पत्रिका द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने एवं फरवरी अंक (कादम्बिनी) में प्रकाशित आलेख हेतु बधाई दी गयी । बैठक में नेताजी सुभाष मंच के अध्यक्ष विजय नागर, रोबर्स क्लब के नितीश नागर एवं सदस्य अरुण प्रकाश, उमलेश जोशी, प्रकाश भंडारी, अंजू यादव, ज्योति पटवा, प्रीति कोड़नकर, हेमेन्द्र गुप्ता, राजेन्द्र चिपउनकर सहित संयोजक शीतला प्रसाद गुप्ता उपस्थित थे ।

कौमी एकता कादम्बिनी कवि गोष्ठी

वडोदरा । गुजरात रिफाइनरी व कादम्बिनी क्लब के सामूहिक आतिथेय में राष्ट्रीय एकता सप्ताह के अंतर्गत एक कौमी एकता सर्वभाषा कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

कवि गोष्ठी में कादम्बिनी क्लब वडोदरा से संबद्ध कवि— श्री रमेश चंद्र शर्मा कपिल, अनवर जमाल, श्रीमती कल्पना शील, क्रांति येवतीकर व डॉ. माणिक मृगेश ने काव्य पाठ किया । इसके अलावा डॉ. विष्णु विराट, डॉ. आशा राम वर्मा, डी. के. शर्मा, उष्मा तलवार, राजू पटेल, सुनंदा भावे, इंदिरानी नाग, उर्मिला प्रजापति, सुषमा श्रीवास्तव, रेणु सक्सेना, निरंजन पंड्या, उदय कुमार सिंह, प्रवीण बलिया व महमूद राज ने भी काव्य पाठ किया ।

कवि गोष्ठी में केंद्रीय विद्यालय हरणी के प्राचार्य श्री एस. के. लखानी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया । अध्यक्ष गुजरात रिफाइनरी के वरिष्ठ कार्मिक व प्रशासनिक प्रबंधक श्री सी. आर. सीकरी थे तथा संचालन डॉ. माणिक मृगेश ने किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

यूथ फॉर डवलपमेंट द्वारा सम्मान समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

गाजियाबाद : साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण तथा गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कानून-व्यवस्था, विकास, प्रशासन, पत्रकारिता, काव्यजगत, साहित्य और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देनेवाली विभूतियों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की लब्ध प्रतिष्ठ, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था 'यूथ फॉर डवलपमेंट' द्वारा सम्मानित किया गया । इस संस्था की प्रतिबद्धता कला, संस्कृति, पत्रकारिता, प्रशासन एवं देश की प्रगति से संबद्ध अन्य कार्यों में सक्रिय उन लोगों को रेखांकित करने की है जो अपनी पूर्ण निष्ठा से समाज और राष्ट्र को स्वस्थ परिवेश देने के कृतसंकल्पित हैं । स्थानीय हिंदी भवन में आयोजित इस समारोह के प्रथम चरण अर्थात् सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि थे गाजियाबाद के महापौर श्री दिनेश चन्द्र गर्ग । उन्होंने सम्मानित विभूतियों को सम्मान प्रदान किये । समारोह के प्रथम चरण का संचालन कादम्बिनी के श्री बलराम दुबे ने किया ।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में यानी रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन का संचालन विख्यात कवि एवं पत्रकार श्री सुरेश नीरव ने किया ।

जिन व्यक्तियों को सम्मानित किया गया वे हैं : सर्वश्री न्यायमूर्ति आर. पी. शुक्ला, अपर न्यायाधीश राजेश कुमार सिंह राठौर, पुलिस अधीक्षक नगर, नीलम अहलावत, संयुक्त सचिव गाजियाबाद विकास प्राधिकरण, योगेश पाठक, थानाध्यक्ष, मुरादनगर, सुनिता दयाल, समाज सेविका, राजकुमार पप्पू, सभासद : गाजियाबाद महेन्द्र पाल शर्मा, संयोजक : कादम्बिनी कलब, गाजियाबाद, राजेश शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मलका, शिक्षाविद् और योगेन्द्र योगी, समाजवादी चिंतक ।

सम्मानित कवि एवं पत्रकार थे : सर्वश्री मधुप पाण्डेय, सुरेश 'नीरव', अरुण कानपुरी, सत्यदेव शास्त्री 'भोंपू', धनंजय सिंह, दिनेश रघुवंशी, प्रकाश प्रलय, सरदार मंजीत सिंह और नरेन्द्र प्रकाश कपूर ।

उत्तर प्रदेश की भूतपूर्व मंत्री सुश्री प्रमिला बधवार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थीं । उन्होंने सम्मानित विभूतियों को बधाई दी ।

'यूथ फॉर डवलपमेंट' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप चन्द्रा ने अपने स्वागत भाषण में अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए अपने हार्दिक उद्गारों में महापौर दिनेश चन्द्र गर्ग, प्रमिला बधवार और सम्मानित विभूतियों तथा वहां उपस्थित समस्त रसज्ञ श्रोताओं के प्रति अपना आभार प्रदर्शित किया और सहयोग के लिए धन्यवाद दिया । हजारों की संख्या में उमड़े समूह के प्रति भावविह्वल होकर अपना मन्तव्य प्रदर्शित करते हुए श्री संदीप चंद्रा ने दो पंक्तियां पढ़ीं:-

जब दवा से काम नहीं चलता तो दुनिया दुआ काम लेती है,
पीर मिले कामिल से तो खुदा से बात होती है

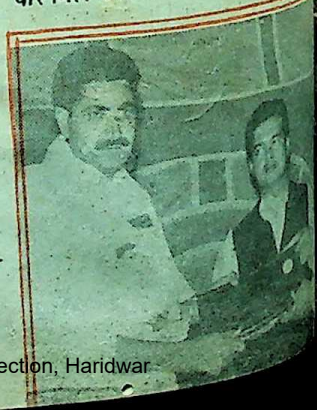

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

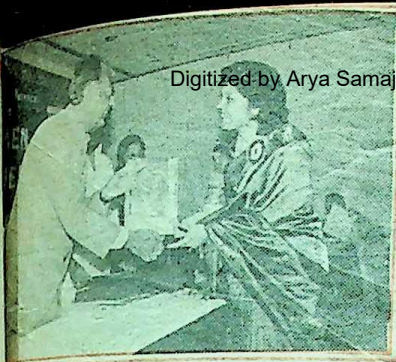

प्रियदर्शिनी सम्मान

इंस्टीट्यूट फॉर इंट्रीग्रेटेड लर्निंग इन मैनेजमेंट (आई.आई.एल.एम.) की अध्यक्षा तथा रामकृष्ण कुलवंत राय स्कूल की उपाध्यक्षा श्रीमती मालविका राय को शिक्षा के क्षेत्र में उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए प्रतिष्ठित 'इंदिरा गांधी प्रियदर्शिनी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें एक सम्मान समारोह में श्री के.सी. पंत ने प्रदान किया।

२३वां राष्ट्रीय रामायण मेला

चित्रकूट। भगवान राम की तपोभूमि चित्रकूटधाम में गत माह २३वां राष्ट्रीय रामायण मेला संपन्न हुआ। इस रामायण मेले का उद्घाटन झांसी मंडलायुक्त श्री पी.डी. सुधाकर ने किया। श्री सुधाकर का मेले के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोपाल कृष्ण करवरिया व संयोजक श्री बाबूलाल गर्ग ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस विराट मेले में विभिन्न मठों के संत-साधक, मठाधीश, धर्माचार्य व कवि-विद्वानों ने उपस्थित होकर रामकथा की सामाजिक मूल्यवत्ता को स्वीकार किया। मंच संचालन डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' ने किया।

रामायण मेला के इस विशिष्ट मंच पर जिन प्रमुख विद्वानों ने अपने उद्बोधन से श्रोताओं को अनुप्राणित किया उनमें श्री जयसिंह 'व्यथित' (अहमदाबाद), श्रीमती विद्या बिंदु सिंह, राम नारायण 'पर्यटक', सोहनलाल 'सीताराम' व कैलाश चंद्र मिश्र (सभी लखनऊ), एम. शेषन (मद्रास), डॉ. श्रीष कुमार (जबलपुर), रामअवध शास्त्री (अमरोहा), राजबहादुर द्विवेदी (फैजाबाद), डॉ. राष्ट्रबंधु व विजय प्रकाश त्रिपाठी (कानपुर), डॉ. दयाशंकर सिंह व डॉ. महेश अवस्थी (प्रयाग), श्रीमती कुसुम सिंह (चित्रकूट), विद्या नारायण शास्त्री व राधा सिंह (भागलपुर), डॉ. सिद्धेश्वर कश्यप (औरंगाबाद), आर.एस. त्रिपाठी (तिरुपति), डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय (जयपुर), डॉ. सियाराम शर्मा (झांसी), दिनेश कुशवाहा (रींवा), महेश चंद्र शुक्ल (उन्नाव) व बालकृष्ण पांडेय (इलाहाबाद) आदि प्रमुख थे। गोष्ठी की अध्यक्षता पूर्व सांसद एवं रामकथा साहित्य विद्वान श्री रत्नाकर पांडेय ने की तथा इस विद्वत सभा का संचालन प्राचार्य डॉ. यतींद्र तिवारी ने किया। आभार डॉ. श्याम मोहन त्रिपाठी व करुणा शंकर द्विवेदी ने व्यक्त किया।

पुस्तक विमोचन

जबलपुर। युवा व्यंग्य शिल्पी श्री प्रकाश प्रलय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर लिखने के पूर्व उनकी विगत १५ वर्षों की तमाम उपलब्धियां मेरे सामने हैं। उक्त विचार श्री मनोहर मनोज ने श्री प्रलय की प्रकाशित पुस्तक 'प्याले में प्रलय' के विमोचन पर व्यक्त किये। यह पुस्तक बुक्स बैंक दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गयी है और इसमें उनकी ४४ रचनाएं हैं।

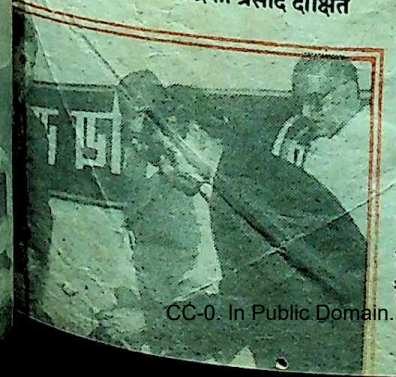

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या-पूर्ति-२००

तपती

प्रथम पुरस्कार

तपती धरती सम भया मेरा कनक शरीर
आके दरस दिखाय जा, हर बिरहा की पीर
हर बिरहा की पीर, छांव जो तेरी मिलती
हर्षित होता गात, कली फिर मन की खिलती
ध्यान धरूं दिन-रैन, नाम की माला जपती
बादल बनकर बरस, छोड़ ना मुझको तपती

—सतीशचन्द्र उपाध्याय

आर. पी. सी. अनुभाग,
निर्देशालय, भारतीय कृषि शोध संस्थान,
नयी दिल्ली-११००१२

द्वितीय पुरस्कार

मौसम सातों रंग समेटे
तन सोलह श्रृंगार
आकुल, आतुर, विरह-व्यथित मन
पिया गये उस पार
बौरायी-सी बावरि बिरहन
गुन रही प्रेम के ढाई आखर
सज सिंगार फागुन ऋतु आयी
महकी सरसों, फूली केसर
कंगन, पायल, झूमर, झांझर
तकते राह पथिक की
नयनों में हैं सावन-भादों
मन में जेठ दुपहरी तपती

—आभा श्रीवास्तव

द्वारा—श्री एन. के. श्रीवास्तव
१०९/२२८ 'ए', रामकृष्ण नगर, कानपुर—२०८०१२

तृतीय पुरस्कार

नयन-कटारे हैं गड़े
पिया गये परदेश
मन--पांखी मुसका रहा
आएगा संदेश
आएगा संदेश
विरह की राह कटेगी
सजे सभी श्रृंगार
हुलस के मांग भरेगी
गोरी है सकुचाय
नाम की माला जपती
हार गयी है धूप
जेठ में जाए तपती

—डॉ. प्रतुप

कीर्ति कुसुम, सा
डाक-दाड़ो—१७६०५७, धर्मशाला

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Hamdard

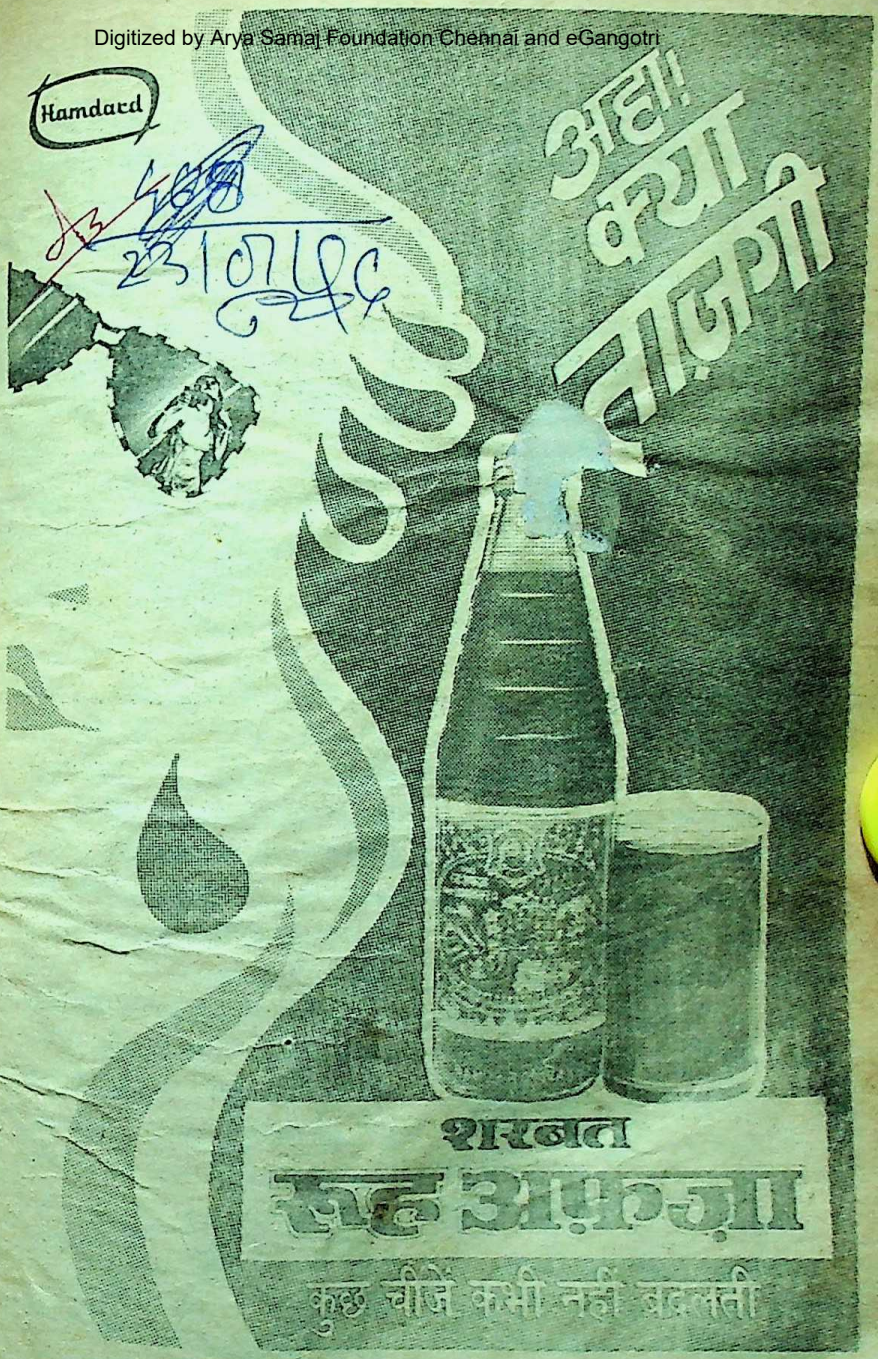

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. सचकित— क. सशंकित, ख. आश्चर्यजनक, ग. आश्चर्य में पड़ा हुआ, घ. संदेहयुक्त।

२. निरस्त— क. परित्यक्त, ख. निशाना साधा हुआ, ग. लुप्त, घ. दूर हटाया हुआ।

३. अभिनव— क. नाटक खेलना, ख. बिलकुल नया, ग. स्वागत, घ. आनंद।

४. अधोगति— क. नीचे की ओर, ख. धीमा, ग. पतन, घ. नीचे का भाग।

५. दुःखातीत— क. दुःखों से युक्त, ख. अतीत का दुःख, ग. पीड़ा, घ. कष्टदायक।

६. संहारक— क. खूनी, ख. विघ्नकारक, ग. नाश करनेवाला, घ. षड्यंत्र।

७. दुःसंग— क. बुरी लत, ख. बुरी सोहबत, ग. दुष्कर्म, घ. बुरा सहचर।

८. कपटाचार— क. षड्यंत्र, ख. द्वेष, ग. छलपूर्ण व्यवहार, घ. शत्रुता।

९. अनूप— क. आश्चर्य, ख. बेजोड़, ग. अत्यधिक, घ. श्रेष्ठ।

१०. इहलौकिक— क. वर्तमान काल में, ख. भौतिक, ग. इस लोक-संबंधी, घ. मर्त्यलोक-संबंधी।

११. भावाभास— क. काल्पनिक, ख. जो मन में आया हो, ग. बनावटी भाव, घ. विकार।

१२. इतिवृत्तात्मक— क. वर्णनात्मक, ख. इतिहास-संबंधी, ग. विस्तार से, घ. अंतिम रूप से।

१३. क्रांतदर्शी— क. क्रांतिकारी, ख. भविष्यवक्ता, ग. अतींद्रिय विषयों को जाननेवाला, घ. दूरदर्शी।

१४. अनुशीलन— क. खोज, ख. मनन तथा गंभीर अध्ययन, ग. अभ्यास, घ. योग।

१५. तफ़्तीश— क. परीक्षा, ख. छानबीन, ग. सर्वेक्षण, घ. विवरण।

उत्तर

१. ग. आश्चर्य में पड़ा हुआ, विस्मित। उसके अप्रत्याशित आगमन से सभी **सचकित** रह गये। स+चकित (व्युत्.—चक्)

२. घ. दूर हटाया हुआ, अस्वीकृत (अंग-रिपील) उच्च न्यायालय ने शासन का आदेश **निरस्त** कर दिया। (व्युत्.—निर्+अस्)

३. ख. बिलकुल नया। यह चित्र **अभिनव** कला का नमूनाहै। (अभि+नव)

४. ग. पतन, अवनति। भ्रष्ट नेतृत्व से समाज **अधोगति** को पहुंच जाता है। (अधः+गति)

५. क. दुःखों से मुक्त। ऐसा मनुष्य बिरला ही होता है जो **दुःखातीत** हो। (दुःख+अतीत)

६. ग. नाश करनेवाला। अब युद्ध अतिशय **संहारक** होते हैं। (व्युत्.—सम्+हृ)

७. ख. बुरी सोहबत। इनसान प्रायः दुःसंग में पड़कर अपराधी बनता है। (दुः+संग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. ग. छलपूर्ण व्यवहार । राजनीति जब कपटाचार में परिणत हो जाती है तब समाज भ्रष्ट हो जाता है । (कपट+आचार)

९. ख. बेजोड़, उपमारहित । इस उद्यान का अनूप प्राकृतिक सौंदर्य है । (व्युत्.—अनु+अप्)

१०. ग. इस लोक-संबंधी । मनुष्य को इहलौकिक परंपराओं से अवगत होना चाहिए । (इह+लौकिक)

११. ग. बनावटी भाव । अभिनेता द्वारा दर्शाया गया भावाभास ही था (भाव+आभास)

१२. क. वर्णनात्मक, घटनाप्रधान । यह कृति इतिवृत्तात्मक है । (इति+वृत्तात्मक)

१३. ग. अतींद्रिय विषयों को जाननेवाला, सर्वज्ञ । ऋषि-मुनि क्रांतदर्शी होते हैं । (क्रांत+दर्शी)

१४. ख. मनन तथा गंभीर अध्ययन । जो छात्र अनुशीलन में व्यस्त रहते हैं वे प्रगति करते हैं । (व्युत्.—अनु+शील्)

१५. ख. छानबीन, जांच-पड़ताल । घटना की पुलिस द्वारा तफ़्तीश हो रही है । (अरबी)

पारिभाषिक शब्द

Ultra-Violet =पराबैंगनी
Ultra-Sonic =पराश्राव्य
Nuclear Reactor =परमाणु-भट्टी
Cognizance =संज्ञान/विचाराधिकार
Prerogative =परमाधिकार
Surveillance =निगरानी
Affirmative =स्वीकारात्मक
Negative =निषेधात्मक
Illegality =अवैधता
Ignorant =अनभिज्ञ

ज्ञान गंगा

एकस्मिन् पादपे यद्वच्छकुनानां समागमः ।
यथा समीहितं कर्म कुरुते पूर्वं भावितः ॥

(पद्मपुराण १/३१/६)

— जैसे एक ही वृक्ष पर अनेक पक्षियों का समागम होता है, इसी तरह अनेक विचारों के ऊहापोह से किसी एक इच्छित कर्म को करना चाहिए ।

शक्तिवैकल्यमग्नस्य तृणस्य च समागतिः ।

(किरातार्जुनीयम् -११/५९)

— शक्ति के अभाव में डूबे हुए व्यक्ति और तृण की एकजैसी गति होती है ।

भुजे वीर्यं निवसति, न वाचि ।

(हर्षचरितम्, पृष्ठ १२५)

— वीरता बाहुबल में रहती है, वचन में नहीं ।

ततः परतरो नास्ति च आपत्सु प्रतिष्ठते ।

(कामंदकीयनीतिसार ५/४८)

— जो विपत्ति में विचलित नहीं होता उससे बड़ा कोई नहीं है ।

उद्यो दैवप्रधानः प्रयत्नमात्रे यथं सदैव प्रधानः ।

(युधिष्ठिरविजयम् ६/८०)

— कार्य-सिद्धि तो दैवाधीन है, हम तो केवल प्रयत्न ही कर सकते हैं ।

न्यायोपात्तं हि वित्तमुभयलोकहितायेति ।

(धर्मबिंदु १/४)

— न्याय से उपार्जित धन ही इस लोक और परलोक के हित के लिए होता है ।

—प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

वर्ष ३६, अंक ८,
जून, १९९६

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

कीकर और बेर के जादुई पेड़
आधार : सर्वेक्षण २२

रहस्य दुर्लभ तंत्र के खोज का
विजयपाल..... २६

बेजोड़ हैं सिद्धियों के नृत्य
तरुण कुमार दाधीच ३२

बस तड़का लगाने की कमी थी !
डॉ. रजनीकांत तिवारी; डॉ. आशा तिवारी.... ३५

बड़कुल की जलेबियां
सुरेश सरल..... ३९

वह बचपन में कविताएं बेचा करती थी
प्रस्तुति : दुप्रशु..... ४२

वह चमत्कारी फकीर
पॉल ब्रंटन ४५

खंडहरों में बिखरी एक प्रेम कथा
डॉ. अनामिका प्रकाश..... ६३

मंडरा रही है बुद्ध और महावीर की आत्मा
महेश कुमार झा..... ६८

इच्छाधारी सर्पों का विवाहोत्सव
सुरेश नीरव..... ७७

एक व्यक्ति : एक समय : हर जगह हाजिर
सुरेंद्र श्रीवास्तव..... ८२

भूतों की फोटो खींची और फिल्म बनी
अमिताभ स..... ९०

खूनी नीलम के चमत्कार
बलराम दुबे ९३

किशोरों के कटे सिर कहां मिले
डॉ. गंगा प्रसाद ४९

इस औरत को क्यों जिंदा जला रहे हो ?
श्रीहरि..... ८६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

गोली किसे लगी ?
राजेश कुमार.....९८
भूतिया महल में मेरा एक दिन
अनंतराम गौड़.....१०८
पुराना मंदिर और पीली चील
डॉ. कैलाश नारद.....११४
किसने पकड़ा था मुझे
रुचि सिंह.....११९
आवाजें कहां से आ रही हैं
सुशीला.....१२९
नंदा देवी
प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'.....१३०
भारत लौटी : भारत से गयी कला
पी.के. आर्य.....१३४
जहां से कोई अमीर औरत जीवित नहीं लौटी
प्रस्तुति : ज.चं.....१४०
आत्मा का वजन ३० ग्राम है
विवेक शुक्ल.....१४५
प्रेतात्मा ने संत के जीवन को मोड़ा
श्याम सुंदर भट्ट.....१५३
पुत्र का पुनर्जन्म
रतनलाल जोशी.....१६०
समुद्रों के भयानक जल राक्षस
मुकुन्द दास माहेश्वरी.....१७२
वैज्ञानिक भी समझ रहे हैं प्यार को
प्रस्तुति : सीमा.....१८२

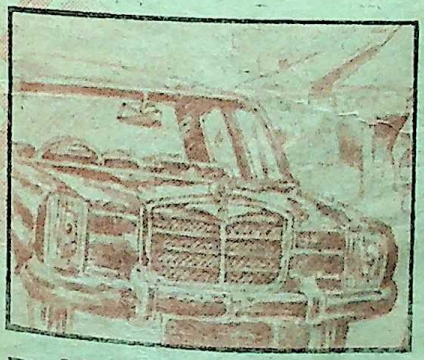

खून पीती रही एक खतरनाक कार
जोसेफ नेवादवा.....१०२
अंधकार, बर्फ और घाटी का बीहड़
कर्नल श्याम सिंह.....१२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन था जिसने हत्या का रहस्य सुलझाया ?
निधि जैन १८५

कहानियां एवं व्यंग्य

त्रिशंकु की व्यथा
डॉ. सुधा पांडे ५३

भंवर
निर्मला अग्रवाल १६७

हीरा
हरिदत्त भट्ट शैलेश १७५

कविताएं

कृष्णा अनुराधा ● उषा सक्सेना ३४
कृष्ण स्वरूप मिश्र ● शशि शर्मा १७४

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य—४, ज्ञान गंगा—५, प्रतिक्रियाएं—९, काल चिंतन—१४, आखिर कब तक—१८, प्रेरक प्रसंग—३०, प्रदेश—६०, वैद्य की सलाह—७४, बुद्धि विलास—१०१, यह महीना और आपका भविष्य—११२, इनके भी बयां जुदा-जुदा—११८, आइए चलें जंगल की ओर—१२४, तनाव से मुक्ति—१२६, व्यंग्य-तरंग—१३८, आस्था के आयाम—१४८, गोष्ठी—१५०, ज्योतिष समस्या और समाधान—१५८, विधि विधान—१६४ नयी कृतियां—१९०, सांस्कृतिक समाचार—१९४, क्लब समाचार—१९६, समस्या पूर्ति—१९८।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : [illegible]२७, फैक्स : ०११-३३२११८९
आ[illegible] (चित्र) : योगेश

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान : अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड-४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर-१३.५०, पौंड-७.५०)
अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६);
वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।
शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि. १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत पत्र

एक ज्वालामुखी—नाम हवाला में आपने लिखा है कि "शनि ग्रह पूरे भारत में वक्री है। सब पढ़ने-लिखनेवालों को गुरु ग्रह की परम आराधना करनी चाहिए कि वह वक्री न हो।" गुरु ग्रह तो वक्री हो ही गये हैं अन्यथा जिन साधु-संतों को, अपनी मेधा और प्रज्ञा से शासकों का मार्गदर्शन करना चाहिए था, दुष्प्रवृत्तियों और सत्तालोलुपता पर अंकुश लगाना चाहिए था, वे शासकों को आशीर्वाद दे रहे हैं, उनके साथ फोटो खिंचवाकर गर्व अनुभव कर रहे हैं। आश्रम के मुख्य स्थान पर उन फोटो का प्रदर्शन कर रहे हैं। साधु-संतों का आशीर्वाद राजनेताओं को सदैव उपलब्ध रहा है। उनके आशीर्वादों के बावजूद देश की दुर्दशा होती रही है। नारायणदत्त तिवारी और इंदिरा गांधी देवरहा बाबा से, जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी से, नरसिंह राव चंद्रास्वामी से, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सत्य साईं बाबा से आशीर्वाद लेते रहे हैं। जब गायत्री परिवार हरिद्वारवालों ने लालू यादव से अश्वमेध यज्ञ का उद्घाटन कराया तब तो हद हो गयी, गायत्री मंत्र का अर्थ है—हे परमात्मन् मुझमें श्रेष्ठ सद्बुद्धि धारण करो। गायत्री परिवारवालों की सद्बुद्धि में यह आना चाहिए था कि राजनेताओं से तो बेहतर संगीतकार, कलाकार, साहित्यकार, कवि, वैज्ञानिक, विचारक या समाजसेवी हैं। कम से कम सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक पटना के बिंदेश्वरी पाठक ने तो फिर भी समाज में एक स्वस्थ परंपरा कायम की है।

समाज में अंगुलिमाल और रत्नाकर डाकुओं की इतनी बाढ़ आ गयी है, इतने रूपों में, इतने क्षेत्रों में कि एक बुद्ध या एक ऋषि से सुधार होने की संभावना नहीं है। आपने तो थोड़ा परिहास में कहा है कि सभी पढ़ने-लिखनेवालों को गुरु ग्रह की परम आराधना करनी चाहिए, किंतु यही आत्यंतिक सत्य भी है। इसके बिना उपदेश में कोई बल नहीं रह जाता। अब तो समाज में बहुत-सी प्रबल चेतनाओं और प्रज्ञा-पुरुषों की आवश्यकता है, जिनके शब्दों के पीछे आत्मबल भी हो। कोई आशा नहीं दिखती कि संपादकीय से, कला से, काव्य से, कटाक्ष से अंगुलिमालों का हृदय परिवर्तन किया जा सके। जब तक अचेतन और अर्धचेतन में दमित कुटिल मनोवृत्तियों की निर्जरा नहीं हो जाती तब तक समाज में सत्यम् शिवम् की स्थापना नहीं हो सकती। फ्रायड के अनुसार अचेतन की मूढ़ आकांक्षाएं हमारे व्यवहार को संचालित करती हैं और जब तक अचेतन मन का शुद्धिकरण नहीं हो जाता तब तक अंधकारमय प्रवृत्तियां प्रबल पड़ती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश ! पढ़ने-लिखनेवाले आपकी सलाह को गंभीरतापूर्वक लेते । राजनेताओं, धर्मनेताओं ने तो बुरी तरह निराश किया है । अब तो बुद्धिजीवियों और संवेदनशील साहित्यकारों से ही आशा है कि वे समाज को अपनी प्रतिभा से मार्ग दिखाएंगे । इस देश में जे. कृष्णमूर्ति और ओशो, दो विचारवान् पुरुष थे जिनका विचार-दर्शन देश को ऊंचाइयों पर ले जा सकता था लेकिन शासकों ने धीरेन्द्र ब्रह्मचारी और चंद्रास्वामी आदि से अपनी स्वार्थ-साधना तो की, समाजोत्थान और वैचारिक क्रांति की जरा भी परवाह नहीं की । न्यायपालिका ने यद्यपि शासकों पर अंकुश लगा रखा है, फिर भी बुद्धिजीवी, समाजसेवी और साहित्यकार चूंकि जन-सामान्य के भाग होते हैं अतः वे लोक-मानस को शिक्षित करने का कार्य सुंदर ढंग से कर सकते हैं । वरना् बकौल एहतराम इसलाम—

सबने पढ़ रक्खा था, सच की जीत होती है मगर
था भरोसा किसको सच पर, सच को सच कहता तो कौन ?

आदमी तो खैर से, बस्ती में मिलते ही न थे,
देवता थे, सो थे पत्थर, सच को सच कहता तो कौन ?

नित रहा प्यासा का प्यासा, बांझ ही ठहरी सलीब,
कोई ईसा था, न शंकर, सच को सच कहता तो कौन ?

सहस्रों बुद्ध, सहस्रों ईसा, सहस्रों शंकर चाहिए समाज को—सत्यं शिवं सुंदरम् की स्थापना के लिए । यही गुरु की परम आराधना होगी ।

—स्वामी आनंद ध्रुव
सुदर्शन भवन, सूर्यकुंड
इलाहाबाद—२११००१

प्रोत्साहन पुरस्कार

कादम्बिनी का अंक पढ़ा । 'आखिर कब तक' (राजेन्द्र अवस्थी) में संकलित (लेख नेपाल और हिंदी) लेखक के विचार से मैं पूरी तरह सहमत हूं कि 'इस देश में वोट मांगने की भाषा भले ही हिंदी या क्षेत्रीय भाषाएं हों लेकिन चुनाव जीतते ही अंगरेजी यहां की राष्ट्रभाषा हो जाती है ।''

आजादी के बाद लगभग पचास वर्षों में न जाने कितनी कोशिश की गयी कि हमारी कोई राष्ट्रभाषा हो । एक राष्ट्रभाषा के रूप में हमने हिंदी की वकालत तो खूब की, लेकिन इस दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कोई कदम नहीं उठाया । इतना तो हम समझ ही चुके हैं कि किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय भावना के विकास और संचार के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना कितना आवश्यक है । यही वजह भी है कि जब स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करने की समस्या सामने आयी तब हिंदी को प्रचारित करने की दिशा में अहिंदीभाषी क्षेत्रों ने भी काफी सराहनीय प्रयास किया था ।

विदेशी भाषा सीखना तो अच्छी बात है । आप एक नहीं चार-चार विदेशी भाषा सीखें । पर यह क्या, कि एक विदेशी भाषा को तवज्जो देने की कोशिश में अपनी ही भाषा की तिलांजलि दे दी जाए । आज हिंदी पूरी तरह से तिरस्कृत है । अंगरेजों से हमें भले ही मुक्ति मिल गयी हो पर अंगरेजी के हम आज भी गुलाम हैं और रवैया यही रहा तो इसकी गुलामी से छुटकारे का आगे भी कोई उपाय नजर नहीं आता है ।

कहते हैं कि जब तक कमरे के अंदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीतल, मंद सुगंध पवन आ रही हो तब तक कमरे की खिड़की खुली रखने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन अगर हवा तूफानी रुख ले ले, तो कमरे की खिड़की बंद कर देने में ही बुद्धिमानी है। आज अंगरेजी ने तूफानी रुख धारण कर लिया है और हमारे देश में पूरी तरह अपनी जड़ जमा चुकी है। इसके कारण हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का कद दिन-प्रतिदिन बौना होता जा रहा है।

क्या इस स्थिति के लिए हम खुद जिम्मेदार नहीं हैं ? आज हम भारतीयों का एक बड़ा वर्ग अंगरेजी भाषा का इतना हिमायती हो चुका है कि उन्हें अपनी भाषा में काम करने में, अपनी भाषा बोलने में शर्म आती है। अंगरेजी बोलना यहां 'स्मार्ट' होने का पर्याय होता जा रहा है। स्कूल, कॉलेज, दफ़र, आरक्षण कार्यालय कहीं भी चले जाएं—हर जगह प्राथमिकता अंगरेजी बोलनेवालों को ही दी जाती है। हिंदी भाषा/क्षेत्रीय भाषा बोलना देहाती होने का पर्याय होता जा रहा है।

भारत की अनेक प्रतिष्ठित हिंदी पत्र-पत्रिका बंद होती जा रही हैं। पाठक वर्ग हिंदी की सामग्री पढ़ना नहीं चाहता। हिंदी के लिए दस पांच रुपये खर्च करना तौहीन लगता है लोगों को। यह अगर अंगरेजी संस्कृति का असर नहीं तो और क्या है ?

अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब किसी हिंदी पत्र-पत्रिका को देखने के लिए हमारी भावी पीढ़ी को म्यूजियम जाना पड़े और वहां रखी पत्रिका के नीचे लिखा होगा—ध्यान से देखो, तुम्हारे पूर्वज पढ़ा करते थे। इन हालात में अगर हमारे पड़ोसी देश चीन ने शुद्ध हिंदी के प्रचार-प्रसार का संकल्प किया है तो उनका यह कदम सर्वथा प्रशंसनीय है। लेकिन उनकी प्रशंसा कर देने मात्र से ही हमारा काम पूरा नहीं हो जाता, जरूरत है इससे प्रेरणा लेने की और गंभीरता से इस ओर ध्यान देने की।

—मीता मिश्रा
कमाडोट आवास के. ए. पी. कैंप,
रामवरमापूरम त्रिचूर (केरल)

साधुवाद

वर्तमान में हिंदी साहित्य अपने पतन के दौर से गुजर रहा है। फूहड़ व दोयम दरजे की साहित्य सामग्री प्रसिद्धि पाने लगी है। ऐसे समय में पाठकों को 'कादम्बिनी' के माध्यम से श्रेष्ठ साहित्य का सुलभ होना सराहनीय है। साथ ही स्तरीय लेख, कहानियां, व्यंग्य एवं ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर संपादक की बेबाक टिप्पणी पत्रिका को प्रतिष्ठित करती है। आशा है, सु-साहित्य की यह गंगा निर्बाध बहती रहेगी। साधुवाद !

—धर्मेन्द्र जोशी
जलोद संजर (म. प्र.)

गलत जानकारी

सुंदरलाल बहुगुणा के "धरती का पेट फाड़ डाला" (अप्रैल-९६) लेख में सुश्री लता मंगेशकर का जन्म गोवा के मंगेश गांव में बताया गया है, जो तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण है। दरअसल गोवा के मंगेश गांव में लताजी के पिताश्री श्री दीनानाथ जी बस गये थे और इसी वजह से उनका नाम 'मंगेश्कर' पड़ा। वैसे लताजी का मूल सरनेम 'गणे' है। श्री दीनानाथ महाराष्ट्र के 'थालनेर' कस्बे के जमींदार श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिदास रामदास गुजराथी की पुत्री 'नर्मदाबाई' से इंदौर में विवाह सूत्र में बंधे थे लेकिन नर्मदाबाई का निधन प्रसूति के वक्त हो गया था, उसके बाद नर्मदा बाई की ही छोटी बहन 'शुद्धमति' के साथ दूसरा विवाह भी इंदौर में संपन्न हुआ था । लताजी के वक्त श्रीमती शुद्धमति जिन्हें सब स्नेह से 'माई' कहते थे इंदौर आयी हुई थी और वहीं सन् १९२९ में लताजी का जन्म हुआ । इसलिए लताजी का जन्म स्थान इंदौर ही कहा जाएगा 'मंगेश' गांव नहीं ?

—अविनाश वावीकर
सेन्धवा (मध्य प्रदेश)

उर्दू बनाम हिंदी गजल

अप्रैल अंक में प्रकाशित आलेख "उर्दू गजल से बहुत पीछे है हिंदी गजल" पढ़ा । मैं भी इस संबंध में अपने विचार व्यक्त करना चाहता हूं । सर्वप्रथम तो यह कि जैसा सर्वविदित है गजल मूलरूप से फारसी उर्दू भाषा की विद्या है । इन भाषाओं के शब्दों की लोच ने गजल को लोकप्रिय बनाने में भरपूर योगदान दिया है । जैसे गजल में 'जहान' को आवश्यकतानुसार 'जहां में' बदल सकते हैं वैसे ही 'यहां' को 'यां' तथा 'बयान' को 'बयां' में इत्यादि । यह 'स्वतंत्रता' हिंदी भाषा में प्राप्त नहीं है । जिससे अनेक प्रकार की दुश्वारी होती है । यह कहना तर्कसंगत नहीं होगा कि हिंदी गजल के लिए केवल हिंदी शब्द ही लिए जाएं ।

प्रत्येक भाषा ने किसी न किसी अन्य भाषा के शब्दों को अपनाकर और ज्यादा निखार प्राप्त किया है । अगर अंगरेजी भाषा में 'लेटिन' शब्दों की बहुतायत है तो उर्दू में फारसी के

जहां तक हिंदी गजलकारों के बह लिहाज से गलत होने की बात है, इसका की लोकप्रियता से कोई लेना-देना नहीं है क्योंकि आम श्रोता या पाठक जब गजल या पढ़ता हैं तब वह बहर, रदीक, काफिये तुक पर नहीं शायर की कही बात पर ज्यादा तव्वजुह देता है । दुष्यंत कुमार की असमय मौत ने यद्यपि हिंदी गजल को कुछ झटका अवश्य दिया था परंतु यह कहना कि हिंदी गजल उर्दू से बहुत पीछे है सटीक नहीं होगा

—जितेंद्र सिंह
जी ओ वन सरित
ई ८/४५ त्रिलोचन
भोपाल-४६

इस लेख के संदर्भ में हमें इन पाठकों के भी मिले हैं—ज्ञानेन्द्र (मुंगेर), प्रकाश सूना (मुजफ्फरनगर), डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह (इलाहाबाद) ।

विचार कल्पवृक्ष हैं

कादम्बिनी का हर पृष्ठ अपने आप में है, इसे मेरे साथ अन्य भी महसूस करते खासकर 'काल चिंतन' का पृष्ठ,जो अपने में गागर में सागर की उक्ति सिद्ध करता है कालचिंतन पढ़ते ही मस्तिष्क हल्की-फुल्की बातों से ऊपर उठ आत्मचिंतन करने लग हो जाता है । हमारा जीवन और उसकी तरह-तरह के विचार, जिसके फलस्वरूप खुशी, कभी दुःख, कभी क्रोध, कभी का जन्म होता है । अपने विविध विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू में फारसी के
जलकारों के बह
बात है, इसका
ना-देना नहीं है
उक जब गजल
, रदीक, काफिये
ही बात पर ज्यादा
कुमार की असमय
को कुछ झटका
यह कहना कि हिंद
है सटीक नहीं होग
-जितेंद्र सिंह
ओ वन सरित
८/४५ त्रिलोचन
भोपाल-४६

इन पाठकों के भी
, प्रकाश सूना
द्र प्रताप सिंह

कल्पवृक्ष हैं
पृष्ठ अपने आप में
भी महसूस करते
का पृष्ठ, जो अपने
क्ति सिद्ध करता है
स्तिष्क हल्की-फु
मचिंतन करने पर
जीवन और
जिसके फलस्व
भी क्रोध, कभी
पने विविध विच

अस्त आज प्रत्येक मानव एक अलग जिंदगी जीने पर बेबस है ।

कहीं पढ़ा था 'तपती दोपहरी में गरमी से व्याकुल पथिक एक घने वृक्ष की छांव में विश्राम करने बैठ गया । ठंडी हवा के झोंकों से जब थके-हारे मन को तृप्ति मिली, तो स्वभावतः ही इच्छा जाग्रत हुई, 'अगर अभी सुस्वादु भोजन मिल जाए और पीने को ठंडा पानी, तो कितना आनंद आएगा ।' वह वृक्ष कल्पवृक्ष था । तत्काल ही उस पथिक के सामने दोनों मनोवांछित चीजें आ गयीं ।

पर वह तो देखकर डर गया । उसके मन में भय व्याप्त हो गया, 'जाने किस अशुभ शक्ति का प्रभाव है यहां पर, कहीं प्राणों पर न आ बने ।' अविलंब ही उसकी यह इच्छा भी पूरी हुई—वह मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

"वस्तुतः विचारों में बड़ी शक्ति है । हमारे विचार ही हमारे निर्माण अथवा विनाश का कारण बनते हैं । विचार वह कल्पवृक्ष है, जो हमारे संसार की सृष्टि करता है—यह तो स्वयं हम पर है कि, हम अपने लिए स्वर्ग सुख का निर्माण करें अथवा नरक की असह्य यातना का ।"

—माला वर्मा
हुकुम चंद जूट मिल
जगतदलनगर, २४ परगना (उत्तर) प. बंगाल

कादम्बिनी की पाठिका सुनीता रावत ने अपनी बीमारी के संबंध में संपादक के नाम पत्र लिखा है । जिसमें पता नहीं लिखा है । भविष्य में पत्र-व्यवहार करते समय अपना पूरा नाम व पता अवश्य लिखें ।—सं.

कद लम्बा कीजिये !!!

छोटा कद अब तक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद किसी कारण हो, अब 10 से 40 वर्ष तक की आयु के बच्चे, स्त्री, पुरुष हमारी दवा P.H.C. द्वारा 2 से 10 सै. मी. तक कद लम्बा करें। एक माह की दवा का मूल्य 140 रुपये डाक खर्च 30 रुपये अलग। जल्द लाभ के लिए P.H. Gold एक माह का ईलाज 450/- डा खर्च अलग। लम्बा कद मिलिट्री, पुलिस, नेवी, विवाह-शादी, प्राईवेट, सरकारी नौकरियों में पसन्द किया जाता है। किसी तरह के व्यायाम की जरुरत नहीं। कोई SIDE EFFECT नहीं। गारंटी :- पूरे कोर्स के बाद परिवर्तन न हो तो आधा मूल्य वापस।

ताकत बढ़ायें शान से जियें

बचपन की गलतियों के कारण या उम्र की अधिकता से पेशाब का बार-बार तथा पीला आना, रात को कपड़े गन्दे होना, विवाहित जीवन में कम समय लगना, अच्छा खाते हुए भी सेहत न बनना, आँखों के आगे अन्धेरा छाना, किसी काम को दिल न करना, भूख न लगना, नींद न आना, दिल ज्यादा धड़कना, मरदाना कमजोरी आयुर्वेदिक इलाज जादू की तरह असर करने वाली आयुर्वेदिक बूटियों, भस्मों, कुश्तों आदि का प्रयोग होता है.

केवल पुरुषों के लिए तिला की मालिश से कुछ दिनों में छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन की शिकायत दूर हो जाती है तथा पुरुष विवाहित जीवन बिताने योग्य हो जाता है. खाने व मालिश के इलाज का खर्च 190/-, दूगनी ताकत 350/-, तीन गुणी ताकत 500/-, शाही ईलाज 1700/-

विद्यार्थियों के लिये वरदान

दवा M.P. विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन लगाती है. दिमागी परेशानी दूर कर, परीक्षा के डर को समाप्त करती है. एक बार पढ़ी बात जिन्दगी भर याद रहेगी. दिमागी काम करने वाले विद्यार्थी, प्रोफेसर, कलर्क, वकील, जजों तक लाखों लोगों ने लाभ उठाया है 30 दिन का ईलाज 150/- रुपये।

नाक के आपरेशन से डरें पुराना जुकाम बिगड़ कर दमा बन जाता है, नाक का बंद रहना, मस्सा या हड्डी का बढ़ जाना, लगातार छीकें, दिमाग से रेशा गिरना, गला खराब होना। 30 दिन का ईलाज 180/- रु।

मोटापा बढा हुआ पेट, बेडोल मोटे कुल्हे, चलने फिरने में दिक्कत का ईलाज 210/- दुबले, पतले कमजोर को मोटे तगडे बनाने का ईलाज 300/- केवल एक माह में 8-9 Kg. वजन बढायें। आज ही पत्र लिखकर घर बैठे दवा मंगवायें। इतवार छुट्टी, कोई ब्रांच नहीं।

मेहरा क्लीनिक Code No. 450 J.K.
गैस एजन्सी के सामने, इस्लामाबाद, अमृतसर-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

कुरसी की लड़ाई किसी एक देश या व्यक्ति तक सीमित नहीं है। हर कमजोर अवसर पर वह उभरती है। पहले दो बार हम इसे लिख चुके हैं। फिर प्रस्तुत है पाठकों के मस्तिष्क को ताजा करने के लिए— कुरसी।

— अक्सर देखा गया है, कुरसी जाते ही आदमी दया का पात्र बन जाता है और अवकाश प्राप्त करते ही वह टूट जाता है, बहुत चिंतन के बाद इसका सूत्र नहीं मिल रहा !

●

— चूंकि स्थिति सामान्य नहीं है, इसलिए सूत्र आसानी से नहीं मिल सकता।

— कुरसी का अर्थ सत्ता है।

— सत्ता क्रूर और निर्मम होती है। वह अपने आस-पास के घेरों को काटती चलती है। यदि वह उन्हें न काटे तो वे सत्ता को काट देंगे।

— चाणक्य ने नंदवंश का विनाश सहज ही नहीं कर दिया था। वह भय से आक्रांत था।

— इतिहास की समूची काल-सूची स्वर्णमंडित कुरसियों की लोलुप आकांक्षा से भरी पड़ी है।

— अपने भाई कौरवों की लाशों पर पांडवों ने विजय-पर्व मनाया था !

— इतिहास के स्वर्ण-युग के नियंता सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने अग्रज रामगुप्त के प्राण लेकर उसकी नववधू ध्रूवदेवी का अपहरण किया था।

— सम्राट अशोक ने अपने भाइयों को मौत के घाट उतारा था।

— शिशुनाग ने उज्जैन के प्रद्योत वंश को धराशायी किया।

— बुद्ध और महावीर के युग में अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबसार को बंदी बनाकर स्वयं अपना राजतिलक किया था।

— अनिरुद्ध, मुंड, नागदासक पितृहंता थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— मुगलवंश की संपूर्ण इतिहास-यात्रा कुरसियों को खाली करने और खाली कुरसियों पर नयी सल्तनत के झंडे गाड़ने का क्रम रही है— शाहजहां और औरंगजेब ने अपने भाइयों को एक-एक कर मौत के घाट उतारा है और क्रूर औरंगजेब ने अपने कलाप्रेमी पिता शाहजहां को बंदी बनाकर एक-एक बूंद पानी के लिए तरसाया है ।

— मर्यादा पुरुषोत्तम और भारतीय सामाजिक चेतना के प्रतीक राम के समय भी संभवतः यह परंपरा अज्ञात नहीं थी । विवश और भस्मासुर की तरह अरक्षित समझने वाले सम्राट दशरथ ने स्वयं राम को सलाह दी थी—वन जाने की अपेक्षा वे सत्ता छीनकर दशरथ को कैद कर लें—बाल्मीकि इसके प्रमाण हैं :

उवाच राजा सम्प्रेक्ष्य वनवासाय राघवम्
अहं राघव कैकेय्या वरदानेन मोहितः
अयोध्यायां त्वमेवाद्य भव राजा निगृह्य माम् ।

(वा. रामायण—२, ३४, २५,२६)

— यह दूसरी बात है कि राम ने यह घृणित कार्य नहीं स्वीकारा और उन्होंने वन जाकर जीवन की करुणा को भाग्य की स्वर-लहरियों में ढालकर संगीत का सुख लिया और वे विश्व-जन-चेतना के प्रतीक बने !

— लेकिन राम बनने की सामर्थ्य कितनों में है ?

●

— कुरसी की आत्मा भय से आक्रांत है ।

— इसीलिए सेवक स्वामी बन जाते हैं और द्वार-रक्षक प्रतिहार-शासक बनते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— कुरसी का जादू स्वर्ण-प्रासादों के खंडहरों में भूतों के नर्तन का इतिहास रहा है।

— ऐसे विक्रमादित्य कभी, किसी युग में पैदा होते हैं जो इतिहास को अपनी मुट्ठी में पकड़कर बंद कर लेते हैं, जो अपने आसपास के बैतालों को वश में कर रुद्र के समान उन्हें अपने सहायक और अनुशासित गण बनाकर अंगुलियों पर नचाते हैं।

— लेकिन कब तक— यह भी तो एक प्रश्न है ? आखिर काल के हाथों वह मुट्ठी भी स्थिर नहीं रही और इतिहास को फिर एहसास करने का अवसर उसने दिया।

— आज के संदर्भ में भी कुरसी राजसत्ता का प्रतीक है : वह कुरसी चाहे शासकीय कार्यालय की हो अथवा मजदूरों का नेतृत्व करनेवाले 'बड़े मजूदर' की हो।

— कुरसी के साथ भय छिपा है, उसके भीतर स्प्रिंग के तार नहीं, भय की ऊर्जा भरी होती है।

— एक-दूसरे से बदला लेने और प्रतिहिंसा तथा प्रतिरोध की भावना इतिहास से विरासत में मिली है।

— राज-प्रासादों और राज-सत्ता के अंत के बावजूद भटकती हुई ये सारी आत्माएं निरंतर क्रियाशील हैं।

●

— आज का आदमी एक कुरसी पर बैठते ही अपने को सबसे काट लेता है।

— इसलिए उसके छूटते ही वह टूटा और बेजान हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— जिंदगी-भर वह एक सूत्र में जिया है : अपना झंडा उठाइए और दूसरों को काटिए।

दूसरों को काटने में अपने को भी चोट पहुंचती है।

— सामर्थ्यवान व्यक्ति वह है जो बड़ी कुरसी पर बैठकर भी अपने सह-कर्मियों को बड़ा कहता है।

— वह हीन भावना से ग्रसित नहीं होता। धूप से चमकती लहरों की तरह उसका मन प्रकाशवान होता है।

— वह जीवन की सार्थकता को स्वीकारता हुआ मृत्यु के द्वार का अभिनंदन करने के लिए प्रतिक्षण प्रतीक्षारत है।

— उस वर्तमान को वह अंतरंग रूप से पहचानता है जो हर पल भूत बनता जाता है।

— उसके मन में न भय है और न हीन भावना ! ऐसा व्यक्ति अवकाश के क्षणों को दोनों हाथों में समेटकर गंगाजल की तरह पीता है।

— वह न कभी दया का पात्र बनता और न ही टूटता !

●

— निष्कर्ष : जो व्यक्ति अपनी कुरसी को राज-सत्ता की तरह स्वीकार कर अन्य कुरसियों के प्रति हीनता की दृष्टि रखता है, वह अपने हाथों टूटन, घुटन और दर्द का इतिहास लिख रहा है।

— अपने लिखे को मेटने की सामर्थ्य आप पैदा भी कर लें तो आपसे अधिक सामर्थ्यवान यह अधिकार आपसे छीन लेगा।

— कुरसी की लड़ाई सदियों से चली आयी है, चलती रहेगी। यह लड़ाई धर्म-संप्रदाय, दल और व्यक्ति इन सबसे अधिक प्रबल है।

●

— देखें कब तक चलता है कुरसी-युद्ध— कितनी बार, कितने समय, कब तक !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति की भूमिका

भारत का संविधान कई जगह अधूरा है और बहुत कुछ राष्ट्रपति के विवेक पर छोड़ दिया गया है। राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने जितनी निष्पक्षता से अपने निर्णय लिये हैं, उनका नाम ऐसी हारी स्थिति में हमेशा सम्मान के साथ लिया जाएगा। उन्होंने मुझसे एक बातचीत के दौरान कहा था, "अवस्थीजी मैं तो सारे निर्णय वही करूंगा जो किताब में लिखे हैं।" किताब एक अजीब चीज है, जो कानून की परीक्षा देने के लिए जाते हैं उन्हें कानून की पुस्तकें देखकर उत्तर लिखने का अधिकार है। सवाल तो यह है कि जिसने पढ़ा ही नहीं होगा वह भारी-भरकम कानून की पुस्तकें निर्धारित समय में कैसे देखेगा ? डॉ. शर्मा कानून के विशेषज्ञ हैं और उन्होंने लॉ की सर्वोच्च डिग्री हासिल की है। मुझे उनकी तारीफ इसलिए करनी चाहिए कि कानून की किताबों के पन्ने उन्हें भली-भांति याद हैं। जो हो—

जीना तेरी गली में।
मरना तेरी गली में।

और यह गली है प्रजातंत्र की। जहां का प्रथम नागरिक राष्ट्रपति भले ही हो, अधिकार तो प्रधानमंत्री के पास हैं। मैं फिर दोहराना चाहूंगा— देख लीजिए अपना चेहरा।

चलिए नये सांसदों से मिलें

अंगरेजी सत्ता जाने के बाद जवाहरलाल नेहरू ने प्रजातंत्र का सपना देखा था। वह सपना तो साकार हुआ लेकिन धीरे-धीरे राजनीतिक माहौल इस स्तर तक आ जाएगा, शायद किसी ने नहीं सोचा था। पिछले अंक में हमने गत एक दशक का नक्शा प्रस्तुत कर दिया था। परोक्ष रूप से जहां हम पहुंचे थे, सब कुछ वही हुआ।

प्रजातंत्र के नाटक का दूसरा दृश्य और भी दिलचस्प और मजेदार है। विस्तार से लिखने की जरूरत नहीं है, सारा खेल कुरसी का है। कुरसी सारे सिद्धांतों और सदाचारों को निगल रही है। एक बना नहीं कि पुच्छल तारे की तरह टूटा। दूसरा बना तो कब तक रहेगा और किन संगतियों और विसंगतियों में पलेगा— खुदा हाफिज। जवाहरलाल नेहरू के साथ आरंभ हुए समय से लेकर छियालीस वर्षों में जहां हमें और मजबूत ऊंचाइयों में पहुंचना था, वहां हम पैरों से खेली जानेवाली गेंद की तरह लुढ़क गये हैं। ऐसी हालत में हमारे द्वारा ही चुने गये सांसदों को कहां किसकी फिक्र। पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंक में हमने शीर्षक दिया था— लोकसभा के आइने में अपना चेहरा देखें— तब देख लीजिए अपना चेहरा । अभी हिसाब लगाने का समय नहीं आया वरना हम गणित की वह पहेली भी सुलझा लेते कि हमारे चेहरे में कितने दाग हैं । यानी कौन कहां तक पढ़ा-लिखा है । किसने आजादी की लड़ाई लड़ी, किसने समाज सेवा की, कितने हैं जिन्होंने राजनीति के पान के पत्तों के बीड़े बनाकर अपनी दुकान चलायी और कमाल यह कि तीन 'वरेण्य' महिला सांसद एकदम निरक्षर हैं । वे शपथ ग्रहण का परचा नहीं पढ़ पायीं । पढ़ा दूसरों ने, लेकिन वाचाल तो वही हुईं । बुरा न मानिए हमारे देश में ही नहीं दुनियाभर में सबसे अधिक वाचाल औरतें होती हैं । मुझे प्रसन्नता एक बात की है इनमें से किसी ने अंगूठा नहीं लगाया । कम-से-कम हस्ताक्षर तो कर दिये । प्रजातंत्र महान है । उस पर हमारी आस्था है । इसलिए उसका जयगान करना हमारा कर्त्तव्य है । राजीव ने नारा दिया था, 'मेरा भारत महान ।'

एक मजे की बात मैं जरूर लिखना चाहूंगा कि इस चुनाव में कई दिग्गज पराजित हो गये । फूलन देवी ने आत्मसमर्पण किया था— अर्जुन सिंह के सामने । फूलन देवी तो जीत गयी लेकिन हमारे 'महान' नेता अर्जुन सिंह बुरी तरह हार गये । इसको संयोग कहें या विवशता । जो भी हो इससे मानसिक भोजन तो मिलेगा ही ।

ज्योतिषी कहां रहे ?

हर धार्मिक समारोह में ज्योतिषियों की पूछ अवश्य होती है । यहां तक कि मृत्यु के बाद भी ज्योतिषियों से पूछा जाता है कि मारकेश योग यदि लगा था तो आपने बताया क्यों नहीं ? जो भी हो मैं अजय भाम्बी का नाम पहले लिखना चाहूंगा । उन्होंने नवम्बर, ९५ में ही लिखा था कि भ्रष्टाचार के आरोपों से कई राष्ट्रीय नेताओं की छवि धूमिल होगी । कांग्रेस पार्टी आपसी वैमनस्य के कारण चौराहे पर खड़ी मिलेगी । जयललिता अधोगति में पहुंचेंगीं । आंध्र में वीभत्स दृश्य देखने को मिलेगा । केंद्र में जो भी सरकार बनेगी, कुछ ही महीनों की मेहमान होगी ।

यह सुयोग या दुर्योग कहिए कि एक कापालिक महाकाल भैरवानंद सरस्वती से मेरी अचानक भेंट हुई थी । उन्होंने लिखकर दिया था कि अगले प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी होंगे । लेकिन इन्हीं कापालिक मर्मज्ञ ने यह भी कहा था कि आखिर कितने दिन ? आजकल कापालिक महोदय दिल्ली में विराजमान हैं । वे दूसरे प्रधानमंत्री का नाम तो नहीं बता सके लेकिन आखिर कितने दिन कहकर बहुत कुछ स्पष्ट कर दिया । कानपुर के ज्योतिषी श्री तिवारी ने तो मुझसे फोन पर कहा था कि यदि आप पर किसी और ज्योतिषी का प्रभाव नहीं है तो मेरी बात भी छाप दीजिए । अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ हमने उनकी बात नहीं छापी । वरना उनका नुकसान हो जाता । इस तरह एक नहीं अनेक ज्योतिषियों से मेरा पाला पड़ा । संसद के सच्चे चेहरे को सामने रखनेवाले अंगुलियों पर गिनने लायक हैं ।

आदमी से भला है कुत्ता

सैलिसबरी ब्रिटेन की घटना है । लेबेडोर नस्ल के दो कुत्तों राकी और आर्ची ने अपनी मालकिन की अनुपस्थिति में घर में अफरातफरी मचा दी । उन्होंने बुक शेल्फ से दर्जनों किताबें खींचकर नीचे गिरा दीं और पूरा घर अस्त-व्यस्त कर दिया । फिर टेलीफोन को टेबल से खींचकर दोनों कुत्ते उसे मालकिन केरोल गालिपन के बेडरूम में उसके बिस्तर पर ले गये और ब्रिटेन में आपात सेवा के लिए निर्धारित टेलिफोन नंबर ९९९ पर फोन कर दिया ।

आपात सेवा में ड्यूटी पर तैनात महिलाओं ने फोन पर गुर्राहट और हांफने की आवाजें सुनीं और उन्हें संदेह हुआ कि घर में किसी की मौत हो गयी है । इस संदेह के कारण पुलिस ने चिकित्सा सचिव के पद पर कार्यरत सुश्री गाल्पिन के कार्यालय में उनसे संपर्क किया । सुश्री गाल्पिन ने पुलिस को बताया कि घर में उनके कुत्तों के अलावा कोई भी नहीं है ।

इस बीच एक गश्ती पुलिसकर्मी आदेश पाकर सुश्री गाल्पिन के घर पहुंचा और उसने लैटर बॉक्स के अंदर झांककर देखा तो पाया कि वहां सभी चीजें बेतरतीब बिखरी थीं । उस लगा घर में लूटपाट हुई है । खबर पाकर गृहस्वामिनी जब घर पहुंची तो उसने सभी चीजें सलामत पायीं । यद्यपि लगभग सब चीजें अपने स्थान से इधर-उधर थीं ।

कुत्तों ने सब कुछ इधर-उधर करने के बाद शायद अपराध बोध के कारण आपात सेवा को फोन कर दिया । सुश्री गाल्पिन ने बताया कि उनके घर फोन में त्वरित डॉयल सुविधा नहीं है, इसलिए निश्चय ही दोनों कुत्तों ने स्वयं ही ९९९ फोन नंबर डायल किया होगा ।

अंत में...

लड़कियां आखिर बेबस ही रहेंगी

मैं एक लंबे अंतराल के बाद हिम के आंचल प्रदेश में अपने गांव में गया, जो कि प्राकृतिक सौंदर्य में अपनी मिसाल खुद है, जहां लोग हर साल हजारों-लाखों रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्च कर देश-विदेश से आते हैं, जहां के लोग अपने भोलेपन, निष्कपटता के लिए जाने जाते हैं। पश्चिम की भयावह आंधी अब अंचलों पर अपना राज करने जा रही है। शिष्टाचार और शर्मोहया के नाम पर सिर्फ बड़े-बूढ़ों का एकाधिकार रह गया है।

इस बार मां ने कहा कि वह (मेरी) बहन को कॉलेज नहीं भेजेगी। उन्होंने पूरी बात बतायी तो दुःख तो हुआ ही गुस्सा भी आया। खैर, लड़की का भाई होना आज अभिशाप से कम नहीं, समझ-बूझ से काम लेते हुए लड़के के माता-पिता से बात की। लेकिन वह पुत्रमोह में अपना विवेक खो चुके हैं। जिसे उन्होंने लाख मन्नतें मांगने के बाद पाया। उस पर तो आंख उठाकर भी नहीं देख सकते। इसी कारण कई बार हत्या तक की घिनौनी हरकतें सामने आ रही हैं। उल्टा लड़कीवालों को दोषी ठहराया जाता है कि तुम अपनी बेटी को समझाओ। आखिर लड़की का कसूर तो बताओ ?

इस दौरान मैंने आठवीं कक्षा की बच्ची को पढ़ाया। एक दिन अचानक उसकी किताब से एक पत्र मिला। पत्र उसी के लिए था, लेकिन किसका, वह खुद नहीं जानती थी। उसने बहुत ही सनसनीखेज बात बतायी कि उसे लगभग सभी लड़के 'ब' शब्द से चिढ़ाते हैं। जाहिर है किसी लड़के के नाम का प्रथम अक्षर है लेकिन पूरा नाम कोई नहीं बताता। यहां तक कि गांव के लड़के भी नहीं। लड़कों ने अध्यापकों से मार सह ली लेकिन जुबान नहीं खोली। ऐसे ही पुलिस की धमकी भी बंदर घुड़की मात्र रह गयी है। पुलिस भी इन मामलों में नाकाम हो चुकी है।

जिसे आज प्यार कहा जा रहा है वह इस पवित्र शब्द का सरासर अपमान है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अमर प्यार हमारी सभ्यता में भी हुए हैं लेकिन वह कभी एकतरफा नहीं थे। उसमें सौंदर्य का आकर्षण नहीं आत्मिक प्यार था और कहां आज तो 'यूज एंड थ्रो' जैसी सभ्यता पनप चुकी है। इस बदअसूली ने कितने घर तबाह किये बताना मुश्किल ही नहीं असंभव भी है। फिर भी कुछ बातों की चर्चा करना बहुत आवश्यक है। (उदाहरण नाम देकर लिखा गया है इसलिए हम नाम नहीं छाप रहे)।

लड़की की शादी १०वीं कक्षा में पहुंचने तक ही या इससे भी पहले कर दी जाती है। लड़कीवाले मनमाना दहेज देने के लिए तैयार हैं लेकिन अपनी इज्जत को सलामत रखने के लिए लड़की को १८ साल की होने तक इंतजार नहीं कर सकते। पत्र को खतम करने से पहले फिर वही प्रश्न— 'आखिर कब तक ?'

—संजीव परमार
(करोलबाग, नयी दिल्ली द्वारा)

— राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीकर और बेर के जादुई पेड़

• आधार : सर्वेक्षण

मनुष्य ने जंतु जगत से अपने को धीरे-धीरे अलग करते हुए विकास की सीढ़ियां चढ़ी हैं। क्रूर हिंसक जंतुओं से ऊपर उठा है। इस विकास में अपनी शारीरिक बनावट को विकसित करते हुए चार पांव वाले जानवर से आदम युग तक पहुंचा। इस युग में भी वह अपने बुद्धि कौशल से अलग होते-होते जंगली समाज से उठकर सभ्य समाज तक आ पहुंचा।

जब आदमी जंगली था

इस सभ्य समाज को बनाये रखने के लिए उसने कितनी ही विधियों का आविष्कार किया। बर्बर समाज से मुक्ति पाने के लिए कानून बनाये। कानून का पालन करने के लिए राज्य का निर्माण किया। कबीला संस्कृति उसकी प्राथमिक आवश्यकता थी। उससे भी ऊपर उठकर राज्य में विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग किया। सभ्यता के इस विकास में राजतंत्र को पार करता हुआ अभी लोकतंत्र की छत के नीचे वह अपने को सुरक्षित पाता है। लोकतंत्र की पहली शर्त है कि वह जनता द्वारा जनता के लिए शासन हो। यानी क्रूर और बर्बर समाज को सभ्य करने के लिए कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका की व्यवस्था हो। इन संस्थाओं को जनता ने अपने अधिकार हस्तांतरित किये। यह हस्तांतरण भी अपनी सुरक्षा के लिए ही किया। व्यक्ति की सुरक्षा राज्य में, वह भी लोकतांत्रिक समाज में ही उचित लगी। इन संस्थाओं को इस प्रकार से बनाया कि वह एक-दूसरे पर अंकुश रख सके। कोई भी संस्था निरंकुश न हो। इसकी भूमिका को सुगम बनाने के लिए फिर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्त्व दिया। अभिव्यक्ति को मूल अधिकार में रखा। इस मूलाधिकार का प्रयोग स्वतंत्र प्रेस और अन्य संचार साधनों के पास है।

अब तक हुए संस्थाओं के विकास में मुख्य विचार यही रहा कि व्यक्ति की व्यक्तिगत आजादी पर प्रहार न हो। चाहे वह शारीरिक प्रहार हो या आर्थिक, आज हम यदि पीछे मुड़कर देखें तो बहुत से रोचक प्रसंग इतिहास में हमें मिलेंगे, जहां अपराध को रोकने के लिए समाज ने विभिन्न नियम बनाये और उन नियमों का आविष्कार भी उस समय के साधनों के आधार पर हुआ। विज्ञान की एक कहावत भी है—'आवश्यकता आविष्कार की जननी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस काल में अशिक्षा का बोलबाला था, उस काल में अपराधियों के अंगूठे के निशान को पहले मिट्टी की कच्ची पट्टियों में ले लेते थे, फिर उन्हें भट्टी में पकाकर लंबी अवधि के लिए सुरक्षित रख लेते थे। इस प्रकार से यह छापे अपराध करनेवाले की पुष्टि करने में सहायक होते थे। चीन और बेबिलॉन में यह परंपरा थी।

है।' इसी परिप्रेक्ष्य में विधि का शासन भी बना। अपराध विज्ञान अपराधों को रोकने के लिए तैयार हुआ। वह भी समय था जब व्यक्ति के पास नियमों और कानूनों को लिपिबद्ध करने के लिए भाषा न थी। भाषा के व्यवधान को पार करता हुआ वह उस स्थान पर भी अटका जहां उनको सुरक्षित रखने के लिए कागज की आवश्यकता थी। विश्व के विभिन्न देशों में इनके रोचक विवरण मिलते हैं। सभ्यताओं का विकास एक स्थान पर भी नहीं हुआ। कल्पनाशील व्यक्तियों ने उन्हें जगह-जगह व्यावहारिक रूप दिया।

अंगुलियों की छाप

तकनीकी के इस विकास में चीन काफी आगे रहा। धीरे-धीरे इनके अनुसंधानों को विश्व के अन्य देशों ने परिष्कृत रूप में दुनिया के सामने लाया। विधि का विज्ञान, कानून का पालन करवाना और न्यायालयों की प्रक्रिया यह सब प्राचीन चीन में हुई खोजें हैं। पश्चिमी दुनिया ने इसे आधुनिक शास्त्रों के रूप में विकसित किया। अंगुलियों का छाप-विज्ञान के विशेषज्ञ हर्षशेल, फॉल्ड, गाल्टन, हेनरी, व्यूस्टिक आदि को कार्य की प्रेरणा चीन से मिली। यद्यपि हस्तछाप प्राचीन रोम में प्रचलित था।

आधुनिक अपराध विज्ञान में अंगूठे व हथेली के छापे का जो प्रयोग अपराध को सत्यापित करने के लिए किया जाता है, वह भी चीन में प्राचीन काल से प्रयोग में था। विशेषज्ञ यहां तक भी मानते हैं कि ब्रिटेन के न्यायालयों में जिस गोल मुहर का प्रयोग करते हैं, वह चीन की ही परंपरा है।

जिस काल में अशिक्षा का बोलबाला था, उस काल में अपराधियों के अंगूठे के निशान को पहले मिट्टी की कच्ची पट्टियों में ले लेते थे, फिर उन्हें भट्टी में पकाकर लंबी अवधि के लिए सुरक्षित रख लेते थे। इस प्रकार से यह छापे अपराध करनेवाले की पुष्टि करने में सहायक होते थे। चीन और बेबिलॉन में यह परंपरा थी।

जरमन विशेषज्ञ डॉ. राबर्ट हेंडल ने अंगुलियों के छापे के इतिहास पर लिखा है कि यह पहचान के लिए सबसे पहले टेंग शासन काल (सन् ६१८-९०६) में प्रयोग में आया। यह चीन की कला और काव्य का स्वर्ण काल था। बाद में चीन ने 'लूप्स और व्हर्ल्स' प्रणाली का विकास किया। डॉक्टर हेंडल ने इस बात को बार-बार स्मरण करवाया कि गाल्टन जो आधुनिक 'फिंगर प्रिंट्स' के जनक हैं, उन्होंने अपनी वर्गीकरण विधि को चीन से ही लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेर और कीकर के पेड़ के नीचे बैठकर न्याय करना एक परंपरा थी। चीन के लोगों का विश्वास था कि इन पेड़ों में जादुई करिश्मा है।

आज 'फिंगर प्रिंट्स' के स्थान पर हस्ताक्षर का प्रयोग उसी का नमूना है। यहां तक कि स्याही व पैड भी चीन की ही देन है।

जहर कब पहचाना

चीन ने औषधि विज्ञान में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया। 'मटिरिया मेडिका' का प्रकाशन ३००० ई. पू. में हुआ था। उस काल में पुस्तक में दी गयी सूचनाएं बच्छ का पौधा, आर्सेनिक और अफीम को जहर बताया गया। हशीश का प्रयोग नशे के रूप में प्राचीन चीन में किया जाता था। लेकिन आदी होने के लिए प्रयोग में नहीं लाते थे। छोटी कोठरी में गरम पत्थर पर हशीश रखकर उसका धुवां रोगी को सूंघाते थे। इससे रोगी बेहोश हो जाता था। 'मटिरिया मेडिका' में उल्लेख है कि टोड के विष का प्रयोग हृदय रोगों के लिए किया जाता था। इसी प्रकार २६०० ई. पू. में चीन में 'औषधि-विधि' प्रणाली का प्रचलन शुरू हो गया था। सम्राट हवांग टी के शासन काल में संपूर्ण औषधि साहित्य को समेटा गया। इस पुस्तक को नि-चिंग ने लिखा। पुस्तक में उल्लेख है कि रक्त चक्र में निरंतर बहता है। इसी बात का समर्थन सन् १६२८ में विलियम हार्वे ने किया। इन्हें रक्त-संचार के खोज का श्रेय दिया जाता है।

अपराधी कैसे पकड़ा जाता ?

नि चुंग ने अपराधी व्यक्ति को ढूंढ़ने की विधि भी बतायी। उस समय अपराधी को बैठाकर उसके सामने औषधि का जानकार व्यक्ति अपना हाथ उसके सीने पर रखता था और उसके हृदय की धड़कनों को सुनता था। यह विश्वास किया जाता था कि जो व्यक्ति झूठ बोलता है उसकी दिल की धड़कन बढ़ जाती है। इसी विधि को आधार मानकर बाद में पौलिग्राफ का आविष्कार हुआ। यह मशीन झूठ को पकड़ती है। अमरीकन डॉ. लेनार्ड केलर पौलिग्राफ के आविष्कारक हैं। यह शरीर की विभिन्न संवेदनाओं को रेकॉर्ड करती है जैसे नाड़ी, सांसें, रक्तचाप और त्वचा की संवेदनशीलता।

पेड़ के नीचे जादू

हत्या करने पर अपराधी को पकड़ने के लिए एक और विधि का प्रयोग होता था। माना जाता था कि हत्या करने के लिए अपराधी कील का प्रयोग सिर पर हथौड़ी मारकर करते थे। तब सिर के घाव और उस कील के निशान को मिलाकर हत्या की गुत्थी सुलझायी जाती थी। हत्या के संभावित कारणों की छानबीन की जाती थी। वास्तविक न्यायिक प्रक्रिया प्राचीन चीन में खुले स्थान पर शुरू होती थी। सबसे उपयुक्त स्थान नाशपाती के पेड़ के नीचे होता था। शाही के ड्यूक नाशपाती के पेड़ के नीचे ही फैसले सुनाता था। बेर और कीकर के पेड़ के नीचे बैठकर न्याय करना एक परंपरा थी। चीन के लोगों का विश्वास था कि इन पेड़ों में जादुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिश्मा है ।

जब न्याय करना कठिन होता था, तब न्यायाधीश गरम पत्थर के ऊपर अपराधी को चलने के लिए कहता था । यदि उसे कुछ नुकसान नहीं होता था तो वह अपराधी नहीं माना जाता था । या फिर खूंखार बिल्ली के पास कमरे में छोड़ दिया जाता था । न्याय प्रणाली की प्राचीन पुस्तक 'चाउ-लि' में वर्णन है कि अपराधी की पांच अभिव्यक्तियों पर उसे दंड दिया जाता था । पहली, उसकी वाणी का परीक्षण किया जाता था, दूसरी चेहरे के हाव-भाव का परीक्षण, तीसरा : स्वास प्रक्रिया की गति, इसमें दवा देने वाले आदमी का हाथ अपराधी के दिल पर रखा जाता था । चौथी, अपराधी के कानों को ध्यान पूर्वक देखा जाता था ।इसमें न्यायाधीश की बातों को सुनने पर कैसी प्रतिक्रिया अपराधी की होती है । पांचवीं : अपराधी की आंखों का परीक्षण किया जाता था ।

कानून की पुस्तकें कैसे बनीं

कानून की अधिकांश पुस्तकों से पता चलता है कि अधिकारी राजा की ओर से नियुक्त किये जाते थे । न्यायाधीश राजा का प्रतिनिधि होता था । आज भी न्याय की प्रक्रिया में इन बातों पर गौर किया जाता है ।

चीन में रेकॉर्ड आसानी से रखे जाते थे । हन शासन काल (२०६ ई. पू. से सन् २२०) में न्यायालयों की सुनवाई लकड़ी की तख्तियों पर लिखकर सुरक्षित रखी जाती थी ।

सन् ४०० के आस-पास विधि-विज्ञान का सरलीकरण किया गया ।

इस प्रकार आज विश्व जिस सभ्यता की ऊंचाइयों को छू रहा है, उसमें पूर्व की देन अधिक है । विकास एक निरंतर प्रक्रिया है । उसमें आप किस रूप में भागीदार हो सकते हैं । यह समय ही बता सकता है ।

बिना दूध और चीनी की चाय

दूध, चीनी और चाय-पत्ती के मिश्रण से बनी चाय का स्वाद ही कुछ दूसरा है, पर बिना दूध और चीनी की बनी चाय ? आजकल बिना दूध और चीनी की चाय इंगलैंड में अधिक लोकप्रिय हो रही है । इंगलैंड की एक प्रमुख चाय उत्पादक कंपनी इस तरह की चाय का प्रचार कर रही है जिसमें दूध और चीनी का मिश्रण न हो । अमरीका के 'कॉफीशाप' में इस तरह की चाय का प्रचार करने के साथ-साथ कंपनी फ्रांस तथा जापान की ओर भी प्रवेश कर रही है । कंपनी के प्रबंध निदेशक का कहना है कि जब आप चीनी तथा दूध मिलाते हैं तो दार्जिलिंग तथा अन्य उत्कृष्ट चायपत्ती के गुण समाप्त हो जाते हैं । इसलिए बिना दूध और चीनी की चाय का 'फ्लेवर' सोने में सुहागा— गुण भी और जायका भी ।

—सु वा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य दुर्लभ तंत्र के खोज का

● विजयपाल

गरमियों के मौसम का वह एक बेहद गरम दिन था। दोपहर की चिलचिलाती धूप आग बरसा रही थी। चारों ओर दूर-दूर तक कहीं कोई व्यक्ति नजर नहीं आ रहा था। जून की उस कड़कती धूप में भला कौन अकारण बाहर निकलने की हिम्मत करता। लेकिन इस तेज झुलसा देनेवाली धूप में, एक नौजवान बेतहाशा साइकिल दौड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था। संभवतः वह कहीं पहुंचने की बहुत जल्दी में था।

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक छोटा-सा गांव। मध्यम दरजे की पर्वत श्रृंखलाओं के बीच खड्ड में तीन तरफ पानी से घिरा वह बहुत ही सुंदर गांव था। पानी की जलधार से चलनेवाली चक्की पहले-पहल मैंने यहीं देखी थी। खड्ड के पानी को मोड़कर छोटी नहर बनाकर पानी चक्की तक पहुंचाया गया था। नहर के दोनों ओर केले के वृक्षों की कतार देखते ही बनती थी। शहरों की भीड़भाड़ और प्रदूषण से निकलकर एक बार जो यहां आ गया, निस्संदेह, वह यहां से जाने का नाम नहीं लेगा।

तंत्र रहस्य की खोज

दुर्लभ तंत्र रहस्य की खोज-शोध के सिलसिले में, एक समय था जब मैं निरंतर यात्राओं पर रहा और इस तरह, मैंने भारत के अनेक प्रांतों का भ्रमण किया। दुर्गम से दुर्गम स्थान पर खतरों से खेलता जोखिम उठाते हुए पहुंचा। अपने भ्रमणकाल के दौरान घटित एक घटना हिमाचल प्रदेश की है, जिसे मैं सुनाने जा रहा हूं और जिसका अनायास ही मैं प्रत्यक्षदर्शी बन गया।

मेरे एक मित्र ने किसी अच्छे 'चेले' (तांत्रिक) का पता कर मुझे बुला लिया था। उस रोज हम प्रातः ही उससे मिलने घर से निकल पड़े थे। कुछ बस द्वारा व शेष आठ-नौ कि.मी. का रास्ता हमने पैदल चलकर ही तय किया था। पैदल चलते हुए रास्ते में कई छोटे-छोटे गांवों से होकर गुजरे थे। प्रकृति के शांत-स्वच्छ वातावरण में बसे छोटे-छोटे गांवों को देखकर मन को बहुत अच्छा लगा था।

जून का महीना हो और गरमी न हो यह असंभव था। समुद्रतल से आठ-नौ सौ फुट की ऊंचाईवाला यह क्षेत्र दिन में काफी गरम हो जाता है, यह जानकर आश्चर्य हुआ था। सूरज जब सिर पर हो तो उस वक्त खड्ड का वातावरण पत्थरों व रेत की वजह से और भी तपने लगता है। लेकिन वहां लू आदि का प्रकोप नहीं था। वहां से लौटने में हमें देर हो गयी। बहुत रात गये रात्रि के दस बजे हम वहां से लौटे थे। उस चेले से हमारी खूब विस्तारपूर्वक बातचीत हुई थी। अतः उसकी कही अनेक बातें अब भी हमारे मन-मस्तिष्क में घुमड़ रही थी। यद्यपि हम थक गये थे, मगर विचारों की उधेड़बुन के कारण नींद हमारी आंखों से कोसों दूर थी। तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बजाय बहुत देर तक हम दिन में उस से हुई बातचीत पर विचार-विमर्श करते रहे और बातों ही बातों में कब सवेरा हो गया, ही न चला था।

मायावी विद्या

प्रातः पता चला कि पानी की चक्कीवाला भी कुछ मायावी विद्या से संबंध रखता है। मेरे मित्र की उसमें रुचि नहीं थी, लेकिन कहा था—'एक बार मिल लेने में क्या हर्ज और उससे मिलने की खातिर मैं एक और के लिए रुक गया था। किंतु, रात्रि में जब उससे मिलने गये तो उससे अधिक बात हो सकी थी। वहां से हम शीघ्र ही लौट थे।

अगले रोज मेरा जाना बिलकुल निश्चित। मगर मित्र की माताजी के अत्यधिक पर मैंने अपना जाना दूसरे दिन तक के स्थगित कर दिया था। कई बार ऐसे प्रकृति के संकेत होते हैं, अतः उसे ही समझ कर उसके अनुकूल चलना ही सिद्ध होता है और सचमुच ही, उस घटना घटी उसकी छाप आज भी मेरे में अमिट है। उस घटना के रहस्य विशेष तौर से प्रभावित किया था।

दोपहर के भोजन के बाद घर के सभी लोग फरमा रहे थे। मगर मेरा मन बार-बार तक घूम आने को प्रेरित कर रहा था। मैं यंत्रवत रूप से उठा और यह की जरा खड्ड तक टहलने जा रहा हूं, मैं की प्रतीक्षा किए बिना चल दिया था। -सी मानसिकता लिए, चलते-चलते पानी के निकट था। थोड़ी देर खड़े-खड़े बहते पानी को निहारता रहा, लेकिन मन में कुछ बेचैनी व भारीपन था। पास ही वहां दो औरतें कपड़े धो रही थीं। अतः मैं वहां रुका नहीं। पानी गहरा नहीं था इसलिए उसके बीच घुसकर बहते पानी में चलते हुए उसको पार कर गया था। दूसरे किनारे पहुंचकर क्षणभर को रुककर पीछे मुड़कर देखा और सामने पहाड़ से लिपटी सर्पाकार पगडंडी पर आगे बढ़ने लगा था। ऊपर पहाड़ के शिखर पर पहुंच, एक वृक्ष की छाया तले बैठ वहां से, मैं संपूर्ण खड्ड के दृश्य को निहारने लगा। लेकिन, मन अब भी बेचैन था। मैं उठा और पुनः वहां से चल दिया था।

अदृश्य मंदिर

चलते-चलते दूर एक ऊंची-सी जगह पर एकांत में मुझे एक मंदिर नजर आया था। मगर अगले ही पल सामने से मंदिर अदृश्य था। हठात् मेरे कदम वहीं रुक गये। मैंने अपनी आंखों को मला फिर देखा, तो मंदिर ठीक वहीं मौजूद था। निश्चित ही ऐसा तेज धूप की वजह से हुआ था। अब तक आसपास मुझे कोई भी मानवी आकृति दिखायी नहीं दी थी। मंदिर को अपना लक्ष्य निर्धारित कर, मेरे कदम कुछ तेज हो गये थे। चारों तरफ सन्नाटा था। गांव कुछ हटकर एक ओर रह गया था। खेतों को पार करता हुआ, अचानक मैं कच्ची सड़क पर आ पहुंचा था। सहसा, तभी खड़-खड़ की अजीब-सी ध्वनि सुन मैं चौंक पड़ा। वह ध्वनि दूर से पास आती हुई प्रतीत हुई। एक नौजवान साइकिल दौड़ाता हुआ (चूंकि वहां कुछ ढलान थी) अतः वह खड़खड़ाहट करता हुआ तेजी से गुजर गया। मैं उस नौजवान को दूर तक जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी । फिर अगले मोड़ पर जाकर वह आंखों के सामने से ओझल हो गया था । मैंने मुड़कर पुनः मंदिर की ओर कदम बढ़ाया ही था कि, तभी अकस्मात एक भयावह चीख हवा में तैर गयी । साथ ही साथ एक जोरदार धमाका भी हुआ था । उस वक्त मैं बिलकुल भी न समझ सका था कि वह धमाके की आवाज कैसी थी ? यह सोचकर कि उस साइकिल वाले नौजवान की दुर्घटना हुई है, मैं उसकी मदद के खयाल से उस ओर लपका था ।

वहां साइकिल समेत वह नौजवान बेहोश पड़ा था । जल्दी से सड़क पर से उठाकर मैंने उसे एक छायादार वृक्ष के नीचे लिटा दिया था । मैंने गौर किया कि उसे कहीं भी खरोंच तक नहीं आयी थी । साइकिल उठाते हुए मैंने जब साइकिल का निरीक्षण किया कि शायद वह टयूब फटने का धमाका था । लेकिन आश्चर्य । टायर-टयूब दोनों सही-सलामत थे । फिर खयाल आया कि संभवतः उसे मिरगी का दौरा पड़ा हो । लेकिन वह चीखा क्यूं था ? और वह धमाका कैसा था ? उस वक्त इतना सब सोचने का वक्त नहीं था । अतः शीघ्रता से मैं गांव की ओर दौड़ पड़ा था ।

हमारे सारे प्रयत्नों के बावजूद पूरे बाद वह युवक होश में आया था । उस साढ़े चार बजे थे और यह घटना दोपहर के करीब घटी थी । होश आने पर जो उसने बताया, सहसा उस पर विश्वास हुआ क्योंकि उसकी वह दास्तान बेहद थी ।

अजनबी बुढ़िया

उसने बता

घर लौटते हुए रास्ते में एक अजनबी

ने हाथ के संकेत से मुझे रुकने का था । मैंने साइकिल रोक दी थी । थक गयी हूं तुम जरा मुझे आगे तक उसने नम्रतापूर्वक कहा था । मैंने सह बुढ़िया को साइकिल पर बिठा लिया उसके हाथों में मैली-सी एक पोटली कुछ बंधा था । जब मैं मंदिर के नीचे था तो 'इन्हें' (उसका इशारा मेरी ओ वहां देखा था । 'लेकिन, उस वक्त साइकिल के कैरियर पर मैंने किसी

इससे पहले कि मैं कुछ पूछता अचानक पता नहीं कैसे उस बुढ़िया की पोटली खुल गयी थी । गठरी खुलते ही चारों ओर हड्डियों की वर्षा-सी हो गयी । यह सब देखकर मेरे होशो-हवास ही उड़ गये । मैंने भयभीत दृष्टि से उस बुढ़िया को गौर से देखा तो उसका चेहरा मांस रहित खप्पर में परिवर्तित हो चुका था और उसके उस भयानक विकृत चेहरे को देखकर डर के मारे मेरी चीख निकल गयी । तभी जोर का धमाका हुआ था । उसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा था—मैंने बीच में ही उससे कहा था।

'नहीं, उस वक्त भी वह बुढ़िया साइकिल के कैरियर पर बैठी हुई थी और अगला मोड़ आते ही साइकिल रुकवाकर वह उतर गयी थी'

'यहां तो आसपास कोई घर नहीं है' आप वहां कहां उतर गयीं ?' मैंने आश्चर्यचकित होकर उस बुढ़िया से पूछा था। लेकिन, मेरी बात अनसुनी कर अगले ही पल जेब से मुट्ठीभर सिक्के निकाल हथेली मेरे सामने खोल दी थी।

'इनमें से जितने चाहो उठा लो।'

'नहीं, मैं भला आपसे पैसे क्यूं लूंगा, मैंने आपका ऐसा क्या काम किया है, नहीं मैं पैसे नहीं लूंगा।' लेकिन मेरे इस प्रकार जवाब देने पर बुढ़िया ने कड़ककर कहा था—'उठाओ।' उसका चेहरा सख्त व जर्द था। उसकी आंखों में कठोर भाव देख मैं सहम गया था। तब उसकी हथेली पर फैले पच्चीस, पचास व रुपये के सिक्कों के साथ मुड़े-तुड़े नोटों में से बड़े बेबसवश मैंने पच्चीस पैसे का सिक्का उठा लिया था और जैसे ही मैंने पच्चीस पैसे का सिक्का उठाया, उसी क्षण बड़े ही निराशाजनक व कठोर स्वर से उस बुढ़िया ने कहा था—'मुझे अफसोस है बेटा तुम्हारी जिंदगी ज्यादा दिन की नहीं है।'

इससे पहले कि मैं कुछ पूछता अचानक नहीं कैसे उस बुढ़िया की पोटली खुल गयी। गठरी खुलते ही चारों ओर हड्डियों की ढेरी हो गयी। यह सब देखकर मेरे होश ही उड़ गये। मैंने भयभीत दृष्टि से बुढ़िया को गौर से देखा तो उसका चेहरा क्रोधित खप्पर में परिवर्तित हो चुका था और उस भयानक विकृत चेहरे को देखकर डर के मारे मेरी चीख निकल गयी। तभी जोर का धमाका हुआ था। उसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नहीं।

उस नौजवान की यह कथा सुन मैं आश्चर्यचकित था। लेकिन जब वह युवक मेरे बराबर से गुजरा था, मैंने किसी को भी साइकिल के कैरियर पर बैठे नहीं देखा था और न ही घटनास्थल पर मैंने कहीं कोई हड्डी देखी थी। हां, धमाके की आवाज बड़ी स्पष्ट सुनी थी। पर बुढ़िया के होने का कोई भी चिह्न मुझे वहां नहीं मिला था। आखिर, वो कैसा रहस्य था ? क्या, वह कोई भटकती हुई प्रेत आत्मा थी ? लेकिन, इसका जवाब कौन देता। यह शोध का विषय है।

दूसरे दिन प्रातः मैं अपने मित्र के साथ पुनः उस घटनास्थल का निरीक्षण करने गया था। लेकिन, वहां कोई भी सुराग नहीं मिल पाया था। सिवा इस बात के कि देवी-मंदिर की हद उस मोड़ तक ही थी। उस मोड़ के आगे (जहां दुर्घटना घटी थी) का क्षेत्र किसी ग्राम देवता के अधीन था।

वहां से लौटने के पूर्व हम एक बार फिर उस नौजवान से मिलने गये थे। वह ज्वरग्रस्त था और उसके निस्तेज चेहरे पर अजीब-सी मुर्दानी छायी हुई थी। वह बहुत भयभीत लग रहा था। तीन-चार माह उपरांत मेरे मित्र द्वारा मुझे सूचना मिली थी कि लगातार ज्वर से ग्रस्त रहने की हालत में उसे जिला अस्पताल में भरती होना पड़ा था। वहीं एक दिन उसकी हालत बहुत बिगड़ गयी। नाक और मुंह से ढेर सारा खून बहा और वह चल बसा था।

—वार्ड नं. १, कृष्णानगर, पत्रालय व
जिला—हमीरपुर हिमाचल प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरक प्रसंग

वेदांत की शिक्षा क्या है ? प्रथमतः यह शिक्षा देता है कि सत्य-दर्शन के लिए हमें अपने से भी बाहर जाने की जरूरत नहीं । सभी अतीत और सभी अनागत इस वर्तमान में निहित है । कभी किसी ने अतीत को नहीं देखा । क्या तुममें से किसी ने है ? जब यह सोचते हो कि तुम केवल वर्तमान में ही अतीत की कल्पना करते हो भविष्य को देखने के लिए तुम्हें उसे वर्तमान में उतारना होगा, जो वर्तमान यथार्थ सत्य है—शेष सब कल्पना है । वर्तमान ही सब कुछ है । केवल वही 'एक' है—एक—मेवाद्वितीयम् । जो कुछ है, सब इसी में है । अनंत काल का एक क्षण दूसरे प्रत्येक क्षण की ही भांति अपने में पूर्ण और सबको समाहित कर लेनेवाला है । कुछ है, था और होगा, सब इसी वर्तमान में है । इससे परे किसी कल्पना में कोई प्रश्न हो तो वह विफल मनोरथ होगा ।

क्या इस पृथ्वी से भिन्न का चित्रण कोई धर्म कर सकता है ? यह सब कला है, केवल इस कला का ज्ञान हमें धीरे-धीरे होता है । पंचेंद्रियों के सहारे इस सृष्टि को निरखते हैं और उसे रंग-रूप-शब्द आदि से युक्त स्थूल हो पाते हैं । मान लो, विशुद्ध चेतना का मुझमें स्फुरण हो जाए तो सब कुछ बदल जाएगा । मान लो कि मेरी इंद्रियां सूक्ष्मतर हो जाएं तो तुम सब बदले नजर आओगे । मैं ही बदल जाऊं तो तुम भी बदल जाओगे । यदि मैं इंद्रियों की सीमा पार कर लूं तो तुम सब आत्मरूप तथा ईश्वररूप दिखोगे । जगत का दृश्यरूप सत्य नहीं है ।

('वेदांत'—स्वामी विवेकानंद)

मैं हमेशा से यह महसूस करता रहा हूं कि भारतवर्ष में एक राष्ट्रभाषा का होना आवश्यक है । जो इस बात को नहीं मानते हैं, उन्हें एक बार विदेशों की यात्रा करनी चाहिए । पिछले वर्ष जब मैं वियंता के अपने यूरोपियन मित्र के यहां अन्य कई भारतीयों के साथ एक भोज में सम्मिलित हुआ, तो वहां हम आपस में अंगरेजी में बातचीत करने लगे । यूरोपियन मित्र को बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा कि हम लोग क्यों अंगरेजी में बातचीत कर रहे हैं ? इस प्रश्न को सुनकर हम लोगों का सिर लज्जा से झुक गया ।

दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश के कुछ हिस्सों में हिंदुस्तानी के प्रचार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भ्रम फैला हुआ है। उदाहरण के लिए मद्रास है। वहां के स्कूलों में हिंदी को पाठ्य विषय बनाने का लोग विरोध करते हैं। उनकी धारणा है कि हिंदी की पढ़ाई से मातृभाषा या प्रांतीय भाषा भ्रष्ट हो जाएगी। प्रांतीय भाषाओं को मिटाकर उसके स्थान पर हिंदी का आधिपत्य होगा। यह बिलकुल भ्रमपूर्ण कल्पना है। प्रांतों में प्रांतीय भाषाएं प्रथम स्थान प्राप्त करेंगी। हिंदी को तो दूसरा स्थान ही प्राप्त होगा। अतः मद्रास के लोगों को राष्ट्रभाषा का सच्चा उद्देश्य समझ लेना चाहिए और हिंदी विरोध से हाथ खींच लेना चाहिए।

(सुभाषचंद्र बोस)

मेरी आकांक्षा का लक्ष्य स्वतंत्रता से ज्यादा ऊंचा है। भारत की मुक्ति के द्वारा मैं पश्चिम के भाषण शोषण से दुनिया के कई निर्बल देशों का उद्धार करना चाहता हूं। भारत के अपनी सच्ची स्थिति को प्राप्त करने का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि हर एक देश वैसा ही कर सकेगा और करेगा।

मैं अपने दिल की गहराई में यह महसूस करता हूं कि दुनिया रक्तपात से बिलकुल ऊब गयी है और इस असह्य स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोज रही है। मैं विश्वास करता हूं तथा उस विश्वास में सुख और गर्व अनुभव करता हूं कि शायद मुक्ति के प्यासे जगत को यह रास्ता दिखाने का श्रेय भारत की प्राचीन भूमि को ही मिलेगा।

(महात्मा गांधी)

मैं चाहता हूं कि मालिक और मजदूर का भेद मिट जाए। इसका मतलब यह नहीं कि हम मालिक की अक्ल का उपयोग नहीं करना चाहते। जो मालिक होगा, वह मजदूर भी होगा और जो मजदूर होगा, वह मालिक भी। कुछ तो मालिक-प्रधान मजदूर रहेंगे, जो हाथ का काम करते हुए भी दिमाग के काम को प्रधानता देंगे और कुछ मजदूर-प्रधान मालिक होंगे, जो दिमाग का काम करते हुए हाथ के काम को प्रधानता देंगे। बुद्धि-प्रधान शरीर-श्रम करनेवाले और श्रम प्रधान बुद्धि का काम करनेवाले, ऐसी व्यवस्था समाज में होनी चाहिए। अगर भगवान यह नहीं चाहता, तो कुछ को तो वह हाथ देता और कुछ को बुद्धि ही। राहु और केतु के समान सबको अपूर्ण बनाता। पर उसने सबको परिपूर्ण बनाया है, इसलिए कि सब परिपूर्ण जीवन बिता सकें।

(आचार्य विनोबा भावे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे देश के प्रत्येक अंचल में नृत्य और संगीत की समृद्ध परंपरा रही है । धूमर, चकरी, गरबा, डांडिया, सपेरा, तेरह ताली, कालबेलिया आदि नृत्य अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं एवं अनूठेपन के कारण मन मोह लेते हैं । इसी श्रृंखला में सिद्धी नृत्य एक ऐसा नृत्य है जो अत्यंत आकर्षक होने के साथ-साथ बेहद अनूठा है । रंग-बिरंगा भड़कीला परिधान पहने, पूरे शरीर व चेहरे पर आकर्षक चित्रकारी किये, कमर पर 'लपेटी' और उस पर पक्षियों के रंग-बिरंगे पंखों का घेरा बांधे, गले में कौड़ियों

बेजोड़ हैं सिद्धियों के नृत्य

● तरुण कुमार

की माला धारण किये सिद्धी नर्तक जब नगाड़ों की थाप पर 'हाउ-हाउ' की ध्वनि के साथ नृत्य करते हैं, तब ऐसा जान पड़ता है मानो ये कलाकार अफरीका के हब्शी हों अथवा अफरीका के कलाकार भारत में 'अफरीकी-महोत्सव' में भाग ले रहे हों ।

यह अफरीकी गुलाम

वस्तुतः सिद्धी अफरीकी मूल के ही हैं । सिद्धियों के संबंध में अलग-अलग मत प्रचलित हैं । पुष्ट मान्यताओं के अनुसार जब विदेशी व्यापारी भारत आये थे, तब उन्होंने अफरीकी गुलाम खरीद लिये थे । सिद्धियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि बंगाल के एक मुसलिम शासक ने लगभग दस हजार गुलाम खरीदे । ये अफरीकी बंगाल में गुलाम बनकर

रहे । जब बंगाल का मुसलिम शासक [illegible] छोड़कर गया, तब ये सिद्धी लोग देश के [illegible] में चले गये । कालांतर में जब महमूद [illegible] भारत पर आक्रमण करने आया, तब उ[illegible] सिद्धियों को अपने यहां नगाड़े बजाने के [illegible] रखा । महमूद गजनवी के भय से कुछ [illegible] भाग गये और उन्होंने गुजरात के जंगलों [illegible] निर्वासित जीवन बिताया । भागे हुए सि[illegible] गुजरात में स्थायी रूप से बस गये वे इन्[illegible] नगाड़ा बजानेवालों के वंशज माने जाते [illegible]

यह सत्य है कि सिद्धी भारत में गुल[illegible] बनकर आये । इनमें से कुछ ने जंगलों [illegible] निर्वासित जीवन बिताया और कुछ ने [illegible] नामक रियासत पर शासन भी किया । [illegible] ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर एक [illegible] कमांडर ने जाफराबाद के शासक मु[illegible] जलंधर को पराजित किया एवं स्वतंत्र [illegible] शासन किया ।

भारत में सिद्धी मुख्य रूप से गु[illegible] तथा शिरकान बीहड़ों में पाये जाते हैं [illegible] सिद्धियों के वंशज केरल, आंध्र प्रदे[illegible] कर्नाटक, महाराष्ट्र के जंगलों में भी [illegible] सिद्धियों का अपना समाज है । इनमें [illegible] पंचायत होती है जिसे वे 'जमात' [illegible] सिद्धी लोग जमात के आधीन रहकर [illegible] परंपरागत रीति-रिवाजों का पालन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक परिवर्तन एवं धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सिद्धी समुदाय के लोग तीन फिरकों में बंट गये। सिद्धियों का एक समुदाय जो समाज में रहता है वो धर्म के अनुसार चलता है। दूसरा समुदाय जिसे 'काफिर' के नाम से जाना जाता है क्योंकि ये ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखते, परंतु इस समुदाय के लोग रब्बे को सिद्धी कमांडर की संतान मानते हैं, जिसने जाफराबाद पर शासन किया था। गुजरात में रहनेवाला 'जाकूर' सिद्धी समुदाय गुजराती रीति-रिवाजों के अनुसार रहते हैं। कुछ सिद्धी ऐसे भी हैं जो अफरीका में बोले जानेवाली भाषा ही बोलते हैं, ये सिद्धी 'सवाहली' कहलाते हैं।

चित्ताकर्षक लोकगीत

सिद्धी समुदाय में लड़के-लड़कियों के विवाह माता-पिता की इच्छानुसार होते हैं। अधिकतर विवाह लड़के-लड़कियों के वयस्क होने पर होते हैं, परंतु इनमें बाल-विवाह का प्रचलन भी है, दहेज-प्रथा के ये विरोधी हैं, लेकिन वर पक्ष को जो भी आवश्यक एवं क्षमता के अनुसार वस्तुएं भेंट स्वरूप दी जाती हैं उसे ये सहर्ष स्वीकार करते हैं। विवाह में कुछ वस्तुओं की सूचना इन्हें अपने जमात के मुखिया को देनी पड़ती है। इनमें विवाह मुस्लिम मान्यताओं के अनुसार होते हैं, क्योंकि ये इस्लामिक कैलेंडर के आधार पर विवाह की तिथि तय करते हैं।

मनोरंजन के लिए लोक गीत एवं लोकनृत्य सिद्धियों में चित्ताकर्षक एवं अनूठे होते हैं। सिद्धी लोग 'धमाल' व 'गोमा' नृत्य विशेष अवसरों पर ही करते हैं। 'धमाल नृत्य' केवल 'नागरशाह पीर' के उर्स के अवसर पर ही किया जाता है। खुशी के अवसर पर 'सिदधी गोमा' नृत्य का अपना विशेष महत्त्व है। इनके नृत्यों में भाव, मुद्रा, गीतों के बोल, पद संचालन, वाद्य यंत्रों का प्रयोग दर्शकों को बरबस आकर्षित करता है, अफरीकी आदिवासी जंगली जातियों की तरह गहरे काले रंग का चमकता इनका सुगठित शरीर, सिर पर ताज के समान काले घुंघराले बाल, बालों पर मोर पंख या विभिन्न पक्षियों के पंख लगाकर जब ये नृत्य करते हैं, तब श्रोतागण मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं। परंपरागत लोक गीतों की धुन पर नृत्य करना सिद्धियों की अपनी ही विशेषता है।

भारत महोत्सव, अपना उत्सव, शिल्पग्राम, उदयपुर आदि कई समारोहों में ये अपनी कला से प्रभावित कर चुके हैं। पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर द्वारा आयोजित 'मरु से सागर तक' समारोह में जब सिद्धियों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किये, तब दर्शक भावधारा में बह गये, सिद्धियों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि ये नृत्य करते समय जब अपने सिर पर नारियल फोड़ते हैं, तब दर्शक दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने अपने कई कार्यक्रमों में सिद्धियों को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया, जो सराहनीय है। सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े सिद्धियों को समुचित प्रोत्साहन और संरक्षण मिले तो ये अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम कर सकते हैं।

—६-स्टेशन रोड,
मावली जंक्शन-३१३२०३
उदयपुर (राज.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

मैं गाती मन के मधुर गीत
बन, वन-कोकिला अनुरागिनी ।

कब कोमल कलिका जाग उठी
मधुरिम समीर के आंचल में ?
कब राग-परागमयी गगरी
छलकी, उन्मीलित शतदल में ?

मैं रंजित नभ को नाप रही,
बन, भ्रमित पक्षिणी एकाकिनी...

जीवन सरिता नीरव तट पर
निःशब्द व्यथा उर अंक लिये ।
दिग्भ्रांत रही शापित बनकर,
प्रिय-रेख का अकणिम रंग लिये ।

मैं गाती गिरिधर नवल गीत
बन चिर मीरा वैरागिनी...

सुधि नूपुर रनके केकी पग,
घन फेरे देख गगन-आंगन ।
टोली बचपन के मीतों की,
झूली अमराई के कानन ।

मैं नंदन-वन में झूल रही,
बन नव किशोरी मधु सावनी...

● कृष्णा अनुराधा

C/o Dr. M. K. Khatri
118, New Lands Road
Lancaster Lai 4JE

उल्फत

अश्क मेरे बहें,
सजल उनके नयन ।
दर्द मेरा बढ़ा,
जवां उनकी गजल ।

ना कहीं आग है,
ना तो चिंगारी है,
तपन है, जलन है,
और धुआं उठता है ।

देखिए !!
किस खूबी से,
मेरी जिंदगी का,
शहर जलता है । ● उषा सक्सेना

54 Hill Road
Mitcham CR 4 2HQ
London.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार्जिलिंग की चाय

बस तड़का लगाने की कमी थी !

● डॉ. रजनी कांत तिवारी एवं डॉ.आशा तिवारी

चाय ! स्वाद के अनुसार चाय में चीनी, दूध और अन्य अवयवों की मात्रा बदलती रहती है । पंजाबी कड़क चाय में ज्यादा दूध, ज्यादा चीनी और ज्यादा पत्ती । दूसरी ओर अंगरेजी मिजाज वाले बिना चीनी या दूध (या बहुत-थोड़ी मात्रा में) की चाय पसंद करते हैं । ट्रक ड्राइवरों की चाय तो मील के हिसाब से होती है । पाइया-दी या अध-पाइया-दी चाय के एक गिलास में पावभर दूध हो या आधा पाव । गुजराती चाय में अगणित मसाले जैसे लौंग, इलायची, काली मिर्च, दालचीनी आदि पड़ती है ।

एक बार ऐसी ही चाय नेहरूजी को गुजरात के मुख्यमंत्री ने पिलायी और पूछा कैसी लगी । पंडितजी का उत्तर था 'चाय तो बहुत बढ़िया बनी बस तड़का लगाने की कमी थी' ।

उत्तर भारत में सरदी के मौसम में तुलसी, अदरख, सोंठ इत्यादि डालकर चाय बनती है । महाराष्ट्र में 'सिंगल, डबल, आर्डिनरी तथा पेशल (स्पेशल) चहा' का प्रावधान है । चाय मलाई मारकर हो तो और भी अच्छा । दक्षिण भारत में चाय फेंटकर लंबाई से नागकर कटोरी के ऊपर गिलास उलटकर परोसी जाती है । सावधानी न बरतें तो सारी 'चाह' फैल जाए । वहां एक बटा दो, दो बटा तीन वाली चाय का गणित तो सभी जानते हैं ।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खड़े चम्मच की चाय का प्रचलन है । गुजरात में एक किस्सा है कि छै कंजूस एक रेस्तरा में गये, आर्डर दिया, "एक प्याला चाय लाओ, छै तश्तरी लाओ, छै गिलास पानी लाओ, आज का अखबार दो और बाहर खड़ी साइकिलें देखते रहना । कश्मीर में बादाम डालकर नमकीन कहवा या हमेशा खौलती हुई गरम-गरम समोवरवाली चाय । हरिद्वार की जड़ी-बूटीवाली चाय, नींबू की चाय, बर्फ डालकर ठंडी चाय !

इसी प्रकार चाय की पत्ती की भी अनेक किस्में हैं और उनके बड़े-बड़े व्यापारिक दावे भी । असम की, दार्जिलिग की, देहरादून की और कांगड़ा की । पर असली चाय पीने के शौकीनों को तो हमेशा दार्जिलिंग की चाय की ही तलब रहती है । आखिर क्या है दार्जिलिंग की चाय में ?

दार्जिलिंग की चाय

दार्जिलिंग उत्तरी बंगाल का एक जनपद है जिसमें मुख्यतः पूर्वी क्षेत्र सम्मिलित हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय आज के तनावपूर्ण जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन चुकी है । अमीर हो या गरीब, सरदी हो या गरमी, सुबह हो या शाम, लोगों को चाय की आवश्यकता होती है । इसकी विशिष्ट संस्कृति ने निश्चित रूप से वर्तमान युग में एक नयी हैसियत पैदा कर दी है । सिल्वर पॉट हों या चायना के टी सेट, मिट्टी के कुल्हड़ हों या कागज/प्लास्टिक के प्याले, चाय अपने विभिन्न स्वादों के साथ लोगों की आदतों तथा नशे का बहाना बन चुकी है ।

भारतवर्ष के अन्य पर्वतीय स्थलों की भांति दार्जिलिंग को भी अंगरेजों ने ही विकसित किया । परंतु यहां ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ थोड़ी देर से पहुंचे । मालदा जनपद के तत्कालीन व्यापार विभाग के रेजीडेंट, जे. डब्ल्यू. ग्रांट तथा कैप्टन लॉयड को फरवरी १८२९ में सिक्किम-नेपाल सीमा-विवाद सुलझाने के लिए नियुक्त किया गया । उनकी इस यात्रा का मार्ग दार्जिलिंग होकर था जो उस समय केवल जंगलों से भरी पहाड़ी मात्र थी ।

इस यात्रा के दौरान वे हिमाच्छादित कंचनजंघा और साथ की पर्वत श्रृंखला देखकर मंत्रमुग्ध हो गये । संपूर्ण रास्ते वे प्रकृति के इस मनोरम सौंदर्य से इतने आकर्षित हुए कि जून १८२९ में भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक को भेजी गयी रिपोर्ट में लिखा कि यह क्षेत्र इतना सुंदर है कि इसको ब्रिटिश अधिकार में लेकर एक सेनीटोरियम बनाया जाए । रिपोर्ट में यह भी था कि यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह नेपाल तथा सिक्किम जाने के मार्ग पर स्थित है ।

लॉर्ड बेंटिक ने इस रिपोर्ट पर तत्कालीन उपप्रमुख सर्वेक्षक कैप्टेन हरबर्ट को ग्रांट के साथ इस क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए भेज दिया । इन्होंने भी सेनीटोरियम और साथ ही एक यूरोपीय रेजीमेंट के लिए स्थायी छावनी बनाने की सिफारिश की । गवर्नर जनरल ने इस रिपोर्ट को स्वीकृति दी तथा उनके प्रयास से सिक्किम के राजा ने, जिनका इस क्षेत्र पर आधिपत्य था, १ फरवरी १९८५ को एक लिखित समझौता के तहत, बिना किसी शर्त के दार्जिलिंग का पर्वतीय क्षेत्र ईस्ट इंडिया कंपनी को भेंट स्वरूप दे दिया । सन् १९४१ में कंपनी सरकार ने सिक्किम राजा को हरजाने के रूप में ३००० रुपये का भत्ता स्वीकार किया

इस पर्वतीय क्षेत्र पर संपूर्ण अधिकार प्राप्त करने के पश्चात सन् १८३७ में लॉयड को दार्जिलिंग का स्थानीय प्रतिनिधि नियुक्त किया गया । उन्होंने इस क्षेत्र को, जो कि उस समय एक निर्जन पहाड़ी थी, आबाद करने के उद्देश्य से लोगों को प्रेरित कर यहां जमीनें उपलब्ध करवायीं ।

सन् १८२४ में ही लॉर्ड बेंटिक ने भारतवर्ष में चाय पीने की प्रथा को प्रचलित करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिकल्पना की । इस उद्देश्य से असम, गढ़वाल तथा कुमाऊं क्षेत्रों में तत्कालीन सरकार ने प्रायौगिक रूप से चाय तथा काफी के पौधे लगवाने का अभियान आरंभ किया । सन् १८३९ में असम टी कंपनी की स्थापना हुई । चीन से अच्छी नस्ल के पौधे और बीज आयात किये गये तथा साथ ही भारतीय मजदूरों को चाय बागान लगाने तथा चाय उत्पादन संबंधी तकनीकी प्रशिक्षण के लिए चीनी विशेषज्ञों को भी बुलाया गया । यूं तो सन् १८२१ में मेजर ब्रूस ने तथा सन् १८२४ में स्कॉट ने असम के जंगलों में चाय के पौधे देखे थे पर अन्य लोगों को इसका किंचित मात्र भी ज्ञान नहीं था ।

डॉ. कैंपबेल के निर्देश पर सन् १८४१ में चीन की चाय के कुछ बीज कुमाऊं से दार्जिलिंग लाये गये और प्रायौगिक तौर पर उनसे पौधे लगाये गये । उनका यह प्रयोग शत प्रतिशत सफल हुआ । इस विचार, कि यहां की भूमि तथा जलवायु चाय के पौधों के लिए हर दृष्टि से उपयुक्त है, की पुष्टि हुई । इस परीक्षण के आधार पर औरों ने भी दार्जिलिंग में चाय के पौधे लगाए । इनमें चीनी तथा असम की दोनों किस्में थीं । सन् १८५६ तक चाय उत्पादन के उद्योग का बड़े पैमाने पर विकास होने लगा ।

ब्रिटिश सरकार ने भी इस उद्योग को बढ़ावा देने में अपनी रुचि दिखायी । चाय की अच्छी नस्ल के बीज उपलब्ध कराये । बढ़ती हुई चाय की उत्पादकता तथा खपत को देखते हुए इसी वर्ष खरसांग (कुर्सियांग) में आलूबारी चाय बागान की बाकायदा स्थापना की गयी । सन् १८५९ में धूतरिया चाय बागान बना । सन् १८६० तथा १८६४ के बीच दार्जिलिंग टी कंपनी ने जिंग, अंवूतिया, टकडाह तथा फूबसरिंग में चार चाय बागान लगवाये । ऐसे तत्कालीन चाय बागानों में मकाईबारी, पंडम तथा स्टीनथल वर्तमान में भी प्रसिद्ध हैं ।

दार्जिलिंग के अतिरिक्त भारतवर्ष में केवल कांगड़ा ही एक ऐसा स्थान पाया गया जिसकी जलवायु चाय उत्पादन के लिए उपयुक्त थी । वहां भी अच्छी किस्म की चाय पैदा होती थी पर इस शताब्दी के आरंभ में आये एक बड़े भूकंप के कारण वहां के चाय बागान नष्ट हो गये और फिर पनप नहीं पाये ।

चाय के पौधों की किस्में

भारत में तीन प्रकार के चाय के पौधे प्रचलित हैं— चाइनरी (मूलतः चीन से), असमिया (मूलतः असम से) तथा कंबोड (मूलतः कंबोडिया से) । दार्जिलिंग में अधिकतर चाइनरी चाय का ही उत्पादन किया जाता है । इसके बाद असमिया चाय का नंबर आता है । कंबोड नस्ल की चाय का उत्पादन बहुत कम है । चाइनरी चाय के बीज अब उपलब्ध नहीं है अतः उसके पौधों की कलम से ही नये पौधे बनाये गये हैं जिनकी आर्थिक उपयोगिता मात्र ६०-७० वर्ष होती है । इसके प्रारंभिक ८ वर्ष तो बढ़ने में लगते हैं तथा तब तक इनसे पत्तियां नहीं तोड़ी जातीं ।

दार्जिलिंग के बागानों में प्रायः पुराने पौधे ही हैं । गत ५० वर्षों में नये बाग नहीं लगे । इसके कई कारण हैं । एक तो दार्जिलिंग के चाय बागानों पर विशेष वैज्ञानिक अनुसंधान नहीं हुआ, दूसरे पुराने पौधों से बीज नहीं बनाये जा सकते और यदि बनाए भी जाएं आवश्यक नहीं कि नये पौधों की विशिष्टता बनी रहे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय की श्रेणियां

दार्जिलिंग की चाय की विशेष स्तरीय गुणवत्ता बनाये रखने के लिए सदैव नयी कोपलों में से ऊपर की दो पत्तियां और एक कली' ही तोड़ी जाती हैं । सामान्य बागानों में ऊपर की तीन-चार पत्तियां भी तोड़ ली जाती हैं । पत्तियों को तोड़ने की समयावधि भी निश्चित है । पत्ती तोड़ने के मौसम पर चाय की गुणवत्ता निर्भर है । मार्च-अप्रैल में तोड़ी गयी पत्तियों से बनी चाय को फर्स्ट-फ्लश की चाय कहते हैं यह उत्कृष्ट चाय मानी जाती है । सेकेंड फ्लश १५ मई से ३० जून तक होता है जिनसे दार्जिलिंग की सर्वोत्तम चाय का उत्पादन होता है । जुलाई से सितम्बर के बीच तोड़ी गयी चाय की गुणवत्ता सबसे कम होती है पर अक्तूबर-नवम्बर में तोड़ी गयी पत्तियों (ऑटम फ्लश) से बनी चाय मध्यम श्रेणी की मानी जाती है । दिसम्बर से फरवरी तक चाय के पौधे गौड़ रहते हैं, इनकी पत्तियों का उत्पादन थम जाता है,

उत्कृष्ट एवं स्तरीय चाय बनाने के लिए आवश्यक है कि पूरे वर्ष में तापमान २०० से ३०० सेल्सियस रहे, दिन लंबे हों और वातावरण में नमी रहे । दार्जिलिंग में यह सभी विशेषताएं उपस्थित है और इसी कारण से यहां की चाय सर्वोत्तम मानी जाती है ।

तैयार चाय की पत्तियों का वर्गीकरण का एक और आधार उनकी लंबाई है । चाय की पत्तियों को पौधों से तोड़कर उनको थोड़ा सुखाकर रोल करते हैं और पुनः सुखाते हैं । चूंकि यह सारा कार्य मशीनों से होता है, वे टूट जाती हैं । १/४ इंच से १/२ इंच लंबाई की चाय को 'लीक-टी' कहते हैं जो कि सबसे महंगी बिकती हैं । १/८ इंच लंबाईवाली फ्लश को 'ब्रोकेन-टी', १/८ इंच से १/१६ इंच लंबाई वाली चाय को 'फैनिंग-टी' तथा उससे कम वाली को 'डस्ट-टी' कहते हैं । इन सभी चाय को वर्गीकृत करके डिब्बों में बंद करके कलकत्ता में नीलाम किया जाता है । इनका दाम भी इनके वर्ग पर निर्भर करता है । इनका दाम कुछ सौ से कुछ हजार रुपये किलो तक होता है । दार्जिलिंग की एक 'गुडरिक' चाय कंपनी जो कि 'कैसेलटन' के नाम से चाय बनाती है का दावा है कि अभी हाल में कलकत्ता के नीलाम में उनकी चाय १३,००१ रुपये प्रतिकिलो बिकी जिससे उनका अपना पुराना अंतरराष्ट्रीय कीर्तिमान टूट गया ।

चाय का रसायनिक विश्लेषण

चाय की फुनगी से तोड़ी गयी दो पत्तियां और एक कली' (जिसे ढाई पत्तियां भी कहते हैं) सर्वोत्तम चाय उत्पादन के लिए उपयुक्त हैं इनमें तीन चौथाई नमी होती है और एक चौथाई ठोस पदार्थ । इस ठोस पदार्थ में केवल आधा भाग पानी में घुलनशील है जिसमें विशेष रसायनिक तत्त्व होते हैं । घुलनशील भाग में 'सेल्युलोज', 'प्रोटीन', 'वसा' तथा 'फाइबर' होता है । घुलनशील भाग में कैफीन, टैनीन, थियारुबीन, थियाफ्लैबीन, शर्करा, एंजाइम तथा लगभग २० प्रकार के एमीनो एसिड होते हैं । 'थियारुबिन' की मात्रा पर चाय का रंग निर्भर करता है तथा उसकी सुगंध का आधार है 'थियाफ्लेबिन' ।

— आर.-११ एन्डरूजगंग एक्स्टेंशन
जोसिप ब्रॉन टीटो मार्ग
नयी दिल्ली-११००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़कुल की जलेबियां !

● श्री सुरेश सरल

बुंदेलखंड के प्रसिद्ध शासक महाराज छत्रसाल के राजदरबार में दो भाईयों ने बड़ी प्रसिद्धि पायी थी । उनमें बड़े श्री मंसूराम जी राजसत्ता के प्रमुख खजांची थे, जो अपनी ईमानदारी के लिए जाने जाते थे और छोटे भाई सुमंसरामजी सेनापति थे जो शौर्य के लिए अनेक राजों-रजवाड़ों के मध्य चर्चा में बने रहते थे ।

एक की सच्चाई और दूसरे की बहादुरी ने महाराज का दिल जीत लिया । अतः उन्होंने उन्हें राजकीय सम्मान देते हुए उनकी वंश-परंपरा को आगे भी गुणात्मक प्रगति करते रहने के लिए उन्हें 'बड़कुल' शब्द से सम्मानित किया था । यह आख्यान इतिहास हो या किंवदंती किंतु उन दो भाईयों के वंशज आज भी मध्य प्रदेश के अनेक शहरों ग्रामों में अवस्थित हैं, जो कहीं मजदूर हैं, तो कहीं उद्योगपति, कहीं सर्विसमैन तो कहीं व्यापारी । उनमें से अनेक में आज भी सत्य एवं साहस के बीजाणु जीवित हैं । अनेकों में से एक श्री मोतीलाल बड़कुल का व्यक्तित्व वैशिष्ट्य एवं वैचित्र्य का धारक बन चुका है । आप मानेंगे इस कथन को कि वे सिद्धहस्त कलाकार नहीं हैं, पर सदा ही कलाकारों के संरक्षक रहे हैं । वे सधे हुए साहित्यकार नहीं हैं, पर हर वरिष्ठ-कनिष्ठ साहित्यकार के उपासक हैं । पत्रकारिता का अंश मात्र उनमें नहीं है, पर विगत और वर्तमान के अनेक वरिष्ठ-पत्रकार उनका नाम आदर से लेते मिलते हैं । वे नेता नहीं हैं, पर नेताओं को समय पर तौलने की तुला रहे हैं । वे संत नहीं हैं, परंतु पल-पल संत समागम के लिए समर्पित मिले हैं । वे पूर्णरूपेण धर्मज्ञ भले ही न हों परंतु तन-मन-धन से धर्मात्मा हैं । गो यह कि वे 'कुछ' नहीं हैं, पर 'बहुत कुछ' हैं ।

समाज सेवा का भाव

१९मई, १९१६ में श्री हरप्रसाद बड़कुल के घर उनका जन्म हुआ था । उनके पिता श्री हरप्रसाद बड़कुल ने वर्ष १९०० में जबलपुर के प्रसिद्ध मुहल्ला लार्डगंज (अब जवाहरगंज) में छोटी-सी दुकान डाली थी । वे खोआ में तेखुर का शुद्ध साफ पाउडर मिलाकर देशी घी के संयोग से खोआ की जलेवी बनाने में महारत पा गये थे और उनकी जलेवियां चल निकली थीं । स्वाद ऐसा निराला-रसनाप्रिय बना कि वह ग्राहकों के दिल-दिमाग में छाता चला गया । हर पीढ़ी का उपभोक्ता उस स्वाद से संबंध जोड़ता चला गया ।

मोतीलाल बड़कुल ने सत्रह वर्ष की उम्र में जब पहली बार तराजू उठाकर जलेबियां तौलीं तो उस समय उनकी दर मात्र छह आना प्रति सेर (चालीस पैसा किलो) थी । तब घी का भाव आठ आने प्रति सेर था, खोआ का चार आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक-की सच्चाई और दूसरे की बहादुरी ने महाराज का दिल जीत लिया। अतः उन्होंने उन्हें राजकीय सम्मान देते हुए उनकी वंश-परंपरा को आगे भी गुणात्मक प्रगति करते रहने के लिए उन्हें 'बड़कुल' शब्द से सम्मानित किया था।

(२५ पैसे) प्रति सेर और तेखुर का दो आना सेर। स्वतः मोतीलालजी उस समय यदि अपनी दैनिक मजदूरी जोड़ते तो वह दो आने मात्र थी। आज उनकी जलेवी पचासी रुपये किलो बिक रही है।

मोतीलाल मिठाई के पहले मजदूर हैं जो मजदूरी से बढ़े और बढ़ते-बढ़ते जीवन के अस्सी वसंत देख लेने के बाद भी मिठाई के निकट हैं। पहले मिठाई उनके साथ थी, अब वे मिठाई के साथ हैं। सच तो यह है कि अब वे मिठाई के बादशाह हैं। मिठाई और मिठास युक्त मानवता के सर्जक।

हलवाइयों का गौरव

श्रम और सादगी से प्रारंभ की गई यात्रा आज यश और धनधान्य के चरम-विकास तक पहुंच गयी है। 'बड़कुल हलवाई' जैसे साधारण शब्द को अपने चोखे धंधे के कारण वे प्रतिष्ठा की उच्च सीमा तक ले गये हैं। हलवाई का धंधा भले ही साधारण माना जाता रहा हो पर 'बड़कुल हलवाई' ने तो समस्त हलवाईयों का गौरव बढ़ा दिया। उनके हाथ से बननेवाली खोआ की जलेबी का नाम इतना प्रसिद्ध हो गया कि वह बाद में 'बड़कुल की जलेबी' कहलाने लगी। साधारण धंधे से उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले श्री बड़कुल ने सिद्ध कर दिया कि हलवाई का धंधा भी यदि नेक-नीयत से किया जाए तो वह विशिष्टता प्राप्त कर लेता है।

जबलपुर के नागरिकों के रिश्तेदार देश के अनेक शहरों तक फैले हैं। इन संबंधों की मधुरता में बड़कुल जी अक्सर 'बीच में' मिले हैं, जब जबलपुर से कोई 'पिता' दूरस्थ नगर में बसी हुई 'बेटी' के घर जाता है तो साथ में बड़कुल की जलेबी ले जाना नहीं भूलता। ऐसा लगा—बड़कुल जी के माध्यम से यहां का प्रेम, वात्सल्य और माधुर्य देश के अनेक-अनेक शहरों तक फूलों की सुगंध के मानिंद जाता रहा है। कहें बड़कुल जी अपने कार्यों के साथ-साथ दो परिवारों के बीच उच्च संस्कृति और मधुर-व्यवहार का ताना-बाना बांधते रहे हैं।

लगभग बीस वर्षों से जबलपुर के बड़े फुहारे के पास महावीर-जयंती पर विराट कवि-सम्मेलन का प्रचलन बना हुआ है। देश के किसी भी भाग से कोई भी कवि आये हैं बड़कुल जी को कविता की तरह स्मृति में रखकर ले गये हैं। कवि की कविता और बड़कुल की जलेबी हर वर्ष आमने-सामने हुई हैं—आदर और स्नेह से। उनका व्यवसाय प्रारंभ हुए अब्बे वर्ष हो गये हैं, जो उनके पिता और चाचा ने प्रारंभ किया था। देशी घी का सच्चा मूल्यांकन यहीं से प्रारंभ हुआ जबकि मिष्ठान व्यवसाय में। यही कारण था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर लार्डगंज के लिए उपयोग में आनेवाला घी इन्हीं के यहां से लिया जाता था, बाद में श्री मोतीलाल ने घोषणा कर दी कि उक्त मंदिर को उनका प्रतिष्ठान जीवन भर निःशुल्क घी प्रदान करता रहेगा, क्रम आज भी निरंतर है । घी देनेवाले बड़कुल ने बाद में अनेक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में आर्थिक सहयोग भी दिया । धर्म का ध्यान जागा तो मंदिरजी में भगवान बाहुबलीजी की पांच फुट ऊंची भव्य प्रतिमा की स्थापना भी करायी । बारह वर्ष सपत्नीक नित्य मंदिर पहुंचकर घंटों पूजा-अर्चना की । उनका यह धार्मिक-आचरण मात्र इस पीढ़ी का नहीं है, आज से लगभग १४० वर्ष पूर्व, सन् १८५६ में, उनके पूर्वज स्व. ठाकुरदास बड़कुल ने हटा में मंदिर निर्माण कराया था और उसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं नेमिनाथ की भव्य प्रतिमाएं स्थापित करायी थीं, जो आज भी दर्शनीय हैं ।

विविधता भरा जीवन

विविधताओं से भरे हुए उनके जीवन के प्रसंग इस आलेख को लंबा कर देंगे अतः कलम की सीमा निर्धारित करता हुआ कहता हूं कि श्री मोतीलाल बड़कुल बहुत बड़े व्यक्तित्व के धारक नहीं हैं, पर वे कविवर रहीम के एक प्रिय पात्र अवश्य हैं, जिसका नाम है 'लघु' । हां—वही 'लघु' जिसके लिए रहीम ने लिखा है—

"रहिमन देख बड़ैन को,
'लघु' न दीजिये डारि ।
जहां काम आवै सुई,
कहा करै तरवारि ।

मिष्ठान के धंधे को गरिमा प्रदान करने में सफल श्री बड़कुल, जबलपुर के श्री श्यामसुंदर

श्री मोतीलाल बड़कुल

बड़ेरिया की श्रेणी के नागरिक हैं जो अपने सही कार्यों के कारण जबलपुर-मिष्ठान विक्रेता संघ के संचालक रहे हैं । उनका उत्साह तो देखिए कि जब स्वस्थ शरीर की उम्र थी तो अपने मित्रों श्री फूलचंद जैन, श्री श्यामसुंदर बड़ेरिया, श्री नाथूराम जैन, श्री दुक्खीलाल गुप्ता, श्री प्रताप चंद नीखरा, श्री सुगनामल एवं श्री महादेव प्रसाद वर्मा के साथ दो बार मिष्ठान्नों की प्रदर्शनी का सुंदर आयोजन किया और तत्कालीन राज्यपाल महोदय से उद्घाटन कराया । मात्र प्रदर्शनी या उद्घाटन उनका लक्ष्य नहीं था, उनने अपने संगठन के माध्यम से एंबुलेंस-कार स्थानीय अस्पताल को भेंट की थी । बाद में तो श्री बड़कुल प्रांतीय मिष्ठान विक्रेता संघ के अध्यक्ष बने और फिर आल इंडिया मिष्ठान विक्रेता संघ के संयुक्त सचिव । बड़कुल की जलेबियां देशभर में अलग पहचान बनाये हैं ।

—२९३, गढ़ाफाटक,
जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवावस्था में ही उसे वैधव्य का दुःख झेलना पड़ा। और इस पर पांच बच्चों के भरण-पोषण का भार ! अभावों से भरी जिंदगी ! रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्चों के लिए दिन-रात की जद्दो-जहद !

अभावों से भरी जिंदगी में सुख के, संतोष के यदि कोई क्षण थे, तो बस वही, जब वह अपने बच्चों को, उनके दोस्तों को कहानी सुनाने बैठ जाया करती थी। जितनी तन्मयता से वह कहानी सुनाती उतना ही दत्त-चित्त होकर बच्चे भी उसकी कहानियों को सुनते। उनमें रहस्य होता, रोमांच होता और अंत में होती यही सीख कि 'अपराध' का 'पुरस्कार' जरूर मिलता है— और वह 'पुरस्कार' है दंड !'

नया रास्ता

धीरे-धीरे उसके श्रोताओं की भीड़ बढ़ने लगी ! और अपने नन्हें-नन्हें श्रोताओं के जमघट को देखकर उसने सोचा, क्यों न वह इन कहानियों को लिखे और उन्हें प्रदर्शित कराये। शायद अतिरिक्त आय का एक नया रास्ता खुल जाए।

और उसने यही किया। टाइपराइटर पर स्वयं कहानियां टाइप कीं, उन्हें पत्रिकाओं में भेजा। वे छपीं भी, प्रशंसित भी हुईं। अंततः एक रेडियो कार्यक्रम के लिए उसे लेखन का कार्य मिल गया।

एक अनुबंध

और, फिर एक दिन उससे अमरीका के प्रमुख प्रकाशकों में से एक साइमन एंड शूस्टर ने एक अनुबंध किया। और इस अनुबंध की राशि थी—

एक करोड़ डॉलर !

वह बचपन में कविताएं एक उपन्यास के लिए

अमरीका में इतनी बड़ी राशि का, किसी लेखक और प्रकाशक के बीच यह पहला अनुबंध था ! एक इतिहास की रचना करनेवाली इस लेखिका का नाम है— मेरी हिगिन्स क्लार्क ! जॉन ले कारे और रॉबर्ट लुडलुम अमरीका के ऐसे लेखक हैं— जिन्हें प्रति कृति तीस लाख डॉलर मिलते हैं।

रॉबर्ट लुडलुम रहस्य-रोमांचपूर्ण कृतियां लिखने में सिद्ध हस्त हैं। भारत में भी उनकी कृतियां बेहद चाव से पढ़ी जाती हैं। 'जेमिनी कंटेंडर', 'चार्ल्स मैन्यूस्क्रिप्ट', 'द पारसिफल मोजाइक' लुडलुम के ऐसे रहस्य-रोमांचपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास हैं कि पाठक उन्हें बिना खतम किये छोड़ता नहीं ।

असफलताओं से अप्रभावित

अब मेरी हिगिन्स क्लार्क की गणना भी इन्हीं सिद्ध हस्त लेखकों में होने लगी है ।

लेकिन इसके लिए मेरी को शब्द-साधना करनी पड़ी है, संघर्ष करना पड़ा है और निराशाओं, हताशाओं और असफलताओं से बिना प्रभावित हुए निरंतर लेखन में जुटना पड़ा है ।

जैसा कि आम तौर पर होता है, कोई बड़ा प्रकाशक उसे छापने के लिए तैयार नहीं हुआ । एक के बाद एक 'डबल डे' और 'हार्पर'-जैसे प्रकाशक संस्थानों ने उसे छापने से इनकार कर दिया । कारण— महिला-पाठकों शायद उसके रहस्य-रोमांच से बेहद भयभीत हो जातीं ।

अंत में 'साइमन एंड शूस्टर' नामक प्रकाशन संस्थान ने इस उपन्यास को छापना स्वीकार किया ।

और पांच प्रकाशकों से अस्वीकृत यह

बेचा करती थी आज एक करोड़ डॉलर !

मेरी रहस्य-रोमांच से भरी औपन्यासिक कृतियों का सृजन करती हैं । पर उनका पहला उपन्यास रहस्य-रोमांच से शून्य था । वह जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी के कुछ प्रसंगों पर आधारित था । शीर्षक था— 'एस्पायर टू द् हेवन' । यद्यपि इस उपन्यास ने कोई खास सफलता नहीं पायी, पर उसने मेरी को अवश्य यह प्रेरणा दी कि अब वह केवल लिखे और लिखे !

तेरह वर्ष पूर्व मेरी ने अपना पहला रहस्य-रोमांचपूर्ण उपन्यास लिखा— 'व्हेयर आर माइ चिल्ड्रन' उपन्यास छपते ही हाथों-हाथ बिक गया और उसके साथ ही अमरीका में एक 'अगाथा-क्रिस्टी' का जन्म हुआ । बाद में मेरी के इसी उपन्यास पर एक फिल्म भी बनी । इसके बाद मेरी ने और भी अनेक लोकप्रिय उपन्यास लिखे । बारह से अधिक भाषाओं में मेरी की पुस्तकों की प्रतियों की संख्या है तीन करोड़ !

कवयित्री बनने का सपना

मेरी ने एक साक्षात्कार में बताया कि वह शुरू से ही एक लेखिका बनना चाहती थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभावों से भरी जिंदगी में सुख के, संतोष के यदि कोई क्षण थे, तो बस वही, जब वह अपने बच्चों को, उनके दोस्तों को कहानी सुनाने बैठ जाया करती थी। जितनी तन्मयता से वह कहानी सुनाती उतना ही दत्त-चित्त होकर बच्चे भी उसकी कहानियों को सुनते। उनमें रहस्य होता, रोमांच होता और अंत में होती यही सीख कि 'अपराध' का 'पुरस्कार' जरूर मिलता है— और वह 'पुरस्कार' है दंड !'

स्कूल में मैं अपने सहपाठियों को कविताएं बेचा करती थी ! विवाह के बाद मैंने लेखन का प्रशिक्षण लिया। छह वर्षों के परिश्रम और चालीस अस्वीकृत पत्रों के बाद सन् १९५६ में यानी चालीस वर्ष पूर्व उसकी एक कहानी एक सौ डॉलर में बिकी।

लेखन के प्रति समर्पित

मेरी अपने लेखन के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। एक अनुभवी रिपोर्टर की तरह वह किसी घटना के तह तक में जाना चाहती है। मेरी प्रतिमास अमरीका और यूरोप की यात्रा पर निकलती हैं— अपने किसी उपन्यास की पृष्ठभूमि की तलाश में ! पृष्ठभूमि के स्थल को स्वयं देखने-परखने और अनुभव करने के लिए।

मेरी अपनी कृतियों को बार-बार सुधारने में, उन्हें फिर से लिखने में कोई संकोच या बोरियत नहीं अनुभव करतीं। उनका एक लोकप्रिय उपन्यास है— 'वीप नो मोर, माई लेडी !' मेरी ने दो वर्षों के भीतर चार बार इस उपन्यास को प्रायः दुबारा लिखा।

थोपा गया अंत

मेरी का कहना है— किसी अच्छी पुस्तक के थोपे गये अंत को पढ़ने से बदतर और कोई बात नहीं। किसी भी उपन्यास का अंत तर्क सम्मत होना चाहिए।

मेरी अपराध के लिए दंड को अनिवार्य मानती हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि लोग चाहते हैं कि अपराधी को अवश्य दंड मिले। जो अन्याय हुआ है, उसका प्रतिकार हो।

मेरी का कहना है—

'अपराध दंड से ही पुरस्कृत होता है।'

आज रहस्य-रोमांच से भरी कृतियों के रचनाकारों में मेरी हिगिन्स क्लार्क अग्रणी हैं। लेकिन सफलता के शिखर पर पहुंचने के लिए जो संघर्ष उन्होंने किया है, लेखन के प्रति जिस अटूट निष्ठा को अपनाया है, वह नये लेखकों के लिए प्रेरणास्पद है।

प्रस्तुति : [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पॉल ब्रंटन नामक एक अंगरेज जिज्ञासु सत्तर-पिचहत्तर साल पहले भारत आया था— उस 'गुप्त भारत की खोज में', जो चमत्कार करनेवाले सिद्ध-साधकों, तांत्रिकों, योगियों, ऐंद्रिजालिक मायावियों और आध्यात्मिक शक्ति-संपन्न साधू-संतों का देश है। जगन्नाथ पुरी में उसे एक ऐसा फकीर मिला, जिसके चमत्कारों की गुत्थी वह कभी नहीं सुलझा सका और उसी के शब्दों में 'उस फकीर के रहस्य मेरे लिए एक स्थायी समस्या बनकर रह गये।'

वह चमत्कारी फकीर

■ पॉल ब्रंटन

जगन्नाथ पुरी के समुद्र की मृदुल हिलकोरियों का मधुर कलकल नाद मुझे बहुत प्यारा लगा। एक दिन समुद्र-तट पर मैं यों ही घूम रहा था। कुछ देर घूमकर शहर की ओर चल पड़ा। रास्ते में अनजाने ही एक ऐसी बात मुझे दिखायी दी, जिसका समाधान मुझे आज तक नहीं सूझ पड़ा है। यह मेरे लिए एक स्थायी समस्या बनकर रह गयी है।

मैंने देखा कि रास्ते के एक ओर भीड़ के बीच एक मदारी-सा आदमी खूब भड़कीली वेशभूषा में मजमा लगाये हुए खड़ा है। उसके साफे और पायजामे से वह मुझे मुसलमान लगता था। हिंदुओं के पवित्र नगर में एक मुसलमान ? और उसका भी ऐसा रौब ? उसे देखकर मेरे हौंसले और मेरी उत्सुकता न जाने क्यों लहर मारने लगी। उसके पास एक पालतू बंदर था, जिसे वह नचा रहा था।

मुझे देखते ही उसने अपने बंदर से कुछ कहा, तो बंदर भीड़ में से उछलता-कूदता मेरे पास आया और एक गमगीन आवाज बनाकर उसने मुझे सलाम किया। उसने अपनी टोपी उतारी और इस ढंग से कि मानो मुझसे भीख मांगता हो, टोपी मेरी ओर बढ़ा दी। मैंने उसमें एक चवन्नी फेंक दी। बंदर उसे उठाकर अपने मालिक के पास लौट गया।

उसने फिर बंदर का एक अजीब-सा नाच दिखाया। जब नाच खतम हो गया तो उसने अपने युवा अनुचर मुसलमान भाई से उर्दू में कुछ कहा और अनुचर ने मेरे निकट आकर मुझसे प्रार्थना की कि मैं उसके साथ पीछे के तंबू में चलूं क्योंकि उसका उस्ताद मुझे कुछ खास बातें दिखाना चाहता है।

मैं तैयार हो गया तो वह तंबू के बाहर भीड़ को रोकने के लिए खड़ा हो गया और मैं उसके उस्ताद के साथ तंबू में दाखिल हुआ। भीतर प्रवेश करते ही मैंने देखा कि तंबू में कोई छत नहीं थी। चारों ओर चार खंभे गाड़ दिये थे और उनके चारों ओर एक मोटा परदा बांध दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था । उस घेरे के बीचोंबीच एक सादी और हलकी मेज रखी थी ।

उसने एक कपड़े में लिपटे दो-दो अंगुल के कई खिलौने निकाले । उन खिलौनों के सिर रंग-बिरंगे मोम के बने थे और उनके पैर कुछ कड़े तिनकों के । पैरों के नीचे लोहे के चपटे टुकड़े ठुके हुए थे । उसने सभी खिलौनों को मेज पर खड़ा किया और स्वयं मेज से एक गज की दूरी पर खड़ा हो गया । वह खिलौनों को उर्दू में हुक्म देने लगा । एक या दो मिनट में सब के सब खिलौने मेज पर उछलते-कूदते हुए नाचने लगे ।

उसके हाथ में छोटी-सी एक छड़ी थी । उस छड़ी की गति के अनुसार वे खिलौने नाच रहे थे । कोई भी उनमें से भूल कर भी नीचे नहीं गिरा । शाम के चार बजे की खुली रोशनी में मैं यह खेल देख रहा था, इसलिए इसमें चालाकी की तो कोई गुंजाइश नहीं थी फिर भी मुझे लगा कि हो न हो इसमें कोई चालाकी है । अतः मैं मेज के बिलकुल निकट गया और गौर से निरीक्षण-परीक्षण करने लगा । अपने हाथ से मेज के ऊपर और नीचे भी टटोलकर देखा कि कहीं कोई पतला धागा या बाल तो नहीं बंधा है, लेकिन ऐसा कहीं कुछ नहीं था ।

अब उसने मुझे इशारे से बताया कि मैं मेज के किसी भी भाग की ओर अपनी अंगुली से इशारा करूं । मैंने वैसा ही किया तो सभी खिलौने ठीक उधर ही आ जाते, जिधर मैं अंगुली से इशारा करता था । जिधर मैं अंगुली दिखाता वे उधर ही आकर नाचने लगते ।

फिर उसने अपनी जेब से एक रुपये का सिक्का निकालकर मुझे इशारे से बताया कि मैं अपनी जेब से एक रुपये का सिक्का निकालकर मेज पर रख दूं । मैंने एक रुपये का सिक्का मेज पर रख दिया । वह सिक्का भी नाचने लगा और नाचते-नाचते उसकी ओर चलने लगा । जब वह उसकी ओर मेज की छोर पर पहुंचा तो नीचे गिरा और लुढ़कता हुआ उसके पैरों के पास जाकर रुक गया । उसने उस सिक्के को उठा लिया और अपनी जेब में रखते हुए अदब के साथ मुझे सलाम किया ।

योगी ब्रह्म की अंगूठी

मैं नहीं कह सकता कि मैं किसी विचित्र इंद्रजाल का तमाशा देख रहा था या सच्चे योग की एक विभूति का प्रदर्शन । मेरी शंकाएं मेरे

चेहरे पर उभर आयी थीं, जिसे देख उसने अपने युवा साथी को बुलाया । साथी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं और भी देखना चाहता हूं । मेरे हां कहने पर उसने एक बाजा उस्ताद के हाथ में दिया और मुझसे कहा कि मैं अपनी अंगूठी उतारकर मेज पर रख दूं । मैंने अंगूठी उतारकर मेज पर रख दी । यह अंगूठी मुझे अडयार नदी के तट पर रहनेवाले एक सिद्ध योगी ब्रह्म ने दी थी । मैं मेज पर रखी अंगूठी की हरी मणि को ताक रहा था । उस्ताद कुछ पीछे हटा और अंगूठी को हुक्म देने लगा । उसकी हर आज्ञा का पालन करती हुई अंगूठी ऊपर की ओर उछलती और फिर गिर जाती । वह अपने बाजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ में बाजा लेकर दाहिने हाथ से अपनी आज्ञाओं के साथ इशारे करने लगा तो मेरी चकित दृष्टि के सामने मेरी अंगूठी बाजे के ताल के अनुरूप ही नाचने लगी, जबकि न तो वह अंगूठी के पास गया और न उसने अंगूठी को छुआ।

इस अजीब तमाशे का क्या अर्थ है, यह मेरी समझ में नहीं आया। एक जड़-अचेतन वस्तु से क्यों कर शाब्दिक आज्ञाओं का पालन करवाया जा सकता है ?

उसने मेरी अंगूठी मुझे लौटा दी तो मैंने

अंगूठी की गौर से परीक्षा की। किंतु, उस पर किसी प्रकार का कोई चिह्न नजर नहीं आया।

फिर उसने रुई में लिपटे जंग लगे लोहे के टुकड़े को निकाला जो चपटा था, ढाई इंच लंबा और आधा अंगुल चौड़ा। वह उसे मेज पर रख ही रहा था कि मैंने उससे पूछा कि क्या मैं इसे देख लूं। उसने कोई आपत्ति नहीं की। मैंने उस लोहे के टुकड़े को ध्यान से देखा। उस पर किसी प्रकार को कोई धागा, तार या बाल बंधा हुआ नहीं था। मैंने उसे लौटा दिया और मेज की ओर देखने लगा लेकिन मेज पर भी ऐसी कोई वस्तु नहीं थी, जिससे शक पैदा हो।

मेज पर लोहे के टुकड़े को रखकर वह जोर से अपने दोनों हाथ मलने लगा। फिर कुछ झुककर उसने उसके कुछ अंगुल ऊपर ही अपने हाथ रखे। फिर अंगुलियों को उसकी ओर करके अपने हाथ पीछे खींचने लगा। न मालूम कैसे वह लोहे का टुकड़ा ठीक हाथों की तरफ बढ़ने लगा। मैं तो एकदम हैरान रह गया। ठीक उसके हाथों के नीचे ही नीचे उसके चलने के अनुसार मेज पर वह लोहे का टुकड़ा चलने-फिरने लगा, जबकि लोहे के टुकड़े और उसके हाथों के बीच करीब पांच अंगुल की दूरी थी।

चेतना-शक्ति लोहे में

इसी प्रकार उसने एक छुरी के साथ भी प्रयोग करके दिखाया।

जब मैंने उससे इसके रहस्य के बारे में पूछा तो उसने बताया कि उसने जिन चीजों को लेकर प्रयोग दिखाये हैं, उन सभी में लोहा था और लोहे में एक अनूठी चेतना शक्ति होती है। वैसे वह इन प्रयोगों को करते-करते इतना निपुण हो गया है कि इन प्रयोगों को वह सोने की चीजों के साथ भी कर सकता है।

मैं मन ही मन इस पहेली को बूझने की कोशिश करने लगा। इसके रहस्य को और जानने के लिए मैंने उसकी तारीफ करते हुए कहा, "आप तो बड़े ही होशियार जादूगर हैं।"

उसने मेरे इस कथन का नाराजगी के साथ विरोध किया तो मैंने पूछा कि, "फिर आप हैं कौन ?"

उसने अपने साथी के जरिये मुझसे कहलाया कि, "मैं एक सच्चा फकीर हूं...कला का अभ्यास करनेवाला हूं।" (उसने उर्दू में जिस कला का नाम बताया था उसे मैं ठीक से सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सका) फिर उसने कहा, "मैं भीड़ में आपके आने से पहले ही आपके बारे में जान गया था, तभी तो आपको इस तंबू में आने के लिए कहा।"

"सच !"

"जी हां, बिलकुल सच। भूलकर भी आप यह न सोचिएगा कि मैं रुपये-पैसे के लालच में ये सारी चीजें आपको दिखा रहा हूं। मुझे अपने उस्ताद के लिए रौजा बनवाना है, जिसके लिए मुझे कुछ रकम की जरूरत है। इसीलिए मैं इस काम में दिलो-जान से लगा हुआ हूं।"

मैंने उससे अनुरोध किया कि वह मुझे अपने बारे में कुछ बताए। बड़ी अनिच्छा से वह मेरी बात मानकर कहने लगा—

"जब मैं तेरह बरस का था तो अपनी भेड़-बकरियां चलाया करता था। हक रोज हमारे गांव में एक दुबला-पतला-सा फकीर आया। उसने एक रात के लिए सोने का स्थान और खाना मांगा। मेरे पिता ने उन्हें ठहराया और खाना खिलाया। वह फकीर एक रात की जगह एक साल तक हमारे यहां रहा। चंद रोज में ही हमें पता चल गया कि वे अजीब ताकत रखते हैं। एक रात हम सब खाना खाने के लिए बैठे। फकीर ने मेरी ओर कई बार गौर से ताका। दूसरे दिन मैं भेड़ें चरा रहा था कि वह मेरे पास आकर बैठ गये और मुझसे पूछा, "बेटा, तुम फकीर बनना चाहोगे ?"

मैंने हां कह दी।

उन्होंने मेरे मां-बाप से बात की। मां-बाप भी राजी हो गये तो वे यह कहकर चले गये कि वे तीन साल बाद मुझे ले जाएंगे। किस्मत की बात कि इसी बीच मेरे मां-बाप दोनों चल बसे। इसलिए जब वे फकीर मुझे लेने आये तो मैं उनके साथ चलने के लिए बिलकुल आजाद था। मैं उनका चेला बन गया और वे मेरे उस्ताद।

मैंने उनके साथ सारे मुल्क का फेरा लगाया। कई गांव और शहर देखे। जो कुछ भी चीजें मैंने आपको दिखायी हैं, वे सब की सब उन्होंने ही मुझे ये सब सिखायी हैं।

"क्या ये चीजें सहज में ही सीखी जा सकती हैं ?"

वह हंस पड़ा और बोला, "कई साल की कड़ी साधना से कोई भी इन्हें सीख सकता है।"

मुझे उसकी बातों में सच्चाई लगी। मैं स्वभाव से बड़ा शक्की था, तब भी उसकी बाबत मैंने अपने शक्कीपन को ताक पर रख दिया।

मैं उसके तंबू से कुछ अनिश्चित और भ्रांत होकर बाहर निकला। मैं एक अजीब चक्कर में फंसा हुआ था। सोचता था कि मैंने कोई स्वप्न तो नहीं देखा है। ज्यों-ज्यों मैं आगे बढता जाता, त्यों-तयों वे करामातें मुझे अधिकाधिक अविश्वसनीय लगती जा रही थीं। इच्छा होती थी कि फकीर के मत्थे किसी जादू-टोना करने की बात मढ़ दूं, लेकिन, जाने क्यों उसके ईमान में संदेह करना असंभव ही मालूम होता था। छुए बिना जो जड़ वस्तुओं को वह नचाने लगा था, इसका मर्म क्योंकर समझाया जा सकता है ? प्राकृतिक नियमों में कोई भी मनमाने परिवर्तन कैसे पैदा कर सकता है, यह मेरी समझ के बाहर की बात है। प्रकृति के नियमों के बारे में जितना हम समझे हुए हैं, शायद उतना पर्याप्त नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने मंदिर का शिखर दिखायी देने लगा था। उस पर लगा, ध्वज हवा में फहरा रहा था। पर उसे लगा कि ध्वज मुसकरा रहा है। उसे बुला रहा है। वह पथरीली चढ़ाई पार कर आया है, इस पर उसे बधाई दे रहा है !

चलते-चलते, पहाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते वह थककर चूर-चूर हुआ जा रहा था, पर मंदिर का शिखर और उस पर लगा ध्वज देखकर उसकी सारी थकान दूर हो गयी थी।

यह मनी नाग का मंदिर था ! काफी ऊंची वह प्रसाद चढ़ाने मंदिर जा रहा था। परिचिता का एक होनहार किशोर बेटा अक्षय कई दिनों से गायब था। परिचिता ने उससे कहा था कि वह मनी नाग के मंदिर में उसी ओर से प्रसाद चढ़ाकर प्रार्थना कर आये। शायद मनी नाग देवता उसकी प्रार्थना सुन लें। उसका खोया बेटा घर वापस आ जाए !

वह इसी उधेड़बुन में चढ़ा जा रहा था कि उसकी नजर ढेर सारे चील-कौओं पर पड़ी।

ओह ! हे भगवान ! यह क्या !

किशोरों के कटे सिर कहां मिले ?

● डॉ. गंगाप्रसाद

पहाड़ी पर स्थित ! कटक से लगभग तीस किलोमीटर दूर रामपुर कस्बे के पास लगभग तीन किलोमीटर पर यह मंदिर एक पहाड़ी पर स्थित था। लोगों की मंदिर के देवता पर अगाध आस्था थी। उनका विश्वास था कि सच्चे दिल से की गयी प्रार्थना अवश्य सुनी जाती है। समस्याओं का निराकरण भी हो जाता है।

वह भी एक प्रार्थना, एक समस्या लेकर मंदिर की ओर बढ़ा जा रहा था। पर न समस्या इसकी अपनी थी और न प्रार्थना वह अपने लिए करने जा रहा था।

मनी नाग से प्रार्थना

महल्ले की एक परिचिता के अनुरोध पर

सामने किसी किशोर का कटा सिर था और चील-कौए उसे ही नोच रहे थे !

कहीं यह अक्षय का सिर तो नहीं !

यह सोचकर वह उस बड़ी चट्टान के पास गया, जहां यह कटा सिर पड़ा था।

किशोर का सिर काफी कुचल दिया गया था। फिर भी वह कुछ-कुछ पहचान में आ रहा था। वह अक्षय का सिर तो नहीं है ! यह तय है। फिर यह सिर किसका है ! किसका है ! वह स्वयं से प्रश्न कर रहा था। सहसा उसे याद आ गया। अरे, यह तो भिखारी का सिर है !

भिखारी ! उसी के महल्ले का एक किशोर ! वह भी कई दिनों से गायब था ! मनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाग मंदिर की ओर जाना भूल तेजी से कस्बे की ओर दौड़ा ।

आनन-फानन में सारे महल्ले में यह बात फैल गयी ।

एक आशंका से सब कांप उठे ।

क्या अक्षय का भी यही हाल हुआ होगा ?

और अक्षय ही क्यों ? महल्ले का एक और लड़का भी तो गायब था ! तो क्या वह भी ! वह भी !

भिखारी के माता-पिता ने यह जरूर बताया कि राधामोहन नामक अपने मित्र से उसने कहा था कि वह 'जात्रा' देखने जाएगा । 'जात्रा' एक लोक नाट्य है, जो रातभर चलता है और उड़ीसा तथा बंगाल में बेहद लोकप्रिय है ।

पुजारी से बातचीत

पुलिस का खोजी दल 'जात्रा' के आयोजकों से मिला । उन्होंने पास मंदिर के पुजारी से भी बात की । पुजारी ने बताया कि एक लड़का उसके पास जरूर आया था । उसने अपना नाम

एक-एक कर गांव से तीन किशोर गायब हो गये थे । काफी खोजबीन के बाद भी उनका पता नहीं चल पा रहा था । फिर एक दिन एक पहाड़ी चट्टान के पास एक कटा हुआ सिर मिला ! वह गायब हुए एक किशोर का था ! इसके बाद कस्बे में अफवाह फैल गयी कि अब किसी गर्भवती स्त्री की बारी है ! और सचमुच हत्यारे ने अपना जाल बिछा दिया था !

किशोरों के शव

इधर महल्लेवाले परेशान थे, उधर पुलिस भी कम परेशान नहीं थी । पुलिस की परेशानी कुछ ज्यादा थी । रामपुर के पास ही स्थित सत्यवादी पुरी नामक स्थान से भी उन्हें दो किशोरों के शव मिले थे । उनके केवल धड़ थे । सिरों का कहीं भी पता नहीं चल पाया था ।

अब पुलिस ने सक्रियता से खोजबीन शुरू की ।

वे भिखारी के माता-पिता से मिले । अक्षय के माता-पिता से भी उन्होंने पूछताछ की । पर कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हुई । हां, भीखू बताया था । साथ ही उसने यह भी अपराध स्वीकार किया था कि वह घरवालों को बिना बताये 'जात्रा' देखने आ गया है । वह रातभर ठहरना चाहता था । पुजारी को दया आ गयी और उसने उसे आश्रय दे दिया । दूसरे दिन वह लड़का भीखू अपने साथ दो और लड़कों को ले आया !

"फिर वे कहां गये ?"

पुलिस ने प्रश्न किया ।

पुजारी ने बताया कि सुबह वे तीनों एक आदमी के साथ चले गये । वे जरूर उसे जानते होंगे, क्योंकि वे उससे हंस-हंसकर बातें कर रहे थे । पुजारी ने उस व्यक्ति का हुलिया भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया, लेकिन पुलिस को उससे विशेष लाभ नहीं हुआ। हां, यह अवश्य ज्ञात हुआ कि उन किशोरों को साथ ले जानेवाला व्यक्ति रामपुर का ही है।

पर उस क्षेत्र में ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ पाना कठिन क्या असंभव ही था, जिसका हुलिया भी पूरी तरह ज्ञात न था।

गर्भवती महिला की हत्या

पुलिस ने कई लोगों से पूछताछ की, पर कोई फल नहीं निकला।

इसी बीच पुलिस का ध्यान एक अफवाह पर गया। अफवाह यह थी कि पांच किशोरों की हत्या के बाद अब किसी गर्भवती स्त्री की भी जरूर हत्या होगी !

पुलिस चौकन्नी हो उठी। संभव था, इस अफवाह में कोई सचाई हो ! नरबलि के किस्से बिलकुल अविश्वसनीय भी नहीं थे।

पुलिस ने अफवाहों के स्रोत को ढूंढ़ना शुरू किया तो पता चला कि कस्बे के बूढ़े नाई गोकुल कारिक ने ही यह आशंका व्यक्त की थी। हुआ यह था कि एक बरगद के पेड़ के नीचे लोगों की हजामत बनाते-बनाते उसने यह आशंका जतलायी थी। उसने कहा था कि मनोकामना की पूर्ति के लिए किशोरों की हत्या बाद किसी गर्भवती स्त्री की भी हत्या जरूरी है। तभी ग्राम-देवी प्रसन्न होती है। और यदि ऐसी हत्या न की गयी तो किशोरों की हत्या करनेवाले पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है।

पुलिस सतर्क हो गयी। उसने मुखबिरों को भी चौकन्ना रहने के लिए कहा।

पुलिस का भाग्य अच्छा था !

उसे पता चला कि एक युवा नाई बनमाली बारिक ने अपने परिचितों को बतलाया है कि उसका एक हितैषी है— गोविंदा। उसी ने उसे दुकान के लिए सामान खरीदने हेतु आर्थिक सहायता की है। एक दिन गोविंदा ने उसकी गर्भवती पत्नी से कहा था कि वह मनी नाग मंदिर में जाकर पुत्र की कामना करे। उसे अवश्य पुत्र होगा। वह मनी नाग मंदिर जाने के लिए तैयार भी हो गयी। गोविंदा ने उससे कहा कि बनमाली तो कटक गया है। और पंडितों ने उसे गोविंदा को बताया है कि आज रात ग्यारह बजे मनी नाग मंदिर में पूजा-हवन करने से अवश्य पुत्र होगा। पहले तो उसकी पत्नी तैयार हो गयी, पर आधी रात को जाना है, जानकर वह झिझक गयी। उसने तय किया कि पति के आने पर ही मंदिर जाएगी।

किशोरों का हत्यारा कौन ?

क्या गोविंदा ही किशोरों का हत्यारा है ! पुलिस के अधिकारी सोचने लगे। उन्होंने गोविंदा के बारे में चुपचाप खोजबीन शुरू की। पुलिस को पता चला कि गोविंदा अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति है। वह विवाहित है, पर अभी तक पिता नहीं बन पाया है। एक मृत किशोर अक्षय के पिता से भी उसका परिचय है। दरअसल, अक्षय के पिता ने उसकी शादी में आर्थिक ऋण भी दिया था।

पुलिस ने अब गोविंदा से पूछताछ का निश्चय किया। थाने में गोविंदा से कई प्रश्न पूछे गये। यह भी पूछा गया कि क्या उसी ने बनमाली की गर्भवती पत्नी को रात में मंदिर चलने के लिए कहा था।

गोविंदा ने सहर्ष हामी भर दी। फिर कहा कि, 'मुझे एक पंडित ने यह बतलाया था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'किस पंडित ने ?'

गोविंदा ऐसे किसी प्रश्न के लिए तैयार न था। अनुभवी पुलिस अधिकारी उसकी मनोदशा भांप गये। अब उन्होंने सख्ती बरती तो गोविंदा पसीना-पसीना हो उठा। उसकी आवाज भी भरभराने लगी।

तंत्र-मंत्र की सहायता

पुलिस ने और दबाव डाला तो गोविंदा ने बताया कि उसने किसी पंडित से नहीं पूछा था। ताड़ी बेचनेवाला महाराना उसका दोस्त है, वह तंत्र-मंत्र भी जानता है। उसी ने सलाह दी थी कि आधी रात को ही उस पर 'सवारी' आती है और तभी वह कोई सहायता कर सकेगा।

अब पुलिस ने महाराना को पकड़ बुलवाया। साथ ही उसके दोनों जवान बेटे भी थाने बुलवाये गये। पुलिस अधिकारी ने महाराना से कहा, "गोविंदा ने अपना अपराध कबूल कर लिया है। वह कहता है कि तुम भी अपने जवान बेटों के साथ इन हत्याओं में शामिल थे !'

अब तो गोविंदा और महाराना में जैसे युद्ध-सा छिड़ गया। दोनों एक-दूसरे पर हत्याओं का आरोप लगाने लगे।

पुलिस ने चैन की सांस ली !

"चलो, इन दोनों में से कोई न कोई तो हत्यारा होगा !"

पुलिस ने उन दोनों के साथ सख्ती की तो सारा भेद उजागर हो गया।

बांझ पत्नी के संतान

गोविंदा ने रोते हुए स्वीकार किया कि उसने उन तीनों किशोरों की हत्या की है। पर यह हत्याएं उसने महाराना के सिर पर चढ़ी 'आत्मा' के कहने पर ही कीं। उसने महाराना के साथ साझेदारी में एक खेत खरीदा था। खेत अच्छी फसल दे, उसकी बांझ पत्नी को संतान हो जाए, इसीलिए उसने यह सब किया था !

फिर बाद में चारों अभियुक्तों ने उन स्थानों का भी पता बताया, जहां उन्होंने वे हत्याएं की थीं।

किशोरों के कटे सिरों का रहस्य अब खुल चुका था !

रहस्यमयी आत्महत्या

असम के पर्वतीय क्षेत्र में एक गांव है— जातिंगा। इस गांव के एक ओर बाराइल पहाड़ स्थित है। गुवाहाटी से सिलचर जानेवाली ट्रेन जातिंगा गांव से होकर गुजरती है। गांववासी ज्यादातर मिकिर आदिवासी हैं। यह गांव विश्वभर में पक्षियों के रहस्यमयी आत्महत्या के लिए प्रसिद्ध है। इस गांव में हर वर्ष बरसात के बाद अगस्त से अक्टूबर के बीच, हजारों पक्षी जंगली आग में कूदकर आत्महत्या करते हैं। वैज्ञानिक अभी तक इस रहस्यमयी मौत का कारण जान नहीं पाये हैं।

● मनोज राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पैतृक उत्तराधिकार राजमद का अहंकार पद का दुरुपयोग, राजनीतिक कुचालों की उठा-पटक अंततः पराजय और पतन का कारण बनती है ! 'त्रिशंकु' का असली नाम था सत्य व्रत अपने तीन महापातकों के कारण उसे त्रिशंकु की उपाधि दी गयी थी . . . विश्वामित्र की महत्वाकांक्षाओं ने उसे स्वर्ग तक पहुंचने का अधिकारी घोषित किया किंतु न इधर न उधर बीच में ही औंधा मुंह किये लटके रहे थे, महाराज 'त्रिशंकु' और शायद आगामी युगों के लिए भी उन्होंने परंपरा डाल दी थी 'त्रिशंकु' बनने की !'

त्रिशंकु की व्यथा

□ डॉ. सुधा पांडे

विश्वामित्र का यज्ञ पूर्ण हुआ और प्रसन्नमन से अग्नि की प्रदक्षिणा करके उन्होंने त्रिशंकु से कहा—'हे राजन ! मेरी तपस्या के प्रभाव से तुम सशरीर ही स्वर्ग को प्राप्त करोगे, यदि मेरी तपस्या का कुछ भी फल प्राप्त हुआ है तो तुम्हें स्वर्ग जाने से कोई नहीं रोक सकेगा ।'

पलक झपकते ही त्रिशंकु सशरीर स्वर्ग की ओर बढ़ने लगे थे . . .

"महाराज अनर्थ ! घोर अनर्थ ही दिखायी पड़ रहा है, कोई नर देह धारी जीव स्वर्ग में सशरीर चला आ रहा है" । घबराये हुए देवों ने देवाधिदेव इंद्र के पास जाकर समाचार दिया . . .

यह कैसे हो सकता है ? चौंक उठे थे, एक साथ इंद्रमहाराज . . . उनका वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि इंद्र के आसन के समीप त्रिशंकु पहुंच गये थे . . . वे तत्क्षण ही पहचान गये कि आगंतुक पुरुष कौन था . . .

त्रिशंकु दो-पग आगे बढ़कर इंद्र को नमस्कार करने के लिए झुके, उसी बीच उसे ललकारते हुए देवाधिदेव की गंभीर वाणी गूंज उठी—

"तू गुरु के शाप से नष्ट हो चुका है अतः नीचे मुख किये हुए पृथ्वी पर पुनः गिर जा ।"

त्राहि माम् ! गुरुदेव त्राहिमाम् । कहते हुए त्रिशंकु स्वर्ग से नीचे गिरने लगे थे ।

त्रिशंकु का आर्त्तस्वर सुन विश्वामित्र चौंक उठे और तत्काल—'राजन ठहर जा ।वहीं ठहर जा ।' लगभग चीखते हुए विश्वामित्र बोले और उनके ऐसा कहने पर त्रिशंकु बीच में ही लटके रह गये थे । सब कुछ पाकर भी त्रिशंकु असफल, असहाय और दीनता से भर गये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने उद्धत और निंदनीय कर्मों से महाराज सत्यव्रत किस प्रकार त्रिशंकु बन गये, उत्तर कोसल के प्रजाजनों के लिए कोई आश्चर्यमयी घटना न थी ।

'सत्यव्रत' नाम था उस राजकुमार का किंतु अपने आचरण से इस नाम को विपरीत भाव से सार्थक बनाया था उसने . . . बचपन से ही वह दुर्विनीत और उद्दंड था, पिता के सामने भी नृशंसतापूर्ण कार्यों से प्रजाजनों को दुःख पहुंचाने में उसने कोई कमी न उठा रखी थी । सारे विश्वभर में फैल चुकी उसकी अपयश गाथा ।

'अरे अभी तो इसका लड़कपन है युवा होने पर सब ठीक हो जाएगा' इकलौते पुत्र की ममता से विवश पिता उसकी गलतियों पर आवरण डालते रहते थे . . .युवराज बनने पर भी सत्यव्रत की मनमानी पूर्ववत् ही बनी रही, उसमें कोई सुधार नहीं हुआ । मंत्रियों व्यवहार का अपमान, प्रजाजनों से क्रूरतापूर्ण व्यवहार अपने राजमद और ऐश्वर्य के प्रति निरंतर आसक्ति उसके लिए कौतूहल के विषय थे !

मंत्रिपरिषद् के सभी सदस्य चिंता में डूबे थे 'युवराज निरंकुशता की सीमा पार करते जा रहे हैं, महाराज ! उन पर अंकुश लगाना आवश्यक प्रतीत हो रहा है' राजपुरोहित ने अवसर देखकर एक दिन महाराज से कहा . . .

'मैं भी क्या करूं ? मैं वृद्ध हो चला हूं . . . आज न सही कल तो उसे ही राजा बनना है । आप लोग नीति से कार्य लें, धैर्य रखें समय आने पर सब ठीक हो जाएगा' बिना किसी प्रतिक्रिया के शांतभाव से उत्तर दिया था पिता ने, दिन ऐसे ही व्यतीत होते जा रहे थे कहीं से युवराज के सुधरने की आशा नहीं दिखायी दी ।

। युवराज की प्रवृत्तियों से महाराज भली-भांति परिचित थे ही, अधिक उपद्रव न बढ़े इसलिए उन्होंने मंत्रियों से परामर्श किया और युवराज के ऊपर राज्य का संपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपने का निश्चय कर लिया ।

आज संपूर्ण उत्तरकोसल में विशेष चहल-पहल है . . . युवराज सत्यव्रत का राज्याभिषेक किया जा रहा है . . . प्रजाजनों कोई विशेष उत्कंठा नहीं । सत्यव्रत के राज्यासीन होने पर दुःख ही बढ़ेंगे इस आशंका से सभी भयभीत हैं, फिर भी राजा तो बन ही गये थे युवराज सत्यव्रत । महाराज के इकलौते पुत्र थे वे उत्तराधिकार उन्हें ही मिलना निश्चित था । महाराज ने भी मुक्ति पायी, राज्यकार्य से उन्होंने वैराग्य-सा ले लिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवराज की चिर अभिलाषा पूर्ण हुई . . . जाने कब से वे इस क्षण की प्रतीक्षा में थे .. . पिता के समय के पुराने मंत्रियों से उनका तालमेल होना संभव न था अतः पहला कार्य उन्होंने यही किया कि कुटिल राजनीति से सबको अपने वश में करने का दांव फेंका—

"प्रजा में अनुशासन खतम हो चला है . . . कोई व्यवस्था नहीं रह गयी है, इसके मूल में आप लोगों की दुर्भावनाएं छिपी हैं . . राजसभा में पहले ही दिन महामात्य और राजपुरोहित को अपमानित करते हुए सत्यव्रत ने कहा—'मैं अपनी इच्छा से नये मंत्री रखूंगा जो मेरे विचारों का अनु पालन कर सकें और सारे राज्य की सुख-शांति लौटा सकें । आप लोग स्वयं राज्य कार्यों से विरत हो जाएं अन्यथा आदेश देकर मुझे आपको हटाना पड़ेगा ।"

'हमें विदा दें । महाराज सत्यव्रत . . .' पुराने मंत्री और अधिक अपमान नहीं सहना चाहते थे . . . विवश भी राज्य कार्यों से विरत हो गये ।

सत्यव्रत के लिए अब मार्ग साफ था . . . विलासी अधम मित्रों को मंत्रिमंडल में शामिल कर सभी गलत कार्यों को प्रमुख महत्त्व देना उसका धर्म बन गया था . . .

'शासन की परंपरा बदलनी होगी . . . मनु द्वारा चलायी गयी पद्धति हमारे अनुकूल नहीं है, धर्म के स्वरूप को भी बदलना होगा . . .' ऐसी अनेक घोषणाएं उसने करवानी प्रारंभ कर दीं . .. जगह-जगह जनसभाएं आयोजित कर स्वयं जाकर प्रजा को उपदेश देना शुरू कर दिया—'राज्य के किसी भी व्यक्ति को राजा के पास आने की आवश्यकता नहीं है . . . वे स्वयं उनके समस्त कष्टों को दूर करेंगे, उनकी प्रार्थना सुनेंगे . . . राज्य में जो भी विद्रोह फैलाने की चेष्टा करेगा उसे कठोर दंड दिया जाएगा . . . राजा के आदेशों का पालन करने में शिथिलता बरतने वालों को तत्काल हटाया जाएगा . . . प्रजा को चाहिए अपने नये राजा के प्रति अनुकूल वातावरण बनायें ।

सर्वत्र आतंक और अनिश्चय का वातावरण फैलता गया । प्रजा सत्यव्रत के स्वभाव से पहले से ही परिचित थी, पुराने राज अधिकारी मौन रह गये थे . . . अधर्म का बोलबाला बढ़ चला . . .सुख-शांति का नाम न था . . . अपने आतंक भरे क्रूर आचरण से सभी को भयभीत कर रखा था उस महाराज ने !

'पुराने राजा से जो सुविधाएं प्रजा को मिल चुकी हैं, उसे आसानी से नहीं छोड़ेगी . .. कहीं प्रजाजन विद्रोह न कर बैठें . . .' परामर्श देते हुए एक मित्र ने कहा था . . .

पुराने मंत्री गण भी पीठ पीछे आपकी घोषणाओं का उपहास कर रहे हैं . . . वे आपके विरुद्ध घृणा और द्वेष भी फैला रहे हैं . . .' दूसरे ने पुष्टि की थी ।

मेरे ही राज्य में रहकर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र ? मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा . . . चारों तरफ गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया था किसी को मुख खोलने का अवसर ही नहीं मिल पाता था, छोटी-छोटी बातों पर दंड दिया जाने लगा . . . ! सारी मंत्रिपरिषद् अनुभव विहीन युवा निरंकुश शासक की अनुगामिनी थी और आतंक और भय की छाया में अवश सांसें गिनती सारी प्रजा . . . उत्तरकोसल का भविष्य अनिश्चय के सागर में लहरा रहा था . . . ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'महाराज सत्यव्रत ऋषियों की उपेक्षा कर अधम वृत्ति वाले लोगों की सहायता से कोसल का राज्य चला रहे हैं और स्वयं चांडालों जैसी प्रवृत्ति वाले बन गये हैं' यह प्रवाद पूरे राज्य में तो फैल चुका था राज्य की सीमाओं के बाहर भी सत्यव्रत की निंदा होने लगी किंतु अधिकार मद में डूबे सत्यव्रत को इन सब बातों की परवाह कब थी ? मृगया में डूबे रहना और निरंतर अन्यायपूर्ण क्रूर कर्म करते रहना उनकी जीवनचर्या बन चुकी थी ।

उस वर्ष राज्य में उत्सव मनोविनोद अधिक आनंद के साथ मनाये गये . . . सबसे अधिक आनंदमयी मृगया सबके कौतूहल का विषय बनी थी . . . युवा मंत्रियों के साथ राजा की कामवासना भी तीव्रतर होकर इठला उठी । उस दिन मृगया से लौटते हुए उन्होंने अनर्थ ही कर दिया . . .

हंसते-खिलखिलाते, सभी मित्रों के साथ लौट रहे थे महाराज सत्यव्रत । हठात् एक स्थान पर ठिठककर रुक गये थे वे—

'यह दिव्यांगना कौन है ? अपनी सुकोमल देहयष्टि से शोभायमान वह सुकन्या अपने आकर्षण पाश में सभी को बांध लेने का निमंत्रण-सा देती प्रतीत हुई . . . मुग्धभाव से अपलक उसे निहारते युवराज अपनी सुध-बुध ही खो बैठे . . .

उनकी कुटिल भावनाओं को भांपते ही नवयुवती सिहर उठी और शीघ्रता से कुटिया में प्रवेश करने को मुड़ी . . .

'पकड़ लो इसे और ले चलो अपने साथ' युवराज पर वासना का ज्वार चढ़ चुका था . . . मित्र मंडली संकेत की प्रतीक्षा में ही

थी । आदेश पाते ही दौड़कर उस युवती के बलात् अपहरण कर लिया और ले चले राजधानी की ओर ।

'उस भिखारी मुनि की पत्नी बनकर तू क्या मिला है . . . मैं तुझे अपनी महारानी बना वचन देता हूं . . .' मुनि पत्नी चीखती-चि रही और सत्यव्रत उसे राजमहल में ले ही गया ।

महाराज किसी तरुणी का अपहरण कर आये हैं, वह तो विवाहिता भी है । घोर अनर्थ . . . महापातक . . . स्त्री का अ और वह भी ब्राह्मण मुनिपत्नी . . . सभी त्राहि-त्राहि कर उठे, पर किसी में साहस कि उनका विरोध कर सके । राजपरिवार कलंक लग चुका था . . . सत्यव्रत का दुस्साहस और बढ़ चला, पिता के कानों यह दुस्संवाद पहुंचा, किंतु वे निरुपाय थे

इसी प्रकार एक दिन वशिष्ठ मुनि की कामधेनु उनके आश्रम के समीप पर रह सत्यव्रत के आखेटक मित्र विचित्र वेश उधर से निकले . . . वे सभी अधम चांडाल कुल के थे . . . उनका भयंक देखकर गाय ने विकराल रूप धारण कर और अपने सींगों और खुरों से प्रहार क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबको घायल कर दिया किसी के हाथ-पैर टूट गये, कुछ प्राण बचाकर भागे, कुछ में उठने की शक्ति नहीं रह गयी । आश्रम में बच्चे उन्हें देखकर तालियां बजाकर हंस पड़े ।

सत्यव्रत को जैसे ही यह समाचार मिला कि उनके मित्रों की दुर्गति हो गयी है । क्रोध में फुंफकारते बढ़ चले धनुष बाण लिए आश्रम की ओर, आंखों में रक्त उतर आया था . . . क्षणभर में धनुष पर बाण संधान किया उन्होंने चीत्कार करती गौ वहीं गिर पड़ी । पलक झपकते ही सब शांत हो गया था . . . चारों तरफ हाहाकार मच गया . . .महाराज ने ऐसा दुष्कृत्य किया कि पृथ्वी भी कांप उठी . . .

वशिष्ठ उनके कुलगुरु थे . . .वे क्षुब्ध हुए, उन्होंने जाकर पुराने महाराज को दुर्विनीत सत्यव्रत के कुकर्मों से अवगत कराया . . . सत्यव्रत की अपकीर्ति चारों ओर पहले से ही फैली थी . . . अब प्रजा का भी धैर्य छूट चुका था—

'हम इस अनाचारी राजा के आधीन नहीं रह सकेंगे . . . इसे सिंहासन छोड़ना पड़ेगा . . .' अब तो प्रजा ही निर्णायक भूमिका अदा करेगी . . .

दिन एक पहर ही चढ़ा था पर राजमार्ग पर कोलाहलभरी नदी उमड़ आयी . . . जनता विद्रोह पर उतारू थी . . .

'उत्तरकोसल पर तो जैसे विपदा ही आ गयी है, अगर ऐसे अनाचार बढ़ते रहे तो प्रजा कैसे सुख से रह सकेगी—

'मारो-मारो इस धूर्त राजा को मारो . . . भीड़ में से कोई स्वर उभरा . . . कोलाहल बढ़ता ही जा रहा था । सत्यव्रत के कुछ साथियों ने प्रजा से अकड़ने का साहस दिखाया किंतु फिर भीड़ में से आवाजें आयीं—'इसे भी मारो, इसे भी राजा के साथ निष्कासित करो ।

महामात्य और राजपुरोहित जनता को शांत करने का प्रयास कर रहे थे किंतु आज जनता भी आर-पार की लड़ाई की मुद्रा में तनी थी . . .

'हम इसका शासन नहीं मानेंगे यह सत्यव्रत नहीं त्रिशंकु है, अपने तीन महापातकों के कारण यह 'त्रिशंकु' के नाम से जाना जाएगा—इसने अधर्मियों की सहायता से अपना राज्य चलाया, विवाहिता मुनि पत्नी का अपहरण किया और कुलगुरु की गौ को मारा है . . .' ऋषियो का समूह अपनी गोष्ठी में उसे त्रिशंकु की उपाधि दे चुका है ।

सत्यव्रत स्थिति की गंभीरता को समझ चुके थे, कहीं प्रजा आक्रमण करके बंदी न बना ले ऐसी आशंका को भांपकर मौका पाते ही कुछ मित्रों के साथ वन में भाग गये और अपने पदों का प्रायश्चित करने के लिए तपस्या करने लगे । उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि अपना खोया वैभव मैं पुनः प्राप्त करके रहूंगा . . . वन में तप करते-करते वहां की वन्य जातियों पर भी उसने अपना प्रभाव जमा लिया और उसकी राजसी प्रवृत्ति फिर से जाग उठी . . . फिर क्या था जप-तप छोड़ वहीं वन्य आदिवासियों के बीच राजा बनकर उन पर शासन करने लगा . . . एक बार फिर से अपना पराक्रम उनके बीच उसने फैला दिया . . . ।

त्रिशंकु को उत्तरकोसल छोड़े हुए बारह वर्ष से भी अधिक समय व्यतीत हो चुका था । पूरे राज्य में अनावृष्टि से अकाल की छाया मंडराने लगी थी . . . सर्वत्र भुखमरी दिखायी देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी . . . वशिष्ठ चिंतित थे . . . प्रजा के कल्याण की सतत चेष्टा करते रहने पर भी कहीं आशा की किरण नहीं दिखायी दे रही थी . . .

प्रजा के मन में यह बात पैठ गयी थी कि राजपुत्र को देश निकाला दिये जाने के कारण ही राज्य पर ऐसी विपत्ति आन पड़ी है फिर क्या था एक बार फिर विद्रोह की चिनगारियां सुलगने लगीं . . .

'त्रिशंकु को वापस बुलाया जाए . . . उन्हें राजसिंहासन का अधिकारी घोषित किया जाए' सभी तरफ से यही आवाजें उठने लगीं . . . वशिष्ठ सहित पूरी मंत्रिपरिषद ने प्रजा के इस आग्रह को ठुकरा दिया . . . प्रजा अकाल पीड़ित थी . . . किसी प्रकार से उनके आंदोलन को दबा ही दिया गया ।

वन में त्रिशंकु नामक पराक्रमी युवक अपना प्रभाव जमा चुका है ऐसी चर्चा राजर्षि विश्वामित्र के कानों में भी पहुंची . . . विश्वामित्र महामुनि का पद पाने की अभिलाषा से उसी वन में तपस्या कर रहे थे ।

गोधुलि वेला थी । राजर्षि विश्वामित्र प्रतिदिन की भांति एकांत चिंतन में मग्न बैठे थे तभी उनके शिष्यों ने आकर सूचना दी—'वनवासियों का राजा अपने साथियों के साथ इधर ही आ रहा है, बड़ा क्रूर है वह कहीं आप पर आक्रमण न कर बैठे . . .'

'तुम लोग चिंता न करो मैं उसके बारे में जानता हूं . . .'

अब तक त्रिशंकु वहां पहुंच चुका था . . . विश्वामित्र उसे समीप आने को कहनेवाले ही थे कि त्रिशंकु उनके पैरों में गिर पड़ा . . . 'मैं उत्तरकोसल का अधिपति आपको प्रणाम करता हूं . . .'

उसके साथी भी प्रणत मुद्रा में वहीं खड़े रहे । 'कौन मांधाता के वंशज ? इक्ष्वाकुवंश सार्वभौम महाराज सत्यव्रत ?'

'हां राजर्षि ! मैं ही वह अभागा पुरुष हूं जिसे वशिष्ठ आदि सभी पुरोहितों और मंत्रियों ने दुरभिसंधि करके निष्कासित कर दिया . . .' सत्यव्रत ने विनम्र होकर निवेदन किया ।

'मैं तुम्हें अन्याय का बदला दिलाकर ही दूं लूंगा . . .' विश्वामित्र को अनुकूल दिशा मिल गयी थी, उनका क्षेत्र तेज एक बार फिर से जाग उठा ।

'हे महामुनि ! अत्यंत आर्त्त होकर मैं आपकी शरण में आया हूं . . . दैव ने मेरे पुरुषार्थ को दबा दिया है । अब मैं आपके सिवा किसी अन्य की शरण नहीं जाऊंगा ।'

त्रिशंकु को भी नवजीवन मिला । विश्वामित्र ने उसे विराट यज्ञ के आयोजन की सलाह दी—'इस यज्ञ के आयोजन से तुम्हारे सारे पाप दूर हो सकेंगे . . .'

सारे भूमंडल पर चर्चा फैल चुकी थी 'महाराज सत्यव्रत जिन्हें त्रिशंकु की उपाधि देकर निष्कासित कर दिया गया था वे विराट यज्ञ कर रहे हैं . . .'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वशिष्ठ सहित उनके सौ पुत्रों ने यज्ञ में आने से मना कर दिया . . . विश्वामित्र को जैसे ही सूचना मिली क्रोध से भर गये और कहा—'वे सभी दुरात्मा इस यज्ञ की आहुतियों में भस्म हो जाएंगे जो इस प्रकार का दुर्भाव रखते हैं . . .' उनके नेत्र अंगारों की तरह लाल हो उठे . . .

'हम देवों का आह्वान करेंगे और मैं अपने संकल्पों से तुम्हारा यज्ञ पूर्ण करवाऊंगा . . .' दृढ़तापूर्वक विश्वामित्र ने त्रिशंकु को आश्वस्त किया था।

मंत्रों से देवों का आह्वान शुरू हुआ, किंतु देवगण भी त्रिशंकु के यज्ञ में आने से भयभीत थे 'अपवित्र इस चांडाल के यज्ञ में भाग लेकर हम वशिष्ठ के कोपभाजन नहीं बनेंगे . . .'

विश्वामित्र भी कब शांत रहते . . . 'नरेश्वर। अब देव गण भी मेरी तपस्या का बल देखें मैं तुम्हें सशरीर स्वर्ग पहुंचाऊंगा . . . इंद्र इस यज्ञ में न आये। मुझे कोई दुविधा नहीं है। मैं एक नये देव लोक की सृष्टि करूंगा। मैं दूसरे इंद्र को प्रतिनिधि बनाऊंगा . . . या मेरा स्वर्ग लोक बिना इंद्र के रहेगा।'

ऋषि मंडली के समक्ष देखते-देखते ही उन्होंने नये सप्तर्षियों की सृष्टि की और क्रोध में भरकर नये नक्षत्रों का भी निर्माण कर डाला . . . सर्वत्र हलचल मच गयी . . . देवगण असुर समाज और ऋषि समुदाय भीषण संकट में पड़ गये थे . . . विश्वामित्र अपने क्रोध से कुछ भी कर बैठेंगे इसकी आशंका से सारा वातावरण कांप उठा . . . किसी वाणी में विनय भरकर सभी ने विश्वामित्र से निवेदन किया—'महाभाग ! ये त्रिशंकु राजा गुरु के शाप से हतपुष्य हो चुके हैं और चांडाल कोटि में पहुंच गये हैं, ये सशरीर स्वर्ग जाने के अधिकारी कैसे हो सकते हैं।'

'नहीं मैंने राजा त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग भेजने की प्रतिज्ञा की है . . . इसे मैं वापस नहीं लौटा सकता।'

देवों सहित सभी महर्षि मौन रह गये थे। उन्हें विश्वामित्र का अनुमोदन करना पड़ा—

'महर्षि प्रवर ऐसा ही हो। मुनि श्रेष्ठ आपके रचे हुए नक्षत्र आकाश में वैश्वानर पथ से बाहर प्रकाशित होंगे और उन्हीं ज्योतिर्मय नक्षत्रों के बीच सिर नीचा कर त्रिशंकु लटकते हुए प्रकाशमान रहेंगे।'

न धरती में, न आकाश में अधर में लटके रहने की स्थिति में पहुंच गये थे त्रिशंकु यही उनकी नियति थी मानो फिर भी विश्वामित्र के सहयोग से उन्हें अपने पापों से मुक्ति मिली, आत्मोद्धार कर सके थे वे उनकी स्थिति देवो के समान मानी गयी, उस नये नक्षत्र लोक के सभी नक्षत्र उनका अनुसरण करते प्रतीत हुए। इंद्र को भी विवश होकर उनका प्रभाव स्वीकार करना पड़ा।

—प्राचार्य,
एम. के. पी. पो. ग्रे. कॉलेज
देहरादून (उ. प्र.)

एक बड़ी नीली व्हेल की चरबी में से १२० बैरल तेल निकाला जा सकता है।

●

कटल फिश के तीन दिल होते हैं। दो दिल उसके गलफड़ों के आधार पर स्थित होते हैं और तीसरा दिल शरीर के केंद्र में होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

महानगर

रोज, हरेक पल नयी घटनाओं को,
जन्म देता हुआ नगर ।
मानव खो गया है एक
मृग मरीचिका के पीछे,
शेष कुछ बचा है, तो यह नगर ।
कोलाहल, भीड़ एक-दूसरे को पीछे धकेलने
की प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है,
यह नगर ।
आज नित नये परिधानों से सुसज्जित,
किसी गरीब की मेहनत का प्रतिफल है,
यह नगर ।
गगनचुंबी इमारतों से युक्त,
लेकिन इनसानी रिश्तों से दूर,
एक अलग दुनिया बसा चुका है,
यह नगर ।
इसमें दया, सहानुभूति नहीं,
क्योंकि देश का सर्वश्रेष्ठ है,
यह महानगर ।

—दीपक चतुर्वेदी

पता— 'चतुर्वेदी भवन'
कायमगंज जिला-फर्रुखाबाद (उ.प्र.)
पिन-२०७५०२
संप्रति— बी.काम में अध्ययनरत
आत्मकथ्य— अपने जीवन में, समाज में जो कुछ दिखायी देता है उसे अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश करता हूं। इसे मैं अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम मानता हूं ।

एक ही पहेली

अजीब सच है यह
कि तुम्हारे न रहने पर
ज्यादा ही महसूस किया है तुम्हें,
कब जज्ब हो गये तुम मुझमें
पता ही न चला ।
एक ही पहेली है—
कि क्या मेरे भाव
पहुंचते भी हैं तुम तक ?
नन्हा-सा घर हो,
या महल हो,
जहां भी रहूंगी,
मंदिर के दीपक-सी जलूंगी ।

— मीनाक्षी शर्मा

शिक्षा: एम. ए. अंगरेजी एम. ए. हिंदी, बी.एड.
सम्प्रति: शिक्षा अधिकारी
पता: डी.ए.वी. इंस्टीट्यूट ऑव इन सर्विस एजुकेशन अशोक विहार फेज-१, ब्लरक एच, कु. ह. मा. स्कूल के जी. विंग दिल्ली ।
आत्मकथ्य: वेगवान प्रवाह-सा जीवन अचानक एक अप्रत्याशित गोड़... और मैं ठसी-सा अनुभव बार-बार झकझोर-सा जाता है और फूट पड़ती है अभिव्यक्ति ।

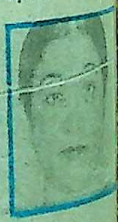

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्नाटे का सुख

शाम का वही संधिप्रकाश
निस्तब्ध पर
चुप-चुप पड़ा कमरा
कुछ बातें करो न !
रूको सन्नाटे
तुम्हें अगरबत्ती की महक दूं ।
उससे बनती कुछ
टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें
इशारा करेंगी हमें
रास्ता बताएंगी
चलेंगे सन्नाटे
हम और तुम
उधर ही चलकर
बातें करूंगी
तुमसे
मनभर अपने मन की !

— वंदना लाल

शिक्षा— एम.ए.
जन्म-तिथि— ७.७.६७
आत्मकथ्य— समाज की विसंगतियों पर जब दृष्टिपात करती हूं तो अंदर एक अकुलाहट-सी होती है जो कविता का रूप ले पन्नों पर उतर आती है ।
पता— श्री राघव लाल
लीची बागान, सीतामढ़ी-८४३३०२ बिहार

स्मृतियां

सुदूर गगन के
नीले विशाल आंचल पर
छितराये बादल
तुम्हारे पत्तों के पन्नों-जैसे
बिखरे पड़े हैं
उड़ते जा रहे हैं बादल
उड़ती जा रही हैं स्मृतियां
बादल शायद बरसें या नहीं
पर
मेरी स्मृतियां अक्सर बरसती हैं
मेरी आंखों से ।

एक पंछी
नीले गगन की गहराई नापता
स्वच्छंद, उन्मुक्त उड़ान
आखिर कब तक
कहां तक जाएगा,
एक दिन थकेगा,
उफनती नदी के कगार पर
खड़े तरु की तरह
ढह जाएगा
यह सच है ।
शेष...
स्मृतियां ।।।

—विजय कुमार उपाध्याय

शिक्षा— बी.एस.सी.
पता— पूनी कीम पट्टी, महारानी पश्चिम
जिला—सुलतानपुर (उ.प्र.)
संप्रति— 'डाबर' नेपाल प्रा. लि., बीरगंज (नेपाल), में 'प्रोडक्शन केमिस्ट' के पद पर कार्यरत
आत्मकथ्य— लिखने से मुझे चरम आनंद की प्राप्ति होती है । अतः इसकी अनुभूति ही मुझे प्रेरित करती है लिखने के लिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य

मौन
समाधित-सा
निर्निमेष तकता
अनुरागी मधुकर
कमल दलों की ओट से
शशि मुख
नेह दीप्त अलौकिक
शुभ्र सौंदर्य तुम्हारा—
प्रकृति की अनुपम
छटा-सा
नभ पर विचरित
निश्छल घटा-सा
भू-वक्ष पर लहराती
पावन पुनीत सरिता-सा
पावन पवित्र स्नेह तुम्हारा—
आकंठ डूबा स्नेह में
लालायित निर्बोध शिशु-सा
तरजनी हस्तगत करने को आतुर
मोहन तुम्हारा—

—नरेश मोहन

शिक्षा— एम.एस-सी, बी.एड., शोधार्थी (मनो.वि.)
आत्मकथ्य— हृदय वातायन से बहनेवाली हर तरंग को शब्दों में ढालने का प्रयत्न ही कविता का सूत्रपात है ।
पता— विद्या मंदिर इंटर कालेज सेक्टर-५, बी.एच.ई.एल. रानीपुर, हरिद्वार ।
संप्रति— चार नाटक, तीन कहानियां, तीन सौ कविताएं तथा कुछ गढ़वाली कविताएं ।

निर्माण मसीहे का

गरम सलाखें,
चुभो दी गयी हैं,
हाथ और पांव में ।
बिखर गयी हूं मैं
बच्चे के हाथ से
छूटकर टूटे
थर्मामीटर के
पारे की तरह ।
दर्द के अहसास में
जब भी उफ करने की
कोशिश की
कहा गया
मसीहा बना रहा हूं ।

—भारती सिंह

शिक्षा— एम.ए. (हिंदी
आत्मकथ्य— परिवेश की अनुभूतियों को प्रकट का प्रयास ।
पता— थाना रोड, मुरलीगंज (मधेपुरा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंडहरों में बिखरी एक प्रेम-कथा

● डॉ. अनामिका प्रकाश

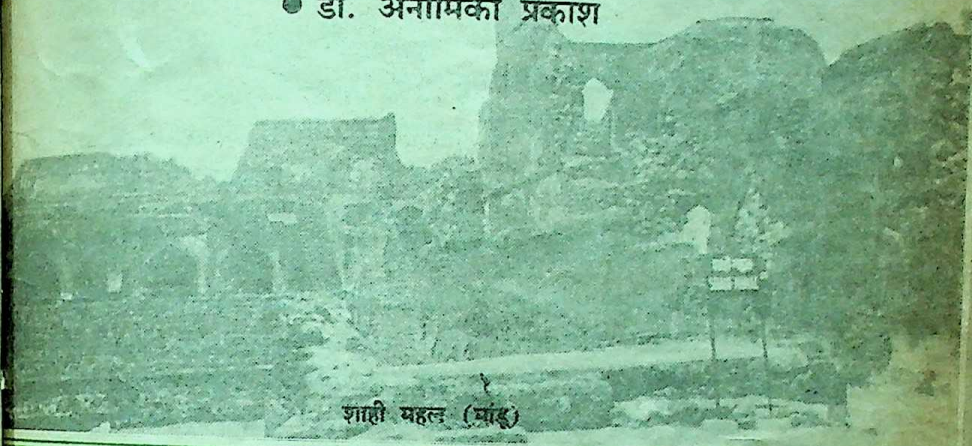

शाही महल (मांडू)

मांडू भारत का एक सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण आकर्षक पर्यटन स्थल है। यह शहर प्रेम, आनंद और उल्लास का प्रतीक है। मांडू का इतिहास तेरहवीं शताब्दी से लेकर अंगरेजी शासन तक रक्तरंजित इतिहास है। दसवीं शताब्दी में हिंदू राजा भोज ने 'रिट्रिट' के रूप में मांडू शहर की स्थापना की थी। ग्यारहवीं शताब्दी में परोमा राजाओं ने मालवा को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया। अतुल सौंदर्य की सुरम्य घाटी मांडू को राजधानी बनाया गया। इसके बाद मालवा पर गौरी और खिलजी राजाओं ने कब्जा कर लिया। १४०१ ई. में मुगलों ने दिल्ली को जीतकर अपने कब्जे में कर लिया। उसी वर्ष मालवा के गवर्नर अफगान नायक दिलावर खां ने स्वयं को मांडू का स्वतंत्र रूप से सुल्तान घोषित कर दिया। दिलावर खां खिलजी वंश का था। सन् १४०५ से १५२६ तक मालवा में खिलजी सुल्तानों का राज्य रहा। दिलावर खां ने मांडू की प्रगति के लिए अनेक काम किये। अफगान शिल्पकला के आधार पर कई महल, मसजिदें बनायीं। १४०५ में दिलावर खां के पुत्र होशांगशाह ने सत्ता संभाली। उसने 'धार' के स्थान पर मांडू को राजधानी बना दिया। शहर का प्रवेश द्वार दिल्ली गेट, जामा मसजिद, अपनी ही समाधी होशांगशाह की शिल्प-प्रेम, प्रतिभा के आकर्षक एवं अनुपम नमूने हैं। होशांगशाह के पुत्र को महमूदशाह ने सत्ताच्युत कर दिया और स्वयं सुल्तान बन बैठा। १४६९ में महमूद के पुत्र गियासुद्दीन ने ४७ वर्ष की प्रौढ़ावस्था में गद्दी संभाली और ३१ वर्षों तक शासन किया। बाद में इसी के पुत्र नसीरुद्दीन ने षड्यंत्र कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता को जहर दे दिया और स्वयं सुल्तान बन बैठा । कहा जाता है कि नसीरुद्दीन को अपने पाप का फल भोगना पड़ा और १५१० में अपने पिता की हत्या के आरोप में उसे भी मौत के घाट उतार दिया गया । नसीरुद्दीन के पुत्र महमूद ने गद्दी संभाली, किंतु अयोग्य शासकों के कारण आंतरिक फूट व कलह अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था ।

जहाज महल

मांडू की शान जहाज महल को पूर्व के हिंदू राजा परमार वंश के प्रसिद्ध मालवपति मुंज के समय में यह महल ग्रीष्म ऋतु में रहने के लिए बनवाया गया था । यह महल ३६० फुट लंबा, ४८ फुट चौड़ा तथा ३१ फुट ऊंचा है, जो देखने में एक जल-सेना के जहाज के समान प्रतीत होता है । बाद में जहाज महल का उपयोग श्रृंगार प्रेमी ग्यासुद्दीन की बेगमों को रहने के लिए किया गया । कहा जाता है कि बादशाह जब चांदनी रात में महल के ऊपरी भाग पर जाते थे तब चारों ओर घूमकर पानी में चंद्रमा व तारों का प्रतिबिंब देखते थे, तो उन्हें ऐसा महसूस होता था कि मानो जैसे समुद्र के मध्य पानी के जहाज पर खड़े हों । इसी कारण इसका नाम जहाज महल पड़ा ।

जहाज महल के उत्तर में स्थित है 'हिंडोला महल' । इसकी दीवारें चौड़े ढलान के रूप में हैं जिनसे उनके झूलने होने का भ्रम होता है । इस इमारत की बनावट में अंगरेजी के शब्द 'टी'-जैसी है । इसकी सीधी दीवार ८८ फुट लंबी, ६० फुट चौड़ी और ३६ फुट ऊंची है । इसके ऊपर की दीवार बाद में सुरक्षा के लिए बनायी गयी है । इस महल में एक विशाल सभागार है । महल के आगे के हिस्से की सजावट व संगमरमर के पत्थरों पर की गयी सूक्ष्म जालीदार नक्काशी अपने आप में अनूठी है ।

जामा मसजिद मांडू की सबसे सुंदर इमारत है, जो कि दमिश्क की मसजिद के नक्शे पर बनी है । यह भारत की पांच बड़ी मसजिदों में से एक है । इसको लाल पत्थर से बनाया गया है, वर्तमान समय में इसमें तीन सौ खंभे हैं । इस मसजिद में महिलाओं के बैठने के लिए दोनों और गैलरी बनायी गयी है । २२८ फुट की चौकोर मसजिद का ५५ फुट का गुंबद है । इस मसजिद का निर्माण होशांगशाह द्वारा शुरू हुआ तथा १४५४ में महमूद खिलजी द्वारा पूरा हुआ । इस विशाल मसजिद में लगभग पांच हजार व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है ।

अफगान शैली में मकबरा

मांडू में स्थित होशांगशाह का मकबरा हमारे देश में उन खास भवनों में से एक है, जब सुल्तान बादशाहों ने प्रथम बार संगमरमर को निर्माण कार्य में लिया था । यह मकबरा दो भागों में बंटा हुआ है । इसका पश्चिमी भाग धर्मशाला के नाम से जाना जाता है जिसकी रचना हिंदू शैली की है । धर्मशाला के प्रत्येक खंबे के ऊपरी भाग में त्रिशूल, हाथी की सूंड व कमल के फूल देखने में आते हैं । मध्य भाग जो होशांगशाह के मकबरे से जाना जाता है, वह अफगान शैली में बना है । इस मकबरे के अंदर छह कब्रें हैं ।

मांडू में हिंडोला महल के पश्चिम भाग में चंपा बावड़ी है जिसकी आकृति चंपा के फूल के समान है । इसी कारण इसका नाम चंपा बावड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांडू में स्थित शाही महल का क्षेत्रफल लगभग दो कि.मी. का है। इस महल में दो बड़े तालाब हैं। साथ में एक बड़ा कुंड तथा सीढ़ियोंवाली तीन बावड़ियां एवं एक कुआं है। इस राजमहल के कई तहखाने हैं व महल के अंदर से बाहर जाने के लिए अंदर ही अंदर गुप्त रास्ते हैं। जिनका उपयोग युद्ध के समय रानियों को सुरक्षित रखने में किया जाता था। राजभवन में मनोरंजन हेतु नाट्यगृह भी बना हुआ है, जो वर्तमान में खंडहर अवस्था में अपना प्राचीन वैभव दर्शाता है।

पड़ा है। यह बावड़ी जनानखाने के मध्य में भूगर्भ में निर्मित है। इसमें जाने के लिए पहले चार रास्ते थे, परंतु वर्तमान में सिर्फ दो रास्ते देखने को मिलते हैं। यद्ध काल में शाही महिलाएं इसके पानी का उपयोग पीने में किया करती थीं। उन दिनों वर्षा ऋतु का पानी महलों की छत से बहकर आता था, उसे एकत्रित करके कोयला-रेत आदि से फिल्टर किया जाता था, बाद में इसे ग्रीष्म ऋतु में उपयोग किया जाता था।

जल महल मुंज तालाब से चारों ओर से घिरा होने के कारण इसे जल महल के नाम से जाना जाता है। इस महल का उपयोग जहांगीर ने सात महीनों के मांडू प्रवास के दौरान किया था। उसने इस महल में बहुत ही सुंदर होज नहाने के लिए बनवाये थे।

श्री राम मंदिर

मांडू में स्थित श्री राम मंदिर का निर्माण २०० वर्ष पूर्व धार के पवार (परमार) राजाओं द्वारा कराया गया था। यहां प्रति वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से मेले का आयोजन किया जाता है। मांडू में दो जैन मंदिर भगवान शांतीनाथ व सुपार्शनाथजी के हैं। हाल ही में लगभग एक करोड़ की लागत से एक धर्मशाला बनवायी गयी है जिसका उद्घाटन स्वर्गीय श्री राजीव गांधी ने सन् १९८५ में मांडव प्रवास के समय किया था। इसके अलावा मांडू में दिगंबर जैन मंदिर है जो ग्राम के मध्य में बस स्टैंड के पास है।

मांडू में नीलकंठ एक बहुत ही रमणीक एवं शांतिप्रिय स्थल है। यहां पर शिव मंदिर है। पूर्व में परमार राजाओं के समय इस दुर्ग में स्थित मंदिरों में से यह एक था। बाद में अकबर के समय एक सूबेदार ने इसे अपना शिकार गृह बना लिया था। नीलकंठ मंदिर में श्रावण माह में यहां पर विशाल मेला लगता है।

मांडू में स्थित रानी रूपमती का महल मांडू दुर्ग के दक्षिण भाग पर निमाड़ प्रांत से ३६५ मीटर खड़ी विंध्यांचल पर्वत की सबसे ऊंची चोटी पर है। इस महल को दो भागों में बांटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

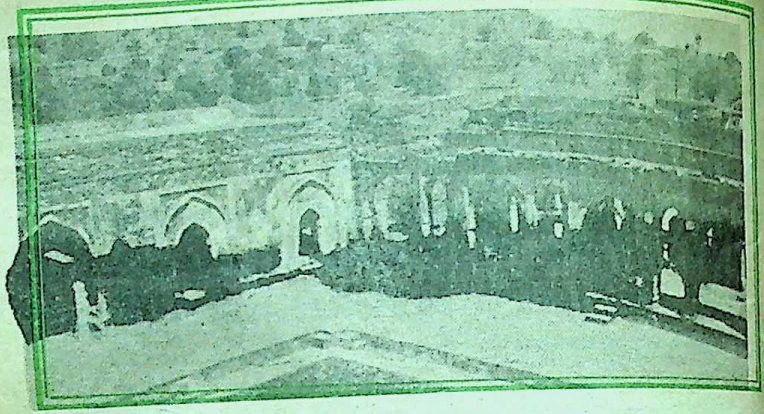

बाजबहादुर महल

जा सकता है । नीचे का भाग कभी सेना के रहने के लिए बनवाया गया था । यहां पर दो तरफ सैनिकों के रहने के लिए दो ढलाननुमा बैठक बनी हैं । साथ में पीने के पानी का एक हौज बना है । जिसमें वर्षा ऋतु से एकत्रित किये गये पानी को कोयले व रेत द्वारा साफ कर लिया जाता था । जिसको युद्ध के दौरान सैनिक उसका पानी अपने पीने के काम में लिया करते थे । बाद में ऊपरी मंडप बाजबहादुर ने अपनी प्रिय संगीत-प्रेमी रूपमती के लिए पवित्र नर्मदा के दर्शन के लिए बनवाया था । जहां से वह हर रोज सूर्य उदय के समय नर्मदा के दर्शन करती थी ।

मांडू में स्थित बाजबहादुर का महल एक ऊंचाई पर बनवाया गया था, इसके सामने चौड़ी सीढ़ियां हैं । इसके अंदर के भाग में एक सुंदर हौज बना है । हौज के उत्तर में सफेद संगमरमर का झरोखा है व दक्षिण की ओर रहवासी कक्ष है । इसी स्थान से ऊपर बारहदरी में जाने के लिए सीढ़ियां बनी हैं । महल के मुख्य द्वार व सीढ़ियों के साथ लगी हुई ऊंची आर्चनुमा दीवार है, जो पहले रेवाकुंड में जाकर मिलती थी ।

इस दीवार पर पत्थर की पाइप लाइन बिछायी गयी थी जिसमें रेवाकुंड से रहट द्वारा पानी ऊपर चढ़ाकर महल में ले जाने की व्यवस्था थी । इस महल के मुख्य द्वार पर एक शिलालेख है, जिसमें लिखा है कि इसका निर्माण नसीरुद्दीन के समय किया गया था । बाद में बाजबहादुर ने अपने शासनकाल में इसको अपने महल के रूप में उपयोग किया था, तब से इसे बाजबहादुर के महल के रूप में जाना जाता था ।

रेवा का मतलब होता है नर्मदा, पवित्र नदी नदी को प्राचीन काल से पुराणों में रेवा नाम से जाना जाता है । ऐसा कहा जाता है कि रूपमती जब तक पवित्र नर्मदा के दर्शन नहीं करती थी तब तक वह अन्न व जल ग्रहण नहीं करती थी । तब रूपमती की भक्ति को देखकर नर्मदा ने प्रसन्न होकर रूपमती को स्वप्न दिया और पवित्र नर्मदा का पानी झरने के रूप में प्रकट हुआ, इसलिए इस पवित्र कुंड को रेवा कुंड कहा जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

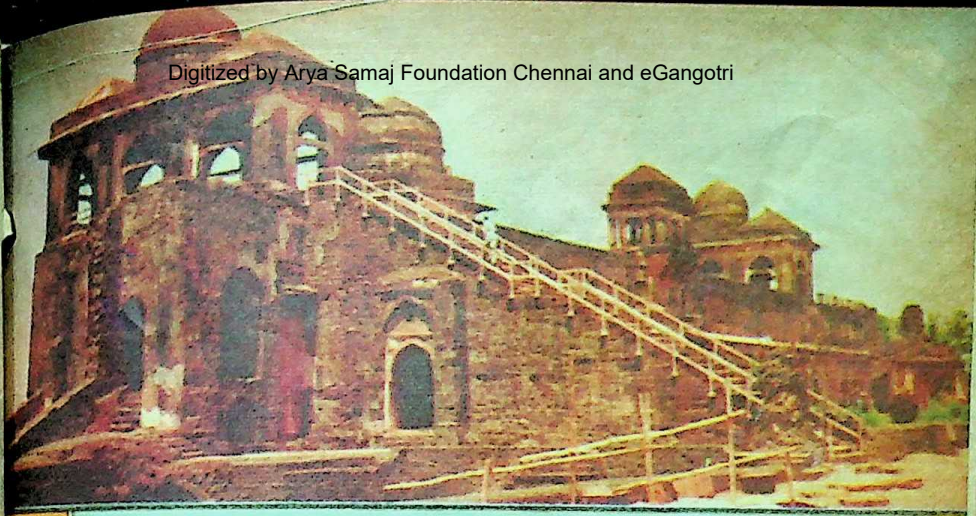

↑ जहाज महल

मांडू का निकटतम रेलवे स्टेशन इंदौर १०० कि.मी. तथा रतलाम १२४ कि.मी. है। मांडू सड़क मार्ग द्वारा इंदौर, महू, उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर आदि स्थानों से जुड़ा है। यहां का निकटतम हवाई अड्डा इंदौर है जो यहां से लगभग १०० कि.मी. दूर है। इंदौर, बंबई, दिल्ली, ग्वालियर तथा भोपाल से सीधी वायु सेवा से जुड़ा है।

मांडू जाने का सबसे अच्छा मौसम जुलाई से मार्च तक का है। बारिश के मौसम में मांडू का मौसम देखते ही बनता है। मांडू में पर्यटकों के ठहरने हेतु कई होटल, लॉज एवं धर्मशालाएं उपलब्ध हैं।

—आर.बी. २, जी.एफ.बी.
रेलवे कॉलोनी, बाद (मथुरा)

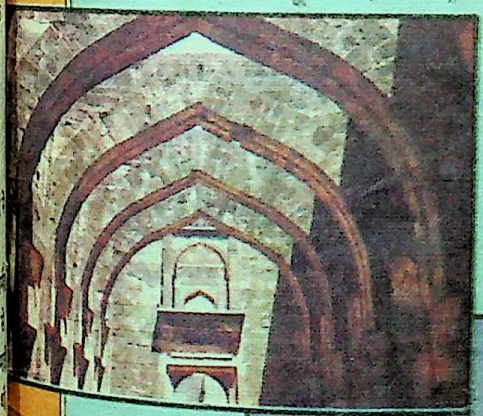

↑ हिंडोला महल

रानी रूपमती महल →

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

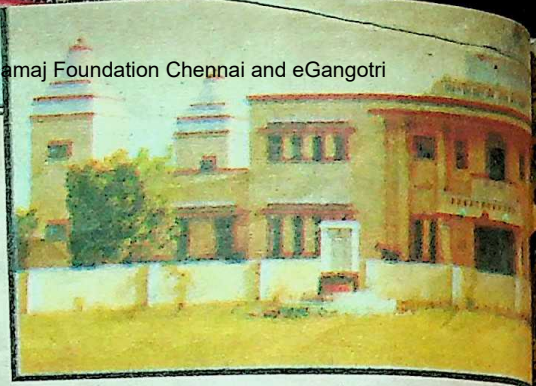

प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान

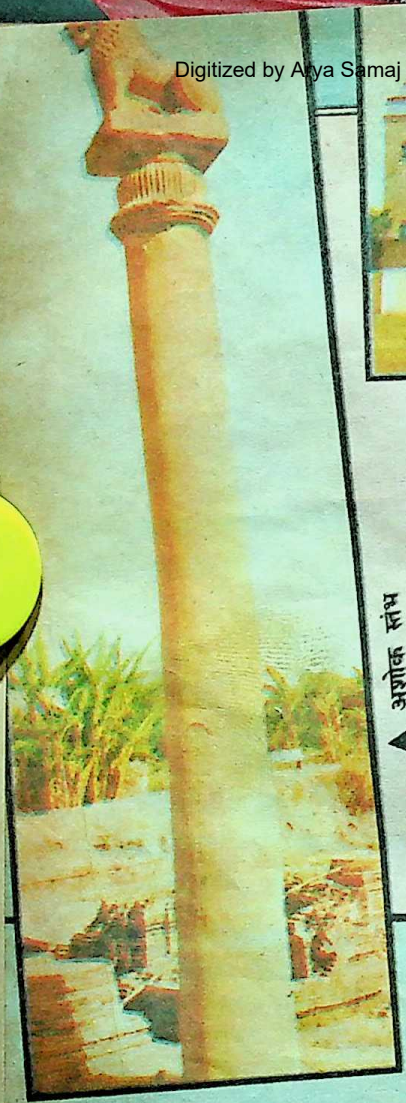

अशोक स्तंभ

बिहार की राजधानी पटना से मात्र ५० कि.मी. दूर वैशाली में प्रवेश पटना से हाजीपुर, लालगंज होकर किया जाए या मुजफ्फरपुर की ओर से, वैशाली की सीमारेखा के अंदर प्रवेश करते ही प्रकृति के शांत सौंदर्य की जादुई छड़ी हमारे दिलोदिमाग को शांत कर देती है। सड़क के दोनों तरफ के शीशम, पीपल, जामुन, बरगद आदि के छायादार पेड़ तथा आम और लीची के बड़े-बड़े बगीचों का असली

विशाल स्तूप, अशोक स्तंभ और छोटे-छोटे अन्य स्तूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व को लोकतंत्र का पहला पाठ पढ़ानेवाली वैशाली इस
ती का वह टुकड़ा है जो हिंदुस्तान के भूले-बिसरे एवं गौरवशाली
ीत की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक गतिविधियों का साक्षी बनकर,
र काल के निर्मम थपेड़ों से जूझते-जूझते भी यादों की कई
स्तों की जीवंत निशानी अपने सीने में सहेजे हुए है ।

मंडरा रही है
द्ध और महावीर की आत्मा

□ महेश कुमार झा

तब आता है, जब वह सफर किसी
से पूरा किया जाए, क्योंकि बस या कार
सफर के दौरान प्रकृति के कोमल
यों से वंचित हो जाना पड़ता है ।
ली के आम के सुंदर बगीचों ने बौद्ध
प्रवर्तक महात्मा बुद्ध को इतना आकर्षित
था कि उन्होंने कई बार इन बगीचों में
रहकर अपने शिष्यों एवं आम जनता को
चारों से अवगत कराया । इन्हीं बगीचों
बगीचा था आम्रपाली का जो वैशाली
परम सुंदरी एवं विश्वविख्यात नर्तकी
म्रपाली बाद में गौतम बुद्ध की शिष्या
थी । वैशाली में ही महात्मा बुद्ध ने
र्वाण की घोषणा की थी । महात्मा बुद्ध
के ठीक एक साल बाद द्वितीय बौद्ध
यहीं आयोजित की गयी थी, जिसमें
यों के बौद्ध समर्थकों ने भाग लिया

महावीर के जन्मस्थल पर स्थापित [illegible]
निर्मित चौमुखी महावीर की मूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था । महात्मा बुद्ध ने इस पावन भूमि को जितना सम्मान दिया उसके प्रतिफल में यहां दो बुद्ध स्तूप बने हुए हैं । ये स्तूप महात्मा बुद्ध के शरीर की राख के अवशेष पर बने हुए हैं और खुदाई से भी महात्मा बुद्ध की कई मूर्तियां प्राप्त हुई हैं जो यहां के संग्रहालय में रखी हुई हैं । गौतम बुद्ध के मनपसंद स्थलों में से एक थी वैशाली ।

चौबीसवें तीर्थंकर

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर बर्द्धमान महावीर का जन्म वैशाली में ही लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था । वर्द्धमान महावीर राजपरिवार से संबद्ध थे । इनकी माता त्रिशला लिच्छवि नरेश चेतक की बहन थी । बारह वर्ष तक वैशाली की मिट्टी में ही खेलने-कूदने यानी बचपन गुजारने के बाद बर्द्धमान महावीर ने अपने विलासपूर्ण जीवन का परित्याग कर दिया था और ज्ञान की खोज में निकल पड़े थे । महावीर के जन्मस्थल पर एक स्मारक बना हुआ है जहां पहुंचते ही श्रद्धा से खुद-ब-खुद सर झुक जाता है । पास में प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान है जहां पूरे विश्व के छात्र जैन शास्त्र के अध्ययन एवं अहिंसा पर शोध करने के लिए आते हैं, क्योंकि यह अपने आप में एक अनूठा संस्थान है । एक अनोखी दिव्य शांति यहां-चारों ओर फैली हुई नजर आती है । ऐसा लगता है मानो वर्द्धमान महावीर के विचार अभी भी वातावरण में घूम रहे हों और पूरे माहौल को शांति का संदेश दे रहे हों ।

इंद्र की वैशाली

'पुराण' के अनुसार मनु, जिन्होंने महाप्रलय के बाद पुनः सृष्टि की रचना की थी, के वंशज सुमति वैशाली के राजा उन दिनों थे, जब अयोध्या के राजकुमार रामचंद्र अपने लक्ष्मण एवं गुरु विश्वामित्र मुनि के जनकपुर (मिथिला की राजधानी सीता का विवाह हुआ था) में में भाग लेने जाते वक्त वैशाली जनकपुर जाते वक्त वैशाली की मीनारों ने इन लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था को शांत करने हेतु उनके कदम ओर मुड़ गये थे । उस वक्त उन्हें यह भी बताया था कि समुद्रमंथन से पूर्व देवता और विचार-विमर्श वैशाली में ही हुआ इंद्र ने भी उस समय इस पृथ्वी पर वैशाली को ही पसंद किया था ।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में जब कहीं भी प्रजातंत्र से लोगों का परि था और सब जगह राजतंत्र की बोलबाला था, तब वैशाली में में फूल-फल रहा था । विश्व के प्रजातांत्रिक राज्य में प्रजातंत्र का रूप था । यहां संसद नाम की सदस्य आम जनता के मतों के जाते थे । यह संसद आज की ही थी । प्रशासन की कई शाखाएं राजधानी से लेकर राज्य की सीमा दूर-दूर के गांवों तक फैली हुई थी अलग-अलग कोड थे । प्रशासन की व्यवस्था इतनी सुदृढ़ थी कि में ही अपराधों की चर्चा सुनने की संसद में विभिन्न क्षेत्र की जनता की पर गंभीरतापूर्वक विचार-विमर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

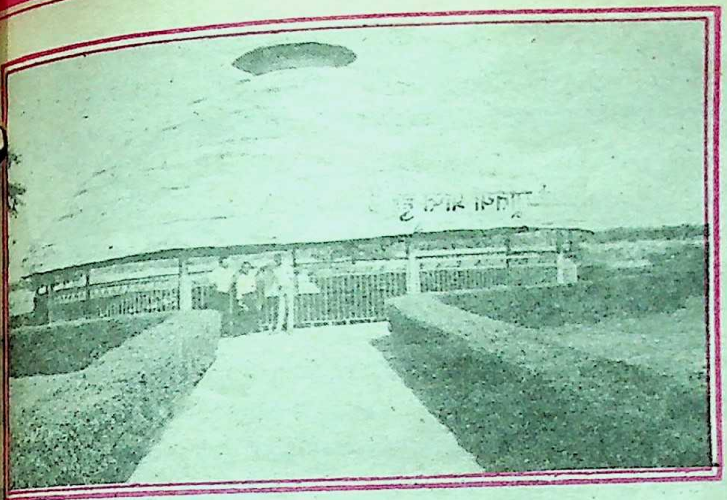

महात्मा बुद्ध के शरीर की राख के अवशेष पर बना स्तूप

तब कोई सामान्य हल तलाशा जाता था । विश्व के तमाम प्रजातांत्रिक राज्यों के वैशाली एक पवित्र तीर्थ स्थान है ।

मांगनेवाले को मिल जाता है

मगध के महान सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तंभ आज भी पूरी शान के साथ खड़ा है। इसके ऊपर स्थित शेर की मूर्ति शक्ति एवं शौर्य की प्रतीक है । इस स्तंभ को स्थानीय लोग भीमसेन की लाठी भी कहते हैं । भीमसेन महाभारत में वर्णित पांडवों में से एक था । इस स्तंभ के सामने एक बड़ा-सा स्तूप है, जो तीन ऐतिहासिक किस्तों में बना-बनाकर ऊंचा कर दिया गया है । इस बड़े स्तूप की तल में तथा अशोक स्तंभ के चारों ओर छोटे ढेर सारे स्तूप हैं । इन स्तूपों को स्तूप कहा जाता है । प्राचीनकाल में दूर से लोग यहां आकर मनौती मांगा करते थे और जिनकी मनौती पूरी हो जाती थी वे एक स्तूप बना दिया करते थे । आज भी वैशाली के लोगों का मानना है कि अशोक स्तंभ को अपनी बांहों में लेकर व सीने से लगाकर सच्चे हृदय से जो कुछ भी मांगा जाता है, वह मांगनेवाले को प्राप्त हो ही जाता है ।

अशोक स्तंभ के आसपास की खुदाई में कई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक निशानियां प्राप्त हुई हैं, जिन्हें एक संग्रहालय में सुरिक्षत रखा गया है । कुछ मुख्य वस्तुएं हैं— तरह-तरह के बरतन, औजार, खिलौने, कलाकृतियां, रत्न जड़ी हुई ईंटें, गौतम बुद्ध की मूर्तियां व अन्य । १०वीं, ११वीं सदी में पत्थर से निर्मित घड़ियाल के मुंह के आकार की नली भी बहुत आकर्षक लगती है । इस नली को महलों की छत पर वर्षा का पानी निकलने के लिए लगाया जाता था । ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में निर्मित शौच पात्र भी पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर खींचता है । खुदाई से ही महलों की दीवालें भी प्राप्त हुई हैं । चार मुंहवाले भगवान शिव की प्रतिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चित चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग ने भी वैशाली की यात्रा क्रमशः पांचवीं और सातवीं शताब्दी में की थी । इन यात्रियों ने भी दुनिया को वैशाली के बारे में बहुत कुछ बताया । आज भी रोजाना सैकड़ों पर्यटक आते हैं तथा वैशाली में इतिहास के टुकड़ों से साक्षात्कार कर बेमन से यहां से लौटते हैं, क्योंकि यहां से तुरंत लौटने को जी नहीं करता । तेज रफ़्तार से भागती शहरी जीवन-शैली से त्रस्त पर्यटकों को बहुत सुकून देती है वैशाली !

भी अपने आप में अनोखी है । यह चौमुखी महादेव चौथी शताब्दी में निर्मित हैं । खुदाई से प्राप्त बहुत-सी वस्तुएं हालांकि टूट-फूट गयी हैं फिर भी इन्हें सहेज कर रखने का प्रयत्न किया गया है । इन वस्तुओं से प्राचीन वैशाली की कला-संस्कृति, रहन-सहन पर पर्याप्त रोशनी पड़ती है ।

प्राचीन संसद भवन

राजा विशाल का गढ़ अपनी विशालता का अहसास दूर से करा देता है । करीब एक सौ चालीस फुट चौड़ी खाई गढ़ के चारों ओर बनी हुई है जो करीब दस फुट गहरी भी है । इसे गढ़ की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए बनाया गया था । इस खाई में हमेशा पानी भरा रहता था । यह गढ़ अब एक टीले के रूप में है । इस टीले की परिधि डेढ़ कि.मी. है जिसे प्राचीन संसद भवन भी कहा जाता है । यहां विज्जैन संघीय सभा के ७७०७ सदस्य एकत्र होकर राज्य का प्रशासन संभालते थे तथा जनता की समस्याओं पर विचार-विमर्श किया करते थे । यहां भी जमीन के अंदर से कई ऐतिहासिक साक्ष्य मिले हैं, जिन्हें पास के संग्रहालय में रखा गया है । संग्रहालय के सामने कमल तालाब है जो पूरब से पश्चिम एक कि.मी. लंबा है । ऐसा विश्वास है कि तालाब लिच्छवियों का पिकनिक स्थल था। चारों ओर हरे-भरे वृक्षों से घिरे इस तालाब उत्तर की ओर संग्रहालय, स्तूप, गेस्ट हाउस कुछ क्वार्टर हैं तथा दक्षिणी ओर जापानी है । राजगृह में बने विशाल शांति स्तूप पर इस कमल तालाब के दक्षिण में शांति बनाया जा रहा है । तालाब के चारों ओर शांति ही शांति नजर आती है । यहां का चिंतन के लिए सर्वथा उपयुक्त था, तथा गौतम बुद्ध का सान्निध्य एवं वर्द्धमान को जन्म देने का श्रेय मिल पाया है इसे अब भी यहां कुछ पलों के लिए ठहरने मन करने लगता है कि यहीं हमेशा के ठहर जाएं ।

खुराना पोखर के नाम से चर्चित एक तालाब अभिषेक पुष्करजी है, जिसको काफी पवित्र माना जाता था । इसी तालाब पानी का इस्तेमाल राजाओं के शपथ समारोह में किया जाता था । पाल वंश समय में निर्मित अनेक हिंदू देवताओं खूबसूरत मूर्तियों से सुसज्जित भवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, यह पोखर तालाब के किनारे है ।

कोटेश्वर मंदिर में सिर्फ कार्तिकेय भगवान की मूर्ति है । मुसलमानों का एक कब्रगाह भी है जिसमें सबसे प्रमुख मिरांजी की दरगाह है । इस दरगाह में पांचवीं शताब्दी के एक प्रमुख संत शेख मोहम्मद काजिम के अवशेष हैं ।

निर्मित जैन मंदिर भी काफी खूबसूरत है ।

मीठे आम और लीची

वैशाली में इतिहास के टुकड़ों से साक्षात्कार करते हुए मन जहां एक ओर अतीत की गौरव गाथाओं की ओर भागता है, वहीं दूसरी ओर यहां की फिजा में फैली शांति बेतहाशा भागती जिंदगी को बहुत सुकून देती है । आबादी कम होने की वजह से भी यहां फैली शांति बाधित नहीं हो पाती । गरमी के दिनों में तो बड़े-बड़े बगीचे शांति और शीतल छाया के साथ-साथ मीठे व रसीले आम और लीची भी खिलाते हैं । यह इलाका लीची के उत्पादन के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है । यहां से आम व लीची विभिन्न देशों को भेजे जाते हैं । यहां उत्तम नस्ल के केले भी मिलते हैं ।

छोटे-छोटे मनौती स्तूप

चर्चित चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग ने भी वैशाली की यात्रा क्रमशः पांचवीं और सातवीं शताब्दी में की थी । इन यात्रियों ने भी दुनिया को वैशाली के बारे में बहुत कुछ बताया । आज भी रोजाना सैकड़ों पर्यटक आते हैं तथा वैशाली में इतिहास के टुकड़ों से साक्षात्कार कर बेमन से यहां से लौटते हैं, क्योंकि यहां से तुरंत लौटने को जी नहीं करता । तेज रफ़ार से भागती शहरी जीवन-शैली से त्रस्त पर्यटकों को बहुत सुकून देती है वैशाली ! ठहरने के लिए वैशाली में तो रेस्टहाउस हैं हीं, वैशाली से मात्र ३५ कि.मी. दूर हाजीपुर में टूरिस्ट बंगला तथा होटल हैं । यहां सड़क मार्ग द्वारा पटना और मुजफ्फरपुर से पहुंचा जा सकता है । रेलगाड़ी से आने वाले को हाजीपुर स्टेशन उतरना पड़ता है ।

—द्वारा श्री सहजानंद
स्टेट बैंक ऑव पटियाला
हथुवा मार्केट के सामने पटना-४ (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

संदीप, फरीदाबाद

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष है। आठ वर्ष से अल्सर से पीड़ित हूं। जलन, गैस, खट्टी डकार, पेट दर्द और सिरदर्द बना रहता है। इलाज किया पर लाभ नहीं हुआ।

उत्तर : स्वर्ण सूतशेखर रस पांच ग्राम, प्रवाल पंचामृत रस पांच ग्राम लेकर चालीस मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह शहद से लें। अम्लपित्तकर चूर्ण एक-एक चम्मच दोपहर-रात पानी से लें।

मीनाक्षी, मुंबई

प्रश्न : उम्र २३ साल है। अविवाहित हूं। गैस और मोटापे से पहुत परेशान हूं। कृपया कोई दवा बतायें।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें। कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें।

श्रीमती [illegible]भा, बेगूसराय

प्रश्न : लगभग सात वर्ष पहले अचानक मूर्छित हो गयी। कुछ ही क्षणों में ठीक हो गयी। तब से सिर में दर्द रहने लगा है। शरीर पहले से भारी हो गया। सारे शरीर में सूजन है। [illegible] के साथ-साथ हाथ-पांव में झनझनाहट रहती है। हर माह दस दिन मासिक आ जाता है। मुंह का स्वाद [illegible] रहता है।

उत्तर : शिरशूलादि वज्र रस [illegible] सूतशेखर रस एक वटी सुबह-शाम [illegible] से लें।

अशोकारिष्ट एक चम्मच, अर्जुन [illegible] एक चम्मच भोजन के बाद पियें।

ब्रह्मरसायन एक-एक चम्मच [illegible] से लें।

सविता, जबलपुर

प्रश्न : उम्र १९ वर्ष है। मासिक [illegible] वर्ष की अवस्था में प्रारंभ हुआ। १-[illegible] के बाद हो जाता है और लगभग ५ दिन [illegible] है। कब्ज बराबर बना रहता है। कांति [illegible] सिरदर्द व शरीर में भारीपन बना रहता [illegible]

उत्तर : अशोकारिष्ट एक चम्मच [illegible] अभयारिष्ट एक चम्मच समभाग [illegible] मिलाकर भोजन के बाद दोनों [illegible] पियें।

मोहनलाल कुशवाह, झांसी

प्रश्न : उम्र ३६ वर्ष है। ६ माह [illegible] में जकड़न शुरू हो गयी है। वजन [illegible] में परेशानी होती है। अधिक दूर [illegible] सकता।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक, [illegible] गूगल एक वटी सुबह और रात [illegible] अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन [illegible] पियें।

कु. सीमा, नागपुर

प्रश्न : उम्र १७ साल है। ४ [illegible] लगाती हूं। दिन पर दिन आंखें [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्र बहुत ज्यादा है । धुंधला दिखता है ।

उत्तर : सप्तामृत लोह तीस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें ।

त्रिफला घृत एक चम्मच रात दूध से या दही, खटाई और तेज मिर्च-मसाले का सेवन न करें । एक वर्ष नियमित औषधि सेवन करें ।

श्री सुलक्षणा, चंडीगढ़

प्रश्न : ३५ वर्षीय हूं । कमर दर्द, सिरदर्द पेट दर्द बना रहता है । गृहस्थ्य जीवन में परेशानी है । कमजोरी भी है ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक, शिरशूलादि रस एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । कांकायन वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें ।

प्रसाद, नोएडा

प्रश्न : सांस फूलना, कफ, खांसी और दमा बार-बार आता है । कमजोरी भी है । भूख कम आती है ।

उत्तर : च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । द्राक्षारिष्ट दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पियें ।

प्रताप, मधुबनी

प्रश्न : उम्र २० वर्ष है । तीन वर्ष से कब्ज गुदा मार्ग पर मस्सा निकल गया है । कभी-कभी मल के साथ खून आ जाता है । कब्ज बना रहता है ।

उत्तर : अर्शोघ्नी वटी एक-एक सुबह-शाम पानी से लें ।

अभयारिष्ट दो-दो चम्मच समभाग पानी मिलाकर भोजन के बाद पियें । ।

आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक रात दूध से लें ।

प्रमोद, खरखोदा

प्रश्न : उम्र २५ साल है । एक साल से रात्रि में लारयुक्त पानी आता है । रात को दो-तीन बार उठना पड़ता है ।

उत्तर : कृमिमुद्गर रस एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक भोजन के बाद पानी से लें ।

सीमा, अगस्त कुंड

प्रश्न : माताजी की उम्र ७० वर्ष है । स्थूलकाय हैं । घुटनों में दर्द रहता है । नाक से कभी-कभी खून भी आ जाता है । रक्तचाप ऊंचा रहता है । कृपया दवा लिखें ।

उत्तर : सर्पगंधा वटी एक, योगराज गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । केहरवा पिष्टी दस ग्राम, प्रवाल पिष्टी दस ग्राम और आंवला चूर्ण तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा दोपहर-रात पानी से लें ।

बी. सुबरमण्यम, हैदराबाद

प्रश्न : उम्र तीस साल है । हाथ-पैर सुन्न हो जाते हैं । घुटनों में भी भारीपन नजर आता है । कभी-कभी ऐसा लगता है कि शरीर में जान ही नहीं है ।

उत्तर : असगंध चूर्ण साठ ग्राम, त्रयोदशांग गूगल तीस ग्राम और मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें । अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

उषा सक्सेना, लखनऊ

प्रश्न : उम्र २३ वर्ष है । लगभग पांच साल से बराबर जुकाम है । मौसम बदलने पर अधिक हो जाता है । सिरदर्द और गरदन दर्द बना रहता है । उत्साहहीन हो गया हूं । कभी-कभी चक्कर भी आ जाते हैं ।

उत्तर : चित्रक हरित्तकी एक-एक चम्मच सुबह-रात गरम दूध से लें । लक्ष्मीविलास रस एक-एक वटी दिन में दो बार पानी से लें ।

ललित, चित्रकूट

प्रश्न : मां की उम्र ४५ वर्ष है । दो साल से बीमार है । दोनों एड़ियों में दर्द रहता है । चलते समय एड़ी जमीन पर नहीं रख पाती है ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । गरम पानी में नमक डालकर एड़ी पानी में रखें । यह कार्य प्रतिदिन करवायें ।

श्रीमती अरुणा, नयी दिल्ली

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । विवाह हुआ, मासिक दिन-प्रतिदिन कम हो गया, संतान नहीं है । मानसिक रूप से परेशान, गृहस्थ जीवन के प्रति कोई रुचि नहीं है, परेशान रहते हैं । कार्यरत महिला हूं । जीवन नीरस बन गया है ।

उत्तर : शंख पुष्पी चूर्ण साठ ग्राम, असगंध चूर्ण साठ ग्राम और चंद्रप्रभा तीस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें ।

दशमूलारिष्ट एक चम्मच, आसव एक चम्मच समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद पियें । दही और खटाई का त्याग कर छह माह नियमित औषधियों का सेवन करें ।

—कविराज वेदप्रकाश

अश्वगंधा : प्रभावशाली औषधि

यह प्राचीनकाल से रसायन, वल्य औषधि के रूप में विशेष प्रचलित वनौषधि है । इसकी जड़ का प्रयोग चूर्ण के रूप में ३-६ ग्राम की मात्रा में उपयोग किया जाता है । इसका अश्वगंधारिष्ट, अश्वगंधादि चूर्ण औषधि के रूप में विशेष लोकप्रिय है । जयपुर (राजस्थान) के आसपास के अश्वकांधा को विशेष प्रभावशाली पाया गया है । इस पर पर्याप्त अनुसंधान कार्य हुआ है, जिससे प्राप्त परिणाम के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह मानव समाज के लिए मानसिक विकार, कैंसर, दुर्बलता, अवस्थाजन्य समस्या की चिकित्सा में वरदान है । लखनऊ मेडिकल के कॉलेज के प्रो. नरेन्द्र सिंह के अनुसार अश्वगंधा के प्रयोग से दिल की बीमारी, रक्तचाप, गठिया, दमा, कैंसर, यकृत विकार, मानसिक असंतुलन के रोग में काबू पाया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य-कथा

इच्छाधारी सर्पों का विवाहोत्सव !

● सुरेश नीरव

वह रात कुछ ज्यादा ही कालिमा लिए हुए थी। आसमान पर छाये काले बादल सितारों की रोशनी को भी जमीन तक आने से रोक रहे थे। रात के सन्नाटे में गूंजती झींगुर और मेंढकों की आवाजें वातावरण में एक अजीब-सी सिहरन उत्पन्न कर रही थीं। कभी-कभी पेड़ की शाखों पर लटके चिमगादड़ रात के वातावरण को अपनी बेसुरी आवाज से और खौफनाक बना देते थे।

ठाकुर तेजसिंह ने बियावान जंगल की दुनिया को सुरक्षित पार कर लिया था। माथे पर उभर आयी पसीने की बूंदों को पोंछते हुए उन्होंने राहत की सांस ली। पीछे मुड़कर जंगल की ओर देखा और जेब में रखी सिगरेट को होंठों पर सुलगाते हुए विचारों की दुनिया में डूबने-उतराने लगे।

"क्या ये खबर गलत है कि रात में जंगलों में चोरी-छिपे लकड़ी काटी जाती है ?" तेजसिंह मन-ही-मन बुदबुदाये। और फिर खुद ही अपने आप से बोले, "लगता है उन्हें मेरे आने की खबर किसी ने दे दी है। खैर... ।" उन्होंने जीप की 'स्टीयरिंग' को मुख्य सड़क की ओर मोड़ते हुए सिगरेट फेंक दी। जीप मुख्य सड़क पर तेजी से भागने लगी थी। तेजसिंह की तराई के जंगलों में अभी हाल ही में 'फॉरेस्ट रेंजर' के रूप में नियुक्ति हुई थी। और वे बड़ी ईमानदारी से जंगल को माफिया से मुक्त कराना चाहते थे। विचारों में डूबते-उतराते वे अपनी जीप की गति को तेज करना ही चाह रहे थे कि सड़क पर सामने चादर से ढकी किसी अंजान आकृति को देखकर ठिठक गये। जीप को रोककर उन्होंने उस आकृति की जांच-पड़ताल करनी चाही। वे जीप से उतरे और उन्होंने उस आकृति से चादर को हटाया। वे देखकर भौंचक्के रह गये। वह एक लड़की थी। जिंदा और जीवित लड़की। उम्र, यही कोई छह या सात माह। उन्होंने सोचा शायद गरीबी से बेबस होकर या फिर सामाजिक मर्यादा के भय से कोई मां अपनी बच्ची को जंगल में छोड़ गयी है। जीप की 'हैड लाइट' के उजाले में नहायी वह लड़की ठाकुर तेजसिंह को काफी सुंदर लगी। उन्होंने मन-ही-मन ईश्वर को धन्यवाद दिया कि कोई अनिष्ट होने से पहले ही उनकी दृष्टि इस मासूम बच्ची पर पड़ गयी। उन्होंने सोचा कि इसे उठाकर अपने साथ ले चला जाए और फिर इसे पुलिस की मदद से किसी अनाथालय को दे दिया जाए। यह सोचकर वह लड़की को उठाने झुके। उन्हें लगा कि वह लड़की अपनी उम्र के हिसाब से वजन में कुछ ज्यादा है। उन्होंने अतिरिक्त ताकत लगाकर उसे उठाना चाहा मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जितनी ज्यादा ताकत लगाकर उसे उठाने का प्रयास करते, उसकी लंबाई बढ़ती जाती। ठाकुर तेजसिंह का दिल किसी अनिष्ट की आशंका से थर-थर कांपने लगा। भय के कारण माथे पर पसीने की बूंदें भी छलछला उठीं। चंद लम्हों में ही वह मासूम-सी दिखनेवाली बच्ची एक खूबसूरत नवयौवना में बदल गयी थी। ठाकुर तेजसिंह की आंखें विस्मय से फटी-की-फटी रह गयीं, चेहरे की बनावट से वह एक पहाड़ी लड़की दिखायी पड़ रही थी। और वह रेंजर साहब को देखकर मंद-मंद मुसकरा रही थी। उसकी सफेद शफ़ाक पोशाक ज़ीप की 'हेड लाइट' में ऐसी चमक रही थी मानो दर्पण पर सूरज की किरणें पड़ रही हों।

"कौन हो तुम ? मुझसे क्या चाहती हो ?"

अपने भीतर बिखरे सारे साहस को बटोरकर रेंजर साहब उस लड़की से बोले।

जवाब में उस लड़की ने अट्टहास किया। ऐसा अट्टहास कि जंगल का सारा परिवेश उस अट्टहास से गूंज उठा।

"बाबूजी हम एक लड़की हैं, और क्या हैं ?" अट्टहास थमने के बाद वह बोली।

"वह तो मैं भी देख रहा हूं।" रेंजर तेजसिंह ने कहा।

"पर इतनी रात इस बियाबान जंगल में क्या करने आयी थीं और यहां क्यों लेटी थीं ?"

"मैं घर से रूठकर आयी थी। अपने बाबू से कही थी कि मुझे नयी चूड़ियां पहना दो। आज मुझे शादी में जाना है। वो माने नहीं तो मैं गुस्से में आकर लेट गयी। सोचा कोई आप-जैसा भला आदमी आएगा तो मुझे उठा ही देगा और मेरी मनोकामना पूरी कर देगा।" वो हंसकर बोली।

रेंजर तेजसिंह ने ध्यानपूर्वक उस लड़की को निहारा। उसकी त्वचा का रंग उन्हें कुछ विलक्षण-सा लगा। पर वे इस तथ्य को नजरअंदाज करते हुए उस लड़की से बोले, "ठीक है यह बताओ कि तुम्हें कहां छोड़ दूं ?"

"उधर सामनेवाले गांव में। वहां हाट लगी है। मुझे चूड़ी, कंगन कुछ दिलवा दीजिएगा और मेहरबानी करें तो मुझे वहां छोड़ दें जहां मुझे शादी में जाना है।" उस लड़की ने खनकती-सी हंसी के साथ यह बात कही।

"सामने गांव कहां है, वहां तो घना जंगल है। मैं अभी वहीं से आ रहा हूं। वहां कोई हाट

भी नहीं लगी है। तुमको शायद उस तरफ जाना है।" दूसरी तरफ जाती हुई सड़क की ओर इशारा करते हुए ठाकुर तेजसिंह ने कहा।

"नहीं बाबू, हमें इसी तरफ जाना है। आप गाड़ी मोड़िए तो।" यह कहकर वह लड़की उछलकर जीप में बैठ गयी।

ठाकुर तेजसिंह को एक मदहोश कर देनेवाली सुगंध का झोंका अपनी सांसों के साथ लिपटता हुआ महसूस हुआ। खस और दमनवा के इत्र की एक मिश्रित गंध थी शायद उस मदहोश कर देनेवाली उस देहगंध में। वह संयत अपनी जीप उसी ओर मोड़कर चल पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस तरफ से कि अभी-अभी वह आये थे। उस लड़की के शरीर की निकटता को जब उन्होंने महसूस किया तो वे अपने आप में इस तरह चौंक पड़े— जैसे रात के अंधेरे में अचानक उनका पैर किसी मेंढक या चूहे पर पड़ गया हो। उसकी त्वचा में एक अजीब-सा गिलगिलापन और बरफ के समान ठंडक थी।

जिस तरह सपेरे की बीन की आवाज के साथ सांप सम्मोहित हो जाता है वह उसी तरह सम्मोहन की गहरी झील में उतरते चले जा रहे थे। उन्हें अपने कंधे कुछ भारी-से लगने लगे। वह लड़की अंगुली से इशारा कर रही थी कि गाड़ी उस ओर मोड़ें। ठाकुर तेजसिंह के मस्तिष्क में आनेवाली विपत्ति और अनहोनी के खौफनाक बवंडर उठने लगे थे। वे यह देखकर हैरान थे कि अभी-अभी जिस जंगल से निकलकर वे आये थे और जहां वे जंगल के चोरों को ढूंढ़ रहे थे, उस जंगल का सारा भौगोलिक परिवेश पलक झपकते ही बदल कैसे गया ? हर जगह उन्हें अनजान और अपरिचित-सी क्यों लग रही है ?

उन्होंने देखा कि वह चादर, जिसे ओढ़कर वह लड़की सड़क पर लेटी थी, जीप से दो हाथ की दूरी बनाये उसी रफ़्तार के साथ-साथ जीप के साथ-साथ चल रही है। उस चादर में हवा के झोंकों से सरसराहट नहीं हो रही है बल्कि वह चादर किसी जलयान पर तने हुए मस्तूल की तरह हवा के थपेड़ों से अप्रभावित साथ-साथ दौड़ लगा रही है। लड़की अपलक सामने की ओर निहार रही थी।

ठाकुर तेजसिंह ने महसूस किया कि जीप की रफ़्तार अपने आप बढ़ती जा रही है। स्पीडोमीटर की सुई ९० और १०० के बीच थरथरा रही थी। जबकि वे साठ किलोमीटर की रफ़्तार से अधिक गाड़ी कभी नहीं चलाते थे। और सबसे ज्यादा आश्चर्य तो उन्हें इस बात का हो रहा था कि इस जंगल में ये सड़कें कहां से निकल के आ रही हैं।

ठाकुर तेजसिंह को लगा कि वे एक अनजान टापू के मुसाफिर बनते चले जा रहे हैं। उस अनजाने टापू के जो कभी उनका परिचित जंगल हुआ करता था। अचानक जंगल के एक कोने से रोशनी की नागिनें उन्हें हवा में उड़ती दिखायी पड़ीं, जो इस बात का आभास करा रही थीं कि उधर कुछ खासी चहल-पहल होगी। सन्नाटे के सीने में शब्दों की कटार घोंपते हुए उस लड़की ने कहा, "उधर देख रहे हैं न, वहीं हाट लगी हुई है। वहीं चूड़ियां भी मिल जाएंगी।"

विस्मय से तेजसिंह की आंखें फैल गयीं। "ये हकीकत है या कोई सपना ?" अपने सिर को झटकते हुए वे मन ही मन बुदबुदाये। "बस यहीं गाड़ी रोक दीजिए, बाबूजी ! मैं चूड़ियां खरीदकर अभी आयी।" लड़की ने चिहुंकते हुए कहा।

ठाकुर तेजसिंह ने मनीबैग से एक रुपया निकाला और उसे दे दिया। लड़की उस हाट की ओर बढ़ने लगी। तेजसिंह ने महसूस किया कि उस लड़की की चाल कुछ विचित्र है। वह ऐसे चल रही थी मानो रेंग रही हो। उन्होंने कलाई में बंधी अपनी घड़ी में समय देखना चाहा पर उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनकी 'ऑटोमेटिक घड़ी' जो कभी बंद नहीं हुआ करती थी वो आज बंद है। यानी कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय वे कहां हैं और इस वक्त क्या समय हुआ है उन्हें कुछ भी पता नहीं । एक बार उन्होंने सोचा कि जीप स्टार्ट कर यहां से भाग चलें मगर अगले ही पल सोचा कि भागकर जाएंगे कहां ? यह सारी जगह तो अब उनके लिए एक अपरिचित स्वप्न-लोक बनी हुई है ।

अभी वह विचारों में डूबते-उतराते निर्णय के किसी सूत्र को पकड़ने का प्रयास कर ही रहे थे कि वह रहस्यमयी लड़की बल खाती हुई उनके सम्मुख प्रकट हो गयी । "ये देखिए बाबूजी कितनी सुंदर चूड़ियां हैं । हरे कांच की चूड़ियां ।" ठाकुर तेजसिंह को चूड़ियां दिखाते हुए वह चहकती हुई बोली और फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना आदेशात्मक लहजे में बोली, "अब आप मुझे सामनेवाली सड़क से वहां ले चलिए जहां शादी का जलसा हो रहा है । वह गांव ज्यादा दूर नहीं है । बस होगा यही कोई आधा कोस ।" बिना किसी प्रतिरोध के ठाकुर तेजसिह ने जीप स्टार्ट कर उस ओर मोड़ दी जहां का संकेत उस लड़की ने किया था । लगता था मानो ठाकुर तेजसिंह भी इस अजूबे और तिलस्मी तमाशे का मन-ही-मन अंत देख लेने का संकल्प कर चुके थे । उन्हें यह तो लगने ही लगा था कि वे रहस्य और रोमांच की इस कथा के अनायास ही एक पात्र बनते जा रहे हैं । अचानक उन्होंने देखा कि वे गांव की एक पुरानी हवेलीनुमा कोठी के सामने आ पहुंचे हैं, जिसके बाहर के चबूतरे पर एक सफेद दाढ़ीवाले सज्जन बैठे हुए हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं और एक दूसरा बूढ़ा आदमी कंधे पर लटकी चमड़े की मसक से बाहर फैले कच्चे आंगन में छिड़काव कर रहा है । कोठी के पिछवाड़े से दो और बूढ़े जिनकी लंबी-लंबी दाढ़ियां हवा में लहरा रही हैं, अपने कंधे पर गैस के हंडे लेकर चले आ रहे हैं । हवेली के मुख्य द्वार से ही एक बूढ़ा आदमी निकलता हुआ दिखायी दिया जिसके हाथ में कांसे का बना इत्रदान था जिसको हिला-हिलाकर वह केवड़ा-जल चारों ओर छिड़कता जा रहा था । भीतर महिलाओं का संगीत चल रहा था । परिवेश में तैरती घुंघरूओं की झुनझुन की मद्धिम-मद्धिम सुर-लहरी वातावरण को मदिर-मदिर मदहोशी

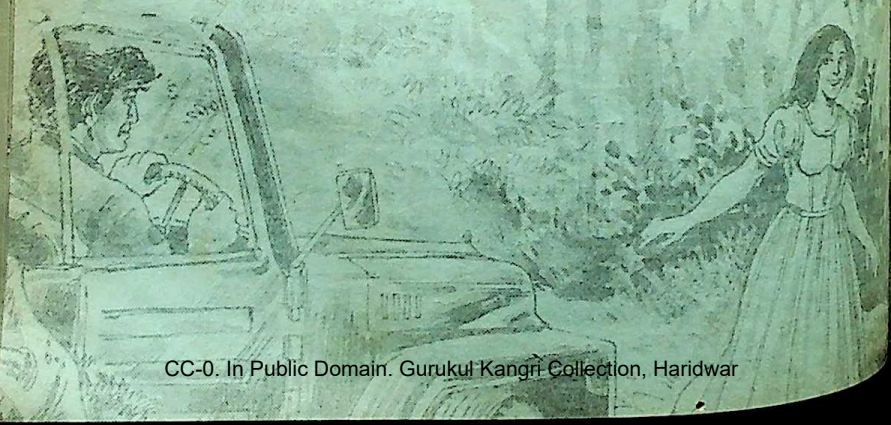

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि आज भी घने जंगलों में इच्छाधारी सांप की ऐसी प्रजाति अस्तित्व में है जो कि मनचाहा रूप धारण करने में समर्थ होती है । आज भी यह रहस्य बना हुआ है कि ठाकुर तेजसिंह ने जो बारात देखी थी वह कोई भुतहा बारात थी या इच्छाधारी सर्पों का कोई विवाहोत्सव ?

से भर रही थी ।

उस लड़की ने ठाकुर तेजसिंह की तंद्रा को तोड़ते हुए कहा, "बाबूजी आप भी आइए न, यहीं तो आना था मुझे ।" ठाकुर तेजसिंह ने चुप रहना ही बेहतर समझा क्योंकि उन्होंने सभी चेहरों को बड़े ध्यानपूर्वक देख लिया था । यंत्रवत चलती वे सारी आकृतियां उन्हें अजीबोगरीब लगीं । सपाट, निर्जीव संवेदनाशून्य चेहरे । एक अजीब रेंगती-सी चाल । मानो सभी लोग किसी अज्ञात ग्रह के प्राणी हों । त्वचा का रंग भी अजीब, आंखों में जंगली सांप की आंखोंवाली चमक । धुनी हुई कपास-जैसे छितरे हुए बाल ।

"चलिए न बाबूजी ।" लड़की ने मनुहारभरे स्वर में कहा, "नहीं मुझे घर पहुंचना है ।" आवाज में दृढ़ता लाते हुए ठाकुर तेजसिंह ने उत्तर दिया ।

"ठीक है बाबूजी तो फिर अपने हाथों से हमें यह चूड़ियां ही पहना दीजिए ।" यह कहकर उस लड़की ने हरे कांच की चूड़ियां ठाकुर तेजसिंह की ओर बढ़ा दीं और वे यंत्रवत उस लड़की को चूड़ियां पहनाने लगे । ठाकुर तेजसिंह ने जैसे ही चूड़ियां पहनाने का क्रम बंद किया, एक गगनभेदी अट्टहास के साथ उसकी आकृति रात के अंधकार में विलीन हो गयी ।

और शादी का वह अकल्पनीय दृश्य भी रात के अंधकार के गर्त में समा गया । वहां रह गया था फिर वही एक जंगल...और उस जंगल के घने बियावान में जीप में बैठे नितांत अकेले ठाकुर तेजसिंह... !

कौन थी वह लड़की ?-कोई अशरीरी आत्मा ? कोई अतृप्त आत्मा या फिर कोई इच्छाधारी सर्प कन्या ?

कहा जाता है कि आज भी घने जंगलों में इच्छाधारी सांप की ऐसी प्रजाति अस्तित्व में है जो कि मनचाहा रूप धारण करने में समर्थ होती है । आज भी यह रहस्य बना हुआ है कि ठाकुर तेजसिंह ने जो बारात देखी थी वह कोई भुतहा बारात थी या इच्छाधारी सर्पों का कोई विवाहोत्सव ? ठाकुर तेजसिंह के लिए यह घटना जीवन पर्यंत एक ऐसी रहस्य-रोमांच की अनबूझ पहेली बनी रही जिसकी गुत्थी वे कभी न सुलझा सके । अभी दिल्ली प्रवास के दौरान अंतरंग क्षणों में उनके पुत्र ने मुझे यह घटना सुनायी थी । उत्सुकतावश मैंने ठाकुर तेजसिंह से मिलने की जब इच्छा व्यक्त की तो उनके पुत्र ने भारी स्वर में कहा कि, "उनसे मिलने के लिए तो आपको दूसरे लोक में ही जाना पड़ेगा ।"

—आई-२०४ गोविंदपुरम
हापुड़ रोड, गाजियाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्यक्तिः एक समयः हर जगह हाजिर !

● सुरेंद्र श्रीवास्तव

क्या एक व्यक्ति एक ही समय पर दो स्थानों पर उपस्थित हो सकता है ? और, वह भी एक स्थान से सैकड़ों मील दूर दूसरे स्थान पर । अधिकांश लोग इस बात पर हंसेंगे और इस पर विश्वास नहीं करेंगे कि ऐसा भी हो सकता है ।

लेकिन बहुत-से लोग ऐसे भी होंगे जो इस बात पर हंसने की बजाय गंभीर हो जाएंगे— विशेष रूप से वे वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक, जो आज तक पुरुष-द्वय लुईस राजर्स के दावे को गलत सिद्ध नहीं कर सके हैं ।

लुईस राजर्स एक साधारण व्यक्ति था और ओझागिरी का काम करता था । किंतु सन् १९२७ में उस पर एकाएक सबका ध्यान आकर्षित हो गया, जब उसके दोहरे व्यक्तित्व की बात प्रकाश में आयी ।

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की ओंटेरियो इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. मार्टिन स्पैंसर ने राजर्स के दावे को प्रारंभ में अस्वीकार करते हुए कहा था कि ये ऐसी बातें हैं, जिन पर जांच नहीं की जा सकती । डॉ. स्पैंसर का उस समय यह विश्वास था कि लुईस राजर्स मात्र एक ठग है।

रहस्यपूर्ण व्यक्तित्व

लुईस राजर्स का जन्म इंगलैंड में हुआ । सिर्फ तीन वर्ष की आयु में वह कनाडा चला गया । सन् १९३१ में वह टोरंटो में जाकर बस गया । यहां वह 'सयानों' और 'ओझाओं' के माध्यम के रूप में काम करने लगा । वह खूबसूरत तथा आकर्षक था । लोग उसके पास अपने मृतक संबंधियों से भेंट करने के लिए पहुंचने लगे । वस्तुतः ऐसे लोगों की तसल्ली के लिए ही लुईस राजर्स सयाने का काम करता था । किंतु लोगों को लुईस राजर्स के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं थी ।

राजर्स को अपने रहस्यपूर्ण होने की बहुत खुशी थी । वह अकसर कहता था— 'मुझ पर आत्माओं की मेहरबानी है । जब भी वे मुझे बुलाती हैं, मुझे उनके पास जाना ही पड़ता है ।'

शंकालु लोगों को तब तक यही संदेह था कि राजर्स का व्यवसाय एक शब्द-जाल मात्र है, जब तक कि उसकी दो मुवक्किलों की टोरंटो में भेंट नहीं हो गयी । ये दोनों स्त्रियां थीं । एक दिन जब दोनों बाजार में मिलीं, तो उनमें लुईस राजर्स के बारे में बात छिड़ गयी । एक स्त्री ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा— 'मुझे तो पता ही नहीं था कि मि. लुईस राजर्स आजकल मांट्रियल गये हुए हैं । मेरी बहन ने उन्हें गत मंगलवार को वहां देखा था और उनसे काफी देर तक बातें की थीं ।

यह सुनते ही दूसरी औरत चौंक पड़ी । आश्चर्यचकित हो उसने कहा— 'यह असंभव है ।'

'क्यों ?'— पहली औरत ने जिज्ञासावश पूछा ।

'क्योंकि गत मंगलवार को तो मि. राजर्स मेरे घर पर थे ।' — दूसरी औरत ने हैरतअंगेज बयान दिया ।

इस बात पर दोनों औरतें काफी देर तक बहस करती रहीं । और, इसके बाद लुईस राजर्स के बारे में अफवाहें फैलने लगीं— कुछ सच्ची, कुछ झूठीं । राजर्स के एक साहसी मुवक्किल ने उससे इन अफवाहों के बारे में व उसके दोहरे व्यक्तित्व की सत्यता के संबंध में उससे पूछ ही लिया, किंतु राजर्स ने कोई जवाब नहीं दिया । वह बस मुसकरा कर रह गया ।

अब लुईस राजर्स के बारे में सूचनाएं एकत्र की जाने लगीं । प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करने पर पता चला कि यदि एक जगह राजर्स वाक-पटु, कुशल, चुस्त और सक्रिय होता था, तो दूसरी ओर वह खामोश व सुषुप्त-सा होता ।

अनेक किस्से प्रचलित

सन् १९३७ तक राजर्स के बारे में ये कहानियां इतनी चर्चित हो गयीं कि ओंटेरियो इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने राजर्स से पूछा कि क्या वह प्रश्नों के उत्तर देगा । राजर्स ने इस पर मना कर दिया । इससे इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. स्पैंसर असमंज़स में पड़ गये । वह राजर्स से मिलने उसके पास गये और उन्होंने उससे पूछा कि उनके प्रश्नों के उत्तर देने में आखिर उसे किस बात का डर है ?

लुईस राजर्स ने प्रत्युत्तर में कहा कि वह नहीं चाहता कि उसके काम और उसके मुवक्किलों के विश्वास से वैज्ञानिक सिद्धांत गढ़े जाएं । डॉ. स्पैंसर ने उसे समझाया कि ऐसा नहीं होगा । बहुत समझाने के बाद आखिर डॉ. स्पैंसर उसे मनाने में सफल रहे । अंततः लुईस राजर्स उनके परीक्षण में भाग लेने के लिए तैयार हो गया ।

इस समय तक अन्य लोग लुईस राजर्स के संबंध में फैल रही अफवाहों को गंभीर रूप में लेने लगे थे । पुलिस भी छानबीन में लग गयी और राजर्स के नाम की एक फाइल भी तैयार कर ली गयी ।

डॉ. स्पैंसर का परीक्षण शुरू हो गया । उनके परीक्षण की एक शर्त यह थी कि राजर्स अगले तीन सप्ताह तक टोरंटो से बाहर नहीं जाएगा । स्पैंसर ने अपने साथियों से कहा कि जब भी राजर्स घर से बाहर निकले, वे उसका पीछा करें । परीक्षण शुरू होने के तीसरे दिन ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

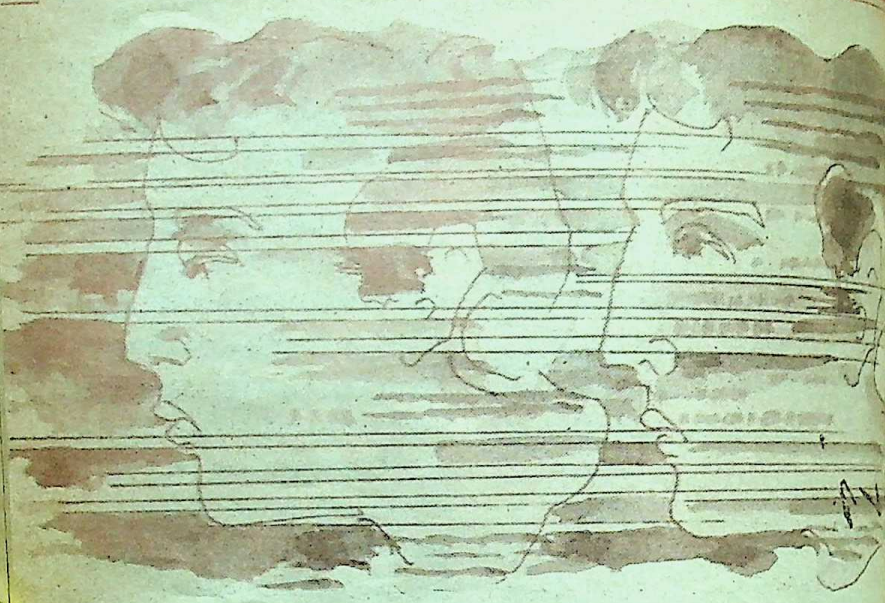

अप्रैल, १९३७ को मांट्रियल से एक व्यक्ति ने सूचना दी कि एक व्यक्ति, जो अपने आपको लुईस राजर्स बताता है, मांट्रियल के एक होटल में देखा गया है।

जांच दल के सदस्य तुरंत मांट्रियल पहुंचे और वहां उनकी भेंट राजर्स के हू-ब-हू से हुई। वह व्यक्ति बोला— 'मैं लुईस राजर्स हूं।' उसकी शक्ल राजर्स से इतनी मिलती-जुलती थी कि जांच करने वाले सदस्य दुविधा में पड़ गये। उन्होंने तुरंत मांट्रियल से डॉ. स्पैंसर को फोन करके सब बतलाया। डॉ. स्पैंसर यह सुनकर सकते में आ गये। वह लगभग चीखकर बोले— 'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं इस समय यहां राजर्स के साथ दोपहर का खाना खा रहा हूं।'

यह राजर्स के दोहरे व्यक्तित्व का बेहद सनसनीखेज प्रमाण था। लेकिन, इतना होने पर भी डॉ. स्पैंसर को विश्वास नहीं हुआ कि राजर्स सचमुच दोहरे व्यक्तित्व का स्वामी है। अभी भी उनका यह विश्वास था कि राजर्स जालसाजी से काम लेता है।

दोहरे व्यक्तित्व का स्वामी

लोगों की उलटी-सीधी बातों तथा डॉ. स्पैंसर के उपरोक्त तर्कों से तंग आकर राजर्स ने कहा— 'मैं इन सबसे थक गया हूं। १२ अप्रैल को मैं यह हमेशा के लिए सिद्ध कर दूंगा कि मेरे अंदर असाधारण शक्ति है। तब शायद आप मुझे हमेशा के लिए अकेला छोड़ देंगे और फिर पूछताछ के लिए परेशान नहीं करेंगे।'

डॉ. स्पैंसर इस महत्त्वपूर्ण परीक्षण के लिए सहमत हो गये। १२ अप्रैल, १९३७ को लुईस राजर्स को डॉ. स्पैंसर के कार्यालय में ले जाया गया। उसे कार्यालय के अंदर अकेला बैठा कर बाहर से ताला लगा दिया गया। डॉ. स्पैंसर व उनकी जांच टीम के तीनों सदस्य वहां मौजूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। उन सबके सामने लुईस राजर्स ने कहा कि के दिमाग में जो भी पहली चीज आती है, बोल दें। डॉ. स्पैंसर ने कहा— 'गुलाब'। लुईस राजर्स बोला— 'बस, अब ठीक है।'

राजर्स को डॉ. स्पैंसर के ऑफिस के कमरे में बंद करके डॉ. स्पैंसर और उनके साथी बाहर बैठ गये। वे लोग लगभग एक घंटे तक बैठे रहे। इतने में उनके पास रखे फोन की घंटी बज उठी। फोन ओंटेरियो इंस्टीट्यूट के एक प्रतिनिधि का था। उसने फोन पर बताया कि उसने अभी-अभी लुईस राजर्स को शहर में घूमते देखा है। प्रतिनिधि की यह बात सुन कर डॉ. स्पैंसर व उसके साथी दंग रह गये, क्योंकि वे साफ देख रहे थे कि लुईस राजर्स तो उनके सामने डॉ. स्पैंसर के कार्यालय में बंद बैठा है, तो फिर वह शहर में कैसे पहुंच गया ? वहां एक स्तब्धता छा गयी।

डॉ. स्पैंसर विचार करते हुए बैठे रहे। इसके एक घंटे बाद पुनः फोन की घंटी बजी। डॉ. स्पैंसर ने फोन उठाया। उधर से राजर्स की स्पष्ट आवाज सुनायी दी— 'डॉ. स्पैंसर, मैं लुईस राजर्स बोल रहा हूं। सांकेतिक शब्द (कोड; वर्ड) गुलाब है।'

यह सुनकर डॉ. स्पैंसर के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। विचित्र तथ्य यह था कि राजर्स ने फोन कहां से किया, जबकि वह तो उनके कार्यालय में कैद था, जहां से फोन हटा दिया गया था और कार्यालय के दरवाजे, खिड़की सब बंद थे।

इस घटना ने डॉ. स्पैंसर को सोचने पर मजबूर कर दिया और काफी सोच-विचार के बाद अंततः वह लुईस राजर्स के चमत्कारिक व्यक्तित्व के कायल हो गये। उन्होंने राजर्स के दुहरे व्यक्तित्व को स्वीकार कर लिया।

डॉ. स्पैंसर द्वारा मान्यता दिये जाने के बाद लुईस राजर्स प्रसिद्धि के शिखर पर जा पहुंचा। चारों ओर उसकी चर्चा होने लगी।

इस घटना से कोई पांच साल बाद द्वितीय विश्वयुद्ध में लुईस राजर्स की मृत्यु हो गयी। और, इसके साथ ही दोहरे व्यक्तित्व के स्वामी लुईस राजर्स का अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो गया।

— आसाम कॉटन मिल्स,
पोस्ट—चारद्वार-७८४१०३
जिला—शोणितपुर, (आसाम)

समदर्शी

महात्मा गांधी ट्रेन से कश्मीर जा रहे थे। रास्ते में तेज वर्षा होने लगी और यात्री भीगने लगे। गार्ड ने गांधीजी से कहा, 'कहें तो आपके लिए अलग व्यवस्था कर दूं !'

गांधीजी ने पूछा, 'फिर मेरी सीट का क्या होगा ?'

उसने कहा, 'यहां किसी अन्य को बैठा दिया जाएगा।'

गांधीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'माफ करना भाई, मेरे कारण दूसरे यात्री को कष्ट मुझे मंजूर नहीं; मेरे लिए सभी बराबर हैं।'

● डॉ. वीरेन्द्र झा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस औरत को क्यों जिंदा जला रहे हो ?

सत्रहवीं शताब्दी का अंतिम चरण । मसालों और भारतीय कपड़ों के व्यापार से आकृष्ट हो कर अनेक यूरोपीय शक्तियां देश के विभिन्न स्थानों पर अपनी व्यापारिक चौकियां, फैक्टरियां आदि स्थापित कर रही थीं । इन यूरोपीय शक्तियों के कारिंदे यूरोप की मनोहारी स्वास्थ्यवर्धक और शीतल जलवायु को छोड़कर भारत और यहां की सूखी गरम और [illegible] जलवायु में अपने मित्रों और परिवारों [illegible] हजारों मील दूर दस-पंद्रह रुपये के [illegible] वेतन पर काम करते थे ।

कोड़ों से पिटाई

ईस्ट इंडिया कंपनी का एक ऐसा ही [illegible] था— जाब चर्नाक । वह सन् १६५५ [illegible] पहुंचा । उसने देश के सभी भागों में [illegible] गुमाश्ते के रूप में कार्य किया । वह [illegible] साहसी, दूरदर्शी और मेहनती अंगरेज [illegible] भारत में उसका समय कभी आनंद से [illegible] कभी कष्ट में बीता । एक बार एक मुग[illegible] सूबेदार की नाराजगी के कारण उसे कोड़े [illegible] पिटना भी पड़ा ।

एक दिन जाब चर्नाक बंगाल के [illegible] में अपना घोड़ा दौड़ाते हुए जा रहा था । अचानक उसके कानों में घंटे, घड़ियाल [illegible] मजीरे की आवाज आयी । शीघ्र ही उस[illegible]

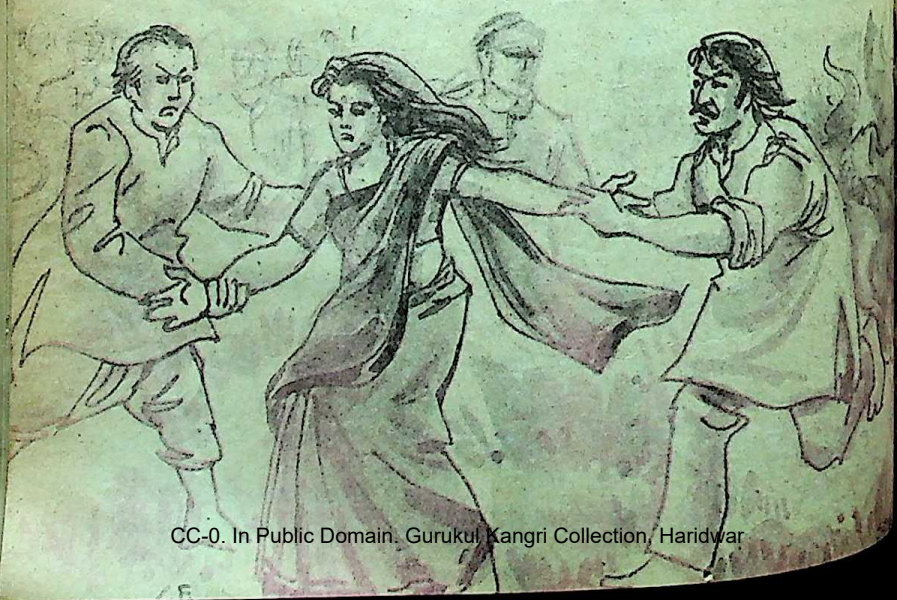

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ा उस स्थान पर पहुंच गया जहां से यह आवाज आ रही थी ।

जाब चर्नाक ने जो कुछ देखा उससे उसकी आंखें फटी-की-फटी रह गयीं । लोगों की विशाल भीड़ एक चिता को घेरकर खड़ी थी । चिता पर किसी कुलीन पुरुष का पार्थिव शरीर रखा था । लोगों की भीड़ चिता पर लकड़ियां लगा रही थी । कुछ लोग लाल साड़ी पहने एक सुंदर युवा स्त्री को चिता में बिठाने का प्रयत्न कर रहे थे । आसन्न मृत्यु से भयभीत वह युवती एक कदम आगे को और दो कदम पीछे को रखती थी । हर बार जब वह थोड़ा पीछे को हटने का प्रयास करती भीड़ के लोग उसे आगे को धक्का दे देते । भीड़ में कुछ तमाशबीन भी थे । वह जल्दी से जल्दी इस 'तमाशे' को देख अपने घर लौट जाना चाहते थे ।

भीड़ में कुछ लोग चिल्ला रहे थे । 'सती को सदेह स्वर्ग मिलता है ।' दूसरे जोर-जोर से ढोल-नगाड़े आदि बजाकर और जय-जयकार करके वातावरण को और रहस्यमय बना रहे थे । बीच में भीड़ 'सती माता की जय' के नारे भी लगा रही थी । उसकी आंखें करुण पुकार कर रही थीं, मुझे बचा लो मैं मरना नहीं जीना चाहती हूं ।' लेकिन उस विशाल भीड़ में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो जीवन रक्षा की उस अपील को सुनने को तैयार हो । उनकी सोचने की शक्ति नष्ट हो गयी थी । उनकी दया और

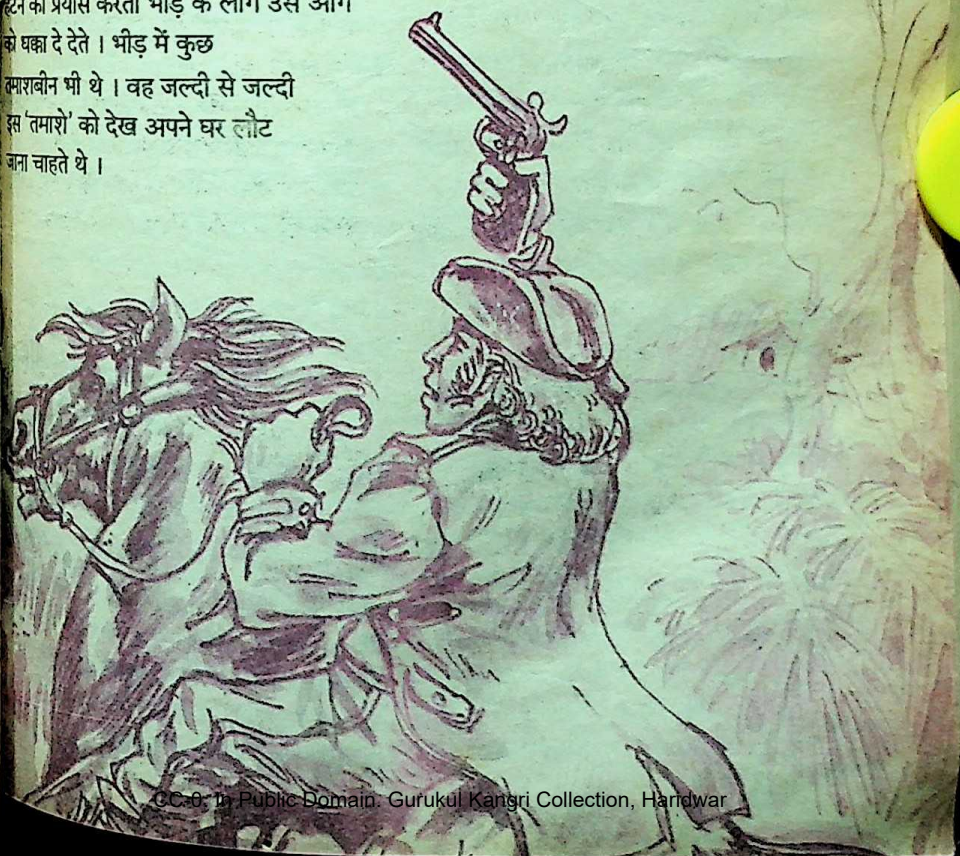

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप इस औरत का जिंदा क्यों जला रहे हैं ?" भीड़ फिरंगी को देख उत्तेजित हो गयी, भीड़ में से किसी ने कहा, "हम अपनी औरतों को जलाएं या बहाएं इससे तुम्हारा क्या मतलब ? भीड़ में से कुछ लोगों ने जाब चर्नाक पर कुछ पत्थर भी फेंके । कुछ लोगों ने हमला करने के लिए म्यान से अपनी तलवारें भी निकाल लीं ।

ममता मर गयी थी ।

जाब चर्नाक सब कुछ समझ गया । उसे भारत में रहते हुए बीस-एक वर्ष हो गये थे । भीड़ के लोग किसी विधवा को जबरदस्ती जलाकर सती बनाने की कोशिश में लगे थे । जाब चर्नाक ने अपना घोड़ा रोका । फिर उसने भीड़ से पूछा, "आप इस औरत को जिंदा क्यों जला रहे हैं ?" भीड़ फिरंगी को देख उत्तेजित हो गयी, भीड़ में से किसी ने कहा, "हम अपनी औरतों को जलाएं या बहाएं इससे तुम्हारा क्या मतलब ? भीड़ में से कुछ लोगों ने जाब चर्नाक पर कुछ पत्थर भी फेंके । कुछ लोगों ने हमला करने के लिए म्यान से अपनी तलवारें भी निकाल लीं ।

जाब चार्नाक स्थिति की गंभीरता को समझ गया । स्पष्ट था कि अगर उसने तत्काल दृढ़ता नहीं दिखायी तो भीड़ उस औरत को जिंदा जलाने के साथ जाब चर्नाक की जान भी ले सकती थी । उसने अपना पिस्तौल निकाला और हवा में दो गोलियां चलाने के बाद सख्त आवाज में कहा, " चुपचाप भाग जाओ, नहीं तो एक-एक को भून दूंगा ।

एक नया जीवन

चर्नाक की चेतावनी का तत्काल असर हुआ । लोगों की भीड़ जिधर नजर पड़ी उस दिशा में भाग ली । मिनटों में मैदान खाली हो गया । चिता पर धकेली गयी महिला डर और आतंक के मारे अपने होशोहवास खो चुकी थी । जाब चर्नाक ने उसे चिता से उतारा और किसी तरह अपने घोड़े पर बैठाया । फिर तेजी से अपने घर की दिशा में घोड़ा दौड़ाया ।

नौ-दस घंटे की लगातार यात्रा के बाद वह अपने घर पहुंचा तो थककर चूर हो गया था । घर पहुंचकर चर्नाक ने उस औरत को अपनी नौकरानी के सुपुर्द कर दिया । उसकी नौकरानी पड़ौस से एक ब्राह्मणी बुला लायी । ब्राह्मणी ने उस औरत को अपने संरक्षण में ले लिया ।

कृतज्ञ महिला

चर्नाक ने उस औरत को पूरा सम्मान और सुरक्षा प्रदान की । उसने स्वयं को कभी उस औरत पर नहीं थोपा । वह सदैव एक पर्दे की ओट में उससे बात करता था । चर्नाक ने कभी उसके कमरे में प्रवेश नहीं किया । चर्नाक के उदार व्यवहार ने महिला का दिल जीत लिया । अपने प्राण बचाने के लिए वह उसकी ऋणी तो पहले से ही थी, चर्नाक के गरिमापूर्ण आचरण से वह उसकी मुरीद हो गयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिता से गृहिणी तक

एक दिन चर्नाक ने उस औरत से कहा, 'मैं तुम्हारे साथ गृहस्थी बसाना चाहता हूं। लेकिन यह तभी संभव है जब तुम इसके लिए तैयार होओ।' औरत ने कुछ उत्तर नहीं दिया। चर्नाक निराश होकर अपने कमरे में लौट गया। लेकिन वह औरत दिल-ही-दिल में अपने प्राणदाता को पूजती थी। फिर एक दिन बहुत कुरेदने पर उसने अपने मन की बात चर्नाक की नौकरानी को बतायी। नौकरानी के सुझाव पर उसने ईसाई मत और मारिया नाम स्वीकार कर लिया। फिर एक दिन धूम-धड़ाके के साथ दोनों स्थानीय गिरजाघर में विवाह-सूत्र में बंध गये।

जाब चर्नाक मारिया से बहुत प्यार करता था। मारिया ने चर्नाक को सुखी-दांपत्य जीवन और आठ बच्चे दिये। चर्नाक अपनी भारतीय पत्नी पर जान देता था। एक महामारी में पत्नी की असमय मृत्यु ने उसे जबरदस्त आघात पहुंचाया।

जाब चर्नाक को सन् १६८६ में कंपनी ने बंगाल की खाड़ी का गवर्नर नियुक्त किया। चर्नाक भारतीय रईसजादों की तरह रहता था और मलमल का कुर्ता और तंग पाजामा पहनता था। वह भारतीयों की तरह हुक्का पीने का भी शौकीन था।

कलकत्ता शहर का निर्माता

चर्नाक हुगली के पश्चिमी तट पर अंगरेजों के लिए एक सुरक्षित बस्ती बसाना चाहता था। इसके लिए उसने सूतानाती, गोविंदपुर और कालिकत्ता गांवों को चुना। कंपनी के बड़े अधिकारी चर्नाक की इस पसंद से खुश नहीं थे। लेकिन चर्नाक उनको यह विश्वास दिलाने में सफल हुआ कि उसकी पसंद सर्वोत्तम है। अतः कंपनी ने स्थानीय जमींदार से तीन गांव खरीद कर सन् १६९० में ब्रिटिश बस्ती की नींव रखी। यही बस्ती कालांतर में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी, महानगरी और भारत की प्रमुख औद्योगिक नगरी बनी। इस तरह जाब चर्नाक को कलकत्ता की स्थापना का भी श्रेय है।

— २२ मैत्री एपार्टमेंट्स
ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

दुर्लभ है गजलक्ष्मी प्रतिमा

दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में उद्योगनगरी कोटा से अड़तीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है बूंदी नगरी। जो कि अपने शिल्प और वास्तुकला से पर्यटकों को आकर्षित करने में समर्थ है। इसी शिल्पकला की बानगी है— गजलक्ष्मी की अद्भुत प्रतिमा।

सद्यःस्नाता द्विभुजा लक्ष्मी को हाथियों द्वारा घटाभिषेक, केशराशि से गिरते जल को चोंच से पीते हंस और देवी के निचले भाग को पूर्णतः ढंकते श्री यंत्र (कमल) एवं उसके नीचे दो हाथी इस मूर्ति को विशिष्टता प्रदान करते हैं। गजलक्ष्मी की यह प्रतिमा एक पूर्वाभिमुख शिव मंदिर में शिवलिंग के पीछे दीवार से सटकर लगी हुई है। 'तंत्र' और 'सृजन' की परिचायक गजलक्ष्मी की यह मूर्ति कालक्रमानुसार उत्तरमध्यकालीन है।

—पीयूष 'पाचक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य कथा

भूतों की फोटो खींची और फिल्म बनी !

● अमिताभ स.

भूत-प्रेत के भटकने की सत्य घटनाएं तो अनेक हैं, लेकिन कैमरे की रील में भूत को कैद करने की मिसालें दुनियाभर में शायद एक-दो ही होंगी ।

पहले भूत की फोटो खींचने की सच्ची घटना— सन् १९६६ की बात है । कनाडा के पर्यटक श्री आर.डब्ल्यू. हार्डी और उनकी पत्नी ब्रिटेन की सैर करने आये । वे ग्रीनविच [illegible] सत्रहवीं शताब्दी के 'क्वींस हाउस' को देखने गये । 'क्वींस हाउस' आज नेशनल मैरीटाइम म्यूजियम का हिस्सा है ।

हार्डी और उनकी पत्नी ने महारानी के [illegible] के बहुतेरे फोटो खींचे । उनमें एक फोटो [illegible] सीढ़ियों का था । हैरत की बात है कि ज[illegible] खींची गयी, तो सीढ़ियां खाली थीं, लेकिन फोटो तैयार होने के बाद सीढ़ियों के पास [illegible] एक-दो धुंधली छायाएं दिखायी दी । [illegible] बाकायदा बारीकी से जांच की गयी । लेकि[illegible] रील की तकनीकी खराबी की वजह से, [illegible] का उभरना साबित नहीं हुआ ।

भटकती आत्माएं

वैसे, फोटो के प्रमाण से पूर्व, 'क्वींस [illegible] में भूत-प्रेत भटकने की किसी को कतई [illegible] खबर नहीं थी । मगर फोटो खींचने के [illegible] 'क्वींस हाउस' के कर्मचारियों का मानना [illegible] कभी-कभार सीढ़ियों के समीप अजीबो-[illegible] आकृतियां दिखायी देती रही हैं । कहते [illegible] आकृतियां जरूर सत्रहवीं शताब्दी के [illegible] 'क्वींस हाउस' में रहनेवालों की भटकती [illegible] हैं ।

इससे भी ताज्जुब की बात है कि [illegible] भूत की एक फिल्म बनी और ब्रिटिश [illegible] पर प्रदर्शित भी की गयी । दुनिया के [illegible] दूरदर्शन द्वारा वास्तविक भूत की फिल्म [illegible] करने की यह पहली घटना है । दरअस[illegible] फिल्म की शूटिंग 'मोरले हाउस' नामक [illegible] भूत-बंगले में हुई थी । 'मोरले हाउस' [illegible] के नोरविन नगर, पूरब एंजिला में है । [illegible] भूत-बंगला सेक्सन काल से भी पहले [illegible] ज्यों-का-त्यों खड़ा है । खंडहर इमारत [illegible] रहने लायक नहीं है, लेकिन रिक्की [illegible] नामक निर्धन किसान अब तक खंडहर [illegible] अपना घर बनाये हैं ।

एक रात भुतहाघर में

रिक्की कोटरइल की एक सहेली [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूथ प्लांट। जनवरी १९६६ में, दोनों में दोस्ती हो गयी थी। भूत-प्रेतों की शौकीन रूथ प्लांट की रिक्की के साथ दिनोंदिन मित्रता बढ़ती गयी। वे एक-दूसरे के घर आने-जाने लगे। सन १९६६ में रूथ अपनी एक सहेली एना के संग पूरब एंजिला किसी काम से गयी। वहां उसे काम निबटाते-निबटाते रात हो गयी। उन्होंने रात वहीं ठहरना ठीक समझा, किंतु किसी होटल में उन्हें कमरा नहीं मिला।

रूथ को रिक्की की याद आयी। वह बेझिझक उसके घर गयी और बोली, "रिक्की, हमें किसी भी स्थानीय होटल में रात बिताने के लिए कमरा नहीं मिला। क्या हम एक रात तुम्हारे यहां गुजार सकते हैं ?"

"हां, क्यों नहीं ? तुम्हारा ही तो घर है।" रिक्की ने उनका स्वागत किया।

रात्रि-भोज और गपशप के बाद रिक्की दूसरे कमरे में सोने चला गया। दोनों सहेलियों ने रात रिक्की के निजी कमरे में बितायी।

दिनभर की थकान के कारण दोनों को बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद आ गयी। तड़के रूथ की आंख खुली। उठकर वह खंडहर से बंगले में घूमने लगी। किसी जादुई शक्ति वह बरबस सामनेवाले कमरे में खिंची हुई चली गयी। कमरे की खिड़की का शीशा टूटा हुआ था। तेज ठंडी हवा चल रही थीं।

अगले ही क्षण, रूथ को मंद-मंद सुर में प्रार्थनाएं सुनायी देने लगीं। आरती के साथ-साथ सामने टूटी खिड़की में धीरे-धीरे एक औरत की आकृति बनने लगी। और रूथ ने देखा— सामने एक भोली-भाली नवयुवती खड़ी मुसकरा रही है।

रूथ फौरन दौड़ती हुई, यह अजूबा एना को दिखाने उसके कमरे में गयी। कमरे में ऐना को घबरायी देख, रूथ भी भयभीत हो गयी। कुछ देर बाद एना ने बताया कि उसने किसी औरत के लंबी-लंबी सांस लेने की ध्वनि सुनी है।

रूथ ने सारा किस्सा रिक्की को सुनाया। लेकिन वह इस मामले से बिलकुल बेखबर था। फिर रूथ ने आस-पड़ोसवालों से औरत के भूत के बारे में पूछताछ की, तो उसे मालूम हुआ कि बंगले में अकसर किसी स्त्री की छाया

अगले ही क्षण, रूथ को मंद-मंद सुर में प्रार्थनाएं सुनायी देने लगीं। आरती के साथ-साथ सामने टूटी खिड़की में धीरे-धीरे एक औरत की आकृति बनने लगी। और रूथ ने देखा— सामने एक भोली-भाली नवयुवती खड़ी मुसकरा रही है।

खिड़की में खड़ी दिखायी देती है। धीरे-धीरे रूथ की दिलचस्पी बढ़ती गयी। मामले की अंतिम तह तक पहुंचने हेतु उसने प्रेतात्मा विशेषज्ञ श्री बोरोरान से संपर्क किया। विशेषज्ञ बोरोरान 'मोरले हाउस' गये, जहां उन्होंने औरत का भूत देखा। उन्होंने बताया कि बंगले में औरत के भूत के अलावा एक योगी का भूत भी रहता है।

फिल्म की शूटिंग

एक अरसे के बाद, रूथ को रिक्की का फोन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

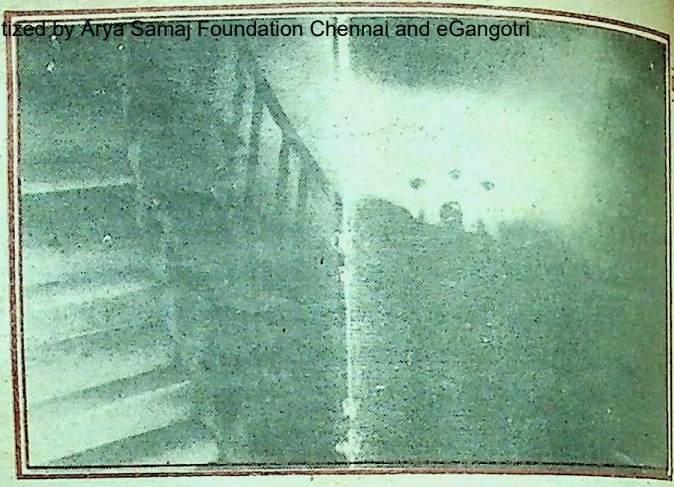

सीढ़ियों के पास भूत की छाया

आया । रिक्की ने फोन पर कहा, "बोरोरान सारी रात मेरे बंगले में टेलीविजन के लिए विशेष फिल्म लेना चाहते हैं । मेरी इच्छा है कि इस फिल्म की शूटिंग में तुम भी भाग लो ।"

निर्धारित दिन फिल्म की शूटिंग प्रारंभ हुई । रातभर 'मोरले हाउस' में शूटिंग जारी रही ।

फिल्म बनकर तैयार हुई और एंजिला दूरदर्शन केंद्र ने प्रदर्शित की । लाखों दर्शकों ने फिल्म को दिलचस्पी से देखा । औरत का भूत दर्शकों को साफ नजर आया । लेकिन रूथ सहित केवल चौबीस दर्शकों ने फिल्म में बोरोरान और कारनेल के मध्य एक दाढ़ीवाले योगी की हलकी-सी छाया को भी देखा ।

दर्शकों के जोरदार अनुरोध पर फिल्म को पुनः एंजिला दूरदर्शन पर दिखाया गया । इस बार योगी के भूत को पहचाननेवालों की संख्या इकत्तीस तक पहुंच गयी । नारविच में रहनेवाली इलवइया पानइटा ने तो टी.वी. पर प्रदर्शित दाढ़ीवाले योगी के भूत का रेखाचित्र बना डाला । लंबा चोगा और सिर पर टोपी पहने वह योगी प्रार्थना-मुद्रा में खड़ा था ।

भूतों का रहस्य

औरत और योगी का भूत किसकी आत्माएं हैं ? कोई नहीं जानता । इतिहास गवाह है कि 'मोरले हाउस' से वाकई एक औरत और एक साधु का जीवन जुड़ा है । सोलहवीं शताब्दी में, इंगलैंड के हेनरी (सप्तम) से एलिजाबेथ तक के राजकुल एक सदस्या नवयुवती इस बंगले में रहती वह सदा प्रगति के पथ पर अग्रसर दुनिया देखना चाहती थी । इसी तीव्र इच्छा के वह न चाहकर भी आज दुनिया को चांद पहुंचे देख रही है ।

योगी का भूत वास्तव में बारहवीं किसी एलेक्जैंडर-डी-लानली की आत्मा पर किसी व्यक्ति के कत्ल का आरोप था एलेक्जैंडर-डी-लानली अपना अपराध तैयार नहीं था । उसे दस मील तक घोड़े पीछे बांधकर घसीटा गया । आखिर त्यागते वक्त उसने अपना अपराध कबूल किया । उसकी मौत उसी स्थान पर, जहां हुई, जहां आज यह भूत-बंगला है ।

—५१, राजा, दिल्ली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूनी नीलम के चमत्कार

● बलराम दुबे

हमारी आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गयीं। वह खून के समान बिलकुल लाल था। ऐसा प्रतीत होता था— जैसे रक्त की बूंद जमकर पत्थर हो गयी हो, और जब जौहरी ने हमें उसका नाम बताया तो हम रोमांचित हो उठे। उसने कहा, "साहब यह खूनी नीलम है।" हुआ यह था, मैं अपने चित्रकार मित्र के साथ नीलम खरीदने करोलबाग की उस दूकान पर गया था। जौहरी ने पहले तो हमारी आवभगत की और फिर एक-एक कर कई नीलम दिखाये। इनकी कीमत पांचसौ से लेकर पचास हजार तक थी।

और इसी क्रम में उसने हमें सबसे अंत में वह खूनी नीलम दिखाया था। उसने कहा कि साहब नीलम बेहद चमत्कारिक और तत्काल प्रभाव दर्शानेवाला रत्न होता है। मैंने कहा, "हां इसका तो हमें भी अनुभव है।" हमारे संपादक, जो हिंदी के एक सुविख्यात उपन्यासकार भी हैं, के पास एक गहरे नीले रंग का चमत्कारिक नीलम है।" फिर मैंने उसे सारी घटना सुनायी कि किस तरह वह नीलम संपादकजी को प्रख्यात दिवंगत ज्योतिषी और हस्तरेखा विशारद पी.टी. सुंदरम ने दिया था। संपादकजी के संस्मरण मैंने उसे सुनाये।

कार की स्पीड और दर्द की दीवार

उन्होंने मुझे बताया था कि एक दिन शनिवार को पी.टी. सुंदरम ने सुबह-सुबह मुझे फोन किया। उन्होंने कहा कि तुरंत मेरे पास होटल पहुंच जाइए। उनके साथ हुए इस संक्षिप्त वार्तालाप ने मुझे होटल जाने के लिए विवश कर दिया।

जब मैं होटल पहुंचा तो सुंदरम साहब अपनी आलमारी में कुछ ढूंढ़ रहे थे। उन्होंने ढूंढ़ते-ढूंढ़ते मुझे बैठने के लिए कहा। कुछ देर बाद अपनी आलमारी से एक अंगूठी निकालकर मेरी मध्यमा में पहना दी। तत्पश्चात पी.टी. सुंदरम ने मुझसे कहा कि अब मुझे अपनी कार में चांदनी चौक ले चलिए। मैंने कहा कि एक टैक्सी कर लेते हैं उसमें आराम से चले चलेंगे क्योंकि चांदनी चौक के इलाके में कार चलाने से मुझे नफरत है। इतनी भीड़ होती है कि डर लगता है कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए, यह सुनकर उन्होंने कहा कि इसीलिए तो मैं चाहता हूं आज मेरे साथ तुम कार चलाकर चांदनी चौक ले चलो। अंततः मुझे सुंदरम की बात माननी पड़ी और मैं चांदनी चौक गया। सुंदरम ने मुझे ऐसी जगहों में कार चलाने के लिए कहा जहां बेहद भीड़ थी।

वहां पहुंचकर सुंदरम ने कहा कि तुम जितनी तेजी से कार चला सकते हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाओ । सुंदरम के कहने पर मैं एक यांत्रिक मानव की तरह अपनी कार की स्पीड बढ़ाये चला जा रहा था । कुछ देर बाद सुंदरम ने मेरी पीठ थपथपायी और कहा कि बस, अब होटल चलो ।

दुर्घटना नहीं हुई

सुंदरम के कमरे में पहुंचते ही मैंने सबसे पहला सवाल किया कि "आप किस जन्म का बदला ले रहे हैं ? सुबह-सुबह क्या मेरी ड्राइविंग की परीक्षा ले रहे थे ? सुंदरम ने हंसकर कहा, "नहीं, मैं तुम्हारी ड्राइविंग की नहीं अपनी इस अंगूठी की परीक्षा ले रहा था । फिर उन्होंने मुझसे कहा कि देखो, आज मैंने तुम्हें बहुमूल्य रत्न दिया है । मुझे खुशी है कि यह नीलम तुम्हारे लिए शुभ सिद्ध होगा । मैंने पूछा कि आप यह कैसे कह सकते हैं ? सुंदरम ने कहा अगर यह नीलम तुम्हारे लिए शुभ न होता तो अब तक तुम किसी अस्पताल में पड़े होते । चांदनी चौक तुम्हें ले जाने का आशय यही था कि देखें तुम किसी दुर्घटना के शिकार होते हो या नहीं ?"

मैंने उस जौहरी को संपादकजी का यह अनुभव सुनाया तो वह बोला, "साहब, सुंदरमजी ने ठीक ही कहा था । अगर नीलम शुभ नहीं होता तो कोई-न-कोई दुर्घटना घट जाती ।"

विपत्ति झेलता पत्थर

दुर्घटना की बात सुनकर अचानक मेरे सामने वह दृश्य चलचित्र की भांति घूम गया । वह एक भयंकर दुर्घटना थी । आज भी उस घटना की याद करके मेरा रोम-रोम कांप उठता है । एक आदमी स्कूटर पर बैठा सामने से चला आ रहा था । उसकी बायीं ओर से एक बस तेजी से आयी और स्कूटरवाले ने अपना संतुलन खो दिया । वह बस के नीचे आ गया । बसवाले ने ब्रेक लगाये । टायरों और सड़क के बीच घर्षण से चिंगारियां उगलती हुई बस रुकी । उसके बाद तो जो नजारा देखने को मिला वह अविश्वसनीय सत्य था । स्कूटर सवार व्यक्ति बाल-बाल बच गया था । कुछ समय बाद वह सामान्य हुआ । उस व्यक्ति ने अपनी स्थिति देखकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि किस तरह भगवान ने उसे मौत के मुंह से बचाया है । अचानक उसकी निगाह अपने हाथ की अंगुली पर पड़ी । वह एकदम स्तब्ध रह गया । लोगों ने पूछा कि क्या हुआ तो उसने कहा कि उसकी कीमती अंगूठी गुम हो गयी है। वह बहुत निराश हो गया । अचानक जब बस चालक ने पुनः बस चलायी तो उसकी निगाह बस के टायरों पर पड़ी । वह चिल्ला उठा । उसकी अंगूठी बस के टायर में घुसी हुई थी । उसमें जड़ित अत्यंत कीमती रत्न कुछ क्षतिग्रस्त हो गया था । उसने कहा कि इसका सारा श्रेय उस ज्योतिषी को है जिसने मुझे यह रत्न पहनने के लिए कहा । आज इसी रत्न ने मेरे ऊपर आयी सभी विपत्तियों को झेला है ।

जौहरी ने मेरा ध्यान भंग करते हुए कहा, "क्या सोचने लगे साहब ?" मैं चौंक उठा, जैसे मुझे किसी ने जगा दिया हो । फिर उसने खूनी नीलम के बारे में बताना आरंभ किया, "अब इसी नीलम को ले लीजिए, अपने नाम के अनुसार यह वाकई एक खूनी नीलम है । उसने बताया कि यह खूनी नीलम संभवतः श्रीलंका से भारत लाया गया था । निश्चित है

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यह खूनी नीलम कई लोगों के पास रहा होगा। किंतु पिछले तीन-चार वर्षों में यह नीलम जिन-जिन के पास रहा उनकी बरबादी का हाल मैं जानता हूं। हमने उससे पूछा कि क्या आप हमें उन लोगों के नाम बता सकते हैं जिनके पास यह खूनी नीलम था, तो उसने कहा कि हां दो-तीन लोगों के पते तो मेरे पास हैं। फिर उसने बताया कि यह नीलम जिन्होंने खरीदा उनका रातोंरात दीवाला निकल गया था। उन्होंने वह दुर्लभ नीलम न चाहते हुए भी अपने किसी और संपन्न मित्र को दे दिया लेकिन नीलम ने वहां भी अपना खतरनाक असर दिखाया और नीलम घर में लाते ही उनके घर में आग लग गयी। इसके बाद वह नीलम जिस व्यक्ति के पास गया उसने उसे इस तरह दुर्घटनाग्रस्त कराया कि वह आज तक अपंग है। हमें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह छोटा-सा पत्थर इतना खतरनाक हो सकता है। हमने सोचा कि हम क्यों न इन व्यक्तियों से मिलकर वस्तुस्थिति का पता लगायें।

पहले हम चांदनी चौक में उस व्यक्ति के घर गये जिसने सर्वप्रथम यह नीलम खरीदा था। वहां गये तो हमें जो अजूबा देखने-सुनने को मिला उससे हम अवाक् रह गये और जिन घटनाओं को मात्र एक संयोग समझा जा रहा था उन पर हमें विश्वास होने लगा। वहां पर आसपास के लोगों से पता लगा कि व्यापार में अचानक भारी घाटा होने के कारण उन्हें अपना घर और फैक्टरी बेच देनी पड़ी। आजकल वे हरिद्वार में रह रहे हैं। हमारी उत्सुकता उनसे मिलकर उनकी कहानी जानने की थी। हमने उनके एक परिचित से हरिद्वार का उनका पता लिया और सोचा एक दिन हरिद्वार जाकर उनसे अवश्य मिलेंगे। मन में जो जिज्ञासा बार-बार उठ रही थी उसे रोक पाना मुश्किल था। एक दिन अचानक हरिद्वार के मेरे मित्र के यहां से आमंत्रण आया। मुझे अपनी जिज्ञासा शांत करने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा, यह सोचकर मैंने हरिद्वार की टिकट लेकर अपने कार्यालय के एक मित्र के साथ हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना लिया। खूनी नीलम की कहानी हमें बार-बार झकझोर रही थी। उसके संबंध में सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते थे। हरिद्वार में

उसने बताया कि यह खूनी नीलम संभवतः श्रीलंका से भारत लाया गया था। निश्चित है कि यह खूनी नीलम कई लोगों के पास रहा होगा। किंतु पिछले तीन-चार वर्षों में यह नीलम जिन-जिन के पास रहा उनकी बरबादी का हाल मैं जानता हूं।

खूनी नीलम के शिकार उस व्यक्ति का पता लगाने हम चल पड़े। हमें अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ा। वे सज्जन हरिद्वार में अपना छोटा-सा मकान लेकर रह रहे थे।

उनसे मिलकर हमने उस कहानी की पुष्टि की जो अब तक हमें मात्र कहानी लग रही थी। उन्होंने कहा कि उस नीलम की याद मुझे मत दिलवाइए। उसके बारे में सोचकर मेरा रोम-रोम कांप उठता है। उन्होंने बताया कि यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटना दिल दहला देनेवाली है । मेरे एक अजीज मित्र थे । उन्होंने जब इस घटना के बारे में सुना तो मेरे साथ दुःख बांटने और सहानुभूति व्यक्त करने मुझसे मिलने चले आये । मैंने उन्हें नीलम के बारे में बताया । उन्होंने नीलम देखा तो कहा कि यह तो अद्‌भुत नीलम है । मेरे ऊपर शनि की महादशा चल रही है । अतः आप यह नीलम मुझे दे दीजिए । जो नीलम मैंने उतारकर इस निश्चय के साथ रख दिया था कि इसे मैं मोक्षदायिनी गंगा के हवाले कर दूंगा, उसे मैं अपने मित्र को कैसे दे सकता था ? मैंने उन्हें अपने पतन की कहानी सुनायी । मैंने उन्हें बताया कि मुझे भी शनि की महादशा चल रही थी । इस खूनी नीलम को मैंने उसी के निवारण के लिए पहना था परंतु इसने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा । इन सब बातों में विश्वास न करनेवाले मेरे मित्र कुछ नास्तिक किस्म के व्यक्ति थे । उन्होंने मेरे साथ हुई दुर्घटना को महज संयोग माना और नीलम मेरे से ले लिया । मैंने न चाहते हुए उन्हें वह नीलम दे दिया । मेरे मन में एक डर-सा बैठ गया था कि उनके साथ यह खूनी नीलम कैसा व्यवहार करेगा ?

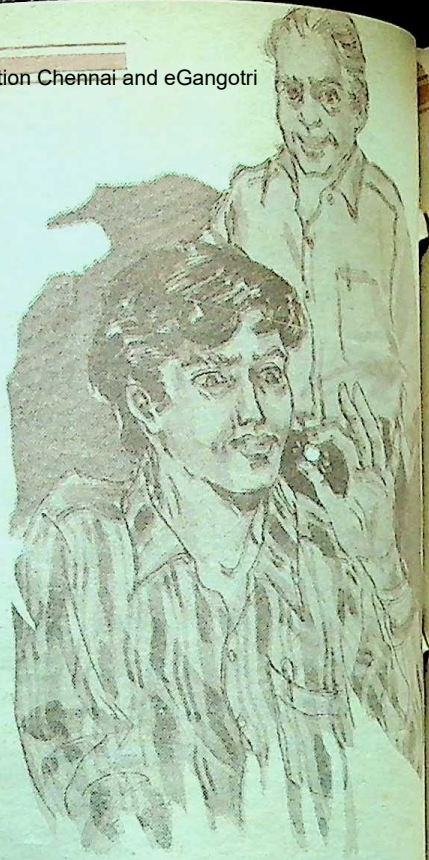

घर में आग लग गयी

जिसका डर था वही हुआ । नीलम घर में पहुंचा नहीं कि उसने अपना चमत्कार दिखाया । उनके घर में भयंकर आग लग गयी और वे बेचारे बाल-बाल बचे । इस घटना ने उनके मन को झकझोरकर रख दिया । उनका हृदय परिवर्तन हुआ और उन्होंने इस घटना का जिम्मेदार उस खूनी नीलम को माना ।

वे मुझसे अभी कुछ दिन पहले ही मिले तो मैंने उनसे पूछा कि आपने उस नीलम का क्या किया ? तो उन्होंने जो बात बतायी वह और रोमांचक और रहस्यमय घटना है । उन्होंने कहा कि एक दिन मेरे मन में विचार आया कि इस नीलम को किसी ऐसी जगह फेंक दूंगा जहां से यह किसी के संपर्क में न आ सके और किसी अन्य को अपना शिकार न बना पाये । इसी उधेड़बुन में लगे मेरे मित्र को अचानक एक यात्रा के दौरान एक व्यक्ति मिला । बातचीत होते-होते बीच में उन्होंने खूनी नीलम की घटना उसे सुनायी । उसने मेरे मित्र से आग्रह किया कि वह नीलम अब आपके अनुकूल नहीं है इसलिए उसे आप चाहें तो मुझे उचित दर पर बेच दीजिए । वह नीलम उन्होंने उसे बेच दिया । अचानक एक दिन उसका पत्र आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें लिखा था कि खूनी नीलम की वजह से ही वह लकवे का शिकार हो गया है ।

उनसे अपाहिज व्यक्ति का पता लेकर हम उसके यहां गये । वहां जाकर पता चला कि नीलम ने अपना विपरीत चमत्कार दिखाया है । अब तक वह लोगों पर विपत्तियां डालता रहा लेकिन उन्होंने जो घटना हमें बतायी वह एकदम अलग है । उनसे पता चला कि एक दिन रास्ते में अचानक उन्हें एक भिखारी मिला । उन्होंने वह खूनी नीलम उस भिखारी को यह सोचकर दान कर दिया कि यह बेचारा तो वैसे ही फटेहाल है, अतः यह खूनी नीलम इसका क्या बिगाड़ लेगा ।

खूनी नीलम

समय बीतता गया । कुछ दिन बाद वह हादसा और खूनी नीलम की याद उनके मानस पटल पर फीकी पड़ती गयी । उधर खूनी नीलम ने अपना चमत्कार दिखाना जारी रखा ।

उन्होंने बताया कि एक दिन अचानक मेरी आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । मेरे साथ घटना ऐसी घटी जिसने खूनी नीलम की वजह से मेरे साथ जो हुआ था उसके बावजूद मेरे मन में उस नीलम के प्रति आस्था उत्पन्न कर दी । मुझे विश्वास हो गया कि इस अद्भुत रत्न को जो पसंद आ जाए उसे यह आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है और जिसके अनुकूल न हो उसे गर्त में धकेल देता है । मुझे एक सबक मिला कि हमें इन रत्नों को महज एक खिलवाड़ समझकर और मजाक के तौर पर नहीं पहन लेना चाहिए । कौन-सा रत्न हमारे अनुकूल होगा, इस संबंध में पूरी सलाह किसी विद्वान व्यक्ति से लेकर ही हमें कोई रत्न धारण करना चाहिए ।

उन्होंने इस आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता का कारण बताया तो उसका हमारी मनःस्थिति पर अप्रत्याशित प्रभाव पड़ा । उन्होंने बताया कि एक दिन की बात है, मैं अपने बगीचे में व्हीलचेयर पर बैठा हुआ था । अचानक एक विदेशी कार मेरे घर के आगे आकर रुकी । उसमें से एक आकर्षक व्यक्तित्व मेरी ओर बढ़ा चला आ रहा था । उसने पूछा कि क्या आपने मुझे पहचाना ? मैंने प्रश्नवाचक निगाहें डालते हुए अपना उत्तर दिया, "नहीं साहब मैं आपको नहीं पहचान पाया ।" उसने जब कहा कि आपने मेरी जिंदगी बदल दी और मुझे यहां तक पहुंचा दिया । आप याद कीजिए, आपने एक खूनी नीलम राह चलते एक भिखारी को दान कर दिया था । यह सुनकर मैं चौंका और खूनी नीलम की याद ताजा हो आयी । मैंने हैरानी से पूछा कि क्या हुआ उस भिखारी के साथ ? उस व्यक्ति ने कहा कि वह भिखारी मैं ही हूं जिसे आपने यह नीलम दिया । उस दिन जब आप मेरी दुकान पर आये थे तो मैंने आपको पहचानने में गलती नहीं की, इसकी मुझे प्रसन्नता है । उस नीलम ने मेरे जीवन में महान परिवर्तन कर दिया । मेरे मन में अचानक एक दिन कुछ करने का विचार आया और मैंने भीख मांगना छोड़कर कबाड़ी का काम शुरू कर दिया । मेरा काम ईश्वर की और उस खूनी नीलम की कृपा से चल निकला । आज मेरा बहुत बड़ा कारोबार है । आपको मैं ईश्वर का दूत मानता हूं जिसने मुझे यहां तक पहुंचाया ।

—ई-८०४-ए, एम.आई.जी. फ्लैट्स, प्रताप विहार
गाजियाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोली किसे लगी— कौए को या लड़की को !

● राजेश कुमार

साढ़े नौ बज चुके थे रात के । लेकिन अभी रात का अंधियारा नहीं घिरा था क्योंकि इंगलैंड में गरमियों के दिन बहुत लंबे होते हैं । एक किसान अपने मवेशी को लिये हुए गांव लौट रहा था । रास्ता सुनसान था । दोनों ओर हरी-भरी ऊंची-ऊंची झाड़ियां खड़ी थीं । किसान ने देखा कि रास्ते के एक ओर एक साइकिल पड़ी है और उसके पास ही एक नौजवान लड़की औंधे मुंह गिरी पड़ी है । उसने लड़की को सीधा किया । उसका चेहरा खून से लथपथ था । लड़की उसी के गांव की थी । नाम था— बेला राइट, उम्र लगभग इक्कीस साल । मां-बाप की इकलौती संतान ।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि उसकी बायीं आंख के नीचे गोली लगी है, जो खोपड़ी के पिछले हिस्से को फोड़ती हुई निकल गयी है । घटना-स्थल की जांच-पड़ताल करने पर पुलिस को दो चीजें मिलीं । एक तो खाली कारतूस जो लाश से सत्रह फीट दूर पड़ा था और लगता था कि इसे पैर से दबाकर जमीन में धंसाने की कोशिश की गयी हो । दूसरे, खून से सने पंजे के निशान । छह जोड़े पंजे के निशान लाश की ओर आते थे और छह जोड़े जाते थे एक फाटक की ओर । रास्ते के दूसरी ओर घनी झाड़ियों के बीच एक बाग का बड़ा-सा फाटक था । सफेद रंग से पुते इस फाटक के सबसे ऊपरी धड़ पर खून से सने पंजे के निशान थे । पंजे किसी पक्षी के थे । बाग की छानबीन करने पर एक बड़ा-सा काला कौवा मरा हुआ पड़ा मिला । कौवा अधिक खून पी जाने के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होश आने पर उसने बताया कि एक शाम वह बंदूक लेकर खेत में शिकार खोज रहा था कि उसने रास्ते के उस पार सफेद रंग के पुल फाटक पर एक कौए को बैठे देखा तो उसने निशाना साधकर गोली चला दी ।

मर गया था, शायद ।

गांववालों ने बताया कि एक तो इस इलाके में कौवे हैं ही नहीं और अगर एकाध कौवा कहीं से आ गया हो, तो कौवा खून नहीं पीता । कौवे को लेकर पुलिस अधिकारियों में काफी मतभेद था । कौवा उनके लिए एक पहेली बन गया कि कौवे ने इतना खून आखिर कब और कैसे पी लिया जबकि लाश वहां अधिक देर तक नहीं पड़ी रही ।

बेला की मां ने बताया कि आज बेला की छुट्टी थी । शाम को वह अपने चाचा से मिलने गालबी गांव गयी थी । चाचा ने बताया कि बेला उससे मिलने आयी थी । उस समय घर पर उसका दामाद आया हुआ था । बेला के साथ एक युवक भी था, जो अपनी साइकिल लिये बाहर ही खड़ा रहा । उस युवक के बारे में पूछने पर बेला ने अपने चाचा को बताया था कि वह युवक को नहीं जानती । घंटे-डेढ़ घंटे बाद बेला बाहर इंतजार करते हुए युवक से बातचीत करती हुई वापस लौट गयी । इसके घंटेभर बाद बेला मरी हुई पायी गयी ।

इंतजार करनेवाले युवक की हुलिया पुलिस ने प्रचारित की साथ ही उसकी साइकिल के हरे रंग का भी उल्लेख किया ।

पुलिस और फिर स्काटलैंड यार्ड के जासूसों ने बहुत हाथ-पैर मारे लेकिन हत्या और हत्यारे का कोई सुराग नहीं मिला । हार-थककर फाइल 'दाखिल-दफ़र' कर दी गयी ।

लेकिन, एक दिन हरी साइकिल का सुराग अचानक मिल गया । कोयले से लदी एक नाव लाइसेस्टर नगर के पास की नहर से गुजर रही थी कि नाव को किनारे से बांधने का रस्सा नहर में गिर गया और उसके हुक में फंसा हुआ एक साइकिल का फ्रेम ऊपर चला आया । यह फ्रेम हरी रंग की साइकिल का था । फिर क्या था पुलिस ने उस जगह जाल डालकर साइकिल के दूसरे हिस्से-पुरजों के साथ कारतूस की एक पेटी भी बरामद कर ली, जिसमें सात कारतूस थे ।

हरी साइकिल वर्किंघम में बनी एक विशेष मॉडल की थी । साइकिल से सभी मार्क और नंबर मिटा दिये गये थे । लेकिन एक जगह नंबर मिटने से रह गया था, उसके आधार पर पता चला कि यह साइकिल विवियन नामक व्यक्ति ने खरीदी थी । फौज से रिटायर्ड विवियन चेल्टेनहम के स्कूल का अध्यापक था, जो अपनी अपंग मां के साथ लाइसेस्टर में रहता था ।

परिस्थितिगत सारे साक्ष्य विवियन के खिलाफ थे । अतः पुलिस ने विवियन पर बेला की हत्या का मुकदमा चलाया ।

विवियन ने अदालत में दिये बयान में कहा कि मैं उस रात यूं ही घूमने निकला था । मैं इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाके से परिचित नहीं था । रास्ते में मुझे एक लड़की मिली, जो रास्ते में खड़ी हो अपनी साइकिल का मुआइना कर रही थी । उसने मुझे रोककर रिच मांगी क्योंकि, उसकी साइकिल का अगला पहिया कुछ डगमगा रहा था, लेकिन कोई खास परेशानी नहीं थी । रिच मेरे पास था नहीं । वहां से हम दोनों साथ-साथ चले । लड़की ने बताया कि वह अपने रिश्तेदार से मिलने गलबी गांव जा रही है । जहां उसे सिर्फ दस-पंद्रह मिनट लगेंगे । इससे मैंने समझा कि शायद, वह मुझे रुके रहने का संकेत दे रही है । शायद, वापसी में उसे इस सुनसान रास्ते में किसी सहयात्री की जरूरत हो । मैं उसका इंतजार करता हुआ घर के बाहर खड़ा रहा । और उसके साथ ही वापस लौट पड़ा । बीच रास्ते में मेरी साइकिल का टायर बस्ट हो गया । मैं साइकिल ठीक करता हुआ वहीं रास्ते में रह गया और लड़की अपनी राह चली गयी ।

विवियन ने आगे कहा, कि दूसरे दिन जब मैंने उस लड़की की हत्या की खबर पढ़ी तो मैं बेहद डर गया और मैंने साइकिल तोड़कर नहर में फेक दी ।

विवियन के इस बयान को कोई गलत साबित नहीं कर सकता था लेकिन एक तो कोई चश्मदीद गवाह नहीं था । दूसरे उसके खिलाफ हत्या करने का कोई कारण और उद्देश्य भी सिद्ध नहीं किया जा सका । बेला के शरीर पर कोई चोट के निशान भी नहीं थे । लाश के पास मिले कारतूस और नहर से मिले कारतूस का एक जैसा होना महज संयोग था । जूरी ने विवियन को अंततः निर्दोष बरी कर दिया ।

आखिर, बेला की हत्या किसने की, यह आज तक रहस्य बना हुआ है । दरअसल, यह एक कहानी है, जिसे शर्लाक होम्स के निर्माता कानन डायल ने गढ़ा था और इसके रहस्य को रहस्य ही रहने दिया । लेकिन इस कहानी के रहस्य को सुलझाने का प्रयास एक अन्य जासूसी कहानी लेखक ट्रूमैन हम्फ्रीज ने अपनी एक कहानी में किया है, जिसके अनुसार इस इलाके में गोली के निशानेबाजी की एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता में इस इलाके के आसपास के बहुत-से युवकों ने भाग लिया । इसमें बहुत ही कठिन निशाने रखे गये जैसे—भागते हुए हिरणों व खरगोशों की परछाइयों के निशाने । ये सारे निशाने प्रतियोगियों के सामने अचानक ही जाते थे । इनमें एक निशाना अजीब था—झाड़ियों के बीच सफेद रंग से पुता एक फाटक और उस पर बैठा एक कौवा । जब यह निशाना सामने आया तो एक नवयुवक सहसा अवाक् रह गया और फिर बेहोश होकर गिर पड़ा । होश आने पर उसने बताया कि एक शाम वह बंदूक लेकर खेत में शिकार खोज रहा था कि उसने रास्ते के उस पार सफेद रंग के पुते फाटक पर एक कौए को बैठे देखा तो उसने निशाना साधकर गोली चला दी । इसी बीच रास्ते में साइकिल पर सवार एक लड़की सामने आ गयी और गोली कौवे को लगने के बजाय उसे जा लगी । तो यह था बेला की हत्या के रहस्य का समाधान । लेकिन यह समाधान वास्तविक नहीं है । बेला की हत्या का रहस्य तो आज तक रहस्य ही बना हुआ है ।

—सी. बी. ६६ डी, जी-८ एरिया, राजौरी गार्डन,
नयी दिल्ली-११००६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. क. **गौतम** बुद्ध के जन्म, बोधत्व-प्राप्ति, धर्मचक्र-प्रवर्तन एवं महापरिनिर्वाण से संबंधित स्थान कौन-से हैं ?

ख. किस घटना को धर्मचक्र-प्रवर्तन कहा गया है ?

२. क. **भारत** किन देशांतरों के मध्य स्थित है ?

ख. भारत का दक्षिणतम बिंदु क्या है ?

३. क. **अकबर** द्वारा शुरू किये गये 'दीन-ए-इलाही' को माननेवाला एकमात्र हिंदू, जो नवरत्नों में था, कौन था ?

ख. अकबर की समकालीन, गोंडवाना राज्य की, महिला शासक कौन थी ?

४. क. **किस** महिला को दो बार नोबेल पुरस्कार मिला है ?

ख. किन विषयों में ?

५. क. **इंगलैंड** और फ्रांस को जोड़नेवाले भूमिगत रेलमार्ग का क्या नाम है ?

ख. इसका उद्घाटन कब हुआ था ?

६. क. **विगत** मार्च में कौन-से उपग्रह प्रक्षेपण यान और कहां से सफल परीक्षण हुआ था ?

ख. उपग्रह का क्या नाम है ?

ग. उपग्रह के क्या उद्देश्य हैं ?

७. क. **देश** में १९९५ में चाय का उत्पादन कितना हुआ ?

ख. सन् २००१ तक देश में कितनी खपत होने का अनुमान है ?

८. क. **इस** वर्ष आयोजित विश्व कप क्रिकेट का खिताब किसने जीता ? किसको हराकर ?

ख. इस टूर्नामेंट में सर्वाधिक रन किसने बनाये ?

ग. भारतीय उप-महाद्वीप के कौन-से देश इस खिताब को जीत चुके हैं ?

९. **इस** वर्ष हेवीवेट मुक्केबाजी में किसने खिताब जीता है ?

१०. **बिड़ला** फाउंडेशन का १९९५ का 'शंकर पुरस्कार' किसे मिला है ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइये कि यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैक रहस्य-रोमांच

खून पीती रही एक खतरनाक कार

● जोसेफ नेस्वादूबा

एक वर्ष बाद, आज जब मैं अपनी इंगलैंड यात्रा के बारे में सोचता हूं, तो सबसे अधिक मुझे कारों की याद आती है। खासकर उस कार की, जिसने लगभग मेरे प्राण ही ले लिये थे। आज तक मैं विश्वास नहीं कर पाता हूं कि क्या सचमुच ऐसा हुआ था।

उस रात मैं अपनी एक मित्र के घर ठहर गया था। दूसरे दिन जब मैं होटल में पहुंचा, जहां मेरा मित्र ठहरा था और जिसके साथ मुझे बोल्सटर जाना था, तो मुझे पता चला कि वह होटल छोड़कर रवाना हो चुका है। होटलवालों ने मुझे बताया कि उसने अंतिम क्षण तक मेरी प्रतीक्षा की, पर उसे ट्रेन से बोल्सटर रवाना भी होना था। अतः वह चला गया। शायद, वह मुझसे नाराज भी था क्योंकि, उसने मेरे लिए होटल में कोई संदेश भी नहीं छोड़ा था।

अब शहर में मैं अकेला था। ८० लाख की आबादीवाले उस नगर में मैं किसी को भी नहीं जानता था। मेरी जेब में एक पैसा भी न था। मैं अपनी मित्र के ऑफिस गया, पर वह भी वहां नहीं थी। मैं उसके घर गया, पर वह वहां भी नहीं मिली।

अब बोल्सटर जाने के लिए केवल एक उपाय बचा था, और वह कि किसी कारवाले से लिफ्ट मांगूं। पर मैंने अपने देश में भी किसी से कभी कोई 'लिफ्ट' नहीं मांगी थी। यों भी मैं कुछ-कुछ गंजा हो चला था, और मुझ-जैसे सामान्य व्यक्ति को कोई 'लिफ्ट' देगा, इसमें संदेह था। पर मेरा बोल्सटर जाना बेहद जरूरी था। वहां एक बैठक आयोजित की गयी थी और उसी में भाग लेने मैं इंगलैंड आया था।

हारकर मैं एक पैट्रोल पंप के पास खड़ा हो गया। उम्मीद थी कि शायद, कोई तरस खाकर मुझे 'लिफ्ट' दे दे। पर ऐसा लगता था, कारवालों को जैसे मेरे अस्तित्व का पता ही न था। मैं निराश हो चला।

"क्या आपको लिफ्ट चाहिए ?" सहसा किसी ने मुझसे पूछा। मैंने घूमकर देखा, एक लंबा, दुबला-पतला, पीले चेहरेवाला व्यक्ति मुझसे ही पूछ रहा था।

मैं कभी उसे भूल न सकूंगा। न उसे और उसकी रेसिंग कार को ! वह एक शानदार, अद्भुत कार थी !

मैंने उत्तर दिया, "हां, बोल्सटर जाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर साथ ही मैं सोच रहा था कि यह व्यक्ति मेरी क्यों सहायता करना चाहता है । मैंने तो पहले कभी उसे देखा नहीं !

उसने मुझे अपनी कार में बैठा लिया । मुख्य राजमार्ग पर आते ही उसने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "आपको वाकई कार की बेहद जरूरत है ?"

"हां, मुझे बोल्सटर पहुंचना ही है किसी तरह । वहां एक बैठक है । मैं उसी के लिए खासतौर पर आया हूं । मुझे समय पर पहुंचना ही है ।"

सहसा उसने गाड़ी रोक दी । और दरवाजा खोलकर बाहर निकलते हुए बोला, "आप कार तो चलाना जानते ही हैं । आप मेरी कार ले जाइए । मुझे इस शहर में अभी कुछ और काम निपटाने हैं । मैं कल बोल्सटर पहुंचकर उसे ले लूंगा ।"

"पर मेरे पास जरूरी कागजात नहीं हैं । मैं तो एक विदेशी हूं ।" मैंने दुर्बल स्वरों में कहा । दरअसल, बायीं ओर कार चलाने में मुझे कुछ भय-सा भी लग रहा था ।

"कोई बात नहीं । इस कार के लिए आपको किसी कागजात की जरूरत नहीं पड़ेगी ।" कहते हुए उसने विपरीत दिशा से आती एक खाली टैक्सी को रुकने का इशारा किया । मैं उसे धन्यवाद दे पाता कि वह टैक्सी में बैठकर रवाना हो गया ।

मैं चकरा गया । उस भले आदमी ने मुझे उस कार की कार्यप्रणाली की जरा भी जानकारी नहीं दी । ऐसी भी क्या जल्दी थी उसे ! क्या उसने किसी से कोई शर्त लगायी थी !

खैर, मैं ड्राइविंग सीट पर बैठ गया । मुझे

लेखक परिचय : जोसेफ नेस्वद्बा को चेक विज्ञान-कथाओं का पितामह समझा जाता है । सन् १९२६ में जन्मे जोसेफ का प्रथम कहानी-संग्रह 'टारजनोवा स्पर्ट' (टार्जनस् डेथ) सन् १९५८ में प्रकाशित हुआ था । अपनी विज्ञान-कथाओं के माध्यम से जोसेफ ने आधुनिक मनुष्य की महत्त्वपूर्ण समस्याओं का हल खोजने का प्रयत्न किया है ।

लगा, जैसे किसी कैद में हूं । कार में केवल दो लोगों के बैठने की जगह थी । उसकी गद्दियां भी विशेष ढंग की थीं । विंड शील्ड के नीचे जमानेभर के छोटे-बड़े डायल थे । कार में चाबी लटक रही थी । मैंने एक्सलेटर दबाया ही था कि कार अचानक गति से दौड़ पड़ी । मुझे लगा, जैसे मैं कोई रॉकेट चला रहा हूं ।

शुरू-शुरू मैं तो मुझे थोड़ी तकलीफ हुई, पर शीघ्र ही मैं अभ्यस्त हो गया । मैंने यह भी अनुभव किया कि सड़क पर चलनेवाले दूसरे कार-चालक भी मेरी सहायता करना चाहते हैं । मेरी कार देखते ही वे रुक जाते । यहां तक कि मोटर-साइकिल पर सवार पुलिस-सिपाही भी अपनी विशिष्ट शैली में मेरा अभिवादन करते ।

आज सोचता हूं कि मुझे तभी सावधान हो जाना था । रास्ते में ही रुककर उस कार से उतर जाना था, पर उस समय मैं कार चलाता ही रहा ।

अगले एक चौराहे पर तो मैंने एक युवती को भी साथ बैठा लिया । उसका नाम सूसन था । उसकी मां अभिनेत्री थी और उसने उसे आधुनिक शिक्षा भी दिलायी थी । सूसन जल्दी ही मुझसे घुल-मिल गयी । मैं भी उसे पसंद करने लगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते में उसने चाय पीने की इच्छा जाहिर की। राह में मिलनेवाले होटलों को देखकर ही उसके मन में यह खयाल आया होगा। एक जगह रुककर हमने चाय पी। उसने तो व्हिस्की पीने की इच्छा की थी, पर उस समय व्हिस्की उपलब्ध नहीं थी। मेरी जेब में तो एक पैसा भी नहीं था। सोचा, शायद सूसन के पास पैसे हों। पर उससे मांगना ठीक भी नहीं लगा। सोचा, बिल अपने राजदूत के पास भिजवा दूंगा।

हम लकड़ी के एक चौड़े काउंटर के पास खड़े थे। आसपास अन्य कार-चालक भी थे। मेरा सिर कुछ चकरा-सा रहा था। तभी मैंने सुना, कोई महिला कह रही है, 'पूरे इंगलैंड में केवल यही एक कार है, जो मेरी 'कनिंग्घम' का मुकाबला कर सकती है।' मुझे नहीं मालूम था कि वह महिला मुझसे मेरी ही कार के बारे में बात कर रही थी। उसने हम लोगों के लिए भी खाने की बढ़िया चीजें मंगवायीं। वह प्राहा के बारे में प्रायः बहुत कुछ जानती थी। उसे हमारी महिला कार-चालक एलिस्का जुनकोवा के बारे में भी मालूम था, जिसने सन् १९२६ में सिसिलियन तार्गा फ्लोरिया दौड़ लगभग जीत ही ली थी। उसने मुझसे कहा, 'आपके देश में तो अब अच्छी रेसिंग कारें बनती नहीं। आप इस इंग्लिश कार में कैसे ?'

मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर टाल गया। मैंने उससे कहा कि 'यूरोप में कारों की इस दीवानगी के पीछे मैं 'व्यक्तिवादिता का संकट' ही मुख्य कारण मानता हूं। हर आदमी अपना स्वयं का वाहन चाहता है और यही कारण है कि हर सड़क पर चाहे वह गांव की हो या शहर की, यातायात अवरुद्ध-सा रहता है। इस तरह हर व्यक्ति स्वतंत्र व्यापार, स्वतंत्र बहस, स्वतंत्र मताधिकार चाहता है, पर केवल अपने लिए।' मैंने आगे कहा, 'कारों की यह बाढ़ दरअसल, हमारे समय में व्यक्ति के संकट का लक्षण मात्र है।' पर उसे मेरी बातें शायद समझ में नहीं आयीं। वह फिर कारों की बातें करने लगी। पर मैं भी उन्हें समझ नहीं पा रहा था। मेरे दिमाग में इस होटल का बिल घूम रहा था। हमारे राजदूत को लंबा-चौड़ा बिल चुकाना पड़ेगा और प्राहा में शायद, मुझसे जवाब-तलबी भी हो। पर जब वेटर ने बताया कि वह महिला सारा बिल चुकता कर गयी है, तो मेरी जान में जान आयी। वेटर ने बताया कि उस महिला ने केवल नाम के लिए एक प्रसिद्ध रेसिंग ड्राइवर के से शादी की थी।

हमारे साथ-साथ वह महिला भी होटल से बाहर आयी। वह अपनी गाड़ी में बैठी और मुझे प्रतिस्पर्धा में शामिल होने के लिए संकेत किया। हम लोग साथ-साथ निकले। सौभाग्य से शाम हो चुकी थी और सड़क पर ज्यादा कारें भी नहीं थीं। थोड़ी दूर तक तो मैं उसके साथ-साथ रहा, इसके बाद तो हमने उसे जो पीछे छोड़ा तो कुछ देर बाद उसकी कार का कहीं अता-पता भी नहीं था। पता नहीं, मेरी उस कार में क्या था कि उसने आनन-फानन में उस प्रथम श्रेणी की अमरीकी कार को दौड़ में बहुत पीछे छोड़ दिया था।

सूसन मारे खुशी के मुझसे चिपट गयी। बोली, "हम जीत गये, हम जीत गये।"

मैं बेहद थक गया था। इतना कि कार रोककर सीट पर ही पसर गया। जब नींद खुली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो रात काफी घिर आयी थी। सूसन ने मेरे दायें पैर को अपनी गोद में ले लिया और जूता उतारकर उसे सहलाने लगी।

सहसा उसने कहा, "तुमने मुझे बताया नहीं कि तुम्हारे पैर में चोट लगी है !"

"चोट !"

प्राहा से रवाना होने के पूर्व मैंने अपनी मेडिकल-जांच करायी थी। तब तो मैं पूरी तरह स्वस्थ था। कहीं कोई चोट नहीं थी। पर जब सूसन ने मुझे मेरा तलवा दिखाया, तो मैं चौंक उठा। वहां एक घाव था। उसकी हथेली के बराबर !

"चलो, पहले किसी डॉक्टर के पास चलें। उसे जरूर दिखाओ। तुम्हारा काफी खून बह चुका है !"

"परसों ही मैंने डॉक्टर से जांच करवायी थी। अपने पैरों से मैंने कहीं भी कुछ भी नहीं किया है। भला मेरा खून कैसे बहेगा ?" यह कहते हुए मैंने उठना चाहा, पर मेरा सिर चकरा रहा था। मैं बड़ी मुश्किल से कार से बाहर आया। मैं सोच रहा था, पैर में घाव कैसे हुआ ? मैंने तो पैर से कुछ किया नहीं। केवल पैर से कार का एक्सलेटर ही दबाता रहा।

मैंने सूसन से कार का बोनट खोलने के लिए कहा। वह बोली, "कार तुम्हारी है। उसे कैसे खोलना है, यह मुझे नहीं मालूम। तुम्हीं खोलो।"

मैंने किसी तरह कार का बोनट खोला। उस कार का एंजिन मुझे कुछ विचित्र-सा लगा। कारबोरेटर के स्थान पर उसमें एक इस्पात का अंडाकार डब्बा था। उसमें से दो मोटी नलियां एंजिन में जा रही थीं। मुझे कुछ समझ नहीं आया। कार के भीतर आकर मैंने अपने जूते से जनरेटर दबाया। पर कार का एंजिन चुप रहा। अब मैंने अपनी अंगुली से एक्सलेटर दबाया तो कार झटके-से आगे बढ़ गयी। हम दोनों के सिर कार की छत से टकरा गये।

"क्या बात है ?" सूसन ने पूछा, "कार क्यों नहीं चल रही है ?" काफी परेशानी उठाने के बाद मैंने कार की बत्तियां जलायीं और सूसन को अपनी अंगुली दिखायी। उसमें घाव-सा हो गया था—हलकी खरोंच-सा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसे देखो !" मैंने उससे कहा, पर वह कुछ समझ नहीं पायी । मैंने आगे कहा, "यह एक विचित्र कार है । वह अपने चालक की मौत ला सकती है । यह मनुष्य के रक्त से चलती है !"

वह हंसने लगी । उसने मुझे कार-निर्माता का नाम दिखाया । वह स्टीयरिंग व्हील के नीचे एक पीतल की पट्टिका पर खुदा हुआ था । 'जेम्स स्टुअर्ट, पुराना जार्जटाउन, २६'

"क्या तुम सोचते हो कि यह महाशय आत्महत्या करनेवाले को अपनी कार बेचते हैं ! तुम विदेशी लोग ऐसी ही बातों पर विश्वास करना चाहते हो ! मनुष्य के रक्त से चलनेवाली कार ! वाह !" पर सहसा वह चुप हो गयी । उसकी नजर कार के 'इस्पाती दिल' पर पड़ी । उसमें रक्त शिराओं-जैसी छोटी-छोटी नलियां थीं— पारदर्शी ! अब वे लाल, गहरे लाल रंग की हो गयी थीं । ऐसा लगा, जैसे मैं सच कह रहा हूं । मैंने उसे बताया कि किस तरह मुझे यह कार मिली । मुझे पक्का विश्वास था कि विदेशी समझकर ही उसने मुझे यह कार सौंपी थी । मुझे कोई भी नहीं जानता था ! और मेरे न होने का किसी को पता भी नहीं चलता । किसी को फिक्र भी नहीं होती !

हम दोनों कार से नीचे उतर आये ।

"पर अब हम क्या करेंगे ?" सूसन ने चिंतित स्वरों में पूछा ।

मेरे पास कोई दूसरा विकल्प था ही नहीं, सिवाय इसके कि पास के किसी होटल से अपने मित्र को फोन करूं । मैंने सूसन से कहा, वह किसी और कार में लिफ्ट ले ले ।

"नहीं, मैं तुम्हें इस तरह अकेला नहीं छोड़ूंगी ।" उसने दृढ़तापूर्वक कहा ।

आखिरकार, हम लोग सड़क के किनारे-किनारे तीन घंटे तक पैदल चलते रहे । गाड़ियां आ-जा रही थीं, पर मैंने किसी को हाथ नहीं दिखाया । मैंने सूसन से फिर कहा कि वह मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे और खुद किसी कार में लिफ्ट लेकर चली जाए । अंततः वह मान गयी ।

सुबह आखिरकार, मैं एक शहर में पहुंचा । अब मैंने समझा कि तेज रफ़्तार बनाये रखने के लिए ही यह सड़क बस्तियों से दूर बनायी गयी थी ।

संयोग से इस शहर का नाम 'पुराना जॉर्ज टाउन' ही था । मैं पता लगाते-लगाते २६ नंबर के मकान में पहुंचा ।

वहां एक प्रौढ़ महिला मिली । मैंने जेम्स स्टुअर्ट के बारे में पूछा तो उसने बताया, "महाशय, जेम्स स्टुअर्ट की मौत तो बत्तीस वर्ष पहले ही हो चुकी है । तब से यह मकान बंद है । अब यह एक बैंक के आधीन है । इसका कोई खरीदार ही नहीं मिल पा रहा है । बैंक की ओर से मैं ही इसकी देखभाल करती हूं ।" फिर उसने एक टूटी खिड़की से घर का विशाल आहाता दिखाया । वहां बहुत-सी कारें रखी थीं— टूटी-फूटी ! उनके आसपास ऊंची-ऊंची घास उग आयी थी ।

"जेम्स की कारों का क्या हुआ ?" मैंने पूछा ।

वह बोली, "अब उनमें से एक भी कार नहीं दौड़ रही है ! एक समय उन कारों ने हर रेस जीती थी !" उसने पुराने-से टाइपराइटर पर कागज चढ़ाते हुए कहा, "भयानक मंदी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी कमर तोड़ दी । फिर ऐसे अमीर लोग भी नहीं रहे, जो विशेष रूप से तैयार की गयी कार खरीदते । जेम्स स्टुअर्ट ने अपनी आखिरी कार, बैंक द्वारा सारी संपत्ति कुर्क करने के एक दिन पहले तैयार की थी । वे उसी में बैठकर जॉर्ज टाउन से जो निकले तो लौटकर नहीं आये ।'' फिर उसने मुझे जेम्स स्टुअर्ट का एक पुराना फोटो दिखाया ।

ओह ! यह तो वही व्यक्ति था, जिसने मुझे वह खतरनाक कार सौंपी थी । हां, चित्र में वह स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट दिखायी दे रहा था, जबकि जब वह मुझे मिला था तो बिलकुल पीला, बीमार-सा था । वह कार ही शायद उसका खून पी गयी थी !

''मैंने जेम्स के बारे में सुना है । और यही नहीं, मैं यह भी जानता हूं कि उसकी आखिरी कार कहां है ?''

वह कुछ चौंक-सी पड़ी । फिर बोली, ''वह एक शानदार कार है, सोलह स्पीड, दो स्पेयर ब्रेकवाली ! उसकी कोई भी बराबरी न कर सका ।''

''पर वह जानलेवा भी है !'' मैंने कहा ।

''इस कार से आप हर रेस में विजयी हो सकते हैं ।'' वह बोली ।

''और मर भी सकते हैं ।'' मैंने उसे बीच में ही टोका ।

वह मेरी बात समझ नहीं पायी । पर मुझे लगा कि वह कार के बारे में शायद, सब-कुछ जानती है । शायद, उसने उसे बनाने में जेम्स की सहायता भी की हो !

''यह रही उसकी चाबियां ।'' मैंने उसे चाबी का गुच्छा देते हुए कहा ।

''आप विदेशी हैं !'' उसने पूछा ।

मैंने उसे अपना परिचय दिया । और फिर फोन पर अपने मित्र से किसी तरह संपर्क कर उसे बताया कि मैं कहां हूं । फिर मैं वहीं उसकी प्रतीक्षा करने लगा ।

इतने में वही 'कनिंग्घम' कारवाली महिला अपनी गाड़ी में आ गयी । मुझे देखते ही वह बोली, ''मैं इसे बेचकर आपकी कार लेना चाहती हूं ।''

मैंने उसे महिला के पास भेज दिया, पर साथ ही उसे चेतावनी दी कि, ''वह कार जानलेवा है । वह जान ले लेगी ।''

''ओह, कितनी दिलचस्प बात है !'' वह बोली ।

''मैं सच कह रहा हूं । एक्सलेटर के जरिए वह चालक का खून पीती है !''

''तब तो फिर और भी अच्छी बात है । आप क्या सोचते हैं कि रेसिंग कार किसी और ईंधन से चलती हैं ! और मैं ! मैं तो बस जीवन में ले मेंस दौड़ एक बार जीतना चाहती हूं । फिर मैं शांति से मर भी सकती हूं । यह कार मुझे विजय दिलाएगी ।''

''पर तुम्हारी जान भी जा सकती है ।'' मैंने फिर चेतावनी दी ।

''इसका कोई महत्त्व नहीं ।'' उसने शांति से उत्तर दिया ।

अब मैं समझ पाया कि सन् १९३२ के बाद क्यों नहीं किसी ने उस कार को लौटाया । वे उस खतरनाक कार को जान-बूझते अपना खून पिलाते रहे, सिर्फ सबसे आगे निकल जाने की जिद के लिए ।

भावानुवाद : दु.प्र.शु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतिया महल में मेरा एक दि

● अनंतराम गौड़

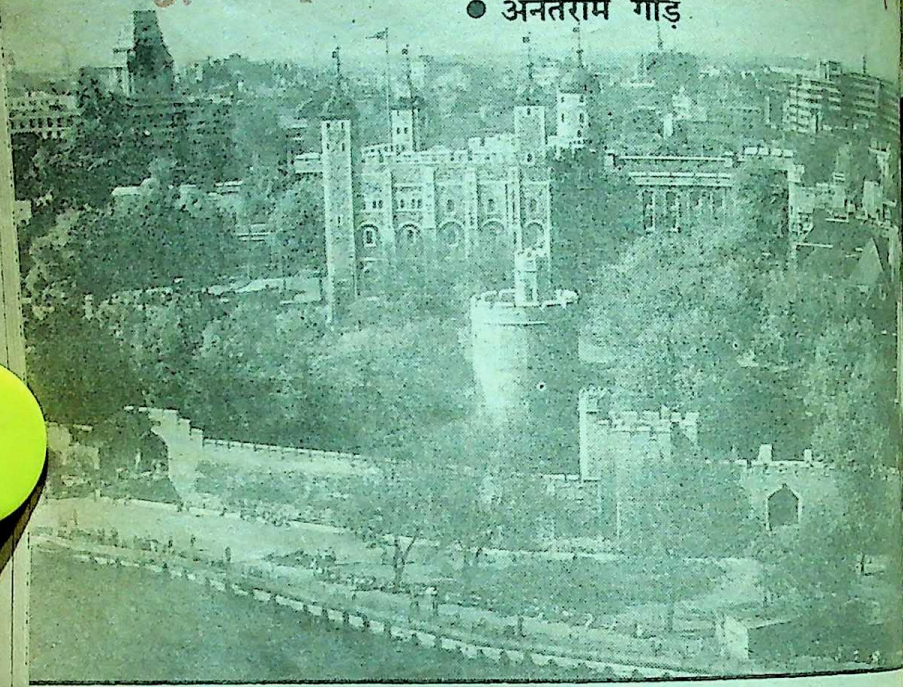

बारह दिन की कड़ी मेहनत से टॉवर की दीवार पूरी करके शाम को मिस्त्री-मजदूर अपने घर चले गये । सबेरे आये तो देखा, दीवार गिरी पड़ी है । दीवार फिर बनायी गयी । अगले दिन वह फिर गिरी हुई मिली । खैर, दीवार फिर बनायी गयी और वह तीसरी बार भी गिर गयी ।

मिस्त्री-मजदूर तो हैरान-परेशान थे ही, टॉवर ऑव लंदन नामक महल को बवानेवाला इंगलैंड का किंग विलियम-प्रथम गुस्से से आग-बबूला हो रहा था कि बार-बार दीवार बनाने में पैसा व्यर्थ ही बरबाद हो रहा है, जरूर मिस्त्रियों की गलती है । उसने चीफ मिस्त्री को बुलाकर डांटा-फटकारा कि आखिर दीवार गिर कैसे जाती है ?

चीफ मिस्त्री क्या बताता कि दीवार क्या-क कैसे गिर जाती है ?

विलियम ने मारे गुस्से के चीफ-मिस्त्री छुट्टी कर दी और दूसरा रख लिया । उसने खूब मेहनत और ठोक-परखकर, अपनी से खूब मजबूत दीवार बनवायी लेकिन, टेम्स नदी के सन्नाटे को तोड़ती हुई, भयंकर आवाज के साथ, दीवार फिर ढह गयी ।

अब तो विलियम का माथा ठनका, कोई-न-कोई अजीब बात है । उसने जांच-पड़ताल करायी, तो उसने जो बातें उनसे और परेशान हो उठा । निर्माण-स्थल पास ही अस्थायी निवास बनाकर रहनेवाले

कादम्बि

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंगलैंड का राजमहल 'टॉवर ऑव लंदन' जितना आकर्षक और भव्य है, उतना ही भयानक । राजशाही की बर्बर क्रूरता और राजनीतिक षड्यंत्रों का यह गढ़ सदियों से भूत-प्रेत और चुड़ैलों का अड्डा रहा है । पर्यटकों के लिए खोल दिये गये इस महल को दिन में ही देखा जा सकता है । प्रस्तुत है लेखक द्वारा दिन में ही देखे इस भूतिया महल का इतिहास ।

मजदूरों ने बताया कि रात को दीवार के पीछे की पहाड़ी—टॉवर हिल से एक परछायी-सी उठती है, जो धीरे-धीरे लंबी-चौड़ी होती जाती है । फिर वह चलकर दीवार के पास आती है और एक ही धक्के में दीवार को ढहा देती है ।

'ये सब बकवास है, मजदूर बेहूदा बातें करते हैं— भूत भी कहीं होते हैं ? जाओ, दीवार फिर से बनवाओ ।' विलियम ने आदेश दिया हालांकि, वह अंदर ही अंदर भूतों की बात से डर भी रहा था ।

दीवार फिर बनकर तैयार हो गयी तो चीफ मिस्त्री ने विलियम से प्रार्थना की कि आज रात वह दीवार के समीप रहकर दीवार की निगरानी करें और स्वयं देखें कि भूत होता है या नहीं ?

'हां, हम रात को देखेंगे कि कैसे दीवार गिरती है ? कैसे आता है भूत ?' विलियम ने कहा और अपने अमले के साथ टेम्स नदी के दूसरे किनारे पर पड़ाव डालकर बैठ गया ।

बैठे-बैठे आधी रात बीत गयी । एक तो रात का सन्नाटा दूसरे, अधबना महल और दीवार खंडहर जैसी लग रही थी, जो अपने आप में दहशत पैदा करती थीं... तभी पिछली पहाड़ी से एक परछाई प्रकट हुई, धीरे-धीरे वह लंबी-चौड़ी होकर दैत्याकार हो गयी । फिर वह लंबे-लंबे डग भरती हुई आयी और जमकर एक लात मारी कि दीवार घोर गर्जना करती हुई धड़ाम से गिर पड़ी ।

जान बचाकर भागा राजा

डर के मारे लोगों की घिघियां बंध गयीं । जान बचाकर दौड़ पड़े । भाग खड़े होनेवालों में विलियम भी पीछे नहीं था । वह भी ताबड़तोड़ भागा । उसके लिए जो तंबू लगाया गया था, उसकी रस्सी में उसका पैर ऐसा उलझा कि वह पटखनी खाकर चित्त हो गया और तत्काल ही बेहोश ।

महारानी ने दूर-दूर से भूत-प्रेत विशेषज्ञ, झाड़-फूंक और जादू-टोने करनेवाले बुलाये । वे कई दिनों की कोशिशों के बाद विलियम को ठीक-ठाक कर पाये । उन्होंने साफ-साफ बता दिया कि जिस जगह महल बनवाया जा रहा है, वहां पर टॉवर हिल के एक भूत का साया है । उन्होंने यह भी बताया कि टॉवर हिल पर बहुत समय पहले टॉमस वैकिट नामक व्यक्ति का कत्ल कर दिया गया था, उसी का भूत यहां रहता है । अब इसका इलाज यही है कि भूत के लिए एक चर्च बनवा दो और नाम रख दो— संत टामस वैकिट चर्च । तब वह शायद, शांत हो जाए और उपद्रव करना छोड़ दे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलियम ने भूत के लिए चर्च बनवाने का संकल्प कर फिर से दीवार बनवानी आरंभ कर दी। अबकी बार दीवार नहीं गिरी और वहां पूरा का पूरा महल बन गया, जिसका नाम है टॉवर ऑव लंदन। बहुत ही शानदार है यह महल।

लेकिन कहानी अभी खतम नहीं हुई, इस महल में पलने और बढ़नेवाली भूतों की अतृप्त आत्माओं की, अशरीरी काली शक्तियों की।

भूतों ने छुड़ा दिया महल

टॉवर ऑव लंदन नामक यह शाही महल तेरहवीं सदी में बनकर तैयार हो गया। राज-परिवार निवास भी करने लगा। आज जो राजमहल है— बकिंघम पैलेस, जिसमें राज-परिवार के सदस्य रहते हैं, के बनने से पहले ब्रिटेन के छह सौ वर्षों का इतिहास इसी टॉवर ऑव लंदन महल में बना और बिगड़ा है।

यह महल टॉवर ऑव लंदन जितना शानदार और भव्य है, उतना ही दुर्भाग्यपूर्ण। इसमें राज-परिवार के बसने के बाद से लगातार एक के बाद एक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं, पागलपन के कारनामे और भूत-प्रेतों की मौजूदगी बढ़ती ही गयी।

विलियम जब सपरिवार इस महल में आ बसा, तो इसके बाद भूत-प्रेतों का सिलसिला इस तरह शुरू हुआ कि एक रात एक चीख सुनायी दी, जैसे कोई किसी का गला घोंट रहा हो। घुटते गले की आवाज के बंद होते ही सन्नाटा छा गया। चौकीदारों की टुकड़ी की टुकड़ी दौड़ पड़ी उस ओर जिधर से चीख आयी थी। मशालों की रोशनी में छान-बीन शुरू हुई, तो महल के पिछले हिस्से में राज-परिवार की एक प्रमुख महिला बेहोश पड़ी पायी गयी।

जब उसे होश आया तो चीखी— 'भूत... भूत' और काल-कोठरियों की ओर इशारा करती हुई फिर बेहोश हो गयी। दरअसल, इस महल के साथ कारावास भी जुड़ा हुआ था, जिसमें खतरनाक अपराधी रखे जाते थे और उन्हें फांसी व क्रूर यंत्रणाएं दी जाती थीं।

तेरह नंबर की काल-कोठरी

आखिरकार, उस महिला ने बताया कि तेरह नंबर की काल-कोठरी में से एक कैदी निकला, जो उसे सम्मोहित कर महल के पिछवाड़े ले गया और फिर गला घोंटने लगा।

तेरह नंबर की काल-कोठरी देखी गयी। बाहर से मजबूत ताला लगा हुआ था। सींखचे भी बहुत मजबूत थे, जिन्हें तोड़कर बाहर निकलना किसी के लिए संभव नहीं था। उसके अंदर का कैदी भी उसमें मौजूद था। उसे निकालकर पहचान कराने के लिए महिला के सामने लाया गया, तो बोली, 'यह नहीं है। उसकी आंखें नीली थीं, कद ऊंचा था, नुकीली मूंछें और कलमें छोटी थीं।'

कैदियों की पड़ताल हुई। कोई भी कैदी इस शक्ल-सूरत का नहीं था।

एक बूढ़े पहरेदार को याद आया, बोला, 'अरे, ऐसी हुलियावाला तो कैदी लियोनार्द द कोनेर था, जो तेरह नंबर में बंद था, लेकिन उसकी तो बीस वर्ष पहले इसी कोठरी में हत्या कर दी गयी थी।'

उस समय ब्रिटेन के सिंहासन पर हेनरी था। हेनरी को तत्काल याद आ गया— लियोनार्द द कोनेर। हेनरी ने ही उसका कत्ल करवाया था— राज-परिवार की एक युवती से प्रेम करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जुर्म में ।

बाद में तो यह तेरह नंबर की काल-कोठरी का भूत लियोनार्द और भी उग्र हो उठा । एक बार जब वह राज-परिवार की एक लड़की को हाथ पकड़े हुए ले जा रहा था, तो पहरेदार ने उसे रोकना चाहा तो वह भेड़िया बनकर उस पर टूट पड़ा और चींथकर उसे मार डाला ।

भूतों की बढ़ती आबादी

लियोनार्द का ही भूत नहीं, बल्कि और भी कई भूत पैदा हो गये, जो तरह-तरह की हरकतें करते । पुरुषों को मार डालते, राज-परिवार की औरतों से दुराचार करते । हर तरह के अत्याचार करने लग गये थे ये भूत । और करते भी क्यों न ? टॉवर ऑव लंदन भी तो क्रूर हत्याओं का गढ़ बन चुका था । हर काल-कोठरी में या तो कोई कैदी एड़ियां रगड़-रगड़कर मरता या फिर मार दिया जाता । असमय ही मौत पायी मृतात्माएं राजा और राज-परिवार से प्रतिशोध लेने के लिए रातभर महल में भटकती रहतीं ।

एक बार तो हेनरी-अष्टम पर ही भूत सवार हो गया, जिसकी वजह से उसने रात को सोते समय अपने पास सो रही तीन रानियों के सिर ही धड़ से अलग कर दिये ।

ये तीनों रानियां भी चुड़ैलें बनकर भूतिया समुदाय में शामिल हो गयीं और उन्होंने हेनरी का सोना हराम कर दिया । वह नींद में चीखता-चिल्लाता और फिर बदहवास-सा महल में दौड़ने लगता । दरअसल, वे तीनों भयंकर काली बिल्लियों की शक्ल में उस पर झपटती थीं । इसी बीच हेनरी के दो छोटे-छोटे राजकुमारों की गरदनें भी सोते-सोते काट डाली गयीं ।

हारकर हेनरी-अष्टम ने इस महल से अपना बोरियां-बिस्तर समेटा और हैम्पटन कोर्ट में जा बसा । लेकिन टॉवर ऑव लंदन वैसे-का-वैसा ही रहा । दरअसल, इंगलैंड की राजशाही की क्रूरता और शाही षड्यंत्रों का भी तो यह गढ़ ही रहा । लेडी जेन रो को इसी में कैद करके रखा गया । रानी ऐनी बोलीन को भी एकाएक सोते से उठाकर काल-कोठरी में डाल दिया गया । एक किंग को भी भूखा-प्यासा दीवारों से सिर फोड़कर मरना पड़ा । ड्यूकों और लार्डों से लेकर रानी और राजाओं की भूत-प्रेतों की आड़ में राजनीतिक हत्याएं भी खूब हुई हैं इस महल में । रानी ऐलिजाबेथ की हत्या भी राजनीतिक षड्यंत्र के तहत उसके नौकरों ने रात को उसे जगाने के बाद की । एलिजाबेथ ने भी बर्बरता बरतने में कोई कमी नहीं की थी । उसने सर वाल्टर रेले को इसी महल की काल-कोठरी में तेरह साल कैद करके रखा था और उसका जुर्म क्या था ? यही कि उसने शादी करने से पहले महारानी से अनुमति क्यों नहीं ली थी ।

आज बीसवीं सदी के वैज्ञानिक युग में भूतों के अस्तित्व को नकारनेवालों के लिए यह महल एक चुनौती है । प्रेत-विद्या विशेषज्ञ चाहें तो वहां जाकर ऐसे भूतों से मिल सकते हैं, जो अब सैकड़ों साल बूढ़े हो चुके हैं और रात को निकलकर महल में टहलते रहते हैं । ब्रिटेन के पर्यटन विभाग ने अब इसे रंग-रोगन करा कर पर्यटकों के लिए खोल दिया है, वह भी रात में नहीं केवल दिन में ।

—सी-२-बी/११२ सी, जनकपुरी,
नयी दिल्ली-११००५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष— उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । धार्मिक स्थान के प्रवास से आनंदानुभूति होगी । संपत्ति कार्यों में धीमी उन्नति होगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा ।

वृषभ—राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । सामाजिक नेतृत्व का अवसर मिलेगा । परिवारजनों के सहयोग से नवीन कार्यों की पूर्ति होगी । आध्यात्मिक संत्संग अथवा प्रवास का अवसर आएगा ।

मिथुन— आजीविका की दिशा में पदोन्नति अथवा वांछित पदस्थापना होगी । पारिवारिक विषमता से भावनात्मक खिन्नता होगी । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । साझेदारी के कार्यों में व्यर्थ पीड़ा होगी । परोपकारी कार्यों में सावधानी रखें ।

कर्क— आजीविका की दिशा में नवीन दायित्वों की अधिकता होगी । उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें । नवीन कार्यों के लिए प्रवास, दौड़-धूप तथा व्यर्थ व्यय होंगे । शत्रु पक्ष कार्यों में अवरोध उपस्थित करेगा । निकटजनों के सहयोग वांछित लाभ मिलेगा । बुद्धि कौशल तथा चातुर्य से शत्रु पक्ष का शमन होगा ।

सिंह— पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । रक्त संबंधियों से व्यर्थ विवाद होगा । आध्यात्मिक रुझान बढ़ेगा । सत्संग, तीर्थाटन अथवा रहस्य संबंधी कार्यों में सफलता मिलेगी । आर्थिक परिवर्तनों में अकारण अवरोध उपस्थित होंगे । निकटजनों के असहयोग से भावनात्मक पीड़ा का सामना करना होगा ।

कन्या— व्यावसायिक कार्यों में अनपेक्षित धनलाभ होगा । उच्चाधिकारियों का वांछित सहयोग मिलेगा । नौकरी में वांछित परिवर्तन अथवा पदोन्नति के अवसर मिलेंगे । पारिवारिक कार्यों में उदासीनता रहेगी । प्रियजनों से व्यर्थ विरोधाभास होंगे । संपत्ति कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी । अव्यवस्थित दिनचर्या से अस्वस्थता का उदय होगा

तुला— संपत्ति कार्यों में वांछित निर्णय से उत्साह वृद्धि होगी । प्रवास की अधिकता से दिनचर्या अव्यवस्थित होगी । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । नवीन मित्रों का समागम लाभदायी होगा । उच्चाधिकारियों की प्रसन्नता

ग्रह स्थितिः सूर्य १४ जून से मिथुन में, मंगल ४ से वृषभ में, बुध ७ से वृषभ में, २९ से मिथुन, गुरु धनु में, शुक्र ४ से वृषभ में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन में, हर्षल नेप्चयून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रभाव में वृद्धि होगी । परिवार संबंधी सुखद सूचना से प्रसन्नता होगी । परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । साझे के कार्य सावधानी से करें ।

वृश्चिक— आत्मविश्वास तथा साहस से अपूर्ण कार्यों की पूर्ति होगी । शत्रुपक्ष से सुलह होगी । जीवनसाथी अथवा उनके संबंधियों से धनलाभ होगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । राजकीय कार्यों में धीमी उन्नति होगी । पारिवारिक अथवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी । प्रवास में स्वास्थ्य संबंधी चिंता होगी ।

धनु— पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । निकटजनों के सहयोग से शत्रु पक्ष का पराभव होगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में क्रियाशीलता बढ़ेगी । उदर अथवा रक्त विकारों से पीड़ा होगी । स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । निकटजन के सहयोग से लंबित धन मिलेगा । प्रवास से विशिष्ट कार्य की पूर्ति होगी । मासांत में उच्चाधिकारियों से चले आ रहे मतांतर दूर होंगे । विलासितादायी वस्तु पर व्यर्थ व्यय होगा ।

मकर— पारिवारिक कार्यों की पूर्ति होगी । आकस्मिक धनलाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा । संपत्ति कार्यों में शत्रु पक्ष अवरोध उपस्थित करेगा । उच्चाधिकारियों से व्यर्थ विरोधाभास बढ़ेंगे । नवीन योजनाओं में जोखिम नहीं लें । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी । मासांत में आर्थिक अस्थिरता की अधिकता होगी । कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा ।

कुंभ— मास में श्रम-साध्य उपलब्धि होगी । निकटजनों से व्यर्थ विरोधाभास बढ़ेंगे । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति समस्या का समाधान होगा । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा । विशिष्ट व्यक्ति से सहयोग मिलेगा । जिससे नवीन योजनाओं में प्रगति होगी । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों से धनलाभ होगा । परिवार में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य की पूर्ति से उत्साहवृद्धि होगी ।

मीन— मास मध्यम फलदायी होगा । कार्यों की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष पर धैर्य तथा संयम से विजय मिलेगी । तीर्थाटन अथवा प्रवास में व्यर्थ पीड़ा होगी । स्वजनों के सहयोग से संपत्ति अथवा वाहनादि का सुख मिलेगा । निकटजनों के कारण सामाजिक विरोधाभास का उदय होगा । साझेदारी कार्यों को टालना हितकर होगा । शत्रु पक्ष का उच्चाधिकारियों पर प्रभाव बढ़ेगा ।

पर्व और त्योहार

१ जून, ९६ स्नानदान व्रत की ज्येष्ठी पूर्णिमा, ४ जून, ९६ संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, ८ जून, ९६ शीतलाष्टमी, ११ जून, ९६ योगनी एकादशी स्मार्त, १२ जून, ९६ योगिनी एकादशी वैष्णव, १३ जून, ९६ प्रदोष व्रत, १५ जून, ९६ स्नानदान श्राद्धादि की अमावस्या, १६ जून, ९६ स्नानदान अमावस्या, १७ जून, ९६ मल मास आरंभ (आषाढ़ शुक्ल पुरुषोत्तम मास), २४ जून, ९६ श्री दुर्गाष्टमी, २५ जून, ९६ हरि जयंती, २७ जून, ९६ पुरुषोत्तमी एकादशी, २८ जून, ९६ प्रदोष, ३० जून, ९६ व्रत पूर्णिमा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों तरफ वीराना और गहरा सन्नाटा था। जरा ऊपर देखने पर बेगनबोलिया के लाल सुर्ख फूल दिखायी देते थे, जो सारे टीलों को अपनी लपट में लपेटे हुए। वहां अंधेरा था क्योंकि,छतनारों की गहरी-दोहरी हरी जालियां थीं। एक उनींदा-सा शोर था पतझड़ का, जो झाड़ियों को छूता हुआ भीतर आता था और कैला घाटी के सन्नाटे को और भी रहस्यमय बना रहा था।

मलाज खंड में मेजर लारेंस का वह तीसरा दिन था। भू-सर्वेक्षण विभाग के एक आला

अनसुलझा रहस्य

पुराना मंदिर और पीली चील

● डॉ. कैलाश नारद

अफसर थे। अपनी पत्नी रेबेका तथा पुत्र बिली के साथ वह सन् १८९१ के उजले दिनों में सतपुड़ा के बियावानों में डेरा डाले हुए थे। वह बालाघाट और छिंदवाड़ा के बीच फैली धरती के गर्भ में छिपी तांबे की खानों का पता लगाने आये थे। उनके दल में अट्ठाइस खिदमतगार थे। जो खुदाई करते, खुदी मिट्टी का परीक्षण करते,रिपोर्ट तैयार करते। उनका खास टहलकार सुदर्शन प्रसाद पांडेय रिपोर्ट के सारे कागजातों को ब्योरेवार सहेजकर रखता था।

उस अपराह्न मेजर लारेंस पहाड़ी के दूसरे छोर पर थे, जहां जमीन का एक हिस्सा अजीब-सी आकृति में ऊपर उठा हुआ था। टीला चारों तरफ से घास और अमलतास के पेड़ों से घिरा हुआ। धूप में सुलगता-सा, उन्हें को उस टीले से जो नजर आया, उसकी तरफ हैरानी से देखते रह गये। अमलतास के ठूंठ पेड़ों के भीतर एक पुराना मंदिर था। मंदिर के भीतर आंगन था। मेजर लारेंस मंदिर में दाखिल हुए।

न कोई दीपदान, न ही कोई शिलालेख और न भीतर से आती कोई आवाज। सिर्फ खंडहर और सूने मंदिर की सायं-सायं... और तभी उनकी आंखें वेदी पर पड़ीं। मूर्ति के बिल्कुल सामने, एक पीली चील वहां बैठी हुई उन्हें घूर रही थी। मेजर असमंजस से चील की तरफ देखते रहे कि अचाक उन्हें लगा जैसे चील ने अपने डैने समेटे हों।

पीछे पैरों की आहट हुई। मेजर ने मुड़कर देखा। उनका खास टहलकार सुदर्शन प्रसाद पांडेय था, जो अचरज से उनकी तरफ देख रहा था।

"यस पांडे...", मेजर ने कहा।

"आप यहां पर, साहब... इस मंदिर में..."।

"यह मंदिर...," मेजर लारेंस बोले, "यह तो अद्भुत जगह हैं... और काले पत्थर की मूर्ति," वे वेदी पर प्रतिष्ठित एक नारी मूर्ति की तरफ इशारा कर रहे थे। लगभग दो फुट की थी वह प्रतिमा। प्रतिमा की आंखें अस्वाभाविक रूप से बड़ी थीं। माथे पर सिंदूर लगा हुआ

कादम्बिनी

0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था ।

प्रतिमा वीजासेनी देवी की थी, जिसकी मलाज खंड में बड़ी मान्यता थी । जेठ की हर पूनम को उसका अभिषेक होता था ।

मेजर लारेंस गुग्ध भाव से प्रतिमा को देखते हुए बोले, "आश्चर्यजनक रूप से सुंदर है । शिल्प का एक बेहतरीन नमूना है यह प्रतिमा ।"

आप ठीक कह रहे हैं, साहब यह हम सब की देवी हैं ।" पांडेय ने बताया ।

"इसे मैं अपने साथ ले जाऊंगा," मेजर ने कहा "बजाय इस बीरान और पुराने मंदिर के, लंदन के मेरे बंगले में यह ज्यादा अच्छी लगेगी ।"

"नहीं साहब, इससे आपका अनिष्ट हो जाएगा ।" पांडेय ने उन्हें चेतावनी दी, "बेहतर यही होगा कि मंदिर की किसी चीज से आप छेड़छाड़ न करें ।"

हलकी-सी सरसराहट हुई और मूर्ति के सामने बैठी वह चील झपट्टा मारकर उड़ गयी । हाथ बढ़ाकर मेजर लारेंस ने बीजासेनी की वह प्रतिमा उठा ली । पांडेय चाहकर भी उन्हें रोक नहीं पाया । उसका चेहरा फक् पड़ गया । मेजर उसकी तरफ देखकर मुसकराया, बोला, "डरो मत, पांडे, मुझे कुछ भी नहीं होगा, तुम सब हिंदुस्तानी, दरअसल, बहुत ज्यादा डरपोक होते हो ।" और मूर्ति लेकर वह बाहर निकल आये ।

वह चील उड़ी नहीं थी । वह मंदिर के गुंबद पर जा बैठी थी ।

उस रात मलाज खंड में धूल भरी आंधी उठी । धूल और अंधड़ के बाद तारे निकल आये थे । चारों ओर रात का सन्नाटा । कभी-कभी कोई पक्षी उड़कर तंबुओं पर फड़फड़ाने लगता ।

अपने तंबू में लेटे मेजर लारेंस ने करवट बदली । हलकी और नामालूम-सी सरसराहट हुई कि उनकी नींद खुल गयी । वे फौज में रह चुके थे । उनकी नींद कच्ची थी । उनके पास के बिस्तर पर उनकी पत्नी सोयी हुई थीं । बिस्तर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी क्षण मंदिर के गर्भगृह से हंसी का ठहाका सुनायी दिया । बेहद पैशाचिक थी वह हंसी । मेजर का खून ही जैसे सर्द हो गया । उन्हें अपने हाथ-पांव ठंडे होते जान पड़े ।

लेटे-ही-लेटे उन्होंने आसपास का जायजा लिया । कोई भी नहीं था । उन्होंने करवट बदली और निश्चिंत होकर फिर से आंखें मूंद लीं ।

तभी एक चीख से उनकी आंखें खुल गयीं । उनकी पत्नी चीखी थीं । बेहद पीड़ा-दायक थी वह चीख । वह बुरी तरह से तड़प रही थी । तभी मेजर की निगाह पलंग के नीचे पड़ी । घास में कोई जीव था, उसकी आंखें चमक रही थीं । वह गेंहुअन सांप था ।

मेजर की देह में कंपकंपी झूटने लगी । बदहवास-से वे पत्नी की तरफ लपके । तभी टहलकार और अर्दली मशालें, लाठियां और बल्लम लिए आ पहुंचे ।

रेबेका की दाहिनी बांह से खून बह रहा था । वहां गेंहुअन के दातों के निशान थे । जहर बड़ी तेजी से देह में पैबस्त होता जा रहा था । वे निढाल हो गयी थीं ।

सुबह होते-न-होते रेबेका ने दम तोड़ दिया ।

पत्नी की मौत के आघात से मेजर लारेंस जैसे अपनी सुधबुध खो बैठे । रेबेका की लाश के पास वह स्तब्ध से बैठे रह गये— चारों तरफ बिखरे असबाब और नक्शों-दस्तावेजों के बीच । बीजासेनी की वह प्रतिमा भी उसी असवाब में थी— मृत रेबेका लारेंस के बिलकुल सिरहाने ।

फिर मेजर ने अपने आंसू पोंछे । हिम्मत जुटाकर वे बाहर आये । मजदूरों से कहा, "वापसी की तैयारी करो, यहां का काम खतम ।"

फैसला किया गया कि रेबेका की मृत देह छिंदवाड़ा के ईसाई कब्रिस्तान में दफन की जाएगी । छिंदवाड़ा का फासला यहां से सत्तर मील था, लगभग पूरे दिन का सफर ।

तभी सुदर्शन प्रसाद पांडेय हाजिर हुआ । माथे पर चंदन पुता था । उसने लाल सिंदूर का टीका लगाया हुआ था । हाथ में ताजा जवाकुसुम के फूल थे । वह बड़े अदब से बोला, "साहब, मेरी मानें तो एक बिनती करूं ?"

मेजर ने उसकी तरफ देखा ।

"छिंदवाड़ा जाने से पहले मेमसाब को उस मंदिर में ले चलें ।"

"व्हाट !" दुख से कातर मेजर पांडेय पर फट-से पड़े, "मुर्दा रेबेका को मजाक बना रखा है तुमने... गोली मार दूंगा तुमको,.. ।"

'आप भले ही मेरी जान ले लें," पांडेय दृढ़तापूर्वक बोला, "लेकिन एक दफा मेरा कहा मानकर भी देखें । आपको निराश नहीं होना पड़ेगा... मुझे यकीन है ।"

मेजर कुछ देर तक सोच में डूबे रहे, फिर बुदबुदाये, "ठीक है, चलो ।"

पूर्वाह्न की धूप में मंदिर के बाहर चबूतरे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख दी गयी रेबेका की लाश ।

भीतर गर्भगृह में सन्नाटा था । बेदी खाली थी । वहीं एक कोने में एक बूढ़ा बैठा था । उजाले से भीतर अंधेरे की तरफ जाने से मेजर को वह बूढ़ा नजर नहीं आया, लेकिन वे उसे बखूबी देख पा रहे थे । उसकी उम्र सत्तर-पचहत्तर साल की थी । कमर में पुरानी-सी धोती पहन रखी थी उसने । बाकी देह नंगी थी । पूरे चेहरे पर झुर्रियों का मकड़जाल-सा फैला हुआ था । गले में रुद्राक्ष की माला थी, दोनों हाथों में तांबे के कड़े ।

अपने हाथ से जवाकुसुम सुदर्शन प्रसाद पांडेय ने सूनी बेदी पर रखे और फिर अपने दोनों हाथ जोड़कर आंखें बंद कर लीं । फिर आंखें खोलने के बाद उसने बूढ़े से कुछ कहा । बूढ़े की आंखें चमकने लगीं । अपना सिर हिला दिया उसने ।

"आइये, साहब," पांडेय ने मेजर से कहा, "बाहर चलते हैं ।"

रेबेका का शव अब तक नीला पड़ चुका था । उसके इर्द-गिर्द भीड़ इकट्ठा हो गयी थी । बस्ती के तमाम वाशिंदे उस हुजूम में थे ।

वह बूढ़ा चबूतरे के नीचे बैठकर रेबेका के शव को गौर से देख रहा था । मेजर ने देखा, उसका चेहरा उन लमहों बेहद गंभीर हो गया था ।

मेजर को तभी लगा, रेबेका के शव के पास से कोई छाया गुजरकर मंदिर के भीतर गयी है ।

फिर उस बूढ़े ने अपनी गरदन हिलानी शुरू की । वह अपने होठों में कुछ बुदबुदा रहा था । धीरे-धीरे उसकी आंखें खुलती गयीं । उसके चेहरे पर एक मंद मुसकराहट आयी, जैसे कोई

बोझ हट गया हो । और फिर, वह नीरव, खाली आंखों से मेजर की तरफ देखने लगा । उस निगाह में क्या था, मेजर समझ नहीं पाये ।

अचानक बूढ़े ने रेबेका की तरफ अपनी गर्दन मोड़ी, निश्चेष्ट रेबेका की ओर । लेकिन निश्चेष्ट कहां थी रेबेका की देह ? उसका मृत शरीर में स्पंदन पैदा हो गया था ।

मारे विस्मय के मेजर की आंखें विस्फारित हो आयीं । हुजूम भी मारे भय के पीछे सरकने लगा । उसी क्षण मंदिर के गर्भगृह से हंसी का ठहाका सुनायी दिया । बेहद पैशाचिक थी वह हंसी । मेजर का खून ही जैसे सर्द हो गया । उन्हें अपने हाथ-पांव ठंडे होते जान पड़े ।

अब रेबेका की लाश पूरी तरह से ऐंठने लगी थी ।

और तभी हुआ वह तमाशा ।

अचानक एक चील जो पिछले दिन मंदिर के गर्भगृह में देखी गयी थी, वही पीली चील अमलतास के पेड़ से उतरी और रेबेका के पास बैठ गयी । उसके पंजों में एक सांप लिपटा हुआ था— जहरीला गेंहुअन । चील ने वह सांप रेबेका के ऊपर फेंका और उसके आसपास मंडराने लगी ।

सांप ने अपना फन फैलाया और रेबेका की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके भी बयां जुदा-जुदा

खुला देखा जो दरवाजा तो गम पहलू में आ बैठे
यह कैसा घर सजाया है आके देख तो जाओ
—सुल्तान राही

वह बात सारे फसाने में जिसका जिक्र न था
वह बात उनको बहुत नागवार गुजरी है
—फैज अहमद फैज

मुझको अपना बना के छोड़ दिया
क्या असीरी है क्या रिहाई है
—जिगर मुरादाबादी

आप उसूलों की दुहाई का सहारा लेकर
आप जो चाहें कहें आपको आजादी है
—दिवाकर 'राही'

यह आईना भी बात न पूछेगा आपकी
इस बार अपने अक्स से कटकर तो देखिए
—सिमाब सुल्तानपुरी

कुछ मैं ही जानता हूं जो मुझ पर गुजर गई
दुनिया तो लुत्फ लेगी मेरे वाक्यात में
—मुस्तफा जैदी

जिसको तूफान से उलझने की हो आदत मोहसिन
ऐसी कश्ती को समुंदर भी दुआ देता है
—मोहसिन नकवी

दार तक तो आ गया जौके नियाजे बंदगी
और कहिए आपके किस काम आ सकता हूं मैं
—शम्स गाजियाबादी

ख्वाहिशें जिंदा हैं सीने में मेरे कुछ इस तरह
जिस तरह कागज दबा हो फाइलों के बीच में
—जकी तारिक

कत्ल होते दिखायी देते हैं
कातिलों का पता नहीं चलता
—जमील हापुड़ी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

दायीं बाँह में दाँत गड़ा दिये उसने। फिर किंचित ठिठका वह और बूढ़े की तरफ अपना फन उठाया।

बूढ़े ने अपनी गर्दन हिलायी।

सांप ने अपना फन फिर से रेबेका की बांह से सटा लिया। अब वह अपना खुद का जहर चूस रहा था।

जैसे कोई इंद्रजाल-सा घटित हो रहा हो, ऐसे विस्मय-विजड़ित से मेजर खड़े रह गये थे।

और फिर, रेबेका ने अपनी आंखें खोल दीं। उन आंखों में बेहोशी तैर रही थी, लेकिन मृत्यु की छाया से मुक्त थीं वे।

अपना जहर-चूसते-चूसते सांप शिथिल-सा हो गया था। तभी पीली चील ने अपने डैने फड़फड़ाये। गेंहुअन को अपनी पंजों में समेटा और उड़ गयी।

सुदर्शन प्रसाद पांडेय की आंखों में चमक-सी झलझला आयी। वह मेजर साहब की तरफ मुखातिब हुआ और बोला, "आपने देवी की प्रतिमा को उठाकर अच्छा नहीं किया साहब !"

"मैं अपनी करतूत पर शर्मिंदा हूं, पांडेय," मेजर ने खेद प्रगट किया, "उसे मैं मंदिर में ही वापस रख दूंगा।"

" अब कोई फायदा नहीं साहब," पांडेय बोला, "अपने स्थान से उखड़ जाने के बाद बीजासेनी अपवित्र हो गयी... अब आप उसे अपने पास ही रखे रहें।"

('जॉर्ज रसेल 'द हाइलैंड्स ऑव सेंट्रल इंडिया' से साभार एक प्रसंग)

—हुक्मचंद नारद रोड, तिलक नगर, जबलपुर-४८२००१

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई का महीना । चिलचिलाती धूप में तन-बदन दोनों बेचैन । गरमी की छुट्टियां बिताने मैं अपनी बहन के यहां नेपाल आयी हुई थी । राप्ती अंचल में दांग जिले के बनगई गांव में घर है मेरी बहन का । एक दिन दोपहर को अकेली ऊपरी मंजिल के कमरे में लेटी हुई, पंखा झलते हुए पसीने को सुखाने की कोशिश कर रही थी कि नीचे से आवाज आयी— 'भइली रानी ।' बहन बाहर गयी हुई थी । लिहाजा, मुझे उठना पड़ा । खिड़की से झांककर देखा । नीचे थारु जनजाति की दो औरतें खड़ी हैं और मुझसे तंबाकू मंगा रही हैं ।

मुझे तो पता नहीं था तंबाकू कहां रखी है सो

भुक्त-भोगी लेखिका

किसने पकड़ा था मुझे ?

● रूचि सिंह

मैंने उन्हें कहा, 'मुझे मालूम नहीं कि तंबाकू कहां है ।' उन्हें लगा कि मैं उन्हें तंबाकू देना नहीं चाहती, इसलिए बहाना बना रही हूं । वे जिद करती रहीं कि मैं उन्हें तंबाकू दूं ।

उनकी जिद से मुझे गुस्सा आ गया और मैंने उन्हें बुरी तरह डांट दिया । उन्हें भी मेरा डांटना बुरा लगा और वे खिसयायीं मुझे घूरती हुई, साथ ही कुछ बुदबुदाते हुई चली गयीं ।

उनका जाना था कि मेरा बुरा हाल । मैं बदहवास-सी उन औरतों के पीछे दौड़ पड़ी । मैंने अपने कपड़े फाड़ डाले । साड़ी उतार फेंकी । अड़ौस-पड़ौस के लोगों ने मुझे इस हालत में देखा तो मुझे पकड़ने के लिए दौड़ पड़े।

मैं दो दिन तक केवल झूमती रही । न कुछ खाया, न पीया । बस, यही रट लगाये रही कि मैं मैला खाऊंगी । इसी बीच गांव के ओझा ने दो दिन तक घर में पूजा-पाठ किया । झाड़-फूंक की, काले मुरगे की बलि दी । मुझे तो यह सब बातें बाद में पता चलीं । तंत्र-क्रिया द्वारा उस भूतनी को भी बुलाया, जिसे मेरे पीछे लगाया गया था । उन दोनों औरतों ने मेरी डांट-फटकार से चिढ़कर मुझसे बदला लेने के लिए एक भूतनी मेरे पीछे लगा दी थी, तभी मैं गंदी चीजें खाने के लिए मांगती रही थी ।

हालांकि, मैं तंत्र-मंत्र और जादू-टोने में विश्वास नहीं करती लेकिन, इस घटना के बाद विश्वास करना ही पड़ता है ।

— १/२७४, जनकपुरी, नयी दिल्ली-११००५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधकार, बर्फ और घाटी का बीहड़

● कर्नल श्याम सिंह

चारों ओर अंधकार छाया हुआ था। रात का सन्नाटा उस अंधकार को और भी भयावह बना रहा था। इस सन्नाटे को रह-रहकर भंग कर रही थी, पच्चीस-तीस सिपाहियों के कदमों की आहट। सिपाही सावधान थे, पर साथ ही परेशान भी। अंधकार में उन्हें सही रास्ता ही नहीं सूझ पा रहा था।

उनकी टुकड़ी के नायक के पास इस क्षेत्र का एक नक्शा जरूर था, पर इस समय उससे भी कोई सहायता नहीं मिल रही थी।

ये भारतीय सैनिक थे— जम्मू-कश्मीर में नियुक्त। उनकी टुकड़ी को पंद्रह-बीस मील दूर स्थित एक चौकी पर पहुंचना था और वह भी रातोंरात, गहरे अंधियारे में ताकि दुश्मन को उनके अभियान का पता न चल पाये। वायरलैस सेट पर कमांड पोस्ट से उनका निरंतर संपर्क बना हुआ था। टुकड़ी के नायक ने वरिष्ठ अधिकारियों को अपनी समस्याओं से अवगत करा दिया था। रात के अंधकार में सही रास्ता सूझ ही नहीं रहा था। उधर ठंड भी कड़ाके की थी। कुछ दूर आगे जाने पर जैसे उनका रास्ता ही बंद हो गया था। चारों ओर बर्फ-ही-बर्फ थी। टुकड़ी के नायक ने अपनी घड़ी पर नजर डाली। तीन बज रहे थे। कुछ ही घंटों बाद सुबह हो जाएगी। सुबह के प्रकाश में शायद रास्ता ढूंढ़ने में सहुलियत भी हो जाए। पर! पर सुबह का प्रकाश उनके लिए रक्तपात का संदेश भी ला सकता था।

हो सकता है, दुश्मन की गश्त देती टुकड़ी आसपास ही हो। उसी से मुठभेड़ हो जाए और सारी योजना पर पानी फिर जाए।

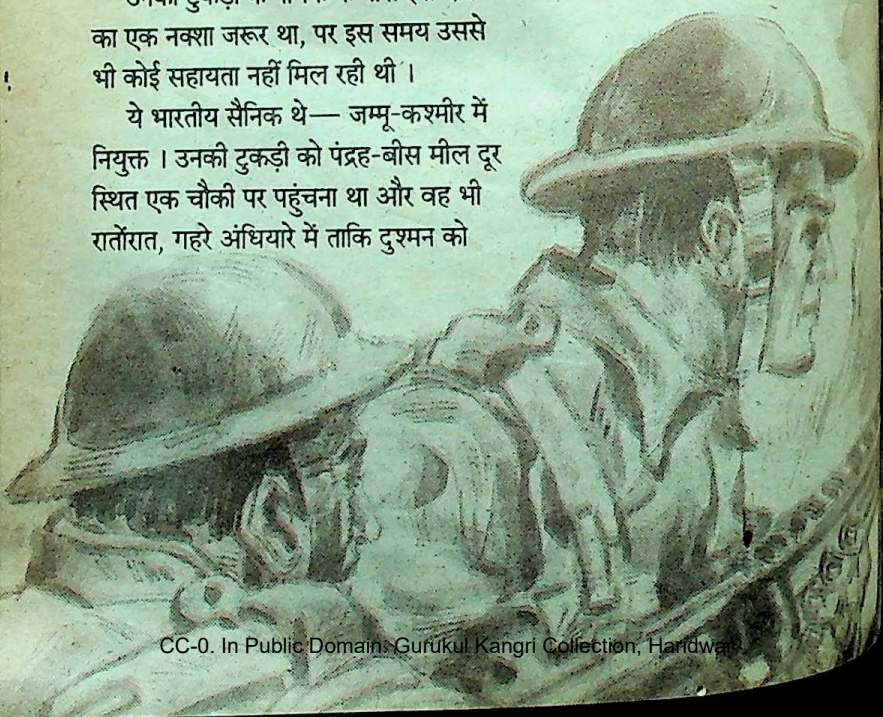

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें रात के अंधकार में ही अगली चौकी तक पहुंचना ही था ।

पर कैसे ? समस्या यही थी !

टुकड़ी का नायक चिंता में डूब गया । उसके साथी सिपाही भी चिंतित हो उठे ।

अंधकार में एक ही स्थान पर गहरे सोच में डूबे पच्चीस-तीस निर्भीक सिपाही ।

वायरलेस पर कमांड पोस्ट से पूछा गया, 'कब तक चौकी पर पहुंचोगे । सुबह होने में ज्यादा देर नहीं ।'

टुकड़ी के नायक ने अपनी परेशानी बतायी, फिर विश्वासभरे स्वर में वचन दिया, 'सुबह के पहले हम लोग जरूर चौकी पर पहुंच जाएंगे ।'

कहने को तो उसने कह दिया, पर वास्तविकता तो कुछ और होने जा रही थी ।

तभी सभी लोग, सारे सिपाही, टुकड़ी का नायक, सांस थामकर सावधान हो गये ।

उस निर्जन प्रदेश में कोई फौजी आ रहा था— अकेला ।

सिपाही कदमों की आहट से ही जान गये थे कि वह कोई फौजी ही है ।

पर अकेला क्यों ?

क्या दुश्मन का कोई भटका हुआ सिपाही है ?

सभी चौकन्ने हो उठे । हाथों में हथियार संभाल लिये ।

कदमों की आहट निरंतर पास आती जा रही थी, उन्हीं की ओर !

अब सांस लेना भी मुसीबत को न्यौतने के समान था । वे सब अपनी उपस्थिति का रंचमात्र भी आभास नहीं देना चाहते थे ।

अब वह आकृति उनके बिलकुल समीप आ चुकी थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके साथ और कोई नहीं था ।

दूसरे शब्दों में उससे कोई तात्कालिक भय नहीं था ।

आकृति एक थी, और वे पच्चीस-तीस !

सहसा टॉर्च की तेज रोशनी पानी की धार-सी उस आकृति पर जा पड़ी ।

पर इस अचानक, चकाचौंध प्रकाश का उस पर रंचमात्र भी प्रभाव न पड़ा । वह उसी तरह उनकी ओर बढ़ती रही ।

टुकड़ी के नायक ने ही नहीं, सभी सिपाहियों ने देखा, उनके सामने एक भारतीय लेफ्टिनेंट खड़ा था । तेजस्वी चेहरा ! सुगठित शरीर !

कश्मीर की पहाड़ियों में वे सब खो से गये थे । उन्हें सुबह होने के पहले अगली चौकी तक हर हालत में पहुंचना था । और इधर वे सब रास्ता ही भूल गये थे । चारों ओर गहरा अंधकार और बर्फ ही बर्फ ! उन्हें हताशा और निराशा घेरने लगी थी । तभी...

टुकड़ी का नायक कुछ कहता कि वह अपरिचित लेफ्टिनेंट बोल उठा, "आगे का रास्ता बेहद खतरनाक है । खाइयां हैं । बर्फ के कारण सब छिप गयी हैं । आप मेरे साथ आइए । मैं आपको रास्ता दिखा दूंगा । अगली चौकी पर ही तो जाना है न आप सबको !"

टुकड़ी के नायक ने उत्तर दिया, "हां ! सुबह के पहले ही वहां पहुंचना जरूरी है ।"

"हां, मुझे मालूम है । कल 'एक्शन' हुआ था । अपनी भी क्षति हुई, पर दुश्मन का तो जबर्दस्त नुकसान हुआ । फिर भी उस चौकी को कुमुक की बेहद जरूरत है । अच्छा हुआ आप लोग आ गये ।" उस लेफ्टिनेंट ने कहा । फिर क्षणभर रुककर वह बोला, "मेरे पीछे-पीछे आइए । मैं इधर कई दिनों से पोस्टिंग पर था । इसलिए चप्पा-चप्पा जाना-पहचाना है !"

वह आगे-आगे चलने लगा । उसके ठीक पीछे नायक था ।

लेफ्टिनेंट उससे बातें करने लगा । उसने बताया कि कल दुश्मन ने भीषण गोलाबारी की थी । कई लोग मारे गये ! हैवी कैज्यूल्टी हुई दोनों ओर ! फिर उसने नायक से पूछा, "क्या आपने कभी मृतात्मा देखी है ?"

नायक के मन में उस समय तरह-तरह के विचार आ-जा रहे थे । उसे समय पर चौकी पहुंचने की चिंता थी । सुबह की योजनाएं बनानी थीं । पता नहीं, कल क्या हो ? शायद, सुबह से ही गोलाबारी शुरू हो जाए ! वह इन्हीं चिंताओं में डूबा था । साथ ही कभी-कभी आगे-आगे चल रहे युवा लेफ्टिनेंट का भी उसे खयाल आ जाता ।

'कौन है यह ? 'नाम भी नहीं बताया । पता नहीं किस यूनिट में है ।' वह उससे यह सब पूछने ही वाला था कि उस लेफ्टिनेंट ने यह अप्रत्याशित प्रश्न कर दिया, "क्या आपने कभी मृतात्मा देखी है ?"

नायक ने वातावरण को हलका करना चाहा । "देखी तो नहीं, पर शायद कल तक मैं स्वयं मृतात्मा बन जाऊं ।"

लेफ्टिनेंट ने कहा, "मृतात्माएं होती हैं । पर सभी मृतात्माएं बुरी नहीं होतीं । वे संकट में पड़े लोगों की मदद भी करती हैं ।"

नायक क्षणभर के लिए चौंक उठा ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकट में लोग !

मृतात्माओं द्वारा सहायता !

फिर एक प्रश्न कौंधा—

'क्या यह कोई मृतात्मा है ?' पर दूसरे ही क्षण उसे अपने विचार पर ग्लानि हुई ! उसने बातचीत का विषय बदलने की कोशिश की । उससे उसका नाम, उसकी यूनिट पूछी ।

लेफ्टिनेंट उत्तर टाल गया । बोला, "चौकी तो पास ही आ गयी है । इधर पौ भी फटनेवाली है ! बस, चौकी पर ही आपको सब पता चल जाएगा ।"

सचमुच, कुछ देर बाद वे अपनी चौकी के बिलकुल करीब थे । सुबह के झुरपुटे में उनकी अभ्यस्त आंखें उसे देख पा रही थीं । एक भारी बोझ उनके दिल-दिमाग से उतर गया था ।

उस लेफ्टिनेंट ने कहा, "वह देखिए, सामने चौकी है । आप लोग सही-सलामत समय पर पहुंच गये, खुशी है । जाइए ।"

"अरे, आप भी तो साथ चल रहे हैं ।" टुकड़ी के नायक ने कहा ।

"नहीं, चौकी पर नहीं जाऊंगा, माफ कीजिएगा ! कुछ और जरूरी काम है ।"

टुकड़ी का नायक कुछ कहता कि लेफ्टिनेंट मुड़कर जाने लगा !

टुकड़ी का नायक, सारे सिपाही उसे लौटता देखने लगे । कई प्रश्न थे उन सबके मन में । सहसा, उन सबका शरीर सिहर-सा गया । सुबह के प्रकाश में लेफ्टिनेंट की पीठ पर उनकी नजर पड़ी । ठंड से बचाव के लिए पहनी गयी उसकी फौजी जर्सी में एक बड़ा-सा छेद था । मानो, गोली लगी हो ! आसपास का हिस्सा काला-सा पड़ गया था । शायद, जलने से या गोली के घाव के कारण बहे खून के जमने से !

टुकड़ी का नायक स्तब्ध खड़ा था । उसके साथियों की भी यही हालत थी ।

सहसा टुकड़ी के नायक को कुछ देर पहले ही राह में कही गयी लेफ्टिनेंट की बातें याद आयीं कि— 'सभी मृतात्माएं बुरी नहीं होतीं । वे संकट में पड़े लोगों की सहायता करती हैं ।'

तो ! ये ! क्या लेफ्टिनेंट कोई मृतात्मा थी ।...

वे सब चौकी पर पहुंचे । टुकड़ी के नायक ने चौकी के कमांडर को सारा घटनाक्रम कह सुनाया । वह चौंक पड़ा ! "नहीं ! ऐसा नहीं हो सकता ।" फिर उसने उस लेफ्टिनेंट का संक्षिप्त परिचय देते हुए नायक को बताया कि कल के एक्शन में उसे पीठ पर गोली लगी थी । वह बच नहीं पाया । कल शाम ही तो हमने उसका अंतिम संस्कार किया है ।

नायक का गला भर आया । बोला, 'सर वही था ! वही हमारी सहायता के लिए आया । यहां तक वही हमें पहुंचा गया । सर, उसने मुझसे कहा था कि चौकी पर पहुंचने के बाद सब पता लग जाएगा । वही हुआ, सर !'

क्षणभर रुककर उसने पूछा, "सर, यह संभव है क्या ? क्या मृतात्माएं होती हैं ! वे सहायता भी करती हैं ? कुछ समझ में नहीं आता ।"

कमांडर बोला, "विश्वास तो मैं भी नहीं करता ! पर पिछली रात जो हुआ, उसका क्या रहस्य !" ●

(युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रकाशित, पं. आचार्य श्री राम शर्मा एवं डॉ. प्रणव पंड्या लिखित, 'पिता हमारे अदृश्य सहायक पर आधारित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयल

कोयल (एशियन कोयल) कौवे जैसे कद-काठी का पक्षी होता है । कुल लंबाई ४३ सेंटीमीटर, पूंछ लंबी होती है । नर कोयल का रंग काला चमकीला और आंखें रतनार, चोंच व पंजे पीले-हरे । मादा कोयल चीतल भूरी । 'कुअ्...कुअ्...' आरोही मधुर आकुल स्वर में बोलता है ।

सरदी के मौसम में दक्षिण भारत में रहता है और बसंत में प्रजनन के लिए उत्तर में आ जाता है, इसीलिए यह कहा जाता है कि कोयल बसंत ऋतु में ही कूं कती है । यह चालाक इसलिए माना जाता है कि अपने अंडे सेने और शिशु-पालन का काम कौवों से कराता है । अधिकांश पक्षी अपने अंडों को उसके रूप-रंग से पहचानते हैं, लेकिन कोयल और कौवे के अंडे आकार और रंग में प्रायः एक-जैसे होते हैं—पीताभा लिये हरित धूमिल रंग पर कत्थई धब्बे । कौवे के अंडे बस जरा से छोटे होते हैं । कौवों को अंडे सेने में सोलह-सत्रह दिन लगाते हैं और कोयल के अंडों को सेने में तेरह-चौदह दिन । फलस्वरूप बड़ा शावक आहार का अधिकारी होने के नाते फलता-फूलता है । मादा कोयल की मदद के लिए नर कोयल कौवों को आक्रमण के लिए अपने पीछे लगाकर दूर ले जाता है ।

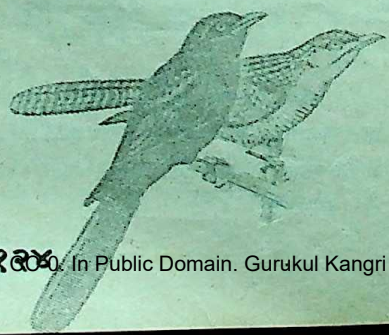

चमगादड़

चमगादड़ अपने पक्षों की मदद से उड़ अवश्य है, किंतु यह पक्षी न होकर स्तनपायी है । इसकी मादा अंडे न देकर शावकों को जन्म देती है, उनको दूध पिलाती है । इसके पंख पर से नहीं वरन् चमड़े की पतली झिल्ली के बने होते हैं । इसके रीढ़ की हड्डी वाले शरीर के चमड़े पर बाल होते हैं । चमगादड़ अंधे नहीं होते, यद्यपि वे रात्रि के अंधकार में, अल्ट्रा ध्वनि रेडार के माध्यम से अपने भोजन कीड़े अन्य वस्तुओं का पता लगाते हैं ।

कीट-भक्षी चमगादड़ अधिकतर रात में निकलते हैं तथा फलाहारी दिन में । ये घोंसले नहीं बनाते, इन्हें तो आराम करने के लिए अंधेरी गुफा सरीखे स्थान में (सुरक्षा के लिए) उल्टा लटकने के लिये एक 'पकड़' भर चाहिये ।

उड़न-लोमड़ी, विश्व का विशालकाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वगंधा

अश्वगंधा सोलानासिए कुल की झाड़ी है, जिसका वैज्ञानिक नाम विदानिआ सोम्निफेरा है। इसकी ऊंचाई एक-डेढ़ मीटर तक होती है। तने और शाखाओं पर सूक्ष्म, ताराकार रोम होते हैं। पत्ते दस मीटर लंबे, अंडाकार तथा रोमयुक्त होते हैं। इसके फूल एक सेंटीमीटर व्यास वाले, हलके पीले रंग के गुच्छों में लगते हैं। फल छह मिलीमीटर व्यास का गोल और चिकना लाल रंग का होता है।

चिकित्सा के लिए अत्यंत उपयोगी अश्वगंधा का उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों में काफी किया जाता है। इसकी जड़ों से निर्मित औषधियां क्षय रोग, दुर्बलता तथा गठिया रोग में रामवाण मानी जाती हैं। इसमें स्वापक (नींद लाने वाले) तथा स्वास्थ्यवर्धक गुण होते हैं। यह मूत्रल यानी पेशाब बढ़ाने वाली भी है। जड़ों को पीस कर फोड़ों, जख्म व सूजन पर लगाने से लाभ मिलता है।

अश्वगंधा की जड़ों और पत्ते एंटीबायोटिक और एंटी-बैक्टीरियल होते हैं।

इसके वंश का एक अन्य पौधा 'आकरी' (विदानिआ कोअगुलेंस, पंजाबी नाम खमजीरा) उत्तर-पश्चिमी भारत में बहुतायत में पाया जाता है। इसका फल पाचन व जिगर विकारों में बहुत उपयोगी है।

गलगल

गलगल का वृक्ष, जिसे अंगरेजी में यलो सिल्क कॉटन ट्री कहते हैं, पतझड़ी वनों में पाया जाता है। यह गरमियों में ठंडक, हरियाली तथा सुनहली आभा देता है। यह वृक्ष पांच मीटर ऊंचा तथा तीस सेंटीमीटर व्यास के चिकने तथा भस्मी तने वाला होता है। अप्रैल में इसकी सारी पत्तियां झड़ जाती हैं, किंतु हथेली के बराबर सुनहले फूलों से यह लदा रहता है। मई में आठ से तीस सेंटीमीटर लंबी, हथेली के आकार की फैलाव वाली चिकनी तथा चमकदार पत्तियां इसमें झूलने लगती हैं। जून-जुलाई तक पांच से आठ सेंटीमीटर लंबी अंडाकार फलियां तैयार हो जाती हैं।

गलगल या गनियार के बीज से तेल तथा रंग निकाला जाता है, तत्पश्चात बची हुई खली उर्वरक का काम करती है। इस वृक्ष की गोंद खांसी में फायदा करती है तथा अनेक दवाएं बनाने के काम आती है। बीज को चने की तरह भूनकर भी खाया जाता है। इसके पुष्पों की चाय ताजगी देती है। इसकी छाल की बनी रस्सी बहुत मजबूत होती है।

—विश्वम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● डॉ. सतीश मलिक

पटाखों से डर

ज., शिवनी (म. प्र.) : २३ वर्षीय एम. एस-सी. की छात्रा हूं। समस्या है कि पटाखों से बहुत डर लगता है। चलाना तो दूर उन्हें जलते हुए भी नहीं देख सकती। दिवाली के समय जब अन्य बच्चे इस कारण छेड़ते हैं, तब आत्महत्या तक के विचार आते हैं। कुछ ही महीनों में शादी होनेवाली है। इसलिए काफी चिंतित हूं कि यह मेरी क्या बीमारी है तथा इसका उपचार क्या है। कृपया शीघ्र मार्गदर्शन करें।

आपकी बीमारी का नाम 'फोबिया' है। यह बच्चों में तो स्वाभाविक तौर पर होती है, परंतु यदि बचपन में किसी कारणवश या किसी दुर्घटना के घटने के कारण या मां-बाप के अधिक संरक्षण व लाड़-प्यार के कारण बाहरी दुनिया की चुनौतियों से आपको जूझना नहीं आता तो इसके इलाज के लिए आपको वास्तव में मनोचिकित्सक द्वारा 'विहेवियर थैरेपी' की चिकित्सा की आवश्यकता है।

आप पहले घर में ही स्वयं इस प्रकार कोशिश करें। अपने परिवार के लोगों के साथ तथा किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जिस पर आपको विश्वास हो, के साथ स्वयं ही एक हल्का-सा पटाखा जलाएं और इस प्रकार स्वयं को इस डर से बाहर निकालें। धीरे-धीरे बड़े पटाखे पर पहुंचें और अधिक मात्रा में इस प्रकार प्रतिदिन के प्रयास से स्वयं ही पटाखों के डर से बाहर आ सकेंगी। साथ ही अपने को सामाजिकता की ओर बढ़ाएं। और आत्मनिर्भरता की ओर कदम रखें। इस प्रकार के प्रयास से आप फोबिया से निकल पाएंगी।

शादी से दुःख

पुष्पा पाण्डेय, अकबरपुर (उ. प्र.) : २१ वर्षीय एम. ए. की अध्ययनरत छात्रा हूं। १० महीने पहले मेरी शादी हुई। शादी के दिन पता नहीं क्यों मुझे बहुत दुःख हुआ। इतने दुःख की अनुभूति मुझे पहले कभी नहीं हुई थी। छोटी-छोटी बात पर गुस्सा आना तथा चिड़-चिड़ी होती जा रही हूं। शारीरिक कमजोरी महसूस होती है। चक्कर आता है। हल्का सिर दर्द बना रहता है। हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाती है। लगता है जान ही निकल जाएगी। ध्यान एकाग्र नहीं होता। पढ़ने बैठती हूं तो मन इधर-उधर भटकता है। नींद-सी आने लगती है। लगता है मेरी जिंदगी में खुशी कभी नहीं आएगी। बहुत परेशान हूं। डॉक्टर साहब कृपया कोई उचित मार्ग मुझे सुझायें।

शादी जीवन की एक बहुत बड़ी घटना है। इसका महत्त्व आपके लिए औरों से भिन्न रहा है। लगता है आपको स्वयं इस बारे में ज्ञान नहीं कि यह घटना आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए दुखद व तनावपूर्ण क्यों रही ? क्या आपको सैक्स संबंधी समस्या है अथवा विवाह के बाद नये वातावरण में ढालने में असमर्थ रहीं । या आप अभी और अध्ययनरत ही रहना चाहती थीं । या मां-बाप के दबाव से शादी की । यह आप विस्तारपूर्वक चिंतन करें क्योंकि तनाव का कारण ढूढ़ना उसके हल पाने के लिए आवश्यक है । आपने जिन शारीरिक व मानसिक लक्षणों का उल्लेख किया है, वह तनावग्रस्त स्थिति या अवसाद के हैं । मन में अंतर्द्वंद्व के रहते ऐसे लक्षण प्राय: दिखायी देते हैं । अभी आपकी इस मनोस्थिति ने रोग का रूप धारण नहीं किया । इसलिए आप स्वयं ही मनोविश्लेषण द्वारा अपने को नयी स्थिति में ढालने का प्रयास कर इस स्थिति से उभर सकती हैं ।

पत्नी से ऐसा व्यवहार

विजय कुमार, हसपुरा : २० वर्षीय बी. ए. का छात्र हूं । समस्या यह है कि जब भी मेरी दृष्टि किसी महिला या लड़की पर पड़ती है, तब मैं श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता हूं, चाहे वह रिश्ते में कुछ भी लगती हो । मुझे डर है कि कहीं मैं पत्नी के साथ ऐसा ही व्यवहार न कर बैठूं । कृपया,उचित सलाह दें ।

जब भी कोई व्यक्ति किसी महिला से मिलता है, तब प्रारंभ में उसके मन में जिस प्रकार के विचार होते हैं उनको लेकर वह व्यावहारिक संबंध प्रारंभ करता है । श्रद्धा की भावना कोई बुरी बात नहीं, परंतु लगता है आप अधिक व्यावहारिक न

> इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आय, पद, आयु एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।
>
> —संपादक

होकर एक काल्पनिक जीवन में जीनेवाले व्यक्ति हैं । आपको व्यवहार कुशल होने की आवश्यकता है । इससे जो आपके मन में आशंका है, स्वयं ही दूर हो जाएंगी ।

घटनाओं से विचलित

विजय, जोधपुर (राजस्थान) : मैं २२ वर्षीय युवक हूं । मेरी परेशानी मन की अस्थिरता है । आध्यात्म और सृष्टि संबंधित प्रश्न मस्तिष्क में उठते रहते हैं । इन प्रश्नों से परेशान हो जाता हूं । अतिभावुक व संवेदनशील हूं । शीघ्र ही घटनाओं से विचलित हो जाता हूं । मनोचिकित्सक के पास जाने से डरता हूं, क्योंकि किसी ने बताया कि वह ऐसी दवा देते हैं कि मरीज बैठा है तो बैठा ही रहेगा । कहीं देख रहा है तो देखता ही रहेगा । उसके सोचने-समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है । निराशा की भावना अधिक है । आत्महत्या की असफल कोशिश भी की है । डॉक्टर साहब इस परिस्थिति में मैं क्या करूं ?

आपके पत्र से लगता है कि आपको 'ऑब्सेशनल पर्सनिलिटी डिस ऑर्डर' है । परंतु इससे घबराने की आवश्यकता नहीं । आपको मनोचिकित्सकों के बारे में काफी गलत धारणाएं हैं । इस गलत धारणा में रहने की वजह से स्वयं की सोचने-समझने की शक्ति पर अंकुश लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है । आपको शायद दवा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । आप अपनी समस्या को अच्छी प्रकार से व्यक्त कर पाने पर उसके मूल कारणों को समझकर उस पर नियंत्रण पा सकते हैं । निराश न हों । बेहिचक मनोचिकित्सक से संपर्क स्थापित कर अपने भय को मन से निकाल दें ।

वह रोया नहीं

अरबिंद सर्वटे, जबलपुर : समस्या मेरे छोटे साले की है । यह एम. काम. कर चुका है । छह वर्ष पूर्व पहले पिता का फिर मां का देहांत हो गया । दोनों की मृत्यु पर रोया नहीं, न ही आंसू आये । घर में हमेशा माता-पिता में तनाव रहता था । इस घटना के एक वर्ष बाद वह मानसिक संतुलन खो बैठा और एकदम आक्रामक हो गया । इसके बाद उसको बिजली की चिकित्सा दी गयी व डेढ़ वर्ष दवाई के बाद ठीक हुआ । तीन वर्ष ठीक रहने के बाद अब फिर वही स्थिति उत्पन्न हो गयी है । क्या योग या ध्यान द्वारा स्थायी लाभ मिल सकेगा या फिर किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से अवगत करा

आपके छोटे साले की समस्या बाल में पहले पिता फिर माता के आकस्मिक देहांत से प्रारंभ हुई । उनकी मृत्यु पर दुःख न प्रकट करना अत्यधिक शोक की स्थि का कारण रहा । मानसिक संतुलन का खोना कई बीमारियों के कारण से होता है । यह जान लेना भी आवश्यक है कि यह रोग आनुवांशिक तो नहीं । आजकल ऐसी दवाएं उपलब्ध हैं, जिसमें बिजली के इलाज की आवश्यकता नहीं रहती । रोग के लक्षणों से उसका निदान कर लेने के पश्चात ऐसी दवाएं उपलब्ध हैं जो स्थायी रूप से रोग को दुबारा उबारने से रोकती हैं । ऐसे रोगी योग व ध्यान द्वारा कभी-कभी अधिक बीमार हो जाते हैं । इस कारण हम उन्हें ध्यान या योग करने की अनुमति नहीं दे सकते । आशा है आप इस परामर्श से अपने साले के लिए स्वस्थ चिकित्सा पाने में समर्थ होंगे ।

त्वचा कैंसर का नया उपचार

तेल-अवीव तथा जेजरील घाटी में स्थित इचिलोव चिकित्सा केंद्रों में त्वचा कैंसर उपचार की नयी विधि का विकास किया गया है । 'परिस्थिति विज्ञान संस्थान' द्वारा किये गये प्रयोगों से पता चला है कि 'इंटरफिरोन अल्फा' नामक पदार्थ इस रोग को दोबारा बढ़ने से रोक देता है । इस विधि से लगभग ४० रोगियों का उपचार किया गया है जिनमें केवल ६ रोगियों में पुनः कैंसर के लक्षण दिखायी पड़े । इस प्रकार यह विधि काफी हद तक सफल रही । चिकित्सकों की सतर्कता के कारण 'मैलानोमास', जिसके कारण त्वचा कैंसर का जन्म होता है, का जल्दी पता लगाकर इस नयी विधि द्वारा उपचार किया जाता है । इस संबंध में विस्तार से 'राजदूत इजराइल एम्बेसी से संपर्क किया जा सकता है ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

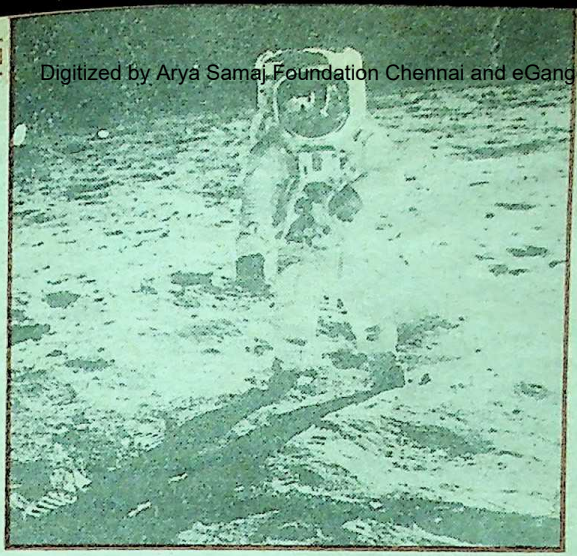

आवाजें कहां से आ रही हैं !

● सुशीला

अमरीकी अंतरिक्ष यान अपोलो-११ अपना लक्ष्य पूरा कर तेजी से पृथ्वी की ओर लौट रहा था। यान में थे, चंद्रमा के धरातल पर कदम रखनेवाले नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन के अतिरिक्त माइकेल कार्लिस।

जब पृथ्वी से दूर

ह्यूस्टन स्थित 'नासा' के नियंत्रण कक्ष का इन अंतरिक्ष यात्रियों से निरंतर संपर्क बना हुआ था।

इस समय अपोलो-११ पृथ्वी से दो लाख ९६ हजार किलोमीटर की दूरी पर था। अपोलो-११ की सफलता से नियंत्रण-कक्ष के सभी वैज्ञानिक-कर्मचारी प्रसन्न थे।

सहसा नियंत्रण-कक्ष में लगे उच्चतम किस्म के टेप रिकार्डरों पर विचित्र-सी ध्वनियां 'टेप' होने लगीं। ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो हजारों रेड इंडियन युद्ध के अपने परंपरागत वाद्य बजा रहे हैं यही नहीं, इस रण-संगीत के मध्य कभी-कभी तीव्र अट्टहासों के स्वर भी सुनायी दे रहे थे।

वैज्ञानिक ने समझा, संभवतः अपोलो यान-११ में किसी प्रकार की कई यांत्रिक त्रुटि उत्पन्न हो गयी हैं और ये आवाजें शायद त्रुटि के कारण हैं। उन्होंने तीनों अंतरिक्ष यात्रियों से संपर्क कर उन्हें इन आवाजों के बारे में बताया और पूछा कि क्या कोई यांत्रिक खराबी हो गयी है ? उत्तर पाकर वे और चौंक पड़े। तीनों यात्रियों ने बताया कि यान के सारे यांत्रिक उपकरण ठीक-ठीक काम कर रहे हैं।

उस दिन रेकॉर्ड की गयी ये ध्वनियां आज भी रहस्य बनी हुई हैं।

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदादेवी

● प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

नंदादेवी चोटी हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में, आकाश को छूनेवाली—७,८१७ मीटर ऊंची चोटी है। यह दुनिया की सुंदर, मोहक व रोमांचक चोटियों में से एक है, जो सुंदरता के लिए 'हिमालय का मोती' नाम से प्रसिद्ध है। यह अपने नाम के अनुरूप आनंदमयी है। नंदादेवी का अर्थ है—आनंदमयी देवी (आनंदेतिलोकान इति नंदा)। उत्तराखंडवासियों की इष्ट देवी भी है यह और आदि –महाशक्ति भी। किसी पर्वत चोटी के साथ इस तरह जीवित रिश्ते की शायद ही, कहीं मिसाल मिले। उत्तराखंड के सीमांत इलाकों में यह देवी 'ध्याण' (बेटी) की तरह मानी जाती है। उत्तराखंड के अनेक शिखर-पर्वत-गांव-क्षेत्र-नदी व देवस्थल इसी के नाम से हैं। जैसे, नंदादेवी, नंदाघुंटी, नंदाखाट, नंदाकोट (पर्वत शिखर), नंदाक क्षेत्र, मंदाकिनी नदी, अलकनंदा नदी, नंदप्रयाग, नंदकेशरी, नंदासैंण, नंदाशिल (चमोली गढ़वाल) आदि। उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में नंदादेवी के प्रमुख मंदिर हैं—लाता, नौटी, कुरुड़, कांसुवा, मींग, कुलसारी, भगोती और कुमाऊं क्षेत्र में अल्मोड़ा, नैनीताल, रणचूला, सनेती, मागर आदि। अल्मोड़ा व नैनीताल के नंदादेवी के मेले कहना ही क्या ? नंदाष्टमी को तो पूरा उत्तराखंड नंदामय हो जाता है। नंदादेवी राज जात हिमालय क्षेत्र में सबसे लंबी, १६४ किमी लंबी धार्मिक पदयात्रा है, जो प्रत्येक १२ वर्ष बाद होती है और इसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में प्रतिवर्ष जात (नंदा यात्रा) का आयोजन होता है। नंदाष्टमी (भादौं माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी) का पर्व नंदादेवी का शिवजी के दिन हुए विवाह के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। पुराणों में शिवजी के आदि-शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रसंग विभिन्न स्वरूपों में मिलते हैं ।

संध्या-सुंदरी देवी नंदा

नंदादेवी चोटी का क्षेत्र सत्तर मील लंबाई में फैला और कई अनाम शिखरों व विराट ग्लेशियरों से घिरा हुआ अलौकिक हिम क्षेत्र है । आकाश को छूती हुई अपनी पूर्णरूपेण एकाकार भव्य जुड़वा चोटियों के कारण नंदादेवी दूसरी चोटियों से अलग ही लगती है । शाम की सिंदूरी धूप में तो यह चोटी स्वर्णिम चुनरी ओढ़े देवी-सी लगती है ।

यह चोटी युगों तक आदमी की पहुंच से बाहर रही है । पर्वतारोहण भी यहां देर से शुरू हुआ । अब फिर से यह चोटी पर्वतारोहण हेतु बंद है । अतीत में झांकें तो पता चलता है कि सबसे पहली बार विदेशी पर्वतारोही डब्लू. ग्राह्म ने सन् १८८३ में दो स्विस साथियों के साथ इस क्षेत्र में पहुंचने का प्रयास किया था । ग्राहम ने रैणी गांव से नीती दर्रे का रास्ता चुना था । वह आगे रामणी और ऋषिगंगा नदी के संगम तक ही पहुंच पाया । इससे आगे खड़ी विशाल अलंघ्य चट्टानों ने उनका रास्ता रोक दिया ।

प्रयास-दर-प्रयास

फिर सन् १९०५ में एन.टी.जी. लौंगस्टाफ इस क्षेत्र में आया । वह भी इस दुर्गम क्षेत्र के बाहरी भाग तक ही पहुंच सका । भीतरी भाग का दृश्य वह तीन हजार फुट की ऊंचाई से एक नीली बर्फीली दीवार से ही झांककर देख सका । तभी से इस हिस्से का नाम 'लांग स्टाफ कोल' पड़ गया । सन् १९०७ में लांगस्टाफ ने नंदादेवी आरोहण के लिए दो बार पूरे जोखिम के साथ प्रयास किया पर भू-आकृतिक जटिलता ने उसे आगे नहीं बढ़ने दिया ।

अल्मोड़ा के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर ह्यूजर टल्वेजने भी बाहरी क्षेत्र से लौट गया ।

अगले पचास सालों तक पर्वतारोही आते रहे व बाहरी भाग से वापस लौटते रहे । सन् १९३४ में केन्या के दो पर्वतारोही इन चट्टानों को लांघकर भीतरी हिस्से में तो पहुंच गये; फिर भी वे नंदादेवी के आधार शिविर तक ही पहुंच पाये ।

सन् १९३६ में पहली बार सफलता मिली दो ब्रिटिश पर्वतारोहियों—एच. डब्लू. टिलमैन व ई. ओडेले को । २९ अगस्त को ये दोनों नंदादेवी चोटी पर पहुंचे । उनका अनुमान था कि भीतरी भाग में उन्हें निहायत नीरस स्थान देखने को मिलेगा, लेकिन उनके सामने एक ऐसा स्वप्निल बुग्याल (चारागाही मैदान) था जो फूलों से खचाखच भरा था, वहां छोटी-बड़ी अनेक मनोहारी झीलें थीं और निकट ही बर्फीले ढालों पर हिम-प्रपात । घाटी में थार, हिरन, कस्तूरा मृग जैसे वन्य-पशु निर्भय विचरण कर रहे थे ।

इसी तरह नंदादेवी की पूर्वी चोटी पर चढ़ने में सन् १९३९ में पौलेंड के एक पर्वतारोही दल को पहली बार सफलता मिली । इसके बारह वर्ष बाद रोजर डुप्ला के नेतृत्व में एक फ्रैंच दल आया, जिसकी योजना मुख्य चोटी पर अभियान की थी, पर इस अभियान का परिणाम बहुत दुःखद रहा । डुप्ला व उसका साथी वापस नहीं लौट सके ।

बेटी नंदादेवी

अमरीका का विलियम उनसेल्ड सन् १९४८ में जब पर्वतारोहण के लिए पहली बार भारत आया तो उसने नीलकंठ शिखर से नंदादेवी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखर को देखा और इतना भाव-विभोर हो गया कि उसने उसी क्षण तय कर लिया कि उसकी यदि बेटी हुई तो उसका नाम नंदा ही रखेगा और उसके बड़े होने पर उसे साथ लेकर नंदादेवी शिखर पर चढ़ेगा ।

और ऐसा ही हुआ । उसके बेटी हुई । नाम रखा नंदादेवी उनसेल्ड । संयोग से उसकी जिंदगी का काफी बड़ा हिस्सा गढ़वाल में बीता । निर्भय होकर पहाड़ों पर घूमती हुई वह बड़ी हुई और बाइस वर्ष की उम्र में , सन् १९७६ में वह भारत-अमरीका संयुक्त नंदादेवी अभियान दल में चुन ली गयी । पहली बार किसी महिला का चुनाव हुआ था । अभियान का लीडर एडम कार्टर था, तो डिप्टी लीडर नंदा का पिता ।

अभियान प्रारंभ हुआ तो सुनहरे बालोंवाली युवती नंदा के चेहरे पर विशेष मुसकान थी । वह अन्य सदस्यों से कहती—'इस चोटी से उसका करीबी रिश्ता है । वह मुझे बार-बार बुलाती है ।'

दल मंजिल की ओर बढ़ता जा रहा था । कैंप ४ तक सब निर्विघ्न पहुंचे लेकिन, कैंप ४ ही उसके लिए अंतिम पड़ाव साबित हुआ । अभियान दल के नेता व नंदा के पिता की डायरी के अनुसार नंदा ७ सितंबर की रात को बेतरह दर्द से तड़पती रही । उसे पेचिश हो गयी थी । कै भी करती रही । दवाओं का कुछ भी असर नहीं हुआ । ८ सितंबर की सुबह को सूरज की किरणें फूटी ही थीं कि वह हमेशा के लिए नंदादेवी की गोद में सो गयी ।

नंदादेवी का प्रवेश-द्वार जहां सन् १९३४ में पर्वतारोहियों के लिए खुला, वहीं सन् १९८२ में बंद कर दिया गया । यह प्रतिबंध अब भी है । ऐसा यहां की जैविक विविधता को बनाये रखने, पारिस्थितिकीय पुर्नस्थापना व पर्यावरण संरक्षण के लिए किया गया है ।

एक अमरीकी पर्वतारोही ने जब नंदादेवी शिखर को देखा तो वह इतना भाव-विभोर हो गया कि उसने उसी क्षण तय किया कि यदि उसके बेटी हुई तो उसका नाम नंदा ही रखेगा और उसके बड़े होने पर उसे साथ लेकर नंदादेवी शिखर पर चढ़ेगा । और ऐसा ही हुआ...

जनवरी १९३९ में इस क्षेत्र के ६३० वर्ग कि.मी. को नंदादेवी पशु विहार क्षेत्र घोषित किया गया । १९८२ में इस क्षेत्र को बढ़ाकर ८०० वर्ग कि.मी. कर दिया गया । साथ ही नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना की गयी । १९८६ में भारतवर्ष के घोषित ३ बायोस्फेयर रिजर्व क्षेत्रों में एक इस क्षेत्र को सम्मिलित कर लिया गया ।

यह एक चुभनेवाली बात है कि पूर्ण प्रतिबंध के बावजूद नंदादेवी अभयारण्य में तस्करी व अवैध शिकार की घटनाएं सुनी जा रही हैं । स्थानीय लोगों को कड़े वन कानून के तहत कई परेशानियां उठानी पड़ रही हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

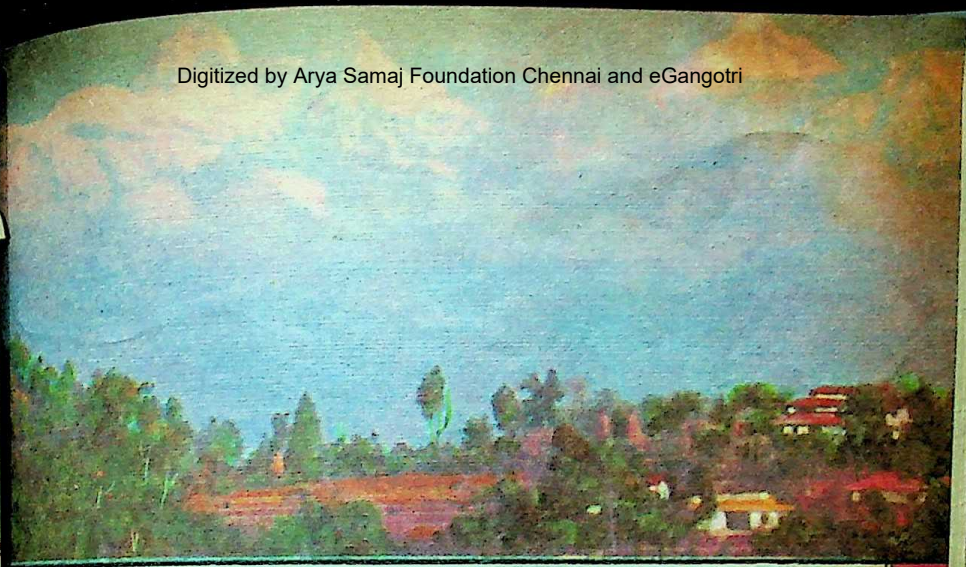

पर्वतारोहण व्यवस्था से जुड़े युवक बेरोजगार हो गये हैं। पर्वतीय क्षेत्र में स्थानीय जनता व प्रबुद्ध नागरिक नन्दादेवी के क्षेत्र में जाने पर लगी रोक को हटाने की मांग कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि नन्दादेवी जाने के मार्ग पर पहले पड़नेवाले गांव रैणी में ही सातवें दशक में विश्वविख्यात 'चिपको आंदोलन' पैदा हुआ था। उन्हीं पर्यावरण संरक्षक लोगों पर इस क्षेत्र में अब पाबंदी है। आज इन लोगों की व्यथा अकेले में पड़ गयी है।

—मंदिर मार्ग, गोपेश्वर-२४६४०१
चमोली गढ़वाल

↑ नंदादेवी की चोटियों में पर्वतीय जीवन

↑ नंदादेवी का घूंघट : नंदाघुंटी पर्वत

← स्वर्णिम किरणों की छटा में नन्दादेवी चोटी:अथाह हिमराशि

(चित्र : प्रकाश पुरोहित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

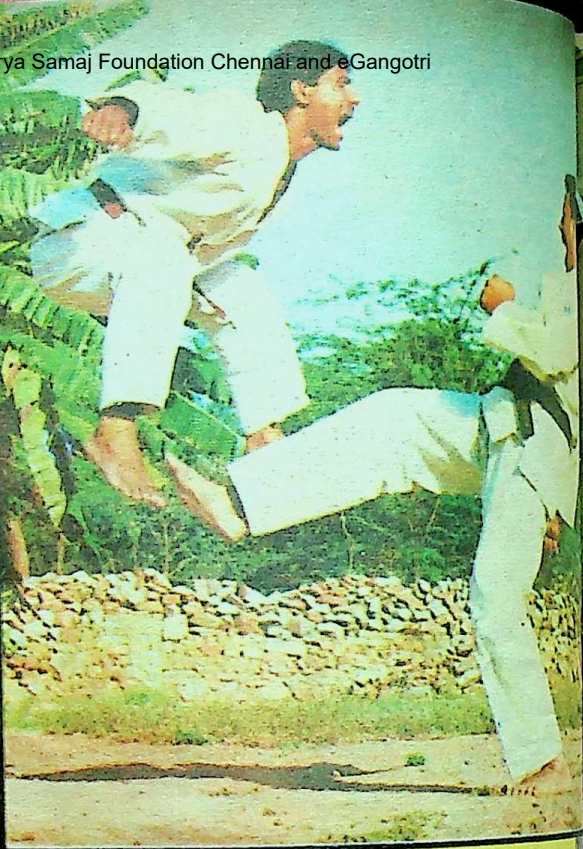

मार्शल आर्ट का एक सशक्त आधार फ्लाइंग किक

उस समय की यात्राएं जोखिम व संघर्षपूर्ण थीं। उन्होंने शारीरिक-रक्षा व मानसिक संतुलन बनाये रखने के लिए बौद्ध शिक्षा के एक अध्याय 'एकीन सूत्र' का लगातार अभ्यास किया। बाद में यही कला शोरिन जी के नाम से प्रसिद्ध हुई। धीरे-धीरे यह

शारीरिक व मानसिक संतुलन का सूत्र कराटे

कराटे प्रशिणार्थी

सभी चित्र : पी.के. आर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला रियोक्यद्वीप में पहुंची और 'ओकीनावाते' के नाम से जानी गयी ।

कई शताब्दियों तक 'ओकीनावाते' ने काफी विकास किया, जबकि कई जगह यह कला 'टोट' के नाम से भी प्रसिद्ध हुई । सन् १४२९ में जब सोहाशी रियोक्यू द्वीप का सम्राट बना तो उसने समस्त द्वीप वासियों पर हथियार रखने का कड़ा प्रतिबंध लगा दिया । यह प्रतिबंध सन् १६०९ तक लागू रहा । यह काल इन कलाओं का स्वर्णयुग कहा जा सकता है । हथियार रखने पर लगी पाबंदी के फलस्वरूप लोगों ने अपने शरीर को कड़े

सभ्यता के साथ जापानी खेल पनपे । लगभग एक हजार वर्ष पूर्व राजदरबारों में कुलीन वंश के योद्धा शौर्य प्रदर्शन के लिए 'कमारी' (जापानी फुटबाल) का प्रयोग व प्रदर्शन करते थे, जब धीरे-धीरे सत्ता दरबार और कुलीनों के हाथ से योद्धाओं के हाथों में आ गयी तो जापान में शौर्य-कलाओं का महत्त्व स्वतः ही बढ़ गया ।

समुराई और जुजुत्सु

सामंती युग में बड़े घराने के लोग 'समुराई' रखते थे । समुराई से तात्पर्य लठैतों व लड़ने का ही काम करनेवाले एक समूह से था । ये

करांटे

भारत लौटी— भारत से गयी कला

● पी.के. आर्य

परिश्रम व अभ्यास के बाद एक चलते-फिरते हथियार के रूप में परिणत करना शुरू किया और ये कलाएं घर-घर, गली-गली में सीखी सिखायी जाने लगीं ।

जापानी योद्धाओं ने बौद्ध गुरुओं की इन कलाओं को अपने ढंग से विकसित करके उन्हें पूरी तरह जापानी खेल बना लिया तथा फिर शताब्दियों तक जापान के ये खेल समयानुसार बदलते रहे । ये कलाएं जापान की राष्ट्रीय धरोहर के रूप में जानी जाने लगी । जापानी

लोग अपने मालिक के लिए लड़ते थे । समुराई प्रभुत्व कायम करने के लिए लड़ाकों ने पारंपरिक खेलों का सहारा लिया और इस तरह खेल तथा युद्ध एक-दूसरे का पर्याय बन गये । कुछ लोगों ने जूडो को प्रारंभ में 'जुजुत्सु' के रूप में संबोधित किया । प्राचीन काल में सेनापतियों ने अनुभव किया कि युद्ध स्थल में अकसर खाली हाथ भी विरोधी से लड़ना पड़ता है । इसी जरूरत ने जुजुत्सु को नये आयाम दिये फलतः उसका विकास होता चला गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मरक्षा की इन रोमांचक युद्ध कलाओं में से अधिकांश का जन्म भारत में ही हुआ था । अतीत का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्रारंभ में निजी बचाव व आत्मरक्षा के लिए प्रयोग में लायी जानेवाली ये तकनीकें बाद में जूडो-कराटे के रूप में विख्यात हुई । लगभग १४०० वर्ष पूर्व एक बौद्ध साधु 'बौद्धि धर्म' ने दक्षिण भारत से चीन की ओर प्रस्थान किया था ।

सन् १५३२ में एक साधु ने ताके नोउची के जंगल में पहला जुजुत्सु विद्यालय खोला । इडोकाल (सन् १६०३-१८६७) में जुजुत्सु के अनेक विद्यालय खुल गये तथा इसे आत्मा और शरीर के एकात्म का रूप मान लिया गया । सन् १८६७ में आधुनिक कराटे के संस्थापक गोचिन फूनाकोशी का जन्म हुआ । उधर सन् १८८२ में आधुनिक जूडो के जन्मदाता जुगारो कानो ने जुजुत्सु के गहन अध्ययन व कठिन अभ्यास के बाद सभी जुजुत्सु स्कूलों को मिलाकर सन् १८८५ में टोक्यो कोटोकान हाल शुरू किया । जुजुत्सु को शालीनता प्रदान की तथा खेल के लिए कुछ नियम भी प्रतिपादित किये और इस तरह जूडो-कराटे के रूप में जानी जाने वाली ये कलाएं अपने-अपने तरीके से विकसित होती रहीं । जूडो को शीघ्र अनेक विश्वविद्यालयों ने अपना लिया । सन् १८८७ में नेवी अकादमी और सन् १८८९ में केनो विश्वविद्यालय में इसे बाकायदा पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया तथा सन् १९३१ में इसे हाई स्कूल का अनिवार्य विषय घोषित कर दिया गया । जुगारो कानो ने जूडो को खेल के रूप में विश्वभर में प्रचारित किया । सन् १८८९ में जब कानो इंगलैंड गये तो उनकी भेंट अपने पहले विदेशी शिष्य एक अंगरेज सैनिक अधिकारी से हुई । सन् १९५१ में जूडो की अंतरराष्ट्रीय संस्था की स्थापना हुई ।

जूडो : विश्व चैंपियनशिप में

सन् १९५६ और १९५८ में पहली व दूसरी विश्व चैंपियनशिप हुईं जिनमें जापान का वर्चस्व रहा लेकिन विदेशी जूडो विशेषज्ञों ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करके जापानी खिलाड़ियों को लगभग चुनौती देनी शुरू कर दी थी । वर्ष १९६३ की आठवीं विश्व प्रतिस्पर्धा में भी जापान का ही बोलबाला रहा । सन् १९६४ के टोकियो-ओलंपिक खेलों में जापान की प्रतिष्ठा प्रभावित हुई और जूडो की हर स्पर्धाओं में से जापान सिर्फ तीन ही हासिल कर पाया । भारी वजन वर्ग में हालैंड के विम रुस्का ने दो तथा रूस के ए. शोशोश्विली ने एक पदक जीता । द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एशिया में जापानी सैनिक टुकड़ियों से लड़नेवाले मित्र राष्ट्रों के सैनिकों को एक खास चेतावनी दी गयी थी कि वो जापानी सैनिकों से आमने-सामने लड़ने के प्रयासों से बचे, यदि आमना-सामना अचानक भी हो जाए तो जापानी सैनिकों के निकट न जाएं । इन चेतावनियों का एकमात्र कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

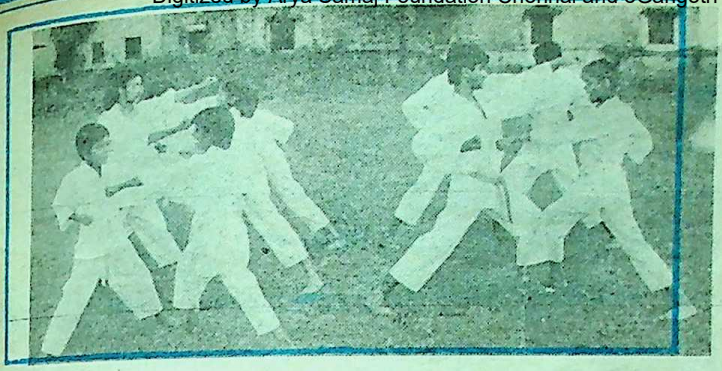

मार्शल आर्ट का अभ्यास

जापान की शौर्य-कलाएं (मार्शल आर्ट) ही थी, ये शौर्य-कलाएं जापानी फौजियों के लिए खेल और मनोरंजन का साधन होने के साथ-साथ उनके युद्ध कौशल का भी एक प्रमुख अध्याय रही है । मूलतः जापानियों द्वारा शिकार और रोजमर्रा की जिंदगी में अपनी हिफाजत के लिए विकसित की गयी शौर्य-कलाएं क्यूदो, सूमो, जूडो, नगीनाता तथा कराटे कैसे भी बलिष्ट, शक्तिशाली, और साहसी व्यक्ति पर काबू पाने का बेहद कारगर तरीका है ।

जापान में आधुनिक खेलों के साथ-साथ यहां के पारंपरिक खेलों की लोकप्रियता आज भी बनी हुई है । दूसरे विश्वयुद्ध के बाद इन खेल-पेंचों पर मित्र राष्ट्रों की आधिपत्य सेना ने प्रतिबंध लगा दिया था परंतु सन् १९५१ के बाद जापानियों को इन कलाओं को सीखने और प्रयोग करने की पूरी छूट मिल गयी । आज इन कलाओं में सिर्फ जापानी लोग ही नहीं विश्व के अनेक देशों के लोग दिन-ब-दिन पूरी रुचि से

आज अंतरराष्ट्रीय जूडो संघ के १०० देश सदस्य हैं । ये अंतरराष्ट्रीय खेल विश्व के स्मृति पटल पर तेजी से अपनी पहचान कायम कर रहे हैं । हजारों लाखों युवक-युवतियां इस कला को तेजी के साथ अंगीकार कर रहे हैं । आज यह स्मरण कर भी आश्चर्य होता है कि आत्मरक्षा की ये लाजवाब कला उस युग में जन्मी-पनपी जब जापान में मारपीट के नाम पर सिर्फ घूँसों, चाकुओं, छड़ों, लकड़ी की फट्टी, तलवारों, भालों और तीर-कमान का प्रयोग होता था । आज किसी भी देश में स्वरक्षा की ये विधाएं परिचय की मोहताज नहीं हैं । भारत के सभी प्रांतों में इन खेलों के प्रति युवक-युवतियों का रुझान बढ़ा है ।

वैसे जूडो शब्द का अभिप्राय है 'कोमल मार्ग' । इसके प्रमुख अंग हैं 'पटक' (प्रेशर), नकड (सेल्ड) । जूडो-कराटे की विभिन्न शैलियों की राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा समय-समय पर आयोजित होती रहती हैं । जिसमें प्रतिभाशाली खिलाड़ी अपने करतबों का बढ़-चढ़कर प्रदर्शन करते हैं ।

— आर्य-भवन

फलावदा—मेरठ २५०४०१ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

पटेल शहर घूमकर गांव आया तो उसकी पत्नी ने पूछा, ''तुमने वहां कौन-सी अजीबो-गरीब चीज देखी ?''

पटेल, ''वहां ऊंची-ऊंची इमारतें हैं और हर मंजिल के लिए एक कमरे में अलग-अलग बटन लगे हुए हैं । जिस मंजिल पर जाना हो, उसका बटन दबाओ और जब तक वह मंजिल खिसककर खुद नीचे नहीं आ जाती वहीं खड़े इंतजार करो !''

●

मंजू, ''एक तुम हो, और एक सुनीता के पति, जो रोज बिस्तर पर उसे चाय का प्याला लाकर देते हैं ।''

पति, ''ठीक है, मैं कोशिश करके देखता हूं ।''

मंजू, ''क्या कोशिश करोगे ?''

पति, ''यही कि, सुनीता के पति एक प्याला चाय रोज तुम्हें भी दे जाया करे !''

●

''शादी के बाद क्या आप मेरा फिल्में करते रहना पसंद करोगे ?'' हीरोइन से पति, ''पसंद... ? अरे, मैंने शादी ही पर की है !''

● सुभाष

पिता ने अपनी बेटी को डांटते हुए मना करने पर भी फिर उसी लड़के बातचीत की ।''

''क्या बताऊं पिताजी, वह कल मेरे पास आया और बोला कि उसे गयी है । उसे दिलासा देने के लिए प्यार से बातचीत की ।'' बेटी, वह अपने सभी घरवालों को मार

●

एक गांव का मुखिया दूसरे गांव के के मुखिया से पूछा, ''क्या तुम्हारे लोग ईमानदार हैं ?''

जी हां, ईमानदार भी हैं और नेक

''फिर तुमने कंधे पर बंदूक क्यों है ?''

''उन्हें ईमानदार और नेक बनाने

● पुष्पेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंसू

आंसू
कोरों को नम
करता है
कुछ भी हो
दुःख
कम करता है ।

— गीता वर्मा

अंतर

सांप जहर—
निकालते हैं
दांतों से ।
और नेता—
यही काम करते—
भाषण-बातों से ।

मान-सम्मान

दूरदर्शन की पहेली में
विजेता के नाम ।
पांच हजार के—
जूते दिये ईनाम ।

—गफूर स्नेही

भाग्य

मेरे
भाग्य का
घड़ा फूटा
फिर भी
छींका नहीं टूटा ।

युद्ध

पत्नी बनी अमरीका
पति सद्दाम बना
रो रहा है,
वहां पर खाड़ी
तो यहां साड़ी-युद्ध
हो रहा है ।

समानता

''चुनाव मैदान में
आना, या
स्वेटर बनाना
एक समान है ।''
इस महिला पर
सवार थी
चुनाव लड़ने की धुन
कहती है,
''यहां भी तो
करनी होती है
उधेड़-बुन ।''

—पीयूष 'पाचक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात मई सन् १८९६ की बात है। फिलडेलफिया की मोयनसिंग जेल के अहाते में उसे फांसी पर चढ़ते देखने के लिए भारी भीड़ लगी थी। उसे अपने एक साथी बी.एफ. पिटजेल के बीमे की राशि को हड़पने की जालसाजी करते पकड़ा गया था। और तभी पता चला कि पिटजेल की हत्या भी उसने ही की है। हत्या भी इस सफाई से कि दुर्घटना लगे। जब उसे फांसी पर चढ़ाया जा रहा था, तब उसने लिखित रूप में स्वीकारा कि उसने सत्ताइस हत्याएं और की हैं।

गांव में हुआ था। उसका पिता गांव का पोस्टमास्टर था। पिता चाहता था कि वह पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बने तथा शान से जिंदगी जिये। वह पढ़ा-लिखा भी और १८८४ में उसने मिशीगन यूनीवर्सिटी से मेडीकल डॉक्टर की डिग्री भी प्राप्त कर फिर न्यूयार्क में उसने अपना क्लीनिक खोला। प्रैक्टिस भी अच्छी चली, लेकिन समय के लिए ही। बस, यही उसकी कुछ महीनों का समय था, जब उसने की कमाई की और संभ्रांत जिंदगी

जहां से कोई अमीर औ जीवित नहीं लौटी

हत्यारे की जिंदगी

हालांकि, उसने सत्ताइस हत्याएं कबूल कीं, लेकिन खोज-बीन से पता चला कि उसने कम-से-कम दो सौ लोगों की हत्याएं की। वह अमरीका का पहला हत्यारा था, जिसने इतनी अधिक संख्या में हत्याएं की थीं और इस कुख्यात हत्यारे को एच. एच. होल्मस के नाम से ज्यादा जाना गया, जबकि उसके और भी कई छद्म नाम थे, जिससे वह अमरीका के भिन्न-भिन्न प्रांतों में धोखाधड़ी, जालसाजियां और हत्याएं करता रहा। उसका असली नाम था हरमन वेब्स्टर मडगेट। उसका जन्म सन् १८६० को न्यू हेंपशायर के गिल्मेंटीन नामक

बाकी तो वह जब तक जिया, धोखा जालसाजी, बेइमानी और हत्यारे की जीता रहा।

वह कुशाग्र बुद्धि तो था ही साथ व्यक्तित्व, रहन-सहन भी उच्चवर्गीय में सुंदर और आकर्षक हमेशा विक्टो जमाने के फेमिली डॉक्टरों जैसी पोशाक रहता। सोने की जंजीर से बंधी घड़ी ऊपरी जेब में रहती। घनी मूंछें, भूरे काले बाल—कुल मिलाकर उसका ऐसा सुदर्शन था, जिस पर औरतें मर

उस पर मर-मिटनेवाली पहली क्लारा लोवरिंग थी। क्लारा उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगी, जब वह मेडीकल कॉलेज में पढ़ रहा था। अठारह साल की उम्र में ही उसने क्लारा से शादी कर ली। कुछ साल उसके साथ अच्छी तरह रहा। एक बच्चा भी हुआ। फिर क्लारा और बच्चे को छोड़कर वह शिकागो भाग गया।

शिकागो में वह मार्था वेल्कनेप नामक एक औरत के संपर्क में आया, जिसके परिवार के पास इलिनोइरन में काफी बड़ी जमीन-जायदाद थी। उसे मार्था की सुंदरता ने नहीं, बल्कि उसकी धन-दौलत ने आकर्षित किया था।

योजना बनायी, जो सफल न हो सकी। जालसाजी के मामले को अदालत में ले जाकर अपनी बदनामी कराने के बजाय मार्था परिवार ने उससे संबंध तोड़ लिये, पर मार्था का सम्मोहन उससे नहीं टूटा।

इसी बीच एक अखबार में छपे विज्ञापन पर उसकी नजर पड़ी। होल्डेन नामक हाल ही में विधवा हुई एक महिला को अपने दवाई के स्टोर के लिए एक कैमिस्ट चाहिए था। वह स्टोर शिकागो के एक उपनगर एंगलवुड की ६३वीं स्ट्रीट और वैलेस के नुक्कड़ पर था। होल्मस को

वह कुशाग्र बुद्धि तो था ही साथ ही उसका व्यक्तित्व, रहन-सहन भी उच्चवर्गीय था। देखने में सुंदर और आकर्षक हमेशा विक्टोरियन जमाने के फेमिली डॉक्टरों जैसी पोशाक पहने रहता। सोने की जंजीर से बंधी घड़ी उसकी ऊपरी जेब में रहती। उसका व्यक्तित्व ऐसा सुदर्शन था, जिस पर औरतें मर मिटतीं।

मार्था के अनाकर्षक और गहरे रंग-रूप के बावजूद, और पहली पत्नी के तलाक दिये बिना, उसने अपना नाम बदलकर दूसरी शादी कर ली। अब उसका नाम था एच. एच. होल्मस। उसने मार्था के दादा को जताया कि वह बहुत धनी व्यक्ति है। उसने मार्था के लिए मकान बनवाने के नाम पर उनसे काफी बड़ी रकम झपट ली और फिर यहीं से शुरू हो गयी उसकी जालसाजी की करतूतें। सबसे पहला शिकार बना मार्था का दादा, जिसके जाली दस्तखत बनाकर उसने एक बड़ी रकम बैंक से निकाल ली। इस जालसाजी का पर्दाफाश न हो, इसके लिए उसने मार्था के दादा को खत्म करने की

यह नौकरी मिल गयी। उसने मेहनत की और व्यवसाय को काफी बढ़ा दिया। इससे होल्डेन भी उस पर मर मिटी। होल्मस अपनी आदत के अनुसार हेरा-फेरी करने लगा। जैसे ही होल्डेन को हेरा-फेरी का पता चला तो उसने होल्डेन को गायब कर दिया और लोगों को यही कहकर बहकाता रहा कि वह लंबी छुट्टियां मनाने के लिए कैलीफोर्निया गयी हुई है। लेकिन फिर होल्डेन कभी नहीं लौटी।

होल्मस ने अब अपने दवाई के व्यवसाय में बड़ी कंपनियों की नकली दवाइयों का बनाना और बेचना शुरू कर दिया और खूब पैसा बनाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी दौरान उसने मार्था को भी छोड़ दिया क्योंकि, मार्था की संपत्ति उसके हाथ लगनेवाली नहीं थी। मार्था को छोड़कर वह स्टोर के ऊपर के एपार्टमेंट में रहने लगा, जहां उसे उसकी प्रेमिकाएं घेरे रहतीं।

इन्हीं दिनों उसके संपर्क में आया हसीलिअस कोन्नर, जो आईओवा प्रांत के डेवेनपार्ट का जौहरी था और अपना व्यवसाय डेवेनपोर्ट से हटाकर यहां जमाना चाहता था। होल्मस ने उसे अपने स्टोर के एक हिस्से में रहने की जगह दे दी। होल्मस उस पर इसलिए भी मेहरबान था कि उसके साथ उसकी सुंदर पत्नी जूलिया और अठारह साल की जवान बहन गेर्टी भी थी। कोन्नर दंपत्ति की एक आठ साल की लड़की पर्ल भी थी।

कोन्नर जब अपने काम में व्यस्त होता, तब उसकी पत्नी होल्मस के साथ होती। उसने होल्मस की सेक्रेट्री बनकर उसका सारा काम संभाल लिया था और होल्मस को उसकी अगली योजना पर काम करने के लिए खुला छोड़ दिया था।

होटल बनाम किला

सन् १८९३ में शिकागो में पहला विश्व व्यापार मेला— 'कोलम्बियन एक्सपोजिशन' होनेवाला था, जिसमें भाग लेने सभी देशों से हजारों लोगों के आने की उम्मीद थी। इसलिए होल्मस को लगा कि उचित यही रहेगा कि वह होटल खोला जाए। उसके स्टोर के सामने एक बड़ा-सा भू-खंड खाली पड़ा था, उसने अपने एक और छद्म नाम एच.एस.कैंपबेल के नाम से खरीद लिया और होटल बनवाना शुरू कर दिया। इसी दौरान पिटजेल उसका साथी बना। वह भी उसी की तरह धोखेबाज और तिकड़मी था। होटल बनवाने में उसने ठेकेदारों, बढ़ई और फर्नीचरवालों के साथ जमकर धोखाधड़ी की। यह होटल— 'हेल्मस केसल' दरअसल, एक रहस्यमय किलेनुमा था, जिसमें तहखाने-दर-तहखाने और ऐसे गुप्त स्थान थे जहां पर पहुंचने के बाद आदमी का पता न चले। इसमें सबसे पहले गुम होनेवाला उसका शिकार था जौहरी कोन्नर जिससे उसकी पत्नी

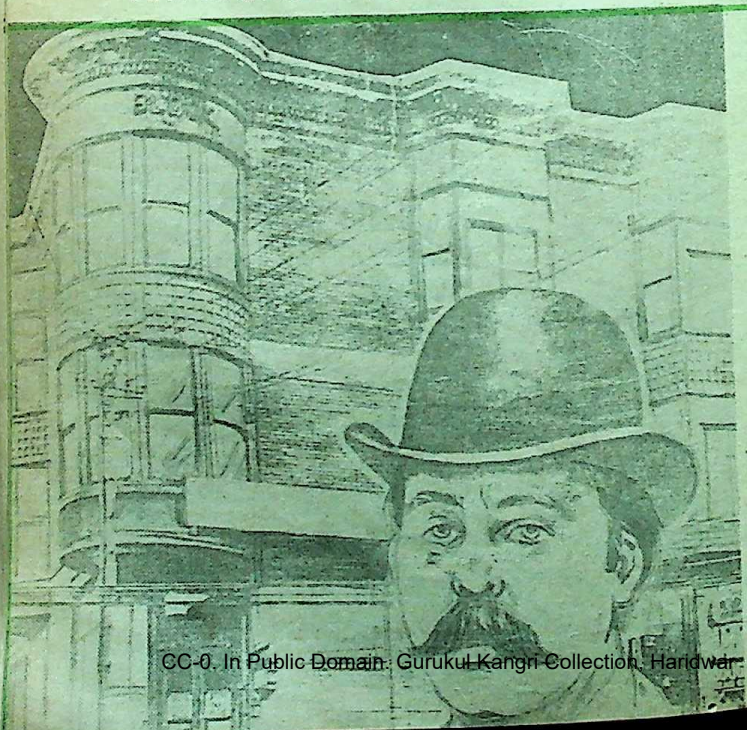

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लेकर होल्मस का झगड़ा हुआ था । कोन्नर को गायब कर वह इसी होटल में जूलिया उसकी बेटी और गेर्टी के साथ रहने लगा ।

अगले दो सालों में इस होटल में बहुत-से लोग गायब हुए, जिनमें पहले गेर्टी गायब हुई, उसके बाद जूलिया और उसकी बेटी पर्ल भी गायब हो गयी । इसी दौरान उसके संबंध एमिलिन सीग्रांड नामक युवती से हुए । कुछ दिन बाद वह भी गायब हो गयी । पूछने पर उसने लोगों को कह दिया कि वह एक कॉन्वेंट में नन बन गयी है ।

जब होल्मस पर पिटजेल की हत्या का मुकदमा चल रहा था, तब गवाहों ने बताया कि विश्व व्यापार मेले के दौरान सैकड़ों की संख्या में, अधिकतर अमीर महिलाओं को होल्मस के होटल में घुसते तो देखा, लेकिन उनमें से अधिकांश को जीवित निकलते कभी नहीं देखा होल्मस का व्यक्तित्व ही ऐसा था कि अच्छी-से-अच्छी औरतें उस पर मरती थीं । और जो उस पर मरती थीं, वे सचमुच ही मर जाती थीं । ऐसी ही दो अनाथ बहनें मित्री और नन्नी तथा उसका भाई हेरोल्ड विलियम था । इन तीनों के नाम मिसीसिपी में उस समय बीस से लेकर पचास हजार डालर की जमीन-जायदाद थी । उसने मित्री को बताया कि वह एक अमीर प्रोपर्टी डीलर है । मित्री उसके झांसे में आ गयी और उसके होटल में स्थायी तौर पर रहने लगी । इसी बीच उसे पता चला कि मित्री की जायदाद में उसकी छोटी बहन नन्नी और भाई हेरोल्ड भी शामिल है, तो उसने नन्नी को बुलवाकर फुसलाया कि वह उसे तथा मित्री को घुमाने न्यूयार्क तथा पेरिस ले जाएगा । पेरिस में वह उसे किसी कला महाविद्यालय में दाखिला दिला देगा । उसके झांसे में आकर नन्नी ने अपने भाई को पत्र में बड़े उत्साह के साथ सारी बातें लिखीं और आगे लिखा कि 'वह हम दोनों बहनों के लिए बिलकुल चिंतित न हो ।'

इस पत्र के रवाना होने के बाद नन्नी का कोई पता-ठिकाना कभी नहीं मिला । वह कहां गायब हो गयी ।

जारी रहा सिलसिला

इसके बाद से होल्मस और पिटजेल ने कई जालसाजियां और ठगी के धंधे किये । एक बार पिटजेल को जेल हो गयी, तो होल्मस एक संभ्रांत कांग्रेसमैन बनकर पहुंचा और उसे जमानत पर छुड़ा लाया । कहने की आवश्यकता नहीं कि कांग्रेसमैन के प्रमाणपत्र भी जाली थे ।

शिकागो लौटकर होल्मस ने और भी कई धंधे किये, लेकिन चले नहीं, तो उसने बीमे का पैसा हड़पने के लिए अपने होटल की ऊपरी मंजिल पर आग लगा दी और छह हजार डालर का दावा पेश कर दिया । पर उसकी यह चाल चल नहीं सकी । उसे कोई मुआवजा नहीं मिला ।

इसके बाद होल्मस का शिकागो में रहना मुश्किल हो गया । वह मित्री को लेकर दक्षिण की ओर चल पड़ा । रास्ते में एक संभ्रांत धनी, अत्यंत सुंदर युवती जोर्जियाना योक मिली । होल्मस ने उसे अपना नाम हेनरी मैंसफील्ड हावर्ड बताया और बताया कि वह एक धनी पेटेंट ब्रोकर है । होल्मस ने उसे ऐसा फांसा कि उसने उससे शादी कर ली । इसी दौरान उसने मित्री को भी गायब कर दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालांकि, उसने मिन्नी को गायब कर दिया लेकिन, टेक्सास में फोर्ट वोर्थ स्थित उसकी संपत्ति पर उसकी निगाह गड़ी रही । वह पिटजेल को लेकर टेक्सास पहुंचा और वहां अपना जाल बिछाया, लेकिन एक चोरी के अपराध में पकड़ा गया । फिर वह टेक्सास छोड़कर लुइस की ओर चल पड़ा । यहां भी धोखाधड़ी के एक मामले में उसे जेल हो गयी । पता नहीं, उसने जोर्जियाना योक को क्या समझाया कि उसने उसकी जमानत दे दी । वह जब जेल में था, तब उसकी दोस्ती मरीओन हेडगेपाथ नामक एक ट्रेन लुटेरे से हो गयी । उसके साथ उसने बीमे की धोखाधड़ी की एक योजना बनायी, जिसके पूरा होने पर मरीओन को पांच सौ डॉलर देने का वायदा किया ।

योजना कारगर तो हुई पर...

योजना यह थी कि फिलडेफिया में पिटजेल फर्जी नाम से पेटेंट ब्रोकर का काम करेगा । उसकी पत्नी उसका चालीस हजार डॉलर का बीमा करायेगी । पिटजेल और होल्मस मिलकर एक नकली एक्सीडेंट करेंगे, जिसमें मुर्दाघर से लाश चुराकर लायी जाएगी और उस लाश को पिटजेल की लाश बताकर बीमे की रकम वसूल की जाएगी । और ऐसा ही हुआ । शहर में एक बुरी तरह जली हुई लाश मिली, जिसे देखने पर यही लगता था कि वह विस्फोट में जली है वास्तव में, वह पिटजेल की ही लाश थी । होल्मस और पिटजेल की बड़ी लड़की एलिस ने लाश की शिनाख्त की । बीमा कंपनी ने उन्हें पैसा दे दिया । मरीओन ने वायदे के अनुसार अपना हिस्सा मांगा, जिसे देने से इनकार करने पर मरीओन पुलिस के पास चला गया ।

पुलिस से बचने के लिए होल्मस अपनी बीवी जोर्जियाना, पिटजेल की बीवी और उसके पांच बच्चों के साथ शहर-शहर भागता रहा । इसी बीच पिटजेल के पांच बच्चों में से तीन बच्चे गायब हो गये । जिनकी लाशें बाद में एक मकान में दबी मिलीं, जिसे किराये पर लेकर कुछ समय के लिए होल्मस रहा था ।

अंततः होल्मस पकड़ा गया । उसे फिलडेलफिया लाया गया, जहां उस पर बीमा कंपनी के साथ धोखाधड़ी का मुकदमा और दूसरा, पिटजेल की हत्या का मुकदमा चलाया गया । पुलिस के गुप्तचर विभाग ने उसके खिलाफ ढेर सारे सबूत इकट्ठे किये । उसके होटल की तलाशी लेने पर तहखानों में से तीन महिलाओं के अस्थिपंजर मिले । डॉक्टरी चीरफाड़ के औजार, यातना देनेवाले उपकरण भी मिले । तेजाब की बोतलें आदि भी मिलीं । पुलिस ने शिकागो के एक मैकेनिक को भी गवाह के रूप में पेश किया, जिसने बताया कि होल्मस ने उससे तीन औरतों के शवों का मांस छीलकर पूरे अस्थिपंजर निकलवाये थे और ये अस्थिपंजर एक मेडीकल कॉलेज को ३२ डॉलर की दर से बेचे थे ।

पुलिस ने उसे कई हत्याओं का दोषी ठहराया, लेकिन जज ने उसे पिटजेल की हत्या के चल रहे मुकदमे तक ही सीमित रखा और फांसी की सजा सुनायी ।

फांसी पर चढ़ते समय उसने सातहत्या हत्याओं को खुद-ब-खुद स्वीकारा और जल्लाद से कहा कि उसके गले में जल्दी से फंदा डाल दे ।

— प्रस्तुति : उ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

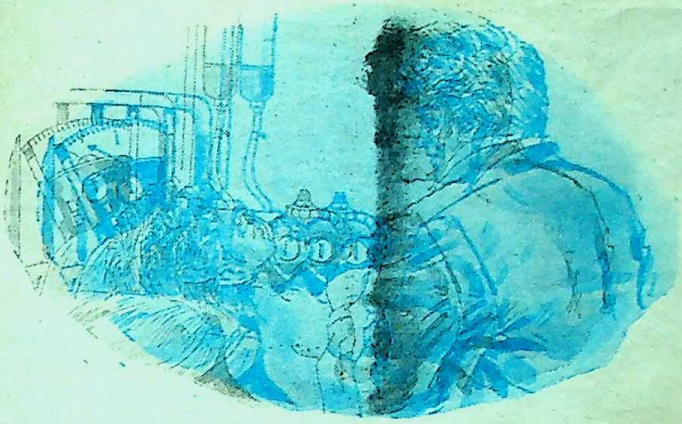

आत्मा का वजन ३० ग्राम है ?

● विवेक शुक्ल

ग्रामोफोन विद्युत बल्ब और चलचित्र के आविष्कारक इस शताब्दी के महानतम अमरीकी वैज्ञानिक टामस अल्वा एडीसन का मानना था कि मदुष्य देह नश्वर है, किंतु उसकी चेतना (आत्मा) अजर-अमर है । एडीसन ने अपने जीवनकाल में १००० से अधिक आविष्कारों को पेटेंट कराया था ।

उन्होंने आत्मा की अमरता पर भी अनुसंधान कार्य किया था । एडीसन का मत था कि प्रत्येक प्राणी की ६०० खरब कोशिकाओं में विद्युत कणों का वास है और मनुष्य इन खरबों विद्युत कणों का एक समूह मात्र है । एडीसन के अनुसार मनुष्य की मृत्यु के बाद ये विद्युत कण मृत देह का परित्याग कर शून्य में प्रवाहित हो जाते हैं,

जहा से कालांतर में ये विभिन्न रूप आकार में पुनः जीवन धारण करते हैं । कहने का आशय यह है कि मनुष्य की दैहिक मृत्यु के बाद उसके ये विद्युत कण मधुमक्खियों के झुंड की तरह शून्य में स्थानांतरित हो जाते हैं, जहां पर इनका अस्तित्व विद्यमान रहता है ।

विश्व के प्रायः सभी धर्म आत्मा की अमरता को किसी न किसी रूप में स्वीकारते रहे हैं । किंतु वैदिक धर्म और जैन धर्म ने आत्मा की अमरता को कुछ ज्यादा ही महत्त्व दिया है । गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को आत्मा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैक्डूगल अपने इस प्रयोग पर आंखें गड़ाये रहे । उन्होंने और उनके सहकर्मी वैज्ञानिकों ने देखा कि जब तक रोगी जीवित रहा, तब तक वह यांत्रिक तराजू एक ही वजन बताती रही । उसकी मापक सुई में तनिक भी अंतर नहीं दिखा । किंतु जिस क्षण रोगी के प्राण निकले उसी क्षण वजन मापक सुई पीछे घूम गयी और उसने इंगित किया कि रोगी का वजन पूर्वापेक्षा ३० ग्राम कम हो गया है ।

अमरता का ही उपदेश दिया था । समस्त वैदिक वांङ्मय आत्मा की नित्यता का बखान करता है । शरीर के मिटने के बाद भी आत्मा का अस्तित्व विद्यमान रहता है और वह अपने कर्मों, स्वभाव-संस्कार के अनुरूप पुनः शरीर धारण करता है । वृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार देहांत के बाद आत्मा अपने पूर्व शरीर की समस्त ऊर्जा व अनुभूतियों को अपने साथ ले जाता है, जिसके आधार पर वह नया शरीर (पुनर्जन्म) ग्रहण करता है ।

विलियम मैक्डूगल का विलक्षण प्रयोग

अधुनिक जीव वैज्ञानिकों का अब यह मानना है कि मानव शरीर में कोई ऐसा सूक्ष्म पदार्थ अवश्य है, जो देह के नष्ट हो जाने के बाद भी विनष्ट नहीं होता । इस सूक्ष्म तत्त्व को वैदिक दर्शन आत्मा कहता है । कुछ समय पूर्व अमरीकी वैज्ञानिक विलियम मैक्डूगल ने आत्मा के संदर्भ में जो गहन अनुसंधान किया था, उसके नतीजे चौंकानेवाले हैं ।

मैक्डूगल का कहना है, "यह मानना कि शरीर के नष्ट हो जाने के बाद कुछ शेष नहीं रहता पूरी तरह बकवास है । शरीर के मिट जाने के बाद भी आत्म तत्त्व का अस्तित्व रहता है ।" इस क्रम में आश्चर्य की बात तो यह है कि मैक्डूगल ने आत्मा के वजन को तौलने का भी एक दिलचस्प प्रयोग किया ।

विलियम मैक्डूगल ने एक ऐसी यांत्रिक तराजू का आविष्कार किया, जिसके जरिये ग्राम के हजारहवें भाग तक का भार मापा जा सकता था । मैक्डूगल ने एक मरणासन्न रोगी के बिस्तर पर इस यांत्रिक तराजू को फिट कर दिया । इस तराजू से न सिर्फ रोगी का वजन लिया गया, बल्कि उसके पलंग, वस्त्र, दी जानेवाली दवाइयों तक का वजन लिया गया । और-तो-और इस तराजू के जरिये रोगी द्वारा ली और छोड़ी जानेवाली सांसों तक का वजन लिया जाता रहा । मैक्डूगल अपने इस प्रयोग पर आंखें गड़ाये रहे । उन्होंने और उनके सहकर्मी वैज्ञानिकों ने देखा कि जब तक रोगी जीवित रहा, तब तक वह यांत्रिक तराजू एक ही वजन बताती रही । उसकी मापक सुई में तनिक भी अंतर नहीं दिखा । किंतु जिस क्षण रोगी के प्राण निकले उसी क्षण वजन मापक सुई पीछे घूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी और उसने इंगित किया कि रोगी का वजन पूर्वापेक्षा ३० ग्राम कम हो गया है ।

विलियम मैक्डूगल ने इस प्रकार के परीक्षण ५०० से अधिक मरणासन्न रोगियों पर किये, किंतु प्रत्येक अवस्था में निष्कर्ष वही रहा । यानी रोगी की दैहिक मृत्यु पर उसके वजन में ३० ग्राम की कमी आ गयी ।

रहस्यमय रहस्य—जैव प्लाज्मा

रूसी वैज्ञानिकों ने पिछले दो दशकों में दूरबोध और मानवीय चेतना सरीखे परामनोविज्ञान के विषयों पर गहन शोधकार्य किया है । आस्ट्रेडर तथा स्फ़रोडर नामक वैज्ञानिकों का मत है कि प्रत्येक प्राणी के अंदर कोई प्रकाश पुंज या कोई सूक्ष्मातिसूक्ष्म ऊर्जा, जिसे उन्होंने अदृश्य माना है, निहित होती है यह प्रकाश पुंज ही मनुष्य के दैहिक शरीर को आवृत्त किये रहता है । आस्ट्रेडर और स्फ़रोडर ने इलैक्ट्रॉनिक सूक्ष्मदर्शी के जरिए मरणासन्न व्यक्ति के शरीर से इस प्रकाश पुंज को बाहर निकलते देखा है । रूसी वैज्ञानिक बी. एल. ग्रिश्चैंको ने पदार्थ की चार अवस्थाओं— ठोस, द्रव, गैस के अतिरिक्त एक अन्य अवस्था— जैव प्लाज्मा की खोज की है । ग्रिश्चैंको के अनुसार जैव प्लाज्मा ही 'प्राण' है तथा इसके शरीर से बाहर हो जाने का नाम ही मृत्यु है ।

जैव प्लाज्मा में स्वतंत्र इलेक्ट्रान और स्वतंत्र प्रोटान पाये जाते हैं, जिनका नाभिक से कोई सरोकार नहीं होता । मनुष्य की मृत्यु के बाद भी जैव प्लाज्मा सक्रिय रहता है । आधुनिक जीव वैज्ञानिकों के अनुसार जैव प्लाज्मा मनुष्य की सुषुम्ना नाड़ी में विद्यमान होता है । क्या जैव प्लाज्मा वह सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्व तो नहीं है, जिसे आत्मा या रूह की संज्ञा दी जाती है ?

अमरीका के विख्यात जीव वैज्ञानिक डॉ. इर्वन केमरान ने कोशिकाओं के नाभिक में पाये जाने वाले न्यूक्लिक एसिड पर गहन अनुसंधान कार्य किया है । केमरान का मानना है कि न्यूक्लिक एसिड एक अभौतिक तत्त्व है, जिसका अस्तित्व शरीर से पृथक हो जाने के बाद भी बना रहता है । केमरान के अतिरिक्त अब प्रायः सभी जीव वैज्ञानिक इस तथ्य को मानते हैं कि मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका में ऐसा तत्त्व मौजूद है, जिसका कभी नाश नहीं होता । क्या आत्मा की अमरता के संदर्भ में वैज्ञानिकों की यह स्वीकारोक्ति खरी नहीं उतरती है ?

— ७२/६३, महावीरन गली
कटघर, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (२११००३)

सबसे चौड़ी सड़क

संसार की सबसे चौड़ी सड़क ब्राजील में है । इस सड़क का नाम है— 'द मांयूमेंटल ऐक्सिस' । इस चौड़ी सड़क पर पास-पास सटे १६० मोटर गाड़ी (कारें) चलायी जा सकती हैं । इसके विपरीत इटली के रोम शहर में सबसे कम चौड़ी सड़क है । इस तंग सड़क का नाम है— 'सेंट जोंस लेन' और इसकी चौड़ाई मात्र ४८ सेंटीमीटर है ।

● मनोज राय

. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे गांधीजी को जीवित जला देना चाहते थे

सन् १८९६ का नवंबर महीना । सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और ज्योतीन्द्र मोहन ठाकुर, 'इंगलिश मैन' के संपादक मि. सांडर्स से मिलकर गांधीजी कलकत्ते में सभा की तैयारी कर रहे थे कि उन्हें नेटाल (अफरीका) से तार मिला, 'अविलंब आइए ।' यह सोचकर कि हिंदुस्तानियों के खिलाफ कोई नया आंदोलन उठा होगा, गांधीजी ने कलकत्ते का कार्य अधूरा छोड़ दिया और 'कोलैंड' नामक जहाज, जिसे नेटाल के भारतीय व्यापारी दादा अब्दुल्ला की फर्म ने खरीद लिया था, पर परिवार सहित सवार होकर नेटाल के लिए रवाना हुए । इसके बाद तुरंत ही पर्सियन स्टीम नेविगेशन कंपनी का स्टीमर 'नादरी' भी नेटाल के लिए चल पड़ा । दोनों 'जहाजों' में लगभग ८०० यात्री थे ।

भारत में गांधीजी ने नेटाल के गोरों की छीछालेदर की थी और बताया था कि इन गोरों के अत्याचार से वहां के हिंदुस्तानी कितने पीड़ित एवं आतंकित हैं । इस कारण नेटाल के गोरे गांधीजी से बहुत क्रुद्ध थे । उन्होंने सभा की और प्रस्ताव पारित किया कि नेटाल में दोनों स्टीमरों के मुसाफिरों के साथ गांधीजी को उतरने न दिया जाए । बहाना बनाया गया प्लेग की बीमारी का, क्योंकि १८९६ में भारत में प्लेग का प्रथम दर्शन हुआ भी था । जहाजों में कोई छूत का रोगी नहीं था, परंतु उन्हें २३ दिनों तक डरबन के बंदरगाह के प्रवेश पथ में रोके रखा गया । दादा अब्दुल्ला, जो 'कोलैंड' के मालिक और 'नादरी' के एजेंट थे, को गोरों ने खूब धमकाया, जहाजों को लौटा देने का लोभ भी दिखाया, पर वे और उनके साथी डरपोक न थे । उन्होंने धमकी देनेवालों को उत्तर दिया, "बरबादी के अंतिम चरण में पहुंचकर भी हम लड़ते रहेंगे, मगर निर्दोष यात्रियों को लौटा देने का पाप नहीं करेंगे । आप लोगों की तरह हमें भी अपने देश पर अभिमान है ।" दादा अब्दुल्ला की कोठी के वकील मि. एफ. ए. लाटन भी साहसी और बहादुर व्यक्ति थे । उन्होंने भी अन्याय के सामने सिर न झुकाने के लिए प्रेरित किया । गोरों की कमेटी की ओर से प्रेषित सूचना को जहाज के कप्तान ने पढ़कर यात्रियों को सुनाया, 'नेटाल के गोरे बहुत उत्तेजित हैं और उनके मिजाज की हालत जानते हुए भी अगर हिंदुस्तानी यात्री उतरने की कोशिश करेंगे तो बंदरगाह के ऊपर कमेटी के आदमी खड़े रहेंगे और एक-एक भारतीय को उठाकर समुद्र में फेंक देंगे ।' इस सूचना का भी यात्रियों पर असर नहीं हुआ और उन्होंने वापस जाने से इनकार कर दिया । अंततः नेटाल की सरकार ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हारकर अनुचित प्रतिबंध को स्वीकार करने की घोषणा की।

मि. एस्कंब ने गांधीजी के पास संदेश भेजा, 'आप दिन में जहाज से न उतरें। शाम को मैं बंदरगाह के सुपरिंटेंडेंट को भेजूंगा। उनके साथ ही आपको घर जाना उचित रहेगा। आपके परिवार के अन्य सदस्य जब चाहें उतर सकते हैं।' इस सूचना से गांधीजी को खतरे का अहसास हुआ, उन्होंने इसे चेतावनी के रूप में ग्रहण किया। बाल-बच्चों को उन्होंने अपने साथी एवं मुवक्किल पारसी रूस्तमजी के यहां भेज दिया। दूसरे यात्री भी उतर गये। कुछ समय उपरांत मि. लाटन वहां आये और जब उन्हें गांधीजी के अब तक न उतरने का कारण ज्ञात हुआ तो उन्होंने कहा, "आपको भय न हो तो मेरे साथ चलिए। कहीं कुछ नहीं होगा।"

गांधीजी ने उत्तर दिया, 'मुझे किसी प्रकार का डर नहीं। मैं मात्र इतना सोच रहा हूं कि मि. एस्कंब की सूचना का आदर करूं या न करूं?" मि. लाटन ने कहा, "मि. एस्कंब की सूचना में छल-कपट नहीं हैं, ऐसा मानने का आधार क्या है? वे विशेष विश्वसनीय नहीं हैं और यदि मान भी लिया जाए कि उन्होंने अच्छे इरादे से सलाह दी है, तो भी उसे मान लेने से आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आती है। अतः आपको अभी चलना चाहिए।"

गांधीजी ने सिर पर पगड़ी रखी और मि. लाटन के साथ चल पड़े। बंदरगाह से सेठ रूस्तम जी के मकान की दूरी पैदल चलने पर एक घंटे में तय की जा सकती थी। बंदरगाह पर अधिक भीड़ नहीं थी, परंतु पगड़ी के कारण लड़कों ने गांधीजी को पहचान लिया और 'गांधी', 'गांधी', इसकी मारो, 'घेरो', चिल्लाते हुए उनकी ओर लपके। धीरे-धीरे शोर बढ़ने लगा। अतः उन्होंने रिक्शा बुलाया। रिक्शा, जिसे आदमी खींचते हैं। रिक्शावाले हब्शी को गोरों ने धमकाया। रिक्शावाला डर गया, बोला— 'खा' अर्थात 'ना' और चला गया।

अब पैदल चलने के अलावा और कोई रास्ता नहीं रहा। आगे-आगे गांधी जी, पीछे-पीछे भीड़। मुख्य मार्ग, वेस्ट स्ट्रीट पहुंचने पर छोटे-बड़े सैकड़ों लोग उस भीड़ में शामिल हो गये। एक तगड़े आदमी ने मि. लाटन को दोनों हाथों से पकड़कर गांधीजी से अलग कर दिया। अब वे सरलता से गांधीजी की सहायता नहीं कर सकते थे। गांधीजी पर गालियों की बौछार और पत्थरों की वर्षा होने लगी। चक्कर खाकर गांधीजी गिरने ही वाले थे कि उनके हाथ में एक मकान के आंगन की रेलिंग आ गयी। थोड़ा दम लेकर उन्होंने पुनः चलना प्रारंभ किया।

सूर्यास्त होते-होते गांधीजी सही सलामत रूस्तमजी के निवास स्थान पर पहुंच गये। डॉक्टर ढाजी बरजोर ने उनकी मरहम-पट्टी की।

पुलिस सुपरिंटेंडेंट अलेक्जेंडर खबर पाते ही खुफिया पुलिस के साथ दौड़े और चुपके से घर के दरवाजे पर अधिकार कर लिया, ताकि दरवाजे को तोड़कर कोई अंदर न घुस सके।

ब्रिटिश शासन ने हमलावरों पर मुकदमा चलाने के लिए गांधीजी से कहा, परंतु गांधीजी ने उन्हें निर्दोष बताते हुए इनकार कर दिया।

—डॉ. रामनारायण सिंह 'मधुर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

भावना चतुर्वेदी, नीमच

● तंत्र शास्त्र में यंत्र से क्या अभिप्राय है ?

□ ज्यामितीय रेखाचित्रो पर आधारित यंत्र शब्द संस्कृत की 'यम' धातु से बना है जिसका अर्थ है धारण करना । यंत्र वस्तुतः देवता की शक्ति और ऊर्जा को स्वयं धारण करता है । कुलार्णव तंत्र (५.८६) में कहा गया है कि जो संबंध आत्मा का शरीर के साथ है, तेल का दीपक के साथ है, वही यंत्र का देवता के साथ है । यंत्र देवता का मानवीय रूप न होकर ज्यामितीय रूप है । विशेष विवरण के लिए कृपया 'कादम्बिनी' के नवंबर'९५ के तंत्र विशेषांक में पृष्ठ ४० के लेख को पढ़ें ।

सरला शुक्ल, नासिक

● दिल्ली में निर्मित कमलदल सदृश ध्यान केंद्र किसका है ?

□ यह बहाई धर्म का ध्यान केंद्र है जो एकड़ भूमि में निर्मित है । इसका निर्माण कार्य सन् १९८० में प्रारंभ हुआ था और दिसंबर १९८६ में कुल दस करोड़ रुपये की लागत पर बनकर तैयार हुआ था ।

संजय श्रीवास्तव, सतना

● अकबर ने कुल कितने विवाह किये थे, क्या किसी विधवा से भी किया था ?

□ 'कादम्बिनी' के जनवरी'९६ अंक (गोष्ठी) में इस प्रश्न का विस्तार से उत्तर दिया गया है । अकबर ने बैरम खां की विधवा सुल्तान सलीमा बेगम से भी विवाह किया था । वह अवस्था में अकबर से कुछ वर्ष बड़ी थी ।

अखिलेश जोशी, बड़वाह

● कुतुब मीनार का निर्माण कब हुआ था ?

□ इस ७३ मीटर ऊंची मीनार का निर्माण कुतुब-उद-दीन ऐबक (मृत्यु सन् १२१०) ने ११९३ में प्रारंभ कराया था, जिसे

हरिवंश गहलोत, सीकर

● कपास संबंधी अनुसंधान की भारत में क्या व्यवस्था है ?

□ भारत सरकार ने केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान की स्थापना अप्रैल १९७६ में नागपुर में की थी, इसके दो क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र भी हैं, एक कोयंबटूर (तमिलनाडु) में और दूसरा सिरसा (हरियाणा) में है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलजीत बेरी, दिल्ली

● सोयाबीन किस प्रकार स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है ?

□ सोयाबीन में लगभग ४० प्रतिशत उत्तम गुणवत्ता वाली प्रोटीन, २३ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, २० प्रतिशत कोलेस्ट्राल मुक्त तेल और संतुलित मात्रा में खनिज और विटामिन होते हैं ।सोयाबीन में दाल, मूंगफली, मांस और मछली से दोगुना, अंडे से तीन गुना और दूध से १० गुना अधिक प्रोटीन होता है । मधुमेह के रोगियों के लिए सोयाबीन संतुलित आहार है ।

उसके उत्तराधिकारी ने पूरा कराया ।

प्रह्लाद जसवानी, मांडला

● नाखून काटने से दर्द क्यों नहीं होता ?

□ नाखूनों का उद्गम क्षेत्र शरीर की त्वचा है । ये एक विशेष अवयव से निर्मित होते हैं जिसे केराटिन कहते हैं जो एक मृत कोशिका (प्रोटीन) है । इसीलिए नाखून काटने में दर्द नहीं होता ।

भागीरथ कुशवाहा, हजारीबाग

● जुगनू कैसे चमकता है ?

□ जुगनू में प्रकाश का उत्सर्जन पेट के नीचे स्थित भाग से होता है । इसमें 'लुसीफेरिन' और 'लुसी फेराज' नामक दो रसायन होते हैं । 'लुसीफेरिन' ही वह रसायन है जो ऑक्सीजन के साथ मिलकर प्रकाश उत्पन्न करता है । ऑक्सीजन और 'लुसीफेरिन' के मिश्रण में 'लुसीफेराज' उत्प्रेरक का काम करता है ।

राजेंद्र कुमार उरांव, रांची विजय कुमार कर्ण, औरंगाबाद

● जम्मू-तवी कन्याकुमारी हिमसागर एक्सप्रेस और गुवाहाटी-त्रिवेंद्रम एक्सप्रेस में कौन अधिक लंबी यात्रा की है ?

□ जम्मू-तवी-कन्याकुमारी हिमसागर एकसप्रेस ३,७३० किलोमीटर की दूरी तय करती है, जबकि गुवाहाटी-त्रिवेंद्रम एक्सप्रेस ३,५७४ किलोमीटर चलती है ।

चित्रा सिंह, रांची

● अगली शताब्दी का पहला 'एशियाड' कब और कहां होगा ?

□ कोरिया के दूसरे सबसे बड़े शहर तथा विशालतम बंदरगाह नगर पूसन में १४वें एशियाई खेल सन् २००२ में आयोजित किये जाएंगे । कोरिया में इससे पहले सन् १९८६ में राजधानी सोल में एशियाड हो चुका है । पूसन में २१वीं शताब्दी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम एशियाड सितंबर २९ से अक्तूबर १४ तक १६ दिन चलेगा। इसमें ४३ सदस्य-देशों के १०,००० एथलीट और पदाधिकारी भाग लेंगे।

निर्मल भगत, धनबाद

● ढाक और टेसू के फूल कहां होते हैं और रंग कैसा होता है ?

□ ढाक, पलास और टेसू एक ही फूल के नाम हैं। इसका वैज्ञानिक नाम ब्यूटिया मोनोस्पर्मा है तथा यह पैपिलियोनेसी कुल का सदस्य है। समुद्रतल से लेकर शिवालिक पहाड़ियों तक ये पाये जाते हैं। यह सरदियों में पतझड़ का शिकार हो जाता है। चालीस फुट तक ऊंचे ढाक के वृक्षों में बसंत के आगमन पर फूल खिलते हैं।

संजय डबास, रोहतक

● भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट का इतिहास क्या है ?

□ जाट रेजिमेंट की स्थापना सन् १७९५ में की गयी थी। इसने सन् १८४२ के प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध तथा सन् १८४८ के द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करके शौर्य पदक प्राप्त किये थे। भारतीय स्वाधीनता के पश्चात हुए समस्त युद्धों में इसने हिस्सा लिया। स्वाधीनता पूर्व के युद्धों में यह ३० रण सम्मान और एक विक्टोरिया क्रॉस, तीन जॉर्ज क्रॉस के अतिरिक्त कई अन्य शौर्य सम्मान ले चुकी है। इसी प्रकार स्वाधीन भारत में यह चार रण सम्मान, ७ महावीर चक्र, ५ कीर्ति चक्र, ३४ वीर चक्र और १० शौर्य चक्र प्राप्त कर चुकी है। इस रेजीमेंट में अफसर और जवान 'राम राम' से आपस में अभिवादन करते हैं।

इंद्रदेव मोहन, जयपुर

● आखिर डायनासौर लुप्त क्यों हुए ?

□ लगभग १८ करोड़ वर्ष पूर्व डायनासौरों का पृथ्वी पर वर्चस्व था। वे पृथ्वी पर उत्पन्न विशालतम जंतु थे। फिर भी लगभग ९ करोड़ वर्ष पूर्व वे लुप्त हो गये। वैज्ञानिकों का मत है कि शरीर से अत्यधिक भारी होने के कारण वे पृथ्वी पर खड़े नहीं हो पाते थे और पानी अथवा दलदल में रहते थे, उनमें इतनी समझ नहीं थी कि वे समय के परिवर्तन के साथ किस तरह अपने जीवन को ढालें। मौसम में परिवर्तन होने लगे थे, जिससे धीरे-धीरे दलदल समाप्त हो गये, पर्वत उभर आये तथा कुछ किस्म के डायनासौर खुश्क भूमि पर रह नहीं सके। मौसम में परिवर्तन के कारण वनस्पति उत्पादन भी बंद हो गया, जिन पर ये विशाल जंतु जीवित रहते थे। मौसम गरम से बदलकर सर्द भी होने लगा जो उनके अनुकूल नहीं रह गया।

चलते-चलते

प्रश्न : आपकी दृष्टि में इस माह, इस मौसम में नया क्या हो रहा है ?

उत्तर : इन दिनों नये बैल खेतों को जोत रहे हैं।

—सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यकथा

प्रेतात्मा ने संत के जीवन को मोड़ा

● श्याम सुंदर भट्ट

लगभग छह फुट की ऊंचाईवाला हृष्ट-पुष्ट, हल्का, श्याम शरीर, श्वेत दाढ़ी, सिर के लगभग श्वेत बालों में से बिखरती दो गंगा-यमुना जैसी काली लटें, कटीली आंखें, बिना सिले वस्त्रों में लिपटा वह व्यक्तित्व आज भी जब कभी स्मृति पटल पर उभरता है तो मेरा मन उस दिव्यात्मा के श्री चरणों में सहसा नमन कर बैठता है।

न केवल स्वरूप से अपितु मन, कर्म एवं वचन से भी वे सच्चे साधु थे। भाषण देते नहीं थे। उन्होंने किसी को भी मंत्र नहीं दिया, कभी कोई मठ या आश्रम नहीं बनाया। केवल उन ब्राह्मणों के पांच घरों से दिन में एक बार भिक्षा मांग कर अपनी उदरपूर्ति किया करते थे, जिनकी आय के स्रोत शुद्ध हुआ करते थे। जब वृद्धावस्था के कारण भिक्षा मांगने जाना संभव नहीं हुआ, तब उनके द्वारा निर्दिष्ट पांच-सात सद्-ब्राह्मण परिवारों से दस-बीस रुपया मासिक चंदा एकत्रित कर एक पंडित उनके लिए दो-तीन टिक्कड़ बना देता था, कभी पैसे छुए नहीं। मेवाड़ के तत्कालीन नरेश महाराणा फतहसिंह, भोपालसिंह एवं उनके कई सामंतों द्वारा बार-बार आग्रह करने पर भी वे उनके राजप्रासाद में भिक्षा लेने नहीं गये।

उनकी उम्र का मुझे पता नहीं था। उदयपुर के वृद्धतम लोगों से भी यही सुना गया कि उन्हें जब भी देखा तब भी वे ऐसे ही थे। मेरा संपर्क उनसे जीवन के अंतिम दशक में हुआ। यह अवधि ऐसी थी, जिसमें वह सिद्धमहापुरुष समस्त चमत्कारिक घटनाओं से हटकर शास्त्रों में की गयी मिलावट का पता लगाने तथा उसे शुद्ध करने के प्रयास में संलग्न था। उनके भक्तों ने उनकी सिद्धियों के कई चमत्कार भी सुनाये। केवल दृष्टि निक्षेप से ही रोगों को दूर कर देना, चीनी को नमक में बदल देना, व्यक्ति को देखने मात्र से उसकी आय के स्रोत, उसकी आदतों का पता लगा लेना, यज्ञ के समय बिना बाजार से मंगवाए समस्त सामग्री एक गुफा में से प्रकट कर देना आदि-आदि।

सदा उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठे रहनेवाले उस परंपरा प्रिय महापुरुष से मैंने एक दिन पूछा—

"महाराज, क्या भूत-पिशाच आदि का अस्तित्व होता है ?"

"हां।"

"क्या आप हमें अपना संस्मरण सुना सकते हैं ?"

स्वामी ने आरंभ किया—

"दुर्गा सप्तशती में श्लोकों की गिनती पूरी करने में 'उवाच' जैसे शब्दों को भी पूरा श्लोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लिया गया है । इस तथ्य के प्रति मेरे मन में संदेह था क्योंकि हमारे पूर्वजों को श्लोकों का ज्ञान था । अतः 'उवाच' को पूरा श्लोक मान लिया जाना मुझे पच नहीं रहा था । यद्यपि मैं स्वयं पाठ करता था, फिर भी मन में संदेह अवश्य था । इस संदेह की निवृत्ति होगी, इस संकल्प को लेकर मैंने एक बार गंगोत्री से गंगासागर तक की पैदल यात्रा का निश्चय किया । मैं प्रायः मौन ही रहता था । पैदल ही संपूर्ण यात्रा करनी थी । कहीं भीख भी नहीं मांगता था । जो कुछ मुझे कोई दे जाता, यदि उस अन्न के पीछे शुद्ध आय का स्रोत होता तो मैं खा लेता अन्यथा भूखा ही रह जाता ।''

''मेरी यात्रा प्रयागराज तक बिना किसी क्षेपक के चलती रही । वहां मैं गंगा के किनारे एक ब्राह्मण के बगीचे में ठहरा हुआ था, प्रयाग में कई लोग मेरे परिचित थे । अतः उनके आग्रह के कारण लगभग एक सप्ताह तक वहीं रुका रहा ।''

''उस बगीचे में एक छोटा-सा देवालय था । उस देवालय में मालिक का पंद्रह-सोलह वर्ष का बालक संध्या-पूजा किया करता था । एक दिन मेरी निगाह उस बालक पर जम गयी । जब वह अर्चना पूरी कर उठा, तब मैंने उसे बुलवाया और उसकी उपासना का क्रम पूछा । उस बालक ने 'अपवित्रः पवित्रो वा' से लेकर संकल्प, अधमर्षण, न्यास, ध्यान अर्घ्य, उपस्थान आदि सभी क्रम बता दिये । उसके पूजा क्रम में मुझे कुछ ऐसा लगा कि वह त्रुटि पर था । अतः मैंने उसे सुझाया कि अमुक कार्य पहले कर लिया करो और अमुक कर्म इसके बाद । इस प्रकार उसे पूरा क्रम बता दिया ।''

''बात आयी-गयी हो गयी, किंतु [illegible] बाद, वही बालक हाथ में लंबा छुरा, [illegible] रेशमी रुमाल और रौद्ररूप में उस [illegible] प्रविष्ट हुआ । संभवतया वह किसी [illegible] था । मैं जहां बैठा था, उसके पांच [illegible] वह छुरे का अग्रभाग जमीन में गाड़कर [illegible] अकड़कर बैठ गया और कहने लगा [illegible]

''ऐ संन्यासी ।'' उसके संबोधन [illegible] समझ गया कि इस बालक पर कोई [illegible] थी ।

''आप कौन हैं ?'' मैंने परिचय [illegible] से पूछा ।

''संन्यासी, तू मेरा भोजन क्यों [illegible] है ?'' उसने मेरे प्रश्न का कोई उत्तर [illegible] और प्रश्न कर डाला ।

''आपका मैंने कौन-सा अहित [illegible] आप अपना नाम तो बताइए ?''

''मेरा नाम शहंशाह... ।'' उसने [illegible] मुसलमान नाम बताकर परिचय दि[illegible]

''शहंशाह, अब आप मेरा अपराध [illegible] बतायें ।''

''तूने इस ब्राह्मण के लड़के को [illegible] बता दिया । उसे फिर से कहो कि [illegible] वह पूजा किया करता था, उसी क्रम [illegible] करता रहे ।'' प्रेतात्मा ने मुझे आदेश [illegible]

''किंतु उसका पुराना क्रम तो ठीक [illegible] है ।''

''यह मुझे भी पता है कि वह क्रम [illegible] है । उसके ठीक से उपासना न करने [illegible] हमें मिलता है । यही हमारा भोजन [illegible] उपासना का क्रम ठीक से करने के [illegible] अपने भोजन से वंचित हैं ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परंतु मैं आपका यह आदेश कैसे मान सकता हूं, क्योंकि वर्णों का गुरु ब्राह्मण होता है और ब्राह्मणों का गुरु संन्यासी होता है । संन्यासी के कारण सदुपदेश देना मेरा धर्म है । मैं आपकी सलाह मानने में असमर्थ हूं ।"

"कुछ पैसा चाहिए तो मुझसे ले लो, संन्यासी ।" उसके तेवर अभी तक भी वैसे ही थे ।

"आप कितना दे सकते हैं ?" मैंने विनोद से पूछ लिया ।

"जितना तू मांगना चाहे ।"

"फिर भी अपनी सीमा तो बतायें ।"

"मैं बारह वर्ष तक पूरे हिंदुस्तान को भोजन करा सकता हूं । बोल, तुझे कितना चाहिए ?"

"शहंशाह, यदि मुझे पैसों की ही आवश्यकता होती तो फिर संन्यासी क्यों बनता ? न मुझे पैसा चाहिए न आपकी सलाह मानने का आदेश ।"

कुछ क्षणों तक वह मौन हो गया । इसी समय मुझे एक तर्क सूझा । मैंने पूछा, "आपके नाम से लगता है कि आप मुसलमान हैं । आप जो भोजन बता रहे हैं, वह सनातनधर्मियों द्वारा की गयी उपासना की त्रुटियों का फल है । क्या आप अपने आपमें विसंगति नहीं है ?"

"संन्यासी, हम जन्म से मुसलमान नहीं थे । मेरा जन्म बनारस के एक विद्वान ब्राह्मण कुल में हुआ था । उस समय जब बनारस पर आक्रमण हुआ तब मुझे भी मुसलमान बनना पड़ा ।"

"यह किस समय की घटना है ।"

"लगभग सात सौ वर्ष पुरानी ।"

"इसका अर्थ है आपने तत्कालीन संस्कृत का अध्ययन किया होगा ।"

"हां ।" शहंशाह का उत्तर था ।

"तो फिर आप बतायें कि दुर्गा सप्तशती के श्लोकों में कौन-से श्लोक लुप्त हो गये और क्यों लुप्त किये गये ।"

मेरे इस प्रश्न का उसने कोई उत्तर नहीं दिया । कुछ क्षणों के मौन के बाद वह पुनः बोला—

"तुम इस ब्राह्मणपुत्र को पुराने क्रम से उपासना करने का आदेश दे दो और मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दूंगा ।" शहंशाह ने शर्त रखी । मेरे समक्ष द्वंद्व था । एक ओर मेरे अभीष्ट संदेह का उत्तर था तो दूसरी ओर ब्राह्मणपुत्र को गलत सलाह देने का अधर्म आचरण । मैंने तत्काल कहा, "आप उत्तर दें या नहीं, मैं इस बालक को वह आदेश नहीं दे सकता हूं, जो आप दिलवाना चाहते हैं ।"

"अच्छा— संन्यासी ! अब मेरा वक्त हुआ । मैं तेरे उत्तर से संतुष्ट हुआ ।"

"मेरी आपसे विनती है, इस ब्राह्मणपुत्र को अब छोड़ दें । इसके शरीर को अपना माध्यम नहीं बनायें ।" मैंने उस शहंशाह की प्रेतात्मा से अनुनय करते हुए कहा ।

"तूने मुझे प्रसन्न किया । मैं इस किशोर को भी छोड़ रहा हूं और तुम्हें सलाह देता हूं कि तेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न का उत्तर विंध्यवासिनी के मंदिर में मिलेगा।" आपसी अभिवादन के बाद वह आवेशित किशोर बगीचे से बाहर चला गया।

मैंने रातभर इस घटना पर विचार किया। दूसरे दिन मैंने अपनी शेष यात्रा स्थगित कर विंध्यवासिनी के मंदिर की ओर प्रस्थान किया। सप्तर्षियों एवं अगस्त्य जैसे महर्षियों द्वारा सेवित यह सिद्ध शक्तिपीठ है। वहां पहुंचकर मैंने दुर्गासप्तशती की एक सौ आठ आवृतियां पूरी कीं। किंतु किसी भी प्रकार का संकेत या आदेश नहीं मिला। उस समय मन में बार-बार यही प्रश्न उठा था कि मैं एक प्रेतात्मा की बात के प्रभाव में आकर अपनी सात्विक पदयात्रा बिना पूरी किये यहां आ गया। इस उहापोह की स्थिति में मैंने मां विंध्यवासिनी को रात्रि में अपना निश्चय सुना दिया कि अगले दिन सूर्योदय होते ही मैं चल दूंगा। उन दिनों मेरा डेरा विंध्यवासिनी की परिक्रमा में मंदिर के पिछवाड़े की ओर था। वहां कई अन्य साधु भी पड़े हुए थे।

लगभग अर्द्धरात्रि का समय होगा, मुझे हल्की-सी तंद्रा आ गयी। वहीं मंदिर की परिक्रमा में बैठे-बैठे ही ऊंघने लगा था। उसी समय पता नहीं कहीं से एक वृद्ध महाशय का पदार्पण हुआ। श्वेत परिधान एवं श्वेत दाढ़ी वाला वह व्यक्ति मेरा नाम लेकर पुकार रहा था। मेरी तंद्रा टूट गयी। मैंने उसे संकेत से अपनी ओर बुलवाया। वह वृद्ध मेरी ओर मुड़कर कहने लगा—

"स्वामीजी आपको नेपाल जाना है।" बस इतना कहते ही वह मुड़ गया और तेज गति से चल दिया। मैं उठकर उसकी ओर भागता हुआ पीछा करने लगा, क्योंकि मन में कई प्रश्न साथ उठ खड़े हुए थे। कहां जाना है, किस मिलना है, रास्ता कौन-सा है? मुझे कुछ नहीं पता था। वह वृद्ध मंदिर के मुख्य द्वार तो मुझे दिखायी दिया, किंतु उसके बाद वह लुप्त हो गया।

अब मैं क्या करूं और क्या नहीं करूं स्थिति में आ गया। पैसा मैं छूता नहीं था किसी से सहायता मांगना मैं चाहता नहीं था नेपाल का नाम तो सुना था, किंतु न मुझे का पता था न वहां मेरा कोई परिचित था भी यह निश्चय किया कि नेपाल जाकर देखा जाए कि वहां मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर मिलता या नहीं। मां को प्रणाम कर अगले दिन की ओर चल पड़ा। नेपाल की ओर पैदल चल पड़ा। सड़कों के घुमावदार मार्ग की अपेक्षा मैंने सीधा मार्ग अपनाया। रास्ते में गांववालों से मार्ग पूछता-पूछता चलता गया। जैसे-तैसे करके नेपाल की सीमा कर गया। सीमा पार के बाद एक दिन पड़ाव पर नेपाल के सुरक्षा कर्मियों ने मुझे गिरफ़्तार कर दिया।"

"वहां से आप कैसे मुक्त हुए?"

"नेपाल का एक सुरक्षा अधिकारी विचित्र आदत से संभवतया प्रभावित था। एक दिन उसने मुझे छोड़ दिया। अपनी यात्रा पुनः प्रारंभ की और किसी चलते-चलाते अपनी यात्रा आरंभ कर महीने बाद पशुपतिनाथ के मंदिर तक गया। कुछ दिन मंदिर परिसर में ही उस मंदिर में मेरा परिचय नेपाल के से हुआ। सामान्य परिचय धीरे-धीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां कई बार । जब मैं जंगलों में मार्ग भूल जाता, तब वह प्रेतात्मा आगे-आगे चलकर मुझे रास्ता बताता था । पेड़ों की पत्तियों के चयन में भी वह मेरी सहायता करता था, यहां तक कि महाराजा के पुस्तकालय में वह मुझे यह भी बताता कि कौन-सी पुस्तक मुझे पढ़नी चाहिए ।"

बदल गया । कुछ ब्राह्मण युवकों से भी परिचय हो गया । उन्होंने मेरे लिए एक कमरे का भी प्रबंध कर दिया । वहां के कुछ सद्गृहस्थों से भी मेरा परिचय हो गया । उनके आग्रह पर मैंने पत्तियां छोड़कर भिक्षा लेनी भी आरंभ कर दी ।"

"मेरी प्रार्थना को सुनकर राजपुरोहितजी ने कई महीनों के बाद मुझे महाराजा के निजी पुस्तकालय में पढ़ने की अनुमति दिलवा दी । किंतु वहां भी भाषा की समस्या आ गयी, कई पुस्तकें नेपाली भाषा में थीं । अतः मैंने नेपाली भाषा भी सीखी ।"

"क्या आपको दुर्गा सप्तशती संबंधी आपकी जिज्ञासा का उत्तर मिला ?" इसके संबंध में मैंने एक देवीभक्त को उसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने हेतु कहा है ।"

"क्या आपको कभी उस शहंशाह नामक प्रेतात्मा के पुनः दर्शन हुए ।"

"हां कई बार । जब मैं जंगलों में मार्ग भूल जाता, तब वह प्रेतात्मा आगे-आगे चलकर मुझे रास्ता बताता था । पेड़ों की पत्तियों के चयन में भी वह मेरी सहायता करता था, यहां तक कि महाराजा के पुस्तकालय में वह मुझे यह भी बताता कि कौन-सी पुस्तक मुझे पढ़नी चाहिए ।"

प्रेतात्मा के कारण, स्वामीजी ने अपना मार्ग ही बदल दिया और लगभग अठारह वर्ष तक वे नेपाल में रहे । संपूर्ण संन्यासी समाज उनके नाम एवं यश से परिचित हैं । बचपन में जब उन्होंने संत बनने का मार्ग अपनाया, तब उनकी अध्ययन की ओर विशेष रुचि को देखकर उनके गुरुदेव ने उन्हें नाम दिया था— विधारण्य किंतु एक बार किसी बात पर उनके गुरुदेव ने उन्हें मजाक में कह दिया, "तू तो मूर्ख का मूर्ख ही रहा ।" बस उसी दिन से उन्होंने अपना नाम रख लिया—मूर्खारण्य ।

सामान्यजन उन्हें मूर्खानंदजी महाराज के नाम से भी पुकारते थे । आद्य शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अरण्य संप्रदाय का वह एक अनमोल रत्न था । उसके असंख्य भक्त आज भी उदयपुर, ब्यावर, जयपुर, प्रयाग कलकत्ता में उनके निर्देशों के अनुसार अपनी उपासनाएं संपन्न कर रहे हैं ।

लगभग १२ वर्ष पूर्व उस महापुरुष ने अपनी इहलीला समाप्त कर दी । प्राचीन ग्रंथों की प्रामाणिकता के प्रति समर्पित वह महान संत जीवनभर खपता रहा ।

— १५/६, सागर एंक्लेव
विद्या भवन रोड, उदयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

—अजय भाम्बी

बाबूराम वोहरा, शामली

प्रश्न : लोकसभा में स्टैनो हेतु ज्वाइनिंग कब होगी ? उपाय बतायें ?

उत्तर : इसी वर्ष कार्य सिद्ध होगा । पुखराज पहनें ।

सुरेन्द्र झा, निपनिया (बेगूसराय)

प्रश्न : आध्यात्म जीवन जी पाऊंगा या नहीं ?

उत्तर : मिश्रित जीवन ही जी पाएंगे ।

डॉ. मनोज अवस्थी, लखीमपुर-खीरी

प्रश्न : वाहन का योग कब तक ?

उत्तर : या तो इस वर्ष, वरना १९९८ में ।

अभिषेक जैन, जम्मू तवी

प्रश्न : शुक्र दशा में कौन-से कार्य संपन्न होंगे ?

उत्तर : पढ़ाई संपन्न होगी, रोजगार मिलेगा । पत्नी और संतान सुख भी इसी दशा में मिलेगा ।

जगदीश नारायण शर्मा, अलीगढ़

प्रश्न : शारीरिक एवं आर्थिक कष्टों से मुक्ति कब होगी ?

उत्तर : जुलाई से आपका अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है । सारे सुख मिलेंगे ।

ओ. पी. गुप्ता, दिल्ली

प्रश्न : विदेश में बसे पुत्र, पुत्रवधु का हमें सुख मिलेगा या नहीं ?

उत्तर : सन् १९९८ से यह सुख मिलेगा ।

कविता जैन, जयपुर

प्रश्न : शादी कब होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष के पूर्वार्ध में ।

डॉ. शिव प्रसाद सिंह, मथुरा

प्रश्न : पदोन्नति किस सन् में होगी ?

उत्तर : योग तो इसी वर्ष बन रहा है ।

यश शर्मा, चुरु (राजस्थान)

प्रश्न : नया काम किस लाइन में करूं ? पुराना बंद हो गया है ।

उत्तर : कमीशन का कार्य करना सबसे उत्तम रहेगा ।

पुष्पा कुमारी, मुलताई (म. प्र.)

प्रश्न : क्या डॉक्टर बनूंगी ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के बल पर बन सकती हैं ।

अबु असगर, मोतिहारी (बिहार)

प्रश्न : भाग्य उदय हेतु रत्न सुझायें ?

उत्तर : पुखराज और मूंगा दोनों धारण करें, भाग्य उदय हो जाएगा ।

राजेन्द्र शर्मा, करौली

प्रश्न : मैंने राजस्थान में हिंदी व्याख्याता हेतु आवेदन किया है, वर्तमान में दिल्ली में अध्यापक पद पर कार्यरत हूं । क्या राजस्थान में व्याख्याता बन सकूंगा ? यदि हां तो कब तक ?

उत्तर : चंद महीनों में यह शुभ सूचना आपको मिलेगी ।

मीनाक्षी, चंडीगढ़

प्रश्न : सफेद दाग की समस्या से छुटकारा कब तक मिलेगा ? कोई रत्न बतायें ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : लहसुनिया और मोती धारण करें, लाभ की संभावना है ।

उषा, अजमेर

प्रश्न : विवाह होगा या नहीं ? यदि हां तो कब तक ?

उत्तर : विवाह होने की संभावना सितम्बर के बाद प्रबल हो रही है ।

मधुलिका कुमारी, खगड़िया

प्रश्न : मुझे नौकरी कब मिलेगी ?

उत्तर : नौकरी इसी वर्ष मिलेगी ?

सुरेश कुमार शर्मा, मेरठ

प्रश्न : मेरे ऊपर चल रहे ३७६ के केस में क्या होगा ?

उत्तर : बरी हो जाएंगे ।

ताराचंद जैन, दिल्ली

प्रश्न : अपना मकान व अच्छा स्वास्थ्य कब तक ?

उत्तर : मकान अगले वर्ष, स्वास्थ्य में लाभ शीघ्र होना चाहिए । योग्य चिकित्सक को भी दिखायें ।

निर्मल कुमारी, सोनीपत

प्रश्न : तलाक होगा या नहीं ? आपसी राजीनामा या कोर्ट के द्वारा और कब तक होगा ?

उत्तर : तलाक आपसी सहमति से भी हो सकता है ।

अभय कुमार, बिलासपुर (रामपुर)

प्रश्न : सी. ए. कब तक पूर्ण होगा ? रत्न बतायें ?

उत्तर : अब शिक्षा में व्यवधान नहीं आना चाहिए । नीलम धारण करें ।

प्रविष्टि—१७१

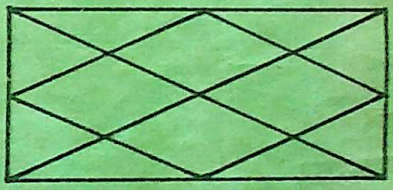

नाम

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना..... सन्.....

जन्म-स्थान..... जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण.....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १७१) 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० जून, १९९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र का पुनर्जन्म

● रतनलाल जोशी

कुछ जिंदगियां ऐसी होती हैं कि न चाहते हुए भी चमत्कार पर चमत्कार देखने को मिलते हैं । वैसे कुछ लोग जीवनभर चमत्कार देखने के लिए तरसते रहते हैं । मैंने चमत्कारों एवं दैवीय विधानों में कभी विश्वास नहीं किया है और न करना चाहता हूं । किंतु बार-बार चमत्कारों के ऐसे प्रसंग सामने चुनौतियों के रूप में आये हैं कि विश्वास का अडिग बांध या तो हिलने लगा या बाढ़ में बह गया है ।

सुनते ही स्तब्ध

'बाबा' के साथ मेरी पहली भेंट बंबई में हुई थी । स्व. कन्हैयालाल मुंशी के साथ हम लोग भी बाबा के दर्शनार्थ गये थे । वे एक मंत्री के घर पर ठहरे हुए थे । जैसे ही मैंने उन्हें नमस्कार किया, उन्होंने अपनी मोहक मुसकान के साथ मेरे कंधे पर हाथ रखा और सहज भाव से कहा, "अपेंडिक्स का ऑपरेशन नहीं कराया, अच्छा किया । तुम्हारी अपेंडिक्स में कुछ भी तो खराबी नहीं है । डॉक्टर नहीं जानते, जो दर्द रहता है, वह आंतों की सूजन के कारण है । खीर का भोजन करो, दो हफ़े में दर्द मिट जाएगा ।" मैंने सुना तो आश्चर्य-स्तब्ध रह गया । करीब सालभर से मेरे पेट में अपेंडिक्स के स्थान पर निरंतर दर्द रहता था और एक्स-रे कराकर डॉक्टर ने ऑपरेशन का निर्णय भी कर लिया था । किंतु मैं रजामंद नहीं था । मेरे सिवाय अन्य किसी को भी इस प्रसंग का परिचय नहीं था । मैं सोचता रह गया कि बाबा मेरे इस निजी रहस्य तक कैसे पहुंचे ? भेंट के समय भी मेरे मन में यह प्रसंग नहीं था, जिससे मेरे मन की बात वह पढ़ लेते, क्योंकि 'मन की बात पढ़नेवालों' को देश-विदेश में मैंने कई ऐसे चमत्कार करते हुए देखा है ।

एक बार मैं मिस्र की राजधानी काहिरा में था । जिस होटल में मैं ठहरा हुआ था, उसी पर एक सुप्रसिद्ध 'साइकिक' लड़की जैन गूल्ड का दफ़्तर भी था । जैन गूल्ड अपने साइकिक चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थी । प्रथम भेंट में वह आपको अपनी 'रीडिंग' से चमत्कृत कर देती थी । आपके जीवन की कोई न कोई ऐसी घटना वह बता सकती थी कि आप आश्चर्य में पड़ जाते । मनोविनोद के लिए विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर हमें उसके दफ़्तर में ले गये । उन्होंने पहले ही तय कर रखा था । हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचते ही उसने मुसकराते हुए कहा, "आपको परसों लंदन पहुंचना है, साढ़े तीन बजे शाम को बर्टेंड रसेल से आपकी भेंट होनी है । मगर आप दो रोज बाद मंगल को ८.३० बजे से पहले उनसे नहीं मिल पाएंगे ।"

दैवीय व्यक्तित्व

किंतु 'बाबा' के पास ऐसा कोई जादू नहीं है । वह चमत्कृत करने के लिए अपने दैवीय व्यक्तित्व को प्रकाशित नहीं करते । उनका उद्देश्य आध्यात्मिक है और पूछनेवाले की श्रद्धा के अनुसार समस्याओं का समाधान करने का होता है । मुंबई की ही बात है मेरे एक डॉक्टर साथी मेरे साथ उनसे मिलने के लिए गये । अलौकिक दैवीय और अतिमानवीय चमत्कारों, के वे घोर निंदक थे । उनकी दृष्टि में प्रकृति के न्याय के सम्मुख भगवान भी, यदि वह कहीं है, अंगुली नहीं उठा सकता । साधु-संत अध्यात्म-सत्संग, सब को वे ढोंग मानते थे । कहते थे कि इस सब से तो मार्फिया का एक इंजेक्शन लगाकर दिमाग को सुन्न कर देना बेहतर है । पूर्व निश्चित समय पर जब वे सत्य साईं बाबा के दर्शनार्थ पहुंचे तो मुसकराते हुए बाबा ने मुझसे कहा, "तुम्हारे मित्र तो हठ को ही ईश्वर मानते हैं । इसलिए इनकी मत सुनना ।" फिर उन्होंने सदैव की भांति हाथ घुमाते हुए चुटकी से विभूति मेरी हथेली पर रखी और कहा, "बाबा की यह विभूति इनकी पत्नी को देना, वह पूना में छह महीने से बीमार अस्पताल में पड़ी हुई हैं । उनकी हृदय नली सड़ी नहीं है, बिलकुल ठीक है । फेफड़ा फूल जाता है, हृदय पर दबाव पड़ता है । एक फेफड़े में पानी भरा हुआ है ।" साथ ही मेरे मित्र की ओर अनिमेष सम्मोहन-दृष्टि से देखते हुए कहने लगे, "एक चिड़िया समुद्र की सीमा खोजने के लिए निकली । हठ से प्रेरित इतनी उड़ी कि बीच में थक गयी । क्या करे ? लौटे भी तो किधर लौटे ? कैसे लौटे ? किंतु जिस परमेश्वर ने जीवन उत्पन्न किया है, उसे तो घट-घट का पता है । चिड़िया जब जीवन की आशा खो बैठी तो क्या देखती है कि एक जहाज तेजी से उसके पास से गुजर रहा है । समुद्र के ओर-छोर की खोज का हठ छोड़कर जहाज पर जा बैठी । जीवन में ऐसा ही होता है । आदमी भटक जाता है, किंतु भगवान किसी को हमेशा भटकने नहीं देता है ।" हमारा मित्र विस्मय-विमुग्ध था । बाबा ने जो रहस्योद्घाटन किया था, वह सही था । उनकी पत्नी पूना के अस्पताल में बीमार पड़ी थी और अगले पखवाड़े में ही डॉक्टर लोग 'सड़ी हुई' नली पर ही सारा दोष मढ़कर उसे काटने की सोच रहे थे ।

हमारे उक्त मित्र अच्युत दामोदर टैम्बे हमें लेकर पूना पहुंचे और अपने डॉक्टरों से बाबा की बात बतायी । तीन में से दो डॉक्टरों ने सारी बात हंसी में उड़ा दी, मगर एक नवयुवक डॉक्टर ने आग्रह किया कि क्यों ने फिर से जांच कर ली जाए । जांच हुई । बाबा की बात सही निकली । टैम्बेजी डेढ़ महीने बाद अपनी पत्नी को लेकर हमारे मुंबई निवास पर आये तो लगा जैसे वे बुद्धि के नये सांचे में ढल गये हों । प्रणाम करते ही बोले, "बाबा की चिड़िया तो समुद्र की सीमाएं खोजने निकली थी और उसके लिए भगवान ने जहाज भेज दिया । मगर मैं तो आसमान को नापने के लिए चल पड़ा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे पुत्र का पुनर्जन्म बाबा की कृपा का फल है। बाबा ने मेरे परिवार का वंश बूड़ने से बचाया। इसलिए इस लड़के पर बाबा का हक ही सर्वोपरि है, वे ही इसके पिता हैं। आज से मेरा जीवन बाबा के ऋण को चुकाने में ही व्यतीत होगा और मेरे मरने के बाद मेरी सारी चल-अचल संपत्ति नये अस्पतालों के निर्माण में लगायी जाए।"

थक भी गया था, लेकिन अहंकार आगे ही खदेड़ता जाता था। बाबा की दया देखिए कि स्वयं जहाज बनकर उन्होंने मुझे उबार लिया।"

दुष्टों का विनाश

पिछले बीस वर्षों के अंतर्गत 'बाबा' से इसी प्रकार अनेक बार भेंट हुई और हर बार कुछ नयी चमत्कृति मेरे अनुभव में आयी। एक बार दिल्ली में एक मित्र के निवास पर जब वे ठहरे हुए थे तब मैं उनसे भेंट करने गया। बाहर हजारों व्यक्तियों की भीड़ थी। अंदर एक बड़े हॉल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के करीब सौ प्रख्यात महानुभाव बैठे हुए थे। उपराष्ट्रपति, केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य, मुंबई से आये हुए कई हीरो-हीरोइन और अनेक उद्योगपति उस हॉल में संपूर्ण श्रद्धा में विजड़ित बैठे थे। मैं भी जाकर एक कोने में बैठ गया। निश्चित समय पर बाबा बाहर आये और सस्मित किंतु तीव्र दृष्टि से मेरी ओर देखते हुए सीधे मेरे पास पहुंचे। मुझे विभूति दी और कहा, "अभी जाओ, अढ़ाई घंटे बाद मैं तुम्हें बुलाऊंगा। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर तुम्हें मिल गया है।" मैं उठकर चला गया। अढ़ाई घंटे बाद उसी भवन में अपने निजी कक्ष में उन्होंने मुझे बुलाया। मैं अंदर पहुंचा तो श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित बाहर निकल रही थीं। मुझे बड़े प्रेम से पास बैठाते हुए कहा, "पाकिस्तान से लड़ाई होगी। बाबा विचलित नहीं हैं। सारा प्रबंध हो गया है। राष्ट्र की रक्षा का दायित्व बाबा ने ले रखा है। सुकर्म का मार्ग है, विजय होगी, दुष्टों का विनाश करने के लिए ही तो बाबा ने अवतार लिया है।" फिर वे बोले, "कभी कुछ व्यक्तिगत भी पूछा करो।" मेरे मन में वास्तव में कोई प्रश्न नहीं था। बाबा बोले, "जानते हो जब मन के आकाश पर प्रश्नों के अंधड़ उत्पात नहीं मचाते, तब आसमान कितना निर्मल, कितना मनोरम रहता है। वह प्रभु का ही तो स्वरूप है।"

दिल्ली-निवास के समय ही बाबा के पास एक मंत्रीजी आये। चरण पकड़कर बैठ गये। बाबा से अनुमति पाकर अपनी विपदा सुनाने लगे, "प्रधानमंत्रीजी मुझसे अप्रसन्न हैं, मेरी संपत्ति की जांच-पड़ताल की जाएगी, मुझे निकाला भी जा सकता है। बाबा, कृपा कीजिए, मुझे इस विपत्ति से बचाइए।" बाबा ने टकटकी लगाकर मंत्रीजी की तरफ देखा। गंभीर किंतु मधुर स्वर में कहा, "यह तो कोई विपत्ति नहीं है। इससे कहीं बड़ी विपत्ति तुम्हारे घर में है, जिससे उद्धार की तुम जरूरत महसूस नहीं करते। अपनी पत्नी को वापस घर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाओ, सद्गृहस्थ का जीवन फिर से अपनाओ । तुमने अपनी पत्नी और परिवार को बहुत कष्ट दिया है । पागल पशु की भांति यहां-वहां भागते रहते हो । मनुष्य की तरह से रहो । तुम्हारी अनीति भगवान कब तक बर्दाश्त करेगा ? यदि आनेवाले सर्वनाश से बचना चाहते हो तो जीवन का क्रम बदलो । गटर से उठकर गंगा में नहाओ । क्या भगवान की ऐसी अपरिमित दया और आश्वासन को भी तुम्हारे बहरे कान सुन नहीं रहे हैं ?'' श्रीकृष्ण गीता में भुजा उठाकर कहते हैं—

स्वल्पमस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।

—अत्यल्प धर्म का आलंबन भी बड़े-से-बड़े भय निवारण कर देता है ।

ब्लड कैंसर से मुक्ति

मंत्रीजी बाबा की चेतावनी को माने या नहीं, किंतु एक व्यापारी ने बाबा के इस प्रवचन के प्रत्येक शब्द को अपनी श्रद्धा में अंकित कर लिया । हृदय के घट को उसने काफी मांजकर उसमें विश्वास का जल भी लबालब भर लिया । यह व्यापारी भारत के पड़ौसी देश का निवासी था और तस्करी के धंधे में वर्षों से लिप्त रहा था । लाखों रुपये की संपत्ति उसने अर्जित की थी और धन के बल से उसकी तुलना भी प्रतिष्ठित व्यापारियों में होती थी । उसका एक चौबीस बरस का लड़का था, जो उसकी ही तरह इस व्यापार में निष्णांत हो गया था । थोड़े दिन बाद लड़का बीमार हुआ और डॉक्टरों ने जांच-पड़ताल के बाद ब्लड कैंसर का निदान किया । व्यापारी के होश उड़ गये । इकलौते जवान बेटे को मृत्यु के मुख में देखकर उसने सारे छल-प्रपंच और हथकंडे उसे विषैले सर्पों की भांति भयावने लगने लगे । विदेशों में चिकित्सा की योजना बनायी, किंतु डॉक्टरों ने आगाह किया कि तुम्हारे बेटे अविनाश को अब कोई डॉक्टर बचा नहीं सकता । सब तरफ से निराश जीव आखिर कहां जाएगा, अपने परम मूल की तरफ ही तो भागेगा । कुछ पूर्वजन्म के सुकर्म कहिए या प्रचलित जीवन की गंदगियों को तिलांजलि देने का संकल्प । उक्त व्यापारी बाबा का प्रवचन सुनने के लिए सभा में आ गया ।

छह-सात महीने बाद वह अपने लड़के की डॉक्टरी जांच के लिए वापस जब दिल्ली आया, तब वह पहले-जैसा कीचड़ में सड़ रहा कीड़ा नहीं था, बुद्धि एवं भावना में पवित्र एक सांगोपांग परिवर्तित व्यक्तित्व था । अपनी संपत्ति उसने कुछ तो एक धार्मिक मिशन को दे दी थी और कुछ दो अस्पताल बनवाने के लिए एक ट्रस्ट को दान कर दी थी । डॉक्टरों की जांच के बाद व्यापारी का लड़का रोग से सर्वथा मुक्त साबित हुआ । डॉक्टरों ने अपने इलाज का श्रेय लिया । लोगों ने व्यापारी के पुण्य-कार्यों की महिमा गायी, किंतु व्यापारी ने अपनी वसीयत में लिखा, ''मेरे पुत्र का पुनर्जन्म बाबा की कृपा का फल है । बाबा ने मेरे परिवार का वंश बूड़ने से बचाया । इसलिए इस लड़के पर बाबा का हक ही सर्वोपरि है, वे ही इसके पिता हैं । आज से मेरा जीवन बाबा के ऋण को चुकाने में ही व्यतीत होगा और मेरे मरने के बाद मेरी सारी चल-अचल संपत्ति नये अस्पतालों के निर्माण में लगायी जाए ।'' ●

—१२, फीरोज गांधी मार्ग
लाजपतनगर-III, नयी दिल्ली-११००२४

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धमकी से डर गये

प्रदीपकुमार गुप्ता, बुलंदशहर : सन १९९१ में एक व्यक्ति ने मेरे पिताजी को अपने सुअर फार्म में बीस हजार रुपये लेकर भागीदार बना लिया। बाद में वह गड़बड़ी करने लगा तो पिताजी ने उसे हिसाब दिखाने और भागीदारी खत्म करने को कहा। उसने पैसा वापस करने से भी इनकार कर दिया। पंचायत हुई, जिसमें उसने पैसा लौटा देने का वायदा किया, लेकिन पैसा आज तक नहीं दिया। उस व्यक्ति का पिता पशु चिकित्सालय में चपरासी है और पिछड़ी जाति विशेष का है। वह हमें डराता है कि वह पुलिस से मिलकर हमें झूठे केस में फंसा देगा। हम क्या करें ?

डरते रहने से किसी भी बात का निर्णय नहीं हो सकता। पंचायत में हुए फैसले का क्या प्रमाण है ? क्या पंचायत के समक्ष पैसा वापस करने का वायदा लिखकर किया गया ? साझेदार को अपना साझा समाप्त करने तथा लाभ-हानि का हिसाब कराने का अधिकार है।

यदि पंचायत का लिखित निर्णय उपलब्ध है, तो उस आधार पर रकम वसूल करने की कार्यवाही की जा सकती है। ऐसा न होने पर साझेदारी समाप्त करने तथा हिसाब करने के लिए कार्यवाही की जा सकती है

जहां तक धमकी देने का प्रश्न है, आप पहले ही पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दें। इससे आपका पक्ष मजबूत हो सकेगा।

अपील में देरी

एक मुकदमे का निर्णय हमारे खिलाफ हो गया। नियमानुसार अपील के लिए निर्धारित समय के बाद, दस दिन देर से दाखिल की गयी। दरअसल, वकील साहब के मुंशी अपील दाखिल करना भूल गये। अपनी भूल छिपाने के लिए मुंशी ने किसी को कुछ नहीं बताया और देरी के लिए कोई अलग से दरख्वास्त भी नहीं लगायी। अब सुनवाई की तारीख आनेवाली है। मुझे डर है कि कहीं देरी के कारण अपील रद्द ही न कर दी जाए। मुझे क्या करना चाहिए ?

दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश-४१ नियम ३ए (१) के अंतर्गत यह व्यवस्था है कि यदि कोई अपील निर्धारित समयावधि के बाद प्रस्तुत की जाए तो उसके साथ, उन कारणों का वर्णन करते हुए, जिनके आधार पर अपीलकर्ता न्यायालय को यह विश्वास दिलाना चाहे कि अपील समय पर न जमा करने के लिए उपयुक्त कारण से तथा अपील को देर होने के बाद भी विचारार्थ स्वीकार कर लिया जाए, एक आवेदन भी प्रस्तुत करे। इस आवेदन के साथ एक शपथ-पत्र भी होना चाहिए। इस प्रकार का आवेदन व शपथ-पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपील के साथ दिया जाना चाहिए ।

अपील समय पर तैयार होने के बावजूद, वकील के मुंशी की भूल से अपील समय पर जमा नहीं कराया जाना, स्वीकार योग्य आधार है ।

यह आवेदन आप अब न्यायालय में दे सकते हैं । आवेदन समय-सीमा अधिनियम (१९६३) की धारा ५ व दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ४१ नियम ३ ए (१) अंतर्गत दिया जाना चाहिए । देश के उच्च न्यायालय, विशेष रूप से ए.आई.आर. के १९८१ केरल २४०, १९८६ कर्नाटक १९९, १९८४ बंबई ३९० व १९८७ उच्चतम न्यायालय १३५३ में वर्णित निर्णयों का आप लाभ उठा सकते हैं ।

नियमानुसार है ?

सुरेंद्र कुमार जैन, अलीगढ़ : सेवा में नियमितीकरण तथा स्थायीकरण क्या एक ही दिनांक को किया जा सकता है ? यदि किया जाता है तो क्या यह नियमानुसार सही है ?

सेवा में नियमित करने तथा स्थायी करने का आदेश एक ही दिन में दिया जा सकता है और इसे अनुचित नहीं कहा जा सकता । नियमित करने का आदेश तथा सेवा में स्थायी करने का आदेश एक ही दिन तथा एक ही आदेश द्वारा भी दिया जा सकता है ।

डॉक्टरेट उपाधि चाहिए

गौरेलाल दास, सुलतानगंज : मैं मैट्रिक पास

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ

—रामप्रकाश गुप्त

हूं । मैट्रिक किये हुए मुझे पच्चीस साल हो गये । मैं स्थानीय विश्वविद्यालय से हिंदी में पी-एच. डी. करना चाहता हूं । विश्वविद्यालय के किस अधिनियम के अंतर्गत मैं उक्त उपाधि हासिल कर सकता हूं ? ज्ञातव्य है कि श्रीमती इंदिरा गांधी, आशा भोंसले और पक्षी-विज्ञानी सालिम अली आदि को बी. ए., एम.ए. किये बिना ही डॉक्टरेट की उपाधि दी जा चुकी है ।

आप मैट्रिक पास हैं और अब सीधे हिंदी में डॉक्टरेट (पी-एच.डी.) करना चाहते हैं । डॉक्टरेट उपाधि के लिए विश्वविद्यालयों के नियम हैं । उसके लिए आपको स्नातक, एम. ए., एम-फिल की परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होगी और उसके बाद आप पी-एच. डी. करने की सोच सकते हैं ।

आपने कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को डॉक्टरेट की उपाधि देने का उल्लेख किया है । ये मानद उपाधियां हैं । उन्हें सम्मान स्वरूप दी गयीं मानद उपाधियां किसी परीक्षा के आधार पर नहीं दी गयीं । बल्कि उनके विशिष्ट योगदान के लिए दी गयी हैं । मानद उपाधियां देने का निर्णय विश्वविद्यालय द्वारा अपने नियमों के अंतर्गत किया जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार कौंसिल में पंजीकरण

भंवर वर्मा, बीकानेर : कादम्बिनी के अगस्त १९९५ के अंक में पृष्ठ ८३ पर 'कुछ विशेष पदों पर कार्य कर रहे सरकारी कर्मचारी सेवाकाल में बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकरण करा सकते हैं,' छपा है। कृपया, मुझे अवगत कराएं कि क्या पब्लिक सेक्टर के एक बैंक का लिपिक-कैशियर ऐसा पंजीकरण करा सकने में योग्य है या नहीं ? यदि है तो इससे संबंधित दस्तावेज की फोटो प्रति या संदर्भ पुस्तक का ब्यौरा लिखें।

किसी भी अन्य सेवा के व्यक्तियों को साधारणतया बार कौंसिल में वकील के रूप में पंजीकरण नहीं किया जाता। विधि अधिकारी के रूप में कार्यरत व्यक्ति को इसका अपवाद माना जाता है। इसका कारण उक्त पद के व्यक्ति का विधि-कार्य से सीधा संबंध होना है। बैंक के लिपिक या खजांची का विधि-कार्य से सीधा संबंध नहीं होता। इसलिए उनका सेवाकाल में वकील के रूप में पंजीकरण नहीं किया जाता।

उपहार में प्लाट

सत्य प्रकाश पाल, कानपुर : विकास प्राधिकरण का रजिस्ट्रीशुदा चालीस गज का प्लाट मैं अपनी भाभी को उपहारस्वरूप देना चाहता हूं। इस तरह उपहार दी गयी जमीन को भाभी के नाम रजिस्ट्री करने में क्या स्टांप का खर्चा लगेगा ? और प्रक्रिया क्या होगी ?

उपहार में दी जानेवाली संपत्ति का हस्तांतरण होता है— इसलिए इस प्रकार के हस्तांतरण में मूल्य नहीं दिया जाता है। स्टांप पेपर पर लिखवाकर ही पंजीकरण के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है। उपहार पत्र निश्चित मूल्य के स्टांप पेपर पर न होने की स्थिति में उक्त मूल्य से ग्यारह गुना तक का दंड लगाया जा सकता है।

उपभोक्ता से धोखा

भरत गुप्ता, कानपुर : एक दुपहिया वाहन खरीदा, जिसके साथ एक चश्मा कीमत ९०० रुपये का मुफ्त मिलना था, जैसा कि निर्माता कंपनी ने विज्ञापन दिया था, जो मुझे नहीं मिला। मैंने अधिकृत विक्रेता से कई बार संपर्क किया परंतु उसने हर बार बहाने बनाकर टाल दिया कि स्कीम खत्म हो गयी।

आपके दुपहिया वाहन खरीदते समय उसके साथ एक चश्मा लेने की योजना थी। योजना के चालू रहते वाहन खरीदनेवाले को चश्मा प्राप्त करने का अधिकार है। यदि यह ठीक है कि आपने वाहन खरीदने के दिन उक्त योजना चालू थी और अन्य क्रेताओं को चश्मा दिया जा रहा था, तो आपको भी चश्मा मिलना चाहिए। चश्मा नहीं दिए जाने की शिकायत आप उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत स्थापित जिला मंच में कर सकते हैं तथा विक्रेता को घोषणानुसार चश्मा या उसका मूल्य देने के लिए आवश्यक आदेश देने की प्रार्थना कर सकते हैं। इस कार्यवाही में हुए आपके खर्च की भरपाई का आदेश भी जिलापीठ दुपहिया निर्माता या विक्रेता को दे सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सड़कें सड़कें जांदिये मुटियारे बी
कंडा चुभा तेरे पैर बांकिये नारे बी
शाबा... होए...

जगत चाची ने फिर मोरचा संभाल लिया था। सुरेंद्र मासी ने ढोलक करारी कर दी। विमला भाभी और उनकी दोनों लड़कियां ढोलक को घेरे बैठी थीं और छोटू अठन्नी से ढोलक पर ठेका दे रहा था। कल बारात आनी थी, इसलिए आज गाने-बजाने का पूरा जोर था। भाबो बड़े सोफे पर फैली बैठी थी। जीता रहे अशोक, दस साल के अंदर-अंदर कितनी लहर-बहर कर दी थी। रात-दिन की मेहनत और फैक्ट्रियों की बरकत से आज भगवानजी की कृपा बनी हुई है। भाबो प्यार से अशोक को पुकारती बोली, "बेटा, आ इधर मेरे पास बैठ जा, नये सोफे पर, बड़ा आराम मिलता है।" भाई— अशोक बड़े हॉल के दूसरे कोने में व्हिस्की की बोतल पर झुका था। उसे पीने से

कहानी

भंवर

• निर्मला अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा पिलाने में मजा आता था । वहीं से बोला, "नहीं भाबो, अभी तो मैंने इस पाजी सतीश को नचाना है । इसे आज पेटभर विलायती पिलाने दे ।" भाबो थुल-थुल हंसने लगी । संतोष और शांति की आभा से चेहरा दमक उठा । बस, एक कसर रह गयी थी । अशोक के बाऊजी बिचारे तड़प-तड़प के मर गये । कैसे भुखमरी के दिन थे । पेंशन में घर का राशन भी चलता नहीं था । बड़ी लड़की की शादी हुई थी, बाकी दोनों, अशोक और पाशी न्याने थे और तोशी तो बिलकुल पानी का बुलबुला । शुक्र भगवान का कि दिन फिरे । बड़ी बहू विमला तो गऊ-जैसी आयी । लगी रहती है,सबकी सेवा में । भाबो ने आत्मसंतोष से खचाखच भरे हॉल में निगाह घुमायी । तीनों सोफे, दसियों कुरसियां भरे थे । नीचे कालीन पर औरतें मस्ती में गा रही थीं । कोने में बार फिट थी । बीसियों विलायती बोतलें अटी पड़ी थीं । फिर भी जाम थे कि खाली होते जाते थे । इतने में भाबो की निगाह मुझ पर पड़ी, "अरे सुरजीत, तू वहां क्या अकेला गुमसुम बैठा है । आ बेटा यहां बैठ मेरे पास ।"

इतने में जगत चाची झूमते हुए उठीं । वे न जाने किस रिश्ते से किसकी चाची थीं । मैंने तो उन्हें कई शादियों की रौनक बढ़ाते देखा था । साठ के पेटे में भी चाची गजब का नाचती थीं और गाने का तो जवाब ही नहीं । उन्होंने एक झटके से मेरा हाथ खींच मुझे उठाया । पूरी महफिल सांस खींच, यह नया कौतुक देखने लगी । खिसियाती हंसी हंसता मैं कुछ बोलूं, कि बोलूं, चाची ने महफिल से मुखातिब होकर फरमाया, "वे डॉक्टर पुत्तर, रस गया है—नी ।" फिर मेरी कमर में अपनी लकड़ी-सी बां डालकर मुझे अपने से सटाकर बुल्लेशाह की काफी शुरू कर दी—

"मेरा रूठड़ा यार मनावा नी मैं कैनूं आखां
कैनूं आखां, कैनूं आखां..."

और वे जोर से मेरे कान में चिल्लायी । सब खिलखिलाकर हंस पड़े । मैं भी बुद्धू-सा हंसने लगा । मेरी आंखें, रंगी-पुती,हीरे चमकाती, तराशी भंवें मटकाती, बेहूदे ठहाके लगाती औरतों की भीड़ में उस ओस में भीगे ताजा गुलाब को ढूंढ़ने लगी । वह अब भी नहीं हंस रही थी । मरे-मरे हाथों से अपने तीसरे लड़के को गोदी में लिटाये थपक रही थी ।

मैं भाबो की बगल में बैठकर बेमन से काजू कुतरने लगा । अशोक अभी बार पर ही जमा था, भुक्खड़-पियक्कड़ रिश्तेदारों से घिरा हुआ विमला भाभी बहादुर और चेतसिंह के हाथ काजू, तली मछली और सीख-कबाब बंटवा रही थीं । पाशी दूर कोने में लुढ़का पड़ा था । अभी पांच-छह साल ही तो हुए थे, जब ऐन लेडीज संगीत उसकी शादी का हुआ था और अब तोशी की शादी का है । लेकिन पाशी की शादी में तो मैं भी इन पागलों में से एक पागल-सा झूमता रहा था । मरभुक्खों की तरह कबाब और काजू की प्लेटों पर टूट पड़ता था । सरकारी अस्पताल के डॉक्टर की तनख्वाह में भला ये नियामतें रोज-रोज कहां मिलतीं ? पाशी की शादी के बाद मैं बिलकुल बदल गया । अब मुझे उबकाई आती है शराब देखकर । तरह-तरह के पकवानों के रंग देखकर जी मिचलाता है । पाशी की शादी और मेरी दुनिया बदल गयी ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उफ़ मैं भी तो बारात में शान के साथ जालंधर गया था । पाशी के बड़े भाई अशोक ने कपड़ों और भारतीय हस्तकला के निर्यात में खूब पैसा कमा लिया था । उसकी शादी एक बड़े व्यापारी परिवार में हुई थी । जिन्होंने दामाद के व्यापार को भी अच्छा जमा दिया था । लेकिन विमला भाभी बिचारी देखने में मामूली थीं । नतीजा यह हुआ कि अशोक की दोनों लड़कियां और छोटा लड़का भी बस ऐसे ही देखने में मामूली-से थे । खुद भाबो सुंदर रही होंगी, लेकिन अशोक और पाशी दोनों अपने पिता केवलचंदजी-जैसे काले आबनूस और तोंदू थे । जब पाशी की शादी का वक्त आया, तो अशोक को पैसे की कमी न थी । उसने सोचा पाशी के लिए कोई सुंदर मुटियार लायी जाए, ताकि खानदान की अगली नस्ल में कुछ रद्दोबदल हो । उफ़ ! यहीं से मेरी जिंदगी ने दर्दनाक मोड़ लिया । पाशी की बारात में भंगड़ा डालते-डालते हमारा पसीना बह रहा था, लड़कीवालों के छोटे-से घर के आंगन में हम जयमाला का इंतजार कर रहे थे कि जैसे बिजली चमकी । पूरी बारात में खामोशी छा गयी । लड़की थी कि चांद का टुकड़ा । छिः-छिः ! चांद कहना तो अमृत का अपमान करना था । वह तो सरापा हुस्न, एक कहर का टुकड़ा थी । तराशा संगेमरमर । झुकी-झुकी कांपती पलकें, ऊंची-तीखी नाक, गुलाब-से नाजुक गाल और भीगे-भीगे रसभरे होंठ । मेरे साथ खड़े सतीश ने मुझे जोर की चिकोटी काटी और आंख मारते हुए बोला, "भई वाकई बढ़िया माल मिला है कलुए पाशी को ।" मेरा जी चाहा चांटा मारूं साले को । पाशी का तो

बुरा हाल था । जैसे किसी ने जूते मारे हों । गोरी-चिट्टी, सुंदर दुल्हन को देख, खुश होने की जगह चिढ़-सा रहा था । झिलमिलाते सलमे-सितारेभरे लाल दुपट्टे में सजी गोल-सुडौल दूधिया बांहों से जयमाला पहन पाशी झेंपने लगा ।

पाशी की शादी के बाद मैंने फिर एक बार अपने को बीमारों की कराहती-घिसटती मायूस भीड़ में खोना चाहा । और नये जोश से मैं चिकित्सा-अभियान में जुट गया । लेकिन मेरी फूटी किस्मत, बड़ी कोठी से बुलावा आ गया । 'अमृत' यानि नयी बहू बीमार थी । देखते ही मैं समझ गया हिस्टीरिया है । लेकिन फिर भी बाकायदा मुआयना शुरू किया । हाय कुछ ही दिनों में रंग मुरझा गया था, होंठ पपड़िया गये थे और आंखों के नीचे काले साये फैल चुके थे । अब वह चुपचाप पड़ी थी । सिर्फ पलकों की घनी बरौनियों पर मोती-से आंसू झिलमिला रहे थे । चंपई कलाई थामकर नब्ज देखी । स्टेथैस्कोप से दिल की धड़कनों का हिसाब लगाते-लगाते मेरा दिल बाहर उछलने को हुआ । दिमाग की नसें फटने लगीं । वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़बड़ाकर उठ गयी ।

"मुझे कुछ नहीं हुआ भ्राजी ।" भाबो पानी लेकर दौड़ी । बिमला भाभी ने सहारा दिया । पाशी चोर की तरह बरांडे में चला गया ।

दो-तीन बार फिर अमृत को दौरा पड़ा । पहला लड़का होने के बाद वह कुछ-कुछ संयत हो चली । दो और लड़के हुए और वह बिलकुल खामोश होती गयी । तीनों बच्चे पाशी के नमूने थे । काले-स्याह और थुलथुल । उसकी गोरी बांहों में झूलते हुए बेचारे और भी भोंडे लगते ।

कई बार सोचा मैं बड़ा बेवकूफ हूं । दूसरे की बीवी से मुझे क्या लेना ? पाशी जाने, वह जाने । मुझे क्यों फिकर है कि अमृत मुरझा रही है, उसका शरीर घुल रहा है, उसकी आंखों के नीचे काले गड्ढे गहरे हो रहे हैं । पाशी फिकर करे उसकी । मैं क्यों घुलता जाऊं साथ-साथ ? और एक दिन सचमुच पाशी भागा आया बदहवास, "सुरजीत— अभी चल घर ।"

"क्या हुआ— अभी बैठ यार, देख कितनी भीड़ है बाहर मरीजों की । अभी निपटाकर चलता हूं । ले चाय पी तू तब तक ।"

"नहीं यार— मार गोली इन सबको— तू जल्दी बैग उठा अपना— उस कमीनी ने कुछ खा लिया है ।"

अमृत तो नर्सिंग होम में ठीक हो गयी । लेकिन मेरे अंदर की आग और भड़क गयी । एक दिन खाना खाते हुए मैंने सबके सामने ही पूछा, "भाबो, कुछ खाती भी हो या यूं ही खेलती हो रोटी से । ऐसे तो बड़ी कमजोर हो जाओगी ?" जवाब भाबो ने दिया, "सुरजीत, यह तो मार डालेगी अपने आप को ।" मैंने हिम्मत करके सुझाव दिया, "भाभी, मेरी क्लिनिक में आ जाओ न, किसी दिन बारह, साढ़े बारह बजे । भीड़ कम होगी । मैं खून वगैरह टैस्ट करवा दूंगा ।" "बेटा, मैं इसे जरूर भेजूंगी । पता तो चले कौन-सा चोर मरज़ इसे खा रहा है । न खाती है, न पीती है । न पहनने-ओढ़ने का शौक है ।"

और सचमुच दो-तीन दिन बाद वह आयी । अशोक ने ड्राइवर के हाथ भिजवा दिया था । पहली बार अकेले में, अपनी क्लिनिक की बंद दीवारों में, अपनी प्रेम प्रतिमा से साक्षात्कार । मैं ढंग से बोल भी न सका, हकलाने लगा । कुरसी पर चुपचाप बैठी वह अपने दुपट्टे का कोना मरोड़ती रही । कई मिनट हो गये, तो उसने बेचैन होकर निगाहें उठायीं ।

"अमृत ।"

"जी ।"

"किस नरक में पड़ी हो ?"

"अपनी किस्मत ।"

"किस्मत बदली भी तो जा सकती है ?"

"....."

"अमृत ।"

"चलिए, खून टैस्ट करवाइए ना । फिर मुझे देर हो जाएगी । ड्राइवर बाहर इंतजार कर रहा है । फिर उसे उन लोगों के लिए लंच लेकर जाना है ।"

"तुम पत्थर हो क्या ? मेरी आत्मा, मेरे दिल को कैसे मोह में जकड़ रखा है तुमने ? कभी खयाल आया है ? इस कदर तड़पाया है मुझे अब कुछ मिनट बैठना भी नहीं चाहतीं ? इतनी बेरहम हो ?"

"भ्राजी, क्या कह रहे हो ? यह भी कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजाक का वख्त है ?''

मैंने उसकी ठोढी के गड्ढे को छूते हुए चेहरा ऊपर किया । बड़ी-बड़ी आंखें और फैल गयीं । मैं संतुलन खो बैठा । पास जाने की कोशिश की तो करारा थप्पड़ पड़ा । दर्द से छटपटाकर होश में आया— वह फुफकार रही थी—

''कमीने, बेशर्म, फिटे मुंह अपनी भाभी की बेइज्जती करता है । जा डूब मर कहीं— तेरे-जैसे बदमाश डॉक्टर हों तो बहू-बेटियां कहां जाएं— बदतमीज ।''

मैं सुन्न-सा हो गया । धीरे-धीरे जुनून के बादल छंटने लगे— अमृत मेरे मुंह पर थूककर चली गयी और मैं निर्जीव-सा पड़ा अपने भंवर में डूबता रहा ।

—डायरेक्टर प्रोग्राम्स
ऑल इंडिया रेडियो,
आकाशवाणी भवन, नयी दिल्ली-११०००१

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. क्रमशः लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर, ख. सारनाथ में प्रथम उपदेश, २ क. ६८ अंश पूर्वी तथा ९७ अंश पूर्वी, ख. 'इंदिरा प्वाइंट' (बड़ा निकोबार में), ३. क. बीरबल, ख. दुर्गावती, ४. क. मदाम क्यूरी, ख. भौतिकी (१९०३) तथा रसायनशास्त्र (१९११), ५. क. चैनल टनल, ख. ६ मई, १९९४ को, ६. क. पी.एस.एल.वी.डी-३ का श्रीहरिकोटा अंतरिक्ष-केंद्र के प्रक्षेपण-स्थल से, ख. आई.आर.एस.पी.-३, ग. मौसम, समुद्री संसाधन, वन-संपदा, वनस्पति, खेतीबाड़ी आदि के बारे में सूचनाएं एकत्र करना, ७. क. ७५ करोड़ ४० लाख किलोग्राम, ख. ७१ करोड़ ३० लाख किलोग्राम, ८. क. श्रीलंका ने, आस्ट्रेलिया को हराकर, ख. दक्षिण अफरीका के गैरीकर्स्टन ने विश्व कप के इतिहास में सर्वाधिक अविजित १८८ रन का रेकॉर्ड बनाया, ग. भारत (१९८३) में, पाकिस्तान (१९९२ में), श्रीलंका (१९९६ में), ९. माइक टायसन ने फ्रैंक ब्रूनो को हराकर (३ करोड़ डॉलर की राशि प्राप्त हुई), १०. यशदेव शल्य को (कृति— 'मूलतत्त्व की मीमांसा'), ११. ब्रेन ट्यूमर

● मई अंक के बुद्धि विलास के उत्तर

१. १२, २. क. २०० सूक्तों में, ख. ऋग्वेद में, ३. चंद्रगुप्त मौर्य (३२१-२९८ ई.पू.), ४. क. १८८४ ई. में ८ घंटे काम के दिवस की मांग के लिए शिकागो में मजदूरों और पुलिस में हिंसात्मक संघर्ष हुआ । कुछ मजदूर नेताओं को मृत्युदंड दिया गया । उसी की याद में पहले अमरीका में और बाद में दुनिया के अन्य देशों में मई-दिवस मनाया जाने लगा, ख. १९२३ ई. से, ५. स्वामी विवेकानंद, ६. क. २६ जनवरी, १९५० को, ख. १९७६ में, ७. क. जेरिखो— समुद्र तल से २५८ मीटर नीचे, ख. फिलिस्तीनी स्वशासन, ८. क. मध्य चीन के बहरान प्रांत में, ख. १ मीटर लंबी, वजन २ कि.ग्रा., ९. क. श्री श्रीलाल शुक्ल को, ख. पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर (१२,४५८ छायाचित्र (फोटो) खींचे), १०. मोजांबिक की मारिया मुटैला ने २ मिनट २१.२३ सेकेंड में, ११. मसरूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य-रोमांच

समुद्रों के भयानक जल-राक्षस

● मुकुन्ददास माहेश्वरी

हमारी करोड़ों वर्ष पुरानी धरती पर मनुष्यों के अलावा भीमकाय जानवरों की मौजूदगी का भी बड़ा दिल दहला देनेवाला रहस्यात्मक – रोमांचक प्रामाणिक इतिहास है । ये जानवर धरती पर और समुद्रों की गहराइयों तक में जा पहुंचते थे । तब मनुष्य का कहीं अस्तित्व नहीं था । उन दिनों आकाश में उड़नेवाले विशाल पक्षियों, धरती पर एकछत्र दबदबा जमाये डायनासोरों, समुद्रों में आतंक मचाये विराट सील, व्हेल, शार्क मछलियों तथा आठ भुजाओंवाले जल-राक्षसों का ही प्रकोप था । सब एक-दूसरे को खा जाने के लिए आपस में धरती, आकाश व समुद्र में हलचल मचाते हुए लड़ते-भिड़ते, कटते-मरते रहते थे । जैसे-जैसे समय गुजरता गया वैसे-वैसे जल, थल और नभ में हुई उथल-पुथल एवं प्राकृतिक प्रकोपों (भूकंपों) से बहुत से अपने आप समाप्त हो गये । और ये समुद्रतलों और धरती की दरारों में समा गये । आज जहां-तहां की गयी खुदाइयों व खोजों में उनके अस्थिपंजर मिल जाते हैं, जिनसे उनकी विशालता का पता चलता है कि ये दो सौ फुट से हजार फुट तक लंबे-चौड़े होते थे ।

पहले जल-राक्षस का हमला

सन् १५५५ में ओलास मेग्नस नाम के एक ईसाई पादरी ने यूरोप के स्कैंडीनेविया प्रदेश की इतिहास पुस्तक में पहली बार ४३९ वर्ष पहले समुद्र में देखे गये अतिविशाल जल राक्षस का उल्लेख करते हुए लिखा है, 'समुद्र में जाते हुए पालवाले जहाज पर सांप के आकार के एक विशाल जल-जंतु ने समुद्र से उछल कर हमला किया और वह नाविकों को दबोचकर निगल गया । उसने सारे जहाज को भी तोड़-मरोड़कर समुद्र में डुबा दिया । वह लगभग ४०० फुट लंबा था ।'

युद्ध पोत डायेडालस से दिखा

विशाल पालोंवाला ब्रिटिश युद्धपोत डायेडालस जब सन् १८४८ में अंधमहासागर में अपने कैप्टिन के नेतृत्व में निरीक्षण परेड पर चला जा रहा था, तब पोत के सैनिक युद्धपोत के पास से गुजरते लगभग ३०० फुट लंबे, मोटे विशाल सर्पाकार जल दैत्य को देखकर भयभीत हो गये थे । उसका १४ फुट ऊंचा सांप-जैसा सिर रह-रहकर समुद्र से बाहर निकल रहा था । उसकी तैरने की रफ़्तार लगभग २४ कि. मी. प्रति घंटा थी । गनीमत थी कि वह शांति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाज के पास से अपने शरीर से पानी में उथल-पुथल मचाता हुआ निकलकर आगे बढ़ गया।

ब्राजील का भूरा दैत्य

सन् १९०५ में द. अमरीका के ब्राजील के समुद्र तट से गुजरते वल्हाला नामक भाप से चलते जहाज पर सवार मीडवाल्डो व माइकेल निकॉल नामक दो नाविकों ने एक विराट जल दैत्य को समुद्र में भयंकर उथल-पुथल मचाते देखा था। लगभग १०० फुट लंबे उस भूरे रंग के पहाड़-जैसे जलचर की बहुत मोटी गरदन और कछुए-जैसे सिर पर बड़ी-बड़ी चमकती आंखें बेहद डरावनी थीं। शायद उसकी भूख शांत थी वरना वह जहाज पर हमला कर सकता था। उसकी गरदन आदमी के शरीर-जैसी मोटी और ऊंट से दो गुनी लंबी थी।

कनाडा का हंगामा कैडी

ठीक इसी प्रकार कनाडा के वेसोवर समुद्र तट के पास सन् १९३९ में केप्टिन पॉल सोवर ने अपने जलयान से प्रत्यक्ष रूप से लगभग २४५ फुट लंबे व १० फुट चौड़े जल दैत्य को देखा था। बाद में डेविड बेब नाम के एक मछुआरे को भी वह मछली पकड़ने के दौरान अनेक बार सन् १९४१ में दिखायी दिया था। उसका सांप-जैसा सिर समुद्र से १५ फुट ऊपर आता था। वह अपनी मजबूत कांटेदार पूंछ से पानी को काटता व शरीर को ऐंठाता हुआ तैरता जाता था। सन् १९५० में उसी क्षेत्र में वैसा ही १५५ फुट लंबा-चौड़ा प्राणी जज जेम्स ब्राउन को भी अचानक दृष्टिगोचर हुआ था। उस प्राणी का नाम वैज्ञानिकों ने कैडी रखा था।

सन् १९७५ में ब्रिटेन के कोर्निश समुद्र तट पर मछुआरों ने काले रंग का हाथी और शेर-जैसा मिलता-जुलता १६० फुट लंबा व २० फुट चौड़ा हमले करता जल-राक्षस देखा था। बाद में जल सेना के अधिकारियों ने उसका नाम—मारगॉर रखा और उसे जीवित पकड़ने की बड़ी कोशिश की। हर बार वह मोटे-मोटे रस्सों से बने जालों को भी आराम से काई की तरह काटता हुआ समुद्र की गहराइयों में खो जाता था।

उत्तर अटलांटिक का हादसा

सन् १९१५ में एक जरमन यू बोट ने जब एक ब्रिटिश स्टीमर को टारपीडो से डुबाया, तब सारे जरमन अधिकारी विस्फोट से उफनते समुद्र के पानी को चीरकर ऊपर उठे एक १६० फुट लंबे घड़ियाल के आकार के भयानक जल-दैत्य को देखकर डर गये थे। उन्होंने गोलियों से ४ लंबे खूंख्वार पंजों वाले उस प्राणी को मारना चाहा, पर वह नहीं मरा और बहुत देर तक भागती हुई यू बोट का पीछा करता रहा।

गोताखोरों को निगला

अनेक बार ये भयानक जल-राक्षस अचानक समुद्र के ऊपर आकर आक्रमण करके आदमियों को निगल चुके हैं। सन् १९६२ में घने कोहरे के बीच एक मोटे पट्टे पर बैठकर अमरीकी वायु सेना के ५ गोताखोर फ्लोरिडा के समुद्र तट पर कुछ खोजबीन कर रहे थे। तभी अचानक १७० फुट लंबे एक भीमकाय जल-प्राणी ने उन पर हमला किया और ३ गोताखोरों को मुंह में दबाकर समुद्र में गायब हो गया।

—वल्लवदास पैलेस
हनुमानताल, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

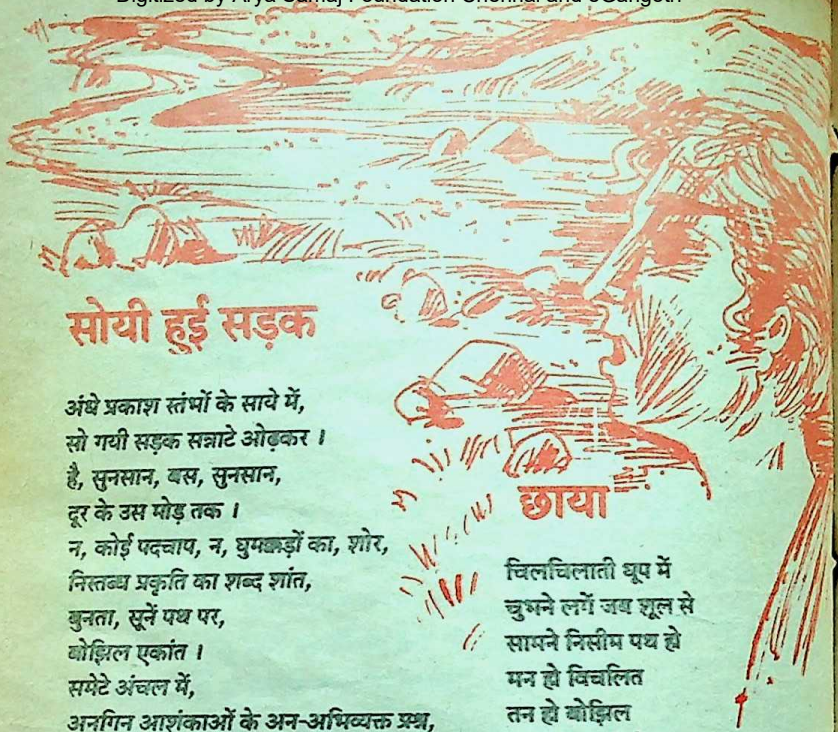

सोयी हुई सड़क

अंधे प्रकाश स्तंभों के साये में,
सो गयी सड़क सन्नाटे ओढ़कर ।
है, सुनसान, बस, सुनसान,
दूर के उस मोड़ तक ।
न, कोई पदचाप, न, घुमक्कड़ों का, शोर,
निस्तब्ध प्रकृति का शब्द शांत,
बुनता, सूनें पथ पर,
बोझिल एकांत ।
समेटे अंचल में,
अनगिन आशंकाओं के अन-अभिव्यक्त प्रश्न,
मौन है रात का पहला पहर ।
भयावह रात की, जिस कल्पना से
चढ़ गयी है, सांकलें द्वार पर,
दिन छिपे ही जिंदगी सींखचों में बंद है ।
अब ढूंढ़ना है अस्त्र,
जिसके वार से, जल जायें,
तिमिर की, यह डस रही परछाइयां ।
और,
खोलकर द्वार, आ सींखचों के इस पार,
हो, चेतना जीवंत रास्ते के एकांत पर ।
फिर न उभरें कल्पना में चित्र,
कि, अंधेरों से भयभीत, सोयी थी,
सड़क कभी सन्नाटे ओढ़कर ।

कृष्णस्वरूप मिश्र 'मदन'
'साहित्य-ज्योत्स्ना',
सुभाष नगर, बरेली-२४३००१

छाया

चिलचिलाती धूप में
चुभने लगें जब शूल से
सामने निसीम पथ हो
मन हो विचलित
तन हो बोझिल
श्वास लेना भी हो दूभर
भूल से भी न व्यथित हो
तू कभी मेरे मना
जननी अपनी याद कर
तब देखना यह तय हुआ कि
धूप तेरी छांह बनेगी
पुष्प तेरी राह पर आकर बिछेंगे
स्नेह भरा इक स्वर कहेगा
मेरे रन्जे क्या हुआ ?
मैं तेरी छाया हूं बेटा
सामने मंजिल है तेरी
सोच मत बस चलता जा

— शशि [illegible]
महानगर टेलीफोन निगम [illegible]
कर्मशाला [illegible]
१९, अशोक [illegible]
नयी दिल्ली-११०[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरा

● डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

कभी-कभी, अचानक, क्या-का-क्या हो जाता है, कुछ भी समझ में नहीं आता। उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। बरात-स्वागत के ऐन वक्त पर, न जाने कैसे, एकाएक, एक गैस सिलेंडर के फट जाने से भयानक कानफोड़ू धमाका और शामियाने पर धू-धू करती आग की लपलपाती लपटें। बस, फिर क्या था, हर तरफ, अफरा-तफरी। धक्कम-धक्का। रेल-पेल। हो-हल्ला-गुल्ला। हड़कंप और भगदड़-सी मच गयी। कोई इधर, कोई उधर। सबको अपनी-अपनी जान के लाले पड़े थे और ऊपर से बिजली भी गुल। कहना ही क्या। कोई किसी के ऊपर, कोई नीचे। कोई किसी से टकरा गया तो किसी का पैर ही दब गया। हंगामा क्या, भयंकर बवंडर-सा मच गया। सबको फटाफट बाहर निकलने की होड़ा-होड़ी। हड़बड़ाहट और घबराहट की वजह से रास्ते में गाड़ियों का भारी जमघट। रास्ता बिलकुल बंद। यातायात ठप्प। ऐसे में भला, दमकल भी भीतर कैसे पहुंचता ?

लोग-बाग, जैसे-तैसे, बाहर निकलते रहे। इस बीच, शामियाना, कारपेट, दरियां सब जलकर स्वाहा हो गये। जैसे-तैसे, एक घंटे बाद दमकल पहुंचा, तब जाकर कहीं आग पर काबू पा सके। जो जल गया, जल गया, क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते । होनी को कौन टाले । इतनी गनीमत समझिए कि सभी सही-सलामत बच गये । कोई जला-वला भी नहीं । दिल-ही-दिल में सभी, ऊपर नीली छतरीवाले का लाख-लाख शुक्रिया कह रहे थे । जान बची तो लाखों पाये ।

फिर झटपट, जैसे-तैसे, पास के ही एक होटल में व्यवस्था कर देनी पड़ी, लेकिन लड़केवाले न जाने क्यों एकाएक गिरगिट की तरह रंग बदलने लगे । बिलकुल अकड़-से गये । किसी भी कीमत पर शादी के लिए तैयार ही नहीं हुए । बेचारे लड़की के पिता बहुत गिड़गिड़ाये । हाथ-पैर तक जोड़े । घराती, सगे-संबंधी, नाते-रिश्तेदार, जान-पहचानवाले सभी ने जी-जान से उन्हें मनाने की भरसक कोशिश की, मगर वे तो टस-से-मस ही नहीं हुए । रूठे-के-रूठे । अकड़े-के-अकड़े । एक बराती तो, योंही, कस-कसकर, ताने मारने लगा लड़की के ग्रह तो बड़े उत्पाती गड़बड़ मचानेवाले हैं, पंडितजी ने पहले ही बता दिया था । लड़के के पिता भी बड़बड़ाने लगे—'ना बाबा ना, कल हमारे इकलौते बेटे को कुछ हो जाए । हम खामख्वाह कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते । वैसे भी, हमारी उम्मीदों पर इन्होंने देने-दाने के मामले में पहले ही पानी फेर दिया था । बस, कहते-कहते, आव-देखा-न ताव, सभी बराती अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठे, बात-की-बात में, तीन-तेरह हो गये । लड़कीवाले बेचारे किंकर्त्तव्यविमूढ़, हक्के-बक्के, मुंहबाये, खड़े-के-खड़े, पशोपेश में, उखड़े-उखड़े । करते भी क्या ?

अपने भानजे को एकाएक अलग बुलाकर पूछा—'राजू तुम्हारे ध्यान में है यहां कोई ऐसा अच्छा लड़का, जो झटपट, मतलब, इसी वक्त, मीनाक्षी से शादी करने के लिए राजी हो जाए । हमारी इज्जत भी रह जाएगी । नहीं तो इतना किया-कराया सब गुड़गोबर हो जाएगा । चौपट हो जाएगा ।'

राजू तो बरातियों के रंग-ढंग देखकर पहले ही उधेड़बुन में था कि कोई और रास्ता निकाला जाए । मामा की बात से एकदम उसकी नजर शेखर पर पड़ी । वैसे भी, हमेशा ही उसके दिल में, भीतर-ही-भीतर, यह बात कुलबुलाती-सी रहती थी—काश, मीनाक्षी का ब्याह शेखर से होता तो कितना अच्छा होता, लेकिन जिगरी दोस्त होने के नाते, वह कभी अपने मन की बात मुंह पर नहीं ला पाया और न शेखर की तरफ से ही कभी कोई ऐसा-वैसा संकेत ही मिला ।

'शेखर, तुमसे एक बहुत जरूरी बात करनी है । तुम तो मीनाक्षी को अच्छी तरह जानते हो ।' राजू ने साहस कर, उसे एक तरफ खींचकर कहा—'अगर यार, तुम्हें ठीक लगे और साथ-ही-साथ तुम्हारा मन भी करता हो तो तुम इस वक्त हमारी लाज रख लो । जिंदगीभर तुम्हारा ऐहसान नहीं भूलेंगे हम । अपने बाबूजी से भी पूछ लो । उनकी मन-मर्जी और हामी से ही यह रिश्ता होना चाहिए । अगर तुम्हें और तुम्हारे बाबूजी को यह संबंध ठीक लगे तो दोस्त, हम तो सचमुच तर जाएंगे ।

बस, फिर क्या था । थोड़ी ही देर में गाड़ी खुद पटरी पर आ गयी । फटाफट फेरे भी हो गये । शेखर और उसके बाबूजी की सभी तारीफों के पुल बांधने लगे । ऐसे भले लोग, भला, आज की दुनिया में कहां मिलते ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनाक्षी भी मन-ही-मन फूली नहीं समायी । वह तो, वैसे भी, उसे बहुत पसंद करती थी । अब उसे लगा जैसे सचमुच ऊपरवाले ने उसकी सुन ली हो । उसका रोम-रोम पुलकित और प्रफुल्लित हो गया । एक प्रकार से, उसे, मन-चाहा मनमीत मिल गया ।

कहते हैं—"भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है । पहले तो शेखर, दो बार, रात-दिन एक करके भी आई. ए. एस. में निकल नहीं पाया और इस बार, मतलब, आखिरी बार, बिलकुल मन न होने पर भी, मीनाक्षी के ही कहने पर, बहुत जोर देने पर, वह बैठा और एकदम साफ निकल गया । उसे खुद बेहद हैरानी हुई कि पहले तो, बाप-रे-बाप, उसने ऐड़ी-चोटी का जोर लगाया । कितनी जी-जान से मेहनत की थी, मगर फिर भी रह ही गया था । कहते हैं न कि हर सफल व्यक्ति के पीछे कोई-न-कोई नारी ही होती है ।

वैसे भी, मीनाक्षी ने, चटपट, बड़े सलीके से, घरबार क्या संभाला कि ससुर भी एकदम बाग-बाग, गद्‌गद् हो गये थे । बिलकुल मंत्र-मुग्ध । यद्यपि हरीश जोशी सेवानिवृत्त हो गये थे, लेकिन आदत के अनुसार, दिनचर्या बिलकुल पहले ही जैसी घड़ी की सुई की तरह चलती ही रहती । सुबह ठीक पांच बजे चाय पीते । उसके बाद निबटकर सैर को निकल पड़ते । घूम-फिरकर घर लौटते तो फटाफट नहा-धोकर, थोड़ा पूजा-पाठ कर बागवानी में लग जाते ।

मीनाक्षी उनकी एक-एक बात का पूरा-पूरा ध्यान रखती । सुबह ठीक पांच बजे उन्हें बढ़िया चाय पिलाती । ठीक नौ बजे नाश्ता खिलाती । दिन में ठीक एक बजे खाना । शाम को चार बजे चाय, रात को आठ बजे खाना । नौ बजे गरम-गरम दूध का गिलास । खाने में में चपातियां और बढ़िया तरीदार एक सब्जी । उनकी हर चीज यथास्थान रखती । धुले-धुले कपड़े । साफ-सुथरे रुमाल । करीने से रखी किताबें और मेज पर अखबार, पत्रिकाएं । बैठक भी ताजे-ताजे फूलों से हरदम महकती रहती । बीच-बीच में कब उन्हें चाय चाहिए, कब क्या चाहिए, बस हर वक्त, हर छोटी-बड़ी बात का खयाल रखती । ससुर, जब-तब, मन-ही-मन, सोचते रहते न जाने कितने-कितने जन्मों के पुण्यों से ऐसी सुंदर, सुघड़, पढ़ी-लिखी, सलीकेदार बहू उन्हें मिली है । पत्नी को मरे पांच-छह साल हो गये थे । इतना भी उसने कुछ ही दिनों में मालूम कर लिया था कि बाबूजी को क्या-क्या पसंद है ? नाश्ते पर उन्हें करारे टोस्ट और दाल के भरे परांठे बेहद पसंद थे । लंच पर कढ़ी चावल और हरी सब्जी । शाम की चाय पर गरम पकोड़े या घर के बने ताजे चिप्स अच्छे लगते । रात के खाने में सुख तो, सचमुच, पहले कभी नहीं मिला । बहू तो, वैसे भी, बड़ी भाग्यशाली है । देवी है । साक्षात् सरस्वती । इतनी विलक्षण, इतनी बुद्धिमान और ऐसी कार्य-कुशल ।

एक बार ससुर ने बहू को अपने पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाया और बड़े प्यार और दुलार से कहा—'बेटी, तुम इतनी होशियार हो, तुम भी आई. ए. एस. की तैयारी करो। तुम तो, बस, योंही, फट से निकल जाओगी। लो यह फार्म भर लो। बस, चुपके से मेरी बात मान लो। शेखर को कुछ नहीं बताऊंगा।'

'बाबूजी, पहले तो, ऐसे ही, बिना तैयारी के निकलना मुश्किल है और किसी प्रकार अगर आ भी गयी तो फिर नौकरी के चक्कर में घर-गृहस्थी कैसे संभलेगी ?'

'अरे बेटी, सब ठीक हो जाएगा। तुम फार्म तो भरो।

नीली छतरीवाले की माया, कहीं धूप, कहीं छाया। मीनाक्षी ने तो कमाल ही कर दिया। पहली ही बार में सफल हो गयी। अब कुछ महीनों तो लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी मसूरी में ट्रेनिंग चलेगी, फिर पोस्टिंग हो जाएगी—यह सब कुछ सोच-विचारकर इस बीच उसने घर पर एक बाई और पहाड़ से आया हुआ एक गरीब लड़का, जो पढ़ाई भी करना चाहता था, रख दिया। दोनों को दो-तीन दिन के अंदर ही सब कुछ समझा-बुझाकर, सिखाकर, अपनी देख-रेख में काम करवाने लगी। बाबूजी को कब क्या देना है ? खाने पर क्या-क्या चाहिए। एक-एक बात को भली-भांति समझा गयी।

वक्त तो उड़ता परिंदा है। उड़ता ही गया। सालों के बाद दोनों की नियुक्तियां एक ही जगह हो गयीं। शेखर को डी. एम. के रूप में और मीनाक्षी की सिटी मजिस्ट्रेट के रूप में। बस, कुछ ही दिनों में सारे जिले में, जब-तब दोनों की ही बातें होती। पहली बार अपने जिले में ऐसे अधिकारी आये।

शेखर जोशी जिलाधिकारी के रूप में इधर क्या आये कि कुछ ही महीनों में जिले की काया पलट-सी हो गयी। शांति, सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, अमन-चैन की बंशी बजने लगी। पहले तो आये दिन, अपहरण-फिरौती, चोरी-चपारी, लड़ाई-झगड़े, दंगे-फसाद आदि का बाजार गरम रहता। लाखों-लाखों क्या करोड़ों की फिरौतियां। अपहरण तो, एक प्रकार से उद्योग ही बन गया था। ऊपर से गुंडागर्दी और दादागिरी का बोलबाला। दादा क्या, नेताओं के चमचे कहिए, खुल्लमखुल्ला जहां चाहें वहां से वसूली करते। मजाल है कोई थोड़ा-सा भी चूं-चपड़ करे। शेखर जोशी ने आते ही, जिले में सारा गड़बड़झाला बंद करा दिया। एस. पी. और दूसरे सरकारी अधिकारियों को बुलाकर तुरंत कार्यवाही करने को कहा। लोगों को किसी भी प्रकार की ऐसी-वैसी तकलीफें नहीं होनी चाहिए। वह खुद वक्त की पाबंदी के कायल। ठीक दस बजे कलेक्ट्रेट में हाजिर। फटाफट ए. डी. एम., सिटी मजिस्ट्रेट, एस. डी. एम. सब अधिकारियों को बुलाकर आधे घंटे में बस समझा-बुझाकर फटाफट सरकारी काम निबटाने में लग जाते। उनके दफ़्तर में कोई भी व्यक्ति ग्यारह और बारह बजे के बीच उन्हें मिल सकता है। अपनी परेशानी या दुखड़ा बता सकता है और फिर संबंधित विभाग से तुरंत मामले की कार्यवाही हो जाती। उनके बारे में कुछ ही दिनों में यह बात तो फैल गयी थी कि डी. एम. साहब पहले-जैसे जिलाधिकारियों की तरह तथाकथित बड़े लोगों के यहां दावत आदि पर भी कभी नहीं जाते और न किसी से, किसी भी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई उपहार ही स्वीकार करते । न किसी को सरकारी चीजों का गलत इस्तेमाल करने देते । खुद अपने निजी काम के लिए कभी भी सरकारी गाड़ी का उपयोग नहीं करते । क्लबों में भी वक्त बर्बाद करने के लिए नहीं जाते, जबकि उनके आते ही न-जाने कितने क्लबों ने उन्हें बुलाया । अपनी मजबूरी बता दी कि सरकारी काम से ही फुरसत नहीं है भाई । ये रॉटरी, लाइंस क्लब तो बड़े लोगों के लिए हैं । महीनों से उजड़े-उजड़े नेहरू युवक केंद्र में युवक-युवतियों के लिए संगीत, नृत्य, टाइपिंग, सिलाई-बुनाई आदि सिखाने की व्यवस्था कर दी । रंग-कर्मियों को नाटकों की रिहर्सल करने के लिए वहीं अच्छा इंतजाम करा दिया । और भी न जाने कितने-कितने काम कर डाले उन्होंने जन-जन के कल्याण के लिए । बस, जहां देखो वहां उन्हीं की वाहवाही और तारीफें । अगर देश में मुख्य चुनाव आयुक्त शेषन— जैसे लोग या खैरनार, अरुण भाटिया, शेखर जोशी— जैसे अफसर हो जाएं तो क्या-का-क्या हो सकता है ।

दरअसल, गले-गले तक, भ्रष्टाचार के दल-दल में, धंसे-डूबे, आज के इस सड़े-गले माहौल में, भला, कोई जिलाधीश, इतना ईमानदार, इतना स्वाभिमानी, इतना सच्चा और सही सरकारी अधिकारी भी हो सकता है । कभी कोई विश्वास नहीं करेगा । अरे । आज तो, जहां देखो वहां, ऊपर से नीचे तक, सारे-के-सारे मंत्री, अधिकारी, सत्ताधारी, उनके बेटे-बेटियां, रिश्तेदार, चमचे, सब-के-सब, मतलब, पूरा-का-पूरा तंत्र ही तो भीषण भ्रष्टाचार का भयावना भस्मासुर बना हुआ है । खुले

आम, सबकी आंखों में धूल झोंककर, दिन-दहाड़े सबको धता दिखाकर, खुल्लमखुल्ला, डंके की चोट पर, नेता लोग कितने-कितने घोटालों में, कितने-कितने करोड़ डकार गये । अरबों-खरबों खा पी गये और फिर भी, जस-के-तस, मजे से गद्दियों पर डटे-के-डटे । और ऊपर से उनके नवाबी ठाट-बाट, शाही शान-शौकत, रोबीले रोब-दाब और चटकीले तड़क-भड़क देखकर, कौन कह सकता है कि ये जनता-जनार्दन के प्रतिनिधि हैं ? सब-के-सब सत्ता के दलाल । राजनीति के चालू चट्टे-बट्टे । कुरसी के काले-कलूटे भूत । एकदम भ्रष्ट और निकृष्ट । ऐसे परिवेश में भला, ऐसा अनोखा जिलाधिकारी । अद्भुत चमत्कार । सचमुच, आठवां आश्चर्य ।

वैसे, कहते हैं न, जैसा बाप, वैसा बेटा । अगर यह कहावत सही मायने में, सौ-फी-सदी, किसी पर लागू होती है तो जिलाधिकारी शेखर जोशी पर । उनके पिता भी, अपने वक्त के निराले अधिकारी थे, मगर बेचारे, इतने सालों की सरकारी नौकरी के बावजूद, अपनी सच्चाई, ईमानदारी और वक्त की पाबंदी के कारण परगनाधिकारी ही रह गये । मतलब, एस. डी. एम. के एस. डी. एम. । पदोन्नति ही नहीं हुई । वैसे, 'दूध का दूध और पानी का पानी' वाले उनके सही-सही फैसलों की चर्चा, आज भी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब-तब, जहां-तहां, इलाकेभर में होती ही रहती है । कहते हैं कि एक बार, गलती से गलत जगह, गाड़ी पार्क करने के जुर्म में, उन्होंने अपनी बीवी तक को नहीं छोड़ा । अदालत में बुलाकर फट से सौ रुपये जुर्माना कर दिया था । एक बार पुलिस ने चोरी के जुर्म में एक बेचारे को पकड़ लिया । वह अदालत में गिड़गिड़ाने लगा—'हुजूर, मैंने कभी चोरी-चारी नहीं की । इन्होंने जबर्दस्ती मुझे पकड़ा और हवालात में बंद कर दिया । मुझ गरीब पर, खामख्वाह झूठा इलजाम लगा रहे हैं । मैं तो गरीब मिस्त्री हूं, सरकार । कोई चोर-उचक्का नहीं ।'

जिस सिपाही ने उसे पकड़ा था, उसने बयान दिया, 'जनाब, मैंने इसे ऐन मौके पर ही रंगे हाथों पकड़ा है । यह सेंध लगाकर, चोरी का सामान उठाकर निकल ही रहा था अचानक मुझे देखकर सकपका गया और एकदम भागने लगा । इसी बीच चोरी का सामान इसने न जाने कैसे इधर-उधर सरका दिया या किसी को पकड़ा दिया । मैंने उसका पीछा किया और फट से पकड़ लिया ।

एस. डी. एम. हरीश जोशी ने बयान देनेवाले मोटे सिपाही को बड़े गौर से देखा और ऐलान किया—'देखो, मैं इसे जब भागने को कहूंगा तो तुम इसे फट से धर-दबोच देना ।'

और चोरी के जुर्म में पकड़े गये आदमी से कहा—'देखो जैसे ही मैं तुम्हें भाग जाने को कहूंगा तुम रफू-चक्कर हो जाना । भागने में कामयाब हुए तो, बच्चू, समझो बच गये नहीं तो चोरी के जुर्म में सजा काटनी पड़ेगी । समझे ! चलो भागो । बस, मिस्त्री तो ये भागा वो भागा । मोटा पुलिसवाला भला, कैसे उसे पकड़ पाता । हांफता-हांफता खाली हाथ ही लौट गया । बस, फैसला । मिस्त्री साफ-साफ बच गया ।

एक बार जिले में एक तहसीलदार के बारे में उस इलाके के लोगों ने एस. डी. एम. के पास बहुत-सारी शिकायतें भेजीं कि तहसीलदार बहुत ही बदमिजाज और बदतमीज हैं । किसी की सुनता ही नहीं । अनाप-शनाप गालियां बकता रहता है । सीधे मुंह तो कभी बात ही नहीं करता । इलाके के सारे लोग बेहद परेशान हैं । एस. डी. एम. हरीश जोशी, कानों के कच्चे नहीं थे । बस, खुद एक सुबह कंबल ओढ़कर गांववाले के वेश में सीधे उस तहसील में पहुंच गये और लगे गिड़गिड़ाने, 'हुजूर, मेरी बात सुन लीजिए । बहुत दूर से आया हूं ।' तहसीलदार ने आव देखा न ताव, आग-बबूला होकर, भीतर से ही बड़बड़ाते हुए भद्दी-भद्दी गालियों की बौछार कर दी । साले, सुबह-सुबह आ जाते हैं मगज चाटने । उल्लू के पट्ठों को और दुनिया में कोई और काम ही न हो...न जाने क्या-क्या । एस. डी. एम. ने कंबल हटाया तो तहसीलदार की सिट्टी-पिट्टी गोल । थर-थर कांपता ही रह गया । हक्का-बक्का । उसके हाथों खबर लेकर, तुरंत डी. एम. से दूसरी जगह उसका तबादला करा दिया—यह हिदायत देते हुए, फिर कभी ऐसी हरकत की समझो, नौकरी से भी हाथ धोने पड़ेंगे ।

एक बार, जिले में प्रदेश के मंत्री का दौरा वह इसी इलाके के विधायक भी । इसलिए एम. वगैरह, सारे-के-सारे सरकारी कर्मचारी अपने पूरे ताम-झाम के साथ मंत्रीजी की अगवानी और आवभगत में पलकें बिछाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े, मगर हरीश जोशी अपने दफ़्तर में फाइलों में उलझे। मंत्री ने इधर-उधर से उनके बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। बड़ा ही अक्कड़ू अफसर है। अपने को बड़ा तीसमारखां समझता है। किसी को कभी घास ही नहीं डालता आदि-आदि। मंत्रीजी ने डी. एम. से ऐसे ही पूछा परगनाधिकारी जोशी कहां है ? वह यहां क्यों नहीं आया। डी. एम. ने बाद में जब उनसे पूछा तो कहने लगे—'मैं वहां क्यों आता। मेरी ड्यूटी तो अपने दफ़्तर में है, वहां नहीं। ऐसे न जाने कितने-कितने किस्से हैं उनके बारे में। अपने वक्त के एक ही अफसर। और अब बेटा ठीक उन्हीं के पद-चिह्नों पर चल रहा है।

उस दिन शेखर जोशी खुद अपनी निजी कार में अपने बच्चे को स्कूल छोड़ने के लिए, घर से निकल ही रहे थे कि एक बूढ़े सज्जन गाड़ी के सामने, अचानक, अचकचाकर, खड़े हो गये। गिड़गिड़ाने लगे—'हुजूर, मैं बिलकुल बर्बाद हो गया। लुट गया। मेरी बेटी को इसी शहर में कल, उसके ससुरालवालों ने मार ही डाला था कि वह बेचारी, सुना है जैसे-तैसे भाग निकली। उसने अपनी चिट्ठी में एक हफ़्ते पहले कुछ ऐसा ही लिखा था कि ससुरालवाले कुछ ऐसी ही साजिश कर रहे हैं। अब वह न-जाने कहां गायब हो गयी। बेटा तो बहू की काली करतूतों की वजह से पागलखाने में पड़ा है और अब एक बेटी भी, वह भी लापता हो गयी है। उसके ससुराली उसे मार डालेंगे। दिल्ली से जैसे-तैसे यहां पहुंचा हूं। लोगों ने कहा। सीधे डी. एम. साहब से मिलो। वह बहुत ही भले आदमी हैं। फटाफट छानबीन कर उसे ढूंढ़ निकालेंगे।

इसी बीच, पति को योंही अचानक अटके देखकर, मीनाक्षी जोशी बाहर निकली। बूढ़े आदमी को देखकर वह पहचान तो गयी थी, लेकिन उसने बूढ़े को इसका आभास होने नहीं दिया। पति को कहा—'शेखर, तुम इनका मामला, जैसे-तैसे भी हो, निबटा दो। बेचारे बड़ी मुसीबत में हैं। मनु को छोड़ने मैं चली जाती हूं। वहीं से सीधे दफ़्तर भी पहुंच जाऊंगी।'

शेखर जोशी ने तुरंत एस. पी. को फोन किया और कहा अगर आप अभी यहां आ सकें तो कृपया आ जाइए। एस. पी. के आते ही उन्हें तेजी से मामले की जांच-पड़ताल करने को कहा और खुद भी कार्यवाही में जुट गये। और देखिए उसी शाम एक होटल में लड़की मिल गयी। बूढ़ा तो कृतकृत्य हो गया। इसी बीच उसने उनके बारे में कुछ-कुछ पता भी कर लिया। धन्यवाद देने के लिए डी. एम. के घर गया तो मीनाक्षी जोशी को ध्यान से देखकर वह बिलकुल पानी-पानी हो गया—बस, फफक-फफककर, उनके पांव में पड़कर रोने लगा और मन-ही-मन पछताने भी लगा। उस दिन न जाने मेरी मति क्यों मारी गयी जो ऐसा अनमोल हीरा गंवा दिया।

— शैल शिखर, मसूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार क्या है ? क्या यह सौंदर्य की अभिव्यक्ति मात्र है अथवा वासना का एक हिस्सा । अमरीका के शोधकर्त्ताओं द्वारा 'प्यार' की परिभाषा जानने के लिए काफी शोध किया जा रहा है । कुछ लोग प्यार को रहस्य कहकर, इस विषय पर बहस ही नहीं करते । विज्ञान भी 'प्यार' को परिभाषित कर पाने में सफल नहीं हुआ है ।

प्यार एक ताकत है, जो मानवीय दूरियों को कम करता है तथा गठबंधन करता है । प्यार में कुछ मूलभूत बातें समाहित हैं । जैसे दूसरे के लिए चिंतित होना, उत्तरदायी होना, आदर करना और उसके बारे में जानना । उत्तरदायी होने से तात्पर्य है—अव्यक्त इच्छाओं को पूर्ण करना । आदर या सम्मान का मतलब डर के मारे ऐसा करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को वैसा ही देखना, जैसा कि वह है, उसके यथावत रूप में एक व्यक्ति जब दूसरे व्यक्ति को प्यार करता है तो गहराई में उतरने के लिए उसके बारे में अधिक से अधिक जानने की कोशिश करता है ।

प्यार—अर्थात बिना किसी गारंटी के साथ प्रतिबद्धता यानी हमारा प्यार, दूसरे में भी उतना ही प्यार पैदा करेगा, प्यार का दूसरा नाम 'विश्वास' भी है । जितना कम विश्वास, उतना कम प्यार, आज मनुष्य के अस्तित्व का एकमात्र सतोषजनक और पवित्र उत्तर है—'प्यार' । प्यार से जीवन में मिठास आती है । प्यारे लोगों को लिखा जाना आवश्यक है और लिखने के क्रम में, दिमाग में अपने आप कोमल भावनाएं और विचार आते हैं । वे लोग जो हमें प्यार करते हैं, उनके द्वारा बिताये लम्हे वर्षों पश्चात तक भी हमसे भुलाये नहीं भूलते । प्यारे संबंधों से हमें खुशी और शांति मिलती है ।

प्यार एक कला

प्यार करना एक कला है और किसी भी अन्य कला की तरह, इसे भी सीखा जा सकता है । विश्वास, आशा और प्यार तीन असाधारण बातें हैं, लेकिन इन तीनों में सबसे महत्वपूर्ण है प्यार । पुरुषों के अस्तित्व के लिए प्यार सबसे जरूरी शर्त है । प्यार में लंबे समय तक पीड़ा होती है और प्यार किसी से ईर्ष्या नहीं करता, घमंड नहीं करता, प्यार किसी का बुरा नहीं

वैज्ञानिक भी समझ रहे हैं प्यार को

चाहता और प्यार जबर्दस्ती भी नहीं किया या कराया जा सकता । प्यार जीवन की कठिनाइयों और समस्याओं से आसानी से आत्मसात कर सकता है ।

आकर्षण क्यों ?

शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययनों से मालूम किया है कि, विपरीत लिंगवाले लोग एक-दूसरे से किन स्थितियों में आकर्षित होते हैं, संबंधों में कितना स्थायित्व होता है, मित्रता कैसे होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

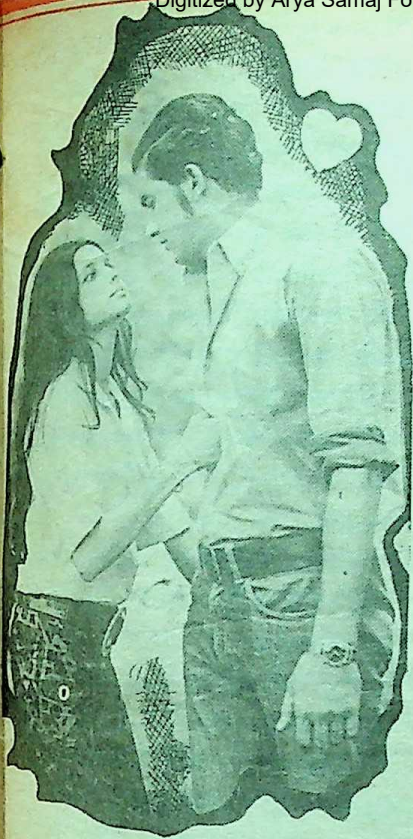

प्यार क्या है ? क्या यह सौंदर्य की अभिव्यक्ति मात्र है अथवा वासना का एक हिस्सा । अमरीका के शोधकर्त्ताओं द्वारा 'प्यार' की परिभाषा जानने के लिए काफी शोध किया जा रहा है ।

और बचपन के हमारे अनुभवों की भूमिका हमारे प्यार करने के तरीके पर कैसे होती है । मां और बच्चे के बंधन बहुत मजबूत होते हैं । अपनी मां के साथ रहकर बच्चा बहुत खुश रहता है । मां जब नहीं रहती है तो बच्चा मां के लिए रोता है । इसी तरह प्यार किये जाने की स्थिति में वयस्क कम परेशान रहते हैं । मां के संपर्क में बच्चा प्रसन्न रहता है और वयस्क, प्यार किये जानेवाले लोगों के साथ रहकर खुश रहते हैं । वैसे लोग, जिनके माता-पिता ने उन्हें प्यार किया है, वे प्यार में सुरक्षा देते हैं और जिन्हें बचपन में प्यार नहीं मिला है, वे प्यार में स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं । ऐसे लोग निराशावादी हो जाते हैं और वे मानने लगते हैं कि प्यार कभी भी स्थायी नहीं होता । कभी-कभी तो ये लोग ईर्ष्यालु भी हो जाते हैं ।

स्वास्थ्य के लिए प्यार

सही मायने में खुश रहने के लिए तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए हमें जीवन में प्यार की आवश्यकता होती है । मित्रता, पारिवारिक बंधन या रोमांस कर रहे लोगों का मानसिक स्वास्थ्य, दूसरों की तुलना में बेहतर होता है । प्यार करने की हममें जितनी अधिक क्षमता होगी, हम उतने ही ज्यादा स्वस्थ और मजबूत होंगे । हम चाहते हैं कि हमें कोई समझे, कोई हमारी चिंता करे तथा वह समझने और चाहनेवाला व्यक्ति हमारे पास रहे ।

प्यार के अनेक प्रकारों में एक है, भाई की तरह प्यार करना । इसका मतलब है कि प्राणीमात्र को प्यार करना । इसी तरह के प्यार की बात 'पवित्र बाईबल' में की गयी है । 'अपने पड़ोसी को अपनी तरह प्यार करो ।'

पड़ोसी का मतलब होता है —जरूरतमंद व्यक्ति । अगर हम ईश्वर को प्यार करते हैं तो हम जरूरतमंदों को प्यार करेंगे । मदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेरेसा कहती हैं, "जब मैं गरीबों के बीच रहकर उनकी सेवा करती हूं तो उस समय मैं यह महसूस करती हूं कि ईश्वर की सेवा कर रही हूं।" इस तरह मानव मात्र को प्यार करके ईश्वर की सेवा की जा सकती है। भूखे एवं बिना छत के लोग, तथा बहिष्कृत लोगों को आवश्यकता है हमारे ध्यान की। दूसरों को प्यार और खुशी देनेवाला व्यक्ति हमेशा ही औरों की तुलना में ज्यादा खुश और प्रसन्न रहता है।

विश्वास प्यार का आधार है। विश्वास पाने के लिए आवश्यकता होती है, साहस और जोखिम उठाने की क्षमता की। वैसे लोग जो सुरक्षा को जीवन की पहली शर्त मानते हैं, विश्वास कर नहीं सकते। प्यार किये जाने के लिए जरूरत होती है साहस की, कुछ निश्चित मूल्यों के आकलन की, जिनके आधार पर जोखिम उठाये जा सकें।

दूरियां चाहिए

दूरियों व मतभेदों को पाटने में पुरुषों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और इसमें सक्रिय भूमिका होती है प्यार की। प्यार जो दीवारों को तोड़ता है और लोगों को जोड़ता है। प्यार में सिफर दिया जाता है—पाने की उम्मीद के बिना। देने का मतलब उपहार नहीं, बल्कि प्यार देना है। वह अपनी सबसे कीमती चीज देगा, उसकी खुशियों और गमों को पाटेगा और दूसरों को उनके जीवित रहने का अहसास दिलाएगा।

बहुत लोगों की कोशिश रहती है कि लोग उन्हें प्यार करें और पुरुषों को इसमें काफी सफलता मिलती है। हमारे यहां 'प्यार किये जाने' का मतलब निकाला जाता है—वैसा व्यक्ति जो लोकप्रिय हो और जिसमें सेक्स अपील हो। महिलाएं आकर्षक दिखने की कोशिश करती हैं। स्त्री और पुरुष प्यारी रुचियां विकसित करते हैं, वे एक-दूसरे की मदद करते हैं।

चिकित्सा शास्त्रियों का विश्वास है कि पहली नजर में प्यार के लिए जिम्मेदार दिमाग की रासायनिक क्रियाएं हो सकती हैं। हम वैसे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं जो अच्छे हैं और जिनके साथ बातचीत किसी को पसंद आ और प्यार की लंबी जिंदगी के लिए उचित संप्रेषण का होना आवश्यक है।

प्रस्तुति : [illegible]

—डी. ७५३, सरस्वती विहार, दिल्ली-११[illegible]

रंग बदलनेवाला पानी

दक्षिण अफरीका में विश्व की एकमात्र ऐसी झील है जिसके पानी का रंग मौसम के अनुसार अपने आप बदलता रहता है। जून में उस झील के पानी का रंग हरा रहता है। अगस्त-सितम्बर में वह पानी दूध के समान गहरा सफेद हो जाता है। नवम्बर-दिसम्बर में वह पानी नीला हो जाता है। वर्ष के शेष महीनों में पानी साधारण बना रहता है। सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह है कि वह पानी हमेशा स्वच्छ व पारदर्शक रहता है तथा उसके गुणों में कभी कोई परिवर्तन नहीं होता।

—विनोद कुमार [illegible]

कादम्बि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन था जिसने हत्या का रहस्य सुलझाया ?

■ निधि जैन

आंध्र प्रदेश के पूर्वी तट पर एक छोटा-सा बंदरगाह—भीमलिपट्टनम है, जो विशाखापट्टनम से करीब २० कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित है ।

एक बार सर्दियों के दौरान कैसनाथ नामक सब-इंसपेक्टर की नियुक्ति भीमलिपट्टनम में हुई और उसे वही खाली बंगला रहने के लिए आवंटित किया गया । उस बंगले में पहली रात को जब कैसनाथ अपनी फाइलों में उलझा हुआ था तब करीब ११ बजे अचानक उसे अपने कमरे में किसी और के भी मौजूद होने का एहसास हुआ । उसने सर उठाकर देखा तो सफेद वस्त्रों में लिपटी एक छाया को पाया, वह छाया बहुत धीमी आवाज में बोली, "तुम्हारे माता-पिता स्वस्थ तथा सहृदय लोग हैं, उनके बारे में चिंतित होने की कोई वजह नहीं है । उनके यहां आने से पहले कृपया तुम वादा करो कि तुम मेरे अपने व्यक्तिगत मसले में मेरी मदद करोगे ।" इतना कहकर वह सफेद छाया हवा में लुप्त हो गयी । इस रहस्यमयी घटना से सब इंसपेक्टर बुरी तरह डर गया ।

अगली सुबह, वह छुट्टी की अर्जी देकर शहर चला गया और कभी लौटकर नहीं आया ।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक उच्च पदस्थ अंगरेज अफसर सरकारी काम से भीमलिपट्टनम आये, उस शहर के अंगरेज नागरिकों ने उसके सम्मान में एक रात्रि भोज तथा नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया, स्थान था वही बंगला । जब यह कार्यक्रम चल रहा था, तभी अचानक वही बरफीली श्वेत छाया फिर प्रगट हुई, उसने सभी को आश्वस्त करते हुए कहा—"मुझसे डरो मत, मैं आपकी दोस्त हूं ।" अंगरेज अफसर जो अंधविश्वासी कहकर अकसर भारतीयों का मजाक उड़ाया करते थे, सिर से पांव तक कांपने लगे और वहां से भाग गये ।

उस दिन के बाद से वह बंगला 'भूत बंगले' के नाम से जाना जाने लगा । बहुत से पुलिस अफसर आये और चले गये परंतु कोई भी उस भूत बंगले के रहस्य को न पा सका ।

अंत में एक जवान, साहसी, कर्मठ इंसपेक्टर मलिक की नियुक्ति भीमलिपट्टनम में इस भूत की कहानी के रहस्य को सुलझाने के उद्देश्य से हुई । वह अपने पूरे आत्म-विश्वास के साथ इस शहर में आया, पुराने अधिकारियों तथा नागरिकों से मिला तथा शहर में फैली अफवाहों की जानकारी प्राप्त की । उसने आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बैठक में अपना डेरा डाल दिया। उसने अपनी भरी हुई पिस्तौल मेज पर रख दी तथा उस सफेद पोशाकवाले भूत का इंतजार करने लगा। रात के करीब ११ बजे सफेद पोशाक में एक महिला भूत कमरे के कोने में प्रकट हुआ, एक क्षण को तो उस साहसी पुलिस अधिकारी का साहस भी डगमगा गया, वह पसीने से भीग गया, मगर कुछ क्षणों बाद ही उसने साहस बटोरकर अपनी पिस्तौल की तरफ हाथ बढ़ाने की कोशिश की।

भूत ने स्पष्ट आवाज में कहा—"मैं यहां अपनी एक व्यक्तिगत उलझन को सुलझाने के लिए तुम्हारी मदद मांगने आयी हूं, पिस्तौल पर से अपना हाथ हटा लो, यह मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। पिछले डरपोकों की तरह यहां से भागना मत। पता नहीं क्यों, मुझे लगता है तुम मेरी उलझन हल करने में सक्षम हो। मेरे पति के खिलाफ मेरे प्रतिशोध में मेरी मदद कर सकते हो जिसे मैं बहुत प्यार करती थी, पर उसने बर्बरतापूर्वक मुझे और मेरे बच्चे को गला घोंटकर मार डाला।"

उसने इंसपेक्टर को अपनी दुःखभरी कहानी सुनानी शुरू की—"शादी के पहले मेरा नाम बसंती था, मैं अपनी मां की इकलौती बेटी थी, मेरी मां एक वेश्या थी, इसलिए मैं तुम्हें अपने पिता का नाम नहीं बता सकती।" उसने कहानी जारी रखते हुए बताया—"मैंने अपनी सीनियर कैंब्रिज परीक्षा पास की—तुम मेरा व्यक्तिगत विवरण मेरे स्कूल से प्राप्त कर सकते हो। समय के साथ मैं एक सुंदर युवती में परिवर्तित हो गयी। मेरी ओर अनेक स्थानीय अमीर नवयुवक आकर्षित रहते। मैंने भिन्न-भिन्न प्रकार की पोशाक पहनना सीखा, लोग अकसर मेरी पोशाकों की प्रशंसा करते और कहते कि मैं बहुत सुंदर लगती हूं।" गरमी की एक सुहानी शाम, मैंने एक बहुत खूबसूरत गठीले जवान लड़के को एक सुंदर पोशाक में समुद्र तट के निकट टहलते देखा। मुझे पहली बार ही उसके प्रति आकर्षण हो गया। उसे भी मैं और मेरी पोशाक पसंद थी, कुछ दिन बाद उसने मुझसे दोस्ती का प्रस्ताव रखा। वास्तव में उसकी सुगठित देहयष्टि, सभ्य शिष्टाचार तथा बातूनीपन से मैं इतनी प्रभावित थी कि अगर उसने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखा होता, तो मैं उसी समय हामी भर देती, मगर मैंने उस पर ऐसा प्रगट नहीं होने दिया।

कुछ समय बाद उस नौजवान ने मुझसे शादी की इच्छा प्रकट की, मैंने उसे अपनी स्वीकृति दे दी। जब मां को इस निर्णय के बारे में बताया, तो उन्हें मेरा यह निर्णय पसंद नहीं आया। वह चाहती थी कि मैं भी उनके ही नक्शे कदम पर चलूं, जिससे मुझे सबसे ज्यादा नफरत थी। जितनी ज्यादा उन्होंने कोशिश की मुझे अपने-जैसा बनाने की, उतना ही मैं उनसे दूर होती गयी और उस नौजवान के करीब होती गयी, जो दिल्ली का एक अमीर व्यापारी था।

इस समय तक काफी रात बीत चुकी थी, इसलिए वह भूत पुलिस अफसर से अगले दिन फिर आने का वादा करके विलुप्त हो गयी। इंसपैक्टर ने उसका पूरा बयान एक कागज पर उतार लिया। अगली रात को जब उस इंसपैक्टर ने घर में प्रवेश किया, तो पाया कि भूत पहले से ही एक कोने में उपस्थित है जैसे वह उसके आने का इंतजार कर रही हो, अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

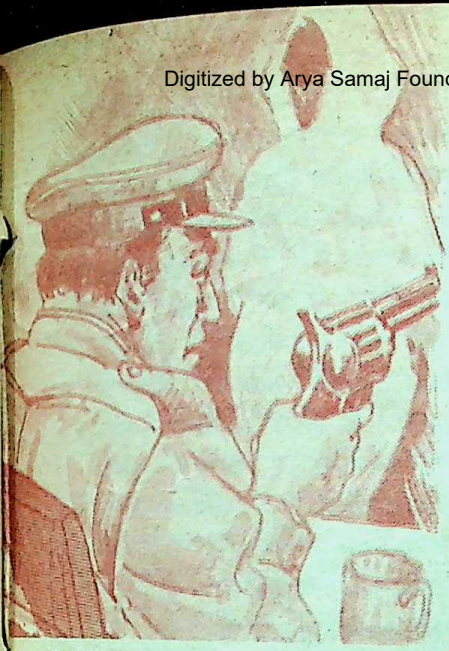

पिछली रात्रि की कहानी जारी रखते हुए उसने सुनाना शुरू किया—"मेरे पति का नाम नानाजी था। जिस इमारत में हम इस समय बैठे हैं वह उसी के द्वारा खरीदी तथा मुझे उपहार स्वरूप दी गयी थी। बार-बार मेरे द्वारा शादी की तथा मुझे उसके साथ रहने के लिए एक कानूनी आधार देने की मेरी प्रार्थना के बावजूद वह शादी स्थगित किये जा रहा था, उसकी पेशकश थी कि उसके अमीर पिता और उसकी पहली पत्नी दोनों शादी के विरुद्ध हैं और उसके पिता अपनी बहुत बड़ी जायदाद में से फूटी कौड़ी भी नहीं देंगे, यदि उसने मुझसे विवाह किया। मेरी मां तो पहले से ही इस विवाह के खिलाफ थी। काफी महीनों बाद नानाजी शादी के लिये तैयार हो गया तथा हमारी शादी को लखनऊ के उप-पंजीकरण अधिकारी द्वारा मान्य किया गया। चार महीने पश्चात जब मैंने अपने पति को उनके जल्दी ही पिता बन जाने की खुशखबरी दी, तो मुझे लगा वह इस खबर से खुश नहीं थे, मेरी मां को भी मेरा गर्भधारण करना पसंद नहीं था, उन्होंने मुझे गर्भपात करा लेने का परामर्श दिया। पर मैंने इस बात से साफ इनकार कर दिया।

"उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को मैं न सो सकी। पूरी रात रोते-रोते गुजार दी। करीब दो बजे मैंने दरवाजे पर एक दस्तक सुनी। जब मैंने दरवाजा खोला तो मैं आनंद से चकित थी, मेरे पति मुसकराते हुए बाहर खड़े थे। मैं इतनी खुश थी कि मैं उन्हें कसकर बांहों में भरे बिना न रह सकी, मैंने उन्हें कई बार चूमा और प्यार से घर के अंदर ले आयी, मुझे इसकी भनक भी न थी कि कितना भयावह दुर्भाग्य मेरा इंतजार कर रहा था। "अचानक वह मुझ पर झपटे, मैं गहरे सदमे तथा डर की स्थिति में थी। वह शिकारी चीते की तरह बन गये थे, उन्होंने अपने मजबूत हाथों से मेरी गरदन को पकड़ लिया और सख्ती से एक चाकू से मेरे गले पर वार किया। मैं चेतनाशून्य हो गयी, उन्होंने मुझे पलंग से नीचे फेंक दिया और एक तौलिया कसकर मेरी गरदन पर बांध दिया ताकि मैं और मेरे गर्भ में पल रहा बच्चा, बच न पाएं।"

इंसपेक्टर ने बीच में टोककर पूछा—"तुम्हारा मृत शरीर कहां है ?" भूत ने बताया—"तुम्हें मेरी लाश मेरे स्नानागार के फर्श के नीचे मिलेगी, यदि तुम खोदोगे तो तुम्हें मेरा कंकाल उन कपड़ों के साथ मिलेगा, जो मैंने मृत्यु के समय पहने हुए थे।" इसके बाद भूत ने एक गहरी दुःख भरी सांस ली। अब वह अपने को हलका महसूस कर रही थी।

कुछ क्षण बाद वह भूत फिर बोली—"महाशय मैं एक निष्कपट

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोली-भाली लड़की थी, बाद में मुझे पता चला मेरे पति के पिता बहुत पहले मर चुके थे तथा मेरे पति की पहले कोई शादी भी नहीं हुई थी। वह एक अमीर सैनिक था, जो अपनी खूबसूरत देहयष्टि, शिष्टतापूर्ण व्यवहार तथा बातूनीपन से भोली-भाली लड़कियों को शादी का झूठा सपना दिखाकर छलता था और बाद में उन्हें उनके भाग्य के सहारे छोड़ देता था।

"मैंने यहां आपसे पहले आनेवाले लोगों को अपनी दुःखभरी कहानी सुनाने की कोशिश की, मगर मेरे लिए यह बहुत आश्चर्य और निराशा की बात है कि वे सभी मेरी तरफ देखे बिना ही डरकर भाग गये। आज मैं अपनी दुःखभरी कथा कहने के बाद, अपने को मुक्त महसूस कर रही हूं। आप जब भी मेरी उपस्थिति चाहेंगे आप मेरे बारे में सिर्फ सोचें, मैं आपके सामने प्रगट हो जाऊंगी, मैं इस मुकदमे में आपकी सफलता की कामना करती हूं।" इतना कहकर वह हवा में विलुप्त हो गयी।

मलिक अपने उच्च अधिकारियों तथा विशाखापट्टनम के पुलिस सुपरिंटेंडेंट से मिला और भूत बंगले के भूत की करुण आपबीती के बारे में बताया। मलिक का वार्तालाप सुनने के बाद पुलिस सुपरिंटेंडेंट जो ब्रिटिश अफसर था—ने पूरे घटनाक्रम की गहन छानबीन करने तथा हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मलिक भीमलिपट्टनम लौट आया। अगले दिन वह स्थानीय न्यायाधीश तथा मुख्य नागरिकों के साथ भूत-बंगले में गया और स्नानागार खोला। जहां पर उसने पाया कि फर्श की टाइलें अव्यवस्थित थीं। टाइलें हटाकर खोदने के बाद सबको आश्चर्य से भर देनेवाला डरावना कंकाल पाया। कंकाल की गरदन पर एक तौलिया बंधा हुआ था। कंकाल की चिकित्सकीय जांच के बाद उसके स्त्री कंकाल होने की पुष्टि हुई तथा उसकी मृत्यु का कारण गला दबाकर दम घोंटना था। एक धोबी—जो कंकाल निकालते समय वहां उपस्थित था—ने इस बात की पुष्टि की कि कंकाल ने जो वस्त्र पहने हुए थे, वे बसंती के ही थे। पुलिस अफसर मलिक ने अब जांच को गंभीरतापूर्वक लिया। उस भूत बंगले की तलाशी लेने पर उसके नानाजी के द्वारा बसंती को लिखे गये कुछ पत्र प्राप्त हुए।

अथक प्रयत्नों के बाद आखिरकार मलिक नानाजी को दिल्ली में ढूंढ़ने में सफल हो गया। पर जब नानाजी से इस विषय में पूछताछ की गयी, तो उसने किसी बसंती नामक लड़की को जानने से इनकार कर दिया।

मलिक ने नानाजी तथा बसंती की शादी के प्रमाणपत्र की एक प्रति, नानाजी द्वारा बसंती को लिखे गये पत्रों तथा बसंती द्वारा नानाजी को लिखे पत्रों के आधार पर भारतीय दंड संहिता की धारा ३०२ के अंतर्गत, नानाजी के विरुद्ध एक मुकदमा दायर कर दिया।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान, बचाव पक्ष के वकील ने आक्षेप उठाया कि एक अदृश्य औरत के द्वारा किसी पुलिस अफसर के सामने इतना लंबा बयान देना असंभव है। पुलिस अफसर को बयान के नीचे उस औरत के हस्ताक्षर लेने चाहिए थे, जिसे उसने न्यायालय के सामने प्रमाणित दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया है। एक अहस्ताक्षरित बयान प्रामाणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्ष्य नहीं माना जा सकता । पुलिस अफसर को अपनी गलती का एहसास हुआ, उसने न्यायालय से स्थगन आदेश ले लिया ।

पुलिस अफसर दुःखी मन से रात्रि में जब भूत बंगले में पहुंचा, तो उसने पाया कि भूत पहले से कमरे में मौजूद है । उसे दिनभर की कार्रवाई के बारे में सब-कुछ पता था, भूत ने पुलिस अफसर से एक सफेद कागज तथा एक पैन मेज पर रखने को कहा और पुलिस अफसर के द्वारा कागज तथा पैन रखे जाने के बाद एक अदृश्य हाथ ने लिखना शुरू किया—"मैं शपथ लेकर लिख रही हूं कि इससे पहले पुलिस अफसर को दिया गया बयान मेरा था, यह सच है कि मैंने उस दस्तावेज पर अपने हस्ताक्षर नहीं किये थे, परंतु उसकी अब दोबारा जांच करने पर आप उसके नीचे मेरे हस्ताक्षर पाएंगे । जोकि न्यायाधीश के सुरक्षित संरक्षण में है ।"

जब भूत के द्वारा लिखा गया हस्ताक्षरित बयान न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, तो विपक्ष के वकील ने आक्षेप किया कि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि प्रस्तुत किया गया बयान व हस्ताक्षर भूत के ही हैं । पुलिस अधिकारी के आग्रह पर न्यायाधीश ने अपनी संरक्षण पेटिका से पूर्व प्रस्तुत बयान निकाले, तो पाया कि पूर्व बयान पर हस्ताक्षर थे । इस घटना ने न्यायालय में उपस्थित लोगों को विस्मित कर दिया । भोजनावकाश के लिए न्यायालय की कार्रवाई स्थगित कर दी गयी । जब पुलिस अफसर भूत बंगले में गया, तो उसे वहां एक तार मिला, जिसमें नानाजी को अपने बीमार पुत्र को देखने के लिए दिल्ली बुलाया गया था तथा

स्वर्ण आभूषणों की खरीद की कुछ रसीदें प्राप्त हुईं, जो नानाजी के द्वारा बसंती के लिए खरीदे थे । रात में भूत पुलिस अफसर मलिक के सपने में प्रगट हुआ और बताया कि वह उसके हस्ताक्षर अस्पताल के रेकॉर्ड से प्राप्त कर सकता है, जो उसने अपनी मां को अस्पताल में भरती कराते समय किये थे । जब संबंधित रेकॉर्ड प्राप्त किये गये तथा सभी हस्ताक्षर जांच के लिए संबंधित विशेषज्ञ के पास भेजे गये, तो विशेषज्ञ ने वे सभी हस्ताक्षर एक ही व्यक्ति के होने की पुष्टि की । इस पुष्टि के बाद नानाजी, बुरी तरह घबरा गया । उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया । न्यायाधीश ने उसे मृत्युदंड दिया ।

मलिक के साहस से ही इस नृशंस हत्या का रहस्य खुल सका, नहीं तो यह रहस्य स्नानागार के फर्श के नीचे ही दबा रह जाता और अपराधी स्वतंत्रतापूर्वक आराम का जीवन व्यतीत करता रहता ।

यह कहानी (जिस पर पाठक शायद विश्वास न करें) उस मुकदमे के सच्चे तथ्यों पर आधारित है, जो बहुत पहले लड़ा गया था और जिसका विवरण पुलिस गजट में प्रकाशित हुआ था ।

—बी-५/२६३ यमुना विहार,
दिल्ली-११००५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिविल सेवा परीक्षा : सफलता के सोपान : प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी सिविल सेवा परीक्षा में बैठते हैं, जिनमें से छह-सात सौ लड़कों के सिर पर ही सफलता का सेहरा बंधता है। इस परीक्षा में कोई यह दावा नहीं कर पाता कि वह सफल होगा ही। कई सामान्य स्तर के विद्यार्थी सफल होते देखे गये हैं, तो कई कुशाग्र विद्यार्थी असफल होते। आखिर इसका कारण क्या है ? वस्तुतः इसका कारण है, सिविल सेवा परीक्षा की विशेष तकनीक के ज्ञान का होना। जो इस परीक्षा की तकनीक एक बार समझ लेता है, वह सफल हो जाता है, और न समझनेवाला असफल।

आखिर क्या है सिविल सेवा परीक्षा की तकनीक, और क्या है उसकी सफलता का राज ? डॉ. विजय अग्रवाल ने इन सभी प्रश्नों पर इस पुस्तक में व्यापक रूप से विचार किया है। इसमें उन्होंने यह बताया है कि किस प्रकार प्रतियोगी परीक्षा सिविल सेवा परीक्षा से भिन्न होती है, किस प्रकार से परीक्षा की योजना बनानी चाहिए, विषय कैसे पढ़े जाने चाहिए, उत्तर कैसे लिखे जाने चाहिए तथा साक्षात्कार की तैयारी कैसे की जानी चाहिए।

सिविल सेवा परीक्षा के तीन स्तर होते हैं—प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार। इन तीनों स्तरों की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को लेखक ने विस्तार के साथ व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया है। इतना ही नहीं, बल्कि सिविल सेवा परीक्षा के जो मुख्य विषय होते हैं, उनकी तैयारी के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने यहां तक बताया है कि परीक्षा में प्रश्न-पत्र किस प्रकार हल किये जाने चाहिए।

इसके साथ ही साथ सिविल सेवा परीक्षा की भाषा को लेकर, विषय को लेकर तथा अपनी शैक्षणिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर परीक्षार्थियों के मन में अनेक प्रकार के भ्रम होते हैं। लेखक ने इन भ्रमों का निवारण यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

पुस्तक की भाषा अत्यंत रोचक और प्रभावशाली है। चूंकि लेखक के पास स्वयं परीक्षा का व्यापक अनुभव रहा है, इसलिए पुस्तक अत्यंत व्यावहारिक स्तर पर लिखी गयी है, जो किसी भी प्रतियोगी परीक्षार्थी के मार्गदर्शन के लिए 'लाईट हाऊस' की तरह

प्रकाशक : किताब घर, २४ अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली ; मूल्य : ६७ रुपये

—पवन

श्री साईंदास बाबाजी एक आध्यात्मिक यात्रा : शीर्षक पुस्तक के १७वें अध्याय को पढ़ते हुए अकस्मात स्वामी विवेकानंद के

कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद आते हैं—"गुरु को ब्रह्म जानो ।"

आध्यात्मिकता के स्रोत भारत की इस पवित्र भूमि पर समय-समय पर अनेक जाज्वल्यमान नक्षत्रों ने अवतरित होकर मनुष्य को आध्यात्मिक कर्मयोग का रास्ता दिखाया है । इस श्रृंखला में शीरडी साईं जी की प्रेरणा प्राप्त आध्यात्मिक युगचेता बाबा साईंदास जी शरीर के लुभावनेपन और आकर्षण में फंसे पड़े, पश्चिमी जीवन-मूल्यों के तरफ भाग रहे मनुष्य को बताते हैं कि साईं उसी से प्रेम करता है, जो मनुष्य अपने उत्तरदायित्वों को ईमानदारी से वहन करते हुए ईश्वर से प्रेम करता है । मनुष्य को कर्मयोगी बनने की ओर प्रेरित करनेवाली श्री साईंदास बाबा जी की सीखों को लेखक ने बखूबी सहज और सरल भाषा में पुस्तक के अट्ठारह अध्यायों में संकलित किया है ।

लेखक के दृष्टिकोण से भक्ति मार्ग में संवेदना का विशेष महत्त्व है । जब संवेदना जाग्रत होगी तो प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित होगा और प्रेम के प्रकाश से आध्यात्म, प्रभु प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता, क्षमा, दया, करुणा, साधना, उपासना, आराधना सभी सुगम हो जाएंगे । आज आवश्यकता है मनुष्य के हृदय से निष्ठुरता दूर करने की जो मनुष्य को दिन-प्रतिदिन संकीर्ण, स्वार्थी और पशु बना रही है । लेखक के अनुसार अनेक कार्य-कलेवरों में बिखरी हुई चेतना को एक सत्ता के रूप में देखने की दृष्टि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' में परिवर्तित होती है और परिवार की सीमा से ऊपर उठ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव आदर्श बन आचार, विचार और व्यवहार से प्रदर्शित होता है ।

पुस्तक पढ़ने के पश्चात् अनुभूति होती है कि कैसे चेतना की बहुत गहरी परतों पर पड़ा हुआ एक बहुत नगण्य बीज एक भरा-पूरा, सब तरफ शाखाओं को फैलाये हुए, परोपकारी वृक्ष बन जाता है । ऐसा ही जीवन है युग-चेता श्री साईंदास बाबा जी का, जो 'सर्वे जनास्सुखिनो भवंतु' के लिए इस धरती पर अवतरित हुए हैं ।

लेखक : डॉ. शंभूनाथ वर्मा ; प्रकाशक : कोणार्क पबिल्शर्स प्रा. लि., ए-१४९, मेन विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली ।

—भूपेंद्र सिंह कटारिया

शेक्सपियर का श्राद्ध : गुजराती हास्य-व्यंग्य कथाएं—१८८५ : साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में लिखनेवाली हिंदी की सुपरिचित लेखिका डॉ. भाग रानी कालरा ने इस पुस्तक द्वारा गुजराती साहित्य की खूबियों को हिंदी-पाठकों तक पहुंचाने का स्तुत्य प्रयास किया है । श्री बकुल त्रिपाठी गुजराती भाषा के प्रतिनिधि हास्य लेखक हैं । उनकी श्रेष्ठ रचनाओं का परिश्रमपूर्वक चयन करके पच्चीस रचनाओं का संकलन प्रस्तुत संग्रह में किया गया है ।

इस हास्य-व्यंग्य संग्रह की प्रत्येक रचना स्वतंत्र एवं विविधता लिए हुए है । विषयों की विविधता पर दृष्टि डालें तो इसमें पत्रकारत्व, राजनीति, कानाफूसी, छोटी-सी कटोरी को लेकर रहस्य कथा उपस्थित करना, गौरीव्रत की कथा में डिस्को गरबा, मस्को गरबा द्वारा भक्तिभाव का बदलता रूप दिखाना आदि समाविष्ट हैं । पंचतंत्र की कथाओं का वाक्छल नया रूप लेकर उपस्थित हुआ है । 'विनोद' सहज, शिष्ट तथा मार्मिक है, हास्य निर्मल, निर्दोष तथा निर्दंश है एवं कटाक्ष कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

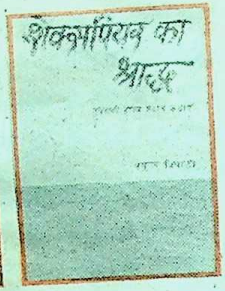

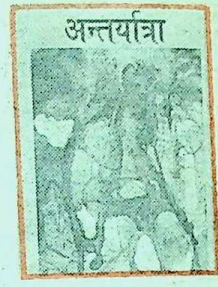

व्यक्तिगत नहीं रहा ।

प्रस्तुत संग्रह का अनुवाद ऐसी विदग्धतापूर्ण ढंग से किया गया है कि प्रथम बार पढ़ते ही भाव हृदयंगम हो जाते हैं ।

प्रकाशक : हिंदी साहित्य अकादमी, 'अभिषेक' तीसरी मंजिल सेक्टर-११, गांधी नगर ; (गुजरात) मूल्य : ६४ रुपये ।

—अमृत ग्रोवर

तब होता है ध्यान का जन्म : ध्यान भारतीय संस्कृति एवं जीवन शैली का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है । आचार्य महाप्रज्ञ की इस नवीन कृति में जीवन के हर पक्ष का स्पर्श है । समस्याओं का समाधान ध्यान के जरिए करने की दृष्टि से यह पुस्तक उपयोगी है । लेखक ने बहुत ही सहज एवं सरल ढंग से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए ध्यान की विधियों एवं प्रयोगों की विवेचना की है ।

पुस्तक में २२ लेखों का संकलन है, जिनमें आज की प्रमुख समस्याओं का ध्यान के माध्यम से समाधान दिया गया है । समस्या चाहे पर्यावरण की हो या नशे की, समस्या चाहे तनाव की हो या आवेग की । प्रश्न चाहे सामाजिक समस्या का हो या मानवीय संबंधों का, आज का मनुष्य इस पुस्तक की आवश्यकता और इसका महत्व जरूर पहचानेगा ।

यह पुस्तक समग्र पृष्ठभूमि में ध्यान के महत्त्व को उजागर करती है । असत् से सत् की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर जाएं, इसके लिए चित्त की शुद्धि जरूरी है और चित्त की शुद्धि के लिए ध्यान जरूरी है । जो लोग ध्यान के बारे में कुछ भी नहीं जानते, वे भी यह पुस्तक हाथ में उठाकर जो मन को भाये, वह पढ़ें और ध्यान की गहराई में सहजता से जाने का अभ्यास करें । यह किताब धर्म के जीवित/प्रायोगिक स्वरूप का उदाहरण है । आचार्य महाप्रज्ञ ने इस गहन एवं आत्मिक विषय को सरल एवं सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है । यह किताब भीतर से ही नहीं, बाहर से भी सुंदर है । पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है ।

प्रकाशक : जैन विश्व भारती, पो.—लाडनूं (राज.) ; मूल्य : २५ रुपये ।

—ललित

अंतर्यात्रा : हिमालय के रमणीय स्थल कौसानी पर श्री सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं का सृजन किया था । लेखक ने मानस मंथन से संजोया उपन्यास इसी भूमि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा है। जीवन के परिवेश में पात्रों एवं घटनाओं का सहभागी हो जाना सदा से होता आ रहा है, इन्हीं के साथ मिलकर उपन्यास का ताना-बाना अपनी लेखनी से रंगा है। लेखक के हृदय की तरह पात्र भी संवेदनशील बन गये हैं। वातावरण की मादकता ने अपनी रंगोली इस तरह बिखेरी है कि पाठक को उपन्यास चलचित्र की तरह अपने सामने दिखायी देता है।

समय के साथ राजनीतिक स्वार्थ एवं कुटिलता आज के गांव-गांव में इतनी व्यापक रूप से पहुंची है कि पाठक को इसका परिवेश शब्दों में दिखायी देता है। उपन्यास की भाषा सरल और सहज है। आवरण सुंदर और पुस्तक की छपाई आकर्षक है।

लेखक : श्री अमरनाथ शुक्ल ; प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, दरियागंज, नयी दिल्ली ; मूल्य : १२५ रुपये।

—डॉ. एम. एस. अग्रवाल

गोबिंद गाथा : भगवती शरण मिश्र का प्रस्तुत उपन्यास 'गोबिंद गाथा' पूर्व लिखित उपन्यास 'के लागू पांव' की दूसरी और अंतिम कड़ी है। लेकिन, कथानक की दृष्टि से यह एक स्वतंत्र रचना है। सिखों के दसवें और अंतिम गुरु की तरुणावस्था से निर्वाण तक के जीवन को समेटे यह गाथा जीवनी-परक उपन्यासों का उत्तम नमूना है। उपन्यासकार ने आकर्षक शैली में गुरु गोविंद सिंह जी के जीवन के विभिन्न, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक आयामों को इस कथा में समेटा है। ऐसे प्रसंगों में उपन्यासकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती इतिहास और कल्पना के समन्वय को लेकर उपस्थित होती है। उपन्यासकार ने बड़ी कुशलता से इतिहास में औपन्यासिकता की मांग पूरी की है। 'गोबिंद गाथा' के वे अंश, जिनमें गुरु गोबिंद और राम राय के बीच उत्तराधिकार-संबंधी संवाद हैं, इसका प्रमाण हैं। ऐसे स्थल उपन्यास में दोहरी भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे कथानक को गति प्रदान करने के साथ-साथ उपन्यास-नायक के चरित्र की भव्यता को भी स्पष्ट करते हैं।

प्रकाशक : राजपाल एंड संस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली ; मूल्य : २०० रुपये।

नारी तेरे रूप अनेक : 'पति परमेश्वर' और 'अबला आज की' के बाद भगवती प्रसाद वाजपेयी 'अनूप' का नया उपन्यास 'नारी तेरे रूप अनेक' भी समाज के उस अंग को प्रस्तुत करता है, जो आदर्शों पर टिका हुआ है। ऐतिहासिक शैली में लिखे गये इस उपन्यास में लेखक ने धार्मिक दुराग्रहों से मुक्त होकर अपने पात्रों को बेहद मानवीय रूप में प्रस्तुत किया है। डॉ. इरफाना, डॉ. लक्ष्मी, विवेक, गोल्डी केवल इसी रूप में जनसेवा का कार्य करते दिखायी देते हैं। उपन्यासकार ने समाज में व्याप्त चिकित्सा-संबंधी कठिनाइयों और कुमारी माताओं और उनके शिशुओं से जुड़ी समस्याओं को उठाते हुए भी, उनका यथार्थ के धरातल पर चित्रण ही नहीं किया वरन् अपने पात्रों के क्रिया-व्यवहारों से उस आदर्श को प्रस्तुत किया है, जिसे अपनाकर समाज का चेहरा ठीक किया जा सकता है।

प्रकाशक : एम. एन. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, डब्लयू-११२, ग्रेटर कैलाश-१, नयी दिल्ली ; मूल्य : ९० रुपये।

डॉ. सुरेश धींगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक समाचार

निराला आंचलिक साहित्य समारोह

भोपाल । मध्यप्रदेश लेखक संघ, (भोपाल) की होशंगाबाद जिला इकाई के तत्त्वावधान में और युवा लेखक डॉ. गोपाल नारायण आवटे के संयोजन में एक ऐतिहासिक और निराला आंचलिक साहित्य समारोह सतपुड़ा वनांचल और नर्मदा कछार में संपन्न हुआ जिसमें मध्यप्रदेश भर से लगभग १०० रचनाकारों ने भाग लिया । समारोह का उद्घाटन प्रो. अक्षय कुमार जैन ने और अध्यक्षता की पत्रकार और लेखक अशोक मिश्र तरंगी ने की । तदुपरांत एक विचारोत्तेजक गोष्ठी 'युवा रचनाकारों की समस्याएं और उनके समाधान' विषय पर युवा लेखक श्री वेद हिमांशु की अध्यक्षता में हुई तथा मध्यप्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक इकाई की ओर से युवा लेखक डॉ. गोपाल आवटे को शॉल और श्रीफल भेंट कर अभिनंदन किया गया ।

इस समारोह में प्रदेशभर के जिन रचनाकारों ने भागीदारी की, उनमें प्रो. अक्षय कुमार जैन, कुसुम जैन, अशोक तरंगी, लक्ष्मीकांत शुक्ला, बटुक चतुर्वेदी, कैलाश जायसवाल, राजेश चंचल, राजेश उपाध्याय, ऋषी ऋंगारी, रघुवीर पतझड़, अशोक निर्मल, अशोक सक्सेना अनुज, अरविंद चतुर्वेदी (सभी भोपाल), प्रो. राधेश्याम शांडिल्य (हरदा), डॉ. गोपीनाथ कालभोर (खंडवा), श्यामसुंदर गौतम (सतना), यूसूफ परवेज (सीहोर), दर्द होशंगाबादी तथा राम चरण [illegible] (बैतूल), वेद हिमांशु (शुजालपुर), द्वारका [illegible] हृदय (विदिशा), रामकिशन चौरसिया ([illegible]) प्रमुख थे ।

— बटुक [illegible]

साहित्य समारोह का आयोजन

साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध अमर भारती संस्था गाजियाबाद द्वारा नयी दिल्ली स्थित गांधी [illegible] प्रतिष्ठान, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग में [illegible] 'साहित्य-समारोह' का आयोजन किया गया। समारोह तीन चरणों में संपन्न हुआ जिसमें लोकार्पण, साहित्यकारों का सम्मान और [illegible] सम्मेलन आयोजित किया गया । इस [illegible] दो कृतियों, 'भाव लहरियां' के बांग्ला [illegible] 'अभिव्यक्ति' तथा 'कविता सहयात्रा' का लोकार्पण समारोह के मुख्य अतिथि श्री माधवकांत मिश्र, संपादक 'कुबेर टाइम्स' [illegible] किया । समाज सेविका, शिक्षाविद् एवं [illegible] कवयित्री श्रीमती लीला मंडल के कविता [illegible] 'भाव लहरियां' का 'अभिव्यक्ति' के [illegible] अनुवाद युवा कवयित्री सुश्री लेखा [illegible] किया है और दूसरी कृति 'कविता सह[illegible]' के कोने-कोने से चुने हुए रचनाकारों की [illegible] का संकलन है जिसका संपादन डॉ. [illegible] किया है । 'अमर भारती संस्थान' के [illegible] धनंजय सिंह के अनुसार इसका प्रकाशन [illegible] युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लाने के उद्देश्य से संस्थान ने किया है ।

इस अवसर पर जिन साहित्यकारों का सम्मान किया गया वे हैं— सर्वश्री मञ्जुष दासगुप्ता, श्रीमंत सिकदार, अरुण चक्रवर्ती (तीनों बांग्ला) तथा माधवकांत मिश्र, डॉ. अशोक लव एवं साधना चौधरी (हिंदी) ।

समारोह के तीसरे चरण में आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री श्रीमंत सिकदार, लेखा चंद्रा संध्या, प्रभा किरण जैन, महेन्द्र शर्मा, सतीश सागर, राजगोपाल सिंह, दीपक गुप्ता, रेखा राजवंशी, निर्मला कुमार, डॉ. अशोक लव और डॉ. धनंजय सिंह ने अपनी प्रभावशाली कविताओं से वहां उपस्थित विशाल जन-समूह को मंत्रमुग्ध कर दिया । समारोह का संचालन श्री बलराम दुबे ने किया । कार्यक्रम में गाजियाबाद कादम्बिनी क्लब के संयोजक श्री महेन्द्र पाल शर्मा भी उपस्थित थे । संस्थान की महासचिव सुश्री वत्सला शर्मा द्वारा सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ । डॉ. धनंजय सिंह ने अंत में अपना धन्यवाद ज्ञापन देकर इस पावन साहित्यिक यज्ञ में पूर्णाहुति डाली ।

भगवान अटलानी को मीरां पुरस्कार

जयपुर । राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान मीरां पुरस्कार जयपुर के महारानी कॉलेज सभागार में हिंदी व सिंधी के प्रसिद्ध लेखक भगवान अटलानी को दिया गया । वरिष्ठ लेखक डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित ने उन्हें इक्कीस हजार रुपये का चैक और अकादमी द्वारा प्रकाशित चुनी हुई पुस्तकों का सेट भेंट किया ! राजस्थान के शिक्षा मंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कार्यक्रम की

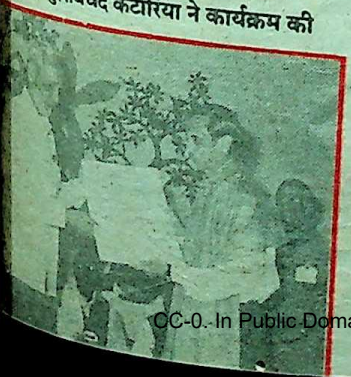

अध्यक्षता की । इस अवसर पर विभिन्न विधाओं के लिए छह लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया ।

नाटक मंचन

पटना में लगभग ढाई दशक के अंतराल पर विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर बिहार आर्ट थियेटर द्वारा कृष्ण नंदन त्रिवेदी के संस्कृत नाटक 'मानव : दानवश्च' का मंचन किया गया ।

डॉ. सिंघवी द्वारा लंदन विश्वविद्यालय में प्रतिमा का अनावरण

लंदन । ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने हाल ही में लंदन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑव ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज (सोआस) के प्रांगण में भारत के महान संत-विचारक एवं कवि-मनीषी थिरुवल्लुवर की कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया ।

स्कूल ऑव ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज के शासी बोर्ड के अध्यक्ष सर राबर्ट वेड गेरी ने डॉ. सिंघवी द्वारा इंडो-ब्रिटिश संबंधों के क्षेत्र में अपने अपूर्व योगदान से एक नया कीर्तिमान स्थापित करने के लिए उन्हें बधाई दी ।

डॉ. सिंघवी ने सोआस के प्रांगण में तमिल के महान संत कवि थिरुवल्लुवर की प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा कि सपने देखना तो उनकी एक आदत है किंतु यह उनका सौभाग्य रहा है कि उनके सपने साकार भी हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मासिक बैठक

रांची । 'रांची जिला कादम्बिनी क्लब' की पिछले दिनों मासिक बैठक सह कवि-गोष्ठी संपन्न हुई । बैठक में श्री निर्मल मिलिंद, नरेश बंका, राजीव थेपड़ा, आलोक प्रियदर्शी, अशोक अंचल, आलोक आदित्य, दिलीप ठाकुर, मदन गुप्ता, राजेश कुमार, पुरुषोत्तम प्रसाद एवं रेहाना अली, मुक्ति शाहदेव आदि ने भाग लिया । उक्त अवसर पर क्लब द्वारा कविवर गंगा प्रसाद कौशल की स्मृति में वार्षिक काव्य प्रतियोगिता के आयोजन का निर्णय लिया गया ।

कवि-गोष्ठी संपन्न

शिवहर । कादम्बिनी क्लब तथा दिनकर साहित्य परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में अर्चना विकास विद्यालय के सभागार में कविवर गोपालसिंह नेपाली की पुण्य तिथि के अवसर पर विचार-गोष्ठी सह कवि गोष्ठी आयोजित की गयी । जिसमें जिले भर के अधिकांश वक्ताओं तथा कवियों ने भाग लिया । गोष्ठी की अध्यक्षता आकाशवाणी कलाकार श्री चंद्रशेखर विकल ने की जबकि संचालन साहित्यकार डॉ. सुभाष गुप्त ने किया । इस अवसर पर क्लब के संयोजक अधिवक्ता ओमप्रकाश मिश्र ने समाज में साहित्यकार की भूमिका पर व्यापक प्रकाश डाला ।

जिन वक्ताओं ने गोपालसिंह नेपाली के व्यक्तित्त्व तथा कृतित्त्व पर व्यापक प्रकाश डाला उनमें श्री सीताराम सिंह, चंदेश्वर प्रसाद सिंह, रामस्वरूप प्रसाद, जयप्रकाश मिश्र तथा अरविंद कुमार झा प्रमुख थे ।

गोष्ठी के दूसरे सत्र में जिन कवियों ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया उनमें श्री मदन साहित्य भूषण, जयप्रकाश मिश्र, डॉ. लक्ष्मीनारायण पांडेय, रामकिशोर सिंह 'किशोर', बलराम भूषण, नवल निराला, राकेश रंजन, मुरलीधर श्रीवास्तव तथा अजय कुमार आदि प्रमुख थे । गोष्ठी का समापन श्री ताराकांत [illegible] धन्यवाद ज्ञापन से हुआ ।

'वसंत काव्य-संगोष्ठी' का आ[illegible]

पटना । 'कादम्बिनी कल्ब' के तत्त्वाव[illegible] इंदिरा नगर स्थित साहित्य-प्रेमी चित्तरंजन [illegible] निवास 'सीता-सदन' में 'वसंत-काव्य गो[illegible] आयोजन किया गया । संगोष्ठी की अध्य[illegible] प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं कवि परेश सिन्हा ने [illegible] संचालन युवा कवि एवं पत्रकार आनंद [illegible] किया । इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि [illegible] सहायक डाक महाध्यक्ष श्री अनिल कुमार [illegible] उपस्थित थे ।

आरंभ में क्लब के संयोजक डॉ. [illegible] ने स्वागत-भाषण करते हुए भारतीय हिंदी [illegible] परंपरा में वसंत के प्रभाव का प्रतिपादन [illegible] ऋतुराज वसंत के विभिन्न रंगों की रागा[illegible] अभिव्यक्ति तथा चैत एवं प्रेम के पावक [illegible] जुड़ी कविताओं के द्वारा जिन कवियों ने [illegible] संख्या में उपस्थित श्रोताओं को रस-सि[illegible] उनमें सर्वश्री विशुद्धानंद, राजकुमार प्रेमी [illegible] शिवनारायण, रुवी भूषण, हलधर [illegible] शर्मा, आनंद रस्तोगी, जनार्दन मिश्र, [illegible] प्रमुख थे । चित्तरंजन सिंह के धन्यवाद [illegible] साथ ही इस सारस्वत वसंत-काव्य गो[illegible] समापन हुआ ।

परिचयात्मक काव्य-गोष्ठी

जबलपुर । गत दिवस कादम्बिनी [illegible] जबलपुर की परिचयात्मक काव्य-गो[illegible] श्री रवि प्रधान के संयोजन एवं डॉ. [illegible] शकुंतला चौधरी की अध्यक्षता, [illegible] सेवी श्री लक्ष्मीनारायण पाठक के [illegible] में तथा वरिष्ठ रंगकर्मी एवं साहित्य[illegible] 'स्नेहिल' के निवास स्थान में संपन्न [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी के प्रथम चरण में अतिथियों का स्वागत श्रीमती संध्या बैरागी, डॉ. डी. सी. यादव, सोनू पाहूजा, श्रीमती कांता सोठा, एम. पी. उपाध्याय एवं श्री पी. डी. दीक्षित आदि ने किया । तत्पश्चात क्लब के संयोजक श्री रवि प्रधान ने कादम्बिनी क्लब के उद्देश्य एवं परिचयात्मक प्रारूप विषय पर चर्चा की । उक्त चर्चा में बैरागी 'स्नेहिल' आनंद कृष्ण, डॉ. डी. सी. यादव, संजय पिल्ले आदि ने भाग लिया ।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में काव्य-गोष्ठी शायर इरफान झांस्वी एवं श्री सूरज राय 'सूरज' के संचालन में प्रारंभ हुई, जिसमें युवा शायर सूरज राय 'सूरज'—

गर देखना चाहते हो मेरी उड़ान को
और ऊंचा कर दो आसमान को

जाने-माने व्यंग्यकार श्री नरेंद्र शर्मा, कानपुर की सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. आशा शुक्ला, डॉ. शकुंतला चौधरी, बैरागी 'स्नेहिल', युवा कवि बसंत मिश्रा 'बसंत', श्री उत्पल 'पलक', शायर जनाब सबाबिलग्रामी, आशुतोष आशर, जनार्दन शुक्ल तथा कवयित्री कुमारी प्रीति दुबे ने काव्य पाठ किया ।

इसी क्रम में युवा कवि राजेश पाठक 'प्रवीण', सुनील दुबे, संजय [illegible] सिंह 'अनुरागी', आनंद [illegible] पाठक, राजेन्द्र 'रतन', अनिल [illegible] बडराया 'प्रश', प्रदीप गुमास्ता, [illegible] 'आलूचमन', प्रकाश जबलपुरी, चंद्रकांत 'कमल' आदि की सशक्त रचनाओं ने भी गोष्ठी को ऊंचाइयां प्रदान कीं । कार्यक्रम के अंत में संयोजक श्री रवि प्रधान एवं श्रीमती संध्या बैरागी ने आभार व्यक्त किया ।

संगोष्ठी का आयोजन

लखीमपुर खीरी । 'कादम्बिनी क्लब' अनुरंजिनी, हिंदी साहित्य परिषद तथा संस्कार भारती के संयुक्त तत्त्वावधान में एक संगोष्ठी यहां विलोबी सभागार में हुई । संगोष्ठी की अध्यक्षता पं. सालिगराम मिश्र ने की । संगोष्ठी में प्रदेशीय हिंदी साहित्य परिषद के अध्यक्ष अवधेश शुक्ल, परियोजना निदेशक श्री सूर्य प्रसाद शुक्ल, महेश जायसवाल, पत्रकार नंदकुमार मिश्र, अजय शर्मा हयात, अरविंद शेखर, सरोज दीक्षित ने अपने विचार व्यक्त किये । संगोष्ठी का संचालन डॉ. निश्छल ने किया ।

गोष्ठी संपन्न

साईंखेड़ा (नरसिंहपुर) । 'कादम्बिनी क्लब' साईंखेड़ा की जनवरी एवं फरवरी माह की संयुक्त मासिक गोष्ठी पं. नरहरिदत्त बसेड़िया की अध्यक्षता में आयोजित की गयी ।

गोष्ठी में कादम्बिनी में छपी रचनाओं पर समीक्षा की गयी । अंत में क्लब के सदस्य श्री पं. नरहरिदत्त बसेड़िया, शेख जफर (शिक्षक), संजय गुप्ता, वेणीशंकर पटैल (संयोजक), संजीव सोनी, शिवकुमार शर्मा, नीरज श्रीवास्तव, मुकेश साहू, भानुप्रताप राजपूत, अजयशंकर तिवारी, अशोक विश्वकर्मा, रामसिंह पटैल, गोपाल साहू ने रचना-पाठ किया । गोष्ठी में श्री बीरेंद्र सिंह राजपूत (व्याख्याता), महेंद्र राजपूत, कृष्णकांत राजौरिया, वंशराज पटैल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ति-२०१

बोलो तो

प्रथम पुरस्कार

ओ एकाकी बैठ ठूंठ पर किस चिंता में डूबे हो
क्या जीवन के राग-रंग से, यौवन में ही ऊबे हो
अगर नहीं ये बात, तो फिर गाओ,
मधुरस घोलो तो
क्यों उदास-गुमसुम बैठे हो,
ओ वनपांसी, बोलो तो

—राम स्वरूप मयूरेश

ग्राम—[illegible], पो.—कुरता,
[illegible]
[illegible] (बिहार)

द्वितीय पुरस्कार

बड़े दिनों के बाद हमारे आंगन आये हो
प्यासे हो या पीहर का संदेश लाये हो
गुमसुम क्यों हो, भेद जरा यह खोलो तो
उड़ने से पहले कागा कुछ बोलो तो

—वंदना

सम्राट चौक तरामा टोली
पूर्णिया—८५४३०१ (बिहार)

तृतीय पुरस्कार

हार गये हम पंथ निहारते
व्यथा विरह की तोलो तो
गिनते-गिनते शुभ शकुन उबाये
इत-उत यूं मत डोलो तो
निष्ठुर प्रियतम दूर बसे रे
अंतर के पट खोलो तो
पी मेरे कब घर आयेंगे
कागा ! मुझसे बोलो तो

—प्रियंवदा [illegible]

द्वारा—[illegible]
[illegible]
पो.—[illegible]
जिला—बर्दवान (प. बंगाल)—[illegible]

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस [illegible]
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

भटकती आत्माओं
को मोक्ष

मेरे राह चलते-चलते
पायल खनकते हैं ।

- प्रथम मानस शब्दकोष मूल सहित
- एक अनूठा संदर्भ ग्रंथ
- प्रवचन सम्बंधी विशेषज्ञों के लिए वरदान
- एक सार्थक एवं आदर्श उपहार ग्रंथ

सम्पूर्ण राशि मनी-आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें

डी.के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3261465, 3278368, फैक्स : 326-4368

TRENDS 2466.95

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाद व सुगन्ध में आज भी सर्वश्रेष्ठ

रत्ना ब्राण्ड

ज़ाफ़रानी पत्ती

भारत में पहली बार
होलोग्राफिक
50 ग्रा० व 10 ग्रा० के पाउच में

...से हो या पीहर ...
...पुष्पम क्यों हो, भेद जरा यह खो...
उड़ने से पहले कागा कुछ बोलो तो

—वंदना

सम्राट चौक तमा टोली
पूर्णियां—८५४३०१ (बिहार)

जिला—बर्दवान (प. बंगाल)

द्वि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १४...
कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन, मनन एवं श्रवण का
एक सहज एवं सर्वग्राही संस्करण

श्रीरामचरितमानस

सचित्र शब्दकोष
अवधी-हिन्दी
एवं
मूल पाठ
अनुक्रमणिका संहित

रामचरित मानस शब्दकोष
518 पृष्ठ
साइज 22.50 x 27.50 से.मी.
350 रेखाचित्र

श्री रामचरित मानस
1153 पृष्ठ
साइज 13.50 x 24.00 से.मी.
8 रंगीन चित्र

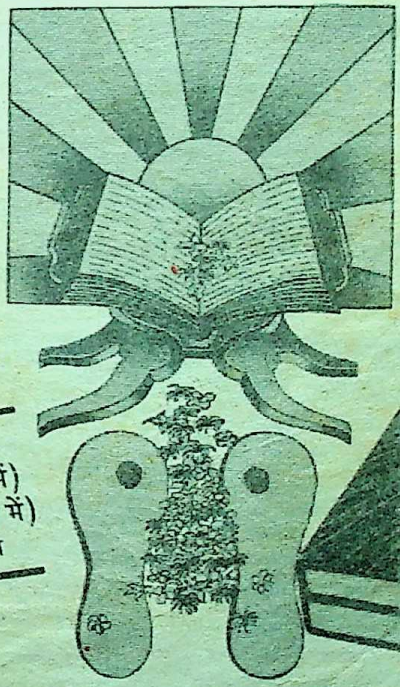

संस्थागत
एवं सामूहिक
खरीद पर आकर्षक
उपहार योजना—
"10 प्रतियों पर
एक प्रति मुफ्त"

आमंत्रण मूल्य
मात्र रु. 1100/- (भारत में)
U.S. $ 74.99 (अन्य देशों में)
पोस्टेज एवं पैकिंग मुफ्त

- प्रथम मानस शब्दकोष मूल सहित
- एक अनूठा संदर्भ ग्रंथ
- प्रवचन सम्बंधी विशेषज्ञों के लिए वरदान
- एक सार्थक एवं आदर्श उपहार ग्रंथ

सम्पूर्ण राशि मनी-आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें
डी.के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.
1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002 फोन : 3261465, 3278368 फैक्स : 326-4368

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-श्रेष्ठ पुस्तक पढ़ें

डॉ. विजय शंकर राय

अब एक ही भ्रूण से चार-चार बच्चे पैदा किये जा रहे हैं तथा मानव-अश्व जैसे नवीन प्राणियों का निर्माण हो चुका है। उस लीलाधारी की सूक्ष्म-जगत की कार्ययोजना को देखकर बड़े-बड़े विद्वान व वैज्ञानिक भी अचंभित रह गयेहैं।

इसलिये व्यक्ति, इस सृष्टि तथा ब्रह्म को आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में समझने हेतु अधुनातन ज्ञान के मनीषी, ज्ञानरत्न, डॉ. विजय शंकर राय की विश्व के ज्ञान योगियों द्वारा, बहुप्रशंसित एवं अधुनातन युग की नवीन विश्व श्रेष्ठ कृति **"आधुनिक विज्ञान, ब्रह्म व मानव-अश्व" कीमत 250/- या 40 डालर. (2) "आधुनिक विज्ञान व गीता का ब्रह्म" (हिन्दी) कीमत 100/- या 20 डालर. (3) "Modern Science and GITA'S Brahma" Price Rs. 150/- or Dollar 30.**

नोटः- पुस्तक विक्रेताओं को विशेष छूट।

उपरोक्त पुस्तकों हेतु लिखेंः-

ज्ञान-विज्ञान शोध संस्थान

अभिनव काम्प्लेक्स, जयप्रकाश नगर, 1119
अधारताल वार्ड, जबलपुर, म.प्र. पिन-482 004

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्द पॉकेट बुक्स

'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्य बनकर
33% छूट पर घर बैठे श्रेष्ठ साहित्य लीजिए

महिला लेखिकाओं का कथा-संसार

● कस्तूरी मृग ● मायापुरी ● रति विलाप ● उपप्रेती ● मेरा भाई ● विष कन्या ● माणिक ● कृष्णवेणी ● चिर स्वयंवास ● अपराधिनी ● करिए छिमा (प्रत्येक 22/-) ● गैंडा ● भैरवी (प्रत्येक 25/-) ● कालिंदी 45/- ● पूर्तोवाली ● श्मशान चम्पा ● रथ्या ● चौदह फेरे ● सुरंगमा ● कैंजा (प्रत्येक 26/-) ● स्वर्यसिद्धा 24/- ● अतिथि 30/- ● स्मृति-कलश 35/- ● मणिमाला की हंसी 38/- ● शिवानी की श्रेष्ठ कहानियां 50/-

अमृता प्रीतम

एक मुट्ठी अक्षर	50/-	रसीदी टिकट	35/-
अदालत	45/-	पिंजर	35/-
कोरे कागज़	40/-	मन मिर्ज़ा तन साहिबां	50/-
पांच बरस लंबी सड़क	40/-	कहानियों के आंगन में	45/-

नासिरा शर्मा

शाल्मली 45/-

पद्मा सचदेव

अब न बनेगी देहरी 45/-

सुधा श्रीवास्तव

चांद छूता मन 40/

महिलाओं के उपयोग की विशिष्ट पुस्तकें

मनचाही संतान : बेटा या बेटी	डॉ. इंदरजीत कौर बरठाकुर	30/-
गर्भधारण, प्रसव और बेबी केयर	डॉ. पी. तिरुमाला राव	25/-
योग के आसन	सातवलेकर	25/-
स्वादिष्ट भोजन कला	अरुणा शेठ	22/-
सफल ब्यूटीशियन कैसे बनें	उमा दीपक	40/-
त्वचा सौंदर्य	उमा दीपक	40/-

अपने घर में अपनी लाइब्रेरी बनाएं

घरेलू लाइब्रेरी योजना की सदस्यता के नियम

सदस्यता शुल्क 10/- मनीऑर्डर से भेजें ● पुस्तकों पर 33% छूट ● डाक-खर्च सदस्य देंगे ● एक मासिक पत्रिका मुफ़्त ● 12 किस्तों पर 15/- की पुस्तक उपहार में ● मनपसंद पुस्तकें चुनें और म. ऑ. फार्म पर लिखें ● आज ही आदेश भेजें।

विस्तृत सूची-पत्र निरंतर आपकी पत्रिका में

सभी को सदस्य बनाएं—ज्ञान का दीप जलाएं

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी. टी. रोड, (शाहदरा) दिल्ली-110 095

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. **प्रतिघात**— क. आक्रमण, ख. चोट, ग. आघात के बदले किया गया आघात, घ. रोक।

२. **प्रतिमान**— क. मान के बदले सम्मान, ख. मानदंड, ग. आदर, घ. दूरी का माप।

३. **चरमसीमा**— क. गंतव्य, ख. निर्दिष्ट पथ, ग. लक्ष्य, घ. पराकाष्ठा।

४. **संसर्ग**— क. मेल, ख. घनिष्ठता, ग. सहयोग, घ. सुविधा।

५. **संसिद्धि**— क. पूर्णता, ख. सफलता, ग. संतुष्टि, घ. साधना।

६. **लोकाचार**— क. रस्म, ख. परिपाटी, ग. लोक-व्यवहार, घ. मान-मर्यादा।

७. **लोकापवाद**— क. संसार के विरुद्ध चलन, ख. लोकनिंदा, ग. मर्यादा का उल्लंघन, घ. लोकप्रियता की कमी।

८. **पल्लवित**— क. लहलहाता हुआ, ख. जिसमें नये पत्ते लगे हों, ग. पुष्पित, घ. खुशहाल।

९. **पापाचार**— क. अपराध, ख. बुरा व्यवहार, ग. पापमय आचरण, घ. दुर्बुद्धि।

१०. **मर्मांतक**— क. पीड़ादायक, ख. आघात पहुंचानेवाला, ग. मर्मस्थल को आहत करनेवाला, घ. मृत्यु-तुल्य।

११. **मर्मज्ञ**— क. विद्वान, ख. कुशल, ग. रहस्य जाननेवाला, घ. जानकार।

१२. **लोकोक्ति**— क. उत्तम उक्ति, ख. कहावत, ग. उद्धरण, घ. सीख।

१३. **पारस्पर्य**— क. मैत्री, ख. सद्भावना, ग. व्यवहार में एक-दूसरे का खयाल रखना, घ. सहयोग।

१४. **धरपकड़**— क. दबोचना, ख. दमन, ग. आतंक, घ. गिरफ़्तारी।

उत्तर

१. ग. आघात के बदले किया गया आघात। प्रायः लोग शत्रु के आघात का जवाब **प्रतिघात** से देते हैं। प्रति+घात (व्युत्.-हन्)।

२. ख. मानदंड (अंग.-स्टैंडर्ड)। शिक्षा का कोई **प्रतिमान** निर्णीत होना चाहिए। प्रति+मान (व्युत्.-मन्)।

३. घ. पराकाष्ठा। अपराध क्रूरता की **चरमसीमा** को लांघ गया है। चरम (व्युत्.-चर्) +सीमा (व्युत्.-सीमन्)

४. ख. घनिष्ठता। मित्रों से **संसर्ग** स्थापित करना लाभदायक है। (व्युत्.-सम्+सृज्)

५. ख. सफलता। अथक श्रम से ही किसी कार्य में **संसिद्धि** प्राप्त होती है। (व्युत्.-सम्+सिध्)

६. ग. लोक-व्यवहार, चलन। **लोकाचार** के विरुद्ध कार्य करनेवाला सामाजिक सहयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त नहीं करता। लोक (व्युत्.-लोक्) +आचार (व्युत्.-आ, चर्)

७. ख. लोकनिंदा, अपयश। सामाजिक असहयोग करनेवाला व्यक्ति **लोकापवाद** का भागी होता है। लोक (व्युत्.-लोक) +अपवाद (व्युत्.-अप्+वद्)

८. क. लहलहाता हुआ। ख. जिसमें नये पत्ते लगे हों। अटूट परिश्रम और निःस्वार्थ भाव से काम करनेवाली सामाजिक संस्था **पल्लवित** होती है। ('पल्लव' का विशेषण (व्युत्.-पल्)

९. ग. पापमय आचरण, दुराचार। बढ़ते अपराधों से समाज में **पापाचार** फैलता है। (पाप+आचार)

१०. ग. मर्मस्थल (सजीव भाग) को आहत करनेवाला। संतान के कुकृत्य से माता-पिता को **मर्मांतक** पीड़ा पहुंचती है। (मर्म+अंतक)

११. ग. रहस्य जाननेवाला। वह बड़ा **मर्मज्ञ** है। (मर्म+ज्ञ)

१२. ख. कहावत। किसी बात को प्रमाणित करने के लिए प्रायः **लोकोक्तियों** का सहारा लिया जाता है। (लोक+उक्ति)

१३. ग. व्यवहार में एक-दूसरे का खयाल रखना (अंग.-रेसिप्रासिटी)। सहयोगियों से **पारस्पर्य** बढ़ाना ही लाभदायक है। ('परस्पर' से संज्ञा)

१४. घ. गिरफ़ारी। प्रदर्शनकारियों की **धरपकड़** हो रही है। (बोलचाल)

पारिभाषिक शब्द

Peak production	= चरमोत्पादन
Trade	= व्यापार
Commerce	= वाणिज्य
Industry	= उद्योग
Sales tax	= बिक्रीकर
Income tax	= आयकर
Transmission	= प्रसार/संचार
Pattern	= नमूना
Undesirable	= अवांछनीय

ज्ञान-गंगा

मतिर्विपश्चितां मंत्री रतिर्मन्त्री विलासिनाम्।
पराक्रमैक सारांणां मनिनां त्वसिवल्लरी ॥

(हनुमन्नाटकम् ९/१३)

विद्वानों का मंत्री बुद्धि और कामियों का मंत्री रति होता है। किंतु केवल अपने पराक्रम का ही भरोसा रखनेवाले स्वाभिमानियों का मंत्री उनकी तलवार होती है।

चिन्ताज्वरो मनुष्याणां क्षुधां निद्रां बलं हरेत्।

(स्कंदपुराण काशीखंड १/६९)

चिंतारूपी ज्वर मनुष्यों की भूख, निंद्रा एवं बल इन सबको हर लेता है।

अनुबन्धं प्रयत्न इति।

(धर्मबिन्दु १/५३)

धर्म, अर्थ व काम की उत्तरोत्तर वृद्धि का प्रयत्न करना चाहिए।

नाऽसाध्यं मृदुना किञ्चित्।

(महाभारत, शांतिपर्व १४०/६६)

ऐसा कोई काम नहीं जो मृदुता से या मृदु स्वभाव के व्यक्ति से सिद्ध न हो जाता हो।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

पुरस्कृत पत्र

क्रांतियों का सिलसिला

कादम्बिनी क्रांति विशेषांक (अगस्त-अंक) के 'इतिहास के दर्पण' की गहराइयों में झांका तो पाया अनेकानेक क्रांतियों का सिलसिला—कहीं वैचारिक-क्रांति, कहीं स्वतंत्रता प्राप्ति क्रांति और...अन्यान्य ! इसी के साथ ही एक नव क्रांति भी, जिसे मैं विस्मृत ही नहीं कर पा रहा हूं । वह है—'जूता चप्पल क्रांति' ।

हाय ! क्या समय आया ?

अखंड कहे जानेवाले भारतवर्ष की विधानसभाएं आज 'वसुधैव कुटुंबकम' क्या 'स्वगृहैव कुटुंबकम' कहने में भी संकोच करती हैं । वे एकता के नाम से तो परिचित ही नहीं हैं शायद । इस तथ्य को स्पष्ट रूपेण उजागर करती है उत्तर प्रदेश विधानसभा में घटी वह शर्मनाक 'जूता चप्पल क्रांति ।'

क्या हो गया है इन सभाओं को ?

जो समाज को शांति देने को निर्मित हुई उनके स्वयं के अंतर्मन (सभागार) चीखों से, पुकारों से, अशांति से गुंजायमान हैं । जहां समाज का दर्द और हर आह आश्रय पाने को दौड़ते हैं, वे स्वयं दर्द से कराह रहीं हैं ।

ये सब क्यों ? आखिर कब तक चलेगा यह ?

आपका ध्यान कुछ समय पूर्व कादम्बिनी के ही एक अंक में श्रीकृष्ण कांत जी (आंध्र प्रदेश) के प्रकाशित लेख राजनीति का अपराधीकरण की ओर आकृष्ट करना चाहूंगा—

जब अपराधिक तत्त्वों की आवश्यकता हमारे राजनीतिज्ञों को हुई । तब इन अपराधी बुद्धियों का माथा ठनका । सोचा जब सब कुछ हम पर निर्भर है क्यों न हम स्वयं ही नेता बनें और यूं हुआ राजनीति में अपराध का प्रवेश और आज यही अपराधिक तत्त्व विधान मंदिरों में सुरा के पैमानों में डूब-डूब एक-दूसरे के क्षेत्र वस्त्रों को रक्तिम कर देने की आदत से बाज नहीं आये ।

और इन्हीं का एक लघु दृश्य है यह 'जूता-चप्पल क्रांति ।'

खैर ! घटना तो अविस्मरणीय है ही । अब आनेवाला भविष्य अस्त्रों-शस्त्रों की गणना में माइक्रोफोन, जूता, चप्पल, मेज, गिलास आदि को कभी भी विस्मृत नहीं कर पाएगा ।

—अमित अवस्थी 'आर्य'

साहित्य सृजन संस्थान

घुंघचिहाई, पीलीभीत (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोत्साहन पुरस्कार

जिनके लिए सत्य ही ईश्वर है

कादम्बिनी का अगस्त अंक मिला 'गोली से मनुष्यता नहीं मरती' लेख पढ़ा । गांधीजी का व्यक्तित्व वास्तव में अद्भुत था । फ्रांस के महान लेखक रोम्या रोला ने गांधीजी को इस युग का 'संतपाल' कहा था, संतपाल शुरू में यहूदी थे, फिर अपनी इच्छानुसार ईसाई बन गये । सरकार ने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया । चार्ली एंड्रूज ने कहा था "अगर विनम्रजनों को अपनी विनम्रता में आस्था हो और वे हिटलर या मुसोलिनी का सारा डर निकाल फेंकें और हमारे जमाने के सबसे बड़े गुरु (गांधी) का अनुसरण करें तो सारी दुनिया के मालिक बन सकते हैं, "एल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधीजी के बारे में कहा है 'ऐसा मानव जीव जो आगे की पीढ़ियों के लिए प्रकाश स्तंभ बन सकता है ।'

गांधीजी सत्य को ही ईश्वर मानते थे और सत्य के लिए मरने को तैयार थे । उनके अंतिम जन्मदिन २ अक्तूबर १९४७ को जो डॉक्टर उनकी खांसी का इलाज करने आया था उससे उन्होंने कहा था "आज मैं भट्टी में बैठा हुआ हूं । चारों तरफ आग लग रही है । अब तो मैं यही चाहता हूं कि या तो अगले जन्मदिन तक इस आग को मैं जिंदा रहते हुए न देखूं या भारत बदल जाए । या तो भारत शुद्ध हो जाए वरना मैं जिंदा नहीं रहूंगा ।"

गांधीजी के जीवन के अंतिम दिनों में उनकी प्रार्थना सभा में बम फटा और वे बाल-बाल बच गये । इस पर लेडी माउंटबैटन ने उन्हें बधाई संदेश भेजा तो उन्होंने जवाब भेजा 'आपकी बधाई के लिए मैं तभी उपयुक्त समझा जा सकता हूं जब सीने पर गोली तक लगने पर मेरे होंठों पर राम-नाम हो और मारनेवाले के लिए मेरे हृदय में प्रेम हो' मानव प्रेम, गांधीजी का आदर्श था बकौल जोश मलीहाबादी का दर्द

फिर रहा है आदमी भूला हुआ भटका हुआ
इक न इक लेबिल हर इक माथे पे है लटका हुआ
आखिर इंसां तंग सांचों में ढला जाता है क्यों
आदमी कहते हुए अपने को शर्माता है क्यों ?

गांधी का दर्द है बढ़ते हुए आतंक के माहौल, अधिकारों की होड़, युद्ध, टूटते मानव संबंध, मनुष्य की मनुष्य को समाप्त करने की चेष्टा, गोली बंदूक से प्रश्नों को हल करनेवालों की यह कातर पुकार कि गोली से मनुष्यता नहीं मरती यह दर्शाती है कि गांधी आज भी प्रासंगिक है । 'राजघाट' पर पड़ी शत्-शत् अर्चना के गुलाब की पंखुड़ियां मानो कह रही हैं कि 'दुनिया को भस्म करने की ताकत रखते हुए भी हम नहीं तुम प्रतिष्ठित हो, तुम्हारा देश प्रतिष्ठित है । विचारोत्तेजक लेखों के माध्यम से अतीत में झांकने का अवसर 'कादम्बिनी' के माध्यम से मिला, इस वैचारिक क्रांति को सुलगाने का प्रयास स्तुतनीय है । धन्यवाद ! बधाई !

—श्रीकांत कुलश्रेष्ठ
केंद्रीय विद्यालय, कोलीवाड़ा
बंबई-३७

प्रोत्साहन पुरस्कार

आचरण संहिता जरूरी

कादम्बिनी के अगस्त अंक में प्रकाशित 'आजाद देश की संसद और विधानसभाएं' पढ़कर इसके सदस्यों के गिरते संसदीय आचरण से अवगत हुआ । निश्चय ही आज सांसदों व विधायकों के गिरते संसदीय आचरण चिंतनीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । वैसे ऐसे आचरणों के लिए आज का बदला सामाजिक परिवेश भी कम उत्तरदायी नहीं है ।

तमिलनाडु विधानसभा की महिला सदस्य सुश्री जयललिता के चीरहरण के प्रयास में उनकी साड़ी का फटना और उत्तर प्रदेश विधानसभा में दो महिला विधायिकाओं के साथ की गयी मारपीट व अभद्र व्यवहार ने तो अब तक की अन्य विधानसभाओं की मारपीट, जूतमपैजार, गाली-गलौज की सीमाओं को पार कर अब तक की घटित घटनाओं के नाक-कान काट दिये और महाभारतकाल के दुर्योधन व दुःशासन की याद करा दी । ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए जनप्रतिनिधियों के लिए ऐसी संसदीय आचरण संहिता बनायी जाए जिसमें ऐसा प्रावधान हो कि यदि कोई सदस्य ऐसा अभद्र व्यवहार करता है तो उसकी विधानसभा सदस्यता तो समाप्त हो ही जाए वह पुनः जनप्रतिनिधि के चुनाव में अयोग्य ठहराया जाए । अध्यक्ष को भी ऐसी व्यवस्था हो कि वह पक्षपात रहित सही न्याय व्यवस्था दे । अन्यथा प्रसिद्ध विचारक वाल्टेयर का यह कथन कि **"निःसंदेह मैं तुम्हारे विचारों का विरोधी हूं, किंतु विचार अभिव्यक्ति के तुम्हारे अधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दूंगा"** तथा आधुनिक राजनीति के पुरोधा चक्रवर्ती राज गोपालाचारी की यह सीख भी बहरे कान परदों से टकराकर अपना सिर धुनती-पीटती लौट आएगी कि **'मत-भिन्नता में ही लोकतंत्र की जीवन-श्वास निहित है । घाव तो भर जाते हैं, पर दाग नहीं मिटते ।'**

—चंद्रकांत यादव

चांदीतारा, साहपुरी, वाराणसी ।

सम्पूर्ण विधि विधान सहित चण्डी पाठ

5 कैसेट्स का सैट

निदेशक एवं व्यवस्था

गोविन्द शास्त्री

स्वर

प्रेम दीक्षित

मंजु गुप्ता आदि

अन्य उपलब्ध कैसेट्स

हवन विधि

प्रातः स्मरण रात्रि श्रवण एवं भजन

शिव, हनुमान, गणपति, सूर्य, लक्ष्मी साधना

मरुगीत - विरह, मरुगीत - मिलन

गरिमा साउण्ड्स

धोली मण्डी, चौमूं - जयपुर

श्री गोविन्द शास्त्री की कृतियां

अंक दर्शन	100.00
दुर्गा सप्तशती अनुष्ठान प्रकाश	100.00
अभिनव तन्त्र दर्शन (सम्पूर्ण)	100.00
अभिनव साधना और संस्कार (सम्पूर्ण)	100.00
अभिनव प्रायोगिक तन्त्र (सम्पूर्ण)	100.00
समस्याओं का तान्त्रिक समाधान	40.00
गोविन्द उवाच	60.00

TITLES FROM GOVIND SHASTRI

(Retold by Manju Gupta)

Philosophy of Tantra
Practical Approach to Tantra
Sex - Message of Nature or Physical Thirst
Astrology: Pleasure of Life and Guide To Self Realization

वी. पी. के लिए 10 प्रतिशत अग्रिम भेजें

चारुलेख प्रकाशन, चौमूं - जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी/पुरुष की स्वतंत्रता की भी एक सीमा

अगस्त अंक में 'पुरुषों की तबाही : नारी की स्वतंत्रता' लेख पढ़ा जो आज के संदर्भ में सटीक जान पड़ा । दहेज के लिए प्रताड़ित महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाये गये कानून का दुरुपयोग स्त्रियां ही करने लगी हैं, यह बहुत शर्म की बात है ।

हर तथ्य के दो पहलू होते हैं । लाभ प्राप्त होनेवाले पक्ष की जानकारी सभी को रहती है, दूसरे पक्ष से अनजान या बेखबर बने रहते हैं ।

स्वतंत्रता चाहे नारी की हो या पुरुष की, सबकी एक मर्यादा है । स्वतंत्रता का मनमाना उपयोग घातक है । अमानवीय एवं जघन्य अपराध करके अपने पद का लाभ लेकर तथा उच्च अधिकारियों से मैत्री का फायदा उठाकर स्वयं को निर्दोष सिद्ध करनेवाले घरेलू आतंकवादियों के संरक्षण का सिलसिला आखिर कब तक जारी रहेगा ?

—कुंकुम गुप्ता
भोपाल (म. प्र.)

एकतरफा सहानुभूति क्यों ?

वैसे तो कादम्बिनी किसी प्रशंसा की मुहताज नहीं है और न ही बीस सालों से इसे पढ़ने के बावजूद मैंने कभी कोई प्रतिक्रिया ही लिखी पर आज स्वयं को रोक नहीं पा रहा हूं । मैं एक ही घूंट में पूरी कादम्बिनी हजम नहीं कर पाता । कालचिंतन, पूरक, स्तंभ, लेख, कहानियां और अंत में कविताएं याने लगभग पंद्रह दिनों तक घूंट-घूंट पीता हूं ।

अगस्त ९५ के अंक में 'पुरुषों की तबाही...' लेख पढ़ने के बाद आगे कुछ भी पढ़ना कठिन हो गया । लेखिका होने के नाते वे साधुवाद की पात्रा हैं क्योंकि पुरुषों के पक्ष को सामने रखकर उन्होंने बड़ी दिलेरी दिखायी है । इस सामाजिक समस्या को बिलकुल नये कोण से देखने, इसकी अनदेखी दबी-ढंकी गांठों को प्रकाश में लाने के लिए लेखिका को कृपया मेरी बधाई दें ।

पुरुष वर्ग झूठे दंभ और मिथ्याभिमान का बिजूका बना खुद को और दुनिया को बेवकूफ बनाने में लगा है । यदि मतवातर मानसिक यंत्रणा से ऊबकर, विक्षिप्तावस्था में, पुरुष कुछ कर गुजरे तो समाज, कानून, पुलिस सभी स्त्री की शारीरिक यंत्रणाओं के निशान देखेंगे । विडंबना यह कि पुरुषों की मानसिक यंत्रणा का कोई प्रत्यक्ष सबूत कानून की पट्टी बंधी आंखें देख नहीं पातीं । वह स्त्री की सुबकियां सुनती है और स्त्री बाजी जीत जाती है । हमारे समाज ने दो विभिन्न मापदंड बना रखे हैं । यदि स्त्री जुल्म करे तो बहादुर, मर्द जुल्म करे तो अत्याचारी । स्त्री पर जुल्म हो तो वह शहीद, मर्द पर जुल्म हो तो वह नपुंसक ।

आवश्यकता है स्त्रियों के लिए इस एकतरफा सोच को हलका-सा पुरुषों के मानसिक शोषण की ओर भी मोड़ने की तथा कानून में आवश्यक संशोधन की ताकि समाज में पुरुषों की स्थिति भी स्त्रियों के बराबर [illegible] । समानता हमारा मौलिक अधिकार है तो फिर यह एकतरफा सहानुभूति क्यों ? एकांगी दृष्टिकोण क्यों ?? एकतरफा कानून क्यों ??

—राकेश कुमार सिंह
आरा, भोजपुर (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रस्तुत है, नवम्बर में कादम्बिनी का वह विशेषांक,
जिसकी आपको वर्षभर प्रतीक्षा रहती है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम्बर अंक : वार्षिक विशेषांक

ऋग्वेद की हर ऋचा एक मंत्र है तथा सामवेद की हर प्रार्थना शांति और बाधा निवारक है। भारत की इस चमत्कारिक शक्ति को हम प्रस्तुत कर रहे हैं नवम्बर के इस तंत्र विशेषांक में :-

कादम्बिनी का एक अभिनव प्रयोग

★ मंत्र शक्ति के चमत्कार

प्रेतबाधा, असाध्य रोग, पारिवारिक शांति, जीवन में सफलताओं के लिए; अपने मृतक प्रियजन से बातचीत के साधन तथा स्वास्थ्य और सफलता के अनेकों उपायों से भरा हुआ है नवम्बर का यह तंत्र विशेषांक। देखिए कुछ और आकर्षण

★ यंत्र शक्ति के चमत्कार

★ गुफा में गूंजते चमत्कारिक मंत्र : सिद्ध योगिराज के दिव्य अनुभव

★ एक कपालिक से भेंट

★ बगुलामुखी यंत्र

★ जागृत मंत्रों की विलक्षण शक्ति : साधनारत सिद्धपुरुषों के रोमांचक प्रसंग मंत्रों ने [illegible] तरह उनका जीवन बदल दिया।

★ कुछ सिद्ध संपुष्ट मंत्र और श्रीयंत्र मनोकामनाओं की पूर्ति, पदोन्नति, विवाह, रोग निवारण, वशीकरण, प्रणय में सफलता आदि के लिए कुछ शक्तिशाली अनुभव सिद्ध मंत्रों और श्रीयंत्रों का प्रामाणिक विवरण।

★ मंत्रों में छिपी हैं अलौकिक शक्तियां

वैदिक, बौद्ध, जैन धर्मों के बीज मंत्रों का अलौकिक विवरण

★ मंत्रों को कैसे सिद्ध किया जाए ? मंत्रों को सिद्ध करने का प्रामाणिक विवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अन्य दिलचस्प आकर्षण

★ मंत्रों के चमत्कार से असाध्य बीमारियों का इलाज
★ पुनर्जन्म की एक सत्यकथा
★ विविध कामनाओं की सिद्धि देनेवाले वेदोक्तमंत्र
★ तंत्र मंत्र से सर्प विष उतरता है
★ मृत आत्माओं से संपर्क
★ सिद्ध स्थानों का परिचय
★ पीपल : प्रेत निवारण नहीं; बोधिवृक्ष
★ तंत्र क्षेत्र : कामाख्या सर्वमनोकामनापूरक
★ चक्र और बीजाक्षर रहस्य
★ काठमांडू के सिद्धपीठ

अन्य विशिष्ट और रोचक रचनाएं

★ दधिमथी का कपाल पीठ
★ शारदा शक्ति पीठ
★ तंत्र विद्या का आदि स्थल : पीताम्बर पीठ
★ अंक मंत्रों का चमत्कार
★ जड़ियों, भस्म और मंत्रों का जीवन में चमत्कारिक प्रभाव
★ तंत्र कथा : सूक्ष्म शरीर
★ तांत्रिक के अद्भुत चमत्कार
★ वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा : रथ चक्र से रूपदान
★ सूक्ष्म शरीर का चित्र खींचा गया
★ यहां सभी मनोरथ पूरे होते हैं
★ जिनके दर्शन से पाप दूर होते हैं
★ जहां भूत-प्रेतों की पीड़ा से मुक्ति मिलती है
★ प्रेतबाधा की चिकित्सा
★ हमारे आठ मांगलिक चिह्न

रोंगटे खड़े कर देनेवाली कुछ रचनाएं

★ और जांघें गिरीं रानगिरि में
★ वह क्षमा याचना के लिए अस्पताल में घूमा करती है
★ उनकी भविष्यवाणी डरावनी होती है

यही नहीं और भी अनेक दिलचस्प रचनाएं । तंत्र-कथाएं, रोचक तथा भावभीनी कहानियां एवं कविताएं ।

पृष्ठ :२३२; मूल्य वही ११ रुपये

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

वर्ष ३५, अंक १२, अक्तूबर, १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

पटरी के नीचे खड़ी रेल ● के. के. देवराज १५
साहित्य और इल्म की सीमाएं नहीं होतीं ● मो. शफी कुरेशी २१
वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा ● डॉ. सुधा पांडे ३६
मुझे खेद है ● डॉ. एरोन लाजारे ४४
संयोग से मिली चाय ● अनंतराम गौड ५३
मोटापा कम करें ● डॉ. आर. के. अग्रवाल ५७

सरे राह चलते-चलते

सितारे जब रू-ब-रू होते हैं ● संजय कुमार ६२

गया

भटकती आत्माओं को मोक्ष ● सुनील सौरभ ६८

आधुनिक संदर्भ में

राजनीति के अपराधीकरण का प्रतीक रावण ● डॉ. सत्य नारायण भटनागर २९

कहां थे..... कहां आ गये ● रतनलाल जोशी ..... [illegible]
अदालत की अवमानना : कहां तक वांछनीय ● नितीश कुमार राय ..... [illegible]
जहां पलते हैं अनाथ बच्चे ● शमशेर अ. खान ..... [illegible]
भयभीत बाबर ने कैसे पैर जमाये ● राजेन कुमार राजीव ..... [illegible]
स्वप्न कब फल देते हैं ● अशोक जैन ..... [illegible]
कैसे जी रही है हिमालय की बेटी ● रश्मि बड़थ्वाल ..... [illegible]
जीव-जंतु भी बन जाते हैं पत्थर ● नवीन खन्ना ..... [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

सपादक
राजेन्द्र अवस्थी

अब पशु-पक्षी भी विमान में सैर करने लगे हैं ● विमल श्रीवास्तव ११७
जहां उषानागरी के पायल खनकते हैं ● सर्वेश..... १३४
हृदय चिकित्सा की नयी तकनीक ● ज्ञानभद्र..... १३९
दून घाटी : बासमती, आलू और लीची ● उदय ठाकुर..... १५०
तलुवों में छिपा है भविष्य का रहस्य ● अनिल जैन १५२
चांदनी रात में बादल उड़ती नदी है ● अमृतलाल बगेड़..... १५५
हंस एक प्रेमी पक्षी है ● डॉ. अमित अग्रवाल..... १६१
अज्ञेय और भारत : पिकनिक बटखल लेक में ● डॉ. बिंदु अग्रवाल..... १८६

राजस्थानी लोक गीतों में विरह वेदना
पिया मिलन की आस ● डॉ. मदन सैनी..... १२८

भगवान राम ने दलितों को गले लगाया ● हिमांशु शेखर..... ५४

सुभाषचंद्र बोस
नेताजी के जीवन के अंतिम कुछ वर्ष ● विजय कुमार उपाध्याय १७५

कहानियां एवं व्यंग्य
उजाला ही उजाला ● पवित्रा अग्रवाल ४८
तपली कप ● कल्कि ७४
परिचर्चा में अध्यक्षीय भाषण ● बटुक चतुर्वेदी ९७
छुट्टी के लिए ● डॉ. भगवतीशरण मिश्र १०८
सगुणी-निगुणी ● डॉ. सरोजनी प्रीतम..... ११३
संकल्प ● कमलिनी कौल..... १२०
नदी किनारे ● मिथिलेश्वर..... १४२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार-संक्षेप

मुझे अकेला छोड़ दो ● ग्रेगरी जॉयस.....१६७

कविताएं

सुरेंद्र चतुर्वेदी ● दीप्ति मिश्रा.....४६
किशनस्वरूप.....४७

प्रवासी कविताएं

प्रो. इंदुकांत शुक्ल ● जोसेप कारनर.....१८२
● प्राण शर्मा.....१८३

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य-६, ज्ञानगंगा-७, प्रतिक्रियाएं-८, कालचिंतन-१७, आखिर कब तक-२२, गोष्ठी-७८, बुद्धि-विलास-१०१, वैद्य की सलाह-१०६, इनके भी बयां जुदा-जुदा-१२५, व्यंग्य-तरंग-१२६, विधि-विधान-१४७, प्रवेश-१६४, ज्योतिष समस्या और समाधान-१८०, यह महीना और आपका भविष्य-१८४, नयी कृतियां-१९०, सांस्कृतिक समाचार-१९४, क्लब समाचार-१९६, समस्या-पूर्ति-१९८।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी।
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार,
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी।
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि. १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड-४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)
अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक-२७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

आवरण : चित्र (पुष्प) : ब्रह्मदेव : पारदर्शी (युवती) : कमल सोनकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-चिंतन

—समय कहीं भटक गया है । लगता है हम ही नहीं समूचा विश्व समय की भटकाव और चेतना-शून्य चक्रव्यूह में आवृत्त है । तब ?

■

—भटकाव कहां है ? भटकता कौन है ? भटकता हुआ दर्शन स्वयं भटकन में फंसा है ।

—अनुभव किया है हमने अक्सर, दिन या रात में चलते हुए कि मार्ग से भटक गये हैं ।

—हां, भटकते हैं, चक्कर खाते हैं; चौराहों, गलियों-गलियारों और कई बार दुर्गम संधियों में फंसकर अनुभव करते हैं कि बाहर आना अभिमन्यु का चक्रव्यूह है ।

—बात सत्य नहीं है ।

—हर कोई अभिमन्यु नहीं होता ।

—सभी अभिमन्यु होने लगें तो विश्व अनाड़ियों की संज्ञा बन जाएगा ।

—इस सत्य को समझ लें तो मनुष्य के मस्तिष्क में इतनी ऊर्जा है कि सभी अवयव, सभी को अभिमन्यु बनाने में सफल नहीं होंगे ।

—नहीं होंगे तो न लाक्षागृह होगा, न कांचों की मिथ्या दीवारें होंगी और न मकड़ी के जाले-सा चक्रव्यूह होगा ।

—आज का अभिमन्यु इतना नासमझ नहीं है कि वह भूत-वर्तमान और भविष्य को समझे बिना प्रवेश कर जाए ।

■

—हम एक महान सांस्कृतिक विरासत के राजदूत हैं ।

—क्रम और विकास के अवतारों से सुपरिचित हैं हम । आवश्यकता मात्र उन्हें जागृत करने की है । क्रमाधार से सोचिए पहले :

- हुआ मत्स्यावतार
- हुआ फिर कच्छपावतार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

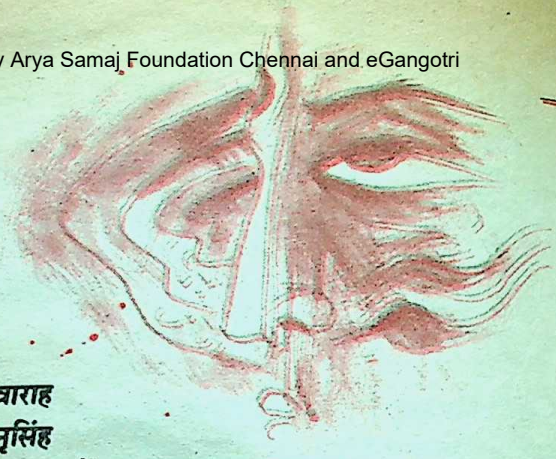

- फिर वाराह
- फिर नृसिंह

—इसी तरह अवतारों का अवतरण चलता रहा ।

—अवतारों के साथ ऋग्वेद ने जीवन-क्रम भी आधारित किया :

- अन्न/ प्राण/मस्तिष्क/विज्ञान
- आनंद/चित्त और फिर स्थितिप्रज्ञ
- स्थितिप्रज्ञ यानी पहचान, अर्थात् आत्मबोध या आत्य शक्ति का दिव्य दीप ।

—इन्हीं अवयवों से सत् +चित +आनंद का एकारूप हुआ—सचिदानंद ।

—सचिदानंद समय और पहचान का अंतिम चरण है ।

—इसी अंतिम चरण से चेतना के द्वार खुलते हैं ।

—चेतना के ऊर्ध्व-लोक से ही एक महान-शक्ति का अवतरण होता है ।

—यह शक्ति असत्य, भ्रम, मिथ्याभ्रम और सोच के संकुचित द्वारों को उद्भाषित करती है ।

■

—सोच के संकुचित द्वार हमारी जीवनी-शक्ति के आयाम हैं । आवाज देते हैं वे कि भटकन कहां है । सत्य का मार्ग कहां खुलता है । भय कहां अभय में बदलता है । मनुष्य कहां मनुष्येतर बनकर पुरुषोत्तम की संज्ञा पाता है ।

—इसी क्रम में चरित्र उसी तरह चपेट में आता है जैसे समुद्री ज्वार या समुद्री तूफान में फंसी हुई पृथ्वी रबर की तरह या हवा की तरह कांपने लगती है ।

—भूकंप हो या ज्वालामुखी चरित्र की विनष्टता के अधिशासी अभियंता हैं ।

—विकास का एक नया क्रम यहीं से आरंभ होता है ।

—यहीं से एक सोच को जन्म मिलता है ।

—विगत और आगत के बीच पनपा यही सोच जीवन और विकास की आधारशिला बनता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

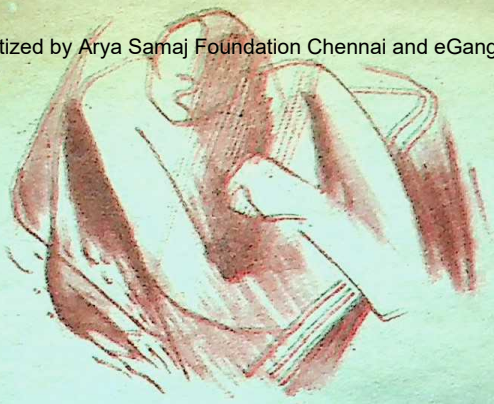

—विकास की आधारशिला में ही 'मैं' को जन्म मिला है ।

- 'मैं' मिथ्या नहीं है ।
- 'मैं' नहीं होगा तो जगत नहीं होता ।
- 'मैं' नहीं होगा तो मनुष्य की आत्म-चेतना के विभिन्न आयाम नहीं होंगे ।
- 'मैं' नहीं होगा तो विभिन्न आत्म-चेतना से उत्पन्न एक समग्र-चेतना को जन्म नहीं मिलेगा ।

—'मैं' एक सार्थक संज्ञा है, वह क्रिया भी है जो विभाजन को समेटती हुई आत्म-इकाई की रक्षा भी करती है और बहु-आयामी बनकर विभिन्नता में एकता के द्वार खोल समग्रता को जन्म देती है ।

—'मैं' इसलिए व्यक्ति-वाचक होकर भी समूह-बोधक है और सामूहिक क्रियाओं के समन्वय का परमतत्त्व है ।

—मनुष्यता का आधारभूत शिलालेख सामूहिकता में ही आबद्ध हो सकता है ।

—सामूहिकता जहां पराजित होगी व्यक्तिवाद को जन्म मिलेगा और एकात्मकता का आधिपत्य सहज ही स्थापित हो जाएगा ।

—हमारी संस्कृति एकात्मक परिलक्षित होते हुए भी सामाजिक यानी सामूहिक है ।

—इसी सामाजिकता ने हमारी अस्मिता को जीवित रखा है ।

—अस्मिता को जीवित रखने में उसी 'मैं' ने अद्वितीय भूमिका का निर्वाह किया है ।

—इसी निर्वाहक्रम ने हमें आत्म-पहचान दी है और वह शक्ति भी कि मैं 'मैं' में ही समर्थ हूं, 'मैं' सर्वस्व हूं, मैं सर्वज्ञ हूं किंतु 'मैं' एकाकी 'मैं' नहीं हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

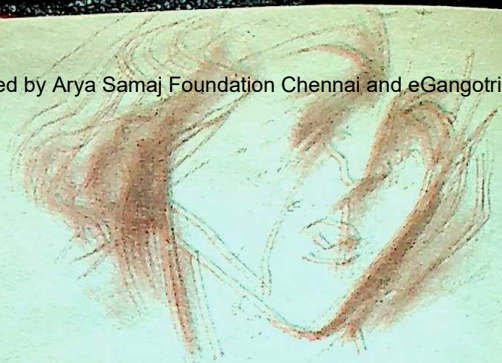

■

—पशुओं के निर्द्वंद्व चारागाह को देखिए । 'मैं' के स्वर वहां भी सुनायी देंगे, लेकिन उन 'मैं' के स्वरों का सर्वज्ञ मात्र एक चरवाहा है । वह चरवाहा ही उनके 'मैं' को स्वतंत्र छोड़ता है और वही चरवाहा उन्हें अपने डंडे की आवाज या स्वरों की मात्र लय से विध्वंस करता हुआ, अनुभव करा देता है कि उनके लिए 'अहम्' और 'मैं' न तो समानार्थी हैं और न उनमें कोई तारतम्य है ।

—'मैं' की सत्ता ने बाइबल में यहोवा के मुख से दोहराते हुए कहा था, 'यीशु ने तो मात्र मेरे शब्द छीने हैं ।'

—यहोवा ने घोषणा की, 'मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और 'मैं' अपनी इच्छा को पूरा करूंगा । 'मैं' पूर्व से एक उकाब पक्षी को यानी दूर देश से अपनी मुक्ति के पूरा करनेवाले पुरुष को बुलाता हूं ।'

—स्पष्ट है कि यहोवा की शिक्षा यीशु के लिए वैसी ही थी जैसे बिजली 'पूर्व' से निकलकर 'पश्चिम' तक चमकती जाती है । यही मनुष्य के पुत्र का आना भी है । यही मनुष्य के पुत्र के पुत्र का भी आना है । यही निरंतरता है । यही विरासत है, यही निरंतरता का मार्ग है ।

■

—निरंतरता की इस आधारशिला को सुरक्षित रखे हैं जो वे हैं :

- भूत, भविष्य और वर्तमान की-सूक्ष्म प्रतिभा
- दिव्य शब्द का सामर्थ्यवान—श्रवण
- दिव्य का स्पर्श—वेदन
- वेदन से उत्पन्न—आदर्श
- आदर्श का अनंत रस—आस्वाद
- आस्वाद से उत्पन्न—प्रकटन प्रक्रिया

—प्रकटन प्रक्रिया में आकर हमें ठहर जाना चाहिए ।

—प्रकटन के विस्तार में न जाकर मैं कहूंगा, यह स्वस्थ और अस्वस्थ के मध्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूलता पालना है ।

—पालना मात्र शक्तिहीन बालक के लिए नहीं होता ।

—कई बार शक्ति-संपन्न पौरुष भी पालने में पड़ जाने के लिए बाध्य है ।

—शक्तिशील पौरुष इस समय पालने में बाध्य पड़ा है ।

—उसके बाध्य होने को हम भटकाव कह रहे हैं ।

—भटकाव यदि चेतना-शून्य चक्रव्यूह में आवृत्त होगा तो ?

—तो वही होगा, जो हो रहा है ।

■

—यह होना अंतिम सत्य नहीं है ।

—यह होना अंतिम नियति नहीं है ।

—यह होना हमारी बलवती भुजाओं से अधिक चेतन नहीं है ।

—यह होना चेतनाहीन या अर्द्ध-चेतन व्यक्तियों का मात्र एक लघुतम समूह है जो हमारी अकर्मण्यता से प्रभावशाली दीखता है ।

■

—समय की शिलाएं निर्बंध हैं, इसलिए हमें उनपर, उनसे, उच्छ्वासित अपनी चेतना पर और चेतना से परे समय-चक्र को पीसती आटे की चक्की पर परम-विश्वास है ।

—विश्वास कभी निरर्थक नहीं होता, विश्वास कभी किसी को नहीं तोड़ता और न समय-चक्र कभी किसी बहाने रुकता ।

—चलते हुए समय के साथ, विश्वास रखिए, ये सब टूटेंगे और बिखरेंगे पारे की तरह और मोहताज होंगे हमारी दिशादृष्टि के । इससे अधिक और चाहिए क्या ?

—प्रतीक्षा में प्रबल बल है : प्यार में हो या प्रतिकार में ।

रमेश अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर हत्याओं का सिलसिला

इंदिरा गांधी के बाद हत्या का जो क्रम शुरू हुआ था । वह राजीव गांधी तक आकर ठहर नहीं गया । एक लंबे अरसे के बाद राजनीतिक हत्याओं का शुरू होना हम सबके लिए चिंता का विषय है । बेअंत सिंह की जिस निर्मम ढंग से रिमोट कंट्रोल बम द्वारा हत्या की गयी । उससे इंदिराजी की याद आ जाती है । वह हत्या भी उनके सबसे पास के और निजी रक्षक द्वारा की गयी । बेअंत सिंह की हत्या किसने की है यह तो समय बताएगा । लेकिन यह निश्चित है कि इस हत्या में उनके किसी अत्यंत आत्मीय व्यक्ति का हाथ है । बब्बर खालसा ने जिम्मेदारी ले ली है । इससे निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए । बब्बर खालसा का कोई सदस्य इस हत्या के समय मौजूद नहीं था । ऐसा भी ज्ञात है कि बेअंत सिंह को 'जैड प्लस' की सुरक्षा मिली थी । अर्थ यह हुआ कि वहां ब्लैक कैट कमांडो भी उपस्थित थे । फिर कार का दरवाजा बेअंत सिंह ने स्वयं क्यों खोला और यह पहचान कैसे की गयी कि बुलेट प्रूफ कार कौन-सी है । यह इस बात को मजबूत करता है कि इस हत्या के पीछे बेअंत सिंह के सुरक्षाकर्मी ही हो सकते हैं । यह बात मैं केवल कल्पना से ही कह रहा हूं । लेकिन मुझे भय है कि कमजोर राजनीतिक सत्ता के रहते हुए राजनीतिक हत्याओं का सिलसिला कहीं और आगे न चलता रहे ।

इन हत्याओं के पीछे एकमात्र कारण पूरे देश को भयभीत रखना है । यह तथ्य भी किसी से छिपा नहीं है कि पाकिस्तान का हमारे देश में गड़बड़ी फैलाने में पूरा हाथ है । तब ? इसका उत्तर क्या अमरीका देगा ? या हमारी सेनाओं को देना होगा । इस देश की पढ़ी-लिखी जनता के लिए मैं यह प्रश्न छोड़ रहा हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय स्वतंत्रता

कुछ समय पहले मैंने सलमान रुश्दी की चर्चा की थी । चर्चा 'सैटेनिक वर्सेज' पुस्तक प्रकाशन के बाद खुमैनी के फतवे से संबंधित थी । खुमैनी ने रुश्दी को मौत की सजा सुनायी । उसका परिणाम यह हुआ कि रुश्दी ने इंगलैंड में शरण ली और ठाठ की जिंदगी बिता रहे हैं ।

हाल ही में रुश्दी की एक और पुस्तक प्रकाशित हुई है 'द मूर्स लास्ट साइ ।' इस बार आयतुल्ला खुमैनी ने नहीं महाराष्ट्र की सरकार ने इस पुस्तक पर पाबंदी लगा दी । भारत में यह पुस्तक रूपा एंड कंपनी ने वितरित की । कहा जा सकता है कि आखिर महाराष्ट्र सरकार ने इस पुस्तक पर पाबंदी लगाकर वैसा ही गलत काम तो नहीं किया । मैं दृढ़ता से कहूंगा ''नहीं, इस पुस्तक पर पाबंदी लगाना उचित और तर्कसम्मत है ।'' रुश्दी ने ठाकरे से संबंधित एक चरित्र की रचना की । उसने महात्मा गांधी से लेकर राजीव और इंदिरा गांधी तक सभी की आलोचना की । प्रश्न यह उठता है कि सृजनात्मक साहित्य में क्या ऐसा करना उचित है ? मराठी में के. एल. देशपांडे ने 'सटायर' लिखे हैं, लेकिन उन 'सटायरों' में एक संयमित हास्य और व्यंग्य का सहारा लिया है ।

सलमान रुश्दी को पता है कि इसलाम का विरोध करने के कारण अपना देश छोड़कर विदेश में शरण लेनी पड़ी । इसके बाद इसलाम के विरोध में रुश्दी की लिखने की कतई हिम्मत नहीं पड़ी । तब बिलकुल आसान-सा काम रह गया कि हिंदू धर्म अत्यंत उदार है और भारत एक ऐसा प्रजातांत्रिक देश है कि जिसके मन में आये गाली दे दे । वह चुपचाप सुन लेता है ।

सृजनशील लेखक कुछ सनातन सत्य, स्थितियों और घटनाओं को अपना कथानक बनाता है । जो किसी को नुकसान नहीं पहुंचाये । अपनी इस नयी पुस्तक से रुश्दी ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह मौलिक सृजनशीलता को ताक में रखकर केवल ऐसी पुस्तकें लिखना चाहते हैं जिनसे सस्ती लोकप्रियता मिलती रहे । और दूसरे देश में शाही ढंग से जिंदगी कटती रहे । ऐसे लेखकों की भर्त्सना करनी चाहिए । यह माथे पर लेखकीय टीका का कलंक है । आखिर खुशवंत सिंह भी कौन लेखक हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों को यह पता है कि कुछ दिन पहले खुशवंत सिंह ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर पर अशोभनीय टिप्पणियां की थीं। उन टिप्पणियों की खूब चर्चा हुई। यहां तक कि अगस्त में जब पुस्तक मेला हुआ था उसमें 'खुशवंत सिंह के नाम एक शाम' का भी आयोजन किया गया था। खुशवंत सिंह मात्र एक पत्रकार हैं। यह बात उन लोगों को हजम नहीं होगी जिन्होंने उनकी पुस्तकें पढ़ी हैं या उनका नाम सुन लिया है। खुशवंत सिंह को मैं यह अधिकार नहीं देता कि वह रवीन्द्रनाथ टैगोर या किसी भी लेखक पर भद्दी टिप्पणियां करें। किसी भी देश की संस्कृति और साहित्य की पहचान वहां के उन व्यक्तियों से होती है जिन्होंने नाम कमाया है। यह प्रश्न अलग है कि टैगोर के बाद भारत में किसी और को साहित्य में नोबेल पुरस्कार क्यों नहीं मिला ? लेकिन सच्चाई तो यह है कि भारत में एक व्यक्ति तो है जिसका नाम समूचे विश्व में लिया जा सकता है। लेकिन यदि हम आलोचना और निंदा के धरातल पर उतर आयें तो रामकृष्ण, विवेकानंद और रामतीर्थ—जैसे व्यक्तियों पर भी कीचड़ उछाला जा सकता है। ऐसी हालत में हमारे पास शेष क्या बचेगा। मुझे समझ में नहीं आया कि खुशवंत सिंह को सर पर चढ़ाने की जरूरत क्या है ? यदि खुशवंत सिंह में हिम्मत है तो इसलाम धर्म पर आक्षेप करें। उनका बुढ़ापा सुख से बीतेगा।

अभी से चुनावी सरगरमियां

इन दिनों भारत की राजनीति जिस दौर से गुजर रही है। उससे लगता है कि किसी भी सुबह चुनाव की घोषणा हो सकती है। बस ऐसा होनेवाला नहीं है। क्योंकि कोई भी दल काले धब्बों के छींटों से नहीं बच सका। सभी का इतिहास सामने आ रहा है और इसी से पता लगता है कि भ्रष्टाचार यों एक दिन में नहीं पनपा, वह वर्षों से पनप रहा है। एक-एक व्यक्ति के बहीखाते धीरे-धीरे खुल रहे हैं। चाहे वह तंदूर कांड हो या करोड़ों का काला धन हो। इन सबसे यह पता लगता है कि हमारे राजनेता सच्चाई का नाम लेते हुए कितने नीचे गिरे हुए हैं। उनसे तो साधारण जनता अच्छी है जो आज भी स्वर्ग और नर्क की कल्पना का भय खाती है। राजधानी का समूचा माहौल हत्या, चोरी, डाका और बलात्कार के साथ रोज के अखबारों में उभरता है। बताइये भला ऐसे में चुनाव कौन करवाएगा ? लेकिन चुनाव का ढोल पीटना अपनी मर्यादा के लिए छिपने की जगह तो देता ही है। हमारी जनता को सतर्क होना चाहिए कि यदि चुनाव आते भी हैं तो क्या करे ?

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

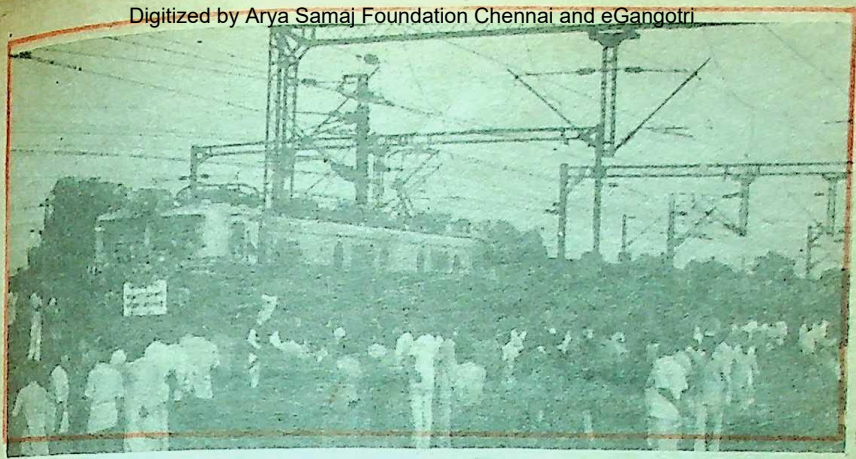

पटरी के नीचे खड़ी रेल

● के. के. देवराज

देश में भारतीय रेलों के आधुनिकीकरण के साथ-साथ निजीकरण की प्रक्रिया भी आरंभ हो गयी है। अब रेलों पर निजी क्षेत्र के पूंजी निवेशकों द्वारा नौ अरब रुपया निवेश किया जा रहा है। जिसे रेलों की साज-सज्जा एवं उनके आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर व्यय किया जाएगा। संभवतः अब शीघ्र ही देश में सर्वाधिक तेज गति की रेलगाड़ी चलनी शुरू हो जाएगी जिसकी अधिकतम गति १६० किलोमीटर प्रति घंटा होगी। यह रेलगाड़ी दिल्ली-कानपुर-इलाहाबाद के बीच जाएगी।

यह जानकारी रेल मंत्रालय ने हाल ही में अपने मंत्रालय से संबद्ध संसदीय सलाहकार समिति की एक बैठक में दी। रेलवे इसके लिए अपनी कपूरथला कोच फैक्टरी में ऐसे विशेष डिब्बे बना रही है जो इतनी तेज गति के उपयुक्त साबित हो सके। इस रेलगाड़ी में डबल्यू.ए.पी. ५००० अश्वशक्ति का इंजन लगाया जाएगा।

रेलवे ने आरक्षण की भीड़-भाड़ को कम करने के लिए और आरक्षण केंद्र खोलने का निश्चय किया है। ये आरक्षण केंद्र बड़े शहरों के बुकिंग कार्यालय, हवाई अड्डों और अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानों पर खोले जाएंगे। ये सभी कंप्यूटरीकृत आरक्षण केंद्र होंगे। रेलवे अब तक आरक्षण का ९२ फीसदी कामकाज कंप्यूटर से करने लगी है। इस जाल को और फैलाना है। पिछले दिनों इस तरह का कंप्यूटरीकृत आरक्षण कार्यालय श्रीनगर के मुख्य डाकघर में खोला गया।

यात्रियों के सफर को और आरामदेह बनाने के लिए ए. सी.-२ (वातानुकूलित द्वितीय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बुलट' की प्रगति उस महत्त्वाकांक्षी योजना का अंश है जिसने जापान को सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्रदान की है। इन रेलगाड़ियों की प्रति घंटे रफ़्तार ५०० किलोमीटर है अर्थात बोइंग ७०७ की रफ़्तार की आधी। इतनी तेज रफ़्तार के कारण इसके पहिये पटरी पर टिक ही नहीं पाते।

स्लाइडिंग कोच विकसित किये जा रहे हैं। इससे मुसाफिरों को यात्रा के झटके कम महसूस होंगे।

रेल मंत्रालय के अनुसार इस वर्ष रेलवे का कामकाज बेहद सराहनीय रहा। अच्छा मुनाफा हुआ है। देश की ४७७५ कि. मी. छोटी लाइन को बड़ी लाइन में बदलकर और ४६७ नयी गाड़ियां चलाकर एक नया रेकॉर्ड बनाया है। उम्मीद है कि इसी वर्ष में बहुप्रतीक्षित कोंकण रेलवे भी चालू हो जाएगी।

संसार की तीव्रगामी रेल

संसार में सबसे अधिक तेज गति की गाड़ियां जापान में चलायी जाती हैं जिन्हें 'बुलट' का नाम दिया गया है। 'बुलट' की प्रगति उस महत्त्वाकांक्षी योजना का अंश है जिसने जापान को सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्रदान की है। इन रेलगाड़ियों की प्रति घंटे रफ़्तार ५०० किलोमीटर है अर्थात बोइंग ७०७ की रफ़्तार की आधी। इतनी तेज रफ़्तार के कारण इसके पहिये पटरी पर टिक ही नहीं पाते।

मैगलेव मैग्नेटिक लेविटेशन अर्थात चुंबकीय वायु संचरण का संक्षिप्त रूप मैगलेव मनुष्य द्वारा खोजे गये प्राकृतिक नियमों में से एक पर अर्थात चुंबकों के बीच आकर्षण और विकर्षण की विचित्र शक्तियों पर आधारित है। रेलगाड़ी में और रेलपथ पर लगाये गये शक्तिशाली चुंबकों के बीच अंतःक्रिया के फलस्वरूप गाड़ी रेलपथ से ऊपर उठ जाती है और विद्युत चुंबकीय शक्ति से आगे बढ़ती है। इसका नियंत्रण कंप्यूटर द्वारा किया जाता है और यह आवाजरहित तथा पूरी तरह प्रदूषण विहीन है।

जापान की पहली रेलगाड़ी १२ दिसम्बर १७७२ को टोकियो से प्रारंभ हुई। उसमें सम्राट तथा उनके अनुचरों ने यात्रा की। योकोहामा तक ३० कि.मी. की यात्रा में ५३ मिनट लगे। इस सफलता का आतिशबाजी छोड़कर स्वागत किया गया। तब से लगभग १२२ वर्ष की अवधि में आज वह 'बुलट' और 'मैगलेव' तक पहुंच गया है।

इस जापानी बुलट को चलाने के लिए दो कर्मचारी चपटे काकपिट में बैठ जाते हैं और लॉग शीट देखकर रेडियो टेलीफोन पर संपर्क साधते हैं। उसके बाद कंप्यूटर जापान के एक कोने से दूसरे कोने तक १००० किलोमीटर की यात्रा प्रारंभ करने की अनुमति देता है। चालक निर्वात ब्रेकों को मुक्त करता है और ट्रेन सर्राट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का अधिकांश यात्री वर्ग कठिनाई से भी इस सहनशक्ति की सीमांत स्थिति से गुजर चुका है । बहुत से कम दूरी के यात्री किराये की अनियमितताओं और भाड़े की अधिक वसूली के कारण परिवहन के इस साधन को छोड़ चुके हैं तो दूसरे बहुत-से यात्री लंबी दूरी के लिए अन्य कोई वाजिब विकल्प न मिल पाने के कारण इसे अपनाते रहने को बाध्य हैं ।

थ्राटल को आगे की ओर दबाता है जिसके फलस्वरूप १६००० अश्वशक्ति उपलब्ध हो जाती है ।

इंजीनियरी का चमत्कार होते हुए भी बुलट में कुछ दोष हैं । जैसे यह रेलगाड़ी अपने उठे हुए रेलपथ पर चलती है, वैसे ही उसमें से कान फाड़ देनेवाली (कर्ण भेदी) आवाज निकलती है । ध्वनि विरोधी आंदोलन के कारण जापानी राष्ट्रीय रेलवे ने शिंकनसेन रेलपथ के किनारे स्थित १४,५०० घरों को साऊंडप्रूफ (ध्वनि रोधी) बनाना शुरू कर दिया है । कंपन को कम करने के लिए जापानी राष्ट्रीय रेलवे जमीन में गहरी नींव डालकर नयी लाइनें बना रही है । और साथ ही बड़े पैमाने पर ध्वनिरोधकों का भी निर्माण कर रही है ।

भारत में रेल व्यवस्था की शुरुआत

भारत में रेल व्यवस्था की शुरुआत १७५३ में बहुत ही छोटे पैमाने पर हुई थी । देश की पहली रेल लाइन बंबई से ठाणे तक केवल ३४ कि.मी. लंबी थी । और अब देशभर में रेल लाइनों की कुल लंबाई ६२ हजार किलोमीटर से अधिक है । इसमें एक हजार किलोमीटर से अधिक पर बिजली की ट्रेन चलायी जाती है ।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद १९२० में रेल विशेषज्ञ विलियम आकवर्थ की अध्यक्षता में रेल सुधार के लिए एक समिति बनी । इस समिति की लगभग सभी महत्त्वपूर्ण सिफारिशें मान ली गयीं । तदनुसार १९२२ में रेलवे का पुनर्गठन किया गया और १९२३ से रेलों के राष्ट्रीयकरण की नीति क्रियान्वित की जाने लगी । इस समिति की सिफारिश पर ही १९२५-२६ से रेल बजट केंद्रीय बजट से पृथक प्रस्तुत किया जाने लगा । 'रेलवे ह्रास कोष' भी स्थापित किया गया और रेलवे को सामान्य राजस्व से अलग कर दिया गया । इन सभी प्रयत्नों के फलस्वरूप रेलवे ने १९२६ से १९३० के बीच अभूतपूर्व प्रगति की और लाभ भी तेजी से बढ़ा । रेलें जो कि अर्थव्यवस्था पर बोझ बन रही थीं, अब वरदान सिद्ध होने लगी थीं । भारतीय रेल को बड़ा झटका तब लगा, जब भारत विभाजन के फलस्वरूप ६.५३९ मील लंबा रेल मार्ग पाकिस्तान में चला गया । किंतु आज भारतीय रेल विश्व में अमरीका, रूस तथा कनाडा के बाद चौथे स्थान पर तथा एशिया में पहले स्थान पर है ।

रेलवे के आर्थिक संसाधन

उल्लेखनीय है कि योजना आयोग ने वर्ष १९९४-९५ में रेलवे का योजना आकार ६१००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ रुपये तय किया था, जो १९९३-९४ के लिए रखे गये योजना आकार से एक सौ करोड़ कम रहा । वर्ष १९९३-९४ के लिए किराये का योजना आकार ६५०० करोड़ रुपये रखा था, लेकिन रेलवे ने अपनी खराब वित्तीय स्थिति के कारण ३०० करोड़ रुपये घटाकर ६२०० करोड़ रुपये कर दिया था । रेलवे द्वारा वर्ष १९९५-९६ के बजट में लगातार पांचवें वर्ष भी १००० से १५०० करोड़ तक किराये-भाड़ों में वृद्धि की गयी । लेकिन संतोष का विषय यह रहा कि वर्ष १९९५-९६ की किराया वृद्धि वर्ष १९९४-९५ की किराया वृद्धि से कुछ प्रतिशत कम रही ।

इस स्थिति से इनकार नहीं किया जा सकता कि देश का अधिकांश यात्री वर्ग कठिनाई से भी इस सहनशक्ति की सीमांत स्थिति से गुजर चुका है । बहुत से कम दूरी के यात्री किराये की अनियमितताओं और भाड़े की अधिक वसूली के कारण परिवहन के इस साधन को छोड़ चुके हैं तो दूसरे बहुत-से यात्री लंबी दूरी के लिए अन्य कोई वाजिब विकल्प न मिल पाने के कारण इसे अपनाते रहने को बाध्य हैं । यह तथ्य भी विचारणीय है कि आज देश में द्वितीय श्रेणी का रेल भाड़ा भी बसों से अधिक है तो रेलवे के प्रथम श्रेणी (वातानुकूलित) के किराये हवाई जहाज के किराये से कुछ ही कम हैं ।

रेलवे के आय स्रोतों में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यही है कि उसे गैर-जरूरी व्ययों में कटौती करनी चाहिए अथवा उन्हें पूर्णतया बंद कर देना चाहिए ।

रेलवे के उच्चाधिकारियों द्वारा की जानेवाली जरूरी अथवा गैर-जरूरी हवाई यात्राओं पर प्रतिवर्ष खर्च होनेवाला करोड़ों रुपया, रेल को अपनी संपूर्ण आय का तीन फीसदी जुर्माने के रूप में प्रतिवर्ष देना पड़ता है जिसमें चोरी गये सामान का मुआवजा व अन्य दूसरी अनियमितताओं के कारण बहुत-से साधन बेकार जाते हैं । विलंब से पहुंचने के कारण रेलगाड़ियों को अधिक ऊर्जा खपानी पड़ती है तथा रेल मंत्रालय का जितना पैसा सरकार की 'जी हजूरी' एवं महत्त्वपूर्ण लोगों की सेवा-सुश्रुषा पर खर्च होता है, उतना तो सरकारी कर्मचारी वर्ग पर भी नहीं होता । इसके अलावा महत्त्वपूर्ण लोगों के लिए रेलगाड़ियों में अतिरिक्त कोच लगाना, उच्च श्रेणी में यात्रा हेतु सैकड़ों की तादाद में मुफ़्त पास जारी करना आदि भी गैर-जरूरी व्यय के कारण हैं ।

यात्रियों के साथ चोरी, मार-पीट, स्टेशन पर फैली दमघोट गंदगी, घटिया एवं महंगा खान-पान वितरण, खड़े-खड़े यात्रा करना इत्यादि के अतिरिक्त रेलों का देर से पहुंचना आज रेल-प्रशासन के मुख्य लक्षण बन गये हैं ।

— द्वारा श्री देशबंधु आर्य
श्यामसिंह बिल्डिंग के पीछे
संतपुरा मोहल्ला
जिला— गाजियाबाद (उ.प्र.)

भारतीय रेलों पर यात्रियों की बढ़ती हुई संख्या सूची

वर्ष	उपनगरीय यात्री	लंबी दूरी के यात्री	कुल यात्री संख्या
१९६०-६१	११,७७०	६५,८९५	७७,६६५
१९७३-७४	१७,१६४	७९,१३०	९६,२९४
१९७४-७५	४४,२६५	१८२,३१८	२२६,५८३
१९९०-९१	५९,८७८	२३६,०६६	२९५,९४४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक संदर्भ में

राजनीति के अपराधीकरण का प्रतीक रावण

• सत्यनारायण भटनागर

आज देश में राजनीति के अपराधीकरण की बड़ी चर्चा है । राजशाही में अपराधीकरण की राजनीति भी चली किंतु प्रजातंत्र के खुले वातावरण में जब घटनाएं घटित होती हैं तो चर्चा होती है और परिणाम भी निकलते हैं ।

हमारे देश में राम-रावण युद्ध एक ऐतिहासिक घटना के रूप में स्वीकार किया जाता है । रामायण का जो प्रभाव जनमानस पर है, वह अन्य किसी ग्रंथ का नहीं, वस्तुतः रामायण की कथावस्तु में राजनीति का अपराधीकरण प्रमुख बिंदु है । जब राजा ही अपराध घटित करने लगे, तब राज्य का क्या होगा ? सीता का रावण द्वारा हरण अपराधीकरण का प्रारंभ नहीं है । अपराधीकरण का प्रवेश तो बहुत पहले हुआ किंतु अपराधीकरण के बाद जो कायरता, उद्दंडता, स्वछंदता रावण के चरित्र में आयी और जिसके कारण वह युद्ध में मारा गया, वह आधुनिक संदर्भ में चिंतन का विषय है ।

रावण का चरित्र

रावण एक राजा के समस्त गुणों से संपन्न धीर, गंभीर, साहसी, वीर, विद्वान व प्रजा पालक था । राक्षस शब्द की जो व्याख्या बाल्मीकीय रामायण के उत्तर कांड के चतुर्थ सर्गः में की गयी है उसके अनुसार "तुम में से जिन लोगों ने रक्षा करने की बात कही हैं, वे राक्षस नाम से प्रसिद्ध हों", यह लिखा गया है । राक्षस जाति एक अलग संस्कृति का पालन करती रही है ।

राजा रावण पुलस्त्यनंदन मुनिवर विश्रावा के पुत्र थे । मुनिवर ने यह घोषणा पूर्व में ही कर दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे देश में राम-रावण युद्ध एक ऐतिहासिक घटना के रूप में स्वीकार किया जाता है । रामायण का जो प्रभाव जनमानस पर है, वह अन्य किसी ग्रंथ का नहीं, वस्तुतः रामायण की कथावस्तु में राजनीति का अपराधीकरण प्रमुख बिंदु है ।

थी कि रावण की माता कैकसी के पुत्र क्रूर स्वभाव वाले और शरीर से भी भयंकर होंगे तथा उनका क्रूर-कर्मी राक्षसों से प्रेम होगा किंतु इसके बाद भी राजा रावण का चरित्र एक महान तपस्वी के रूप में प्रारंभ होता है ।

महान तपस्वी रावण

राजा रावण अपने दोनों भाइयों के साथ घोर तपस्यारत रहे । दशमुख रावण ने दस हजार वर्षों तक लगातार उपवास किया । प्रत्येक सहस्र वर्ष के पूर्ण होने पर अपना एक मस्तक काटकर वह आग में होम कर देता था, जब वह नौ मस्तक होम कर चुका और दसवें मस्तक होम करने का समय आया तब पितामह, ब्रह्माजी प्रसन्न होकर देवताओं के साथ उपस्थित हुए और उन्होंने राजा रावण को 'निष्पाप राक्षस' कहकर बहुत से वर दिये । इन वरों से प्राप्त शक्ति के आधार पर ही राजा रावण महान बलशाली बन गया ।

भगवान शिव की आराधना में भी राजा रावण ने एक हजार वर्ष हाथों की पीड़ा सहते हुए और स्तुति करते बिताये ।

प्रारंभ से अपराधी नहीं

दशमुख रावण सत्ता पाकर प्रारंभ से अपराधी प्रवृत्ति का नहीं रहा । सुंदरकांड नवम-सर्ग में हनुमानजी रावण के श्रेष्ठ भवन में सुंदर स्त्रियों के अवलोकन के समय कहते हैं, 'वहां ऐसी कोई स्त्री नहीं थी, जिसे बल, पराक्रम से संपन्न होने पर भी रावण उनकी इच्छा के विरुद्ध बलात् हर लाया हो । वे सबकी सब अपने अलौकिक गुण से ही उपलब्ध हुई हों' वस्तुतः राजा रावण 'निष्पाप राक्षस' था जब पितामह ब्रह्माजी द्वारा उसे वर प्रदान नहीं किये गये ।

सत्ता से अपराधीकरण

अनेक वरों से शक्ति पाकर राजसत्ता का राजा रावण को स्वच्छंद बना गया । किसी सर्वोच्च शक्ति का भय भी उसे नहीं रहा । तब रावण का अत्याचार, आक्रमण, शक्ति प्रदर्शन प्रारंभ हो गया । राजसत्ता जब अत्याचारी हो जाती है तो अत्याचारी राजसत्ता के अंग हो जाते हैं । यहीं से अपराध का भी राजनीतिकरण हो जाता है ।

इस घटनाक्रम के बाद ब्रह्मर्षि कन्या वेदवती पर बलात्कार का प्रयास, रम्भा पर बलात्कार की घटनाएं युद्धोन्मती रावण द्वारा प्रारंभ कर दी गयीं ।

उत्तरकांड चतुर्विंश सर्ग में ऐसा अपराध कर उसके अपराधीकरण का वर्णन किया है "वह राक्षस जिस कन्या अथवा स्त्री को दर्शनीय रूप सौंदर्य से युक्त देखता, उसके रक्षक बंधुओं का वध करके उसे विमान पर बिठाकर उसका हरण कर लेता था ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति में अपराधीकरण कुछ घटनाएं

नयी दिल्ली में नयना साहनी के शव की तंदूर में जलाने की दिल दहलानेवाली घटना राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण की शर्मनाक घटना है । नयना का पति सुशील शर्मा हालांकि अभी जेल में है किंतु उसे बचाने के लिए राजनीतिक और कानूनी दांवपेचों में मामले को उलझाने का काम जारी है ।

* नयना साहनी कांड के बाद ललितपुर में सुषमासिंह की हत्या का मामला भी उसी कड़ी में एक वीभत्स हत्याकांड रहा जिसमें कांग्रेस की नेता सुषमासिंह की हत्या उसके पति महेंद्र प्रताप सिंह ने की, जिसने १९९१ में समाजवादी जनता पार्टी की टिकट से दमोह संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा था ।

* हरियाणा के करनाल के कांग्रेस कार्यालय में काम करने वाली और राज्य सरकार के एक मंत्री की परिचित युवती १९ वर्षीया अविवाहिता द्रौपदी दो महीने से लापता है । इस घटना को हांलाकि अपहरण से जोड़ा जा रहा है पर इस मामले में हरियाणा के दो-दो वरिष्ठ मंत्रियों की ओर शक की सुइयां घूम रही हैं ।

* उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित राज्य सरकार के अतिथि विश्राम गृह में जून माह में मुख्यमंत्री मायावती पर हुए जानलेवा हमले को भी राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण की एक और कड़ी के रूप में देखा जाना चाहिए ।

* बिहार में हाल में अनगिनत हत्याएं और नरसंहार हुए हैं । जनतादल के नेता रामचंद्र यादव, पूर्व विधायक रंगबहादुर सिंह के पुत्र वरुण की हत्या, कांग्रेस के पूर्व विधायक बच्चा चौबे के संबंधी कैलाश पांडे तथा भाजपा नेता महेन्द्र कुमार की हत्या राजनीति में रावण युग का प्रतीक है ।

सिफारिश का आश्रय

राज सत्ता जब भी अत्याचारी होती है तो उसकी एक सीमा होती है, कोई अन्य शक्ति इस अत्याचार को रोक लेती है । दशमुख रावण के उच्छृंखल व्यवहार को राजा अर्जुन ने रोक देने का प्रयत्न किया । रावण को कैद कर वह अपने नगर ले गया किंतु महर्षि पुलस्त्यजी को जैसे ही इस घटना की जानकारी देवताओं से मिली वे ऋषिपुथ का आश्रय ले माहिष्मतीपुरी आ पहुंचे और कहा "वत्स अब मेरे कहने से तुम दशानन को छोड़ दो, यह तुम से मेरी याचना है ।"

राजा अर्जुन ने ब्रह्मर्षि की बात मान ली और अपराधी उद्दंड राजा रावण कैद से मुक्त हो गया । आज भी राजनीति के अपराधीकरण में कोई शक्तिशाली पुरुष फंस जाता है तो राजसत्ता के उच्चसूत्र उनकी मदद को दौड़े आते हैं और अपराधी मुक्त हो जाता है । हम भूल जाते हैं अतीत की यादों को ।

सत्ता का मद शक्ति प्रदाता है और यह शक्ति व्यक्ति को अपराधीकरण की ओर भी प्रवृत्त करती है क्योंकि उसको चुनौती देता कोई दिखायी नहीं देता और यदि कोई चुनौती देता है तो सत्ता का दंड उसे समाप्त कर देता है तथा किसी महर्षि ब्रह्मर्षि की सिफारिश से भी मुक्ति मिल जाती है ।

राजा रावण सत्ता के अपराधीकरण का एक प्रतीक मात्र है । उसके रहते राजनीति का अपराधीकरण होना तय है किंतु उसकी समाप्ति भी राजा रामचंद्र के हाथों होना तय है । राजा रामचंद्र भी इस अपराधी राजनीतिकरण को तब तक समाप्त नहीं कर सकते जब तक सामान्य जन (वानर) सेना का साथ न हो । आधुनिक प्रश्नों के समाधान के लिए रावण राज्य सत्ता का प्रतीक मात्र है ।

—२, एम. आई. जी., देवरा देवनारायण नगर,
रतलाम-४५७००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोपाल में नौवां कादम्बिनी साहित्य महोत्सव

साहित्य और इल्म की सीमाएं नहीं होतीं : मो. शफी कुरेशी

भोपाल । नौवां कादम्बिनी साहित्य महोत्सव तीन और चार सितम्बर को मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित किया गया । महोत्सव के अंतर्गत कहानी एवं काव्य लेखन प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में नवोदित रचनाकारों ने भाग लिया । चार सितम्बर को स्थानीय पत्रकार भवन में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मोहम्मद शफी कुरेशी ने २९ प्रतियोगियों को नगद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया ।

अपने भाषण में श्री कुरेशी ने कहा कि साहित्य और इल्म की कोई हद नहीं होती । साहित्य में बहुत खजाना है और जरूरत सिर्फ उसे तलाश करने की है । साहित्य का इल्म विशाल क्षेत्र और इतना बड़ा मैदान है कि इसमें जितने लोग भी आयें, कम है । उदीयमान रचनाकारों को भारत की उन महान हस्तियों की ओर देखना चाहिए कि उन्होंने क्या कहा है और क्या किया है, तभी उदीयमान साहित्यकार शाहीन की तरह ऊंचाइयों पर जाएंगे और देश की अस्मत को बढ़ाएंगे ।

हमारे हिंद का आसमान अल्लाह के आसमान से भी ऊंचा है । राम के संबंध में इकबाल ने अपनी नज्म में लिखा है कि राम

महोत्सव में सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती हुई छात्राएं

दीप प्रज्वलित करते हुए मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मोहम्मद शफी कुरेशी । साथ में हैं कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी, हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह के प्रसार प्रबंधक श्री राकेश गुप्ता तथा कादम्बिनी के उप-संपादक श्री सुजीत वाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वजूद में हिंदुस्तान को नाज है क्योंकि यह हिंद हिंदुस्तान की इमाम है । गौतम और गुरुनानक को उन्होंने मर्द काबिल कहा है । इकबाल को भर्तृहरि ने भी प्रभावित किया है और उन्होंने उनके तीनों शतकों का अपनी नज़्मों में अनुवाद किया है ।

गीता के श्लोक 'कर्मण्यवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचनः' से सभी धर्मों को माननेवाले साहित्यकार प्रभावित हुए हैं । ये सब महान भारत के ऐसे उसूल हैं जहां सारी कौम फक्र कर सकती है । मैं चाहूंगा कि विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता के जो पाठ्यक्रम चल रहे हैं उन्हें आज के संदर्भों तथा आज के माहौल के अनुरूप बदलने पर विचार किया जाना चाहिए । आज जो समारोह हो रहा है, ऐसे साहित्य आयोजनों से नौजवानों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है ।

इस तरह के साहित्य महोत्सव आयोजित करने के लिए हिंदुस्तान टाइम्स ग्रुप की मैं प्रशंसा करता हूं । वरिष्ठ साहित्यकारों की जिम्मेदारी यह भी है कि वे नये लोगों की हौसला अफजाई करें और उनका मार्ग दर्शन करें । नवोदित रचनाकार धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभायें, क्योंकि भाषा और संस्कृति का कोई धर्म नहीं होता । वे इतने सशक्त माध्यम हैं जो देश को सुदृढ़ रख सकते हैं ।

समारोह में स्वागत वक्तव्य रखते हुए कादम्बिनी के संपादक तथा वरिष्ठ साहित्यकार श्री राजेंद्र अवस्थी ने कहा कि साहित्य की भाषा जरूर अलग हो सकती है लेकिन उसके मूल तत्त्व और मूल चेतना अलग कदापि नहीं हो सकती है । इस मायने में साहित्य की दुनिया से बड़ी कोई दुनिया नहीं हो सकती क्योंकि इसके माध्यम से हम एक रह सकते हैं । यही कारण है कि हमने कादम्बिनी क्लबों की स्थापना की है । इनके माध्यम से नयी पीढ़ी को साहित्य लेखन के प्रति प्रोत्साहित किया जा रहा है ।

हिंदी पत्रकारिता जब संकट में है तब हम कादम्बिनी के माध्यम से शान के साथ आगे बढ़ रहे हैं । सभी पाठकों ने हमारे प्रयास को पसंद किया है और उसकी सराहना की है । जब तक संपादक और पाठकों का रिश्ता करीबी नहीं होगा तब तक कोई भी पत्रिका सफल नहीं हो सकती । इसलिए हमने बड़े-बड़े नगरों में इस तरह के महोत्सव आयोजित करने की योजना बनायी है । हिंदुस्तान टाइम्स समूह के प्रसार प्रबंधक श्री राकेश शर्मा ने कादम्बिनी साहित्य महोत्सव की रूपरेखा पर प्रकाश

म. प्र. के राज्यपाल श्री मोहम्मद शफी कुरेशी का स्वागत करते हुए कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी एवं हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह के प्रसार प्रबंधक श्री राकेश शर्मा

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री कुरेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

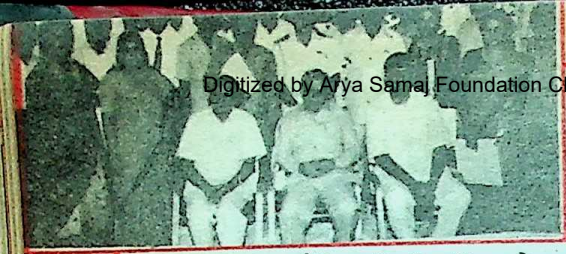

नौवें कादम्बिनी साहित्य महोत्सव के पुरस्कृत नवोदित रचनाकार

डालते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर के बाद अब भोपाल में यह महोत्सव आयोजित किया गया है।

महोत्सव के पीछे उदीयमान रचनाकारों को ऊपर लाने की भावना निहित है। तीन सौ से अधिक कादम्बिनी क्लब देश के विभिन्न नगरों में स्थापित हैं।

समारोह में धन्यवाद ज्ञापन कादम्बिनी के उपसंपादक श्री सुजीत वाजपेयी ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन पत्रकार श्री ओमप्रकाश मेहता ने किया।

इससे पूर्व कहानी एवं काव्य लेखन प्रतियोगिता स्थानीय हमीदिया कॉलेज में संपन्न हुई जिसमें ६४२ नवोदित और उदीयमान रचनाकारों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में शामिल इन रचनाकारों में २९ को पुरस्कार के लिए चुना गया जिनमें १३ कहानी लेखन तथा १६ काव्य लेखन के लिए पुरस्कृत किये गये।

नौवें कादम्बिनी साहित्य महोत्सव में पुरस्कृत रचनाकारों के नाम

कहानी लेखन :

प्रथम पुरस्कार (एक) : लक्ष्मीनारायण पयोधि (३८); भोपाल।

द्वितीय पुरस्कार (एक) : श्रीमती मालती बसंत रमोले (४१); भोपाल।

तृतीय पुरस्कार (एक) : सुनील भटनागर (३८); भोपाल।

सांत्वना पुरस्कार (दस) : कैलाश सतभैया (४२); विदिशा, श्रीमती प्रतिभा स्वाती (३२); भोपाल, नेपाल सिंह जादौन (३२); भोपाल, कु. सैय्यदा सितवत (२०); भोपाल, कु. हेमा दरयानी (२६); भोपाल, केशव प्रसाद गुप्ता (३२); भोपाल, रशीदुद्दीन सिद्दीकी (४३); भोपाल, श्रीमती मनोज तोमर (३१); भोपाल, कैलाश पाराशर 'सागर' (३४); भोपाल, कु. मधु तिवारी; (२९) भोपाल।

काव्य लेखन :

प्रथम पुरस्कार (दो) : महेश सोनी (२३) तथा विधुलता (३४), भोपाल।

द्वितीय पुरस्कार (दो) : ओमप्रकाश यादव (२५); होशंगाबाद तथा कु. आभा अग्रवाल 'अर्पण' (२२); भोपाल।

तृतीय पुरस्कार (दो) : अनिल शर्मा (१७) तथा कु. अभिलाषा गुप्ता (१९); भोपाल।

सांत्वना पुरस्कार (दस) : कु. मीना अग्रवाल (२०); होशंगाबाद, अविनाश पांडे (४१); इटारसी, अंजुल सक्सेना (१९); भोपाल, योगेंद्रनाथ योगी (२४); भोपाल, श्रीमती नफीस जहां (३४); भोपाल, राजेश उपाध्याय (३०); भोपाल, सुश्री कीर्ति गुप्ता (१७); भोपाल, अवधेश कुमार शुक्ल (३५); भोपाल, विजय काटकर (२८); विदिशा, शेखर अनुराग (३५); भोपाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु विद्या

● डॉ. सुधा पाण्डेय

दध्यङ् अग्नि से साक्षात्कार करनेवाले दृष्टा हैं। अश्व के सिर से अश्विनीकुमारों को 'मधु विद्या' की शिक्षा देनेवाला यह आख्यान देवों की अग्निमयी विद्युत्शक्ति का प्रतीक है। दध्यङ् या 'दध्यञ्च' शब्द वैदिकोत्तर साहित्य में सुपरिचित दधीचि नाम से आता है और अनेक उल्लेख साक्ष्य देते हैं 'वृत्र का वध' करने के लिए दध्यङ् या दधीचि की अस्थियों से ही वज्र का निर्माण किया गया था। स्वयं इंद्र ने इन्हें परा-विद्या का उपदेश दिया था !

अथर्वा के पुत्र दध्यङ् महान तेजस्वी और ब्रह्मवर्चस्वी थे। हरा-भरा अरण्य, पक्षियों का मधुर कलरव, नदी की कछार में विचरण करती कपिला धेनुएं, बलिष्ठ वृषभ और दिव्य शांति का साम्राज्य लिए महर्षि दध्यङ् का आश्रम, जो तपोवन का अलौकिक पक्ष था। महर्षि दध्यङ् इसी आश्रम में त्याग-तपस्यापूर्वक शास्त्र-चिंतन और अध्यापन में रत अपना जीवन-यापन करते थे। देव यजन, शिष्यों को दीक्षित करना और परार्थ में अपना सर्वस्व समर्पण उनका जीवन लक्ष्य था। दध्यङ् परमात्मा में लीन होने के कारण अपने अथर्व पुत्र के नाम से ख्यात थे।

दध्यङ् अपने आश्रम में निश्चित भाव से अपने यजन कार्य में व्यस्त थे। असुर गण भी उनसे भयभीत रहते थे, उनके तप-तेज से असुर भी पराभूत थे। उस दिन अन्य दिवसों की भांति आश्रम में ऋषि अपने शिष्यों के मध्य धर्म-चर्चा में मग्न थे, अचानक एक दिव्य रथ आश्रम में आकर रुका। अमोघ अस्त्रों से सुसज्जित और भव्य वस्त्राभूषण धारण किये, जो पुरुष रथ से उतरा, वह कोई और नहीं देवराज 'इंद्र' थे। ऋषि के विस्मय की कोई सीमा न रही।

'अहोभाग्य ! साक्षात देवराज मेरे द्वार पर पधारे हैं', कहते हुए उन्होंने देवराज इंद्र को प्रणाम किया।

देवराज ने ऋषि को संबोधित करते हुए कहा, "ऋषि-प्रवर, मैं तुम्हारी यज्ञ-साधना एवं तपश्चर्या से अति प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें कोई भी वर देने को तत्पर हूं। सृष्टि में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है, जो तुम्हारे लिए मैं अदेय मानूं। निर्भय होकर तुम मुझसे वर प्राप्त कर सकते हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवराज की बात सुनकर ऋषि गद्गद् हो गये, फिर किंचित विचार करने लगे—

'आसक्ति और वासनाओं को त्यागकर तो मैं इस आश्रम में आया था, अब जब मन पर विजय प्राप्त कर चुका हूं, तो पुनः वरदान की आकांक्षा भी क्यों रहे ?'

प्रणत भाव से उन्होंने इंद्र से कहा, "देवाधिदेव, यज्ञ और तपश्चर्या के अतिरिक्त मेरी कोई कामना नहीं । आप मेरे तप से प्रसन्न हैं, यही मेरे लिए महान वर है ।"

देवराज और अधिक विस्मित थे । देवताओं का अधिपति साक्षात् उपस्थित हो उन्हें वरदान देने को उद्धत है और ऋषि की ऐसी निस्पृह भावना, उनका हृदय हर्ष से अभिभूत हो उठा । फिर भी उन्होंने कहा, "मैं आपके यहां आकर बिना कुछ दिये जाऊं, यह मेरे लिए असंभव है । आप कोई भी वर मांगिए, ताकि मेरा यहां आना भी महत्वपूर्ण हो जाए ।"

देवराज के पुनः-पुनः आग्रह ने दध्यङ् को वर मांगने के लिए बाध्य कर दिया । निष्काम दध्यङ् अभी भी संकोच कर रहे थे, किंतु अपनी जिद पर अड़े रहना इंद्र के प्रति अवमानना होती, अतः वे । विनम्र भाव से बोले, "मैंने सारी कामनाओं को तिलांजलि दे दी है, फिर भी मुझे यदि आप वर देना ही चाहते हैं, तो मुझे मधु विद्या का उपदेश दीजिए । उस परा-विद्या के बारे में मुझे अभी भी जिज्ञासा है । यही मेरा अभीष्ट वर है । इसे जानकर मैं समस्त सांसारिक चक्रों से मुक्ति भी पा सकूंगा ।"

संकट में इंद्र

अब दध्यङ् ने इंद्र को विचित्र संकट में डाल दिया । परा-विद्या का उपदेश सभी को योग्य नहीं होता और इस उपदेश के अधिकारी सभी नहीं होते । तथापि, इंद्र विवश थे, वे वचन दे चुके थे । उन्होंने मधु समान श्रेष्ठ लगनेवाली आत्मा एवं ब्रह्म विषयक ज्ञान से युक्त ब्रह्म-विद्या का उपदेश ऋषि को दिया । उन्होंने स्पष्ट किया कि जिस प्रकार पृथिवी, जल और आकाश मधु समान प्रीतिकर होते हैं, उसी प्रकार आत्मा तथा ब्रह्म भी साधक को मधु समान प्रिय होते हैं । संक्षेप में मधु विद्या का अर्थ यही है । इंद्र ने पूरे दो दिवस रहकर ऋषि को गोप्य परा-विद्या के रहस्य विस्तार से बताये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अंत में चेतावनी भी दी कि, "आथर्वन ! यह विषय अति गोपनीय है । इसे किसी को मत बताना । यह उपदेश किसी अन्य को मत देना । यदि किसी अन्य को यह उपदेश तुमने दिया, तो तुम्हारा सिर वज्र से काट दूंगा ।"

इंद्र के वचन सुनकर दध्यङ् ने सोचा कि वे किसी को भी इस मधु विद्या का उपदेश नहीं करेंगे । इंद्र भी यथासमय अवसर पाकर अपने स्थान को लौट गये ।

इंद्र लौटकर यज्ञादिक कार्यों में व्यस्त हो गये । दोनों अश्विनीकुमारों को छोड़कर अग्नि, इंद्र, सोम, विश्वेदेवा आदि सभी देवों ने यज्ञ रचा कि हम श्रीमान को जाएं, हम यशस्वी हो जाएं, हम अन्न को खानेवाले हो जाएं, हमें श्री प्राप्त हो । देवगण परस्पर कहने लगे, 'हमने से जो श्रम, तप, श्रद्धा, यज्ञ-आहुतियों द्वारा यज्ञ को पहले पूर्ण कर लेगा, वह हम सबमें श्रेष्ठ और हम सबका साथी होगा ।'

विष्णु ने सर्वप्रथम यज्ञ को समाप्त कर लिया । वे देवताओं में श्रेष्ठ हो गये किंतु, वे इस यज्ञ को संयत नहीं कर सके । वह एक विलक्षण धनुष को, जिसके तीन सिरे थे, लेकर चले और उसी धनुष के सहारे सिर रख कर खड़े हो गये । देव गण उन पर आक्रमण करने में असमर्थ थे । अतः वे उसी धनुष के सहारे टिके विष्णु के चारों ओर खड़े हो गये । विष्णु के सर्वश्रेष्ठ होने के कारण उनके प्रति देव गणों के मन में ईर्ष्या और स्पृहा बढ़ चली । "यदि कोई इस धनुष की डोरी काट दे, तो इसके बदले में उसे क्या मिलेगा ?" उपदीका चींटी ने गर्व में भर देवों से पूछा । देव गणों के मन उत्साह से भर गये और वे कहने लगे, 'जो इस धनुष की डोरी काट देगा, हम उसके लिए अन्न देंगे, वह रेगिस्तान में भी जल पा सकेगा, हम उसे विभिन्न प्रकार के भोजन का आनंद भी देंगे ।" "अच्छा", कहकर चींटियों ने विष्णु के पास जाकर धनुष की डोरी काट दी । जब डोरी कट गयी तो धनुष के सिरे उछल गये, जिससे विष्णु का सिर कट गया । देव व्यग्रता से उनके पास दौड़े । सबसे पहले इंद्र पहुंचे और उन्होंने अंग-अंग से चिपट कर उन्हें घेर लिया और घेरकर उनका यश बन गये । उस विष्णु को देवों ने तीन भागों में बांट लिया और अग्नि ने प्रातः सवन किया, इंद्र ने दोपहर का सवन किया और विश्वेदेवों ने सायं का सवन किया । गायत्री, त्रिष्टुप और जगती से देव गण बिना सिर के उस विष्णु या यज्ञ के निरंतर श्रम करते रहे ।

दध्यङ् अथर्वण को यह विद्या पता चल गयी थी कि कैसे सिर जुड़े और कैसे यह पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो । अश्विनीकुमार दध्यङ् के प्रिय शिष्यों में से थे, तथापि, उन्होंने उन्हें इस मधु विद्या का उपदेश नहीं दिया था, क्योंकि एक तो वे सदैव लौकिक ऐश्वर्य में लिप्त रहते थे । दूसरे, एक बार उनका इंद्र से विवाद हो जाने के कारण सभी देव उनसे नाराज थे और सभी एकमत से उन्हें यज्ञ में सम्मिलित न करने का निश्चय कर चुके थे । दोनों अश्विनीकुमार इस अपमान से अत्यंत दुखी थे । वे उसी दुखी भाव से अपने गुरु के पास पहुंचे और कहने लगे, "गुरुदेव, अभिमानी इंद्र अपने हृदय में हमारे प्रति ईर्ष्या रखता है । इसी से उसने यज्ञ-यागादि से हमारा बहिष्कार भी कर दिया है । हम देवलोक में आदरपूर्वक रह भी नहीं पा रहे हैं । इस अपमान से हमारे हृदय में ज्वालाएं जल रही हैं । हम चाहते हैं कि किसी प्रकार इस अपमान का बदला लिया जाए ।"

अश्वमुख से उपदेश

दध्यङ् क्षणभर शांत रहकर गंभीर वाणी में बोले, "वत्स ! देवराज इंद्र के प्रति दुर्भावना रखना तुम्हारे लिए अशोभनीय है । यज्ञ का भाग और यज्ञ-यागादि का अधिकार उन्हीं देवों को मिल पाता है, जो सांसारिक कार्यों से, वासनाओं से विरत रहते हैं, क्योंकि वही पूर्ण ब्रह्म-विद्या को जान पाते हैं । तुम लोगों में यह विशेषताएं नहीं हैं । अतः तुम इसी कारण से यज्ञ में भी निमंत्रित नहीं किये जाते ।"

यह सुनकर दोनों अश्विनीकुमार— दस्र और नासत्य निराश हो उठे । अपनी लौकिक विद्याओं में वे इतने पारंगत थे कि उनका यश सर्वत्र फैल चुका था । किंतु, यज्ञ में सम्मिलित न किये जाने से उनके हृदय दग्ध थे । मधु विद्या को सीखे बिना वे अब यज्ञ में सोमपान के अधिकारी नहीं बन सकते थे । अतः प्रणत भाव से दोनों भाइयों ने निवेदन किया, "पूज्य गुरुदेव ! हम आपके पास मधु विद्या की जिज्ञासा से आये हैं । कृपाकर, हमें उसके बारे में जानकारी दीजिए ।"

ऋषि को इंद्र की चेतावनी याद थी । वे कहने लगे, "इंद्र ने कहा है कि यदि इसे किसी और को बताओगे तो मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा । इसलिए मैं यह विद्या तुम्हें नहीं सिखा सकता ।"

"जिज्ञासु शिष्य को उपदेश न करना गर्हित है अतः आप हमें उसका उपदेश अवश्य दीजिए", दस्र ने हाथ जोड़ते हुए पुनः निवेदन किया ।

"मुझे भय है कि इंद्र को जब यह पता चलेगा कि मैंने तुम्हें मधु विद्या का रहस्य बता दिया है, तो वह मेरा सिर काट देंगे ।"

"गुरुदेव, हमें किसी प्रकार अपना शिष्य बनाइए । आप चिंता न करें । इंद्र यदि देवराज हैं, तो हम भी वैद्यराज हैं । हम आपको संजीवनी विद्या से बचा लेंगे । आपका सिर काट कर हम अलग कर देते हैं और अश्व का सिर आपके धड़ में जोड़ देते हैं । उपदेश देने पर यदि इंद्र उसे काटकर अलग कर देगा, तब हम आपके सिर को पुनः आपके धड़ से जोड़ देंगे । इस प्रकार आप हमें अश्वमुख से शिक्षा देंगे । आपका वचन भी पूरा होगा और जीवन भी बच जाएगा ।"

अश्विनीकुमारों की यह प्रार्थना सुनकर ऋषि किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये । किंतु, उनके बार-बार के आग्रह से प्रभावित भी हुए क्योंकि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्विनीकुमार भी साधारण देव नहीं थे । वे भी 'सत्य संघ नासत्यौ' थे और शिष्य के रूप में उनके समक्ष खड़े थे । फिर उनके बताये उपाय से मधु विद्या देने में कोई हानि भी तो नहीं थी, यह सोचते हुए उन्होंने अश्विनीकुमारों का उपनयन कर दिया । उसके बाद उन दोनों ने एक घोड़ा लाकर उसका सिर काटा और उसका सिर दध्यङ् के सिर के स्थान पर रख दिया । फिर निवेदन किया, "हे, गुरुदेव ! आप अब हमें ब्रह्म-विद्या का उपदेश करें ।"

ऋषि की बैखरी प्रकट हो गयी और उसी से उन्होंने मधु विद्या का रहस्य अश्विनीकुमारों को स्पष्ट कर दिया । अश्विनीकुमार पूर्ण ब्रह्म-ज्ञानी बन गये । वे ऋषि के प्रति कृतज्ञ भाव से विनत होकर कहने लगे, "प्रभु ! आपने मधु विद्या की जानकारी देकर हमें कृतार्थ किया, हमें भी यज्ञ का अधिकारी बना दिया । अब हम भी सोमपान के अधिकारी हो गये ।"

वे अभी वार्तालाप में लीन ही थे कि इंद्र का रथ घर्घर ध्वनि करता हुआ सामने आ पहुंचा । मधु विद्या का गोपनीय रहस्य दध्यङ् ने अश्विनीकुमारों को बता दिया है, यह सूचना उन तक पहुंच चुकी थी । पहुंचते ही बिना कुछ कहे वे ऋषि की ओर उन्मुख हुए और क्षणभर में उनका सिर काट कर अलग कर दिया । घोड़े का सिर कट कर जमीन पर घूमने लगा, मानो नृत्य कर रहा हो । अश्विनीकुमार तो इस बात के लिए तैयार ही थे । उन्होंने तत्काल संजीवनी विद्या से दध्यङ् का सिर पुनः धड़ से लगा दिया । मृत व्यक्ति को जीवित करना उनके लिए कोई कठिन न था । मंत्रपूत जल के स्पर्श से ऋषि शीघ्र ही उठकर बैठ गये । इंद्र विस्मित थे

और चकित-भीत नेत्रों से दध्यङ् की ओर देख रहे थे । ऋषि प्रसन्न भाव से मुसकरा उठे । अश्विनीकुमारों से वे अतिप्रसन्न हुए । दिव्यमंत्रों का साक्षात्कार होने लगा । उन्होंने उनकी प्रार्थना की, 'चिर प्रकाशमान हैं, शुभस्पति हिरण्यज्योतिवाले मधुकशायुक्त मधुवर्णवाले आश्चर्यमय और सत्य संघ', आप मधु विद्या के परम अधिकारी हैं । इंद्र भी अपने कृत्य पर पश्चाताप कर रहे थे क्योंकि, ऋषि ने अधिकारी को ही उपदेश दिया था । अतः इंद्र पुनः महर्षि के शरणागत हुए ।

दध्यङ् ने शांत चित्त से इंद्र व अश्विनीकुमारों को संबोधित करते हुए कहा, "मैंने घोड़े के सिर से इन दोनों को इस मधु विद्या की शिक्षा स्वेच्छा से दी, यह अश्व सिर उसका आश्रय था । तथापि, तुम दोनों के लिए यह निर्देश है कि यह विद्या हर एक को न बताएं । कहीं इंद्र पुनः सिर न काट दें, इसलिए उसी को शिक्षा दें, जो वेदज्ञ हो, जो प्रिय हो, जो संवत्सर भर शिष्य रूप में रहे । ऐसा न करने पर पाप होगा ।"

अश्विनीकुमारों का महत्त्व मधु विद्या के ज्ञान से और बढ़ गया । वे भी पूज्य भाव से अग्नि, इंद्र और सोमादि के साथ यज्ञ में सम्मिलित किये जाने लगे ।

— प्राचार्य,
एम.के.पी.पो.ग्रे. कालेज, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमायाचना को अकसर दुर्बलता का प्रतीक मान लिया जाता है। वास्तविकता यह है कि क्षमायाचना के लिए चारित्रिक दृढ़ता की आवश्यकता होती है। इस लेख के लेखक डॉ. ऐरोन लाजारे अमरीका के एक प्रतिष्ठित मनोचिकित्सक हैं। उनका कहना है कि आज समूचा संसार एक 'छोटा-सा गांव' बन गया है। अतः न केवल व्यक्तिगत जीवन में वरन अंतरराष्ट्रीय जगत में भी क्षमायाचना का विशेष महत्त्व है। नेलसन मंडेला, बोरिस येल्तसिन, पोप जॉन पाल द्वितीय आदि ने सार्वजनिक रूप से क्षमा मांगकर समाज में सौहार्द स्थापित किया है!

यह दुर्बलता का प्रतीक नहीं है

'मुझे खेद है!'

● डॉ. ऐरोन लाजारे, एम.डी.

सभ्य समाज में क्षमायाचना और क्षमादान का विशेष महत्त्व है। यह क्षमायाचना और क्षमादान चाहे दो आत्मीय-जन के बीच हो अथवा समूहों के या कि राष्ट्रों के बीच! यदि ईमानदारी के साथ क्षमायाचना की जाती है, तो अपमान की भावना का निराकरण तो करती ही है, साथ ही क्षमाशील भी बनाती है।

क्षमा में बहुत बड़ी शक्ति निहित है, तथापि इस सामाजिक कौशल्य के प्रति हम बहुत कम ध्यान देते हैं। अपने बच्चों में क्षमाशीलता की भावना पैदा करने के लिए हम रंचमात्र भी ध्यान नहीं देते। यही क्यों, हम स्वयं भी इस विषय में कितना कुछ जानते हैं? हम हमेशा जीतते रहने, हमेशा सफलता प्राप्त करने और हर काम को चुस्त-दुरुस्त ढंग से करने की भावना से इतने आप्लावित रहते हैं कि क्षमाशीलता के महत्त्व को समझ ही नहीं पाते। उस ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। क्षमायाचना, ईमानदारी के साथ क्षमायाचना करने के लिए हममें अपनी गलती को, असफलता को, कमजोरी को स्वीकार करने की क्षमता होनी आवश्यक है। पर निरंतर जीत के लिए हम इतने आतुर, इतने

कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यग्र होते हैं कि अपनी गलतियों और कमजोरियों को स्वीकार करने की हमें फुरसत ही नहीं मिलती ।

ईमानदारी से मांगी गयी क्षमायाचना वांछित प्रभाव डालती है, जबकि बेमन से, लाग-लपेट के साथ की गयी क्षमायाचना के गंभीर दुष्परिणाम होते हैं । इस तरह कूटनीतिक-भावना के साथ की गयी क्षमायाचना संबंधों को सदा-सदा के लिए खराब कर सकती है और जीवनभर तिक्त और दुर्भावना से ग्रस्त रख सकती है ।

एक मनोश्चिकित्सक के रूप में मैंने आठ वर्षों तक लज्जा और अपमानजनित विकारों का अध्ययन किया है । मैंने पाया कि क्षमायाचना में रोग-निवारण की शक्ति निहित है । मैं हमेशा देखता था कि कैसे लोगों ने छोटी-छोटी बातों को लेकर अपमान किया, अपमानित हुए और क्षमाशीलता के अभाव में कैसे शिकवे-शिकायतों को जिंदगीभर ढोते रहे । यदि कोई उनसे ईमानदारी के साथ क्षमायाचना कर लेता, या वे ईमानदारी से क्षमा मांग लेते, तो शायद व्यर्थ के मानसिक तनाव से बच सकते थे ।

मैंने क्षमाशीलता, क्षमायाचना के विषय में और अध्ययन करने का प्रयत्न किया और तत्संबंधी साहित्य की भी खोज की लेकिन, व्यावहारिक साहित्य में मुझे क्षमा के विषय में विशेष कुछ नहीं मिला । जो कुछ सामग्री प्राप्त हुई वह भाषायी साहित्य अथवा समाजशास्त्र में थी । पर उनमें भी क्षमायाचना की आवश्यकता, उसकी अपेक्षा 'अपराध' करनेवाले और उसके 'शिकार' पर क्षमायाचना के प्रभाव के विषय में विशेष कुछ नहीं मिला ।

धार्मिक साहित्य में

ईसाई एवं यहूदी धर्म-साहित्य में मुझे अवश्य क्षमायाचना के महत्त्व, उसके लाभ पर बहुत-कुछ मिला । सचाई तो यह है कि यहूदी धर्मग्रंथ 'तलमुड' में एक स्थल पर घोषणा की गयी है कि ब्रह्मांड की सृष्टि करने के पूर्व ईश्वर ने पश्चाताप का सृजन किया । शायद, ईश्वर को यह ज्ञात था कि मनुष्य ढेर-सारी गलतियां करेंगे और तब उन्हें पश्चाताप स्वरूप क्षमायाचना की जरूरत भी पड़ेगी ।

क्षमायाचना की सबसे अधिक आवश्यकता व्यक्तिगत जीवन में ही पड़ती है । जब हम किसी की अकेले या सार्वजनिक रूप से जाने-अनजाने उपेक्षा करते हैं, उसे अपमानित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं, छोटा या हीन सिद्ध करते हैं, तो हम उसके अहम्‌को, उसके निजी अभिमान को ठेस पहुंचाते हैं। हर व्यक्ति अपने विषय में एक धारणा बनाकर जीवन जीता है। उसकी अपनी विचारधारा होती है, स्वयं के व्यक्तित्व का वह एक रूप तय कर लेता है, लोग उसे कैसे देखें, उसके बारे में उनकी धारणा क्या हो, यह भी वह मन ही मन तय कर लेता है।

आप अपने-आपको एक कुशल, कर्मठ, सफल अधिकारी मानते हैं। आपको अपनी कार्यशैली, चातुर्य पर अभिमान भी है। अब आपके उच्चाधिकारी आपको निर्देश देते हैं कि आप एक दूसरे केबिन में स्थानांतरित हो जाएं। इस केबिन में न कायदे का फरनीचर है, न कोई खिड़की है। न प्रकाश की समुचित व्यवस्था है। इस निर्देश से आप स्वयं को अपमानित अनुभव करते हैं। आप आहत होते हैं। आपको लगता है कि आपको हीन बताने की कोशिश की जा रही है। आप मन ही मन घुलते रहते हैं। और यह चोट आपको शायद हमेशा सालती रहे, भले आपके अधिकारी आपको दोबारा वही पुराना केबिन दे दें, पर आपके मन पर जो चोट पहुंची है, वह स्थायी बन सकती है, यदि समय रहते गलती का परिमार्जन न कर लिया जाए। चाहे इस तरह की चोट पारिवारिक जीवन में लगे या कार्यालयीन जीवन में अथवा सामाजिक जीवन में, इस चोट की गहराई कई बातों पर निर्भर करती है, मसलन, ऐसी चोट पहुंचाने के पीछे मंशा क्या थी, चोट पहुंचानेवाले और चोट खानेवाले के बीच रिश्ता कैसा है, चोट खानेवाले की मानसिकता कैसी है, अर्थात वह उस चोट के असर को किस तरह लेता है। उसे तात्कालिक प्रसंग समझकर भूल जाता है अथवा हमेशा याद रखता है।

स्व-धारणा को ठेस

व्यक्ति के लिए स्व-धारणा (सेल्फ कांसेप्ट) बहुत महत्त्वपूर्ण, बहुत प्रिय होती है। उस पर वह जरा-सी चोट भी बर्दाश्त नहीं करता, जबकि जीवन में पग-पग पर ऐसी स्थितियां जाने-अनजाने बन ही जाती हैं कि जब 'स्व-धारणा' को ठेस लग जाती है। मसलन, किसी पार्टी में, किसी समारोह में, किसी पारिवारिक उत्सव में किसी न किसी की 'स्व-धारणा' के आहत होने की पूरी आशंका बनी रहती है। उपेक्षा अनुभव करना, 'सही-व्यवहार नहीं हुआ,' 'अन्याय किया गया' आदि विचारों को जन्म देनेवाले कारण 'स्व-धारणा' को आहत करते हैं। और जब 'स्व-धारणा' आहत होती है, तो व्यक्ति आशा करता है कि चोट पहुंचानेवाला व्यक्ति क्षमा मांगकर अपनी गलती का परिमार्जन करे। यदि तत्काल क्षमायाचना कर ली गयी तो, उसे सुकून मिलता है और वह उस प्रसंग को भुला देना ही ठीक समझता है।

मेरे विचार से क्षमायाचना के लिए चार मूलभूत उद्देश्य हैं—

प्रथम : बिगड़े संबंधों की पुनर्स्थापना के लिए

यदि आप किसी को चाहते हैं, उसका आदर करते हैं, उसकी मित्रता पसंद करते हैं, कार्यालय में किसी सहयोगी से आपका पुराना संबंध है और साथ है, तब यदि आप उसकी 'स्व-धारणा' को जाने-अनजाने आहत करते हैं, तो क्षमायाचना संबंधों को फिर से सामान्य बना देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय : कभी-कभी आप स्वयं अनुभव करते हैं कि 'मुझसे ज्यादती हो गयी है, माफी मांग लेनी चाहिए ।'

अकसर विवेक तत्काल सही राह दिखाता है। आपको अनुभव होता है कि आपके व्यवहार के कारण किसी व्यक्ति को चोट पहुंची है। इस स्थिति में यदि आप तत्काल क्षमा मांग लेते हैं, तो दूसरे व्यक्ति की व्यथा को काफी कुछ कम कर देते हैं ।

तृतीय : कुछ व्यक्ति केवल दंड से बचने के लिए क्षमायाचना करते है ।

चतुर्थ : कुछ व्यक्ति अपराध-बोध की भावना से मुक्ति पाने के लिए क्षमायाचना करते हैं ।

वे अनुभव करते हैं कि उनसे गलती हो गयी है और ही भले उसकी उस गलती पर आप ज्यादा ध्यान न देते हों, वे आप से बारंबार क्षमायाचना करते हैं ।

जो भी उद्देश्य हो, पर क्षमायाचना का प्रभाव पड़ता ही है । क्षमायाचना की प्रक्रिया में आहत करनेवाले और आहत होनेवाले के बीच 'शर्म' (शेम) और 'शक्ति' (पावर) का आदान-प्रदान होता है ।

क्षमायाचना कर अपने व्यवहार की 'शर्म' को दूर कर अपनी तरफ मोड़ लेते हैं । आप स्वीकार करते हैं कि आपने किसी को चोट पहुंचायी है, उसे नीचा दिखाया है और क्षमायाचना कर आप यह बताना चाहते हैं कि वास्तव में 'गलती मेरी थी', या 'मूर्खता मेरी थी' और इसलिए छोटा तो मैं हूं, आप नहीं । आपका यह व्यवहार आहत होनेवाले व्यक्ति को क्षमाशीलता की शक्ति प्रदान करता है । यही है,

क्षमायाचना में 'शर्म' और 'शक्ति' का आदान-प्रदान ! और यही है, 'क्षमायाचना' के भीतर छिपी शक्ति का रहस्य !

सही क्षमायाचना

व्यावहारिक जगत में यह सब करना जरा कठिन होता है । 'क्षमायाचना' के भी तरीके हैं— सही और गलत ! यदि सही ढंग से क्षमा नहीं मांगी गयी, तो वह प्रभावहीन हो जाती है । उदाहरण के लिए, सही क्षमायाचना तब होती है, जब आप स्पष्ट शब्दों में अपनी गलती को रेखांकित कर क्षमा मांग लेते हैं । सही क्षमायाचना का एक और तत्व है और वह यह कि आप स्पष्ट कर देते हैं कि किन कारणों से, किन स्थितियों में आपसे यह व्यवहार हुआ ! आपकी क्षमायाचना से यह प्रतीति हो जानी चाहिए कि वास्तव में आप अपने व्यवहार पर दुखी हैं । यह प्रतीति संबंधों को तत्काल सामान्य बना देती है ।

मैं तो क्षमायाचना को एक सामाजिक-समझौता भी मानता हूं । क्षमायाचना के फलस्वरूप व्यक्ति ही नहीं, समूह और राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी परस्पर निकट आते हैं । क्षमायाचना एक समान नैतिक आधार की भी रचना करती है । सभी समाजों में क्षमायाचना का महत्त्व अनुभव किया जाता है । सार्वजनिक रूप से मांगी क्षमा यह भी सिद्ध करती है कि समूहों के बीच सद्भाव, सौमनस्य किसी एक अकेले व्यक्ति की विजय से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ।

उदाहरण के लिए, मैं दक्षिण अफरीका के पूर्व प्रधानमंत्री एफ. डब्ल्यू. डी क्लार्क द्वारा सार्वजनिक रूप से मांगी क्षमायाचना को विश्व की महानतम क्षमायाचना मानता हूं ।

२९ अप्रैल, १९९३ को डी क्लार्क ने एक पत्रकार-परिषद में स्वीकार किया कि रंगभेद के कारण लोग बेघरबार हुए, उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगा, उनकी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा । इस सब के लिए हमें गहरा खेद है ।

'गहरा खेद', डी क्लार्क ने आगे कहा, 'मात्र शब्दों तक सीमित नहीं है, वह सिर्फ वाणी तक सीमित नहीं है । उसका तात्पर्य यह है कि यदि मैं समय-चक्र को लौटा सकता, तो उसके लिए मुझे जो भी करना पड़ता, करता । मैं पूरी कोशिश करता हूं कि वह सब नहीं हुआ होता ।'

वास्तविकता तो यह है कि आज जब समूचा संसार एक 'छोटा-सा गांव' बन गया है, तब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्षमायाचना का महत्त्व बढ़ता जा रहा है । संचार-माध्यमों, त्वरित परिवहन साधनों ने संसार को छोटा कर दिया है । हम सब एक ही आकाश, हवा, पानी, पर्वत, नदियों के हिस्सेदार हैं । इसलिए अंतरराष्ट्रीय जगत में संघर्षों के शांतिपूर्ण निपटारे में क्षमायाचना एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी । इसी सदी में राष्ट्र नायकों ने, राष्ट्रों ने अपनी गलतियों के लिए सार्वजनिक रूप से क्षमायाचना की है और संबंध सुधारे हैं । जैसे, नेलसन मंडेला ने रंगभेद के खिलाफ संघर्ष के दौरान अफरीकी नेशनल कांग्रेस द्वारा की गयी ज्यादतियों के लिए क्षमा मांगी । भारतीय जनता पर ईसाई उपनिवेशवादियों द्वारा किये अत्याचारों के लिए पोप जॉन पॉल-द्वितीय ने क्षमायाचना की । द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानियों द्वारा की गयी ज्यादतियों के लिए पूर्व प्रधानमंत्री प्रोफेसर हीरो होसोकावा ने क्षमायाचना की, रूसी राष्ट्रपति येल्तसिन ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोवियत सेनाओं द्वारा १५,००० पोलिश सैन्याधिकारियों के संहार पर माफी मांगी । और यह तो केवल शुरुआत है !

सार्वजनिक क्षमायाचना

पर क्षमायाचना तभी प्रभावपूर्ण होती है, जब वह ईमानदारी से, सही ढंग से मांगी गयी हो । सार्वजनिक जीवन में खुलेआम मांगी गयी माफी भी कभी-कभी वांछित असर नहीं डालती । जैसे पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन द्वारा मांगी गयी माफी । रिचर्ड निक्सन ने माफी तो मांगी लेकिन, साथ ही यह भी कहा कि जिन बातों के लिए वे क्षमा मांग रहे हैं, उन्हें उन स्थितियों में उन्होंने ठीक ही समझा था ! वाटरगेट की भांति निक्सन ने स्पष्ट शब्दों में उन बातों का उल्लेख नहीं किया, केवल गोल-मटोल बातें करते रहे । जबकि क्लार्क ने स्पष्ट शब्दों में रंगभेद के अपराध को स्वीकार किया था ।

क्षमायाचना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनता है— व्यक्ति का अहम्, स्वाभिमान । उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है, क्षमा मांगकर वह छोटा हो रहा है। इसमें लज्जित होने का भय भी बना रहता है। क्षमायाचना करने का अर्थ है अपनी गलती स्वीकार करना और कोई भी व्यक्ति गलती स्वीकार करना बहुत कम पसंद करता है। कभी-कभी 'क्षमायाचना' जले पर नमक छिड़कती है। उदाहरण के लिए द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान एक जापानी-अमरीकी को चार वर्षों तक नजरबंद रखा गया। बाद में अमरीकी सरकार ने हरजाने के स्वरूप उसे बीस हजार डॉलर देने चाहे। उस व्यक्ति को इससे और चोट पहुंची। उसने कहा सरकार ने उसके जीवन के चार वर्ष चुरा लिये और अब वह उसके प्रत्येक वर्ष की कीमत पांच हजार डॉलर आंक रही है!

क्षमायाचना में समय का भी बेहद महत्त्व होता है। कुछ मामलों में तत्काल क्षमा मांग लेना ज्यादा लाभदायक, प्रभावपूर्ण होता है। बाद में मांगी गयी माफी कोई असर नहीं डालती।

लोग क्षमायाचना को दुर्बलता का पर्याय समझ लेते हैं, जबकि क्षमायाचना शक्ति का प्रतीक होती है। वह ईमानदारी का भी परिचायक है। क्षमायाचना साहस का भी कार्य करती है। क्षमायाचना के लिए चारित्रिक दृढ़ता भी आवश्यक होती है। क्षमा मांगकर हम यद्यपि अपनी दुर्बलता का इजहार करते हैं, पर साथ ही यह भी स्पष्ट करते हैं, 'कुछ भी हो, मैं एक अच्छा आदमी हूं, दिल का बुरा नहीं।'

प्रस्तुति—दु.प्र.शु.

महापुरुषों की दृष्टि में क्षमा

— *जो लोग बुराई का बदला लेते हैं, बुद्धिमान उनका सम्मान नहीं करते, किंतु जो अपने शत्रुओं को क्षमा कर देते हैं, वे स्वर्ण के समान बहुमूल्य समझे जाते हैं।*

— तिरुवल्लुवर

— *ज्ञान का भूषण क्षमा है।*

— क्षेमेंद्र

— मित्र की अपेक्षा शत्रु को क्षमा करना सहज है।

—डोरोथी डैल्यूजी

— क्षमा करने से ही मानव क्षमा का पात्र बनता है।

— संत फ्रांसिस

—क्षमा कर देना शत्रु पर विजय पाना है।

— हजरत अली

— *क्षमा मानवी भावों में सर्वोपरि है। दया का स्थान इतना ऊंचा नहीं। दया वह दाना है, जो पीली धरती पर उगता है इसके प्रतिकूल क्षमा वह दाना है, जो कांटों में उगता है। दया वह धारा है, जो समतल भूमि पर बहती है, क्षमा कंकरों और चट्टानों में बहनेवाली धारा है। दया का मार्ग सीधा और सरल है, क्षमा का मार्ग टेढ़ा और कठिन है।*

— प्रेमचंद (रंगभूमि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुण्य फलता नहीं देखा

हालांकि मेरा वक्त ने रस्ता नहीं देखा
लेकिन किसी मुकाम पे ठहरा नहीं देखा ।

हूं आईना मैं एक ऐसा दोस्तो जिसने
मुद्दत से किसी शख्स का चेहरा नहीं देखा ।

होती है प्यास क्या ये उससे पूछते हो क्यों
जिस नाव ने सूखा हुआ दरिया नहीं देखा ।

रोटी के लिए शहर में उस शख्स ने आकर
आंगन में खेलता हुआ बच्चा नहीं देखा ।

ख्वाबों को बचाने के लिए टूट खुद गया
पर उम्रभर टूटा हुआ सपना नहीं देखा ।

मुझको लगे जो चोट तो वो तिलमिला उठे
ऐसा तो मैंने एक भी रिश्ता नहीं देखा ।

ऐसा नहीं कि मैंने सदा पाप ही किये
पर पुण्य कोई उम्र में फलता नहीं देखा ।

● सुरेंद्र चतुर्वेदी

—'गजल' कंदन नगर, अजमेर-३०५००७

गीत-वेदना

उम्र का हर साल बस आता रहा जाता रहा
ये हमारे बीच में अब कौन-सा नाता रहा।

एक प्रतिमा टूटकर बिखरी मिरे चारों तरफ
कैसी पूजा कैसा अर्चन भ्रम सभी जाता रहा।

जल रहा था एक दीपक रोशनी के ही लिये
उसके तल पर ही मगर अंधियार गहराता रहा।

हम बने सीढ़ी मगर हर बार पीछे ही रहे
रख के हम पे पांव वो ऊंचाइयां पाता रहा।

उम्र के उस मोड़ पर हमको मिलीं आजादियां
कट चुके थे पंख जब उड़ने का फन जाता रहा।

जिंदगी की वेदना गीतों में मैंने ढाल दी
गीत मेरे गैर की धुन में ही वो गाता रहा।

● दीप्ति मि

—३१०-ए, सैक्टर-२७ नोएडा (उ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वोट की राजनीति

बापू !!
जब तुमने कहा कि सच बोलो
तो हमने उनकी जुबान काट ली
और जब तुमने चाहा
कि उन्हें भर पेट रोटी मिले
तो हमने आपस में बांट ली
तुमने सहते-सहते
सहनशीलता की ऐसी हालत बना दी
अहिंसा के नाम पर
हमने तुम्हीं पर गोली चला दी
चोरी न करने का तुम्हारा पाठ
हमने अनेक बार दुहराया
और परिणाम से परिचित होने की जिज्ञासा में
अपने आपको सलाखों के पीछे पाया
क्षमादान को आत्मसात करने का
हमने बीड़ा उठा लिया
बलात्कार करके लौटे बेटे को
अपनी छत्र-छाया में छुपा लिया
तुम्हारी पूजा-प्रार्थना का प्रतिफल
सबके लिए सुख-शांति, आत्मबल
समय के साथ इसके माने बदल गये
गंतव्य को छोड़कर हम आगे निकल गये
प्रार्थना आज भी करते हैं
हे प्रभु ! अपने नाम की लॉटरी खुल जाए
या पड़ोसी के घर इनकम टैक्स का छापा
पड़ जाए
लाभ ही लाभ हो व्यापार में
शेयर के दाम बढ़ जाएं बाजार में
तुम्हारी सेवा-सद्भाव का आचरण
वर्तमान में हो गया है स्वार्थ का व्याकरण
आपसी संबंधों में पड़ गयी है दरार
न आपस में मुहब्बत है, न प्यार
तुमने समाज में समता लाने के लिए
जो कुछ काम किया, आज भी बाकी है
वोट की राजनीति, फिर से समाज को
बांटने पर लगी है, कैसी चालाकी है
समाज के ठेकेदारों की
अपनी कार्यशैली है, अपनी पसंद है
निर्धन के लिए न्याय का
रास्ता फाइलों में बंद है
आज सारे हिंदुस्तान को
या तो बढ़ती आबादी मार गयी
या फिर समाज को कलंकित करनेवालों को
क्षमा करने की तुम्हारी सादगी मार गयी
गरीब को दो जून की रोटी
मिल जाए इससे बड़ी उपलब्धि नहीं है
देश की जनता आपस में मिल-जुलकर रहे
इससे बड़ी समृद्धि नहीं है

● किशन स्वरूप
— ३५ हाइडिल कॉलोनी
कविनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

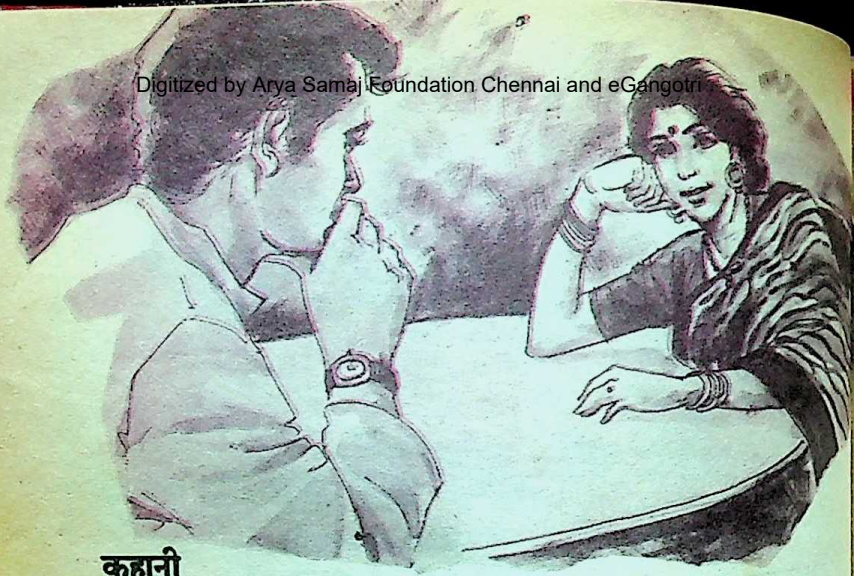

कहानी

उजाला ही उजाला

● पवित्रा अग्रवाल

जैसे ही मैं अस्पताल में पहुंचा कि मि. सरीन मिल गये। उनके चेहरे पर संतोष के भाव थे। वह बोले, "बेटा ! डॉक्टर ने जितने टैस्ट कराये थे, सब की रिपोर्ट आ गयी है। शायद, तुम्हें पता हो कि तुम्हारा गुरदा मेरे बेटे को लगाया जा सकता है। हो सकता है, तीन-चार दिन में ही ऑप्रेशन हो जाए।

जितनी जल्दी मि. सरीन को है, उतनी ही मुझे भी।

क्योंकि, इस ऑप्रेशन से मेरे अनेक सपने जुड़े हैं। जब से दुर्घटना में मैंने अपना हाथ खोया है, तब से मैं बहुत परेशान हूं। जीने की चाह ही जैसे खत्म हो गयी है क्योंकि अब मैं घर-परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियां निभाने में भी असमर्थ हो गया हूं। इस दुर्घटना की वजह से मेरा हाथ ही नहीं, नौकरी भी चली गयी

लक्ष्मी, मेरी पत्नी जिससे मैंने प्रेम-विवाह किया था, साथ जीने-मरने की कसमें खायीं थीं। आज परिवार की गाड़ी खींचने का कार्य अकेले उसके कंधों पर आ पड़ा है। फिर भी मेरे सामने वह हर समय खुश दिखने का प्रयत्न करती है। कभी घर-गृहस्थी, बच्चों के भविष्य, आर्थिक परेशानियों का रोना लेकर मेरे पास नहीं बैठती। सप्ताह पहले ही उसके यह पूछने पर कि 'इतना उदास क्यों बैठे हो ?' मैं अपने को रोक नहीं पाया। न चाहते हुए भी मुंह से निकल गया, "एक ठलुआ, बेरोजगार, अपाहिज आदमी, जो अपने परिवार के लिए नकारा हो गया है, उससे खुश रहने या दिखने की उम्मीद कैसे की जा सकती है लक्ष्मी ?"

वह आंखों में आंसू भर लायी थी, "तुमने कैसे समझ लिया कि तुम घर या मेरे लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकारा हो गये हो ? दुर्घटना किसके साथ नहीं होती ? किंतु, जिंदगी से इस तरह हार तो नहीं मान लेते । अपने से ज्यादा दुखी व लाचार लोगों को देखो तो स्वयं को उनसे लाख गुना बेहतर पाओगे । रहा बात नौकरी की,... नहीं मिलती तो न सही । छोटी-मोटी-सी दुकान खोल लेंगे ।'उसे कैसे समझाऊं कि मेरे लाख चाहने पर भी ये विचारें, ये अंतरद्वंद्व मेरा पीछा नहीं छोड़ता । खाली बैठे उल्टे-सीधे विचार मकड़ी के जाले की तरह मुझे चाहे जब घेर लेते हैं । उद्देश्यहीन जीवन किस काम का ?... यह कहना गलत होगा कि जीवन में कोई उद्देश्य है ही नहीं । उद्देश्यों की कमी नहीं है । पांच और सात वर्ष की दो बेटियां हैं । उनको पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाना है । अच्छा घर-वर देखकर उनका विवाह करना है— क्या यह जिम्मेदारियां जीवन का उद्देश्य नहीं है ?

लक्ष्मी के बार-बार समझाने पर जीवन में कुछ करने की चाह और उस चाह को पूरा कर पाने का आत्मविश्वास पैदा होने लगा है । लक्ष्मी ने कितनी ही बार दोहराया है कि 'न सही नौकरी, अपनी छोटी-मोटी-सी दुकान तो खोल ही सकते हैं ।' किंतु अड़चनें यहां भी हैं । दुकान खोलने के लिए भी पैसे की जरूरत होगी । यह पुश्तैनी मकान भी पिताजी को बहन की शादी के लिए गिरवी रखना पड़ा था, जो अभी तक छुड़ाया नहीं जा सका है जो जमा पूंजी थी, वह मेरे इलाज में खर्च हो गयी । कहीं से तीस-पैंतीस हजार का इंतजाम हो जाए । फिर तो मैं सब संभाल लूंगा ।... हरदम सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते बस एक ही विचार मन को घेरे रहता है कि कहीं से तीस-पैंतीस हजार का कर्जा मिल जाए । भगवान ने चाहा तो अब रुपयों का भी इंतजाम हो जाएगा । गुरदा देकर चालीस हजार रुपये मिल जाएंगे ।... इस बात से मैं बहुत खुश हूं ।

जिस दिन मैं विचारों में उलझा सुबह-सुबह लंबी सैर पर निकल गया था । घूमते-घूमते जब थक गया तो एक पार्क की बैंच पर बैठकर सुस्ताने लगा था । पार्क के बाहर का नजारा भी दिख रहा था । तभी मेरे पास एक आदमी आकर बैठ गया । बात करने की गरज से मैंने उससे ऐसे ही पूछ लिया था कि पार्क के बाहर उस बिल्डिंग पर इतनी भीड़ क्यों है ?

उसने बताया था, "वहां एक ब्लड बैंक है... लोग वहां अपना खून बेचने के लिए जमा हुए हुए हैं ।"

"खून बेचते हैं... लेकिन क्यों ?"

"ये लोग रुपयों के लिए अपना खून बेचते हैं । ये तो खून ही बेच रहे हैं । पैसों के लिए तो लोग अपने शरीर के अंग भी बेचते हैं । दूसरों की कौन कहे, मैंने ही पैसे के लिए एक गुरदा बेचा है । बेटी की शादी के लिए ।"

"गुरदा आपने किसको बेचा ?... उसके बिना आप जिंदा कैसे हैं ?"

"लगता है तुम्हें इस बारे में कुछ जानकारी नहीं है । पहले मुझे भी जानकारी नहीं थी । यह भी नहीं कि गुरदा क्या होता है ?... मेरे एक परिचित ने अपना गिरवी रखा मकान छुड़ाने के लिए अपना गुरदा किसी को दिया था ।... उसी ने बताया था कि हरेक के शरीर में दो गुरदे होते हैं ।... किसी आदमी को जीने के लिए एक गुरदा भी काफी होता है ।किसी वजह से एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं परेशान हो उठा । अब तो पत्नी को बताना ही पड़ेगा ।... और वह इसके लिए किसी भी दशा में राजी नहीं होगी । इस विषय में उससे बात करना बड़ा मुश्किल नजर आ रहा था । तीन दिन इसी उलझन में निकल गये ।

गुरदा काम करना बंद कर दे, तो दूसरे गुरदे के सहारे जिंदा रह सकता है । कई बार तो आदमी को पता हीं नहीं चलता कि उसका एक गुरदा खराब है, पता तब चलता है, जबकि दोनों गुरदे खराब हो जाते हैं ।... ऐसी स्थिति में यदि मरीज को किसी दूसरे व्यक्ति का एक गुरदा लगा दिया जाए, तो वह जिंदा रह सकता है । मेरा एक गुरदा निकालकर डॉक्टर ने एक औरत को लगा दिया था । उसके घरवालों ने मुझे चालीस हजार रुपये दिये थे ।"

मैंने पूछा, "क्या इसमें देनेवाले को कोई खतरा नहीं होता ?"

"खतरा कहां नहीं है ?... गुरदा निकालने के लिए भी बड़ा ऑप्रेशन करना पड़ता है । मैडीकल साइंस ने बहुत प्रगति कर ली है ऑप्रेशन तो ऑप्रेशन ही होता है ।... फिर भी गुरदा देनेवालों की मौत की संभावना बहुत कम होती है ।... मैं तो स्वस्थ हूं ।... छह-सात दिन बाद अस्पताल से छुट्टी मिल गयी थी... बदले में मिले धन से मेरा काम भी चल गया और मेरी वजह से उसे औरत को नयी जिंदगी मिल गयी ।"

पैसे की मुझे भी जरूरत थी । मैं उनसे अस्पताल का पता पूछकर अस्पताल पहुंचा । डॉक्टर को अपना गुरदा की बात बतायी । डॉक्टर ने मेरा नाम, पता लिखा और खून की जांच की । जांच रिपोर्ट देखी और कहा, "हो सकता है तुम्हारा गुरदा मेरे मरीज के काम आ जाए ।... तीन महीने से मरीज डॉयलैसिस पर है । इस ब्लड-ग्रुप का गुरदा नहीं मिल रहा था... यदि आपका गुरदा दान करने का तुम्हारा इरादा मजबूत हो, तो अभी कुछ परीक्षण और करने पड़ेंगे ।"

मेरी स्वीकृति पाकर उन्होंने कुछ और परीक्षण कराये और पाया कि मेरा गुरदा उस मरीज को लग सकता है । अब तक मैं निराशाओं की बंद गुफा में कैद था । उजाले की किरण तो अब दिखी थी । मरीज के घरवाले चालीस हजार देने को तैयार थे । मेरा मन योजनाएं बनाने में डूब गया । यह भी सोचा कि पत्नी को इस विषय में कुछ नहीं बताऊंगा । कह दूंगा सात-आठ दिन के लिए गांव जा रहा हूं ।

आज ऑप्रेशन की तारीख पता करने ही मैं यहां आया था । डॉक्टर साहब ने ऑप्रेशन के लिए पांच तारीख तय की थी और बताया था कि चार तारीख की रात को ही तुम्हें अस्पताल में दाखिल हो जाना है । सुबह तुम्हारा गुरदा निकालकर मरीज को लगा दिया जाएगा । लेकिन ऑप्रेशन से पहले तुम्हारे रिश्तेदार— मां, बाप या पत्नी किसी एक का यहां होना जरूरी है । उनकी स्वीकृति के बिना हम कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ भी नहीं लगाएंगे ।'

मैं परेशान हो उठा । अब तो पत्नी को बताना ही पड़ेगा ।... और वह इसके लिए किसी भी दशा में राजी नहीं होगी । इस विषय में उससे बात करना बड़ा मुश्किल नजर आ रहा था । तीन दिन इसी उलझन में निकल गये ।

जिस दिन मुझे भरती होना था उस दिन बड़ी हिम्मत जुटाकर मैंने भूमिका बांधी, "लक्ष्मी मुझे एक जगह से चालीस हजार रुपये मिल रहे हैं । उनसे हम मकान छुड़ा लेंगे और दुकान भी खोल पाएंगे ।"

जब उसे पता चला कि रुपयों के बदले मुझे ऑप्रेशन द्वारा अपना गुरदा निकलवाकर दूसरे मरीज को देना होगा तो रो-रोकर उसने बुरा हाल कर लिया और बोली, "नहीं चाहिए मुझे चालीस हजार ।... हम रूखी-सूखी खाकर गुजारा कर लेंगे ।"

मैं उस आदमी को भी घर पर लाया, जो दो साल पहले अपना गुरदा दे चुका था । उसने भी पत्नी को बहुत समझाया किंतु, उस पर किसी के समझाने का असर नहीं हुआ, तो फिर मैंने उसे धमकी दी, "देखो लक्ष्मी, मेरे मन की दशा तुम्हें नहीं मालूम । कई बार आत्महत्या का विचार मेरे मन में आ चुका है किंतु, मैंने स्वयं को संभाल लिया ।... तुम मेरी घुटन,... मेरी तड़प को नहीं समझ पा रहीं । मैं अंधेरों में जी रहा हूं । अब एक किरण मुझे दिखी है, यदि तुमने उसे भी रोक दिया तो नहीं मालूम अवसाद के उन क्षणों में मैं कब, क्या कर बैठूं ?"

असल में यह धमकी थी भी नहीं । मेरे मन की सच्ची दशा थी । पत्नी एकदम से घबरा गयी । "यह क्या कह रहे हो तुम ?... क्या तुम्हारा जीवन इतना सस्ता है । मात्र चालीस हजार के लिए उसे दांव पर लगा रहे हो ।... कोई डेढ़-दो लाख दे रहा हो, तो सोचती भी ।"

मैं जानता था कि उसने भी अंधेरे में तीर छोड़ा है । वह जानती है कि डेढ़-दो लाख कम नहीं होते, इतने कौन देगा ?... इस तरह मुझे रोक लेगी ।

उसकी यह बात मुझे जंच गयी । मेरी आंखों के सामने पच्चीस वर्ष का नाजुक-सा युवक मरीज घूम गया । जो लखपति बाप का इकलौता बेटा है । तीन वर्ष पूर्व ही उसकी शादी हुई है । दो नन्हीं मासूम बच्चियों का पिता है । मुझे मालूम है, उस मरीज के मां-बाप अपना शहर छोड़कर इस अजनबी शहर में बेटे के इलाज के लिए तीन महीने से पड़े हैं । वे इतने समर्थ हैं कि दो लाख भी दे सकते हैं ।... मैंने लक्ष्मी से कहा, "मुझे तुम्हारी बात मंजूर है । यदि वे लाख-सवा लाख देने को तैयार होंगे, तभी मैं अपना गुरदा दूंगा, वरना नहीं ।"

शाम को मुझे अस्पताल में दाखिल होना था किंतु मैं नहीं गया । दूसरे दिन पहुंचा, तो मरीज के घरवालों को बहुत परेशान पाया । मुझे देखते ही मरीज की मां बोली, " बेटा कल तुम कहां चले गये थे, ! चलो, जल्दी से भरती हो जाओ ।"

"नहीं माताजी, मैं अपना गुरदा नहीं दे सकता ।...

"ये क्या कह रहे हो बेटा... ?... अंत समय पर धोखा मत दो ।... चाहिए तो कुछ रुपये ज्यादा ले लो ।... मना मत करो...

यदि आप मुझे सवा लाख रुपये दें, मैं भी ... गरीबी व हालात के हाथों मजबूर हूं ।"

"ठीक है, हम तुम्हें सवा लाख ही देंगे,"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सरीन साहब एक प्रार्थना और है, मुझे पूरी रकम ऑप्रेशन से पहले ही चाहिए । ऑप्रेशन के दौरान मेरी मौत हो गयी तो पता नहीं रुपये मेरी पत्नी को मिल पाएंगे या नहीं ।... मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता ।"

मि. सरीन को गुस्सा आ गया, बोले, "सब रुपये हम तुम्हें पहले कैसे दे दें ?

आप मेरे साथ चलें, आपको अपना घर भी दिखा दूंगा । ... आप रुपये लेकर आइए ।... पहले हम उसके पास जाएंगे, जहां मेरा मकान गिरवी रखा है । उसके पैसे चुका कर मकान के कागज वापस ले लेंगे । पंद्रह-पंद्रह हजार अपनी दोनों बेटियों के नाम फिक्स कराऊंगा । बाकी के रुपये पत्नी के खाते में डाल दूंगा । ये सब काम निबटाकर मैं आपको अपने घर ले जाऊंगा व लौटते समय पत्नी को साथ लेकर अस्पताल आ जाएंगे ।... मैं शाम को भरती हो जाऊंगा । पूरे समय आप मेरे साथ रहना ।"

"लेकिन, अभी तो मेरे पास एक लाख रुपया ही है ।"

"कोई बात नहीं, पच्चीस हजार बाद में दे दीजिएगा ।"

सरीन साहब रुपये लेकर आ गये थे । पूरे दिन वह मेरे साथ रहे । अपने सब काम मैंने पूरे कर लिये । अंत में घर जाकर मकान व बैंक के कागजात पत्नी को सौंपते हुए मैं स्वयं को बहुत हलका महसूस कर रहा था । अब मुझे मौत से किंचित भी डर नहीं था । वह आती है तो आये ।

कागजात हाथ में लेकर पत्नी रोती रही । मैं उसे समझाता रहा कि "यह सच है कि पैसा ही सब कुछ नहीं होता, फिर भी बहुत कुछ होता है । जीवन में उसके महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता । कुछ पाने के लिए कुछ खोना ही पड़ता है । अपनी बच्चियों के भविष्य के बारे में हम नहीं सोचेंगे, तो और कौन सोचेगा ?... रहने को तुम्हारे पास अब अपना मकान है । कोई साहूकार कर्ज वसूलने या मकान-मालिक किराये के लिए हर महीने पठान की तरह आकर तुम्हारा दरवाजा नहीं खटखटाएगा । घर के गुजारे के लायक तुम कमा ही लेती हो । बच्चियों के भविष्य के लिए पैसा बैंक में है ही । अगर मुझे कुछ हो भी गया, तो मेरी रुह इसलिए भटकेगी तो नहीं कि मैं तुम लोगों के लिए कुछ नहीं कर सका । यों, मुझे कुछ नहीं होगा ।...

"यह सच है कि पैसा ही सब कुछ नहीं होता, फिर भी बहुत कुछ होता है । जीवन में उसके महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता । कुछ पाने के लिए कुछ खोना ही पड़ता है ।"

आज मुझे अस्पताल में दाखिल हो जाना है । कल सुबह ऑप्रेशन हो जाएगा ।... मैं बहुत खुश हूं ।... अस्पताल से वापस आकर मुझे बहुत कुछ करना है । मैं अंधेरी गुफा से निकल आया हूं ।... बाहर उजाला ही उजाला है ।

— ५-१-७१४/बी, बैंक स्ट्रीट (कोठी)
हैदराबाद-५००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग से मिली चाय

चाय की खोज एक संयोग से हुई थी । अब से कोई ४७२९ वर्ष पूर्व चीन में शेन नंग नाम का एक राजा हुआ था । शेन एक प्रकृति प्रेमी व्यक्ति था । ईसा पूर्व २७३७ में एक दिन वन विहार करते समय आग के समीप बैठकर वह अपने लिए पीने का पानी उबाल रहा था कि हवा के हल्के से झोंके ने कैमिलिया साइनेन्सिस (यह चाय का वानस्पतिक नाम है) झाड़ी की कुछ पत्तियां उस पानी में गिरा दीं । प्रकृति मित्र शेन नग ने उबलते पानी के रंग को बदलते देखा । उसमें कुछ सुगंध भी आयी जो उसे अच्छी लगी । उसने सोचा, इसे पीकर देखा जाए, कैसा है ? यह पेय उसे स्वादिष्ट लगा । बस यहीं चाय की खोज हो गयी ।

अपने विशुद्धतम और परिष्कृत रूप में चाय को चीन में ही पिया जाता है । उन्नीसवीं शताब्दी तक संसारभर में चाय की पहुंच चीन से ही होती थी । सबसे पहले एक अंगरेज मेजर राबर्ट ब्रूस ने असम के जंगलों में चाय के पौधों को खोज निकाला जिसके बाद उत्तर भारत में चाय उद्योग का विकास प्रारंभ हुआ । १८३९ में असम चाय कंपनी की स्थापना हुई । दक्षिण भारत में इसका विस्तार बाद में हुआ ।

मूलतया चाय एक जंगली पौधा है । यह उष्ण प्रदेशों के नमीवाले क्षेत्रों में होता है । समुद्र की सतह से ६,००० फुट की ऊंचाई पर इसकी फसल अच्छी होती है । भारतीय चाय की पत्ती चीन के पौधे की अपेक्षा कुछ बड़ी होती है । स्वाद तो अपनी-अपनी पसंद की बात है ।

चाय की पत्तियों को खौलते पानी में भिगोने से एक तत्व प्राप्त होता है, जिसे कैफीन कहते हैं जो चाय पान करनेवालों को स्फूर्ति प्रदान करता है । आखिर चाय पी भी तो स्फूर्ति के लिए ही जाती है । एक पुरानी कहावत है कि चाय की पत्ती युक्त पात्र को खौलते पानी की केतली के पास लाकर पत्तियों पर पानी डालना चाहिए । चाय वैज्ञानिक डॉ. माइकल स्पिरो का कहना है कि खूब खौलते पानी को चाय की पत्तियों पर डालने से कैफीन की भरपूर प्राप्ति होती है । यदि केतली को चूल्हे से उतारकर पात्र के पास ले जाएंगे तो, एक-आध अंश ही सही, पानी कुछ तो ठंडा होगा ही ।

ब्रिटेन के लोग दुनिया में सबसे अधिक चाय पीते हैं । यह संसार का सबसे बड़ा चाय आयातकर्ता देश है । शेष यूरोप, अमरीका और कनाडा मिलकर जितनी चाय मंगाते हैं ब्रिटेन का आयात उससे भी अधिक बैठता है ।

—अ. रा गौड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान राम ने दलितों को गले लगाया

● हिमांशु शेखर

वेदवेद्य पुरुषोत्तम श्रीराम का अवतार संसार के समस्त जीवों के कल्याण के लिए ही हुआ था। राम-राज्य में जाति या वर्ण के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था। जो लोग यह सोचते हैं कि श्रीराम केवल ब्राह्मण व अन्य उच्च वर्ग के लोगों का ही हित करते थे और शूद्रों के प्रति उनका व्यवहार अनुदार था, वे बहुत बड़े भ्रम में हैं। श्रीराम जिनके राज्य में अधम से अधम श्वान को भी न्याय सुलभ हो, उसकी सत्यनिष्ठा तथा निष्पक्षता को संदेह की दृष्टि से देखना निस्संदेह अधर्म है।

राम-राज्य में न्याय किसी का मुख देखकर नहीं किया जाता था, जो न्याय-संगत होता था, केवल वही किया जाता था— 'आसीत्सत्य सदैवात्र नान्यायस्तन्मुखेक्षणात्' (आनंद रामायण, १०/४९)। श्रीराम ने अपनी अनुकंपा का आधार जाति को नहीं, भक्ति को बनाया। सहज सनेह बिबस रघुराई रघुनाथजी स्वाभाविक भक्ति के अधीन हैं। उनकी प्राप्ति में न जाति बाधक है, न वर्ण।' 'भक्त्यातुष्यति केवलं—केवल भक्ति से ही संतुष्ट हो जाते हैं भगवान।

श्रीराम का संपूर्ण जीवन पतितोद्धार, दलितोद्धार तथा अछूतोद्धार में बीता। इस संदर्भ में अहल्या पर प्रभु की कृपा ध्यान देने योग्य है। जनश्रुति है कि महर्षि गौतम की धर्मपत्नी अहल्या पापाचरण के कारण शिला में परिवर्तित हो गई थी और श्रीराम के चरणों के पावन स्पर्श के बाद ही उनका जीवन सार्थक हुआ। अहल्या के संबंध में विभिन्न ग्रंथों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो लोग सोचते हैं कि श्रीराम केवल ब्राह्मण व अन्य उच्च वर्ग के लोगों का ही हित करते थे और शूद्रों के प्रति उनका व्यवहार अनुदार था, वे बहुत बड़े भ्रम में हैं। उनका तो संपूर्ण जीवन पतितोद्धार, दलितोद्धार और अछूतोद्धार में बीता।

परस्पर विरोधी बातें मिलती हैं, परंतु उनके आश्रम में श्रीराम के आगमन के कारण उनका शाप मोचन हुआ और उन्हें एक नये दिव्य जीवन की प्राप्ति हुई, इस पर कोई मतभेद नहीं है। इस पर भी विद्वान सहमत हैं कि अहल्या अनेक वर्षों तक कठोर तपस्या करके पापों से मुक्ति पा चुकी थी। फिर भी किये हुए पापों की गुरुता को ध्यान में रखकर यदि श्रीराम की जगह कोई और लकीर का फकीर होता तो अहल्या को पत्थरों से मरवा देना ही पसंद करता, उससे संभाषण या उसको स्पर्श करने की बात तो दूर की बात होती। श्रीराम का शील लोकोत्तर था। सच्चे हृदय से पश्चाताप करनेवाले के अपराधों को वे क्षमा कर देते थे। श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के अनुसार श्रीराम तथा लक्ष्मण ने बड़ी प्रसन्नता के साथ तपःपूत अहल्या के दोनों चरणों का स्पर्श किया— रामस्तु तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा।(बाल कांड ४९/१७)

उपरोक्त घटना से प्रमाणित होता है कि पापी से पापी व्यक्ति भी, यदि भगवान की शरण में चला जाता है, तो वे उस पर अनुग्रह करते हैं। उनकी कृपा का आधार जाति, लिंग, रंग, वर्ण-सा संप्रदाय विशेष नहीं, प्रत्युत निष्कलुष प्रेम है। उनकी भक्ति में सब का समान अधिकार है।

केवट-प्रसंग

तुलसी के रामचरित मानस तथा अन्य रामायणों में भी केवट का प्रसंग आता है। देवनदी गंगा के तट पर पहुंचने के बाद जब श्रीराम ने केवट से नाव मांगी, तो उसने उनके आदेश का अनुपालन नहीं किया। वह तो प्रभु के चरणों को पखारने की जिद पर अड़ा रहा। केवट की ढिठाई को देखकर लक्ष्मण क्रुद्ध हो उठे। केवट को इसका आभास हो गया, परंतु वह श्रीराम के स्वभाव को जानता था। उसे दृढ़ विश्वास था कि जाति से शूद्र होने पर भी प्रभु उसकी भक्ति का विचार करके उसका तिरस्कार नहीं करेंगे। इसलिए उसने कहा—

'बरु तीर मारहुं लखनु पै जब लगि पाय पखारिहौं
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं

मानस अयोध्याकांड १००

केवट की प्रेम से भरी अटपटी वाणी सुनकर श्रीराम ने जानकी और लक्ष्मण की ओर हंसते हुए देखा और उसे शीघ्रतापूर्वक जल लाने की अनुमति दे दी। केवट बड़े उमंग के साथ जल से भरा कठौता लाया और प्रभु के चरण-कमलों को पखारकर उसने अपने जीवन को सफल किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अछूतोद्धार

श्रीराम के लिए कोई अछूत नहीं । वे केवल निश्छल-भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं । रामचरित मानस तथा अन्यत्र भी इस बात की बार-बार चर्चा हुई है कि निषादों का अधिपति गुह उनका घनिष्ठ मित्र था । वाल्मीकि रामायण में उसके लिए 'रामसखा' शब्द प्रयुक्त हुआ है, यत्र रामसखा वीरो गुहो ज्ञातिगणैर्वृतः । (अयोध्या ०८३/२०)

विभिन्न रामायणों में निषादराज गुह के शूद्र होने के पर्याप्त वर्णन मिलते हैं । गुह उस निषाद जाति का था, जिसकी छाया के स्पर्श से ही उच्च वर्णों के लोग शुद्ध जल से स्नान कर अपने को पवित्र करते थे । जब लक्ष्मण और सीता के साथ श्रीराम श्रृंग्वेरपुर पहुंचे तो इसकी सूचना निषादराज गुह को मिली । वह अपने बंधु-बांधवों के साथ नाना प्रकार के फल-मूल आदि लेकर उनके स्वागतार्थ गंगा तट पर पहुंचा । यह जानते हुए भी कि गुह अंत्यज है, श्रीराम ने उसे अपनी बगल में बैठाया—

नाथ कुसल पद पंकज देखे
भयउं भाग भाजन जन लेंखे
देव धरनि धनु धाम तुम्हारा
मैं जनू नीचु सहित परिवारा

मानस, अयोध्या ८७

गुह के स्वकथन से भी पता चलता है कि वह निम्न जाति का था । श्रृंग्वेरपुर में जब प्रथम बार निषादराज गुह ने मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठ को आते देखा था, तो उन्हें दूर से ही दंडवत प्रणाम किया था—

देखि दूर ते कहि निज नामू
कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू

परंतु, उसी गुह ने जब श्रीरघुनाथजी को पदार्पण करते हुए पाया, तो दौड़कर उनसे लिपट गया । इतना ही नहीं, उसने भांति-भांति के भोज्य-पदार्थ उनकी सेवा में प्रस्तुत भी किये । श्रीराम के हृदय की विशालता देखिए कि जब उन्होंने देखा कि उनके दर्शन के लिए निषदराज इतनी दूर से पैदल ही चलकर आया है, तो उन्होंने अपनी आजानु भुजाओं से आलिंगन बद्ध कर लिया ।

यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि भागीरथी के पावन तट पर श्रीराम तथा लक्ष्मण के केशों को जटा का रूप निषादराज गुह ने ही दिलवाया था ।

शबरी के बेर

शबरी कौन थी ? उसने श्रीराम को खाने के लिए जूठे बेर क्यों दिये ? श्रीराम ने उसके जूठे बेरों को क्यों ग्रहण किया ? ये प्रश्न स्वाभाविक हैं । यह तो निस्संदेह है कि शबरी अधम जाति की थी और उसके समय में अंत्यजों द्वारा छूए हुए भोजन को उच्च वर्ण के लोग छूते भी नहीं थे, उस स्थिति में उसके जूठे बेरों को ग्रहण करना तो कल्पनातीत था । लेकिन श्रीराम ने तो उसके जूठे बैर बड़े उमंग से खाये क्योंकि, उन बेरों में सच्चे प्रेम का रस कूटकर भरा हुआ था।

शबरी यह सोचकर बार-बार दुखी हो रही थी कि वह अछूत है । वह कैसे फल-मूल आदि के द्वारा आगत प्रभु की अभ्यर्थना कर सकती है , श्रीराम ने उसके भय को दूर करते हुए उससे कहा—मानऊं एक भगति कर नाता। अर्थात्, जीव और ईश्वर के संबंध का केवल एक ही आधार है—कपटरहित भक्ति । ऊंची जाति में जन्म लेनेवाला व्यक्ति भी अगर भक्ति से रहित हो, तो वह समाज में उसी तरह शोभायमान नहीं होता जैसे, जल से रहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादल—

जाति पांति कुल धर्म बड़ाई
धन बल परिजन गुन चतुराई
भगतिहीन नर सोहइ कैसा
बिनु जल बारिद देखअ जैसा

मानस, अरण्य कांड ३४

पद्मपुराण के अनुसार प्रेम के वशीभूत श्रीराम ने शबरी के जूठे चार बेरों को खाकर उन्हें भक्तों के बीच शीर्ष स्थान प्रदान किया ।

शम्बूक-वध

राम-राज्य में किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती थी । एक बार एक ब्राह्मण के चौदह वर्ष के एकमात्र पुत्र की, मृत्यु हो गयी । शोक संतप्त ब्राह्मण ने राजद्वार पर जाकर धरना दे दिया । श्रीराम ने राजगुरू वसिष्ठ सहित मंत्रियों से विचार-विमर्श किया । निष्कर्ष निकला कि ब्राह्मण के पुत्र की अकाल मृत्यु का कारण किसी शूद्र तपस्वी का अधर्माचरण है । वह शूद्र तपस्वी था—शंबूक । तपस्या करके शंबूक ने स्वधर्म का परित्याग कर तत्कालीन सामाजिक मर्यादा का अतिक्रमण किया था । इसलिए श्रीराम ने शंबूक का वध किया, जिससे मृत बालक पुनः जीवित हो उठा ।

श्रीराम का स्वभाव एक ओर फूल की तरह कोमल था, तो दूसरी ओर वज्र की तरह कठोर भी । उनके शासन में सभी समान थे । हमें नहीं भूलना चाहिए कि श्रीराम ने अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय तथा सदाचारी अनुज लक्ष्मण को विशिष्ट नियम का उल्लंघन करने के कारण राज्य से निर्वासित कर दिया था । शंबूक तो स्वेच्छाचारी और पापात्मा था । इसलिए उसके वध को लेकर संशय करना युक्ति संगत नहीं है ।

श्रीराम के शील में कहीं दोष नहीं है । जैसे सुदूर आकाश में उड़नेवाले पक्षी के पगों को नहीं देखा जा सकता, उसी प्रकार संसार को सत्पथ पर ले जानेवाले महामानवों के आचरणों को समझना कठिन होता है । उनकी प्रत्येक चेष्टा में समस्त प्राणियों के प्रति अपार करुणा छिपी रहती है । स्थूल बुद्धि से उन्हें नहीं समझा जा सकता । महर्षि वाल्मीकि ने ठीक ही कहा है कि रघुनाथजी उसी के हृदय में निवास करते हैं, जो जाति-पांति, परिवार, धन आदि में आसक्त नहीं होता ।

श्रीराम को जाति, रंग, वर्ण, संप्रदाय, राष्ट्र आदि की संकीर्ण सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता । श्रीराम को केवल निश्छल भक्ति ही प्यारी है । निर्बल के सबसे बड़े बल हैं श्रीराम !

—२०४, ह्वेप अपार्टमेंट, पूर्वी आनंदपुरी,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-८००००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटापा कम करें

● डॉ. आर.के. अग्रवाल

वैसे तो 'शरीर खलु व्याधि मंदिरम्' यानी शरीर समस्त बीमारियों का घर है लेकिन, मोटापा समस्त बीमारियों का कारण है। स्वस्थ शरीर के लिए यह जरूरी है कि मोटापे से बचा जाए। प्रस्तुत है मोटापे से बचने और मोटापे को दूर करने के कुछ अनुभवसिद्ध उपाय

मोटे होने के अनेक कारण हैं। अच्छी तरह चबाये बिना खाना, आवश्यकता से अधिक खाना, अधिक मीठा या नमकीन खाना, लगातार कब्ज रहने से गैस बनना और व्यायाम की कमी आदि कारणों से शरीर भारी पड़ने लगता है और मोटापा आ जाता है। एंटीरियर पिट्यूटरी ग्रंथि की कम क्रियाशीलता के कारण मीठी वस्तुएं खाने की इच्छा में वृद्धि होती जाती है। थायराईड ग्रंथि के कम क्रियाशील होने तथा एड्रीनल ग्रंथि के अधिक सक्रिय होने में प्रोटीन का ग्लूकोज में परिवर्तन अधिक मात्रा में होने लगता है, जिससे मोटापा बढ़ता है।

यौन-ग्रंथियों में खराबी के कारण भी मोटापा बढ़ना शुरू हो जाता है।

मोटापा कम करने का महामंत्र है— फोम को भली-भांति चबाकर खाने की आदत डालना। नमक, चीनी, चिकनाई युक्त तले हुए व्यंजन कम से कम मात्रा में सेवन करना। फ्रिज में रखे हुए पदार्थ, ठंडी मीठी वस्तुएं, ठंडे पानी का प्रयोग बिलकुल बंद कर देना चाहिए। गुनगुने पानी में नीबू और शहद मिलाकर निहार मुंह पीना चाहिए। यदि कब्ज या गैस रोग हो, तो छोटी हरड़ का तीन ग्राम चूर्ण प्रतिदिन यथासंभव निहार मुंह लेना चाहिए। हरड़ चूर्ण बनाने के लिए छोटी हरड़ों को घी में तलकर पीस लें।

कारगर है एक्यूप्रेशर उपचार

मोटापे से संबंधित शरीर में अनेक एक्यूप्रेशर केंद्र हैं, जिनकी स्थिति चित्र में दिखायी गयी है। दोनों हथेलियों में दिये गये अंतस्रावी ग्रंथियों के एक्यूप्रेशर केंद्रों पर प्रतिदिन सुबह-शाम पचास-पचास बार प्रेशर देना चाहिए। महिलाओं में मोटापा अकसर यौन विकार के कारण होता है। अतः हाथ में दर्शायी गयी यौन-ग्रंथियों के केंद्रों की भी मालिश करनी चाहिए। एक्यूप्रेशर यंत्रों जैसे- कृपा-चक्र, मानस-चक्र, पटल आदि द्वारा यह केंद्र आसानी से दबाये जा सकते हैं।

निहार मुंह जमीन पर लेटकर अपने दोनों पांव ऊपर उठाइए, फिर उन्हें बहुत धीरे-धीरे नीचे लाना चाहिए। यह क्रिया प्रतिदिन केवल तीन बार करनी चाहिए। भुने हुए चने (बिना नमक सहित) का प्रतिदिन नियमित सेवन करना चाहिए। नाभिच्युति की अवस्था में नाभि अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

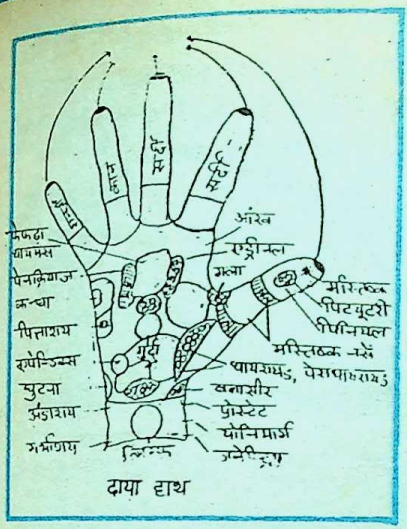

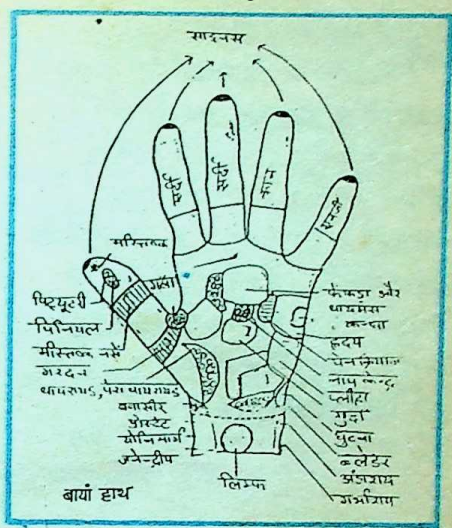

ठीक करवा लेनी चाहिए ।

चुंबकों की सहायता

उच्च शक्ति (लगभग २००० गास) के दो चुंबक लीजिए । एक चुंबक का उत्तरी ध्रुव बायें पैर के नीचे तथा दूसरी चुंबक का दक्षिणी ध्रुव दायें पैर के नीचे रखकर प्रतिदिन बैठें । पहले दिन पांच मिनट से प्रारंभ करें और धीरे-धीरे बीस मिनट तक ले जाएं । उच्च शक्ति के चुंबक लगाने से किसी-किसी व्यक्ति को घबराहट हो सकती है । ऐसा होने पर चुंबक हटाकर, दोनों पैर एक ही किसी टीन या लोहे के टुकड़े पर पंद्रह मिनट तक रखें । चुंबक लगाने के आधे घंटे बाद तक ठंडा पानी न पिएं । गरम चाय या कॉफी ले सकते हैं ।

पेट व कूल्हों की चरबी कम करने के लिए पेट पर चुंबकीय बेल्ट बांधें । बेल्ट में कम शक्ति के चुंबक होते हैं इसलिए घबराहट नहीं होती) । प्रतिदिन मिश्रित चुंबकीय जल पिएं । चुंबकीय जल इस प्रकार बनायें । दो बोतलों में पानी भरकर, एक बोतल को एक उच्च शक्ति के चुंबक के उत्तरी ध्रुव पर रखें तथा दूसरी बोतल को दूसरे उच्च शक्ति के दक्षिणी ध्रुव पर । बारह घंटे तक बोतलों को इसी प्रकार चुंबकों पर रखा रहने दें । उत्तरी ध्रुव पर रखी हुई बोतल का पानी उत्तरी ध्रुव का पानी है तथा दक्षिणी ध्रुव पर रखी गयी बोतल का पानी दक्षिणी ध्रुव का । दोनों बोतलों का पानी बराबर मात्रा में मिलाने से मिश्रित चुंबकीय जल बन जाता है ।

सूर्य रश्मि चिकित्सा

कत्थई रंग की कांच की बोतल में पानी भरकर धूप में रखें । तीन-चार दिन बोतल को धूप में ही रखा रहने दें । चार दिन बाद इस पानी को आधा कप की मात्रा में खाने के दस मिनट बाद प्रतिदिन पियें ।

उपरोक्त उपायों से शरीर की फालतू चरबी स्वयं ही धीरे-धीरे कम हो जाएगी ।

— मानस उपचार केंद्र
रोशनबाग, सिविल लाइंस, रामपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी थोड़े बरसों की बात है, जब अंग्रेजों का राज्य था और बंगाल नील साहबों के अत्याचारों से 'त्राहि-त्राहि' कर रहा था। गांव-गांव में लोग इन जुल्मों के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। कलकत्ते के कुछ नवयुवकों ने नील साहबों के इन अत्याचारों का विरोध करने के लिए एक नाटक खेलने का आयोजन किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर को भी सम्मानीय अतिथियों के साथ नाटक देखने के लिए आमंत्रित किया गया।

नाटक सार्थक हो गया। अब हमें विश्वास हो गया कि सारा बंगाल हमारे साथ है। आपकी इस चप्पल ने नील साहबों पर प्रहार नहीं किया है, हमारी गुलामी पर प्रहार किया है।"

इस प्रसंग की याद आज दिल में शूल-सी चुभती है, क्योंकि चप्पलें आज भी चलती हैं और खूब चलती हैं, मगर न तो वह दिल है और न वह क्रोध। आज जुल्म पर चप्पल चलानेवाले नजर नहीं आते, जुल्म ढहाने के लिए बेशक चप्पलें चलती हैं। क्या आज के

कहां थे . . . कहां आ गये!

● रतनलाल जोशी

नवयुवकों ने सारा हृदय उंड़ेलकर नाटक में अभिनय किया। मगर नील साहब का अभिनय करनेवाले पात्र का काम इतना स्वाभाविक था कि ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे प्रबुद्ध एवं मनीषी व्यक्ति भी यह भूल गये कि वे वास्तविकता नहीं, नाटक देख रहे हैं। क्रोधावेश में ईश्वरचंद्र ने अपने पैर से चप्पल निकाली और लोगों पर अत्याचार कर रहे नील साहब पर दे फेंकी।

जब नाटक पूरा हुआ तो चप्पल खानेवाला पात्र विद्यासागर के चरणों पर गिर पड़ा, बड़े विनम्र भाव से बोला, "आपकी चप्पल से बड़ा कोई उपहार हमें नहीं मिल सकता। आप जैसे धीर पुरुष भी जब नील साहबों के अत्याचारों के अभिनय से इतने विचलित हो गये हैं, तो हमारा

स्वतंत्र भारत में ईश्वरचंद्र विद्यासागर कोई नहीं रहा, सब नील साहब ही हो गये? क्या इस आजादी से वह गुलामी बेहतर नहीं थी, जबकि हम जुल्मो-सितम पर मरने-मारने को तैयार हो जाते थे? 'बिस्मिल' देहलवी की ये पंक्तियां याद आ जाती हैं—

हैच था जिनकी निगाहों में यह रंगे-कायनात
तेरे मयखाने से अब वह बादा-आशाम उठ गये
रह गये हैं रहबराने हीला-साज ओ खुदापरस्त
जांनिसाराने-वतन मरहूने-आलम उठ गये

अर्थात्, जिनकी नजरों में दुनिया के भोग-ऐश्वर्य निरर्थक थे, हे साकी! तेरी मधुशाला से अब वे पीनेवाले प्रस्थान कर गये हैं। अब तो बहानों की आड़ में शिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलनेवाले और भोली-भली जनता को झूठी उम्मीदों पर बहकाकर मौज उड़ानेवाले 'बड़े आदमी' बच गये हैं। स्वदेश के दुखों पर बलि चढ़ानेवाले वीरात्मा यहां से उठ गये हैं।

मगर, आज तो वतन की मोहब्बत का स्थान सिनेमा की मोहब्बत ने ले लिया है। जब रेडियो की घुंडी घुमाइए, मोहब्बत में कराहते-विलपते आशिकों का रोदन ही कानों में पड़ता है। लगता है, आजाद भारत को अब यही काम रह गया है, बाकी तो सब कुछ हो चुका। अमरीका चांद पर जाता है, ब्रिटेन को चार-चार नोबेल पुरस्कार मिलते हैं, जापान ने दुनिया के गोदामों को अपने माल से पाट दिया है, चीन की शक्ति से दुनिया कांपती है—और यह सारा चमत्कार वहां की नयी पीढ़ी का है, किंतु हमारी नयी पीढ़ी के लिए ये सब मंजिलें कुफ्र है, उसके लिए इश्क और अश्क के दरियाओं की गहराई मापना ही जीवन की सर्वोच्च सार्थकता है।

'एक तरफ दुर्मति है और दूसरी तरफ धूर्तता—जमाने का रंग आज यही है।' नोबेल पुरस्कार-सम्मानित बेकेट ने आज के युग का यह परिचय अपने पाठकों को दिया है। सवाल है कि क्या भारत बेकेट की इस अनुभूति से परे है? ऐसा तो नहीं है, अन्यथा मैथिलीशरणजी अपने अंतिम क्षणों में यों नहीं कहते कि बीस बरस के स्वातंत्र्य के बाद भी मेरा देश कुंभीपाक नरक बना हुआ है।

दुर्मति और धूर्तता के संयोग को दर्शानेवाला संस्कृत में एक सुभाषित है, जो मैथिलीशरणजी के कुंभीपाक का भी समर्थन करता है—

एक बार एक लंपट पुरुष और एक कुलटा नारी दोनों का आपस में मिलन हुआ। मिलने के बाद जब दोनों बिदा होने लगे तो उस कुलटा ने अपने उस लंपट प्रेमी से पूछा, "प्रिय, अब हम दोनों का मिलन कब और कहां होगा?" वह लंपट पुरुष सुनकर मुस्कराया, बोला, 'प्रिये, यदि वेदों का प्रमाण सही है, तो अब हम दोनों का मिलना केवल कुंभीपाक नरक में ही होगा।"

मगर यहां सुनता कौन है? भगवान व्यास के इन वचनों की याद आती है—

ऊर्ध्वबाहुर्विरोम्येष : नैव कश्चिच्छृणोतिमे
धर्मादर्थश्च कामश्च सधर्म : किं न सेव्यते

अर्थात्, मैं भुजा उठाकर घोषणा करता हूं, पर कोई मेरी बात सुनता ही नहीं कि जब धर्म से ही अर्थ और काम दोनों की प्राप्ति होती है, तो सब लोग धर्म का ही सेवन क्यों नहीं करते?

—१२, फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

चप्पलें आज भी चलती हैं और खूब चलती हैं, मगर न तो वह दिल है और न वह क्रोध। आज जुल्म पर चप्पल चलानेवाले नजर नहीं आते, जुल्म ढहाने के लिए बेशक चप्पलें चलती हैं। क्या आज के स्वतंत्र भारत में ईश्वरचंद्र विद्यासागर कोई नहीं रहा, सब नील साहब ही हो गये?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितारे जब रू-ब-रू होते हैं

● संजय कुमार

मिल गया कोई सरे आम चलते-चलते

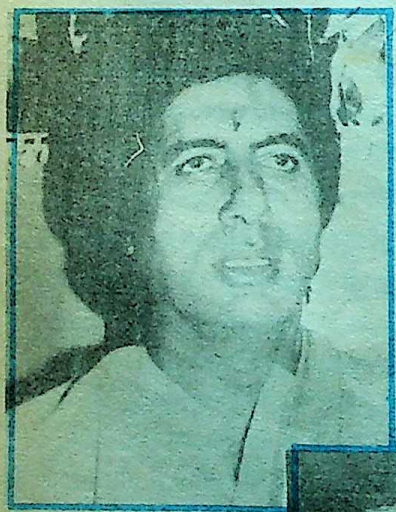

फिल्मी सितारों का दर्शकों में भारी क्रेज होता है। सिनेमा के परदे पर फिल्मी-सितारों की तिलिस्मी कारगुजारियों को देखर करोड़ों दर्शक मन ही मन उनके मुरीद हो जाते हैं। कुछेक दर्शक तो किसी खास सितारे के पागलपन की हद तक प्रशंसक 'फैन' हो जाते हैं

कभी-कभी कुछ सौभाग्यशाली दर्शक जाने-अनजाने में अपने इन चहेते फिल्मी-सितारों से रू-ब-रू होने या बातचीत करने के अवसर भी हासिल कर लेते हैं। इन सितारों से साक्षात मिलने के बाद उनके अंदर सितारों के प्रति पहले से बनी अवधारणा में क्या बदलाव आता है ? प्रस्तुत है ऐसे ही कुछ सौभाग्यशाली दर्शकों के खट्टे-मिठे संस्मरण, जो फिल्मी-सितारों की सिनेमाई छवि से अलग उनकी वास्तविक तसवीर को उजागर करते हैं।

* अमिताभ नाम है मेरा *

— डॉ. अखौरी भुवनेश्वर प्रसाद

मेरा छोटा भाई बंबई में कस्टम कलक्टर है। मैं प्रायः उससे मिलने-जुलने के लिए बंबई आता-जाता रहता हूं। मेरी एक अच्छी या बुरी आदत यह है कि हवाई-यात्राओं के दौरान या तो मैं सो जाता हूं या अपने-आप में मगन रहता हूं, कुछ लिखता-पढ़ता रहता हूं।

ऐसे ही एक बार दिल्ली से बंबई जाते समय मैं कुछ लिख-पढ़ रहा था, तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरी बगल का सहयात्री बड़ी बेचैनी से बार-बार अपनी मुद्राएं बदल रहा है। मैंने उसकी ओर कोई खास ध्यान नहीं दिया। अपनी लिखा-पढ़ी में व्यस्त रहा। थोड़ी देर बाद

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचैनी के बाद मेरे उस सहयात्री ने हाथ बढ़ाते हुए अपना मौन तोड़ा और नम्रता के साथ कहा, 'जनाब, अमिताभ नाम है, मेरा !' मैं यह सुनकर चौंका और गौर से देखा तो खिचड़ी दाढ़ीवाले मेरे वह सहयात्री फिल्म स्टार अमिताभ बच्चन थे । मैंने उनसे माफी मांगी कि मैं सचमुच अपने काम में व्यस्त था । जान-बूझकर मैंने उन्हें 'इग्नोर' नहीं किया । मैंने उन्हें बताया कि मेरे तीनों बच्चे आपके फैन हैं और उन्होंने आपकी कई फिल्में देखी हैं ।

फिर तो सांताक्रुज की लैंडिंग तक हमारी लगातार बातचीत होती रही । उन्हें मेरे बारे में जब पता चला कि मैं पटना विश्वविद्यालय में प्राणीशास्त्र का प्रोफेसर हूं, तो वह और आत्मीयता दिखाने लगे । अमिताभ ने बताया कि उन्होंने दिल्ली के किरोड़ीमल कॉलेज से प्राणीशास्त्र में ही बी.एस.-सी. किया है और उसका यह सबसे प्रिय विषय रहा है । वे अपने कॉलेज के दिनों के कई संस्मरण सुनाते रहे और हम दोनों के बीच फिल्मों पर एक शब्द की भी बातचीत नहीं हुई । मैंने पाया कि अमिताभ न केवल एक सफल अभिनेता हैं, बल्कि बड़े कुशल वक्ता (टॉकर) भी हैं ।

बंबई में एअरपोर्ट पर अलग होते समय अमिताभ ने मुझे कभी घर आने का निमंत्रण भी दिया । मुझे उनकी सादगी और बड़प्पन ने बहुत प्रभावित किया और दिल्ली से बंबई की वह उड़ान मेरे लिए एक यादगार बनकर रह गयी है ।

* मन कड़वाहट से भर उठा *

— पुष्पा सिन्हा

मैं अपने कॉलेज के दिनों में विनोद खन्ना की फैन थी और उनकी हर फिल्म जरूर

देखती थी । पिछले साल मैं छुट्टियां मनाने अपने बड़े भइया के पास पहली बार बंबई गयी, जो वहां एक कंपनी में अधिकारी हैं ।

हैंगिंग गार्डेन, गेट-वे ऑव इंडिया, एलिफैंटा इत्यादि बंबई के सभी प्रमुख दर्शनीय स्थलों पर घुमाने के बाद भइया मुझे एक दिन अपने एक सहकर्मी की सहायता से शूटिंग दिखाने आर. के. स्टूडियो भी ले गये ।

वहां एक फिल्म की शूटिंग देखकर मैं खुशी से भर उठी, क्योंकि उसमें विनोद खन्ना भी हिस्सा ले रहे थे ।

सेंट पर अपना एक लंबा शॉट देने के बाद विनोद जब अपनी कुरसी पर आकर बैठे, तो कुछ क्षण बाद मैं उनके पास गयी और उन्हें नमस्कार करके मैंने उन्हें बताया कि मैं उनकी फैन हूं, पर उन्होंने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया । मैंने दुबारा अपनी बात दोहरायी, तो वे उपेक्षा से झिड़कते हुए बोले, "फैन हैं तो मैं क्या करूं ? दुनियाभर में मेरे करोड़ों फैन हैं । मैं किस-किस की फिकर करता रहूं ।"

विनोद का यह व्यवहार देख मेरा मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कड़वाहट से भर उठा। विनोद को अपने स्टार होने का गुमान है, तो मैं भी दूरदर्शन की न्यूजरीडर और लोकप्रिय स्टेज आर्टिस्ट रही हूं। ईश्वर ने उन्हें जो सफलता और जगह दी है, उस पर बेवजह उन्हें घमंड नहीं करना चाहिए। बल्कि, ईश्वर से डरना चाहिए। कुल मिलाकर विनोद से हुई मेरी यह मुलाकात एक कटु अनुभव थी।

* उनकी सादगी ने प्रभावित किया *

— रेणु कुमारी

आमतौर पर पत्र-पत्रिकाओं में जिस तरह फिल्मी-सितारों की छवि प्रस्तुत की जाती है, उससे मेरे अंदर यही धारणा बनी हुई थी कि फिल्मी-सितारे बड़े ही अहंकारी और तुनक-मिजाज होते हैं और साधारण लोगों से मिलने या बात करने में अपनी तौहीन समझते हैं। किंतु जैकी श्रॉफ से हुई मेरी एक संक्षिप्त मुलाकात ने मेरी इस धारणा को बदल दिया है।

उन दिनों हमारे घर से थोड़ी दूर पर राजगीर के खंडहरों में किसी फिल्म की शूटिंग चल रही थी, जिसमें जैकी श्रॉफ थे। हमें जब इसकी सूचना मिली, तो अपने भाई जितेंद्र के साथ मैं भी शूटिंग देखने चल पड़ी। शूटिंग स्थल काफी इंटीरियर में रहने के कारण दर्शकों की अधिक भीड़ नहीं थी। एक छतरी के नीचे जैकी श्रॉफ अपनी पत्नी और एक मित्र के साथ बातचीत कर रहे थे। किसी फिल्मी-स्टार को साक्षात देखने का मेरे लिए यह पहला मौका था, इसलिए मैं अपनी उत्सुकता रोक नहीं सकी और जैकी श्रॉफ के पास चली गयी। मैंने उन्हें बताया कि मैं उनकी प्रशंसिका हूं और उनका ऑटोग्राफ लेना चाहती हूं।

मेरी बातें सुनकर उनका चेहरा आत्मीयता से खिल उठा। फौरन उन्होंने मेरे लिए एक फोल्डिंग कुरसी मंगवायी और मुझे बैठने के लिए कहा। उन्होंने न केवल अपनेपन के साथ मुझसे बातचीत की, बल्कि अपनी पत्नी से भी मेरा परिचय कराया। फिर उन्होंने एक लड़के (संभवतः स्पॉट ब्वॉय) को बुलवाकर मेरे लिए कोल्ड ड्रिंक मंगवाया और बड़े स्नेह से विदा किया। जैकी की सादगी और सरलता ने मेरे मानस पर अमिट छाप छोड़ी, जो आज भी कायम है।

* आप भी एक फोटो खिंचवा लें *

— रामानंद प्रसाद चमरुपुर

कुछ साल पहले एडवांस ट्रेनिंग कॉलेज के अधीक्षक की हैसियत से प्रशिक्षार्थी दारोगाओं की एक टोली लेकर मेरा 'नेशनल मिट' में शिरकत करने कश्मीर जाना हुआ था। वहां उन दिनों हमारे शिविर स्थल से थोड़ी दूर पर किसी हिंदी फिल्म की शूटिंग चल रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें श्रीदेवी भी थीं ।

मेरे प्रशिक्षुओं ने सकुचाते-सकुचाते मुझसे शूटिंग दिखाने की इच्छा जाहिर की । मैंने फिल्म पार्टी से संपर्क किया और उनसे दूसरे दिन शूटिंग देखने की इजाजत भी मिल गयी । मेरे सारे प्रशिक्षु शूटिंग देखने के सुरूर में रातभर करवटें बदलते रहे । दूसरे दिन मैं उन्हें शूटिंग स्थल पर ले गया । वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे और शूटिंग गैप के दौरान बारी-बारी से वे श्रीदेवी के साथ फोटो खिंचवा रहे थे ।

इस बीच वहां तैनात सुरक्षाबल के डी.एस.पी. से मेरी काफी अंतरंगता हो गयी । हम दोनों बातचीत में मशगूल रहे । शूटिंग खत्म होने के बाद शिष्टाचार के नाते मैं श्रीदेवी के पास गया और उन्हें मेरे प्रशिक्षुओं को फोटोग्राफ ऑटोग्राफ आदि देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया । मेरी बातें सुनकर श्रीदेवी भावुक हो अपनी कुरसी से उठकर खड़ी हुई । चलते समय उसने धीरे-से कहा, "सर, आप भी एक फोटो खिंचवा लें ।" मैंने उसकी बात मान ली और ठहाके लगाते हुए कहा कि "कहीं तुम्हारे साथ मेरा फोटो देखकर मेरी पत्नी तलाक की अर्जी न दे बैठे ।"

मैंने महसूस किया कि श्रीदेवी अपने चेहरे की तरह दिल से भी मासूम है और अपने से बड़ों का सम्मान करने में कोई कोताही नहीं बरतती ।

* क्षेत्रीयता का प्रभाव है उन पर *

— पुष्पा कुमारी

कुछ महीने पूर्व मैं अपनी दोनों बच्चियों— चिंजी-क्रिंजी और पति राकेश कुमार के

साथ पर्यटन के लिए गोआ गयी थी । वहां हम लगभग एक सप्ताह रुके और गोआ के तमाम दर्शनीय स्थलों और समुद्री तटों का आनंद लिया ।

एक दिन हमें पता चला कि बास्को-द-गामा में किसी हिंदी फिल्म की शूटिंग चल रही है । मुझे भी शूटिंग देखने की उत्सुकता हुई, क्योंकि अभी तक मैंने शूटिंग की बात सिर्फ पत्र-पत्रिकाओं में ही पढ़ी थी । मैंने अपने पति से शूटिंग दिखाने का अनुरोध किया, तो उन्होंने एक गाइड की सहायता से शूटिंग देखने की व्यवस्था करा दी । यह शूटिंग एक बड़े होटल के डांसिंग फ्लोर पर हो रही थी । शायद, वहां किसी नृत्य का फिल्मांकन किया जा रहा था । नर्तकी को तो मैं नहीं पहचान पायी, किंतु उसके साथ नृत्य कर रहे मिठुन चक्रवर्ती को मैं पहचान गयी । शूटिंग रूक-रूककर हो रही थी । शूटिंग रुकने के बाद कलाकार किनारे में रखी कुरसियों पर जाकर बैठ जाते थे । ऐसे ही एक बार शूटिंग रुकी, तो मैं मिठुन के पास गयी । उन्हें बताया कि हम सब बिहार से आये हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके अभिनय के प्रशंसक हैं। मिठुन बस औपचारिक भाव से मुसकराये और खामोश हो गये। इस बीच एक और परिवार उनके पास आया और उनसे बांग्ला में अपना परिचय दिया। उनकी बातें सुनकर मिठुन का चेहरा खुशी से चमक उठा और वे उन लोगों से बड़ी अजिजी और तन्मयता से बतियाने लगे। उनके इस व्यवहार से हमलोगों ने स्वयं को बहुत ही उपेक्षित महसूस किया और भारी मन से अपने होटल लौट आये। मुझे लगा कि मिठुन इतने बड़े स्टार हो गये हैं, किंतु अभी तक वे क्षेत्रीयता के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाये हैं।

* उनका दिल बहुत बड़ा है *

— आशीष रंजन

सुधाचंद्रन न केवल एक कुशल नृत्यांगना और अभिनेत्री हैं, बल्कि एक बहुत विशाल व उदार दिल की मालकिन भी हैं। गरीबों, पीड़ितों और विकलांगों के लिए उनके मन में गहरी साहनुभूति है।

हमलोग अपनी सामाजिक संस्था 'इंडियन जूनियर चैंबर' के माध्यम से विकलांगों के कल्याण के लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर धन इकट्ठा करना चाहते थे। इसमें सहयोग के लिए हमने सुधा चंद्रनजी को पत्र लिखा। उन्होंने फौरन जवाब भिजवाया कि जब भी मेरी कोई तारीख खाली होगी, तो आपके शहर में आकर अपना नृत्य-प्रदर्शन कर सकती हूं और वह भी निःशुल्क।

हम सभी को ऐसी आशा हरगिज नहीं थी क्योंकि फिल्मी सितारे उद्घाटन और शिलान्यास— जैसे अनुष्ठानों में शामिल होने के लिए भी पैसे मांगते हैं, फिर 'शो' देने की बात तो दूर रही।

मैं अपने मित्र सुबोध झिंगारी के साथ बंबई गया और सुधाजी की एक खाली तिथि के अनुसार अपना प्रोग्राम तय कर लिया। निर्धारित तिथि को सुधाजी ने बंबई से आकर न सर्फ नृत्य-प्रदर्शन किया बल्कि लौटते समय एक छोटा-सा तोहफा स्वीकार करने से भी मना कर दिया। उन्हीं के सुझाव पर हमने उस तोहफे की नीलामी करवा दी जिससे हमारे फंड में पांच हजार रुपये अलग से जमा हो गये।

सचमुच फिल्म स्टार होकर भी सुधाचंद्रन ने जो स्नेह, सहानुभूति, सहयोग और सद्भावना दिखायी, आज के इस स्वार्थी दौर में यह एक विलक्षण घटना ही कही जाएगी।

— २०/४८, शास्त्री नगर
पटना-८००२३

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन भी है।
के लिए उनके

संस्था 'इंडियन
अकलांगों के
क कार्यक्रम
ना चाहते थे।
सुधा चंद्रनजी को
ाब भिजवाया है
ी होगी, तो
नृत्य-प्रदर्शन का
क।
हरगिज नहीं थी
न और
में शामिल होने
र 'शो' देने की

ारी के साथ बंबई
ाली तिथि के
र लिया।
बंबई से आकर
क लौटते समय
र करने से भी मना
पर हमने उस तोहफे
ो हमारे फंड में पूरा
हो गये।
कर भी सुधाचंद्रन
ग और सद्भावना
ों दौर में यह एक
एगी।

०/८८, शाखी
पटना-८००००१

कादम्बिनी

स्वास्थ्य और सौंदर्य का संगम : श्रीदेवी

फोटोग्राफी : संजय कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : रूपक

जल तर्पण कराते हुए गया के

मंदिर में भगवान विष्णु के

गया का विष्णुपद मंदिर : य
सबसे अधिक पिंडदान

पिंडदान का एक दृश्य

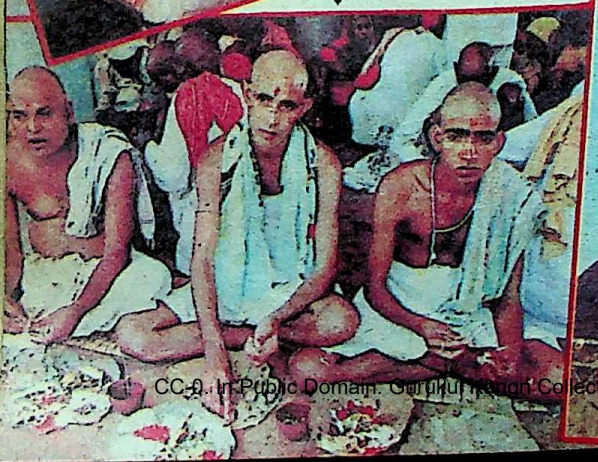

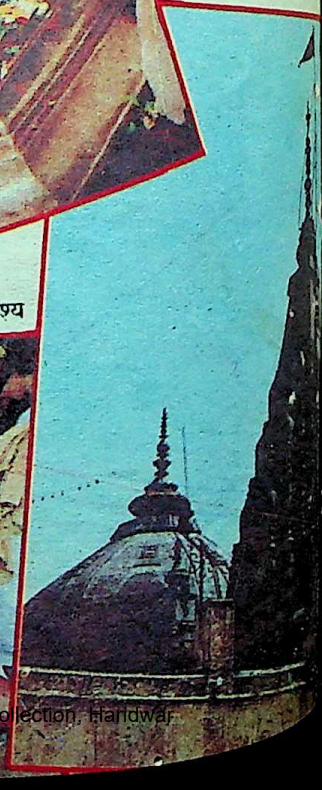

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू धर्म में पिंडदान का धार्मिक महत्त्व काफी है और लोग यह मानते हैं कि जब तक मृत आत्माओं के नाम पर वंशजों द्वारा तर्पण नहीं किये जाते हैं, तब तक उन आत्माओं को शांति नहीं मिलती है और आत्मा भटकती रहती है ।

गया : भटकती आत्माओं को मोक्ष

● सुनील सौरभ

मृतात्माओं एवं पूर्वजों की शांति एवं उन्हें मोक्ष प्रदान करने हेतु हिंदू धर्म में पिंडदान एवं तर्पण करना आवश्यक समझा जाता है । हिंदू धर्म में पिंडदान का धार्मिक महत्त्व काफी है और लोग यह मानते हैं कि जब तक मृत आत्माओं के नाम पर वंशजों द्वारा तर्पण नहीं किये जाते हैं, तब तक उन आत्माओं को शांति नहीं मिलती है और आत्मा भटकती रहती है ।

पितरों का आशीर्वाद

भारतीय ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के अनुसार कृष्ण पक्ष का संबंध पितरों से है और शुक्ल पक्ष का संबंध देवताओं से है । यह माना जाता है कि आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में (सूर्य के कन्या राशि पर स्थित होने से) यमराज पितरों को यमालय से मुक्त कर देते हैं और वे मनुष्य लोक में आकर अपनी संततियों से पिंडदान आदि की आशा करते हैं । यदि उनके पुत्रगण उन्हें उनकी तिथियों पर पिंडदानादि करते हैं तो वे प्रसन्न होते हैं तथा उन्हें अभ्युदय का आशीर्वाद देते हैं ।

इसके विपरीत (पिंडदानादि न करने पर) वे पुत्रों को शाप भी देते हैं । यही कारण है कि आस्तिकजन पितृपक्ष में पितृजनों की प्रसन्नता के लिए प्रतिदिन प्रतिपदा से अमावस्या तक तर्पणादि करते हैं तथा अपने पितरों की निधन तिथि पर विधिपूर्वक श्राद्ध करते हैं । श्राद्ध का यह कृत्य मात्र पितरों के प्रसाद के लिए ही नहीं किया जाता है, अपितु इस कृत्य से समस्त प्राणियों को तृप्ति होती है ।

गया का महत्व

भारत में एकमात्र गया ही वह स्थान है, जहां पूरे विश्व के हिंदू अपने पितरों की मोक्ष प्राप्ति हेतु पिंडदान करने आते हैं । वैसे तो यहां वर्षभर पिंडदान होता रहता है । पर प्रत्येक वर्ष आश्विन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने के कृष्ण पक्ष जिसे पितृपक्ष के रूप में जाना जाता है का विशेष धार्मिक महत्त्व होता है। ऐसा माना जाता है कि इस अवधि में सारे पितर यहां आते हैं।

भगवान जब हस्त नक्षत्र एवं कन्या राशि पर स्थित हों, तब आश्विन कृष्णपक्ष में महालय काल बताया गया है। उस समय पितरों के लिए जो कुछ दिया जाता है, वह सब अक्षय होता है। इस दौरान देश ही नहीं विदेशों में भी रहने वाले हिंदू पिंडदान करने के लिए यहां आते हैं। खासकर नेपाल, श्रीलंका, मारीशस, फिजी, गुयाना, तिब्बत, वर्मा, भूटान आदि देशों के श्रद्धालुओं की भीड़ अधिक जमा होती है।

पितरों की तृप्ति हेतु तीन प्रकार से पिंडदान किया जाता है। एकोदिष्ट पिंडदान उसी मास, पक्ष और तिथि को प्रत्येक वर्ष किया जा सकता है, जिस मास पक्ष और तिथि को पिता का देहांत हुआ हो। जिन पितरों के दिवंगत होने की तिथियां अज्ञात हों उनके निमित्त पिंडदान पितृविसर्जन के दिन किया जाता है। पार्वणश्राद्ध का पिंडदान पितृपक्ष में उसी तिथि को किया जाता है, जिस तिथि को पिता का स्वर्गवास हुआ है।

पिंडदान गाय के दूध से निर्मित खोवा अथवा गाय के दूध में पके हुए चावल, जौ के आटे अथवा चावल के आटे से सामर्थ्य के

गंदे पानी से जल-तर्पण

● अशोक सुमन

पिछले तीन-चार दशकों से देश के सामाजिक माहौल में बहुत तेजी से बदलाव आया है। पहले वृद्धों की सेवा को पुण्य का कार्य समझा जाता था, लेकिन ज्यों-ज्यों हमारा देश पाश्चात्य संस्कृति को अपनाता जा रहा है, वृद्धों के प्रति पारंपरिक आदर का भाव लुप्त होता जा रहा है। मानवीय संवेदना इस हद तक विद्रूप हो गयी कि बच्चे अपने बूढ़े माता-पिता को घर से बाहर निकालने लगे हैं। उन्हें मानसिक यातना देना तो आम बात हो गयी है। ऐसी स्थिति में भी बिहार का गयाधाम अपना पौराणिक महत्त्व बरकरार रखे हुए है। यहां आज भी लाखों हिंदू एक सच्ची और श्रद्धावान पीढ़ी का फर्ज निभाते हुए उन पूर्वजों की आत्मा को शांति प्रदान करने के पहुंचते हैं, जो उनसे वर्षों पहले जुदा हो गये थे।

वैसे, गया में पिंडदान और तर्पण कार्य किसी भी दिन हो सकता है लेकिन आश्विन पौष और चैत्र का कृष्ण पक्ष उपयुक्त समय माना जाता है। इसमें भी आश्विन का विशिष्ट महत्त्व है। इस अवधि में पिंडदान करनेवालों की संख्या गया में ... लाख तक पहुंच जाती है।

पिछले तीन-चार वर्षों से पितृ-पक्ष मेले का रूप विकृत होता जा रहा है। ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार किया जा सकता है । पिंडदान में भैंस का दूध या उसका खोया वर्जित है । काले तिल और तिल के तेल का पिंडदान के अवसर पर विशेष महत्त्व है । गया क्षेत्र में प्रवेश के पूर्व पुनपुन नदी के तट पर भी पिंडदान कर लेना आवश्यक बताया गया है । पुनपुन को गया क्षेत्र का द्वार कहा जाता है ।

गयासुर का निवास

पिंडदान के बारे में अलग-अलग धारणाएं हैं । लेकिन सर्वाधिक सर्वमान्य 'वायु पुराण' की एक कथा है । इस कथा के अनुसार प्राचीन काल में गया में गयासुर नाम का एक असुर बसता था । उसने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य की सेवा कर वेद, वेदांत, धर्मज्ञान तथा युद्धकला में महारथ हासिल कर भगवान विष्णु की तपस्या शुरू की । उसकी कठिन तपस्या से प्रभावित होकर विष्णु प्रकट हुए और उसे वरदान मांगने को कहा । गयासुर ने यह वरदान मांगा कि भगवान जो भी मेरा दर्शन करे वह सीधा बैकुंठ जाए । तथास्तु कहकर विष्णु चले गये । विष्णु का वरदान पाकर गयासुर लोगों पर अत्याचार करने लगा । उसके अत्याचार से ब्रह्मा भी घबरा गये । वे सारे देवताओं के साथ विष्णु भगवान के पास गये । विष्णु ने ब्रह्मा से कहा कि आप लोग गयासुर को उसके शरीर पर महायज्ञ करने के लिए राजी करें । इसके बाद ब्रह्माजी गयासुर

शुरुआत के साथ ही चोरों, ठगों की बन आती है । हजारों की जेबें कटती हैं और वे चोरी, ठगी के शिकार होकर कंगाल बनकर वापस जाते हैं ।

इस मेले में आनेवाले लोगों के लिए व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है । अधिकांश बेदियां जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं । सबसे अधिक दुर्दशा वैतरणी, गोदावरी, रामसागर, ब्रह्मकुंड आदि तालाबों की है । इन तालाबों की सफाई की ओर किसी का ध्यान नहीं है । फलस्वरूप उनमें पानी की जगह गंदगी भरी रहती है । उनके किनारों की भूमि का अतिक्रमण कर कुछ लोगों ने मकान बनवा लिए और उनकी नालियों का गंदा पानी एवं कूड़ा-कचरा उन तालाबों में प्रवाहित होता रहता है । उसी गंदे एवं बदबूदार पानी में धर्मावलंबी जल-तर्पण करते हैं । इसकी वजह से कभी भी भयंकर महामारी फैल सकती है ।

गया में शौचालयों की संख्या भी बहुत कम है । कुछ समय पूर्व विष्णुपद मंदिर के नजदीक १८ सुलभ शौचालय बनाये गये थे, पर अब उनमें से अधिकांश जर्जर हालत में हैं । उनमें पानी और बिजली का कोई प्रबंध नहीं है । अधिकांश के दरवाजे चोर उखाड़ ले गये हैं । दूसरी ओर आयोजक सिर्फ कमाते हैं, नागरिक सुविधाओं पर कुछ भी खर्च करना नहीं चाहते ।

—मकान संख्या— ५,
नव विकास कॉलोनी, फेज-२,
पो. आशियाना नगर, पटना-८०००२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास आये और कहा कि मुझे बड़ा यज्ञ करने के लिए एक पवित्र स्थल की जरूरत है मुझे तुम्हारे शरीर से अधिक पवित्र स्थल कहीं दिखायी नहीं पड़ता । गयासुर ने उनकी बात मानकर अपने शरीर पर यज्ञ करने की आज्ञा दे दी । यज्ञ के क्रम में सभी देवताओं ने उसकी छाती को दबाकर उसे मार देने की कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हो सके । इसके बाद देवताओं ने उसके शरीर पर धर्मशीला रखकर उसे मारने की एक कोशिश और की । लेकिन वे सफल नहीं हो सके । इसके बाद अंत में विष्णु यज्ञ स्थल पर गये और गयासुर के सीने पर रखे धर्मशीला पर अपना चरण रखकर दबाते हुए कहा, ''अंतिम घड़ी में मुझसे जो चाहो वर मांग लो ।'' इस पर गयासुर ने कहा, ''भगवान मैं जिस स्थान पर प्राण त्याग रहा हूं वह शिला में परिवर्तित हो जाए और मैं उसमें मौजूद रहूं । और इस शिला पर आपके पवित्र चरणों की स्थापना हो । साथ में जो भी इस शिला पर पिंड और मुंड (मुंडन) दान करे उसके पूर्वज तमाम पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में वास करें । जिस दिन एक भी पिंड और मुंड दान न हो, उस दिन इस क्षेत्र और शिला का नाश हो जाए ।'' भगवान ने वैसा ही वर दिया ।

पिंडदान का दृश्य पीछे गयासुर लेटा हुआ है

वर देने के बाद विष्णु ने इतना कसकर दबाया कि शिला पर उनका चरण-चिह्न स्थापित हो गया । आज भी विष्णु के चरण-चिह्न विष्णुपद मंदिर में मौजूद है । इस मंदिर को १७६६ ई. में जयपुर की महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था ।

ब्रह्माजी ने पिंडदान किया

गया में पिंडदान कब से प्रारंभ हुआ, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता । किंतु यहां के पंडों का मानना है कि सर्वप्रथम सतयुग में ब्रह्माजी ने यहां पिंडदान किया था और तभी से पिंडदान अभी तक निरंतर जारी है । प्राचीन काल में पिंडदान पूरे एक साल तक चलता था । उस दौरान तीर्थयात्री ३६० वेदियों पर खोया, चीनी तथा गेहूं के आटे व बालू से बने पिंडों का दान किया करते थे । किंतु अब सिर्फ विष्णु मंदिर, अक्षयवट, फलगू व पुनपुन नदी, रामशिला, सीता कुंड, राम कुंड, ब्रह्म कुंड, पंचायतन, बोधगया, मंगलागौरी, कांगबलि, ब्रह्मयोनि पहाड़ तथा वैतरणी सहित मात्र ४८ वेदियों

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

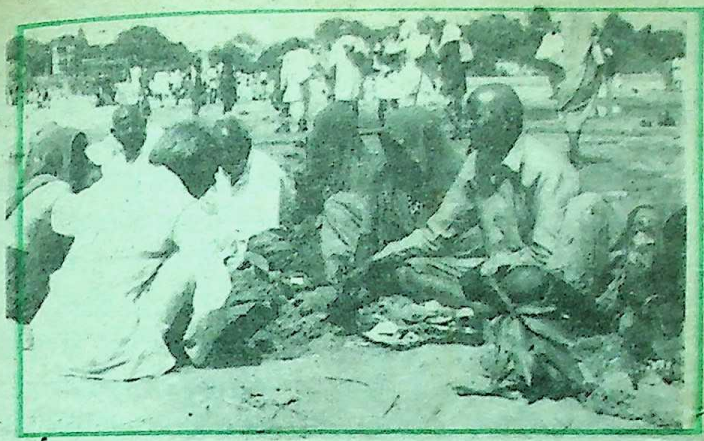

पिंडदान करते हुए श्रद्धालु

शेष बची हैं, जहां पिंडदान किया जाता है ।

स्त्रियां भी पिंडदान करती हैं

पहले पिंडदान करने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को ही था, पर सन् १९८५ से मिथिला के पंडितों ने स्त्रियों को भी पिंडदान का अधिकार प्रदान कर दिया । फलतः अब स्त्रियां भी पिंडदान करती हैं ।

पिंडदान करने वाला हर स्त्री-पुरुष पहले विष्णुपद 'फलगू' के तट पर जाता है और मुंडन कराकर फलगू में स्नान करने के बाद तर्पण करता है । पिंडदान और तर्पण का कार्य अपने पीढ़ीगत 'गयवाल' पंडों के माध्यम से लोग कराते हैं । किसी भी श्राद्धकर्त्ता को कम से कम विष्णुपद, फलगू और अक्षयवट में पिंडदान करना अनिवार्य है । फलगू तट पर सीता कुंड है जहां बालू का पिंड देने का विधान है ।

बालू के पिंड देने के बारे में भी एक कथा प्रचलित है । कहते हैं कि राम, लक्ष्मण और सीता जब पिता दशरथ का पिंडदान करने आये, तब सीता को फलगू तट पर अकेली छोड़कर दोनों भाई पिंड की सामग्री जुटाने चले गये । इसी बीच आकाशवाणी हुई कि पिंडदान का शुभ मुहुर्त्त निकलता जा रहा है । अतः सीता ही पिंडदान करे । इस पर सीता ने सामने प्रवाहित फलगू नदी, पास में चरती गायों, निकट के केतकी पुष्पों और वटवृक्षों को साक्षी मानकर श्वसुर दशरथ को बालू का ही पिंड बनाकर दान कर दिया । बाद में राम और लक्ष्मण के आने पर उन्होंने यह घटना दोनों भाइयों को सुनायी । दोनों भाइयों को जब इस पर विश्वास न हुआ, तब सीताजी ने एक-एक साक्षी से इसकी पुष्टि करने को कहा, किंतु वटवृक्ष को छोड़कर किसी ने गवाही नहीं दी । फलस्वरूप क्रुद्ध सीताजी ने फलगू को ऊपर से सूखी किंतु धरातल में पानी, गायों को बिष्टा भक्षण करने और केतकी पुष्प को शुभ कार्य से वंचित रहने का शाप और वटवृक्ष को अक्षय होने का वरदान दे दिया । संभवतः इसी से वटवृक्ष हर ऋतु में हरा-भरा ही रहता है ।

—पो. करनौती, बख्तियारपुर, पटना-८०३२१२

0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपली कप

● कल्कि

गिंडी (मद्रास) के रेसकोर्स में हर बुध और शनि को घुड़दौड़ होती है । कभी 'बोब्बिली कप' की बाजी तो कभी 'तपली कप' और कभी 'चिपली कप' । दौड़नेवाले घोड़ों के भी बड़े अजीबोगरीब नाम हैं—'भवानी प्रसाद', 'डाबा', 'जॉनी', 'सिकंदर' । मैं आपको कतई सलाह नहीं दूंगा कि इन नामों के मायाजाल में पड़कर आप भी बाजी लगाने चलें । फिर भी कभी ऐसा संयोग हो, शाम को टहलते हुए उधर निकलें तो लटकते चेहरों के साथ बाहर निकलने वालों में कुछ ऐसे परिचित चेहरे अवश्य मिलेंगे जिनसे आमतौर पर वहां मिलने की आप उम्मीद न करते । पहचान रहे हैं न ये मास्टरजी हैं जिन्होंने प्राइमरी स्कूल में आपको पढ़ाया था, ये पंडितजी हैं जो आपके पिताजी के श्राद्ध में 'निमंत्रण' पर आये थे और यह आपकी नौकरानी मुनियम्मा है जो मंदिर में रथयात्रा का बहाना बनाकर आज आपकी श्रीमतीजी से छुट्टी मांगकर गयी थी... ।

और तो और । अगर राजू को उसकी मां वहां देखती तो यकीन मानिए, बेहोश होकर गिर पड़ती । टी. के. राजगोपालन उर्फ राजू डाकघर में बाबू है । घर में माताजी के अलावा पत्नी और विवाह योग्य बहन भी है । खर्चा पूरा नहीं होने से पत्र-पत्रिकाओं में कहानी-उपन्यास लिखता है । आज बीस तारीख है, घर में न चावल था न मिट्टी का तेल खरीदने के लिए पैसा । प्रकाशक नायडू से तीस रुपये मांग लाने का वादा करके सुबह घर से चले बेटे को दोस्तों बालों के साथ यों रेसकोर्स से निकलते हुए देखती तो राजू की मां बेहोश न होती, तो क्या करती ? आप ही बताइए ।

बाहर बस 'स्टार्ट' हो रही थी । राजू लपकता हुआ पायदान पर चढ़ गया । तभी पीछे से किसी ने उसे खींच लिया । बस चल

दी । सामने श्रीनिवासन उर्फ चीनू खड़ा था ।

असल में चीनू की जेब खाली थी । वह पास इतनी रेजगारी बची थी जिससे दोनों बिजली की रेलगाड़ी से लौट सकते थे । में चीनू की सीट के सामने एक बुजुर्ग बैठे थे । लगता था, निराशा और दुःख के बादल अंदर ही अंदर मंडरा रहे थे । छूटते ही वे अपने मित्र पर बरस पड़े, "मुदलियार, तुम्हारा कहना मानकर मैंने पर बाजी लगायी, मुकद्दर ही लुट गया । मेरी अपनी अक्ल चरने गयी थी ? चप्पल से मारूं ?"

बुजुर्ग ने सचमुच पांव से अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला 'सीन' करूणा का है । हीरो पछतावे में रोने-और-गाने लगता है । पहले पत्नी से छिपकर रेसकोर्स गया, अब पद्माबाई के यहां आता-जाता है । पत्नी के प्रति द्रोह नहीं तो और क्या है ?

उतार ली । आसपास बैठे लोग इसी इंतजार में थे कि वे अपनी अक्ल पर चप्पल दे मारेंगे । पर ऐसा न हुआ । चप्पल नीचे डाली और वे पालथी मारकर बैठ गये ।

राजू और चीनू चुपचाप बैठे थे । इतने में 'पार्क' स्टेशन आ गया । दोनों उतरे । बाहर अंधेरा था । सड़क की बत्तियां गुल थीं ।

"राजू, रात को घर जाने की क्या जरूरत है । रात यहीं ठहरो मेरे कमरे में । सुबह चले चलना ।"

"मैं भी यही सोच रहा था । आज मैं घर में अपना मुंह नहीं दिखा सकूंगा । तुम तो मजे में हो यार ! न बीवी-बच्चे न कोई झंझट", राजू ने कहा ।

"बेकार में मेरा मुंह क्यों खुलवा रहे हो यार ? मदुरै बायूस नाटक कंपनी में काम कर रहा था न, तीन साल पहले कंपनी छोड़ी तो हाथ में बीस हजार रुपये की रकम थी । रेस ने वह तबाही मचा दी कि क्या बताऊं । सुबह चाय-नाश्ते तक का पैसा नहीं रहा... ।" चीनू ने ठंडी आह भरी ।

"मैं तो मित्र फटेहाल हो गया । तीन महीने का किराया बाकी है । पंसारी ने उधार बंद कर दिया ।... और बीवी के गले में एक ही चेन बची है... ।" कहते-कहते राजू फफककर रोने लगा । चीनू ने अपने कंधे का सहारा दिया और देर तक दिलासा देता रहा ।

चीनू के दिमाग में बिजली की तरह एक विचार कौंधा । राजू को झकझोरते हुए बोला, "उठो दोस्त । हम-तुम मिलकर कमाल कर देंगे । तुम लेखक हो और मैं अभिनेता । अपने निजी अनुभव पर एक नाटक लिख डालो । तुम हीरो बनो, पत्नी का पार्ट मैं खेलूंगा । दुनिया को यह नसीहत देंगे कि घुड़दौड़ से जिंदगी किस कदर बरबाद हो जाती है । बस, तीन ही दिन खेलेंगे सारा खर्चा निकालने के बाद तीन चार हजार की कमाई न हुई तो फिर पूछना मुझसे ।"

"आइडिया बुरा नहीं है । पर तैयारी के लिए भी पैसा चाहिए ।"

"वह सारा सिरदर्द मेरा है । बस, तुम बैठो और झटपट लिख डालो ।... सुनो इस कहानी को छापेंगे भी । नाटक के दिनों में खूब बिकेगी ।"

रात के नौ बजे थे । कॉफी पीकर राजू लिखने बैठा ।

"नाटक का शीर्षक क्या होगा ?"—चीनू की यह जिज्ञासा थी ।

"तपली कप ।"

"बहुत बढ़िया ।"

× × × ×

रायल थिएटर दर्शकों से खचाखच भरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था । 'तपली कप' का मंचन हो रहा था । जो लोग घुड़दौड़ के प्रेमी थे, इस नाम से खिंचकर आये थे बाकी लोग इस उम्मीद से आये थे कि नाटक में ऐसा कोई नुस्खा मिलेगा, जिससे वे अपने स्वजनों की बुरी लत छुड़वा सकें ।

नाटक का कथानक सामान्य-सा था । हीरो मद्रास के हाईकोर्ट में वकील है । दो साल वकालत करने पर भी जमी नहीं । ससुर जो एम. एल. सी. हैं, दामाद को मुंसिफ का पद दिलाने के लिए ऊपर सिफारिश लड़ा रहे हैं ।

वकील की पत्नी गरमी की छुट्टियों में ऊटी जाने की ख्वाहिश रखती है । वकील हर बार नयी-नयी बहानेबाजी करता है । पत्नी की इच्छा पूरी न कर पाने से वकील परेशान बैठा है । मित्र उसे रेसकोर्स का रास्ता दिखाता है बस, किसी अच्छे-खासे घोड़े पर पैसा लगाओ, लाख-दो-लाख कमाओ ।

हीरो रेस का गुलाम बनता है । पहले दोस्तों से, फिर पठान से उधार लेता है । कर्ज में डूबता है तो और जोर से खेलता है । रेसकोर्स में एक दिन पद्माबाई से मुलाकात होती है जो नगर की मशहूर वेश्या है । पता चलता है कि पद्म के यहां घोड़ों के 'जैकी' और 'ट्रेनर' आते हैं । घोड़े की 'टिप' के लिए वकील वेश्यालय के चक्कर काटता है । वेश्यालय के दृश्य में नौसिखिए ग्राहकों को लेकर हास्य का अच्छा पुट था ।

अगला 'सीन' करूणा का है । हीरो फटेहाल में रोने-और-गाने लगता है । पहले पत्नी से छिपकर रेसकोर्स गया, अब पद्माबाई के यहां आता-जाता है । पत्नी के प्रति विद्रोह नहीं तो और क्या है ? वह कसम खाता है, बस एक बार खेलूंगा, खूब पैसा कमाऊंगा और सारी लत छोड़ दूंगा ।

शनिवार को वकील के पास एक अदालत कोर्ट में जमा करने के लिए दो हजार रुपये दिये है । इसे भगवान की देन मानकर हीरो रेसकोर्स चला जाता है । घुड़दौड़ में दो हजार 'स्वाहा' हो जाता है ।

अब तो पानी सिर के ऊपर हो गया । हीरो के सामने आत्महत्या के अलावा कोई चारा न रहा । रविवार के दिन कमरा बंद करके हीरो पत्नी के नाम लंबी चिट्ठी में सारा हाल बयान करता है और उसे सूचित करता है कि कल सोमवार को आसामी के दो हजार रुपये कोर्ट में जमा न करूं तो गबन का इलजाम लगेगा । तुमसे जेवर किस मुंह से मांगू ? इससे मर जाना बेहतर समझता हूं । जिंदगी में तुम्हें सुख नहीं दे पाया । मुझे क्षमा कर देना । मुझे और पत्नी को लाखों चुंबन के साथ हीरो ने पत्र समाप्त किया ।

दोपहर बाद पत्नी बच्चे को लेकर सीधे यहां चली गयी । मौका पाकर हीरो ने चिट्ठी पत्नी की मेज पर रखी और अंदर कमरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीलिंग से रस्सी बांधकर फंदा बनाया । फिर लगा भगवान की स्तुति करने बाकायदा सारा इंतजाम करने पर भी हीरो से एक चूक हो गयी । दरवाजे पर कुंडी लगाना वह भूल गया ।

उधर सहेली के यहां अकारण जी घबराया तो पत्नी जल्दी ही घर लौटी । दरवाजा खुला मिला और मेज पर रखे पत्र पर उसकी निगाह पड़ी । पत्र पढ़ा तो सकपकाते हुए अंदर पहुंची । ठीक उसी समय प्रार्थना के बाद हीरो फंदे में अपने गले को 'फिट' कर रहा था । बच्चे को जमीन पर लिटाकर पत्नी मेज पर चढ़ गयी और प्रियतम के गले लिपट गयी ।

फिर क्या था, दिल दहलानेवाला रोना, गाना और सिसकियों से भरे डायलॉग । "हे प्रियतम, तुम्हारे बिना ये जेवर किस काम के ? प्राणनाथ, आप मांगते तो यह दासी कब ना करती ?"

पत्नी एक-एक जेवर उतारकर पति के चरणों पर रखती चली गयी । हर जेवर को देते समय क्रंदन-भरा गीत गाती, पति भी बदले में एक गीत गाता । सारे दर्शक रोते, महिलाएं जोर-जोर से रोतीं । रोते-रोते गला बैठ जाता तो दर्शक सोडा पीकर रोते ।

अंत में पत्नी वादा कराती है कि अब वह कभी रेस में पैसा नहीं लगाएगा । हीरो कहता है, "भगवान की कसम, बच्चे की कसम, तुम्हारी कसम आज से घुड़दौड़ की लत छोड़ दी ।"

दर्शकगण भी मन ही मन कुछ इसी तरह की प्रतिज्ञा करते हैं ।

नाटक की समाप्ति पर एक तार और एक पत्र आता है । तार में हीरो को मुंसिफ पद मिलने की सूचना है । और पत्र में लिखा है कि हीरोइन की नानी मर गयी है, वसीयत में उसके लिए तीस हजार रुपये छोड़कर गयी है । इसके साथ ही परदा गिरता है ।

नाटक अप्रत्याशित रूप से सफल रहा । और दो रातें यही नाटक खेला गया । पहले दिन से ज्यादा संख्या में दर्शक आये । अधिक मात्रा में आंसू बहाये गये और बहुत अधिक लोगों ने कसमें खायीं । जनता की मांग पर अगले रविवार को 'मैटनी' शो भी हुआ ।

सोमवार को राजू और चीनू हिसाब-किताब करने बैठे । सारा खर्चा निकालने के बाद पांच हजार रुपये बचे थे । आधा-आधा बांट लिया । मजे की बात यह थी कि ५०० किताबें भी छापी गयीं, केवल तीन प्रतियां बिकीं ।

"अभी पंद्रह दिन की छुट्टियां बाकी हैं । क्या इरादा है ?" चीनू ने पूछा ।

"गांव जाऊंगा । बहुत दिन हुए परिवार के साथ गांव नहीं जा पाया", राजू ने जवाब दिया ।

"मैं भी कोडैकनाल चलना चाहता हूं ! गरमी से राहत मिलेगी", चीनू ने कहा ।

अगले शनिवार को ऊटी के रेसकोर्स मैदान में दो व्यक्ति अचानक मिले । दोनों ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि वे एक-दूसरे से वहां मिलेंगे ।

चीनू ने पूछा, "तो क्या तुम गांव नहीं गये ?"

उत्तर में राजू ने प्रश्न किया, "अरे, तुम कोडैकनाल नहीं गये ।"

उधर मैदान में 'तपली कप' बाजी के घोड़े सरपट-सरपट दौड़ रहे थे ।

अनुवाद : डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम

. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोष्ठी

श्रीवत्स भारद्वाज, राजगीर

★ हमारे देश का नाम भारत कैसे पड़ा ?

☐ इस नामकरण की अनेक परंपराएं हैं । एक बहुप्रचलित परंपरा है कि पौरववंशी राजा दुष्यंत कुमार और कण्व ऋषि की धर्मपुत्री शकुन्तला के पुत्र चक्रवर्ती राजा भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत अथवा भारतवर्ष पड़ा । दूसरी परंपरा श्रीमद्भागवत और जैन पुराणों में मिलती है । इसके अनुसार ऋषभदेव के पुत्र महाराज भरत, जो कालांतर में एक बड़े योगी और महात्मा हो गये थे, के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा । परंतु अधिक संभव यह जान पड़ता है कि भरतवर्ग (कबीले) के नाम पर, जो राजनीति, धर्म, विद्या और कला सभी में अग्रणी था, इस देश का नाम भारत पड़ा । ज्ञातव्य है कि भरत शब्द अभिजात क्षत्रिय वर्ग के एक वेदकालीन कबीले का द्योतक है । वैदिक साहित्य में भरत एक महत्त्वपूर्ण कुल का नाम है । विष्णु पुराण में भारत की सीमा इस प्रकार दी हुई है :

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः ॥

(हिमालय से समुद्र तक के उत्तर-दक्षिण भूभाग का नाम भारत है, इसमें भारती प्रजा रहती है ।)

[illegible] बोस, दरभंगा

★ प्लासी का युद्ध कब हुआ था ?

☐ प्लासी का युद्ध २३ जून, १७५७ को कलकत्ता से ९६ मील उत्तर में भागीरथी नदी पर स्थित इसी नाम के गांव में हुआ था । इसमें लॉर्ड क्लाइव के ३००० सैनिकों ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की ५० हजार की शक्तिशाली सेना को पराजित किया था । इस युद्ध ने भारत में अंगरेजों का प्रभुत्व जमाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी ।

चंद्रकांत यादव, वाराणसी

★ सप्तर्षि कौन-कौन हैं ?

☐ मारीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वसिष्ठ ।

सुशील कुमार जायसवाल, कलकत्ता

★ वर्षा को किस प्रकार नापते हैं ?

☐ ऊपर और नीचे से बराबर आकार वाले चौकोर बरतन को ऐसे खुले स्थान पर रखा जाता है जहां वर्षा का जल सीधे उस बरतन में गिरे, किसी नाली या छत की धार से नहीं । बरतन भर जाने पर फुट रूल बरतन में डालकर नाप लिया जाता है कि उसमें कितना पानी है । वर्षा इसी प्रकार नापते हैं ।

डिगेश्वर महतो, हजारीबाग

★ चीलर किस वर्ग का सदस्य है, कितनी प्रजातियां हैं ?

☐ चीलर 'अनोप्लूरा' वर्ग का है जिसकी [illegible] प्रजातियां हैं, किंतु मानव शरीर से संबंधित चीलर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है और इसमें भी शरीर और सिर के चीलर अलग हैं, जो क्रमशः 'पी. ह्युमनस स्युमनस' तथा 'पी. ह्युमनस कैपिटिस' प्रजाति के हैं । ये दोनों ही चीलर मनुष्य के आपसी संपर्क से लगते हैं [illegible]

पंकज गुप्त, फरीदाबाद

★ आकाशवाणी के गजर की धुन के रचयिता कौन हैं ?

☐ यह [illegible] वाल्टर कॉफमैन, एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकोस्लोवाक नागरिक थे जो सन् १९३० के दशक के प्रारंभ में भारत आये तथा बंबई को उन्होंने अपना घर बनाया । उन्होंने अपने शुरुआती दिनों में इंडियन ब्राडकास्टिंग कंपनी में काम किया जो सन् १९३६ में ऑल इंडिया रेडियो बना ।

संगीता नेमा, जबलपुर

★ ताश का आविष्कार कब हुआ ?

☐ कुछ इतिहासकारों का विश्वास है कि ताश का खेल मिस्र से प्रारंभ हुआ, किंतु अन्य इतिहासवेत्ताओं का मानना है कि यह भारत या चीन की देन है । ताश के बारे में इससे अधिक जानकारी प्राप्य नहीं है ।

जितेन्द्र गुर्जर, चित्तौड़गढ़

★ 'वीरबहूटी' किस वर्ग का प्राणी है ?

☐ लगभग ८-१० मिलिमीटर लंबा और गोल प्राणी पहली वर्षा में दिखायी देता है । यह 'कोसिनेलियागेट' वर्ग का प्राणी है तथा इसकी ५००० प्रजातियां हैं । इसकी अधिकतर प्रजातियां लाल या पीली होती हैं, जिन पर काले धब्बे होते हैं । यह मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी जीव है । इसका लार्वा तथा वयस्क दोनों जीव पौधों पर लगनेवाले कीड़ों को जिनमें चेंपा भी शामिल है, चाट जाते हैं । इसके साथ छेड़छाड़ करने पर यह विषैला पदार्थ निःस्रवित करता है ।

सुरेश चन्द्र घिमिरे, वैशाली (बिहार)

★ विश्व में सर्वप्रथम जनगणना किस देश में शुरू हुई ?

☐ जनगणना कब शुरू हुई इस बारे में कोई रेकॉर्ड प्राप्य नहीं है । किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य ने जनगणना की आवश्यकता तब महसूस की, जब वह बड़े समूहों में रहने लगा ।

जनार्दन गहलोत, अजमेर

★ श्रीलंका और पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे ?

☐ डी. एस. सेनानायके और लियाकत अली खां क्रमशः श्रीलंका और पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री थे ।

ऐसा कहा जाता है कि सन् ४००० ई. पू. संसार की आबादी ८ करोड़ ५० लाख थी । मैकमिलन विश्वकोश के अनुसार प्राचीन रोम और चीन में जनगणना की गयी थी । किंतु आधुनिक युग में सबसे पहले अमरीका में सन् १७७० में जनगणना की गयी थी । भारत में यह कार्य सर्वप्रथम सन् १८७२ में हुआ था । उसके पश्चात प्रत्येक दस वर्ष बाद जनगणना की जाती है ।

सत्यनारायण प्रसाद, चाईवासा

★ महर्षि पिप्पलाद कौन थे ?

☐ पिप्पलाद (पीपल के फल खानेवाले) नामक आचार्य का उल्लेख प्रश्नोपनिषद में हुआ है । वह अथर्ववेद की शाखा 'पैप्लाद' के प्रवर्तक थे ।

राकेश कहरवाल, दलपतपुर (मुरादाबाद)

★ लंबी अवधि तक खड़े रहने से हम थक क्यों जाते हैं ?

☐ अचल मुद्रा में सीधे खड़े रहने पर हमें बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुप्रीत कौर, अंबाला

★ कोआला कैसे होते हैं और कहां पाये जाते हैं ?

☐ कोआला पूर्वी आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। यह युक्लिप्टस के जंगलों में वृक्षों पर रहता है। इसकी ऊंचाई लगभग ६० सेंटीमीटर होती है और शरीर पर भूरे घने ब्रश—जैसे बाल होते हैं। इसके कान गुच्छेदार और पूंछ छोटी होती है। अपने लंबे पंजों से वह वृक्ष को पकड़े रहता है। वयस्क कोआला एक दिन में लगभग एक किलोग्राम पत्तियां खाता है। मादा कोआला की पूंछ के पास एक थैली होती है जिसमें ५-६ महीने वह अपने बच्चे को रखती है। इसके बाद एक वर्ष के होने तक वे अपनी मां की पीठ पर घूमते हैं।

शक्ति लगानी पड़ती है। इस स्थिति में हमारी लगभग ३०० मांसपेशियां (मसिल) कार्यरत हो जाती हैं। इस पूरे समय पृथ्वी की आकर्षण शक्ति भी अपना पूरा जोर लगाती है। इतनी शक्तियों से मुकाबला करते हुए हमें चूंकि अधिक प्रयास करने पड़ते हैं, जिससे हम थक जाते हैं।

शारदा सिंह, मुरैना

★ भारतीय सैन्य बलों की तीनों अंगों की अकादमियां कब कार्यरत हुईं ?

☐ इंडियन मिलिट्री एकेडमी का अस्तित्व देहरादून में १ अक्तूबर, १९३२ से है, इसका औपचारिक उद्घाटन १० दिसम्बर, १९३२ को हुआ था। नौ-सैनिक अकादमी की स्थापना जनवरी, १९६९ में कोचीन में की गयी थी। वायु सैनिक अकादमी का उद्घाटन १६ जनवरी, १९७१ को हैदराबाद में हुआ था। इसके पूर्व (इसी वर्ष) एयर फोर्स फ्लाइंग स्कूल का इसी वर्ष हैदराबाद स्थानांतरण किया गया था।

कपिल गोयल, जावरा

★ अमरीका ने स्वतंत्रता कब प्राप्त की थी ?

☐ अमरीकी कांग्रेस ने ४ जुलाई, १७७६ को अपनी आजादी की घोषणा की थी, अतः इस दिन अमरीका में स्वाधीनता दिवस मनाया जाता है।

डेविड ऐब्रहम, रांची

★ नाजी जरमनी में कितने यहूदी थे और कितने मारे गये थे ?

☐ लगभग ४ लाख यहूदी नाजी जरमनी से बचकर भाग निकलने में सफल हुए थे। जो यहूदी जरमनी में रह गये थे, उनमें से कोई ६ लाख ७० हजार मार डाले गये थे। बचे हुए जरमन यहूदियों में से केवल १२,००० (बारह हजार) यहूदियों ने द्वितीय विश्व युद्ध तथा हिटलर की समाप्ति देखी थी। ये लोग या तो छिपे हुए थे या शिविरों में रह रहे थे।

चलते-चलते

★ **प्रेम के संबंध में आपकी सलाह ?**

☐ : एक को गुरु मानो, भरोसा सबसे मत करो, किंतु प्यार सबसे करो।

—सूर्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालत का अवमानना : कहां तक वांछनीय

● निशीथ कुमार राय

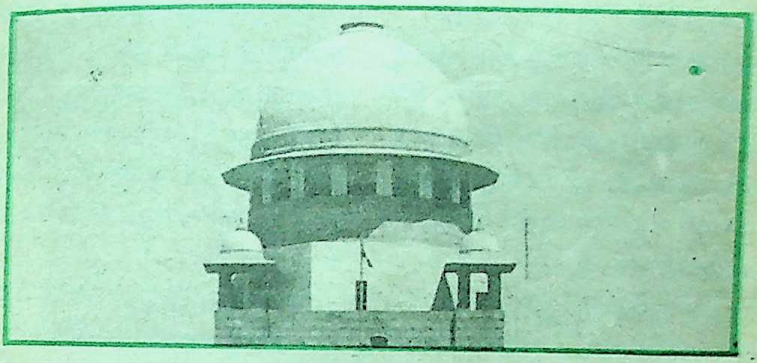

संविधान में उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय को अपनी कथित अवमानना के आरोप पर किसी भी व्यक्ति को असीमित क्षमता प्रदत्त है, वह किसी भी दृष्टिकोण से न्यायोचित प्रतीत नहीं होता । संप्रति भारतीय बार काउंसिल के अध्यक्ष श्री विनय चन्द्र मिश्र के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने प्रतिपादित किया है कि अभियुक्त को कोई भी दंड दिया जा सकता है, जो न्यायालय उचित समझे ।

मजे की बात है कि कत्ल, डाका, बलात्कार-जैसे संगीन और घिनौने आरोप पर दंडित अभियुक्त को भी अब दंड के बारे में तर्क करने का अवसर दिया जाना अनिवार्य कर दिया है । यह पहले नहीं था । वहीं संविधान के इस अत्यंत अवांछनीय अनुच्छेद में यह भी नहीं है कि इस अभियोग का आरोप लगे व्यक्ति को आरोप बताना, अथवा अपना वक्तव्य न्यायालय के समक्ष रखने का अवसर देना पड़ेगा । किसी प्रकार की औपचारिकता बरते बिना ही एकाएक अभियुक्त को किसी भी प्रकार का दंड दिया जा सकता है, सो भी वादी ही के द्वारा ।

वादी स्वयं अपने वाद का निर्णायक हो, और वह भी किसी प्रकार की औपचारिकता की परवाह किये बगैर और फिर दंड की मात्रा पर कोई अंकुश न हो, इस प्रावधान को अत्यंत अवांछनीय, अन्यायपूर्ण मूलाधिकार के विपरीत सिद्ध करता है । इस पर संसद में अविलंब विचार-विमर्श होना चाहिए । बात बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अधिवक्ता वर्ग (बार) न्यायिक प्रक्रिया का अत्यावश्यक एवं अभिन्न अंग है । उसके बिना न्यायालय के लिए सुचारु और सही ढंग से काम करना संभव नहीं । 'बार' के सदस्य संसारभर में निर्भीकता, गहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन और मेधा में प्रसिद्ध रहे हैं । ऐसा न हो कि भारत के वकील कुंठित हो जाएं । न्यायालयों में भय एवं घृणा का वातावरण व्याप्त हो जाए । उच्चतम न्यायालय ने वकीलों को जिस तादाद में कारण बताओ नोटिस दिये हैं, वह अश्रुतपूर्व है ।

इससे पहले एक रचना में मैं लिख चुका हूं कि सम्मान, श्रद्धा या प्रेम अर्जन करने की चीज है, भय दिखाकर वसूला नहीं जा सकता । यह भी लिखा था कि जब भारत अंगरेजों का दास था, जब यहां के नागरिक पराधीन थे और मूलाधिकारों से वंचित थे, तब एक भारतीय वकील और अंगरेज न्यायमूर्ति के बीच अप्रिय वादानुवाद हो गया था और तत्कालीन 'बार' ने न्यायमूर्ति के अभद्र आचरण की निंदा का प्रस्ताव पारित करके कथित तौहीने अदालत का भागी ठहराया गया था और न्यायालय में परीक्षित होने के लिए आहूत हुआ था, परंतु सभी अंगरेज जजों ने उस मामले में शिरकत करने से अस्वीकार करके एक ऊंचा एवं सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किया था ।

यह दुर्भाग्य की बात है, जो काम अंगरेज न्यायमूर्ति वर्ग ने अपने गुलामों के विरुद्ध अंगरेज जज की शिकायत पर भी नहीं किया था, ऐसे कथित तौहीने अदालत के मामले की सुनवाई तक करने को अस्वीकार कर दिया था, वह काम आज स्वतंत्र भारत के न्यायालय स्वतंत्र 'बार' एवं स्वतंत्र नागरिक के विरुद्ध करने में नहीं सकुचाये ।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अन्यतम न्यायमूर्ति श्री मार्कण्डेय काटजू स्वनामधन्य अधिवक्ता डॉ. कैलाश नाथ काटजू के पौत्र एवं भूतपूर्व न्यायमूर्ति श्री शिवनाथ काटजू के सुपुत्र हैं । स्वयं भी 'बार' के मेधावी एवं तेजस्वी सदस्य थे, जब न्यायमूर्ति पद पर नियुक्त हुए थे ।

संप्रति इस सारे प्रकरण के बारे में उन्होंने जो कुछ कहा है, वह प्रणिधान योग्य है । उनका कहना है, "अधिवक्ता वर्ग उन तमाम लोगों का प्रतिनिधित्व न्यायालयों के समक्ष करते हैं, जो शिकवा-शिकायत न्याय हेतु अदालत लगाते हैं और धाराजोई करते हैं । न्याय के हित में एक शक्तिशाली 'बार' का होना परमावश्यक है । यदि शक्तिशाली 'बार' न हुआ तो वादी-प्रतिवादी का वक्तव्य सही एवं प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत नहीं किया जा सकेगा । शक्तिशाली बार से मेरा आशय अनुशासनबद्ध अथवा अभद्र 'बार' से नहीं है । एक अधिवक्ता

यह दुर्भाग्य की बात है, जो काम अंगरेज न्यायमूर्ति वर्ग ने अपने गुलामों के विरुद्ध अंगरेज जज की शिकायत पर भी नहीं किया था, ऐसे कथित तौहीने अदालत के मामले की सुनवाई तक करने को अस्वीकार कर दिया था, वह काम आज स्वतंत्र भारत के न्यायालय स्वतंत्र 'बार' एवं स्वतंत्र नागरिक के विरुद्ध करने में नहीं सकुचाये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्र एवं बाअदब होने के साथ-साथ जोरदार बहस कर सकता है...''

उनकी इस टिप्पणी से कोई भी असहमत नहीं हो सकता है । परंतु यदि कोई न्यायमूर्ति अभद्र आचरण अनायास करे तो क्या होगा ?

एक बार मैं एक न्यायमूर्ति के न्यायकक्ष में अपने मुकदमे में बहस करने की प्रतीक्षा में बैठा था । मुझे एक पांव में तकलीफ के कारण अधिक देर खड़ा रहने में कष्ट होता है । इस बात को जानते हुए भी एक न्यायमूर्ति ने अकारण अनायास कहा था, ''आप अपनी कुरसी अमुक वकील के लिए खाली कर दें— ताकि वह बैठ सकें ।''

उस अकारण अभद्र अपमानजनक आदेश से मैं क्षुब्ध हुआ था । मैं उस आदेश को न मानता,तो वह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे । फिर भी मैंने उस अवैध, अनुचित तथा अपमानजनक आदेश का पालन किया था, ताकि उस अभद्र न्यायमूर्ति के कारण उच्च न्यायालय की सम्मानहानि न हो । परंतु क्या उपर्युक्त परिस्थिति में यदि कोई वकील यह कह बैठता : 'आपको आसनच्युत करने का कोई हक नहीं है और मैं कुरसी खाली नहीं करता', तो न्यायमूर्तिजी क्या कर लेते ? पर अब तो लगता है, ऐसा अपमान परिपाक न करके यदि कोई वकील कुछ कहेगा, तो कथित तौहीन के आरोप पर वह जेल भेज दिया जाएगा ।

कोई भी वकील अदालत से लड़ना अथवा अदालत का विरागभाजन नहीं बनना चाहता । इसलिए ९० प्रतिशत मामलों में पीठासीन अधिकारी की हठ, दुर्व्यवहार रूढ़ तथा अशिष्ट आचरण, अप्रिय घटना के लिए जिम्मेदार होता है ।

आजकल दो दूनी चार को न माननेवाले जज भी हैं । इसका भी उदाहरण है ।

एक मुकदमे में कई अभियुक्तों के दंड के विरुद्ध सेशंस जज ने अपील खारिज कर दी । किन्हीं कारणों से मैंने उसमें अलग-अलग अभियुक्तों की अलग-अलग दो निगरानियां एक ही आदेश के विरुद्ध तैयार कीं । और फैसले के अगले दिन ही निगरानी दाखिल कर दी । हाईकोर्ट के दफ्तरवालों ने एक निगरानी पर सही रिपोर्ट की कि निगरानी में अभी ६९ दिन की मियाद बाकी है, क्योंकि ९० दिन के भीतर निगरानी होनी चाहिए थी । भ्रमवश दूसरी निगरानी में लिख दिया कि ८९ दिन वेस्तेमीयाद हैं । दोनों निगरानियां साथ-साथ दायर की जा रही हैं, इसलिए एक ही टिप्पणी सही देखकर दूसरी की टिप्पणी देखे बिना दायर कर दिया ।

जज साहब ने न्यायकक्ष में प्रवेश करने से पहले उनके पेशकार ने मुझसे कहा कि मैं ८९ दिन वेस्तेमीयाद वाले मामले में विलंब माफ

कोई भी वकील अदालत से लड़ना अथवा अदालत का विरागभाजन नहीं बनना चाहता । इसलिए ९० प्रतिशत मामलों में पीठासीन अधिकारी की हठ, दुर्व्यवहार, रूढ़ तथा अशिष्ट आचरण, अप्रिय घटना के लिए जिम्मेदार होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का आवेदन पत्र भी दूं । मैंने कहा कि जब विलंब है ही नहीं, बल्कि अभी ८९ दिन मीयाद बाकी है, तो आवेदन कैसे दूं ? मुझे उस निगरानी को वापस कर दिया जाए, तो मैं उसे हाईकोर्ट के संबंधित विभाग में भेजकर भ्रम दूर करवा दूं ।

इस पर उस बेईमान पेशकार ने कहा कि मैं जज साहब से ही वापस मांगूं, या फिर उसे सुविधा शुल्क दिलवा दूं ।

जब न्यायमूर्ति न्यायकक्ष में प्रविष्ट हुए, तो उस पेशकार ने मेरे कुछ कह पाने से पहले ही उनसे कहा, "वकील साहब ८९ दिन विलंब को माफ करने का प्रार्थनापत्र भी नहीं देना चाहते ।"

न्यायमूर्ति महोदय ने मुझसे पूछा कि मैं ८९ दिन विलंब से निगरानी प्रस्तुत करने के लिए विलंब माफ करने का आवेदन पत्र दूंगा या नहीं । मैंने कहना चाहा कि 'विलंब है ही नहीं, जैसा कि इसी मामले में सह-अभियुक्त की निगरानी पर आफिस रिपोर्ट से जाहिर है—

पर न्यायमूर्ति महोदय ने कहा कि वह कुछ नहीं सुनना चाहते, मैं दरखास्त ला रहा हूं या नहीं ।

"मान्यवर जब अभी मेरे पास ८९ दिन मीयाद और बाकी है, फैसला कल हुआ है तो दरखास्त कैसी ?"

"आप हां या न में उत्तर दें धारा ५ लिमिटेशन एक्ट के तहत विलंब माफी की दरखास्त देंगे कि नहीं वरना मैं मुकदमा खारिज कर दूंगा ।"

अबकी बार मैं भी उत्तेजित हुआ बोला, "खारिज कैसे कर दीजिएगा ? आपको पेशकार के कहने पर इस प्रकार तानाशाही करने का अधिकार नहीं है और मैं ऐसा आवेदन पत्र नहीं दे सकता ।"

गुस्सा कर उन्होंने हमारा मुकदमा अन्यत्र स्थानांतरित किये जाने का आदेश दिया ।

माननीय काटजू का अनुमान कि सभी न्यायमूर्ति उन्हीं के जैसे हैं सही नहीं है । कुछ ऐसे भी हैं । उपर्युक्त परिस्थिति का आज उद्भव हो और कोई मुझ-जैसा अड़ जाता, तो शायद तौहीने अदालत का झमेला झेलना पड़ता ।

इसलिए कदाचित माननीय काटजू की टिप्पणी सही नहीं है । उनकी टिप्पणी अपनी जगह सही है, बशर्ते न्यायमूर्ति आदर्श न्यायमूर्ति हो ।

माननीय काटजू का यह कथन भी सही है कि 'बेंच और बार में सौहार्द्र न्यायिक प्रक्रिया के लिए अत्यावश्यक है । फरीक का तो इक्का-दुक्का मुकदमा उच्च न्यायालय में रहता है, पर वकीलों का संबंध जजों से नित्य की बात है । और इस परिस्थिति में दोनों के बीच सौहार्द्र बिना काम सुचारू रूप से नहीं किया जा सकता । माननीय काटजू ने एक और बात कही है, जो मैंने अपने कई लेखों में कही है ।

यदि वकील को न्यायिक प्रक्रिया से हटा दिया जाए, तो वादकारी और न्यायिक अधिकारी आमने-सामने आ जाएँगा और बहुधा अनपढ़ वादकारी यह समझ नहीं पाएगा कि उसके विरुद्ध आदेश पारित होने के कारण क्या है और न्यायालय के निर्णय को मानने पर तैयार नहीं होगा । मुकदमा धरने की आग उसके दिल में प्रज्ज्वलित रहेगी जिसे केवल वकील समझा-बुझाकर निर्वाचित कर सकता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील कानून दां होने के नाते अदालत के आदेश को सम्यक रूप से समझ सकते हैं। वकील जज के लिए वर्म का काम करते हैं, उनकी रक्षा करते हैं..."

माननीय काटजू का यह कथन बिलकुल सही और समयोपयोगी है। तौहीने अदालत कानून का यथेच्छ प्रयोग से अदालत की यह 'शील्ड' यह 'बार' (उन्हीं के शब्दों में) बट हो जाएगा। क्या यह न्यायालय के हित में होगा ?

उन्होंने अदालतों से कहा है कि न्यायिक अधिकारी वर्ग सदैव इस बात को याद रखे और अधिवक्तावर्ग का सम्मान करे। मार्कण्डेयजी 'बार' में पूज्य तो हैं, वह असाधारण नहीं। गंभीर अध्ययन विधि के ज्ञान के साथ-साथ इस प्रकार की उदारता एवं सहृदयता ने उन्हें इस प्रकार सफल एवं जनप्रिय न्यायमूर्ति बनाया है। वही वकला (बुरे कहलानेवाले भी) उनकी अदालत में भी काम करते हैं, परंतु अभी कोई अवांछनीय या अप्रिय घटना वहां नहीं घटी आखिर क्यों ?

उनके इस कथन में भी दो राय संभव नहीं है कि वकला साहबान को भी जजों की कठिनाई को समझना पड़ेगा। उत्तरोत्तर बढ़ती महंगाई जजों की सीमित आय के कारण जज भी परेशान हैं।

यह कुछ हद तक सही है। परंतु आज न्यायमूर्ति वर्ग को जो सुविधा उपलब्ध है, ऐसा पहले कभी नहीं था। आवास पर वातानुकूलित संयंत्र तो बिलायत-जैसे शीत प्रधान देश के अंगरेज जजों को भी उपलब्ध नहीं था। नाना प्रकार के भत्ते कई हजार स्पष्ट वेतन के अतिरिक्त मिलते हैं। आज के न्यायमूर्ति में से अनेक सज्जन ऐसे हैं, जो इसका दशांश भी नहीं कमा पाते थे और न्यायमूर्ति के लिए उपलब्ध ऐशो-आराम की कल्पना भी नहीं कर पाते थे।

बात यह नहीं है जब प्रतिहिंसापरायण, चरित्रहीन एवं भ्रष्ट व्यक्ति इस पद पर नियुक्त किया जाएगा, तो अशोभनीय, अवांछनीय परिस्थितियों का उद्भव होगा और डरा-धमकाकर 'बार' को खामोश नहीं किया जा सकेगा ?

माननीय काटजू की सम्मति कि अधिवक्ता जज साहबान का अपमान करके लाभान्वित नहीं हो सकता, सोलह आने सही है। अदालत का सम्मान तो बहुत ही जरूरी है। पर अदालत में भी 'बार' का सम्मान करना पड़ेगा और अधिवक्ता को जब जी चाहे अपमानित अथवा वांछित करने की बात पीठासीन अधिकारियों को भी भूल जाना पड़ेगा।

श्री काटजू की यह अभिलाषा कि 'बार' एवं बेंच का नाता बहुत ही सौहार्दपूर्ण और सम्मानजनक होना चाहिए, तभी संभव है जब बात-बात में इस ब्रह्मास्त्र का वकला साहबान के विरुद्ध आसानी से प्रयोग किया जाना बंद होगा।

कुछ लोगों ने जजों के स्थानांतरण का प्रश्न उठाया है। वह तो अत्यावश्यक था। उससे उच्च न्यायालयों की बिगड़ती हुई छवि सुधरी है। वादकारी की डावांडोल आस्था न्यायालय में फिर से बलवती हुई है।

जब तक चरित्रहीन, भ्रष्ट, अर्धविक्षिप्त जजों के विरुद्ध कार्रवाई को सरल एवं सहन नहीं किया जाएगा और जब तक जजों की नियुक्ति में मेधा के अलावा और कोई चीज मान्य नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी, तब तक पुराने जमाने के जजों की तरह श्रद्धा-सम्मान एवं प्रेम वकला साहबान को डरा-धमकाकर अपमानित एवं लांछित करके वसूला नहीं जा सकता । भारत की बार काउंसिल के अध्यक्ष श्री विनय चंद मिश्र को जिस आसानी, अनाडंबर और गुरु दंड से दंडित किया गया है, वह सामान्य नहीं लगता ? क्या उनका आचरण बोरोबाबू स्वीकार मणिपुर के आचरण से भी अधिक निंदनीय था ? दंड की मात्रा के बारे में सामान्य अभियुक्त के समान भी सुनवाई का अवसर न दिया जाना और ऐसा दंड दिया जाना, जैसा आज तक सुनायी नहीं दिया चिह्न है ।

श्री विनय चंद मिश्र ने जो वक्तव्य दिये हैं और जिनका प्रचार अत्यधिक हुआ है संसद द्वारा विचारणीय है और इस पर देशव्यापी चर्चा एवं मनन आवश्यक है ।

एक बार आरोप-प्रत्यारोप के इस प्रकार व्यापक प्रचार से जो स्थिति उत्पन्न हुई है, उसे पक्षों द्वारा जो महत्त्वपूर्ण मुद्दे उत्पादित हुए हैं, उनका समाधान किया जाना चाहिए । अदालत की अधिकार सीमा वर्णित हो । अपनी अधिकार सीमा के बारे में स्वयं ही निर्णय न दे, तौहीने अदालत में यदि न्यायमूर्ति ही वादी हो तो उसका स्वयं निर्णय न करे । किसी भी परिस्थिति में दंड अपनी अधिकार सीमा के बाहर न हो ।

कई समाचार-पत्रों में आया है कि श्री मिश्र के आचरण से न्यायमूर्ति वर्ग क्रुद्ध हो उठे हैं, यह दुःखद परिस्थिति है । न्यायमूर्ति को क्रुद्ध होना शोभा नहीं देता और उस क्रोध को न्यायिक आदेशों में उतारा जाना, तो बड़ा ही अवांछनीय है ।

—४६/१६ मोत...
इलाहा...
डा. ...

कंप्यूटर से हो सकता है स्तन कैंसर

राष्ट्रीय कैंसर संस्थान द्वारा प्रस्तुत एक आख्या के अनुसार विद्युत उपकरणों पर काम करनेवाली व्यवसायी महिलाओं के लिए यह कार्य जोखिम से भरा हो सकता है । संस्थान के वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष एक अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत किया है । सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकला है कि 'स्तन कैंसर' होने का खतरा उन महिलाओं में अधिक पाया जाता है, जो अति निम्न फ्रिक्वेंसी, इलेक्ट्रो-मैगनेटिक रेडिएशन आदि उत्सर्जित करनेवाले उपकरणों पर कार्य करती हैं ।

एक अन्य अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि कंप्यूटर प्रोग्रामर महिलाओं में स्तन कैंसर के मामले अधिक पाये गये हैं । यही कारण है कि अब कंप्यूटर निर्माता कंप्यूटर विडियो डिस्पले टर्मिनल में ऐसा सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे इलैक्ट्रो-मैगनेटिक रेडिएशन का खतरा समाप्त हो सके । जब तक ऐसी व्यवस्था नहीं हो पाती, तब तक महिलाओं को ऐसे उपकरणों पर काम करने में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है ।

—डॉ. गणेशकुमार पाण्डे

कार्य...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां पलते हैं अनाथ बच्चे

● शमशेर अ. खान

गाजियाबाद दिल्ली-मेरठ रोड के सेवानगर में स्थित है स्वामी बालनाथ का बालनाथ आश्रम, जहां स्थापना दिवस यानी ४ अप्रैल, १९७५ से लेकर अब तक कई अनाथ बच्चे-बच्चियां सुव्यवस्थित गृहस्थाश्रम व्यतीत कर रहे हैं तथा अपने क्षेत्र में संपन्न हैं ।

इस आश्रम में अनेक बच्चे होते हैं जैसे वे बच्चे जिन्हें उनके माता-पिता ने दहेज के भय से लावारिस छोड़ दिया हो, अनैतिक संबंधों से उत्पन्न शिशु जिसे लोकलाज के भय से माता ने त्याग दिया हो, वे बच्चे जो बाल मजदूरी की यातना में मालिक द्वारा पिसकर बीमार पड़ गये हों और चिकित्सा के अभाव में उपेक्षित फुटपाथ के किनारे पड़े हों, मानसिक रोगी हों या विकलांग । यह आश्रम सभी शिशुओं, बच्चों के लिए हमेशा खुला रहता है ।

आश्रम का धर्म मानव धर्म है, जहां हर जाति, धर्म के बच्चे आते हैं और स्वामी बालनाथ के वात्सल्य में पलकर सच्चा मानव बनते हैं ।

बाल-विकास को समर्पित

इस आश्रम में बच्चों की पढ़ाई का पूरा प्रबंध है तथा बच्चों को उत्तर प्रदेश बोर्ड, इलाहाबाद की परीक्षाएं भी दिलवायी जाती हैं । आश्रम में बच्चों के खेलकूद, अन्य प्रकार के मनोरंजन एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों पर विशेष ध्यान दिया जाता है । शिशुकाल से लेकर १८ वर्ष की अवस्था तक बच्चे को इतना अधिक आत्मनिर्भर बना दिया जाता है कि बाहर जाकर बच्चे की कठिनाइयां सुगम बन जाती हैं । आश्रम की लड़कियों का, उनके योग्य वर ढूंढ़कर, विवाह कर दिया जाता है ।

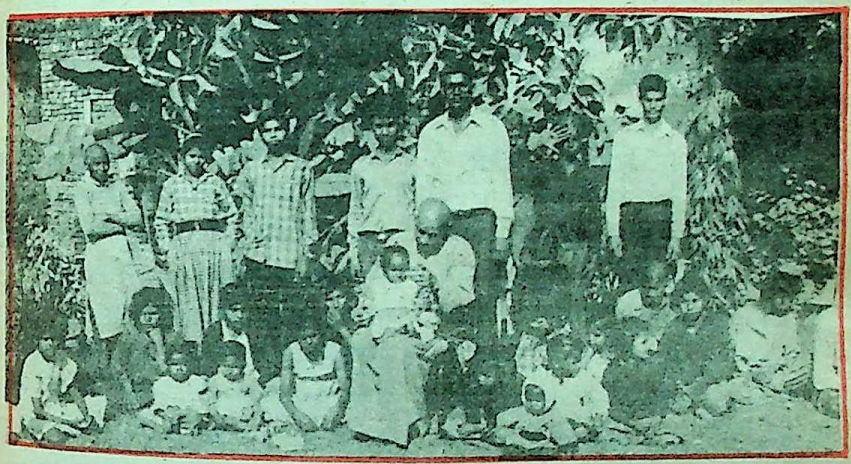

इस आश्रम की स्थापना के पीछे स्वामीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी बालनाथ

की प्रबल आकांक्षा थी, जिसके विषय में वे सोचा करते थे कि वे एक ऐसा सेवाधाम बनाएंगे जिसमें निर्बल, विकलांग, निराश्रित लोग संरक्षण पा सकें । सन् १९७५ ई. में भारत सरकार ने कुष्ठ रोगियों के बच्चों को इनसे अलग रखकर उन्हें संरक्षण देने के लिए समाजसेवी संस्थाओं का आह्वान किया । इसी प्रकार एक अवसर पर एक सेठ से दानस्वरूप प्राप्त जमीन के इस टुकड़े पर इस आश्रम की स्थापना हुई और इस क्षेत्र का नाम पड़ा (सेवानगर), स्वामीजी घूम-घूमकर स्वयं तथा उनके कार्यकर्ता सड़कों, बस स्टेंडों, रेलवे स्टेशनों, अस्पतालों आदि से गरीब, रोगी, अपाहिज, अनाथ, असहाय तथा वृद्ध स्वामी बालनाथ आश्रम लाये जाने लगे, जहां सभी एक परिवार की भांति रहते । यह ऐसा आदर्श आश्रम माना जाने लगा, जो बिना सरकारी अनुदान के चलनेवाला पहला सर्वश्रेष्ठ आश्रम घोषित हुआ । इस संबंध में उत्तर प्रदेश सरकार के निदेशक चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन ने लिखा था कि समूचे उत्तर प्रदेश में बालनाथ आश्रम ही एकमात्र ऐसा आश्रम है जहां कुष्ठ रोगियों के बच्चों को बचाने के लिए संरक्षण दिया जाता है ।

अखिल विश्व कल्याण हेतु सेवा

स्वामी बालनाथ आश्रम का उद्देश्य है—अखिल विश्व के कल्याण हेतु सेवा, सद्कर्म एवं व्यापक प्रेम का प्रचार करना तथा मानव जाति को सद्कर्मों में निरत रखकर कुप्रवृत्ति को हटाना । इन्हीं उद्देश्यों के अंतर्गत इस आश्रम ने जो लक्ष्य निर्धारित किये हैं वे हैं—अनाथ तथा गरीब बच्चों को रखकर उनके पालन-पोषण तथा शिक्षा आदि की व्यवस्था करना, भारतीय संस्कृति पर आधारित विद्यालय की स्थापना करना, जनता की सेवा के लिए निःशुल्क चिकित्सालय की स्थापना करना, एवं प्रभुभक्ति, अध्यात्मवाद तथा संसार के संत महात्माओं की वाणी के प्रचार हेतु एक मुद्रणालय की स्थापना करना, प्रभुभक्ति तथा धर्म चेतना की जागृति हेतु पुस्तकालय की स्थापना करना, आश्रम में दैनिक सत्संग तथा समय-समय पर महापुरुषों की जन्मतिथियां मनाना, पवित्र संन्यासियों के वास तथा उनकी आध्यात्मिक साधना हेतु एकांत एवं शांत आश्रम की स्थापना करना, संस्कृत भाषा के प्रचार हेतु संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना करना, आश्रम में समय-समय पर साधना के लिए गृही भक्तों के निवास का प्रबंध करना एवं आश्रमवासियों की सेवा का समुचित प्रबंध करना ।

स्वामी बालनाथ आश्रम की कई शाखाएं हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में समाज की सेवा करती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम का धर्म मानव धर्म है जहां हर जाति, धर्म के बच्चे आते हैं आश्रम सभी शिशुओं, बच्चों के लिए हमेशा खुला रहता है । और स्वामी बालनाथ के वात्सल्य में फलकर एक सच्चा मानव बनते हैं ।

अनाथ बच्चों का एक आश्रम बाल सेवा कुंज शाखा बृज घाट तथा दूसरा बड़खम्भ रोड, फरीदाबाद में है ।

बाल मुक्ति प्रमुख उद्देश्य

स्वामी बालनाथ आश्रम केवल अनाथ बच्चों का भरण-पोषण करनेवाली संस्था ही नहीं, बल्कि बच्चों के साथ हो रहे जुल्म के खिलाफ आवाज बुलंद करने का मंच भी है, जिसे नाम दिया 'अखिल भारतीय बाल मुक्ति मोर्चा ।' इसी मोर्चे के अंतर्गत एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन करके इस संघर्ष को तीव्र रूप प्रदान किया तथा १४ नवम्बर, १९८७ को भारत के जननायक स्व. नेहरू के जन्म दिन को 'बाल दिवस' के बजाय 'बाल उपेक्षा दिवस' के रूप में मनाया । इसी प्रकार 'बाल मजदूर विधेयक' का विरोध करते हुए श्रमराज्य मंत्री भारत सरकार से बच्चों के कुछ अधिकार मांगे जैसे—बाल श्रमिक व्यवस्था पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए, बच्चों से मजदूरी कराना घोर अपराध घोषित किया जाए और उनसे मजदूरी करानेवालों के लिए कठोर दंड की व्यवस्था की जाए, बच्चों के शोषण, अत्याचार तथा बंधुआ जीवन से मुक्त कराने के लिए बाल-रक्षा अधिनियम बनाया जाए । जिन बच्चों के माता-पिता इस योग्य नहीं हैं कि कुछ कार्य कर सकें, उन बच्चों की जिम्मेदारी सरकार वहन करे । बच्चों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा सामाजिक विकास के लिए कानून एवं व्यवस्था की सरकार जिम्मेदारी ले, १८ वर्ष से कम आयुवाले बच्चों को किसी भी काम में न लगाया जाए । हल्का तथा अंशकालिक कार्य लिया भी जाए, तो शिक्षा व्यवस्था भी निःशुल्क हो, १४ से १७ वर्ष तक के बच्चों के लिए प्रशिक्षण संस्थान बनाये जाएं, जिनमें उन बच्चों को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाए और प्रशिक्षण प्राप्त बच्चों को रोजगार की गारंटी दी जाए ।

—एम-६९/ए, संजय नगर, सेक्टर-२३
गाजियाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबर को [illegible] युद्ध [illegible] प्रेरणा मिलता है। सच तो यह है कि राजपूतों ने उसे मात देने में कमी नहीं की, परंतु मुगल तोपखाना अधिक बलशाली था। बाबर की यह विजय कथा हमारे लिए विचारणीय है। यह अंश पुस्तक महल द्वारा प्रकाशित 'प्रसिद्ध युद्ध' में सम्मिलित है।

भयभीत बाबर ने कैसे पैर जमाये

● राजेन कुमार राजीव

पानीपत के पहले युद्ध में बाबर की सफलता और दिल्ली में इब्राहीम लोदी के पतन के साथ राजपूतों ने सोचा कि यह सही समय है, जब वे अपनी खोयी प्रतिष्ठा पा सकते हैं। राजपूतों के पुनर्जागरण के नेता राणा संग्रामसिंह (राणा सांगा) को बाबर के साथ हुए समझौते के अनुसार आगरा की ओर बढ़ना था, पर उसने अपने सलाहकारों की राय के कारण वैसा नहीं किया। इसकी अपेक्षा सांगा ने आगरा के दक्षिण में दो सौ गांवों पर अधिकार करके उस क्षेत्र में अपनी स्थिति सुदृढ़ बना ली। दिल्ली में बाबर के अधीन स्थापित नयी मुगल-शक्ति से वह कोई समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे। जब महमूद लोदी पानीपत के प्रथम युद्ध से बच आने के बाद १०,००० सैनिकों के साथ राणा सांगा के पास आया, तो उसने लोदी को अपना सहयोगी बना लिया। बाबर को पराजित करने के लिए राणा ने अधीनस्थ राजाओं और मित्रों को सहयोग के लिए लिखा। कितने ही राजा और शासक अपनी-अपनी सैनिक-टुकड़ियों के साथ [illegible] आ मिले। इस तरह राणा के नेतृत्व में [illegible] सरदार हसन खां मेवाती और महमूद लोदी [illegible] सैन्य-सहयोग से मुगल बादशाह बाबर और राजपूताना शक्ति के बीच यह युद्ध छिड़ा। [illegible] सांगा के इस नेतृत्व में विशाल सेना को देखकर बाबर की छोटी सेना भयभीत हो उठी। [illegible] को भी घबराहट हुई, लेकिन हिम्मत बांधते [illegible] उसने सैनिकों को कुरान-शरीफ की कसम दिलायी।

चाल सफल हो गयी

१६ मार्च, १५२७ को सवेरे लगभग [illegible] खानवा में युद्ध आरंभ हुआ। मुगलों ने [illegible] को दायीं ओर से खदेड़ने के लिए [illegible] अपने बायें पक्ष को आक्रमण करने की [illegible] दी। बाबर के दायें पक्ष पर तैनात [illegible] ऐसा प्रहार हुआ कि वह तितर-बितर [illegible] किंतु बाबर ने चिंतैमूर को उनकी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए भेजा । उसने राजपूतों के बायें पक्ष पर आक्रमण किया और मुगल सैनिक उनकी टुकड़ियों में खलबली पैदा करते हुए भीतर घुस गये । इसी समय बाबर ने अपने सहायक मुस्तफा को खुले मैदान में सिपाहियों को बढ़ाने तथा तोपों से गोले बरसाने का हुक्म दिया । तोपखाने ने अपना काम ऐसे संतोषजनक ढंग से किया कि मुगलों का साहस सजीव हो उठा ।

मुगल तोपखाने द्वारा भयंकर आग बरसाने पर भी वीर राजपूतों ने निरंतर आक्रमणों से बाबर के सैनिकों को पस्त कर दिया था । राजपूतों के भीतर विजयश्री तरंगायित हो रही थी । तभी एक कुशल सेनापति की सूझ-बूझ से बाबर ने अपने चुनींदा घुड़सवारों के दल को मध्य से लेकर शत्रु के दलों पर प्रहार करने के लिए छोड़ दिया । आक्रमण की यह चाल सफल सिद्ध हुई ।

तोपों की अग्नि-वर्षा तथा अकस्मात घुड़सवार-सेना के प्रहार से हलचल मच गयी । भयंकर गोलाबारी का भी ध्यान न करते हुए राणा के निर्भीक सैनिकों ने बाबर की सेना के दायें और बायें पक्षों पर वार किया । अंतिम क्षणों का यह प्रहार इतना भयंकर था कि मुगल अपने घेरे डालने की स्थिति से हटकर लगभग उस स्थान पर आ पहुंचे, जहां स्वयं बाबर खड़ा था । अंततः मृत्यु से भी न डरनेवाले राजपूतों के लिए मुगलों का तोपखाना अभिशाप सिद्ध हुआ । वे उसका अधिक समय तक सामना न कर सके और उनका साहस टूटने लगा । ऐसी परिस्थिति में बाबर ने अपने दोनों पक्षों को दूसरा प्रहार करने का हुक्म दिया । राजपूत बिखर गये । बाबर युद्ध में विजयी रहा ।

बाबर

विकसित तकनीक की सफलता

भारत के इतिहास में लगातार दस घंटे तक जारी रहनेवाला यह अत्यंत स्मरणीय युद्धों में से एक है । राजपूतों का शौर्य, युद्ध की विकसित तकनीक की अनभिज्ञता के कारण बेमानी होकर रह गया, जिससे देश में मुगल साम्राज्य की नींव और पुख्ता हुई । राणा सांगा स्वयं घायल हुए । हसन खां मेवाती और अन्य कई सरदार वीरगति को प्राप्त हुए । पराजित सेना को क्षत-विक्षत कर दिया गया ।

इस युद्ध के राजनीतिक परिणाम भी महत्त्वपूर्ण रहे । मुगल साम्राज्य को मिटाने की राजपूतों की आकांक्षा पूर्ण रूप से समाप्त हो गयी । इसके बाद राजस्थान के शासकों ने उत्तरी भारत में हिंदू राज्य पुनः स्थापित करने का सम्मिलित प्रयत्न कभी नहीं किया । काबुल लौटने की अपेक्षा बाबर ने भारत में ही स्थायी रूप से बसने का विचार बना लिया ।

बाबर की विजय में उन्हीं तोपों और तोड़ेदार बंदूकों ने अहम भूमिका निभायी, जिनकी मदद से उसने पानीपत की पहली लड़ाई सन १५२६ में जीती थी । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न कब फलता है ?

□ अशोक जैन

स्वप्न आने के नौ कारण माने जाते हैं— १. जानी हुई बात से, २. देखी हुई बात से, ३. सुनी हुई बात से, ४. वात, पित्त और कफ के विकार से, ५. मल-मूत्र के वेग को रोकने से, ६. चिंता करने से, ७. देवता के अनुष्ठान या सानिध्य से, ८. पुण्य के योग से, ९. पापोदय से ।

पहले छह कारणों से आये हुए स्वप्न निष्फल होते हैं । उनका शुभ-अशुभ फल नहीं होता । अंतिम तीन कारणों से आये हुए स्वप्न शुभाशुभ फल देते हैं । ऐसे स्वप्न यथासंभव वृथा नहीं जाते ।

सार्थक स्वप्न

वृषभ, हाथी, महल, पर्वत या टीलों पर अपने को चढ़ा देखें तो बड़प्पन मिलने का लाभ होता है । विष्ठा से लिपटता शरीर देखें तो निरोगता प्राप्त होती है । स्वप्न में रोने पर हर्ष का संयोग होता है । राजा, हाथी, घोड़ा, सोना, बैल, गाय, अपने कुटुंब आदि का स्वप्न देखें तो कुल वृद्धि का योग बनता है । प्रासाद के ऊपर चढ़कर भोजन करना, समुद्र में तैरना आदि देखें तो पदोन्नति अवश्य प्राप्त होती है ।

दीपक, मांस, फल, कन्या, पद्म, छत्र और ध्वजा आदि देखें तो विजय का संयोग बनता है । पूर्वजों की आकृति देखें तो आयु बढ़ने का कारण बनता है और कीर्ति, यश तथा धन बढ़ता है । कपास, भस्म, अस्थि, मथी हुई [illegible] इन चार वस्तुओं को छोड़कर बाकी सब वस्तु[illegible] स्वप्न में आने पर शुभ फलदायक मानी जा[illegible] हैं । हाथी, देवता, घोड़ा और राजा के अतिरि[illegible] सब काली वस्तुएं स्वप्न में दिखने पर अशुभ फलदायक मानी जाती हैं । स्वप्न में गाया [illegible] तो रोने का प्रसंग बनता है । स्वप्न में नाचने [illegible] बंदीखाना (जेल) भोगने का योग बनता है [illegible] स्वप्न में हंसे तो शोकातुर होने का योग बनता है ।

स्वप्न में देवता, राजा, साधु, ब्राह्मण, [illegible] पूर्वज, बैल— ये आकर कुछ बात करें [illegible] तो वह आगे जाकर सत्य होते हैं । सर्पदंश [illegible] भुजा पर डसे तो सोने की धातु का लाभ [illegible] है । फल-फूल युक्त या खिटनी के वृक्ष [illegible] अपने को स्वप्न में चढ़ा हुआ देखें तो [illegible] धन लाभ का योग बनता है । गधे, ऊंट, [illegible] या भैंसे पर चढ़कर अपने को दक्षिण में [illegible] हुआ स्वप्न दिखने पर मृत्यु का योग बनता [illegible] यदि पुरुष सफेद चंदन के विलेपन से युक्त [illegible] कपड़ेवाली स्त्री से आलिंगन का भाव [illegible] देखे तो धन प्राप्ति का योग बनता है । [illegible] चंदन के लेपन से युक्त लाल कपड़े पहने [illegible] स्त्री से अपने को आलिंगन करता हुआ [illegible] दिखे तो खून सूखने की बीमारी का [illegible] है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न देखा गया है तो उसका फल एक वर्ष में प्राप्त होता है। दूसरे पहर में देखें तो छह मास में, तीसरे पहर में देखें तो तीन मास में, रात्रि के अंतिम दो घड़ी (तड़के) देखें तो दस दिन में और सूर्य उदय होते-होते देखें तो उसका तत्काल फल मिलता है।

सोने, रत्न या सीसे (धातु) के ढेर पर अपने को चढ़ा हुआ देखें तो स्वप्नदृष्टा को आध्यात्मिक उपलब्धि, सिद्धि प्राप्त करने का योग बनता है। शराब के घड़े को उठाकर फोड़ने की घटना देखे तो आत्म-समाधि प्राप्त होती है।

असंख्य स्वप्नों में से १४ स्वप्न सर्वोत्तम, ३० स्वप्न मध्यम और ४२ स्वप्न जघन्य कक्षा के माने जाते हैं।

सर्वोत्तम स्वप्न

१. हाथी, २. वृषभ, ३. सिंह, ४. लक्ष्मी, ५. पांच रंग के फूलों की माला, ६. चंद्रमा, ७. सूर्य, ८. ध्वजा, ९. कलश, १०. पद्म सरोवर, ११. क्षीर-समुद्र, १२. देव-विमान, १३. रत्नों की राशि, १४. धुएं से रहित अग्नि शिखा। जैन शास्त्रानुसार जिस माता को ये स्वप्न आते हैं, उसकी कुक्षि से चक्रवर्ती उत्पन्न होता है।

यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न देखा गया है तो उसका फल एक वर्ष में प्राप्त होता है। दूसरे पहर में देखें तो छह मास में, तीसरे पहर में देखें तो तीन मास में, रात्रि के अंतिम दो घड़ी (तड़के) देखें तो दस दिन में और सूर्य उदय होते-होते देखें तो उसका तत्काल फल मिलता है।

बुरा स्वप्न आने पर यदि सोता रहे तो अच्छा रहता है। उसे किसी के आगे न कहें, यथासंभव उसे भूलने का प्रयत्न करना चाहिए। उत्तम स्वप्न होने पर यदि सो जाने की भूल कर बैठें तो उसका फल निष्फल हो जाता है। शुभ स्वप्न देखने पर जागृत होकर प्रभुस्मरण करना चाहिए। यदि पहले अच्छा स्वप्न देखकर फिर बुरा स्वप्न दीखे तो बुरे का ही प्रभाव स्थिर रहता है।

—अरिहंत इंटरनेशनल
२३९, गली कुंजस, दरीबा
दिल्ली-११०००६

सबसे खतरनाक पक्षी

संसार की सबसे खतरनाक चिड़िया है कैसोवरी। यह छोटी-सी चिड़िया न्यू गाइना एवं उत्तरी आस्ट्रेलिया के घने जंगलों में पायी जाती है। यह चिड़िया उड़ तो नहीं सकती, लेकिन यह दौड़ने में बहुत तेज है। इसके पैरों के अंगूठों में अंदर की ओर छुरे-जैसा एक पंजा होता है। इसी पंजे की मदद से वह अपने शत्रुओं की हत्या कर देती है।

— मनोज राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

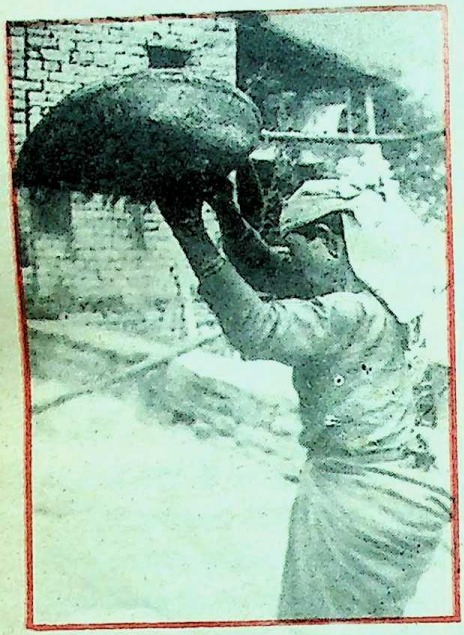

कैसे जी रही है हिमालय की बेटी

● रश्मि बड़थ्वाल

हिमालय की बेटी पार्वती अपने तप के कारण ही सर्वाधिक सम्मानित है और शक्ति एवं सौभाग्य के लिए पूजी जाती है। आज भी हिमालय की बेटियों में मां पार्वती का अंश विद्यमान है। उनकी दिनचर्या, उनका संपूर्ण जीवन ही तपोमय है। कड़कड़ाती ठण्ड के बावजूद उस नीम अंधेरे में ही जागकर उत्तराखंड की ग्रामीण महिलाएं अपनी दिनचर्या आरंभ कर देती हैं, जबकि पक्षी भी अपने नीड़ में सोये पड़े होते हैं। पर्वतीय स्त्री का पूरा दिन ही हाड़तोड़ परिश्रम करने में बीतता है।

ग्रामीण महिलाओं को घर-बाहर की दोहरी जिम्मेदारी संभालनी पड़ती है क्योंकि, रोटी की व्यवस्था के लिए पुरुषों को अपना गांव ही नहीं पूरे पर्वतीय क्षेत्र को लांघकर दूर-दराज शहरों में जाना पड़ता है। पहाड़ों के अधिकतर पुरुष फौज में हैं। छोटे-से-छोटे गांव के भी दो-चार बेटे तो फौजी हैं ही। अन्य पुरुष भी शहरों में विभिन्न सरकारी नौकरियों में या अन्य छोटे-मोटे धंधों में हैं। इस प्रकार पहाड़ की युवा-शक्ति सामर्थ्य तो वहां रह ही नहीं पाती। गांवों में रहते हैं बस, बूढ़े-बच्चे और महिलाएं। यदि गिने-चुने युवक गांव में होते भी हैं, तो वे हल जोतने के अतिरिक्त कोई भी दूसरा काम करना अपनी हेठी महसूस करते हैं क्योंकि, हल चलाने का ही एक काम ऐसा है, जो पहाड़ की सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के लिए वर्जित है। भोजन बनाना, बूढ़ों व बच्चों की परवरिश, घर की व्यवस्था, सफाई आदि के अतिरिक्त पशुओं को पालने की सारी जिम्मेदारी उसी की होती है। जंगल से घास और लकड़ियां काटकर लाना उनकी दिनचर्या का अनिवार्य अंग है। खेतों में बुवाई, रोपाई, निराई, गुड़ाई से फसल काटने तक के सारे काम ही नहीं, अनाज की बालियों को खलिहानों तक पहुंचाना व अकसर उनकी मड़ाई का काम भी स्त्रियों को ही करना पड़ता है। पानी के स्रोत दूर-दूर होते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही वे कतार की कतार, भारी-भारी गागर-बंठे भर-भर कर पानी लाती हैं । वस्तुतः पहाड़ की हर नारी के सर पर कार्यभार का एक पहाड़ भी सवार रहता है । इस पहाड़ को सिर पर उठाये रहने के बावजूद वह अपनी मुक्त हंसी से घाटियों, पहाड़ियों, पनघट और जंगलों को गुंजायें रखती है । पर जब वह वनों में घास-लकड़ी काटते, ओखल में धान-झंगोरा कूटते, चूल्हे में रोटी पकाते या कड़ाही में धीरे-धीरे करछुल चलाते गीत गाती है, तो उसका स्वर साक्षात करुणा की धारा बन जाता है, सुननेवाला मंत्र-मुग्ध होकर सुनता है और बिना अर्थ समझे भी द्रवित हो उठता है ।

उत्तरदायित्वों का पहाड़

पहाड़ की महिला पर उत्तरदायित्वों का पहाड़ भी है और उसके दुख का पहाड़ भी । इसके बावजूद उसका चरित्र पहाड़-जैसा उन्नत भी है । इक्का-दुक्का सुहागिनें ही ऐसी होती हैं, जिन्हें पति के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है । प्रायः गांवों की महिलाओं की आधी से अधिक आबादी विरहिणयों की है । शेष आबादी में कुछ विधवाएं हैं और कुछ कुंवारियां । फौजी वर्ष में एक-दो महीने के लिए घर आते हैं । बाकी के दस-ग्यारह महीने उनकी पत्नियां उनकी प्रतीक्षा में झुलसती रहती हैं ।

विरहिणी पहाड़ की ये बेटियां पहाड़ों पर ही अपना पसीना बहाते हुए अपने बच्चों की शिक्षा के लिये साधन जुटाने में कोई कसर नहीं छोड़तीं । अपने गिने-चुने पेड़ों से संतरा-नारंगी, सेव, अखरोट के आखिरी फल तक को बेचकर वे बच्चों के लिए कागज-कलम खरीदती हैं । उन्हें भरपूर प्यार-दुलार देती हैं, फिर भी पिता के संरक्षण का अभाव बच्चों के लिए बहुत दुखदायी होता है । मां की व्यस्तता व अन्य कारणों से बच्चों की आदतें खराब होने लगती हैं । आगे चलकर बेरोजगारी की विकराल समस्या को देखकर वे और भी घबरा जाते हैं और शराब, धूम्रपान व मादक पदार्थों के शिकंजे में फंस जाते हैं । बच्चों में नकारात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ते देखकर पहाड़ी महिलाओं की छाती दरकती है । यही कारण है कि शराबबंदी आंदोलनों में उनकी हिस्सेदारी सबसे अधिक रहती है ।

सीमित साधनों व दरिद्रता के बावजूद चिपको आंदोलन चलानेवाली अधिकतर महिलाएं ही हैं, जिन्होंने ठेकेदारों के चलते कुल्हाड़ों के आगे, अपनी जान की परवाह किये बिना पेड़ों पर लिपटकर उनको बचाया । पहाड़ों में गांव-गांव में महिला-मंडल सक्रिय हैं । महिलाओं में परस्पर सहयोग की भावना कूट-कूटकर भरी हुई है ।

पहाड़ की अधिकतर महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक है । स्वास्थ्य केंद्रों के बहुत दूर-दूर होने के कारण प्रायः बीमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं को वहां तक पहुंचाना संभव नहीं हो पाता । प्रसव भी घरों में होते हैं और बहुत-सी महिलाएं एक नये जीवन को धरती पर लाने की चाह में अपना ही जीवन गंवा बैठती है । प्रसव के बाद ठीक से देख-भाल न हो पाने के कारण भी बहुत-सी स्त्रियों की मृत्यु हो जाती है । लोक-परंपराओं के निर्वाह के लिए प्रसूता को खाने-पीने में अनेकानेक परहेज करने पड़ते हैं । उनके खान-पान को इस तरह सीमित कर दिया जाता है कि प्रायः उन्हें पूरे पोषक तत्व नहीं मिल पाते और वह रक्ताल्पता की शिकार हो जाती है । इससे उनके शरीर में कमजोरी स्थायी रूप से घर कर जाती है । फलतः वे समय से बहुत पहले ही बूढ़ी हो जाती हैं । घास और लकड़ियां काटते हुए पेड़ों से या पहाड़ से गिरकर ये कमजोर महिलाएं हाथ-पैर, रीढ़-कूल्हे की हड्डियां तुड़ा बैठती हैं और फिर मौत ।

निर्मम दोहन पहाड़ का

भोलापन, मिलनसारिता, नम्रता, अतिथि-सत्कार, सौहार्दता— ये पहाड़ की महिलाओं के मूलभूत गुण हैं । पहाड़ों की गौरवपूर्ण धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराएं रही हैं । आज पहाड़ समस्याओं से घिरे हुए हैं । उनके समक्ष अपनी सांस्कृतिक पहचान मिट जाने का खतरा खड़ा है । दरअसल, यह स्थिति आर्थिक विपन्नता के कारण आयी है और आर्थिक विपन्नता आयी है पहाड़ों के अन्यायपूर्ण निर्मम दोहन से । इन्हीं पहाड़ों में इतनी जड़ी-बूटियों की भरमार थी कि पूरे देश को आयुर्वेदिक औषधियां मिल जाती थीं । यहां की वन संपदा विस्तृत थी । इससे पानी की भी कमी नहीं थी । खेत उपजाऊ थे । यद्यपि, तब भी पहाड़ की बेटियों का जीवन श्रमसाध्य तो था किंतु आज-जैसा कष्टप्रद और असंतोषजनक नहीं था । पहाड़ों के विकास के लिए योजनाएं तो बहुत बनीं, खूब शोर-शराबा भी हुआ लेकिन, ये योजनाएं मात्र कागजी साबित हुई हैं । जो धन पहाड़ों के विकास के लिए बनायी गयी योजनाओं के तहत राजधानी से रवाना होता है, वह छलनी में भरे जल की तरह रास्ते तक पहुंचते-पहुंचते छीज जाता है । जंगल की अंधाधुंध कटाई निरंतर जारी है । अवैध चोरी-छिपे रातों-रात हजारों पेड़ काट डाले हैं । सड़कें बनाने के लिए अत्यधिक डायनामाइट के प्रयोग से पहाड़ पर्त-दर-पर्त हिल-हिलकर कमजोर हो गया है । सड़कें बनने से पहाड़ों पर दूर-दूर तक पत्थर से लुढ़कती-रगड़ती चली जाती है, जिससे भूमि बांझ हो गयी है । वनों के कटने से वर्षा भी ठीक से नहीं होती । पानी के भी अधिकांश स्रोत सूखते चले जा रहे हैं । इन सब बातों ने पहाड़ की बेटियों का जीवन और भी दुःखमय बना दिया है ।

दरअसल, पहाड़ की बेटियों की दिनचर्या आधे से अधिक हिस्सा अब घास, लकड़ी और पानी की व्यवस्था करने में ही कट जाता है क्योंकि, ये तीनों ही आज सहज उपलब्ध नहीं रह गये हैं, इसीलिए पहाड़ की बेटियों का कहना है— 'घास लाखड़ू अर पाणी, बिना कैसी जिंदगानी'— अर्थात, जिस योजना में घास, लकड़ी और पानी की व्यवस्था न हो, वह योजना ही अंधी है ।

— २१ नील विहार, निकट [illegible]
इंदिरा नगर, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

परिचर्चा में अध्यक्षीय भाषण

• बटुक चतुर्वेदी

मुख्य अतिथि महोदय, विद्वान वक्तागण, धैर्यवान श्रोतागण और प्रबुद्ध आयोजकगण । मैं अभी देख रहा था कि 'राजनीति का अपराधीकरण और जन चेतना' विषय पर हमारे विद्वान वक्ता धुआंधार भाषण दे रहे थे और आप सब तालियां बजा रहे थे । यह देश वर्षों से इसी तरह ताली बजा रहा है । मुझे पूरा विश्वास है, ताली बजा-बजाकर यह देश एक दिन ताली बजाऊ महादेश की श्रेणी में आकर रहेगा । अस्तु, मित्रों, अध्यक्ष के नाते मुझे इस परिचर्चा का समापनभर करना है । वैसे ज्यादातर ऐसे अध्यक्षों का काम, आप देखें, तो लीपा-पोती करना होता है । सभा-सोसायटियों, कमेटियों वगैरह के बहुत-से लीपा-पोती विशेषज्ञ यह काम शानदार ढंग से अंजाम दे रहे हैं । देश की तरक्की के लिए ऐसी लीपापोती बहुत जरूरी भी है । मैंने भी सोचा था कि लीपापोती के लिए दो बातें मुख्य अतिथि के भाषण की, दो-चार अन्य वक्ताओं के भाषणों की और दो-एक अपनी जोड़-जाड़कर अंत में एकाध आदर्श वाक्य बोलकर बैठ जाऊंगा ।

किंतु मेरी आत्मा में बैठे साहित्यिक कीड़ों ने कहा— बच्चू, विद्वानों के नगर में आयोजित, विद्वानों की परिचर्चा के अध्यक्ष बनकर जा रहे हो, तो पूरी तैयारी से जाओ । यह कोई कवि-गोष्ठी या कवि सम्मेलन नहीं जहां चुटकुले सुनाकर या अश्लील द्विअर्थी गीत सुनाकर तालियां पिटवाकर मनमाना पारिश्रमिक हथिया लोगे । यहां तो विद्वत्तापूर्ण, ज्ञान से पगी हुई बातें कहोगे तभी ताली बजेगी । खैरियत इसी में है कि किसी राजनीति के रंगे-सियार अथवा राजनीति शास्त्र के राजमान्य अथवा छात्रमान्य प्रोफेसर की शरण लो और अपने वक्तव्य के लिए दस-बीस धांसू पाइंट्स नोट कर लो, वरना तुम्हारी वह दुर्गति होगी कि तुम्हारी आनेवाली सात पीढ़ियों में भी कोई राजनीतिक परिचर्चा का अध्यक्ष तो अध्यक्ष, श्रोता बनने का साहस तक नहीं करेगा ।

मित्रों, गले पड़ा ढोल बजाना ही पड़ता है । घबराकर हम एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजनीति शास्त्र के विद्वान की शरण में गये जिनके बारे में यह मशहूर है कि उन्होंने अपने बाहुबल और पितृ-बल का लाभ उठाकर, पहली कक्षा से एम. ए. तक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी हथियायी, ठेके पर थीसिस लिखवाकर डॉक्टरेट ली और शिक्षा मंत्री की चरणवंदना कर प्रोफेसरी हथियायी ।

वे हमें देखते ही बोले— बैठिए, बैठिए कविराज । कहिए क्या कष्ट है ? अपने पुत्र या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्री के नंबर बढ़वाने हैं या एडहॉक अपाइंटमेंट चाहिए ? हम बोले— नहीं, ऐसा कुछ सुयोग नहीं है, अभी तो एक परिचर्चा की अध्यक्षता का कुयोग आ पड़ा है, जिसका विषय है— 'राजनीति का अपराधीकरण और जन-चेतना' । उन्होंने हमें अजीब दृष्टि से घूरा; बोले— किस 'आंख के अंधे और गांठ के पूरे' ने तुम्हें अध्यक्षता करने का निमंत्रण दे दिया ? हम मर गये हैं क्या ? कवि-सम्मेलनों में जाना और बात है, और ऐसे गंभीर विषयों पर भाषण देना, अलग बात । ऐसा करो, यह टेलीफोन उठाओ और संयोजक से कहो कि तुम्हारी जगह मैं आ रहा हूं— अध्यक्षता करने ! मेरे हाथों के तोते उड़ गये । मैंने मन-ही-मन कहा— साला अपनी गोट फिट कर रहा है । मुझे बेवकूफ समझता है ? बड़ी मुश्किल से तो जीवन में यह सुनहरा अवसर हाथ आया और यह खूसट चाहता है कि यह अवसर भी इसे सौंप दूं ?

मैंने कहा— नहीं यार, दरअसल कार्ड छपकर बंट गये हैं, मैंने भी अखबारों में समाचार छपवा दिया है कि मैं उस कार्यक्रम की अध्यक्षता करने जा रहा हूं । अगर न गया तो कबाड़ा हो जाएगा । तुम तो मित्र के नाते दो-चार पाइंट्स लिखवा दो बस ! वह मौका हाथ से जाता देख, खिसियाकर बोला— सॉरी यार, मैं तो भूल ही गया, १२ बजे से मेरा पीरियड है । लेट हो गया । शाम को क्लब की जरूरी मीटिंग है । पांच तारीख को आना, लिखवा दूंगा । अर्थात कार्यक्रम होने के बाद आऊं ?

मैं भागा-भागा आया, सत्ताधारी दल के स्वनामधन्य नेता नागनाथजी के यहां । वे अपनी

शानदार हवेली की जानदार बैठक का दरवाजा बंदकर किन्हीं महापुरुषों से भेंट कर रहे थे। उनके नौकर के हाथ अपना कार्ड भिजवाकर वे खुशी से उछलते हुए बाहर आये और बोले— कब से रास्ता देख रहे थे हम कि आप-जैसे सज्जन भी इस कुटिया को पवित्र करें । पधारिए, भीतर चलकर बैठें । हम ही भीतर घुसे चार छह लोग वहां से ऐसे भागे जैसे प्लेग का नाम सुनकर गुजरात के लोग भाग रहे थे । नेताजी, सोफे पर पसरकर बोले— आज्ञा दें । मैंने मुसीबत में फंसने की बात बतायी तो वे उछल पड़े और बोले— भर से लोगों की मुसीबतें दूर करने का ही काम तो कर रहे हैं हम ! अभी-अभी जो सज्जन थे, वे सब मुसीबत-जदा थे । उनमें से एक साहब, शहर के मशहूर आबकारी ठेकेदार जिनको पुलिस ने बदनाम कर रखा है कि जहरीली शराब बनाकर बेची— और देखो लोगों के प्राण ले लिये । दूसरे थे भगवान के देश-प्रसिद्ध ठेकेदार पंचाननजी । निर्माण विभाग के भ्रष्ट अफसरों ने पथरिली नदी करोड़ का विशाल पुल पिछली बाढ़ में बह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रो, गले पड़ा [illegible] अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजनीति-शास्त्र के विद्वान की शरण में गये, जिनके बारे में यह मशहूर है कि उन्होंने अपने बाहुबल और पितृ बल का लाभ उठाकर पहली कक्षा से एम. ए. तक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी हथियायी, ठेके पर थीसिस लिखवाकर डॉक्टरेट ली और शिक्षा-मंत्री की चरण-वंदना कर प्रोफेसरी हथियायी ।

बहा दिया और दोष इन पर मढ़ रहे हैं कि इन्होंने घटिया पुल बनवाया । तीसरे सज्जन हमारी पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता हैं, जो नारकोटिक्स वालों को रिश्वत नहीं देते इसलिए वे उन्हें स्मैक के धंधे में लिप्त बता-बताकर बदनाम कर रहे हैं । चौथे थे इस शहर के निहायत शरीफ नागरिक जुम्मन पहलवान जिनको सारा शहर सलाम ठोकता है, मगर प्रशासन शहर में हुए हर जुर्म में उनको घसीटने का प्रयास करता है । ये सब हमारी शरण में आये थे । हमने इन मुसीबत-ग्रस्त लोगों को आश्वस्त कर दिया है कि हम उनकी मदद करेंगे । कहिए, आपकी मुसीबत क्या है— वे बोले । हमने अपनी मुसीबत ज्यों ही बतायी, वे सोफे पर उठकर खड़े हो गये । बोले— कहीं आप विरोधी-दल के षड्यंत्र का शिकार तो नहीं हो गये ? चुनाव के इस माहौल में आप-जैसे सज्जन और ख्याति प्राप्त साहित्यकार के मुख से हमारी पार्टी के खिलाफ कुछ कहलवाकर कहीं वे अपना उल्लू तो सीधा नहीं करना चाहते ? मगर हम आपको असलियत बताये देते हैं । देश में राजनीति का अपराधीकरण तब से हुआ, जब से ये विरोधी दल सत्ता में आये । इन विरोधियों ने अपराधियों से सांठ-गांठ करके ही सत्ता हथियायी थी । मगर उनका रेत-महल भरभराकर तुरंत गिर गया था । हमारे पास इनके सब पोल-पट्टों का हिसाब मौजूद है, जिसे हम ठीक समय पर और ठीक जगह उजागर करेंगे— समझे जनाब !

मुझे लगा कहीं वह गला पकड़कर न कहने लगें कि चलो, बताओ उन लोगों को जिन्होंने तुम्हें मेरे पास भेजा है ? मैं उनको भी देख लूंगा और तुमको भी ! वहां से भागकर मैंने विरोधी दल के नेता भुजंगनाथजी के घर में शरण ली । वे मुझे आता देख खिल उठे— अच्छे मौके पर आये बंधुवर ! एक शुभ कार्य करने जा रहे हैं हम लोग ! अशुद्ध वातावरण को शुद्ध करने हेतु हमने लक्षकुंडी यज्ञ करने का बीड़ा आप-जैसे धर्मप्राण लोगों के बल पर ही उठा लिया है । हजारों संत-महात्मा, पंडितजन पधारेंगे, भंडारा होगा, कृपया खुले हाथों से दान दीजिए । मैंने जेब में हाथ डाला तो केवल दस का फटा नोट था । वे मुझे हेय दृष्टि से देखकर बोले— प्रथम ग्रासे मक्षिका पाते ? हम तो सोचते थे आप-जैसा प्रसिद्ध साहित्यकार कम-से-कम एक हजार रुपये तो देगा ही । खैर, बोहनी के वक्त क्या चिकचिक करना, शेष राशि ९९१ रुपये घर से ले लेंगे । उन्होंने मेरा फटा नोट जेब के हवाले किया और एक हजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक की रसीद काटकर शेष राशि उधार लिख दी । गरीबी में गीला आटा ! वे बोले— हां, कहिए कैसे पधारे आप ?

हमने अपना मंतव्य बताया, तो वह गदगदायमान होकर बोले— कविवर, हम भी यही चाहते हैं कि आप-जैसे देश-प्रेमी, बुद्धिजीवी हमसे जुड़ें और देश को बतायें कि कैसे इस देश को हत्यारों, चोरों, तस्करों, दलालों, घुसपैठियों के हवाले कर दिया गया है । आप उस परिचर्चा में लोगों को बताइए कि सत्ताधारियों ने सत्ता पर एकछत्र अधिकार करने के लिए अपराधियों की सहायता ली और बदले में उन्हें अपराध करने की खुली छूट दी । धीरे-धीरे अपराधी सत्ता दल में घुसे और सत्ता के सिंहासन तक पहुंचकर बेखौफ होकर अपराध करने लगे और जनता बेचारी पिसती रही । मैंने बीच में ही कहा— ठोस प्रमाण मांगेगी जनता । वे बोले— हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े-लिखे को फारसी क्या ? क्या हमारी पार्टी के प्रधानमंत्री के पी. ए. ने अपनी मां के नाम से ट्रस्ट बनाया था, जिसमें करोड़ों रुपये चंदे के रूप में जमा हुए और फाइलों में दानदाताओं को राहतें मिलीं ? केशवदेव मालवीय-सिराजुद्दीन कांड, मूंदड़ा-कृष्णामाचारी कांड, बिहार का शीरा-कांड, मध्य प्रदेश का गुलाबी-चना कांड, कर्नाटक का अर्क कांड से लेकर आज के चर्चित गौ चरबी कांड, बोफोर्स, शेयर [illegible] मेमन दाऊद कांड, शक्कर कांड क्या हमारी [illegible] के हैं ?

इतना सुन मैंने कागज-पत्तर समेटे और भागा वहां से घर की तरफ, यह सोचकर कि [illegible] साहित्यकार हूं, साहित्यकार ही रहूं तो अच्छा वरना राजनीतिज्ञों की करतूतों पर मुंह खोलूं तो लोग मुझे भी परसाईजी की तरह लंगड़ा करके ही दम लेंगे । धीरवीर श्रोताओं, आप वाकई धन्यवाद के पात्र हैं, जो इस विषय की बारीक-से-बारीक बातें जानते हुए भी, हम-से वक्ताओं के मुख से वही सब सुनना चाहते हैं । आपकी माया भी अपार है । खैर याद आया, सचमुच माया ही ठगनी है, जिसके फेर में पड़कर राजनीति का अपराधीकरण और अपराधों का राजनीतिकरण धड़ल्ले से होता है । जहां तक जन-चेतना का प्रश्न है, यह मुद्दा है नहीं पूरे संसार को ज्ञात है कि भारत की जनता कितनी भी निरीह, मूक, बहरी या अंधी दिखे, मगर समय आने पर वह बता देती है कि उसमें ऐसी चेतना है, जो बड़े-से-बड़े पदमस्त या मदमस्त को धूल चटा सकती है ।

मित्रो, इस आयोजन में मुझ घोंचू को बुलाकर आपने किस बात का परिचय दिया है, यह तो समय ही बताएगा, मगर मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं कि आपने बड़े धैर्य के साथ मेरी यह बकवास सुनी ! परंतु मैं [illegible] होना चाहता हूं कि आपने मेरा धन्यवाद [illegible] किया । आपकी स्वीकृति तभी मानूंगा जब [illegible] जोरदार तालियां बजाएंगे ।

— १४/८, [illegible]

शाहजहानाबाद, भोपाल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि विलास

१. क. **उन्नसवीं** सदी के प्रारंभ में बंगाल के वह प्रसिद्ध सुधारक कौन थे, जिन्होंने धार्मिक व सामाजिक क्षेत्रों में कुप्रथाओं को समाप्त करने का अथक प्रयत्न किया था ?

ख. उन्होंने किस धार्मिक व सामाजिक संघटन की स्थापना की और कब ?

२. क. **वह** कौन-सा एवरेस्ट विजेता था जो दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने में सफल हुआ था ?

ख. उसके द. ध्रुव के अभियान में क्या विशेषता थी ?

३. क. **सिक्कों** की दशमलव पद्धति देश में कब से लागू हुई ?

ख. इस संबंध में संसद में कौन-सा कानून कब पास हुआ था ?

४. क. **भारतीय** वायुसेना के किस विमानचालक ने सबसे अधिक उड़ान में कीर्तिमान स्थापित किया है ?

ख. उसने कितनी उड़ान की ?

५. क. **हाल** में अंतरिक्ष यानों की उड़ान में कौन-सी महत्त्वपूर्ण घटना हुई ?

ख. ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना इससे पहले कब हुई थी ?

६. **दुनिया** में सबसे कम उम्र में डॉक्टरी (चिकित्सा) उपाधि पाने का गौरव किसने प्राप्त किया है ?

७. **इस** वर्ष दुनिया के दो सबसे अमीर व्यक्तियों में किनका नाम है ? उनकी संपत्ति कितनी है ?

८. **हाल** में किस महिला ने सबसे अधिक जुड़वां बच्चों को जन्म दिया है ?

९. **इस** वर्ष विंबलडन टेनिस में (क) पुरुष और (ख) महिला एकल खिताब किसने जीते हैं ?

१०. **एशियाई** भारोत्तोलन चैंपियनशिप में किस भारतीय महिला ने स्वर्ण पदक जीते हैं ? कितने ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइये यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीव-जंतु भी पत्थर बन जाते हैं

● नवीन खन्ना

झरने में रस्सी पर टंगे सभी खिलौने पत्थर बनने की हालत में

सुप्रतिष्ठित साहित्यकार और कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने जब यह बताया कि नर्मदा नदी में पड़ी लकड़ियों की टहनियां कुछ ही महीने में पत्थर बन जाती हैं, तो सहसा विश्वास नहीं हुआ। भू-विज्ञान के विद्यार्थी इस तथ्य से अवगत हैं कि किसी लकड़ी के टुकड़े को पत्थर बनने में लाखों वर्ष का समय लगता है। कोयला भी पेड़-पौधों से बना है, लेकिन यह सब परिवर्तन कई भूविज्ञानी-दबावों और तापों की क्रिया के पश्चात लाखों वर्ष पश्चात ही संभव हो पाया है।

नर्मदा नदी की तरह विश्व में अन्य कई स्थल है, जहां के जल में रखी कोई भी वस्तु लकड़ी, फूल, कपड़ा, कागज इत्यादि, कुछ ही दिनों में पत्थर में रूपांतरित हो जाती है। दरअसल यह क्रिया भू-विज्ञान की उन क्रियाओं से अलग है जिनसे जीवित वस्तुओं के अवशेष लाखों-करोड़ों वर्ष के भू-गर्भीय परिवर्तनों के पश्चात रूपांतरित होकर पत्थर अथवा जीवाश्म बन जाते हैं।

इनमें से एक स्थल ब्रिटेन में यार्कशायर के निकट नेरसब्रो के पास स्थित है। इस स्थल के विषय में सर्वप्रथम जानकारी इंगलैंड के एक प्रकृतिवेत्ता बक्लैंड ने सन १८८३ में दी। प्रकृति की विचित्रताओं के इतिहास संबंधी अपने प्रकाशन में उसने बताया कि जीवित वस्तुओं को पत्थर में रूपांतरित करने का उपरोक्त स्थल 'ड्रापिंग-वैल' (झरता-कुआं) के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थल के पानी की विशेषताओं के विषय में स्थानीय लोगों को काफी पहले से ही जानकारी प्राप्त थी।

अलौकिक-शक्ति संपन्न महिला

अलौकिक शक्तियों से संपन्न मदर शिप्टन नामक एक महिला का जन्म ड्रॉपिंग-वैल के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास ही हुआ था । वह पानी के इस स्रोत के पीछे की एक गुफा में रहती थी । स्थानीय लोग जितना पानी के रहस्यमय गुणों के कारण घबराते, उतना ही उस स्त्री के जादुई कारनामों से डरते थे । इस कारण वह स्थल सन १४८८ के बाद तक वीरान ही बना रहा । विश्व के लगभग सभी देशों की धार्मिक कथाओं में ऐसे जल-स्रोतों का वर्णन है जिनमें स्नान करते ही जीवित प्राणी पत्थर का बनकर रह गया । रामायण में अहिल्या के शिला बन जाने का वर्णन है । ग्रीक इतिहासकार स्ट्रेबो (ईसा-पूर्व ६३ से ईस्वी २० तक) ने एक पक्षी के विषय में लिखा है । यह पक्षी ज्यों ही एक झरना पार करने लगा, झरने के पानी की कुछ बूंदें उसके पंखों पर गिर गयीं और वह पक्षी उसी समय पत्थर का बन गया । चीनी वृत्तांत शू-१-ची (अजीबो गरीब घटनाओं का रेकॉर्ड, सन ५३० के लगभग) में भी ऐसे जल-स्रोत का वर्णन है जिसमें नहाने से कोई भी जीवित प्राणी पत्थर में परिवर्तित हो जाता था ।

इस प्रकार के जल में यदि अपना हाथ अथवा पांव कुछ देर तक रखकर हटा दिया जाए तो इसकी छाप अमिट हो जाएगी । चित्रकूट में विभिन्न स्थलों पर, विशेषतः स्फटिक-शिला पर जो पद-चिह्न मौजूद हैं वे चट्टान के निर्माण के दौरान ही बने हुए प्रतीत होते हैं ।

नर्मदा नदी की तरह विश्व में अन्य कई स्थल है, जहां के जल में रखी कोई भी वस्तु लकड़ी, फूल, कपड़ा, कागज इत्यादि, कुछ ही दिनों में पत्थर में रूपांतरित हो जाती है । दरअसल यह क्रिया भू-विज्ञान की उन क्रियाओं से अलग है जिनसे जीवित वस्तुओं के अवशेष लाखों-करोड़ों वर्ष के भू-गर्भीय परिवर्तनों के पश्चात रूपांतरित होकर पत्थर अथवा जीवाश्म बन जाते हैं ।

पत्थर में परिवर्तित एक कलाकृति

लकड़ी इत्यादि पदार्थ, पत्थर कैसे बन जाते हैं

उपरोक्त 'ड्रापिंग-वैल' जल-स्रोत में लोग तार के ऊपर खिलौना — भालू (टैडी-बिअर), टाइयां, छाता, हैंड-बैग और ब्रॉ इत्यादि वस्तुएं टांग देते हैं । ये सभी वस्तुएं कुछ ही दिन में चूना-पत्थर की बनी प्रतीत होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगती है ।

दरअसल इस प्रकार के जल-स्रोतों में प्रकृति ने मानो एक अद्भुत प्रयोगशाला बना रखी है । जल में चूने की नियत मात्रा रहती है । यह चूना एक रासायनिक क्रिया के पश्चात विघटित होकर जल, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड और कैल्शियम-कार्बोनेट में परिवर्तित हो जाता है । कार्बन-डाइ-ऑक्साइड के बाहर निकलते ही रखे गये पदार्थ पर चूने की महीन तह जम जाती है । ऊपर लगातार पानी गिरने से चूने की परत मोटी होती चली जाती है । रखी हुई वस्तु पर एक साल में चूने की लगभग बारह मिलिमीटर परत जम जाती है । क्योंकि तार पर टंगी वस्तु पर पानी हर तरफ से बराबर गिरता है, इस कारण उस वस्तु के प्रत्येक भाग पर चूने की तह जमती चली जाती है और कुछ महीने के पश्चात ऐसा प्रतीत होता है कि वह वस्तु पत्थर की बन गयी है । सूखने पर यह तह पत्थर की तरह कड़ी और मजबूत भी हो जाती है । इस प्रकार की कई तहें चूना पत्थरयुक्त पानी की झीलों और नदियों में भी देखी जा सकती हैं ।

मुनाफा कमाने का जरिया

तकनीकी दृष्टि से इस प्रकार किसी वस्तु के पत्थर बन जाने की क्रिया को 'पेट्रिफिकेशन' अथवा 'अश्मीकरण' कहा जाता है । पानी में रखे गये पदार्थ पर कैल्साइट नामक चूना पत्थर की तहें जमती चली जाती हैं । चूने की तहें चढ़ने के बावजूद भी उस पदार्थ की अपनी आकृति विद्यमान रहती है, इस कारण पत्थर में रूपांतरित वह पदार्थ ग्राहक के लिए अत्यंत कौतुक का विषय बन जाता है । इस तरह के जल-स्रोत पर्यटकों के आकर्षण का भी केंद्र बन जाते हैं । ब्रिटेन में ही इस प्रकार के कई जल-स्रोत ढूंढ़ निकाले गये हैं, जिनमें लेंकाशायर का 'व्हाइट-वैल' और चेशायर का 'सिल्वर-वैल' प्रमुख हैं ।

फ्रांस, इटली और उनके निकटवर्ती क्षेत्रों में भी इस प्रकार के कई जल-स्रोत विद्यमान हैं । 'सेंट-एल्चर' नामक जल-स्रोत के निकट विभिन्न प्राणियों की पत्थर में रूपांतरित

गुलाब का सुंदर फूल ! पत्थर में बदलने के बाद भी रंग की छटा में ।

इस प्रकार के जल में यदि अपना हाथ अथवा पांव कुछ देर तक रखकर हटा दिया जाए तो इसकी छाप अमिट हो जाएगी । चित्रकूट में विभिन्न स्थलों पर, विशेषतः स्फटिक-शिला पर जो पद-चिह्न मौजूद हैं वे चट्टान के निर्माण के दौरान ही बने हुए प्रतीत होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकृतियों का एक उद्यान विकसित किया गया है। इस उद्यान में सैंकड़ों वर्ष पूर्व के जीव-जंतुओं की अश्मीकृत (पत्थर बनी) आकृतियों का संग्रह है।

फ्रांस के आवेयर्न नामक स्थल पर इस प्रकार के चमत्कारिक जल-स्रोत का उपयोग पत्थर की कलाकृतियां बनाने में किया जाता है। सर्वप्रथम किसी कलाकृति को तांबे की प्लेट में उतारकर मास्टर-कापी बना ली जाती है। फिर इस कलाकृति को सांचों में उतारकर सांचों में से जल-स्रोत का पानी प्रवाहित किया जाता है। कुछ ही महीने पश्चात उस कलाकृति की अश्मीकृत (पत्थर की) अनुकृति प्राकृतिक रूप से बनकर तैयार हो जाती है। पत्थर की इन अनुकृतियों के पीछे से यदि प्रकाश फेंका जाए तो चूने के नन्हे-नन्हे स्फटिक प्रकाश को इस प्रकार बिखेरते हैं कि कलाकृति की छटा देखते ही बनती है।

इस प्रकार के स्थलों पर नियमित रूप से आनेवाले पर्यटक अपने साथ कई बार पक्षियों का पिंजरा, पुरानी सिलाई-मशीन, टेलीफोन का चोगा अथवा पुराने बूट भी ले आते हैं और पानी में इन वस्तुओं को कुछ दिन रख इन्हें अश्मीकृत बना लेते हैं।

—सी-४५२, विकासपुरी
नयी दिल्ली-११००१८

पुरातन बेशकीमती धरोहर पंगोलिन

सरीसर्प जाति व डायनासोर प्रजाति के इस स्तनपायी का वैज्ञानिक नाम मेंनिस है। पंगोलिन कहलानेवाले इस सीधे-साधे निरीह जंतु का अस्तित्व पृथ्वी पर २५ लाख वर्ष पुराना है। जीवाश्म के रूप में फिलीस्टोसीन युग में इसके अवशेष मिलते हैं।

अफरीका और भारत में देखे गये इस जीव की लंबाई ५ फुट और वजन २७ से ३५ कि.ग्रा. तक होता है। इसके शरीर पर भूरे रंग के शल्क व बाल होते हैं। गोली भी इसकी कठोर त्वचा पर असर नहीं करती। इसका मुंह लंबा, थूथन के आकार का होता है व जीभ एक फुट से अधिक लंबी होती है। चार पैरों के पंजे में पांच अंगुलियां व नाखून ६ इंच लंबे, नुकीले व मुड़े होते हैं। इसी कारण यह मिट्टी तेजी से खोदता है।

किसी खतरे का अहसास होने पर यह गेंद की भांति गोल हो जाता है। इसका प्रिय भोजन चींटी व दीमक है। अतः इसे चींटाखोर भी कहते हैं। बिना दांत वाले इस जीव की आयु लगभग १२ वर्ष होती है।

विलुप्त होते इस जीव का एक जोड़ा न्यूयार्क जूलोजिकल सोसाइटी में उपलब्ध है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह अत्यंत दुर्लभ प्रजाति है। पुरातन जीव होने के कारण शोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। हाल ही में रुड़की में एक पंगोलिन का पता चला है।

— वीरेश चौहान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत, गाजियाबाद ।

प्रश्न : मेरी उम्र ४२ वर्ष की है । पेशाब में जलन रहती है । मात्रा में भी कम आता है । सभी प्रकार की जांच कराई, कृपया कोई उपचार बताएं ।

उत्तर : गोक्षुरादि गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । चंदूनासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

हरजीत सिंह, मलेर कोटला ।

प्रश्न : मैं साठ वर्ष का व्यक्ति हूं निचले हिस्से में हल्का-हल्का दर्द रहता है । उठने बैठने में कई बार परेशानी होती है । शौच के साथ बार-बार आंव आती है । काफी इलाज किया, स्थायी लाभ नहीं मिला ।

उत्तर : चित्रकादिवटी दो-दो गोली सुबह-शाम गर्म पानी से लें । कुटआरिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

नंदनी, फिरोजपुर ।

प्रश्न : बिटिया की उम्र आठ साल है । स्मरण शक्ति कम है, हर बात को देर से समझती है । बोलने में भी अटकती है । कमजोर भी है ।

उत्तर : शंख पुष्पी चूर्ण तीस ग्राम, असगंधाचूर्ण पंद्रह ग्राम, आंवला चूर्ण पंद्रह ग्राम लेकर सभी औषधियों की नब्बे मात्रा बनाएं । सुबह, दोपहर व रात एक-एक मात्रा पानी से दें । एक वर्ष नियमित औषधि का प्रयोग कराएं ।

श्रीमती किरण, रोहतक ।

प्रश्न : उम्र २८ वर्ष । कमर में दर्द व पैरों में दर्द रहता है । दुबली-पतली हूं । तीन वर्ष विवाह के हो गये, पर संतान नहीं हुई । जांच में दोनों स्वस्थ हैं ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक-एक सुबह और रात दूध से लें । अशोकारिष्ट दो चम्मच व अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

अरविंद घोष, कलकत्ता ।

प्रश्न : मेरी आयु ५२ वर्ष है । अकारण मानसिक तनाव बना रहता है । उत्साह नहीं है । एकांत अच्छा लगता है । पत्नी परेशान है । कृपया दवा बताएं ।

उत्तर : ब्रह्म रसायन एक-एक चम्मच सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और सारस्वतारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

अरुणा, मुरादाबाद ।

प्रश्न : उम्र ५० वर्ष है । कमर में दोनों तरफ दर्द है । कभी-कभी पैरों में नीचे तक होने लगता है । किसी समय तो सहन से बाहर होता है । कब्ज रहता है । एलोपैथी दवा से कुछ समय के लिए लाभ होता है ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो-दो वटी सुबह, दोपहर और रात गर्म पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच और अभयारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पिएं ।

अनुज द्विवेदी, इलाहाबाद ।

प्रश्न : उम्र २१ वर्ष । एक वर्ष पहले एलोपैथी में नींद की गोली का दो बार प्रयोग किया । उसके दायीं आंख, बायीं आंख से छोटी हो गयी है । पुतली भी कम खुलती है ।

उत्तर : सप्तामृत लोह तीस ग्राम और रसराजरस तीन ग्राम लेकर साठ मात्राएं बनाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें। अश्वगंधारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं।

चंद्रशेखर, पटना।

प्रश्न : उम्र २४ वर्ष। शरीर में विशेषकर गरदन, पीठ और गाल पर छोटे-छोटे चकत्ते हो गये हैं। गरमी में बढ़ जाते हैं।

उत्तर : केशोर गूगल एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें। आरोग्यवर्धनी वटी भोजन के बाद पानी से नियमित छह माह तक लें।

क, ख, ग, समस्तीपुर।

प्रश्न : पचीस वर्षीया अविवाहित महिला हूं। लगभग छह माह से मासिक बंद है। कभी-कभी पेट दर्द भी होता है। काफी चिंतित हूं। मां को बताने में संकोच होता है। कोई उपयुक्त दवा या सलाह दें।

उत्तर : किस कारण ऐसा हुआ है, इसका निदान अवश्य कराना चाहिए। परिवार के किसी सदस्य को विश्वास में लेकर उचित चिकित्सा कराएं। चंद्रप्रभावटी एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें। कुमारी आसव दो चम्मच सम भाग पानी में मिलाकर भोजन के बाद पिएं।

रमेश, सिरसा।

प्रश्न : उम्र २५ वर्ष है। सिर में प्रायः भारीपन रहता है। नींद कम आती है। किसी समय तो अजीब तरह की बेचैनी हो जाती है। जांच में सभी सामान्य है। कृपया दवा लिखें।

उत्तर : अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और बलारिष्ट दो चम्मच में सम भाग पानी में मिलाकर भोजन के बाद पिएं।

प्रभु दयाल, जोधपुर।

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष की है। छह माह पहले बुखार से ग्रसित था। एलोपैथी दवा से ठीक हो गया। तभी से शरीर में कमजोरी है। शरीर थका-थका-सा रहता है अकसर शाम को थकावट हो जाती है।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ता शुक्तिभस्म दस ग्राम लेकर इसकी साठ मात्रा बनाएं। सुबह-शाम एक-एक मात्रा शहद से लें। द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पिएं।

विजय, होशंगाबाद।

प्रश्न : ३० वर्ष का व्यक्ति हूं गला हमेशा बंद लगता है। जलन होती है। मुंह में छाले हैं। कभी-कभी उल्टी करने का मन होता है। बहुत परेशान हूं। कोई दवा बताएं।

उत्तर : सूतशेखर रस दो वटी सुबह-शाम पानी से लें। लवणभास्कर चूर्ण आधा चम्मच, आंवलाचूर्ण चौथाई चम्मच भोजन के बाद लें। अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच रात पानी से लें।

— कविराज वेदव्रत शर्मा

बी-५/७, कृष्णा नगर, दिल्ली-११००५१

विश्व का सबसे बड़ा वृक्ष

विश्व का सबसे बड़ा वृक्ष अमरीका के कैलिफोर्निया का रेडवुड वृक्ष है। इस वृक्ष को 'जनरल शरमन' नाम दिया गया है। इसका स्तंभ ८० मीटर ऊंचा है। इसका आधार लगभग ३० मीटर है। पर्यावरण विशेषज्ञों का दावा है कि यह वृक्ष ३५०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

— मनोज राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गत कई दिनों से उद्विग्न था । वर्ष का अंत समीप था और वह अपनी सारी छुट्टियों का उपयोग कर चुका था । किंतु कम-से-कम एक दिन की छुट्टी तो उसे चाहिए ही थी । इतने दिनों तक बिना छुट्टी के रहने की उसकी आदत नहीं थी । ऐसी स्थिति में वह तनावग्रस्त हो आता और फिर बाहर कहीं उसका मन नहीं लगता । सचमुच छुट्टी मिले बहुत दिन हो चुके थे और वर्ष समाप्ति के पहले एक दिन की भी छुट्टी मिल जाए, तो क्या कहना ?

यों रविवार की छुट्टी तो कार्यालय में होती ही थी ! पर वह छुट्टी भी कोई छुट्टी है ? वह तो जमाने से चली आ रही है । इसकी बंधी-बधाई रूटीन है । कपड़ा साफ करो, जूते पर स्त्री करो, जूते में साप्ताहिक पॉलिश करो और बाकी समय पत्नी के साथ मिलकर घर की सफाई करो । बैठक-खाने को दुरुस्त करो, हाट-बाजार जाओ और समय बचा, तो बच्चों की पढ़ाई-लिखाई देख लो । इस छुट्टी का होना, नहीं होना बराबर है ।आराम का, अपने मन से समय बिताने का तो इसमें संयोग कहाँ

कहानी

छुट्टी के लिए

● डॉ. भगवतीशरण मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे कार्यालय सरकारी था, अतः प्रायः हर दिन छुट्टी का ही दिन था। जाड़े के दिनों में कार्यालय दस बजे आरंभ होता था, पर साढ़े ग्यारह तक तो बड़े बाबू भी नहीं आते थे, अतः उसके पूर्व कार्यालय पहुंचने की कोई तुक ही नहीं थी।

से रहा।

ऐसे, कार्यालय सरकारी था, अतः प्रायः हर दिन छुट्टी का ही दिन था। जाड़े के इन दिनों कार्यालय दस बजे ही आरंभ होता था, पर साढ़े ग्यारह तक तो बड़े बाबू भी नहीं आते थे, अतः उसके पूर्व कार्यालय पहुंचने की कोई तुक ही नहीं थी।

कार्यालय पहुंचने के पश्चात् भी उपस्थिति-बही में दस्तखत टांकने के अलावा कुछ विशेष कार्य हो, यह बात भी नहीं थी। एक बार उपस्थिति दर्ज हो गयी, तो छुट्टे सांड़ की तरह, जहां चाहे विचरो। बाहर "टेरेस" पर धूप खाओ अथवा कभी वित्त, तो कभी कार्मिक-विभाग के बहाने 'सीट' से खिसक जाओ। कौन पूछता है ? सबसे अच्छा और सर्वमान्य बहाना था, चाय पीने का। यों तो कार्यालय में चाय पीने का अवकाश एक बार ही होता, परंतु चाय पीने जानेवालों का तांता लगा ही रहता था। कर्मचारियों के इस परंपरागत कर्मकांड में व्यवधान डालने का साहस किसी अधिकारी में भी नहीं था। कैंटीन में बैठकर चाय की टेबुलों पर चोंचें लड़ाने में ही कार्यालय-काल का अधिकांश समय निकल जाता। फिर चाय के लिए भागने का विशेष कारण भी था। चाय तो मात्र बहाना थी, उसके साथ नमकीन, समोसे और रसगुल्ले तक पर हाथ साफ करने का सुयोग सदा सहज उपलब्ध था। जिनके भाग्य अधिक अनुकूल हुए उनके पॉकेटों में दस-बीस से लेकर सौ के नोट भी आ सकते थे। कभी यह राशि हजार और उसके ऊपर भी जा सकती थी।

यह सब जो लोग संभव करते थे, उन्हें सचिवालय की भाषा में "आसामी" बोलते थे। जैसा मोटा काम, वैसा मोटा "आसामी" और वैसी ही मोटी रकम और वैसा ही तगड़ा चाय-पान। इस तरह कार्यालय के दिन भी एक तरह से छुट्टी के ही दिन होते थे और सार्थक छुट्टी के दिन।

ऐसे में, कोई छुट्टी लेकर घर बैठने की मूर्खता करने की बात सोच भी नहीं सकता था, पर वह तो गत पंद्रह दिनों, जब से उस महत्त्वपूर्ण केंद्रीय नेता की "कार" दुर्घटनाग्रस्त हुई थी और वे राजधानी के अस्पताल में अपने जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहे थे, लगातार यही सोचने को बाध्य हो गया था कि कब वे भगवान के प्यारे हों और कब एक दिन की छुट्टी .)..।

दरअसल इधर कार्यालय में कड़की के दिन चल रहे थे। दिसंबर के इन अंतिम पखवारे में सर्द हवाएं चल रही थीं और सचिवालय-परिसर सूना-सूना लगता था। "आसामी", इन दिनों दूर देहातों में अपने-अपने घरों में सिकुड़े पड़े थे अथवा अलाव की आग में अपनी पीठ सेक रहे थे। ऊपर से कोढ़ में खाज की तरह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यव्यापी हड़ताल । वह और उसके बहुत से साथी तो इस हड़ताल से बचने बाहर गये थे, ताकि कम-से-कम चाय-पान का प्रबंध बरकरार रहे । पर चाय-पानी का यह स्रोत पूरी तरह सूख गया था । प्रखंडों और अनुमंडल-जिला-कार्यालयों में हड़ताल शत-प्रतिशत थी, अतः वहां से कोई "केस" ही सचिवालय तक नहीं आता था कि कोई "आसामी" शीत और सर्द हवाओं की परवाह किये बिना भी राजधानी तक दौड़ लगाने को विवश हो !

ऐसी स्थिति में, छुट्टी मनाने का मन बनना स्वाभाविक था । सुबह जब तक चाहो बिछावन में करवटें बदलते रहो । सुविधानुसार उठो, दाढ़ी बनाने, नहाने का जी करे तो उनसे निबट लो वर्ना लेटे-लेटे ही अखबार के पन्ने उलटते रहो, टी. वी. अथवा ट्रांजिस्टर के गाने सुन-सुन अंगड़ाइयां भरते रहो । जब मन करे नाश्ता करो, जब मन करे खाना खाओ और जी चाहे तो लंबी तानकर सो जाओ । छुट्टी के दिन के मौज के क्या कहने ? पर यह कंबख्त छुट्टी थी कि आ ही नहीं रही थी ।

वही नहीं, उसकी तरह के बहुत से कर्मचारियों का ध्यान इस संभावित छुट्टी पर लगा था । पके आम की तरह वह किसी दिन उनकी झोली में टपक सकती थी । रोज उस महत्त्वपूर्ण नेता की स्वास्थ्य-बुलेटिन अखबारों में छपती थी, रेडियो और टी. वी. से प्रसारित होती थी । वे उसे ध्यान से पढ़ते-सुनते पर यह बुलेटिन थी कि कुछ साफ उगलने का नाम ही नहीं लेती थी । रोज वही "क्रिटिकल" और "सीरियस कंडिशन" वाली पिटी-पिटाई बात ।

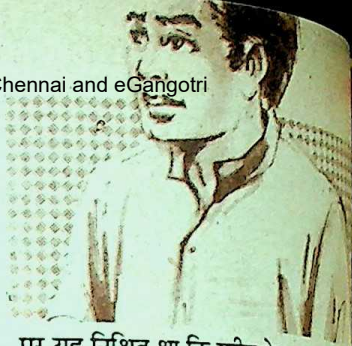

पर यह निश्चित था कि मरीज के स्वास्थ्य का "ग्राफ" लगातार नीचे गिरता जा रहा था, कभी कभी तो किसी सुधार का संकेत आता । वे जानते थे कि बुलेटिन प्रसारित करनेवाले "डॉक्टर" जान-बूझकर जनता को उल्लू बना रहे हैं और उस महान् नेता को अब बिस्तर नहीं छोड़ना था । यह बात अलग थी कि इस काम में वह कितना समय लेता है ।

इसी बात पर उसके साथियों में अकसर बहस भी ठन जाती । कोई कहता, "अरे वह आसानी से मरनेवाला नहीं । "कसरती" देह है उसकी । सुना एक्सिडेंट होने के दिन भी उसने सौ "उठक-बैठकें" की थीं ।"

"ठीक कह रहे हो" दूसरे ने जोड़ा, "अगर तो पचहत्तर की उम्र में भी पैंतालीस का लगता था । आसानी से उसके प्राण-पखेरू निकलने से रहे ।"

"अरे यह सब डॉक्टरों की खुराफात है ।" कोई बड़ा बाबू-टाइप व्यक्ति जोड़ता । "कैसे ?" सभी आकर पूछते । "अरे वे मुर्दे को जिंदा बनाये रखने पर तुले हैं । नाक में नली, मुंह में नली, शरीर में जहां-तहां खुंसी लंबी सुइयां । किसी से ऑक्सीजन दे रहे हैं तो किसी से "लिक्विड-डायट" तो किसी से खून टपकाये जा रहे हैं, उसकी सूखी नसों में । और

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नो और दिल धड़कने से एतराज करने पर आया तो "पेस-मेकर" फिट कर दिया । अब मरो कैसे मरते हो ।"

"यह सब आपको किसने बताया ?" कोई नया-नया नियुक्त सहायक पूछता ।

"बताना क्या है ? यही होता है, इस बड़े लोगों के साथ । ये डॉक्टर अपने को भगवान का अवतार जो समझते हैं । मृत्यु के मुख से बड़े मरीजों को खींच लाने का स्वांग रचते हैं । कोई साधारण व्यक्ति होता तो कभी की उसकी नाक से ऑक्सीजन की नली निकाल देते और देखते-देखते उसकी हो जाती इति-श्री । पर ये तो मुर्दे की मिट्टी पलीत करने पर पड़े हैं । उसे चैन से मरने भी नहीं देते और हमारी सांसों को भी अटकाये पड़े हैं, महज एक दिन की छुट्टी की आशा में ।' "पर यह तो मनुष्यता नहीं", कोई ऑफिस सुपरिंटेंडेंट-सा व्यक्ति बोलता, "एक व्यक्ति की जान पर आयी है । और अन्य लोगों को एक दिन की छुट्टी की पड़ी हैं ।"

"आप भी कौन-सा राग अलाप उठे" कोई सहायक चट से जवाब देता, "हम कोई जिंदे की मरने की बात कर रहे हैं क्या ? भगवान उसे सौ वर्ष की आयु बख्शे, हमें क्या ? पर वह तो मर चुका है, अब ये डॉक्टर व्यर्थ में टांगें अड़ाकर उसकी भी जान सांसत में डाले हुए हैं और हमारी भी । इतने बड़े नेता के मरने पर तो छुट्टी होनी ही होनी है, हम कौन-सा कुछ अधिक चाह रहे हैं ?"

वह सब कुछ सुनता रहता और मन-ही-मन कुढ़ता भी जाता । पता नहीं यह छुट्टी कब आएगी ! अगर हड़ताल टूटने के बाद आयी अथवा किसी छुट्टी के दिन ही वह महान् नेता

चल बसा तो मजा ही किरकिरा हो जाएगा ।

"अब तो इस छुट्टी को शीघ्र आना चाहिए ।" कोई सहायक ही आरंभ हुआ, "बेचारा बड़ा भला व्यक्ति था । इतना बड़ा राजनेता होते हुए भी अभिमान तो उसे छू तक नहीं गया था । सुना बहुत धार्मिक भी था । मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों से लेकर गुरु-द्वारों तक में शीश झुकाता था । घर पर नित्य नियम-पूर्वक पांचों प्रार्थनाएं भी करता था । ऐसे व्यक्ति को भगवान बहुत कष्ट नहीं दे सकता । शीघ्र ही उसको इस यंत्रणा से मुक्त करेगा ।"

"तुम लोग जो कहो", अपनी अधपकी दाढ़ी सुलझाते हुए उसके सेक्शन के बड़े बाबू बोले, "उस व्यक्ति ने जीवन भर लोगों का उपकार किया है । मरते समय ऐसा नहीं करे यह हो नहीं सकता । छुट्टी तो होनी ही होनी है ।"

"मैं कहूं ?" एक नौजवान-से लगते व्यक्ति ने टोका । सबकी दृष्टि उसकी तरफ उठ गयी ।

"हमलोगों के भाग्य में यह छुट्टी नहीं लिखी ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ? ऐसा क्यों कहते हो ?" कइयों ने एक साथ पूछा, "क्या यह व्यक्ति अमर होकर आया है ?"

"अमर होकर आया हो या नहीं, पर मुझे लगता है वह किसी छुट्टी के दिन ही मरेगा ।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो ?" आसपास से उठे स्वर में हताशा थी । वह भी अंदर ही अंदर उदास हो गया । अगर ऐसा हुआ तो गजब हो जाएगा । कितने दिनों से चल रही उसकी आशा पर बुरी तरह पानी फिर जाएगा ।

शाम को वह घर लौटा तो बहुत उदास था । पत्नी ने उदासी का कारण पूछा तो वह मुंह लटकाकर बोला, "एक दिन की अतिरिक्त छुट्टी के दिन ही मरेंगे । मुझे भी अब ऐसा ही लगने लगा है । कोई तीन सप्ताह से तो अस्पताल में पड़े हैं । उठनी होती तो मिट्टी कभी की उठ गयी होती । पत्नी अकस्मात बिफरी थी, "देश का इतना महान् और भला नेता जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है और तुम्हें एक दिन की छुट्टी की पड़ी है । यह नहीं कि उसकी जिंदगी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करो, उलटे उसकी मृत्यु की कामना पाले बैठे हो ।"

"चुप करो", वह आंगन में पड़ी एक टूटी बांहवाली कुरसी पर बैठकर पैरों से जूते और मोजे उतारते हुए बोला, "तुम तो दिन-रात घर में रहकर रोटी तोड़ती हो, तुम्हें छुट्टी के महत्त्व का क्या पता ? भाग-दौड़ की हमारी दफ़री जिंदगी में एक दिन की भी छुट्टी कितनी प्रसन्नता घोल देती है । तुम्हें क्या मालूम ? तुम तो मुझे एक दिन भी आठ बजे दिन तक टांग पसारकर सोते देख नहीं सकती ।"

"तब तो तुमलोगों का बस चले, तो देश के सभी नेताओं को यमराज के प्यारे कर, छुट्टी ही छुट्टी मनाओ । संकीर्णता और स्वार्थ की भी हद होती है । कुछ तो शर्म करो ।" उसने मन-ही-मन भगवान से मनाया कि कम-से-कम आज की रात तो उनकी सांसों की डोरी नहीं तोड़े । अगर यह रविवार टल गया, तो अगले सप्ताह को पार करना उनके लिए आसान नहीं होगा । उसने शाम की उनकी हेल्थ-बुलेटिन पढ़ी थी । वे गहरी कोमा में चले गये थे बोलना और लोगों को पहचानना पूरी तरह बंद कर दिया था । दिल के दो झटके पड़ गये थे । काश, आज की रात उनको दिल का दौरा नहीं पड़ता . . . तीसरे दौरे को बर्दाश्त करना तो . . . ।

"उठो, उठो, कब तक लंबी तानकर सोते रहोगे ?" उसने आंखें मली मलीं और कलाई घड़ी पर ध्यान टिकाया । पत्नी की आवाज़ पर उसे चिढ़ हुई ।

"अरे, अभी तो साढ़े आठ ही बजे हैं । आज तो कम-से-कम नौ बजे तक सोने दो ।" वह झल्लाते हुए लेटे-लेटे ही बोला ।

"यह तो ठीक", पत्नी ने जवाब दिया . . ." पर वे महान् नेता तो चल बसे । अभी-अभी टी. वी. पर न्यूज आया है ।"

"क्या कहा ?" वह हड़बड़ी में शरीर से रजाई फेक, खाट पर बैठते हुए बोला . . . "आखिर वही हुआ जिसका हमें भय था ! छुट्टी के दिन ही चल बसे वह भी सुबह-सुबह ही !"

४५/६०, ऑफिसर्स फ्लैट
बेली रोड, पटना-८००००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-कथा

सगुणी-निगुणी

● डॉ. सरोजनी प्रीतम

सगुणी ने अपनी कटीली भौंहों के आस-पास उगे छोटे-छोटे सफेद बालों को देखा तो उसका माथा ठनका...उस काली कटीली लकीर के पास ज्यों सफेद चीटियां चलने लगी हों...उसने माथा खुजलाया । बार-बार हाथ से भौंहों को टटोला पर नामुराद सफेद बाल टस से मस न हुए । सगुणी ने चट से उन्हें नोंच-नोंचकर भौंहों से यों अलग करके फेंकना शुरू किया जैसे कोई दुश्मन को खदेड़ रहा हो ।

नोंचते-नोंचते उसे यह भी ध्यान न रहा कि एक भौंह तो आधी ही रह गयी थी और दूसरी भौंह के साथ मिलकर...अब मुंह पर डेढ़ भौंह ही बाकी थी । सगुणी ने हाथ का प्लकर (नकचूनानुमा औजार) एकदम फेक दिया । फिर दुबारा भौंहों को निहारा तो अपनी अजीब सूरत पर रोना आया । सिर पीटते हुए रो पड़ी...''यह क्या हो गया रे...

''अब यह ड्योढ़ी भौंह ही मुंह की ड्योढ़ी में रहेगी ? हाय मैं तो किसी को मुंह न दिखा पाऊंगी...हाय हाय !'' करते वह पश्चाताप की आग में झुलस ही रही थी कि आग बुझानेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमकल की गाड़ी की तरह उसकी प्यारी सहेली निगुणी आ धमकी । सगुणी की भौंह की हालत देख उसका भी कलेजा मुंह को आने लगा । उसने चट से भौंहें बनानेवाली काली पेंसिल निकालकर उसकी भौंह का आकार ठीक कर दिया और बोली "अरे आजकल तो हर चीज बाजार में मिलती है यह देखो तो कैसी सुंदर हो गई तुम्हारी भौंहें, पहले से अधिक सुंदर, अधिक कटीली...तेजधारवाली—कहो तो इससे कुछ काटकर दिखाऊं... ? निगुणी हंस दी । सगुणी भी हंसी तो, पर चिंता के बादल न छटे थे । अभी भी चिंतित स्वर में बोली "जैसे मूंछे नकली मिलती हैं वैसे ही, भौंहें भी तो मिलती होंगी... ?"

क्या ? निगुणी ठहाका लगाते हुए बोली..."क्या बात है ! क्यों न हम नकली भौंहों के आयात-निर्यात का ही काम शुरू कर दें, फिर हम विज्ञापन देंगी...आपकी भौंहों के पास...कहीं सफेद बाल तो नहीं...बुढ़ापे के यह नन्हे ऐजेंट कहीं आपका रूप आकार बदल कर आपकी बढ़ती उम्र की घोषणा तो नहीं कर रहे ? महिलाएं ध्यान दें...अपनी भौंहों पर कड़ी नजर रखें...नन्हें घुसपैठियों को मार भगाने का काम हमें सौंप कर चैन की बंसी बजाएं...तू तूरूह...पर सगुणी को वह बहला न सकी । निगुणी ने साफ देखा सगुणी पसीना पोंछ कर फिर अपनी भौंहें निहार रही है । पसीने से आधी लकीर सी खिंची वह भौंह मिट चुकी थी और मुंह पर फ़िर वही डेढ़ भौंह ही लटकी थी... । सगुणी को लगा सारी सहेलियां उसे डेढ़ भौंहवाली कहकर हंस रही हैं । गली-मुहल्ले के सारे बच्चे भी उसी की ओर ताक लगाये हुए उसे

डेढ़...डेढ़ी...कहकर चिढ़ा रहे हैं...गली-मुहल्ले की कई औरतें उसकी आधी भौंह के टूट जाने का शोक मनाने आ बैठी हैं...और सगुणी अपने ही हाथों से अपनी आधी भौंह का संस्कार करके घुटनों में मुंह छिपाये बैठी है...मुंह ऊंचा भी कैसे करें, उसकी तो भौंह आधी ही रह गयी है हा...य... मुंह ऊंचा भी इससे पहले कि सगुणी और ऊल जुलूल सोचती उसकी सहेली निगुणी ने उसको झकझकोरते हुए कहा "कल मीटिंग है । अपनी बात मनवाना जरूर कि...।" —न, मैं मीटिंग में अब कौन सा मुंह लेकर जाऊंगी ?"

यही मुंह और इस मुंह पर यही भौंहें लेकर—यह लो पेंसिल भौंहों को रूप आकार देनेवाली यह पेंसिल । देखो तो तुम तो ज्यादा पढ़ी हो—हिसाब भी आता है तुम चाहो तो भौंहों को पूरा साफ करके नये शेप की भौंहें बना दो । कभी विभाजन के सवाल के ऊपर की लकीर सी बना दो, कहीं अंडरस्ट्रेट निकालने की आकार की—वृत्त के चाप की सी...और जो मरजी बनाना चाहो । अरे सगुणी तुम घबराओ नहीं—कुछ भी नया कर दोगी तो सभी तुम्हारा अनुकरण करेंगी । किसी दिन तुम बिल्कुल

कारटून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगुणी को अपनी आधी भौंह का इतना ध्यान रहता कि हर समय पेंसिल लेकर काली करती रहती । किसी का हेयर डाई लेकर भी उसने लगाने का सोचा पर यहां वहां दाग लग गये । रोज किटी पार्टी, डिमांस्ट्रेशन लेसन—ड्राइंग कटिंग आदि के आयोजन और आधी भौंह के किस्से बढ़ने लगे ।

तिकोनी तो कभी वर्गाकार...ऐ...ऐ करते हुए सगुणी ने निगुणी को चहकते देखा तो संभल गयी । निगुणी धुन में आ गयी थी । वह लगातार बोलती जा रही थी—

"मैं तो कहती हूं भौंहों के क्षेत्र में भी कुछ ऐसा कर दें कि इनके भी कोई मानदंड तय हो जाएं । लोग विजय मिलने पर ज़ैसे मूंछों पर ताव देते हैं वैसे ही महिलाएं अपनी भौंहों पर ताव दें, मूंछों में मुस्कराने की बात, कटीली भौंह में मुस्कान के मुहावरे में बदल जाए । हम कुछ भौंहों के इशारों को भी वर्गीकृत कर दें । रक्तचाप बढ़ानेवाली यह एक चाप...वृत्त के चाप-सी चुपचाप कार्यरत रहे । आंखों के जाम का यह प्याले का किनारा—"आंखों के हर हाव-भाव के भाव तौल की तराजू...

इन भौंहों की डंडी कैसे मार लूं ?...किसका पलड़ा भारी है सिर्फ भौंह टेढ़ी हो तो...संकेत मिल जाए...भौंहों के बीचोंबीच बिंदी संतुलन सूचक हो और...और हां...इनका प्रयोग माथे से पसीना पोंछने के लिए वाइपर की तरह हो, भौंहे नचाना...भौंहे मटकाना...भौंह...भौंह करना...आदि भी नये व्याकरण में सम्मिलित हो जाए फिर इन भौंहों का रिमोट कंट्रोल हमारे हाथ में—भौंह तुम्हारी—कंट्रोल हमारा...आदि शोध के विषय बन सकते हैं मैं तो कहती हूं भौंहे कुछ ऐसे चलायमान हों कि जैसे आंखों से आंखें मिलती हैं, वैसे भौंह से भौंह टकराय किसी की भौंह—किसी के माथे पर जा पहुंचे और...और..." सुनते-सुनते सगुणी की इतनी जोर से हंसी छूटी कि वह हंसी से लोट-पोट हो गयी । फिर उसने पसीना पौंछा और...भौंहें मटकाते हुए निगुणी को ताका तो निगुणी प्यार से उसकी भौंह पर पेंसिल फेरते हुए बोली" बस यही ध्यान रखना कि किसी भी हरकत के समय मुंह पर रूमाल नहीं फेरना । कितना भी पसीना टपके नहीं पोंछना । सगुणी पर फिर वही उदासी मंडराने लगी तो निगुणी बोल उठी—"क्यों न कोई इशारा ही रख लें कि भौंहे मिट गयी हैं, पेंसिल का प्रयोग करें... या...शाख से बुलबुल उड़ गयी...

या फिर खांसना शुरू...

जैसा मौका वैसा इशारा...जब तुम सबको मीटिंग में डिमांस्ट्रेशन दे रही होगी तो...मैं पेंसिल, पेंसिल का प्रयोग को कहूंगी और...कहते-कहते उन्होंने अपने तीनों कोड वर्ड रख लिये थे ।

सगुणी को अपनी आधी भौंह का इतना ध्यान रहता कि हर समय पेंसिल लेकर काली करती रहती । किसी का हेयर डाई लेकर भी उसने लगाने का सोचा पर यहां वहां दाग लग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये । रोज किटी पार्टी, डिमांस्ट्रेशन लेसन—ड्राइंग कटिंग आदि के आयोजन और आधी भौंह के किस्से बढ़ने लगे ।

टेलरिंग-कटिंग की डिमांस्ट्रेशन में वह कमीज की कटिंग सिखाते-सिखाते पांच छः बार माथे का पसीना पोंछ चुकी थी । निगुणी ने देखा तो चिल्लाई "पेंसिल का प्रयोग करें—सगुणी जोर से हंसी—"लीजिए मैं कह रही हूं अब कैंची से कटिंग करें और यह कह रही हैं पेंसिल का प्रयोग करें...चलिए यही सिखाएगी पेंसिल से कटिंग कैसे करें—सगुणी की बात पर सबने तालियां पीटीं—निगुणी खिसियानी हंसी हंसते हुए फिर सगुणी से बोली "पेंसिल-पेंसिल का प्रयोग करें—मेरा मतलब है जब शाख से बुलबुल उड़ जाए तो क्या होता है ?? खांस-खांस कर वह आंख से इशारा करने लगी । सगुणी ने माथे का पसीना और रगड़ कर पौंछा तो अधकटी भौंह...बिल्कुल पूंछ कटी छिपकली सी डोलने लगी—निगुणी खांसती रही सगुणी उसकी पीठ सहलाने लगी तो निगुणी बोली "भौंह भौंह...पेंसिल...भौंह...तुम्हारी भौंह...और कहते-कहते सगुणी को, उसने हाथ में रखा छोटा शीशा दिखा दिया ।

सगुणी को जैसे काटो तो खून नहीं... । उसने अपने पर्स में पेंसिल ढूंढ़ी तो ध्यान आया सामने एक महिला को उसने ड्राफ्टिंग के लिए वही काली पेंसिल दे दी थी । अब क्या होगा सोच-सोचकर उसे लगा एक-एक करके सभी उसे डेढ़ी भौंह करके देखनें लगी हैं । फिर उसने गौर से देखा तो लगा सामने बैठी महिला उसे देखकर कुछ खुसपुसा रही है...सब में धीरे-धीरे खुसपुसाहट बढ़ रही है...सगुणी आंखों पर रूमाल रखकर...वहां से जाने को थी कि एक महिला एकदम पास आकर कह उठी "अरे रे आंख को क्या हुआ—"

तभी दूसरी तीसरी...चौथी...सब बढ़कर जैसे उसकी आंख के बारे में जानने को उत्सुक हो उठी तभी चट से निगुणी पास आयी और "देखूं तो" कहकर उसने हाथ में छुपाई हुई भौंह बनानेवाली काली पेंसिल के टुकड़े से चट से भौंह ठीक करते हुए सगुणी की आंख से रूमाल हटा लिया और कह उठी..."ठीक है, ठीक है। भौंह ठीक, तो आंखें भी ठीक..."

सगुणी ने चैन की सांस लेते हुए फिर से ड्राफ्टिंग करते हुए कहा...अब आप इस कमीज पर कढ़ाई करना चाहें तो वह भी कर सकती हैं...शाख बनाएं, फूल या...वह फिर आदत के मुताबिक पसीना पोंछने को हाथ बढ़ाने लगी, तो निगुणी बोल उठी, "हां और शाख पर बुलबुल बनावें और फिर दांत पीसते हुए बोली "और...और शाख से बुलबुल उड़ गयी तो फिर से हाथों के तोते उड़ेंगे हवाइयां उड़ेंगी, होश फाख्ता होंगे...पर...हम मदद के लिए नहीं आएंगे हां..."

निगुणी वहां से चल दी । सगुणी भी पीछे-पीछे तेजी से कदम बढ़ा रही थी...चलते-चलते वह रुकी तो निगुणी बोली, "अब इस भौंह को संभालकर घर तक ले जाना समझी...और सगुणी अब मुंह सीधा उठाये चल रही थी जैसे डेढ़ भौंहें अलग से माथे पर पड़ी हों और उसके गिरने का खतरा हो।

—सी-१११, न्यू राजेन्द्र नगर
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पशु भी विमान में सैर करने लगे हैं!

● बिमल श्रीवास्तव

टेलीदर्शन पर एक रोचक विज्ञापन आता रहता है, जो प्रायः सभी लोगों ने देखा होगा। सुंदर पक्षी अपने पिंजरे में शोर मचा रहा है जिसके पास सोई हुई बिल्ली की नींद में व्यवधान पड़ता है। बिल्ली तंग आकर पक्षी को एक विशेष कूरियर द्वारा अफरीका भिजवा देती है। प्रत्युत्तर में पक्षी बिल्ली को उसी कूरियर सेवा द्वारा सायबेरिया भेज देता है।

यह तो हुई विज्ञापन की बात। किंतु क्या कभी आप ने सोचा है कि यदि सचमुच बिल्ली को सायबेरिया तथा पक्षी को अफरीका भेजना चाहें, तो कैसे भेजा जा सकता है ? और यदि बड़े जानवर हों उदाहरण के लिए जिराफ, हाथी, गैंडे, अथवा हिंस्र पशु हों जैसे शेर, तेंदुआ या चीता तो उन्हें कैसे भेजा जाए ? प्रत्यक्ष है कि कूरियर कंपनी को उन्हें विमान द्वारा ही भेजने की व्यवस्था करनी पड़ेगी। तो आइए, देखें इसके लिए एयरलाइनें क्या करती हैं।

पशुओं को विमान की यात्रा

वास्तव में वायुयान द्वारा गायों, घोड़ों तथा अन्य बड़े पशुओं को भेजने की परंपरा यूरोपीय एयरलाइनों द्वारा वर्ष १९२० के आसपास आरंभ की गयी थी। विश्वास किया जाता है कि सबसे पहले १९२२ में हालैंड की के. एल. एम., एयरलाइंस ने एक गाय को अपने विमान द्वारा यात्रा करायी थी। किंतु उस समय इसे व्यावसायिक दृष्टि से नहीं देखा जाता था, बल्कि जब भी कोई जानवर इस तरह भेजा जाता था, तो उसे एयरलाइन द्वारा प्रचार का माध्यम माना जाता था, तथा उस अवसर के फोटो आदि समाचार पत्रों में खूब छपते थे। इसका कारण यह था कि उस समय के विमान आकार में छोटे होते थे तथा उनमें माल ढोने की अधिक सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती थीं। इसीलिए ऐसे जानवरों के साथ अत्यंत सावधानी की आवश्यकता होती थी।

जेटों का आगमन

सन १९६० के आसपास में जेटों का आगमन शुरू हुआ। ये विमान आकार में बड़े होते थे तथा तीव्र गति से चलते थे, जिससे वे अपने गंतव्य स्थान पर शीघ्रतापूर्वक पहुंचते थे। इसके अलावा इनमें से कुछ विमानों को विशेष तौर पर माल ढोने के लिए (फ्रेटर) बनाया गया था इसलिए उनमें बड़े जानवरों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बगैर बाधा के अंदर रखने का भी प्रबंध था। इस कारण उस समय बड़े जानवरों का विमान द्वारा आना-जाना फायदे की दृष्टि से देखा जाने लगा। उस समय के प्रमुख जेट-विमानों में डी. सी.-८ तथा बोइंग ७९७ में ऐसी सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी थीं। फिर भी उस समय एक बार में ६०-६५ से अधिक मवेशियों का सफर संभव नहीं था। साधारणतया गाय अथवा घोड़े से बड़े आकार के पशु को विमान द्वारा नहीं भेजा जाता था।

सन १९७० के बाद वैमानिक क्षेत्रों में दूसरी बड़ी क्रांति आयी जब संसार में विशाल विमानों-जैसे जम्बो जेट, ट्राईस्टार, डी. सी.-१०, एयरबस आदि विमानों का आगमन हुआ। ये विमान अपने भारी भरकम डीलडौल के कारण बड़े-बड़े आकार के पशुओं को भी ढोने में समर्थ थे। विशेष तौर पर उन विमानों के मालवाही मॉडिल तो पूरा का पूरा सर्कस ही अपने में समेट कर ले जा सकते थे। अतः इन विमानों के कारण पशुओं की आवा-जाही बहुत आसान हो गयी।

विशेष प्रबंध

इन विमानों में ये "जीवित माल" पहले विशेष तौर पर बनाये गये जंगलों में (कंटेनर) में रखे जाते हैं, उसके बाद इन कंटेनर को विमान में भर दिया जाता है। कंटेनर का साइज ८ फुट या १० फुट के लगभग होता है तथा एक कंटेनर में लगभग ५ या ६ गायें तक रखी जा सकती हैं। इस प्रकार बिना किसी असुविधा के एक साथ कई जानवरों को रखा जा सकता है। इस प्रकार सन १९७७ में पहली बार एक साथ १५७ गायें "फ्लाइंग टाइगर" एयरलाइन द्वारा सियटल (यू. एस. ए.) से सियोल (दक्षिण कोरिया) को एक जम्बो जेट द्वारा भेजी गयी थीं। से सभी गायें गर्भिणी थीं तथा प्रत्येक का भार लगभग १००० पौंड था।

गायों के अलावा अन्य बड़े जानवरों में हाथी, जिराफ, जेब्रा, गोरिल्ला आदि भी इन विमानों द्वारा भेजे जाते हैं। खूंखार जानवर—जैसे शेर, चीते, भालू आदि भी भेजे जाते रहे हैं। इसी सिलसिले में एक घटना याद आती है। कुछ वर्ष पूर्व कार्गो विमान द्वारा इस प्रकार कुछ शेर ले जाये जा रहे थे, कि अचानक विमान चालक ने रेडियो द्वारा संकट संदेश भेजा कि शेरों के पिजड़े खुल गये हैं और शेर विमान में स्वतंत्र घूम रहे हैं। विमान को बीच में ही अमूस्टर्डम में उतरने की आज्ञा दे दी गयी जहां पर भूमि पर शेरों को काबू में लाया जा सका। चूंकि इस विमान में यात्री नहीं थे, अतः स्थिति गंभीर होने से बच गयी थी।

वर्ष १९८४ में "दया" और "आशा" नामक हाथी के बच्चों को बंबई से टोकियो तक एयर इंडिया के जम्बो द्वारा उपहारस्वरूप भेजा गया था। सात और आठ वर्षीय हाथी के इन बच्चों का कुल भार लगभग २४०० किलोग्राम था, तथा इनकी ऊंचाई क्रमशः १६८ तथा १७३ से. मी. थी। इनको लोहे तथा लकड़ी से बने विशेष बक्सों में रखा गया था। ९१ घंटे की उड़ान के दौरान इनके खानपान आदि का कुल खर्चा लगभग २०,००० रुपये आया जबकि एयर इंडिया इन्हें निःशुल्क उड़ा रही थी।

आसाम के गैंडे

वर्ष १९८४ में ही इस प्रकार आसाम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तव में [illegible] बैलों तथा अन्य बड़े पशुओं को भेजने की परंपरा यूरोपीय एयरलाइनों द्वारा वर्ष १९२० के आसपास आरंभ की गयी थी

जंगलों से पकड़े गये छह गैंडे एक सोवियत विमान द्वारा गोहाटी से नयी दिल्ली लाये गये थे।

जहां से उन्हें उत्तर-प्रदेश के दुदवा के जंगल में छोड़ा जाना था। किंतु इस प्रयास में एक गैंडे की मृत्यु हो गयी थी। अंत में बचे हुए पांचों गैंडों (दो नर तथा तीन मादा) को दुदवा के वनों में आश्रय मिल गया था।

इसी प्रकार कुछ वर्ष पूर्व "पीट" नामक एक ३८० किलोग्राम भारी सांड़ अमरीका से बंगाल के नरेंद्र अंध बालशाला में वंशवृद्धि के लिए भेजा गया था। लगभग १८ माह की उम्रवाला खूबसूरत "पीट" संयुक्त राज्य अमरीका के ओरगन राज्य में जन्मा था और वायुयान से लगभग १६,००० किलोमीटर लंबी यात्रा करके भारत आया था।

बड़े जानवरों के अलावा अन्य प्राणी भी जैसे पक्षी, मछलियां, कीड़े-मकौड़े, सर्प आदि भी विमानों द्वारा भेजे जाते हैं। उस समय विशेष सावधानी की जरूरत पड़ती है तथा आवश्यकता पड़ने पर किसी जीव-विशेषज्ञ की भी सहायता ली जाती है।

कुछ वर्ष पूर्व गल्फ के देशों में बंबई से जीवित बकरियां और भेड़ें भेजी जाती थीं। हमारे देश की कुछ प्राइवेट एयर लाइनें—जैसे एयरवर्क्स इंडिया, हंस एयर इत्यादि अपने विमानों द्वारा इन पशुओं को मस्कत, दुबई, शारजाह आदि देशों को पहुंचाती थी। इसके लिए विमानों में विशेष प्रकार के बाड़े बनाये गये थे। कुछ विमानों में दुमंजिले बाड़े बनाये गये थे। बाड़ों में इन जानवरों को बंद कर दिया जाता था तथा चंद घंटों की उड़ान के बाद ये गल्फ पहुंच जाते थे। इस प्रकार खाड़ी के देशों को ताजे मांस की आपूर्ति की जाती थी।

समस्याएं

विमानों द्वारा पशुओं के भेजने की कुछ अपनी समस्याएं होती हैं, इसीलिए इनके साथ अत्यंत सावधानी बरतने की जरूरत होती है।

लंबी उड़ान के दौरान पशुओं के खाने-पीने, मलमूत्र की सफाई तथा चिकित्सा आदि का समुचित प्रबंध रखा जाना चाहिए। इसीलिए इन जानवरों की उड़ान से पूर्व डॉक्टरी जांच की जाती है तथा सभी तरह से स्वस्थ होने के बाद ही उन्हें उड़ान के योग्य समझा जाता है।

इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि यांत्रिक गड़बड़ी या अन्य किसी कारणवश यदि विमान को बीच में रुकना पड़ जाए तो जानवरों के खाने-पीने का पूरा इंतजाम होना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैसे-जैसे, बड़े-बड़े तथा तीव्रगति वाले विमानों का विकास होता गया है, वैसे-वैसे पशु-पक्षियों की आवागमन की समस्या भी दूर होती गयी है और अब मनुष्यों के जैसे पशु भी विमान की सैर करने लगे हैं।

डी/१५ आई. एन. ए. कालोनी
नयी दिल्ली-११००२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकल्प

● कमलिनी कौल

उसके अंग-प्रत्यंग से जीवन-रस की अंतिम बूंद पी जाने की अभिलाषा झलकती थी। निराशा से उसका परिचय ही नहीं हुआ, ऐसा प्रतीत होता था। वह विशाल व्योम में उन्मुक्त पक्षी सादृश्य पंख फैलाये जिधर मन चाहे विचरण करती थी। सरू से बूटे-सा कद व मनोहारी नखशिख की स्वामिनी श्यामवर्णीय कुंतल जीवन की हर उपलब्धि से पूर्णरूपेण संतुष्ट थी। एकमात्र संतान, झंकार अवस्थी, उसका पुत्र भारत संगीत आकाश पर एक देदीप्यमान नक्षत्र, सम दमक रहा था। उसके गाये हुए लोकगीत व फिल्मी गीत हर महल्ले के नुक्कड़ व गली-कूचे में गूंजते थे। पुस्तक प्रेमी पति, अपनी गरिमापूर्ण पद की गरिमा के संग-संग हर वर्ष एक न एक पुस्तक बहुत यत्नपूर्वक लिखते, प्रकाशित करवाते और प्रशंसा प्रसून संजोये जाते। उसे रीते बैठने से समाज सेवा करना अधिक श्रेयस्कर लगा। अतः अपनी गृहस्थी से ही उद्धार कार्य आरंभ हुआ। चौका-बरतन करनेवाली बाई व कपड़े धोनेवाली बाई, प्रथम ये ही दो शिष्य थे गुरुकुल के। दो रोटियों को दो मानव खाएंगे तो एक-एक रोटी मिलेगी। चार खाएंगे तो आधी-आधी रोटी मिलेगी, यह उदाहरण दे-देकर कुल चार मास में दोनों बाइयों को तैयार कर उनके ऑपरेशन करवा दिये। अब तीन-तीन, चार-चार बच्चों की माताएं कम-से-कम सात-सात, आठ-आठ बच्चों के

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताओं के समकक्ष अधिक सुखी व संपन्न थीं। शनैः-शनैः इतना अक्षरज्ञान हो गया कि एक-एक अक्षर जोड़कर पढ़ने लगी। अब कुंतल के पास लगभग तीस ऐसी औरतें पढ़ने आती थीं।

"आज कहां गयी थी कुंती।" प्रतिवेशि नीरजा ने सब्जी खरीदते समय कुंतल से पूछा।

"पुष्पा से मिलने गयी थी।" कुंतल ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"वही तुम्हारी ग्रीनपार्कवाली सहेली ना।" नीरजा पुनः बोली।

"हां वही, ग्रीनपार्कवाली।" कुंतल ने कहा।

"क्या कोई विशेष कार्य से गयी थी ?" नीरजा ने जिज्ञासावश पूछा।

"वह कई दिनों से अस्वस्थ चली आ रही थी, उसे देखने...कहते-कहते कुंतल रुक गयी तो कमल ककड़ी छांटती हुई नीरजा ने नेत्र उठाकर कुंतल की ओर देखा तो वह अनिमेष नयनों से छोटे-छोटे प्लास्टिक के टुकड़े बीनते अर्द्ध-विक्षिप्त से एक सांवली काया के युवक को निहार रही थी। नीरजा को अत्यधिक आश्चर्य हुआ कुंतल के अधूरे वार्तालाप छोड़कर एक हीन युवक को निर्निमेष निहारने पर, उसे कौतूहल हो आया। वह अतिशय आत्मिक स्वर में बोली, । "ऐ कुंतल, किसे निहार रही है ? उस फटीचर में क्या विशेषता है ?"

"अरे कुंती, कहां खो गयी ?" कुंतल को झिंझोड़ते हुए नीरजा ने पुनः व्यग्रतापूर्वक कहा, "क्या तेरी तबियत खराब है ?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।" कुंतल ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"फिर क्या बात है ? क्या खड़े-खड़े भी स्वप्न देखने लगती है तू ?" उपहासपूर्ण स्वर में नीरजा बोली।

"नहीं, मैं स्वप्न नहीं सत्य देख रही थी। उस प्लास्टिक के टुकड़े बीनते युवक को देख रही हो नीरजा, वह भी किसी मां का नयनतारा है। न जाने कितनी अभिलाषाएं इन अनचाहे पुष्पों के हृदय में ही मुरझाकर झर गयी होंगी। कितने प्रयत्न, यत्न निष्फल हो गये होंगे। निराशा के निस्सीम अंधकार में क्षुधा शांत करने के लिए, यह भारत का भावी भविष्य गली-गली प्लास्टिक के टुकड़े बटोरने के लिए कितना विवश हुआ होगा..."नीरजा ने अनवरत बोलती हुई कुंतल को बीच में ही टोकते हुए कहा, "बस कर कुंती, बस कर, तू इन दुष्टों को नहीं जानती। चोर-डाकुओं से बढ़कर होते हैं ये। अवसर पाते ही अपने गंदे थैले में लोगों की चीजें चुराकर धर लेते हैं। यहां तक कि कई बार अकेली स्त्री को देख मार भी डालते हैं। उसका सामान उठा चंपत हो जाते हैं। फिर उन चीजों को बेचकर रात को शराब पी ऊधम मचाते हुए, गाली-गलोच करते हुए किसी नाली में औंधे मुंह पड़ जाते हैं।"

"नीरजा, समाज के हर वर्ग में अच्छे-बुरे लोग हैं, चाहे वह उच्च वर्ग के हैं या निम्न वर्ग। फिर यह बिरादरी भी इसका अपवाद नहीं है।

रात्रि भोजन पश्चात, नंदन अवस्थी तो अपने अध्ययन कक्ष में जा बैठे। आजकल वह अपनी एक नूतन पुस्तक पर कार्य कर रहे थे। कुंतल शैया पर जा लेटी। रह-रहकर, वह प्लास्टिक के टुकड़े बीनता सांवला मुख उसके स्मृति पटल पर आ खड़ा होता। कुंतल को वर्षों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व, पितृगृह में पले जनकविहीन रामकिशन की स्मृति एक और जीवन जीने योग्य बनाने के लिए उकसाती जा रही थी । रामकिशन को उसके दूर के नाते का चाचा बद्रीप्रसाद करबद्ध प्रार्थना कर कुंतल के व्यावसायी पिता हरमिलाप गौड़ के पास छोड़ गया था ।

बद्रीप्रसाद ने याचक स्वर में कहा, "पंडितजी कई अनाथों को सहारा दिये हुए हो इस अनाथ पर भी अपना हाथ रख दो । घर का चौका-बासन कर देगा, झाड़ू लगा देगा, जो काम कहोगे कर देगा । दो जून खाने को दे देना और सोने को कोई कोना । बस, मैं आपके पास इसे छोड़कर बेफिकर हो जाऊंगा । हरमिलापजी रामकिशन को घर ले आये ।

तीव्र बुद्धि था रामकिशन । हर कार्य करने में निपुण होता चला गया । जो भी कार्य हरमिलाप की पत्नी कहती, अति तत्परता से कर डालता रामू । कर्कशा चामुंडा स्वभाव की लीलावती भी स्नेह करने लगी मितभाषी, भीरू प्रकृति के रामू को । हरमिलाप के ज्येष्ठ पुत्र हेमंत का तो विशेष कृपापात्र था रामू । हर समय सहज रहनेवाले रामू के विशाल लोचन देख, द्रवित हो उठता हेमंत का हृदय । कुंतल तो उस समय बहुत छोटी थी । रात्रि को जब हेमंत पढ़ने बैठता, तो रामू भी निकट बैठ जाता, "बड़े भैया, मुझे भी पढ़ाओ ना !" रामू दीन स्वर में कहता । हेमंत बड़े चाव से कुंतल की अक्षरमाला ले, रामू को अक्षर ज्ञान देने बैठ जाता । अल्प समय में ही रामू ने अक्षरमाला का एक-एक अक्षर कंठस्थ कर लिया । सौ तक गिनती सीख गया और पहाड़े भी सोलह तक घोटकर पी गया । हेमंत ने पिता से रामू की प्रशंसा की तो हरमिलाप और पुस्तकें ले आये रामू के लिए । अति मनोयोग से गुरु शिक्षा देने लगा व शिष्या ग्रहण करने लगा ।

समय-चक्र अबाधगति से चल रहा था । सात वर्षों के उपरांत रामू ने दसवीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की तो हेमंत के हर्ष का ठिकाना न रहा । जब मुदित मन हेमंत ने रामू को उसके परीक्षा में उत्तीर्ण होने की यह सूचना दी, तो रामू के नेत्रों से कृतज्ञता के अश्रु झरने लगे । अपना मस्तक उसने हेमंत के चरणों पर रख दिया ।

"रामू आगे पढ़ोगे ?" हेमंत ने प्रश्न पूछा ।

"भैया पहले किसी दफ़र में नौकरी का जुगाड़ करवा दो । फिर साथ-साथ पढ़ भी लूंगा ।" विनम्र स्वर में रामू ने झिझकते हुए कहा । हेमंत को ऐसा प्रतीत होने लगा । शांत एकांत प्रकृति के रामू के अंतर्मन में एक महत्त्वाकांक्षी युवक विद्यमान है । उसको घर के कार्यों में उलझाये रखना, उसके प्रति घोर अन्याय होगा । अतः हेमंत ने अपने पिता हरमिलापजी से रामू के विषय में बात की । सहृदय परोपकारी स्वभाव के हरमिलापजी ने रामू को डाक-तार विभाग में सरकारी नौकरी दिलवा दी । रामू ने अपने स्थान पर, अपने गांव से मुंहबोली निर्धन मौसी सीता देवी के एकमात्र चौदह वर्षीय पुत्र प्यारे मोहन को बुलवा कर रखवा दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकिशन आज भी गौड़ परिवार के प्रति कृतज्ञ है। हेमंत का तो मानो कृतदास है वह ! 'यदि भैया साथ न देते और मांजी आज्ञा न देतीं, तो आज रामू सहायक पोस्ट मास्टर न होता, किसी घर के बरतन ही रगड़ रहा होता।' रामू बहुधा ऐसा कहते नहीं अघाता था।

कुंतल भी कम-से-कम एक रामू तो पूर्णरूप से बनाना ही चाहती थी। पहले घर-गृहस्थी के अनेकानेक झंझट, धनाभाव और समयाभाव कुछ विशेष न करने देते थे। अब वह हर अभाव से मुक्त थी। अन्य समाज सुधारक कार्यों के संग-संग एक जीवन को जीवनयापन करने योग्य बनाना चाहती थी, अंततः उसने उस टुकड़े बीननेवाले को परखने का निश्चय किया। कुंतल का हृदय कह रहा था, "गली-गली भटकनेवाला युवक किन्हीं विषम परिस्थितियों का शिकार है।"

संध्या समय जब दिवाकर अस्त होने की तैयारी में लीन थे। कुंतल ने देखा वही सांवली आकृति शिष्टतापूर्वक नतमस्तक हो प्लास्टिक के टुकड़े कचरे से बीनकर एक प्लास्टिक के लिफाफे में भरती जाती थी। कुंतल ने अपनी बरतन मांजनेवाली बाई प्रेमवती को पुकारकर कहा, "एक प्याला चाय और बना लेना प्रेमवती और द्वार का बल्ब भी जला देना।"

"बेटे तनिक इधर आना।" कोमल स्वर में कुंतल ने उस युवक को पुकारा। स्तब्ध-सा युवक कुंतल को विस्फारित नेत्रों से निहारता ही रह गया। मानो उसे विश्वास ही न हो रहा हो कि कोई उसे 'बेटा' भी कह सकता है, इतनी दुलार से पुकार भी सकता है।

"चाय पियोगे बेटा।" कुंतल ने मृदु स्वर में पूछा।

"जैसे मां की इच्छा।" अकस्मात् निकला उस युवक के मुख से।

"क्या नाम है तुम्हारा बेटा।"

"ओमप्रकाश"। वह युवक शिष्टाचारपूर्वक बोला।

"क्या कुछ पढ़े-लिखे हो ?" कुंतल ने प्रश्न किया।

"हां मां, सातवीं पास हूं।" ओमप्रकाश बोला।

"फिर द्वार-द्वार क्यों भटकते हो बेटा।" करुण स्वर में कुंतल ने कहा। तो मानो भूकंप ही आ गया हो। ओमप्रकाश के अश्रु वेगवती सरिता के समान बह निकले। वह कुंतल के चरणों के निकट बैठ गया, "आप मेरी पूर्वजन्म की जननी हैं क्या मां ? मेरा इस धरती पर कोई नहीं है। क्या आप मेरी दुःखभरी कहानी सुनेंगी माता ?" अस्पष्ट शब्दों में सुबकते हुए ओम ने कहा।

"हां बेटे, मैं तेरी दुःखभरी कहानी सुनूंगी। तू मुझे सुना अपना दुःख।" कुंतल ने द्वार पर पटरा बिछाकर बैठते हुए कहा। ओमप्रकाश की कहानी वास्तव में बहुत मार्मिक थी। वह धीरे-धीरे अपनी कहानी सुनाने लगा— उत्तर भारत में आगरा के निकट उसका छोटा-सा ग्राम था। मां बाल्यावस्था में ही भूलोक त्याग गयी थी। पिता ने, मां-बाप दोनों का कर्त्तव्य निभाते हुए अपने दोनों पुत्र— सोमनाथ और ओमप्रकाश का लालन-पालन सामर्थ्यानुसार किया। सोमनाथ ओमप्रकाश से चौदह साल बड़ा था। आसपास के ग्रामों में अपने पिता के संग पैतृक व्यवसाय— कपड़े सीने का काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कचरे के ढेरों में से कागज, प्लास्टिक, कांच के टुकड़े व अन्य छोटा-मोटा सामान ढूंढ़नेवाले कायाधारी भी हमारे इसी समाज का एक अभिन्न अंग हैं । कम-से-कम भिक्षावृत्ति से तो श्रेयस्कर कार्य करते हैं वे लोग !

करता था । आसपास के ग्रामों के लोग भी कपड़े सिलवाने मगन चाचा की दुकान पर ही जाते थे । ओमप्रकाश भी पाठशाला से आ अतिचाव से पिता से सिलाई-कटाई का काम सीखता । पर विधाता के विधान में कुछ और ही लिखा था । एक कालरात्रि से विवाह भोजन ऐसा खाकर आया मगन लाल कि तदोपरांत हैजे ने प्राण लेकर ही छोड़ा उसके पिता की अभी क्रिया भी नहीं हुई थी कि ममतामयी भाभी अकस्मात् कालिका बन गयी । पैतृक मकान व दुकान हड़पने के चक्कर में बालक ओम को घिनौने आरोप लगा, गांववालों से जूते मरवा सदा-सर्वदा के लिए गांव से निकलवा दिया । असहाय बालक विवशता के अश्रु पी; क्षुधातुर हो हर अपमान विस्मृत कर पुनः पितृगृह के द्वार पर जा खड़ा हुआ । रणचंडी भाभी हंसिया उठा लायी और ओम की ग्रीवा से सटा विषैले स्वर में बोली, "जान प्यारी है तो भाग जा । मुड़कर नहीं देखना । नहीं तो गरदन काटकर चौखट के आगे ही दाब दूंगी ।" भयभीत बालक क्षुधा तृष्णा सब भूल-भाल स्टेशन पर भाग गया । और जो गाड़ी सामने मिली उसी में चढ़ गया । भाग्य देहली ले आया । मस्तिष्क काम नहीं करता था । विश्वासघात का दंश जीने नहीं देता था । पहले पहल तो भिखारी समझ, यदि कोई कुछ दे देता, तो खा लेता । उसे हर ओर से वितृष्णा ने घेर लिया । निराशा चिर-संगिनी बन गयी । कुछ करने की महत्त्वाकांक्षा राह में ही दम तोड़ चुकी ।

कुंतल ने दूसरे दिन संध्या समय ओमप्रकाश को अपने पति से मिलवाया । अवस्थी ने हर तरह से स्वयं को संतुष्ट किया गुप्त रूप से ओमप्रकाश के ग्राम से भी छानबीन करवायी तो उसके वक्तव्य में सत्य पाया । ओम को अपनी वाटिका में बनी हुई छोटी-सी कोठरी रहने को दे दी थी । वह की व महल्ले की अन्य गाड़ियां धोने लगा उनसे जो पैसे मिलते, अपना खर्च चला दो घंटे प्रतिदिन कुंतल उसे पढ़ाने लगी व में चार घंटे एक विख्यात दरजी के पास सिलाई का काम सीखने भेजने लगी । हृदय में अवस्थी दंपत्ति ने जीने की उत्पन्न की । अन्याय से लड़ने की प्रेरणा संसार में कुछ बनने की लालसा जगायी । उसके मन में ओम उत्पन्न करने की पुरातन ओमप्रकाश के स्थान पर नूतन व्याप्त होता चला गया । कुंतल के के दृढ़ संकल्प ने और ओम के कुछ बनने तीव्र अभिलाषा ने तथा उन दोनों के ही अकथनीय परिश्रम, धैर्य व लगन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके भी बयां जुदा-जुदा

अपना चेहरा तुम कभी देखते
फिर किसी में न कोई कमी देखते

—ताबिश महदी

इसको ना कहिए आलम का सिला कहते हैं
मर गए हम तो जमाने ने बहुत याद किया

—चकबस्त

तमन्नाओं में उलझाया गया हूं
खिलौने दे के बहलाया गया हूं

—शाद अजीमाबादी

इलाही खैर मेरे कारवां की
जिसे देखो अमीरे कारवां है

—बिस्मिल शाजहांपुरी

आपसे चूक हो गई शायद
आप और मुझपे मेहरबां क्या खूब

—उनवान चिश्ती

अगर मौजें डुबो देतीं तो कुछ तस्कीन हो जाती
किनारों ने डुबोया है मुझे इस बात का गम है

—दिवाकर राही

एक ही खाक से इंसाफ हुए हैं पैदा
एक ही खून है फिर खून बहाते क्यों हो

—मुशीर झंझानवी

तुम पूछो और मैं न बताऊं ऐसे तो हालात नहीं
इक जरा-सा दिल टूटा है और तो कोई बात नहीं

—कतील शफाई

तबस्सरा क्या पूछते हो आज के हालात पर
आज सिर अपना हथेली पे लिये फिरता हूं मैं

—जगन्नाथ आजाद

जिनकी राहों में सदा मैंने बिछाई आंखें
उनकी आंखों में खटकता हूं मैं कंकर की तरह

—जमाल कुरेशी

खुशियों में कर लिया औरों को भी शरीक
हर इक से अपना दर्द मगर मत कहा करो

—मुजफ्फर वारसी

—प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

सफलता के सोपान पर चढ़ाना आरंभ कर दिया ।

धीरे-धीरे ओम ने बारहवीं कक्षा पास कर ली । वह स्त्री-वस्त्र सिलाई में निपुण हो गया । युवतियां 'ओमी टेलर, ओमी टेलर' कहने लगीं । विभिन्न प्रकार के डिजाइनों के ब्लाऊज व परिधान हर स्त्री व युवती के 'ओमी टेलर' के पास बनने लगे । कल का द्वार-द्वार भटकनेवाला ओमी, आज का एक सफल व्यावसायी दक्षिणी देहली कालकाजी नगर का एक प्रसिद्ध दरजी था ।

जब सोमनाथ को एक ग्रामवासी ने ओम के उत्थान की आंखों देखी कहानी सुनायी तो भैया-भाभी अपनी तीन-तीन कन्याओं सहित ओम के पास दौड़े चले आये । ओम ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया, "यदि मेरी मां तुम्हें माफ कर देगी, तो मैं भी कर दूंगा ।" बस तत्पश्चात सोमनाथ दंपति अवस्थी के द्वारे पर 'धूनी' रमाकर बैठ गया । उनके बारंबार क्षमायाचना करने पर वह स्वयं का संपूर्ण दोष स्वीकार करने पर कुंतल ने उन्हें इस संधि पर क्षमा किया कि आधी दंपत्ति ओम के नाम करें ।

आज ओम के नाम आधी संपत्ति है । भाई की दो कन्याओं के विवाह में उसने खुल्ले हाथों व्यय किया । भाभी लाला के गुण गाती नहीं थकती । संपूर्ण गांव व बिरादरी में ओम की धाक है ! प्रशंसा भी है ।

कुंतल के प्रयत्नस्वरूप सिलाई का डिप्लोमा किये हुए योग्य युवती साधना के संग ओम का विवाह हो चुका है

—एल-६७ ए,
मालवीय नगर,
नयी दिल्ली-११००१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

पिंकी—"मम्मी आपने पिताजी से शादी क्यों की ?"

मम्मी—"तुम्हें भी इस बात पर आश्चर्य है न ?"

●

रमेश—"शादी से पहले लोग क्या करते हैं ?"

अजय—"भविष्य के बारे में सोचकर खुश होते हैं।"

रमेश—"और शादी के बाद ?"

अजय—"अतीत को याद करके रोते हैं।"

—नरेन्द्र सिंघवी

एक थानेदार की पत्नी अपने पति से, "अरे उठो ! नीचे चोर घुस आये हैं। उठकर उन्हें पकड़ो।"

थानेदार (भुनभुनाते हुए), "ओफ्फो ! मुझे सोने दो। इस वक्त मैं ड्यूटी पर नहीं हूं।"

अफसर, "मैंने कहा न, कोई जगह खाली नहीं ; नौकरी के लिए इतनी अर्जियां आती हैं कि संभाले नहीं संभलतीं।"

उम्मीदवार, "तो साहब ! ऐसा करें कि मुझे इन अर्जियों को संभालने की ही नौकरी दे दें।"

—अमरीष

एक बार हिंदी के अध्यापक ने गणित के अध्यापक से कहा, "हिंदी वाला हिंदी में बात करता है, इंगलिश वाला इंगलिश में बात करता है, तो आप गणित में बात क्यों नहीं करते ?"

गणित के अध्यापक ने चट से उत्तर दिया, "यह तीन पांच मत करो, नौ दो ग्यारह हो जाओ। नहीं तो बत्तीसी झाड़ दूंगा।"

●

एक बार दो लड़के, दो गधों को आपस में बांध रहे थे। इतने में पुलिसवाले आये और बोले, "क्यों अपने भाइयों को बांध रहे हो ?"

इतने में लड़कों ने तुरंत उत्तर दिया, "हमें डर है कि कहीं ये पुलिस में भरती न हो जाएं।"

—मिथिलेश कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

भूमिका

नेताजी
संसद की कार्यवाही में
इस तरह भूमिका निभाते हैं
कभी अपनी पीठ, तो कभी
मेज थपथपाते हैं ।

•

डैड

अंगरेजी की बात क्या कहें
अर्थ का अनर्थ हो जाता है ।
सोते-जागते पिता को
'डैड' कहा जाता है ।

सजा

शादी के लिए दुल्हन 'सजा' दी गयी ।
दूल्हे को जीवनभर की 'सजा' मिल गयी ।

—आशीष चितलांग्या

राहत

जब से स्टोव गया
गैस आयी है ।
नयी बहुओं की जान में
जान आयी है ।

•

सीख

असंतुष्ट तो
गोबर है ।
जहां गिरेगा
कुछ लेकर ही
उठेगा ।

—चुन्नीलाल सलूजा

हार

बेगम और बादशाह पर
हुकुम का गुलाम भी भारी पड़ा
जब वह 'तुरुप' बनके चला ।

पहचान

पूत के पांव तो,
पालने में ही नजर आते हैं ।
क्योंकि
पालने से उतारते ही
मां-बाप
सबसे पहले उसे
जूते पहनाते हैं ।

—महेश गोयल 'लोटा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी लोकगीतों में विरह-वेदना

पिया मिलन की आस

● डॉ. मदन सैनी

राजस्थानी रमणी के लिए यद्यपि भारतीय नारीत्व के आदर्श चरित्र 'सीता' और 'रुक्मिणी' रहे हैं, फिर भी वह संयोग-श्रृंगार एवं वियोग-श्रृंगार की दृष्टि से विस्मय-विमुग्धकारी हैं। राजस्थानी लोकगीतों में पिया-प्रेयसी के संयोग-वियोगात्मक अद्भुत दृश्य भावक को सहज ही भाव-विभोर करने लगते हैं।

वर-रूप में जिस प्रकार जनक-नंदिनी सीता श्री राम को और रुक्मिणी श्री कृष को पाने हेतु 'गौरी-पूजन' करतीं हैं, उसी प्रकार राजस्थान की युवतियां होलिका-दहन के दूसरे दिन से ही लगातार पंद्रह दिनों तक 'गणगौर-पूजन' करती हैं तथा उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीतों में गणगौर (गौरी) से घर व ससुराल पक्ष के परिजनों की कामना करती हुई गाती हैं—

''गौर ए गिणगौर माता, खोल ए किवाड़ी,
बाहर ऊभी थानैं पूजण वाली...''
पूजो ए पुजार्यां बायां, कांई धन मांगो ?
अन्न मांगां, धन मांगां, लाछ मांगां लिछमी !
कालै घोड़ै काको मांगां, काजल वाली काकी !
बड़ै दुलारै मामो मांगां, बिणजारी-सी मामी !
रातै चुड़लै बैन मांगां, सांवलियो बहनोई !
कानकंवर-सो बीरो मांगां, राई-सी भौजाई !
फूस-बुहारण फूंफो मांगां, हांडा धोवण भूआ !
...इतरो देई माता गौरज्या ए, गौरज्या ए !
म्हे थानैं पूजण आय !

अर्थात ''हे गणगौर माता, दरवाजा खोलो, बाहर हम आपको पूजनेवाली खड़ी हैं !" तब गणगौर माता कहती है कि, "हे पूजने वाली बहनों, तुम्हें क्या चाहिए ? कन्याएं कहती हैं हे हमें अन्न, धन और ऐश्वर्य चाहिए, काले घोड़े पर चढ़े हुए चाचा, काजल लगानेवाली चाची, बड़े महल में रहनेवाले मामा, बिणजारी-जैसी मामी, लाल चूड़ियोंवाली सुहागिन बहन, सुंदर बहनोई, कन्हैया-जैसा भाई, रानी सदृश भाभी और बुआ चाहिए। हे माता, हमें इतना ही दें, हम आपको पूजने आयी हैं।''

भारतीय संस्कृति में 'गौरी-पूजन' के पीछे मूलतः सुयोग्य वर-प्राप्ति की भावना ही मुख्य रही है। एक गीत में जब कन्या के दादा उसके लिए योग्य वर की खोज में रथ जोड़कर चलते हैं, तो वह रथ रोककर कहती है कि वह भगवान-सदृश वर चाहती है—

बाई रा दादोजी चाल्या रथ जोड़, बाई तो रथ थाम लियो !
—बाई ए थांगो सोई लेवो मांग, राम रथ थाम दयो !
''दादोजी, वर मांगूं ओ भगवान, देवर छोटो लिछमण जी !
—दादोजी, सासू कौशल्या हरि की माय, ससुरो राजा दसरथ जी !

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी लोक-काव्य में ऐसे स्थल जगह-जगह पर हैं, जहां संयोग-वियोग के मार्मिक दृश्य मिलते हैं । एक गीत में एक पनिहारिन अपनी सहेलियों से पीछे रह जाती है और रास्ते चलते एक ऊंट-सवार से घड़ा सिर पर रखवाने के लिए कहती है ।

—दादोजी, मांगूं अयोध्या रो राज, बाई तो बैठी राज करै !''

''दादोजी, वर मांगूं ओ भगवान'' कहकर इसी के साथ वह लक्ष्मण-जैसा देवर, कौशल्या-जैसी सास और दशरथ-जैसे ससुर के अतिरिक्त अयोध्या के राज्य-जैसी समृद्धि भी चाहती है, ताकि उसका दांपत्य-जीवन सुख से बीते ।

विवाह के बाद अभी गौना नहीं हुआ है और उसका प्रियतम उसे लिवाने उसके गांव आ रहा है । वह उसे एक जगह पानी भरती दिखायी देती है, वह पहचान लेता है और उससे पानी पिलाने को कहता है । चूंकि वह अपने अनजाने-अनदेखे परदेशी पिया को पहचान नहीं पाती है, ऐसी स्थिति में अपने-पराये के मनोभावों की अनूठी अभिव्यक्ति यहां देखते ही बनती है—

''भेरे सिर पर दोघड़ माटकी, हाथां में रेसम डोर...
मैं पतली-सी कामणी !
कोई गेलै जातो राजवी—''छौरी दोय घूंट पाणीड़ो पिवाय...
मैं परदेशी दूर रो !''
''छौरा ना मेरी डूबै बालटी, रे छौरा ना मेरो लुलै रे सरीर...
मैं पतली-सी कामणी !''
''छौरा किणरै बाप रो पावणो, रे छौरा किणरो आयो लणियार !
मैं पतली-सी कामणी !''
''छौरी तेरै बाप रो पावणो, ए छौरी तेरी ई लणियार...
मैं परदेसी दूर रो !''
''छौरा अब मेरी डूबै बालटी, ओ जी अब मेरो लुलै रे सरीर...
मैं पतली-सी कामणी !''

राहगीर द्वारा दो घूंट पानी मांगने पर वह कहती है कि मेरे सिर पर दो घड़े भरे हुए हैं, हाथ में रेशम की डोरी है और मेरी पतली कमरवाला शरीर झुकता नहीं तथा बालटी भी पानी में नहीं डूब सकती, अतः तुम्हें पानी पिलाने में असमर्थ हूं, लेकिन तुम किसके पाहुने हो और किसके पति हो ? आंगतुक कहता है कि मैं तुम्हारे पिता का पाहुना हूं और तुम्हारा पति ! यह सुनते ही वह तुरंत कहती है कि अब मेरी बाल्टी भी डूब रही है और शरीर भी झुक रहा है, जी भरकर पानी पी लो !

राजस्थानी लोक-काव्य में ऐसे स्थल जगह-जगह हैं, जहां संयोग-वियोग के मार्मिक दृश्य मिलते हैं । एक गीत में एक पनिहारिन अपनी सहेलियों से पीछे रह जाती है और रास्ते चलते एक ऊंट-सवार से घड़ा सिर पर रखवाने के लिए कहती है । संयोग से ऊंट सवार उसका पति ही होता है, जो उससे बातचीत करके पता लगा लेता है कि वह उसी की पत्नी है, तो वह छेड़छाड़ करने लगता है । पनिहारिन कुपित होकर ऊंट-सवार को अपमानित कर देती है । ऊंट-सवार अपने ऊंट को तेजी से हांककर चला जाता है । पनिहारिन जब घर पहुंचती है और सास से उस अजनबी ऊंट-सवार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकायत करती है तो सास मुसकराकर बताती है कि वह दूसरा कोई नहीं, मेरा बेटा ही है, जो वर्षों तक परदेश में रहकर आज ही घर लौटा है और उधर पिछवाड़े में ऊंट की 'झोक' (रहने का स्थान) में ऊंट को बांध रहा है । यह सुनकर बहू बेचारी शरम से पानी-पानी हो जाती है—

सात सहेल्यां रो झूलरो अे पणिहारी जी ए लो...
कोई पाणीड़ै नैं गयी रे तलाव...बाला जी लो !

औरां रा पिवजी घरै बसै अे पणिहारी जी अे लो...
कोई म्हारा तो बसै जी परदेस...बाला जी लो !

और सहेल्यां घड़ला ऊंचगी अे पणिहारी जी अे लो...
कोई म्हारै सूं घड़लो ना ऊंच्यो जाय...बाला जी लो !

कोई मारगियै बगतोड़ो ओठी जोड़्यो ए पणिहारी जी ए लो !
मिरगानैणी जी ए लो, ओ जी ओठी म्हानैं घड़लो ऊंचाय, बाला जी लो !

रोजगार हेतु पति के परदेश-गमन के समय यहां की रमणी की विरह-वेदना का सुंदर निदर्शन 'पीपली' लोकगीत में दिखायी देता है । प्रियतमा कहती है कि हे पतिदेव, जिस तरह आपने पीपली के बिरवे को लगाया थाँ, वह अब पूर्णतः घेरघुमेर, सघन और शीतल छाया देनेवाला वृक्ष बन गया है, उसकी छाया-तले विश्राम के अवसर पर आप उसे छोड़कर परदेश जा रहे हैं, ठीक इसी प्रकार मुझसे विवाह करने के बाद अब जब मैं पूर्णतः नवयौवना हो गयी हूं, ऐसे समय जब प्रणय-वेला का अवसर आया, तो आप मुझे छोड़ कर परदेश चल दिये । आप पूर्व की ओर नौकरी करने मत जाओ ! गीत में बाल-विवाह की झलक भी मिलती है—

'बाय चाल्या छै भंवर जी पीपली जी !
ओ जी ढोला हो गयी घेर-घुमेर...
छाया री रुत चाल्या चाकरी जी !
परण चाल्या छै भंवर जी गोरड़ी जी !
ओ जी ढोला हो गयी जोध जुवान...
विलसण री रुत चाल्या चाकरी जी !
ओ जी म्हारी लाल नणद बाई रा बीर...
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी सा ।

प्रियतम के परदेश चले जाने के बाद विरहिनी को सुखद निद्रा में स्वप्न आता है, तो वह स्वप्न से ही विनय करने लगती है कि उसके प्रियतम को उससे मिलाता रहे—

सूती थी रंग-महल में, सूती नैं आयो रे कंवर
सपना रे बैरी, भंवर मिला दे नीं रे...

टग-टग महला ऊतरी जी, लागी सासूजी रे पग
सासूजी थां रै जायोड़ा नैं देख्या ओ...

कभी उसे हिचकियां आने लगती हैं, तो लगता है कि परदेश में रहनेवाले प्रियतम याद कर रहे हैं—

...म्हानैं बादीलो चितारै बैरण आवै हिचकी !
आवै हिचकी रे बैरण आवै हिचकी,
म्हानैं साईनों चितारै बैरण आवै हिचकी !

हिचकियों के बीच ही उसे रिमझिम फुहारें और चकाचौंध करती बिजली डराने लगती है । ऐसे में उसे प्रियतम की याद कर सताने लगती है—

"मैं तो ऊभी जोवूं बाट, बलम थांरी ओरणी रे...
बैरण बिरखा और बीजली दोनूं डरावै रे !
बलम थांरी याद सतावै रे !

विरह-विदग्ध प्रेयसी-जैसे ही अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पहुंचती है, तो उसका मन करता है कि यहीं पिया-मिलन हो जाए तो कितना अच्छा रहे । पपीहे की पुकार उसे और भी बेचैन करने लगती है—

भंवर बागां में आज्यो जी, मैं बागां फिरूं अकेली...
पपईयो बोल्यो सा !

राजस्थानी लोक-काव्य में पपीहे ने विरहिनों को सर्वाधिक सताया है । विरहिन की विरह-वेदना बढ़ाता हुआ पपीहा जब 'पिऊ-पिऊ' की टेर लगा देता है, तो वह उसे मना करते हुए कहती है कि तुम्हारी यह आदत बहुत बुरी है । हे पपीहा तुम्हारा जो स्वभाव ही ऐसा है, पर मेरे कलेजे को तुम्हारे बोल बांण-सदृश बेध रहे हैं—

"पिऊ-पिऊ करण री बुरी पपीहा बाण !
थारो सहज सुभाव है, म्हारै लागै बांण !"

पर, पपीहे को इस सबसे क्या ? वह फिर बोलने लगता है, तो विरहिन उसे धमकाते हुए कहती है कि मैं तुम्हारी चोंच कटवा दूंगी और उस पर नमक छिड़क दूंगी, क्योंकि प्रियतम मेरे हैं और मैं प्रियतम की हूं, उनको प्रियतम कहनेवाले तुम कौन होते हो ?

पपीहा चूंच कटाय दूयूं, ऊपर भुरकूं लूण ।
पिव म्हारो, म्हैं पिव री, तूं पिव कहै सो कुण ?

'मेघदूत' में जिस प्रकार महाकवि कालिदास ने बादल को प्रियतम का संदेशवाहक बनाया है, वैसे ही राजस्थानी लोक-काव्य की प्रेयसियों ने अपना संदेश-वाहक कुरजां (क्रौंच) पक्षी को बनाया है । आसमान से कतार-बद्ध उतरती कुरजों को देखते ही विरहिणी आह्लादित हो जाती है कि देखें कुरजों उसके प्रियतम के क्या-क्या समाचार लेकर आयी है—

अै तो गिगन-मंडल सूं कुरजां जी उतरी,
कांई-कांई लाई समचार जी !

लेकिन बेचारी कुरजां के पास जब कोई समाचार ही नहीं है, तो वे क्या करें ? ऐसी दशा में प्रिय-दर्शन की आकांक्षी विरहिन कुरजां से उनके पंख लेकर सागर-पार रहनेवाले अपने प्रियतम से मिलटर लौट आने की इच्छा प्रकट करती है—

"कुरजां देवो नीं पांखड़ी, थां को विनौ विसेस !
सागर लंघी पिव मिलूं, पिव मिल पाछी देस ।।"

कुरजां को वह धर्म की बहन बनाती है,

रोजगार हेतु, पति के परदेश-गमन के समय राजस्थान की रमणी की विरह-वेदना का सुंदर निदर्शन 'पीपली' लोकगीत में दिखायी देता है । प्रियतमा कहती है कि, 'हे पतिदेव', अब जब मैं पूर्णतः नवयौवना हो गयी हूं । आप मुझे छोड़कर परदेश चल दिये ।

उसके पांव लगती है कि कदाचित वह उसे, उसके प्रियतम से मिला ही दे । इतर लोक-काव्यों में इस तरह के उदाहरण विरले ही मिलते हैं । किंतु बेचारी अबोध कुरजां जब उसकी ओर यों ही एकटक निहारती रहकर अंततः उड़ने लगती है, तो वह उसे ससुरजी को पांव लगने और ननद को आशीष देने आदि समाचारों की हिदायतें देती ही रह जाती है—

तूं छै धरम री बैनड़ी ए, लुल-लुल लागूं थारे पांय...
कुरजां ए म्हारो भंवर मिला दै नीं ए...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया देखकर वह हर्षोल्लास से इतनी प्रफुल्लित हुई कि उसके कृशकाय शरीर में अनायास ही वृद्धि हो गयी जिसके फलस्वरूप

ससुरोजी नैं कहीजै कुरजां पगां लागणा म्हारा !
नणदल नैं आसीस दीजै, उड़ती कुरजणियां...
संदेसो लेती जाइजै ए ।

एक गीत में प्रेयसी अपने प्रवासी प्रियतम को संदेश देने के लिए सुए (तोते) से भी अनुनय करती है कि उन्हें कह देना, आपकी

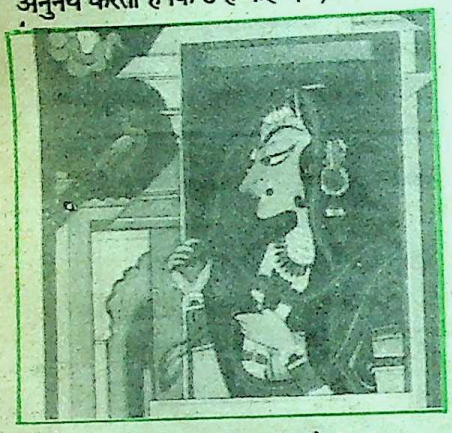

गौरी आपके इंजतार में काले कौओं को उड़ा रही है ।

"बीकाणै जावै तो सुआ यूं कही, रे सुआ यूं कही...
थां री गौरीघण उडावै काला काग, काग रे !
ओ म्हारा सूवटिया..."

राजस्थानी लोक-काव्य में प्रियतम की याद में तिल-तिल जलती हुई प्रेयसी जब चारों ओर से हताश-निराश हो जाती है, तो वह कौए से कहने लगती है कि हे कौए, तू मेरे शरीर का चुन-चुनकर सारा मांस खा ले, लेकिन मेरे इन दो नयनों को मत खाना, क्योंकि इनमें पिया-मिलन की आशा अभी भी जीवित है—

"कागा चुन-चुन खाइयो, म्हारै तन रो मांस !
दो अंखियन मत खाइयो...पिया मिलण री आस ।"

विरहाग्नि में जलकर विरहिन इतनी कृशकाय हो जाती है कि उसे अपना जीवन ही अर्थहीन लगने लगता है, फिर भी प्रिय-दर्शन की उसकी बलवती आशा उसे पुनः प्रेरित करती है कि वह कौए से उड़कर शकुन देने का अनुरोध तो एक बार और कर ले । इसके लिए वह कौए के सामने प्रलोभनों के अंबार लगाने लगती है—

"उड़-उड़ रे म्हारा काला रे कागला, कद म्हारा पिवजी घर आवै...
एकर उड़ के सुगन मना दे—सोनैं में चांच मंढाऊं कागा...
खीर-खांड रा जीमण जीमाऊं, गलै में हार पैराऊं कागा...
पगल्यां में थारै बांधूं रे घूघरा, जलम-जलम गुण गाऊं कागा...
कद म्हारा पिवजी घर आवै !

वह कहती है कि हे मेरे काले कौए, उड़ ! ताकि मेरे प्रियतम घर आयें । यदि तू एक बार ही उड़कर शकुन दे दे, तो मैं तेरी चोंच को सोने से मंढ़वा दूं, तुझे खीर-खांड के व्यंजन खिलाऊं, गले में हार पहनाऊं और पांवों में घुंघरू बांधकर जन्म-जन्मांतरों तक तुम्हारा ही गुणगान करती रहूं ! लेकिन कौआ उस विरहातुर कृशकाय प्रेयसी के प्रलोभनों की परवाह नहीं करता । हारकर हाथ से जैसे ही वह कौए को उड़ने लगती है, तभी अचानक उसका प्रियतम वहां आ पहुंचता है । अभी उसने कौए को उड़ाने के लिए अपना क्षीणकाय हाथ उठाया ही था, जिससे उसके हाथ की आधी चूड़ियां छिटककर कौए के गले में जा पड़ीं, लेकिन इस बीच अपने प्रियतम को

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके हाथ का व्यास बढ़ जाने के कारण आधी चूड़ियां हाथ में ही तड़क कर टूट पड़ीं—

"काग उड़ावण धण गई, आयो पीव भड़क्क !
आधी चूड़ी काग गळ, आधी गई तड़क्क !!"

संयोग-वियोग के ऐसे अनूठे और अविस्मरणीय दृश्यों का चित्रण राजस्थानी लोकगीतों में इतने मनमोहक रूप में मिलता है कि दांतों तले अंगुली दबा लेनी पड़ती है। राजस्थानी लोक-काव्य के अतिरिक्त इतना सुंदर विरह-वर्णन अन्यत्र शायद ही कहीं मिले जो भावक को विस्मय-विमुग्ध कर देनेवाला हो।

—भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान
रतन बिहारी पार्क, बीकानेर (राज.)

वन में पक्षियों से अपने पिया का पता पूछती नायिका

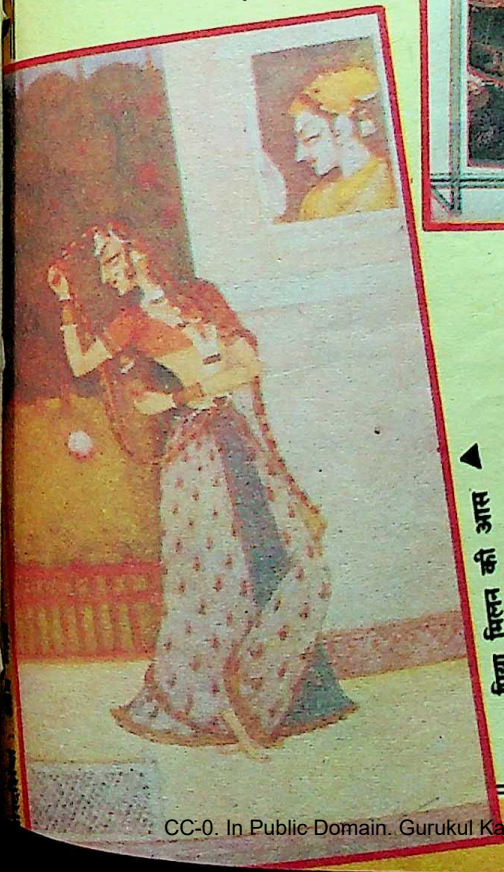

पिया मिलन की आस ▲

पिया तक संदेशा पहुंचाती मालवाणी

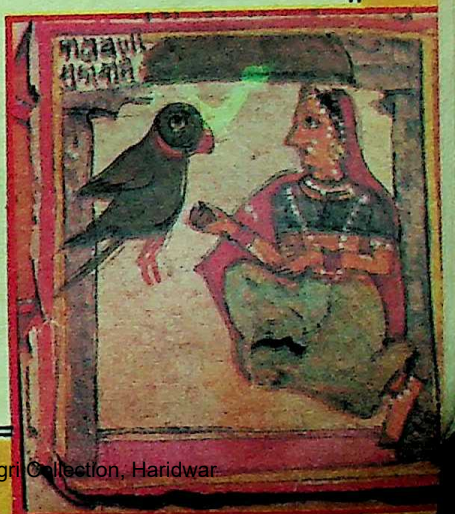

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

▲ निर्माणाधीन प्रभात विहार भवन

एक अद्भुत झरना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collecti

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां उषानगरी के पायल खनकते हैं

● सर्वेश

रात का चौथा पहर बीत चुका है । सितारे अपने घर लौटने की तैयारी में लगे हैं । सिर्फ भोर का तारा अपनी जिद पर अड़ा है कि वह अभी कुछ देर और रुकना चाहता है । आसमान ने रंग बदलना शुरू कर दिया है । अंधेरे की कालिमा मंद-मंद धूमिल होने लगी है । झींगुरों की आवाज भी आहिस्ता-आहिस्ता मद्धिम पड़ने लगी है । चिड़ियों ने गाना शुरू कर दिया है । ठंडी-ठंडी हवाओं के हलके-हलके झोंकों के साथ साल के पत्तों ने गुनगुनाना शुरू कर दिया है । बादलों के छोटे-छोटे टुकड़े एक किनारे खड़े होकर पूरब की ओर आंखें बिछाये हैं ।

सरपीली बलखाती शैल सरिता कोयल ने भी अपना प्रवाह थोड़ी देर के लिए रोक दिया है । कोयल के आइने में दूर खड़े छोटे-छोटे पहाड़ पूरब की ओर ताकते नजर आ रहे हैं । साल, करम, खैर, बांस, बेल आदि पेड़ों से भरी धरती ऐसी लग रही है मानो उसने हरित वर्ण का परिधान धारण कर रखा है । ओस की बूंदों से भीगी धरती 'सद्यस्नाता' की तरह दिख रही है । दूब पर पड़ी और पत्तों से लटकती ओस की बूंदें गेसुओं से टपकते पानी की बूंदों-जैसी लग रहीं हैं ।

ये लीजिए पूरब के कोर में लाली फूटी और उषा नागरी के पायलों की खनक ने उसके आने की सूचना दे दी जिसके आगमन का सभी शिद्दत से इंतजार कर रहे हैं ।

इंतजार के इस समारोह में हिस्सा लेने दूर-दूर से लोग आते हैं । छोटानागपुर के दक्षिण-पश्चिम सिरे की पहाड़ियों में बसा नेतरहाट उन हस्तियों की बाट जोह रहा है जो प्रकृति के अनंत सौंदर्य को निहारने के साथ-साथ मौन भाषा में उसके स्पंदन को भी सुन सकें ।

'छोटानागपुर की रानी' नाम से मशहूर नेतरहाट बिहार प्रांत के दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के पलामू जिले में बसा है । नेतरहाट पठार का विस्तार २३० २७० ०८" उत्तरी अक्षांश से लेकर २३० ३०० २८० उत्तरी अक्षांश तक एवं ८४० १४० ०४० पूर्वी देशांतर से लेकर ८४० १७० ०८० पूर्वी देशांतर तक है । इसके शीर्ष भाग का क्षेत्रफल २५.६ वर्ग किलोमीटर है परंतु संपूर्ण विस्तार का क्षेत्रफल ४१ वर्ग किलोमीटर है । समुद्र तल से इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचाई लगभग ३७०० फीट है। पलामू के जिला मुख्यालय डालटनगंज से १५० किलोमीटर दक्षिण-पूर्व और रांची से १५५ किलोमीटर पश्चिम इसकी स्थिति है। हार्स-शू आकार के इस पठार का आधारभूत चट्टान फेल्सपार युक्त ग्रेनाइट एवं लैटेराइट है।

प्रकति का हृदयस्थल : नेतरहाट

रांची से जब नेतरहाट की ओर बढ़ेंगे तो नेतरहाट से ५५ कि.मी. पहले घाघरा में ही पहाड़ दिखने शुरू हो जाते हैं। मानो सैलानियों के स्वागत में अगवानी के लिए खड़े हों। बनारी गांव से शुरू होता है २० किलोमीटर लंबा, सर्पीला, घने जंगलों का पहाड़ी रास्ता जो मन में रोमांच भर देता है। हरे-हरे लंबे बांस, पलास, जंगली केले, करम, साल, सेमल, खैर, सिद्ध और अचर-जैसे पेड़ झूमते हुए नजर आते हैं। नेतरहाट शब्द की उत्पत्ति मूलतः नेतुर और हातु शब्द के मिलने से बनी है। नेतुर का अर्थ होता है बांस और हातु का मतलब बाजार। संभवतः बहुतायत में पाये जाने के कारण यहां बांस का बाजार लगा करता था जिसके कारण इसका नाम नेतरहाट पड़ा। कहावत यह भी है कि अंगरेजी के दो शब्द 'नेचर' और 'हट' आपस में मिलकर नेतरहाट बन गये। सचमुच नेतरहाट प्रकृति का हृदयस्थल लगता है जो घने जंगल के पेड़-पौधे-फूलों से सजी प्रकृति के सौंदर्य के रूप में दृष्टिगोचर है। बारिश के मौसम में कभी-कभी बादल नीचे घाटी में और ऊपर जनजीवन विचरण करते हैं तो ऐसा लगता है—जैसे नेतरहाट बादलों की सवारी कर रहा है। चलते-फिरते बादल इसके सौंदर्य के अनुपम अंग हैं। लहरियादार ढलानों पर दूर-दूर तक फैले विशाल वनों को देखकर प्रतीत होता है मानो कोई प्यारा-सा पिक्चर पोस्टकार्ड हो। नेतरहाट पठार के निकट की पहाड़ियां पात (पाट) कहलाती हैं—नेतरहाट पाट, पसेरी पाट, डूमरपाट, जोभी पाट, [illegible] पाट, दासवान पाट आदि। पूरे क्षेत्र के उत्तरी-दक्षिणी भाग का निर्माण उत्तरी कोयल और शंख नदी के अपरदन कार्य से हुआ है। पाट क्षेत्र के बैसाल्ट चट्टान की औसत मोटाई १७४ फीट है। अक्षांशीय स्थिति से यह पठार उष्ण कटिबंधीय बायोम में पड़ता है। नेतरहाट में वार्षिक वर्षा १५२ से.मी. होती है। अप्रैल से मार्च का मौसम सुहाना है। गरमी में अधिकतम तापमान ३८° सैल्सियस और न्यूनतम १६° सैल्सियस रहता है जबकि जाड़े में अधिकतम १०° सैल्सियस और न्यूनतम [illegible] सैल्सियस होता है।

नेतरहाट का जंगल बेतला व्याघ्र अभयारण्य से मिला हुआ है। भालू, बंदर, सूअर, [illegible] तरह-तरह के सर्प, हिरण, चितरवा आदि [illegible] पर दिख जाते हैं। कभी-कभी बाघ और [illegible]

प्रकृति की अनुपम छटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी भी नेतरहाट घूमने चले आते हैं। बिरहोर, किसान, उरांव और बिरजीया यहां के मुख्य निवासी हैं जो मूलतः आदिवासी हैं। इनकी मुख्य फसल—धान, मक्का, महुआ, रागी, गोंदली, सरगुजा, लटनी, कुरथी और उरद है।

इंडियन पब्लिक स्कूल कांफ्रेंस के संस्थापक सदस्य और ऋषि वैली स्कूल के प्राचार्य एफ. जे. पीयर्स को जब सन् १९५१ में बिहार में एक पब्लिक स्कूल बनाने की योजना बनाने को कहा गया तब पीयर्स महोदय ने नेतरहाट को स्कूल के लिए सबसे बेहतर स्थल बताया। पीयर्स महोदय नेतरहाट के सौंदर्य से इतने अभिभूत थे कि वे नेतरहाट को दुनिया की चंद खूबसूरत जगहों में से एक बताते थे। उन्हीं की योजना पर बना नेतरहाट आवासीय विद्यालय बिहार में उत्कृष्ट शिक्षा का अनूठा केंद्र है। सूर्योदय के अलावा नेतरहाट और इसके आसपास कई रमणीक स्थल हैं। 'मैग्नोलिया प्वाइंट' के नाम से जाना जानेवाला सूर्यास्त स्थल भी इसकी प्रसिद्धि का कारण है। जहां डूबते सूरज के रूप लावण्य से मुग्ध होने का इंतजार होता है। बल्कि यूं कहें कि जिस उत्साह के साथ प्रातःवेला में उसका स्वागत किया जाता है उसी प्यार के साथ सायंवेला में उसे विदा किया जाता है ताकि कल फिर वो आये। नेतरहाट से मैग्नोलिया प्वाइंट की दूरी १२ किलोमीटर है। इसी प्वाइंट से दूर पहाड़ों में ऊपर से गिरती पानी की तीन पतली-पतली धाराएं दिख रही हैं। नजदीक जाइए तो पता चलेगा कि दरअसल यह लोध जलप्रपात है जो ४६८ फीट की ऊंचाई से गिरती है। बूढ़ा नदी पर बना यह प्रपात बूढ़ा घाघ भी कहलाता है। घने जंगलों के बीच यह प्रपात बिहार का सबसे ऊंचा प्रपात है। ऊंचाई से गिरता प्रपात विशालता का बोध तो कराता ही है साथ ही प्रकृति-प्रेमी होने का आग्रह भी। दरअसल लोध प्रपात नेतरहाट से ६१ किलोमीटर की दूरी पर है, पर यदि जंगल-पहाड़ होते हुए पैदल जाएं तो १६-१७ किलोमीटर से ज्यादा नहीं है।

नेतरहाट विद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमांचकारी जलप्रपात

सूर्यास्त स्थल से १२ किलोमीटर की दूरी पर लोअर घाघरी जल प्रपात है जो आमतौर पर ऊपर से ही देखा जाता है, पर यदि आप हिम्मतवर हैं तो घने जंगलों के बीच सरकते हुए नीचे चले जाइए । लोअर घाघरी संपूर्ण सौंदर्य के साथ मिलेगी । शुभ्र धवल जलधारा जब नीचे गिर रही होती है और उस पर सूरज की

किरणें पड़ती हैं तो इंद्रधनुषी छटा देखने को मिलती है । लोअर घाघरी की यात्रा दरअसल पैदल करने में ही आनंददायक और रोमांचक है । ५ किलोमीटर घने जंगल में यात्रा करनी होगी । जगह-जगह पर ढाहे गये दीमक के घर अपने आस-पास भालू की उपस्थिति का अहसास कराएंगे तो कहीं-कहीं खींसे निपोरते बंदर मिलेंगे । जंगल के सन्नाटे को तोड़ने का प्रयास करती है छोटी-छोटी जलधाराओं की आवाज । हर खटका आपको रोमांचित कर देगा । सूरज भी इस जंगल में पूरी तीव्रता के साथ नहीं प्रवेश कर पाता है । साल के लंबे-लंबे पेड़ों से छनकर आती सूरज की किरणें गुनगुनी धूप का आनंद देंगी । इस प्रपात तक जाने में आपका साथ देगी पंडार नदी, जिस पर यह प्रपात है । इसी नदी पर लोअर घाघरी से [illegible] किलोमीटर पहले 'अपर घाघरी' जलप्रपात है जो पिकनिक स्थल के रूप में लोकप्रिय है ।

ठहरने के लिए बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम का होटल प्रभात विहार है जो सूर्यास्त स्थल भी है । कमरों की बनावट ऐसी है कि यदि आपने कमरे की खिड़की खोली तो बाल अरुण हंसता नजर आएगा और यदि आपने खिड़की से बाहर नहीं झांका तो खिड़की के कांच के माध्यम से अंदर आयी लालिमा [illegible] का रंग तो बदलेगी ही, आपको भी पता चल जाएगा कि सूरज आ चुका है । निगम के होटल के अलावा वन विभाग, पी. एच. ई. डी., पी. डबल्यू. डी., राजस्व विभाग और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का पलामू बंगला है । पंचायत कैंटीन भी है । नेतरहाट बस द्वारा रांची से और डाल्टनगंज से जा सकते हैं । निकटस्थ हवाई अड्डा रांची [illegible] किलोमीटर पर है । नजदीकी रेलवे स्टेशन [illegible] है, पर यदि पलामू की ओर से आना हो तो डाल्टनगंज उतरना होगा । पटना से ४८० किलोमीटर और गया से ३७६ किलोमीटर की दूरी पर नेतरहाट है । पटना से रांची के लिए पर्यटन निगम की बसें भी चलती हैं । विभिन्न विश्रामालयों में ठहरने के लिए अग्रिम आरक्षण कराना होगा ।

तो फिर क्यों न चलें नेतरहाट, जहां [illegible] चांदनी-सा शीतल बिछा है, जहां पत्थर [illegible] और पेड़ सुनते हैं, जहां चट्टानों के संगीत के बीच सूर्य जागता और सोता है, जहां आकाश की नीलिमा और धरती की हरीतिमा सूर्य की लालिमा के साथ एक नया रंग रचती है ।

—सी-४/२८०, सैक्टर-६, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

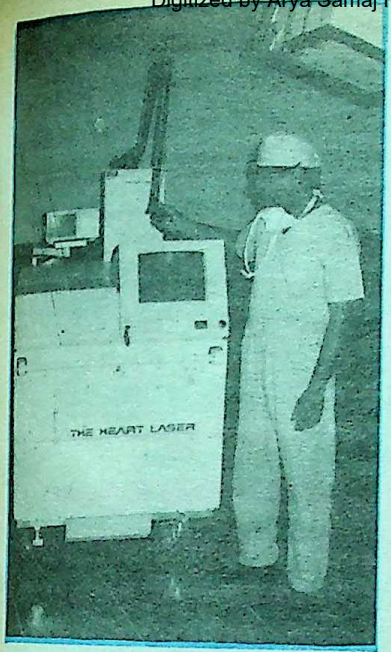

हार्टलेसर मशीन

ट्रांसमायोकार्डियल लेसर रीवेशक्लूराइजेशन

हृदय चिकित्सा की नयी तकनीक

● ज्ञानभद्र

पिछले महीने दिल्ली के एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर में एक ६० वर्षीय हृदय रोगी को गंभीर अवस्था में भरती किया गया। चलने-फिरने में उसे छाती में बायीं ओर दर्द महसूस होता था। विख्यात हृदयरोग विशेषज्ञ तथा एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर के कार्यकारी निदेशक डॉ. नरेश त्रेहन ने इस रोगी के दर्द की तुरंत जांच की तो पाया कि उसके हृदय की मांसपेशियां काफी कमजोर हो चुकी थीं। जिसकी वजह से हृदय की पंपिंग-प्रणाली अपना काम नहीं कर पा रही थी।

भारत में प्रथम तकनीक

डॉ. त्रेहन जिन्होंने 'कोरोनरी आर्टरी बाईपास ग्राफटिंग' तथा 'ट्रांसमायोकार्डियल लेसर रीवेशक्लूराइजेशन' की संयुक्त उपचार-विधि का अन्वेषण किया है, ने इस रोगी का उपचार ट्रांसमायोकार्डियल लेसर रीवेशक्लूराइजेशन तकनीक से करके उसे इस रोग से निजात दिलायी। यह ऑपरेशन भारत में पहली बार किया गया।

इस विधि में, शल्य चिकित्सक हृदय के लिए रक्त आपूर्ति के नये माध्यम निकालते हैं। सर्जन कंप्यूटर-नियंत्रित लेसर किरणों के द्वारा रक्तविहीन तथा कमजोर मांसपेशियों में छोटे-छोटे छिद्र करते हैं। "ऐसा करने पर रक्त हृदय मांसपेशियों में स्पंज की भांति प्रवेश करता है", डॉ. त्रेहन कहते हैं।

डॉ. त्रेहन आगे बताते हैं कि इस शल्य-विधि का मुख्य लक्ष्य है— रक्त-प्रवाह में सुधार लाकर ज्यादा से ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन हृदय को पहुंचाना। साथ ही साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य रक्त-प्रवाह मार्ग से रक्त कुछ नहीं है कैसे प्रवाहित हो, इसके लिए यह विधि नये रास्तों का सृजन करती है।

बिना कैंची के ऑपरेशन

यह पूछे जाने पर कि क्या इस ऑपरेशन विधि में कैंची उपयोग में लायी जाती है, डॉ. त्रेहन बताते हैं सिर्फ रोगी की पसलियों के मध्य में चार इंच का लंबा सुराख करने के अतिरिक्त पूरी ऑपरेशन-प्रक्रिया में कैंची का इस्तेमाल नहीं होता है।

है। फिर 'हार्ट लेसर' मशीन काम में लायी जाती है। इस मशीन का उपयोग १ सेकंड के १/२०वें हिस्से से भी कम समयकाल में होता है। खासकर, हृदय स्पंदनों के मध्यकाल के दौरान यह मशीन काम में लायी जाती है। ऐसा इसलिए कि उस वक्त हृदय के बायें कोष्ठ में रक्त भरा होता है और यह रक्त मशीन की लेसर ऊर्जा को रोकने का कार्य करती है ताकि हृदय के अन्य टिश्यू नष्ट न होने पायें। इस ऑपरेशन प्रक्रिया में लेसर किरणों और हृदय-स्पंदन के

ट्रांसमायोकार्डियल चिकित्सा तकनीक न केवल बाईपास सर्जरी का विकल्प है, बल्कि वहां भी यह विधि काम में लायी जाती है जहां एंजियोप्लास्टी विधि सक्षम नहीं है।

पसलियों के बीच सुराख करने के बाद, शल्य चिकित्सक लेसर किरणों के द्वारा ०.५ मि.मी. से लेकर १ मि.मी. व्यास के छिद्र हृदय के रक्तविहीन क्षेत्रों के आसपास करते हैं। इसके लिए 'हार्ट लेसर' मशीन का उपयोग होता है। यह मशीन १००० वॉट क्षमतावाले कार्बनडायऑक्साइड लेसर किरणों का उत्पन्न करती है।

इस ऑपरेशन प्रक्रिया के दौरान सर्वप्रथम १५ से ३० छिद्र हृदय के उस हिस्से में किये जाते हैं जहां रक्त का संचार न के बराबर होता

बीच सामंजस्य स्थापित करने के बाद, लेसर किरणों को स्वचालित रूप से हृदय के उस हिस्से में भेजते हैं जहां रक्त प्रवाह नगण्य होता है।

कोई दुष्प्रभाव नहीं

डॉ. त्रेहन जिन्होंने इस चिकित्सा तकनीक से १०० से ज्यादा रोगियों का उपचार किया है, कहते हैं कि इस तकनीक का सबसे बड़ा लाभ यह है कि पूरी प्रक्रिया-विधि में हृदय गति को रोकने की जरूरत महसूस नहीं की जाती है और न ही रोगी को हृदय-फेफड़े मशीन पर लिटाने की आवश्यकता पड़ती है। जैसा कि कार्डियक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

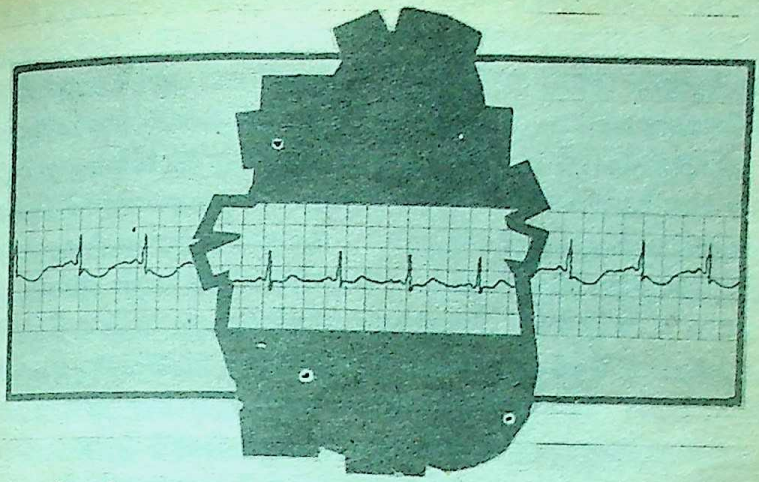

हृदयस्पंदन का लेखा जोखा

सर्जरी में इसकी निहायत आवश्यकता पड़ती है। डॉ. त्रेहन के विचारानुसार हृदय-फेफड़े मशीन गुरदा, मस्तिष्क तथा शरीर के नाजुक अंगों पर दुष्प्रभाव डालते हैं।

दूसरी नयी बात यह है कि टी.एल.आर. चिकित्सा की अवधि एक से दो घंटे होती है। इसके ठीक विपरीत बाईपास सर्जरी चार से छह घंटों के बीच संपन्न होती है।

बाईपास चिकित्सा के अंतर्गत हृदय गुहा को खोलने की आवश्यकता पड़ती है। बाईपास सर्जरी में पैर के बीचवाले हिस्से से धमनी काटकर हृदय में प्रत्यारोपित करते हैं। टी.एल.आर. चिकित्सा विधि में इन सब चीजों की जरूरत महसूस नहीं होती है।

टी.एल.आर. चिकित्सा विधि में हृदय रोगियों को सघन कक्ष (इंटेसिव केयर यूनिट) में बहुत कम समय गुजारना पड़ता है। साथ ही हृदय-चिकित्सा की यह नयी तकनीक बाईपास सर्जरी की अपेक्षा कम खर्च में संपन्न होती है। इस चिकित्सा विधि में १ लाख ३० हजार रुपये खर्च होते हैं। जबकि बाईपास सर्जरी (ई.एच.आई.आर.सी. संस्थान में) एक लाख पचास हजारे रुपये में संपन्न होती है।

ट्रांसमायोकार्डियल चिकित्सा तकनीक न केवल बाईपास सर्जरी का विकल्प है, बल्कि वहां भी यह विधि काम में लायी जाती है जहां एंजियोप्लास्टी विधि सक्षम नहीं है।

अंत में डॉ. त्रेहन कहते हैं, "मैं हृदय रोगियों को इस तकनीक के प्रति अत्यधिक आशावादी नहीं बनाऊंगा परंतु हृदय रोगियों के लिए इस चिकित्सा तकनीक का अनुमोदन जरूर करूंगा जो सभी प्रकार के उपचार से हताश हो चुके हैं।"

१०९ बी., मुनीरका
चौधरी मीरसिंह कांप्लेक्स
नयी दिल्ली-११००६७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा मकान नदी के किनारे है। काफी ऊंचाई पर बना है। नदी में बाढ़ आने पर भी मेरा मकान नहीं डूबता। ईंटों एवं पत्थरों से बना पुश्तैनी मकान है।

मुझे बचपन से ही नदी को देखना बहुत अच्छा लगता है। अपने मकान की खिड़की पर बैठ नदी को घंटों देखता रहता हूं। बरसात के दिनों में नदी लबालब भरी नजर आती है। नौकाएं उस पर तैर रही होती हैं। तब नदी का विस्तार मेरी आंखों में नहीं समा पाता चारों तरफ पानी का साम्राज्य। उठती-गिरती लहरें। पानी में उछलते-कूदते जलचर। मछलियां फंसाते मल्लाह। जल का स्पर्श लेकर आती ठंडी हवा।

इसके विपरीत तपिश के दिनों में नदी सिमट गयी जान पड़ती है। उसके सूख गये किनारों की दूरी बढ़ जाती है। तब वे सूनसान और बियाबान नजर आते हैं। बरसाती मौसम और त्यौहारों को छोड़कर नदी के किनारे मुझे अत्यन्त उदास, उजाड़ और खौफनाक जान पड़ते। सिर्फ गंगा स्नानवाले त्योहारों के दिन ही वहां भीड़ जुटती और मेले लगते। उसके बाद फिर वही वीरानी और मायूसी। किनारों के आसपास मंडराते गिद्ध और चील तथा दौड़ते श्रृगाल। तब सचमुच नदी के किनारे मुझे डराने लग पड़ते। नदी के किनारे कुछ फासलों पर कुछ इक्की-दुक्की झोपड़ियां भी नजर आतीं। बरसात के दिनों में वे झोपड़ियां वहां से हट जातीं। बरसात खतम होते ही वहां आ खड़ी होतीं। यह जानना चाहता, उन झोपड़ियों में कौन

कहानी

नदी किनारे

● मिथिलेश्वर

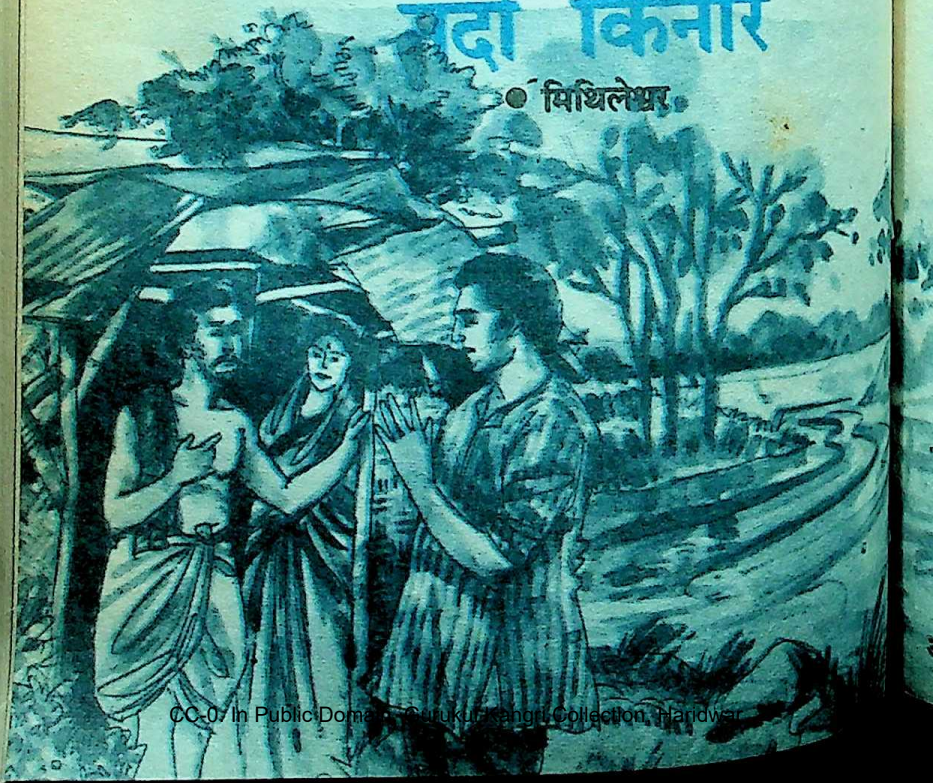

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। ऐसी उपेक्षित और असुरक्षित जगहों में वे कैसे रह लेते हैं ?

बड़ा होकर मैं कॉलेज में पढ़ने लगा। बचपन के दृश्य को निकट से जानने की इच्छा मेरे अंदर बलवती हो गयी। मैं घर से बाहर आने-जाने लगा। बचपन का डर भी अब मेरे मन से जाता रहा था।

इसी दौरान नदी के किनारे की एक झोपड़ी के पास मैं जा पहुंचा। मेरे मकान से सीधे नजर आनेवाली वह झोपड़ी थी। बांस की खप्पचियों तथा लकड़ी एवं टीन के टुकड़ों से वह अस्थायी रूप में बनायी गयी थी। आवश्यकता पड़ने पर उसे आसानी से समेटकर हटाया जा सकता था।

मैंने देखा, उस झोपड़ी में एक काला-कलूटा और लंगड़ा आदमी रहता था। एक पांव से वह ढरुचकर चलता था। लेकिन शरीर से मेहनती लगता था। ठिगने कद और चपटी नाकवाली उसकी दुबली-पतली पत्नी थी। कुपोषण के शिकार उसके दो बच्चे थे। एक बच्चे का पेट आगे को निकला हुआ तथा टांगें पतली थीं। दूसरे बच्चे का माथा बड़ा तथा हाथ-पांव टेढ़े थे। मैंने बताया— "मैं सामने के ऊंचेवाले मकान में रहता हूं। आप लोगों के बारे में जानने आया हूं।"

वह काला-कलूटा आदमी मेरे सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उसका नाम गबरू था। उसके चेहरे से दीनता टपक रही थी। उसने कहा— "कोई काम कराना है क्या साहब ? मैं लंगड़ा जरूर हूं। पर सब काम कर लेता हूं। आप जो दे दीजिएगा, वही ले लूंगा।"

मैंने उसे समझाया— "कोई काम कराने नहीं आया हूं।"

उस दिन वहां कुछ देर रुककर उसकी पूरी कहानी से मैं अवगत हुआ। पहले वह शहर में नियमित मजदूरी करता था। शहर में ही एक खोली लेकर रहता था। उसी समय एक भवन निर्माण में मजदूरी करते हुए वह दुमंजिले से नीचे गिर गया था। वहीं उसका पैर टूट गया था। भवन मालिक ने इलाज के लिए कुछ रुपये देकर उसकी छुट्टी कर दी थी। उसके बाद उसे नियमित मजदूरी मिलनी बंद हो गयी थी। उसे लंगड़ाकर चलते देख काम देनेवाले टरका देते। वह फुटकर मजदूरी पर जीने लगा। कभी काम मिलता। कभी नहीं। कई-कई दिन फांका। शहर में खोली लेकर रहना अब उसके वश की बात नहीं थी। वह ढूंढ़ते-ढूंढ़ते नदी के इस किनारे आ गया। तब से यहीं रहता है। शहर में काम नहीं मिलने पर अपनी पत्नी के साथ वह नदी में मछलियां पकड़कर बेचता है। उसके बच्चे नदी के किनारे लकड़ियां चुनते हैं। त्योहारों के अवसर पर लोगों द्वारा नदी में फेंके पैसों की तलाश में उसके बच्चे दिनभर लगे रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] हैं कि दूसरों की सहायता करने नहीं आता है । लेकिन हम खुद किसी की सहायता में कहां जाते हैं ? हम दूसरों की सहायता करें तो कोई कारण नहीं कि दूसरे हमारी सहायता में न आएं ... ।''

उनके बारे में जानने के बाद मेरा मन भर आया । उनके प्रति मेरे मन में दया के भाव उभर आये ।ये लोग कितने दुःखी और अभावग्रस्त हैं । वहां से लौटते हुए गबरू के हाथों पर मैंने चार-पांच रुपये रख दिये । वह सर से पांव तक कृतज्ञता से भर उठा । एकटक मुझे देखता रहा । बिना कोई कार्य कराये मैंने उसे रुपये दिये थे ।

दूसरी सुबह अपने घर से निकलकर दरवाजे पर आते ही मैंने पाया, गबरू वहां मौजूद था । मुझे देखते ही बोल पड़ा— ''कोई भी काम हो तो बता दीजिए साहब । मैं बढ़िया ढंग से कर दूंगा ।''

उसकी आवाज सुन पिताजी भी अपने कमरे से निकल आये । उसका हुलिया और रंग-रूप देख वे मुझसे पूछ उठे— ''कौन है यह ? क्या कहता है ?''

मैंने पिताजी को बता दिया— ''हमारे मकान के नीचे नदी किनारे की झोपड़ी में रहता है । गबरू इसका नाम है । काम के लिए आया है ।''

अब पिताजी ने बेलौस आवाज में उसे जवाब दे दिया— ''हमारे यहां कोई काम नहीं ।''

उसके जाने के बाद पिताजी ने मुझे समझाया— ''ऐसे लोगों से संपर्क नहीं रखते । ये ठीक नहीं होते हैं ।''

मैंने कहा— ''वह बहुत गरीब व्यक्ति है । मैं उसे जान चुका हूं ।''

पिताजी ने पुनः मुझे समझाया— ''तुम कुछ नहीं जानते हो । ये झोपड़ीवाले बहुत खतरनाक होते हैं ।''

पिताजी की बात मैं नहीं समझ सका । उसके प्रति मेरी सहानुभूति बनी रही । एक बार फिर पिताजी की अनुपस्थिति में वह आया । मैंने मां से उसे खानेभर के लिए चावल दिलवा दिया । वह जी भरकर कृतज्ञता प्रकट करता चला गया । अब अपनी झोपड़ी के पास खड़ा होकर मेरे मकान को वह अकसर निहारा करता था । मेरे परिवार के प्रति उसकी आंखें श्रद्धा से भरी रहती थीं ।

एक बार जब तीन-चार दिनों तक वह नजर नहीं आया तो मैं घूमते हुए उसके यहां फिर पहुंचा । उस समय उसकी पत्नी बुखार में तप रही थी । पत्नी के पास बैठा वह बहुत चिंतित और दुःखी था । इलाज के लिए उसके पास पैसे नहीं थे । मैंने शाम को अपने यहां आने के लिए उसे कह दिया । मेरे पिताजी को दवाओं के बारे में अच्छी जानकारी थी । आवश्यक दवाएं हमारे यहां बराबर रहती थीं । उसके आने पर पिताजी ने मेरे कहने से उसे दवाएं जरूर दे दीं । लेकिन उसके जाने के बाद वे मुझ पर बिगड़ उठे— ''मैं तुमसे कह चुका हूं कि ऐसे लोगों से मेल-जोल नहीं बढ़ाया जाता । वे ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक नहीं होते हैं। भविष्य में इसे फिर अपने घर तुझे नहीं बुलाना है।"

पिताजी की इस बात का अर्थ मैं नहीं समझ सका। पिताजी के इस निर्णय से मन ही मन दुःखी हो गया। इस घटना के ठीक छह दिन बाद मेरे यहां चोरी हुई। पिताजी दीदी के लिए गहने बनवाकर ले आये थे। दीदी की शादी में अपनी ओर से गहने देने की शर्त उन्होंने मंजूर की थी। जौहरी के यहां से एक ब्रीफकेस में वे गहने लेकर आये थे। उस वक्त शाम ढल रही थी। रातभर गहनों को घर में ही रखना था। सुबह बैंक खुलने पर उन्हें लॉकर में ले जाना था।

शायद उस चोर ने जौहरी के यहां ही पिताजी को गहने लेते देखा था। वह वहीं से उनके पीछे लग गया था।

पिताजी ने गहनों का ब्रीफकेस अपने कमरे में रखा था और अंदर से दरवाजा बंद कर सोये थे। वे आश्वस्त थे कि उनके बंद कमरे के भीतर से कोई गहने नहीं ले जा सकता है।

वह चोर छत के सहारे आंगन में आया था और एक कोने में दुबककर छिप गया था। वह अवसर की तलाश में था।

पिताजी अपनी आदत के अनुसार रात्रि तीन बजे उठे थे। वे हर रोज इसी समय उठते और बाथरूम जाते थे। कमरे का दरवाजा खोल आंगन के बाथरूम में वे चले गये। घड़ी देख वे निश्चिंत से हो गये थे। अब तक चोर नहीं आये तो अब नहीं आनेवाले ! लेकिन उनके बाथरूम में जाते ही वह छिपा चोर दबे पांव उनके कमरे में घुस आया। बाथरूम से उनके निकलने तक छोटी-बड़ी कई पेटियों के बीच में

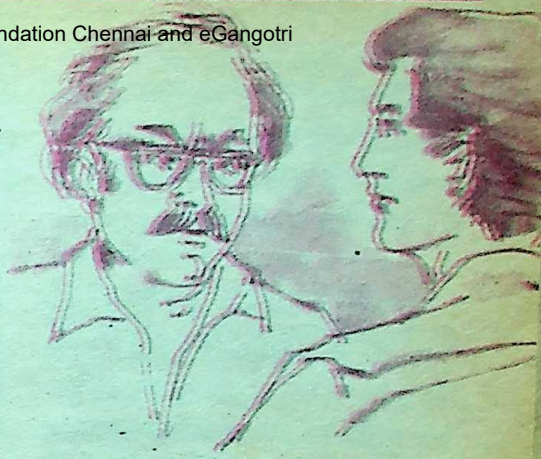

छिपाकर रखे उनके ब्रीफकेस को चोर ने ढूंढ़ लिया था। उधर वे बाथरूम से निकले और इधर उनका ब्रीफकेस ले वह चोर उनके कमरे से। उन पर नजर पड़ते ही चोर फुरती से उछलकर बरामदे के सहारे छत के रास्ते भाग चला। वे चिल्ला पड़े— "चोर-चोर। पकड़ो। भागा जा रहा है।"

अपने कमरे से निकल हम भी चिल्लाने लगे। पिताजी के अनुसार नदी की ओर भाग रहा है वह। लेकिन हमारे शहरी पड़ोसी हमारी आवाज सुनकर भी नहीं निकले। ऐसी घटनाओं पर अब शहरों में नहीं निकलते लोग। लेकिन इसी क्षण गबरू की झोपड़ी से किसी के निकलने और दौड़ने की ध्वनि हमें सुनायी दी। फिर तत्क्षण गबरू की तेज आवाज हमारे कानों में पड़ी—"दौड़िए साहब। हमने इसे पकड़ लिया है। जल्दी आइए।"

जवाब में हम पिता-पुत्र एक ही साथ चिल्ला पड़े— "आ रहे हैं गबरू। पकड़े रहना ...,"।

और हम दोनों पिता-पुत्र अपनी बंदूक ले तत्काल उस आवाज के पीछे भागे। वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचकर हमने देखा, नदी की सीढ़ियों पर पेट के बल पड़ा गबरू अपनी भुजाओं में ब्रीफकेस को कसकर पकड़े था और कराह रहा था। उसकी पीठ और बांहों में जख्म के कई निशान थे। अपने बदन से बहते खून में वह सन गया था।

गबरू से हमें पता चला कि हमारी आवाज सुनकर वह आ ही रहा था कि वापसी में भागते चोर से वह जा टकराया। फिर उसने चोर के हाथों से ब्रीफकेस छीन उसे कसकर अपनी भुजाओं में बांध लिया। उससे ब्रीफकेस हथियाने के लिए चोर ने उसके ऊपर कई जगह चक्कू से प्रहार किये। लेकिन हम लोगों की आवाज सुन और आते जान वह भाग गया।

गबरू का यह कार्य देख उसके प्रति मेरा मन अतिशय श्रद्धा से भर गया। पिताजी भी उसके प्रति अपने परिवर्तित भावों को छिपा नहीं सके— "तुमने ऐसा क्यों किया गबरू ? यह अपनी कैसी हालत बना ली है ? तुम निहत्थे थे और वह चोर हथियारों से लैस था। तुमसे ब्रीफकेस लेने के लिए वह तुम्हारे प्राण भी ले सकता था। खुदा का शुक्र कि तुम बच गये। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था ... ।"

जवाब में कराहते हुए ही कहा गबरू ने— "क्यों नहीं करना चाहिए था साहब ? आपने बुखार में मरती मेरी पत्नी को बचाया। आड़े वक्त में मेरी मदद की। आपकी आवाज सुनकर मैं महटिया जाता तो नरक में भी मुझे जगह नहीं मिलती ... !"

उसका जवाब सुन मेरा मन रूआंसा हो आया। मुझे लगा, पिताजी भी आर्द्र हो आये हैं। हमने उसी वक्त अस्पताल ले जाकर उसकी मरहम-पट्टी करायी तथा आवश्यक दवाओं एवं खाद्य पदार्थ के साथ सुबह होते-होते उसकी झोपड़ी में उसे पहुंचा दिया।

शाम होने से पहले मैं चुपके से पिताजी के कमरे में घुस आया। वे अभी दफ़्तर से नहीं लौटे थे। मैं उनकी डायरी ढूंढ़ने लगा। वे डायरी लिखते थे। इस अवसर पर मैं उनके मन की बात जानना चाहता था। संयोगवश पुस्तकों के बीच छिपी उनकी डायरी मुझे मिल गयी। मैं ताजा अंश पढ़ने लगा—

"गबरू ने मेरी आंखें खोल दी हैं। हम जिसे छोटा, हेय और अनुपयुक्त समझते हैं, यह हमारी भूल है। कौन, कब, किसके काम आ जाए, नहीं कहा जा सकता... ।"

"हम रोते हैं कि मुसीबत में कोई हमारी सहायता करने नहीं आता है। लेकिन हम खुद किसी की सहायता में कहां जाते हैं ? हम दूसरों की सहायता करें तो कोई कारण नहीं कि दूसरे हमारी सहायता में न आएं ... ।"

उनकी डायरी का यह अंश पढ़ मैंने उसे यथावत् पुस्तकों के बीच रख दिया। दफ़्तर से पिताजी के आने का समय हो गया था। मैं उनके कमरे से निकल नदी के किनारे चल पड़ा। मुझे गबरू को देखने जाना था।

लेकिन गबरू की झोपड़ी के पास पहुंच मेरे कदम ठिठक गये। मेरा मन सुखद आश्चर्य से भर गया। पिताजी दफ़्तर से सीधे गबरू की झोपड़ी में ही पहुंचे थे। मैं वहां उपस्थित पिताजी को दूर से ही देख नदी के दूसरे किनारे की ओर मुड़ गया। मेरी आंखें नम हो गयी थीं।

—महाराजा हाता, कलेक्ट्रेट,
आरा (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान

अनुबंध कुछ नहीं होता

के. एल. जावा, गाजियाबाद : मैंने अपना दिल्ली स्थित मकान बाइस महीने के एग्रीमेंट (अनुबंध) पर किराये पर दिया था । बाइस महीने पूरे होने पर किरायेदार ने मकान खाली नहीं किया और कहा कि 'एग्रीमेंट कुछ नहीं होता । एक लाख रुपये दो तो खाली कर दूं ।' मैं इतनी बड़ी रकम कहां से देता, लिहाजा कहा कि 'तुम किराया मत दो, बस मकान खाली कर दो ।' इस बात को भी पांच साल हो गये । मैंने मुकदमा दायर कर दिया । पता नहीं, यह मामला कब निपटेगा ? मैं बेघर, बेरोजगार हूं, उम्र भी पिचहत्तर साल है । चार बेटे हैं, सभी शहर से बाहर रहते हैं । बताइए, मैं क्या करूं ?

मकान-मालिक व किरायेदार के मध्य हुए अनुबंध के आधार पर वे मकान, जो दिल्ली किराया नियंत्रण अधिनियम के अंतर्गत आते हैं, खाली नहीं कराये जा सकते । मकान खाली करवाने के लिए न्यायालय की शरण में जाना ही पड़ता है । आपने कानूनी कार्यवाही करके उचित कदम ही उठाया है । न्यायालय से आप अपने मुकदमे की शीघ्र सुनवाई की प्रार्थना भी कर सकते हैं ।

निश्चित अवधि के लिए मकान किराये पर देने का प्रावधान दिल्ली किराया अधिनियम में है लेकिन इसके लिए उक्त अधिनियम की धारा २१ के अंतर्गत न्यायालय की पूर्व अनुमति लेनी पड़ती है । यह सुविधा केवल आवासीय मकानों के लिए ही उपलब्ध है ।

मकान खाली करने के लिए मकान-मालिक से रकम मांगना गैर-कानूनी है और यदि आप चाहें तो इनके लिए किरायेदार के विरुद्ध कार्यवाही कर उसे दंडित करा सकते हैं ।

मेरे जन्म से पूर्व

मुरारी पांडेय, रायपुर : मेरे जन्म से पूर्व ही मेरे पिताजी ने स्वअर्जित संपत्ति को मेरे बड़े भाई के नाम कर दिया । संपत्ति का आधा हिस्सा पिताजी के पास था, जिसे पिताजी की मृत्यु के बाद बड़े भाई ने छल से अपने नाम कर लिया । आज मेरे भाई ने मुझे संपत्ति से बेदखल कर दिया है । क्या मेरे पिताजी द्वारा भाई के नाम की गयी संपत्ति में से मुझे अधिकार मिल सकता है या नहीं ?

स्वअर्जित संपत्ति को आपके पिताजी अपनी इच्छानुसार किसी को भी देने के लिए स्वतंत्र थे । इसलिए उनके द्वारा आपके भाई के नाम की गयी संपत्ति को अवैध नहीं कहा जा सकता । लेकिन आपका जन्म बाद में होने से उनके द्वारा संपत्ति दूसरे बेटे यानी आपको दे दिये जाने के निर्णय पर कुछ असर नहीं पड़ता ।

संपत्ति का आधा भाग आपके पिताजी के नाम किस प्रकार है । यदि यह हिस्सा, आपके भाई के नाम किये हिस्से से अलग है, तो आप इस आधे भाग से अपना अधिकार प्राप्त कर सकते हैं । इस संपत्ति को भाई द्वारा अपने नाम करा लेना न्याय-संगत नहीं है । आप इस संपत्ति से अपना भाग मांगने के लिए कार्यवाही कर सकते हैं और इस भाग को भाई द्वारा अपने नाम करा लेने के कार्य को न्यायालय में चुनौती दे सकते हैं ।

वेतन-वृद्धि का अधिकार

आर. सी. खरे, दवोह : मैं स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत हूं । मेरा सेवा काल मात्र पांच वर्ष का रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है । शासन द्वारा मुझे दो वेटेज इंक्रीमेंट मिलने थे, जिनमें से एक मिल चुका है, दूसरा नहीं । इसके लिए मैं उचित माध्यम द्वारा अट्ठाइस प्रार्थना-पत्र जिला अधिकारी को भेज चुका हूं, लेकिन ग्यारह महीने होने आये, न तो दूसरा इंक्रीमेंट लगा, न कोई जवाब ही मिला ।

आपको वेतन वृद्धि पाने का अधिकार है या वह शासन की इच्छा पर निर्भर करता है ? यदि यह आपका अधिकार है, तो वह वेतन वृद्धि आपको कब मिलनी चाहिए थी ? यह सब आपके विभाग के सेवा-नियमों पर निर्भर करता है । उक्त नियमों के अंतर्गत जिस समय से आपका वेतन-वृद्धि का अधिकार बनेगा, तब से ही आप वेतन-वृद्धि के अधिकारी बनेंगे । निर्णय करने में देर से आपका यह अधिकार प्रभावित नहीं होगा । यदि आप चाहें तो प्रशासनिक न्यायाधीकरण में याचिका देकर अपने विभाग को नियमानुसार वेतन वृद्धि देने का आदेश दिला सकते हैं ।

क्षति-पूर्ति का अधिकार

राजेन्द्रसिंह राठौड़, खाजुवाला (बीकानेर) : मैंने इस साल जनवरी में दिल्ली से दो डिश एंटिना खरीदे । मैंने एंटिना निर्माता को बताया कि मैं पूरा टैक्स देकर उन्हें बीकानेर (राजस्थान) ले जाना चाहता हूं, तो उसने मुझसे दस प्रतिशत सी. एस. टी. लेकर कागजात बनवा दिये । बीकानेर की सीमा पर वाणिज्यिक कर विभागवाले ए. सी. टी. ओ. स्टाफ ने मेरे डिश एंटिना जब्त कर लिये । बिल व अन्य कागजात दिखाने पर उन्होंने बताया कि मैंने १८ एस. टी. फार्म नहीं लिया है, इसलिए वह गैर-कानूनी है और उन्होंने मुझ पर ७,५०० रुपये पेनल्टी के लगा दिये ।

बाद में मेरे वकील द्वारा की गयी कार्यवाही पर ए सी टी ओ ने मेरे पक्ष में फैसला दिया । पर मुझे पंद्रह दिन तक अकारण परेशान किया गया । मैं जगह-जगह भागा फिरा उसमें मेरा खर्चा भी हुआ । अब बताइए, मैं ए सी टी ओ के विरुद्ध क्या और कहां कार्यवाही करूं ताकि मेरी क्षतिपूर्ति हो सके ?

आप १५ दिन परेशान रहे, इधर-उधर भाग-दौड़ में आपको खर्च करना पड़ा—इस सबकी क्षतिपूर्ति करवाने का आपको अधिकार बनता है । आप कुल व्यय तथा क्षतिपूर्ति के लिए आवश्यक रकम की मांग करते हुए राजस्थान सरकार को तथा वाणिज्यिक विभाग के उच्च अधिकारी को नोटिस दें । भविष्य की तकनीकी आपत्ति से बचने के लिए राजस्थान सरकार से उक्त अधिकारी के विरुद्ध कार्यवाही हेतु अनुमति देने की मांग भी इस नोटिस में करें । यह नोटिस दीवानी प्रक्रिया संहिता की धारा ८० के अंतर्गत दिया जा सकता है । नोटिस की समयावधि समाप्त होने के बाद आप राजस्थान सरकार के विरुद्ध कार्यवाही कर सकते हैं । उक्त अधिकारी द्वारा राजस्थान सरकार की सेवा में कार्य करते हुए आपको परेशान किया गया, इसलिए उक्त कार्य का दायित्व व्यक्तिगत उक्त अधिकारी का होने के साथ-साथ राजस्थान सरकार का भी है । आप उन दोनों के विरुद्ध क्षति-पूर्ति हेतु दीवानी दावा कर सकते हैं ।

कैंसर से विकलांगता

क. ख. ग.—दस वर्ष पूर्व मैंने वक्षस्थल के कैंसर का ऑपरेशन कराया था, जिसमें वक्षस्थल का एक भाग निकलवाना पड़ा । क्या मुझे इसके आधार पर विकलांगता प्रमाण-पत्र मिल सकता है ? मैं एक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हूं ।

वक्षस्थल के कैंसर का ऑपरेशन होने तथा वक्ष स्थल के एक भाग के निकल जाने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके शरीर की कार्यक्षमता पर कोई प्रभाव पड़ने की संभावना नजर नहीं आती । विकलांगता का आशय उस परिस्थिति से है, जिसमें शरीर की कार्यक्षमता किसी कारण विशेष से घट जाए । वक्ष के ऑपरेशन से आपके अध्यापिका के रूप में कार्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा । इसलिए आप विकलांगता प्रमाण-पत्र की अधिकारी नहीं हैं ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ— रामप्रकाश गुप्त

आदेश की अवहेलना

रामधरोसेलाल, दिल्ली : यदि किरायेदार को दिल्ली किराया कानून के अंतर्गत किराया जमा कराने का आदेश न्यायालय दे दे फिर भी किरायेदार किराया न्यायालय में जमा नहीं कराये, तो क्या न्यायालय के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह किरायेदार को मुकदमा पैरवी करने के हक पर रोक लगा दे और मुकदमे में एकतरफा कार्यवाही करे । क्या न्यायालय एकतरफा कार्यवाही करने से इनकार कर सकता है ?

यदि किराया नियंत्रक किरायेदार को किराया नियंत्रण अधिनियम की धारा १५ के अंतर्गत किराया जमा कराने का आदेश दे और किरायेदार उक्त आदेश का पालन करने में असफल रहे, तो किराया नियंत्रक के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि वह दिल्ली किराया अधिनियम की धारा १५(७) के अंतर्गत उक्त किरायेदार के मुकदमा पैरवी करने के अधिकार पर रोक लगा दे । सर्वोच्च न्यायालय के मान्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री जे. एस. वर्मा, न्यायमूर्ति श्री एम. पी. भरुचा व न्यायमूर्ति श्री सुहास सी. सेन ने एक निर्णय में कहा कि धारा १५ की उपधारा ७ की भाषा यह है कि नियंत्रक मुकदमा पैरवी पर रोक लगा सकते हैं । इसका स्पष्ट आशय यह है कि नियंत्रक किसी मामले में ऐसा आदेश न दें । यह मुकदमे के तथ्यों व नियंत्रक के स्वविवेक पर निर्भर है कि ऐसे गंभीर परिणाम का आदेश दिया जाए या नहीं ।

मालिक न माने तो ?

सामंत चौरसिया, जबलपुर : मुझे अन्य लोगों से पता चला है कि पिताजी अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व रजिस्टर्ड वसीयत कर गये थे, जिसमें सभी भाइयों के हिस्से दर्शाये गये हैं । लेकिन यह पता नहीं कि असल में वसीयत किसके पास में है ।

अन्य भाई वसीयत के सवाल पर चुप हैं । वसीयत के अनुसार मुझे जो हिस्सा मिला है, उसमें किरायेदार रहते हैं । यदि किरायेदार मुझे मालिक मानने से इनकार कर दें तो ?

आपके पिताजी ने जो वसीयत (उत्तराधिकार-पत्र) लिखी उसे पंजीकृत कराया अब उनके स्वर्गवास के बाद उनकी संपत्ति का अधिकार उक्त उत्तराधिकार पत्र के अनुसार ही माना जाएगा । अतः वह वसीयत अब आपको उपलब्ध नहीं है तो आप पंजीकार कार्यालय से उसकी प्रमाणित प्रति प्राप्त कर सकते हैं । किरायेदार को आपका अधिकार स्वीकार करना चाहिए । यदि वह आपको मालिक स्वीकार न करे तो आप न्यायालय द्वारा अपने अधिकार को मान्यता दिला सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूनघाटी : बासमती, आलू और लीची

● उदय ठाकुर

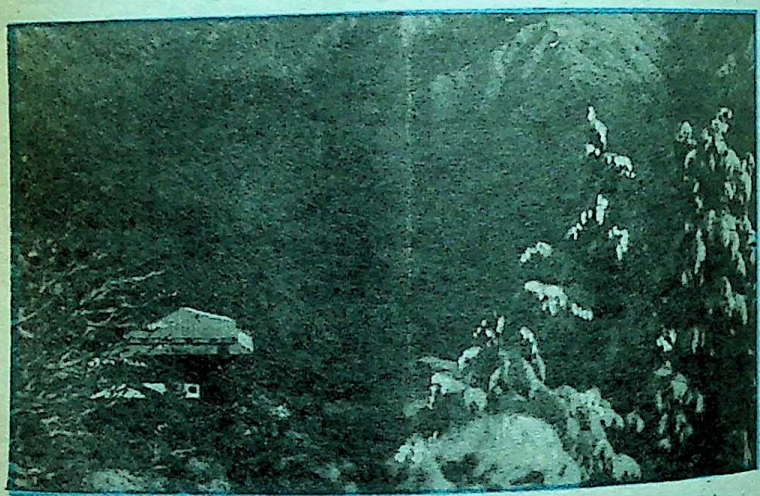

मसूरी में हिमपात

बहुत-सी आश्चर्यजनक सत्य घटनाओं का दस्तावेज है—दून घाटी। अर्थात देहरादून। उत्तर प्रदेश का एक खूबसूरत पर्यटक स्थल। एक अच्छे और अनुभवी ज्योतिषी की तरह अगर कोई इतिहासकार इसकी जन्मपत्री देखें तो देहरादून ने हमें बहुत कुछ दिया है जो आज हमारे जीवन के 'खास' हो गये हैं—जैसे बासमती चावल, आलू और लीची। कभी गढ़वाली राजा सुदर्शन शाह द्वारा अंगरेज कप्तान हैदर यंग हेयर्सी के हाथों बिका देहरादून आज भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण नगरों में गिना जाता है। यहां हर जाति-समुदाय, धनी-गरीब अपना घर बनाने का सपना देखता है।

दुनियाभर में मशहूर देहरादून की बासमती चावल की खुशबू की भी एक अजीब दास्तां है। अंगरेजों का राज था। काबुल के बादशाह अमीर दोस्त मोहम्मद यहां सन् १८४०-४२ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय अंगरेजों के बंदी के रूप में रहे थे। वे यहां के मोटे चावल खा नहीं सकते थे। उन्होंने अंगरेज गवर्नर को अपनी मजबूरी बतायी। पहले तो अफगानिस्तान से बादशाह के लिए चावल आते रहे। फिर उस चावल के बीज दूनघाटी की मिट्टी में रोपे गये, फिर हुआ चमत्कार। पूरी दूनघाटी बासमती की खुशबू से महक उठी। प्रकृति का एक और चमत्कार हुआ। आज अफगानिस्तान की जमीन इसकी खुशबू के लिए तरसती है। इस उपकार और ऋण को चुकता करने के लिए भारत सरकार ने सन् १९५० में बासमती चावल के बीज अफगानिस्तान भेजे, बासमती वहां के लिए पराई लड़की हो चुकी थी।

भारत में आलू यूरोप के 'केप ऑव गुड होप' से अंगरेज ले के आये थे। मेजर यंग ने सर्वप्रथम देहरादून के उत्तरी पहाड़ी प्रदेश में आलू की खेती शुरू की। देहरादून का मुकुट मसूरी में आलू की खेती इस प्रकार प्रसिद्ध हुई कि कप्तान टाउसेन की ख्याति का कोई जवाब ही नहीं रहा। सन् १८५७ तक आलू भारतीयों का एक मुख्य खाद्य पदार्थ हो गया था। उस समय ब्राह्मण लोग इसे अखाद्य कहते थे। उस समय अंगरेज, गर्वनर और धनी लोग अपने विशेष भोजों में अतिथियों को आलू खिलाना गर्व समझते थे।

लीची हमें चीन द्वारा प्राप्त उपहार है। चीन के लोचू नामक द्वीप से भारत में आयी लीची आज देहरादून की माटी में रच-बस कर पूर्णतया भारतीय हो गयी है। यहां तक कि चीनी नाम लीची भी भारतीयता का प्रतीक बन गया है। देहरादून में लीची की पांच किस्में होती

पर्वत की गोद में बसा देहरादून

हैं —नैफेलियन, चीनी कलकतिया, बेदाना और देशी लीची। कलकतिया लीची व्यापारिक दृष्टि से सबसे लाभकारी होती है क्योंकि यह अन्य किस्मों की लीची से लगभग तीन सप्ताह पूर्व पक जाती है।

देहरादून की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है। पर्यटन की दृष्टि से समूचा जनपद महत्त्वपूर्ण है। गुरुद्वारा श्री झंडा साहब, टपकेश्वर, डियर पार्क, सहस्रधारा, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के पर्यटन मानचित्र में खास दरजा रखते हैं। देहरादून सचमुच आज भी अनंत संभावनाओं से भरा प्रकृति का गीत है।

—पवित्रधाम, रामबाग रोड
अंबाला छावनी १३३००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलुवों में छिपा है भविष्य का रहस्य

● अनिल जैन

मस्तिष्क ज्ञान का प्रतीक है तो चरण यात्रा के प्रतीक हैं। परमात्मा के चार चरण हैं। एक चरण के कंपित होने से यह धरती बनी। बाकी तीन चरण अभी सुषुप्त हैं। कुल मिलाकर चरण से संसार है, चरण में संसार है और चरण ही संसार है। व्यक्ति को मुक्ति चरण से ही मिलती है।

पैर का तलुवा कोमल हो, मांसल हो, स्निग्ध हो, तेजवाला हो और लंबा हो तो वह व्यक्ति सुखी और गुणी माना जाता है, उसकी पूजा होती है तथा जिस व्यक्ति का तलुवा लाल हो वह धनवान माना जाता है। गुलाबी रंग के तलवे वाले व्यक्ति विद्यावान हैं। पीले, काले या अन्य विविध रंगों के तलवे वाले व्यक्ति, रोगी, दुखी और क्रोधी होते हैं।

रोग का प्रतीक

जिन व्यक्तियों के तलवों में मांस नहीं होता यानि मांसहीन तलुवेवाले व्यक्तियों में रोग की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, जबकि मांसल तलुवों वाले व्यक्तियों में रोग की प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है।

भोगी कौन ?

जिस व्यक्ति के तलुओं में ज्यादा मांस है, वह भोगी है। संसार में वह ज्यादा भोग कर सकता है। जिस व्यक्ति के दोनों पैरों के तलुवे समान होते हैं, वह राज्य संपत्ति का अधिकारी बनता है। असमान तलुवेवाले व्यक्तियों को राजदंड भोगना पड़ता है। जिस व्यक्ति के तलुवे फट जाएं, तो इसका तात्पर्य यह है कि उस व्यक्ति का हृदय कार्यशील नहीं रह गया है और उसमें पानी की कमी हो गयी है। उस व्यक्ति को अधिक से अधिक मात्रा में पानी पीना चाहिए। फटे तलुवे इस बात का संकेत देते हैं कि उस व्यक्ति में खून की कमी हो गयी है। ऐसे तलवे, जो देखने में अच्छे न लगें, वे इस बात का प्रतीक हैं कि उस व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक दशा ठीक नहीं है तथा उस व्यक्ति का पुत्र उसकी आज्ञा नहीं मानेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों की तरह व्यक्ति के चरण का भी विशेष महत्त्व है । व्यक्ति का चेहरा यानि सिर आकाश और पितृपक्ष का प्रतीक है, तो चरण धरती यानि मां पक्ष का प्रतीक है । पुराणों में कहा गया है कि जिस व्यक्ति के शरीर के दोनों भाग समान हैं, वह मालिक है, स्वामी है, बाकी सब नौकर हैं । जिस तरह बालों से विद्वता और मूर्खता का पता चलता है उसी तरह चरण से भी व्यक्ति के गुण-अवगुण-भूत भविष्य से संबंधित जानकारियां मिलती हैं ।

त्वचा चिकनी है तो

तलुवों की त्वचा यदि चिकनी हो और उनमें चमक हो तो वे व्यक्ति यशवान तथा धनवान होते हैं । जिन व्यक्तियों के तलुवों की एड़ी मांसल हो, चिकनी हो तथा चमकदार हो वे दीर्घायु, पराक्रमी तथा विजयी होते हैं । सेक्स के प्रति उनमें उत्कट लालसा होती है । तलुवे के बीच का भाग शक्ति का मूलभूत स्रोत है । तलुवे का ऊपरी भाग मस्तिष्क और ज्ञान का प्रतीक है ।

पैर का अंगूठा

पैर के अंगूठे यदि सीधे हैं, गोल हैं, मांसल हैं और लंबे हैं तो वे व्यक्ति अपने मस्तिष्क का उपयोग अच्छी तरह कर सकते हैं । मांसल अंगूठा आज्ञाकारी भार्या की प्राप्ति का भी प्रतीक है । चपटे अंगूठेवाले व्यक्ति नौकरी करते हैं तथा अपनी पत्नी से दुःखी रहते हैं । पैर के तलुवे में कांसे की कटोरी में तेल या घी की मालिश करने से अनेक रोग दूर होते हैं । मालिश से प्रगाढ़ निद्रा आती है और यह निद्रा अनेक रोगों का हरण करनेवाली होती है ।

तलवों में मालिश

मृत्यु की शैय्या पर पड़े व्यक्ति के तलुओं में यदि कांसे की कटोरी में गाय के घी से मालिश की जाए तो उस व्यक्ति की श्वांस पुनः कुछ देर के लिए चलने लगती है । जरमनी ने एक ऐसी मशीन तैयार की है जो पैर के तलुवों से ही शरीर के विभिन्न अंगों की खराबी को बता देती है । कई चिकित्सक पैर के तलुवों को देखकर ही रोग का पता लगा लेते हैं और रोग निवारण करते हैं ।

चरणों का महत्त्व

चरणों का महत्त्व इतना अधिक है कि झगड़ा होने पर चरण छूकर ही माफी मांगी जाती है । ज्ञानी या संत से कुछ पाना है तो वह चरण छूकर ही प्राप्त किया जा सकता है । देवरहा बाबा चरण से ही आशीर्वाद देते थे । सुंदर लक्षणवाली कन्या के चरण चिह्न तिजोरी में रखकर अनेक लोग धनवान बने हैं । अरब में तो चरण देखकर ही कन्या लायी जाती है ।

ऊर्ध्व रेखा

तलुवे के बीच के भाग में यदि गड्ढा है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष की मृत्यु स्त्री के कारण और स्त्री की मृत्यु पुरुष के कारण होती है । वे व्यक्ति अत्यधिक लोलुप होते हैं । तलुवों के ऊपरी भाग में यदि ऊर्ध्व रेखा है तो वे व्यक्ति भाग्यवान होते हैं ।

शरीर के भीतर की गरमी अस्थियों में रहती है और तलुवों तक उसका संपर्क रहता है । इसलिए पैर का तलुवा गरम रहता है । गरम तलुवेवाले व्यक्ति सुखी रहते हैं, जबकि जिनका तलुवा ठंडा रहता है वे कष्ट में रहते हैं तथा उन्हें स्त्री सुख नहीं मिलता । स्त्री का तलुवा ठंडा रहने पर उसे पुरुष का सुख नहीं मिलता । अत्यधिक ठंडा तलुवा मृत्यु का प्रतीक है ।

चरण मृत्यु का मार्ग

मृत्यु का मार्ग चरण से ही शुरू होता है और तलुओं से होकर शरीर में पहुंचता है जो सिर के बालों से पूरा होता है ।

तलुवों में तंत्र का भी प्रभाव होता है । तंत्रशक्ति से पीड़ित व्यक्ति के अंगूठे का नाखून काला पड़ जाता है तथा विकृत हो जाता है । तंत्र शक्ति का प्रभाव खत्म होने पर अंगूठे का रंग पुनः पूर्व अवस्था में लौट आता है और नाखून सीधा हो जाता है ।

अंगूठे का नाखून टेढ़ा होना इस बात का संकेत है कि उसे पिता और पुत्र दोनों से क्लेश मिलेगा ।

जल सभी रोग का निदान

शरीर की सभी बीमारियों का निदान जल है । जल से ही शरीर का पूरा चक्र चलता है । जल ही जीवन है । अत्यधिक जल पीने से हृदय रोग नहीं होता । यह कहना गलत है कि घी के अत्यधिक सेवन से हृदयरोग होता है । सच तो यह है कि जल की कमी से यह रोग होता है । जल ही इसका निदान है ।

—बी-३, सोनल फ्लैट
जैननगर, शारदा मंदिर
रोड, पालडी अहमदाबाद (गुज.)

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूलपाणेश्वर का मंदिर

चांदनी रात में बादल उड़ती नदी है !

● अमृतलाल वेगड़

मध्यप्रदेश से गुजरात में क्या आया हूं, मानो एक मां की गोद से दूसरी मां की गोद में आया हूं ।

मेरे पिता गुजरात के एक गांव से आकर मध्य-प्रदेश के जबलपुर में बस गये । मेरा जन्म जबलपुर में हुआ । बचपन में गुजरात आना-जाना चलता रहा लेकिन बाद में कम होता गया और अंततः हम मध्य प्रदेश के निवासी हो गये । मैं हिंदी-गुजराती दोनों जानता हूं । लेकिन मेरे लड़के हिंदी ज्यादा और गुजराती कम जानते हैं । तीन-चार पीढ़ी के बाद परिवार पूरी तरह से हिंदी-भाषी हो जाएगा ।

शूलपाणेश्वर के मंदिर के पुजारी त्रिवेदीजी मूलतः मध्य-प्रदेश के हैं— गाडरवारा के नजदीक के एक गांव के । घर में हिंदी बोलते हैं । गांव के लोगों के साथ गुजराती । इनके लड़के कभी हिंदी बोलते हैं तो कभी गुजराती । और उनके बच्चे तो गुजराती ही बोलते हैं । तीन-चार पीढ़ी के बाद पुजारीजी का परिवार पूर्ण रूपेण गुजराती-भाषी हो जाएगा ।

हमारे देश में इस प्रकार के आंतर-प्रवाह सदियों से चलते आये हैं और देश की एकता को सुदृढ़ करते रहे हैं ।

भविष्य की पीढ़ियां पूरी तरह से नये प्रांत की हो जाएंगी, फिर भी उनके मन में अपने पूर्वजों के प्रांत के प्रति प्यार की कुछ न कुछ भावना तो बनी रहेगी । फिर मैं तो बचपन में गुजरात में रहा हूं, उसके स्कूलों में पढ़ा हूं, उसकी धूल में लोटा हूं । गुजरात की भूमि को देखकर यदि मैं आंदोलित हो उठा हूं, तो यह स्वाभाविक ही कहा जाएगा ।

शूलपाणेश्वर का पहाड़ी एकांत मुझे पिछली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा में ही भा गया था । लेकिन घर लौटने की जल्दी थी, इसलिए एक ही दिन रुके थे । इस बार यहां तीन-चार दिन रुकने का निश्चय करके ही घर से चले थे ।

नर्मदा का पानी मटमैला है । पहाड़ों पर हरियाली है । वे वैसे बंजर नहीं हैं— जैसे पिछली यात्रा में थे । यह चमत्कार वर्षा का है । मैंने अपनी नोटबुक में लिखा :

पानी
जब समुद्र से आता है तब बादल
और जाता है तब नदी कहलाता है
बादल उड़ती नदी है
नदी बहता बादल है
बादल से वर्षा होती है
वर्षा इस धरती की शालभंजिका है
उसके पदाघात से धरती लहलहा उठती है
और जब वर्षा नहीं होती
तब यही काम नदी करती है
वर्षा और नदी— धरती की दो शालभंजिकाएं
विचार और कर्म (कल्पना और यथार्थ)
आत्मा की शालभंजिकाएं हैं
इनके पदाघात से
आत्मा पल्लवित— पुष्पित होती है
बादल धरा पर उतरकर सार्थक होता है
विचार कर्म में परिणत होकर कृतार्थ होता है ।

बाद में मैंने ये पंक्तियां अपने एक कवि-मित्र को बतायी थीं । उन्होंने इसे देखते ही रद्द कर दिया । कहने लगे, 'तुम तो उपदेश देने लगे । कविता में उपदेश नहीं होना चाहिए ।' मैंने कहा, 'आपका यह उपदेश, कि कविता में उपदेश नहीं होना चाहिए, मुझे शिरोधार्य है !'

यहां आये आज तीसरा दिन है । आज शरद-पूर्णिमा है । आज शाम तक मेरे दो छात्र भी आ जाएंगे । फिर कल से चलेंगे ।

लेकिन शाम ढलकर रात हो गयी, पर छात्र नहीं आये । इस बियाबान में रात में तो आ ही नहीं सकते । हमने उनके आने की आशा छोड़ दी ।

पूरनमासी का चांद निकल चुका है, लेकिन घाटी में उसका उजाला नहीं आ रहा है । चांद कुछ ऊपर चढ़े, तब आये ।

खाना खाकर मंदिर के दरवाजे पर बैठा था । नौ बज रहे होंगे । सहसा अंधेरे को चीरकर आती हुई कुछ आकृतियां दिखायी दीं । थोड़ी देर में बिलकुल पास आ गयीं । मैं एकबारगी ही चौंक उठा । अपनी आंखों पर विश्वास करूं या न करूं ! भावावेश में चिल्ला उठा, 'कौन अनिल ? इतनी रात को ?'

तभी मलय भी आ गया ।

चांदनी का उत्सव

शूलपाणेश्वर से नवागाम (जहां नर्मदा पर सबसे बड़ा बांध बन रहा है) तीन किलोमीटर है । पिछली बार सड़क से चलकर हम वहां एक घंटे में पहुंच गये थे । लेकिन बरसात में नदी के पेटे में बनी सड़क बह गयी थी और पहाड़ी पगडंडी इतनी मुश्किल थी कि इस बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कितनी अजीब बात है कि चांद का प्रकाश उसकी अपनी चीज नहीं। सूरज की धूप ही चांद के धरातल से टकरा कर चांदनी बन जाती है। तो चांद सर्जक नहीं, अनुवादक है ! वह धूप का चांदनी में अनुवाद करता है ! पर कैसा दिव्य अनुवाद ! धूप में वह मोहिनी, वह माधुर्य कहां जो चांदनी में है ! चांद को अनुवादक कहूं, अनुगायक कहूं या अनुसर्जक कहूं, यही समझ में नहीं आ रहा !

तीन किलोमीटर आने में हमें तीन घंटे लगे थे— सो भी दिन में। रात के अंधेरे में ये कैसे आ गये !

'लोगों ने हमें आसान रास्ता बताया। काफी दूर तक हम उस तट से आये। फिर नाव से नर्मदा पार की और नाववाले को साथ लिया। आज हमें हर हालत में यहां पहुंचना था, वरना कल आप यहां से चल देते।'

'हां, लेकिन मैं कल भी तुम्हारी बाट जोहता। कल न आते, तो परसों चल देते।'

'तो कृपया परसों ही चलिए। हम थककर इतने चूर हो गये हैं कि कल चलने की हिम्मत नहीं।'

'ठीक है, परसों चलेंगे।'

अब मैं निश्चिंत हो गया। निश्चिंत होकर नर्मदा-तट चला गया। चांद ने अपनी जादू की पिटारी खोल दी थी और चांदनी धार बांधकर बरस रही थी। कभी उस आसमानी जादूगर को देखता, कभी चांदनी से नहाती पहाड़ियों को देखता, तो कभी चांदी-सी झिलमिलाती नदी को देखता। ऐसा उत्सव नयनों को देखने को फिर कब मिलेगा !

पिछले तीन दिनों से मैं चांद को बारीकी से देखता आ रहा था। जो चांद कल तक अनगढ़-सा लग रहा था, वह आज सुगढ़ और परिपूर्ण हो गया है। अब वह हर तरह से सुघड़ और संपन्न नजर आ रहा है। संपन्न तो इतना कि कहीं अपनी ही चांदनी के भार से टूट न जाए !

मुझे लगा, आज चांद बहुत धीरे-धीरे चल रहा है। उसे शायद पता चल गया है कि आज उसके भीतर का समस्त अमृत छलक-छलककर बाहर आ रहा है। वह शायद अधिक से अधिक समय तक इस अमृत को लुटाते रहना चाहता है।

चांदनी : धूप का अनुवाद

धरती पर किसी वरदान की तरह चांदनी उतर रही थी। घाटी को चांदनी से लबालब भरते देखना कितना अच्छा लग रहा था !

मुझे लगा, यह कितनी अजीब बात है कि चांद का प्रकाश उसकी अपनी चीज नहीं। सूरज की धूप ही चांद के धरातल से टकराकर चांदनी बन जाती है। तो चांद सर्जक नहीं, अनुवादक है ! वह धूप का चांदनी में अनुवाद करता है ! पर कैसा दिव्य अनुवाद ! धूप में वह मोहिनी, वह माधुर्य कहां जो चांदनी में है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांद को अनुवादक कहूं, अनुगायक कहूं या अनुसर्जक कहूं, यही समझ में नहीं आ रहा !

(मूल वादक की कृति को उसके लय और छंद को बरकरार रखते हुए जो एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाए, वही है अनु-वादक !)

किंतु, अनुवादवाली मेरी यह उपमा आधी ही सच है। अनुवाद दोनों ओर से हो सकता है। लेकिन धूप का चांदनी में तो अनुवाद हो सकता है, पर चांदनी का धूप में नहीं। वैसे ही— जैसे दूध में से दही तो हो सकता है, पर दही में से दूध नहीं। तो चांद के पास ऐसा कोई दिव्य रसायन है, ऐसा कोई जामन है, जिससे वह धूप का चांदनी में रूपांतर कर देता है। बेचारा सूर्य। उसके पास ऐसा कोई जामन नहीं !

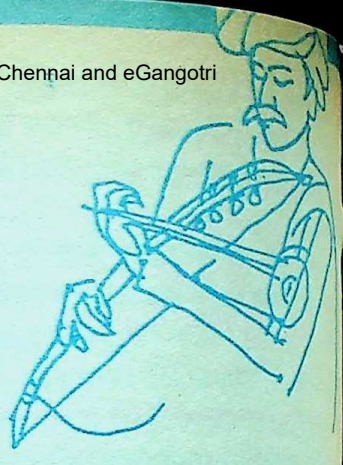

देवनदी का प्रपात

देर रात बीते जब मंदिर लौटा, तो मंदिर का दरवाजा बंद हो चुका था। लेकिन लकड़ी के बड़े दरवाजे में एक खिड़की थी। पुजारीजी ने उसे भिड़काकर छोड़ दी थी, बंद नहीं की थी। उसी से अंदर आया तो मेरे साथ नदी का शोर भी अंदर घुस आया। खिड़की बंद कर दी, तो शोर बाहर रह गया।

मंदिर के ठीक सामने है देवनदी— एक नन्हीं नदी जो नर्मदा से मिलती है। इसी संगम पर स्थित है यह मंदिर। देवनदी की खड़ी और ऊंची कगार पर एक छोटा-सा गांव है। देवनदी में सुंदर प्रपात है। हम यह सब देख आये हैं, पर आज अनिल और मलय के साथ दोबारा जाएंगे।

देवनदी की कगार चढ़कर ऊपर आ गये। यहां का मंदिर देखने के बाद देवनदी का प्रपात देखा और जिस विशाल चट्टानी कुंड में वह गिरता है, उस रुद्रकुंड को भी देखा। देवनदी किसी घायल शेरनी-सी, शोर और गरज के साथ रुद्रकुंड में कूदती है और फिर संकरे, ऊंचे चट्टानी दर्रे में से बहती हुई नर्मदा से मिलती है।

वापस मंदिर आये। इस मंदिर के नीचे देवनदी की खड़ी कगार में से रिस-रिसकर पानी निकलता है। गांव के लोगों ने यहां बांस के दो टुकड़े बिठा दिये हैं, तो उनमें से दो जलधाराएं अनवरत गिरती रहती हैं। गांव की स्त्रियां यहां आती हैं, चश्मे की धार के नीचे बैठकर नहाती हैं या पानी भरती हैं। शूलपाणेश्वर के मंदिर से हमें यह सब दिखता रहता था। जब यहां आये हैं, तो पहाड़ी से फूटनेवाले इस चश्मे को भी देख लिया जाए। एकदम खड़ी पगडंडी से एक-एक कदम नीचे उतरे। चिकनी गीली मिट्टी के कारण पैर फिसलते थे। बड़ी मुश्किल से चश्मे तक पहुंचे। हाथ में उसकी धारा को लिया, आंखें शीतल कीं और उस स्वच्छ जल को जी भरकर पीया।

थोड़ी देर में दो स्त्रियां आयीं। बारी-बारी से नहायीं। फिर सिर पर घड़े रखकर उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिसलनभरी पगडंडी से ऊपर चढ़ने लगीं तो हम उन भील स्त्रियों को देखते ही रह गये । हमें खाली चढ़ना मुश्किल हो रहा था और ये तीन-तीन घड़े उठाये आसानी और दृढ़ता के साथ जा रही हैं । इतनी आसानी और खूबसूरती के साथ केवल पहाड़ी स्त्रियां ही चल सकती हैं । स्पष्ट है कि इन्हें रोज घड़े लेकर चढ़ने-उतरने का लंबा अभ्यास है ।

पुजारीजी से खूब बातें होती हैं । नवागाम बांध की बात चली तो कहने लगे, 'बांध के बन जाने पर सबसे पहले डूबेगा यह शूलपाणेश्वर का मंदिर । इसके शिखर के ऊपर सौ फुट पानी होगा । शूलपाण की पूरी झाड़ी डूब जाएगी ।'

जाने-अनजाने मेरे मन में यह बात है कि इस सुंदर एकांत स्थान में जितना हो सके, रह लो । जी भरकर देख लो । पंद्रह-बीस वर्षों के बाद तो इसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा । शायद इसीलिए आज चार दिन से मैं यहां जमा हूं ।

सूनी पहाड़ियों का अनंत विस्तार

तीसरे पहर हम नर्मदा के ऊपर की ओर काफी दूर तक घूमने निकल गये ताकि अनिल और मलय को शूलपाण झाड़ी की कुछ झांकी मिल जाए । कहने को झाड़ी पर मध्य-प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के मिलन-स्थल पर स्थित नर्मदा-तट की इस अस्सी मील लंबी झाड़ी में एक पेड़ नहीं । यहां हैं केवल पहाड़ियां— नंगी, सूखी, वीरान और सुनसान पहाड़ियों का अनंत विस्तार । प्रकृति मानो यहां नर्मदा के धागे में पहाड़ियों का गजरा गूंथती चली गयी है । नर्मदा की यात्रा समाप्ति की ओर है, यहां से समुद्र केवल सौ मील है, पर इन पहाड़ियों में नर्मदा का कैशोर्य मानो वापस आ गया है । नर्मदा-परिक्रमा का यह सबसे खतरनाक इलाका है । इसमें से कोई भी परकम्मावासी बिना लुटे नहीं जा सकता । भीलों के भय से अधिकांश परकम्मावासी झाड़ी छोड़ देते हैं । यह झाड़ी राजघाट (बड़वानी) से शुरू होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यहां शूलपाणेश्वर में समाप्त होती है। झाड़ी यहां समाप्त हो रही है, इसलिए पहाड़ियां वैसी सघन नहीं, फिर भी काफी कुछ अंदाज तो हो ही जाता है। अनिल तो आगे-आगे भाग रहा है, मानो पिछली यात्रा में न आ पाने की अपनी मजबूरी की क्षतिपूर्ति कर रहा हो।

रात को खाना खाकर बैठे थे कि गांव की भजन-मंडली आ गयी। प्रारंभिक स्तुति के बाद जो पहला भजन शुरू हुआ, तो मैं खिल उठा। मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा। यह तो वही प्रार्थना थी, जो आज से कोई पचपन वर्ष पूर्व, गुजरात के सुदूर कच्छ इलाके के अपने छोटे-से गांव में, पहली कक्षा में मैंने पढ़ी थी!

मेरा अतीत उमड़कर मेरे सामने आ गया। मेरी आंखों के सामने मेरा गांव, घर, पाठशाला, नदी, तालाब, सभी कुछ साकार हो उठा। कोई आधी शताब्दी के अंतराल को एक झटके में चीरकर मैं कहां से कहां पहुंच गया! इस गीत ने तो मुझे मेरा बचपन लौटा दिया!

कभी ६ वर्ष की आयु में इस प्रार्थना के साथ मैंने अपनी शिक्षा का आरंभ किया था। आज ६० वर्ष की आयु में इसी प्रार्थना के साथ मैं नर्मदा-तट की अपनी गुजरात यात्रा का आरंभ कर रहा हूं।

कुछ क्षणों के लिए मैं अतीत में खो-सा गया। इधर एक के बाद एक भजन होते रहे। गायक भाव-विभोर होकर सुनाते रहे। हम रस विभोर होकर सुनते रहे।

अद्भुत आनंदलोक

इस प्रकार, शूलपाणेश्वर मंदिर में चार दिन रहने के बाद सुबह-सवेरे हम चल पड़े। इस आनंदलोक में से निर्वासित होना अच्छा तो नहीं लग रहा, पर दीवाली के पहले समुद्र-तट पहुंच जाना जरूरी है। दीवाली के त्योहार पर सामने तट ले जानेवाली नाव बंद रहती है। अगर देर हो जाएगी, तो नाव नहीं मिलेगी। इसलिए पीठ पर बोझा लादा और चल पड़े। श्यामलाल मेरे साथ तीसरी बार चल रहा है, अनिल दूसरी बार और मलय पहली बार। कोई ढाई साल के अंतराल के बाद नर्मदा-परिक्रमा का मोरचा हमने फिर संभाल लिया है।

—१८३६, राइट टाउन
जबलपुर-२ म.प्र.

जिंदगी कट जाएगी

विनोबा जी जेल में थे। एक लड़का विनोबा जी से बार-बार कहता था कि क्या करूं, समय नहीं कटता, जेल में जिंदगी नहीं कटती। विनोबा जी ने दो-चार बार तो उसकी शिकायत सुन ली, लेकिन लड़के ने फिर वही राग अलापा तो उन्होंने कहा, "इसका बहुत आसान तरीका है। फांसी के तख्ते पर टंग जाओ, तो दो मिनट में जिंदगी कट जाएगी।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

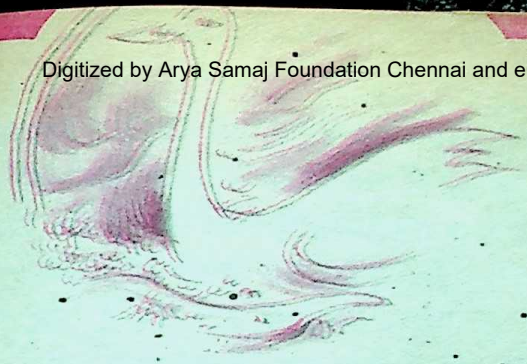

हंस एक प्रेमी पक्षी है

● डॉ. अमिता अग्रवाल

सौंदर्य, संगीत, सात्विकता और प्रणय का प्रतीक हंस केवल हिमालयस्थ मानस में ही नहीं, भारतीय मानस में भी चिरकाल से विलसित है। मनोरम सरोवरों, राज प्रसादों की बावड़ियों, नदियों के सैकत किनारों और कमल वनों का विहारी यह हृदयहारी पक्षी मेघ के साथ कभी उड़ता नगराज के क्रौंचरंध्र को पारकर अपने गंतव्य तक पहुंचता, लहरों की सलवटों पर तिरता, हेम कमलों का मधुपान करता और मृणाल दंड चखता है। मधुर और मोहक गति से जब कोई रमणी चलती फिरती दिखती है तब ऐसा लगता है कि जैसे साक्षात् सौंदर्य विचरण कर रहा हो और उस सौंदर्य का उपमान होती है हंस गति। कालिदास की दूती सुनंदा के सहारे इंदुमती एक राजा के बाद दूसरे राजा के समीप कैसे ही पहुंचती—जैसे राज हंसिनी पवन उद्वेलित लहर के सहारे एक कमल से दूसरे कमल तक प्रस्थान करती है। (तां सैव वैत्रग्रहपे भिनुक्ता राजांतरं राजसुतांनिनायां समीरणोत्थेव तरंगलेखा पद्मांतरं मानस राज हंसीम्।) हंस गामिनी इंदुमती परलोक गमन के बाद अपने प्राण प्रिय को रूला देती है। उसका पति अज देखता है कि उसकी चाल कल-हंसिनियों के पास चली गयी है (कल हंसीषु मदालसं गतम्)। इसी प्रकार उर्वशी के वियोग से पीड़ित पुरूरवा भी हंस को संबोधित करके कह उठता है कि तुमने मेरी प्रिया को चुरा लिया है क्योंकि उसकी गति तुम्हारे पास है (हंस, प्रयच्छ में कांतां गतिस्तस्यास्त्वया हृता)। भले ही अमरांगनायें भवन के कल हंसों को पराजित कर दें, किंतु उनकी चाल हंसों के समान होती है (गतैः सहावैः कल हंस विक्रमः)। नैषधकार की दमयंती की चाल भी राजहंस की गति के समान है। महाकवि दंडी की अवंति सुंदरी तो उद्यान दीर्घिका में विचरण करनेवाली साक्षात् हंसिनी ही है।

संगीतकंठी : कलहंस

सरोवर और बावड़ियां हंसों के प्रिय स्थान हैं। ग्रीष्म काल में राज-प्रासादों के पालतू हंस कमल पत्रों की शीतल छाया में पलकें बंद कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंस चाहे काश-कुसुमों का अंशुक पहन रहे हों, स्वर्ण कमलों का मधुपान कर रहे हों, मृणाल दंड या कमल केसर खा रहे हों, हर स्थिति में वे भारतीय साहित्य को ग्राह्य रहे हैं। जिस तरह राजघरानों में रानियां हंसों को पालती और दुलारती थीं उसी प्रकार कवि प्रतिभा ने भी उन्हें प्यार दिया है। हंस मुक्ता उज्ज्वल निर्मल जल ही पसंद करता है यही उसका मोती चुगना है और नीर को अलग कर क्षीर का पान है। सात्विकता का प्रतीक हंस चतुर्वेद के स्रष्टा और विश्व विधाता ब्रह्मा तथा ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का वाहन है।

विश्राम करते (**पत्रच्छायासु हंसा मुकुलित नयना दीर्घिका पद्मिनी नाम्**), बावड़ियों से नील गगन में उड़कर दूर चले जाते और फिर अपने आवास पर लौट आते (**वेगेनोड्डीय दूरं पुनरभिपतता वापिकामेव हंसाः**) और जब कभी पद्ममंडित जलाशय में पंक्तिबद्ध होकर तैरते तो उसकी कटि करधनी बन जाते हैं (**हंसश्रेणीरचितरशनः**)। कामिनियों की करधनी और चरण नूपुर ऐसे आभूषण हैं, जो अपनी झंकार से सुननेवाले के चित्त को कामोन्मत बना देते हैं। यही प्रभाव हंसों के कलरव का होता है जिसे कालिदास से लेकर अन्य संस्कृत कवियों ने '**पदे पदे हंसरुतानुकारिभिर्जनस्य चित्तं क्रियेत समन्मथम्, सोन्माद हंसरव नूपुरनादरम्या, चलत्पदाम्भोरुहनूपुरोपमा चुकूज कूले कलहंसमंडली, कूजिसे राजहसानां नेदं नूपुरशिजितम्, कलहंसकलालापमधुर रवैः प्रतिवाचमिव, क्वपितकनककांची मत्तहंसस्वनेषु, ततः स कूजत्कल हंसमेखलाम्, और सलीलमुत्कलहंसकुलकलालाप प्रलापिनि**, जैसी पंक्तियों में निरूपित किया है। हंस वह पक्षी है जिसके कलरव से मादक संगीत झरता है। अपने कलकंठ के कारण ही वह कलहंस के नाम से जाना जाता है। इसीलिए अनिंद्य सुंदरियों का चित्रण करते हुए कवियों ने उनकी वाणी को हंस की वाणी से उपमित किया है। महाकवि बाणभट्ट की नारी कहीं '**कलहंसस्वना**' है तो कहीं '**हंसमधुरस्वना**' और दंडी की कल्पसुंदरी जब बोलती है तब तो उन्मत्तावस्था को प्राप्त राजहंसी की वाणी याद आ जाती है। हंस समूह कलरव करते केवल रमणी की शिंजिनी या नपुर-जैसे ही नहीं लगते, उन्हें अंगनाओं के नूपुररव भी इतने प्रिय होते हैं कि जिन्हें सुनते ही पीछे दौड़ पड़ते हैं (**नूपुरमणि झंकाराकृष्टसरः कलहंसानि**) कामिनियों साथ हंसों की विचरण मैत्री बहुत पुरानी है (**कामिनीनां पश्चात् परिभ्रमंति राजहंसमिथुनानि**)। प्राचीन काल में महावर लगाने के बाद प्रमदायें हंस हंसिनियों के चरण रंजित किये बिना कैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह सकती थीं

एक अदार्श उपमान

हंस एक प्रेमी पक्षी है और प्रणयीजनों के लिए आदर्श उपमान भी । प्रणयी अपनी प्रणयिनी का अनुगमन करें तो उसी प्रकार—जैसे शूद्रक का राजहंस अपनी प्रिया राजहंसी का करता है । श्रीहर्ष का हंस तो नल और दमयंती के हृदयों में प्रेम विवर्धित करता और उन्हें जोड़ देता है । जब रूपसी उर्वशी ने पुरुरवा का मान खींचा तो कालिदास को कमल का तंतु खींचती राजहंसी ही याद आयी (सुरांगना कर्षति खंडिताग्रात्सूत्रं मृणालादिव राजहंसी) । बाणभट्ट की यशोमती अपने प्रियतम राजहंस के लिए मानसानुवर्तन चतुरा हंसी है (मानसानुवर्तन चतुरा हंसीव राजहंसस्य) । हंसिनी का सहेली-प्रेम भी उल्लेखनीय होता है । वह अपनी सखी हंसिनी के वियोग में विकल हो जाती है । यद्यपि हंस अपनी हंसिनी को बहुत प्यार देता है तथापि वह बहुबल्लभ अर्थात् अनेक प्रियाओं से प्यार करनेवाला पक्षी है ।

सात्विकता का प्रतीक : हंस

हंस चाहे काश-कुसुमों का अंशुक पहन रहे हों, स्वर्ण कमलों का मधुपान कर रहे हों, मृणाल दंड या कमल केसर खा रहे हों, हर स्थिति में वे भारतीय साहित्य को ग्राह्य रहे हैं । जिस तरह राजघरानों में रानियां हंसों को पालती और दुलारती थीं उसी प्रकार कवि प्रतिभा ने भी उन्हें प्यार दिया है । हंस मुक्ता उज्ज्वल निर्मल जल ही पसंद करता है यही उसका मोती चुगना है और नीर को अलग कर क्षीर का पान है । सात्विकता का प्रतीक हंस चतुर्वेद के स्रष्टा और विश्व विधाता ब्रह्मा तथा ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी

सरस्वती का वाहन है । इसीलिए राजस अर्थात् मिट्टी पर गिरने से मलिन वर्षा जल से वह दूर भागता है । सिद्धि की पराकाष्ठा पर पहुंचा साधक परम हंस कहा जाता है । हंस सांसारिक बंधनों से विमुक्त जीव का भी प्रतीक है । इस प्रकार हंस लौकिकता को पारलौकिकता से जोड़नेवाला सेतु है ।

श्वेतछत्रोपम हंस रंग-वैविध्य के आधार पर राजहंस, धार्तराष्ट्र और मल्लिकाक्ष के वर्गों में त्रिधा विभक्त किया गया है । जिनके चोंच और पंजे लाल होते वे राजहंस जिनके काले वे धार्तराष्ट्र और जो धूसर वर्ण के होते हैं वे हंस मल्लिकाक्ष कहे गये हैं । कवियों ने स्वर्ण हंस का भी चित्रण किया है, किंतु वह मूलतः श्वेत छटाधारी पक्षी हैं । हंस नगाधिराज के समीपवर्ती पर्वतीय एवं मैदानी भू-भागों में विचरण करनेवाला मोहक पक्षी है । भारत की लोक कथाओं और अन्योक्तियों से लेकर महनीय साहित्य ने जिस चाव एवं आत्मीयता से इसे अपनाया है वह प्रमाणित करता है कि कैलाश के मानस से कहीं अधिक यह भारतीय मानस का विहारी सलोना पंछी है ।

—९६, तिलक रोड, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

कायर पंछी कहलाएंगे

दो पंछी गम में बैठे थे
निकले आंसू असहनीय थे
उनके रोने से ऐसा लगा
वे घर से बेघर हो गये थे
एक पेड़ पर उनके पूर्वज
युग-युग से रहते आये थे
उन्होंने अपने दुख-सुख
उसी वृक्ष के साथ बिताये थे
एक समय की बात
पेड़ तूफान से जूझ रहा था
इतनी विकराल हवा में भी
वह अपनी सांसें खोज रहा था
बिलखते आये वहां दो पंछी
बेचारे तूफान में फंसे हुए थे
इस यमराज तूफान ने
उनके घर बार तोड़ दिये थे
पंछी बोले, हे ! पेड़ देवता
तुम तो बहुत बड़े हो
डरते नहीं तुम तूफानों से
तुम इंसानों से भी परे हो
मुझे आसरा दे दो भगवन
मैं वक्त का मारा पंछी हूं
इस विपदा की दुखित घड़ी में
ये तूफान हमारा भक्षी है
पेड़ ने अपने दुख में भी
हमारा साथ निभाया
हमारी पीढ़ी दर पीढ़ी को भी
हंसकर गले लगाया
कुछ लोग लगे काटने पेड़ को
पेड़ दर्द से चिल्लाया
दुख आंधी पंछी जल्दी से
उड़कर लगे भागने
पेड़ था दुख से घायल
वो लगा उन्हें समझाने—
"बेटो मेरा अंत समय है
मैं अब गिरने वाला हूं
दूर जाओ तुम बच्चों को लेकर
क्यों अपनी जान गंवाते हो
मिलता नहीं जन्म जहां में
क्यों इसको व्यर्थ गंवाते हो
तुम्हारी जान बच्चों की दुनिया
क्यों इसको दाव पर लगाते हो"
"पंछी बोले अरे दोस्त मेरे !
हम साथ तेरा न छोड़ेंगे
इस दुखी घड़ी में मर कर भी
हम दामन तेरा न छोड़ेंगे
तुम्हारे उपकार का बदला
हम कभी चुका न पाएंगे
यदि साथ तेरा छोड़ दिया
तो देशद्रोही हम कहलाएंगे
जी कर भी हम जीते जी
कायर पंछी कहलाएंगे।"

— भूपेंद्र कुमार शर्मा

शिक्षा : इंटर (विज्ञान)
आत्मकथ्य : मजदूरों का शोषण, युवाओं में भटकाव, आजादी देने वालों को भूलना आदि से लिखने पर विवश
पता : मुख्यालय तकनीकी ग्रुप ई.एस.ई. दिल्ली छावनी-१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सच का सूरज'

तुम झूठ हो
पर मैंने तुम्हें
दबे पांव
आते देखा है,
चोरों की तरह
चार दिन की चांदनी
फिर अंधेरी रात
होते देखा है,
आइना तो तुम
देखने के
काबिल ही नहीं
सरेआम
बाजार में
मुंह काला
होते देखा है,
तुम तो
डूबता सूरज हो
अमावस की
रात हो
पर मैंने तुम्हें
चांदनी रात का
दिल जलाते हुए
देखा है
तुम तो बड़े लाजवाब
छल कपट के
पुतले हो
पर मैंने तुम्हें लोगों को
अंगुलियों पर
नचाते हुए
देखा है
खुदा की कचहरी
में तो तुम
धरे जाओगे
तुम मुजरिम हो
लाख कर लो कोशिशें तुम
कभी भाग नहीं पाओगे
जीतकर भी
हार जाओगे
अपराधी हो तुम
कैद कर लिए जाओगे
दबे पांव
भी भाग नहीं पाओगे
अब भी छोड़ दो
झूठ बोलना
ऐ झूठ !
सच का सूरज
चमक रहा है
अब भी वक्त है
पकड़ लो दामन सच का
वरना झुलस कर
राख हो जाओगे ।

—गुरुप्रीत कौर 'तन्हा'

शिक्षा : (१) एम.ए. (हिंदी), बी.एड, (२) आनर्स इन हिंदी

आत्मकथ्य : कविता मन की भावावेशमयी स्थिति का आरोह-अवरोह है, मानव को मानव से परिचित करवा देने का माध्यम है और लेखक और पाठक का साक्षात्कार भी है ।

पता : आत्मजा श्री जोगिंदर सिंह
मकान नं. ३/४९
मुहल्ला फतेहगढ़
आनंदपुर साहिब (रोपड़) (पंजाब)
पिन कोड-१४०११८

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन

जीवन एक अपरिभाषित शब्द
रूबरू होने
समझने की अंतहीन जिज्ञासा
शायद
सांसों का उतार चढ़ाव
स्पंदन
एक अंतराल
प्रारंभ एवं अंत के बीच
एक सफर
विशाल जनकाय के साथ
एक मिलन
अपने से अपनों का
एक बिछोह
स्वजनों का
एक विश्वास
जिंदगी जीने का
एक साहस
कुछ उत्कृष्ट कर गुजरने का
एक बोध
सच्ची राह पर चलने का
एक अनुभव
कड़वी सच्ची बातों का
शायद इसलिए
अपरिभाषित है जीवन ।

— सुनीत यादव

शिक्षा : एम.एस.सी. (कृषि)

आत्मकथ्य : सामाजिक परिवेश एवं आसपास का वातावरण मेरी भावनाओं को उद्वेलित करता है और यहीं से कविता जन्म लेती है ।

पता : द्वारा बैंक ऑव इंडिया बडवानी प. निमाड़ (म. प्र.)

मैं एक समाज हूं

मेरे साथ
एक समाज पैदा हुआ था
मेरे साथ
एक समाज जी रहा है
मेरे साथ
एक समाज बढ़ रहा है
मैं एक समाज हूं
जाते समय छोड़ दूंगा
आगंतुकों हेतु
छोड़ दूंगा अपनी प्रतिलिपि
बता देगा आगंतुकों को समाज
मेरा रूप
आतंकवादी
या शांतिवादी
सज्जन
या दुर्जन
प्रगतिवादी
या विनाशवादी ।

— नेत्रपाल मलिक

शिक्षा : गृह विज्ञान स्नातक द्वितीय वर्ष (अध्ययनरत्)

आत्मकथ्य : जब भी मैं विद्रोह करना चाहता हूं, समाज में फैली विसंगतियों से तो मेरे अंदर का कवि जाग उठता है और एक नई कविता का सृजन हो जाता है ।

पता : नेत्रपाल मलिक कमरा नं. ५० सुभाष भवन पंतनगर, जिला नैनीताल, (उ. प्र.) पिन कोड-३६३१४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

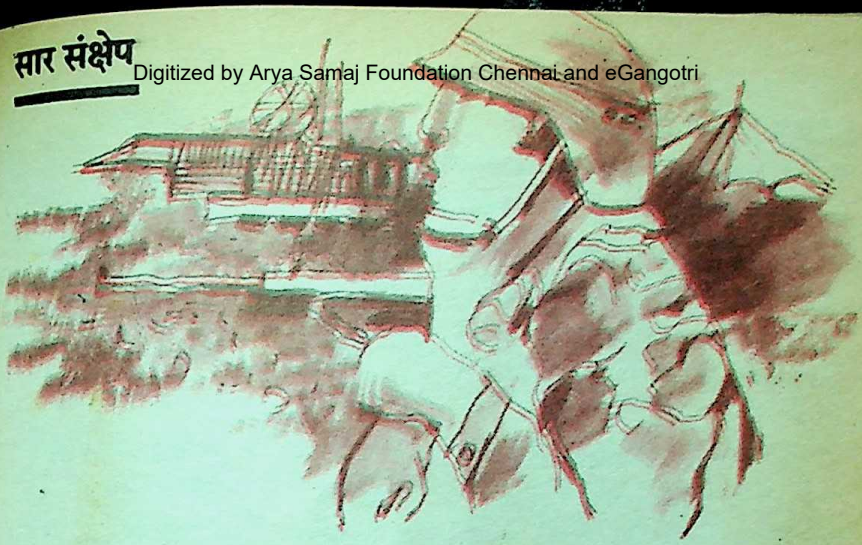

(सऊदी अरब के रेगिस्तान में, पहले सप्ताह में, १६ जवानों के टैंक-गिरोह ने खामोश शत्रु की टुकड़ी का सामना किया : गरमी, मक्खियां, सांप—और लगभग पागल कर देनेवाली तनहाई ।)

मुझे अकेला छोड़ दो

● मूल लेखक : ग्रेगरी जेमॅस

प्राइवेट व्हीलर पहला जवान था जिसे डाक मिली । बढ़ती हुई बजरी । टैंक । ऊपर से दोपहर का चमचमाता सूरज । वह टैंक व हथियारों की सफाई में जुटा था । एक शू-बॉय वहां पहुंचा । उसका नाम था—माइकल जं. व्हीलर । उस समय वह सारजेंट मुर्रे से गीत सुन रहा था । थो मुर्रे बुर्जी के पीछे बाल्टी में कुछ धो रहा था । उसने स्वच्छ पानी की बोतल को अपने होंठों से लगाया—बॉबी विंटन का गीत गाने लगा... "दूर, घर से दूर...इच्छा...मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं..."

तीस गज़ की दूरी पर पलटन का सारजेंट, जेम्स जॉय, लेखक के भतीजे का भतीजा, हाथों का प्याला बनाये, होंठों से लगाये, ऊंचे स्वर में बोला, "हाय, व्हीलर ! यह रहा तुम्हारा गधा ! जल्दी आओ ! पता है, तुम्हें सबसे पहले पत्र मिला है !"

उन्नीस वर्षीय व्हीलर का संवेदनशील चेहरा अजीब ढंग से खिल उठा । उसकी मूंछों के ग्यारह बाल खड़े हो गये । वह लड़ाकू सिपाही था । "मेरी शिट कहां है ?" वह चिल्लाया (व्हीलर की सुरक्षा के लिए एक शब्द : यह अमरीकी फौज है, जिसमें गैरफौजी भजन मंडली भी है । सामाजिक जीवन को अलविदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके, नामों में क्या रखा है) इसका अर्थ था उसकी पेटी, उसकी कैंटीन, फ्लैश लाइट, फर्स्ट-एड बॉक्स, गैस, नकाब, चार बारूद की थैलियां, दो एम-१६ की साफ की हुई राइफल के लिए। तापमान १०९° लेकिन कायदे के अनुसार वह बिना आज्ञा के आसानी से टैंक नहीं छोड़ सकता था। उसने सात पाउंड की हैल्मट नीचे रखी और अपनी डाक लेने चल दिया।

सारजेंट फाटीबो गोजल्स ने व्हीलर से कहा, "यह पत्र हमें पढ़कर सुनाओ। ओ. के.।" सारजेंट मुर्रे, क्षणभर के लिए रुका, अपनी लांडरी से बाहर देखते हुए चिल्लाया, "हां, पत्र हमारे लिए पढ़ो। हमारा परिवार एक ही है। समझे ?"

व्हीलर ने अपना पैकट उठाया (मारलबरो—प्रकाश का गत्ते का डिब्बा, फोर्ट लाउरडेल में स्थित मां से पोस्टकार्ड) सारजेंट जॉयस। वह अपनी पत्नी बैकी, बेटे-बेटी ग्लैन और एमी को पत्र लिख रहा था : "आशा है मैं शीघ्र ही घर लौटूंगा। रेगिस्तान बढ़िया है परंतु उससे कहीं सुंदर तुम हो।"

पास ही चारपाई पर बैठा प. जॉन होगन भी पत्र लिख रहा था, "हमारी पलटन के एक हंसमुख लड़के की डाक आयी है। मैं तुम्हारे पत्र की और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। कास्सी, तुम मुझे बहुत याद आते हो। तुम्हें कितना प्यार करता हूं, मैं। वे सपने जो हमने एक साथ देखे थे, भुलाना मत। यदि डाक से बर्फ के क्यूब भिजवा सकते हो, तो पता दें।"

जॉयस, "एक ही सप्ताह में तुम्हारे पैन की रोशनाई समाप्त हो जाएगी। क्या सचमुच तुम्हें

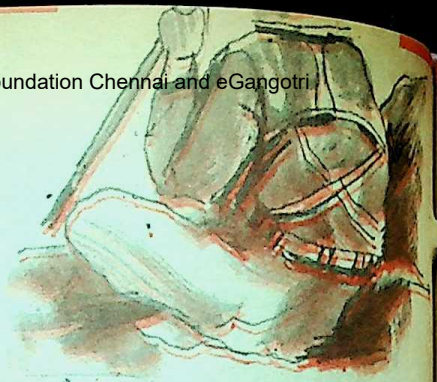

प्यार है या गरमी !"

होगन : "मैं तुम्हारे से कम लिखता हूं, सारजेंट। यह मेरा तीसरा पत्र है।"

जॉयस : "सुनो, यह मेरा दूसरा पत्र है।"

होगन : "हां, तुम्हारा हर पत्र दस पृष्ठों का होता है।"

जॉयस पीठ के बल लेट गया। उसकी नोट-बुक उसकी छाती पर थी। स्लेटी आकाश को तकते हुए उसके मुंह से एक आह निकली जैसे आदमी अपने अंतिम समय की प्रतीक्षा कर रहा हो।

पहली थल सेना डिवीजन टैक्सा से सऊदी अरब अक्तूबर के मध्य पहुंची। इस प्रकार अमरीकी फौज की संख्या बढ़कर २,००,००० से ऊपर पहुंच गयी। इतनी बड़ी फौजी सिपाहियों की संख्या वियतनाम युद्ध के बाद देखने को मिली। स्त्रियां पुरुष, भोर से पहले, परशियन गल्फ के धाहरान पहुंच गये। जब जैट विमानों के दरवाजे खुले तो मारे गीले सीमेंट की घुटन के वे बौखला उठे। एक सुबह लगभग इसी समय निकट के नगर दम्मन के हवाई अड्डे पर, पहली समुद्री सेना की टुकड़ी टैंकों एवं हेलीकॉप्टरों की प्रतीक्षा करते हुए, मैं (लेखक) डेनवर के निजी घर में घुस गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास बैठे सारजेंट जॉयस ने तिरछी निगाहों से रेवड़ को देखा और बोला, "सबसे पहले मैं एक बकरी को मारकर उसे मोटी खालवाले कुत्ते को खिलाऊंगा।"

उसका नाम मॉनटोया था।

मॉनटोया ने कहा, "मैं सबसे पहले हवाई जहाज से उतरा। मुझे सी. एन. एन., माइक्रोफोन की प्रतीक्षा थी। मैं आइने के सामने बोलने का अभ्यास करता रहा—"हाय ! मम्मी !" किंतु उस समय प्रातः के दो बजे थे। पहले मीटर पर यही हलकी आवाज आ रही थी, "गरमी हो चली है।" और रॉकी की कहानी। मुझे समझ आ गयी। अपने सिर को थामे, मैं भागते हुए सीढ़ियां उतरने लगा। मैं उनका मुकाबला करने को तैयार था।"

मॉनटोया को अचानक ठोकर लगी। इत्तफाक से पथरीली धरती का नाम था शॉर्ट। शॉर्ट इतनी छोटी थी कि अपनी जीप चलाने के लिए, अपनी हैल्मट पर बैठना पड़ा। अपनी बंदूक को पानी के बरतन में रखना पड़ा। यह शॉर्ट की बदसूरती थी, जिससे पता चलता था कि फौज कितनी जवान है। "क्या आपने पैप्सी का स्वाद चखा है ? उसका स्वाद पैप्सी-जैसा नहीं है और सिनिकर्स और ढेर-सी मूंगफली।"

वातावरण का अनुमान लगाते हुए मुझे लगा कि पिछले अगस्त से नये चेहरों में घुले-मिले नहीं थे। वे जहरीले सांपों की अजीबो-गरीब कहानियां सुनाते थे, जो जाल की रस्सियों में रेंगते हैं (जाल रेगिस्तान में छाया करने के लिए प्रयोग किये जाते हैं) और तब बम फेंककर खुरटि भरने लगते हैं। हवाई सॉप। मेरिन की पिटाई हुई क्योंकि उसके पास शराब थी। वे झूठ बोलते थे जबकि सच कितना भयानक था। वे कह सकते थे कि जीवन जो तुम जी रहे हो, वह मानव जीवन है—रेत के तपते तवे पर जीवन। जब तक युद्ध नहीं होता तुम्हें दिनों, हफ़्तों वरन महीनों अकल्पनीय बोरियत, नीरसता, भिनभिनाती भूखी मक्खियों और धूप में जीना होगा। परंतु उन्होंने ऐसा नहीं कहा। जब पानी के जहाजों से टैंक, कुल्हाड़े और फौजी नीचे उतरते, उन्हें पाकिस्तानी मजदूरों द्वारा ट्रकों पर लाद दिया जाता और फौजी मशीनों सहित अंधेरी सड़कों से भेज दिया जाता। सड़कें रेत के भयानक टीलों और ऊंटों के गिरोहों से होकर जाती थीं : अमरीकी सरकार सऊदी संस्कृति को इतना कोमल समझ रही थी जैसे आड़ू पर खराशें। इसी प्रकार फौज के सिपाही सिवा होटलों की चमकदार रोशनियों के शहरी जीवन से अपरिचित थे। इस समाज के अधिकांश जी. आईज अनपढ़ थे। घर पर कोई पढ़ता-लिखता नहीं था। बहुत लोग मिट्टी के बने घरों में रहते थे। उन्हें अनुभव हुआ कि सऊदी शहर बेरूत के घरों की तरह खतरनाक होंगे। सफेद 'थीवस' और 'गुटरा' पहने अरब लोग, नमक तोड़नेवाले, काला बुरका पहने स्त्रियां, काली मिर्च पीसनेवाले और सिर हिलाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए को अच्छी नजर से नहीं देखते थे । संसार का नजरिया सही है कि अमरीका हर मुसीबत में से अपना रास्ता निकाल लेता है । इसका अर्थ है वे मेधावी नहीं हैं । इसका यह अर्थ है वे अनपढ़ हैं । बंदरगाह से आने के चंद घंटे बाद मैंने देखा कि नं. १ केवेलरी (टुकड़ी) कैनवास की चारपाइयों पर बैठी हैं । उनके टैंक दुर्घटनाग्रस्त रेलगाड़ी की तरह बिखरे हुए थे—निपुण कहेंगे, "ठीक स्थान पर खड़े थे"—कुवैत से थोड़ा हटकर, कीड़े की तरह रेत के टीलों की गोलाई में । (फौज ऐसी चीजों को प्रोत्साहन देती है । नहीं । कल्पनाशील कार्यक्रमों का पालन करती है) अधिकांश लड़के गांव में चंद घंटे पहले आये थे । बहुत से कभी घर से बाहर नहीं गये थे । मेरा ध्येय ऐसी पलटन बनाना था, जो हर मुसीबत का सामना कर सके । इसकी बजाए मुझे ६०० लड़के मिल गये—३२ आर्मेड रेजिमेंट ऑव सेकंड या ब्लैक जैक, ब्रिगेड, टास्क फोर्स की पांच कंपनियां—अल्फा ब्रेवो, चारली, डैल्टा तथा हैडक्वार्टर्ज—मैंने ब्रेवो में अपना तंबू गाड़ दिया । ब्रेवो की तीन पलटनें—हर पलटन में चार टैंक, एक टैंक में चार आदमी—मैं दूसरे के लिए सहमत हो गया । सैकंड लै. रोनॉल्ड ए. फागन आफिसर थे । (प्रिय माताओं एवं पुराने शौकीन सिपाहियों को ये पसंद हैं) ।

फागन, अपने टैंक के निकट, चारपाई पर बैठा था । वह, दूर से चमकते हुए बकरियों के रेवड़ को देख रहा था । लेफ्टीनेंट ने कहा, "चार्ल्स तुम इतनी धूल में खिसक जाओ ।"

पास बैठे सारजेंट जॉयस ने तिरछी निगाहों से रेवड़ को देखा और बोला, "सबसे पहले मैं

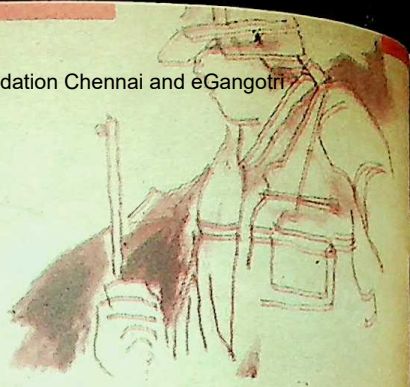

एक बकरी को मारकर उसे मोटी खालवाले कुत्ते को खिलाऊंगा ।"

वे लोग पिछले ३६ घंटों से नहीं सोये थे । जिन ट्रकों से वे यहां पहुंचे हैं, वे भी ठीक से नहीं चल रहे । योजना के अनुसार, ठंडी प्रातः की छाया की बजाए, उन्होंने अपना कैंप, नारंगी सूरज के गोले के नीचे लगाया था । पसीने में सराबोर, उन्होंने भरी दोपहरी में भद्दी तितलीनुमा मसहरियां अपने टैंकों के ऊपर लगा दीं । मारे तेज हवा के कई बार मसहरियां फट गयीं या गिर गयीं । जॉयस बोला, "बेहतर होता यह कार्य करने की बजाए, मैं वेश्या के अड्डे में अपनी बहन से मिल आता ।" गाड़ियां वापस जा चुकी थीं । सारी वस्तुएं अस्त-व्यस्त थीं । 'परंपरा निभाओ ।' उसने व्यंग्यात्मकता से कहा..."ऐसी ही स्थिति टुकड़ी के जवानों की थी, जिन्होंने पांचों विला में लड़ाई की थी । पहली टुकड़ी ने पहली बार, मनीला में लुजन जीता, प्यानगैंग पर कब्जा किया तथा प्लेकू में उत्तरी वियतनाम की डिवीजन को तहस-नहस किया तथा क्वांग और हियु को स्वतंत्रता दिलायी । सन् १९९० में अक्तूबर के अंत में सऊदी अरब में 'फ्राईब्लोन लैट्रिंस' उड़ा दीं, जैट का ईंधन डाल-फैलाकर, आग लगा दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

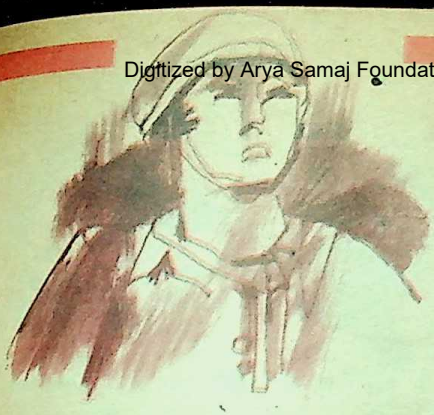

परंपरा निभाओ ।''

जॉयस : ''ओ. के., व्हीलर, तुम तो मैदान की सफाई के लिए प्रसिद्ध हो । उनकी क्या गलती है ?''

व्हीलर : ''वे उससे छेड़खानी कर रहे होंगे, श्रीमान ।''

''और ?'' ''वे उसे दिन में जला रहे होंगे, श्रीमान, ताकि हमारा पता न चल सके ।''

''और क्या हो सकता है ?''

''श्रीमान, उनके पास बारूद नहीं है ।''

सवा पांच बजे ही अंधेरा हो चला था । हवा चलने लगी थी । निकट ही तारे टिमटिमा रहे थे । दूसरी पलटन के थके-मांदे जवान खामोश थे । अंधेरे में बिना हील-हुज्जत के पैकिटों में खाना रात को खाया जाता है, बिना किसी के देखे । चिकन स्वादिष्ट लगता है...सूखा फल, भुनी हुई रुई की-सी मिठाई का स्वाद देते हैं । गीले का बिलकुल स्वाद नहीं होता, जिन्हें ड्यूटी पर नहीं जाना था, वे अपने टैंकों पर सोने चले गये । हवा शांत थी । सुबह को पंछी का गीत भी सुनायी नहीं दिया ।

सारजेंट जॉयस ने तेज प्रकाश चेहरों पर डालते हुए जवानों को सुबह साढ़े चार बजे जगा दिया । उसने टैंक के धुएं-भरे हीटर पर अपनी कॉफी बनायी । वह उगनेवाले दिन से अधिक तरोताजा हो गया । मैं अपने स्लीपिंग-बैग से निकला भी न था कि सारजेंट कहानी सुनाने लगा ।

उसने कहा, ''एक बार, मेरे साथ एक लेफ्टीनेंट था, बहुत अच्छा लेफ्टिनेंट—देखने में इतना सुंदर न था । हुआ क्या कि वह अपने माता-पिता से मिलकर घर से स्कूल गया ।

''वे मोटरकार में बाहर गये । वह मोटरकार की अगली सीट पर बैठा था । उसकी माता पिछली सीट पर बैठी थी । उन्हें ट्रक ने टक्कर दे मारी । उसके माता-पिता मर गये । मोटरकार कई बल खा गयी । वह कार से बाहर जा गिरा । फिर कार उसके सिर के ऊपर से लुढ़क गयी । उसका सिर पिस गया । इस प्रकार उसकी खोपड़ी बाहर निकल आयी ।—उसने अपना माथा खींचा—और अपने पिछले हिस्से को भी पीछे खींच लिया ।''

''आदमी का सिर मुझे नेपोलियन बोनापार्ट के टोप-जैसा लगा । जब वे केवलर हैट पहने बाहर आये...सात-आठ साल पुराने इस्पाती बरतन से हैड गियर फ़िट करने लगे । उन्होंने सब प्रयास किये, परंतु उसमें कुछ भी फिट न बैठा । अंत में उन्होंने दो हैट विशेषरूप से बनवाये । वे अब भी उसके पास हैं । वह अब कैप्टन है । सत्य कथा ।''

''आपने क्या साबित करने के लिए यह कहानी सुनायी है ?''

''बस, बोलने के लिए वह बोला...''

सूरज निकला तो सबने रेत पर सांप के रेंगने के निशान देखे । रिमझिम बरसात में, लेफ्टिनेंट फागन ने सब जवानों को हिदायत दी कि वे बूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

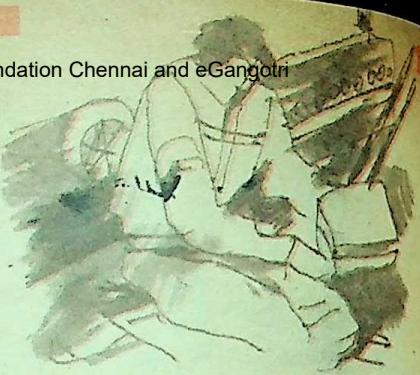

पहन लें । लेफ्टिनेंट ने बताया कि नंगे पांव एक जनरल इंस्पेक्टर को जहरीले सांप ने काटा, उसे अपने पांव की दो अंगुलियों तथा गुरदे से हाथ धोने पड़े । एकदम सत्य कथा ।''

सारजेंट नीव ओजेडा ने बताया कि उसके टैंक में एक बिच्छू घुस आया था । वह टैंक के पुरजों के पीछे रेंग रहा था । वह उसे मारने के लिए पकड़ नहीं पाया ।

जब क्रिटर की बात खत्म हुई तो जवानों को हिदायत मिली—हर चीज की देख-भाल रखें । ''अपने काम पर ध्यान दो, अपने जमीन के हिस्से का खास ख्याल रखो । सोचो कि यदि तुम शत्रु होते, तो कैसे आक्रमण करते । यहां की स्थिति ऐसी ही अजीब है—अपने को छिपाने की स्थिति...''

किसी ने डाक के बारे में प्रश्न उठाया, ''मुझे मेरी डाक कब मिलेगी ।'' सारजेंट जॉयस ने कहा, ''वह भी महत्त्वपूर्ण है ।''

''पिछली रात कोई टट्टी के बाहर एक बड़ी बोतल छोड़ गया ।'' तेल के ढोल टट्टी के तौर पर प्रयोग किये जाते थे ।

''इस्तेमाल करने से पहले, उन्हें ठीक से देख लेना ।''

सारजेंट जॉयस फिर बोला, ''प्रश्न और चर्चा ? उनका कोई अर्थ नहीं ।''

हर जवान अपनी डाक के बारे में चिंतित था । दिन में एक या दो बार, वे अपने टैंक तंबू के नीचे से बाहर निकालते थे । यह दृश्य उन्हें 'बहुत खराब' लगता था । १०५ म. म. की बंदूकें मारे गरमी के टेढ़ी हो जाती हैं और वे उन्हें फेंक देते हैं । मोड़ ठीक करने में एक घंटा लग जाता है । वे अपने हथियारों को तेल आदि देते हैं, युद्ध-मैदान के बारे में परचे पढ़ते हैं । रेगिस्तान में बनी चौकियों के मुआने पर जाते हैं । मरीचिकाएं देखने जाते हैं । अपनी संगीनों से अपने नाखून तराशते हैं । फिर उदास हो जाते हैं । वे छिपने के लिए गढ्ढे खोदते हैं ।

सारजेंट जॉयस : ''व्हीलर, इससे पहले कि तेज हवा से वे उड़ जाएं, जाओ चार-पांच चट्टानें ले आओ । उन्हें खाली रेत के बोरों पर रख दो ।''

व्हीलर (चट्टानें उठाते हुए), ''श्रीमान, लगता है ये चट्टानें उल्काओं से गिरती हैं ।''

जॉयस : ''मुझे उनके गिरने के बारे में कुछ पता नहीं, व्हीलर साहब ।''

दो काले, 'उकाबी हैलीकॉप्टर धरती की ओर गड़गड़ाते हुए आये । रेत में तूफान-सा उठ खड़ा हुआ ।' सारजेंट जॉयस : ''मेरा विचार है कि 'हुइस' बेहतर है । पता है क्यों ? तुम फर्श पर बैठ सकते हो, मडगॉर्ड पर अपने पांव रख सकते हो, पैंट में हवा घुसने देते हो ।''

सारजेंट पॉल सोजा : ''यदि युद्ध हुआ, ये जवान नायक कहलाएंगे । भैया, हॉलीवुड को भूल जाओ । यह मेडवक है ।''

तपते दिन के पेट में, सारजेंट हेक्टर गलिंडो, लेफ्टिनेंट के टैंकवाला बंदूकधारी गढ्ढे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे जगह, हलकी छाया के नीचे, हर जवान पत्र लिखने में व्यस्त है। सब जगह खामोश बेचैनी है। जवान अपनी लड़की-मित्रों की कमी महसूस करते हैं। विवाहित जवानों को अपने परिवारों की याद सताती है, परिवारों की याद।''

बाहर सब देख रहा था, ''मेरी मां के साथ ऐसा तीन बार हुआ'', उसने बताया, ''पहली बार मेरा भाई वियतनाम के युद्ध में गया। तब मेरा भाई पानी के जहाज पर, अमरीकी 'कारल समुद्र' में था। अब मेरा नंबर है। वह कहती रहती है, 'जाने भगवान मुझे कब सजा से मुक्त करेगा ? बच्चो, मैं तुम्हें खोती जा रही हूं।' मेरा पिता डिजल-मिस्त्री है। वह कहता है, 'सुनो, जाओ गधे की मरम्मत करो। वापिस आओ। जब तुम मुझे यह सब बताओगे, मैं तुम्हें बीयर खरीद दूंगा।' मेरा बाप ऐसा कहता है।''

दूसरी जगह, हलकी छाया के नीचे, हर जवान पत्र लिखने में व्यस्त है। सब जगह खामोश बेचैनी है। जवान अपनी लड़की-मित्रों की कमी महसूस करते हैं। विवाहित जवानों को अपने परिवारों की याद सताती है, परिवारों की याद।''

चॉड थॉट : ''ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता, जब मैं तुम्हें याद नहीं करता। तुम मेरे लिए क्या नहीं हो ! मैं तुम्हें प्रेम करता हूं।''

फास्टीनो गोंजल्स : ''मुझे तुम्हारी याद सताती है। मैं अपने संपूर्ण हृदय से तुम्हें चाहता हूं। भगवान ने चाहा, मैं किसी भी दिन घर लौट आऊंगा।''

मॉइकल व्हीलर : ''मेरी उम्र लगभग बीस बरस है। मुझे अभी बहुत दिन जीना है, बढ़ना है, तुम्हारे साथ।''

—उसके माता-पिता—''तुम्हारे बिना मैं अधूरा हूं, कुछ भी नहीं कर सकता।''

कैप्टन रिक मार्शल : ''मैं तुम्हें दिल से चाहता हूं। सबको बता दो ! हाय, आशा है, मैं जल्दी ही घर लौट आऊंगा।''

पॉल सोजा : ''प्रार्थना है तुम स्वस्थ रहो। भगवान में विश्वास रखो। हम एक दिन फिर मिलेंगे। टिनी, तुम इतनी छोटी हो कि मेरी बात नहीं समझ पाओगी। परंतु तुम्हारी मम्मी तुम्हें समझा देगी या मैं वहां आकर समझा दूंगा।''

सारजेंट लारी एवरसोल : ''मैं तुम्हें अत्यंत प्रेम करता हूं। हम एक-दूसरे की मदद करते रहेंगे जैसे मैं तुमसे बिछुड़ते हुए...'

थो मुर्रे : ''तुम्हें और अपने बेटों को सूचित करता हूं कि मैं यहां सकुशल हूं। भगवान की कृपा से मैं शीघ्र ही घर लौट आऊंगा।''

सारजेंट ब्रेन पोलैंड : ''मुझे मालूम है कि मैंने ऐसा नहीं कहा, परंतु मैं तुम्हें प्रेम करता हूं।''

हैक्टर गलैंडो : ''फिना, तुम्हारे से ही मेरा जीवन संपूर्ण बनता है। मुझे तुम्हारी याद सताती है। मुझे तुमसे कितना प्यार है !''

स्पेशलिस्ट ऐड्डी टरूइट्टी : ''प्रेम, तुम्हें कितना प्रेम करता हूं !''

रोनल्ड फागन : ''दूरी और समुद्र हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक-दूसरे से दूर कर सकते हैं परंतु हमारे विचार सदा एक हैं ।''

रात । जगमगाता आकाश । पुरुषत्व की चेतावनी । ''स्त्रियों के विचारमग्न शब्द (तुम मुझे नंगा करके गरम रेगिस्तान में सौ मील घसीट सकते हो, यदि मैं लांडरी ट्रक के टायर को चूम सकती, जो उसे इतनी दूर ले गये) ।'' नींद ।

सारजेंट जॉयस उन्हें अंदर बंद कर देता है । वह खुशमिजाज जवान है । पिछले पंद्रह साल से नौकरी में है । हम मिलकर सिगार पीते हैं । वह छोटी-बड़ी पीढ़ी के अंतर पर कुढ़ता है । लड़के उसे 'गुक्की' पुकारते हैं । अगले रोज एक लड़के ने जुर्म मान लिया कि वह परेशान है । ''मेरा खयाल था, वह बीमार था ।'' सारजेंट कहता है ।

मैंने उससे पूछा कि क्या उसने श्रेष्ठ पुस्तक—'युलेसिस' पढ़ी थी !

''नहीं । मैंने नहीं पढ़ी । फिनगेंस वेक इन ए पीस ऑव शिट टू ।''

हम सोने चले जाते हैं ।

एक शांत सुबह, ६.४५ बजे, एक सप्ताह बाद । ब्रेवो कंपनी कमांडिंग आफिसर के सामने जमा हुई । जवान अपना तमाम उत्साह खो चुके थे । परंतु उन्हें आशा थी कि ले. करनल जेम्स आर. मेदरेड भेजे जिससे उनका जोश दोबारा जाग उठे । करनल उनकी प्रशंसा करने लगा; ''तुम्हें अपने पर गर्व होना चाहिए । तुम इतिहास में विदेश में सर्वश्रेष्ठ फौज के अंग रहे हो । तुम वापस जा सकते हो । तुम अपने बेटों और पोतों को यह शुभ सूचना दे सकते हो । हमारा ध्येय बदला नहीं है । हमें लड़ाई रोकना है । यदि हम अपने इरादों में पूरे निकले, तो वे हमारे साथ कभी नहीं लड़ेंगे ।''

फिर करनल ने एक बम गिराया । ''मेरा विचार है तुम्हें योजना बनानी चाहिए कि यहां छह महीने, एक साल या इससे भी अधिक रेगिस्तान में रहो । इस प्रकार तुम उम्मीद का दामन नहीं छोड़ोगे । यही घर होगा ।''

करनल ने अपनी बात बिना लाग-लपेट के कह डाली, ''हम साठ दिन तक यहीं डटे रहेंगे । विश्वस्त होने के लिए हमारे हथियार सही सलामत हैं । चार महीने बीत गये । हम जिंदा चांदमारी की जगह की तलाश में हैं । तुम्हें यहां अच्छा प्रशिक्षण मिलेगा । हमें अभी बहुत कुछ करना है ।''

उस रात सारजेंट जॉयस ने नॉन-कमीशंड आफिसरों की मीटिंग बुलायी और उनसे कहा, ''सज्जनो, आपको अपनी पूरी शक्ति से मुकाबला करना है । यदि आप सफल हुए, आप रेत के टीले पर जाकर चट्टान पर से गंदगी नीचे फेंक दोगे...परंतु मुसकराते हुए वापस लौटना । बस, मेरी यही कामना है ।''

उसी रात व्हीलर नींद में बार-बार बोलने लगा, ''मुझे अकेला छोड़ दो...'' मुर्रे, उज़ेड़ा और गोंजल्स ने बताया । वे उसके पास ही सोये थे । रात सोजा, जो जॉयस के पास सो रहा था, उकड़ूं बैठ गया और चीखने लगा, ''सारजेंट ! यह मैंने नहीं किया !'' फिर वह सोने के लिए लेट गया, अद्वितीय आकाश के नीचे । उसके ऊंघते सिर की सैटेलाइट निगरानी कर रहे थे ।

अनुवाद : केदारनाथ कोमल

एल-१/५५-बी, डी. डी. ए. फ्लैट्स
कालकाजी, नयी दिल्ली-११००१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताजी के जीवन के अंतिम कुछ वर्ष

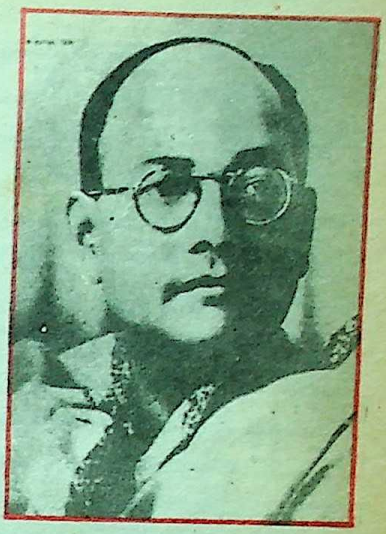

• डॉ. विजय कुमार उपाध्याय

सन् १९३८ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हरिपुरा में हुए ५१वें वार्षिक अधिवेशन में सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष चुने गये। अगले वर्ष के वार्षिक अधिवेशन में भी उन्होंने उपर्युक्त पद के लिए पुनः नामांकन पत्र भरा। परंतु इस बार मुकाबला थोड़ा कड़ा था, क्योंकि इस वर्ष अध्यक्ष पद के लिए पट्टाभि सीतारमैया ने भी अपना नामांकन पत्र भरा था, जिनके नामांकन की अनुशंसा महात्मा गांधी ने की थी। इतना ही नहीं, गांधीजी ने यहां तक घोषणा कर दी थी कि पट्टाभि सीतारमैया की जीत उनकी जीत होगी। मतदान हुआ तथा सुभाषचंद्र बोस पुनः विजयी हुए।

नयी पार्टी का गठन

धीरे-धीरे सुभाषचंद्र बोस ने अनुभव किया कि हालांकि वह कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष चुन लिये गये हैं, परंतु पार्टी में उनके विरोधी तरह-तरह के षड्यंत्र करने से बाज नहीं आ रहे हैं। अतः ऊबकर तथा निराश होकर उन्होंने पार्टी अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। इतना ही नहीं उन्होंने कांग्रेस पार्टी भी छोड़ दी तथा ऑल इंडिया फॉर्वर्ड ब्लॉक नामक नयी पार्टी का गठन किया। इस नयी पार्टी में कांग्रेस के वामपंथी विचारधारा वाले लगभग सभी लोग शामिल हो गये।

नयी पार्टी के गठन के बाद शीघ्र ही मार्च १९४० में सुभाषचंद्र बोस ने पूर्ण स्वराज्य हेतु पूरे भारत में आंदोलन छेड़ दिया। नतीजा यह हुआ कि कलकत्ता में एक प्रदर्शन के दौरान सुभाषचंद्र बोस को गिरफ़ार कर जेल भेज दिया गया। उन्होंने आमरण अनशन की घोषणा कर दी। अंगरेजी हुकूमत इस धमकी से डर गयी तथा सुभाषचंद्र बोस को रिहा कर दिया गया। परंतु उन्हें कलकत्ता के अपने मकान में कड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहरे के बीच नजरबंद रखा गया ।

गुप्त रूप से काबुल को प्रस्थान

सुभाषचंद्र बोस ने नजरबंदी के दौरान किसी से मिलना-जुलना बंद कर दिया तथा गुप्त रूप से दाढ़ी बढ़ाने लगे । कुछ समय के बाद मौलवी जियाउद्दीन का भेष बनाकर एक कार द्वारा वह चुपचाप अपने घर से खिसक गये । यह घटना १७ जनवरी, १९४१ को हुई । घर से निकलते समय उनके भतीजे शिशिरकुमार बोस भी उनके साथ थे । वे लोग रातों-रात चलते हुए कलकत्ता से २१० मील की दूरी पर स्थित गोमो पहुंचे । यहां सुभाषचंद्र बोस ने अपने भतीजे से विदा ली तथा पेशावर जानेवाली गाड़ी पकड़ी । पेशावर में उनकी मुलाकात भगतराम नामक एक व्यक्ति से हुई, जिसने उन्हें भारत की सीमा पार करवाकर काबुल पहुंचा दिया । काबुल में उन्होंने एक बस ड्राइवर की सराय में शरण ली तथा बाद में एक प्रवासी भारतीय उत्तमचंद मल्होत्रा के घर में रहने लगे । उन्होंने एक दुभाषिये की सहायता से काबुल स्थित रूसी दूतावास से संपर्क किया तथा यूरोप जाने में सहायता मांगी । परंतु तीन दिनों तक उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला । चौथे दिन उन्होंने भगतराम को इटली के दूतावास में भेजा । यहां सुभाषचंद्र बोस का स्वागत किया गया तथा उन्हें एक पासपोर्ट देने का वचन दिया गया, जिससे वह यूरोप जा सकें ।

जरमनी में

कई सप्ताह बाद उन्हें इटली के दूतावास से औलैंडो मैसोट्टा के नाम का पासपोर्ट प्राप्त हो गया । साथ-ही-साथ उन्हें ले जाने के लिए भी एक-दो आदमी की व्यवस्था की गयी थी । इस प्रकार सुभाषचंद्र बोस जरमनी पहुंच गये, जहां रिब्बेनट्रॉप ने उनका स्वागत किया । सुभाषचंद्र बोस ने रिब्बेनट्रॉप के समक्ष प्रस्ताव रखा कि वह एक गुप्त रेडियो स्टेशन से ब्रिटेन के विरोध में प्रचार करेंगे । साथ ही जरमनी तथा उसके सहयोगी देशों के सैनिकों द्वारा बंदी बनाये गये भारतीय सेना के लोगों को संगठित कर एक सेना का गठन करेंगे तथा यह सेना भारत की स्वाधीनता के लिए युद्ध करेगी । इसके बदले में जरमनी तथा इटली को यह घोषणा करनी होगी कि विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद वे भारत को प्रभुता संपन्न देश के रूप में मान्यता प्रदान करेंगे ।

नेताजी ने भारत की स्वाधीनता हेतु कार्य करने के उद्देश्य से 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना की जिसका कार्यालय जरमनी में बरलिन नामक स्थान पर खोला गया । इसके लिए आर्थिक सहायता जरमनी ने प्रदान की । इसी दौरान सुभाषचंद्र बोस को लोग नेताजी कहने लगे तथा बरलिन में रहते हुए ही इन्होंने 'जय हिंद' नारे को जन्म दिया, जो भारतीयों के लिए अभिवादन का शब्द बना ।

जापान से आमंत्रण

इस समय तक जापान दक्षिण पूर्व एशिया में काफी बड़े भूभाग पर अधिकार जमा चुका था । जब उसने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया, तो नेताजी को लगा कि जापान के साथ मिलकर ही वह अपने लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं । जापान ने भी अनुभव किया कि सुभाषचंद्र बोस के रूप में एक ऐसा व्यक्ति मिलेगा, जिसका प्रभाव भारतीय जन मानस पर काफी अधिक है । साथ ही साथ जापान द्वारा बंदी बनाये गये भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनिकों पर भी सुभाषचंद्र बोस का काफी अधिक प्रभाव पड़ने की आशा थी । वे सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में ब्रिटेन के विरुद्ध हथियार उठा सकते थे जिससे जापान का काम अधिक आसान हो जाता । अतः नेताजी ने जैसे ही जापान के पास सहयोग का प्रस्ताव भेजा, वह तुरंत सहमत हो गया । जापान ने अविलंब नेताजी को जापान आने का आमंत्रण भेजा ।

जापान का आमंत्रण सुभाषचंद्र बोस ने सहर्ष स्वीकार कर लिया । वह एक जरमन यू. बोट द्वारा जरमनी के कियेल नामक स्थान से ८ फरवरी, १९४३ को निकल पड़े । उनकी यात्रा को बिल्कुल गुप्त रखा गया क्योंकि समुद्र में मित्र देशों की सेनाएं जहां-तहां गश्त लगा रही थी । सुभाषचंद्र बोस द्वारा रेडियो पर किये जा रहे प्रचार से मित्र देश काफी बौखलाये हुए थे । अतः इस यात्रा की सूचना मिलते ही वे उन्हें समाप्त करने की कोशिश करते । नेताजी की सुरक्षा को ध्यान में रखकर जरमनी ने एक चाल चली । उसने सुभाषचंद्र बोस द्वारा दिये गये एक भाषण का एक पहले से तैयार टेप १० फरवरी, १९४३ को रेडियो पर प्रसारित करवा दिया, जिससे मित्र देशों को गलतफहमी हो जाए कि नेताजी अभी जरमनी में ही हैं । इस बीच सुभाषचंद्र बोस अपने सहयोगी आबिद हुसैन के साथ जरमन यू. बोट द्वारा एटलांटिक के रास्ते केप ऑव गुड होप पहुंचे, जहां एक जापानी पनडुब्बी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी । बोस तथा हुसैन रब्बर की एक छोटी नाव द्वारा यू. बोट से पनडुब्बी में पहुंचे । इस पनडुब्बी द्वारा ये लोग सुमात्रा गये तथा वहां से हवाई जहाज द्वारा टोकियो ।

सिंगापुर में आई. एन. ए. का गठन

सुभाषचंद्र बोस जून, १९४३ के प्रारंभ में टोकियो पहुंचे । जापान के प्रधानमंत्री तोजो से उनकी भेंट १४ जून, १९४३ को हुई । तोजो ने सुभाषचंद्र बोस द्वारा चाही गयी वे सभी घोषणाएं कीं, जो जरमनी के रिब्बेनट्रॉप तथा इटली के सियानो नहीं कर पाये थे । तोजो ने घोषणा की कि भारत को ब्रिटिश गुलामी से मुक्त कराने के लिए जापान सुभाषचंद्र बोस को हर तरह की सहायता देने का निश्चय करता है । सुभाष स्वतंत्र भारत की एक अस्थायी निर्वासित सरकार की स्थापना करना चाहते थे तथा उनकी इच्छा थी कि जापान इस निर्वासित सरकार को मान्यता प्रदान करे । अतः वह सिंगापुर गये तथा इंडियन नेशनल आर्मी का गठन किया, जिसे संक्षेप में आई. एन. ए. कहा गया । इस सेना में जापान द्वारा बंदी बनाये गये भारतीय सैनिक थे ।

इसके बाद नेताजी रंगून, बैंकाक तथा सैगोन गये तथा वहां के प्रवासी भारतीयों से धन तथा सामान जुटाने का आह्वान किया । उन्होंने इंडियन नेशनल आर्मी का पूरा नियंत्रण अपने हाथ में लिया तथा स्वयं सैनिक ड्रेस धारण किया । उन्होंने घोषणा की कि इंडियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्लरोग? भूख की कमी? कब्ज़?

पेट की गड़बड़ी?

स्वास्थ्य और सुन्दरता का रक्षक-लिवर।

सर्वाधिक रोगों का कारण — पेट की खराबी, अस्वस्थ्य लिवर, और अनिद्रा। स्वस्थ्य लिवर हर रोग का निदान।

....डा. सरकार

पेट की गड़बड़ी दूर करने और लिवर सुरक्षित रखने के लिए

डा. सरकार का एक अनोखी खोज आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक।

लिवोसिन

सेवन विधि :
जब तक सीने की जलन, पाचन शक्ति में वृद्धि, अम्लरोग, कब्ज़ियत, भूख की कमी, पेट की गड़बड़ी, यकृत की अस्वस्थ्यता दूर न हो तब तक एक ग्लास गुनगुने पानी के साथ **लिवोसिन** सुबह खाली पेट और रात को सोने के समय नियमित सेवन करें।

लिवोसिन

एक आयुर्वेदिक लिवर टॉनिक

आर्निकाप्लस-ट्रायोफर निर्माता का सहयोगी संस्था Jupiter - की आयुर्वेदिक खोज का एक अनोखा उपहार।

जुपिटर फार्मासिटिकल्स प्रा० लि०
२५, इडन हॉस्पिटल रोड़, कलकत्ता-७३
दूरभाष-२६०१५६/२७-०२२४

Jupiter
Emars Allen
allen's india
Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक
आयुर्वेदिक
होमियोपैथिक
औषध प्रस्तुतकारक

Marketed by :
allen's india
Allen's India Marketing Pvt. Ltd.
ArnikaPlus Apartment, Sodepur
35, A. P. C. Road, Calcutta-9
Phone : 350-9026

Allen's Ad. Jupiter

जिसके सहयोग से आपको मिले आरोग्य में विश्वास।

Branch Office : Duggal House, Bank Road, Patna-800 001, Ph : 23-4953
Branch Office : 84/77B, Narayan Bagh, G. T. Road, Kanpur-208003, Ph : 24-2844

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेशनल आर्मी ही भारत की स्वाधीनता के लिए युद्ध करेगी ।

नेताजी ने सरकार बनायी

२० अक्तूबर, १९४३ को जापान में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत की अस्थायी निर्वासित सरकार की स्थापना की गयी । नेताजी ने अविलंब अपने मंत्रिमंडल का गठन किया । नेताजी इस निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री होने के साथ-साथ युद्ध विभाग तथा विदेश विभाग भी स्वयं देख रहे थे । नेताजी ने इस सरकार के गठन के समय निम्नलिखित शपथ ग्रहण की ।

"ईश्वर को साक्षी मानकर मैं सुभाषचंद्र बोस शपथ ग्रहण करता हूं कि भारत तथा उसके ३८ करोड़ निवासियों को स्वाधीन बनाने के लिए स्वतंत्रता का यह धर्मयुद्ध अपने जीवन की अंतिम सांस तक लड़ूंगा । मैं सदा भारत का एक अदना सेवक रहूंगा तथा भारत के ३८ करोड़ भाइयों एवं बहनों का कल्याण मेरा सर्वोच्च कर्त्तव्य होगा । भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी मैं इसकी स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु अपने शरीर के खून की अंतिम बूंद तक बहाने को तैयार रहूंगा ।"

—'जयहिंद'— नेताजी का नारा था

इस सरकार के गठन के बाद सुभाषचंद्र बोस ने घोषणा की 'जयहिंद' सभी भारतीयों के लिए एक-दूसरे से मिलने पर अभिवादन का शब्द रहेगा, कांग्रेस का तिरंगा राष्ट्रीय झंडा माना जाएगा तथा कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित कविता 'जन, गण, मन...' राष्ट्रीय गीत मानी जाएगी । उन्होंने स्वाधीन भारत के करेंसी नोट तथा राष्ट्रीय मुहर का प्रारूप भी निश्चित किया । उन्होंने एशिया में रह रहे सभी भारतीयों का आह्वान किया कि सरकार को चलाने हेतु वे उदारतापूर्वक रुपये, सोना तथा धन देने की कृपा करें ।

विमान दुर्घटना

सैगौन से चलकर विमान फ्रांसीसी हिंदचीन के टाउरेन नामक स्थान पर उतरा तथा रात सबों ने वहीं बितायी । दूसरे दिन सवेरे विमान पुनः उड़ा तथा फॉरमोसा (वर्त्तमान ताइवान) द्वीप के ताइपेह नामक स्थान पर दोपहर को उतरा । यहां से विमान पुनः उड़ते वक्त दुर्घटनाग्रस्त हो गया । नेताजी विमान में आगे बैठे हुए थे । इस दुर्घटना में उनके सिर में भयंकर चोट लगी । साथ ही विमान का ईंधन छिटककर उनके पूरे शरीर पर फैल गया तथा उनके शरीर में आग लग गयी । उनके सहयोगी हबीबुर रहमान ने नेताजी के जलते कपड़े फाड़कर हटाने चाहे, परंतु इस प्रयास में वह भी जलकर बेहोश हो गया । ये दोनों बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुंचाये गये । नेताजी का शरीर काफी जल चुका था । अस्पताल पहुंचने के छह घंटे के अंदर ही उनके प्राण पखेरू उड़ गये । हबीबुर रहमान इलाज से ठीक हो गये तथा नेताजी के अंतिम संस्कार में शामिल हुए । हबीबुर रहमान ने उनके शरीर की थोड़ी-सी राख ले ली तथा इस राख को ओगीकूबो नामक स्थान पर रेनकोजी मंदिर में जमा कर दिया । उसके बाद २३ अगस्त, १९४५ को रेडियो पर समाचार प्रसारित हुआ कि ताइपेह में हुई एक विमान दुर्घटना में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु हो गयी ।

—प्राध्यापक, भूगर्भ, इंजीनियरी कॉलेज, भागलपुर-८१३२१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

— अजय भाम्बी

लखन लाल तिवारी, जबलपुर

प्रश्न : तंत्र, मंत्र, यंत्र, भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति कब तक ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : आपकी समस्या मनोवैज्ञानिक है न कि भूत-प्रेत से संबंधित । रत्न की दृष्टि से पन्ना धारण करें ।

आनन्द प्रकाश गुप्ता, रीवा

प्रश्न : वर्तमान विपरीत परिस्थितियों से छुटकारा कब तक होगा ?

उत्तर : अगले वर्ष से थोड़ी राहत प्राप्त होगी ।

रजनीश श्रीवास्तव, गाजियाबाद

प्रश्न : पदोन्नति कब ?

उत्तर : कुछ समय और इंतजार करें ।

सुशीला अग्रहरी, फैजाबाद

प्रश्न : पुत्र कब होगा ?

उत्तर : कुंडली में पुत्र योग है, घबराये नहीं ।

नीना शर्मा करनाल

प्रश्न : नौकरी का योग कब तक ?

उत्तर : प्रयास करें, जल्दी कार्य बनेगा ।

हरिवंश मिश्र, गोरखपुर

प्रश्न : रोग एवं अज्ञात भय से मुक्ति कब तक ?

उत्तर : फरवरी '९६ से कुंडली बलवान होने लगेगी, तभी मुश्किलों से राहत प्राप्त होगी ।

बोधिनी कलमारी, पटना

प्रश्न : तलाक होगा या नहीं ? होगा तो कब तक ?

उत्तर : तलाक होने की पूर्ण संभावना है ।

निशा गोयल, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

प्रश्न : दिमागी बीमारी कब हटेगी ?

उत्तर : आपकी कुंडली में चंद्रमा पीड़ित है, जो मन का प्रतिनिधित्व करता है । बृहस्पति अच्छा है अतः स्वास्थ्य लाभ होगा । योग्य चिकित्सक से परामर्श लें ।

विजय प्रकाश, रांची

प्रश्न : ऋण मुक्ति तथा अपने व्यवसाय में सफलता कब से ?

उत्तर : ऋण मुक्ति में समय लगेगा, व्यवसाय अगले वर्ष से बेहतर चलेगा ।

समता, खुरई (म. प्र.)

प्रश्न : प्रेम-विवाह है या नहीं ?

उत्तर : प्रेम-विवाह संभव है ।

विवेक शर्मा, नयी दिल्ली

प्रश्न : विदेश यात्रा का योग है या नहीं ? यदि हां तो कब ?

उत्तर : विदेश यात्रा अगले वर्ष हो सकती है ।

अनुसूया, पौड़ी

प्रश्न : संतान प्राप्ति कब होगी ?

उत्तर : सूर्य को जल चढ़ाएं, अगले बीस महीने में संतान होने का योग है ।

मनोज कुमार चौधरी, समस्तीपुर

प्रश्न : आई. पी. एस. कब तक बनूंगा

उत्तर : १९९६ में ।

रुके हुए धन की प्राप्ति कब तक ? रत्न सुझाएं ?

उत्तर : नीलम धारण करें, लाभ होगा और रुका धन भी मिलेगा ।

रीता शर्मा, उज्जैन

प्रश्न : विवाह से दो दिन पहले मतभेद, रिश्ता खत्म, अब विवाह कब ?

उत्तर : विवाह अगले वर्ष संपन्न हो जाएगा ।

विजय खन्ना, लखनऊ

प्रश्न : फरवरी '९५ से सफेद दाग दिखे, ठीक हो जाऊंगा ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : आगे समय अच्छा आ रहा है अतः लाभ की पूर्ण संभावना है ।

रंजना शर्मा, नयी दिल्ली

प्रश्न : अपने मकान की समस्या का समाधान कब ? उपाय सुझाएं ?

उत्तर : यह समस्या आपकी जल्द ही हल हो जाएगी ।

संयोगिता श्रीवास्तव, बम्बई

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ?

उत्तर : १९९६ में ।

रूपानंद जोशी, डाकपत्थर (देहरादून)

प्रश्न : अधिकारी कब तक बनूंगा ?

उत्तर : नवंबर से बेहतर समय प्रारंभ होगा, तदुपरांत ही कार्य बनेगा ।

अनिल चन्द्र त्रिपाठी, बस्ती

प्रश्न : दरिद्रता तथा शत्रुओं से मुक्ति कब तक संभव है ?

उत्तर : फरवरी '९६ के बाद से आपकी स्थिति अच्छी होने लगेगी । शत्रु भी हानि नहीं पहुंचा पाएंगे ।

लोकेश चन्द्र, भीलवाड़ा

प्रश्न : वर्तमान समस्या से कब निजात मिलेगी ?

उत्तर : नवम्बर से थोड़ी राहत मिलेगी, लेकिन मार्च के बाद ही ठीक रहेगा ।

दीप प्रकाश, रांची

प्रश्न : पत्नी के साथ रहना कब होगा ? उपाय सुझाएं ?

उत्तर : यह कार्य अगले पांच माह में संपन्न हो सकता है । नीलम धारण करें ।

'नक्षत्र-निकेत'
४०६, ढाका चेंबर-। २०६८/३८, नाईवाला,
करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००१

प्रविष्टि—१६३

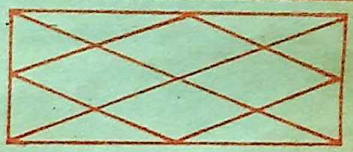

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन .....

जन्म-स्थान.....

जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें .....

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १६३ 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० अक्तूबर, १९९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोरिया से

स्पेनिश कविता

अनुपस्थिति

मूल स्पेनिश कवि : जोसेप कारनर

(१८८४-१९७०)

हिंदी-अनुवाद : दिविक रमेश

(पेत्रा की सहायता से)

नहीं रहा जरूरी अब
पलके मूंदना
पास है वह जो दूर था
देख सकता हूं अपना घर
महाशांत खिड़की
खुलती हुई

छाया में धीमे-धीमे
आह भरता है परदा
देता है आइना एक झलक विनीत
एक गुलाब रो रहा है शरत का

एक विचार बहुत नाजुक ठंड का
सौंपती है यह महाचुप्पी ।
नहीं खोलूंगा
बंद झिलमिली परदा
बगीचे की ओर का

उस आदमी की तरह
जो जा चुका है जीवन से
और नहीं कर पाता विश्वास जाने पर
और जा खड़ा होता है मुसकाता
आइने के सामने
और झगड़ता है
कुछ भी न देख आइने में

अगर प्यार भी आता यहां मेरे पास
मेरी इच्छा का अनुमान कर
अकेली आत्मा ने ही की होती प्रतीक्षा
नहीं चौंक सकती थी कभी
मेरी आह या झलक ही
उन आंखों में

Translator: Embassy of India
37-3 HANMAM DONG
YOUNGSAN-G4, SEOUL, KOREA

अमरीका से

सॉनेट

कभी-कभी

किन विभूतियों से वंचित रह गया विश्व में
कभी-कभी आकुल मन मुझसे पूछा करता

किस ऊषा के मुख पर रोली मलते नभ को
नहीं देख पाया होते संकुचित जरा-सा
संध्या के पग तल कंचन-कुमकुम बिखेरते
कौन सूर्य रह गया अदेखा भाव भरा-सा

कौन इंदु किस पूनम की करता मनुहारें
रहा अनसुना-मन मुझसे यह पूछा करता

वायु कह गयी क्या, तरु श्रेणी उठी झूम क्यों
कोकिल ने क्या गाया, लहरायी अमराई
सप्तक ने किस इंद्रधनुष की गंगा बाँधी
किस तन-मन पर सम्मोहन की होली छायी

कभी-कभी वह कौन सुरभि, आमोदित करती
जो दिगंत को— मन मुझसे यह पूछा करता

— प्रो. इंदुकांत शुक्ल

552 W. 12th Street
SAN PEDRO CA 90731
U.S.A.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

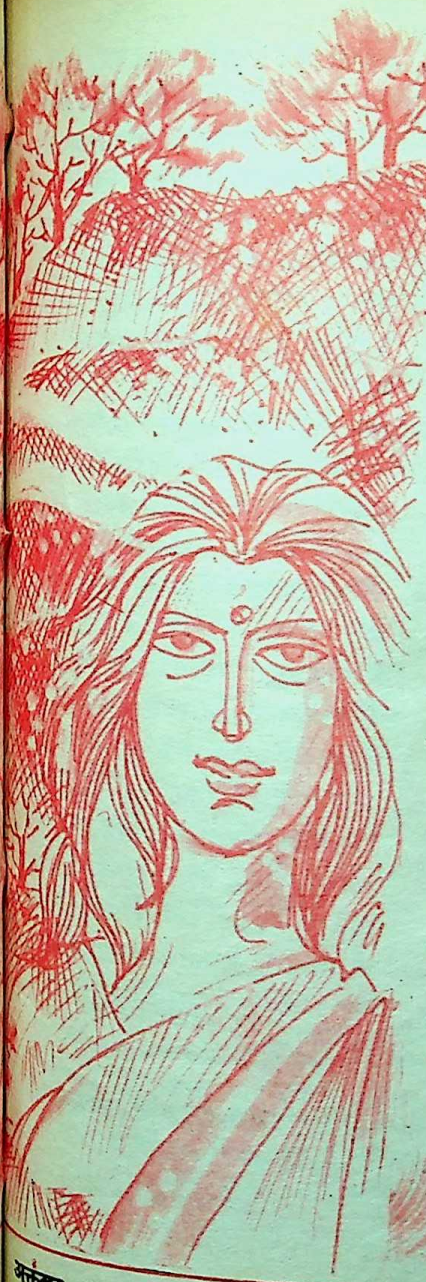

लंदन से

ग़जल

केवल फूल भला लगता तेरा धोखा है प्यारे
एक तराशा पत्थर भी तो सुंदर लगता है प्यारे
इक पलड़े में प्यार-मुहब्बत दूजे पलड़े में नफरत
दुनिया का व्यवहार है कैसा, कैसा धंधा है प्यारे

हर बाजार भरा देखा है आते-जाते लोगों से
फिर भी हर इक का कहना है खाली बटुआ है प्यारे
रंग नया है, ढंग नया है, सोच नयी 'औ' बात नयी
दुनिया का हर तौर-तरीका कितना बदला है प्यारे

ये इक बार उतर जाए तो लोगों का उपहास बने
मर्यादा जैसे नारी के तन का कपड़ा है प्यारे
यूं तो कर लेता है वादा पर मुश्किल से निभाता है
क्या बतलायें, अपना ये मन कितना कच्चा है प्यारे

सब कुछ ही धुंधला दिखता है तुझको इस सुंदर जग में
लगता है तेरी आंखों में कुछ-कुछ कचरा है प्यारे
दुःख घेरे रहता है मन को सिर्फ इसी का रोना है
वरना अपने इस जीवन में सब-कुछ अच्छा है प्यारे

हम फक्कड़ लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता इसका
बाजारों में क्या सस्ता क्या महंगा सौदा है प्यारे
घोर अंधेरे में उजियाला आने से घबराता है
जैसे बाप के डर से बच्चा लुकता-छिपता है प्यारे ।

— प्राण शर्मा

3 CRAKSTON CLOSE
STOKE HILL ESTATE
COVENTRY CV2 5EB (U.K.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : नवीन भाग्योदयी स्थितियों का उदय होगा । स्वजनों के सहयोग से लंबित योजना की पूर्ति होगी । उच्चाधिकारियों से समन्वय में वृद्धि होगी । व्यर्थ संभाषण से विरोधाभास में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि को बिगाड़ने का प्रयास करेगा । पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी ।

वृषभ : साहसिक प्रयासों से प्रतिकूल स्थितियों का शमन होगा । शत्रु पक्ष के अवरोधों के बावजूद कार्यों में सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों से मतांतर दूर होंगे । संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्ययों की अधिकता होगी । परोपकारी कार्यों में सावधानी हितकर होगी । जोखिमपूर्ण कार्यों में हानि संभावित होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी ।

मिथुन : पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी । नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी । संपत्ति विवादों का समाधान आपसी सुलह से होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । व्यावसायिक कार्यों में धनागम होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष से सुलहकारी स्थितियों का उदय होगा । स्वजनों के सहयोग से विवादास्पद समस्या का समाधान होगा ।

कर्क : भौतिक सुखों में वृद्धि होगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से नवीन योजनाओं की पूर्ति होगी । सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी । व्यक्तित्व विकास के अवसरों की अधिकता होगी । आर्थिक दशा में अस्थिरता के बावजूद आकस्मिक धनलाभ से लंबित समस्याओं का समाधान होगा । परिवार में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की अधिकता होगी ।

सिंह : पारिवारिक समस्याओं से चिंता होगी । व्यर्थ मानसिक तथा भावनात्मक पीड़ा होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें । उच्चाधिकारियों से संभाषण में संतुलन रखें । परिश्रम तथा पुरुषार्थ से शत्रु पक्ष का पराभव होगा । मित्रों के सहयोग से आर्थिक समस्या का समाधान होगा । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें ।

कन्या : इच्छित कार्यों में पूर्ति होगी । उच्चाधिकारियों के सहयोग से आजीविका की दिशा में अनुकूल परिवर्तन होगा । आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से यशवृद्धि होगी । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंतनीय स्थिति का उदय होगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब तथा व्यवधान होगा ।

ग्रह स्थिति : सूर्य १७ अक्तूबर से तुला में, मंगल १२ से वृश्चिक में, बुध कन्या में, गुरु वृश्चिक में, शुक्र ५ से तुला में, २९ से वृश्चिक में, शनि कुंभ में, राहु तुला में, केतु मेष में, हर्षल मकर में, नेप्चयून धनु में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुला : नवीन योजनाओं में व्यस्तता बढ़ेगी। संपत्ति संबंधी समस्या का समाधान होगा। प्रवास का आकस्मिक अवसर आएगा। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता विद्यमान रहेगी। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। आमोद-प्रमोद में संयम हितकर होगा।

वृश्चिक : आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्या का समाधान होगा। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु मनोनुकूल अवसरों का उदय होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा। प्रियजन की अस्वस्थता पर व्यय होगा। आध्यात्मिक कार्यों की अधिकता होगी।

धनु : मास में परिश्रम तथा पुरुषार्थ से लंबित समस्याओं का समाधान होगा। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। संपत्ति कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी। आजीविका की दिशा में नवीन अवसरों का उदय होगा। विशिष्ट व्यक्ति जिससे आत्म विश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी।

मकर : शत्रु पक्ष से व्यर्थ संघर्ष विद्यमान रहेगा। नवीन योजनाओं में विलंब सहित सफलता मिलेगी। स्वजनों के सहयोग से आर्थिक योजना में सफलता मिलेगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। रचनात्मक अथवा सृजन संबंधी कार्यों में रुचि बढ़ेगी। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से चिंतनीय स्थिति का उदय होगा।

कुंभ : आत्मविश्वास तथा पुरुषार्थ से कार्यों में सफलता मिलेगी। राजकीय अधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु पक्ष परास्त होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। प्रियजन की अस्वस्थता से चिंतनीय स्थिति का उदय होगा। संपत्ति समस्या का वांछित समाधान होगा। पारिवारिक क्लेश से भावनात्मक पीड़ा होगी।

मीन : पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी। उच्चाधिकारियों से मतांतर दूर होंगे। पारिवारिक खिन्नता से मानसिक व्यथा होगी। नवीन योजनाओं में व्यस्तता बढ़ेंगी। दिनचर्या की अनियमितता से अस्वस्थता का उदय होगा। संपत्ति अथवा वाहन संबंधी वांछित समस्या का समाधान होगा। जोखिमपूर्ण कार्यों में धन लाभ होगा।

—ज्योतिष धाम,
१२/४ ओल्ड सुभाष नगर, भोपाल (म. प्र.)

पर्व और त्योहार

१ अक्तूबर— शारदीय दुर्गा पूजा, महानिशा पूजा महाष्टमी; २—श्री महानवमी व्रत, गांधी जयंती, श्री लालबहादुर शास्त्री जयंती; ३—विजया दशमी, नीलकंठ दर्शन; ६—प्रदोष व्रत; ८—स्नान दान व्रतादिकी आश्विनी पूर्णिमा; १०—अशून्यशयन व्रत; १२—संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी करक (करवा चौथ); १६—अहोई अष्टमी; २०—रंभा एकादशी, गौवत्स द्वादशी; २१—शनि प्रदोष धन त्रयोदशी; २२—नरक चतुर्दशी; २३—श्राद्ध की सिनीवाली अमावस्या, दीपावली, महानिशीथ काल ११-१७ से १२-०७ तक; २४—कुहू अमावस्या अन्नकूट; २५—भ्रातृ द्वितीया; २७—वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी; २९—सूर्य षष्ठी डाला छठ; ३१ गोपाष्टमी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि भारतजी और रेमिचन्द्र जैन—अज्ञेयजी से आगरा में अपने कॉलेज के दिनों से ही परिचित थे, पर यह परिचय सन् १९४३ में 'तारसप्तक' के प्रकाशन के बाद मित्रता में बदल गया। सन् १९४३ में ही मेरा विवाह भारतजी से यानी भारतभूषण अग्रवाल के साथ हुआ था। उस समय अज्ञेयजी मिलिट्री में कार्यरत थे और उनका हमारे घर आना-जाना अक्सर होता रहता था। भारतजी उस समय मारवाड़ी ड्रेस पहनते थे—धोती, कमीज; और यदि जाड़े के दिन हुए तो बंद गले का ऊनी कोट। अज्ञेयजी चाहते थे कि भारतजी कोट-पैंट पहनें और कुछ आधुनिक दिखें, इसलिए वह मिलिट्री कैंटीन से भारतजी के लिए सूट का कपड़ा किफायती दामों में खरीदकर लाये थे। इसी कपड़े का कोट-पैंट भारतजी ने सबसे पहले पहना था—इसी कारण इस घटना का बहुत महत्त्व है।

अज्ञेयजी के साथ 'प्रतीक' में भारतजी

सन् ४५ में भारतजी कलकत्ते के 'मारवाड़ी' की लगी-लगायी बहुत अच्छी नौकरी छोड़कर हाथरस-जैसे छोटे शहर की बिजली कॉटन मिल में सचिव पद पर कार्यरत हो गये। पर कुछ दिनों में ही हाथरस से उनका मन उचाट हो गया। उस समय मैं बनारस हिंदू यूनीवर्सिटी में पढ़ रही थी। मेरे लोकल गार्जियन प्रेमचंद के बड़े सुपुत्र श्रीपतराय थे। सन् ४७ के प्रारंभ की बात है। भारतजी बनारस मुझसे मिलने आये और श्रीपतजी के गुदौलिया स्थित मकान में ठहरे। मौके की बात कि उस समय अज्ञेयजी

'तारसप्तक' के दो कवि

अज्ञेय और भारत : पिकनिक बटकल लेक में

● डॉ. बिंदु अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह 'प्रतीक' जिसको आज भी साहित्यिक पत्रिका के क्षेत्र में मील का पत्थर माना जाता है, कुल बारह अंकों के बाद ही बंद हो गया। दिल्ली आकर भी अज्ञेयजी ने पुनः 'प्रतीक' निकाला, पर आर्थिक संकट के कारण यहां भी उसे बंद करना पड़ा।

भी वहां ठहरे हुए थे। भारतजी हाथरस की नौकरी से असंतुष्ट तो थे ही, इसलिए अपना असंतोष अज्ञेयजी के सामने प्रकट किया। इसी समय अज्ञेयजी ने द्वैमासिक 'प्रतीक' प्रकाशन की योजना भारतजी के सामने रखी और उसमें भारतजी से सहयोग मांगा। भारतजी तो हाथरस की नौकरी छोड़ने के लिए बेचैन थे ही, इसलिए बिना अधिक ब्यौरा पूछे 'प्रतीक' योजना में सम्मिलित होने के लिए तैयार हो गये। एक साहित्यिक पत्रिका को निकालना (जिसकी साध उनके मन में बचपन से थी) और अज्ञेयजी का साथ—दोनों ही बातें उन्हें बहुत आकर्षित कर रही थीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ पूर्व सन् १९४७ में भारतजी १४ हैस्टिंग रोड, इलाहाबादवाले घर में पहुंच गये। यह एक बहुत बड़ी हवेली थी, जिसको किराये पर लेकर 'प्रतीक' का दफ़र और उससे संबंधित व्यक्तियों के लिए रहने का प्रबंध किया गया था। नाश्ते के बाद और दोपहर एवं शाम के भोजन के बाद अज्ञेयजी, श्रीपत राय, नेमिचन्द्र जैन और भारतजी में खूब साहित्यिक बातें और गप्पें होती थीं। श्रीपतजी के ठहाके तो सारे कमरे को गुंजाते हुए हम सभी के मन में रसरंग बिखेर देते थे। पर अज्ञेयजी इन मौकों पर भी मंद-मंद मुस्काते हुए बातें करते।

सुबह के नाश्ते के समय कभी-कभी हिंदी के प्रसिद्ध कवि शीलजी भी आ जाते थे। गप्पों के साथ अक्सर वे अपनी कविताएं भी सुनाते थे। मौके की बात दो बार ऐसा हुआ कि शीलजी ने कविताएं सुनायीं और घर जाकर अपने बगीचे के कुछ पपीते भी भेज दिये। बस इन लोगों को यही बात हंसने-हंसाने के लिए मिल गयी। कहते, 'कविताएं भी सुनो और पपीते भी खाओ।' इन साहित्यकारों के कारण अन्य साहित्यकार भी आते-जाते रहते। भारतजी मजाक करते 'भाई (अज्ञेयजी), ने तो इलाहाबाद में चीमटा गाड़ दिया है। इस संबंध में भारतजी ने एक मुक्तक भी लिखा था—

घूम-फिर आये वात्स्यायन अंत में प्रयाग
गाड़ दिया चीमटा, उठाया त्याग-याग-राग
शिष्यगण आ जुटे
गुरुजी पिसे-कुटे
चीमटा गड़ा ही रहा, और सब गये भाग

अज्ञेयजी ने काटा 'पायजामा'

सन् १९५० की बात है। 'नेहरू अभिनंदन ग्रंथ' के सिलसिले में अज्ञेयजी लखनऊ के नरही महल्ले में स्थित हमारे घर में तीन-चार दिन ठहरे थे। उन्हीं दिनों हमारी बड़ी बेटी अनु का पहला जन्म दिन पड़ा। मेरा मन उसे चूड़ीदार पायजामा पहनाने को था। सो इस अवसर पर अज्ञेयजी ने उसके लिए चूड़ीदार पायजामा स्वयं काटा था। बाद में मैं मालूम पड़ा कि वह अपने पहनने के कपड़े स्वयं डिजाइन ही नहीं करते, उन्हें काटकर भी दरजी को देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके क्वार्टर में जाने पर देखा एक पंडित पूजा की सामग्री के साथ बैठा था । पंडित ने कुछ मंत्र पढ़े । दोनों के, आशीर्वचन के साथ, टीका लगाया । सिर पर पुष्प रखे ! बस हो गयी शादी की रस्म

अज्ञेय-कपिला विवाह

सन् ५६ की बात है, हम लोग इलाहाबाद में इंडियन प्रेस के बनाये क्वार्टर में रह रहे थे । हमें मालूम पड़ा कि अज्ञेय जी भी कपिला जी के साथ हमारे पिछवाड़े के क्वार्टर में आकर रहने लगे हैं ।

इस क्वार्टर में अज्ञेयजी और कपिलाजी को रहते हुए कुछ ही दिन हुए होंगे कि कपिलाजी के साथ उनकी शादी का निमंत्रण मिला । इस निमंत्रण को पाकर खुशी के साथ थोड़ा आश्चर्य भी हुआ । सुबह के ग्यारह-बारह बजे के आसपास बुलाया गया था । उनके क्वार्टर में जाने पर देखा एक पंडित पूजा की सामग्री के साथ बैठा था । पंडित ने कुछ मंत्र पढ़े । दोनों के, आशीर्वचन के साथ, टीका लगाया । सिर पर पुष्प रखे । बस हो गयी शादी की रस्म—कोई टीमटाम नहीं । (एक स्थान पर अब मैंने पढ़ा है कि उनकी शादी मंदिर में हुई थी । वहां भी कुछ आयोजन किया गया होगा पर मुझे नहीं मालूम ।) ।

अज्ञेयजी की नहीं थी तारसप्तक की योजना

पहली घटना सहयोगी उपन्यास 'बारहखम्भा' के संबंध में है । ३-३-५१ का लिखा अज्ञेयजी एक पत्र भारतजी को मिला जिसमें 'प्रतीक' के आगामी जुलाई अंक में सहयोगी उपन्यास को प्रारंभ करने की योजना थी । उन्होंने यह भी लिखा, 'यह प्रचलित ढंग का धारावाहिक न होकर एक नया प्रयोग हो, जिसका एक-एक अंश अलग-अलग लेखक द्वारा लिखा गया हो ।' इस उपन्यास को बारह अंकों में समाप्त होने की बात थी । प्रत्येक लेखक पात्रों को किस दिशा में मोड़ देकर क्या-क्या लिखेगा—यही इस प्रयोगात्मक उपन्यास का आकर्षण था । पहला अंश अज्ञेयजी ने लिखा था और सातवां अंश भारतजी ने ।

दूसरी घटना 'तारसप्तक' से संबंधित है । भारतजी ने अपने काव्य-संग्रह 'ओ अप्रस्तुत मन' (सन् १९५८) की भूमिका में अज्ञेयजी का नाम लिये बिना थोड़े व्यंग्यात्मक ढंग से और अपने लेख 'नयी कविता का संदर्भ' में स्पष्ट रूप से यह कहा था कि 'तारसप्तक' की मूल योजना अज्ञेय की नहीं थी, जबकि हिंदी साहित्य-जगत उन्हें ही मानता रहा है । यह बात भी अज्ञेयजी को अच्छी नहीं लगी । बात असल में सच थी, पर सच कभी-कभी कड़वा होता है । भारतजी और अज्ञेयजी का पत्र-व्यवहार सन् ५१ से ५८ तक बराबर रहा । इस घटना के बाद वह भी एक तरह से बंद हो गया ।

पुनर्मिलन

सन् ५९, दिसम्बर में जब हम लोग दिल्ली आये, तो उस समय अज्ञेयजी दिल्ली में ही रहते थे । दोनों ओर से इस कटुता को धो डालने की कोशिश की गयी । एक-दूसरे के घर आना-जाना शुरू हुआ । दो बार भारतजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी अनु के जन्म दिवस के अवसर पर अज्ञेयजी-कपिलाजी एवं अन्य साहित्यकारों के साथ सुल्तानगढ़ी और बटकल लेक में पिकनिक का भी आयोजन किया था ।

भारतजी और अज्ञेयजी दोनों ही कटक की साहित्य परिषद कांफ्रेंस में आमंत्रित थे । मैं भी भारतजी के साथ गयी थी । उस समय की देर-देर तक की बातें, साथ-साथ विभिन्न मंदिरों और समुद्र किनारे घूमना, कटक एवं पुरी में एक ही होटल में ठहरना, साथ-साथ खाना-पीना आदि सभी बातें ऐसी लगती हैं जैसे अभी हाल की ही घटनाएं हों । अज्ञेयजी और भारतजी की साथ-साथ समुद्र में नहाते हुए की फोटो आज भी उस समय को जीवंत बनाये हुए हैं ।

नया मोड़

भारतजी के देहावसान पर दाह संस्कार के दिन भी आये थे और उसके बाद भी इलाजी के साथ चार-पांच दिन लगातार आये थे । भारतजी के साहित्यिक जीवन और इधर की प्रकाशित पुस्तकों के बारे में पूछते रहे । जब उनको मालूम पड़ा कि भारतजी के देहावसान के ठीक दो घंटे पूर्व का नैगेटिव मेरे पास है तो वह मुझसे मांगकर ले गये और दो-तीन दिन बाद एक बड़ी तसवीर बनवाकर फोटोफ्रेम में लगाकर मुझे दे गये । आज भी यह तसवीर भारतजी के साथ अज्ञेयजी का भी स्मरण कराती रहती है ।

उनके देहावसान के लगभग २०-२५ दिन पूर्व ही मैं अपनी पुत्रवधू के साथ उनसे मिलने उनके घर गयी थी । उनसे मिलने का मुख्य कारण यह था कि उन्होंने भारतजी के नाम जो पत्र लिखे थे, अन्य साहित्यकारों के पत्रों के साथ उन पत्रों के प्रकाशन की अनुमति चाहती थीं । उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था । सब किसी से मिलने-जुलने की भी मनाही थी । पर वह मुझसे मिले, कुछ बातें की और पत्र-प्रकाशन की अनुमति भी दी । उस दिन उनके चेहरे पर छपी दीप्ति के साथ अदीप्ति का भी एहसास हुआ जो बहुत कष्टकर लगा । जिसका डर था वही हुआ और वह कुछ दिन के बाद ही चल बसे ।

—द्वारा श्रीमती अन्विता अब्बी
४४, न्यू कैंपस, आई. आई. टी.,
हौजखास, नयी दिल्ली-११००१६

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. राजा राममोहन राय, ख. ब्रह्मसमाज (१८२८ ई.), २. सर एडमंड हिलेरी (जून '५८), ख. थल-मार्ग से पहुंचा था । ३. क. १ अप्रैल '५७ से, ख. भारतीय सिक्का (संशोधन) कानून सितं. १९५५ में पास हुआ, ४. क. कैप्टेन अरुण कांदीकर ने, ख. १२,९०० घंटों की उड़ान— २७ वर्षों के सेवा-काल में, ५. क. अमरीकी शटल-यान अटलांटिस का रूसी अंतरिक्ष-यान 'मीर' से मिलन (२० जून '९५), ख. (१७ जुलाई '७५), ६. अमरीका में भारतीय मूल के १७-वर्षीय बालमुरली कृष्ण अंबाती ने, ७. अमरीका के बिल गेट्स (१२.९ अरब डॉलर) और वारेन बफेट (१०.७ अरब डॉलर)— 'फोर्ब्स' पत्रिका अनुसार, ८. मिस्र की ३३-वर्षीया एक महिला ने ६ बच्चों को (४ लड़के, २ लड़कियां), ९. क. अमरीका के पीट संप्रास, ख. जरमनी की स्टैफी ग्राफ ने, १०. कर्णम मालश्री—

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समकालीन कहानियां : कहानी का चाहे प्राचीन संदर्भ हो, चाहे अर्वाचीन, उसकी शर्त उसका कहानीपन है। वह अपने समकालीन संदर्भ में भी कहानी ही है। मनुष्य कहकर अपना सुख-दुःख बांटता है। कहकर सुख को बढ़ाता है और दुःख को घटाता है। प्रस्तुत संकलन की कहानियां भी समकालीन जीवन का आंखों-देखा हाल कहती हैं।

पुस्तक के अंत में समकालीन समीक्षकों ने आज की कहानी पर अपना सोच-विचार प्रस्तुत किया है। इससे इस संकलन की उपादेयता बढ़ गयी है।

संपादक : राधेश्याम बंधु; प्रकाशक : समग्र चेतना, यमुना विहार-११००५३; मूल्य : अस्सी रुपये।

हिमाचल इतिहास और परंपरा : हमने हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा, मंडी, चम्बा, कुल्लू, किन्नौर और शिमला आदि के नाम तो सुने हैं, लेकिन उन भू-भागों में लोग कैसे रहते हैं, क्या करते हैं, उनके क्या-क्या रीति-रिवाज हैं, हम नहीं जानते। प्रस्तुत पुस्तक हिमाचल प्रदेश के इतिहास और सांस्कृतिक विकास को वस्तुपरक दृष्टि से प्रस्तुत करती है। इसमें अतीत की जनजातियां, स्वातंत्र्य-पूर्व रियासतें और आज का जीवन रूपायित हो उठा है।

लेखक : डॉ. बी.एन. कपूर; प्रकाशक : [illegible] प्रकाशन, दिल्ली; मूल्य : १२५ रुपये।

दिव्य पुरुष गुरु नानक : गुरु नानक के जीवन और कृतित्व पर अनेक पुस्तकें हैं। लेकिन यह पुस्तक अपने विषय को सारगर्भित, सरस और सरल शैली में प्रस्तुत करती है। इसमें दर्शाया गया है कि गुरु नानक व्यक्ति, जाति विशेष के गुरु नहीं थे। वे जगत्-गुरु थे।

इसमें गुरु नानक के जीवन की सही-सही घटनाओं—यथा सच्चा सौदा, अल्लाह का सच्चा बंदा, कैसी आरती होई, डाकू का हृदय-परिवर्तन और भक्त करोड़िया का गांव द्वारा उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति और व्यावहारिक जीवन-पद्धति पर प्रकाश डाला गया है।

इस छोटी-सी पुस्तक से सभी लाभान्वित होंगे और वे अनुभव करेंगे, "मिटी धुंध, खुल चानण होया।"

लेखक : जगतराम आर्य; प्रकाशक : किताबघर, दिल्ली; मूल्य : पैंतीस रुपये।

—मोतीलाल जोतवानी

पदातिक : प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय ने रामायण के अयोध्या कांड को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की है। समकालीन समस्याओं और विविध सामाजिक विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन सामाजिक मूल्यों के विघटन को चित्रित करने का स्तुत्य प्रयास है। पौराणिक आख्यान लेकर यथार्थ के परिप्रेक्ष्य की परंपरा में इसका मूल्यांकन किया जा सकता है। राम की अस्मिता में लेखक के साथ ही पाठक की अस्मिता की खोज का प्रयास भी जारी रहेगा। भाषा विषयानुकूल गरिमामय है।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन; मूल्य : १५ रुपये।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोधयात्रा : मराठी के उपन्यासकार अरुण साधू के उपन्यास का हिंदी अनुवाद अरुंधती देवथले ने प्रस्तुत किया है । इसमें भारतीय समाज के विभिन्न वैसे रूपों को चित्रित किया गया है जो वर्तमान की सच्चाई हैं । जिनके माध्यम से समाज की विकृति के उत्तरदायी तत्वों को उजागर करने में उपन्यासकार बहुत हद तक सफल हुए हैं । कहीं-कहीं दार्शनिकता ने बोझिल अवश्य कर दिया, फिर भी कुल मिलाकर उपन्यास रोचक है । भाषा प्रांजल है ।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली; मूल्य : १७५ रुपये ।

प्रेम न बाड़ी उपजै : जाने-माने कथाकार मिथिलेश्वर ने इस उपन्यास में प्रेम के उदात्त पक्ष और आदर्श तथ्य को व्यवहार भूमि में लड़खड़ाते हुए चित्रित किया है और प्रेम के संबंध में कई पुराने-नये प्रश्नों को समाज और परिवार के संदर्भ में संवेदनशील कथा शिल्प से उठाने-सुलझाने का प्रयास किया है । भाषा की सहजता उपन्यास को विश्वसीय बना देती है ।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन; मूल्य : ९८ रुपये ।

ढलान की वेला : असमिया कथाकार एवं नाटककार डॉ. भवेन्द्रनाथ शइकिया के उपन्यास का हिंदी अनुवाद महेन्द्रनाथ दुबे ने प्रस्तुत किया है । सात कहानियां उनकी भाव चेतना, कला-संरचना, मानवीय संवेदना की प्रतिनिधि कहाएं हैं ।

भाषा में बनावट नहीं, शब्दाडंबर भी नहीं । अतः निम्न-मध्यवर्गीय असमिया समाज का चित्रण करने में ये कथाएं सफल कही जा सकती हैं । हिंदी पाठकों को असमिया समाज की प्रामाणिक झांकी देने का यह स्तुत्य प्रयास अनुवादक ने किया है ।

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन; मूल्य : १५ रुपये ।

सीता : डॉ. मंगत बादल का यह खंड काव्य आठ रूपों में सीता की वेदना-गाथा के रूप में प्रस्तुत है । पुरुष-प्रधान समाज की व्यवस्था में नारी की अस्मिता का स्वर इनकी कविताओं में व्यक्त हुआ है । मुक्त छंदों की इन कविताओं की भाषा सरल और सुग्राह्य है । आधुनिक नारी की अस्मिता के बहुत सारे प्रश्न इसमें कथ्य की सीमा के कारण अछूते रह गये । अगले काव्यों में यह कमी पूरी होगी ।

संपर्क प्रकाशन, राजस्थान; मूल्य : अस्सी रुपये ।

बिके हुए लोग : डॉ. प्रीति श्रीवास्तव की ७७ लघुकथाओं का यह संग्रह रोजमर्रा के जीवनानुभवों का संग्रह जैसा लगता है । सामाजिक विसंगतियों के विराट चित्र लघु फलक में प्रस्तुत हुए हैं । दौड़ती-भागती जिंदगी में ये कम समय में ज्यादा आनंद देने के लिए अच्छे हैं ।

अयन प्रकाशन, नयी दिल्ली; मूल्य : ३५ रुपये ।

हमवतन : डॉ. प्रीति श्रीवास्तव ने प्रीति श्री के नाम से यह लघु उपन्यास सांप्रदायिकता के उसी पुराने विषय को लेकर लिखा है । राष्ट्र प्रेम के अलावा पर्यावरण, वनसंपदा, प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीणों की स्थिति, समाजसेवा, विकलांगता, जनसंख्या वृद्धि आदि कई विषयों को एक साथ लेकर चलने के कारण कथ्य बोझिल भी हो जाता है । इसके लिए बड़े कलेवर की जरूरत होती है । भाषा सरल है ।

प्रकाशक : कल्पतरु; मूल्य : पचास रुपये ।

मुझे आकाश दो : प्रेम गुप्ता 'मानी' ने तेरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानियों का संकलन-संपादन करके आज के समाज, मानव-मन, आज की व्यवस्था पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है । अशोक गुप्त, कमलेश भट्ट, चित्रा मुद्गल, डॉ. प्रेम कुमार, राजकुमार गौतम, राबिन शॉ पुष्प, डॉ. रूप सिंह चंदल, सरेश कांत, सुषम धमीजा बेदी, डॉ. सूर्यबाला, श्रवण कुमार, प्रेम गुप्ता 'मानी' इसके कहानीकार हैं । कुछ तो प्रसिद्ध और कुछ नये । इनके चयन का आधार स्पष्ट नहीं हो सका है ।

प्रकाशक : यथार्थ प्रकाशन; मूल्य : पैंसठ रुपये ।

पथहारा : स्वामीनाथ पाण्डेय की बासठ कविताओं का संकलन है । जिसमें एक भोजपुरी कविता है । कलकत्ता प्रवास की याद में लिखी ये कविताएं बंगभूमि के प्रेम और विरह के उद्गार हैं । छंदमुक्त, छंदबद्ध कविताएं विविध भाव-भंगिमाओं की अच्छी अभिव्यक्ति हैं । काव्य-सौंदर्य भी श्रेयस्कर है । हिंदी और बंगला काव्य-प्रवृत्तियों का अपूर्व संयोग है ।

प्रकाशक : यथार्थ प्रकाशन; मूल्य : पच्चीस रुपये ।

आखिर वह मान गयी : सुरेन्द्र प्रसाद सिंह का यह उपन्यास कुछ मर्मस्पर्शी घटनाओं को विचारों में पिरोकर लिखा गया प्रतीत होता है । लेखक ने स्वयं स्वीकारा है कि सर्वोपरि आवश्यकता है अशिक्षितों को शिक्षित और शिक्षितों को ज्यादा शिक्षित बनाना, सेक्स संबंधी मामले में भी । उपन्यास इस उद्देश्य में संलग्न दीख पड़ता है । उनका यह नया और अनूठा प्रयास है ।

प्रकाशक : विमल प्रकाशन, पटना; मूल्य : ३५ रुपये ।

स्वामी हरिदास संगीत-समारोह

जहां पंडाल एक मंदिर बन जाता

वृंदावन धाम की पावन भूमि रमणरेती पर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संगीत-समारोह आयोजित किया गया । यह समारोह स्वामी हरिदास-स्मृति समिति वृंदावन द्वारा आयोजित होता है, जिसके सचिव आचार्य गोपाल गोस्वामी हैं । तीन दिवसीय समारोह में विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न कलाकार श्रद्धापूर्वक इसमें लेते हैं ।

आचार्य गोपाल गोस्वामी

३१ अगस्त ९५ को समारोह का आरंभ उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोतीलाल वोरा ने स्वामी हरिदासजी की मूर्ति के सामने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । उन्होंने स्वामी हरिदासजी के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला ।

हरिप्रसाद चौरसिया ने अपने बांसुरी वादन से एक-डेढ़ घंटे तक श्रोताओं को ऐसे ही मंत्रमुग्ध रखा । इस दिन की दूसरी प्रस्तुति भारतीय श्रीराम कला केंद्र द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका थी । श्रीराम भारतीय कला की इस प्रस्तुति में सभी पात्रों ने अपने से दर्शकों का मन मोह लिया । इसी दिन अन्य प्रस्तुति राजन-साजन मिश्र द्वारा शैली में गायन थी । राग 'विहाग' से उनका गायन राग 'नंद' के साथ समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित जगन्नाथ शहनाई बजाते हुए

दोनों बंधुओं में राजन मिश्र बड़ी खूबसूरती तान छेड़ते हैं और साजन उस तान का पकड़कर तान को आगे बढ़ाते हैं ।

प्रातःकाल ४ बजे उस्ताद फहीमुद्दीन डागर पर आये । डागर बंधु ध्रुपद गायन में विशिष्ट स्थान रखते हैं ।

२ सितंबर की शाम को कार्यक्रम का आरंभ ई की मंगल-ध्वनि ने किया । और इस को मंच से गुंजरित कर रहे थे पंडित थ । पंडित जगन्नाथ को मैं पिछले तीन से सुन रही हूं । उनके वादन में इधर काफी हुआ है ।

इसके बाद मंच पर आयीं युवा गायिका सिरोड़कर । श्रुति सिरोड़कर जयपुर घराने यिका हैं । उनके गायन में खनक देखते ती है । उनके गायन में एक करारापन है नों को बहुत अच्छा लगता है ।

इसके बाद की प्रस्तुति बिरजू महाराज और मंडली द्वारा नृत्य-नाटिका थी । पहले शाश्वती सेन के साथ 'गीत-गोविंद' पर रचनाएं प्रस्तुत कीं । तत्पश्चात उनके द्वारा अन्य रचनाएं प्रस्तुत की गयीं । के पांच बज चुके थे और श्रोताओं कर था, जसराज जी का ।

जसराजजी के गायन में आजकल भक्ति-भाव प्रमुखता से विद्यमान रहता है । इन्होंने गायन का आरंभ राग नट-भैरव से किया ।

राग नट-भैरव भक्ति परक-राग है । तीसरे और अंतिम दिन ३ सितंबर को मीनाक्षी शेषाद्रि के कार्यक्रम के कारण श्रोताओं की काफी भीड़ हो गयी जिसका पंडाल में समा पाना संभव नहीं था । एक तो मूसलाधार बारिश ने सारे कार्यक्रम को अव्यवस्थित कर दिया और राधाष्टमी के कारण श्रोताओं की जमी भीड़ ने कार्यक्रम के आरंभ होने में काफी

मीनाक्षी शेषाद्रि

व्यवधान डाला जो कार्यक्रम सात बजे आरंभ होना था वह ग्यारह बजे आरंभ हुआ ।

इतनी बारिश के बाद भी श्रोताओं के हुजूम को देखकर बड़े-बड़े शहरों से आये लोग श्रोता भी आश्चर्य कर रहे थे । और यह भीड़ एक-दो घंटे नहीं पूरी रात वहां विराजमान रही ।

कार्यक्रम में अमजद अली खान ने सरोदवादन प्रस्तुत किया । वाणी जयराम ने अपने भक्तिगीतों से श्रोताओं को मोह लिया । कुल मिलाकर कार्यक्रम ठीक था । अव्यवस्था की ओर आयोजकों को ध्यान देना चाहिए ।

—प्रभा भारद्वाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायगढ़ इप्टा का नाट्य प्रशिक्षण शिविर संपन्न

रायगढ़ इप्टा एवं दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में रायगढ़ में १५ दिवसीय नाट्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 'विवेचना' जबलपुर के नाट्य निर्देशक अरुण पांडेय, संगीत निर्देशक अभय सोहले एवं कला निर्देशक अवधेश बाजपेयी ने लगभग ३० कलाकारों को प्रशिक्षित किया।

इस शिविर का समापन, शिविर में तैयार किये गये दो नाटकों के मंचन से हुआ। स्थानीय पालिटेक्निक सभागार में जावेद अख्तर खां लिखित 'दूर देश की कथा' एवं रत्नाकर मसकरी लिखित 'लोक कथा' का सफल मंचन किया गया।

—डॉ. उषा आठले

'एक सही निर्णय' का लोकार्पण

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने कथाकार एवं साहित्यिक पत्रिका 'पुनः' के संपादक कृष्णानंद 'कृष्ण' के कथा-संग्रह 'एक सही निर्णय' का लोकार्पण करते हुए कहा कि ग्राम्य-जीवन के यथार्थबोध की स्थितियों को कृष्णानंद 'कृष्ण' की कहानियां संवेदनशीलता एवं अनुभूतिपरक दृष्टि से उद्घाटित करती हैं। इनकी कहानियां कथित प्रगतिशील नारों से सर्वथा मुक्त है।

पीयूष साहित्य परिषद की ओर से आयोजित इस संगोष्ठी में कथा-लेखन के लिए संस्था की ओर से डॉ. मिश्र ने कृष्णानंद 'कृष्ण' को 'कथा-[illegible]' की मानद उपाधि से सम्मानित भी किया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रतिष्ठ कथा-[illegible] श्रीमती उषाकिरण खान ने एवं संचालन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शिवनारायण ने किया।

आरंभ में परिषद के महासचिव डॉ. [illegible] पुष्करणा ने स्वागत भाषण किया जबकि [illegible] डॉ. हरिवंश तरुण, शमोएल अहमद, [illegible] प्रसाद द्विवेदी, निशान्तर, अवधेश प्रीत, [illegible] प्रसाद 'नवीन', ओबैद कमर, डॉ. मिथिलेश

कुमारी मिश्र, ब्रजकिशोर, सिद्धेश्वर, डॉ. [illegible] जमील आदि ने विचार गोष्ठी में बोलते हुए [illegible] होती अमानवीय व्यवस्था को अभिव्यक्त [illegible] कहानियों की विशेषताओं को उद्घाटित किया।

इंदु शर्मा कथा सम्मान, ९५

साहित्य और पत्रकारिता की कुशल हस्ती [illegible] धर्मवीर भारती ने सूरत की गीतांजलिश्री को [illegible] इंदु शर्मा कथा पुरस्कार की रकम ग्यारह हजार [illegible] रुपये, ट्राफी और प्रशस्ति पत्र के साथ अनुभूति [illegible] आशीर्वचनों से नवाजा। उन्होंने अपने भाषण में [illegible] सत्य और संवेदना के प्रति ईमानदारी और [illegible] अनुभूति दूसरों तक पहुंचाने की तड़प को [illegible] लेखन की सबसे पहली शर्त बताया। डॉ. [illegible] ने सम्मान, पुरस्कार, गुटवाद, संघ प्रशंसा [illegible] आलोचना को महत्त्वहीन और सच्चे लेखन में बाधक बताया।

मशहूर कहानीकार सुधा अरोड़ा ने [illegible] एक कविता 'गुलाब' का पाठ कर [illegible] और सोच की सुरभि श्रोताओं की संवेदना [illegible]

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ुवायी ।

...वेमणि पांडेय के संचालन में हुए इस समारोह ...ुप्रभानाथ सिंह, पुष्पा भारती, वेद राही, सूर्यभानु ..., कमलेश बख्शी, सूर्यबाला, धीरेंद्र अस्थाना, ...अभिनेता नवीन निश्चल, फीरोज ईरानी, ...भारत टाइम्स' के स्थानीय संपादक विश्वनाथ ...आलोक भट्टाचार्य, संजय मासूम, कैलाश ...हृदयेश मयंक और अन्य हस्तियों की ...गुणी अन्य प्रबुद्ध श्रोताओं के लिए सुखद रही ।

—जावेद इकबाल

रचनाकार सम्मानित

...राजयाबाद । नवोदित साहित्य मंच ...जियाबाद) के तत्त्वावधान में स्थानीय सरस्वती ...मंदिर में सम्मान समारोह एवं सरस काव्य ...का आयोजन किया गया । सम्मानित ...कार थे; डॉ. मधुरिमा सिंह (लखनऊ), ...नीरज एवं प्रभाकिरण जैन (दिल्ली) । ...कवि गोष्ठी में श्री मनजीत सिंह, कौशलेंद्र ..., कृष्ण मित्र, चेतन आनंद, दिनेश रघुवंशी, ...शर्मा, डॉ. आरती बंसल, वत्सला शर्मा तथा ...के सदस्यों ने काव्य पाठ किया । अध्यक्षता ...जय सिंह ने की तथा संचालन ब्रजेश भट्ट ने ...।

...न्न प्रदेशों की लोक कलाओं का समागम

...प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद द्वारा ...की भांति इस वर्ष भी आदिवासी, लोक ...कारी तथा रूपंकर कलाओं के समारोह ...गार का आयोजन रायपुर में किया गया । इस त्रिदिवसीय आयोजन में आठ राज्यों के चुने हुए लोक कलाकारों एवं शिल्पकारों ने शिरकत की ।

पहले दिन तुलसी सम्मान से अलंकृत आदिवासी बैगा नर्तक अर्जुनसिंह धुर्वे ने परंपरागत ढंग से कार्यक्रम का उद्घाटन किया, तत्पश्चात् परिषद के सचिव डॉ. कपिल तिवारी ने समारोह की रूप-रेखा प्रस्तुत की । परिषद ने एक कलाकार के हाथों समारोह का उद्घाटन कराकर एक नयी परंपरा की शुरुआत की ।

लोकोत्सव में इस बार संगीत मनीषी उस्ताद

अलाउद्दीन खां द्वारा तैयार विश्व प्रसिद्ध 'मैहर वाद्य-वृंद' को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था ।

डॉ. मोहन अवस्थी अभिनंदित

हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं अनुगीत के प्रवर्तक डॉ. मोहन अवस्थी का 'प्रयाग सांस्कृतिक मंच' के तत्वावधान में इलाहाबाद के हिंदुस्तानी एकेडेमी सभागार में सोत्साह अभिनंदन किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त ने की और मुख्य अतिथि थे आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री । डॉ. अवस्थी को एक दुशाला, एक चांदी की तश्तरी और चांदी का नारियल प्रदान करते हुए अपने विद्वत्तापूर्ण प्रबोधन में शास्त्रीजी ने बताया कि इस श्रावण मास में हेमाद्रि पंडित का एक संकल्प पढ़ा जाता है जिसमें पापों के प्रायश्चित्त का उल्लेख है । संकल्प के अनुसार दूसरा पाप है वंद्य का वंदन न करना । सभाध्यक्ष श्री प्रेम शंकर गुप्त ने डॉ. मोहन अवस्थी के अनुगीत संग्रह 'हलचल के पंख' का लोकार्पण किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना संगोष्ठी आयोजित

शिवहर । कादम्बिनी क्लब के तत्वावधान में रचना-संगोष्ठी का आोजन किया गया । जिसकी अध्यक्षता डा. शांति कुमारी ने की । क्लब के संयोजक अधिवक्ता श्री ओम प्रकाश मिश्र ने गोष्ठी का संचालन किया । क्लब के वरिष्ठ सदस्य श्री जयप्रकाश मिश्र ने साहित्यिक गतिविधियों को तेज करने की दिशा में कादम्बिनी क्लब की भूमिका की सराहना की ।

उपस्थित रचनाधर्मियों ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया जिनमें श्री जयप्रकाश मिश्र, अरविन्द कुमार झा, राम इकबाल राय, बलराम भूषण, भावना, विनोद कुमार सिन्हा तथा चन्द्रशेखर 'विकल' आदि प्रमुख थे । अंत में श्री चन्देश्वर प्रसाद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

कवि गोष्ठी का आयोजन

डालटनगंज । कादम्बिनी क्लब, डालटनगंज (बिहार) के तत्वावधान में एक कवि गोष्ठी आयोजित की गयी । कवि गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दू शायर प्रो. नादिम बल्खी ने की । कवि गोष्ठी में श्रीमती सुषमा सिन्हा, श्री ओम प्रकाश नारायण, प्रो. नादिम बल्खी, श्री मुकीम शाद, मकबूल मंजर, नवीन कुमार नवीन, रीमा सहाय, सपना श्रीवास्तव, डॉ. लक्ष्मी 'विमल', श्री जनार्दन द्विवेदी, डॉ. के. पी. मित्तल, श्री वृजमोहन, खलिकुजमां अनवर, प्रमोद अग्रवाल आदि कवियों एवं कवयित्रियों ने अपनी-अपनी रचनाएं सुना कर वातावरण को काव्य मय बना दिया ।

कवि गोष्ठी का संचालन डॉ. लक्ष्मी 'विमल' ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती सुषमा सिन्हा ने । कवि गोष्ठी के बाद एक विशेष पैठक भी हुई जिसमें आठ अक्तूबर १९९५ को डालटनगंज में अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन आयोजित कराने का निर्णय किया गया ।

रचना संगोष्ठी

सीतामढ़ी । कादम्बिनी क्लब के तत्वावधान में संयोजिका आशा 'प्रभात' के निवास स्थान पर रचना संगोष्ठी का आयोजन किया गया । [illegible] की अध्यक्षता श्री अरुण चन्द्र दास ने की एवं संचालन युवा कवि वसंत आर्य ने किया । [illegible] में सरकार की विकास नीति एवं बाल मजदूर [illegible] त्रासदी पर श्री सुरेश वर्मा ने चिंता व्यक्त की । क्लब की संयोजिका आशा 'प्रभात' ने कहा समस्या बाल मजदूर और गरीबी की नहीं [illegible] समस्या बढ़ती हुई आबादी की है ।

गोष्ठी के दूसरे दौर में उपस्थित कवियों ने रचनाओं का पाठ किया जिसमें श्री अरुण [illegible] दास, श्री सुरेश वर्मा, सहब आलम राही, [illegible] अली दिलकश, आशा प्रभात, वसंत आर्य, तेजनारायण प्रमुख थे । धन्यवाद ज्ञापन श्री [illegible] बिहारी शरण हितेन्द्र ने किया ।

क्लब की मासिक बैठक

साईंखेडा (नरसिंहपुर) । कादम्बिनी क्लब [illegible] जून ९५ की गोष्ठी शा. उ. मा. वि. साईंखेडा [illegible] आयोजित की गयी । गोष्ठी में क्लब के [illegible] सदस्यों ने भाग लिया ।

क्लब के सदस्यों में श्री एन. डी. बर्मेपि[illegible] देवलाल बुनकर, शेख जफर, रेवाशंकर [illegible] संजय गुप्ता, डॉ. गनेश सोनी, वेणीशंकर [illegible] (संयोजक), कीर्तिवर्धन भदोरिया, नीरज श्रीवास्तव, रामसिंह पटैल, अतरसिंह पटैल, शिवकुमार शर्मा, भानु राजपूत तथा मुकेश [illegible] रचना पाठ किया ।

पुरस्कृत कहानी पर बधाई

सहारनपुर । कादम्बिनी क्लब की एक [illegible] हुई जिसमें सभी सदस्यों ने अनीता कपूर [illegible] कादम्बिनी कहानी प्रतियोगिता में तृतीय [illegible] प्राप्त करने पर बधाई दी । पुरस्कृत कहानी 'अधखिले गुलाब' पर विस्तार से चर्चा की [illegible] सभी सदस्यों ने भाषा शैली तो बहुत सराही [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी का अंत उचित नहीं बताया । लेखिका ने मुख्य पात्र से अन्याय किया है । कहानी का अंत प्रेरणादायक होना चाहिए था ।

बैठक में रमेशचंद्र छबीला, बी. पी. सिंघल, रवींद्र जैन, कृष्ण शंकर भटनागर, अनीता कथूरिया, प्रीति कथूरिया, श्याम कुमार सैनी, ममता सिंघल, सुषमा बजाज, बिजेश जोशी, प्रमोद अग्रवाल, सतीश आर्य तथा कुमुद शर्मा आदि उपस्थित थे । गोष्ठी का संचालन रमेशचन्द्र छबीला ने किया ।

कादम्बिनी निशा का आयोजन

पेटलाबाद । कादम्बिनी क्लब पेटलाबाद की इस सत्र ही द्वितीय बैठक संपन्न हुई । इस बैठक में वर्ष भर के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गयी और २ अक्तूबर '९५ को 'कादम्बिनी निशा' मनाने का निर्णय लिया गया । हर वर्ष १०वीं एवं ११वीं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत करने का निर्णय भी किया गया । नगर के कुछ महत्त्वपूर्ण स्थानों पर वृक्षारोपण भी किया गया ।

बैठक के पश्चात सहभोज का आयोजन क्लब के सदस्य कमल भंडारी द्वारा रखा गया । बैठक में संयोजक शीतला प्रसाद गुप्ता, सचिव प्रकाश पारीक, डॉ. अरुण प्रकाश, ज्योति पटवा, भाउ पाटील, सुरेश गौड़, हेमेन्द्र गुप्ता, डॉ. सुनील गुप्ता, रतन छजलानी, अंजू यादव व रूह सदस्यों (१३' ग्रुप) ने भाग लिया ।

कविवर नेपाली स्मृति समारोह

पटना । कादम्बिनी क्लब द्वारा बुद्ध मार्ग स्थित गांधी आश्रम में नेपाली स्मृति समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता कथाकार एवं पत्रिका के संपादक कृष्णानन्द कृष्ण ने की । संचालन क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण किया । मुख्य वक्ता के रूप में चर्चित लघुकथा लेखक डॉ. सतीशराज पुष्करण ने कविवर नेपाली को 'युगबोध का गीतकार कवि' बताया । नेपाली के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए सुप्रतिष्ठ जीवनी लेखक परमानंद दोषी ने कहा कि हिंदी में उनकी सबसे अधिक उपेक्षा हुई । गीतकार ललित कुमुद सहित अन्य रचनाकारों ने भी उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला । समारोह के आरंभ में युवा संगीतज्ञ अशोक कुमार ने नेपाली द्वारा रचित 'मेरा धन है स्वाधीन कलम' सहित अन्य गीतों के गायन से माहौल को नेपालीमय बना दिया । अध्यक्षीय टिप्पणी करते हुए कृष्णानंद कृष्ण ने कहा कि गीतों के राजकुमार नेपाली 'वन मैन आर्मी' की भांति अपने जीवन एवं गीतों में तत्कालीन परिस्थितियों से लड़ते रहे ।

समारोह के दूसरे चरण में नेपाली के सम्मान में काव्य-पाठ का दौर आरंभ हुआ, जिसमें श्री राजकुमार प्रेमी, नरेन्द्र प्रसाद नवीन, मेहता नगेन्द्र सिंह, आनंद रस्तोगी, शिवनारायण, बिजय गुंजन, विन्देश्वर प्रसाद गुप्त, ललित कुमुद, सिद्धेश्वर, हलधर भारती, रामलखन सिंह मयंक, जनार्दन मिश्र, भागवत शरण झा अनिमेष, राजभवन सिंह,हरीन्द्र विद्यार्थी, दिनेश्वर लाल दिव्यांशु, राकेश प्रियदर्शी, श्रीदुला कुमारी तथा स्वरूपा गुंजन आदि कवियों ने काव्यांजलि दी । आनन्द रस्तोगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ नेपाली-स्मृति समारोह सम्पन्न हुआ ।

सरस संध्या

रांची । कादम्बिनी क्लब द्वारा शिल्पी युवा संगठन परिसर में एक कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसमें श्री अशोक कुमार अंचल, डॉ. ध्रुव तनवानी, श्री नरेश कुमार बंका, श्रीमती महुआ माजी, आलोक प्रियदर्शी एवं आलोक आदित्य ने भाग लिया । अपराह्न ३ बजे से आरंभ होकर ५.३० बजे सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण श्री अशोक कुमार अंचल के गीत रहे ।

इसके अतिरिक्त गोष्ठी में गंभीर साहित्यिक चर्चा भी हुई, शीर्षक था 'समाज में साहित्य की अलोकप्रियता ।' यह चर्चा लगभग एक घंटे तक चली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या-पूर्ति—१९३

पिपासा

प्रथम पुरस्कार

मेरी इस काया के सर्जक, ओ शिल्पी
प्रस्तर को तुमने यह रूप तो दिया है
कमनीय वेश आखिर उपकार तो किया है
चाहे तो एक अदद मन भी दे दो ना...
फिर उसके भीतर कुछ सुलगा दो प्यास
और बुझा दो पिपासा

— चन्द्रभूषण [illegible]

'आस्था', ब्राह्मणपरा, रामकृष्ण[illegible]
म. प्र.-४१[illegible]

द्वितीय पुरस्कार

उड़-उड़ आती
दूर क्षितिज से याद तुम्हारी
ले अभिलाषा

आ जाते तो बुझ जाती
फिर जलते मन की
आज पिपासा

— मंगला कुमा[illegible]

हर्टीन [illegible]
कुर्जी, पोस्ट-सरकना [illegible]
पटना-८०००१० (बि[illegible])

तृतीय पुरस्कार

शापित अहिल्या-सी खड़ी युगों से एकाकी [illegible]
किसी राम की बाट जोहते मेरे व्याकुल नैन
हो उठूं जीवंत परस से मन में एक आस
कदाचित पाषाणी की भी हो जाए शांत पिपा[illegible]

— देवकी खड़[illegible]

टी. एच.-१५४, हिंद मोटर [illegible]
पो. ऑ.-हिंद मोटर-[illegible]
जिला-दुर्गा (प [illegible])

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
१८/२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी अनमोल लाडली की खातिर.

राज लक्ष्मी

यू नि ट प्ला न

उसके सुनहरे भविष्य के लिए

विशेषताएं:

- एक असीमित अवधिवाला खुला प्लान.
- न्यूनतम निवेश राशि 1500/- रू. उसके पश्चात 500/- रू. के गुणकों में. कोई अधिकतम सीमा नहीं.
- कोई भी व्यक्ति, राज्य, केन्द्रीय सरकार, ट्रस्ट, सोसायटी, कॉरपोरेट बॉडी 5 वर्ष की उम्र तक की किसी भी लड़की के लिए निवेश कर सकता है.
- बच्ची के जन्म पर किया गया 1500/- रू. का निवेश 20 वर्षों में बन सकता है 21,000/- रू. वृद्धि का परिमाण योजना में प्रवेश के समय आयु पर निर्भर करता है।
- परिपक्वता तिथि की गणना आवेदन की स्वीकृति की तिथि से की जाएगी.
- समय-समय पर यदि बोनस घोषित किए गये तो उनका भुगतान परिपक्वता पर होगा.

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

J bokhannaUTI\5546-H

यूनिट लिंक्ड और सिक्योरिटीज में किए गये सभी निवेशों में बाजार-जोखिम होता है तथा सिक्योरिटीज बाजार को प्रभावित करनेवाले दलों व शक्तियों के अनुसार योजनाओं के एन. ए. वी. में उतार-चढ़ाव आ सकता है. राजलक्ष्मी केवल योजना का नाम है और यह किसी भी रूप में योजना की गुणवत्ता, इसकी संभावी संभावनाओं या आय का द्योतक नहीं है. निवेश करने से पहले ऑफर डॉक्युमेंट पढ़ने की कृपा करें.

❑ **नई दिल्ली : गुलाब भवन** (रीयर ब्लॉक), दूसरा तल, 6, बहादुरशाह जफर मार्ग, फोन : 3318638, 3319756. ❑ **अमृतसर :** श्री द्वारकाधीश काम्पलैक्स, तल, कोर्ट रोड, फोन : 400373. ❑ **शिमला :** 3, माल रोड, फोन : 4203. ❑ **जयपुर :** आनंद भवन, तीसरा तल, संसप चंद रोड, फोन : 365212. ❑ **कानपुर :** 16/79-ई, लाइन, फोन : 311858. ❑ **लखनऊ :** रिवैसी प्लाजा बिल्डिंग, 5, पार्क रोड, फोन : 233531. ❑ **आगरा :** सी-ब्लाक, जीवन प्रकाश, संजय प्लेस, रोड, फोन : 53719. ❑ **इलाहाबाद :** यूनाइटेड टावर्स, 53 लीडर रोड, फोन : 400521. ❑ **देहरादून :** दूसरा तल, 59/3, राजपुर रोड, फोन : 26720. ❑ **वाराणसी :** पहला तल, डी-58/2ए-1, भवानी मार्किट, चौराहा, फोन : 358306. ❑ **यूटीआई संग्रहण केन्द्र :** ❑ **फरीदाबाद :** बी-614, एनआईटी, फोन : 219156. ❑ **गाजियाबाद :** 41 नवयुग बाजार, निकट सिंघानी गेट, फोन : 716524.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष ३६, अंक २, दिसम्बर, १९९५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

- मंदिर संस्कृति के साकार रूप है • डॉ. शंकरदयाल शर्मा २४
- इंगलैंड में हिंदी, भारत में अंगरेजी • राजेन्द्र अवस्थी ३०
- व्यभिचार हमारे भीतर है • संगमलाल मालवीय ३५
- वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा • डॉ. सुधा पांडे ४०
- संकट जन विश्वास का • माधवलाल दुबे ४८
- जरूर साथी मैं पागल, ऐसा ही है मेरा हाल • विर्ख खडका 'डुवर्सेली ५०
- मैथिलीशरण गुप्त की गप्प-गोष्ठियों के लतीफे • डॉ. नगेन्द्र ५८
- रे मन चित्रकूटहि' चल • सुरेंद्र सिंह सेंगर ६०
- फैशन और सौंदर्य के बहाने मूक पशुओं की हत्याएं • प्रेम नाथ गोस्वामी ७४
- बहादुर बच्चों की मजार पर अंगरेज हुकूमत की सलामी • मंजुल भारती ७८
- 'न्यूरो सर्जरी' से बढ़ी है मानव की आयु • डॉ. वासुदेव प्रसाद यादव ८९
- तितिक्षा • त्रिलोचन दत्त जोशी १०५
- अंध विश्वास को जन्म देती बिल्ली • रामकिशोर पवार ११४
- जिन्हें राहुलजी ने बड़ा भाई बनाया था • राय प्रभाकर प्रसाद ११९
- मुगल सम्राट शाहजहां का राज-सिंहासन • डॉ. परमानंद पांचाल १२०
- कान खींचने और चपत लगाने से • कमलरंजन हिमशैल १२८
- वर्मा में नेताजी का स्वतंत्रता संग्राम • श्रीराम वर्मा १६७

- क्रीड़ा करती युवतियों के शृंगार
- वैद्य अनुराग विजयवर्गीय ६४
- दार्जिलिंग : दरियाई घोड़े-सी इंजनवाली रेलगाड़ी • रमेशचंद्र ६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

• नर्मदा घाटी में पहाड़ों की रानी • डॉ. एस. डी. एन. तिवारी..... १७४
• चुगलखोर का मकबरा और गिलहरी का पुल • मेधावसु पाठक..... १८४

कहानियां एवं व्यंग्य

• तीन लघुकथाएं • सीतेश आलोक ४५
• और दिशाएं बदल गयीं • अहिल्या मिश्रा ८१
• पंजाबी लोक कथा— दावपेंच • जसवंत सिंह विरदी ९५
• मैं हूं एक विश्वस्त नाई • अ. म. सालिक १२५
• गिरती हुई दशा पर • सरोजनी प्रीतम १८०

• कादम्बिनी साहित्य महोत्सव : भोपाल : पुरस्कृत कहानियां
• साहूकार • लक्ष्मी नारायण पयोधि १३९
• अंगूठी • मालती बसंत रमोले १४४
• बड़े बाबू • सुनील भटनागर १४८

कविताएं

• गोविंद अक्षय • शीला गुजराल १५२
• इंदिरा मोहन • बिलट पासवान 'विहंगम' १५३
• डॉ. आशा शुक्ला १५४
• बशीर अहमद 'मयूख' १५५

• कुंआरी कन्याओं का पूजनपर्व
• डॉ. महेशचंद्र शांडिल्य १२९

• लैंडस्केप पेंटिंग : मेरे अनुभव
• रामनाथ पसरीचा १३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी : साहित्य-संगीत-कला-संस्कृति पुरस्कृत कविताएं

- हमारे विकल्प ● विधुलता १७०
- गजल ● महेश सोनी १७१
- उसकी चाहत ● आभा अर्पण १७१
- हर रंग मेरे देश में ● ओमप्रकाश यादव 'तम' १७२
- हम बड़े ● अभिलाषा गुप्ता १७३
- बदलते संदर्भ ● अनिल शर्मा १७३

सार संक्षेप

- सूर्य चौबीस घंटे चमकता रहा ● जोशुआ १५६

स्थायी स्तंभ

प्रतिक्रियाएं—७, शब्द सामर्थ्य—१४, ज्ञानगंगा—१५, कालचिंतन—१६, आखिर कब तक—२०, विधि-विधान—५४, आस्था के आयाम—५७, गोष्ठी—८६, वैद्य की सलाह—९८, बुद्धि-विलास—१०१, प्रवेश—१०२, व्यंग्य-तरंग—११२, इनके भी बयां जुदा-जुदा—१४३, ज्योतिष समस्या और समाधान—१८२, नयी कृतियां—१८७, यह महीना और आपका भविष्य—१९२, सांस्कृतिक समाचार—१९४, क्लब समाचार—१९६, समस्या-पूर्ति—१९८।

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल** *वरिष्ठ उप-संपादक* : **प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव**

उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी**

प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार** *कला विभाग-प्रमुख* : **सुकुमार चटर्जी**

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।**

फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; *विदेशों में :* **पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)**

अन्य सभी देशों के लिए : **अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।**

शुल्क भेजने का पता : **प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।**

आवरण : क्रेजी ब्वॉय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिक्रियाएं

उत्कृष्ट अंक

'कादम्बिनी' (नवम्बर '९५) समूचा अंक उत्कृष्ट, रोचक, तथ्यपरक लेखों, निबंधों से भरपूर था। प्रकाशित आलेख राजनीति के अपराधीकरण का प्रतीक है रावण, वर्तमान आपराधिक राजनीति के बारे में अत्यंत मर्मस्पर्शी और जीवंत प्रस्तुति थी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

— प्रह्लाद चांडक
कैमला (राजस्थान)

संग्रहणीय अंक

'कादम्बिनी' का नवम्बर अंक पढ़ा। अंक संग्रहित करने योग्य है। 'तंत्र विशेषांक' पढ़कर इस बात की पुष्टि होती है कि आज के वैज्ञानिक युग जिसमें भूत-प्रेत, मृतात्मा को ढकोसला माना जाता है, इस अंक ने यह साबित कर दिया है कि आज सच्ची श्रद्धा, भक्ति व विश्वास के साथ यदि 'तंत्रों' का जाप किया जाए तो मनुष्य ही क्या विषैले सर्प, भूत-प्रेत व मृत आत्मा से बातचीत के साथ-साथ स्वयं ब्रह्मांड की रचना करनेवाली शक्ति को भी वशीभूत किया जा सकता है। इस बात को कभी भी असत्य नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इस तथ्य के प्रत्यक्ष प्रभाव उपलब्ध हैं।

— राकेश करहेरिया
ग्वालियर (म.प्र.)

सामग्री प्रशंसनीय है

अबकी बार नवम्बर अंक देरी से हाथ लगा। जबकि पहले मास के पूर्व-सप्ताह में ही यह स्टॉल पर आ जाता था। तंत्र पर दी गयी सामग्री मनोनुकूल व संयोजन-प्रशंसनीय है। डॉ. कात्यायन प्रमोद पारिजात द्वारा लिखा गया लेख जानकारीपूर्ण एवं कई संदेह का निवारण करनेवाला लेख है।

मुझे तो 'कादम्बिनी' एक सहचरी के रूप में मान्य है। मेरे लिए असंख्य चिह्न-बिंदु इसको साथ रखने से सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

— आर. के. स्वामी
चम्पारण (बिहार)

काल-चिंतन कोहिनूर की भांति

ज्ञान से सराबोर 'कादम्बिनी' में शब्द सामर्थ्य, तंत्र अंक, किस्से, व्यंग्य, कहानियों की मुक्तावली में 'कालचिंतन' कोहिनूर की भांति श्री राजेन्द्र अवस्थी की लेखनी से निरंतर पाठकों के हृदय में नव प्रकाश भर रहा है।

'कादम्बिनी' विशिष्ट पत्रिका है। इसमें कोई संशय नहीं है। 'कादम्बिनी' मेरी व मेरे परिवार की अंतरंग पत्रिका है।

— कु. गिरिजा मिश्रा
बरेली

कालचिंतन एवं आखिर कब तक की प्रशंसा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें इनके भी पत्र मिले हैं— देवेन्द्र कुमार पाठक, नयी कटनी जंक्शन, सुधीर सुमन, पूर्वी नवादा, भोजपुर, भारती पांडे, अरावली एसलेव, देहरादून, शत्रुघ्न यादव, भोपाल, ललित कुमार शर्मा, भोपाल, जयप्रकाश मिश्र, शिवहर, जमुना प्रसाद बडोला, मयूर विहार दिल्ली, दीपक, चंडीस्थान, दरिऔरा, गया, सुनीत यादव बड़वानी (म. प्र.)

'कादम्बिनी' कदंब वृक्ष है

'कादम्बिनी' का काल-चक्र बारहों महीने राशि-चक्र की भांति नियमित गति से घूमता रहता है और इसका प्रभाव पाठकों, लेखकों की चिंतन शक्ति को विकसित कर उनके बीच तारतम्य स्थापित किये रहता है।

भाग्यवश मैंने जिस परिवार में जन्म लिया,

पुरस्कृत पत्र

पूज्यवर गुरुजी,
चरण स्पर्श।

मैं आपका ज्यादा समय नष्ट नहीं करना चाहती, फिर भी कुछ ऐसे प्रसंग आपके समक्ष रख रही हूं, जो कभी-कभी मेरे मन को ये सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि कहीं मेरा अस्तित्व भी शून्य की पंक्ति में तो खड़ा नहीं। शहरों में अब औरत मर्द के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं लेकिन गांवों में औरत की स्थिति आज भी पीछे ही है। औरतें शहर की हों या गांव की, स्त्री अत्याचार की खबरों में तो कमी नहीं दिखती। फर्क सिर्फ इतना है कि शहरों में औरतों की स्थिति सुदृढ़ करने के लिए कई संस्थाएं काम कर रही हैं लेकिन इस 'गांवों के देश' में भला उन गिनी-चुनी संस्थाओं से कितना हो पाएगा जो मुख्य शहरों में ही हैं। अब गांव, देहात या छोटे शहरों की औरतें कहां जाएं ?

गांव के ऊपरी विकास के लिए भले ही सरकार ध्यान दे रही हो लेकिन अंदरूनी विकास अभी भी गांवों से दूर है। नहीं तो सुंदर देहातों एवं गांवों में कितनी संस्थाएं सहायता कर रही हैं, जहां बाल-विधवाएं अभागन का ठप्पा लिए निम्नस्तरीय जीवन जी रही हैं —

— जहां मजबूरी में बेटी का भविष्य जाने बिना चोरी विवाह (दहेज देने में असमर्थ लड़कीवाले राह चलते लड़के अगवा करते हैं) किया जाता है;

— जहां लड़की की आन-शान, रसोई, ससुराल, पति एवं बच्चे हैं;

— जहां पंद्रह साल की लड़की बाप की उम्र के बुढ्ढे से ब्याही जा रही है।

मैंने गांव के बारे में इतना कुछ लिखा है ये मेरे एकमात्र गांव की ही बात नहीं है। छुट्टियों में कई गांव घूमने के बाद इतना-कुछ जान पायी हूं। मेरा गांव दरभंगा (बिहार) में स्थित है। शहरी भाषा में इसे खुबसूरत भी कह सकते हैं लेकिन गांव की सच्चाइयां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य पत्रिकाओं के साथ 'कादम्बिनी' हम लोगों की अनिवार्यता थी, है और रहेगी । विधाओं की विविधता लिए हुए यह पत्रिका सर्वांगीण रूप से संतुलित एवं विशिष्ट है । इसके लिए यह मेरी प्रथम प्रतिक्रिया-पाती है, जिसे मैंने व्यक्त किया है ।

काल-चिंतन, सुरुचिपूर्ण, साहित्यिक, सांस्कृतिक, पौराणिक, तंत्र-मंत्र से भरे ज्ञानवर्धक लेख, व्यंग्य, कहानियां, स्थायी स्तंभ, पहेली सभी कुछ उत्तम परिधान में चित्रित रहते हैं और सबसे लाभदायक व प्रेरणाप्रद है 'प्रवेश' जहां से नूतन कवियों को आशा की किरण मिलती है, अपने उद्भव के लिए !

'काल-काव्य का रुचिकर माध्यम,

मात्र रहकर ही अनुभव कर सकते हैं । छुट्टियों में गांव चली जाती हूं, सैर या मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि कुछ नया जानने, नयी कड़वी अनुभूतियों के लिए । कभी-कभी गुस्सा आ जाता है जब गांव में सभी मुझे तरस की निगाह से देखते हैं कि अब तक मेरी दीदी की शादी नहीं हुई तो मेरी कब होगी ? क्योंकि मेरे उम्र की बेटियां-पतोहू एवं मां भी बन चुकी हैं और दीदी के उम्र की विधवा भी ।

मैं ये नहीं कहती कि मेरा गांव पिछड़ा हुआ है । मेरे गांव में डाकघर, स्कूल तो है, मैंने तो ऐसा गांव भी देखा है जहां नमक के लिए एक कोस चलना पड़ता है । ऐसे और भी बहुत से गांव होंगे । पढ़ाई में मिडिल पास या अशिक्षित बेटी की रुचि या जिद देखकर इनके बाप बड़े फख्र से ताने कसते हैं, 'जो भी पढ़तं सो भी मरतं, जो ना पढ़ते सो भी मरते, तब काहे को पढ़तं— कहावत सिर्फ बेटियों पर ही लागू होती है, बेटों को तो कुल का नाम उज्ज्वल करना है, चाहे शहरों में मजदूरी करके ही सही ।

खैर जागृति और बदलाव समय की जरूरत है । ऐसे ही मेरा गांव ही नहीं सारे कसबे बदलेंगे । सभी गांवों में रोशनी की किरण, गरीबी, अशिक्षा और बेड़ियों के अंधकार को जरूर मिटाएंगी और मुझे आशा ही नहीं बेचैनी से प्रतीक्षा है उस रोशनी की किरण की जो मेरे मन में आशा के दीप जला गयी है और बुझे मन में आशा के दीप जलाने के सिवा मैं कर ही क्या सकती हूं, गुरुजी ?

शायद मैं आपका समय नष्ट कर रही हूं । आगे आपकी आज्ञा मिलेगी तो आपको और बातें बताऊंगी, मिथिलांचल एवं वहां की परंपराओं के बारे में । मुझे तो खुद ही आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है । बस आपका स्नेह मिलता रहे । मैं आपके पत्र की प्रतीक्षा कर रही हूं । पत्र में हुई त्रुटियों को क्षमा करेंगे ।

अंत में, गुरुजी को मेरा प्रणाम ।

आपकी, **— रजनी**

द्वारा— श्री पी. एन. झा, गंडक कॉलोनी नं.-३,
आवास सं. डी-२४, कचहरी चौक, जि. मोतिहारी (बि.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दम-दम दमके अद्भुत ज्ञान !
मां अम्बिके बना दे इसको,
नील गगन का सूर्य महान !'

कादम्बिनी सचमुच वह कदंब वृक्ष है जिसकी छाया में रहने से नेह-स्नेह और ज्ञान की पवित्र धारा मानव को स्वस्थ मानसिकता प्रदान करती है ।

— सविता

लखनऊ (उ.प्र.)

लेख एवं कहानियों को इन पाठकों ने भी सराहा है— राकेश कुमार सिंह, आरा, भोजपुर, महेश कुमार सिन्हा, हरमू रांची, सुनील कुमार चौबे, देवगाना, गढ़वा (बि), सुरेन्द्र सहाय सक्सेना, बरकतनगर, टोंक रोड, जयपुर, बुद्धेश्वर प्रसाद सिंह, लोहरदगा, रांची, शत्रुघ्न प्रसाद, राजेन्द्रनगर, पटना, चंद्रकांत यादव, चांदीतारा, वाराणसी, डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, रामबदन राय, गाजीपुर (उ.प्र.), श्रीकांत कुलश्रेष्ठ, कोलीवाड़ा, बंबई, राधा शांडिल्य, झौआ कोठी, भागलपुर, निवेदिता मिश्र हेना वन परिसर, सिमडेगा (बि.) ।

उत्कृष्ट प्रस्तुति

विज्ञान कहता है कि पदार्थ नष्ट नहीं होता । आवाज भी नष्ट नहीं होती । रेडियो एवं दूरदर्शन कैसे आवाज और चित्र अपनी ओर संसार के किसी भी कोने से खींच लेते हैं, ठीक वैसे ही श्राद्ध बली, हमारे पितर चाहे वे कहीं भी हों, प्राप्त कर लेते हैं । वैज्ञानिकगण भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गीतोपदेश की ध्वनि इन्हीं आधारों पर पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं और शायद कुछ समय बाद यह आश्चर्य का विषय न रहे ।

अंक हमेशा की तरह उत्कृष्ट प्रस्तुति है ।

— बृज किशोर शुक्ल

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

ऐतिहासिक उपलब्धि

'कादम्बिनी' का अक्तूबर अंक मिला । जिस परिश्रम और सुरुचि के साथ आप यह प्रकाशन संपादित कर रहे हैं वह अपने में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है । बड़ा सुंदर अंक है यह । मुद्रण तथा प्रस्तुतीकरण के साथ-ही-साथ रचनाओं के संकलन में भी पर्याप्त विविधता रखी गयी है । हिंदी साहित्य में आपका यह योगदान पूर्णतः एकाकी है ।

— तारकेश्वर मैतिर

पटना विश्वविद्यालय, पटना

कहानी अच्छी लगी

अक्तूबर-९५ अंक में छपी कमलिनी कौल की कहानी 'संकल्प' हृदय को छूनेवाली है। यह कहानी सही घटना-जैसी लगती है।

— अनामिका सिंह

खगड़िया, बिहार

रोचक लेख

अक्तूबर '९५ अंक में डॉ. अमिता का आलेख 'हंस एक प्रेमी पक्षी है' अत्यंत रोचक और सूचनात्मक लगा । शुचिता और सात्त्विकता का प्रतिमानात्मक पक्षी हंस पौराणिक आख्यानों में 'पुष्पक' जैसे आभिजात्य विमानों का चालक-वाहक भी है ।

— मोहन कुमार सरकार

भागलपुर

मेरी कमजोरी है

मैं 'कादम्बिनी' की एक पुरानी एवं नियमित पाठिका हूं, कादम्बिनी मेरी कमजोरी है और मुझे इसपर गर्व है कि आप सामाजिक-राष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित छवि वाले व्यक्तियों से संबंधित तथ्यों को भी अपनी पत्रिका के माध्यम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उजागर करने में नहीं चूकते । कादम्बिनी के दीर्घायु होने की शुभकामनाओं के साथ ।

— डॉ. पूनम कुमारी

पूसा—समस्तीपुर (बिहार)

मुझे खेद है

'कादम्बिनी अक्तूबर अंक मिला; डॉ. ऐरोन लजारे का लेख— 'मुझे खेद है' कितना बेहतर था, क्या कहूं ! 'मुझे खेद है' कहकर हम दूसरों के प्रति उपकार तो करते ही हैं— अपने प्रति भी उपकार करते हैं । 'क्षमा मांगना'— स्वयं को दोषी समझने से बचाने का उपाय है ।

— राजू मेहता

जोधपुर

मधु विद्या

मैं कादम्बिनी का अक्तूबर'९५ का अंक बड़े ध्यान से पढ़ गया । पत्रिका का यह अंक ज्ञानवर्धक लेखों, सुंदर कविताओं तथा रोचक कहानियों से भरपूर है । डॉ. सुधा पांडेय उपनिषदों की नीरस कथाओं को सरस, रोचक और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत कर रही हैं ।

— डॉ. विश्वंभरदयाल अवस्थी

अतर्रा डिग्री कॉलेज, बांदा

पुराना पाठक हूं

मैं 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं । प्रत्येक माह बुक स्टॉल से खरीदकर पढ़ता हूं तथा मेरे पास पिछले दस वर्षों की कादम्बिनी सुरक्षित रखी हुई है । बीच-बीच में उन पुराने अंकों को निकालकर पढ़कर अपने को ताजा अनुभव करता हूं ।

इसी क्रम में एक शाम मेरे हाथ कादम्बिनी का सितम्बर १९८३ का अंक जंगल विशेषांक हाथ लगा । मैं उसको एक बार फिर पूरा पढ़ गया । सारी बातें जो कि वन विशेषज्ञों द्वारा लिखी गयी हैं बहुत प्रासंगिक लगीं । उसी समय मेरे दिमाग में आया कि मैं आपके पास पत्र लिखकर निवेदन करूं कि आप एक बार फिर इस वन, जड़ी-बूटी से संबंधित एक विशेषांक संपादित करें । जिससे हम पाठकों को और सामग्री पढ़ने व जानने को मिले ।

— विजय पाणि पाठक

करम टोली, रांची

(आपके विचार पर हम संभव हुआ तो भविष्य में 'जंगल अंक' छापेंगे—सं.)

तीस वर्षों से पाठक हूं

तीस वर्षों से कादम्बिनी का नियमित पाठक हूं । १९६५ से १९८० तक की प्रतियों को छह-छह अंक एक साथ बाइंड कराकर रख लिया है । अक्तूबर '९५ का 'कादम्बिनी' अंक पढ़ा । आपका चयन बहुआयामी होने से ही यह पत्रिका हर वर्ग एवं हर आयु के पाठकों की सर्वप्रिय बनी हुई है ।

— दयाचंद शर्मा

झबरेडा (हरिद्वार)

अक्तूबर अंक पर हमें ढेरों पत्र मिले हैं, उनमें कुछ पत्र हैं— डॉ. (प्रो.) द्वारका प्रसाद गुप्ता, मुख्य मार्ग; गुमला, जलज कुमार तिवारी; लक्ष्मी बाई मार्ग, कटरा, कृष्ण नारायण टंडन; सी. बी. गंज, बरेली, अविनाश वावीकर; सेंधवा, एच. एस. जिज्ञासु; मेरठ छावनी, रेणु श्रीवास्तव; कदमा, जमशेदपुर, सुभाष कुमार गुप्ता पूर्णिया, नरेश गुप्त; बरौनी बेगूसराय, हीरालाल खेराजानी; जन्मेजय मार्ग, नागदा, उज्जैन, इंदर प्रकाश; शास्त्री कॉलोनी अंबाला कैंट, आलोक पांडे; निंबोली अड्डा, हैदराबाद, अतुल खुराना 'व्याकुल'; बरेली, कमला वर्मा; बड़नगर, उज्जैन, रघुराज सिंह हाडा, माल सदर मार्ग, झालावाड़, विनय अरोड़ा, हकीकत नगर चौक, सहारनपुर, नलिनी रंजन, नयी दिल्ली, हरिदत्त पंत; हरिदास मोटा हल्दू (नैनीताल) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी

स्वास्थ्य विशेषांक
जनवरी, १९९६

★ कादम्बिनी का स्वास्थ्य विशेषांक हमेशा से लोकप्रिय रहा है। जनवरी, १९९६ का अंक हम फिर से स्वास्थ्य विशेषांक के रूप में निकाल रहे हैं। इस अंक की अपनी विशेषताएं हैं। आयुर्वेद, होम्योपैथी, यूनानी और एलोपैथी चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से इलाज करनेवाले शीर्षस्थ डॉक्टरों एवं वैद्यों की रचनाएं इसमें हम प्रकाशित कर रहे हैं। *इस अंक की कुछ रचनाएं :*

एलोपैथी । आयुर्वेद । होम्योपैथी । यूनानी । घरेलू

★ असाध्य रोग और उनकी आसान चिकित्सा
★ कैंसर की चिकित्सा-आयुर्वेद में ; होम्योपैथी में ; एलोपैथी में भी। कैंसर की चिकित्सा के लिए नये शोधों की जानकारी।
★ एड्स : चिकित्सा की संभावनाएं बढ़ीं : निदान के लिए नये प्रयोग

सामान्य रोग और उनकी चिकित्सा

● तपेदिक ● संग्रहणी ● मिरगी ● अलसर ● रक्त विकार ● मधुमेह ● अस्थमा ● बवासीर ● कब्ज ● अनिद्रा ● स्नायु रोग ● पक्षाघात-लकवा ● किडनी की बीमारियां ● आंखों के रोग

स्त्रियों के रोग और उनका इलाज

● श्वेत प्रदर ● रक्त विकार ● रक्त-प्रदर ● गर्भाशय के रोग ● बांझपन

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विशिष्ट लेख

★ वह करता है जड़ी-बूटी से कैंसर का शर्तिया इलाज
★ बाल सफेद होने के कारण और निदान
★ विलुप्त होती औषधीय वनककड़ी
★ मीनूपाज : घबराने की बात नहीं
★ पुरुषत्व के लिए उचित प्रभावकारी औषधियां
★ सामान्य रोग और उनकी रामबाण औषधियां

होम्योपैथी

★ चिकनपाक्स और होम्योपैथी चिकित्सा ★ बाल झड़ना ★ चर्म रोग
★ होम्योपैथी से एलर्जी का इलाज ★ गले-नाक के रोगों की चिकित्सा

आयुर्वेद

★ आयुर्वेद में रसायन का महत्त्व ★ जानलेवा रोग है हार्निया
★ वंशागत बीमारी है : माइग्रेन

घरेलू चिकित्सा

★ पान के पत्ते और निमोनिया का इलाज ★ अनेक रोगों के लिए लहसुन
★ आलू के छिलके से जलने का इलाज ★ सेव से ज्यादा पौष्टिक अमरूद
★ मेथी के दाने से मधुमेह का उपचार ★ नीम और तुलसी के गुणों पर लेख

एक अन्य विशेष लेख

★ इजराइल में जल व्यायाम के प्रयोग

★ सदा-सदा के लिए सहेजकर रखने योग्य महत्त्वपूर्ण विशेषांक

संपूर्ण परिवार के लिए बेहद उपयोगी कादम्बिनी का स्वास्थ्य विशेषांक

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

● ज्ञानेन्दु

१. प्रभावी— क. प्रतिष्ठित, ख. महत्त्वपूर्ण, ग. असर करनेवाला, घ. सफल।

२. संस्मरण— क. स्मरण-शक्ति, ख. याद करने की क्रिया, ग. किसी व्यक्ति या घटना के बारे में स्मरणीय लेख, घ. प्रतिभा।

३. विघटन—क. तोड़ना, ख. अलग करना, ग. त्याग, घ. विनाश।

४. लब्धप्रतिष्ठ— क. प्रभावकारी, ख. यशस्वी, ग. प्रसिद्ध, घ. आदरसूचक।

५. उपलब्धि— क. ख्याति, ख. सफलता, ग. प्राप्ति, घ. संजोकर रखना।

६. लभ्य— क. लाभ, ख. पाने योग्य, ग. सफलता पाने योग्य, घ. संग्रह करने योग्य।

७. महोत्सव— क. त्योहार, ख. सम्मेलन, ग. समारोह, घ. प्रदर्शन।

८. महोन्नत— क. प्रगति, ख. अतिशय उन्नत, ग. अत्यंत ऊंचा, घ. उच्च पदस्थ।

९. मांगलिक— क. मंगल से संबंधित, ख. मंगलजनक, ग. शुभसूचक, घ. पवित्र।

१०. बालमति— क. मूर्खता, ख. अज्ञता, ग. अनजानपन, घ. बालबुद्धि।

११. बालावस्था— क. अल्हड़पन, ख. अज्ञातावस्था, ग. बचपन, घ. भोलापन।

१२. बाहुल्य— क. बहुतायत, ख. प्रायः होनेवाला, ग. घनापन, घ. धन की अधिकता।

१३. बाह्याचरण— क. दिखावा, ख. ढकोसला, ग. बाहरी रिवाज, घ. विदेशीपन।

१४. परंपरा— क. रीति-रिवाज, ख. प्रथा जो बहुत दिनों से चली आ रही हो, ग. अटूट सिलसिला, घ. अंधविश्वास।

उत्तर

१. ग. असर करनेवाला, जिसका प्रभाव पड़ता हो। उसका व्यक्तित्व अत्यंत **प्रभावी** है। (व्युत्-प्र,भू)

२. ख. याद करने की क्रिया। ग. किसी व्यक्ति या घटना के बारे में स्मरणीय लेख (अंग. -रिमिनिसेंसेज)। युद्ध के बारे में कुछ सेनाधिकारियों के **संस्मरण** पठनीय हैं। (व्युत्. -सम्, स्मृ)

३. क. तोड़ना। ख. अलग करना। हमें हरदम सचेत रहना चाहिए कि समाज का **विघटन** न हो। (व्युत्. -वि, घट्)

४. ख. यशस्वी। ग. प्रसिद्ध। महान कार्यों के कारण व्यक्ति **लब्धप्रतिष्ठ** हो जाता है। लब्ध (व्युत्. -लभ्) +प्रतिष्ठ (व्युत्. +प्रति, स्था)

५. ग. प्राप्ति, प्राप्त की गयी सफलता (अंग. -अचीवमेंट)। विज्ञान के क्षेत्र में जगदीशचंद्र बोस की **उपलब्धि** उल्लेखनीय है। (व्युत्. -उप, लभ्)

६. ख. पाने योग्य। ज्ञान कहीं से भी लभ्य

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। (व्युत्. -लभ्)

७. ग. समारोह, बड़ा उत्सव। गंणतंत्र-दिवस एक **महोत्सव** के रूप में मनाया जाता है। महा+उत्सव (व्युत्. -उद्, सू)

८. ख. अतिशय उन्नत। ग. अत्यंत ऊंचा। परिश्रम और सौभाग्य से ही **महोन्नत** पद प्राप्त होता है। महा+उन्नत (व्युत्. -उद्, नम्)

९. ख. मंगलजनक। ग. शुभसूचक। दीपावली **मांगलिक** पर्व है। (व्युत्. -मंगल)

१०. घ. बालबुद्धि, बच्चे की बुद्धि। वयस्क जब **बालमति** से काम करने लगता है तब हास्यास्पद लगता है। (बाल+मति)

११. ग. बचपन। **बालावस्था** में बड़ा भोलापन होता है। (बाल+अवस्था)

१२. क. बहुतायत, प्रचुरता। आज देश में अन्न का **बाहुल्य** है। (व्युत्. -बहुल)

१३. ख. ढकोसला। कभी-कभी मनुष्य अपने **बाह्याचरण** से प्रभावित करने की कोशिश करता है। (बाह्य+आचरण)

१४. ख. प्रथा जो बहुत दिनों से चली आ रही हो। हमारी सांस्कृतिक **परंपरा** उज्ज्वल है। (व्युत्. -पृ)।

पारिभाषिक शब्द

Ante-dated	= पूर्व-दिनांकित
Post-dated	= उत्तर-दिनांकित
Antecedents	= पूर्व-वृत्त
Secret ballot	= गुप्त-मतदान
Voice vote	= ध्वनि-मत
Pact	= समझौता
In force	= प्रवृत्त/लागू
Compatible	= संगत/अनुरूप
Incompatible	= असंगत/बेमेल
excess	= अति/अधिकता

ज्ञान-गंगा

अमृतत्वं विषं याति सदैवाऽमृतवेदनात्।

(योगवाशिष्ठ ६०/२८)

सदा अमृत की भावना करते रहने से विष भी अमृत हो जाता है।

पातकात् पतनं ध्रुवम्।

(हरिवंश-पुराण १७/१५१)

पाप से पतन अवश्य होता है।

विनुध्वं भो बुधाः पुण्यं यत्पुण्यं सुखसंपदाम्।

(महापुराण ३७/२००)

समस्त सुख-संपदाओं के कारणभूत पुण्य का संचय करो।

लब्धोदयः खलजनः प्रथमं स्वजने करोति सन्तापम्।

उद्गच्छन्दवदहनो जन्मभुवं दारु निर्दहति॥

(नीतिद्विषष्टिका १०७)

उन्नति-प्राप्त खलजन प्रथम स्वजन को संताप देते हैं। जंगली आग जिस वृक्ष में पैदा होती है उसी अरणि-वृक्ष को सर्वप्रथम जलाती है।

आतुरस्य कुतो निद्रा।

(सौंदर्यलहरी ४/२२)

—जो मनुष्य आतुर होता है उसे निद्रा कहां ?

गुणधर्मविहीनो यो निष्फलं तस्य जीवितम्।

(मृच्छकटिकं १/३२)

—जो मनुष्य गुण और धर्म दोनों से विहीन हो, उसका जीवन निष्फल है, बेकार है।

प्रस्तुति : महर्षिकुमार पांडेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—शांति एक सपना लगती है ।
—आनंद खोजता फिरता हूं ।
—कहां हैं ये ?

●

—शांति और आनंद को अलग-अलग और समवेत इकाई भी माना जा सकता है ।
—शांति का पथ स्वरों और तीव्र आवाजों को दबाने से प्रशस्त नहीं होता ।
—आधुनिकीकरण में मशीनों की कर्कश ध्वनियां होंगी । रेलगाड़ी हो, कार या भारी वाहन अपना धर्म-गुण कैसे छोड़ेंगे ।
—वे छोड़ भी दें तो प्रकृति है ; प्रकृति का विराट विस्तार है । वह विस्तार पशु-पक्षियों के संगीतमय में कोलाहल से आवृत्त है ।
—पशु-पक्षी भी जीवित देहधारी हैं : इनमें कुछ कर्कश हो सकते हैं, कुछ मधुर स्वरों के निर्माता ।
—संभवतः नाद और स्वर के प्रणेता प्रकृति के यही प्राणी हैं । उनकी ध्वनियों को पकड़कर मनुष्य ने वादकों की सृष्टि की और वादकों के साथ अपने स्वर जोड़ दिये ।
—अर्थ हुआ कि शांति किसी चिड़िया का नाम नहीं है ।
—हमारे पदचाप भी जब स्वर छोड़ते हैं, हमारे शरीर के हर अवयव शांत नहीं हैं तो फिर बाह्य शांति कहां मिलेगी ।
—मनुष्य का शरीर निष्क्रिय होकर शव की अवस्था में ही शांत होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

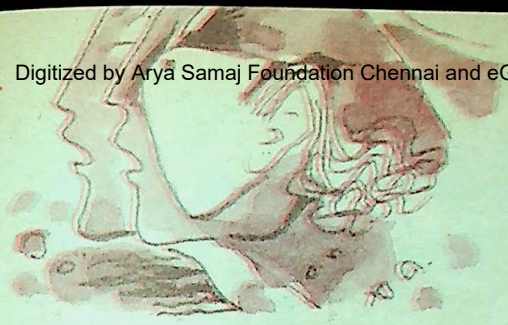

—अतः शांति खोजनी हो तो आत्मा के भीतर जाइए । आत्मा के भीतर पहुंचकर ध्यान और एकाग्रता की स्थिति में संगीतमय स्वरों को जन्म मिलेगा ।
—स्वरों को जन्म मिला तो कहा जा सकता है, स्तब्ध कौन है, शांति कहां है ?
—स्वरों का संगीत ही शांति है ।
—आत्मा का आंतरिक गीत परम शांति है ।
—एकाग्रता का प्रतिवाहन मन को विमान-यात्रा करा देता है और ऐसे लोक में पहुंचाता है जहां आनंद का अखंड भंडार है ।

●

—सड़क बीरान नहीं हो सकती ।
—सड़क का धर्म है सुविधा देना ।
—सुविधा मिलेगी तो गति के लिए वह प्राणवायु का काम करेगी ।
—हम भ्रम में होते हैं, कहते हैं 'सड़क चलती है ।'
—सड़क निर्जीव पथ और पद-चिह्न है । वह स्थिर है, वह कभी नहीं चलती ।
—उस पर चलनेवाले भ्रम पालते हैं कि सड़क चल रही है ।
—सड़क—जैसे स्थिर-बिंदु है और चलना हमारी शक्ति-क्रिया है, उसी तरह आनंद भी आत्मानुभूति है ।

●

—आनंद की खोज भी तो हमारा लक्ष्य है ।
—देखिए, शांति खोजते-खोजते आनंद और आनंद की श्रेष्ठ शक्ति सहजानंद तक हम पहुंच गये ।
—आनंद के अन्वेषक का पथचारी सत्य है ।
—सत्य का संदेश नहीं होता, सत्य का अभिषेक होता है ।
—बाग में खुरपी लेकर किसी सुंदर पुष्प-पौधे के सामने तन्मय होकर क्रियाशील हो जाइए, आनंदतिरेक की लहरें आपको स्पंदित कर देंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

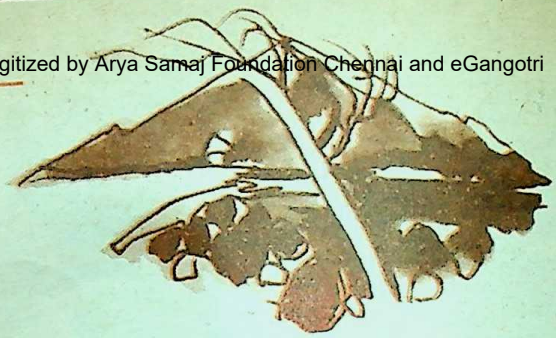

—शोर में भी शांति होती है और शोक में भी आनंद की सप्तम लहरें विद्यमान हैं।

—अकेले होकर खोजी बनने का उपक्रम निष्फल हो सकता है।

—प्रमाण स्पष्ट है : भीड़ में हम अकेले होते हैं, क्योंकि भीड़ की भयावहता से हमें आत्मरक्षा करनी होती है। ऐसे क्षणों में सोच एक सपना है।

—नितांत एकांत में हमारा व्यतीत साथ नहीं छोड़ता। सारी भीड़ हमें घेर लेती है। विस्मृत चेहरे सीधे सामने आकर हमसे बात करते हैं। हमें उनका उत्तर देना होता है।

—अर्थ हुआ कि नितांत एकांत में शांति की खोज चीड़-वृक्ष में हीरा पाने की कल्पना है।

—हीरा तो अनंत रत्नगर्भा पृथ्वी के भीतर होता है और उसे पाने के लिए शांति नहीं, क्रांति की आवश्यकता होती है।

●

—तब ?

—मिथ्या धारणा में जीते हैं वे जो हिमालय की कंदराओं में छुपते हैं।

—वहां छुपकर भी वे मनुष्य की खोज करते हैं, यह परम सत्य है। कोई व्यक्ति वहां पहुंच जाता है तो वे आल्हादित हो उठते हैं। ढोंग भले करते हों ज्ञान देने का, सचमुच ज्ञान उन्हें वह देता है जो वहां पहुंचता है।

—अपने आपसे भागना आत्महत्या है।

—हत्या करना सहज है, आत्महत्या अत्यंत कठिन कर्म है। वह चेतन मस्तिष्क के किसी तंतुशिरा के हलके से हिल जाने का पलक झपकता क्षण होता है। उसी में अनजाने आत्महत्या हो जाती है।

—आत्महत्या के जितने भी जीवित-क्षण बचते हैं वे पछतावा के शोकगीत होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—इसलिए सृष्टि से भागना कायरों का काम है ।
—मनुष्य-देह घर्षण से अवतरित होकर संघर्षण के लिए होती है ।
—संघर्षण कठिन और असाध्य परीक्षा के क्षण हैं ।
—परीक्षा का प्रतिफल अनुकूल हुआ तो उससे अधिक आनंद और सुख-शांति का क्षण और कुछ नहीं होता ।
—परीक्षा सृजन का प्रतिभूत है ।
—सृजन का सुख सर्जक ही अनुभव कर सकता है ।
—अनुभूतियां हमारी जीवनी शक्ति हैं ।
—अनुभूतियों से ही स्पष्ट होता है कि फूल कैसे खिलता है, आत्म-ज्योति कैसे जाग्रत होती है, चेतना किस तरह ऊर्द्धगामी बनती है और मनुष्य कैसे तन्मय, सचेत, शांत और आल्हादित होता है ।

●

—आल्हाद के क्षण प्रेम के परमतत्त्व हैं ।
—प्रेम के बिना जीवन रेगिस्तान है ।
—प्रेम में ही संवाद है, प्रेम में ही एकांत शांति है ।
—प्रेम की पराकाष्ठा आनंद की चरम प्राप्ति है, इसीलिए प्रेम को मनुष्य जीवन का मूलतत्त्व माना गया है । वही प्रेम जीवन को आकार देता है, वही प्रेम अग्रगामी होता है, वही प्रेम हिमगिरि बनता है और वही प्रेम जब ताप की लपटों से घिर जाता है तो ललाट का तिलक बनता है ।
—प्रेम परमात्मा से भी परे है और शांति तथा आनंद का अनंत केंद्र है ।
—प्रेम के मूलतत्त्व को पहचान लीजिए, न आपको शांति की खोज करनी पड़ेगी और न आनंद का रस पाने के लिए अपने विवेक को खोना पड़ेगा ।

रामेन्द्र अनन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

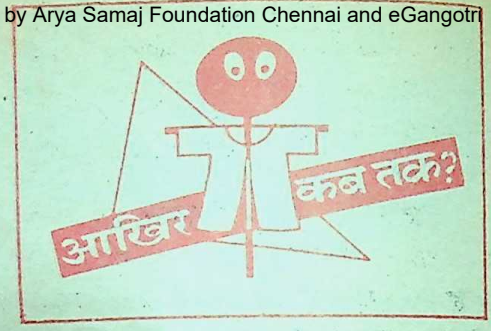

तोपोलस्की के रेखाचित्र

महात्मा गांधी की १२५वीं जन्मवार्षिकी, सरकार और कई संस्थाएं अनेक ढंग से मना रही हैं। हमारे प्रतिष्ठान की संपादकीय एवं कार्यकारी निदेशक श्रीमती शोभना भरतिया ने इस अवसर पर तोपोलस्की द्वारा बनाये रेखाचित्रों की एक सुंदर पुस्तक प्रकाशित कर एक प्रतिमान स्थापित किया है। सुमुद्रित और आकर्षक इस पुस्तक में रेखाचित्रों के साथ महात्मा गांधी के हरिजन और यंग इंडिया में लिखित विचार प्रकाशित किये गये, संक्षेप में उन विचारों का सार। मैं समझता हूं कि महात्मा गांधी को इससे अच्छी श्रद्धांजलि नहीं दी जा सकती। इस रेखाचित्र की प्रस्तावना हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

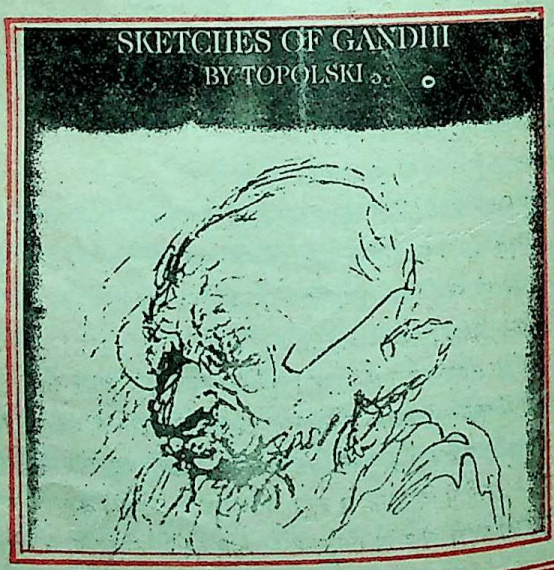

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूह के अध्यक्ष श्री के. के. बिड़ला ने लिखी है । बिड़लाजी ने प्रस्तावना में लिखा है कि हिंदुस्तान के प्रबंध संपादक श्री देवदास गांधी चालीस वर्ष पूर्व लंदन गये थे । उन्होंने वहां विख्यात रेखाचित्रकार 'तोपोलस्की' से भेंट की थी और उनके यहां जार्ज बर्नार्ड शॉ के रेखाचित्र देखे थे । तोपोलस्की का नाम भारत के लिए नया नहीं है । वह महात्मा गांधी के बहुत नजदीक रहे और तब ही महात्मा गांधी के कुछ चित्र तैयार किये थे जो हिंदुस्तान टाइम्स में प्रकाशित भी हुए थे । देवदास गांधी ने तोपोलस्की को स्मरण दिलाते हुए कहा था कि गांधीजी के आप चित्र क्यों नहीं बनाते ? परिणाम यह हुआ कि चित्रकार का सृजक मन जाग उठा और १९४४ में गांधीजी के श्वेत-श्याम अनेक रेखाचित्र तैयार किये । इस पुस्तक का मुख पृष्ठ रंगीन है और इसके रेखाचित्र तोपोलस्की ने १९४६ में बनाये थे । गांधीजी की हत्या के प्रकरण के समय चित्रकार उपस्थित थे । इस पुस्तक में संग्रहित रेखाचित्र चित्रकार की लगातार पच्चीस वर्ष की सृजनशीलता का संग्रह है । महात्मा गांधी—जैसे व्यक्तियों की याद में इससे अच्छा उपहार नहीं हो सकता । इसके लिए मैं श्रीमती शोभना भरतिया को बधाई देता हूं ।

लंदन में भुलावा

मैं जब हाल ही लंदन गया था तो किंग्सटन गार्डन में अपने एक मित्र के यहां ठहरा था । रोज शाम कोई न कोई कार्यक्रम होते थे । मुझे छोड़ने के लिए कोई लंदनवासी या ड्राइवर आता था तो मुख्य सड़क पर घर होते हुए भी वह आसानी से नहीं ढूंढ़ पाता । किंग्सटन तो वह पहुंच जाता लेकिन वह घर उसे आसानी से नहीं मिलता । मैंने उस घर की एक पहचान बना रखी थी । वह यह कि घर के सामने एक पेट्रोल पंप है । वहां बिक्री के लिए कम-से-कम सौ कारें तो जरूर खड़ी होंगी । मैं कहता था कि भई ऐसा पेट्रोल पंप है, वहां इतनी कारें हैं बस वहीं रोक दीजिए । हम घर पहुंच जाएंगे । लेकिन जो भी ड्राइवर महोदय थे वह हमेशा गलती करते रहे । ढूंढ़ना बहुत पड़ता था लेकिन आखिर उसी जगह पहुंचकर चैन मिलता था । इस बात को लेकर मेरे मित्र गंगा प्रसाद विमल ने एक अच्छा शोशा छोड़ दिया था । उसने लोगों को बताया कि किंग्सटन में एक जगह अवस्थीजी को एक सांड बैठा हुआ मिल गया । वहां एक दूध की दूकान थी । उससे पचास सेंट का एक पैकेट खरीदा और उसे दिया पांच पाउंड का एक नोट । दरजी ने विनम्रता से कहा कि साहब बाकी पैसे कल ले जाइए । दूसरे दिन जब हम वहां पहुंचे तो सांड गायब था और दरजी की दूकान थी । अवस्थीजी ने कहा कि मेरे चार पाउंड पचास सेंट वापस कीजिए । उसने पूछा किस बात

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के । उसने कहा,कल यहां पचास सेंट का दूध लिया था और पांच पाउंड दिये थे । वह बोला साहब यह तो दरजी की दूकान है । बकौल विमल अवस्थीजी ने जवाब दिया, "अच्छा, मेरे साढ़े चार पौंड से तुम दरजी बन गये ।" जो भी कार में हमें छोड़ने आती, विमल ने यह बात इतनी ज्यादा फैला दी कि किंग्सटन में भी अवस्थीजी ने एक जादू कर दिखाया । दरअसल श्री गोयल का घर जहां हम ठहरे थे । कभी आसानी से नहीं मिला और गाय तथा दरजी का यह शोशा बराबर लंदन में चलता रहा ।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' और सहरवाटी

सुमनजी बुढ़ापे में भी मजाक करने में नहीं चूकते । किसी एक अवसर पर उन्होंने निरालाजी का एक प्रसंग हमें सुनाया । उसमें बताया कि निरालाजी ने किसी एक विनोद के क्षण में व्यंग्य किया था कि यह आदमी तो 'सहरवाटी' है । अब जितने दिन हम वहां रहे, खासी मजाक होती थी और हर कोई एक-दूसरे से पूछता कि भई आज सहरवाटी कौन है ? लंदन के अधिकांश मकान बहुत छोटे हैं इसलिए सहरवाटी शब्द इतना लोकप्रिय हुआ कि आज भी मुझे जो पत्र लंदन से मिलते हैं । उसमें इस प्रसंग की चर्चा होती है ।

महामहिम पारटी

नये चुनाव की सरगरमियां खासी फैल गयीं हैं । चर्चे हो रहे हैं कि कौन-सा दल सत्ता में आएगा । हर आदमी चुनाव लड़ना चाहता है । ऐसे मौके में मुझे एक घटना से बहुत बल मिला । कुछ समय पहले मैं राष्ट्रपतिजी के साथ भोजपुर गया । भोजपुर के शिव मंदिर के पास एक मंच बना था । मंच के बायीं ओर कुरसियां रखीं थीं । वहां के आयोजकों ने एक बोर्ड लटकाया था । जिसमें लिखा था महामहिम पारटी । इस समय जब न कांग्रेस का पता है न भारतीय जनता पारटी का और जनता पारटी का कि इनमें कौन-सी पारटी जीतेगी । तो मैंने सोचा कि सबकी साख उड़ जाए तो सबसे ज्यादा साख की नयी पारटी का नाम क्यों न रख दिया जाए महामहिम पारटी । महामहिम को अब आप यहां-वहां जोड़ने की कोशिश मत कीजिए । हिंदी में इसका सीधा अर्थ है, वह दल जो महिमामंडित हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर कौन किस पर फिदा है !

अस्सी वर्ष के फिदा हुसैन कहते हैं कि मैं माधुरी दीक्षित पर फिदा हूं । उसके उन्होंने अनेक रेखाचित्र बना डाले । इन चित्रों की बिक्री से फिदा हुसैन ने काफी धन कमाया है । माधुरी दीक्षित सबसे मंहगी अभिनेत्री है लेकिन इतना धन देखकर वह भी कहती है, मैं फिदा हुसैन पर फिदा हूं । फिदा होने के लिए उमर की सीमा होती है, किसने कहा है ?

—राजेन्द्र अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर संस्कृति के साकार रूप हैं !

● डॉ. शंकरदयाल शर्मा
(भारत के राष्ट्रपति)

भोजपुर का विशाल मंदिर परमार शासक राजा भोज की उदार धार्मिक नीति का जीता-जागता प्रमाण है । इस मंदिर के स्तंभ और विशाल शिवलिंग अनायास ही मन को भव्यता से भर देते हैं । मैं यहां की चट्टानों पर उकेरे गये रेखाचित्रों, पास की पत्थर की खदानों और वहां पड़े पत्थर के टुकड़ों, मंदिर के आसपास के क्षेत्र में बिखरे और अर्द्धनिर्मित वास्तु एवं शिल्प-खंडों तथा पत्थरों को मंदिर तक ले जाने के लिए तैयार की गयी विशाल ढलान के प्रति अभिभूत होता रहा हूं । ये बातें भोजपुर के शिवमंदिर को और अधिक अनूठा एवं महत्त्वपूर्ण बना देती हैं । राजा भोज ने इस मंदिर का निर्माण करके हमारी संस्कृति को एक अनोखी थाती प्रदान की है । इसे देखकर मुझे दक्षिण में चोल शासक द्वारा बनवाये गये तंजौर के बृहदेश्वर मंदिर का स्मरण हो आता है ।

संस्कृति के महान पोषक

राजा भोज सम्राट अशोक एवं सम्राट विक्रमादित्य की परंपरा के महान सम्राट हैं । एक लोकप्रिय और कुशल शासक तथा एक वीर योद्धा होने के साथ-साथ वे शिक्षा, कला, संस्कृति और विज्ञान के भी महान पोषक हैं । वे एक कवि, ज्योतिषशास्त्री, विज्ञानाचार्य, दार्शनिक हैं । साथ ही महान वास्तुशिल्पशास्त्री भी हैं । वास्तुकला पर 'समरांगण-सूत्रधार' एवं 'युक्तिकल्पतरु' ग्रंथों की रचना करके उन्होंने अपनी ठोस वैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण प्रस्तुत किया । उन्होंने 'सरस्वती-कंठाभरण' एवं 'श्रृंगारप्रकाश' काव्यों की रचना की । 'उदयपुर प्रशस्ती' में उन्हें उचित ही 'कवि-राज' कहा गया है । धर्मशास्त्र पर 'व्यवहार मंजरी' ज्योतिषशास्त्र पर 'राजमृगांक', व्याकरण पर 'शब्दानुशासन' जैसी उनकी अनेक रचनाएं हमारी बौद्धिक विरासत के अपरिहार्य अंग हैं । उनकी भोजशाला में विभिन्न विषयों के विद्वान एकत्रित होकर विचार-विमर्श करते थे । राजा भोज की इस विद्वता, संस्कृति के प्रति उनके अनुराग तथा जनजीवन के प्रति उनके लगाव की अनेक कवियों ने प्रशंसा की है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि बिल्हण ने राजा भोज को अद्वितीय शासक मानते हुए इस बात के लिए दुःख व्यक्त किया कि वे भोज के जीवित रहते धार नहीं जा सके। कवि धनपाल ने राजा भोज के व्यापक ज्ञान की प्रशंसा की है। 'प्रबंधचिंतामणि' में राजा भोज की प्रशंसा में कहा गया है—

'कवियों, योद्धाओं, दानवीरों, गुणग्राहियों तथा ऐसे लोग, जो धर्म को अपनी संपत्ति मानते हैं, इस धरती पर ऐसा कोई नहीं है, जो भोज की बराबरी कर सके।' इन्हीं गुणों के कारण राजा भोज आज भी हमारे लोगों के दिल और दिमाग के हिस्से बने हुए हैं।

सर्वधर्म सभा का आयोजन

आज जबकि उनके द्वारा बनवाये गये शिवमंदिर के अनुरक्षण कार्य की शुरुआत हो रही है, स्वाभाविक रूप से हमें उनकी धर्म-संबंधी उदारता का स्मरण करना चाहिए। राजा भोज ने उदारता का परिचय देते हुए सर्वधर्म सम्मान को अपनाया था। मेरुतुंग की 'प्रबंधचिंतामणि' में इस बात का उल्लेख है कि राजा भोज ने मोक्ष के सही मार्ग पर विचार करने के लिए सर्वधर्म सभा का आयोजन किया था।

यहां इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि यहां से करीब आधा किलोमीटर दूर की पहाड़ी पर जैन मंदिर बना हुआ है। उस मंदिर में लगाये गये वास्तु-खंड शिवमंदिर के ही समान हैं। दोनों मंदिरों के वास्तु एवं शिल्प में भी काफी समानता है। वहां के शिलालेख की प्रथम पंक्ति में 'चंद्रार्द्धमौली' अर्थात शिव का उल्लेख मिलता है। यह इस बात का प्रमाण है कि उस समय शैव और जैन दोनों सद्भाव, सामंजस्य और समन्वय की भावना के साथ यहां रह रहे थे। राजा भोज का सर्वधर्मसम्मान का यह एक ठोस प्रमाण है।

संस्कृति और धर्म का मूल तत्त्व

सामंजस्य और समन्वय की यही भावना हमारी संस्कृति और हमारे मूल तत्त्व हैं। सहिष्णुता की इसी भावना ने हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है तथा उसकी निरंतरता को बनाये रखा है। सदियों के उथल-पुथल में भी इसकी गति भंग नहीं हुई है। इस बारे में सम्राट अशोक के शब्दों को याद करना उपयुक्त होगा। शाहबाजगढ़ी के शिलालेख में सम्राट अशोक अपने धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण, सहिष्णुता और उदारता की भावना को व्यक्त करते हुए कहते हैं :

'सुयोग्य अवसर आने पर दूसरे धर्मवालों का समुचित सम्मान करना चाहिए। इस तरह हम

उज्जैन के महाकाल मंदिर में अभिषेक करते हुए डा. शर्मा

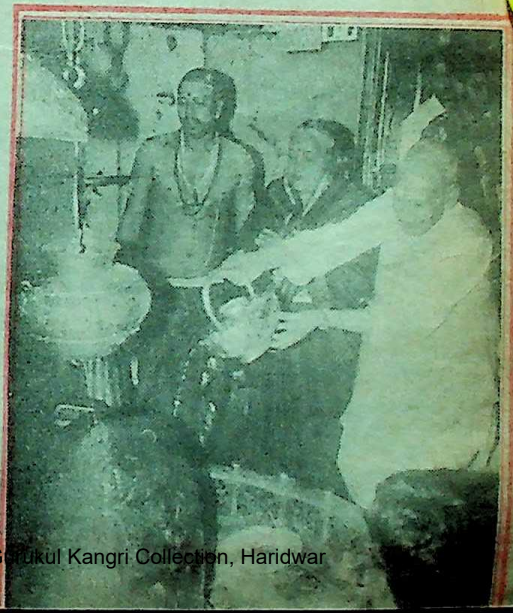

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्वयं के धर्मवालों का सम्मान बढ़ाते हैं और दूसरे धर्मवालों की भी सहायता करते हैं। इसके विपरीत चलने पर हम अपने धर्म को भी नुकसान पहुंचाते हैं और दूसरों के धर्म का भी अपकार करते हैं। जो अपने धर्म का आदर करता है और दूसरे धर्मों की निंदा करता है, उसे अपने धर्म से नीचा दिखाता है और अपने धर्म को दूसरे धर्मों से बड़ा मानता है, वह वास्तव में अपने ही धर्म को सबसे अधिक हानि पहुंचाता है।'

सर्वधर्मसम्मानवाले शासक

राजा भोज सर्वधर्मसम्मानवाले ऐसे शासक थे, जिसकी प्रशंसा मुसलिम इतिहासकार फरिश्ता तक ने की है। लोगों को प्रेम, करुणा, सेवा, सद्भाव और त्याग की हमारी इस महान परंपरा को हमेशा याद रखना है और उसी आधार पर अपने समाज और राष्ट्र को आगे ले जाना है। बहुत-से ऐसे तत्त्व होते हैं जो लोगों को इस मूल रास्ते से भटकाने से बाज नहीं आते। लोगों को इस बारे में सतर्क रहना होगा। उन्हें सोचना और जानना होगा कि इससे अंततः उनका अपना ही नुकसान होता है। धर्म जोड़नेवाला तत्त्व है, चाहे वह कोई भी धर्म हो। जो तोड़ता और भटकाता है, जो उकसाता है, वह धर्म हो ही नहीं सकता। धर्म का अर्थ है— वह, जो धारण करने योग्य हो। हमारी लोकचेतना सहिष्णुता की लोकचेतना रही है। वह भविष्य में भी वैसी ही बनी रहनी चाहिए। जब भी इस चेतना को बरगलाने की कोई भी कोशिश हुई है, तब-तब हमारे यहां सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ है। ऐसे चिंतक और समाज-सुधारक सामने आये हैं जिन्होंने हमारी लोक चेतना को सही रास्ता दिखाया। देश का प्रत्येक नागरिक इस बात को अच्छी तरह समझे और उसे व्यवहार में लाये। साथ ही इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित करे। विभिन्न धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र के बावजूद अंततः हम एक हैं और विविधता में एकता का यही भाव हमारी सबसे प्रमुख पहचान और सबसे बड़ी शक्ति रही है और उसे रहना है।

> *धर्म जोड़नेवाला तत्त्व है चाहे वह कोई भी धर्म हो। जो तोड़ता और भटकाता है, जो उकसाता है, वह धर्म हो ही नहीं सकता। धर्म का अर्थ है— वह, जो धारण करने योग्य हो। हमारी लोकचेतना सहिष्णुता की लोकचेतना रही है।*

पर्यटन का भी महत्त्वपूर्ण क्षेत्र

इस दृष्टि से यह पर्यटन का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र मालूम पड़ता है। देश का यह सबसे बड़ा राज्य पर्यटन एवं पुरातात्त्विक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहां के बहुदेशीय पर्यटन स्थल जहां लोगों को अतीत का स्मरण कराते हैं, वहीं उन्हें नैसर्गिक सौंदर्य के भी दर्शन कराते हैं। नक्काशीवाले प्राचीन मंदिर, स्तूप, किले और महल ऐतिहासिक वैभव को व्यक्त करते हैं। यहां उज्जैन का महाकालेश्वर का मंदिर, सांची के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

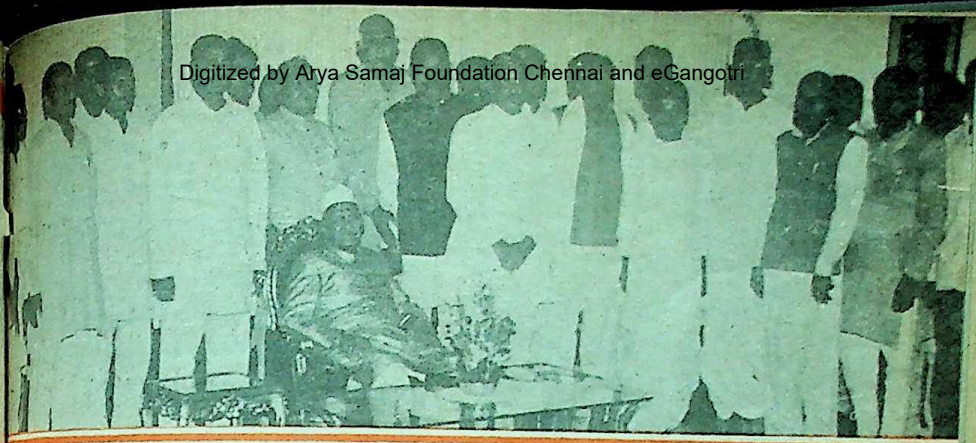

जनता के राष्ट्रपति जनता के बीच

स्तूप, उदयगिरि की गुफाएं, बाघ की गुफाएं, ऊंकारेश्वर, धार, भोजपुर का मंदिर, विश्व-विख्यात एवं अद्वितीय शिल्पकला के प्रतीक खजुराहो के मंदिर, भोरमदेव का मंदिर, मांडु के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक, ओरछा के महल, ग्वालियर का किला, भेड़ाघाट की संगमरमरी चट्टानें, प्राकृतिक सुषमा से संपन्न पंचमढ़ी, विदिशा, चित्रकूट, अमरकंटक तथा दतिया-जैसे न जाने कितने प्रसिद्ध स्थान हैं ।

आदि शंकराचार्य ने इसी बात को ध्यान में रखकर देश की चारों दिशाओं में बद्रीनाथ, रामेश्वरम पुरी तथा द्वारिका मठों की स्थापना की थी ताकि लोग पूरे देश की एकता को जान और समझ सकें । हमारे यहां 'एक भारत' की यह कल्पना सदियों से रही है । कालिदास में वृहद् भारत का सुंदर रूप देखने को मिलता है । हमारे यहां मातृभूमि की वंदना की गयी है । कहा गया है—

मातामे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बांधवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ।।

मंदिर और स्मारक हमारी संस्कृति के साकार रूप होते हैं । उनकी रक्षा करना, उनकी देखभाल करना हमारा राष्ट्रीय दायित्व है । इस मंदिर के अनुरक्षण का कार्य जन-सहयोग से किया जाए तब मैं लोगों की इस भावना का पूरा सम्मान करते हुए सबको बधाई दूंगा । जिस समाज के लोग अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति इतने सजग होते हैं, उस समाज को विकास के रास्ते पर बढ़ना-ही-बढ़ना है ।

महाकालेश्वर की नगरी में

बचपन में कालिदास के बारे में काफी सुना था । विद्यार्थीकाल में साहित्य में रुचि होने के कारण उन्हें पढ़ा और बाद में कालिदास के काव्य की नयी-नयी छटाएं क्रमशः सामने आती चली गयीं । कालिदास पहले जो थे, आज वे वैसे नहीं हैं । अब उनका अर्थ और उनका स्वरूप पहले से अधिक व्यापक, अधिक सामयिक और विश्वजनीन हो गया है । जिस कवि में सामासिकता का गुण जितना अधिक होता है, वह कवि उतना ही अधिक शाश्वत और वैश्विक होता जाता है । निश्चित रूप से महाकवि कालिदास एक ऐसे ही कवि हैं ।

उज्जैन हमारे देश की एक महान आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं प्रमुख राजनीतिक नगरी रही है । इसकी गणना मोक्ष प्रदान करने वाली महिमामयी सप्तनगरियों में की गयी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरुड़पुराण में कहा गया है—

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवंतिका
पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः मोक्षदायिकाः ।

उज्जैन के कई नाम

उज्जैन महाकालेश्वर की पवित्र नगरी रही है जिसकी आराधना करना कालिदास नहीं भूलते । बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक यहां प्रतिस्थापित है । भारतीय साहित्य में इस नगरी की महिमा इसी से प्रगट होती है कि इसे कई नामों से संबोधित किया गया है । यह अवंती भी है, उज्जयिनी, अमरावती और विशाला भी है । महाकवि कालिदास की तो यह अत्यंत ही प्रिय नगरी रही है । इतनी अधिक प्रिय कि वे अपने मेघ को कहते हैं कि यह नगरी तुम्हारे निर्दिष्ट मार्ग से हटकर है ।

भगवान कृष्ण की शिक्षास्थली

यह ऐतिहासिक नगरी भगवान कृष्ण की शिक्षास्थली रही है । यहां से महाराजा विक्रमादित्य-जैसे न्यायप्रिय राजा, महान सम्राट अशोक-जैसे सर्वधर्मसम्मानवाले शासक तथा भर्तृहरि-जैसे विचारकों का नाम जुड़ा हुआ है । यह नगरी हमारी सांस्कृतिक विरासत को निरंतर आगे बढ़ाती रही है ।

राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने उज्जैन में महाकाल के मंदिर में अभिषेक किया । इसके बाद उन्होंने भोजपुर के शिवमंदिर के जीर्णोद्धार की आधारशिला रखी । राजा भोज द्वारा बनवाये गये इस विशाल मंदिर में २६ फीट ऊंचा शिवलिंग है डा. शर्मा इन स्थानों के सिवाय भोपाल में जनता से भी मिले ।

कालिदास केवल कवि नहीं

कालिदास एक कवि मात्र नहीं हैं बल्कि वे भारत की महान संस्कृति के शाश्वत कोष हैं । सचमुच, उनके शास्त्रीय एवं व्यावहारिक ज्ञान की व्यापकता और सार्वभौमिकता को देखकर मन आश्चर्य से भर उठता है । खगोल, भूगोल, इतिहास, धर्मशास्त्र, दर्शन, राजनीति, ज्योतिष, आयुर्वेद, वेद-वेदांग, नाट्यशास्त्र, व्याकरण तथा लोककथाओं आदि के ज्ञान का शायद ही कोई ऐसा भाग हो, जिसकी झलक उनके काव्यों में न मिलती हो । मेघ को रामगिरी से अलकापुरी तक का मार्ग दिखाते हुए, रघु की दिग्विजय यात्रा तथा इंदुमती के स्वयंवर के प्रसंग के बहाने उन्होंने तत्कालीन भारत के पूरे भूगोल, प्रकृति, मनुष्य, पशु-पक्षी का वर्णन किया है । **'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः'** कहकर वे बताते हैं कि बादल कैसे बनते हैं । आकाशगंगा क्या होती है, इंद्रधनुष कैसे बनता है तथा सूर्य और चंद्रग्रहण कैसे होता है— इन सबका वैज्ञानिक वर्णन उनके काव्य में मिलता है ।

ज्ञान का अथाह सागर

साहित्य में उपमा अलंकारों के सटीक, सूक्ष्म, नवीन और हृदयग्राही प्रयोग करने के मामले में वे अनन्य थे । अपनी उपमा संबंधी विशेषता के कारण वे इतने अधिक प्रसिद्ध हैं कि 'उपमा कालिदासस्य' जैसी उक्ति ही प्रचलित हो गयी है । इसका प्रयोग उन्होंने व्याकरण जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विषय के लिए भी किया । कालिदास की समस्त साहित्यिक रचनाओं में भारत की जो झलक मिलती है, उससे यह साफ हो जाता है कि उनके ज्ञान का सागर अथाह था तथा उनके मस्तिष्क में एक विराट भारत का नक्शा था ।

महाकवि कालिदास एक ऐसे कवि हैं जिनको पढ़ने के लिए विदेशियों ने संस्कृत सीखी । उनकी रचनाओं ने उस काल में, विशेषकर यूरोपीय विद्वानों को प्रभावित किया । जब भारत उपनिवेशवादी सत्ता के अधीन था और उसकी संस्कृति को जानबूझकर पिछड़ी ठहराया जा रहा था तब कालिदास के साहित्य ने उन लोगों को अपनी गलती का एहसास कराया । जब जरमनी के प्रसिद्ध कवि गेटे ने उनकी रचना 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' पढ़ी तो वे इतने आत्ममुग्ध हुए कि स्वयं को अपने उद्गार व्यक्त करने से नहीं रोक सके । उन्होंने ये उद्गार 'फाउस्ट' में व्यक्त किये हैं । पद्य का भाव है—

यदि कोई वसंत ऋतु के कुसुम तथा शरद् ऋतु के फल प्राप्त करने का हो अभिलाषी,
यदि कोई आह्लादित एवं सम्मोहित होने का हो अभिलाषी,
यदि कोई पृथ्वी और स्वर्ग को एक ही स्थान पर देखने का हो अभिलाषी,
तो वह पढ़े सार्वभौम रचना 'शाकुंतलम्' ॥

एक भारत के दिग्दर्शक

महाकवि कालिदास 'एक भारत' के दिग्दर्शक हैं । उन्होंने अपने काव्य द्वारा पाठकों को संपूर्ण भारत तथा भारत की संपूर्ण सांस्कृतिक वैविध्य की यात्रा कराकर पूरे देश को एकता के गहरे आंतरिक सूत्र से जोड़ा । भौतिक भूगोल और मानव भूगोल का वर्णन करने की

भोजपुर में द्वारिकामठ के शंकराचार्य स्वरूपानंदजी महाराज के साथ राष्ट्रपति डॉ. शर्मा

उनकी क्षमता अदभुत थी । वे एक सुलझे हुए मार्गदर्शक की तरह बृहत्तर भारत के क्षेत्रों की प्रमुख वस्तुओं, दर्शनीय स्थल, नदी-सरोवर-समुद्र, पशु-पक्षी, वनस्पति, जनजीवन तथा उनके आचार-विचार का कहीं सूक्ष्म तो कहीं विशद् वर्णन करते हैं । यवन स्त्रियों की वीरता, मध्य एशिया के रेगिस्तान, हिमालय के यक्ष, किन्नर और किरात तथा सुमेरु-मंदराचल पर्वत आदि सब-कुछ कालिदास के काव्य में समाहित हैं ।

इन सबके साथ ही कालिदास हमें देते हैं— एक बृहत्तर एवं अखंड भारत का जगमगाता हुआ सुंदर दृष्टिकोण । वस्तुतः यही कालिदास का अर्थ है, यही संस्कृत साहित्य का अर्थ है बल्कि यही संपूर्ण भारतीय साहित्य का अर्थ है । ●

—राष्ट्रपति भवन नयी दिल्ली

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंगलैंड में हिंदी भारत में अंगरेजी

● राजेन्द्र अवस्थी

लंदन मैं शायद पांचवीं बार गया था। पिछली चार यात्राओं से कई अर्थों में यह यात्रा अधिक महत्त्वपूर्ण और सार्थक थी। पिछली यात्राएं मैंने मुख्य रूप से ब्रिटेन की सरकार के आमंत्रण पर की थीं। और तब एक निर्धारित आलीशान होटल होता था, साथ में एक गाइड और दिनभर का कार्यक्रम। ये सारे कार्यक्रम सरकार द्वारा निर्धारित किये जाते थे। और तब मुझे बहुत कम अवसर मिलते रहे हैं कि मैं वहां बसे हुए भारतीयों से मिल सकूं। मैंने क्रिसमस का त्यौहार एक बार यहीं मनाया था और नया वर्ष स्कार्टलैंड में। जिनकी यादें आज भी ताजा हैं। नये साल की सुबह स्कार्टलैंड में घर-घर जाना। उन घरों को वर्षभर के लिए सुख-समृद्धि और स्वस्थ बनाये रखने की परंपरा का पालन कर रहा था। इसके बारे में मैं विस्तार से उन यात्राओं के बाद लिख चुका हूं।

इस बार की यात्रा 'यू. के. हिंदी समिति' ने आयोजित की थी। आयोजन मुख्य रूप से श्री पद्मेश गुप्ता और श्री सुरेन्द्र अरोड़ा के सहयोग से हुआ था लेकिन वास्तविक प्रेरणा हमारे परम

कादम्बिनी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले दिनों 'यू.के. हिंदी समिति' ने इंगलैंड में एक साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया । इस आयोजन में प्रमुख भारतीय विद्वानों को आमंत्रित किया गया । भारतीय प्रतिनिधि के रूप में कादम्बिनी के संपादक की उपस्थिति उल्लेखनीय रही । प्रस्तुत हैं इंगलैंड प्रवास के अनुभव

ड्रिन और ब्रिटेन में उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी की थी । इस यात्रा में 'यू. के. हिंदी समिति' ने लंदन, मैनचेस्टर और बरमिंघम में कार्यक्रम रखे गये थे । श्री सिंघवीजी हर कार्यक्रम में उपस्थित रहे । मैंने पाया कि अपनी विनम्रता, शालीनता और कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण वह समूचे देश में अत्यंत लोकप्रिय हैं । उच्चायुक्त के पद पर रहते हुए भी उन्होंने समूचे भारतीय समाज में अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित की है । और हिंदी के प्रचार तथा प्रसार में अपनी अहम भूमिका निभायी है ।

होटल से घर भले

इस यात्रा की विशेषता यह थी कि यहां से कई पांच-छह अतिथि गये थे । उन्हें अलग-अलग भारतीय घरों में ठहराया गया था । मेरे साथ मुख्य रूप से अन्य विद्वान थे, डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन', बेकल उत्साही, मयूख, गंगाप्रसाद विमल और कन्हैया लाल नंदन । मेरे आतिथेय थे श्री ब्रज गोयल और श्रीमती उषा गोयल । किंग्सटन गार्डन में उनका भव्य, लेकिन खूबसूरत मकान । गंगा प्रसाद विमल पत्थर की तरह लुढ़कते रहे । और आखिर उन्हें शरण श्री गोयल के मकान में मेरे साथ ही मिली । उषा गोयल भारतीय भोजन और आतिथ्य में इतनी निष्णात हैं कि हम यह भूल गये थे कि हम भारत के बाहर नहीं हैं ।

परिवारों में आत्मीयता

प्रतिदिन के कार्यक्रम वहां बसे भारतीयों के बीच में शानदार ढंग से श्री पद्मेश गुप्ता ने आयोजित किये । एक शाम दो-ढाई सौ भारतीय परिवारों से आत्मीयता के साथ मिलना अपने आप में एक अनुभव है । इन कार्यक्रमों में गद्य और पद्य दोनों ही विधाएं थीं और सभी कार्यक्रम औपचारिक रूप से अनौपचारिक थे । कई लेखक और लेखिकाएं मिले जो 'कादम्बिनी' में लिखते रहे हैं । तीन कविता-संग्रहों का लोकार्पण भी किया गया । मेरे लिए यह सुखद बात थी कि 'कादम्बिनी' वहां भी लोकप्रिय है और पूरी तरह पढ़ी जाती है । इसका उदाहरण यह है कि मैनचेस्टर में कुछ श्रोता मेरे मुख से 'काल-चिंतन' सुनना चाहते थे । मैं अपने साथ 'कादम्बिनी' के अंक तो ले नहीं गया था । इसलिए मैंने अपनी विवशता प्रकट की । तभी एक महिला लेखिका ने 'कादम्बिनी' का एक अंक मुझे लाकर दिया और कहा, "लीजिए लंदन में भी आपकी पत्रिका हाजिर है । हम 'काल-चिंतन' से लेकर उसकी हर पंक्ति को पढ़ते नहीं, चबा जाते हैं ।" मेरे लिए वह कितनी बड़ी खुशी का क्षण रहा है । यह पाठक अच्छी तरह समझ सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुटकुलेदार कवि सम्मेलन नहीं !

तीनों शहरों में एक हजार से अधिक वहां बसे हुए भारतीय मिले । उनमें से कई तो अच्छे मित्र बन गये । शाम गद्य की हो या पद्य की, सभी को उसने आत्मसात कर लिया था । डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' सबसे वृद्ध और विद्वान व्यक्ति हैं । उनके भाषणों और संस्मरणों की हर जगह सराहना हुई । भारत में होनेवाले घटिया और चुटकुलेदार कवि-सम्मेलन वहां सफल नहीं हो सकते । वहां की जनता ने अत्यंत धीर-गंभीर कविताओं का बहुत रात तक रसास्वादन किया । उन्होंने इच्छा प्रकट की कि इस तरह के आयोजन लगातार होते रहें । बरमिंघम और मैनचेस्टर के श्रोताओं में वैसी ही आत्मीयता थी जैसी हमारे देश में महानगरों के बाहर होती है ।

नयी पीढ़ी भारत आना चाहती है

मुझे विशेष रूप से कुछ घरों में भी शाम की पारटियों में आमंत्रित किया गया । बहुत दूर-दूर बसे भारतीयों के यहां आधी रात के बाद तक मिलन गोष्ठियां और पारटियां चलती रहीं । वहां उपस्थित हर व्यक्ति अपने मूल देश भारत की झलक हमारे चेहरों और शब्दों में देख रहा था । कुछ लोग तो ऐसे हैं जिन्हें वहां बसे आधी सदी से ज्यादा बीत गयी । वे चाहते हैं कि उनके लड़के भारत आयें और अपनी जन्मभूमि को देखें । बरमिंघम की हिंदी समिति के प्रमुख एक सरदारजी थे । उन्होंने अपने घर पर पारटी देते समय यह आशा व्यक्त की कि उनके परिवार के सभी लोग क्रमशः भारत जाएं । उनकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत थी । उन्होंने मुझे जानकारी दी कि दिसम्बर में वे कानपुर में एक बहुत बड़ा आयोजन करने जा रहे हैं । यहां पर वे विश्व हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना करेंगे । पूरा आर्थिक सहयोग उन्हीं का रहेगा । एक सुयोग धोखे से हो गया । उन्हीं दिनों बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव इंगलैंड पहुंचे थे । भारतीय उच्चायोग के हॉल में मेरी उपस्थिति में उन्होंने इस विश्वविद्यालय के लिए पंद्रह लाख रुपये अनुदान देने की घोषणा भी कर दी । मुझे विश्वास है कि यदि हमारे और इंगलैंड में बसे भारतीयों के बीच ठीक संपर्क बना रहा तो इस 'खुली नीति' के अंतर्गत हमारे देश में कई नयी योजनाएं आरंभ की जा सकेंगी ।

प्रवासी भारतीय हिंदी बोलना पसंद करते हैं

मैं इस बात को फिर दोहराना चाहता हूं कि मुझे लगा—इंगलैंड की यह मेरी पहली यात्रा है । मैंने इतने मित्र बना लिए हैं कि जब चाहूं वहां जा सकता हूं । भारत में हिंदी का 'नाम-जाप' करनेवालों के लिए आंख खोल देनेवाली बात होगी कि इंगलैंड में बसे भारतीय अंगरेजी के बदले शुद्ध हिंदी बोलना पसंद करते हैं । उन्होंने हिंदी स्कूल खोले हैं । मंदिर और गुरुद्वारे बनाये हैं । और राम-कथा से लेकर सत्यनारायण की कथा तक अत्यंत प्रेमभाव से करते हैं ।

भारतीय संस्कृति का केंद्र : नेहरू सेंटर

लंदन में 'नेहरू सेंटर' भारतीय संस्कृति और साहित्य का बहुत महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया है । इस केंद्र को बनाने में भी डॉ. सिंघवी का हाथ रहा है । केंद्र के निदेशक स्वर्गीय देवदास गांधी के पुत्र डॉ. गोपाल गांधी ने एक कार्यक्रम अपने केंद्र में रखा था । वहां हम सब अतिथियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषण तो हुए ही, मुख्य बात थी महादेवी वर्मा के चित्रों को परदे में रखते हुए उनकी चुनी हुई कविताओं के पाठ । महात्मा गांधी की १२५वीं वर्षगांठ के अंतर्गत भी डॉ. गोपाल गांधी ने वे पुराने चित्र परदे पर प्रस्तुत किये जो हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम की समग्र चेतना के प्रतीक हैं। नेहरू केंद्र 'हाइड पार्क' के पास लंदन शहर के बिलकुल मध्य में स्थित है । कृष्ण मेनन जब यहां भारत के उच्चायुक्त थे, तब से इमारत भारतीय उच्चायोग के हाथ में है । इस शानदार इमारत की कीमत दो करोड़ पौंड से अधिक ही होगी । इस इमारत की मरम्मत करने में पच्चीस लाख पौंड खर्च किये गये । अब स्थिति यह है कि नेहरू सेंटर 'सांस्कृतिक लघु भारत' बन गया है । वहां रोज कोई न कोई भारतीय कार्यक्रम होते हैं—चाहे चित्रप्रदर्शनी हो, अमजद अली खां—जैसे श्रेष्ठ संगीतज्ञ के कार्यक्रम हों, नृत्य हों या काव्य-संध्याएं । इतने अच्छे केंद्र को स्थापित करने के लिए मैं डॉ. सिंघवी और डॉ. गोपाल गांधी दोनों की प्रशंसा करूंगा

लंदन में मंदिर—शुद्ध भारतीय भोजन

'कादम्बिनी' के अगस्त अंक में मैंने रमेश भाई का उल्लेख किया था । उन्होंने मंदिर नाम से विशुद्ध शाकाहारी होटल खोला है । हमारे सहयोगी श्री सूरजमल अग्रवाल ने लंदन जाने के पहले रमेश भाई को मेरे पहुंचने की सूचना दे दी थी । उन्होंने दोपहर के भोजन के लिए सभी भारतीय अतिथियों को आमंत्रित किया । ये रमेश भाई का मंदिर, रेस्टोरेंट इक्कीस हैनवे प्लेस, हैनवे स्ट्रीट, डब्लयू वन में स्थित है । यह स्थान टौटल हिल, कोर्ट स्टेशन के पास है । रमेश भाई ने मंदिर रेस्टोरेंट में विशुद्ध शाकाहारी लेकिन स्वादिष्ट भोजन खिलाकर अपनी मेहमाननवाजी का खासा परिचय दिया । सुरुचिपूर्ण ढंग से छपी हृदयगंगा की प्रति भी उन्होंने सभी को भेंट की । इसके बाद संगीत का कार्यक्रम भी उन्होंने आयोजित किया । सुमधुर कंठों से भारतीय भजन सुनना लंदन की धरती में वरदान है । रमेश भाई ने अपने होटल 'मंदिर' के एक हिस्से में आयुर्वेदिक औषधि का भी काउंटर बनाकर रखा है । वह मनोयोगपूर्वक आयुर्वेदिक औषधि की बिक्री और प्रचार करते हैं । लंदन में हम तेरह अक्तूबर को पहुंचे थे और रहे तो दस-ग्यारह दिन ही, लेकिन वापस लाये दस-बारह वर्षों की स्मृतियां और सैकड़ों भारतीय मित्र ; इस आशा और विश्वास के साथ कि जब चाहें हम इंगलैंड जा सकते हैं । ●

'नरम बिस्तर जानलेवा'

वैसे तो अभी तक मुलायम बिस्तर शिशुओं के लिए लाभदायक माना जाता रहा है किंतु, सेंट लुईस, मिसौरी स्थित यूनिवर्सिटी स्कूल ऑव मेडिसिन के बाल रोग विशेषज्ञों के अनुसार नवजात शिशुओं की रहस्यमय मौत का कारण खास अवरोधन की जटिलता है, जो नरम बिस्तर में चेहरे के बल सोने के कारण होती है । इस बाल रोग विशेषज्ञों ने २५ शिशुओं पर अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला है ।

मंजु पाठक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ArnikaPlus-TRIOFER ArnikaPlus-TRIOFER ArnikaPlus-TRIOFER

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों का गिरना ? असमय सफेद होना ? रूसी ?

बालों की समस्या ?

ये सब बालों के रोग नहीं, रोग के लक्षण मात्र हैं। इनके समाधान के लिए सिर में लगाने की औषधि के साथ-साथ खाने की सटीक दवा की भी जरूरत है।

रूसी रहित, सघन, काले, रेशमी बालों के लिए **अर्निकाप्लस** लगायें और **ट्रायोफर** खायें। बालों का गिरना बंद करें। बालों को पोषाहार प्रदान करें। असमय सफेद होने से रोकें, सिर से रूसी भगायें, सिर को ठंडा रखें, पेट की गड़बड़ी दूर करें, बालों का उपादान बढ़ायें, तभी तो नये बाल निकलते हैं। होमियोपैथिक के स्पर्श से रूप में निखार आये। इससे लाभ छोड़कर हानी नहीं होती।

विश्व में पहली बार

बालों की समस्या के समाधान के लिए

डा. सरकार का एक फलप्रद आविष्कार-

अर्निकाप्लस-तेल रहित होमियो हेयर लोशन और

ट्रायोफर टैब्लेट-होमियो हेयर टॉनिक

बिलकुल नई, नये रूप में ट्रायोफर टैबलेट ब्लिस्टार पैक में। अर्निकाप्लस लोशन के साथ जल्द ही आ रहा है।

व्यवहार करने की विधि भीतर में है।

अर्निकाप्लस-ट्रायोफर

ट्रिपल एक्शन हेयर वाइटलाइजर

बालों की समस्या के समाधान के लिए अच्छी तरह से परखा हुआ और प्रमाणित होमियो औषधि।

लिवोसिन निर्माताओं की सहयोगी संस्था Allen की होमियो गवेषणा का एक तोहफा।

एलेन लेबोरेटरीज लिमिटेड

अर्निकाप्लस अपार्टमेन्ट, कलकत्ता-९, फोन : ३५१-००४४

एलेन हाउस : कलकत्ता-५४, फोन : ३६-३०९६

एलेन भवन : कलकत्ता-५०, फोन : ५५१-६०५१

Allens Dr. Sarkar Group

एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक औषधि-प्रस्तुतकर्ता

जिसके हिफाजत से ही आपका आरोग्य और विश्वास।

विपणनकर्ता : Allens एलेन्स इंडिया लि

अर्निकाप्लस अपार्टमेन्ट, विपणन

३५, ए. पी. सी. रोड, कलकत्ता

फोन : ३५०-९०२६/३५१-००

प्र. का. एलेन्स अपार्ट : ३५१-००

Allen's Ltd

BoroAllen BoroAllen BoroAllen

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यभिचार हमारे भीतर है !

● संगमलाल मालवीय

कौटुंबिक यौनाचार की घटनाएं इधर बड़ी तेजी से बढ़ी हैं । अगर यही हालात रहे तो शायद, स्थिति इतनी नाजुक हो जाए कि आनेवाले समय में अलग से कोई कानून बनाना पड़े । हाल-फिलहाल, तमाम शोर-शराबे के बावजूद देश के विधि-निर्माता इस ओर अधिक जागरूक नजर नहीं आ रहे ।

उस यौन-उन्मादी का नाम सतपाल यादव है । दिल्ली पुलिस ने हाल ही में उसे अपनी बेटी के साथ दुराचार और उसकी हत्या के आरोप में गिरफ़्तार किया है । दरअसल, अपराधी सतपाल यादव अपनी बेटी की हत्या के जुर्म में अपने मकान-मालिक चंद्रमोहन को फंसाकर खुद बच निकलना चाहता था, लेकिन पुलिस द्वारा इस आपराधिक मामले की छानबीन के दौरान वह खुद ही फंस गया । अपराधी के संबंध में गौरतलब बात यह है कि सतपाल यादव इस संगीन अपराध से पूर्व विगत दो वर्षों से अपने युवा मकान-मालिक की दो नाबालिग बहनों (उम्र क्रमशः ९ और १२ वर्ष) और उसके चौदह वर्षीय भाई के साथ बेखौफ दुराचार करता रहा है । वह खुद मकान-मालकिन के साथ भी बलात्कार करने का असफल दुस्साहस कर चुका है । 'नेताजी' कहलानेवाले इस व्यक्ति से मकान-मालिक डरता था । यही वजह है कि उसने सारी जानकारी होने के बावजूद पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने की हिम्मत नहीं की । आखिरकार, स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मकान-मालिक की बड़ी बहन ने सतपाल यादव के खिलाफ एक नामजद रिपोर्ट पुलिस में दर्ज करायी । मकान-मालिक के भाई-बहनों की मैडिकल जांच के बाद यह पता चला कि बच्चों के साथ लंबे समय से दुराचार होता रहा है । फलतः पुलिस ने सतपाल यादव को गिरफ़्तार कर जेल भेज दिया ।

दिल्ली पुलिस के अनुसार अपराधी सतपाल अपनी बेटी की शादी के बहाने ४५ दिन की अंतरिम जमानत लेकर घर आया । इस बीच एक दिन वह बदनीयती से चुपचाप अपनी आठ वर्षीया बेटी को नोएडा स्थित एक एकांत कमरे में ले गया । जहां उसने उसे चारपाई से बांधा और दुराचार के बाद मारने के लिए गला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दबाया । लड़की के चीखने-चिल्लाने पर उसने उसका सिर चारपाई के पाये से बार-बार टकराया और उसे बेरहमी से मार डाला । लड़की के यकायक गायब होने पर उसकी पत्नी ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा दी । अदावत के कारण सतपाल ने अपने मकान-मालिक पर शक जाहिर किया । लेकिन उसकी आपराधिक पृष्ठभूमि के कारण पुलिस की पैनी नजरें उसकी ओर भी थीं । पुलिस ने जब खुद सतपाल यादव से ही पूछताछ की तो पहले तो वह स्वयं को निर्दोष बताता रहा लेकिन, पुलिस की कड़ी जांच-पड़ताल के बाद उसने सारा भेद खोल दिया । उल्लेखनीय है कि वह स्वयं को उत्तर प्रदेश के एक पूर्व मुख्यमंत्री का नजदीकी रिश्तेदार बताता है । यहां यह भी गौरतलब है कि 'नेताजी' कहलानेवाले इस यौन-उन्मादी को अंगरक्षक भी मिला हुआ था,जिसकी वजह से इलाके के लोग इससे डरते थे ।

नाजुक दौर

कौटुंबिक यौनाचार की घटनाएं इधर तेजी से बढ़ी हैं । अगर यही हालात रहे तो शायद, स्थिति इतनी नाजुक हो जाए कि आनेवाले समय में अलग से कोई इंसेस्ट एक्ट बनाना पड़ जाए । हाल-फिलहाल, तमाम शोर-शराबे के बावजूद देश के विधि-निर्माता इस ओर अधिक जागरुक नहीं दिखायी दे रहे हैं । अंगरेजी भाषा के शब्द 'इंसेस्ट' या कौटुंबिक यौनाचार का आशय यह है कि यौन-अपराध जो रक्त-संबंधियों के बीच अपने ही कुटुंब में घटित हो ।

अब तक उपलब्ध तथ्यों के अनुसार अधिसंख्य मामले पिताओं द्वारा अपनी बेटियों के साथ बलात्कार के हैं ।।

कमलेश की यातना

दिल्ली की एक झुग्गी बस्ती में रहनेवाली कमलेश देखने में सुंदर, सौम्य और गृहकार्य में दक्ष लड़की है । स्कूल में वह हमेशा अव्वल नंबरों से उत्तीर्ण होती रही है । उसका जीवन कमोबेश ठीक-ठाक चल रहा होता, यदि एक दिन वह अपने पिता की हवस का शिकार न हुई होती तो । उस रोज उसका बाप शराब के नशे में धुत्त घर पहुंचा । मां घर में नहीं थी । निर्दयी बाप की मारपीट से डरे-सहमे उसके बच्चों ने उसे बताया कि "दीदी के लिए किताबें खरीदने मां बाजार गयी है, आती ही होंगी ।" यह सुनते ही वह आग-बबूला हो गया । उसने सभी को बेइंतहा गालियां दीं, चीखा-चिल्लाया । बच्चे डर के मारे कांपते हुए एक कोने में सहमे दुबक गये । थोड़ा शांत होने के बाद उसने तेरह वर्ष की अपनी बेटी कमलेश से पानी लाने के लिए कहा और सभी बच्चों को घर से बाहर भगा दिया । जब कमलेश पानी लेकर आयी, तो उसने उसके गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया । कमलेश कुछ समझ या बोल पाती, इससे पहले ही वह उसे घसीटता हुआ झुग्गी की अंदरवाली कोठरी में ले गया और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया । इसके बाद उस शराबी बाप ने अपनी बेटी के साथ पाशविक बलात्कार किया । वह असहाय रोती-चिल्लाती मिन्नतें करती रही, लेकिन उसे बचाता कौन ? घर लौटने पर मां को इस कलंकित हादसे का पता चला । तब तक वह खर्राटे भरने लगा था ।

उस दिन के बाद से कमलेश गुमसुम रहने लगी, उसने स्कूल जाना छोड़ दिया । वह समझ ही नहीं पा रही थी कि उसका बाप कानूनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेड़िया कैसे बन गया ? पर यह तो सिर्फ कलंकित दिनों की शुरुआत थी । उसके बाद तो कमलेश आये दिन पिता की कामुकता का शिकार होने लगी । मासूम कमलेश की जिंदगी में अभी और कुछ कसर बाकी थी । चौदह साल की उम्र में कमलेश को वह शर्मनाक दिन भी देखना पड़ा, जब उसकी कोख में पिता नाम के दरिंदे का 'अंश' महसूस होने लगा । आखिर, एक दिन कमलेश और उसकी मां के सब्र का बांध टूट गया । फलतः यह केस पुलिस की डायरी में दर्ज हो गया । लेकिन, क्या दुनिया की कोई अदालत कमलेश को न्याय दिला पाएगी ?

बहशी बाप और भूखे भेड़िये

विगत महीनों में 'इंसेस्ट क्राइम' के कई संगीन मामले पुलिस में दर्ज हुए और अखबारी सुर्खियों में आये हैं । ऐसा ही एक जघन्य मामला विगत २७ अप्रैल को पुलिस में दर्ज हुआ । पिता कहलानेवाले इस पाशविक व्यक्ति का नाम करमचंद ठाकुर है । यह केंद्र सरकार के गृह-विभाग में अनु-सचिव के पद पर कार्यरत है । इसकी कामुक दरिंदगी और कुत्सित मानसिकता का पता तब चला, जब खुद उसकी पत्नी बमुश्किल पुलिस थाने में केस दर्ज करा पायी । पहले तो पुलिस ने रिपोर्ट ही दर्ज नहीं की । पुलिस में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार करमचंद ठाकुर अपनी तीन जवान बेटियों के साथ बलात्कार तो करता ही रहा है, साथ ही सबसे छोटी आठ वर्षीया बेटी को भी अपनी पाशविक हवस का शिकार बनाता रहा है उसके साथ किया गया कुकृत्य तो बेहद शर्मनाक और घृणा है । उसने उसे सामूहिक व अप्राकृतिक यौनाचार के लिए भी मजबूर किया, जिसमें वह स्वयं शामिल था । स्वयं पिता की उपस्थिति में हुए इस शर्मनाक हादसे से लड़की की मानसिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गयी है ।

कमजोर मेमने की बगावत

बाप के कुकृत्यों को बेनकाब करनेवाला एक और मामला सामने आया है । यह मामला भी शर्मनाक और अजीबो-गरीब है । पुलिस में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार पिता अपनी नाबालिग बेटी के साथ बलात्कार करता था । कई वर्षों तक वह उसके साथ यौनाचार करता रहा । लड़की की मां यह सब जानते हुए भी इसलिए चुप रही कि वह समाज में क्या मुंह दिखाएगी । उसने सोच रखा था कि लड़की की शादी के बाद यह सिलसिला खत्म हो जाएगा । कुछ वर्षों के बाद उसकी शादी कर दी गयी । लेकिन शादी करने के बाद यौन-उन्मादी पिता को 'उसकी कमी' खलने लगी । लिहाजा, शादी के चंद रोज बाद ही वह उसके पति और ससुरालवालों की इच्छा के विरुद्ध लड़की को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदा कराकर घर ले आया । उसने उसे हम-बिस्तर होने के लिए कहा । लेकिन उसने मना कर दिया और कोई बहाना करके घर से बाहर निकलकर पुलिस थाने पहुंच गयी । इस तरह एक मजबूर 'मेमने' ने भेड़िया बाप के विरुद्ध थाने में रिपोर्ट दर्ज करायी ।

दरअसल, कुटुंबी-जनों के बीच यौन-अपराध की घटनाएं अकसर सामाजिक अपमान और लोक-लज्जा के भय से छिपा ली जाती हैं । बड़े-बूढ़े और परिवार के निकटस्थ संबंधी इस कलंक से परिवार को बचाने का हरसंभव प्रयास करते हैं और स्वयं मानसिक यातना के शिकार होते रहते हैं । ऐसी विषम स्थिति में पुलिस तक ये बातें पहुंच ही नहीं पातीं ।

सौतेली मां की बेरुखी

अकसर यह देखा गया है कि जिन परिवारों में सौतेली मांएं होती हैं, वहां पहली पत्नी के बेटे-बेटियों की बहुत उपेक्षा की जाती है खासकर, बेटियों की । उनके प्रति सगे बाप का रुख भी दूसरी पत्नी के आने के बाद बदलता चला जाता है । परिणामतः सौतेली लड़कियां रक्त-संबंधियों द्वारा सहज ही यौन-उत्पीड़न का शिकार बन जाती हैं, जब उनके द्वारा शिकायत की जाती है तो प्रायः लड़की को ही बदचलन और कुल्टा ठहरा दिया जाता है ।

उस लड़की का पिता दिल्ली की एक छोटी-सी दुकान में मुनीम है । पत्नी मर गयी तो उसने दूसरी शादी कर ली । पहली पत्नी से तीन बेटियां हैं और दूसरी से दो बेटे । पत्नी अपने पारिवारिक जीवन की ओर ध्यान देने के बजाय अपना अधिकांश समय पूजा-पाठ या मंदिर में बिताती है । पुलिस रिपोर्ट के अनुसार पिता विगत तीन वर्षों से अपनी एक बेटी के साथ दुराचार करता आ रहा था । साथ ही वह अकसर उसे धमकी देता रहता कि यह बात किसी को न बताये, अन्यथा अंजाम बहुत बुरा होगा । डरी-सहमी हुई लड़की बाप के कुकर्मों का शिकार बनती रही । एक दिन उसने हिम्मत करके अपनी सौतेली मां को यह सारा किस्सा रो-रोकर सुना डाला । लेकिन, बेरहम मां ने दो-टूक लहजे में कहा, 'देख, यह तो अच्छी बात है कि तुम्हारा बाप घर में ही संतुष्ट हो लेता है । इधर-उधर भटकता नहीं और अपनी मामूली तनख्वाह को बाजारू औरतों पर फिजूलखर्ची से भी बचा लेता है ।'

जलते सवाल : सुलगती जिंदगियां

घातक प्रवृत्ति के 'इंसेस्ट क्राइम' की दहला देनेवाली घटनाएं अधिकतर निम्न आय वर्गीय परिवारों में घटित होती हैं, लेकिन उच्च-मध्यम वर्गीय परिवारों में भी कोई कम नहीं होतीं । इस वर्ग में करमचंद ठाकुर का मामला विशेष उल्लेखनीय है । मनोरोग विज्ञान के नजरिए से उसका यह आपराधिक यौन-उन्माद का एक असाधारण मामला है । दरअसल, इंसेस्ट क्राइम के कई कारण होते हैं । उसमें एक प्रमुख कारण है मनोरोग की गंभीर अवस्था । अन्य कारणों में सांयोगिक इंसेस्ट, पेडोफीलिया की स्थिति तथा पिता या अन्य रक्त संबंधियों में जन्मजात इंसेस्ट की प्रवृत्ति । सबसे गंभीर मामला पेडोफीलिया से ताल्लुक रखता है । पेडोफीलिया की श्रेणी में सिर्फ अवयस्क (छोटे बच्चे) ही वयस्कों की यौनेच्छा के शिकार होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुराचरण की रिकार्ड तोड़ बढ़ोत्तरी

केवल दिल्ली में पुलिस रिकार्ड के अनुसार पिछले तीन वर्ष में ७०३ नाबालिग लड़कियों के साथ यौन-दुराचार किया गया। गृह मंत्रालय द्वारा पुष्ट तथ्यों के अनुसार एक दर्जन मामलों में हर पांचवां दुराचार दस वर्ष के कम उम्र की बच्ची के साथ हुआ।

एक मनःचिकित्सक के अनुसार जिस परिवार में पति और पत्नी के बीच हमेशा घुटन या तनाव रहता है, तथा संतान द्वारा भी पिता को प्रताड़ित किया जाता है वहां ऐसा पिता अनजाने में अपनी नाबालिग बेटी के साथ बलात्कार कर अपनी कुंठा, आक्रोश व हताशा को अभिव्यक्ति दे बैठता है। इस कुकृत्य में शराब भी बहुत उसका साथ देती है। मानसिक रूप से अस्थिर पिता नशे की स्थिति में अपने अवचेतन मन से नियंत्रित होकर ऐसा कुकर्म कर बैठता है। मानसिक रूप से अस्थिर ऐसी अवस्था को मनोवैज्ञानिकों ने 'व्यक्तित्व विचलन' की संज्ञा दी है।

कौटुंबिक व्यभिचार को रोकने के लिए हमारे पूर्वजों ने इसे पाप व अधर्म निरुपित कर सदियों से अनेक लोक-रीति, पारिवारिक मर्यादा, सामाजिक नियम-जैसे कठोर बंधनों से समाज को बांधा है।

गौरतलब है कि कौटुंबिक व्यभिचार एक अत्यंत गंभीर अपराध है, जो परिवार-संस्था पर सीधा आपराधिक हमला है। बच्चा अशक्त और कोमल हृदय होता है। उसे अपने से बड़े परिजनों द्वारा यही नसीहतें दी जाती हैं कि अपने से बड़ों का सम्मान करें और उनकी आज्ञा मानें। जब इन्हीं बड़े परिजनों द्वारा उनका बलात शीलभंग किया जाता है तो, बच्चे अकसर यह समझ ही नहीं पाते कि उनके साथ हो क्या रहा है ? क्या बड़े लोग ऐसा भी करते हैं ? और जब बच्चे यह समझ लेते हैं कि उनके साथ जो कुछ किया गया वह गलत है, तो वह उनके लिए बेइंतहा शर्मनाक होता है और वह उसे कभी नहीं भूल पाते। सारी उम्र यह शर्मनाक घटना उनकी स्मृति में नासूर की तरह रिसती रहती है। रक्त-संबंधी की तो वह शिकायत मां-बाप से एक बार कर भी सकता है, लेकिन अपने कुकर्मी बाप की शिकायत बच्चा किससे करे ? मां से शिकायत करें भी तो बाप किसी भी सूरत में अपने विरुद्ध आरोप बर्दाश्त नहीं करता। लिहाजा, बच्चे की ही प्रताड़ित किया जाता है।

अब समय आ गया है कि 'इंसेस्ट क्राइम' पर एकदम नये सिरे से विचार किया जाए। यह अपराध कोई सामान्य यौनाचार का मामला नहीं है। जबकि पुलिस इसे सिर्फ सामान्य बलात्कार की श्रेणी का अपराध ही दर्ज कर सकती है। आवश्यकता यह विचार करने की है कि इंसेस्ट क्राइम को किस श्रेणी में रखा जाए, कौन-सी आपराधिक धारा लागू की जाए और किस तरह अपराधी को दंडित किया जाए। दंड-विधान ऐसा होना चाहिए कि समाज को लगे कि यह सामान्य नहीं, बल्कि एक अत्यंत गंभीर अपराध है।

— १४७, केशव भादुड़ी रोड,
लखनऊ—२२६०१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौख्य स्तंभ

● डॉ. सुधा पांडे

ऋग्वेद का शुनःशेप आख्यान एक प्राचीन लोककथा का संकेत देनेवाला आख्यान है । शुनःशेप का प्रार्थना-सूक्त उस समय की बलि-प्रथा और धन-लिप्सा का संकेत करता है । शुनःशेप का अर्थ है, कल्याण का स्तंभ या सौख्य स्तंभ । वैदिक क्रम में शुनःशेप का वृत्त वरुण-पाश से मुक्ति दिलानेवाला व कल्याण के पथ को प्रशस्त करनेवाला संदेश देता है ।

ऋषि अंगिरा के उद्यम और तप के प्रभाव से जीवन-दर्शन के अनेक रूप सुस्पष्ट होने लगे थे । उसी युग में इक्ष्वाकु वंश के वेधस राजपुत्र हरिश्चंद्र महान प्रतापी राजा के रूप में विख्यात हुए । अपरिमित धन वैभव होने पर भी संतान न होने के कारण सदैव मनस्ताप से पीड़ित रहते कि पुत्र के बिना वह पितृ-ऋण से कैसे मुक्त होंगे ?

एक दिन वे इसी चिंता में लीन थे, तभी नारद ने प्रवेश किया । "आपका स्वागत है ऋषि प्रवर !" कहते हुए महाराज ने आदरपूर्वक उन्हें आसन दिया ।

"महाराज किसी गंभीर चिंता में मग्न प्रतीत हो रहे हैं ?" नारद ने पूछा ।

"आपका अनुमान ठीक ही है भगवन ! सभी पुत्र की इच्छा करते हैं, चाहे वे ज्ञानी हों या अज्ञानी । हे ऋषि प्रवर, कृपया मुझे बताएं कि ऐसा क्यों है और पुत्र-प्राप्ति से क्या लाभ होता है ?"

नारद ने संयत भाव से उत्तर दिया, "पुत्र-प्राप्ति कर पिता अमर हो जाता है ।

नारद की वाणी ने राजा को और अधिक विचलित कर दिया । कातर भाव से बोला, "पुत्र-प्राप्ति के लिए मैं कौन-सा उपाय करूं ऋषिवर ?"

"महान वरुण देवता अतिशय दयालु हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम उनके समीप जा कर निवेदन करो कि पुत्र-प्राप्ति का वरदान दें और उनसे कहो कि मैं उस पुत्र से आपका यज्ञ करूंगा ।''

राजा वरुण देव की शरण जा पहुंचा वरुणदेव प्रसन्न हुए। पुत्र-प्राप्ति का वरदान दिया। समय आने पर पुत्र का जन्म हुआ। प्रजा आनंद से भर उठी । याचकों, ब्राह्मणों को धन-धान्य से राजा ने अभिनंदित किया। तभी वरुण देव प्रकट हुए और बोले, "हे राजन ! मेरा वरदान और तुम्हारी मनोकामना पूरी हुई, अब तुम यज्ञ करके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो ।''

राजा मोह से विवश था, अतः बात टालते हुए बोला, ''भगवन, यह सद्यजात बालक अभी प्रसूति-गृह में है । जब यह दस दिन का होकर, शुद्ध हो जाए, तब आपका यज्ञ करूंगा और इसे आपको अर्पित करूंगा ।'' वरूण देव राजा के इस निवेदन को मान गये और चले गये ।

ग्यारहवें दिन पुनः वरुण देवता प्रकट हुए और कहा कि ''राजन, अब यह बालक दस दिवस का हो चुका है, अब तुम इससे मेरा यज्ञ करो ।''

राजा वचनबद्ध था किंतु पुत्र को अर्पित करने की बात स्मरण आते ही उसका मन कांप उठा । इस बार पुनः डरते-डरते उसने कहा, ''भगवन, अभी इसके दांत नहीं आये हैं । जब इसके दांत निकल आएं, तब आप इसे ग्रहण कर लीजिएगा ।'' वरूण देव राजा की बात मान कर चले गये ।

अगले दिनों में वरूण के बार-बार आने पर अभी नामकरण नहीं हुआ है', 'अभी उपनयन नहीं हुआ है', 'अभी इसने शस्त्र धारण नहीं किया है, क्षत्रिय जब शस्त्र धारण करने योग्य हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए तब यज्ञ के योग्य होता है ।' ऐसे तर्क प्रस्तुत करके राजा सदैव वरूण देव को लौटा देता था ।

इसी क्रम में पर्याप्त समय बीत गया और राजा का वह पुत्र रोहित युवावस्था प्राप्त कर सभी संस्कारों से युक्त हो गया तो वरूण ने फिर राजा से कहा । राजा विवश था । अतः हृदय को कठोर बनाकर उसने पुत्र को बुलाया और कहा, "जिसने तुझको मुझे दिया, उसके लिए मैं तुझे यज्ञ में दूंगा ।"

रोहित कुछ समझा नहीं । बोला, "आप यह क्या कह रहे हैं पिताश्री ?"

राजा ने उसे समझाते हुए बताया, "रोहित ! तुम्हारा जन्म वरूण देव की कृपा से हुआ है । वे ही वरूण देव अब तुम्हें मांग रहे हैं । तुम बलि के लिए तैयार हो जाओ ।"

रोहित आश्चर्यचकित रह गया । उसे पिता की बातें अप्रीतिकर लगीं । बोला, आप अपने स्वार्थ के कारण मुझे— अपने पुत्र को ही बलि देने को तत्पर हैं । मैं आपकी यह बात नहीं मान सकूंगा ।" यह कहकर रोहित राजमहल से निकल गया और कहीं दूर एकांत अरण्य में उसने शरण ली । अरण्य में निवास करने पर रोहित को असीम शांति प्राप्त हुई ।

इंद्र का छल

वरुणदेव पुनः राजा के पास आ पहुंचे । राजा के पास अब कोई उत्तर न था । वरुणदेव क्रोध से बोले, "अभी तक तुमने मोह में पड़कर बार-बार अपने पुत्र को बलि देने से बचाया । अब वह नगर छोड़ गया है— इस बहाने तुम पश्चाताप का ढोंग रच रहे हो । मैं अब तुम्हें नहीं छोड़ूंगा । तुम्हें अपने इस छल का परिणाम भोगना ही पड़ेगा," क्रोधित वरूण देव ने राजा को पकड़ लिया । जल के देवता के क्रोध से राजा को जलोदर रोग हो गया । शरीर कृशकाय और पेट फूल गया । राजा मरणासन्न हो शय्या पर पड़ रहा । अनेक वैद्यों, पुरोहितों आदि के उपायों से भी उनका रोग दूर न हुआ । राजा के अस्वस्थ होने की चर्चा सर्वत्र फैल गयी थी । अंततः यह समाचार रोहित तक पहुंचा । वह अरण्य छोड़कर व्यग्रतापूर्वक राजमहल की ओर चल पड़ा । मार्ग में उसे ब्राह्मण वेश में इंद्र मिले और उन्होंने उसकी व्यग्रता का कारण पूछा ।

"वरुण देव को मेरी बलि न देने के कारण मेरे पिता उनके क्रोध का कारण बने हैं । वरुण देव ने ही रूष्ट होकर विवश कर दिया है । मैं उन्हीं वरुण देव को संतुष्ट करने जा रहा हूं ।"

इंद्र क्षणभर शांत रहे, पुनः रोहित से बोले, "रोहित ! शास्त्रों द्वारा मैंने सुना है कि जो यात्रा नहीं करता, उसको श्री नहीं मिलती । मनुष्यों के बीच एक स्थान पर रहते-रहते अच्छा व्यक्ति भी बुरा हो जाता है । इंद्र उसी का सखा है, जो विचरता रहता है, अतः तू भी निरंतर घूमता रह ।"

विप्र वेशधारी इंद्र की बातों से प्रभावित हो रोहित फिर अरण्य में लौट गया । वर्षभर वह पुनः वन में विचरता रहा । एक दिन पुनः घर की, पिता की स्मृतियों ने उसे झकझोरा और वह फिर गांव के मार्ग से पित-गृह की ओर चल पड़ा । पुनः पुरुष रूप में इंद्र देव मिले और कहने लगे, "जो विचरता है, उसके सारे पाप छूट जाते हैं, इसलिए तू विचरता ही रह ।"

इस तरह जब-जब रोहित लौटने को होता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग में विप्रवेशधारी इंद्र मिलता और उसे विचरण करने का उपदेश देता। उपदेश को मानकर रोहित अरण्य में लौट जाता। इस तरह उसे पांच वर्ष बीत गये।

अजीगर्त से भेंट

छठे वर्ष अरण्य में घूमते-घूमते एक स्थान पर उसने देखा कि सूर्यवंश ऋषि के पुत्र अजीगर्त परिवार के साथ वहां विद्यमान थे। वे सभी कई दिनों से भोजन न मिल पाने के कारण भूखे थे। वे पांच प्राणी अजीगर्त, उनकी पत्नी तथा शुनःपुच्छ व शुनःशेप और शुनो लांगुल नाम के उनके तीन लड़के अत्यंत दयनीय दशा में किसी दयालु की प्रतीक्षा में थे, जो उन्हें भूख से मुक्ति दिला पाता। वे परस्पर वार्तालाप करते हुए एक-दूसरे को बेचने की भी बात कर रहे थे। उनकी पीड़ा जानने के उपरांत रोहित को एक उपाय सूझा। उसने मन ही मन विचार किया कि, 'यदि मेरे बदले वरुण देव को किसी और प्राणी की बलि दे दी जाए तो निष्कृति दान से वरुण देव भी प्रसन्न हो जाएंगे और मेरे पिता की रोग से मुक्ति हो सकेगी।

"ऋषिवर ! मैं आपकी पीड़ा से परिचित हो चुका हूं। यदि आप इन पुत्रों में से एक मुझे दे दें तो मैं आपको सौ गायें दूंगा और इसे वरुण देव के लिए अर्पित कर यज्ञ में इसके द्वारा अपनी निष्कृति भी कर सकूंगा", रोहित ने उनके पास जाकर अपनी बात कही।

तीनों पुत्र इस प्रस्ताव को सुनकर हर्षित हो उठे।

"शुनःपुच्छ आओ, मेरे साथ चलो।" रोहित ने अजीगर्त के बड़े पुत्र से कहा।

"नहीं, यही तो मेरे पिंड-दान का अधिकारी

है। इसे मैं नहीं दे सकता।" ऋषि ने रोहित को रोकते हुए कहा।

"शुनो लांगूल को मैं नहीं छोड़ूंगी, यह सबसे छोटा होने के कारण मुझे अतीव प्रिय है," यह उनकी मां का स्वर था।

"मैं आपके साथ चलूंगा," यह शुनःशेप का स्वर था।

इस प्रकार रोहित मध्यम पुत्र शुनःशेप को लेकर पितृगृह की ओर चल पड़ा। साथ में ऋषि परिवार भी।

पिता का लालच

रोहित राजभवन में लौट आये हैं—यह समाचार जंगल में आग की भांति सर्वत्र फैल गया। राजा भी आह्लादित हो उठा। हर्षातिरेक से उसकी आंखों से आनंदाश्रु बह चले। वरुण देव तो प्रतीक्षारत थे ही किंतु इस बार उन्हें निराश नहीं होना पड़ा।

"भगवन् ! रोहित के बदले, इस शुनःशेप के द्वारा आपका यज्ञ करूंगा।" राजा के मुख से इस प्रकार निष्कृति की बात सुनकर वरुण देव मान गये और प्रसन्न भी हुए कि क्षत्रिय से तो ब्राह्मण और भी अच्छा। बोले "अब यह यज्ञ विधिवत पूर्ण करवाओ।"

राजसूय यज्ञ की विधि स्वयं वरुण देव ने बतायी। सारे नगर में यज्ञ की तैयारियां प्रारंभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गयी विश्वामित्र होता बने, जमदग्नि अध्वर्यु, वसिष्ठ ब्रह्मा, अयास्य उद्गाता के पद पर अधिष्ठित हुए। यज्ञ-क्रिया प्रारंभ हुई। यज्ञ यूप से शुनःशेप को बांधने को कोई तैयार न हुआ। वातावरण अचानक ही स्तब्ध हो उठा। शुनःशेप के पिता अजीगर्त उठ खड़े हुए और बोले, "मुझे सौ गायें और दो, मैं इसे बांधूंगा।"

राजा ने तत्काल अजीगर्त को सौ गायें और दीं। उसने शुनःशेप को आलंभन यूप से बांध दिया। अग्नि-मंत्रों का पाठ प्रारंभ हो गया। अब बलि देने की प्रक्रिया पूर्ण होनी थी। सभी चिंता में थे कि जब उपस्थित ब्राह्मणों ने इसे स्तंभ से बांधने से मनाकर दिया था तो बलि करने के लिए कोई क्यों तैयार होगा। सभी व्यग्र थे और निरूपाय भी। पुनः अजीगर्त ने मध्य में आकर कहा, "मुझे सौ गायें और दो, मैं इसका वध करूंगा।" ब्राह्मणों को और वरूण को मनवांछित अवसर मिल चुका था। तत्काल गायें दी गयीं। अजीगर्त ने यूप से बंधे शुनःशेप की बलि देने के लिए तलवार उठा ली।

यूप-बद्ध शुनःशेप भय से कातर हो गया। पिता के इस कठोर कर्म से उसका अंतर्मन धिक्कार उठा। वह अंतर्मन से देवों को स्मरण करने लगा। उसने निश्चय किया कि इस विपत्ति से अब देवगण ही मुझे मुक्ति दिला सकेंगे।

पापों के बंधन से मुक्ति

शुनःशेप ने देवों की स्तुतियां कीं। वरुण ने सदय हो उससे कहा, 'देवों में अग्नि मुख हैं और वही सबसे सहृदय है, तू उसी की स्तुति कर। हम तुझे छोड़ देंगे।' अग्नि की प्रार्थना करने पर अग्नि ने कहा, 'विश्वेदेवों की स्तुति कर, तब हम तुझे छोड़ देंगे। विश्वेदेवों ने कहा, 'देवों में इंद्र सबसे अधिक बलशाली, ओजस्वी और वर्चस्वयुक्त है, तू उसकी स्तुति कर। तब हम तुझे छोड़ेंगे।' शुनःशेप ने इंद्र की वीरता भरी स्तुति की। इंद्र प्रसन्न हो गये। उसे एक स्वर्ण रथ दिया और कहा, 'पहले तू आश्विनों की स्तुति कर, तब तुझे हम छोड़ेंगे।" अब शुनःशेप ने आश्विनों की शरण ली। आश्विनों ने कहा, 'तू उषा की स्तुति कर तब तुझे छोड़ेंगे।' शुनःशेप ने मंत्र पढ़ने प्रारंभ किये। अंत में देवों ने प्रसन्न हो उसे पाश मुक्त कर दिया। यूपबद्ध स्थिति की कातरता से शुनःशेप के हृदय के उद्गारों ने उसे पापों के बंधन से भी शिथिल कर दिया।

यज्ञ करनेवाले ऋत्विजों ने शुनःशेप को अपने साथ यज्ञ में भी सम्मिलित कर लिया। यज्ञ के उपरांत शुनःशेप विश्वामित्र के चरणों के समीप जा बैठा विश्वामित्र ने उसे अपना जेठपुत्र बना लिया और वह देवरात वैश्वामित्र के नाम से विख्यात हुआ।

—प्राचार्या

एम. के. पी. (पी. जी.) कालेज,
देहरादून (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचान

● सीतेश आलोक

अचानक अमरीका से एक मित्र का फोन आया कि उसका बेटा दिल्ली पहुंच रहा है।

सुनकर प्रसन्नता हुई । साथ ही एक जिज्ञासा भी, पूछा, 'कुछ तो रुकेगा... ?'

'अरे भई, यह उसी से पूछ लेना । यह तुम दोनों के बीच की बात है ।'

मैं और अधिक पूछकर अशिष्टता का परिचय नहीं देना चाहता था ।

मित्र के बेटे को कई वर्ष बाद सामने पाकर अच्छा लगा । बाइस की आयु में हट्टा-कट्टा अच्छा लग रहा था । तीन महीने पिता के पास अमरीका रहकर आने की ताजगी भी चेहरे पर थी । साथ में काफी सामान भी था, जो वह वहां से लाया था । काफी देर बातें करता रहा, और खा-पीकर सोया तो ऐसा बेहोश होकर जैसे हफ़्तों का जागा हुआ हो । परंतु उसे देखकर एक जिज्ञासा भी मेरे मन में उभर रही थी कि शायद यह पांच-दस दिन में जाना चाहे । उसके लिए रिजर्वेशन तो कराना ही होगा । पर यह एक ऐसा अप्रिय प्रसंग है, जिसे किसी भी अतिथि के आगे उठाना कठिन होता है ।

वह सुबह सोकर उठा तो बोला, 'मुझे आज ही जाना है...ग्यारह बजेवाली गाड़ी से ।'

'अरे, इतनी जल्दी... ?' मैं अवाक् रह गया ।

'जी...वो परसों एक इंटरव्यू है ।'

'वो तो ठीक है...लेकिन जाओगे कैसे ? रिजर्वेशन...और फिर इतना सामान भी है तुम्हारे पास ।'

'अरे, रिजर्वेशन की कोई जरूरत नहीं...' उसने निश्चिंतता से कहा, 'कंडक्टर को कुछ पैसे देने से जगह मिल जाएगी ।'

'लेकिन... ?'

मेरी 'लेकिन' को सुने बिना वह नहाने के लिए चला गया ।

मैं आश्चर्यचकित था उसके विश्वास पर और दुःखी उस स्थिति पर जो हमारे व्यवहार की एक सुनिश्चित पहचान बन चुकी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे दोनों

वे दोनों बहुत समय से एक-दूसरे को देख रहे थे। वही शराबघर...वहां अकेले आना और बड़ी देर तक सिगरेट पीते हुए, धीरे-धीरे कई पेग चढ़ा जाना। दोनों ही तब तक पीते रहते, जब तक हाथ धोका न देने लगें पैर लड़खड़ाने न लगें।

कुछ समय बाद दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकराये। आंखों ही आंखों में पहचान बढ़ी और एक दिन वे एक ही मेज पर आ बैठे।

बातों ही बातों में दोनों को एक-दूसरे में अपना हमदर्द दिखायी दिया। दोनों को ही अपने मन का बोझ हलका करने के लिए किसी साथी की तलाश थी।

'मेरी बीवी मुझे छोड़ गयी...' एक ने अपना ग्लास खाली करते हुए कहा।

'अरे...क्या इत्तफाक है।' संयोग की विचित्रता देखकर दूसरे के होंठों पर अचानक मुसकराहट दौड़ गयी— 'मेरी पत्नी भी मुझे छोड़कर चली गयी।'

'दिन-रात एक ही ताना देती थी कि मैं उसे प्यार नहीं करता', उसने एक लंबा-सा घूंट भरा, जैसे अपने आंसू पी रहा हो— 'मैं दिन-रात किसके लिए सर खपाता था... ? किसके लिए दौड़ता-फिरता था... ? लोगों की खुशामद करता था ? उसी के लिए तो। उसे अच्छा घर देने के लिए। सोसाइटी में एक मुकाम देने के लिए...।'

दूसरे की मुसकराहट देखते ही देखते उड़ गयी। उसकी पत्नी भी तो उसे हरदम ताने देती रहती थी— 'दिन-रात पल्लू से बंधे रहते हो...अरे कहीं बाहर निकलो...अपना काम बढ़ाओ। कुछ और पैसे कमाओ, इज्जत हासिल करो।'

उसने लड़खड़ाती आवाज में बैरे को पुकारा और एक नया डबल पेग बनाने के लिए कहा।

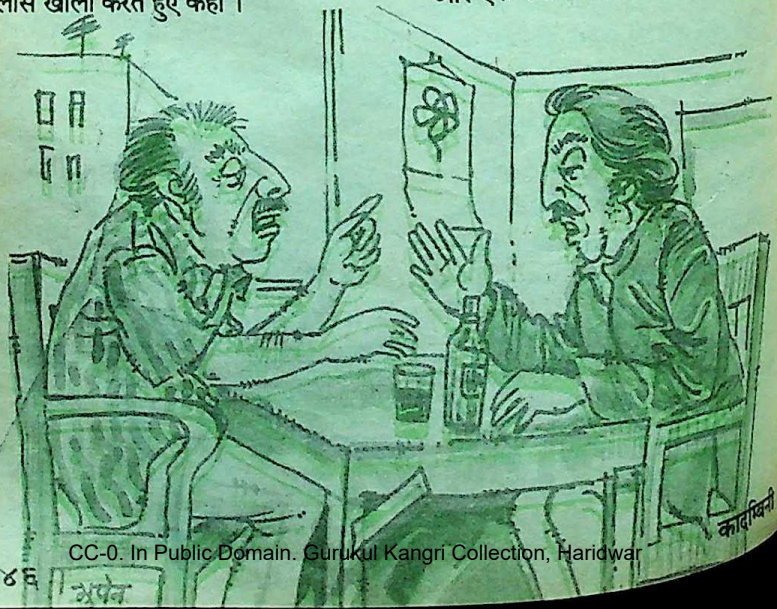

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

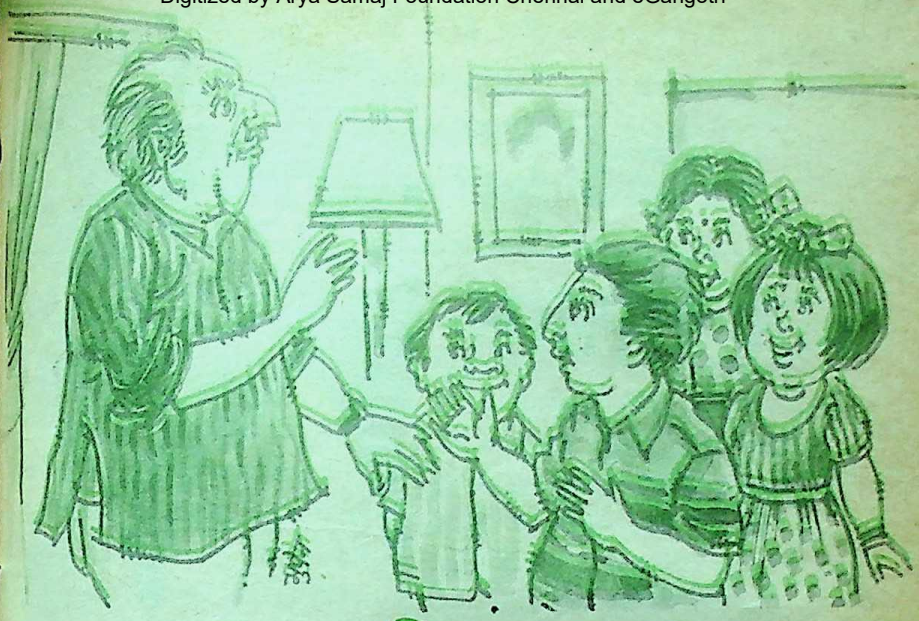

बढ़िया

छुट्टियां प्रारंभ हो चुकी थीं...

घर पर संबंधियों के कुछ बच्चे आये थे, छुट्टी के कुछ दिन दिल्ली में बिताने। भोजन समाप्त होने के बाद मैंने उनसे आगे का कार्यक्रम बनाने की दृष्टि से कहा— 'शाम को घूमने चलेंगे। आज लाल किला देखा जाए... ? या फिर इंडिया गेट... ?'

'नहीं...' उनमें से एक ने कुछ परेशान-से स्वर में कहते हुए अपने दूसरे साथियों पर दृष्टि डाली।

'तो तुम बताओ...क्या इरादा है ?' मैंने सहज ही पूछा।

'पिक्चर देखेंगे...' एक और बच्चे ने चहकते हुए स्वर में कहा।

'हां...' एक और उल्लसित स्वर उभरा। 'वीडियो पर...'

'अच्छा भई...जैसी तुम्हारी मरजी।' मैंने कहा— 'मेरे पास कुछ अच्छी, बच्चों की फिल्में हैं...जागृति, सफेद हाथी।'

'वो नहीं...।' उनमें से एक बोला। 'कोई अच्छी पिक्चर नहीं है ?'

'अच्छी, मतलब ?' मैंने सहज ही प्रश्न किया।

'कोई बढ़िया पिक्चर...' एक और बच्चे ने हुमकते हुए कहा— 'जिसमें खूब मर्डर हों, और जोरदार फाइटिंग।'

—बी-२ आवास परिसर
इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली-११००५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकट जन विश्वास का

● माधवलाल दुबे

घटना लगभग दो हजार तीन सौ वर्ष पुरानी है। उस देश की है, जिसे यूनान कहा जाता है। एथेंस उसकी राजधानी है। समय भी लगभग वही है, जब उस देश का परम महत्त्वाकांक्षी शासक सिकंदर विश्व-विजय पर निकला था और अनेक देशों को रौंदता हुआ भारत में मगध साम्राज्य की सीमा तक आ पहुंचा था। यूनान का वह स्वर्णिम युग था। दर्शन शास्त्र, गणित, ज्यामिति, भूगोल, ज्योतिर्विज्ञान, युद्ध-कौशल इत्यादि विषयों में यूनान समूचे विश्व पर छाया हुआ था। कमोबेश उसी समय डायोजनिज नाम का एक मनोवैज्ञानिक घूम रहा था एथेंस की सड़कों पर— सूरज की जगमगाती रोशनी में— हाथ में जलतीं लालटेन लिए हुए। सामने किसी संभ्रांत आदमी को जब वह देखता, तो लालटेन उठाकर उसके चेहरे को निहारता और एक दीर्घ श्वांस छोड़कर आगे बढ़ जाता। साधारण नागरिक उसे पागल समझते थे, किंतु जानकार उसकी अहमियत जानते थे। डायोजनिज का यह उपक्रम निरंतर चलता रहा। एक जिज्ञासु जो वर्षों से उसे देख रहा था, उसने डायोजनिज से पूछा, "किसकी तलाश में हो डायोजनिज ?"

"एक ईमानदार आदमी की !"

"क्या मिला कोई ?"

"अभी तक तो नहीं मिला !"

"सूरज की चिलचिलाती धूप में इस जलती लालटेन का क्या प्रयोजन ?"

यदि सूरज की रोशनी ही काफी होती, तो वह कभी का मिल गया होता।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि वह मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'स्वनामधन्य' नेताओं की कोई कमी नहीं है हमारे यहां, लेकिन ऐसा नेता ढूंढे नहीं मिल रहा, जैसा कि सिकंदर के जमाने में डायोजनिज दिन के उजाले में भी लालटेन लिए हुए यूनान में ढूंढता फिर रहा था...

जाएगा ?"

"अवश्य !"

"कब ?"

"जब बेइमानी अपने चरम पर पहुंच जाएगी तब ! अभी वह चरम पर नहीं पहुंची है । यदि पहुंच गयी होती, तो रात के अंधियारे में मेरी लालटेन ही चोरी चली जाती । भिखारियों के पास भीख मांगने के कटोरे नहीं बचते और साधुओं के पास उनकी लंगोटियां तक नहीं रहतीं । एक अति दूसरी अति का सृजन करती है ।

"क्या वह समय अभी नहीं आया ?"

"प्रारंभ तो उसका हो चुका है, किंतु शासक उसे समझ नहीं पा रहे हैं । इसलिए प्रत्येक चेहरा जिसे मैं लालटेन से देखता हूं, बुझा-सा नजर आता है । इस देश में अपने-आप को ईमानदार समझनेवाले तो अनेक हैं, किंतु वे विरले ही नजर आते हैं, जिन्हें जनता ईमानदार समझती है ।"

"शायद, आपका मतलब जन-विश्वास से है ।"

"निश्चित ही । ईमानदारी और तन्मयता से की गयी निस्वार्थ सेवा ही जन-विश्वास की जननी है ।"

आज ना जाने कितने डायोजनिज घूम रहे हैं हमारे देश में उन ईमानदारों की तलाश में, जिनकी कथनी और करनी में जरा भी अंतर न हो । जो भ्रष्टाचार, पूंजीवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद और संप्रदायवाद को कुचलने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ हों । जिनका जीवन स्फटिक-जैसा दागहीन और पारदर्शी हो । जिनकी जीवन-शैली भारत के करोड़ों नागरिकों में अपनत्व की भावना पैदा कर सके । जो महंगाई और कु-शासन की मार से तड़पनेवाले असंख्य भारतीयों के अंधकारमय जीवन को नयी रोशनी दे सके । उनका शरीर भले ही शहरों में रहे किंतु, आत्मा भटकती रहे गांवों में, कस्बों में, खेतों और खलिहानों में, खदानों और कारखानों में, गलियों और कूचों में ।

श्रमिकों और गरीबों के प्रति ईमानदारी से समर्पित ऐसा नेतृत्व ही इस विशाल और विविधतापूर्ण देश को एक सूत्र में संजोकर रख सकता है तथा जनता और जन-नेताओं के मध्य गहराती जा रही अविश्वास की दरार को पाटकर शासन और समाज में व्याप्त विकृतियों को दूर कर सकता है । खोज रहा है मतदाता उसे भारत में, जिसे कभी डायोजनिज खोज रहा था यूनान में ।

— हिलाल मंजिल, इब्राहिमपुर
भोपाल (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जरूर साथी मैं पागल, ऐसा ही है मेरा हाल !'

● बिर्ख खडका डुवर्सेली

इस लेख की शीर्षक काव्य-पंक्तियां नेपाली भाषा के उस महाकवि की है, जो सुंदर को सत्य और सत्य को सुंदर मानकर साहित्य-सृजन में समर्पित रहा और उसने विपुल परिमाण में लिखकर नेपाली साहित्य को श्री-संपन्न किया लेकिन, उनके इस योगदान से अनजान समाज ने उन्हें 'पागल' ठहराकर रांची के पागलखाने में भेज दिया । समाज की लांछनाओं तथा यातनापूर्ण प्रहारों के बावजूद साहित्य-सृजन में निरंतर रत रहनेवाले ये महान साहित्यकार थे— लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा । नेपाली साहित्य-संसार को समृद्ध और गौरवशाली बनाने के लिए, देवकोटा ने प्रायः सभी कुछ लिखा— और एक सफल कथाकार, समालोचक, उपन्यासकार, महाकवि, गीतकार, अनुवादक और सफल वक्ता के रूप में नेपाली साहित्य में अपना मूर्धन्य स्थान बनाया ।

हिंदी के विख्यात कवि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने देवकोटा के निधन की खबर सुनने के बाद व्यथित होते हुए टिप्पणी की थी कि — 'नेपाली साहित्य में देवकोटा का आविर्भाव एक घटना थी और उनका महाप्रयाण एक इतिहास। सच ही विश्व-कवियों के दरजे में उनका स्थान है । इस अभाव की पूर्ति असंभव है । ऐसी युगांतकारी प्रतिभा को पाने के लिए राष्ट्र को फिर उत्सर्गशील और तपस्यारत होना होगा । देवकोटा-जैसे एक कवि को पाकर नेपाली साहित्य विश्व-साहित्य के समक्ष सदा के लिए गौरवशाली हुआ है ।'

महाकवि देवकोटा की प्रतिभा से 'सुमन' जैसे मर्मस्पर्शी कवि ही नहीं, बल्कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे धुरंधर विद्वान भी प्रभावित थे, जिसकी पुष्टि पंडित सांकृत्यायन के इस कथन से होती है— 'प्रसाद-पंत-निराला मिलकर एक लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा बना है ।'

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में लगभग ८७ साल पहले जब दीवाली पर 'लक्ष्मी पूजा' के पुनीत पर्व पर घर-घर में प्रदीप जगमगा रहे थे और नेपाली संस्कृति तथा परंपरा के अनुरूप युवतियों तथा वृद्धाओं की अलग-अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोलियां 'भैलेनी' गाकर घर-आंगन को सुमधुर स्वरों में गुंजा रही थीं, उसी शुभ मुहूर्त में काठमांडु के धोबीधारा स्थित एक मध्यम वर्गीय विद्वान पंडित तीर्थमाधव देवकोटा के घर में एक दिव्य प्रदीप प्रज्ज्वलित हो उठा । इस प्रदीप को पंडितों ने नामकरण संस्कार के क्रम में नाम दिया— तिलमाधव । लेकिन माता-पिता की दृष्टि में तो वह लक्ष्मी का पुनीत प्रसाद था । इसी भाव से प्रेरित होकर माता-पिता ने पंडितों द्वारा रखे गये नाम को जन्म-पत्रिका में ही सीमित रहने दिया और उसे अपना ही प्यारा-सा नाम दिया— 'लक्ष्मी प्रसाद' ।

लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा कृष्ण पक्ष में जन्म लेकर शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की तरह बढ़ते चले गये और साहित्य के आकाश में पूर्णिमा के चांद बनकर चमक उठे । औपचारिक रूप में बी.ए., बी.एल. तक की शिक्षा प्राप्त कर सके । अंगरेजी साहित्य में एम.ए. करने की प्रबल इच्छा थी, लेकिन वह अधूरी ही रही । अनौपचारिक रूप में वह पूर्व और पश्चिम के प्राचीन और अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान के ज्ञाता थे, विशेषतः वे भारतीय संस्कृति के तो अन्यान्य प्रेमी थे । उन्होंने कभी नेपाल को भारत से अलग करके नहीं देखा । भारत के प्रति उनका दृष्टिकोण विशाल और विस्तृत था, जिसके साक्ष्य उनकी कृतियों में यत्र-तत्र सर्वत्र मिलते हैं । उदाहरण के लिए उनके महाकाव्य 'शाकुंतल' की निम्न पंक्तियां ले सकते हैं—

पीठो लागछ मलाई ता प्रिय कथा प्राचीन संसार को
हग्रो भारतवर्ष को उदय को हैम-प्रभा सार को

लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा को जीवनभर संघर्ष करना पड़ा । अपने सोच और विचारों के कारण कभी तो उन्हें राजनीतिक प्रताड़ना स्वरूप देश से निर्वासित हो शरण लेने के लिए बनारस आना पड़ा और कभी सामाजिक लांछना का शिकार हो रांची के पागलखाने में । जन सामान्य ने उन्हें कभी एक आशु कवि से अधिक नहीं समझा । गरीबी और अभाव से वह आजीवन ग्रस्त रहे । उनके अभावग्रस्त बचपन में उनकी काव्य-यात्रा दस साल की उम्र में इन पंक्तियों से हुई थी—

घनघोर दुःख सागर जान भाई
नगरे घमंड कहिले मनुछ हामीलाई

चौदह वर्ष की उम्र में ही संस्कृत के 'अमरकोष' और 'भागवत गीता' जैसे ग्रंथ कंठस्थ करनेवाले देवकोटा के लिए ये ही ग्रंथ उनके अपने काव्य-भाव और काव्य-भाषा के लिए आदि-स्रोत थे, फिर भी उनकी साहित्यिक प्रतिभा के विकास के साथ-साथ भाषा की अपर्याप्तता का अनुभव भी बढ़ता गया । फलतः अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने नये-नये शब्द और नये-नये भाषिक विकल्पों की खोज की । एक ओर लोक छंद— 'झ्याउरे' में 'मुनामदन' जैसे खंडकाव्य का सृजन करके सहज और सरल साहित्य के प्रेमी पाठकों को आह्लादित किया, वहीं दूसरी ओर संस्कृत-पांडित्य में गर्व करनेवालों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शाकुंतल' जैसे महाकाव्य की रचना करके यह साबित कर दिया कि नेपाली भाषा में भी उत्कृष्ट-कोटि के साहित्य का सृजन संभव है ।

चुनौती दर चुनौती

समाज को अपनी प्रतिभा का परिचय देने के लिए देवकोटा को एक के बाद एक चुनौती का सामना करना पड़ा । जब उन्होंने लोक-लय और छंद-'झ्याउरे' में 'मुनामदन' खंडकाव्य की रचना की, तो पंडितों ने नाक भौंह सिकोड़ी । अतः उनको चुनौती देने के लिए दो महीने में ही देवकोटा ने 'शाकुंतल' महाकाव्य लिख डाला । जब दो महीने की छोटी अवधि में इतने बड़े महाकाव्य की रचना करने पर भी पंडितों ने शंका की, तब इस शंका के निवारण के लिए देवकोटा ने मात्र दस ही दिनों में 'सुलोचना' जैसे महाकाव्य की रचना करके पंडितों से अपना लोहा मनवा लिया ।

सुलोचना जैसे महाकाव्य की रचना उन्होंने काठमांडू के भाषा अनुवाद परिषद के कार्यालय में सुबह दस बजे से शाम पांच बजे तक के निर्धारित समय के अंदर ही लिखने की चुनौती स्वीकार करते हुए की थी । देवव्यास की तरह देवकोटा कविता बोलते गये और भगवान गणेश की तरह श्री श्यामदास वैष्णव लिखते गये । ठीक दस ही दिनों में कृति संपूर्ण हो गयी ।

देवकोटा द्वारा रचित महाकाव्यों में 'शाकुंतल' और 'सुलोचना' के अतिरिक्त 'महाराणा प्रताप', 'प्रमिथस' और 'वन-कुसुम' भी सम्मिलित हैं । अन्य कृतियों में खंड काव्य, फुटकर कविताएं, उपन्यास, निबंध और समालोचनाएं हैं ।

'खंड-काव्य मुनामदन' की रचना देवकोटा ने विशेष ध्यान और लगन से की थी, जिसे उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति ठहराकर मृत्यु-शैया पर कहा था 'मुनामदन को छोड़कर मेरी बाकी सभी कृतियां जलायी जा सकती हैं ।'

देवकोटा ने बनारस प्रवास काल में 'युगवाणी' और नेपाल में 'इंद्रेणी' पत्रिकाओं का संपादन किया । सन् १९५२ में उन्होंने दार्जिलिंग, कर्सियांग, गंगटोक तथा कालिंपोंग का भ्रमण किया । यात्रा के दौरान तिस्ता नदी के पुल पर खड़े होकर तिस्ता नदी की धारा से भी द्रुततर गति में उन्होंने तिस्ता पर कविता लिखी । इस द्रुत गति की छंदमय कविता सुनने के बाद नेपाली के वयोवृद्ध साहित्यिक-विभूति डॉ. पारसमणि प्रधान ने उन्हें 'इलैक्ट्रिक कवि' कहा ।

देवकोटा ने 'दार्जिलिंग, कर्सियांग और कालिंपोंग' शीर्षक से एक निबंध भी लिखा, जो बहुत सराहा गया ।

सन् १९५६ के दिसम्बर महीने में हुए 'एशियाली लेखक सम्मेलन' में नेपाली प्रतिनिधि कवि के रूप में उपस्थित होकर देवकोटा ने नेपाली साहित्य का कवितात्मक परिचय प्रस्तुत किया । ताशकंद में संपन्न द्वितीय 'अफ्रो-एशिया लेखक सम्मेलन' में भी उपस्थित हो उन्होंने कविता-पाठ कर विश्व के आगे नेपाली काव्य-धारा तथा साहित्यिक प्रवृत्ति का पुष्ट परिचय दिया । उन्होंने भारत और ताशकंद के अलावा अजरबैजान, चीन, साइबेरिया, रोमानिया, स्वीट्जरलैंड, हंगरी, मास्को आदि की यात्रा एक साहित्यिक के रूप में की । विशेष उल्लेखनीय है कि देवकोटा को नेपाली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाली साहित्य को श्री-संपन्न करने के लिए उन्होंने सभी विधाओं में लिखा और विपुल परिमाण में लिखा लेकिन समाज ने उन्हें क्या दिया ?

अलावा संस्कृत, हिंदी, नेवारी, बांग्ला, फ्रेंच, जरमन तथा चीनी भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। 'शारदा' पत्रिका के 'नव भाषोद्गार' अंक में विभिन्न भाषाओं में लिखी कविताएं प्रकाशित होनी थीं, उसके लिए कैंसर रोग से ग्रस्त मृत्यु के मुंह में कवलित हो रहे देवकोटा ने अंगरेजी भाषा में 'प्रोमोथिएन पेन आई बियर' शीर्षक कविता लिखी, जो उनके जीवन की अंतिम कविता है।

विश्व स्तर के कवि

देवकोटा की काव्य-कृतियों के आधार पर नेपाली साहित्य की काव्य-प्रवृत्ति का विश्लेषण करनेवाले समालोचकों ने देवकोटा को पश्चिम के वड्र्सवर्थ, कीट्स, शैली तथा कलरिज तथा पूर्व के प्रसाद, पंत और निराला के समान स्थान दिया है। प्रकृति-प्रेम के संदर्भ में वह वड्र्सवर्थ और कालिदास के समीप बैठते हैं तो सौंदर्य-प्रेम में कीट्स तथा विद्रोही और क्रांतिकारी कवि के रूप में शैली और काजी नजरुल इस्लाम के।

राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय साहित्य सभा तथा समारोहों में नेपाली साहित्य का प्रतिनिधित्व करनेवाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी देवकोटा में अविरल सिगरेट-बीड़ी, चुरूट पीने की अजीबोगरीब लत थी। मांस, मछली, अंडे के अत्यंत भोगी और जुआ-ताश को वह मनोरंजन के रूप में खेलने के शौकीन थे। अपने शरीर, स्वास्थ्य तथा पोशाक के प्रति वह लापरवाह थे पर उनका हृदय उदार और विशाल था। हाथ में पैसे आते ही या प्रत्येक महीने की पहली तारीख को तनख्वाह पाते ही रास्ते में मिले मित्रों को खिलाने-पिलाने तथा बच्चों को मिठाई खिलाने में खुशी अनुभव करते थे।

नेपाली साहित्य के प्रख्यात नाटककार स्वर्गीय बालकृष्ण ने उनके बारे में बहुत ही सारगर्भित टिप्पणी की थी— 'महाकवि देवकोटा ने तीन बार जन्म लिया—

'मुनामदन' में, 'शाकुंतल' में और 'पागल' में; लेकिन एक बार भी नहीं मरे। वे नेपाली साहित्य के साथ सदैव जीवित रहेंगे।'

ऐसे ही एक अमरीकी विद्वान डॉ. मिलर ने देवकोटा के देहावसान पर लिखा था, 'लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा अपने पिता-पुरखों के साथ रहने दूसरी दुनिया में जा पहुंचे हैं, लेकिन उनकी आत्मा और आवाज आगे बढ़ रही है। उन्हें भी अब्राहम लिंकन की तरह कहा जा सकता है— वे युग-युग तक रहेंगे।'

नेपाली साहित्य के पाठकों के लिए ढेर-सारी कृतियां, सेवाएं, साधनाएं तथा खुशियां बांटकर देवकोटा ने सन १९५८ के सितम्बर महीने में इस संसार से विदा ली।

— ८६/३, मेघनाद साहा सरणी,
प्रधाननगर, सिलीगुड़ी
दार्जिलिंग-६३८८०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाभी ने हड़प लिया

कखग : हम दो भाई और चार बहनें हैं । बड़े भाई की मृत्यु दस साल पहले हो गयी । उसके सात बच्चे हैं । छोटे भाई की मृत्यु दस महीने पहले हो गयी । उसके कोई संतान नहीं है । उन्होंने कोई वसीयत नहीं की थी । उसका सारा सामान बड़ी भाभी ने ले लिया है, लेकिन उसका पैसा-जेवर बैंक और लॉकर में है । हम चारों बहनों ने बैंक को नोटिस दे दिया है । हम चाहते हैं कि संपत्ति का बंटवारा बैंक ही कर दे । क्या बड़ी भाभी व उसके बच्चे बिना हमारी अनुमति के बैंक से संपत्ति निकाल सकते हैं ?

छोटे भाई की संपत्ति में आप चारों बहनों का अधिकार बनता है । साधारणतय: तथ्यों की जानकारी होने के बाद बैंक, किसी भी व्यक्ति को स्थिति स्पष्ट हो जाने तक, लॉकर का सामान या रुपया नहीं देगा । यदि आप सब सर्वसम्मति से चाहें तब संभवत: बैंक आप सबको लॉकर खोलने या पैसा निकालने में सहायता कर दे । साधारणतया ऐसी स्थिति में बैंक न्यायालय का आदेश लाने के बाद ही लॉकर खोलने या रुपया निकालने देते हैं । बड़े भाई की विधवा या बच्चों का चाचा की संपत्ति में अधिकार नहीं होता । हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा ११ तथा अनुसूची-।। के आधार पर बहनों के रहते भतीजों का संपत्ति पर अधिकार नहीं बनता ।

वर्ण संकरी आरक्षण

अशोक सिंह गोंड, जबलपुर : मेरी जाति आदिवासी समाज के अंतर्गत आती है, जिसे आरक्षण की सुविधा प्राप्त है । बारह साल पहले मेरी शादी सवर्ण राजपूत क्षत्रिय कन्या से हुई है । हमारे संतान भी है । मैं यह जानना चाहता हूं कि मेरी संतान को मेरे समान आरक्षण की सुविधा का लाभ मिलेगा या नहीं ? मां के सवर्ण होने से आरक्षण का लाभ लेना अनुचित या गैर-संवैधानिक तो नहीं होगा ?

पुत्र या पुत्री की जाति अपने पिता के अनुसार मानी जाती है । आपकी संतान भी आदिवासी समाज के अंतर्गत आनेवाली आपकी जाति की ही मानी जाएगी । अत: आपकी संतान को आरक्षण का लाभ प्राप्त करने का अधिकार है । आरक्षण की सुविधा का लाभ उठाने में अनुचित या गैर संवैधानिक कुछ भी नहीं है ।

दो-दो पहचान-पत्र

रामप्रकाश, रोहतक : मेरे एक मित्र ने निर्वाचन आयोग का फोटो पहचान-पत्र अलग-अलग दो जिलों से बनवा लिया है । एक जिले में उसका मकान है और दूसरे जिले में नौकरी । संबंधित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो पहचान-पत्र कंप्यूटर द्वारा बनेंगे, अतः वह चिंतित है कि कहीं इसका पता न चल जाए। अब उसे क्या करना चाहिए ? क्या उसके खिलाफ कोई कानूनी कार्यवाही हो सकती है ? **किसी भी व्यक्ति को दो स्थानों पर मतदाता नहीं होना चाहिए। दो स्थानों पर फोटो पहचान-पत्र बनवाना अवैध है। उनके विरुद्ध सरकार की ओर से कोई कानूनी कार्यवाही शुरू हो, उससे पहले ही एक पहचान-पत्र को वापस कर देना चाहिए। वैसे भी निर्वाचन आयोग एक से अधिक स्थानों से बनवाये गये पहचान-पत्रों के बारे में खोजबीन करने की कोशिश कर रहा है।**

वसीयतनामा

कखग, पंजाब : मेरे ताऊजी ने निस्संतान होने के कारण मुझे बचपन से ही गोद ले लिया था, पर इसकी उन्होंने कोई लिखा-पढ़ी नहीं की थी। ग्यारह साल पहले मेरे पालक माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है। उन्होंने मरने से पहले कोई वसीयत भी नहीं लिखी। मेरी दो दुकानों के किरायेदारों में से एक किरायेदार ने पांच साल पहले अपनी दुकान पगड़ी पर उठा दी। नये किरायेदार ने मुझे वह दुकान बेचने के लिए कहा। मुझे उसका बयाना भी दे दिया। फिर दोनों दुकानदारों ने कहा कि दुकान बेचने के लिए मैं वसीयतनामा पेश करूं। वसीयतनामा तो था नहीं, लिहाजा उन्होंने मेरे नाम से एक वकील से वसीयतनामा बनवा दिया।

अब दूसरा किरायेदार, जो बीस साल से है, धमकी देता है कि या तो मैं उसकी वाली दुकान

> विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ— रामप्रकाश गुप्त।

मुफ़्त में उसे दे दूं नहीं तो वह वसीयतनामे की पोल खोल देगा। बताइए, मैं क्या करूं ? **आप दत्तक पुत्र के रूप में संपत्ति के उत्तराधिकारी थे और हैं। आपको फर्जी वसीयतनामा बनवाने की आवश्यकता नहीं थी। यह आपसे गलत काम हो गया है। इस गलत कार्य के लिए भारतीय दंड संहिता में दंड का प्रावधान है और प्रमाणित होने पर आप भी शायद उस दोष या दंड से न बच सकें।**

संपत्ति पर अधिकार आप अपने दत्तक पुत्र होने के आधार पर लें। किरायेदार या किसी भी व्यक्ति द्वारा संपत्ति संबंधी अधिकार मांगते समय आप स्वयं को दत्तक पुत्र कहते हुए अपने अधिकार का वर्णन करें।

जाली दस्तावेज बनाने के लिए दंड दिलवाने हेतु यह आवश्यक नहीं कि आपके सगे-संबंधी ही कार्यवाही करें— कोई भी व्यक्ति इस संबंध में शिकायत कर सकता है और कार्यवाही शुरू करा सकता है।

अपना अधिकार

इसरावती देवी, हाजीनगर : हम तीन बहनें हैं। तीनों विवाहिता, बाल-बच्चोंवाली तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग-अलग जगहों पर रहती हैं । भाई कोई है नहीं । पिता बचपन में ही गुजर गये, मां तीन वर्ष पहले । पिता की छोड़ी जमीन व घर उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में तथा पश्चिमी बंगाल के बारिकपुर में है । बड़ी बहन का कहना है कि मां ने मरने के पांच वर्ष पूर्व सभी संपत्ति उसके चार पुत्रों को दान कर रजिस्ट्री कर दी थी । चाहे तो वह दोनों बहनों को दस-दस हजार रुपया दे सकती है । बताइए, कानूनी रूप से मैं अपना अधिकार कैसे प्राप्त कर सकती हूं ?

आप हिंदू हैं, इसलिए आप हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के अंतर्गत आती हैं । आपकी मां कौन-सी जगह की निवासी थीं ? वह मितकसरा नियमों के अंतर्गत आती थीं या दयाभाग नियमों के अंतर्गत आती थीं— इसका निर्णय लिए बगैर कानून की धारा का उल्लेख नहीं किया जा सकता । फिर भी चाहे कोई भी कानून आप पर लागू हो, आप तीनों बहनों का संपत्ति पर बराबर का हक है । संपत्ति आपके पिता की थी । पिता की मृत्यु के बाद उसका संपूर्ण स्वामित्व केवल मां को ही मिले, ऐसा कोई आधार नहीं है । इसलिए आपकी मां को यह अधिकार नहीं था कि वह दान-पत्र द्वारा पूरी संपत्ति किसी को नहीं दे सकें । आप अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए संपत्ति के बंटवारे का अदालत में दावा दायर करें । उसमें आप दान-पत्र की वैधता को भी चुनौती दें ।

जमीन कैसे बचे ?

पी.एस. खंगर, सागर : अंगरेजों के जमाने में जब से कोटवारी की नौकरी बनायी गयी, तब से मेरे नानाजी के परिवार में कोटवारी है यानी नानाजी के परिवार की चौथी पीढ़ी में कोटवारी बराबर चलती आ रही है । इस समय नानाजी को १२० रुपये प्रतिमाह मिलते हैं और शुरू से ही उन्हें आठ एकड़ जमीन मिली हुई है । नानाजी की उम्र अब ९२ वर्ष की हो गयी है, इसलिए तहसीलदार उन पर इस्तीफा देने के लिए दबाव डाल रहा है और उसने एक साल से वेतन देना भी बंद कर दिया है । नानाजी के लड़के जीवित नहीं हैं और नाती इस नौकरी को करने के लिए तैयार नहीं है । नानाजी इस्तीफा तो दे दें, लेकिन वह आठ एकड़ जमीन नहीं छोड़ना चाहते । क्या कोई ऐसा उपाय है कि जमीन बचायी जा सके ?

आपके नानाजी को जमीन नौकरी के आधार पर मिली है । अब जबकि उनकी नौकरी समाप्त हो रही है, तब उनका साधारणतयः उस जमीन पर अधिकार बनाये रखने का कोई औचित्य नहीं बनता ।

जमीन उनके परिवार को दिये जाने का यदि कोई अन्य आधार या समझौता रहा हो, तो उसका स्पष्ट उल्लेख करने पर ही उसका प्रभाव समझा जा सकता है । यदि नौकरी के लिए सेवा-निवृत्ति की कोई समय-सीमा नहीं है, तो आपके नानाजी त्यागपत्र देने का अनुरोध स्वीकार न करके, जमीन पर भी अधिकार बनाये रख सकते हैं । त्यागपत्र देने या स्वीकार करने से पूर्व वेतन को रोक लेना उचित नहीं ठहराया जा सकता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी बहुत काम करना है

लंदन की एक दूकान में सुंदर और प्रतिभाशाली एक युवक हिसाब लिखने का काम करता था, लेकिन इस काम में उसकी रुचि नहीं थी ।

सप्ताहभर का अवकाश लेकर वह अपनी मां से मिलने गांव चला गया । वहां से उसने अपने एक पूर्व शिक्षक को बहुत निराशापूर्ण पत्र लिखा, "दूकान की नौकरी से मेरा मन एकदम ऊब चुका है । यदि फिर वहां काम करने जाना पड़ा तो आत्महत्या कर लूंगा ।"

शिक्षक ने पत्र के उत्तर में उसे तुरंत लिखा, "आपका पत्र पढ़कर मैं दुखी हुआ । आपके छात्र-जीवन से मैं प्रभावित रहा हूं । एक महान पुरुष बनने के समस्त गुण आप में मौजूद हैं और आप प्रतिभाशाली तो हैं ही । आत्महत्या करने की बात आप मन से निकाल दीजिए । देखिए, आपको चिरकाल तक जीवित रहकर अभी बहुत काम करना है ।"

शिक्षक का यह पत्र उस युवक के लिए प्रेरणा बन गया । आगे चलकर वह युवक विश्व का महान लेखक बना । उसने ८२ मौलिक ग्रंथ लिखे । यह सुविख्यात लेखक था—एच. जी. वेल्स ।

प्रेरणा का सीधे शब्दों में अर्थ है—महान पुरुष की सफलता के मार्ग से दिशा निर्देश । प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसे मनोभाव और शक्तियां होती हैं, जिसको केवल प्रेरणा ही बाह्य रूप में प्रकट कर सकती है । प्रेरणा का मूल आधार किसी व्यक्ति को स्वीकार करना है । प्रेरणा के सारे स्रोत सदैव ही किसी मनुष्य, पुस्तक अथवा स्थिति में निहित हैं ।

प्रेरणा में वास्तविक शक्ति उस समय उत्पन्न होती है, जब हमारा प्रत्येक कदम कुछ परिणाम दिखाये । व्यक्ति कुछ करने का साहस प्राप्त कर सके ।

यह सच है कि प्रेरणा जितनी लाभदायक होती है, उतनी ही अधिक ध्यान मांगती है । प्रेरणावाले व्यक्ति को सदैव अच्छे सुअवसर के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है । जीवन में प्रगति का विषय केवल वाद-विवाद का विषय नहीं है, बल्कि एक अटल सत्य है, जिसका आधार परिश्रम, त्याग तथा धैर्य है ।

किसी में प्रेरणा उत्पन्न करते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रेरणा जीवन की प्रत्येक दिशा को अपने आप में समेटे । जहां वह एक सफल व्यापारी, कर्मचारी या पदाधिकारी बने, वहां एक ऐसा व्यक्ति भी बने, जिसके नैतिक मूल्य दृढ़ हों, जो परिवार का ख्याल रखे और समाज के प्रति अपने दायित्व को यथाशक्ति निभाये । ●

—पवन कुमार पीयूष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रकवि के ११०वें जन्मदिन की याद में

मैथिलीशरण गुप्त की गप्प-गोष्ठियों के लतीफे

● डॉ. नगेंद्र

तीन अगस्त को दद्दा—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का ११०वां जन्मदिन था। अनायास ही उनकी याद आ गयी, और आज से चालीस वर्ष पूर्व उनके दिल्ली-प्रवास की अनेक स्मृतियां मन में चित्रों की तरह घूम गयीं। दद्दा बड़े ही गोष्ठी-रसिक थे। जब वे दिल्ली में रहते थे, तो हर शाम को उनके अंतरंग परिकर के कुछ साहित्यकार-मित्र ६, नार्थ ऐवन्यू में आकर जम जाते थे, और तरह-तरह की चर्चाएं व किस्से-कहानियां चलती रहती थीं। ये एक प्रकार से गप्प-गोष्ठियां ही हुआ करती थीं, क्योंकि इनमें किसी साहित्यिक या गंभीर राजनीतिक विषय पर कोई चर्चा नहीं होती थी। दद्दा के पास हर अवसर के लतीफों का संचित कोष था। हम सब लोग इन लतीफों का आनंद लिया करते थे, पाठक भी उनका आनंद ले सकें, इसलिए कुछ लतीफे पेश हैं—

भरतपुर के महाराज के किसी संबंधी का श्राद्ध था। महाराज की आज्ञा से उनके एक अधिकारी उसके निमित्त ब्राह्मण भोजन कराने मथुरा आये और भरतपुर के राजघराने से संबद्ध चौबे को भोजन के लिए आमंत्रित करते हुए बोले, "चौबेजी, महाराज की आज्ञा है कि आप जो भी और जितना भी चाहें, मनपसंद का भोजन करें।" चौबे ने विनम्रता का प्रदर्शन करते हुए कहा, "नहीं जजमान, हम क्या कहेंगे ? आपकी जो श्रद्धा हो, वही हमें खिला दीजिए।"

अधिकारी ने फिर महाराज की आज्ञा दोहराते हुए कहा, "नहीं चौबेजी, महाराज का हुकुम है कि आप जो चाहें, और जितना भी चाहें आज अपनी मनपसंद का भोजन करें।"

चौबे ने फिर कहा, "आप ही हलवाई को हुकुम दे दीजिए। आप जो भी खिलाएंगे, हम महाराज को आशीष देते हुए बड़े प्रेम से खा लेंगे।" चौबे के जिद करने पर अधिकारी का स्वर ऊंचा हो गया और बोला, "आप बार-बार अपनी ही कहे जा रहे हैं हमारी सुनते ही नहीं।"

इस पर चौबे अपने सुभाव पर आ गया और कहने लगा, "जजमान, एक बार फिर सोच लो।" अधिकारी को गुस्सा आ गया और बोला, "चौबे, तुमने क्या समझ रखा है। पूरी दूकान खा लो। हम तुम्हें नहीं रोकेंगे।"

चौबे ने हलवाई से कहा, "लालाजी, आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप हमें छककर पूरी के ऊपर की पपड़ियां ही खिला दीजिए।"

हलवाई समझ गया और अपनी गद्दी से उतरकर हाथ जोड़कर बोला, "चौबेजी, हमारी सामर्थ्य नहीं है। फिर उक्त अधिकारी से कहा, "जजमान, चौबेजी को किसी और दूकान पर ले जाएं।"

एक बार लखनऊ के एक रईसजादे दिल्ली की सैर करने आये और अपने दोस्त के यहां ठहरे। अगले दिन शाम को दोस्त को लेकर वे चांदनी चौक घूमने के लिए पैदल ही निकल पड़े। लखनऊ में उन्होंने सुन रखा था कि दिल्ली के जेबकतरे बड़े फनकार होते हैं, चलते-चलते जेब साफ कर देते हैं। इस बात की आजमाइश करने के लिए उन्होंने एक घिसी चवन्नी अपनी जेब में डाल ली।

चांदनी चौक की सड़कों और उससे लगे हुए कूचों में डेढ़-दो घंटे घूमने के बाद रईसजादे अपनी जेब में हाथ डालकर दोस्त से बोले, "लोगों ने वैसे ही उड़ा रखा है। घूमते-घूमते दो घंटे हो गये—हमारी जेब में तो किसी ने हाथ डाला नहीं।"

उन्होंने वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि पीछे से एक गिट्टे से आदमी ने धीमी आवाज में कहा, "क्या हाथ डालें ? घिसी चवन्नी लेकर आये हैं। चार बार हाथ डाला, पर घिसी चवन्नी ही हाथ आयी, जिसे चारों बार निकालकर वापस रख दिया। अगले दिन कुछ रकम लेकर आइए, तब हमारे हुनर देखिए।"

दोस्त ने रईसजादे का हाथ पकड़ा और कहा, "चलिए, अब और सबूत की जरूरत नहीं है।"

उत्तर प्रदेश के शहरों में यह प्रवाद प्रचलित था कि हाथरस के लोग बड़े गरियर (गालीबाज) होते हैं।

एक बार स्वयं दद्दा को अपने अंतरंग मित्र मुंशी अजमेरी के साथ किसी बरात में हाथरस आना पड़ा। जब बरात हाथरस की सड़क पर होकर गुजर रही थी, तो सड़क के दोनों ओर खड़े कुछ लोग बरात को देख रहे थे। जब काफी देर हो गयी तो मुंशीजी बोले, "मैथिलीशरण, यहां के लोग तो बड़े सीधे-सादे मालूम पड़ते हैं। बड़े ही सौम्य भाव से बरात को देख रहे हैं।" इतने पर भी मुंशीजी से नहीं रहा गया और अपनी आदत के अनुसार कुछ चुहल करने के लिए पास में खड़े एक लड़के से पूछ डाला, "भैया, इस मोहल्ले का क्या नाम है ?"

लड़के ने अपने पास खड़े दूसरे लड़के को कोहनी मारी और कहा, "बताय दै न, मामा पूछि रहे हैं कि या जगह कौ का नाम है।"

दद्दा ने मुंशीजी के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'अजमेरी, अब और कुछ मत पूछना। अभी तो 'मामा' तक ही बात पहुंची है—आगे न जाने क्या संबंध जोड़ लें।"

—१३४ वैशाली पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रे मन, चित्रकूटहि चल

● सुरेंद्र सिंह सेंगर

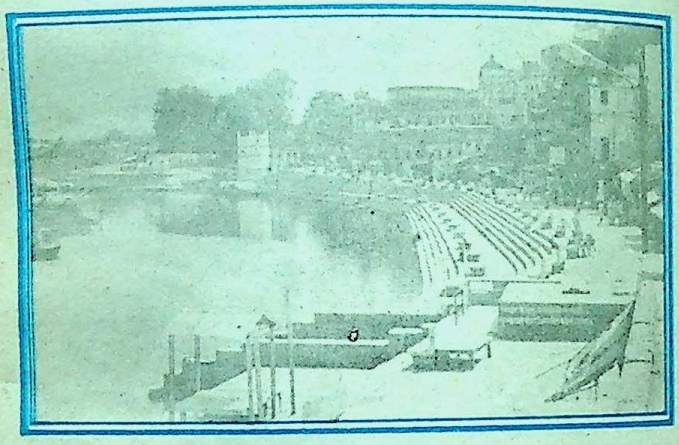

मंदिरों की भव्य कतार रामघाट पर

मैं चित्रकूट हूं। मेरा नाम ही स्वतः मेरा परिचय है। वेद, पुराण, रामायण सभी मेरी महिमा के गुण गाते अघाते नहीं हैं, फिर भी मैं नम्र हूं, विनम्र हूं। मेरे आगोश में कितनी संस्कृतियों का जन्म हुआ और पराभव भी, किंतु संस्कृति कभी विनष्ट नहीं हुई।

मेरी ही गोद में अत्रि, सरभंग, सुतीक्ष्ण, मार्कण्डेय तथा वाल्मीकि-जैसे ऋषियों ने तपस्या की थी और अपने ज्ञान-दीप से इस जग को आलोकित किया।

दशरथनंदन श्रीराम ने विपत्तिकाल में अपनी भार्या सीता तथा अनुज लक्ष्मण के साथ मेरा आतिथ्य स्वीकार किया और अपने वनवास काल का अधिकतर समय मेरे ही अंचल में व्यतीत किया। मैंने उनके आतिथ्य में कंद मूल तथा अनेक प्रकार के फल-फूल प्रदान किये।

मैंने युगों के तमाम उतार-चढ़ावों को देखा है। पहले मेरा अस्तित्व घनघोर जंगल में था, जहां शेर, चीते, भालू, बंदर आदि स्वछंद विचरण करते थे। मोर तथा अन्य पक्षियों का कलरव रागिनी बन जाता था। मेरे गिरि गह्वर में ऋषि-मुनि तपस्या में लीन रहते थे, श्रद्धालु भक्त मोक्ष तथा ज्ञान की पिपासा से सत्तू और चबेना लेकर आते थे, किंतु आज विकास के नाम पर मेरे सीने को चीरकर सड़कें बनायी जा रही हैं। पेड़ों को काटकर मुझे नंगा किया जा रहा है। भीड़भाड़ तथा शोर से सभी पशु-पक्षी पलायन कर गये हैं। पहले जहां लोग ज्ञान-बोध, आनंद-बोध तथा दृष्टि-बोध के लिए आते थे, वहीं पर अब लोग आमोद-प्रमोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति सुंदर, अति सुखद, यहां की सुंदरता और शांति मेरे रोम-रोम में बस गयी है । यहां के पत्तों-पत्तों में एक आध्यात्मिक गंध, झरनों में संगीत है । मैं यहां के आकर्षण में खोता जा रहा हूं ।

मनाने के लिए आने लगे हैं ।

फिर भी मैं आपको निराश नहीं करूंगा । आज भी मैं येन-केन-प्रकारेण अपने अस्तित्व को बचाये हुए हूं । आइए, मैं आपको अपने स्थलों को दिखाता हूं जहां युगों का इतिहास छिपा है ।

आप दूर से आये हैं, थक गये होंगे, पहले मंदाकिनी गंगा के पावन जल में डुबकी लगाकर तरोताजा हो लीजिए । ये मंदाकिनी मोक्षदायिनी गंगा भी हैं । स्नान कर अब तो आप बिलकुल प्रसन्न दिख रहे हैं । देखिए, मंदाकिनी के इस घाट को कहते हैं— रामघाट । इस घाट पर भव्य मंदिरों की कतार कितनी सुंदर लग रही है । इनमें से कुछ मंदिर अति प्राचीन हैं, कुछ को पन्ना राज्य के नरेशों ने बनवाया था, जो उनकी स्थापत्य कला तथा धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं ।

तिलक देत रघुवीर

ये मदगयेंदजी का मंदिर है । ये चित्रकूट के राजा कहे जाते हैं । श्रीराम ने भी यहां अपने प्रवास के लिए इन्हीं से अनुमति मांगी थी । आगे जो विशाल मंदिर है, उसे यज्ञ-वेदी कहते हैं । ब्रह्माजी ने इसी यज्ञ-वेदी पर यज्ञ किया था । यह जो चबूतरा है, इसको तुलसी-चबूतरा कहते हैं । यहीं पर श्रीराम ने तुलसीदास को दर्शन दिये थे, किंतु तुलसीदास उनके दर्शनों में इतना तल्लीन हो गये कि सब-कुछ भूल गये, तब हनुमानजी ने तोते का रूप धरकर उन्हें चेताया—

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर
तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक देत रघुबीर

आगे देखिए, यह है बालाजी का मंदिर, जो मुसलिम तथा हिंदू स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमूना है । एक बार मुगल बादशाह औरंगजेब मेरी शक्ति की परीक्षा लेने अपनी सेना के साथ आया, तो मेरी शक्ति के आगे उसके स्वयं का तथा सेना का अस्तित्व खतरे में पड़ गया । तब उसने मुझसे क्षमा-याचना की और यादगार के रूप में बालाजी मंदिर का निर्माण कराया । उसने मंदिर के खर्च के लिए कई गांव भी दान में दिये, जो बदस्तूर आज भी जारी है । इसका प्रमाण है औरंगजेब द्वारा दिया गया ताम्रपत्र में खुदा हुआ फरमान ।

पिघले पत्थरों के साक्ष्य

यह जो धनुषाकार पर्वत दिखायी दे रहा है, यह मेरा हृदय है, इसको कहते हैं कामदगिरि यानी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला पर्वत । यहीं पर श्रीराम ने अपने वनवास के साढ़े ग्यारह वर्ष व्यतीत किये थे । गरमी के समय में यहां के आसपास के पर्वतों की हरियाली जब सूख जाती है, तब भी यह हराभरा रहता है । लोग इसकी परिक्रमा करते हैं । कुछ लोग लेटकर परिक्रमा लगाते हैं, जिसको पूरा करने में महीनों लग जाते हैं । इसके चारों तरफ मंदिरों का जाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिछा हुआ है । परिक्रमा के मध्य में भरत-मिलाप स्थल है, जो भाइयों के परस्पर प्रेम की पराकाष्ठा का प्रतीक है । राम और भरत के अथाह प्रेम को देखकर पत्थर भी पिघल गये थे, जिसके साक्ष्य आज भी मौजूद हैं ।

इसके समीप जो पहाड़ी देख रहे हैं, वह लक्ष्मण टीला है । लक्ष्मण ने वनवास काल में चौदह वर्ष तक जागने का व्रत लिया था और वह इसी टीले से सजग प्रहरी की भांति पहरा देते रहे थे ।

यहां तक तो आपने पैदल ही देख लिया, किंतु आगे की यात्रा आपको किसी वाहन द्वारा करनी होगी । वैसे आज का आदमी सुविधा-भोगी हो गया है, इसलिए वह सुविधा के साथ और जल्द से जल्द देखना चाहता है, किंतु जितना आनंद पैदल चलकर देखने में आता है उतना वाहन द्वारा नहीं ।

अब आप इस समय प्रमोद वन पहुंच गये हैं । इसको महाराजा रीवां ने बनवाया था ।

स्फटिक शिला : स्फटिक मणि की भांति श्वेत

लंबे-चौड़े हाते में जो कोठरियां आप देख रहे हैं, ये संख्या में १००८ हैं । पुत्र की कामना से महाराज रीवां ने यहां १००८ पंडितों से अनुष्ठान करवाया था । यहीं पर है— पुत्र जीवन वृक्ष । पुत्र की कामना से दूर-दूर से आये लोग इसी वृक्ष के नीचे रात्रि व्यतीत करते हैं, जिससे उनकी मनोकामना पूर्ण होती है । यहीं से कल-कल करती मंदाकिनी बह रही है ।

देखिए, कितना सुखद नयनाभिराम दृश्य है ।

अब आप जानकी कुंड पहुंच गये हैं । यह वही स्थल है जहां जानकीजी प्रतिदिन स्नान करने आती थीं । यहां का वातावरण कितना शांत तथा रमणीक है । मंदाकिनी के दोनों किनारों पर अर्जुन के वृक्ष यहां की शोभा में चार चांद लगा रहे हैं ।

यह है स्फटिक शिला । स्फटिक मणि के समान श्वेत, धवल । यहीं पर श्रीराम ने सीताजी का वनांचल के कुसुमों से श्रृंगार किया था । इंद्र के लड़के जयंत ने कौवे का रूप बनाकर यहीं पर सीताजी को चोंच मारी थी, तब श्रीराम ने कुश का तीर बनाकर वीरासन की मुद्रा में बाण चलाया था । वीरासन से बने उनके घुटने तथा अंगूठे के निशान आज भी मौजूद हैं ।

इसको कहते हैं सती अनुसुइया आश्रम । पर्वत और मंदाकिनी दोनों के मध्य यह आश्रम कितना सुहावना लग रहा है । यहीं पर महर्षि अत्रि तथा मां अनुसुइया ने घनघोर तपस्या की थी । मां अनुसुइया के तपोबल से मंदाकिनी का उदगम-स्थल भी यही है । यहीं पर अनुसुइया ने सीताजी को पतिव्रत धर्म का उपदेश दिया था । देखिए, यह मछलियों का झुंड कैसा निर्भय हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके पास स्वतः चला आ रहा है ।

जहां हनुमान नहाये

अब आप पहुंच गये हैं गुप्त गोदावरी । प्रकृति की कृति का अनुपम उपहार । यहां पानी कहां से आता है और कहां जाता है, कोई अता-पता नहीं । इसको देखिए, जिसे प्रकृति ने स्वयं छेनी और हथौड़ों से तराशा है । तराशे हुए खंभे, झाड़फानूस जैसी साज-सज्जा से सजा मंडप, जो किसी राज दरबार की शोभा को मात देता है । प्रकृति प्रदत्त इन गुफाओं जैसा अनूठा बेजोड़ नमूना कहां मिलेगा आपको ! श्रीराम ने कुछ समय यहां भी प्रवास किया था ।

अब चलिए, वापस चलते हैं । वह जो पहाड़ी पर सफेद मंदिर दिखायी दे रहा है, उसे कहते हैं हनुमान-धारा । पहाड़ की छाती से निकलती स्वच्छ शीतल जल की धारा । लंका-दहन के पश्चात हनुमानजी के शरीर में तपन बहुत ज्यादा व्याप्त हो गयी थी, तब श्रीराम ने उन्हें इसी धारा में स्नान करने को कहा था । इस हनुमान धारा के ऊपर सीता रसोई है ।

यहां का सबसे अच्छा मौसम वर्षाकाल माना जाता है । आप बड़े सौभाग्यशाली हैं कि वर्षा ऋतु में आये हैं । चारों ओर हरियाली की बिछी चादर, अपने सतरंगी पंखों को फैलाकर नाचते-गाते मयूरों, झरनों का कल-कल, उफनती मंदाकिनी का कोलाहल, पर्वत के शिखरों को चूमते बादल, सब मिलाकर कितना सुखद मनोरम लग रहा है ।

आप तो कुछ बोले ही नहीं, केवल सुनते गये हैं । आप को कैसा लगा, बताइये ?

अति सुंदर, अति सुखद, यहां की सुंदरता और शांति मेरे रोम-रोम में बस गयी है । यहां

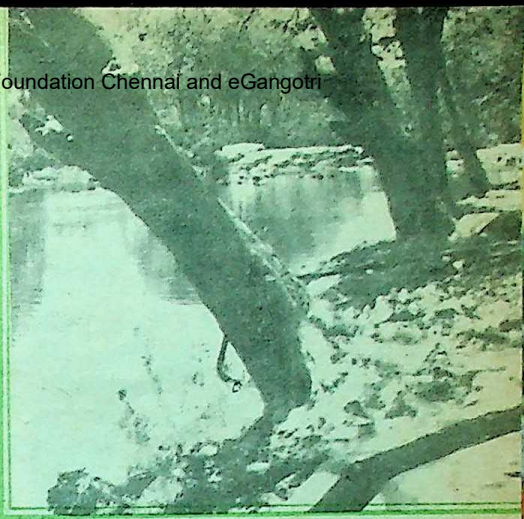

जानकी घाट : जानकीजी जहां प्रतिदिन नहाती थीं

के पत्तों-पत्तों में एक आध्यात्मिक गंध, झरनों में संगीत है । मैं यहां के आकर्षण में खोता जा रहा हूं, लगता है कि सब कुछ छोड़-छाड़ तुम्हारे ही शरण में आ जाऊं । बताओ, और कुछ है देखने के लिए ।

यहां तो इतना कुछ है कि देखने में महीनों लग जाएंगे । अभी तो बांकेसिद्ध, कोटितीर्थ, देवांगना, अमरावती, सुतीक्ष्ण आश्रम, सरभंग आश्रम, मार्कण्डेय आश्रम आदि नैसर्गिक स्थल हैं । लेकिन अफसोस है कि मैं आपको वहां नहीं ले जाऊंगा क्योंकि, वहां जाना सुरक्षित नहीं है । आज फिर आसुरी प्रवृत्तियां सर उठाने लगी हैं । एक दिन इन्हीं असुरों का नाश करने के लिए श्रीराम ने चित्रकूट में ही प्रण किया था और कहा था—

निशिचर हीन करऊं, भुज उठाई प्रण कीन्ह

और मैं पुनः श्रीराम के आगमन की प्रतीक्षा में अडिग खड़ा हूं ।

—उ.प्र. पर्यटन कार्यालय,
होटल वीरांगना, झांसी-२८४००१

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीड़ा करती युवतियों के श्रृंगार

● वैद्य अनुराग विजयवर्गीय

श्रृंगार का मोह किसे नहीं है ? श्रृंगार के प्रेरक कामदेव के प्रभाव से स्त्री-पुरुष तो क्या, प्रकृति भी नहीं बच पाती ? वह भी समय-समय पर रंग-बिरंगे पुष्पों से अपना श्रृंगार करती है । श्रृंगार के लिए आवश्यकता होती है, सौंदर्य-प्रसाधनों की । यूं तो आज तरह-तरह के क्रीम-पाउडर, फेस-पेक, लिपस्टिक, गजरे इत्यादि अन्यान्य सौंदर्य प्रसाधक सामग्री बाजारों में उपलब्ध हैं, लेकिन प्राचीन भारत में भी सौंदर्य-प्रसाधनों की कोई कमी नहीं थी और हमारा प्राचीन सौंदर्य-प्रसाधनों का ज्ञान आज से कहीं अधिक पल्लवित-पुष्पित था ।

महाकवि कालिदास के 'मेघदूत' में वर्णित सौंदर्य-प्रसाधन विशेष उल्लेखनीय हैं । कालिदास के काल में स्त्री व पुरुषों का श्रृंगार पुष्पों के बिना पूर्णता प्राप्त नहीं करता था । स्त्रियां रंग-बिरंगे पुष्पों व पत्तों के दलों, महावर इत्यादि प्रसाधन द्रव्यों का उपयोग किया करती थीं । कुंवारी युवतियां भी अपनी सजावट में फूलों का उपयोग करती थीं । 'मेघदूत' में अलकानगरी की स्त्रियों को हाथ में कमल लिये, शिरीष के पुष्प को कर्णाभूषण बनाये और बालों के बीच में नीप या कदंब पुष्पों को लगाये हुए वर्णित किया गया है कि अलकापुरी की नारियों के सिंगार अनंत हैं । वे बदलती ऋतुओं के फूलों से अपना श्रृंगार करती हैं । हाथ में वे लीला कमल डंडी के साथ खिला या संपुट कमल धारण करती हैं । घुंघराले पतले बालों में सफेद जूही के फूल गूंथती हैं । आलता लगे लाल ओष्ठों एवं गालों पर लोध्र का चूर्ण मलकर वे उन्हें पीताभ कर लेती हैं । जूड़े के फंदे में वे नये कुरबक के फूल पहनती हैं । कानों में सुंदर सिरस के फूल धारण करती हैं । और वर्षागम पर वे अपनी मांग कदंब-पुष्पों से सजाती हैं ।

कालिदास ने अंग-राग एवं लेपनों का वर्णन भी किया है । 'मेघदूत' का यक्ष मेघ से कहता है कि वह उज्जयिनी में महाकाल शिवजी के मंदिर में जाए, जहां पर कमलों के मकरंद से सुरभित गंधवती नदी में क्रीड़ा करती युवतियों के अंग से धुल-धुलकर छूटे अंगरागादि विलेपनों से बसी गीली हवा उस पवित्र धाम के उपवन को झकझोर देती होगी ।

केशों में धूप

नारियां केश-वासने के लिए सुगंधित धूप के धुएं का प्रयोग किया करती थीं । उल्लेख है कि उज्जयिनी में सुख के साधन अनेक हैं । वहां अटारियों की खिड़कियों की जालियों से निकलता नारियों के केश वासनेवाले धूप का धुंआ तुम्हारे श्यामल शरीर को पुष्ट करेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन भारतीय सौंदर्य-प्रसाधनों का प्रसंग बाणभट्ट की 'कादम्बरी' व 'हर्षचरित' के संदर्भों के उल्लेख के बिना भी अधूरा ही जान पड़ता है। 'बाण' के काल में स्त्रियां व पुरुष दोनों ही सौंदर्य-प्रसाधनों के रूप में पुष्पों को धारण करते थे। युवतियां कानों में, केशपाश में तथा सिर पर विविध पुष्प, मंजरी, पंखुड़ी तथा पल्लव धारण करती थीं।

'हर्षचरित' में शिरीष-पुष्प के गुच्छों से 'कर्णपूर' बनाये जाने का उल्लेख मिलता है। कानों में उत्पल पहनना भी स्त्रियों को प्रिय था। स्त्रियां कान में कमल या कुमुद की पंखुड़ियां भी धारण करती थीं, इसका स्पष्ट उल्लेख राजा तारापीड के जल-क्रीड़ा वर्णन में मिलता है कि 'उस दीर्घिका में रमणियों द्वारा कान में धारण किये गये नील कुमुद के दल तैर रहे थे। युवतियां केशपाश में भी पुष्प तथा पल्लव लगाती थीं। सिद्धों की स्त्रियां बंधे हुए केशपाश में 'मल्लिका' के पुष्प लगाती थीं।

बंधे हुए केशपाश में तमाल के पल्लव लगाये जाने का भी उल्लेख है। स्थाणीश्वर की स्त्रियां भी कानों में तमालपत्रों के अवतंस धारण करती थीं।

'कादम्बरी' में वर्णन आता है कि कुछ वृक्षों के पल्लव भी कर्णाभूषणों के रूप में प्रयुक्त होते थे। इनमें प्रमुख थे— अशोक और तमाल। 'कादम्बरी' के श्रीमंडप में स्थित कन्याओं ने कानों में अशोक के पल्लव धारण किये थे।

'प्रसाधन' में अनेकानेक वानस्पतिक द्रव्यों का प्रयोग होता था, जैसे चंदन, अगरु, कुंकम, कर्पूर। प्रत्येक अवसर पर, चाहे वह मांगलिक हो या सुरत क्रीड़ा, चंदन का अंगराग लगाया जाता था। स्त्री व पुरुष दोनों को ही अंगराग लगाना पसंद था। 'कादम्बरी' में स्पष्ट वर्णन मिलता है कि पंपा-सरोवर के किनारे पर वनराज पुलिंद की सुंदर नारियां, सरोवर के जल को चंदन-चर्चित देहों से मलिन कर रही थीं।

चंदन का लेप

उस समय स्तनों पर चंदन का विलेपन करके, उस पर कर्पूर की धूलि छिड़कने का भी प्रचलन था। चंदन के अतिरिक्त स्त्रियां कुंकुम का अंगराग भी लगाती थीं। युवतियां सजावट के लिए कपोलों पर कुंकुम से पत्रलता या पत्रभंग भी बनाती थीं। इस कार्य के लिए कुंकुम के अतिरिक्त 'कृष्णागुरु' का प्रयोग होने का भी उल्लेख मिलता है। स्तनों पर भी कृष्णागुरु से पत्र-भंग बनाये जाते थे।

युवतियां ललाट पर चंदन तिलक लगाती थीं। कपोलों पर विशेषक बनाने के लिए भी चंदन का प्रयोग किया जाता था। विवाह के अवसर पर उबटन लगाने का भी प्रचलन था। राज्यश्री के विवाह के अवसर पर 'बलाशना'

आज के सौंदर्य-प्रसाधनों के प्रति हमारी ज्ञान-शून्यता जैसी स्थिति प्राचीन भारतीय परिवेश में नहीं थी। नैसर्गिक प्रसाधनों से लाभ ही लाभ मिलते थे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

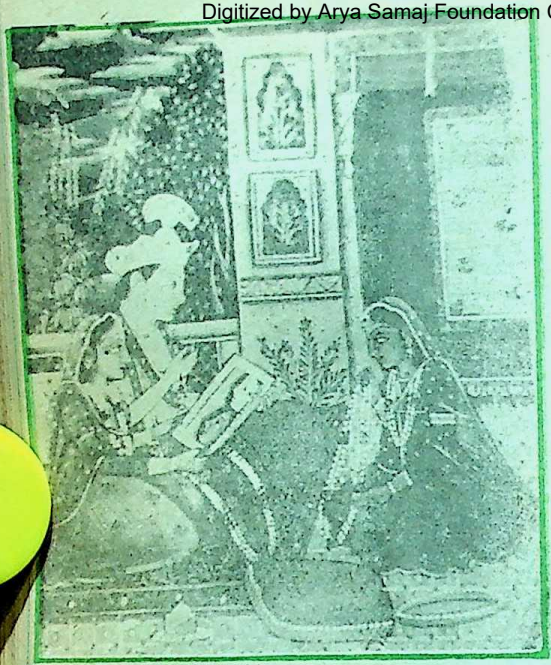

औषधि घी में पकाकर, और उसे पीसे हुए कुंकुम में मिलाकर उबटन व सुंदरता बढ़ानेवाला मुखालेपन तैयार किया जा रहा था।' 'चंदन' का अंगराग बनाते समय उसमें सुगंध के लिए अन्यान्य द्रव्य भी मिलाये जाते थे।

ऋषि-महर्षियों द्वारा हजारों वर्ष पूर्व प्रणीत हमारी स्वदेशी चिकित्सा पद्धति 'आयुर्वेद' के ग्रंथों में भी सौंदर्य-प्रसाधनों का यत्र-तत्र उल्लेख मिलता है। प्राचीन-भारतीय परिवेश में युवतियां 'उबटन (उद्धर्वन) का महत्त्व भली-भांति जानती थीं, फलस्वरूप वे 'तन्वंगी' हुआ करती थीं। आयुर्वेद महर्षि शांगर्धर ने 'उबटन' की महिमा इस प्रकार बतलायी है—

'उद्धर्तनं कफहरं मेदसः प्रविलायनम्।
स्थिरीकरणमंगानां त्वक्प्रसादकरं परम्॥

अर्थात्, उबटन कफ को हरता है, मेद (मोटापन) को घटाता है, अंगों को स्थिर (सबल) बनाता है और त्वचा को अत्यंत कांतियुक्त बनाता है।

प्राचीन भारत में चेहरे का सौंदर्य बरकरार रखने के लिए तथा उत्पन्न हुई विकृतियों को दूर करने के लिए चिकित्सा व्यवस्था भी सुलभ थी। युवतियां चेहरे की झांइयों को दूर करने के लिए सरसों, वच, लोध्र व सैंधा नमक का लेप तथा सफेद घोड़े के खुर की भस्म, आक का दूध, हल्दी तथा मक्खन का लेप किया करती थी। केशवर्धनार्थ गोखरू, तिल के पुष्प एवं घृत का लेप करने का प्रचलन था। मुंहासों के निवारणार्थ लोध्र, धनिया, वच, गोरोचन तथा मरिच का लेप प्रचलित था।

प्राचीन भारतीय रूपसियों के सौंदर्य प्रसाधन अनूठे रहे हैं; इस आधार पर उनके अप्रतिम सौंदर्य की कल्पना की जा सकती है। प्रसंगवश यहां पर यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि हमारे पूर्वजों को सौंदर्य-प्रसाधनों का सांगोपांग महत्त्व ज्ञात था। पुष्पों, वस्त्रों व रत्नों को धारण करने से जीवाणुओं का संक्रमण न होने का तथ्य आयुर्वेदाचार्य वाग्भट ने प्रतिपादित किया था। आज के सौंदर्य-प्रसाधनों के प्रति हमारी ज्ञान-शून्यता जैसी स्थिति, प्राचीन भारतीय परिवेश में नहीं थी। नैसर्गिक प्रसाधनों से लाभ ही लाभ मिलते थे, इतर दुष्प्रभाव भी नहीं होते थे।

यूं तो सौंदर्य की दौड़ में आज की नारी प्राचीन भारतीय नारी से तथाकथित रूप में हजारों कदम आगे है, मगर सचाई तो यह है कि अब वह आत्मघाती-सौंदर्य की उपासना में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

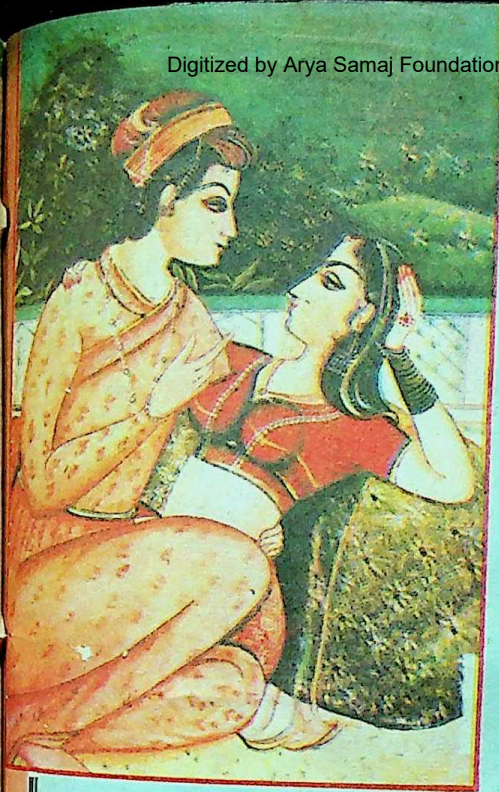

◀ श्रृंगार के बाद प्रणय निवेदन

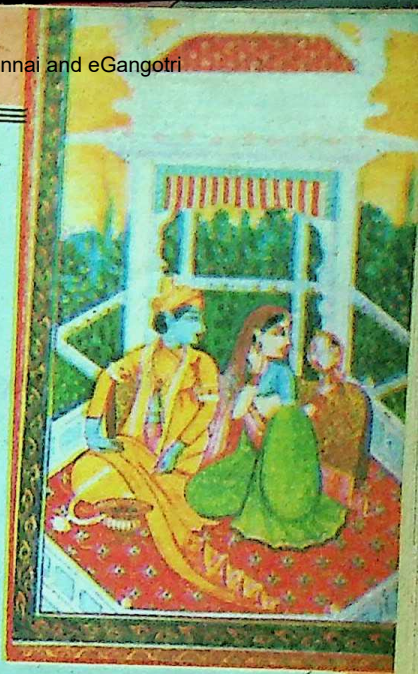

पियासंग श्रृंगार

बेतहाशा दौड़ रही है । विविध परफ्यूम, पाउडर, लिपस्टिक, बेतरतीब ढंग से की गयी डाइटिंग, नींबू-पानी, योग, लाइट सूप एवं सलाद के अभिनव प्रयोगों से क्या वह नैसर्गिक एवं संतुलित सौंदर्याभिवर्धन करने में समर्थ हो रही है । नैसर्गिक सौंदर्य-प्रसाधनों से निरंतर बढ़ती हुई दूरियों के कारण उसका स्वास्थ्य एवं सौंदर्य दोनों चरमरा रहे हैं । भारतीय परिवेश में हल्दी, चंदन, गुलाब जल, केवड़ा-जल, मेंहदी का महत्त्व नकार पाना कदाचित असंभव ही है ।

—द्वारा मोतीलाल विजयवर्गीय,
२/८४, स्कीम दस (बी),
अलवर-३०१००१

पुष्पों से श्रृंगार

छाया : लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

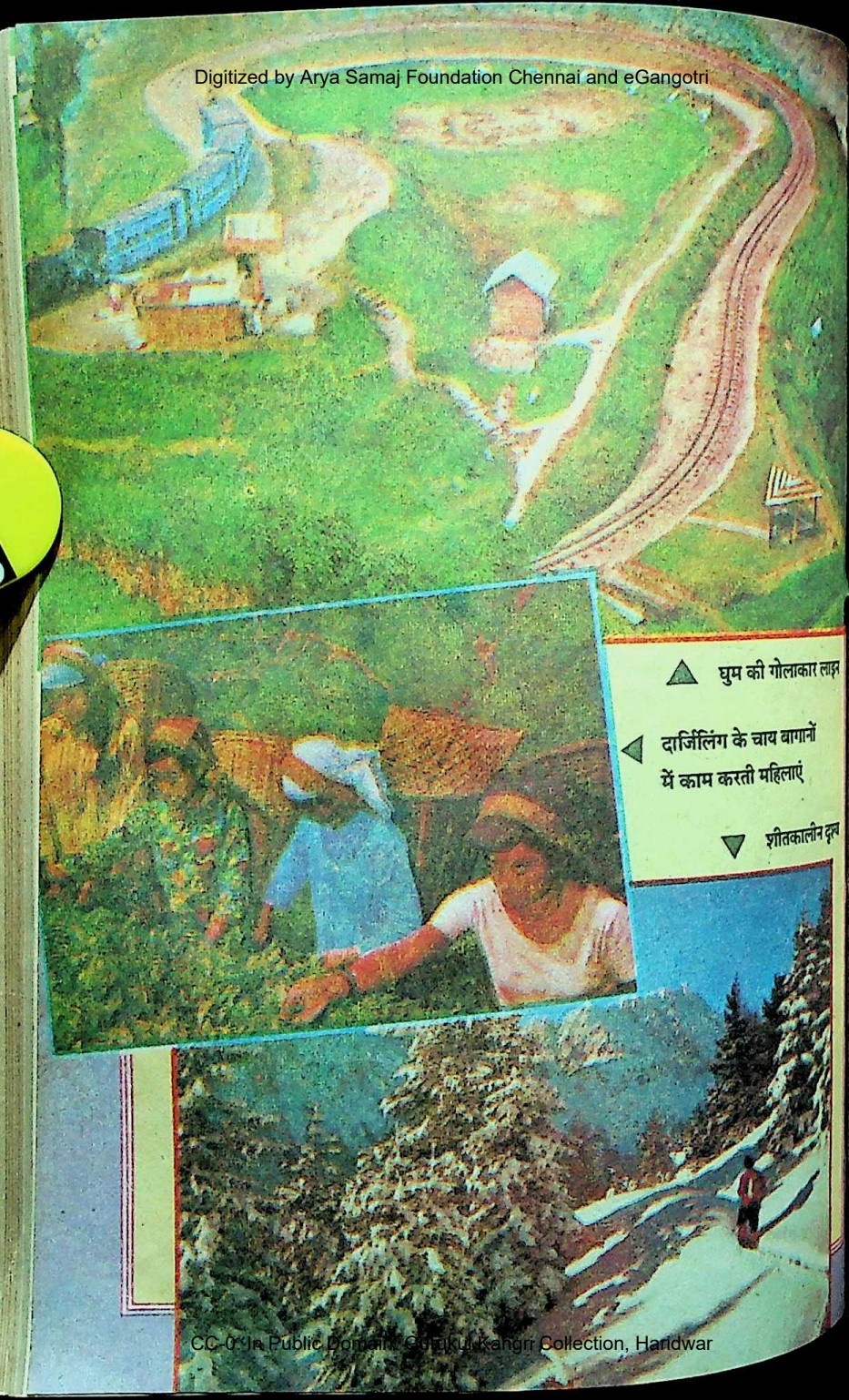

▲ घुम की गोलाकार लाइन

◀ दार्जिलिंग के चाय बागानों में काम करती महिलाएं

▼ शीतकालीन दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार्जिलिंग

दरियाई घोड़े-सी इंजनवाली रेलगाड़ी

● रमेश चन्द्र

हिमालय पर्वत की पूर्वोत्तर श्रृंखलाओं में बसा दार्जिलिंग शहर। प्रकृति की गोदी में बसा शांतमना यह शहर बरबस ही अपनी ओर पर्यटकों को आकर्षित करता है। लगभग २१४३ मी. तक की ऊंची श्रृंखलाओं को काट-काट कर बसा यह ढलवां शहर पर्यटकों के लिए नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता है। अत्यंत साफ-सुथरा दार्जिलिंग अपने निश्छल-हृदय निवासियों का प्रतिबिंब है। यह ऐसा शहर है, जिसकी यात्रा के आरंभ-स्थल से ही मन रोमांचित होना शुरू हो जाता है। इसकी यात्रा का वह आरंभ स्थल है न्यू जलपाई गुड़ी स्टेशन, जिसे संक्षेप में एनजेपी भी कहते हैं। ज्यों-ज्यों हम एनजेपी से दार्जिलिंग की ओर बढ़ते हैं, इसका चुंबकीय आकर्षण हमें बरबस अपनी ओर खींचता महसूस होता है। इसी आकर्षणवश हम प्रकृति की गोद में समाते चले जाते हैं।

दार्जिलिंग वस्तुतः प्रकृति की गोद है। इस गोद में क्या आकर्षण है, क्या स्नेह है, क्या मधुरता है और क्या विशालता है, वह यहां की घाटियां स्वयंमेव अनुभव करा देती हैं। दार्जिलिंग की यात्रा का प्रत्येक घटक तथा प्रत्येक पहलू अपने आप में विशिष्ट है।

भारत की सर्वोच्च चोटी के-२ यानि कंचनजंगा का दुर्लभ दर्शन प्रदान करनेवाला दार्जिलिंग शहर पश्चिम बंगाल के चरम उत्तर से गुजरनेवाली हिमालयी श्रृंखलाओं की उपत्यका में बसा हुआ है। इसके लिए कटिहार के पूर्व में पड़नेवाले एनजेपी स्टेशन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। यह गाड़ी खिलौना गाड़ी के नाम से ज्यादा जानी जाती है।

दार्जिलिंग वस्तुतः प्रकृति की गोद है। इस गोद में क्या आकर्षण है, क्या स्नेह है, क्या मधुरता है और क्या विशालता है, वह यहां की घाटियां स्वयंमेव अनुभव करा देती हैं। दार्जिलिंग की यात्रा का प्रत्येक घटक तथा प्रत्येक पहलू अपने आप में विशिष्ट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पति उद्यान दार्जिलिंग

छोटी पटरी पर

यह रेल भारत की सबसे छोटी पटरी पर चलती है । इसमें बस जितने केवल दो, तीन या चार डिब्बे होते हैं । एक डिब्बा प्रथम श्रेणी का होता है । डीलक्स बस की तरह इसके शीशे बड़े-बड़े होते हैं तथा सीटों के मध्य ऊपर छत तक कोई पार्टीशन नहीं होता, यानि खुला डिब्बा होता है । इस रेलगाड़ी का इंजन आकार में दरियाई घोड़े जितना होता है । हाथी इसके इंजन से दुगुना लंबा-चौड़ा और ऊंचा लगता है । यदि चलने से पहले हाथी इसके आगे अड़कर टक्कर ले ले तो शायद यह चल न पाये ।

एनजेपी से दार्जिलिंग के बीच ८८ कि.मी. लंबा सफर यह गाड़ी ८ घंटे में तय करती है, यानि औसतन ११ कि.मी. प्रति घंटा ।

विश्वस्त पर्यटक का रूप

पर्यटन-मानचित्र पर दार्जिलिंग का एक विशेष स्थान होने के कारण इस छोटी-सी रेलगाड़ी में ही आपको भारत के विभिन्न भागों के लोगों और विदेशी पर्यटकों से भी मुलाकात हो जाएगी और आप यात्रा का अधिक लुत्फ उठा सकेंगे । इसके अतिरिक्त रेलगाड़ी में स्थानीय लोग भी होने के कारण आपकी किंचित जिज्ञासाओं, उदाहरणार्थ ठहरने के लिए होटल, दार्जिलिंग में दर्शनीय स्थल, उपलभ्य वाहन आदि का भी समाधान होता जाएगा और आप एक विश्वस्त पर्यटक के रूप में दार्जिलिंग में प्रवेश करेंगे ।

एनजेपी से गाड़ी में बैठते ही मन प्रश्न करने लगता है कि कैसा होगा इसका रास्ता ? जी हां, प्रश्न सही उठता है । परंतु आप एक बात जान लीजिए कि जब पहाड़ हैं, तब रास्ता पहाड़ी यानि जंगली, मोड़-तोड़वाला, चढ़वां-ढलवां, घुमावदार तो होगा ही । इसके लिए आप तैयार होकर चलें । एनजेपी से सिलीगुड़ी और उससे कुछ आगे तक एक घंटे का मैदानी इलाका है । इसके बाद ताड़, देवदार, बांस के पेड़ों से ढकी पहाड़ी सफर आरंभ हो जाता है और इसके साथ आरंभ हो जाता है वह रोमांच, जिसकी आप आशा करके आये थे । सिलिगुड़ी जंक्शन के बाद सड़क रेलवे लाइन की साथिन हो जाती है और दार्जिलिंग तक साथ निभाती है ।

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

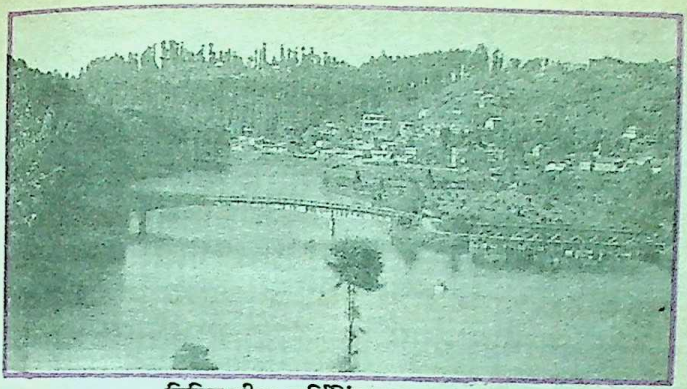

मिरिक झील, दार्जिलिंग का एक दृश्य

बादलों की पालकी

दार्जिलिंग पहुंचते-पहुंचते आपको यहां के पर्यावरण के दर्शन से ऐसी अनुभूति होने लगेगी मानो स्वर्ग लोक में पहुंच गये हों । फिल्मों में स्वर्ग के जो दृश्य दिखायी देते हैं, वे यहां साकार रूप लिये होते हैं । आप चाहें तो बादलों को अपने आलिंगन में ले लें । हिमकणयुक्त शीतल पवन को मुट्ठी में भर लें या बादलों में लुप्त हो जाएं । आप बादलों में विचरण करते हैं, उससे भी ऊपर । मैदानी इलाकों में हमें ऐसा आभास होता है मानो बादल हमसे दूर हैं । परंतु यहां बादल आपके ऊपर नहीं, आप उनके ऊपर होते हैं । देखने में आता है कि नीचे घाटियां बादलों से ढकी पड़ी हैं, और आप बादलों की पालकी पर बैठे हैं । ऊपर साफ वातावरण है, धूप निकली हुई है, जबकि नीचे बादल छाये होने के कारण सूरज दिखायी नहीं देता, अंधेरा-सा लगता है । यहां बादल साक्षात् रूप धारण करते दिखायी देते हैं । आप देखेंगे कि बादल हजारों मीटर नीचे से बनकर ऊपर की ओर चले आ रहे हैं । ठंडे दिनों में और वसंत ऋतु में यह मेघ-दर्शन अधिक मनोरम एवं सुखद होता है । यहां पता लगता है कि बादल क्या होते हैं, कैसे बनते हैं, और वर्षा कैसे होती है । यहां पुस्तकों में दिये गये पाठ नहीं हैं, बल्कि इनका व्यावहारिक रूप सामने आता है । जैसे हम धुएं के बीच से गुजर सकते हैं, वैसे ही यहां पहाड़ों पर गहराये बादलों के बीच से गुजर सकते हैं । मैदानों में छाये कुहासे या धुंध को जलकण-युक्त बादलों का ही एक रूप कह सकते हैं, जो देव-कृपा से कभी-कभी अपनी अनुभूति कराने नीचे चले आते हैं ।

ठंडे मौसम में यहां ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से जब नीचे पहाड़ियों पर देखते हैं, तब पहाड़ियों के बजाय बादलों का ही समुद्र दिखायी देता है । बादल उठते-गिरते, लहराते, चमकते, दमकते और अठखेलियां करते नजर आते हैं । ऐसा आभास होता है, जैसे इनके नीचे कोई दुनिया नहीं है और सब शून्य ही शून्य होगा । हम स्वर्ग में उड़ान भरते महसूस करते हैं और दिल करता है कि अपने नीचे फैले बादलों पर जा बैठें । आंखें होने का फायदा यहां नजर आता है । यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

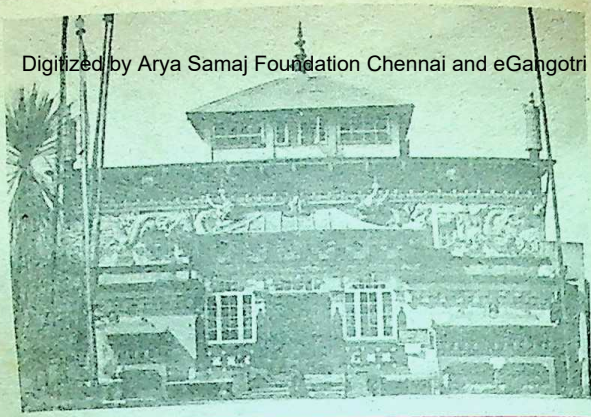

बौद्धमठ, घुम (दार्जिलिंग)

वह प्रदेश है, जहां शाम होती नहीं, बल्कि शाम उतरती नजर आती है। धीरे-धीरे पहाड़ियों से ओझल होता सूरज और उसके साथ घिरता हुआ अंधेरा एक प्राकृतिक परिवर्तन का मूक दर्शक बना देता है। अंधकार के साथ यहां सब-कुछ विलुप्त नहीं होता। नीचे घरों और गलियों की बत्तियां तारों-सी टिमटिमाती हैं और अपने नीचे कोई आसमान होने का आभास कराती हैं। ऊपर भी तारे चमकते दिखायी देते हैं और नीचे भी तारे-से चमकते दिखायी देते हैं। ऐसा लगता है मानो हम कहीं अंतरिक्ष में खो गये हों। रात होने पर यहां वाहनों की दौड़-धूप और कोलाहल बंद हो जाता है। तब यह समूचा प्रदेश मानो प्रकृति की शरण में चला गया हुआ लगता है। भोर जब छंटती है तब छिटकती और चटकती-सी महसूस होती है। प्राकृतिक फूल-पत्तियां सूर्य की रोशनी की चमक में खिलते हुए हंसते हुए से दिखायी देते हैं। कभी कोई पहाड़ी नवारूण (प्रातःकाल का सूर्य) की आभा से लोहित होती हुई दिखायी देती है और कभी कोई। यह छिटकता प्रकाश-पुंज फिर इस उपत्यका में एक नया जीवन प्रदान कर अलसाये मानुष में स्फूर्ति भर देता है।

जब दिन निकलता है और हम नीचे अति दूर फैले मैदानी इलाके को देखते हैं, तब वह पाताल-सा नजर आता है। ऊपर पहाड़ पर बैठे हम यह नहीं मान सकते कि यह मैदानी विस्तार पाताल नहीं है तथा यह कि पाताल लोक इसके नीचे है।

आकाशभेदी चोटियां

दार्जिलिंग २१४३ मी. की ऊंचाई पर बसा है। दार्जिलिंग से पहले घुम नाम का एक कस्बा आता है, जिसकी ऊंचाई लगभग ढाई हजार मीटर है। पूर्वोत्तर भारत में दार्जिलिंग से बेहतर कोई पर्यटन-स्थल नहीं है। आकाशभेदी हिमाच्छादित चोटियां इसकी भव्यता एवं सुंदरता में चार चांद लगा देती हैं। इस शहर के अनेक जगहों से आपको के-२, जानू, काबू आदि उन हिम-शिखरों के दर्शन हो जाते हैं, जिनका संसार में कोई सानी नहीं है। के-२ विश्व की तीसरी सर्वोच्च चोटी है। इसकी ऊंचाई लगभग नौ हजार मीटर है। महान हिमालय की गोदी में समाये दार्जिलिंग में सर्वत्र मनोहारी दृश्य देखने को मिलते हैं। सदाबहार वन, कीमती देवदार के वृक्ष और तरह-तरह की वानस्पतिक संपदा।

कहने को दार्जिलिंग में टाइगर हिल, बतासिया लूप, बौद्ध मठ (घुम), धीर धाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर, हिमालय पर्वतारोहण संस्थान, चिड़ियाघर, फुलवाड़ी, रज्जु-मार्ग आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं। इनमें से टाइगर हिल, बौद्ध मठ (घुम), हिमालय पर्वतारोहण संस्थान, रज्जु-मार्ग ही अधिक आकर्षक हैं। टाइगर हिल लगभग तीन हजार मीटर ऊंची है। यहां से स्वर्णिम सूर्योदय का रोमांचक दर्शन होता है।

ट्रैकरों के लिए भी दार्जिलिंग एक अनुकूल जगह है। यहां से फलूत १६० कि.मी., बिजनबाड़ी १५३ कि.मी. और मानीभजांग १८० कि.मी. तक के तीन ट्रैक-पथ हैं। सिंगालिला श्रेणी में स्थित संढाक्फू दार्जिलिंग जिले की सर्वोच्च चोटी ३६३६ मीटर है। यह ट्रैकरों का स्वर्ग है।

दार्जिलिंग से बाहर मिरिक झील १७०० मी. की ऊंचाई पर एक अच्छा पर्यटन स्थल है। यह झील लगभग १.२५ कि.मी. लंबी है। यहां नौकायन तथा सस्ते हॉस्टल व कॉटेज उपलब्ध हैं। सैंचाल झील, सिंगला, बिजनबाड़ी आदि भी पिकनिक मनाने के अच्छे स्थान हैं। यहां से गंगटोक, कालिंपोंग आदि जगह भी जाया जा सकता है। यह दो दिन का सफर है और टूरिस्ट ब्यूरो, दार्जिलिंग इसके लिए २५५ रु. प्रति व्यक्ति किराया लेता है।

पर्यटक सहायता केंद्र

दार्जिलिंग में पश्चिमी बंगाल सरकार का १, नेहरू रोड (दूरभाष २०५० तथा २५२४) पर टूरिस्ट ब्यूरो है, जहां से स्थानीय स्थलों के लिए सरकारी बसें उपलब्ध हैं।

दार्जिलिंग रेलवे स्टेशन तथा न्यू कार पार्क, लैडन ला रोड पर पर्यटन सूचना केंद्र भी है।

इसके अतिरिक्त सिल्वर फर, भानु सरणी (दूरभाष २५२४) में दार्जिलिंग गोरखा में पर्वतीय परिषद द्वारा नियंत्रित पर्यटन कार्यालय हैं।

सिलिगुड़ी तथा न्यू जलपाईगुड़ी (एनजेपी) रेलवे स्टेशनों और बागडोगरा हवाई अड्डे पर भी पर्यटन सूचना केंद्र हैं, जहां दार्जिलिंग पर्यटन के बारे में सहायता मिल सकती है।

निवास सुविधाएं

दार्जिलिंग में माल रोड पर स्थित भानु सरणी में प. बंगाल पर्यटन विकास निगम का टूरिस्ट लॉज (दूरभाष २६११, २६१२ तथा २६१३) है, जहां सस्ती दर पर रहने की सुविधा है। डॉ. जाकिर हुसैन रोड पर प. बंगाल सरकार का यूथ हॉस्टल (दूरभाष २२९०) भी है, जो मुख्यतः छात्र पर्यटकों के लिए है।

इसके अतिरिक्त दार्जिलिंग के घर-घर तथा गली-गली में हर स्तर के टूरिस्ट होटल हैं। दार्जिलिंग पहुंचते ही इन होटलों के एजेंट आपको रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड आदि पर अपने आप ही मिल जाएंगे। यदि मौसम साफ हो और आपके पास सामान ज्यादा न हो, तो इन एजेंटों के चक्कर में न आयें और अपनी पसंद का होटल ढूंढ़ने में कोई कोताही न बरतें।

—सहायक निदेशक (हिंदी)
भारतीय मानक ब्यूरो
मानक भवन, नयी दिल्ली-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज मानव फैशन और सौंदर्य के दिखावे के कारण इतना निर्दयी हो गया है कि उसको किसी भी प्राणी को बेरहमी से मारने में कोई हिचक नहीं रही । दुनिया की औरतों में 'फर' और 'मखमली' कोटों, सुगंधित शेंपू, खाल से बने पर्स आदि की मांग लगातार बढ़ती जा रही है । लेकिन क्या यह पता है कि यह सब अनेक मूक प्राणियों को बर्बरतापूर्वक वध करके प्राप्त किया जाता है । आखिर इन जानवरों का क्यों वध किया जाता है ? इसमें इनका क्या कसूर है ?

फैशन और सौंदर्य के बहाने

खरगोश, लोमड़ी आदि को फार्मों में तब तक पाला जाता है जब तक कि इनकी खाल (फर) उतारने लायक न हो जाए । इनको क्लोरोफॉर्मयुक्त एयर टाइट चैंबरों में रखा जाता है । सांस न ले पाने के कारण यह धीरे-धीरे मर जाते हैं और फिर इनसे फर कोट तैयार किया जाता है । पानी में रहनेवाला 'मिंक' नामक जानवर, कभी-कभी बाहर आते ही अपनी नरम और मुलायम खाल के कारण मौत का शिकार हो जाता है । दक्षिण अफरीका में पाया जानेवाला 'चिनचिल' नामक जानवर भी अकारण मौत का शिकार होता है । इनकी खालों से कोट बनाया जाता है ।

'फर' के कोट

'फर' उद्योग में काफी मूल्यवान समुद्री 'सील' मछली लगभग ४५० कि.ग्रा. तक की होती है, लेकिन इसके छोटे-छोटे बच्चों का 'फर' काफी मुलायम तथा मूल्यवान होता है । इसके दो हफ्ते के बच्चे को मां से अलग कर दिया जाता है । उसको डंडों से तब तक मारा जाता है जब तक कि वह मर न जाए । फिर एक सलाख बच्चे के सिर में घुसा दी जाती है । चमड़ा खराब होने के डर से इसको गोली नहीं मारी जाती । कभी-कभी तो मरने के पहले बेहोशी की हालत में ही तुरंत खाल उतारने के लिए उसको चीर दिया जाता है । बेबस और लाचार मां सील अपने बच्चे का करुण क्रंदन सुनती और देखती रहती है । खाल उतारने के बाद खून से लथपथ मांस के लोथड़े को फेंक दिया जाता है । लेकिन उसी के 'फर' से बना कोट फिर बड़े शौक से पहना जाता है । एक 'फर' कोट के लिए ५-६ सील चाहिए, ४-५ चीते चाहिए, ३० मिंक, ऊदबिलाव या खरगोश चाहिए, १० बनबिलाव चाहिए, ४० अमरीकी रेकुम मादा चाहिए ।

ऊदबिलाव को पकड़ने के लिए नुकीले दांतोंवाला लोहे का पिंजरा होता है । ये पिंजरे काफी मात्रा में जंगल में बिछा दिये जाते हैं । इन पिंजरों में टांग फंसने पर ऊदबिलाव छूटने के लिए तड़पते रहते हैं । इसी हालत में लगभग १५-२० दिन भूखे-प्यासे रहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरने पर उनके शरीर की खाल उधेड़कर 'फर' कोट बनाये जाते हैं ।

इसी प्रकार व्हेल मछली का शिकार एक ऐसे 'हारपून ग्रिनेड' की मदद से किया जाता है जो इसके शरीर में जाकर फटते हैं । मरते समय अत्यधिक वेदना की वजह से एक विचित्र-सी चीख होती है । कुछ लोग इसका मांस खाते हैं । इसकी खाल से निकलनेवाला तेल मिसाइल के पुरजों में डाला जाता है ।

सुगंधित तेल में प्रयोग

सुगंधित तेल एवं अन्य प्रसाधन सामग्री के उसको कितनी जलन व खुजली होती है । कुछ देर तक वह यों ही पड़ा रहता है । उसकी आंखों में छाले पड़ जाते हैं और पूरी तरह अंधा हो जाता है ।

इसके बाद वह मर जाते हैं । यह सब कुकृत्य सिर्फ शैंपू के उस परीक्षण के लिए किया जाता है जिससे आपके बाल मुलायम और चमकीले रह सकें । इसी प्रकार आफ्टर शेव लोशन का भी सुअर पर परीक्षण किया जाता है । सुअरों के बालों का प्रयोग विविध प्रकार की वस्तुएं बनाने में किया जाता है ।

मूक पशुओं की हत्याएं

● प्रेमनाथ गोस्वामी

लिए कछुओं को भी नहीं छोड़ा जाता । समुद्र और नदियों से पकड़कर उन्हें बोरों में भरकर ट्रकों और ट्रेनों में लाद दिया जाता है । जीवित हालत में ही इनका मांस निकाल लिया जाता है और वे बहुत धीरे-धीरे मरते हैं । इससे 'टारटिल ओडल' बनता है जो मास्चराइजर्स के काम आता है । कछुओं की तस्करी भी की जाती है । अभी कुछ महीनों पहले उन्नाव (उ.प्र.) से क़रीब दो लाख रुपये की कीमत के ३० कुंतल कछुओं को पुलिस ने बरामद किया जो गंगा तथा अन्य नदियों से पकड़कर पश्चिम बंगाल आदि स्थानों को तस्करी किये जाते थे ।

शैंपू के लिए खरगोशों को मारा जाता है । शैंपू की दो-तीन बूंदें खरगोश की आंखों में डाली जाती हैं, जिससे पता चल जाए कि

पर्स और बटुओं के लिए हत्या

जंगलों में रहनेवाले सांपों को भी जिंदा मारा जाता है । सांप के सिर पर एक बड़ी कील रखकर हथौड़े से वार किया जाता है । कुछ क्षणों में ही सांप तड़पने लगता है । तब एक आदमी सांप की पूंछ को पैर से दबाकर सिर से पैर तक चाकू या ब्लेड से चीरता है । एक चीरा गले पर लगाया जाता है । सांप की खाल जिंदा रहते ही उतार ली जाती है । सांप के लोथड़े से प्राण उसके बाद भी तीन-तीन दिन तक नहीं निकलते । कुत्ते या अन्य जानवर उसे जिंदा नोच-नोचकर खाते रहते हैं, और यह सिर्फ इसलिए किया जाता है कि आपको आकर्षक लेडीज बैग, पर्स आदि प्राप्त हो सकें ।

नेवला, जो साधारणतया किसी को भी हानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैंपू के लिए खरगोशों को मारा जाता है । शैंपू की दो-तीन बूंदें खरगोश की आंखों में डाली जाती हैं, जिससे पता चल जाए कि उसको कितनी जलन व खुजली होती है । उसकी आंखों में छाले पड़ जाते हैं और पूरी तरह अंधा हो जाता है ।

नहीं पहुंचाता, इस जानवर को भी लोहे की गरम छड़ों से पीट-पीटकर अधमरा कर देते हैं या फिर बिल से बाहर आते ही शिकंजे में इसकी गरदन फंसाकर जरा-सी मोड़ दी जाती है और वह मर जाता है । यह सब इसकी खाल के लिए किया जाता है । इसकी खाल भी उपयोगी होती है ।

कंगारू के मरने पर उसके मृत शरीर के सारे अंग काम में ले लिए जाते हैं । सिर्फ अंडकोषवाला हिस्सा बेकार रहता है । ऑस्ट्रेलिया के इयान बर्ट्स ने एक ऐसा ही विचित्र व्यवसाय चुना । उस व्यवसायी बुद्धि के गोरे ने इन अंडकोषों को पर्स बनाकर बेचने का इरादा किया । प्रारंभ में काफी दिक्कतें आयीं । मगर धीरे-धीरे इयान बर्ट्स ने ऐसी विधि विकसित कर ली कि कंगारू के अंडकोष रेजगारी रखने के पारंपरिक बटुओं के रूप में बनने और बिकने लगे ।

इन बटुओं को खरीदनेवाले जापानी पर्यटक इसे सुख और समृद्धि का प्रतीक मानते हैं । इसलिए जापानी लोग उर्वरता की देवी की पूजा करने की सारी सामग्री इन्हीं बटुओं में रखने लगे ।

धीरे-धीरे इयान के बटुए लाखों की संख्या में जापान में निर्यात होने लगे । अंडकोष से बने बटुओं ने इयान को करोड़पति की श्रेणी में ला खड़ा किया । अपनी दौलत तथा समृद्धि को जापानियों की कृपा माननेवाले इयान ने जापान में एक कंगारू फार्म खोला तथा वहां कंगारू की दुम का सूप बेचने लगा । अनेक कंगारू असमय ही कालकवलित होने लगे । उसके बटुए एवं सूप दोनों ही जापान में काफी लोकप्रिय हुए ।

हाथी दांत को प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष कितने हाथी मारे जाते हैं । जंगलों में जगह-जगह विषैले फल बिखेर दिये जाते हैं जिनको खाकर वह वहीं ढेर हो जाते हैं । आकाश में मंडराते गिद्धों को देखकर शिकारी हाथी तक पहुंच जाते हैं । एशियाई देशों में पाये जानेवाले हाथियों में केवल हाथी के ही बाहरी दांत होते हैं, हथिनियों के नहीं । एक हाथी के दांत का वजन औसतन साढ़े नौ किलो होता है तथा इनकी कीमत कम-से-कम तीस हजार रुपये प्रति किलो लगायी जाती है ।

जानवरों में सबसे ज्यादा वफादार जानवर है कुत्ता । इनकी भी एक अनोखी दुनिया है । हंगरी के 'शेफर्ड' व 'डलमेशियन', 'मास्टिफ' (बेहद खूंख्वार कुत्ता), विश्व का सबसे विशालकाय कुत्ता 'जोरबा', ऑस्ट्रेलियन कुत्ता 'डिंगो', मैक्सिकन नस्ल 'जोलोइत्जुतली', अमरीका का 'पीनट्स' एवं 'टेरियर', अफ्रीका का 'बासेंजी' आदि कुत्तों की कुछ नस्लें हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

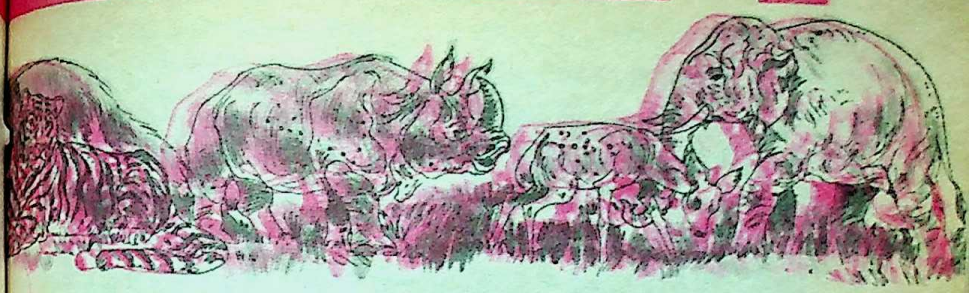

लेकिन मानव ने इनको भी नहीं छोड़ा । एक विशेष नस्ल के कुत्तों को एक साथ खड़ा करके करेंट प्रवाहित कराया जाता है और भयंकर पीड़ा से छटपटाते कुत्तों का झुंड दम तोड़ देता है । इनके कानों का उपयोग पर्स बनाने के लिए होता है ।

जान की दुश्मन— खाल

खाल के लालच में बाघ-जैसे जानवर को फंदा डालकर पकड़ा जाता है । एक बार यदि उसका पंजा फंदे में फंस गया तो फिर उसका बच निकलना असंभव है । शिकंजे को इतना कसा जाता है कि बाघ के पंजे की हड्डी टूट जाती है, खून बहने लगता है और बाघ दहाड़ने लगता है । अंत में शिकारी उसको तब तक यातना देते हैं, जब तक कि वह मर न जाए । कभी-कभी तो बाघ की पूंछ उठाकर पीछे से गरम लोहे की छड़ उसके शरीर में घुसा दी जाती है और वह चिल्लाते-चिल्लाते मर जाता है । बाघ को गोली से इसलिए नहीं मारा जाता क्योंकि इससे उसकी खाल खराब हो जाती है ।

भेड़ के बाल से स्वेटर

स्वेटरों के लिए ऊन भेड़ के बालों से बनाया जाता है, लेकिन एक अलग जाति की कराकुल भेड़ के बाल काफी बड़े और नरम तथा घुंघराले होते हैं । मेमने के जन्म लेते ही उस भेड़ के बाल कम मुलायम रह जाते हैं । इसलिए मादा भेड़ पर गर्भावस्था में ही लाठी-डंडों से तब तक प्रहार किया जाता है, जब तक कि वह मर न जाए । मरते ही उसके पेट से मेमने को बाहर निकाल लिया जाता है । कभी-कभी तो मरने का इंतजार किये बिना ही उसके शरीर से खाल उतार ली जाती है जिसके द्वारा आपके कपड़े, टोपी आदि तैयार होती हैं ।

कस्तूरी प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष कई हजार कस्तूरी मृग मारे जाते हैं । कस्तूरी एक सुगंधित पदार्थ है जो नर कस्तूरी मृग के पेट में लटक रहे अंडे के आकार की एक गिल्टी से प्राप्त होती है । कस्तूरी मृगों का शिकार इसी बहुमूल्य कस्तूरी के लिए किया जाता है । ऐसा समझा जाता है कि वह अपने शरीर में पायी जानेवाली कस्तूरी की सुगंध से बेचैन पूरे जंगल में इसको खोजता रहता है । यह मृग इतना संगीत प्रेमी होता है कि बांसुरी अथवा किसी सुरीली आवाज से मुग्ध होकर एकांत में खड़ा हो जाता है और शिकारी इस तन्मयता का लाभ उठाकर इसे मार डालते हैं । इतनी ज्यादा संख्या में कस्तूरी मृग मारे जाने पर लगभग दो हजार किलो कस्तूरी प्राप्त होती है ।

—६१, आई/३, ओम गायत्री नगर,
पो.— तेलियरगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहादुर बच्चों की मजार पर अंगरेज हुकूमत की सलामी !

● मंजुल भारती

ब्रिटिश हुकूमत के जुल्मों की जीती जागती मिसाल है ऐतिहासिक मुंगेर किला । जो वतन पर मर मिटने वाले बंगाल (बिहार, उड़ीसा) के अंतिम नवाब मीर कासिम की राजधानी थी । आज इसी खंडरनुमा मुंगेर किला के कष्टहरणी घाट (गंगा किनारे) स्थित श्री कृष्ण वाटिका में नवाब के दो जांबाज संतान—शहजादी गुल और शहजादा बहार की जीर्ण-शीर्ण मजार ब्रिटिश हुकूमत के जुल्मो-सितम की गवाही की दास्तां कह रही है । आज हम वतन पर शहीद उन बच्चों की कुर्बानी को भुला बैठे हैं, जबकि ब्रिटिश हुकूमत उन बच्चों की जांबाजी के इतने कायल थे कि जब तक हिंदुस्तान में रहे, तब तक उन बच्चों के सम्मान में मजार पर बंदूक की सलामी दी जाती रही । रोजाना सुबह-शाम अंगरेज अधिकारी और सिपाही मजार पर सलामी देते थे ।

'मुंगेर गजेटियर' के लेखक पी. सी. राय चौधरी ने लिखा है कि नवाब मीर कासिम की पराजय के बाद ब्रिटिश हुकूमत की नींव मजबूत हो गयी थी । उसी दौर में नवाब के दो बच्चों की निर्मम हत्या भूलवश हो गयी । इसके लिए अंगरेज शासक अपने को जिम्मेदार मान रहे थे । इसी कारण उन बच्चों के सम्मान में मजार पर रोजाना बंदूक की सलामी देने का आदेश दे रखा था । उन जिंदादिल बच्चों की दास्तां कम प्रेरक नहीं ।

वर्ष १७६३ की घटना है, ब्रिटिश हुकूमत अपनी 'फूट डालो-राज करो' की नीति को अंजाम देते हुए बंगाल पर अपना आधिपत्य कायम कर चुकी थी और आगे कदम बढ़ाने की योजना में थी । नवाब मीर कासिम को यह कतई मंजूर नहीं था कि व्यावसायिक का चोला फेंक कर अंगरेज व्यवसायी हिंदुस्तान पर हुकूमत करें । इसलिए उन्होंने अंगरेजों को समुद्र पार खदेड़ने का फैसला कर लिया । उन्होंने मुर्शीदाबाद से दूर मुंगेर में अपनी नयी राजधानी बनायी और मुंगेर किले का जीर्णोद्धार कर आयुधशाला की स्थापना की । फौज को सुसंगठित किया और तब पूरी तैयारी में फिरंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुक्मरान के विरुद्ध जंग का ऐलान किया । नवाब मीर कासिम ने मुंगेर राजधानी एवं किले की सुरक्षा का भार अपने वफादार सिपहसालार अरबली खां को सौंप कर फौज के साथ कूच किया । उनके साथ उनकी बेगम जरीना जहां भी थी जो नवाब को सर्वाधिक प्रिय थी । उधवा नाला के पास फिरंगी फौज से मुकाबला हुआ । नवाब मीर कासिम की पराजय हुई । वे किसी तरह बेगम के साथ बच कर निकले ।

इधर मेजर एसम्स के नेतृत्व में फिरंगी फौज ने मुंगेर जिले को चारों तरफ से घेर लिया था । फिर तोपों से जबर्दस्त गोलाबारी की । इसके विरुद्ध नवाब की सुरक्षित सेना टिक नहीं सकी । स्थिति भयावह देखकर अरबली खां ने नवाब के दोनों युवा बच्चों गुल और बहार को सुरक्षित भूमिगत सुरंग से बाहर किया । उसके बाद अरबली खां ने मेजर एसम्स के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, पर फिरंगी फौज ने गुस्से में उनकी हत्या कर दी और किला क्षेत्र, मुंगेर में जुल्म-अत्याचार की सीमा पार कर दी । काफी रक्तपात के बाद फिरंगी फौज का अधिकार मुंगेर पर हो सका था । 'मुंगेर गजेटियर' के लेखक पी. सी. राय चौधरी ने लिखा कि अक्तूबर १७६४ ई. में दो दिनों तक नवाब की राजधानी मुंगेर एवं किले पर फिरंगी फौज के तोपची गोला बरसाते रहे । किला क्षेत्र में अफरातफरी मच गयी थी । चारों तरफ से गोलाबारी हो रही थी । हताहतों एवं मृतकों की संख्या काफी थी ।

वतन से मोहब्बत

नवाब मीर कासिम के दोनों जांबाज बच्चों को अपने अब्बा-अम्मीजान से ज्यादा मोहब्बत वतन से थी । इसलिए उन्होंने भूमिगत सुरंग से सुरक्षित निकल जाने के बजाय सुरंग में रह कर फिरंगियों से बदला लेने की योजना बनाने लगे थे । दोनों दिनभर सुरंग में छिपे रहते थे और रात में अपने वफादार लोगों से मिलते थे ।

उधर मेजर एसम्स ने मुंगेर में नवाब मीर कासिम् के वफादार लोगों को फांसी पर लटकाने का आदेश दे रखा था । ऐसे सैकड़ों लोगों को किला क्षेत्र में ही फांसी दे दी गयी । दूसरी ओर नवाब के बच्चों की सरगर्मी से तलाश की जा रही थी । यह सारी सूचना उन जांबाज बच्चों गुल और बहार को मिल रही थी । इसलिए शहजादा बहार बाघ की खाल पहनकर रात में अपने वफादारों से मिला करते थे । शहजादी भी साये की तरह साथ रहती थी ।

फिरंगी अफसरों को यह विश्वास था कि नवाब मीर कासिम के जांबाज बच्चे मुंगेर में ही कहीं छिपे हैं । इसलिए उसकी तलाश में फौज की एक सुरक्षित टुकड़ी तैनात थी, जो दिन रात घरों, जंगलों, पहाड़ों की खाक छान रही थी ।

नवाब के दो बच्चों की निर्मम हत्या भूलवश हो गयी । इसके लिए अंगरेज शासक अपने को जिम्मेदार मान रहे थे । इसी कारण उन बच्चों के सम्मान में मजार पर रोजाना बंदूक की सलामी देने का आदेश दे रखा था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयवश मारी गयी

एक रात बाघ की खाल में शहजादा बहार सुरंग के पास गंगा नदी के किनारे टहल रहे थे कि एक फिरंगी अफसर की नजर पड़ गयी। उसने बाघ समझ कर उसी क्षण गोली मार दी। शहजादी गुल को यह विश्वास न था कि गोली उसी के भाई को मारी गयी। वह जानती थी कि बहार किसी वफादार से मिलने गया होगा। जब देर रात नहीं लौटा तो शहजादी घबरा गयी किसी अनहोनी घटना की आशंका से। लिहाजा सुबह वह भिखारन के वेश में सुरंग से निकली तो थोड़ी दूर गंगा किनारे भीड़ देखी। उत्सुकतावश जब वहां पहुंची, तब अपने भाई को मृत पाया। बाघ की खाल में शहजादा बहार की लाश को देखकर फिरंगी अफसर हैरत में थे। उनके अंतरमन को यह घटना छू गयी। मुंगेर वासियों को उनकी हत्या से काफी आघात लगा। वहीं शहजादी गुल ने उस वक्त तो सीने पर पत्थर रख लिया, पर सुरंग वापस लौट कर जी भर रोयी। भाई की मौत ने उसे झकझोर कर रख दिया था।

फिरंगी अफसरों ने शहजादा बहार को ससम्मान पीर साहनफा गुल के दरगा द्वारा कष्टहरणी घाट के पास दफनाया। वहां बड़ी संख्या में फिरंगी अफसर एवं फौज ने बंदूक की सलामी दी थी और रोजाना बंदूक की सलामी देने का आदेश जारी कर दिया था।

अपने जान से प्यारे छोटे भाई की मौत ने शहजादी गुल को इतनी गहराई तक आहत किया कि खुद उसे अपनी जिंदगी बेकार लगने लगी। और दूसरी रात भाई की मजार से लिपट कर खुदकुशी कर ली। सुबह तड़के जब फिरंगी फौज एवं अफसर सलामी देने आये तो वहां शहजादी गुल को हथियारबंद मर्द की पोशाक में मृत पाया। सब उस जांबाज बच्ची की कुर्बानी पर फफक पड़े थे। अंगरेज अफसर की भी आंखें छलछला गयी थीं। शहजादी गुल की लाश को भी उसी मजार के पास दफना दिया गया।

भाई की हत्या का बदला

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि अपने जान से प्यारे भाई की निर्मम हत्या का बदला लेने के लिए शहजादी गुल जो अचूक-जांबाज निशानेबाज थी,ने मर्द की फौजी पोशाक में बंदूक लेकर किले के अंदर फौजी छावनी में फिरंगियों को ललकारा। बौखलाये फिरंगी अफसर और फौजी,उस पर टूट पड़े थे। मरते-मरते शहजादी गुल ने अपनी जांबाजी का ऐसा करिश्मा दिखाया कि दर्जनों फौजी उनकी गोली से मारे गये और खुद मेजर एसम्स बुरी तरह घायल हो गये थे। आखिर किले के अंदर फिरंगी फौज ने घेर कर शहजादी की गोली मार कर हत्या कर दी थी। शहजादा बहार के मजार के निकट ही उसकी भी कब्र सजायी गयी।

आजादी से पहले तक जांबाज बच्चों की मजार की सुरक्षा फिरंगी फौज के जिम्मे थी। सुबह-शाम बंदूक की सलामी का प्रावधान था, पर उसके बाद आजाद हिंदुस्तान में उन बहादुर बच्चों की कुर्बानी को भुला दिया गया। आज भी उनकी जीर्ण-शीर्ण मजार मुंगेर किला क्षेत्र के कष्टहरणी घाट स्थित श्रीकृष्ण वाटिका में अपनी कुर्बानी की याद दिला रही थी। काश, हम भी सलामी न सही, नमन रोजाना करते।

—सिरसिया (पूर्णियां) बिहार, पिन ८५२१०१

कादम्बिनी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दिशाएं बदल गयीं

● डॉ. अहिल्या मिश्रा

परिणाम को गोद में थामे रीति अपने विगत दिनों के विषय में सोच रही थी। रीति एक गेहुंए रंग की आकर्षक युवती है। उस पर एक बार निगाह पड़ जाए तो तुरंत हटायी नहीं जा सकती। वह अपनी माता-संस्कृति की अकेली संतान है। पिता भारत ने उसे बड़े प्यार से पाला है। पढ़ाया-लिखाया है। ध्यान रखा कि उसे नयी रोशनी की शिक्षा मिले, ताकि वह अपना जीवन जी सके तथा दूसरों के लिए भी आदर्श बने। बचपन से ही उसे अपने पुराने संस्कार के साथ नयी मान्यताओं को स्थापित करना भी सिखलाया गया था। उसके पिता ने उसके अंदर महत्त्वाकांक्षा की नींव डाल दी थी। वह युवावस्था में आकर प्रस्फुटित हो रही थी।

रीति मेडिकल साईंस की छात्रा थी। मेडिकल के अंतिम वर्ष की परीक्षा वह दे चुकी थी। हाउस सर्जनशिप भी समाप्त होने को थी वह कोरी डॉक्टर या कमर्शियल डॉक्टर नहीं बनना चाहती थी। वह कुछ ऐसा करना चाहती थी जिससे समाज के अंदर एक नवीन क्रांति उत्पन्न हो सके। समाज में परिवर्तन आये। इसमें उसका साथी था आकाश। वह रीति को जी-जान से चाहता था। रीति की हर इच्छा उसकी अपनी इच्छा थी। दोनों में अटूट प्रेम था। दोनों एक-दूसरे के प्रति कटिबद्ध थे। रीति के माता-पिता को दोनों के संबंधों का ज्ञान था। वे उत्सुकता से इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि रीति या आकाश अपने विवाह की इच्छा व्यक्त करें और वे धूम-धाम से इस कार्य को संपन्न कर एक विश्रांति की सांस ले सकें। कभी-कभी परिहास के रूप में संस्कृति अपनी पुत्री से कहती, "मैं अब अपनी गुड़िया के लिए स्वयंवर रचाने की सोच रही हूं। अब तुम्हारी शिक्षा पूरी हो चुकी है। नौकरी करनी नहीं है, अतः गृहस्थ जीवन का बोझ अब तुम उठा सकती हो।" यह उपयुक्त समय है और अपनी उस अजंता की गौरवर्णीय श्यामल प्रतिभा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजोर्मय दृष्टि में बिंबित भाव को झाककर देखने की इच्छा से एकटक दृष्टिपात करतीं । किंतु वहां उसे ऐसा कोई कौतुहल दृष्टव्य नहीं होता । ठहरे स्वर में रीति कहती, "मां अभी जल्दी क्या है ? विवाह धर्म का मैं निर्वाह करूंगी किंतु अपने एक विशेष प्रयोजन के पूरा होने के बाद । आप बेचैन न हों । मैं ऐसा कुछ करना चाहती हूं जिससे सभ्यता की डगर पर नयी रोशनी पड़ सके ।" विवाह इसके पश्चात् ही करूंगी । इस गंभीर उत्तर ने उसके माता-पिता का मुंह बंद कर रखा था । उन्हें अपने पुत्री के आदर्शमय चरित्र पर गर्व था । उनकी पुत्री रीति न केवल भारत की पुत्री थी । वह संपूर्ण भारतमय थी और भारत की मान्यताओं को ऊंचा उठाने का स्वप्न देख रही थी । उसके और आकाश के संबंध भी आज के आधुनिक परिवेश से रहित विशुद्ध भावनात्मक थे । उसकी सादगी मृग-मरीचिका में फंसी (आज के) अति आधुनिक बालाओं के लिए एक प्रेरणादायिनी स्रोत है । आकाश और रीति ने न केवल अपने लिए बल्कि समाज के लिए भी कई आदर्शोन्मुख यथार्थ की स्थापना कर दी थी ।

रीति चिकित्सा विज्ञान की छात्रा होने पर भी बहुत भावुक थी । किंतु अपनी भावुकता को बांधकर रखना भी उसे खूब आता था । वह समाज में आये दिन दहेज से होनेवाली घटनाओं से प्रभावित थी । वह दहेज निषेध के लिए केवल कानून बनाना या बातें करना ही नहीं कुछ ठोस कार्य करना चाहती थी । वह इसी सोच में डूबी रहती ।

काम समाप्त होते ही आकाश ने रीति को ढूंढ़ना आरंभ कर दिया । जब प्रयोगशाला में भी वह दिखायी नहीं दी, तब आकाश समझ गया कि रीति आरामकुरसी पर बैठी अपनी उन्हीं सोच में खोयी होगी । उसने दबे पांव वहां आकर रीति के हाथों पर कोमलता से अपनी हथेली रख, उसे इस संसार में लौटा लाया । रीति का मुख कमल उसे देखते ही खिल उठा । "अरे ! आप, मैं सुबह देर से आयी थी, अतः आप से नहीं मिल सकी । आज का कार्य समाप्त हो गया क्या ?" आकाश उसकी इस हड़बड़ी का आनंद लेता रहा । मुसकराते हुए बोला, "हां मेरा तो कार्य समाप्त हो गया । आपका अपने संबंध में क्या ख्याल है ।" "यहां बैठने का इरादा है क्या ? चलो कहीं घूम आते हैं ।" मुसकराती हुई रीति उसके संग हो ली । रास्ते में दोनों चुपचाप चलते रहे । शहर से दूर इस शांत बगीचे की नरम दूब पर बैठती रीति ने कहा, "आकाश चुप क्यों हो ?" आकाश ने उत्तर दिया, "रीति मुझे लोगों के सोचने की चिंता तो नहीं, लोगों का काम ही है ऊटपटांग सोचना और बोलना किंतु मेरे माता-पिता भी अब शादी के लिए जोर डालने लगे हैं । मैं तुम्हारी हां के इंतजार में जीवनभर संयम बरत सकता हूं किंतु माता-पिता को क्या उत्तर दूं समझ में नहीं आता ।" आकाश को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां आकाश मैं चाहती हूं कि हमारे देश में अब केवल लड़के ही पैदा हों, नारी पैदा ही न हो ।" जब किसी वस्तु का अभाव हो, तब उस वस्तु का महत्त्व मालूम होता है । पानी हर जगह उपलब्ध है, अतः लोग पानी का कोई मूल्य नहीं लगाते किंतु रेगिस्तान में जब पानी के बिना छटपटाते हैं, तब पानी सोने-चांदी से ज्यादा मूल्यवान है, यह सच समझ में आता है ।

परेशान देख रीति ने धीमे से उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और हलके दबाव के साथ स्पर्श की गरमी से उसकी परेशानी को, हताशा को सोखने लगी । थोड़ी देर चुप रहने के बाद रीति ने कहा, "आकाश अब हमारी मंजिल दूर नहीं । मैं जो प्रयोग कर रही हूं उसमें तन-मन से लगी हूं । इसकी सफलता पर मैं अपने आप को तुम्हें सौंप दूंगी । समाज की मान्यता, विवाह की औपचारिकता पूरी कर दूंगी ।" आकाश बेचैनी से पूछ बैठा, "बताओ रीति तुम क्या खोज कर रही हो । घंटों प्रयोगशाला में बैठी रहती हो ? क्या मानव संबंधी कोई नया आविष्कार कर रही हो ।" "हां आकाश मैं कुछ ऐसा ही करना चाह रही हूं । जिससे देश में फैली नारी दुर्दशा को मैं चिकित्सा-विज्ञान द्वारा बदल दूं ।" आकाश अचकचाया । "रीति तुम ?" रीति ने हां में सिर हिलाते उत्तर दिया, "हां आकाश मैं चाहती हूं कि हमारे देश में अब केवल लड़के ही पैदा हों, नारी पैदा ही न हो । जब किसी वस्तु का अभाव हो, तब उस वस्तु का महत्त्व मालूम होता है । पानी हर जगह उपलब्ध है, अतः लोग पानी का कोई मूल्य नहीं लगाते किंतु रेगिस्तान में जब पानी के बिना छटपटाते हैं, तब पानी सोने-चांदी से ज्यादा मूल्यवान है, यह सच समझ में आता है । हवा का कोई मोल नहीं, किंतु वायुमंडल से ऊपर ऑक्सीजन का अभाव ऑक्सीजनयुक्त हवा का महत्व बतला देता है कि हवा क्या चीज है जीवन के लिए । घुटता हुआ मनुष्य ही सही स्थिति का ज्ञान दे सकता है । उसी प्रकार समाज में जब स्त्रियों का पैदा होना ही बंद हो जाए, तब उस पर होनेवाले अत्याचार स्वयंमेव समाप्त हो जाएंगे । यही सोचकर मैं यह खोज करना चाह रही हूं कि शुक्र और भ्रूण के योग से मानव निर्माण में किसी विशेष परिस्थिति का निर्माण किया जाए । वाई क्रोमोसोम जब नारी क्रोमोसोम से संबंधित होता है तो बेटा पैदा होता है । मैं बेटा पैदा होने की विशेष परिस्थिति का निर्माण करना चाह रही हूं । जिससे पीढ़ी-दर-पीढ़ी बेटे के भूखे लोग केवल बेटा ही पैदा करें । जब स्त्रियों का अभाव होगा, तब सभ्यता और पीढ़ी की संचालिका लिए लोग लालायित होकर स्त्रियों को मान-सम्मान देंगे । सारी-की सारी विषमताएं और लालच समाप्त कर स्त्रियों के आदर का युग पुर्नस्थापित होगा । हां आकाश मैं यही चाहती हूं । मुझे स्त्रियों के आज के खिलौने बनते रूप से वितृष्णा हो गयी है । आकाश तुम मुझे समझते हो तुम मेरा साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो ।''. कहते-कहते रीति भावुक हो उठी । उसने अपना सर आकाश के चौड़े सीने पर टेक दिया । आकाश ने रीति को अपनी बांहों में बांधकर थपथपाते हुए कहा, ''रीति बेचैन मत हो, हम ऐसा ही कुछ करेंगे ।'' चलो दोनों इसके लिए असाध्य श्रम करें ।'' रीति प्रफुल्लित हो हवा के समान हलकी हो उठी । कुसुमित पंखुरियों-सी आकाश के प्रेम रंग में तैरने लगी । थोड़ी देर बाद रीति ने घर जाने की इच्छा व्यक्त की । दोनों उठ खड़े हुए । आकाश का यह नियम था, वह रीति को उसके घर पहुंचाकर, संस्कृति की मां के चरण छूकर अपने घर जाता । कल रविवार था । अतः दोनों देर से घूमकर लौट रहे थे । घर पहुंचने पर भारत ने आकाश का खुले हृदय से स्वागत किया । थोड़ी देर बातचीत के पश्चात जब आकाश जाने लगा तब भारत ने कल इकट्ठे भोजन करने और सैर-सपाटे के लिए आमंत्रित किया । निमंत्रण पाकर आकाश खिल उठा और एक प्रेमभरी दृष्टि रीति की ओर डाली । रीति अपादमस्तक लज्जा से लाल हो उठी । दूसरे दिन कुछ क्षण दोनों माता-पिता से अलग हाथ-में-हाथ डाले घूमते हुए प्रयोगात्मक विषय पर बातचीत करते रहे । पुनः अपने अध्ययन में लग गये ।

कई दिनों बाद लगभग १८ घंटे निरंतर प्रयोगशाला में बंद रहने के बाद रीति बाहर निकली तो उसकी नजरें आकाश को ढूंढ़ने में व्यस्त थीं । वह जल्द-से-जल्द आकाश को पास पाना चाहती थी । उसकी आंखों में सफलता की ललक और प्राप्ति का तेज था । उसके ललाट कांतिमय ज्योतित हो रहे थे । वह

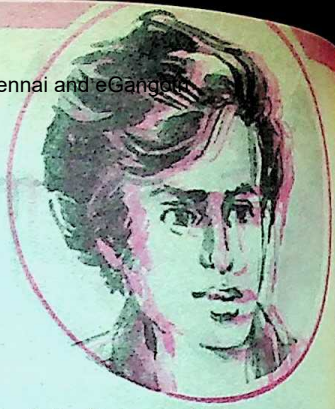

संपूर्ण क्षेत्र में चंचल नजरें दौड़ा रही थी । दूर से देखते ही वह चिल्ला उठी, ''हेलो आकाश'' और दौड़ पड़ी आकाश की ओर, गर्मजोशी से आकाश का हाथ थामकर घसीटती हुई बाहर से चलने को उतावली हो उठी । सफलता ने उसमें अति सुलभ स्त्रियोचित लक्षण भर दिये थे । दोनों पढ़ने-लिखने से लेकर विचार में भी एक-दूसरे के अंदर गहराई तक उतरे हुए थे । अतः आकाश भी अव्यक्त खुशी का अनुभव करने लगा । अचानक रीति को खुश देखकर वह विशेष स्थिति का अनुभव करने लगा ।

ऊपर से खीझते हुए वह बोल उठा, ''तुम्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते आंखें पथरा गयीं । इधर कई दिनों से दर्शन ही दुर्लभ है । अब जाकर प्रयोगशाला से छुट्टी मिली है । रीति उसकी शिकायत पर मुसकरा उठी और हाथ थामे उसे बगीचे के उस सूने कोने में ले गयी, जहां दोनों प्रतिदिन घंटों अपनी बातों के घोड़े दौड़ाते, प्रेम के वृक्ष की डालियों का पोषण करते और अपने आप को संसार के प्राणी से अलग कर जीते । किंतु आज रीति आकुल-सी आकाश के गले में बांहें डालकर अपने प्रयोग की सफलता की बातें कर रही थी । ''आकाश मैं प्रयोग क्रम में आज अपने निश्चय के करीब पहुंच चुकी हूं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोडियम और पोटाशियम की उपस्थिति में वाई क्रोमोसोम तेज और अधिक गतिशील होता है तथा कैल्शियम व मैगनेशियम की उपस्थिति में एक्स क्रोमोसोम । आकाश सुनकर आश्चर्यचकित रह गया । उसने रीति का हाथ अपने सिर पर रख लिया और पूछा, "सच कह रही हो ? या मजाक कर रही हो ।" "अरे ! क्या मैं तुमसे झूठ बोलूंगी ।" अब आगे की खोज पूरी करो और मुझे अपना बना लो । आकाश प्रसन्नता से पागल हो उठा । उसने रीति को बांहों में बांधकर होंठों द्वारा प्रेम-चिह्न से चिन्हित कर दिया ।

दूसरे दिन, दोनों प्रयोगशाला में टेस्ट ट्यूब द्वारा प्रयोग करने लगे । अंत में सफलता की सूचना विभाग के प्रोफेसर तथा अन्य लोगों को दी । सबने नये प्रयोग पर आश्चर्य व्यक्त किया और दोनों को दिल खोलकर बधाई दी ।

आकाश ने इसका प्रयोग प्रकृति के अन्य अवयवों जानवर, पशु-पक्षी पर करना आरंभ कर दिया । किंतु रीति नारी आतुरता से ओत-प्रोत थी । उसने जब निश्चित कर लिया कि यह प्रक्रिया जानवरों में सूई के द्वारा व मानवों के लिए कैप्सूल के द्वारा संभव होगी, तब रीति ने यह प्रयोग मानव के लिए स्वयं पर करने का निश्चय किया ।

वह आकाश से बोली, "आकाश हमने यह प्रयोग किया है । इसकी थ्योरी तैयार की है । इसका प्रयोग भी मानव पर हम ही आरंभ करेंगे । आओ अब हम अपने माता-पिता की इच्छा पूरी कर दें यह सुन आकाश ने रीति को बांहों के बंधन में जकड़ कर ऊपर उठा लिया और फिरकनी की तरह चहुं ओर नचाते हुए सीने से लगाकर अपने अधरों पर उसके मुखारविंद को टिका लिया । रीति बाल सूर्य की तरह लाली से तपने लगी । आकाश के सीमाविहीन प्रेम में रीति आकाशमय हो गयी ।

भारत और संस्कृति ने रीति और आकाश की शादी सप्ताह के अंदर ही कर डाली । रीति आकाश की प्राप्ति के साथ प्रयोगात्मक संतान की प्राप्ति की इच्छा से व्यग्र हो उठी । उसने ताप नियंत्रित करनेवाली गोलियां खायीं और चिकित्सा वैज्ञानिक विधि से सोडियम व पोटाशियम अपने शरीर के प्रजनन भाग में पहुंचाकर गर्भ धारण किया ।

इधर आकाश के प्राकृतिक अवयवों की सूचना सकारात्मक आने लगी । समयांतर में रीति ने पुत्र को जन्म दिया । पुत्र-पर-पुत्र बारह पुत्रों की माता बन उसने अपने सिद्धांत की परिपुष्टि कर दी । बारहवें पुत्र का नामकरण-संस्कार आज समाप्त हुआ है । यह पीढ़ी रीति ने इच्छित पैदा की है । रीति का यह प्रयोग रिवाज बनेगा । एक नये युग की सृष्टि । संत्रासित नारी के लिए सम्मान और आदर का निर्माण करेगा । अभाव ही मूल्यांकन परिधि का केंद्र है । यह आकाश-रीति-सिद्धांत संस्कृति की दिशाएं बदलने में सफल होगा । सभ्यता बदलेगी । रीति गर्व से कह रही है, "हां-हां अब दिशाएं बदल जाएंगी । जरूर बदलेंगी ।"

परिणाम को थपकियां देती हुई रीति बड़बड़ा रही थी । "दिशाएं बदल गयीं...

आकाश मुसकरा रहा था । मुसकराता जा रहा था ।

—सी-९८, राज सदन
बेंगलराव नगर हैदराबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवाकर महाराज, मधेपुरा (बिहार)

★ भगवान शिव अर्धनारीश्वर कब हुए ?

□ आधे-आधे रूप से एक देह में सम्मिलित गौरी और शंकर, यह शिव का एक रूप है, शिव और शक्ति के मिलन का प्रतीक है। इसमें कब अर्धनारीश्वर हुए का प्रश्न ही नहीं है। अर्धांगिनी पार्वती और उनके ईश शंकर के संयुक्त रूप को अर्धनारी कहते हैं। इसमें आधे पुरुष और आधी स्त्री का मिलन है। यह सत् और चित् के मिलन का रूपक है जिससे आनंद की सृष्टि होती है।

विजय कुमार कर्ण, औरंगाबाद

★ वियतनाम की मुद्रा का क्या नाम है ?

□ डॉंग।

प्रह्लाद जसवानी, मंडला

★ दृष्टिहीनों के साहित्य किस लिपि में होते हैं ?

□ इस लिपि को ब्रेल कहते हैं। इसका विकास फ्रांस के लुई ब्रेल ने सन् १८२९ में किया था। लुई तीन साल का ही था जब एक दुर्घटना में वह अपनी ज्योति खो बैठा था।

राजीव मिश्र, दरभंगा

★ रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार कब मिला था ?

□ यह पुरस्कार उन्हें १९१३ में प्राप्त हुआ था। कुछ प्रकाशनों में १९११ भी लिखा मिला है जो वस्तुतः सत्य नहीं है।

विजय कुमार शुक्ल, दतिया

★ शाहजहां के पुत्रों में औरंगजेब तीसरा था, या अंतिम ?

□ वह तीसरा था। उससे बड़े दो, दारा और शुजा, तथा छोटा मुराद था।

जगदीश कोठारी, रतलाम

★ जैन धर्मावलंबियों के पांच पवित्र पर्वत कौन-कौन हैं ?

□ शत्रुंजय (सिद्धाचल), अर्बुदाचल (आबू), गिरिनार (सौराष्ट्र), कैलास और सम्मेत शिखर (पारसनाथ, बिहार)।

निखिल कुमार, पटना

★ चींटी समुदाय में नर की भूमिका क्या होती है ? संसार में कहां पायी जाती हैं ?

□ चींटी समुदाय में नर की भूमिका केवल संतानोत्पत्ति तक ही सीमित रहती है। इस इच्छा से मादा चींटी से एक बार 'मिल' लेने के बाद वह अपनी जान से हाथ धो बैठता है। 'फार्मिसिडाई' परिवार की सदस्य इन चींटियों की लगभग दस हजार प्रजातियां हैं जो पृथ्वी के प्रत्येक भाग में पायी जाती हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में मुख्यतया काली और लाल चींटियां मिलती हैं। काली चींटियों में छोटी और बड़ी दो किस्म की होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चींटियों का सामाजिक संगठन अत्यधिक अनुशासित और उच्च स्तर का होता है। चींटियों की बस्ती में बांझ मादा कर्मचारी, इससे कम संख्या में जननक्षम नर और मादा चींटियां रहती हैं जो सामान्यतया एक रानी ही की संतति होती हैं। युवा नर और मादा चींटियां अपने घरों से बाहर जाकर 'मिलती' हैं जिसके बाद नर चींटियां मर जाती हैं और रानियां अपनी अलग-अलग बस्तियां बसाती हैं। कुछ चींटियां दूसरी बस्तियों में हमला करके उनके अंडे उठा लाती हैं जो बाद में गुलाम के रूप में काम करती हैं। ये सभी मादा होती हैं। मादा चींटी भी केवल एक ही बार 'मिलती' हैं किंतु इस एक मिलन में ही वे इतने शुक्राणु बचा लेती हैं जो उनके जीवनकाल तक पर्याप्त होते हैं। नर चींटियां वर्षा की पहली बौछार के साथ उत्पन्न होती हैं। चींटियों के डंक होते हैं तो कुछ चींटियां तेजाबी स्राव करती हैं।

रीना लांबा, जालंधर; यशोवर्द्धन वर्मा, वाराणसी

★ अंगूर कितना गुणकारी है ? संसार में कब-से अस्तित्व में है ?

□ मिस्र के सहस्त्रों वर्ष पुराने स्मारकों में अंगूर की आकृति मिलती है जो इस तथ्य का परिचायक है कि मनुष्य ने अपनी सभ्यता के प्रारंभ में ही इसे उगाया होगा। सुश्रुत में द्राक्ष को जीर्णता उन्मूलक, पेट की जलन शांत करनेवाला तथा पाचन शक्तिवर्द्धक बताया गया है। यह सुपाच्य, बलवर्द्धक, मंदाग्नि और कब्ज दूर करनेवाला है। इसके उपर्युक्त गुण इसमें ग्लूकोज की प्रचुरता के कारण हैं। अपनी जल और पोटैशियम लवण प्रचुरता तथा एल्बोमीन तथा सोडियम क्लोराइड की न्यूनता के कारण गुरदा रोगों की चिकित्सा के लिए उपयोगी है। इसकी खेती तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में भी होती है।

मनीषा भारद्वाज, लखनऊ

★ अलीशा चिनाय कौन हैं ?

□ मूलतया गोआ की निवासी अलीशा चिनाय हिंदी पॉप संगीत की एक प्रसिद्ध गायिका हैं। टेलिविजन चैनल 'वी' और एम.टी.वी. पर इनके गीत प्रायः सुने जाते हैं। निर्देशक विधु अपय्या के साथ 'मेड इन इंडिया' नामक हाल में जारी किया गया इनका अलबम युवा पीढ़ी में बहुत लोकप्रिय है।

ज्योत्सना जागीरदार, अजमेर

★ मौसम क्यों बदलते हैं ?

□ यह तो हम जानते ही हैं कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है। इस धुरी पर घूमने से ही रात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

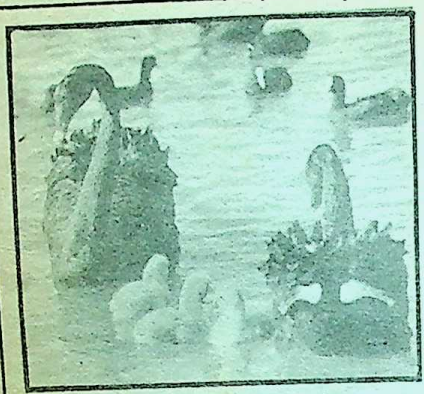

रणधीर श्रीमाली, चित्तौड़गढ़

★ काला हंस कहां पाया जाता है और कितना बड़ा होता है ?

□ काला हंस ऑस्ट्रेलिया का पक्षी है। यह लगभग एक मीटर लंबा होता है तथा नर और मादा दोनों की चोंच लाल होती है। इसके काले शरीर पर पृष्ठ भाग में दोनों ओर दो सफेद पट्टियां होती हैं जो इसकी सुंदरता को द्विगुणित करती हैं।

और दिन बनते हैं। पृथ्वी की यह धुरी अनुलंब पर २३.५ अंश के कोण पर एक ओर झुकी हुई है। उसका यही झुकाव मौसम में परिवर्तन का मुख्य कारण है। जब उत्तरी ध्रुव सूर्य के सामने होता है, तब उसकी किरणें उत्तरी गोलार्द्ध पर सीधी पड़ती हैं। इस समय पूर्व में सूर्य थोड़ा उत्तर की ओर रहता है। इस अवस्था में सूर्य की किरणें अधिक ऊष्मा और प्रकाश की कारक होती हैं जिससे मौसम गरम रहता है। सूर्य जब पूर्व दिशा में कुछ दक्षिण की ओर हटा हुआ रहता है, तब उसकी किरणें पृथ्वी पर तिरछी पड़ती हैं और वे पृथ्वी के वायुमंडल में फैल जाती हैं जिससे वह ऊष्मा उत्पन्न नहीं होने पाती जो गरमियों में होती है। इसलिए मौसम ठंडा हो जाता है।

जयंत भटनागर, बक्सर

★ क्या पश्चिमी देशों में मंदिर बनाने की अनुमति है ?

□ अमरीका और ब्रिटेन में हिंदुओं की आबादी है जिन्होंने अपने छोटे और बड़े मंदिर बनाये हैं। ब्रिटेन में उत्तरी लंदन के एक उपनगर नीसडेन का मंदिर इन सबमें सबसे अधिक बड़ा है। स्वामीनारायण ट्रस्ट द्वारा लगभग डेढ़ करोड़ डॉलर की लागत से निर्मित यह मंदिर परंपरागत शैली का है तथा इसकी ऊंचाई ७० फुट से अधिक है।

शत्रुघ्न चौधरी, समस्तीपुर

★ महिलाओं द्वारा मांग में सिंदूर धारण करने से क्या लाभ है ?

□ सिंदूर पारे का लाल ऑक्साइड होता है जो पोषक तत्त्व होने के कारण शरीर पर विशेष प्रभाव डालता है। यह चेहरे पर झुर्रियां जल्द नहीं पड़ने देता।

चलते-चलते

प्रश्न : सरदी में दांत क्यों किटकिटाते हैं ?

उत्तर : गरमी की खोज में।

— सूत्रधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'न्यूरोसर्जरी' से बढ़ी है मानव की आयु

● डॉ. वासुदेव प्रसाद यादव

आपरेटिंग माइक्रोस्कोप के विकास से न्यूरोसर्जरी को एक नयी दिशा मिली है । यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि मस्तिष्क का ऑपरेशन करना कितना अधिक खतरों से भरा काम है । मस्तिष्क न केवल सर्वाधिक जटिल तथा चमत्कारी जैव कंप्यूटर है, बल्कि हमारी सभी अनुभूतियों और सृजनशील विचारों का अंकुरण-स्थल भी ।

स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में न्यूरोसर्जरी की सुविधाओं का सर्वथा अभाव था । भारत में इसका प्रारंभ करनेवाले सर्वप्रथम न्यूरोसर्जन थे डॉ. जैकब चेंडी । सन् १९५१ में क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज बेवोर में डॉ. चेंडी ने न्यूरोसर्जरी का शुभारंभ किया था । सन् १९५४ में देश की तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री राजकुमारी अमृत कौर ने इसी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में ३६ बिस्तर के प्रथम न्यूरोसर्जरी वार्ड का विधिवत उद्घाटन किया था । मद्रास मेडिकल कॉलेज देश का दूसरा अस्पताल था जहां न्यूरोसर्जरी शुरू हुई । इसके बाद दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान और बंबई के के.ई.एम. अस्पताल में न्यूरोसर्जरी शुरू हुई और देखते-ही-देखते कुछ वर्षों के भीतर ही देश के बहुत-से महानगरों में न्यूरोसर्जिकल शल्य-चिकित्सा की जाने लगी ।

सिर की चोट से प्रभावित

न्यूरोसर्जरी, चिकित्सा विज्ञान की अद्भुत शाखा है और यह इसी का चमत्कार है कि आज ब्रेन ट्यूमर, सिर की चोट, स्ट्रोक स्पाइनल इंजरी, स्पाइनल कॉर्ड ट्यूमर, परिधीय तंत्रिकाओं की चोट-जैसे गंभीर रोगों की चिकित्सा अब सरल हो गयी है ।

यातायात दुर्घटनाओं में सिर की चोट मृत्यु का एक प्रमुख कारण है । प्रतिवर्ष हजारों लोग दुर्घटनाग्रस्त होने पर सिर की चोट खा बैठते हैं । इनमें से बहुत-से व्यक्ति मस्तिष्क की चोट के कारण असमय ही भगवान को प्यारे हो जाते हैं । सिर की चोट की समस्या कितनी गंभीर है इसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि केवल दिल्ली में लगभग १५,०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति प्रतिवर्ष सिर की चोट से प्रभावित होते हैं और इनमें से लगभग एक हजार काल के ग्रास बन जाते हैं । आज समुचित उपचार द्वारा मस्तिष्क की चोट से प्रभावित बहुत-से व्यक्तियों का जीवन बचाया जा सकता है । इसके लिए मुख्यतः तीन बातों की आवश्यकता है । पहली यह कि दुर्घटना-स्थल पर ही रोगी को कुशल फर्स्ट-एड दी जाए । दूसरी यह कि इस तरह की सुविधा उपलब्ध हो कि घायल को जल्दी-से-जल्दी अस्पताल पहुंचाया जाए । तीसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि देश के हर शहर में कुशल न्यूरोसर्जरी विशेषज्ञों एवं आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित पर्याप्त न्यूरोसर्जरी केंद्र उपलब्ध हों ।

रक्तवाहिकाएं क्षतिग्रस्त

आज पूरे भारत में लगभग ५० न्यूरोसर्जरी केंद्र कार्यरत हैं, जहां पहुंचते ही रोगी को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा मिल सकती है । आधुनिक निदान यंत्रों द्वारा, जिनमें कैट स्कैनर का एक विशेष स्थान है । इससे यह पता लगाया जा सकता है कि रोगी किस प्रकार की समस्या से ग्रस्त है । इसके बाद औषधियों अथवा शल्य-क्रिया द्वारा जीवन बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाये जा सकते हैं । प्रायः सिर की चोट के रोगी चोट लगते ही अचेत हो जाते हैं । ऐसा मस्तिष्क पर पहुंचे आघात के कारण होता है । ऐसे रोगी जिनके मस्तिष्क को बहुत अधिक क्षति नहीं पहुंचती, कुछ ही समय बाद चैतन्य अवस्था में आ जाते हैं । फिर भी यह आवश्यक है कि रोगी को कम-से-कम कुछ घंटों तक अस्पताल में रखा जाए । कुछ रोगियों में उनके मस्तिष्क की बाहरी सतह पर सूक्ष्म-रक्तवाहिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं । इसमें भीतर ही भीतर रक्तस्राव होता रहता है । फलतः रोगी के मस्तिष्क पर दबाव बढ़ता है और वह कुछ घंटे बाद पुनः अपनी चेतना खो देता है । यह जीवन के लिए खतरे का सूचक है । ऐसे समय पर यह आवश्यक हो जाता है कि रोगी के उपचार के लिए तत्काल ऑपरेशन किया जाए । इस खतरे को भांपने में कैट स्कैनर अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है ।

सिर की चोट के रोगियों में याददाश्त कुछ समय के लिए प्रभावित हो जाती है । रोगी को चोट के पूर्व और कुछ समय बाद तक की घटनाएं याद नहीं रहतीं, भले ही रोगी चेतनावस्था में ही हो । ऐसा मस्तिष्क में अचानक पड़े जोर के कारण होता है । सिर में चोट लगने के बाद यदि सिर में दर्द रहने लगे तो भी चिकित्सक की सलाह लेना आवश्यक हो जाता है । यह भीतर पनप रही समस्याओं के लक्षण हो सकते हैं ।

मानव मस्तिष्क की संरचना

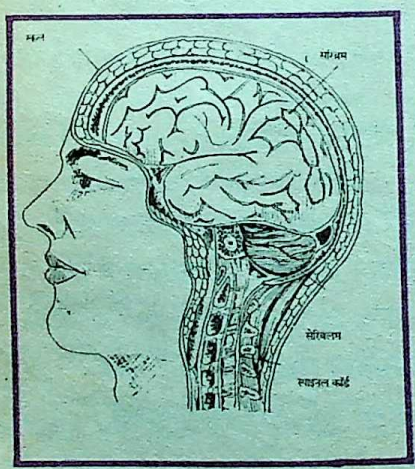

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रेन ट्यूमर के निदान में केस हिस्ट्री के अतिरिक्त, खोपड़ी का एक्स-रे, ई.ई.जी., एंजियोग्राफी, बेंट्रीक्योलोग्राफी और कैट स्कैनिंग आवश्यक है । ब्रेन ट्यूमर किसी भी आयु के व्यक्ति में हो सकता है । इसकी जड़ मस्तिष्क के किसी भी भाग अथवा मस्तिष्क को घेरनेवाली झिल्ली में हो सकती है । लगभग पचास प्रतिशत ब्रेन ट्यूमर 'विनाइन' होते हैं और शेष पचास प्रतिशत 'मेलिगनेंट' होते हैं । 'विनाइन' का अभिप्राय यह है कि ट्यूमर धीरे-धीरे बढ़ता है और 'मेलिगनेंट' ट्यूमर की तरह शरीर के अन्य अंगों में नहीं फैलता है । अतः इन ट्यूमरों में समय से हुई चिकित्सा से रोगी को सामान्य जीवन दिया जा सकता है ।

हड्डियों के खोल में

मस्तिष्क शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है, जो हड्डियों के एक खोल में सिर में सुरक्षित रहता है । मस्तिष्क एक ऐसे सीमित स्थान में कैद है जहां उसके बढ़ने के लिए कोई जगह नहीं है । इसलिए जब मस्तिष्क का ट्यूमर बढ़ता है, तब साथ-साथ खोपड़ी के भीतर दबाव भी बढ़ता जाता है । इससे रोगी के सिर में दर्द उठने लगता है, मितली की शिकायत हो जाती है । दृष्टि प्रभावित हो सकती है और दौरे पड़ने भी शुरू हो जाते हैं । यदि किसी व्यक्ति में चालीस वर्ष की आयु के बाद दौरे पड़ें तो आवश्यक हो जाता है कि वह किसी कुशल न्यूरोलॉजिस्ट से तुरंत परामर्श करे । ये लक्षण ब्रेन ट्यूमर के हो सकते हैं । इसके अतिरिक्त रोगी के व्यक्तित्व में भी परिवर्तन हो सकते हैं । प्रायः यह समझा जाता है कि ब्रेन ट्यूमर का भला क्या उपचार होगा, परंतु न्यूरोसर्जरी की

न्यूरो सर्जरी की विशेषज्ञ डॉ. एलेन

अद्भुत प्रगति के साथ अब ऐसा सोचना निराधार है । ब्रेन ट्यूमर के बहुत-से रोगियों का शल्य चिकित्सा द्वारा जीवन पुनः सामान्य बनाया जा सकता है । इसके लिए सबसे जरूरी बात यह है कि रोग का निदान प्रारंभिक अवस्था में ही कर लिया जाए क्योंकि एक लंबे समय तक दबाव रहने से जो परिवर्तन (जैसे ऑप्टिक नर्व पर पड़े दबाव के कारण उत्पन्न हुई दृष्टिहीनता) उत्पन्न हो जाते हैं और वे स्थायी हो जाते हैं । अतः देर से किये गये न्यूरोसर्जिकल ऑपरेशन से हो सकता है कि रोगी बच जाए, लेकिन उसकी दृष्टि न रहे ।

मनुष्य के शरीर में चारों ओर फैली परिधीय तंत्रिकाएं (पेरिफेरल नर्व), अंगों की सभी क्रियाएं और संवेदन क्षमता के आधार हैं । ये तंत्रिकाएं, स्पाइनल कॉर्ड एवं मस्तिष्क से संदेश ग्रहण कर शरीर के विभिन्न अंगों में हरकत उत्पन्न करती हैं तथा ताप, दबाव, स्पर्श संवेदनाओं को मस्तिष्क के अलग-अलग भागों तक पहुंचाती हैं । शरीर में सभी जगह फैले होने के कारण दुर्घटनाओं में ये क्षतिग्रस्त हो सकती हैं । ऐसा होने पर शरीर का वह भाग कमजोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता है और संवेदनशील नहीं रहता है ।

शरीर की बाह्य तंत्रिकाओं में अनेक सूक्ष्म इकाइयां होती हैं जो एक मुख्य कोशिका 'न्यूरॉन' से जुड़ी होती हैं । इन इकाइयों को 'एक्सान' कहते हैं । क्षतिग्रस्त होने पर एक्सान कुछ समय बाद पुनः पनपने लगते हैं । कई बार होता यह है कि कटे हुए एक्सान के दो छोर बीच में स्कार टिशू आ जाने के कारण मिल नहीं पाते । ऐसे रोगियों में उचित ऑपरेशन द्वारा तंत्रिका को काफी हद तक सामान्य बनाया जा सकता है । परिधीय तंत्रिकाओं की न्यूरोसर्जरी काफी जटिल है । एक तंत्रिका में बहुत-से एक्सानों का समावेश होता है । शल्यक्रिया करते समय यह ध्यान रखना पड़ता है कि प्रत्येक एक्सान के दो छोर आपस में मिल रहे हों क्योंकि यदि दो अलग-अलग एक्सान आपस में मिल जाएं तो बहुत-सी जटिलताएं एवं समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं; ठीक वैसे ही जैसे हमारे टेलिफोन की केबल को किसी अन्य टेलिफोन की केबल से मिला दिया जाए और उस टेलिफोन की केबल को किसी अन्य टेलिफोन से । ऐसी स्थिति में तो बार-बार टेलिफोन के रौंग नंबर ही मिलेंगे । परिधीय तंत्रिकाओं की इस शल्यक्रिया में आपरेटिंग माइक्रोस्कोप महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

आपरेटिंग माइक्रोस्कोप तो वस्तुतः सेरिब्रल स्ट्रोक की न्यूरोसर्जरी में वरदान सिद्ध हो रहा है । आपरेटिंग माइक्रोस्कोप द्वारा रुकी हुई रक्त-वाहिकाओं की शल्य-चिकित्सा सहज हो गयी है । विशेष बायपास सर्जरी द्वारा अब मस्तिष्क के उस भाग का रक्त-प्रवाह पुनः सामान्य बनाया जा सकता है । माइक्रोसर्जरी और बाइपोलर कोटरी के तकनीकी विकास से सेरिब्रल हेमरेज के मामले में भी शल्यक्रिया संभव है । आज स्थिति यह है कि साठ वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों में मृत्यु का एक मुख्य कारण सेरिब्रल स्ट्रोक है । इसमें रोगी के मस्तिष्क की नस फट जाती है अथवा उसमें रक्त के थक्कों के पहुंच जाने से अवरोध उत्पन्न हो जाता है और मस्तिष्क के उस भाग में पर्याप्त मात्रा में रक्त नहीं पहुंच पाता है । अध्ययनों से पता चलता है कि उक्त रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा एवं हृदय रोग सेरिब्रल स्ट्रोक के मुख्य कारक हैं । इनके अतिरिक्त रक्त में कोलेस्टरोल की अधिकता और मानसिक तनाव का भी सेरिब्रल स्ट्रोक से संबंध पाया गया है । अतः यह आवश्यक हो जाता है कि जहां तक हो सके इन समस्याओं से बचा जाए ।

न्यूरोसर्जरी, चिकित्सा विज्ञान की अद्भुत शाखा है और यह इसी का चमत्कार है कि आज ब्रेन ट्यूमर, सिर की चोट, स्ट्रोक स्पाइनल इंजरी, स्पाइनल कॉर्ड ट्यूमर, परिधीय तंत्रिकाओं की चोट-जैसे गंभीर रोगों की चिकित्सा अब सरल हो गयी है ।

सेरिब्रल स्ट्रोक

सेरिब्रल स्ट्रोक के रोगियों में रोग के लक्षण अचानक भी जन्म ले सकते हैं अथवा धीरे-धीरे भी उभर सकते हैं । यह रोग के कारण पर निर्भर करता है । प्रायः रोगी के सिर में भयंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड़ा होने लगती है, उसे अधरंग हो सकता है और यह भी संभव है कि 'स्पीच सेंटर' पर प्रभाव पड़ने के कारण वह बोलने की क्षमता खो बैठे। कुछ रोगी अचेतावस्था में चले जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक ये रोगी आजीवन अपंगता के शिकार हो जाते थे। हम जानते हैं कि शरीर की सभी क्रियाओं का नियंत्रण मस्तिष्क से होता है, जहां शरीर के अलग-अलग अंगों के अलग-अलग विशेष क्रियाओं के केंद्र होते हैं। इनमें से जो हिस्सा सेरिब्रल स्ट्रोक की चपेट में आ जाता है वह रक्त न मिलने के कारण नष्ट हो जाता है। ऐसी दशा में शरीर का वह अंग जिसका यहां नियंत्रण केंद्र होता है शिथिल पड़ जाता है। पुनः उससे काम नहीं लिया जा सकता। अब ऐसे गंभीर रोगियों का जीवन न्यूरोसर्जरी द्वारा सामान्य बनाया जा सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि ऑपरेशन शीघ्र किया जाए।

आपरेटिंग माइक्रोस्कोप के विकास से न्यूरोसर्जरी को एक नयी दिशा मिली है। यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि मस्तिष्क का ऑपरेशन करना कितना अधिक खतरों से भरा काम है। मस्तिष्क न केवल सर्वाधिक जटिल तथा चमत्कारी जैव कंप्यूटर है, बल्कि हमारी सभी अनुभूतियों और सृजनशील विचारों का अंकुरण-स्थल भी। सर्जन का चाकू जरा-सा भटका कि पता नहीं शरीर का कौन-सा भाग, कौन-सी ज्ञानेंद्री, कौन-सी संवेदना को आघात पहुंच जाए। अतः न्यूरोसर्जन इस संभावना के प्रति सदैव सचेत रहता है। आपरेटिंग माइक्रोस्कोप से न्यूरोसर्जन को यही सूक्ष्मता जिसकी उसे हमेशा से जरूरत

आधुनिकतम कंप्यूटरीकृत विधि

रही है मिल गयी है। आपरेटिंग माइक्रोस्कोप के नीचे संपूर्ण 'ऑपरेशन क्षेत्र' कई गुना बड़ा दिखायी पड़ता है, जिससे उसके हाथ की सफाई और अधिक अचूक हो जाती है।

छेड़छाड़ के बिना जानकारी

चिकित्सा विज्ञान में अभी हाल के वर्षों में कई नयी तकनीकों का विकास हुआ है। इनमें डी.एस.ए. (डिजिटल सबट्रैक्शन एंजियोग्राफी) और इवोक्ड पोटेंशियल विशेष उल्लेखनीय हैं। न्यूरोसर्जरी में डी.एस.ए. का विशेष महत्त्व है। इस तकनीक द्वारा अब मस्तिष्क की रक्त-धमनियों के साक्षात चित्र प्राप्त किये जा सकते हैं। रक्त धमनियों से उत्पन्न हुए फैलाव अथवा रुकावट के बारे में रक्त वाहिकाओं से छेड़छाड़ किये बिना ही इस तकनीक द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इवोक्ड पोटेंशियल तकनीक द्वारा दृष्टि और श्रुति से संबंधित नर्वस सिस्टम को पूरी तरह परखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर विज्ञान एवं बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के सामंजस्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

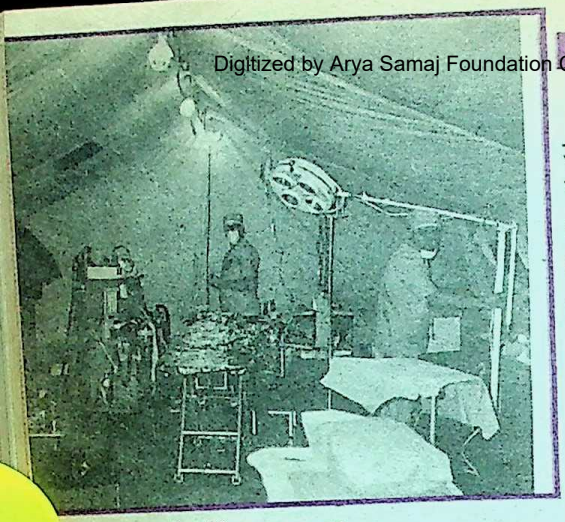

न्यूरोसर्जरी कक्ष का दृश्य

उपजी इस तकनीक द्वारा दृष्टिहीनता अथवा बधिरता के अलग-अलग कारणों का निदान सहज ही संभव हो गया है । यह जानकारी न्यूरोसर्जन के लिए विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि जानने के बाद आवश्यक निवारक कदम उठाये जा सकते हैं ।

इसी तरह अन्य नवविकसित यंत्र जो न्यूरोसर्जरी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं वे हैं— कैट स्कैनर एवं एन.एम.आर. (न्यूक्लीयर मैगनेटिक रेसोनेंस) स्कैनर । कैट स्कैनर द्वारा ब्रेन ट्यूमर, हाइड्रोसिफेलस (जिसमें मस्तिष्क के भीतर द्रव अधिक हो जाने के कारण सिर फूलकर बड़ा हो जाता है) एवं स्ट्रोक सहित बहुत-सी महत्त्वपूर्ण न्यूरोसर्जिकल समस्याओं का डायगनोसिस कर पाना सहज हो गया है । एन.एम.आर. स्कैनर का विकास अभी हाल में ही हुआ है । आज संसार के कुछ चिकित्सा केंद्रों में एन.एम.आर. यंत्र न्यूरोसर्जिकल समस्याओं के निदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ।

पिछले कुछ वर्षों से लेसर किरणें चिकित्सा के क्षेत्र में काफी सहयोग दे रही हैं । कार्बन डाईआक्साइड लेसर ब्रेन ट्यूमर की चिकित्सा में महत्त्वपूर्ण है । लेसर किरणों को मस्तिष्क के सूक्ष्म हिस्से में केंद्रित कर ब्रेन ट्यूमर को नष्ट किया जा सकता है । एक अन्य महत्त्वपूर्ण तकनीक, अल्ट्रासाउंड एस्पीरेटर है । इसका आधार अति सूक्ष्म ध्वनि तरंगें हैं, जो मानव की श्रवण शक्ति से बाहर हैं । इनके अतिरिक्त अनेक यंत्र न्यूरोसर्जरी के लिए खोजे जा रहे हैं जो अभी आविष्कार की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं और अब ऐसा लगता है कि निकट भविष्य में ही न्यूरोसर्जन मस्तिष्क के हर कोने में पहुंच कर उसकी हर किस्म की मरम्मत कर पाने में सक्षम हो जाएंगे ।

भारत में व्यवस्था

आज भारत के अनेक चिकित्सा केंद्रों में न्यूरोसर्जरी में पोस्ट ग्रेजुएट प्रशिक्षण दिया जा रहा है । उच्चस्तर के प्रशिक्षण प्रदान करनेवाले प्रमुख न्यूरोसर्जरी केंद्र हैं— अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (नयी दिल्ली); गोविंद बल्लभ पंत अस्पताल (नयी दिल्ली); पी.जी.आई. (चंडीगढ़); संजय गांधी पी.जी.आई. (लखनऊ); श्री चित्रा तिरुनल मेडिकल इंस्टीट्यूट (त्रिवेंद्रम); के.ई.एम. अस्पताल(बंबई), जसलोक अस्पताल (बंबई); मद्रास मेडिकल कॉलेज (मद्रास) और के.जी. मेडिकल कॉलेज (लखनऊ) ।

इस समय हमारा देश न्यूरोसर्जरी तथा न्यूरोसर्जन के क्षेत्र में विश्व के चोटी के देशों में है । वस्तुतः इस क्षेत्र में भारत दुनिया के किसी भी देश से पीछे नहीं है । पश्चिमी देशों के विख्यात न्यूरोसर्जन भी भारत के स्तर की सराहना करते हैं ।

एम. अशोक नगर आगरा-२८२००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी लोककथा

दाव-पेंच

● जसवंत सिंह विरदी

पुराने समय की बात है । जाट और साहूकार परस्पर विरोधी भी थे और एक-दूसरे पर आश्रित भी थे । इस सहयोग का परिणाम यह निकलता था कि फसल कभी अधिक होती थी, कभी कम होती थी । साहूकार धनवान होता जा रहा था और जाट के घर में वीरानी फैलती जा रही थी । फिर एक दिन ऐसा भी आया, जब जाट के घर में खाने के लिए सूखी रोटी भी नहीं थी । उस समय जाट ने साहूकार के घर जाकर कहा, "मैं तो अब पत्थर की भांति सूख गया हूं । फिर भी तुम कुछ-न-कुछ लेना चाहते हो, तो मुझे बताओ, मैं कैसे अमीर हो सकता हूं ?"

साहूकार ने कहा, "असल में खुशहाली देनेवाला ख्वाजा खिजर (जल-देवता) है । तू उसी के पास जाकर पूछ कि खुशहाल कैसे हो सकता है ?"

'अच्छा, मेहरबानी, मैं जल-देवता से पूछूंगा ।' भोले-भाले जाट ने कहा और घर की ओर चल दिया । फिर उसने अपनी घरवाली से तीन मीठी रोटियां पकवायीं और लंबी यात्रा के लिए चल दिया । वह जल-देवता (खिजर) को मिलना चाहता था ।

मार्ग में सर्वप्रथम उस जाट को एक ब्राह्मण मिला । ब्राह्मण देवता को एक मीठी रोटी देकर जाट ने पूछा, "मैं जल-देवता को मिलना चाहता हूं । मेरे लिए कौन-सा रास्ता ठीक रहेगा ?"

ब्राह्मण ने मीठी रोटी ले ली मगर जाट को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ बातों की एक बात ! साहूकार ने जाट को अपने जाल में फंसा लिया और फिर वह शंख उससे छीन लिया । मगर जाट ने शंख को बजाने का भेद साहूकार को नहीं बताया ।

कुछ नहीं बताया । उसने कुछ कहा, तो केवल इतना ही, 'चलते जाओ ।'

जाट चलता गया ।

कुछ आगे जाकर जाट को एक योगी मिला । उस योगी को भी जाट ने एक मीठी रोटी दी और ख्वाजा खिजर से मिलने का रास्ता पूछा । योगी ने भी उसे कहा, 'चलता जा ।'

कुछ और आगे जाकर जाट ने देखा कि एक घने वृक्ष के नीचे एक गरीब व्यक्ति बैठा था । वह भूखा भी था । जाट उसके समीप बैठकर बातें करने लगा । फिर जाट ने उसे अपनी तीसरी रोटी भी निकालकर दे दी । प्रसन्न होकर उस व्यक्ति ने जाट से पूछा, 'तू कहां जा रहा है ?'

'मेरा सफर बहुत लंबा है ।' जाट ने बताया ।

'क्योंकि मैं जल-देवता से मिलने के लिए चला हूं ।' फिर जाट ने उससे पूछा, 'क्या तुम मुझे जल-देवता का ठिकाना बता सकते हो ?'

'हां, मैं बता सकता हूं ।' उस व्यक्ति ने कहा, 'क्योंकि मैं ही खिजर हूं ।'

जाट ने ख्वाजा खिजर को दंडवत् नमस्कार किया और अपनी करुण राम-कथा कह सुनायी ।

'साहूकार मुझे लूट रहा है ।' अंत में जाट ने दुःखी मन से कहा, तो जल-देवता ने उसे एक शंख दे दिया और कहा, "इस शंख को बजाने का एक विशेष ढंग है ।" वह ढंग जाट को बताकर जल-देवता ने फिर उसे कहा, "तुम्हें जब भी किसी चीज की इच्छा हो, शंख को बजाकर अपनी इच्छा बता देना । तेरी इच्छा पूरी होगी । मगर उस साहूकार से बचकर रहना, क्योंकि उससे बचना बहुत कठिन है ।"

जल-देवता से शंख लेकर जाट अपने गांव की ओर वापस चल दिया । वह बहुत प्रसन्न था । रास्ते में उसे साहूकार ने देखा, तो वह मन में सोचने लगा, "इस मूर्ख ने भी अमीर बनने का कोई भेद प्राप्त कर लिया होगा । तभी इसकी गरदन अकड़ी हुई है ।"

इस तरह सोचता हुआ साहूकार एक दिन अकस्मात ही जाट के घर जा पहुंचा । उसे देखकर जाट घबराया, मगर उसने जाट से प्रसन्न होकर कहा, "चलो अच्छा हुआ, भगवान ने तुम्हें भी खुशहाल बना दिया है । जीवन में हर किसी पर उसकी कृपा होती है । मैं तुम्हें बधाई देता हूं ।"

जाट प्रसन्न हो गया । फिर उसने साहूकार को शंख प्राप्त करनेवाली कथा भी सुना दी, "आपके कहने पर मैं घर से चल दिया और मैंने खिजर को ढूंढ़ लिया । खिजर ने मुझे एक शंख दिया, जो मेरी हर इच्छा पूरी कर देता है ।"

साहूकार ने जाट की चापलूसी करते हुए कहा, "वह शंख मुझे भी दिखाओ ।"

जाट ने साहूकार को शंख दिखा दिया, मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे बजाने का भेद साहूकार को नहीं बताया। वह अब खुद को चतुर समझने लगा था।

'कोई बात नहीं।' साहूकार ने कहा और चल दिया। वह खुद से कहता जा रहा था, "अब शंख जाट के पास न रहने दूंगा। खुशहाली पर मेरा ही अधिकार है।"

सौ बातों की एक बात ! साहूकार ने जाट को अपने जाल में फंसा लिया और फिर वह शंख उससे छीन लिया। मगर जाट ने शंख को बजाने का भेद साहूकार को नहीं बताया। उसके बगैर शंख का क्या महत्त्व था ?

साहूकार शंख को बजा नहीं सकता था। इसलिए वह निराश हो गया। फिर एक दिन जाट के घर जाकर साहूकार ने कहा, "मैं शंख तुम्हें लौटा रहा हूं। मगर मेरी एक शर्त है।"

"वह क्या ?" जाट ने पूछा तो साहूकार ने बताया, "तू इस शंख से अपनी सभी इच्छाएं पूरी कर सकता है। मगर जो कुछ तुम्हें मिलेगा, मुझे उससे दुगना मिलना चाहिए।"

"यह कैसे हो सकता है ?" जाट ने दुःखी होकर कहा, तो साहूकार बोला, "फिर मैं तुम्हें शंख न दूंगा।"

जाट के घर में फिर वीरानी छा गयी थी, इसलिए वह साहूकार की बात को ध्यान से सुनने लगा।

साहूकार ने फिर कहा, "तुम्हें तो तुम्हारे हिस्से की चीजें मिलती ही रहेंगी, अगर मुझे वह चीजें दुगनी मिल जाएं, तो तुम्हें क्या तकलीफ है।"

"चलो ठीक है।" कहकर जाट ने साहूकार से शंख ले लिया।

अब इस तरह होने लगा कि शंख बजाकर जाट जो कुछ भी मांगता, साहूकार को वह वस्तु दुगनी मिल जाती। इस बात पर जाट दुःखी रहने लगा।

'यह तो लूट है।' वह खुद से कहता और साहूकार को गालियां देता। फिर वह साहूकार से घृणा करने लगा।

अगले वर्ष सूखा पड़ गया, जिससे जाट की फसल सूखने लगी। आकाश से वर्षा की एक भी बूंद नहीं गिरी थी। इसलिए जाट ने अपनी फसल की रक्षा के लिए खिजर से प्रार्थना की,

"मेरे खेतों में एक कुआं लग जाए।"

जाट के खेतों में एक कुआं लग गया मगर साहूकार की हवेली के सामने दो कुएं लग गये। जाट को इस बात की बहुत तकलीफ हुई। वह जैसे पागल-सा हो गया। उसने सोचा, "मेरा कुछ भी नुकसान हो जाए मगर मैं साहूकार को लाभ न होने दूंगा।"

यह बात सोचकर जाट ने शंख को बजाया और खिजर से कहा, "ख्वाजा खिजर जी ! तुमने मुझे एक कुआं दिया, मगर साहूकार को दो कुएं दे दिये। अब आप मुझे काना बना दीजिए।"

जाट की बात खत्म ही हुई थी कि उसकी एक आंख अंधी हो गयी। मगर साहूकार दोनों आंखों से अंधा हो गया।

अपनी यह दुर्दशा देखकर साहूकार चिल्लाने लगा, "जाट को बुलाओ। मैं उससे नया सौदा तय करूंगा। उसे जो कुछ मिलेगा, मुझे उसका आधा ही मिलता रहे...बस !"

—९६, गोल्डन एवेन्यू,
गढ़ारोड, जालंधर (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य की सलाह

सरिता, इंद्रानगर

प्र. : बत्तीस वर्षीया दो बच्चों की मां हूं। करीब छह महीने से पहले, दूसरे प्रसव के बाद जोड़ों में दर्द शुरू हो गया है। सुबह एड़ियों में बहुत अधिक चुभता हुआ दर्द होता है।

उ. : योगराज गूगल एक वटी और केशोर गूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें। चंद्रप्रभावटी एक,रात दूध से लें।

मनीषा, बल्लभगढ़

प्र. : उम्र ४० वर्ष। गत छह माह से मासिक स्राव बहुत अधिक होता है। दुर्बलता अधिक बढ़ गयी है। छाती में जलन और कभी-कभी उल्टी को मन करता है।

उ. : पुष्यानुग चूर्ण साठ ग्राम, कपर्दिका भस्म दस ग्राम, सूतशेखर रस पंद्रह ग्राम लेकर उसकी साठ मात्रा बनायें। सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें। आंवला चूर्ण साठ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म पंद्रह ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें, एक-एक मात्रा दोपहर-रात पानी से लें।

जी. पी. शर्मा, उत्तरलाई

प्र. : पिछले दो साल से कमर में दर्द के कारण सीधा खड़ा नहीं रह पाता। अधिक चलने पर भी दर्द बढ़ जाता है। अंगरेजी दवा लेने पर थोड़ी देर आराम मिलता है। जांच में सभी ठीक है।

उ. : समीरपन्नगरस दस ग्राम और गिलोय सत्व दस ग्राम लेकर उसकी अस्सी मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें। रास्ना गूगल दो-दो वटी दोपहर-रात गरम पानी से लें।

एक भाई, खड़गपुर

प्र. : पिछले दो वर्ष से यू.टी.आई. की शिकायत से परेशान हूं। काफी दिनों तक एलोपैथी से इलाज किया। मानसिक रूप से परेशान हूं।

उ. : गोक्षुरादि गूगल एक वटी, चंद्रप्रभा वटी एक, आरोग्यवर्धनी वटी एक, सुबह-शाम गरम पानी से लें। पुनर्नवासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें।

श्रीमती संतोष, रीबा

प्र. : उम्र साठ साल। सारे शरीर में दर्द, खासकर पैरों में, पेशाब कम आता है। मुंह में कभी-कभी छाले हो जाते हैं। एक साल से परेशान हूं। जांच में सभी ठीक है।

उ. : चंद्रप्रभा वटी एक और गोक्षुरादिगूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें। सूतशेखररस दो वटी भोजन के बाद पानी से लें।

पवन बंसल, धौलपुर

प्र. : उम्र २३ साल। मेरे दायें अंडकोष में दो वर्ष से सूजन है तथा बढ़ रहीहै। ऑपरेशन नहीं कराना चाहता।

उ. : वृद्धिवाधिका वटी और चंद्रप्रभा वटी एक,सुबह-शाम गरम पानी से लें। कांकायन वटी दो-दो,भोजन के बाद पानी से लें।

राकेश कुमार, पटियाला

प्र. : उम्र २४ वर्ष। पेट में दायीं ओर पसली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे भारीपन, कभी-कभी चुभन हो जाती है। भूख कम लगती है। कभी-कभी पेशाब में पीलापन रहता है। उबकाई भी आती है। कब्ज बराबर रहता है।

उ. : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, नवाय लौह पंद्रह ग्राम और शंख भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह-शाम पानी से लें। आरोग्य वर्धनी वटी दो-दो भोजन के बाद पानी से लें। तली हुई वस्तु और देर से पचनेवाली वस्तु को न लेकर तीन माह औषधि सेवन करें।

एस. के. उप्रेती, पौड़ी

प्र. : पिताजी की उम्र ६२ साल है। रात्रि में जैसे ही सोने लगते हैं दोनों पैरों में बहुत दर्द शुरू हो जाता है। रात जागकर ही बिताते हैं। अनेक इलाज किये लेकिन लाभ नहीं मिला।

उ. : महायोगराज गूगल दो वटी, चंद्रप्रभा वटी एक, सुबह-शाम गरम पानी से लें। अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद लें।

रामसुंदर दास, दानापुर

प्र. : उम्र ४५ वर्ष। सारे शरीर में हल्की जलन व खारीश रहती है। तीन माह पहले पंद्रह दिन बुखार आया, अंगरेजी दवा ली। उसके बाद से परेशानी है।

उ. : हरिद्राखंड एक चम्मच, सुबह-शाम पानी से लें। चंदनासव दो चम्मच भोजन के बाद लें।

शांतनु, बोकारो

प्र. : उम्र १९ वर्ष है। जो विषय पढ़ता हूं तुरंत भूल जाता हूं। याद करने की कोशिश करता हूं। याद नहीं रहता।

उ. : सारस्वतारिष्ट एक चम्मच और अश्वगंधारिष्ट एक चम्मच सम भाग जल मिलाकर भोजन के बाद लें।

श्रीमती मंजू, जलपाईगुड़ी

प्र. उम्र तीस वर्ष है। अकसर पैरों की अंगुली के बीच में दर्द व जख्म हो जाते हैं। अंगरेजी दवा लेने पर कुछ समय ठीक रहती हूं। कुछ समय बाद वही स्थिति बन जाती है।

उ. : केशोर गूगल एक वटी, आरोग्यवर्धनी एक वटी, सुबह-शाम पानी से लें। शुद्ध सरसों का तेल सौ ग्राम, पिसी हल्दी पचीस ग्राम डालकर रखें। प्रति दिन यथास्थान पर लगायें।

पवन, आगरा

प्र. उम्र ३५ वर्ष है। नौ वर्ष विवाह के बाद पत्नी का पांच माह का गर्भपात, तत्पश्चात स्वयं के चोट आदि के कारण छोटी-छोटी गांठें नस में हो गयी है जिससे वीर्य नहीं निकलता। ऑल इंडिया में दिखाया। १४ माह टी. बी. की दवा का सेवन किया। मिलने के समय नसों में खिंचाव व दर्द रहता है। किंतु अब नहीं रहता। नसें कुछ मोटी हो गयी हैं। संतान नहीं है। हीन भावना से ग्रस्त हूं।

उ. : चंद्रप्रभा वटी तीस ग्राम व वगेश्वररस दस ग्राम, रसमाणिक्य दस ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें। एक-एक मात्रा सुबह-शाम दूध से लें। केशोर गूगल एक वटी, कांचनार गूगल एक वटी, दोपहर-रात पानी से लें। श्रीगोपाल तेल से शनैः-शनैः मालिश करें।

एक पीड़िता

प्र. उम्र २५ वर्ष है। तीन संतानें, ३-४ बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भपात भी करा चुकी हूं । शरीर क्षीण, कमजोरी बहुत अधिक, बायां स्तन बिल्कुल नहीं, दायां काफी छोटा है, डेढ़ वर्षीय बालक दूध पीता है ।

उ. : पुष्यानुग चूर्ण साठ ग्राम और मुक्ता शुक्ति भस्म पंद्रह ग्राम लेकर उसकी साठ मात्रा बनायें । एक-एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । द्राक्षारिष्ट एक चम्मच और अशोकारिष्ट एक चम्मच भोजन के बाद लें । चंद्रप्रभा वटी रात दूध से लें ।

एक परेशान, वैशाली

प्र. : उम्र २२ वर्ष है । १९९० में पीलिया शुरू हुआ । अचानक एक रात बेचैनी और उल्टी बढ़ गयी । पीलिया ठीक हो गया । चार वर्ष बाद अचानक डकार के साथ खट्टा-मीठा पानी मुंह में आता है । छाती में जलन । आंतों में सूजन, आंव आना और पेट में भारीपन । कभी-कभी खाने के बाद दर्द होता है ।

उ. : स्वर्ण सूतशेखररस दस ग्राम, प्रवाल पंचामृत दस ग्राम लेकर उसकी साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद के साथ लें । चित्रकादि वटी एक, आरोग्यवर्धनी वटी एक, भोजन के बाद पानी से लें । अविपत्तिकर चूर्ण एक चम्मच रात दूध से लें ।

अशोक, गोलाखीरी

प्र. : उम्र २४ वर्ष है । लगभग दो वर्षों से हल्का-हल्का बुखार, हाथ-पैरों में जलन, सिर, शरीर और कमर में दर्द रहता है । असामान्य घबराहट, कब्ज, सरदी-जुकाम अधिक मूत्र, कमजोरी आदि रहती है ।

उ. : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम और मुक्ताशुक्तिभस्म पंद्रह ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अमृतारिष्ट एक चम्मच, द्राक्षारिष्ट एक चम्मच, भोजन के बाद लें । आनंद भैरवरस एक वटी रात गरम पानी से लें ।

— कविराज वेदव्रत शर्मा,
बी-५/७, कृष्णनगर,
दिल्ली-११००५१

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. क. तुलसीदास ने नीचे दी गयी कविता किस प्रसंग में लिखी थी ? —'जाके प्रिय न राम-वैदेही'

ख. तब तुलसीदास कहां थे ?

२. अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी में भारत के कितने द्वीप हैं ? इनमें क्रमशः सबसे बड़े द्वीपों के नाम बताइए ।

३. क. आजकल सोने की खपत में सबसे आगे कौन-सा देश है ।

ख. दूसरे तथा तीसरे नंबर पर कौन-से देश हैं ?

४. क. हाल में भारतीय कंपनियों में प्रथम स्थान किसे दिया गया है ?

ख. उसका बाजार-मूल्य कितना है ?

५. क. अब तक भारत में किस दुर्गम नदी में नौका-अभियान कब और किसने किया है ?

ख. कितनी ऊंचाई पर और कितनी दूर नौकानयन किया है ?

६. क. सोवियत परमाणु-पनडुब्बियों ने पानी के नीचे पहली विश्व-यात्रा कब की थी ?

ख. कितनी दूरी की यात्रा की और कितना समय लगा ?

७. क. विश्व में पहली महिला राष्ट्रपति किस देश की और कौन थी ?

ख. क्या वह अंत तक इस पद-भार को निभा पायी ?

८. किसने 'भारतरत्न' की उपाधि ग्रहण करने से स्वयं इनकार कर दिया था ?

९. नीचे लिखे पुरस्कार किसे मिले हैं ? —
क. १९९४ का मूर्तिदेवी पुर., ख. उ.प्र. का भारत-भारती सम्मान, ग. लोहिया अतिविशिष्ट पुर. तथा लोहिया विशिष्ट पुर. ।

१०. क. गत सितंबर में अमरीका ओपन टेनिस के महिला एकल का खिताब किसने जीता ?

ख. वर्ष १९९४ के के.के. बिड़ला फाउंडेशन के खेलकूद पुरस्कार किसे मिले हैं ?

११. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जायेंगे । यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवेश

निर्वातता

अकृत्रिमता का ध्येय
कृत्रिमता का पथ
कोई गैस शेष थी
प्रोटोप्लाज़्म बन उठा
पर निर्वातता की प्रक्रिया में
धरती, आकाश, गति, आकार
अस्तित्वहीन हो चले थे,
प्रोटोप्लाज़्म भी बस सुगबुगाता रहा
न कोशिका बनी, न काया
लगातार चिल्लाता रहा
नहीं... ! नहीं... !
बस निर्वातता ही निर्वातता
पूर्ण अकृत्रिम निर्वातता चाहिए
पर ओस जितनी गैस चाट-चाट कर
सुगबुगाना नियति बन गयी
अकृत्रिम निर्वातता
असंभव जो थी
संभाव्यता तो ब्रहमांड से परे थी ।

—राजू कुशवाहा

शिक्षा : बी. ए.
जन्मतिथि : १५.९.७१
आत्मकथ्य : एकांत से संवाद व भावनाओं का सांगीतिक प्रकटीकरण कविता व गीत बन जाते हैं
पता : ५८२ सी, नयी बस्ती कीडगंज, इलाहाबाद-३

भारत मां के लाल

बारह साल की उम्र
मट्टी का काम
ममता सोयी गहरी हैं
बचपन की हैं नींद हराम

छोटी-छोटी अंगुलियां
पतले-पतले पांव
इतने छोटे जिस्म पर
कितने-कितने घाव

बिखरे-बिखरे बाल हैं
चिपके-चिपके गाल
चूड़ियों की फैक्ट्री में
होते हलाल ये भारत मां के लाल

कानून का मजाक उड़ता है
नेताओं की खुलती पोल
इन चूड़ियों में मुख तपा हैं
हाथ जला है/स्वेद बहा है
रक्त सना है/बोलो कितना दोगे मोल

—मनोज जुयाल

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी) एम. ए. (लोक प्रशासन) डिप्लोमा (फ्रेंच) डिप्लोमा (अनुवाद)
जन्मतिथि : ३ मई १९७१
आत्मकथ्य : जो अनुभव तीव्र होता है वह साधारण भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता । अतः कविता का माध्यम अपनाता हूं ।
पता : १६/१६६२, गोविंदपुरी, कालकाजी, नयी दिल्ली-११००१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा

तुम आओ एक बार
मेरे हृदय की गीली धरती
आतुर है चिन्हित करने को
तुम्हारा आगमन
अनवरत प्रतीक्षा
कब तक ?
एक हठीला विश्वास
तुम्हारे आने का
और बेबस अकुलाहट में चू पड़ते
आंख से आंसू
तुमसे इतना प्यार !
क्यों ?
तुम आओ एक बार
आतुर हैं मेरी भावनाओं के बादल
बरसने को तुम्हारे कदमों पर
समर्पित मैं तुमको, साधिकार,
हर आहट पर
तुम्हारे आने का भ्रम
खुली खिड़की
दो आंखें
बस, शेष इतना ही ।

—सुनीता शर्मा

शिक्षा : स्नातकोत्तर (रसायन शास्त्र) अंतिम वर्ष

जन्मतिथि : २०.४.७३

आत्मकथ्य : अंतर में बहुत कुछ जमता है, पिघलता है और कविता बन कर बह निकलता है ।

पता : मकान नं. ४५, वार्ड नं. ८, पांवटा साहिब सिरमौर (हि. प्र.) पिन-१७३०२५

ऐ भविष्य

तुम मेरे सोये मन पर
दस्तक मत दो मेरे दोस्त
जाग जाएंगे तार
टूट जाएगा स्वप्न
बदल जाएगा सब कुछ
होगा एक भूकंप
जिसमें बदल जाएगा मौसम
अगर मैं उठ जाऊंगी
खोल दूंगी कलई उनकी
जिनके सम्मान में मैं चुप बैठी थी
फिर करूंगी कर्त्तव्य पूरे
और दूंगी उपदेश बहुतेरे
बदला नहीं ले सकती मैं
करूणा मुझमें बहुत पड़ी
फिर भी सुधारूंगी वो सब
जो अतीत ने नहीं दिया
वर्तमान को मैंने सुला दिया
और न चाहते हुए भी
ऐ भविष्य तुम्हारे कारण
मैंने अपने आपको जगा दिया

—निवेदिता मिश्र 'हेना'

शिक्षा : मनोविज्ञान स्नातकोत्तर अध्ययनरत

आत्मकथ्य : मैं जो भी सोचती हूं और देखती हूं, तब इर्द-गिर्द कविता लिख देती हूं ।

पता : द्वारा—श्री राम लोचन मिश्र
डी. एफ. ओ.
सिमडेगा
जिला—गुमला बिहार-८३५२३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार

जन्म दिन पर कैसा उपहार
दिया किसी ने

खुशियों के कपोलों पर
रखकर दुःखों के कांटे

एक बेबसी की जिंदगी
कर दी तेरे हवाले

होंगे जो कदम तुम्हारे
सफलता की रागिनी पर

सिलसिला दुःखों का
फिर और न बढ़ सकेगा

जीवन नया तुम्हारा
उपहार मेरा होगा

—कुमारी हेमा भट्ट

शिक्षा : एम. ए. समाज शास्त्र
उम्र : २२ वर्ष
आत्मकथ्य : सामाजिक विसंगतियों और अपने आसपास के माहौल से जब दुखद अनुभूति होती है, तब शब्द अचानक कागज पर उतर आते हैं शायद इसे ही कविता कहते हैं ।
पता : द्वारा बी. सी. भट्ट
जे. टी. ओ. दूरभाष केंद्र मंडीदीप
जिला रायसेन
पिन-४६२०४६ (म. प्र.)

एक ताजमहल उनका

एक ताजमहल उनका
और एक हमारा
दोनों हैं एक से फिर भी भिन्न-भिन्न
उनका खड़ा शान से और अपना छिन्न-भिन्न
दोनों ही तो हैं प्रेम के स्मारक
वह शांत-सा है और यह ?
यह हृदय विदारक !
उस पत्थर के ढांचे को
इन्हीं लोगों ने नमन किया
जिन्होंने तेरे-मेरे प्रेम को, भावनाओं का
बड़ी निष्ठुरता से दमन किया
दफन है उस ताज में दो दिलवालों की मिट्टी
और इसमें दो प्राण, कुछ सपने, और कुछ कसमें
जिनका खून हुआ बचाने को कुछ सड़ी-गली रस्मे
यदि तू और मैं मर गये होते
अमर हुए होते और ये लोग रोते
बातें करते—"काश ये जीवित होते"
मगर हम मर कर भी 'मर' न सके
और जिंदा लाशों पर कोई नहीं रोता
इन्हें जीवित करने का कोई प्रयास नहीं होता
इन्हें जीवित करने का कोई प्रयास नहीं होता...

—हरपाल सिं

शिक्षा : इंटर (कॉमर्स)
जन्मतिथि : २३.१२.७४
आत्मकथ्य : इस पत्थर की दुनिया में मेरे दो ही मित्र हैं—कागज और कलम । जब हम तीनों मिल बैठते हैं तब मैं अपने दिल की पीड़ा निस्संकोच व्यक्त कर देता हूं । यही अभिव्यक्ति कविता का रूप ले लेती है । मेरे दोनों मित्र मौन रहकर भी मुझे सांत्वना देते हैं ।
पता : द्वारा सरदार संतोखसिंह थापर
खड़गाझाड़ लोहाबासा जमशेदपुर-८३१००८ (बिहार)

रचनाएं भेजते समय सफाई से कागज के एक ओर लिखी हों बड़ी न हों । पांच रचनाएं हों ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तितिक्षा

● त्रिलोचन दत्त जोशी

"कहां खो गये हैं श्रीमान ?" चौंकते हुए "नहीं कहीं नहीं, ऐसे ही कुछ सोच रहा था ।" मित्र-मंडली में बैठे हुए उस व्यक्ति का उत्तर होता है । कुछ लोग अतीत की सुखद स्मृतियों में झांकते रहते हैं तो कुछ अतीत की गहराइयों में छिपी वेदना से छटपटाते रहते हैं । अतीत में, मुख्यतया बाल्यावस्था में, उनके प्रति अकारण ही किये गये अन्याय, अत्याचार, विश्वासघात तथा लोभ और क्रोध के कारण अभावग्रस्त रहने की वेदना, मूर्तिमान होकर उनके हृदय को कचोटती रहती है । ऐसा व्यक्ति दुःख और रोषावेश में अन्यायी को तथा अपने को कोसता रहता है । वह तड़फता रहता है कि उस पर घटित अन्याय के कारण वह जीवन में भली-भांति पनप नहीं सका, उसके गुण दबे ही रह गये । इस कारण उसके अनेक वांछित मनोरथ भी पूरे नहीं हो पाये । किंतु यदि उसके कोई एक-दो विशिष्ट मनोरथ पूर्ण हो गये होते तो वह उन अन्यायों को भूलने-सा लग जाता । उसके मन-मस्तिष्क में यह बात घर कर चुकी होती है कि यदि उसके प्रति अकारण ही अन्याय के कांड नहीं हुए होते और उसे सही मार्गदर्शन मिल गया होता और उसे उत्साहित किया गया होता तो निश्चय ही वह एक सफल नागरिक हुआ होता । परंतु ऐसा रोना-धोना कलपना समस्या का समाधान नहीं है ।

इस त्रिगुणात्मिका प्रकृति में मनुष्य तीन प्रकार की संपदाओं से युक्त होते हैं—दैवी, मानवी और आसुरी, दैवी संपदा से युक्त मनुष्य के स्थायी गुण शांति, संतोष, उदारता, दयालुता, मैत्री, करुणा और समता के भाव तथा सज्जनता आदि सद्गुण होते हैं । ऐसे लोग बच्चों का लालन-पालन बड़े ही स्नेह और मैत्री भाव से करते हैं । मानवी संपदावाले व्यक्ति समयानुसार मानवोचित व्यवस्था करते हैं । बच्चों पर अधिक कड़ाई का व्यवहार नहीं करते । आसुरी प्रवृत्तिवालों का स्थायी भाव अन्याय, अत्याचार, विश्वासघात, अतिलोभ, अतिक्रोध, अति स्वार्थ परायणता आदि होते हैं । ऐसे लोग इन दुर्गुणों के वशीभूत रहते हैं । वे दूसरों को कष्ट देने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं । बच्चे का तनिक सा भी दोष देखने पर, जिसे अन्य लोग अनदेखी कर जाते हैं, उससे शत्रुवत् व्यवहार करते हैं तथा कठोर दंड की व्यवस्था करते हैं । वे इस बात को नहीं समझ पाते कि कुसुम-कोमल बच्चे को कठोर दंड देना कदापि उचित नहीं । बच्चे के कोमल मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इस बात को वे सोचते भी नहीं ।

प्राचीनकाल में नीति निर्धारण की गयी थी—*"लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्ते तु षोडसे वर्षे पुत्र मित्रवदाचरेत् ।"* अर्थात् पांच वर्ष तक बच्चों का भरपूर प्यार से लालन-पालन करें । छह से पंद्रह वर्ष की अवस्था तक उसे सुव्यवस्थित मार्ग पर बढ़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने के लिए किंचित ताड़न का प्रयोग करें। सोलह वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर पुत्र के साथ मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। कुछ विवेकहीन व्यक्ति इस बात को नहीं समझ पाते कि 'ताड़न' शब्द का तात्पर्य समझाने-बुझाने, डांटने तथा आवश्यकता पड़ने पर किंचित मानसिक तथा शारीरिक दंड देने, जैसे आंख दिखाना, कान खींचना, चपत मारना, आदि साधारण दंड देने से है। वे बिना समझे ही 'ताड़न' से निर्ममतापूर्वक मार-पीट करना आदि अर्थ लगाते हैं। कभी-कभी बालक का कोई अपराध न होने पर भी 'सुधारने' की त्रुटिपूर्ण धारणा के कारण, कोई औचित्य न होने पर भी निर्दयता से मार-पीट करने लगते हैं। इस प्रकार के लगातार दुर्व्यवहार से बालक में अयोग्य संस्कारों की छाप पड़ने लगती है। बालक सदा चिंतातुर और भयभीत रहता है। अपने अन्यायी पिता को देखते ही वह पीपल के पत्ते की तरह कांपने लगता है। वह इतना डरा हुआ होता है कि घर में प्रवेश करने का साहस तभी जुटा पाता है जब उसका पिता घर से बाहर हो अधिकांश समय वह घर से बाहर ही बिताना चाहता है पर डर के कारण ऐसा नहीं कर पाता। घर में पढ़ाई में मन लगाना अत्यंत कठिन हो जाता है। वह एक प्रकार से पढ़ने का नाटक मात्र ही करता है। इस कारण वह पढ़ाई में पिछड़ जाता है।

उसकी आंखों के सामने भद्र या अभद्र कुछ भी होता रहे वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो तटस्थ ही रहता है।

लेखक ऐसे कुछ व्यक्तियों के निकट संपर्क में आया था जिनके स्वभाव और कर्म बड़े ही क्रूर थे।

● एक व्यक्ति का सबसे छोटा बालक न केवल पढ़ाई-लिखाई में मंदबुद्धि था बल्कि शारीरिक दृष्टि से भी निर्बल था। बच्चे के विद्यालय से प्राप्त उन्नति-पुस्तिका देखते ही उसके शरीर में आग-सी लग जाती थी। कारण खोजे बिना ही 'समझाने' के उद्देश्य से उस बालक पर जो बेंतों, लात-घूसों और थप्पड़ों की मार पड़ती थी, देखनेवाले भी कांप जाते थे। ऊपर से लगातार अभद्र गाली-गलौज की बौछार भी होती रहती थी। दूसरों के द्वारा उनको समझाने का प्रयास एकदम वृथा ही सिद्ध होता था। वे बालक को सुधारने के लिए अपने क्रूर व्यवहार को सदा उचित ही बताते थे।

● दूसरा व्यक्ति पहलेवाले से भी अधिक आसुरी प्रकृति का था। उसका बालक पढ़ने में तेज था किंतु न जाने क्यों उस व्यक्ति के मन में सदा आशंका बनी रहती थी कि बच्चा 'पढ़ाई में ठीक नहीं है।' वह स्वयं मैट्रिक से अधिक पढ़ा नहीं था। वह स्वभाव से अत्यंत असहिष्णु, शंकालु और अविश्वासी था। अपनी विचारधारा को ही ठीक समझता था। दूसरों की त्रुटियां निकालने में उसे बड़ा आनंद आता था। कभी-कभी अपने से अधिक पढ़े-लिखे और अधिक गुणी व्यक्तियों से उसे अपमानित होना पड़ता था। किंतु वह बड़ा ही निर्लज्ज था। उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। उसके व्यवहार में तनिक भी अंतर नहीं आया। पांचवीं या छटी कक्षा की अर्ध-वार्षिक परीक्षा में वह बालक गणित का परचा देकर आया था। उस व्यक्ति को, आठवीं कक्षा के एक छात्र से पूछने पर, उत्तर मिला कि "इसका तो एक भी सवाल

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी बालक का कोई अपराध न होने पर भी 'सुधारने' की त्रुटिपूर्ण धारणा के कारण, कोई औचित्य न होने पर भी निर्दयता से मार-पीट करने लगते हैं ।

ठीक नहीं है ।'' सुनने की देरी थी कि उस विवेकहीन व्यक्ति ने १०-११ वर्ष के बालक को लाठियों, लात-घूंसों से मारते-मारते अधमरा कर दिया और ऊपर से गाली-गलौच दी सो अलग । बाद में परीक्षा अंक-तालिका से पता चला कि उस बालक ने ७२ प्रतिशत (डिक्टिंक्शन से केवल ३ अंक कम) अंक प्राप्त किये थे । यह जानकर भी उस व्यक्ति को तनिक भी पश्चाताप नहीं हुआ । इस कांड से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह व्यक्ति कितना अन्यायी, अत्याचारी और विश्वासघाती था । वह बालक, जो ७५ वर्ष पार कर चुका है, अभी तक अपने ऊपर किये गये अन्यायों और अत्याचारों को भूला नहीं है ।

एक छोटी-सी घटना है । पांच-छह दशक पहले सरकारी कार्यालयों में 'सुपरिंटेंडेंट' एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी हुआ करता था । 'बड़े बाबू' के नाम से जाना जाता था । कार्यालय में उसका दबदबा छाया रहता था । बड़े बाबू का एक निकट संबंधी एक तकनीकी संस्थान में प्रशिक्षण ले रहा था । एक दिन दसवीं कक्षा पास बड़े बाबू ने, एक विशेषज्ञ की भांति, उसकी कार्य तथा शिक्षण संबंधी गतिविधियों में कई त्रुटियां बतायीं । उसका उत्साह मंद पड़ गया । उस मात्र अठारह वर्ष के युवा के काम की यदि वह सराहना करते तो उसका चित्त प्रसन्न हो जाता । वह अधिक मनोयोग से काम में जुट जाता ।

सामान्य जन के स्वभाव में 'जैसे को तैसा' का भाव विद्यमान रहता है । यदि किसी के मुंह से कोई कटु बात निकल पड़ी तो हम तुरंत कटुतर वाक्य से उसका प्रतिकार करते हैं । प्रश्नकर्त्ता को तुरंत उत्तर देने की प्रवृत्ति हम में विद्यमान रहती है । उस समय जैसी भी मनःस्थिति होती है, उसी प्रकार का उत्तर मुंह से निकल पड़ता है जो सामान्यतया स्नेहहीन होता है । जिससे सौहार्द की अपेक्षा कटुता ही उत्पन्न होती है । अतएव क्षणभर विचार कर उत्तर देना श्रेयस्कर है । किंतु, ऐसा कोई विरला ही कर पाता है ।

एक कार्यालय में एक कर्मचारी को उस मास की अंतिम तिथि को सेवानिवृत्त होना था । उसके पास कोई काम नहीं था । वह श्रीमद्भागवद्गीता की एक पुस्तक सामने रखकर पढ़ने का अभिनय कर रहा था । अचानक एक कर्मचारी, जो उससे केवल एक पद नीचे था, आया और उसने पूछा ''आप क्या अध्ययन कर रहे हैं ।'' तत्काल उत्तर मिला, ''आपसे मतलब, कुछ भी पढ़ रहा हूं ।'' इस तुच्छ कांड से कटुता उत्पन्न हो सकती है ।

एक साहब ने बस द्वारा यात्रा करने के लिए टिकट ले लिया । समय-सारणी के अनुसार गाड़ी आने में देर थी । एक ग्रामीण यात्री ने कहा, ''बाबूजी, इन गाड़ियों का कोई समय नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, कभी भी आ सकती है ? आप बैठकर प्रतीक्षा कर लें," उस कोट-पेंटधारी बाबूजी को ग्रामीण की बात बुरी लगी और बिना कुछ कहे चहल-कदमी करने लगे । घूमते-घूमते वह कुछ दूर निकल गये । उन्हें गाड़ी का ध्यान नहीं रहा । लौटकर आने पर देखा कि गाड़ी निकल चुकी थी और फाटक पार कर रही थी । अचानक ग्रामीण ने देख लिया और चालक से कह कर गाड़ी रुकवा दी । बाबू साहब दौड़कर गाड़ी में चढ़ गये । चालक ने कहा "यदि यह सज्जन गाड़ी रोकने को नहीं कहते तो आपको अगली गाड़ी की प्रतीक्षा करनी पड़ती, टिकट के पैसे बरबाद होते सो अलग ।"

भगवद्पाद शंकर शिष्यों को उपदेश देते हुए तितिक्षा का मर्म बताते हैं—

सहनं सर्व दुःखानामप्रतिकार पूर्वकम् ।
चिन्ता विलाप रहितं सा तितिक्षा निगद्यते ॥

(—विवेक चूड़ामणि)

(अर्थात् सभी प्रकार के कष्टों को शांतिपूर्वक सहन करना, बदले की भावना का सर्वथा त्याग करना, चिंता, विलाप, रोना-कलपना, दूर हटाना अर्थात् सहनशीलता और क्षमा (की पराकाष्ठा) तितिक्षा कहलाती है ।)

पुण्यश्लोक शंकर ने एक ही श्लोक में गागर में सागर की भांति तितिक्षा का मर्म समा और समझा दिया है । तितिक्षा का क्षेत्र असीम है । उसमें किसी प्रकार की संकीर्णता के लिए स्थान नहीं है । इसमें धर्म के दसों लक्षण—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शोच, इंद्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध—समाये हुए हैं । यह मानव को संत बना देती है जिस पद में बैर-भाव के लिए तनिक भी स्थान नहीं होता । तितिक्षा के अंकुर प्रत्येक व्यक्ति में होते हैं, आवश्यकता है उन्हें सींचकर बढ़ाने की । इसी में जगत का कल्याण है । पुराणों का कथन है—

"सर्वलोक हितैषित्वं मंगलं प्रियवादिता ।
अनायासो मनोहर्षस्तितिक्षा नातिमानिता ।
सामान्यं सर्ववर्णानां मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥
(नारद पुराण)

(अर्थात् सबके हित और मंगल साधना में लगे रहना, प्रिय वचन बोलना, स्वाभाविक रूप से मन में हर्ष होना, तितिक्षा, अभियान से दूर रहना, ऐसा मुनियों ने सर्व सामान्य का आचार बताया है ।)

रावण की मृत्यु के पश्चात् विभीषण ने उसके पार्थिव शरीर का शास्त्रीय विधि से दाह संस्कार करने में अनिच्छा प्रकट की थी । उस काल में रावण—जैसा भयंकर शत्रु रामजी का कोई नहीं था । किंतु उसकी मृत्यु के बाद मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम ने उसके प्रति समस्त बैर-भाव त्याग दिया था । उन्होंने विभीषण को समझाते हुए कहा था—*"मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं न प्रयोजनम् ।*
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ॥"

(अर्थात् बैर मरने तक ही रहता है । मरने के बाद उसका अंत हो जाता है । अब हमारा प्रयोजन भी सिद्ध हो चुका है । अतः इस समय जैसे यह तुम्हारा भाई है, वैसे ही मेरा भी है । इसका दाह-संस्कार करो ।) महापुरुषों के व्यवहार का अनुकरण सदैव हितकारी है । यही सच्चा मार्ग है, सच्चा धर्म है ।

तितिक्षा के मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहने के लिए सदाचार का ही अवलंबन लेना श्रेष्ठ है । सदाचरण से मन, बुद्धि और शरीर स्वस्थ और शक्तिमान बनते हैं । शरीर भले ही मल्ल—जैसा बलशाली न हो किंतु सभी प्रकार

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक महात्मा पानी में बहते हुए बिच्छू को बचाने का प्रयास कर रहे थे। बिच्छू उन्हें बार-बार डंक मारता पर महात्मा जी ने अपना प्रयास जारी रखा। एक दृष्टा ने महात्माजी से कारण पूछा तो उत्तर मिला कि काटना बिच्छू का धर्म है और बचाने का प्रयत्न करना मानव धर्म है। सहनशीलता और परोपकार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

के संकटों से जूझने में समर्थ होता है। समाज में कथन प्रसिद्ध है कि क्षमा शक्तिमान पुरुष को ही शोभा देती है। निर्बल को नहीं। वास्तव में बलवान वही है जिसके बुद्धि और मन अपने उदात्त गुणों से शक्ति संपन्न हों।

एक कथा है कि एक महात्मा पानी में बहते हुए बिच्छू को बचाने का प्रयास कर रहे थे। बिच्छू उन्हें बार-बार डंक मारता पर महात्माजी ने अपना प्रयास जारी रखा। एक दृष्टा ने महात्माजी से कारण पूछा तो उत्तर मिला कि काटना बिच्छू का धर्म है और बचाने का प्रयत्न करना मानव धर्म है। सहनशीलता और परोपकार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

यह बारंबार देखा गया है कि मनुष्य एक बार वृथा क्रोध कर फिर क्रोध न करने का संकल्प करता है। किंतु वह हर बार परीक्षा में असफल ही रहता है। वह क्रोध कर ही बैठता है। फिर मन को समझाने का प्रयत्न करता है। जब तक काम और क्रोध पर विजय नहीं पायी जाए तब तक सभी प्रकार के अनुष्ठान व्यर्थ ही सिद्ध होते हैं। "न जातु कामः कामानां उपभोगेन शाम्यति। हविषा कृत्स्नवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥" (कामनाओं के उपभोग से कामनाएं शांत नहीं होती किंतु और अधिक बढ़ती जाती है जैसे अग्नि, घी पड़ने पर।)

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया— "*असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।*" (हे कुंती पुत्र, निस्संदेह मन को वश में करना अत्यंत कठिन है। किंतु लगातार अभ्यास और वैराग्य के द्वारा यह संभव हो सकता है।)

सत्यान्वेषण का मार्ग अति ही दुर्गम है। इस मार्ग को प्रशस्त बनाने में भोजन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। शास्त्रों का वचन है—'हितभुक्, मितभुक्' अर्थात् हितकारी भोजन, वह भी अल्पमात्रा में, सेवन करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि भोजन शरीर और मन को स्वस्थ बनाये रखने के लिए ही होता है। सात्विक भोजन से मन और वाणी शुद्धता की ओर बढ़ते जाते हैं। एक बार ऐसा दृढ़ भाव उत्पन्न हो जाए कि क्रोध, लोभादि दुर्गुणों का प्रयत्नपूर्वक, अभ्यास के द्वारा, शनैः शनैः त्याग देने से "आसमान गिरनेवाला नहीं है, 'छत टूटनेवाली नहीं है', तो मनुष्य सुख और संतोष का अनुभव करेगा।

जब तक आधारशिला पक्की न बनी हो तब तक भवन की स्थिरता के विषय में शंका ही बनी रहती है। जब बालपन से ही भले संस्कार पड़े हों तब वे आगे चलकर दृढ़ होकर सिद्धांत का रूप धारण कर लेते हैं। मानव-जीवन उन्हीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आधार पर सुव्यवस्थित रूप से चलती है। आजकल स्कूलों में, विशेषकर तथाकथित इंग्लिश-माध्यम के पब्लिक स्कूलों में, प्रारंभिक शिक्षा मात्र अक्षर ज्ञान, कक्षा के कुछ काम, होड़ की भावना, मम्मी-डैडी, अंकल-आंटी, ढिशुम-ढिशुम संस्कृति ही रह गयी है। सदाचार की शिक्षा का नितांत अभाव ही दिखायी पड़ता है। जब तक पश्चिमी ढंग की शिक्षा पब्लिक स्कूलों में बनी रहेगी तब तक मानव-जीवन का वास्तविक उद्देश्य समझना दुरूह ही रहेगा। दूरदर्शन में फिल्मों के कथानक अस्वाभाविक रूप से दर्शाये जाते हैं जिनमें मार-काट, यौन भावनाओं का उत्तेजक प्रदर्शन, बदले की सशक्त भावना आदि नवयुवक-युवतियों पर अत्यंत विनाशकारी प्रभाव डालते हैं। बचपन में गुरुजन बार-बार उपदेश देते थे 'मात्वर्यताम्' अर्थात् बिना विचारे तुरंत काम में नहीं लग जाना चाहिए, जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। लोगों का यह कथन सत्य है "जल्दबाजी शैतान का काम है"। तितिक्षा के अभ्यासी का स्वभाव सोच-विचार का काम आरंभ करने का हो जाता है। एक कथा है। एक ऋषिकुमार स्वभाववश, दूसरे कुमारों से सर्वथा भिन्न था। वह बहुत गहन सोच-विचार करने के पश्चात् ही एक निश्चय पर पहुंचकर आदेश का पालन करता था या सोच-विचार में ही डूबा रहता था। इस कारण उसका प्रचलित नाम 'चिरकारी' पड़ गया, ऋषि स्वभाव से ही क्रोधी थे। एक बार अपनी पत्नी का तनिक-सा अनाचार देखकर अतिक्रुद्ध हो पुत्र 'चिरकारी' को पत्नी के वध का आदेश देकर आश्रम से बाहर चले गये। चिरकारी विचारों में डूब गया। किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सका। इधर, क्रोध उतर जाने पर ऋषि को पश्चात्ताप होने लगा कि बिना विशेष कारण के उतना कठोर आदेश देना कदापि उचित नहीं था। वे मन-ही-मन मनाते आ रहे थे कि "बेटा चिरकारी अपना नाम सार्थक करे।" आश्रम में प्रवेश करते ही चिरकारी उनके चरणों में गिर पड़ा, सामने ही ऋषि पत्नी खड़ी थी। ऋषि गद्गद् हो गये। प्रसिद्ध उक्ति है— ***"बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय, काम बिगारो आपनो जग में होत हंसाय।"*** देखा गया है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रीजनों में सोच-समझकर शांति से काम करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। पुरुष व्यवधान पड़ने पर झुंझला उठता है। स्त्री तब भी शांति से समय की प्रतीक्षा करती रहती है।

तितिक्षा का मनोयोग से सतत् अभ्यास करने पर मानव अपने शील-स्वभाव के द्वारा सबसे प्रेम का व्यवहार करता है। धीरे-धीरे लोग उसे संत की कोटि में गिनने लगते हैं। वह सदैव सबका हित करने में लगे रहते हैं। एक दीप से अनेक दीप जलते हैं। एक व्यक्ति जब सौहार्द फैलाता है तो उसके अनुयायी उत्पन्न होते रहते हैं। कटुता मिटाने की दिशा में काम करते रहते हैं। समय आने पर ऐसा व्यक्ति सताये हुए लोगों का ऐसा आश्रय बन जाता है जैसे प्रचंड धूप से घनी छायावाला विशाल वृक्ष यात्रियों आदि को शांति प्रदान करता है। पीड़ित लोग ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आकर निर्भयता की सांस लेते हैं जैसे स्वतंत्रता संग्राम में तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के द्वारा दमन-चक्र चलाये जाने पर लोग महात्मा गांधी की छत्र-छाया में निर्भयता अनुभव करते थे और सत्याग्रह के

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए निडर हो आगे बढ़ते थे ।

तितिक्षा का आरंभ पहले अपने ही घर से करना चाहिए । अहंकार को दबाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए और निष्ठापूर्वक पुरुषार्थ में जुटे रहकर अपना कर्त्तव्य कर्म करते हुए सहनशीलता और समभाव बरतना ही श्रेयस्कर है। मानव को सुख-दुःख के द्वंद्व प्रभावित नहीं कर सकेंगे ।

संसार के सभी धर्मों में तितिक्षा-क्षमा और सहनशीलता की प्रशंसा की गयी है, भारतीय वाङ्मय तो तितिक्षा के गुणगान से ओतप्रोत है। एक प्रसिद्ध दोहा है— *''क्षमा बड़ेन को चाहिए छोटन को उत्पात । कहा बिगरि गयो प्रभु को जो भृगु मारी लात ।''* तितिक्षा का प्रयत्नपूर्वक पालन करना अत्यंत महत्तवपूर्ण है ।

तितिक्षा सभी प्रकार के सांसारिक दुःख द्वंद्वों को सहने में अमूल्य सहायक है । इसके द्वारा जीवन के उच्चादर्शों—'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' तक पहुंचने का मार्ग स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, तितिक्षा उत्कृष्ट तप है, उत्कृष्ट दैवी गुण है । इसे सयत्न धारण करने से सभी प्रकार के मानसिक तनाव समाप्त हो जाते हैं । मनुष्य सम्राट अशोक की भांति 'प्रिय-दर्शी' और ''देवानाम् प्रिय रूप से विख्यात हो जाता है । यह समस्त मानसिक-तनाव संबंधी रोगों की रामबाण औषधि है, वास्तव में देखा जाए तो 'तितिक्षा' अहिंसा आदि सभी सद्गुणों की जननी है ।

महाकवि भवभूति ने 'उत्तर-रामचरित' में कहा है :—

''एको रसः करूण एवं निमित्त भेदा—
भिन्नः पृथक् प्रथगिवा श्रयते विवर्तान् ।
आवर्त बुदबुद तरगडमयान् विकारान्
अम्भो यथा सजिजमेव तु तत्समस्तम् ।।

(जैसे एक ही जल, भंवर, बबूला, तरंगरूपी विकारों को प्राप्त होता रहता है, वास्तव में वह पानी ही है, ऐसे ही एक ही करुण रस निमित्तों के भेद से भिन्न-भिन्न होता हुआ पृथक-पृथक परिवर्तनों को प्राप्त हो जाता हैं । (ठीक यही गुणगान तितिक्षा के संबंध में विद्यमान है जो पृथक-पृथक सद्गुण रूप परिवर्तनों को प्राप्त होता है ।

—ई-३१९, पूर्वाशा,
आनंद लोक,
मयूर विहार-एक, दिल्ली-११००९१

नोक झोंक.....

-शैबू

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य

आफिसर (एक सैनिक से)—"क्या तुम्हें खाने में मिट्टी होने की शिकायत है ?"

सैनिक—"यस सर !"

आफिसर—"तुम सेना में मातृभूमि की रक्षा करने के लिए आये हो या खाने में मिट्टी की शिकायत करने ?"

सैनिक (विनम्र स्वर में)—"जी ! मातृभूमि की रक्षा करने के लिए ही आया हूं, पर उसे खाने के लिए नहीं ।"

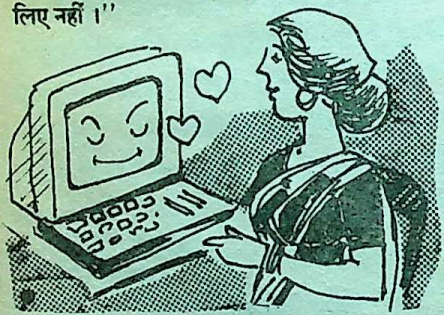

कंप्यूटर आपरेटर अलका ने प्रेमी की पूरी जानकारी कंप्यूटर में भरकर पूछा—"मैं उससे शादी करना चाहती हूं, मुझे क्या करना चाहिए ?"

कंप्यूटर ने सलाह दी—"तुम उसके पिता से शिकायत कर दो ।" अलका ने ऐसा ही किया तो प्रेमी ने गुस्से में आकर अलका से संबंध तोड़ लिये । अलका ने गुस्से से कंप्यूटर से पुछा—"तुमने मुझे गलत सलाह देकर हमारे संबंध क्यों खतम करवाये ?" अचानक कंप्यूटर की सभी लाल बत्तियां जल उठीं और उसने मधुर स्वर में कहा—"क्योंकि...क्योंकि अलका मैं तुमसे प्यार करता हूं... ।"

एक प्रसन्न अभिनेता की शादी होनेवाली थी । उन्होंने अपने पी.ए. को बुलाकर कहा—"मेरे एक महीने के कार्यक्रम रद्द कर दो ।"

दूसरे दिन उन्होंने अपने पी.ए. को बुलाकर पूछा—"कार्यक्रम रद्द करने में कोई परेशानी तो नहीं हुई ?"

पी.ए.—"कोई खास तो नहीं । बस एक नवयुवती एक घंटे तक समझाती रही कि परसों उससे आपका विवाह होनेवाला है ।"

नरेन्द्र सिंघवी

प्रेमिका, "जब तक तुम कोई साहसिक काम नहीं करोगे, मैं तुमसे विवाह नहीं करूंगी ।"

प्रेमी, "महंगाई के इस जमाने में तुम्हारे सामने विवाह का प्रस्ताव रखना ही क्या कम साहसिक काम नहीं है ?"

"आपका बेटा दांतों का डॉक्टर कैसे बन गया ? आप तो कहते थे कि वह आंखों का डॉक्टर बनेगा ।"

"उसने सोचा कि दांतों की डॉक्टरी में अधिक कमाई है क्योंकि दांत ३२ होते हैं और आंख सिर्फ दो ।"

मैनेजर, "मुझे एक तगड़े और होशियार चपरासी की जरूरत है ।" उम्मीदवार, "मेरी योग्यता का तो आप इसी से अंदाजा लगा सकते हैं कि दस अन्य उम्मीदवारों को पीटकर एवं दरबान को 'मैं अपने को आपका भतीजा' कहकर यहां तक आया हूं ।"

—पुष्पेश कुमार पुष्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग

सरकार

विश्व-बैंक
और अमरीका की मारी
इंटरनेशनल
भिखारी ।

नेता

उद्घाटन, भाषण, चाटन
एवं आश्वासन की—
ऑटोमैटिक मशीन
श्वेत-केंचुल नागों की—
बीन ।

—संतोष कुमार दीक्षित

प्रेरणा

सेक्रेटरी से
शादी के बाद
अफसर उदास है ।
पहले 'बॉस' था,
अब 'दास' है ।

मां की प्रेरणा से
हर विद्या में
'भाग' लेने की
इच्छा जागी थी ।

अंत में...
एक नवयुवक के
साथ भागी थी ।

—पीयूष 'पाचक'

मजबूत कंधा

जिनका लक्ष्य मात्र धंधा है,
वे राजनीति में रहें,
या शिक्षा के मंदिरों में,
नैतिकता की अर्थी लिए,
हमेशा तत्पर उनका मजबूत कंधा है ।

पर उपदेश

उसका एक दैनंदिन कार्यक्रम होता है,
भाषण देने से पूर्व और बाद में, खूब सोता है ।
यहां तक की मंच पर भी, अपने भाषण के
अलावा,
खूब खर्राटे लेता है ।
सबको जागते रहने का उपदेश देता है,
लोग कहते देश का वह बहुत बड़ा नेता है ।

—हरि जोशी

अफसर

फर्नीचर की कमी को पूरा,
कर देता है दफ़र ।
कौन है जो मुझको रोकेगा,
मैं हूं एक अफसर ।

बुनाई

जाड़ा आते ही शुरू हुई,
स्कूलों में स्वेटर बुनाई ।
देखो-तो ऐसा लगता है,
इसी की हो रही पढ़ाई ।

—मो. मासूम अली अनवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधविश्वास को जन्म देती बिल्ली

● रामकिशोर पवांर

विज्ञान के बढ़ते प्रभावों के बाद विश्व में मौजूद अंधविश्वास जिसकी जड़ें काफी अंदर तक गड़ी हुई है, को हम खोजकर निकाल नहीं सके हैं। भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के कई विकसित देश बिल्ली को लेकर जन्मे अंधविश्वास को दूर नहीं कर सके हैं। आज बिल्ली विश्व की सर्वाधिक रहस्यमय प्रापी हैं। आम घरेलू पशुओं की तरह बिल्ली की गतिविधियां खुलेआम न होकर गोपनीय और रहस्यमय होती हैं।

फिल्मी दुनिया के रामसे ब्रदर्स की सभी डरावनी फिल्मों में बिल्ली का होना इस अंधविश्वास को जिंदा रखने का काम करता है। रात के अंधेरे में सुनसान रास्तों पर चमकती इसकी आंखें लोगों के डर का कारण बन जाती है। बिल्ली को लेकर कई प्रकार के अंधविश्वास को जन्म देती किस्से-कहानियां इस समय विश्वभर में प्रचलित हैं। बिल्ली की स्मृति में मंदिर बने हैं।

आज से लगभग तीन-चार साल पहले मिस्र में बिल्ली की पूजा करके उसे मान-सम्मान दिया जाता था। प्राचीन मिस्र की सभ्यता में बिल्ली को देवी का स्थान मिलने का इतिहास में उल्लेख मिलता है।

राज-दरबार में सम्मान

अफरीका में बिल्ली का मूल जन्म स्थान बनाया जाता है। यहां से चली बिल्ली विश्व के हर कोने में पायी जाती है। सदियों से मनुष्य के साथ चली आ रही मांसाहारी प्राणी बिल्ली को 'शेर' की मौसी कहा जाता है। बिल्ली को लेकर हिंदी में कई कहावतें एवं मुहावरे बोल-चाल की भाषा में प्रयोग में लाये जाते हैं। जापान में बिल्ली दक्षिण कोरिया से लायी गयी। दसवीं सदी में जापान आयी बिल्ली को

बिल्ली को लेकर कई प्रकार के अंधविश्वास को जन्म देती किस्से-कहानियां इस समय विश्वभर में प्रचलित हैं। बिल्ली की स्मृति में मंदिर बने हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

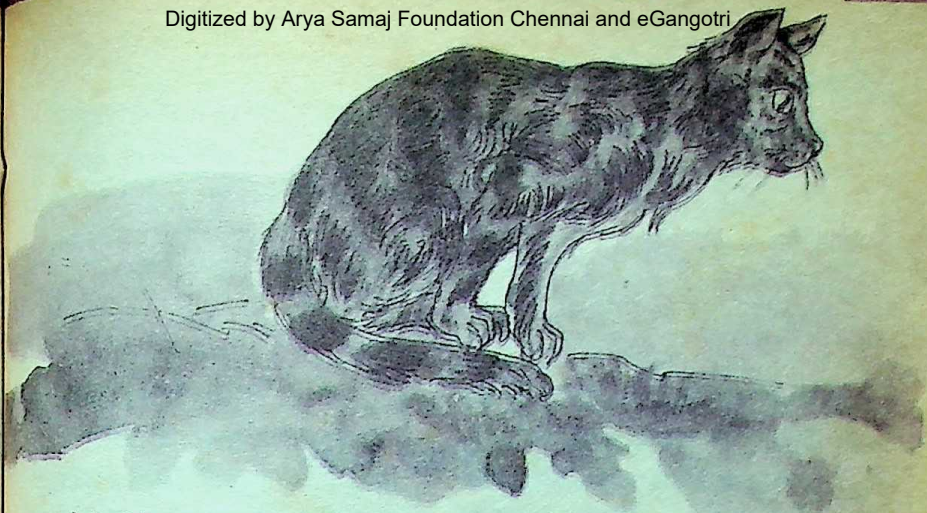

लाने के पीछे उस खाद्य सामग्री की रक्षा करना था जिसे चूहे खा जाते थे । बाद में इन सभी बिल्लियों को राज-दरबार में सम्मान जनक स्थान मिला ।

बिल्ली चुड़ैल के रूप में

ईसाई धर्म में बिल्ली को चुड़ैल की सहयोगी मानकर उसे नफरत से देखा जाता है । ईसाई धर्म के अनुयायी लोग बिल्ली को चुड़ैल के रूप में प्रगट होना मानते आ रहे हैं । हिंदू धर्म में बिल्ली का मरना अशुभ मानते हैं । हिंदू धर्म अनुयायी के हाथों से यदि बिल्ली की मौत हो जाती है तो उसकी मुक्ति सोने की बिल्ली बनाकर दान करने से होती है । भारत में बिल्ली का रोना और रास्ता काटना अशुभ माना जाता है । फ्रांस के लोग बिल्ली को जादूगरनी मानकर मार डालते हैं ।

भारत का उत्तर प्रदेश राज्य इस समय एक रहस्यमय बिल्ली के आनंक से ग्रसित है । राज्य के आगरा जिले में इस रहस्यमय बिल्ली के हमले से कई लोग घायल हो चुके हैं । पुलिस प्रशासन द्वारा हमलावर बिल्ली से निपटने के लिए नागरिकों के सहयोग से रात्रि-गश्त की जा रही है । भारत सहित विश्व के कई देशों में काली बिल्ली को 'तांत्रिक' लोग साधकर उससे कई प्रकार के तथाकथित कार्य करवाते हैं । काली रात को काली बिल्ली रोंगटे खड़ा कर देती है । बिल्ली से दिल्ली तक की काल्पनिक अंधविश्वास से जुड़ी कथाएं आज भी जहां-तहां पर सुनने को मिलती हैं ।

बिल्ली मांसाहारी एवं शाकाहारी दोनों प्रकार के खाद्य पदार्थों को चट कर जाती है । दूध का बिल्ली से जो रिश्ता है वही रिश्ता चूहे के साथ भी है ।

दूध और चूहे को देखकर झपट पड़ती बिल्ली घरेलू पारिवारिक सदस्य रही है । आज भी कई परिवारों में सदस्य के रूप में रह रही है । बिल्ली को कई लोग शौकिया रूप से पालते हैं ।

—आजाद नगर, पाथाखेड़ा
जिला— बैतूल (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निज्वाल पं. पारखनाथ त्रिपाठी

जिन्हें राहुलजी ने बड़ा भाई बनाया था

● राय प्रभाकर प्रसाद

कभी झुके नहीं। कभी टूटे भी नहीं। वे अग्निज्वाल थे। बुझ गये। वे शंखनाद थे। चुप हो गये। वे एक ज्योतिपिंड थे। आकाश में एक प्रकाश-रेख बनकर मिट गये। मात्र सैंतालिस वर्ष की अवस्था में ही चल बसे। पं. पारसनाथ त्रिपाठी थे वे।

बिहार के भोजपुर (तब के शाहाबाद) जिले का एक गांव शाहपुरपट्टी बक्सर-आरा मार्ग पर है। वहीं पंडित शिवबालक त्रिपाठी के घर १८९० ई. में भादों अमावस के दिन तीसरे पुत्र-रत्न का जन्म हुआ। नाम रखा गया पारस। एक पागल हाथी से आक्रांत शिवबालकजी उन्हें बचपन में ही अनाथ बनाकर चले गये। लेकिन पारस घबराये नहीं। वे पारसनाथ हो गये।

उनकी सातवें क्लास तक की शिक्षा शाहपुरपट्टी में हुई। उसके बाद संस्कृत पढ़ने के लिए काशी गये। बाद में पटना जाकर महामहोपाध्याय पं. रामावतार शर्मा के संपर्क में आये। १९१५ ई. में प्रथम श्रेणी में काव्यतीर्थ की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

पत्रकारिता में

काशी में जयशंकर प्रसाद के मामा अम्बिका प्रसाद गुप्त के संचालन में प्रकाशित 'इंदु' में त्रिपाठीजी की रचनाएं प्रकाशित होने लगीं। 'चैतन्य चंद्रिका', 'हितकारिणी' तथा 'लक्ष्मी' में भी वे छपने लगे। गुप्तजी ने कहा, तो 'इंदु' के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। पटना आये, तो रामकिशोर सिंह के साथ 'बिहार बंधु' के संपादकीय विभाग में आ गये।

'बिहार बंधु' साप्ताहिक १८९२ ई. से ही प्रकाशित हो रहा था। बाद में वे पटना से काशी प्रसाद जायसवाल के संपादन तथा हथुआ राज के स्वामित्व में प्रकाशित साप्ताहिक 'पाटलिपुत्र' में क्लर्क नियुक्त हुए, लेकिन उनके प्रूफ-रीडर का काम लिया जाने लगा। अंग्रेजी राज का दबाव हथुआ राज नहीं सह सका और जायसवालजी ने त्याग-पत्र दे दिया। उसके बाद भी त्रिपाठीजी उस पत्र में बने रहे और सोना सिंह चौधरी के संपादन में १९१९ ई. में प्रमुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी में जयशंकर प्रसाद के मामा अम्बिका प्रसाद गुप्त के संचालन में प्रकाशित 'इंदु' में त्रिपाठीजी की रचनाएं प्रकाशित होने लगीं। 'चैतन्य चंद्रिका', 'हितकारिणी' तथा 'लक्ष्मी' में भी वे छपने लगे। गुप्तजी ने कहा, तो 'इंदु' के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। पटना आये, तो रामकिशोर सिंह के साथ 'बिहार बंधु' के संपादकीय विभाग में आ गये।

सहायक संपादक भी बन गये।

गांधी के साथ चम्पारण में

इसी बीच निलहों के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए जारी जंग को आगे बढ़ाने के लिए राजकुमार शुक्ल अप्रैल १९१७ ई. में महात्मा गांधी को चम्पारण बुला लाये थे। जब महात्माजी ने रैयतों के कष्टों की जांच करने के लिए उनके बयान लिवाने शुरू किये, तो उस काम में उनकी मदद करने के लिए पारसनाथ त्रिपाठी भी चम्पारण पहुंच गये थे।

सरकार की वक्रदृष्टि के कारण हथुआ राज में हिम्मत नहीं रही कि वह 'पाटलिपुत्र' आगे चलाये और १९२१ ई. के पूर्वार्ध में यह पत्र बंद हो गया।

'देश' में प्रकाशित अग्रलेख के कारण जेल

कुछ दिनों तक त्रिपाठीजी गांव और शहर के बीच आवाजाही करते रहे। पटना से राजेन्द्र प्रसाद (बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति) ने अपने संपादन में प्रकाशित साप्ताहिक 'देश' में उन्हें सहायक संपादक के रूप में रख लिया।

अतिव्यस्त राजेन्द्र बाबू को इतनी फुरसत कहां कि वे संपादन का कार्य करते। त्रिपाठीजी ने स्वयं संपूर्ण भार संभालकर उन्हें चिंतामुक्त रखा। तभी चौरी-चौरा कांड हुआ, जिसमें कई पुलिसकर्मी जीवित जला दिये गये। उससे आहत होकर महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन बंद कर दिया। इसी अवसर पर 'देश' में त्रिपाठीजी का 'मुर्दे की विजय-यात्रा' नामक अग्रलेख प्रकाशित हुआ, जिसके कारण वे १९२३ ई. में दो वर्षों के लिए जेल में बंद कर दिये गये।

उनके जेल जीवन के बारे में महापंडित राहुल सांकृत्यायन (तब बाबा रामोदार दास) ने 'मेरी जीवन यात्रा' में लिखा है—

"अस्पताल से छूटने पर मुझे पहले नंबर में रखा गया। इस वक्त तक पंडित पारसनाथ त्रिपाठी, 'देश' के संपादक, दो साल की सजा भुगतने के लिए चले आये थे। वह हिंदी के दर्जनों ग्रंथों के लेखक और अनुवादक थे और अंगरेजी से अनभिज्ञ होना उन्हें खटकता था। उन्होंने अंगरेजी सीखने की इच्छा के साथ उसकी कष्टसाध्यता पर भय प्रकट किया। मैंने कहा— मैं आपको ऐसे ढंग से अंगरेजी पढ़ाऊंगा कि दो-तीन घंटा रोज देने पर आठ मास में आप साधारण अंगरेजी पुस्तकों को समझने लगेंगे। किंतु साथ ही पहले पहल शुद्ध लिखने, बोलने का ख्याल छोड़कर सिर्फ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ समझने की ओर ही आपको ध्यान देना होगा। शुद्ध बोलना, लिखना तो हमारे यहां के पंद्रह सत्रह वर्ष लगानेवाले अधिकांश एम. ए., बी. ए. लोगों को नहीं आता, तो आपको उसके लिए चिंतित होने की क्या आवश्यकता।''

हजारीबाग जेल के जेलर मिस्टर मीक ने अपनी लड़की की पढ़ी हुई बाल कहानियों को भेज दिया, और व्याकरण पर बिना इशारा किये मैं उन्हीं को पढ़ाता रहा। पढ़ने के बाद और प्रारंभ करने से पहले एक बार पाठ देख जाने की हिदायत थी। आठ महीना बीतते न बीतते त्रिपाठीजी ने दक्षिण अफरीका और रूसी-जापानी युद्ध के संबंध में 'टाइम्स' (लंदन) के विशेष संवाददाताओं की पुस्तकें जब समझकर समाप्त कर लीं, तो उन्हें भी रमसा बादशाह के संस्कृत काठिन्य की भांति अंगरेजी भाषा का काठिन्य, जहां तक पढ़ने, समझ लेने का संबंध है, असत्य मालूम होने लगा।

कवार-कार्तिक के महीने में पंडित पारसनाथ त्रिपाठी, लाल बाबू, हनुमान पंडित चारों जन मलेरिया से बीमार होकर अस्पताल गये। इन लोगों का बुखार अच्छा हो गया और हमें नीम डालकर परवल का सूप मिलने लगा।

''पंडित पारसनाथ त्रिपाठी को मैंने बड़ा भाई बनाया था। 'बाबा' को छोटा भाई बनाने के लिए वे तैयार थे। कहां वह पूजा-पाठ, बात-बात पर भगवती के नाम की दुहाई के आदी थे, और कहां मैं इन चीजों का कट्टर विरोधी। मैं खूब मीठी चुटकियां लेता, उनके भगतपन का परिहास उड़ाता, किंतु वह इसे कभी बुरा न मानते। बरसभर हम साथ रहे,

राहुल सांकृत्यायन

किंतु मुझे कोई याद नहीं, जब हम में कभी मुंह-फुलाव हुआ हो। उनके घर पर बड़े भाई की कोई संतान न थी, और छोटे भाई, (पारसनाथ) पर उनका असाधारण स्नेह था। मुलाकात का समय होने पर शाहपुरपट्टी से हजारीबाग जेल पहुंचते, साथ में अचार, मिठाई, और हफ्तेभर के लिए ठेकुआ, पकौड़ी और क्या-क्या लिवाये जाते। भाभी के हाथ की मीठी चीजें पारसनाथ के मीठे शब्दों के साथ और भी मीठी हो जाती थीं। हमें सिरके में डाली प्याज बड़ी अच्छी लगती थी और पारसनाथ पाव-पाव भर की दो शीशियों को बराबर इसके लिए फंसाये रहते। लिखने-पढ़ने के हमारे समय नियत थे, उसके बाद हमारा समय वार्ता और मनोविनोद में बीतता, वह अच्छी बात करनेवाले थे।'' जेल में ही थे कि पितृतुल्य अग्रज बदरीनारायण त्रिपाठी चल बसे। अन्य अग्रज केदारनाथ त्रिपाठी अविवाहित थे और पहले ही गुजर चुके थे। जेल से मुक्त होकर लौटे तो भाभी के स्नेहांचल में घर-गृहस्थी संभालने लगे।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बाद उन्होंने १९३१ में पांच माह तक लहेरियासराय (दरभंगा) से प्रकाशित मासिक 'बालक' और १९३३ ई. में छह माह तक कलकत्ता से प्रकाशित साप्ताहिक 'लोकमान्य' का संपादन किया । कलकत्ता उन्हें भाया नहीं, छोड़ देना पड़ा । करीब चार वर्षों बाद १९३७ ई. के अपने गृहनगर आरा से साप्ताहिक 'पाटलिपुत्र' का स्वयं संपादन प्रकाशन प्रारंभ कर दिया ।

चालीस पुस्तकों की रचना

त्रिपाठीजी संस्कृत के अतिरिक्त हिंदी तथा बंगला के अच्छे और अंगरेजी के कामचलाऊ जानकार थे । उन्होंने छोटी-बड़ी चालीस पुस्तकों की रचना की । उनमें से अधिकांश पुस्तकें बंगला से अनूदित थीं । उनकी पुस्तकों में पंचकन्या, रूप की लहरी, पाप की छाप, पश्चिम में प्रभास, काव्यकुंज, वृषवृक्ष, शील का षड्यंत्र, आशालता, शकुंतला, सीता बनवास तथा आदर्श माता हैं । किसी पुस्तक की प्रति उनके परिवार में उपलब्ध नहीं है । शायद किसी पुस्तकालय में हो । 'जालिया क्लाइव' नामक उनकी पुस्तक तो प्रकाशित होते ही जब्त कर ली गयी थी ।

सत्यमप्रियम ब्रूयात

त्रिपाठीजी इतने निर्भीक तथा उग्र स्वभाव के थे कि किसी को नहीं बख्शते थे । एक बार पटना के बी. एन. कॉलेज के एक निर्धन छात्र को छात्रवृत्ति दिलवाने के लिए उनका आवेदन-पत्र लेकर अनुशंसा लिखवाने राजेन्द्र बाबू के यहां गये । त्रिपाठीजी थे, तो राजेन्द्र बाबू को लिखना ही था, सो उन्होंने लिख दिया । लेकिन लिखकर कागज त्रिपाठीजी को देने लगे, तो पूछ बैठे कि यह छात्र किस जाति का है, ब्राह्मण ही है न ? यह सुनते ही त्रिपाठीजी का पारा चढ़ गया । उन्होंने अनुशंसा का कागज राजेन्द्र बाबू के सामने ही टुकड़े-टुकड़े कर डाला और कहा कि नहीं चाहिए ऐसी सिफारिश, जिसके लिए आप जैसे लोग भी जाति पूछते हैं ! उन्होंने बतला दिया कि यह छात्र राजेन्द्र बाबू की ही जाति का है ।

हृदयविदारक अंत

आरा में आयोजित बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के पंद्रहवें अधिवेशन के लिए अध्यक्ष पीर मुहम्मद मूनीस तथा मुख्य अतिथि 'आज' के संपादक बाबूराव विष्णु पराड़कर मनोनीत थे । कांग्रेस की पहली सरकार में वित्त मंत्री बने अनुग्रह नारायण सिंह को उसी अधिवेशन में शामिल करने के लिए जब त्रिपाठीजी उन्हें लेकर आ रहे थे कि कार दुर्घटनाग्रस्त हो गयी । अधिवेशन में पराड़करजी का भाषण हो रहा था तभी त्रिपाठीजी का निर्जीव शरीर अधिवेशन-स्थल के सामने आ गया । अधिवेशन में हाहाकार मच गया । हिंद और हिंदी को समर्पित वह अग्नि-ज्वाल २५ दिसम्बर, १९३७ ई. को बुझ गया ।

— बी-८, शांति विहार,
अम्बेडकर पथ, जवाहरलाल नेहरू मार्ग,
पटना-८०००१४

दराज उम्र हो ए जीनेवाले तेरी मगर
जो सिर्फ अपने लिए हो वो जिंदगी क्या है
—शफा ग्वालियरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगल सम्राट शाहजहां का राज सिंहासन – 'तख्तेताऊस'

● डॉ. परमानंद पांचाल

१७०७ ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात विशाल मुगल साम्राज्य का एक प्रकार से पतन आरंभ हो गया। उसके बाद कोई भी ऐसा शासक दिल्ली की गद्दी पर नहीं बैठा, जो इस विशाल साम्राज्य को छिन्न-भिन्न होने से बचा सकता और उसके वैभव की रक्षा कर सकता। आंतरिक कलह और फूट से ग्रस्त, इस ह्रासोन्मुख साम्राज्य को १७३९ ई. में नादिरशाह जैसे क्रूर और आततायी आक्रमणकारी के हाथों विनाश का मुंह देखना पड़ा। उसके एक हुकम से दिल्ली में जो कत्लेआम हुआ, उसे सुनकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दिल्ली के लाखों निरीह, निरपराध नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। नादिरशाह ने २२ मार्च, १७३९ को चांदनी चौक की सुनहरी मसजिद में बैठकर तलवार म्यान से बाहर निकाली और हुकम दिया, "जब तक मैं लवार म्यान में न रखूं दिल्ली में कत्लेआम जारी रहे।" फिर क्या था ! उसके सैनिक दिल्लीवालों पर बाज की तरह टूट पड़े। स्त्री, पुरुष, बूढ़े-बच्चे, पशु-पक्षी, जो भी मिला, कत्ल कर दिया गया। हर घर से खून की धारा बह निकली। चांदनी चौक, दरीबा, जामा मसजिद का आस-पड़ोस सभी आग में जल उठे। ९ घंटे तक हत्याकांड चलता रहा। यह एक लंबी कहानी है कि किस प्रकार यह रक्तपात बंद हो पाया और नादिरशाह को यहां से विदा किया गया। किंतु कहते हैं कि दिल्ली के पूरे एक लाख नागरिक इस हत्याकांड के शिकार हुए थे।

इस दिल दहलानेवाले नरसंहार के साथ-साथ ही नादिरशाह ने शाही खजाने को भी खाली कर दिया और तत्कालीन दिल्ली सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला असहाय होकर सब-कुछ देखता रहा। बादशाह से नादिरशाह ने लाखों रुपये तथा साढ़े तीन सौ वर्षों से संगृहीत शाही खजाने के जवाहरात लिए और इनसे भी बढ़कर मुगल साम्राज्य का वैभव 'कोहेनूर हीरा' और शाहजहां का बहुमूल्य सिंहासन 'तख्तेताऊस' भी उसके हाथ लगा।

'कोहेनूर' की भांति ही तख्तेताऊस भी शाहजहां की प्रसिद्ध निधियों में से एक था। कोहेनूर तो कट-छंटकर आज भी इंगलैंड की

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारानी के ताज की शोभा बढ़ा रहा है, किंतु अभागे 'तख्तेताऊस' का कहीं भी नामों-निशान नहीं रहा। आइये एक बार फिर, इसके स्वरूप पर विचार करें।

रत्नों के पारखी

मुगल बादशाहों में शाहजहां-जैसा रत्नों का पारखी और प्रेमी कोई दूसरा नहीं हुआ। प्रतिदिन उसके दरबार में देश-विदेश के जौहरी बहुमूल्य हीरे, माणिक, पन्ना, पुखराज आदि कीमती पत्थरों को लेकर उपस्थित हुआ करते थे। वह उन्हें आंखों से देखकर ही उनका मूल्यांकन करते तथा पसंद की चीजों को खरीदा करते थे। स्वभावतः बादशाह का रत्न-भंडार संसार के तत्कालीन सभी रत्न-भंडारों से सवाया था।

१६२८ ई. में औपचारिक रूप से सिंहासनारूढ़ होने के तुरंत बाद शाहजहां ने निश्चय किया कि वह एक ऐसे राज-सिंहासन का निर्माण कराकर अपने आप को गौरवान्वित करेगा, जो अन्य किसी भी बादशाह के सिंहासन से कहीं अधिक श्रेष्ठ एवं मूल्यवान हो। अप्राप्त रत्नों को भारी मात्रा में खरीदा गया और इस प्रकार राजकीय रत्नागार में भारी वृद्धि की गयी। इस समस्त संचित भंडार को श्रेष्ठ 'तख्तेताऊस' को अलंकृत करने में लगा दिया गया। यूरोप के दो प्रसिद्ध कारीगर— ऑस्टिन, जो बोरडों का रहनेवाला था, जेरेनिमों बेरोनियों, संयोगवश उन दिनों मुगल दरबार में ही थे। उनकी देखरेख में इसकी रूपरेखा तैयार की गयी और 'बेबदल' के निर्देशन में ७ वर्ष के ससत परिश्रम के बाद १६३४ ई. में यह सिंहासन बनकर तैयार हुआ।

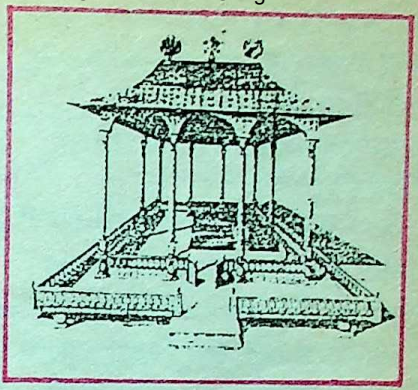

तख्त-ए-ताउत का दूसरा रूपांतरण

'तख्तेताऊस' का आकार-प्रकार

ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑव इंडिया के पृष्ठ ३७७ पर लिखा है कि, "इसका निर्माण वेबदल खां के निरीक्षण में ७ वर्षों (१६२८-३५) में पूर्ण हुआ। यह सिंहासन एक पलंग के आकार का था, जिसके पाये सोने के बने थे। इसकी चित्रित छत, पन्ने के बने बारह स्तंभों पर टिकी हुई थी और प्रत्येक स्तंभ पर दो-दो मोर थे, जिनके ऊपर रत्न जड़े हुए थे। प्रत्येक जोड़े के पक्षियों के बीच में एक वृक्ष था, जो हीरों, पन्नों और माणिक तथा मोतियों से सुसज्जित था। यह अलंकृत सिंहासन जिसकी लागत कम-से-कम एक करोड़ रुपये अर्थात् उस समय के साढ़े बारह लाख पौंड के बराबर होगी, १७३९ तक लालकिले में उस समय तक शोभायमान रहा, जब तक कि नादिरशाह उसे उठाकर ईरान नहीं ले गया।"

भूतपूर्व संसद सदस्य श्री आर.पी. नारायण सिंह के शब्दों में, "यह देखने में चारपायी के किस्म का था, छह फुट लंबा, सोने के चार खंबों पर स्थित था। तख्त का पिछला हिस्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हू-बहू मोर की पूंछ के रंग और आकार-प्रकार का था, जिसमें उच्च श्रेणी के हीरे, माणिक और नीलम लगे हुए थे । छत के छोटे-छोटे आधार-स्तंभ सोने के बने हुए और पन्ना तथा मोतियों से आच्छादित थे ।''

१७वीं सदी में 'जीन थेवनो' नाम का एक फ्रांसीसी यात्री भारत आया था । उसने लिखा है— ''कहते हैं इसमें २० करोड़ का तो सोना ही लगा है । पर कौन इसकी कीमत कूत सकता है ? इसका मूल्यांकन तो उन बहुमूल्य पत्थरों की कीमत जानने पर ही किया जा सकता है, जिनसे यह लदा हुआ है ।'' ''शर लॉक होम्स'' के रचयिता 'सर ऑर्थर कानन डायल' ने अपनी आत्मकथा में लिखा था— 'दिल्ली में मुगलों के महल में रखा मयूर के रूप में निर्मित यह अद्भुत सिंहासन पूरी तरह सोने का बना था और भांति-भांति के हीरों-रत्नों आदि से जुड़ा था । वह स्वर्णयुक्त पांववाले ऐसे छोटे पलंग-जैसा दिखायी देता था, जिसके पतले स्तंभों पर हीरे-पन्ने तथा रत्न बड़े कलात्मक ढंग से जड़े गये थे । सिंहासन के पृष्ठ भाग में दो मयूर प्रतिष्ठित थे, जिनके शरीर तथा फैले पंखों पर भी भांति-भांति के दमकते-चमकते रत्न, हीरे और पन्ने आदि शोभायमान थे ।''

इसी प्रकार अन्यान्य विदेशी यात्रियों ने इसके संबंध में लिखा है और इसकी कीमत के संबंध में तरह-तरह की अटकलबाजियां लगायी हैं, किंतु प्रसिद्ध यात्री ट्रेवनिर्यर ने जो इसका आंखों देखा विवरण प्रस्तुत किया है, वह अधिक प्रामाणिक है । उनके शब्दों में—

मुख्य सिंहासन

'मुख्य सिंहासन' जो पहले दरबार के मुख्य भाग में स्थित है, वह हमारे शिविर की चारपाइयों से आकार और प्रकार में मिला-जुलता है, अर्थात् यह लगभग ६ फुट लंबा और ४ फुट चौड़ा है । चारों पायों के ऊपर ४ सलाखें लगी हुई हैं जो २० से लेकर २५ इंच तक ऊंची हैं । ये सिंहासन के आधार को सहारा दिये हुए हैं । उन सलाखों के ऊपर बारह स्तंभ हैं, जो इसकी छतरी को तीन ओर से संभाले हुए हैं । पायों और सलाखों, दोनों ही के ऊपर, जो १८ इंच से बड़े हैं, सोने के पत्र चढ़े हुए हैं और उन पर अनेक हीरे, माणिक और पन्ने जड़े हुए हैं ।''

''मैंने इस सिंहासन में बड़े-बड़े माणिकों को गिना है, वे १०८ के लगभग हैं । इनमें सबसे छोटे का भार १०० कैरेट है, किंतु कुछ ऐसे भी हैं, जो २०० कैरेट या उससे बड़े दिखायी देते हैं ।

''छतरी का अंदर का भाग हीरों और मोतियों से ढका हुआ है, जिसके चारों ओर मोतियों की झालर लगी हुई है । छतरी के ऊपर, जो एक चौकोर गुंबद की शक्ल की है, एक मोर स्थित है जिसकी पूंछ ऊपर को उठी हुई है । पूंछ नील मणि तथा अन्य रंगों के पत्थरों से बनी है । मोर का शरीर सोने का है जिसमें बहुमूल्य पत्थर लगे हुए हैं । इसकी छाती के सामने एक बड़ा माणिक लगा है जिसके ऊपर भाले के आकार का एक लगभग ५० कैरेट भार का मोती है, जो कुछ-कुछ पीले जल-जैसा है ।''

ट्रेवर्नियर का कथन है कि तैमूरलंग के समय से संगृहीत धन से प्रारंभ और शाहजहां द्वारा पूर्ण इस सिंहासन का मूल्य १,०७००० लाख है । 'ट्रेवनिर्यर १६४० में भारत आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल दहलानेवाले नर-संहार के साथ-साथ ही नादिरशाह ने शाही खजाने को भी खाली कर दिया और तत्कालीन दिल्ली सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला असहाय होकर सब-कुछ देखता रहा। बादशाह से नादिरशाह से लाखों रुपये तथा साढ़े तीन सौ वर्षों से संग्रहीत जवाहरात लिए। कोहेनूर हीरा और बहुमूल्य सिंहासन तख्ते ताऊस भी हथिया लिया।

था)।

इस भव्य सिंहासन के पीछे एक छोटा सिंहासन है, जो स्नान कुंड के आकार का है। यह अंडाकार है, जिसकी ऊंचाई ७ फुट और चौड़ाई ५ फुट है। इसके बाहर हीरे और मोती जड़े हुए हैं, किंतु इसकी छतरी नहीं है।

लार्ड कर्जन ने जिस तख्त को तेहरान में देखा था, उसके विषय में वह लिखता है कि यह तख्त ताऊत बिलकुल भी भारतीज कृति नहीं है। इसका निर्माण इस्फहान के मुहम्मद हुसैन खां सदर ने अली शाह (१७९३-१८४७) के लिए उस समय कराया था, जब शाह ने एक इस्फहानी युवती के साथ विवाह किया था,... नादिरशाह के मूल "मयूर सिंहासन (अर्थात दो दो प्रतिकृतियों के अवशेष) को आगा मुहम्मद शाह (१७८५-९७) ने टूटी-फूटी और जीर्ण-शीर्ष अवस्था में प्राप्त किया था उसने इसे विजेता के रूप में अन्य जवाहिरात के साथ प्राप्त किया था। इसके बाद इसके प्राप्त अंशों से आधुनिक रूप और प्रकार का एक अन्य सिंहासन बनाया गया जो आज तेहरान के महल में स्थित है।... अतः इस कुरसी पर महान मुगलों में मयूर सिंहासन के अवशेष विद्यमान हैं।"

नादिरशाह को यह तख्त इतना अधिक पसंद था कि वह जहां कहीं भी जाता इसे अपने साथ ले जाता था। इसके बाद यह तख्त आगा मुहम्मद शाह के हाथों पड़ा, जिसने फारस की बादशाहत भी नादिरशाह के मरन पर हड़प ली थी।

१९१९ में यह अफवाह फैली थी कि मुगल सम्राटों का 'तख्त-ए-ताऊत' कुस्तुनतुनिया में है और तुर्कों से खरीदकर इसे शायद दिल्ली लाया जाएगा। लार्ड कर्जन ने— "दि टाइम्स" में १० सितंबर, १९१९ को लिखे गये अपने एक पत्र में उपर्युक्त तथ्य को दोहराया है। उसने कहा है कि नादिरशाह की मृत्यु से दो वर्ष पूर्व जब तुर्कों ने ईरान पर आक्रमण किया तो उन्हें भारी पराजय का मुंह देखना पड़ा और यह विजयोपहार उनके हाथ में न आ सका।

तख्ते ताऊस समुद्र में

कुछ लोगों का अनुमान है कि नादिरशाह के हाथों असली तख्ते ताऊत नहीं लग सका था। जिस तख्त को नादिरशाह नहीं लूट सका उसे लूटने के बाद में अंगरेजों ने सफलता प्राप्त की, किंतु दुर्भाग्य से वह तख्ते ताऊस इंगलैंड तक भी नहीं पहुंच पाया और समुद्र में ही गायब हो गया। इस संबंध में एक बड़ी रोचक कथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचलित है । १८वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह सिंहासन अंगरेजों के हाथ लगा । मद्रास लाया गया और वहां से "ग्रौस वेनर" नामक एक विशाल जलयान से जून, १७८२ में इंगलैंड के लिए रवाना किया गया । उसके कप्तान के अनुसार उस जहाज पर ३००,००० पौंड मूल्य के कीमती हीरे, जवाहिरात, जिनमें विश्वविख्यात तख्ते ताऊत भी शामिल था, इंगलैंड भेजे जा रहे थे । किंतु दुर्भाग्यवश जहाज पूर्वी अमरीका के आस-पास एक घोर तूफान के चंगुल में जा फंसा और एक चट्टान से टकराकर ध्वस्त हो गया । कुछ कहते हैं कि जहाज जल समाधि को प्राप्त हुआ, और साथ ही तख्ते-ताऊस भी । कुछ का मानना है कि जहाज से जो यात्री तट पर आ सके, उन्हें वहां रहनेवाले हब्सियों ने लूटा । इसी बहुगूल्य रत्न और हीरे तथा तख्ते ताऊस के जवाहिरात भी उनके हाथ लगे और इस अपार धनराशि को उन्होंने एक गढ्डे में दबा दिया । दक्षिण अफरीका के प्रसिद्ध अन्वेषक इतिहासकार जार्ज मैक्थील ने १८२५ में यह अनुमान प्रस्तुत किया कि 'ग्रौस वेनर' का खजाना उम्जीमुबु नदी से कुछ किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित एक गढ्डे में छिपा है । किंतु यह क्षेत्र विषैले नागों का क्षेत्र था । इसलिए किसी ने वहां जाकर इसे खोजने का प्रयास ही नहीं किया ।

इसे खोज निकालने के अनेकबार प्रयत्न किए गये किंतु कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई । १९२२ में यह तख्त फिर चर्चा का विषय बना और एक नई 'ग्रौस बेनर बुलियन सिंडीकेट' की स्थापना की गयी । उसने लंदन स्थित 'इंडिया हाऊस" को लिखे पत्र में कुछ रहस्यों की सूचना दी थी, किंतु इंडिया हाऊस ने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया । भूगर्भ वैज्ञानिक भी इस बात से सहमत हैं कि सागर के गर्भ में छिपी लुप्त संपदा को बाहर लाने के लिए सभी देशों को मिलकर एक अतिविशाल और अति खर्चीली योजना बनानी होगी— जो शायद अभी संभव नहीं है ।

इन चर्चाओं के बाद फिर से प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं कि क्या तेहरान के खजाने में रखा 'तख्ते ताऊस' नकली है ? यदि यह नकली है तो असली 'तख्ते ताऊस' क्या वही था, जो— 'ग्रौस वेनर' जहाज द्वारा इंगलैंड ले जाया जा रहा था ? क्या वह समुद्र के गर्भ में समा गया है या दक्षिणी अफरीका के किसी कोने में अभी तक भी दबा पड़ा है ?

इन प्रश्नों का अभी उत्तर मिल भी सकेगा, संभावना क्षीण ही है ।

—२३२-ए/ पॉकेट-१, फेज-I,
मयूर विहार, दिल्ली-११००९१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं हूं एक विश्वस्त नाई

● अ.म. सालिक

जजमानो ! मैं एक विश्वस्त नाई हूं । मेरे दादा बादशाही नाई थे । कुंवर नौनिहालसिंह की शादी शामसिंह अटारीवाले के यहां मेरे ही दादा ने करायी थी । हाय क्या जमाना था, सुना है जब मेरे दादा अटारी से इस रिश्ते की स्वीकृति का शुभ संदेश लेकर लौटे थे तो महाराज उनकी पेश्वाई के लिए किला के स्वागत द्वार तक चलकर आये थे, और दादा पर दान-दक्षिणा की वह वर्षा की थी कि खाते-खाते तीन पीढ़ियां गुजर गयीं, और अब भी मौला की मेहरबानी से बीस बीघा जमीन का मालिक हूं, खाने-पीने की कमी नहीं है । अल्लाह का शुक्र है, गुजरान अच्छी है, लेकिन देखता हूं कि मेरे बाद यह खांदानी विश्वास चलता नहीं नजर आता । जमाने का रंग बदल गया है, तौर-तरीके बदल गये हैं, पुराने समय के जजमानों की याद आती है, तो कलेजे पर उस्तरा चल जाता है, जबान कैंची की तरह चलने लगती है । यार-दोस्त समझाते हैं मियां होश के नाखून लो, तुम किस चक्कर में पड़ गये, जिस प्रकार समय ने पुराने तौर-तरीकों को मूंड के सफाचट कर दिया, उसी प्रकार आजकल के फैशन भी साफ हो जाएंगे । लेकिन जजमानों ! जरा यह अंधेर तो देखो कि हम लोगों का कोई भी काम अब हमारे हाथ में न रहा । हमारे समय में हजामत बनाते थे तो नाई, शादी-विवाह में खाना पकाते थे तो नाई, और वर के लिए कन्या और कन्या के लिए वर ढूंढ़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाने का रंग बदल गया है, तौर-तरीके बदल गये हैं । पुराने समय के जजमानों की याद आती है, तो कलेजे पर उस्तुरा चल जाता है, जबान कैंची की तरह चलने लगती है ।

थे तो नाई...लेकिन आजकल यह क्या कयामत आयी कि हम लोगों को कोई पूछता तक नहीं, और कल के लौंडे दाढ़ियां मूंछ-मूंडकर अपने आपको नाई कहते हैं और चार-चार रुपये बटोर लेते हैं । हम लोगों का कायदा यह था कि फत्तू मूची से...अल्लाह बख्शे 'बड़ा कारीगर था' खासकर कसूत बनाने में तो सुना है विलायत तक मशहूर था...उससे कसूत सिलवा ली, और जब वह लाया तो अल्लादीन तेली के हां दे आये, उसने पंद्र-पंद्रह दिन कड़वे तेल में डुबोकर रखी, उसके बाद अल्लाह तुम्हारा भला करे, उसे पोंछ-पांछ के साफ किया, चार उस्तुरे, दो कैंचियां, एक नहर्नी, एक मेंहदी व सुरमा लगाने की खुरपी, और एक कटोरी, ये सारी चीजें उसमें रखीं और वर्षों के लिए निश्चिंत हो गये । अब तुम जो देखो तो आज के नाई कमीने, आगे नाथ न पीछे पगहा, विलायत के सौ-सौ रुपये के उस्तुरे, साबुन और वह आटे-सा जिसे 'पौडर' कहते हैं, लिये बैठे रहते हैं और एक हजामत में पूरा एक घंटा गारत कर देते हैं । हाथ की सफाई का नाम-निशान नहीं । बुजुर्गों का जिक्र तो क्या कीजे, मुझ रू-सियाह का एक वाकिआ सुनिए, लाल 'भिभोती सरन' के पिता 'सर्गबाश' हो गये तो बेटों, पोतों और रिश्तेदारों का हुजूम इकट्ठा हो गया, लाला मरहूम के बड़े फर्जन्द ने मुझे बुलाकर कहा, "अलिया, जो परमात्मा की इच्छा थी, वह पूरी हो गयी, जरा जल्दी से भदन कर दो ।"

'बस मियां, अल्लाह दे और बन्दा ले' । मैंने कोरा उस्तरा जो हाथ में लिया तो पच्चीस आदमियों को आध घंटे में मूंड के रख दिया । कद्रदान जजमान ने चांदी का एक चमचमाता शाही सिक्का मेरी हथेली पर रखकर कहा, "अलिया, हम-जैसे साहूकार तो हजारों होंगे, पर तुझ-जैसा नाई चार खूंट में न मिलेगा ।"

अब स्थिति यह है कि न कोई सर घुटाता है न पट्टे रखता है, न दाढ़ी का खत बनवाता है, जिसे देखो, माथे पर बालों का एक मुट्ठा-सा लिये फिरता है, और सर के पिछले हिस्से में सफाचट मैदान । बाल हैं या गऊदुम...पहले इक्का-दुक्का लौंडे दाढ़ी मुंडाते थे, अब जिसे देखो, जवान हो या बूढ़ा, मूंछें तक चट् कराये बैठा है, जैसे अभी बाप मरा है...ना साहब, हमसे तो ऐसी हजामतें नहीं होतीं । मौला आबाद रखे अपने मौलवी-मुल्लाओं को जो परंपरा निभाये जा रहे हैं और उनके साथ हमारी भी निभती जाती है ।

अब खत्ना को ही लीजे, हम लोग बच्चों का खत्ना यूं करते थे कि जरा-सी...वो क्या कहते हैं...शायद आप न समझें... 'फलक सेर' खिला दी, बच्चा इतना विस्मृत हो गया कि 'बगियाड़ी' चढ़ाई, और एक इशारे में सट्ट...फिर चूल्हे की जली हुई राख से खून बंद कर लिंगोटी बंधवा दिया, और बच्चा है कि खेलता फिर रहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यह कार्य डॉक्टरों के सुपुर्द हो गया है, उन्हें क्या मालूम खला किसे कहते हैं, न बाप ने किया होगा न दादा ने, अंगरेजों के पढ़ाए हुए...और अंगरेजों में खलों का प्रचलन नहीं, जभी तो हमने देखा है कि उनसे खला कराकर बच्चा महीनों बिस्तर पर एड़ियां रगड़ा है, डॉक्टर मारे दवाओं के बेचारे का सत्यानास कर देते हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि अच्छे-अच्छे बुद्धिमान सब कुछ जानते हुए भी डॉक्टरों के जाल में ऐसे फंसे हैं कि धड़ाधड़ रुपया भी खर्च करते हैं और दर्द से चीखते-चिल्लाते भी हैं।

जजमानों ! यह तो साधारण नाइयों के काम थे, लेकिन हम खांदानी नाई उन टके-टके के नाइयों से बहुत ऊंचा स्थान रखते थे। गरीब आदमी तो शादी-विवाह में क्या खर्च करेगा और मेहमानों को क्या खिलाएगा, हम खाते-पीते जजमानों के हां शादियों पर खाना पकाते थे। बस चार घड़ी पहले कह दीजिए, और समय पर पानसौ आदमियों का खाना तैयार लीजे। फिर हम खुदगर्ज भी न थे। दूसरे का घर फूंककर तमाशा न देखते थे। आजकल के नमकहराम नाइयों की तरह चावल, घी, पिस्ता, बादाम और गोश्त चुराकर चुपके से घर नहीं भेज देते थे, बल्कि अपने जजमानों की पूरी-पूरी किफायत करते थे।

एक समय था, बड़े-बड़े अमीर लोग अपने खानदानी नाइयों को अपना भेदी समझते थे। लड़कों-लड़कियों के रिश्ते से ज्यादा नाजुक मामला और क्या होगा ? लड़के के लिए लड़कीवालों के हां संदेश लेकर जाना, और लड़की के लिए लड़का तलाशना, फिर लड़के-लड़की की शकल-सूरत, स्वभाव मां-बाप की हैसियत आदि से संबंधित ठीक-ठीक सूचनाएं प्राप्त करना, और स्वीकृति की स्थिति में शादी की शर्तों का फैसला करना, तारीख सुनिश्चित करना, गरज ये सारे कार्य खानदान के विश्वस्त नाई के द्वारा अंजाम पाते बड़े-बड़े इज्जतदार घरानों में बेटियों को ससुराल से बुलाने का कार्य भी प्रायः हमीं अंजाम दिया करते थे, इसी विश्वास के कारण हम लोगों की इज्जत का डंका बजता था, हिंदू हमें 'राजा' और मुसलमान 'खलीफा' कहते थे। मशहूर है कि एक राजा और नाई के लड़के में बहस हो गयी, राजकुमार कहता था मेरा बाप बड़ा है, नाई का लड़का दावा करता था मेरे बाप का रुतबा तेरे बाप से भी ऊंचा है। राजा के बेटे ने कहा, "तूने देखा नहीं सारी दुनिया मेरे बाप के आगे सर झुकाती है।" नाई के बेटे ने फट-से उत्तर दिया, "तूने देखा नहीं कि तेरा बाप हजामत बनवाते समय मेरे बाप के आगे सर झुकाकर बैठता है।"

लेकिन जमाने का उलट-फेर देखो कि अब यह शान भी जाती रही। हजामत बनवानेवाला अब कुरसी पर बैठता है और नाई उसके दायें-बायें बलायें लेता फिरता है। अब तो वह सर झुकानेवाला भी मामला न रहा। पुरानी शान न रही, पुरानी आन न रही, पुरानी बातें न रहीं, अगले दिन न रहे, अगली रातें न रहीं, हाय-हाय...बदलता है रंग आसमां कैसे-कैसे।"

—अनुवाद : आर्यापुर, जे. ५/६०, आजाद पार्क वाराणसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान खींचने और चपत लगाने से बुद्धि चैतन्य होती है

● कमल रंजन 'हिमशैल'

'इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना' में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के एस.एस. स्टीवेंस ने कर्ण संबंधी विवरण में बताया है कि कान के पास बालों की जो जड़ें हैं, वहां पर सत्ताइस हजार 'नर्व-फाइबर्स' जुड़े हुए हैं । विधाता ने शरीर की रचना कितनी जटिल और विचित्र बनायी है कि विज्ञान के इतना अधिक विकसित होने के बावजूद अनेक रहस्यों को जानना अभी तक संभव नहीं हुआ । फिर भी प्रशंसा के पात्र हैं वे सभी शोधकर्ता सर्जन और वैज्ञानिक जिन्होंने शरीर के एक-एक अंग को बारीकी से नापा-तौला, जांचा-परखा और चिकित्सा-विज्ञान को आज की उन्नति की दशा तक पहुंचाया है । उन्होंने कान के संबंध में भी बहुत सराहनीय जानकारी प्राप्त की है और इलाज के तरीके खोज लिये हैं । इसके पूर्व भी भारत और चीन के चिकित्सकों ने कान के संबंध में पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर काफी शोध-कार्य किया होगा, तभी तो कर्ण-वेधन और 'एक्यूपंचर' पद्धति का प्रचलन हुआ ।

यूं तो शरीर के अनेक अवयव और हरेक नस-नाड़ी का अपना विशिष्ट महत्त्व है, परंतु कान का विशेष महत्त्व इसलिए है कि उसका संबंध आंख, नाक, गले और मस्तिष्क से है । इन अंग-प्रत्यंगों की रचना बहुत जटिल और रहस्यपूर्ण है, फिर भी एक निश्चित नियमानुसार पूर्ववर्ती चिकित्सकों ने इनको स्वस्थ रखने और रोगों को दूर करने के लिए सरल उपाय खोजे हैं । आज के चिकित्सा विज्ञान ने प्रत्येक अंग का विशेष अध्ययन करनेवाले हजारों विशेषज्ञ तैयार कर दिये हैं । जैसे, आंख के विशेषज्ञ, गले के विशेषज्ञ, कान के विशेषज्ञ, हृदय के विशेषज्ञ, हड्डियों के विशेषज्ञ आदि-आदि । परंतु विडंबना यह है कि ये विशेषज्ञ अन्य अंगों के बारे में साधारण जानकारी के अतिरिक्त अधिक कुछ नहीं जानते, जबकि भारत व चीन के प्राचीन चिकित्सकों ने शरीर की अंदरूनी रचना का बारीकी से अध्ययन करके कुछ सरल इलाज निश्चित किये थे । कर्ण-वेध संस्कार और 'एक्यूपंचर' उसी पद्धति का सरलीकृत स्वरूप है, जिससे शरीर के विभिन्न रोगों को दूर किया जाता है।

स्वयं ही चपत लगाइए

हमारे यहां कान में तेल डालना, कान की मालिश करना, कान में बालियां (इयरिंग) पहनना आदि कर्ण-संबंधी रोगों से बचाव करने और कर्ण-रोगों को दूर करने के उपाय बताये जाते हैं ।

—ए.एस.पी. ऑफिस के पास,
काजीचक, बाढ़, पटना-८०३२१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंआरी कन्याओं का पूजा-पर्व

● डॉ. महेशचंद्र शांडिल्य

संजा किशोरियों का सर्वप्रिय त्योहार है। साथ ही लोक-कला का श्रेष्ठ समायोजन। सावन के सुहाने मौसम की बहार छा जाने के बाद ही यह त्योहार अपनी पूरी रंगीनियां बिखेरता आता है। बाग-बगीचों, खेत-खलिहानों में तरह-तरह के फूल खिल जाते हैं। नदियों का जल निर्मल हो जाता है, तब किशोरियों का यह उमंगभरा त्यौहार आ जाता है। सोलह दिन बननेवाले भित्तिचित्र संजा और बालिकाओं के कोमल कंठों से फूटते गीतों का समागम देश के मध्य प्रदेश, राजस्थान, ब्रज, मिथिला, पंजाब और हरियाणा के गांव और शहरों की गलियों को रंगीन वीथि का बना देता है।

बहु आयामी संजा पर्व

किशोरियां भाद्र मास की पूर्णिमा से आश्विन मास की अमावस्या तक, पितृपक्ष में सोलह दिनों तक अपने-अपने घरों की भीत (दीवाल) पर आंचलिक विशेषताओं के साथ गोबर-मिट्टी से विविध आकृतियों का सृजन करती हैं। आकृतियों को फूलों, रंग-बिरंगी पत्रियों से, कौड़ियों से सजाती-संवारती हैं। सांझी की विभिन्न तिथियों के लिए पूर्व परंपरा के अनुसार प्रायः निश्चित आकृतियों का अंकन किया जाता है। कन्याएं सुंदर वर, चिर सौभाग्य और सुखी दांपत्य जीवन की कामना से प्रति दिन संध्या समय सांझी का पूजन, आरती करती हैं और गीत गाती हैं। कविता, गीत, संगीत और रूपंकर कलाओं का सुंदर संगम इस बहुआयामी संजा पर्व में परिलक्षित है। यह भित्ति अलंकरण कला और गीति पर्व भी है और आनुष्ठानिक आयोजन भी। सांझी पर्व के माध्यम से किशोरियां अपनी कोमल भावनाओं, कल्पनाओं को अभिव्यक्त करती चली आ रही हैं। सचमुच संजा पर्व चित्रकला की पाठशाला है, जहां बालिकाएं प्रथम बार चित्रकला को समझने व चित्रों के सृजन के लिए उन्मुख होती हैं।

लोकांचलों में सांझी को संजा, सांजुली, सांझफूली और संझया आदि कई नामों से जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकांचलों में सांझी को रंगा, रांगुली, रांगालूली और संझया आदि कई नामों से जाना जाता है । भारतीय लोक में सांझी के उद्भव और विकास से संबंधित कई जन-श्रुतियां, मिथक वाचिक परंपरा में आज भी सुरक्षित हैं । विद्वानों ने भी सांझी को कई रूपों में समझा है । कोई इसे सांझझ-संध्या का द्योतक मानते हैं,

जाता है । भारतीय लोक में सांझी के उद्भव और विकास से संबंधित कई जन-श्रुतियां, मिथक वाचिक परंपरा में आज भी सुरक्षित हैं । विद्वानों ने भी सांझी को कोई रूपों में समझा है । कई इसे सांझी-संध्या का द्योतक मानते हैं, तो कोई ब्रह्मा की कन्या संध्या से इसका संबंध जोड़ते हैं । कोई इसे दुर्गा, पार्वती-गौरा के रूप में आदि शक्ति का अवतार मानते हैं ।

कुछ लोग इसे विष्णु-पत्नी लक्ष्मी के रूप में स्वीकार करते हैं, तो कोई ब्रज की देवी मानता है । कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण ने राधाजी को प्रसन्न करने के लिए शरदकाल में एक दिन सायंकाल एक सुंदर कलाकृति बनायी थी, जो संध्या समय निर्मित की जाने के कारण सांझी नाम से विख्यात हुई ।

पुष्कर में स्नान

राजस्थान में लोकप्रिय एक बगड़ावत लोक-कथा के अनुसार लीला सेवड़ी नामक ब्राह्मणी प्रतिदिन प्रातः पुष्कर में स्नान किया करती थी । एक दिन की बात है कि मुंह अंधेरे स्नान करके लौटती हुई लीला सेवड़ी ने रास्ते में हरिजी को देखा । हरिजी के हाथ में बाघ का कटा हुआ सिर देखकर ब्राह्मणी को गर्भ रह गया । इस गर्भ से ब्राम्हणी को विचित्र बालक पैदा हुआ । उसका सिर बाघ का और धड़ मनुष्य का था, इसलिए उसका नाम बाघजी पड़ा । बाघजी के पिता हरिजी अजमेर के राजा बीसलदेव के भाई मांडलजी के पुत्र थे । राजा ने इस विचित्र बालक के पालन-पोषण का भार राजमहल के उद्यान में रहनेवाले कालूराम नामक एक खोड़ये ब्राह्मण को सौंपा, वह उनकी देखभाल करता हुआ अपना पैतृक धंधा भी करता रहा । एक दिन की घटना है कि ब्राह्मण को शहर से लौटने में देरी हो गयी तो बाघजी अति क्रोधित हुए । ब्राह्मण उनका क्रोधित रूप देखकर कांप उठा और उसने बताया कि लग्न निकालने के काम में व्यस्त होने के कारण आने में देरी हो गयी । ब्राह्मण की बात सुनकर बाघजी बोले मेरे लिए भी लग्न निकालो । ब्राह्मण फिर मुसीबत में फंस गया कि इस विचित्र पुरुष से कौन लड़की शादी करेगी ? पर बाघजी नहीं माने । हारकर ब्राह्मण ने उनकी बात मान ली । आखिर उसने एक तरकीब सोची । सावन के महीने में जब बाग में झूले डले तो उसने एक शर्त रखी कि झूला झूलने के पूर्व प्रत्येक लड़की को बाघजी का फेरा (चक्कर) लगाना पड़ेगा । जो समझदार थीं वे इस चालाकी को भांप गयीं, मगर जो अबोध थीं वे चक्कर में आ गयीं । बाघजी के फेरे लगानेवाली लड़कियों के लग्न न निकलने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके माता-पिता बहुत चिंतित हुए । जब राजा को खोड़या ब्राह्मण के षड्यंत्र का पता चला तो उसने बाघजी को बुलाया और समझाया । बाघजी ने शर्त रखी कि मेरी बाथ (बांह) में जितनी लड़कियां आएंगी, उन्हें मैं रखूंगा और शेष के नातरे (पुनर्विवाह) कर दिये जाएं । बाघजी की बाथ में तेरह लड़कियां आयीं, जिनमें बारह उच्च जाति की थीं और एक निम्न समझी जानेवाली बलायन जाति की रूपवती कन्या 'संझया' थी । उसका निम्न वर्ग होने के कारण बाघजी ने उसका विवाह खोड़या ब्राम्हण के साथ करा दिया । खोड़या ब्राह्मण के लड़के 'गरुड़िये ब्राह्मण' कहलाये और बाघजी के यहां जो चौबीस लड़के हुए वे 'बगड़ावत' कहलाये । कहते हैं कि संझया की अल्पायु में ही मृत्यु हो गयी । उसकी पुण्य स्मृति को चिर स्थायी बनाने के लिए ही संजा पर्व का सिलसिला शुरू हुआ । लगभग ८००-९०० वर्ष पुरानी यह बगड़ावत गाथा का कथानक सांझी पर्व के ऐतिहासिक व प्राचीन महत्त्व को पुष्ट करता है ।

हरियाणा में प्रचलित लोककथा के अनुसार सांझी एक जुलाहे की लाड़ली बेटी थी । विवाहोपरांत उसके पति ने उसे एक लड़का होने पर उसे घर से बाहर निकाल दिया । वह रात-दिन एक करके सूत कातती, खद्दर बुनती और उसे बेचकर अपना व बेटे बसंता का पेट भरती । अवसर मिलते ही वह कुंआरी लड़कियों को अपना ज्ञान बांटती, जो उसने विद्वानों से सीखा था, किंतु यह पुण्य कार्य भी उसकी ससुरालवालों को सहन नहीं हुआ । वे उस पर अत्याचार करने हेतु ताक में रहते थे ।

एक बार सांझी ससुरालवालों को यातनाओं से तंग आकर अपने बेटे को लेकर अपने पिता के घर आ रही थी । बीच राह में ही उसके ससुरालवालों ने बेरहमी से पीटकर उसे मार डाला । रोती-बिलखती उसकी भक्तिनों ने उसके शव को जल में प्रवाहित कर दिया । मान्यता है कि तभी से सांझी-पूजन और विसर्जन का प्रारंभ हुआ ।

ब्रह्मा की कन्या

शिव महापुराण में वर्णित कथा के अनुसार सांझी को ब्रह्मा की मानसी कन्या माना गया है । पहले आदि प्रजापति ब्रह्मा ने दक्ष, मरीचि, पुलह आदि दस प्रजापतियों को पैदा किया । उसी समय उनके मन से एक अपूर्व सुंदरी कन्या उत्पन्न हुई । कन्या को देख ब्रह्मा और प्रजापतियों के मन में सृष्टि बढ़ाने का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

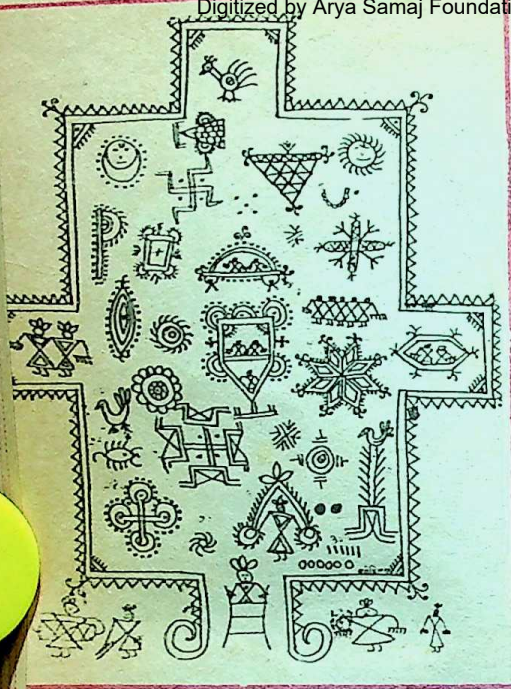

मालवा की आकृति : किलाकोट रेखांकन

उठा । यह विचार करते हुए उनके हृदय से अद्भुत सौंदर्यवान कामदेव उत्पन्न हुआ, जिसे देख प्रजापतियों के मन विचलित हो उठे । काम ने ब्रह्मा को प्रणाम करके कहा मुझे ऐसे कर्म में नियोजित करें, जिससे मैं पुरुषों को प्रिय और माननीय रहूं । ब्रह्मा ने कहा तुम अपने सम्मोहक रूप से स्त्रियों को सम्मोहित करते हुए सनातनी सृष्टि करो । मैंने तुम्हारा कर्म बताया । मेरे प्रजापति पुत्र तुम्हारा नाम बताएंगे । प्रजापतियों ने कहा कि तुमने अपने सम्मोहन से पहले ही हमारा और ब्रह्माजी का चित्त मथ दिया है, इसलिए तुम्हारा नाम 'मन्मथ' होगा । अपूर्व सौंदर्य के कारण 'काम' । यह सुंदर कन्या संध्या काम-बाण मारते हुए ब्रह्माजी के मन में उत्पन्न हुई है । यह दिवसांत की शोभा सदृश सुंदर है, अतः यह संसार में 'संध्या' नाम से जानी जाएगी । कामदेव ने ब्रह्मा और अन्य प्रजापतियों पर अपने सम्मोहन की जांच की, जिससे ब्रह्मा सहित सभी प्रजापति संध्या की इच्छा करने लगे । धर्म के आह्वान पर शंकर ने प्रकट होकर सभी को धिक्कारा । काम-प्रसंग से संध्या को बहुत ग्लानि हुई । मुझे देखकर मेरे पिता और भाई काम के वशीभूत हुए । मैं तपस्या कर संसार में मर्यादा स्थापित करूंगी । संध्या ने चंद्रभाग पर्वत पर जाकर मौन तप कर भगवान शंकार को प्रसन्न किया, वे प्रकट हुए । तब संध्या ने कहा, यदि मेरे पाप नष्ट हो गये हैं, यदि मैं योग्य हूं तो मुझे तीन वरदान दीजिए । इस संसार में कोई भी प्राणी जन्म से ही काम भाव से युक्त न हो । मेरे सदृश इस संसार में विख्यात व्रतवाली दूसरी कोई न हो और मेरा पति महाकामी न हो, मित्रवत हो । उसके सिवा जो भी मुझे काम भाव से देखे वह पुरुषार्थहीन हो जाए । शंकर ने कहा, संध्या तू पवित्र है । तेरे वर के अनुसार मैं संसार में मर्यादा स्थापित करता हूं कि कोई भी शरीरधारी जन्म से ही कामी न होगा । तू त्रिलोक विख्यात सती होगी । तेरा पति महा-तपस्वी होगा और तेरे साथ सात कल्प पर्यंत जीवित रहेगा ।

शिव से वर पाने के बाद संध्या ने मेधातिथि मुनि के यज्ञ में अपने उपदेष्टा को पति रूप में पाने की कामना मन में लेकर अपना दूषित शरीर भस्म कर डाला । मानवीय भौतिक शरीर से वह यज्ञ से उत्पन्न हो मेधातिथि मुनि की कन्या हुई । धर्म का अवरोध न करने के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरूंधती नाम पाया और वशिष्ठजी ने वरण किया किंतु संध्या की अद्वितीयता की रक्षार्थ शिव की आज्ञा से अग्नि ने संध्या का शुद्ध शरीर लेकर सूर्यमंडल में प्रवेश किया । सूर्य ने उसके शरीर के दो भाग कर अपने रथ पर स्थापित किया । शरीर का ऊपरी भाग देवों को प्रिय "प्रातः संध्या" और नीचे का भाग पितरों को प्रिय "सायं संध्या" हुआ ।

यह पुराण कथा ब्रह्मा की मानसी कन्या संध्या और आकाश की संध्या को एकाकार ही नहीं करती अपितु सांझी पूजा की परंपरा में, सांझी की परिकल्पना में संध्या है, उसे भी स्थापित करती है । मिथकीय परंपराओं और लोकविश्वासों में सत्य जो भी हो, पर कुआरी कन्याएं शताब्दियों से ममतामयी देवी के रूप में सांझी की पूजा-अर्चना करती आ रही हैं, सांझी के प्रति उनका अटल विश्वास है ।

—संस्कृति भवन
आधार तल, बाणगंगा, भोपाल (म.प्र.)

मालवा की संजा आकृति : जाड़ी जसोदा

निमाड़ की संजा आकृति : गणपति

छाया : लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागीरथी चोटियां

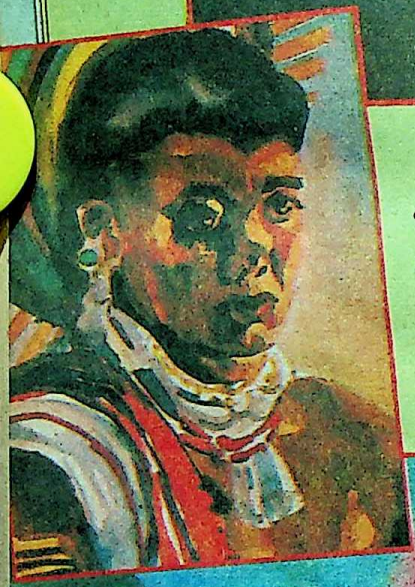

एक नगा आदिवासी

घर के खर्चे में हाथ बटाना जरूरी था। १९४६ में बी.एस.सी. की डिग्री हासिल कर लेने के बाद नौकरी ली। मगर नौकरी अच्छी नहीं लग रही थी, इसलिए सोचा कि दफ़्तर के समय से पहले और बाद में और छुट्टियों में लैंडस्केप पेंटिंग करूं। स्कूल में ड्राइंग मास्टर ने चित्रकला से परिचित करा दिया

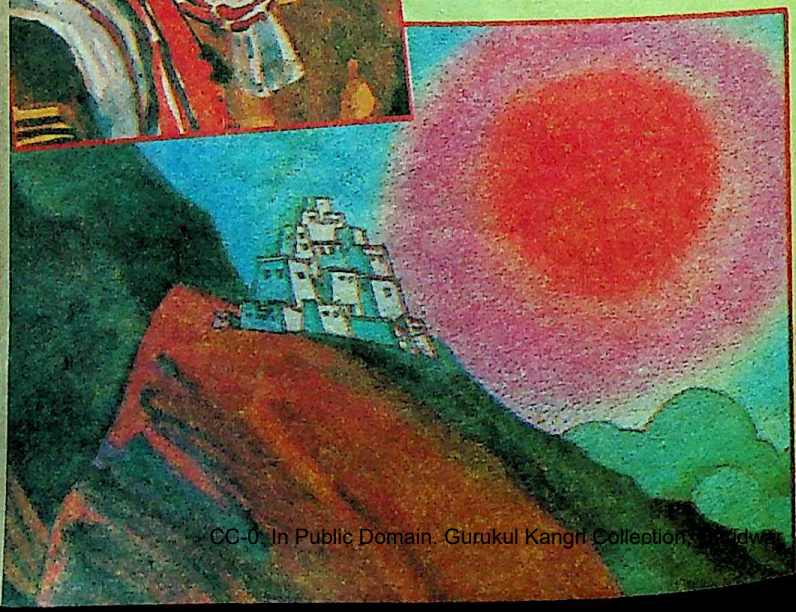

लद्दाख का मठ

छाया : लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। रंग और ब्रश लेकर पेंटिंग करने निकला तो वह सभी अभ्यास बेहद उपयोगी सिद्ध हुए। कॉलेज के दौरान खाली पीरियडों में यमुना के किनारे अरावली के जंगलों या पुराने खंडहरों में घूमने या घंटों बैठे वहां के दृश्य देखने की आदत पड़ गयी थी। अब वही मेरे पेंटिंग के विषय बन गये।

लेकिन मेरे उस समय के काम में अनाड़ीपन होना ही था। मायूसियां भी थीं। हां कोई काम-

अरावली से लगाव

मुझे दिल्ली के आसपास के अरावली के जंगलों से बेहद लगाव हो गया था और आनेवाले २५ साल यही मेरा प्रमुख विषय रहा। यही मेरी कला के विकास का माध्यम भी बना। छुट्टीवाले दिन मैं सुबह होते ही जंगलों में जा पहुंचता, दिनभर घूमता और चित्र बनाता, मेरे शुरू के चित्र प्रभाव-वाद शैली में आते हैं मगर समय और प्रयोगों के साथ उनमें बदलाव

लैंडस्केप पेंटिंग : मेरे अनुभव

● राम नाथ पसरीचा

हाथ से ऐसा भी निकल जाता जो अपने आप में दिशा बन जाता। किसी आर्ट कॉलेज में जाकर बाकायदा सीखने का मौका नहीं था। पर सुबहें और शामें मेरी अपनी थीं, छुट्टियां थीं और लगन थी। उस समय के कुछ काम जब प्रदर्शनियों में भेजे तो कला पारखियों ने और प्रसिद्ध कलाकार अबनी सेन ने मेरा हौसला बढ़ाया। अबनी सेन बेहद मेहनती थे। वह कहा करते— "देयर इज नो इंसिपरेशन विदाउट पर्सपिरेशन।" उन्होंने कला के हर पहलू का अध्ययन किया था। साथ ही वह एक फराखदिल उस्ताद भी थे। इसीलिए वह अपने काम करने के ढंग को किसी पर थोपते नहीं थे बल्कि उसकी निजी पसंद को बढ़ावा देते और आगे बढ़ने का रास्ता सुझाते। हम एक-दूसरे को समझने लगे थे। अबनी सेन के संपर्क ने उस्ताद की कमी पूरी कर दी।

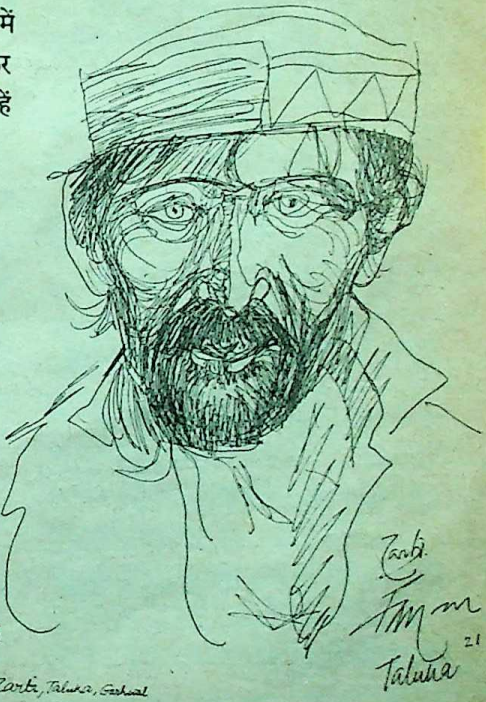

Zarti, Talwa, Gwalal

0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया जो स्वाभाविक था । मेरे लैंडस्केप चित्रों के रूपाकार और रंग प्रकृति से प्रेरित होते हुए भी प्रकृति से मुक्त हो गये और उनमें एक खूबसूरत अमूर्तन और फंतासी ने जन्म लिया ।

प्रकृति : जंगल और पहाड़

सन् १९४९ में मैं नये माहौल और नयी प्रेरणा की तलाश में मसूरी गया था । वहां से हिमशिखरों के दृश्य ने मुझे मोह लिया । मैंने फैसला किया कि मैं उन हिमशिखरों तक जाऊंगा और उनके चित्र बनाऊंगा । हिमालय मेरा दूसरा विषय हुआ । वैसे तो जंगल और पहाड़ प्रकृति के अलग-अलग विषय नहीं हैं बल्कि उसके दो रूप हैं, फिर भी मैं सरदियां अरावली के जंगलों के चित्र बनाने में गुजारता और गरमियों में जब ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ पिघलती और रास्ते खुल जाते, मैं वहां चला जाता । वह पैदल का जमाना था । बस से उतरकर कई दिन जंगलों में पैदल सफर होता जहां पुरानी सभ्यता के प्रतीक हिमालय में रहनेवाली जन-जातियों से मिलना होता, वहां की वास्तुकला और मंदिर देखने को मिलते और वहां के रीति-रिवाजों का पता चलता । फिर ऊंचाइयों पर जाकर, तंबुओं और गुफाओं में रहकर बर्फ से ढंकी चोटियों और ग्लेशयरों के चित्र बनाता और उन दृश्यों को दिल और दिमाग में बसाकर वापस आ जाता । अब ६९ साल का हो गया हूं मगर मेरा यह सिलसिला अभी भी जारी है । मैंने अनेक बार कुमाऊं, गढ़वाल, किन्नौर, चंबा, कुल्लु, लाहौल, स्पीति, लद्दाख, सिक्किम और अरुणाचल की दूर-दराज वादियों में जाकर वहां के लोगों के और बर्फ से ढकी अनगिनत चोटियों के चित्र बनाये हैं, जिनमें प्रमुख है नंदादेवी, द्रणगिरी, हरदेवल, भागीरथी, नीलकंठ, कालंका, चंगबंग, बंदरपूंज, कालिंदी, स्वर्गारोहिणी, माना, देवबन और कामेट । कई अभियान दलों ने मुझे अपने साथ लिया है और २०,५०० फुट की ऊंचाई पर बैठकर चित्र बनाने का सौभाग्य मुझे है ।

स्कूल में ड्राइंग मास्टर ने चित्रकला से परिचित करा दिया था । रंग और ब्रश लेकर पेंटिंग करने निकला तो वह सभी अभ्यास बेहद उपयोगी सिद्ध हुए ।

प्रकृति : गुरु भी

इन यात्राओं में तकलीफें झेली है तो आनंद भी उठाया है । और सबसे ज्यादा तो खुद प्रकृति ने ही एक सुलझे हुए और सहानुभूति रखनेवाले उस्ताद की तरह मेरे काम को संवारा है और मेरा मार्गदर्शन किया है ।

सन् १९७९ में मैंने पहली बार हिमालय के चित्रों की प्रदर्शनी लगायी । तब से मैंने अपना सारा ध्यान हिमालय के चित्र बनाने में लगा दिया है । मेरे हिमालय के चित्रों में सूरज रह-रहकर आ जाता है और मेरे काम की पहचान बन गया है । हिमालय की ऊंचाइयों से ऊपर सूरज है, चांद है, तारे हैं । ऐसा लगता है— जैसे यह सब मेरे अवचेतन में मुझे ऊंचाइयों से आगे देखने की प्रेरणा दे रहे हैं जहां अनंत है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

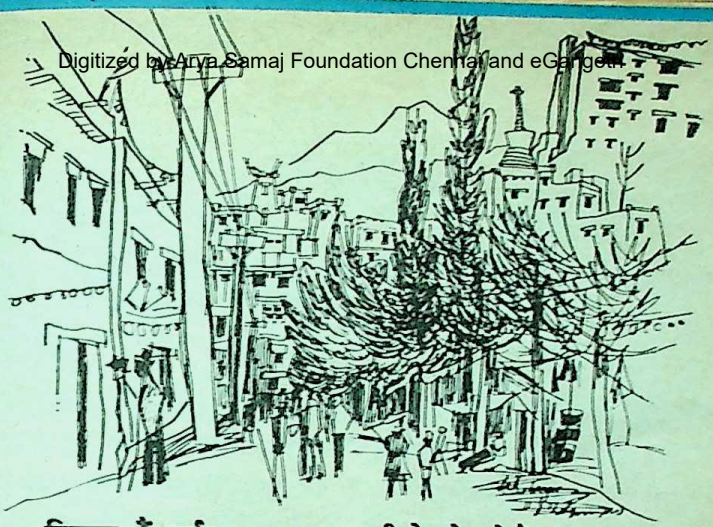

मित्रवत हैं पर्वत

मैंने हिमालय की दूरदराज वादियों में बसनेवाले लोगों के अनगिनत चित्र बनाये हैं। उनका रहन-सहन बहुत खूबसूरत है। उनकेचेहरे की हर-एक रेखा मौसम तथा हवाओं ने गढ़ी है। आस्था उनके जीवन का अभिन्न अंग है और उसमें हवा की गूंज तथा एकांत रचा-बसा है। हिमालय के लोगों का प्राकृतिक भोलापन हो अथवा धर्म के प्रति आस्था, इस आस्था के कारण इन लोगों में सहानुभूति, विनम्रता, सहिष्णुता और प्रफुल्ता के महान गुण आ गये हैं। यह बिल्कुल अलग बात है कि वे स्वयं अपने गुणों के प्रति सचेत न हों। इन गुणों ने ही पर्वतीय लोगों को सौंदर्य के गहरे अर्थों को समझने की क्षमता दी है। मैंने अपनी हर यात्रा में इस सौंदर्य को महसूस किया है।

मैं हिमालय में बार-बार जाता हूं। वहां खामोशियां हैं। मुझे वहां का अकेलापन और सूनापन अच्छा लगता है, जिन वीराने सायों तले आज से ४५ साल पहले चलना आरंभ किया था वह आज मेरे साथी बन चुके हैं। अब वह वीराने मुझे भाते हैं।

चलते-चलते मैं अपनी कुछ यादें आपसे बांटना चाहता हूं—

१९७६ : बागिनी घाटी

बेस कैंप की एक निराली ही दुनिया थी। मैं हरदेवल की तरफ मुंह करके बैठा था। मेरे बायीं तरफ ऊंची चट्टानों की एक दीवार खड़ी थी। ऐसा लगता था कि उस पर टिके बड़े-बड़े पत्थर किसी भी क्षण नीचे लुढ़क सकते हैं। उनमें गहरे नीले, हरे, और जंग लगे दिखायी दे रहे थे। मेरे दाहिनी तरफ बागिनी ग्लेशियर था— सरदियों में इकट्ठे हुए बर्फ का एक ढेर और हरे पानी की अनेक झीलों से सजा। ग्लेशियर के पार अनाम चोटियों की एक कतार थी और उनमें से अनेक के मैंने चित्र बनाये थे। रह-रहकर हिमस्खलन होता और चिंघाड़ते शोर के बीच बड़े-बड़े पत्थर झीलों में आ गिरते। ऐसा सारा दिन होता रहा। सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही लुभावना तथा ऊष्म था और चोटियों पर अनछुए गुलाबी तथा नीललोहित रंग छिटके हुए थे। नीले आसमान के नीचे ये चोटियां सोने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

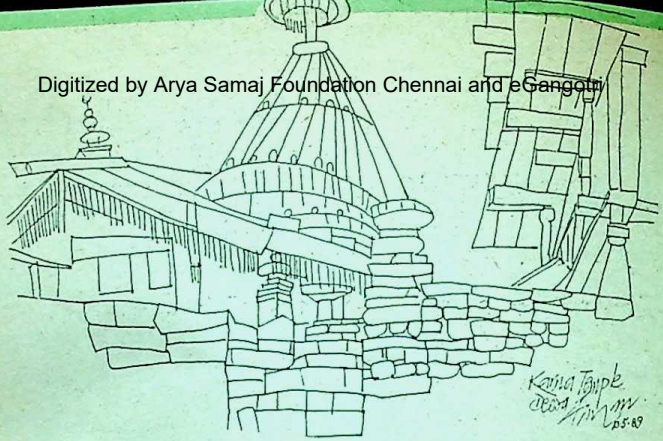

के गहनों-जैसी दिखायी दे रही थीं। पश्चिम की तरफ आकाश में लाल और गुलाबी आभा बिखरी पड़ी थी जबकि इन पहाड़ों में बल खाती बागिनी नदी चांदी के रिबन-जैसी दिखायी दे रही थी। वहां की खामोशी सारी इंद्रियों को अपने वश में किये हुए थी और धीरे-धीरे वातावरण पर छा जानेवाले भूरेपन का वर्णन संभव नहीं है।

हम लोग किचन टेंट की ओर लौट आये और वहां की गरमी में हम खाली पेटियों से बनायी सीटों पर आ बैठे। टेंट के बाहर खूब चमकते तारे तथा आधा चांद आसमान पर दिखायी देने लगा था और उससे स्वप्नलोक का समां बंध गया था। उस समय बेहद सरदी थी और ऐसा लगता था कि हर चीज जमती जा रही है और सोना चाहती है।

कामेट ग्लेशियर

सन् १९८३ में मुझे कुमाऊं रेजीमेंट ने अपने एक अभियान दल में शामिल होने का निमंत्रण दिया। यह दल २५,४४० फुट ऊंचे कामेट पर्वत पर चढ़ाई करने में सफल हुआ। मेरी यह एक और प्रमुख यात्रा रही। तब मेरी आयु ५७ साल थी। तब भी मैं इस बार २०,५०० फुट की ऊंचाई तक पहुंचा और वहां से कामेट, माना और देवबन शिखरों के चित्र बनाये। मैं पहले कभी इतनी ऊंचाई पर नहीं गया था। एक भयानक वातावरण था वहां का। हम कई दिन कामेट ग्लेशियर पर रहे। चारों ओर बर्फ थी और बर्फ से ढके हुए पहाड़। जब वहां बर्फ पड़ती थी तो कुछ हाथ दूर की चीजें भी दिखायी नहीं देती थीं। ठंड बेहद। तापमान— १२ डिग्री सैलसियस और २० डिग्री सेलसियस के बीच।

रह-रहकर बर्फ के तोदे धमाकों के साथ नीचे की ओर लुढ़कते और बड़ी-बड़ी चट्टानों को अपने वेग में तोड़ते-फोड़ते, लुढ़काते हमारे पास और कभी दूर रुक जाते। शिव का तांडव नृत्य रहता। बर्फ को घंटों आग पर गलाकर पीने के लिए पानी बनाते मगर वही पानी कुछ ही मिनटों में जमकर दोबारा बर्फ बन जाता। ऐसी हालत में जलरंगों से चित्र बनाना बहुत कठिन काम था। अकसर रंग से भरा ब्रश कागज तक पहुंचते-पहुंचते सख्त हो जाता और रंग जमकर पाउडर बन जाता।

— ई ५६, आनंद निकेतन
नयी दिल्ली-११००२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव भोपाल पुरस्कृत कहानियां

कहानी

प्रथम पुरस्कार

साहूकार

• लक्ष्मीनारायण 'पयोधि'

कोरसे मुत्ता का कबरा मुरगा पंखों से नींद झाड़कर जोर से चीख उठा—

'कोक्कोरो...को... ।'

दूर सकलनारायण की पहाड़ियों से गजभर ऊपर तक चढ़ आया था भोर का तारा । गोटाईगुड़ा का दिन हर रोज इसी वक्त शुरू होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।

एक बारगी ही झोपड़ियों में हलचल होने लगी। निस्पंद देह की रगों में रक्त का प्रवाह मानो एकाएक तीव्र हो उठा हो ! सिमटती रात की तरह बांस की चटाइयों को लपेटकर गोंड उठ बैठे। रोज की तरह जंगल की ओर कूच करने को।

बोड़ी का मन आज ठीक नहीं था। वह देर तक अपनी जगह गुमसुम बैठी रही। उसने न तो तूंबों में पेज-पानी भरा और न ही टुकने-गपे संभाले। ऐसा उसके साथ अकसर होता है, परंतु न चाहते हुए भी उसे जंगल जाना ही पड़ता है।

"बोड़ी औऽऽ ! मरी, चलना नहीं है जंगल ? फिर आज देर करेगी और उधर भालू महुओं को चट कर जाएंगे !"

अड़वा पेरमा की पेकी सुकरी बड़बड़ा रही थी। बोड़ी उठी। जल्दी-जल्दी तूंबे उठाकर गपे में रखे और टुकने लेकर बाहर निकल आयी।

बाहर सुकरी मुंह फुलाये खड़ी थी। बोड़ी उसके गुस्से का कभी बुरा नहीं मानती। सुकरी भी बोड़ी को बहुत चाहती है। दोनों साथ-साथ रात को घोटुल जाती हैं, एक-दूसरे को सजाती-संवारती हैं और आपस में सुख-दुःख के क्षणों को बांटती हैं।

"क्यों री, आज फिर क्या हो गया तुझे ? ऐसा क्यों कहती है तू ? जानती नहीं, कि कितनी मुश्किल से मिलते हैं महुए ! आज फिर खाली गपे देखेंगे तो बूबा मार ही डालेंगे ! तेरा क्या तू तो लाड़ली है अपनी आया की..."

सुकरी ने शिकायती स्वर में बोड़ी को देखते ही ताना मारा।

"पता नहीं सुकरी, क्या हो जाता है मुझे ! रातभर सो नहीं पायी थी। रह-रहकर कल शाम की घटना आंखों में घूम जाती थी !" बोड़ी ने जंगल की राह पकड़कर मुझे मन से कहा। उसका चेहरा मुरझा गया था। आंखों में भोर की-सी लालिमा फैली हुई थी। सुकरी ने ताड़ लिया कि कल अरखित के घर घटी घटना ने बोड़ी को भीतर तक हिला दिया है।

"हां, बोड़ी ! कल जो कुछ हुआ वह बहुत ही बुरा हुआ। मेरा भी दिल दहल गया था। भला यह भी कोई तरीका हुआ कर्ज चुकाने का ? यह तो हमारी बिरादरी के मुंह पर कालिख पोतने का काम किया अरखित पटेल ने। मैंने बूबा को बताया तो वो बहुत गुस्सा हुए। बोले— अरखित को इसका फल जरूर चखना पड़ेगा। पेकी को गिरवी रखता है नामुराद !"

सुकरी भी उत्तेजित हो उठी थी। अनायास ही उसका चेहरा तमतमा गया था।

कल शाम को मंगल साहूकार अपने कारिंदों को लेकर अचानक अरखित के घर आ धमका था। पांच साल पहले अरखित ने उससे दो खंडी धान लिया था। बोया भी। लेकिन सूखे के कारण वह बीज साहूकार को लौटा नहीं पाया था। साल पर साल बीतते गये, पर अरखित धान नहीं लौटाया तो नहीं लौटाया। मगर साहूकार को इससे क्या ! कर्जदार की मजबूरी से फायदा उठाना ही तो उसका धर्म है ! वह बार-बार अपने कारिंदों को तकाजे के लिए भेजता रहा।

"अभी नीं सकूं माहप्रू ! अगले बरख जरूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुका दूंगा !'' अरखित का यही जवाब होता हर बार ।

साहूकार के कारिंदे उसके घर में जो कुछ दिख जाता, उठा लाते । कभी मुरगे, कभी चिरौंजी तो कभी कुछ और... ! लेकिन वह सब तो कारिंदों का यात्रा-भत्ता मात्र था । कोई अरखित के हिसाब में तो लिखा नहीं जाना था न ! कल अचानक साहूकार खुद आ धमका था । जिन्निप्पा गांव में वैसे तो साहूकार कोई पहली बार नहीं आया था । फिर भी गांववालों के लिए तो उसका गांव में आना, एक घटना ही था !

''आओ माहप्रू ! क्यों तकलीफ की आपने । खबर भेजते तो मैं खुद सहर आ जाता ।''

अरखित हाथ जोड़कर लगभग साहूकार के पैरों पर ही गिर पड़ा था ।

''तुम तो भैया, बड़े आदमी हो गये हो । तुम क्यों आने लगे मेरे घर ? पांच साल हो गये बीज लिए हुए, मूल तो मूल, ब्याज का भी पता नहीं । तुम्हें तो हमारी सुध आती नहीं, इसलिए हमने सोचा— चलो, हम ही दरसन कर आये तुम्हारा !''

साहूकार ने व्यंग्य करते हुए तीखे स्वर में कहा ।

''ऐसा क्यों बोलते हो माहप्रू ? हम तो आप ही के गुलाम हैं । आपके बाहर तो कभी नहीं हुए हम ! फसल हुई नहीं, इसलिए बीज नहीं लौटा पाये । बड़े देव ने चाहा तो ये बरख वो भी चुका दूंगा । वैसे जो कुछ हो सकता था, इनके हाथ भेज ही देता था... ।'' अरखित की यह बात कारिंदों को बिल्कुल नहीं भायी । वे

लगभग उस पर झपटते हुए बोले— ''क्यों रे हरामखोर ! हम पर इल्जाम लगाता है ? तूने कब कोई चीज दी थी हमें ? हर बार तो अपनी भुखमरी का ही रोना रोता रहा ! रहम क्या किया कि आज हमें ही आंखें दिखा रहा है ?''

कारिंदों के ये तेवर देखकर अरखित कांप गया था । वह उनके पांव पकड़कर बोला— ''हमसे गलती हो गयी माहप्रू ! हमें माफी दे दो ।''

''ठीक है ! ठीक है ! जो हो गया, सो हो गया । लेकिन पटेल अबकी मैं अपना कर्ज वसूल करके ही जाऊंगा ।'' मंगल सेठ ने दृढ़ता से कहा ।

मंगल साहूकार की शहर में गल्ले की सबसे बड़ी दूकान थी । वैसे बड़े बुजुर्ग तो यह बताते हैं कि मंगल का बाप बद्रीनाथ जब राजा के बुलावे पर जगदलपुर आया था, तब उसके पास कुछ नहीं था— सिवाय एक लोटा-पंचा और थोड़े-से हुनर के । परंतु आज उसके बेटे मंगल के पास कितनी जायदाद है, इसका हिसाब कोई नहीं जानता । शहर के आसपास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुनकी चीत्कार उठी । उसकी हालत उस गाय के समान हो गयी, जिससे उसका बछड़ा छुड़ाकर ले जाया जा रहा हो ! पिचकी चली गयी । बूचड़खाने में काटकर बेचे जाने के लिए । उसका गरम गोश्त खाकर साहूकार कितना खुश होगा ।

कई गांवों में उनकी खेती है । मालगुजारी के चलते अनेक गांवों तक उनका साम्राज्य फैला हुआ है । कोई भी जरूरतमंद आदिवासी उनके दरवाजे पर मदद की गुहार लेकर जाता है तो खाली हाथ-निराश कभी नहीं लौटता ।

मंगल सेठ अपने कर्जदारों से वसूली की हर तरकीब जानता है । समय-समय पर उसका इस्तेमाल भी करता है । आज मन ही मन कुछ निश्चय करके ही वह अरखित के घर आया था ।

"तू अपनी जमीन लिख दे ! ले इस पर यहां अंगूठा लगा दे !" साहूकार के एक कारिंदे ने एक कागज अरखित के सामने फैलाते हुए कहा ।

"काय ! भुईं माहप्रू ? नईं... नईं... नीं होई... ए नीं हो सकता... !" अरखित यह सुनकर मानो दहल गया था ।

"यही करना पड़ेगा पटेल ! और कोई चारा नहीं ! मैं जानता हूं कि तुझमें अब बीज लौटाने की कूबत नहीं रही ! मैं तुझे और मोहलत नहीं दे सकता ! लगा दे अंगूठा इस पर !"

साहूकार अबकी गरज उठा ।

"नहीं माहप्रू ! अइसा गजब नीं करो ! भुईं तो आमचो आया आसे । भुईं नीं बिकूं !"

अरखित इस बार लगभग रो पड़ा ।

"तो कैसे चुकाएगा कर्ज ? है कोई और चीज, जिसे देकर तू कर्ज चुका सकता है ?"

साहूकार की इस बात पर अरखित कुछ क्षण तक चुप रहा । कुछ सोचता रहा । भीतर घुमड़ते तूफान की खरोंचें उसके चेहरे पर आड़ी-तिरछी रेखाओं में उभर रही थीं । आसमान लाल हो उठा था । दूर महुए के पेड़ों के पीछे डूबते सूर्य की अंतिम किरणें अरखित की आंखों में उतर आयी थीं । वह अचानक झटके से उठा और सामने खड़ी अपनी बड़ी बेटी पिचकी को खींच लाया । आस पास तमाशबीन बने गांव के लोग भौंचक-से सारी घटना देख रहे थे, परंतु किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था ।

"ले साउकार, तू ए पेकी को ले जा ! जब तक मैं तेरा कर्ज न चुकाऊं तू इसे अपने पास रख ले ! ले... ले जा... देखता क्या है । मुझ पर भरोसा नीं है न ? रख ले इसे..."

अरखित की आंखों से मानो आग बरस रही थी । गांववालों को तो मानो, काठ मार गया था । यह उनके लिए एक अकल्पनीय घटना थी । उन्हें अरखित की इस हरकत पर गुस्सा भी आ रहा था और दया भी ।

"बेयहा हो गया रे ?" कचरू सियान ने डांटा ।

"हौ सियान ! ए साउकार मेरी आया को रखैल बनाना चाहता है न ? आया (मां) हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या मया (बेटी), काय फरक पड़ता है । भुई रहेगी तो बच्चे भूखे तो नहीं रहेंगे !" अरखित रोने लगा ।

"तो क्या पेकी को भेजेगा साउकार के साथ ? उसकी रखैल बनाकर ?"

अरखित की बायलो (पत्नी) झुनकी बोली ।

"हौ ! नईं तो काय करेंसे ? तुई साँग (बोल) !"

झुनकी चुप रही । साहूकार के एक कारिंदे ने पिचकी का हाथ पकड़ लिया । साहूकार मुसकराया—

"ठीक है अरखित पटेल कर्ज चुका दो तो अपनी पेकी को ले जाना ।"

साहूकार के चेहरे पर विजयी दर्प छलक उठा । कारिंदे पिचकी को घसीटकर ले जाने लगे । वह चीख रही थी, कसमसा रही थी, परंतु राक्षसों के पंजे उसकी कलाइयों पर कसते जा रहे थे ;

झुनकी चीत्कार उठी । उसकी हालत उस गाय के समान हो गयी, जिससे उसका बछड़ा छुड़ाकर ले जाया जा रहा हो !

पिचकी चली गयी । बूचड़खाने में काटकर बेचे जाने के लिए । उसका गरम गोश्त खाकर साहूकार कितना खुश होगा ।

बोड़ी सिहर उठी । उसकी आंखों में पिचकी का ददराया सलोना मुख तैर आया । सामने गोल-गोल मांसल रसभीने महुए के फूल बिखरे पड़े थे और एक काला-कलूटा भालू उन्हें गपागप खाये जा रहा था । ●

—ई-४/१२२ अरेरा कॉलोनी, भोपाल

इनके भी बयां जुदा-जुदा

दिल में नफरत हो तो चेहरे पे भी ले आता हूं
बस इसी बात से दुश्मन मुझे पहचान गये

— शुजा खावर

तुम मेरे वास्ते तकलीफे तमाशा न करो
मेरा क्या मैं तो खिलौनों से बहल जाऊंगा

— इशरत किरतपुरी

बातें अभी करते हैं जो अखलास भरी लोग
दामन में लिए बैठे हैं पत्थर भी यही लोग

— नवाब अफसर

घर भी जालिम ने रवायत से सजा रखा है
कहीं खंजर कहीं शमशीर लगा रखी है

— आजाद बहावलपुरी

पी के दो सागर ये बहकने लगते हैं
जर्फ की कमी पायी हमने बादा ख्वारों में

—अजाज सिद्दिकी

एक हमें आवारा कहना कोई बड़ा इल्जाम नहीं
दुनियावाले दिलवालों को और बहुत कुछ कहते हैं

— हबीब जालिब

जिन लोगों का तौर-तरीका अच्छा है
उनके घर का बच्चा-बच्चा अच्छा है

— दानिश कमाल

झूठे वादे किया न कर हमसे
हम तेरा एतबार करते हैं

— डॉ. नवाज देवबंदी

प्रस्तुति—कुलदीप तलवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर से ही सुधा ने उमेश को आते देख लिया था । साइकिल की दोनों टंगी थैलियों में सब्जियां खूब भरी हुई थीं । थैलियों से झांकते सब्जियों के पत्ते अपनी उपस्थिति दर्शा रहे थे । आज सब्जी-मंडी में सब्जियां खूब सस्ती आयीं होंगी ? सुधा ने अनुमान लगाया । उमेश के पास आते ही वह तुरंत रसोईघर में चली आयी । और निरर्थक ही डिब्बों की उठा-पटक करने लगी, लेकिन उसका सारा ध्यान उमेश की पदचाप सुनने को आतुर था । उसे अपनी परिचित पदचाप सुनायी दी तो वह उतावली हो उठी, पर उसने अपने पर नियंत्रण किया ।

"सुधा ! कहां हो भई तुम ?"

"क्या है ?" सुधा रसोईघर की चौखट पर खड़ी हो गयी ।

"देखो, मैं क्या-क्या लाया हूं ?"

"क्या लाये हो जरा देखूं ?"

सुधा सब्जियां थैली से निकालने लगी । आलू, गोभी, मटर, टमाटर, मूली, गाजर... ।

"जरा ध्यान से देखो ।" उमेश चारपायी पर दोनों हाथ टिकाये सुधा के चेहरे पर आते-जाते भाव पढ़ रहा था ।

"इस दूसरी थैली में भी प्याज, लहसुन, अदरक हैं । आज पूरे सप्ताहभर की सब्जियां ले आये क्या ?"

"और देखो तो थैलियों में क्या है ?"

"अब क्या है ?" सुधा ने दोनों थैलियां उल्टा दीं ।

उमेश उसकी नादानी पर हंस पड़ा ।

"थैलियों में नहीं, मेरी मुट्ठी में है ।"

"क्यों पहेली बुझा रहे हो, साफ-साफ कहो ना ।" सुधा ने एक झटके में ही उमेश की मुट्ठी

कहानी : द्वितीय पुरस्कार

अंगूठी

● मालती बंसत रमोले

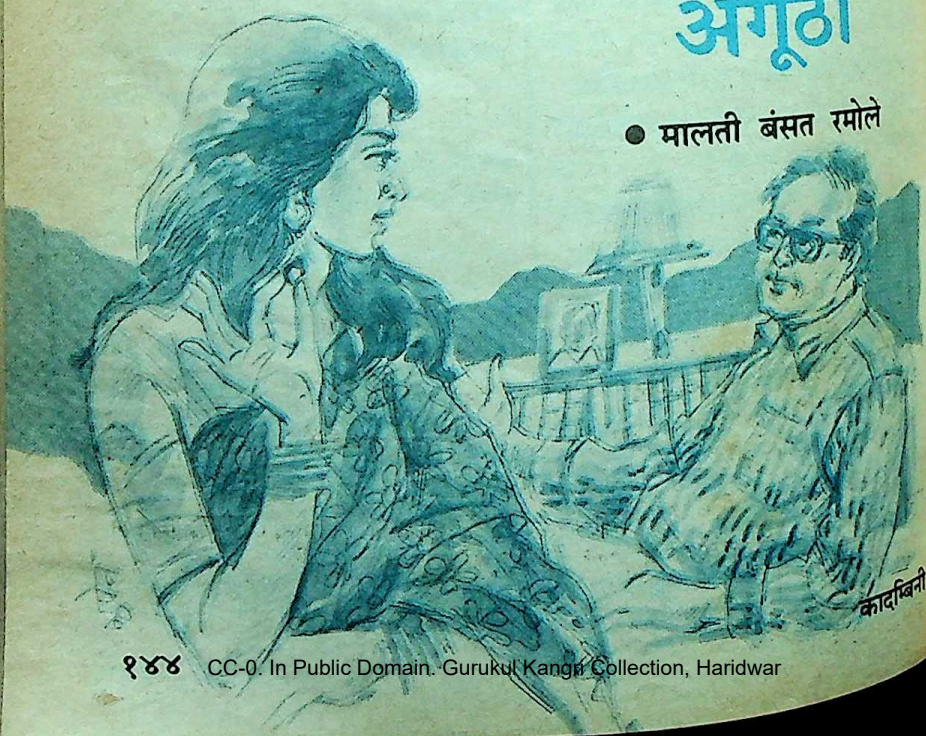

कादम्बिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों हाथों से पकड़कर खोल दी ।

उसकी हथेली पर लाल कागज में रखी सोने की अंगूठी चमचमा रही थी !

"सच ? अंगूठी ले आये," सुधा खुशी से किलक उठी ।।

"लाता कैसे नहीं वर्षों से तो पीछे पड़ी थी, अंगूठी ला दो, अंगूठी ला दो ।"

"अच्छा ! मैं पीछे पड़ी थी ? इसलिए लाये हो ? मन से तो कभी..." सुधा कृत्रिम रोष से बोली ।

"मन से तुमने कभी पानी भी लाकर दिया है..."

"ओह ! अभी लायी" उसने चलते-चलते अंगूठी पहन ली... और उमेश को पानी देकर वह फिर रसोईघर में आ गयी । उसने अपने हाथों को देखा । सोने की अंगूठी उसके हाथ में यूं में रेशम की पैबंद-सी लग रही थी । उसका मन बुझ गया, उसे याद आ रहा था वह दिन जब वह इस घर में नयी-नवेली दुल्हन बनकर आयी थी । पहली रात में उमेश ने उसके चेहरे से अधिक उसके हाथों की प्रशंसा की थी । और एक सुंदर अंगूठी उपहार में देने का वादा भी किया था, किंतु आर्थिक कठिनाइयों के चलते वह उसी समय अपने वादे को पूरा नहीं कर सका ।

सचमुच में सुधा के हाथ बहुत सुंदर थे । उसकी सहेलियां भी उसकी नरम-कोमल गद्देदार हथेलियां और नाजुक अंगुलियों को पकड़कर सहलाती थीं । वह भी अपने हाथों का पूरा ख्याल रखती थी । उसकी मां भी उससे ऐसा कोई काम नहीं कराती जिससे उसके हाथों पर बुरा असर हो ।

सुधा के भी अरमान थे । सपने के राजकुमार के । उमेश से जब उसकी मंगनी हुई तो उसे अपने सपने साकार होते दिखे । उमेश एक स्वस्थ, सुंदर, उच्च शिक्षित नौजवान था । लेकिन उनके विवाह के पश्चात ही उमेश के पिता को व्यवसाय में घाटा हो गया । वे इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सके और इसी गम में चल बसे । उमेश को भी इतने उच्च शिक्षित होने के बावजूद कोई ढंग की नौकरी नहीं मिल पायी । सुधा का भाग्यचक्र भी उमेश के भाग्यचक्र से जा मिला ।

बरतन मांज-मांजकर उसकी कोमल हथेलियां कटने-फटने लगी थीं । उसमें राख की कालिमा भर जाती । उसके हाथों की सुंदरता दिन-ब-दिन कम होने लगी और झुर्रियों की संख्या बढ़ने लगी ।

सुधा सोचने लगी, काश ! यह अंगूठी उस समय मिली होती, जब वह ब्याहकर आयी थी । तब उसे कितनी खुशी होती । उसके कोमल हाथों में यह अंगूठी भी तब सुंदर लगती । उसने ग्लानिवश अंगूठी उतारकर बक्स में रख दी ।

उमेश ने उसके हाथ में जब अंगूठी नहीं देखी तो पूछा ।

"अंगूठी कहां गयी ?"

"बक्स में रख दी ।"

"क्यों ?"

"रोज-रोज पहनने से तो उसकी चमक चली जाएगी । अंगूठी घिस जाएगी ।"

"तो क्या हुआ ? अंगूठी पहनने के लिए ही होती है, रखने के लिए नहीं । आखिर आदमी भी तो बूढ़ा हो जाता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं अपनी अंगूठी अब कभी नहीं उतारूंगी, चाहे उसकी चमक जाए, चाहे घिस जाए । इस जीवन से बढ़कर अंगूठी थोड़े ही है ।' उसने कसकर अपनी मुट्ठी बांध ली और अपनी अंगुलियों को चूम लिया ।'

"लेकिन बूढ़े झुर्रियोंदार हाथों में सुंदर अंगूठी कहां शोभा देती है ? सुधा की आंखें छलछला आयीं !

"सुधा ! मैं तुम्हारा अपराधी जरूर हूं, जो उसी समय अपने वादे को पूरा नहीं कर सका, लेकिन मैंने भरसक कोशिश की है ।" उमेश का गला भी भर-भरा उठा था ।

सुधा किसी काम के बहाने रसोईघर में चली गयी और आंसू बहाने लगी और उमेश भी अपना दुःख छिपाने के लिए अखबार पढ़ने का ढोंग करने लग ।

सुधा का अब नित्यकर्म हो गया था । सब कामों से निबटकर बक्से से अंगूठी निकालती और देर तक निहारती और खो जाती अपनी परिणय के प्रथम दिनों के खयालों में । सोचती... काश ! मेरी कोई संतान ही होती । यदि लड़की होती, तो मैं उसे यह अंगूठी पहनाकर अपने मन में संतोष भर लेती । यदि लड़का ही होता तो वह सुंदर हाथोंवाली बहू ढूंढ़ती और अंगूठी उसे उपहार में दे देती । मेरे मरने के पश्चात यह अंगूठी किन हाथों में जाएगी कौन जाने...

एक दिन सुधा उमेश से भावुक स्वर में बोली... "यदि मैं मर जाऊं तो यह अंगूठी मुझे पहना देना ।"

"मेरे तुम्हारे दुश्मन, पर अंगूठी तो जीवित मनुष्य के लिए ही होती है । तुम्हारे इतने अरमान थे, अंगूठी पहनने के, अब जब तुम्हारे पास अंगूठी है, तो उसे पहनती क्यों नहीं, अपना चाव पूरा कर लेती ?"

उमेश भी अब रोज-रोज के अंगूठी-प्रसंग से खीज उठा था, उसने कपड़े बदलकर बाजार निकलने की सोची, तभी पोस्टमैन एक पत्र दे गया । पत्र विवाह का निमंत्रण था । पत्र पढ़कर उमेश का उखड़ा मूड एकदम ठीक हो गया । वह खुशी से झूम उठा, "सुधा ! देखो बहुत अच्छा अवसर है तुम्हारे लिए अंगूठी पहनने का, मेरी भतीजी की शादी है । इसमें चलना अनिवार्य ही है ।"

"ठीक है, चलेंगे ।" सुधा कुछ सोचते हुए बोली, यों वह अकसर शादियों में जाना टालती रही थी । वह महिलाओं की आदतों से परिचित थी । यदि किसी महिला के पास गहने न हों, तो ताने मारने से नहीं चूकतीं, यदि किसी के पास गहने हों तो जल-जल मरती हैं । लेकिन इस बार नजदीकी रिश्ता और अपने पास कुछ देने के एहसास ने उससे हां करवा दी ।

विवाह-उत्सव की चहल-पहल सुधा को बहुत भली लग रही थी । लेकिन कभी कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिश्तेदारी में न जाने की वजह से उसे कोई परिचित महिला नहीं दिखायी दे रही थी । अतः वह उमेश के साथ साये की तरह चल रही थी । एक जगह उमेश को अपनी परिचित रिश्तेदार स्त्रियां बन्ने गातीं दिखीं । उमेश ने सुधा का उनसे परिचय कराकर वहीं बिठा दिया । वे स्त्रियां खूब चमक-दमक के कपड़े एवं गहनों से लदी-फदीं थीं । सुधा अपनी कनपटी पर हथेली रखे उनके गीत ध्यान से सुनने लगी । उन स्त्रियों का ध्यान भी उसकी अंगूठी पर गया और वे एक-दूसरे की आंख में देखकर मुसकरा दीं । लेकिन सुधा ने इसकी परवाह नहीं की । आज वह अपने को भरी-पूरी महसूस कर रही थी ।

कार्यक्रम रातभर चलना था । कन्या के फेरे सुबह चार बजे और विदाई सुबह सात बजे होनी थी ।

कुछ स्त्रियों व बच्चों ने भी वहीं दरी पर लोट लगा दी । सुधा की आंखें भी भारी होने लगीं । वह भी कोहनी टिकाये अधलेटी हो गयी । तभी उसे बाथरूम जाने की जरूरत महसूस हुई । वह उठी और जैसे ही बाथरुम का दरवाजा उसने खोला तो आश्चर्यचकित हो गयी । बाथरूम क्या था ? वह तो एक संगमरमरी हॉल था । जिसमें जगह-जगह पर बड़े-बड़े नक्काशीदार फ्रेम के आइने लगे थे । हर आइने के पास एक वाशबेसिन था । खूंटियों पर कीमती तौलिया लटकी हुई थीं । हर वाश-बेसिन पर सुगंधित साबुन रखा हुआ था । उसने अंगूठी उतारकर वाश-बेसिन के समीप रख दी और नल खोल दिया । पानी के तेज 'प्रेशर' से पानी की बौछारें चारों तरफ पड़ने लगीं । पानी के धक्के से अंगूठी बेसिन के छेद (होल) में जा गिरी । पलक झपकते ही यह हादसा हो गया । सुधा की चीख निकल गयी ।

"मेरी अंगूठी खो गयी ।"

"कहां खो गयी अंगूठी ? तुम्हारे हाथ में तो है ?" उमेश ने उसका हाथ पकड़कर दिखाया ।

सुधा की आंखें खुल गयीं ।

"कहां है अंगूठी ?" सुधा ने अपना हाथ देखा, सचमुच अंगूठी अपनी जगह पर थी ।

"उमेश मुझे बाथरुम ले चलो ।" उमेश उसे बाथरुम तक छोड़ने आया । सुधा बाथरूम को देखकर एक बार फिर चकित हो गयी । बाथरूम छोटा-सा था, जिसमें जीरो पावर का बल्ब टिमटिमा रहा था । वाश-बेसिन तो उसमें था भी नहीं ।

"उमेश ! वह बड़ा-सा संगमरमरी बाथरूम कहां गया ?"

"कौन-सा बाथरूम ? मैं तो वर्षों से इनका यही बाथरूम देख रहा हूं ।"

"ओह ! तो क्या वह सपना था ? इतना साफ-साफ मैंने देखा ? अच्छा हुआ वह सपना ही था, नहीं तो गजब हो जाता ।" सुधा का बदन अभी भी सपने की स्मृति से थरथरा रहा था । दिल की धड़कनें भी सामान्य नहीं थीं ।

'मैं अपनी अंगूठी अब कभी नहीं उतारूंगी, चाहे उसकी चमक जाए, चाहे घिस जाए । इस जीवन से बढ़कर अंगूठी थोड़े ही है ।' उसने कसकर अपनी मुट्ठी बांध ली और अपनी अंगुलियों को चूम लिया ।'

उमेश उसकी बड़बड़ाहट को न समझ, एकटक सुधा की ओर देखे जा रहा था ।

— ई-१२/२ शिवाजी नगर, भोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय पुरस्कार

बड़े बाबू

● सुनील भटनागर

अचानक बड़े बाबू की नींद खुल गयी। चौंक-से गये। शायद कोई सपना देखा था। ट्रेन में सोच रहे थे कि दिनभर का सफर है आज नींद अच्छी आएगी पर हर रात की तरह इस रात भी नींद दगा दे गयी।

उनके दिमाग में हमेशा की तरह सिनेमाई-से दृश्य और विचारों का तांता लगने लगा। आते समय बहू और नन्नू काफी आगे-पीछे दौड़-दौड़कर अपनत्व जता रहे थे।

बहू कहने लगी— "बाऊजी, आप जा तो रहे हैं पर आपके जाने के बाद घर सूना-सूना लगेगा।"

नन्नू कहने लगा—

"आप एक महीने रहे पर पता ही नहीं चला।"

बड़े बाबू निर्विकार रूप से बातें सुनते रहे, फीकी मुसकान उनके चेहरे पर बनी रही या बनाये रखी, पता नहीं।

बड़े बाबू को सेवा निवृत्त हुए यही कोई पांच साल हुए होंगे। अपने संगी-साथियों में बड़े किस्मतवाले माने जाते रहे हैं। दो बेटे हैं बड़ा, रज्जू, जिसे सब आर. के. शर्मा के नाम से जानते हैं, बगदलपुर की सरकार में कहीं डिप्टी कलेक्टर है। छोटा नन्नू अहमदाबाद में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में अच्छे ओहदे पर है। दोनों शादीशुदा। बड़े रज्जू के एक लड़का। नन्नू को अभी कुछ नहीं है। अच्छे खाते-कमाते हैं। आर्थिक जिम्मेदारियां जो अपने पिता के प्रति है उसे भी समझते हैं। रज्जू हर माह बड़े बाबू को पांच सौ रुपये भेजता है। नन्नू भी लगभग इतने ही, बड़े बाबू की खुद की तनख्वाह मिलाकर करीबन, डेढ़-दो हजार रुपये महीना तो हो ही जाता है।

बड़े बाबू के शायद निकटतम मित्र शीतला बाबू कहते हैं— "यार तू बड़ा 'लकी' है रे दोनों बेटे अच्छे 'सेटल' हो गये हैं। तुझे भी पैसे की कोई कमी नहीं है, मुझे देख मेरे दो बेटियां थीं जैसे-तैसे करके उन्हें अपने-अपने घर विदा किया अब पेंशन के बूते पर मियां-बीबी जैसे-तैसे गुजारा कर ही लेते हैं।"

बड़े बाबू शांत भाव से सुनते हैं, चेहरे पर गर्व की कहीं हलकी-सी भी लकीर नहीं दिखती। कारण बड़प्पन नहीं,... कुछ और है। बड़े बाबू को अपने समय में पढ़ी बहुत-सी किताबों का ज्ञान, विचार, उक्तियां समय-समय पर याद आ जाती हैं। आखिर तीस साल अपनी जिंदगी के, बतौर लाइब्रेरियन के गुजारे हैं। गवर्नमेंट कॉलेज में खाली समय में अच्छी किताबें पढ़ने का शौक रहा है। पता नहीं पिछले जन्मों का या इस जन्म का कोई पुण्य था कि दोनों बेटे अच्छे निकल गये। बेटी कोई थी नहीं। पर बेटी होने की हसरत उन्हें हमेशा रही। कारण शायद वही पुराना-लभ्य से विमुखता और अलभ्य की कामना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले साल बड़े बेटे रज्जू के यहां गये थे। सोचा था जो सामाजिक 'स्टेटस' उसे मिल रहा है उसे वे भी महसूस करें। उन्हें याद आया था कहीं पढ़ा था, "मनुष्य जीवन में हर क्षेत्र में अपनी जय, और सफलता चाहता है परंतु केवल पुत्र और शिष्य से अपनी पराजय चाहता है।"

प्रकृति के बनाये इस अलिखित से सिद्धांत के वे भी अपवाद नहीं थे।

जिस दिन पहुंचे, उस दिन स्टेशन पर रज्जू सरकारी जीप लेकर आ गया था, दूर से ही लाल बत्ती जो गाड़ी के ऊपर लगी थी, बंद थी पर चमचमा रही थी। रज्जू ने उनके पांव छुए, उनका सामान उठाने के लिए साथ में आये अर्दली को आंख से इशारा किया। अर्दली ने मुस्तैदी से लोहे की पेटी और हाथ की सिली बड़ी-सी थैली उठा ली। बड़े बाबू को लगा अर्दली मन ही मन मुसकरा रहा है। उनको लगा शायद ये उनका बहम हो। गाड़ी में पीछे की सीट पर रज्जू और बड़े बाबू बैठे, गाड़ी चली, रास्ते में चौराहों पर खड़े कांसटेबल का अचानक से सावधान की मुद्रा में होकर गाड़ी को सलाम करना उन्हें भी अच्छा लगा। दो-चार चौराहों, फिर खुली सड़क, फिर सरकारी क्वाटर्स फिर बंगले की कतार फिर एकाएक गाड़ी रुकी। रज्जू ने दरवाजा खोला, बड़े बाबू ने बड़ी गर्वीली मुसकान से रज्जू का बंगला देखा, अंदर गये। बाहर ड्राइंग रूम में सोफे पर बिठाकर रज्जू अंदर गया। दो-तीन मिनट बाद अंदर के कमरे से फुसफुसाने की आवाज आयी और किसी महिला स्वर की आवाज आयी। फिर परदा हटा, रज्जू अपनी गोद में मुन्ने को लेकर आया, अपने बड़े बाबू को पहली बार देखकर और अपरिचित जानकर वापस रज्जू के कंधे पर चिपक गया। बड़े बाबू ने बड़े प्यार से उसे दुलारते हुए गोद में लेने की कोशिश की पर नहीं आया, बड़े बाबू ने थोड़ा जबरदस्ती लेने की कोशिश की तो रोने लगा।

रज्जू कहने लगा— "अभी नींद से उठा है इसलिए उसका 'मूड' अभी ठीक नहीं है बाद में देखना आपसे कितना हिल-मिल जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी नौकर चाय ट्रे में लेकर आया, साथ में कुछ नमकीन और बिस्किट थे। वे कहने लगे— "अरे रज..." पर उसका नाम पूरा बोलने से पहले ही रुक गये और कहने लगे— "तुम्हें तो मालूम ही है कि बिना नहाये मैं यह सब नहीं लेता हूं। पहले नहा लूं।"

कहकर अपनी लोहे की पेटी जो अर्दली ने सोफे के पीछे रख दी, वहां जाकर खोलने लगे, उसमें से चांदी का करधना अपने पोते को देने लगे। मुन्ने ने भी खिलौना समझ ले लिया। बड़े बाबू के मन में एक बात बार-बार आ रही थी कि आये हुए आधा घंटा होने चला पर बहू अभी तक नहीं आयी। उन्होंने आखिर कह ही दिया— "बहू नहीं दिखायी दे रही ?"

रज्जू जैसे सोते से जागा और मुन्ने सहित तेजी से अंदर गया। फिर फुसफुसाने की आवाज, फिर वही स्त्री स्वर, कुछ ही मिनटों में बहू कमरे में दाखिल हुई। चेहरे पर परिचित होने की मुसकान लाते हुए दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते की। बड़े बाबू थोड़े-से गंभीर हो गये। मेहमान और मेजबान की तरह सोफे पर पास में आते हुए उनकी बराबरी पर बैठ गयी। पूछने लगी— "सफर में कोई परेशानी तो नहीं हुई, बाऊजी।"

और फिर इधर-उधर की बातों का सिलसिला चल पड़ा। बातों के दौरान बड़े बाबू को रज्जू की शादी में लजीली-सी बहू याद आयी जिसने उनके पांव झुककर,झुके-झुके तीन बार छुए थे। तब रज्जू की मां भी जिंदा थी। बड़े बाबू उस समय सोच रहे थे कि उनसे बड़ा भाग्यवान कोई नहीं होगा, मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देने लगे थे। रज्जू की मां भी दो बरस पहले ही गुजरी थी, पेट का कैंसर था, पता ही नहीं चला था, जब स्थिति बस से बाहर हो गयी तब पता चला। अब छोटे कस्बे में इससे ज्यादा क्या हो सकता था।

रज्जू की मां की बड़े बाबू को गाहे-बगाहे याद आ जीती है। काश, आज जिंदा होती तो उम्र के इस पड़ाव में अकेलापन तो इतना न कचोटता।

अपने ख्यालों से बाहर आये, तब तक बहू अंदर जा चुकी थी। रज्जू ने मेहमानों के कमरे में बड़े बाबू का सामान रखवाया। और बड़े बाबू दैनिक दिनचर्या में लग गये।

दोपहर के खाने में रज्जू और वे दोनों ही थे। बहू ने खाना परोसा, खाना शहरी तरीके से बना और परोसा गया था। उन्हें जमीन पर बैठकर खाना खाने के वे दिन याद आये जब दफ़्तर से आने के बाद शाम को अपने अगल-बगल में रज्जू और नन्नू को बिठाकर सभी साथ खाना खाते थे। तब इतना कुछ नहीं था, न सलाद, न इतनी सब्जियां, न इतने पकवान, सिर्फ एक सब्जी या दाल। हां पर रज्जू के मां के हाथ की बनी हरी मिर्च, लहसुन की चटपटी चटनी जरूर होती थी। उन्हें लगा— जैसे इस सब को खोकर और ये सब पाकर वे घाटे में रहे हैं। शायद उन्नति और उपलब्धि की सभी को थोड़ी-बहुत कीमत तो देनी ही पड़ती है।

उस दिन सोफे पर बड़े बाबू लुंगी-बनियान में बैठे थे। रज्जू अचानक आया और कहा— "बाऊजी आप आराम करिये न अपने कमरे में, यहां क्या कर रहे हैं ?"

एक और दिन जब ड्राइंग रूम में कुछ सरकारी अधिकारी आये थे, तब भी बड़े बाबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मेहमान कमरे में इंतजार करते रहे कि शायद उन अधिकारियों से परिचय करवाने बुलवाये पर यह मन की मन में रह गयी । पर बहू की मेहमानों के साथ बात करने की आवाज व हंसी की खनक आती रही ।

बड़े बाबू ने टोह लेने के लिए हफ़्तेभर बाद कहा— "बेटा, अब मैं जाऊंगा ।"

रज्जू औपचारिक रूप से कहने लगा— "बाऊजी, कुछ दिन और रुकते तो अच्छा था ।" रज्जू का कोई विशेष आग्रह नहीं था अतः दूसरे ही दिन अपने घर के लिए रवाना हो गये ।

अभी रात का शायद अंतिम प्रहर होगा । कहीं दूर कुत्ते के भौंकने की आवाजें आ रही थीं । बड़े बाबू ने उठकर पानी पिया, वापस आकर लेट गये ।

करीब महीनेभर पहले वे नन्नू के यहां भी गये थे । दिनभर घर पर अकेले रहना, उनके अकेलेपन को और अधिक बढ़ाता गया ।

शाम को लगभग रोज ही नन्नू और बहू कंपनी की गाड़ी से कहीं जाते थे । शायद क्लब जाते होंगे । अब नन्नू का फ़्लैट भी दूसरे माले पर था, उनसे उतरना-चढ़ना बनता नहीं था । लिफ्ट अकसर खराब रहती थी । वैसे कभी-कभार चले भी जाते थे तो बड़े शहर की भागदौड़, बसों, स्कूटरों और अन्य गाड़ियों की रेलमपेल उन्हें बिलकुल नहीं सुहाती थी ।

अभी हफ़्तेभर पहले की घटना नहीं होती तो शायद परिस्थिति कुछ और होती । बड़े बाबू घर में उस दिन बेचैनी महसूस कर रहे थे, बाजार घूमने निकले पर रास्तों की भूल-भुलैया में भटक गये । याद करने पर नन्नू के घर का फोन

नंबर भी याद नहीं आया । आखिरकार ट्रैफिक पुलिसवाले से नन्नू के कार्यालय का पता पूछा । संयोग से वह करीब ही था । अलग-अलग विभागों और फ़्लोर पर होते हुए नन्नू के केबिन तक पहुंचे । नन्नू उन्हें देखकर हड़बड़ा गया । पूरा किस्सा नन्नू को बताया । नन्नू तुरंत अपनी गाड़ी से घर छोड़कर आया । उस दिन से घर का अजनबीपन और बढ़ गया ।

आखिर कल सुबह वे नन्नू के यहां से भी विदा होकर अपने घर रात को आठ बजे के आसपास पहुंचे । अपने घर ! सुबह होने को आयी । उजाला हो चला था । नित्य कर्म से निवृत्त होकर, अपने हाथों से खाना बनाकर खाया । कई दिनों बाद खाने में अपरिचित-सी मिठास व सौंधापन लगा । खा-पीकर घूमने निकले । रास्ते में शीतला बाबू मिल गये, वही उनके लंगोटिया-यार !

"क्यों हो आया अपने बेटे-बहू के घर ? चेहरे पर सुर्खी आ गयी है... बड़े बाबू, शीतला बाबू के कंधे पर हाथ रखकर साथ-साथ चलने लगे । और यकायक शीतला बाबू से कहने लगे, "यार शीतला तू बड़ा 'लकी' है ।" और शीतला बाबू, बड़े बाबू का मुंह देखने लगे ।

— ई-३/३१३, अरेरा कॉलोनी, भोपाल

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

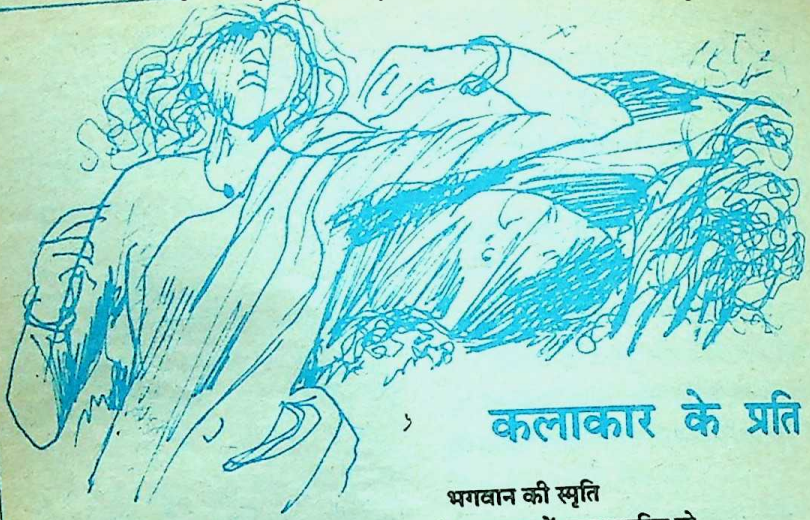

यादों के बीच

व्यस्त हूं मैं
व्यस्तता एक सुख है
एक रास्ता है सब कुछ भुलाने का
मन की उलझन मिटाने का
लेकिन—
आरी की तरह चीरती एक याद
व्यस्तता में भी इतनी कहां है शक्ति
कि तुझे पूरी तरह भूलने में सहायक हो सके ।
मात्र
यह सत्य है कि जीवन में बिखरे कांटे
टीस का अहसास
कि भूल जाऊं मैं सब कुछ
किंतु
क्या कभी
यह हो पाएगा ?

— गोविंद अक्षय

सारस्वत सदन, १३-६-४११/२ रामसिंहपुरा
कारवान, हैदराबाद-५००२६७

कलाकार के प्रति

भगवान की स्मृति
मानव मन में सदा स्थापित रहे
इसे कार्यान्वित करने की शक्ति
ब्रह्मा ने कुछ को प्रदान की है ।
काष्ठ, मिट्टी, धातु, पत्थर
सभी को अपने शिल्पी हाथों से
परिशुद्ध कर
ऐसी प्रतिमाओं का सर्जन करते हैं
जो कि इंसान को
अपनी कोमल छाया में सहेज लेती हैं ।
ऐसा आभास होता है
कि यदि कलाकार
इन पाषाण मूर्त्तियों के भीतर
अपने श्वास भी टपका देते
तो ये सजीव हो
इंसानों के बीच में विचरतीं
परिपूर्णता की खोज में
हमारा मार्गदर्शन करने
आगे बढ़तीं ।
(गिल्डा मंसूर की कविता का भावानुवाद)

— शीला गुजराल

जी-१३ महारानी बाग
नयी दिल्ली-६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

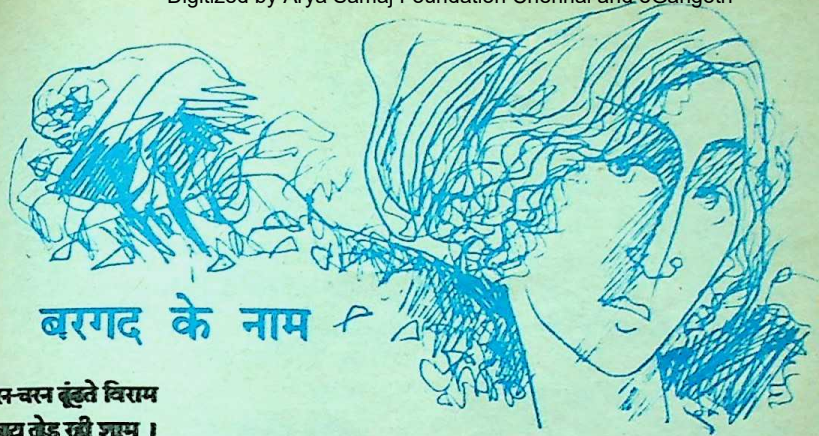

बरगद के नाम

चरन-चरन ढूंढते विराम
सन्नाटा तोड़ रही शाम ।

मुखड़ों के मेले में
किस-किस को समझें
अपनों की चाहत है
किस-किस से उलझें
सबका अपना-अपना काम ।

सांसों की डोर बंधी
कठपुतली नाचे
नाटक का मंच सजा
रामायण बांचें
राम नहीं अब है उपनाम ।

दर्द यह सभी का है
झूठी मुसक्रानें
खोज रहे लोग यहां
सुख की दुकानें
बदले हैं खुशियों के दाम ।

धूल ढके पांव थमें
शोर भरी मंजिल
सूरज को आना है
जाग रही महफिल
गांव लिखी बरगद के नाम ॥

—इंदिरा मोहन

१२ लखनऊ रोड
दिल्ली-५४

याद आती है तुम्हारी

याद आती है तुम्हारी हर अदा अपनी
जागते-सोते हमेशा हम सितारे हैं ।
रंग भरती है तुम्हारी हर कला अपनी
स्वेतवरनी प्रेरणा तुम हम निहारे हैं ।
लेखनी मेरी तुम्हारी हर भला अपनी
छन लगा जैसे झमाकर हम सिधारे हैं ।
तड़पती आत्मा मेरी, तुम्हारी हर छला अपनी
पात पर झड़ते पलक के अश्रु सारे हैं ।
सगर है चांद-सूरज ही, लुटाते रश्मियां अपनी
गगन को झांककर देखो चमकते ढेर तारे हैं ।
सुभग हो यात्रा मेरी विदाई तुमने दी अपनी
हमें मंजिल मिले जीवन डगर तो ढेर सारे हैं ।
कसक ही दर्द बन जाता पिला दो जहर तुम अपना
सपन में श्रुति बन आना, अकेले हम अधूरे हैं ।
'विहंगम' हर दिशा उड़ते, मगर है घोसला
अपना—
'कहीं पर धूप, कहीं छाया', धरा पर हर नजारे हैं ।

— बिलट पासवान 'विहंगम'

६-एच/४२, बहादुरपुर
हाउसिंग कॉलोनी—पटना-२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्श

आपकी हंसती,
खिलखिलाती आंखों का स्पर्श
समूचा
आल्हादित करता हुआ, मुझे
खामोश साज की
मधुरिम, आवाज-सा खनकता है
और, बहकते कदम
स्वतः सीधे पड़ने लगते हैं
शर्मशारी से
मेरी ओर खिसकते
आपके झिझकते
विह्वल हाथों का स्पर्श
भय से, पसीजती
मेरी हथेली को
अपनी
गिरफ़ में जकड़ता है
और, कुछ पल
ठिठककर
वहीं, ठहर जाते हैं
सहमे
घबराये, थरथराते
मेरे अधरों को, छूने को आतुर
अप्रतिम
अद्भुत, आपके अधरों का स्पर्श
झंकृत करता है
वीणावत्, समूचा अस्तित्व
हरहराकर
एक उद्वेलित बांध
तटबंध तोड़ने को आतुर हो
स्व चक्रव्यूह से
मुक्ति तलाशता है, किंतु...
अनुत्तरित
इस 'किंतु' का उत्तर
शायद
आपके पास हो
क्योंकि
आप जानते हैं, स्पर्श की, पहचान को
एक स्पर्श से
जन्मे रिश्ते, उसके नाम को
जिंदगी में
एक स्पर्श ही तो, तलाशते हैं लोग, आजन्म
भड़भड़ाते हैं
किसी अपने के, एक स्पर्श के लिए
और, यही तलाश
उनके हाथों को, हजारों हाथों तक, ले जाती है
किंतु...
फिर वही अनुत्तरित किंतु...
इल्तिजा यही है,
स्पर्शों को, यूं न बांटा कीजिए
एक झलक का स्पर्श
प्रतीक्षा का, अंदाज बदल देता है
आप जानें या न जानें
एक जिंदा स्पर्श
जिंदगी का, अंदाज बदल देता है

—डॉ. आशा शुक्ला
प्रवक्ता, उच्चतर समाज विज्ञान संकाय
कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर-२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैली चादर

ये मजहबी किताबें जिनको पंडित तू परिभाषित करता
मुल्ला जिनका हवाला देकर बंदों को अनुशासित करता
पैगंबर-युग पुरुषों ने जो काम हमारे नाम लिखे हैं
ओ उपदेशक बता कहां पर नफरत के पैग़ाम लिखे हैं ?

उसने अपने उपनिषदों में सबको एक कबीला बोला
रंग-वेश की, धर्म-देश की भेद-तुला पर हमें न तोला
ये सारा जो जग जड़-चेतन फैली हुई खुदाई है
सब में उसका नूर समाया, सब उसकी परछाईं है ।

बजा आत्मा का इकतारा शब्द-ब्रह्म की अलख जगाये
तेरा-मेरा द्वैत मिटे तो नर से नारायण हो जाए
चाहे जैसे उसे पुकारो, अलख-निरंजन, अलख निरंजन
या अल्ला हू, या अल्ला हू मनके गिनकर कर लो सुमिरन
मन का मनका नहीं फिरे तो सारा जाप अकारथ जाए

काबा-काशी के चकफेरे चाहे सौ-सौ बार लगाये,
धरम-करम के कपड़े पहने फिर भी तन नंगा का नंगा
मन चंगा तो एक कठौती में भर जाती सारी गंगा ।
जिसने दिया उमर का करजा ब्याज वसूलेगा वो साहू
चाहे जैसे जीवन जी लो उधरे अंत न होय निबाहू ।

परहित सरिस धरम नहिं भाई-संत महाकवि तुलसी जाने
पीर-फकीरे वैष्णव जन तो पीर पराई को पहिचाने
मन की गहन गुफा में बैठा अनहद नाद सुने रे अवधू
बाहर तन संसारी भीतर रमता मस्त फकीरा साधू ।

घट के पट में दरसन कर ले घूंघट-पीछे छिपे पिया का
मन-मधुवन में रास रचा ले नटवर नागर सांवलिया का
नहीं जतन से पहनी-ओढ़ी ज्यों की त्यों कैसे धर जाए
कवि 'मयूख' की मैली चादर कोई घाट नहीं धो पाये ।

— बशीर अहमद 'मयूख'

— २ ल १७, विज्ञान नगर
कोटा, (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य चौबीस घंटे चमकता रहा

■ जोशुआ

'द बुक' अर्थात बाइबिल, संसार की प्रायः सभी भाषाओं में अनूदित। बाइबिल एक इतिहास की तरह भी पढ़ी जाती है। 'द लिविंग बाइबिल' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक का एक विशेष संस्करण 'द बुक' नाम से प्रकाशित किया गया है। १२८५ पृष्ठों की इस वृहद पुस्तक में अनेक खंड हैं, जिनमें 'ओल्ड टेस्टामेंट' भी शामिल है। संपूर्ण पुस्तक ईसा से बारह सौ वर्ष पूर्व से लेकर ईसा के जीवन तक की प्रत्येक घटना का विस्तृत इतिहास प्रस्तुत करती है। क्रिसमस के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी वृहद रोचक कृति का एक अंश। प्रस्तुति : दुभशु। प्रकाशक : टेंडेल हाऊस पब्लिशर्स, इनकॉरपोरेटेड, वीटन, इलो आइंस (यू.एस.ए.) ६०११८९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जोशुआ' : [illegible] अथवा बारहवीं शती । विषय वस्तु : मोजेस के निधन के बाद इजरायली जाति का नेतृत्व जोशुआ को सौंपा गया । इजरायल देश की निर्माणावस्था तक जोशुआ ही इजरायली सेना का प्रधान सेनापति बना रहा ।

जोशुआ की इस पुस्तक का उद्देश्य यह बताना है कि ईश्वर अपने वचन का पूर्णतः पालन करता है । उसने इजरायलियों को भूमि देने का वचन दिया और यह वचन पूरा हुआ ।

मोजेस की मृत्यु के बाद जेवोहा (ईश्वर) ने जोशुआ से, जो नुन का पुत्र और मोजेस का सहायक था, कहा,

"अब जबकि मेरे अनुयायी की मृत्यु हो गयी है (और तुम इजरायल के नये नेता हो) तुम पर मेरे लोगों के नेतृत्व का भार है । तुम्हें उन लोगों को जोर्डन नदी पार करा उस भूमि पर ले जाना है, जिसका मैंने तुम्हें वचन दिया है । मैंने मोजेस से जो कहा, वही तुमसे भी कहता हूं— 'जहां भी तुम जाओगे, वह भूमि इजरायल का हिस्सा बन जाएगी— नेगेब रेगिस्तान से उत्तर में लेबनान की पहाड़ियों के दक्षिण तक, और पश्चिम में भूमध्य सागर से पूर्व में फरात नदी तक । इसमें हित्तियों की भी सारी जमीन शामिल है । जब तक तुम जीवित रहोगे, कोई भी तुम्हारा विरोध नहीं कर पाएगा, क्योंकि मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूंगा, ठीक उसी तरह जिस तरह मैं मोजेस के साथ था, मैं न तुम्हें कभी त्यागूंगा और न कभी मदद करने से चूकूंगा ।

"साहसी, निर्भय और सामर्थ्यवान बनो, क्योंकि तुम मेरे लोगों के एक सफल नेता बनने जा रहे हो । मैंने उनके पूर्वजों को जिस भूमि पर बसाने का वचन दिया है, वह सारी भूमि तुम जीतने जा रहे हो । बस, तुम्हें केवल साहसी और सामर्थ्यवान बनना है । और, हर उस नियम-कानून का पालन करना है, जो मोजेस ने तुम्हें बताये हैं । ऐसा करोगे तो जो भी काम करोगे, उसमें पूरी तरह सफल होगे । इन नियम-कानूनों के बारे में अपने लोगों को हमेशा याद दिलाते रहो और तुम भी हर दिन, हर रात उनके बारे में सोचते रहो । ताकि तुम्हें विश्वास हो जाए कि तुम उनका पूरी तरह पालन करते रहोगे । तभी तुम्हें सफलता भी मिलेगी । हां, निर्भय और सामर्थ्यशाली बनो । भय को, संदेहों को पूरी तरह जड़ से निर्मूल कर दो । क्योंकि यह बात सदा याद रखो कि तुम्हारा स्वामी (लॉर्ड) तुम्हारा ईश्वर, तुम जहां भी जाओगे, तुम्हारे साथ रहेगा ।"

(यह निर्देश सुनकर) जोशुआ ने इजरायल के सभी नेताओं से कहा कि वे लोगों से जोर्डन नदी को पार करने के लिए तैयार रहें । "तीन दिनों के भीतर हम नदी पार करेंगे और जेवोहा ने जो भूमि हमें दी है, उस पर विजय प्राप्त कर, वहां रहेंगे ।"

इसके बाद जोशुआ ने रूबेन, गैड, मानास्सेह की अर्धजातिवाले कबीलों के सरदारों को बुलवाया और मोजेस के साथ उनकी जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संधि हुई थी, उसे याद दिलाया। उसने कहा, "जेवोहा ने जोर्डन नदी के पूर्व की भूमि तुम्हें दी है। मोजेस ने उनसे कहा था कि 'तुम्हारी पत्नियां, तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे पशु यहीं रह सकते हैं लेकिन तुम्हारी सेनाओं को पूरे हथियारों से लैस होकर जोर्डन नदी को पार करने में अन्य लोगों का नेतृत्व करना पड़ेगा और नदी के उस पार की भूमि को जीतने में उनकी सहायता करनी पड़ेगी। जब तक पूर्णतः विजय प्राप्त नहीं होती, तब तक तुम लोगों को वहीं रहना पड़ेगा। इसके बाद ही तुम जोर्डन नदी के पूर्व में बस सकते हो।'

कबीले के सरदारों को यह संधि याद थी। उन्होंने जोशुआ को अपना प्रधान सेनापति मानकर उसकी हर आज्ञा का पालन करने का वचन दिया।

उन्होंने जोशुआ को आश्वस्त किया, "हम जिस तरह मोजेस की आज्ञा मानते थे, ठीक उसी तरह तुम्हारी आज्ञा का पालन भी करेंगे। और जिस भांति ईश्वर मोजेस के साथ था,उसी प्रकार वह तुम्हारे साथ भी रहे। चाहे कोई व्यक्ति क्यों न हो, यदि वह तुम्हारी अवज्ञा करे तो वह मृत्यु को प्राप्त हो। अतः तुम साहस और ताकत के साथ नेतृत्व करो।"

राहाब ने बचाये जासूस

(२)

इसके बाद जोशुआ ने असासिया स्थित इजरायली शिविर से दो जासूस जोर्डन नदी पार करने के लिए भेजे ताकि वे उस पार की स्थिति का, विशेषकर जेरिको शहर की स्थिति का पता लगायें। जासूस एक सराय में पहुंचे। इस सराय की मालकिन राहाब नामक एक वेश्या थी। जासूस इस सराय में रात बिताना चाहते थे पर किसी ने जेरिको के राजा को उनके आगमन की सूचना दे दी कि दो इजरायली, जो शायद जासूस हैं, उस शाम शहर में आ पहुंचे हैं। राजा ने राहाब की सराय में पुलिस सिपाही भेजे। दस्ते के प्रमुख ने राहाब से कहा कि वह उन दोनों जासूसों को पुलिस के हवाले कर दे। उसने राहाब को बताया, "वे जासूस हैं। उन्हें इजरायली नेताओं ने यह पता लगाने भेजा है कि हम लोगों पर वे कहां से किस तरह आसानी से हमला कर सकते हैं।"

पर राहाब ने उन दोनों इजरायली जासूसों को छिपा दिया था। उसने पुलिस दस्ते के प्रमुख को बताया कि 'वे लोग यहां आये थे जरूर, पर मैं नहीं जानती थी कि वे जासूस हैं। शाम होते ही वे यहां से चले गये थे। वे कह रहे थे कि शहर का दरवाजा बंद होने ही वाला है, अतः वे जा रहे हैं। वे लोग कहां गये, मैं यह नहीं जानती। यदि आप शीघ्रता से काम लें तो शायद उन्हें पकड़ सकते हैं।'

वास्तविकता यह थी कि राहाब ने उन्हें छप्पर पर सूखने के लिए डाली गयी पुआल के नीचे छिपा दिया था। जब पुलिस सिपाही इजरायली जासूसों को ढूंढ़ने जोर्डन नदी के किनारे चले गये तो राहाब छप्पर पर गयी और उसने उन दोनों जासूसों से कहा, "मैं जानती हूं कि तुम्हारा ईश्वर मेरे इस देश को तुम लोगों को सौंपनेवाला है। हम सब तुम लोगों से भयभीत हैं। हर व्यक्ति 'इजरायल' शब्द सुनते ही आतंकित हो जाता है। क्योंकि हमने सुना है कि जब तुम लोगों ने मिस्र देश छोड़ा तो कैसे ईश्वर ने लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सागर पर तुम्हारे लिए रास्ता बना दिया। हम यह भी जानते हैं कि जोर्डन नदी के पूर्व के सिहोन और ओग के आरमीयाई राजाओं की तुमने क्या दशा की, तुमने किस तरह उनकी जमीन बरबाद कर दी, किस तरह इन राजाओं के लोगों का सर्वनाश कर दिया। अगर हम तुमसे भयभीत हैं तो इसमें आश्चर्य कया ? इन सब बातों को सुनकर किसी में लड़ने की ताकत नहीं रही है क्योंकि तुम्हारा ईश्वर कोई साधारण देवता नहीं, वह स्वर्ग का सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान देवता है। अब मैं एक बात का अनुरोध करती हूं। अपने ईश्वर के नाम पर यह शपथ लो कि जब तुम जेरिको पर विजय पा लोगे तो तब मुझे अपने माता-पिता, अपने भाई-बहनों के साथ, उनके परिवारों के साथ जिंदा रहने दोगे। मैंने जिस तरह तुम्हारी सहायता की है, उसे देखते हुए यह एक न्यायसंगत अनुरोध है।"

दोनों जासूसों ने राहाब का यह अनुरोध मान लिया। उन्होंने कहा, "यदि तुम हमारे साथ विश्वासघात नहीं करोगी तो हम यकीन दिलाते हैं कि तुम्हें और तुम्हारे परिवार को किसी प्रकार की हानि नहीं होने पाएगी।" उन्होंने उसे वचन दिया, 'हम अपने प्राणों की बाजी लगाकर तुम्हारी रक्षा करेंगे।'

राहाब का घर शहर की दीवार पर था। उसने एक खिड़की के रास्ते रस्सी लटकाकर उन्हें भागने में मदद की।

"पहाड़ों की ओर भाग जाओ।" राहाब ने उनसे कहा, "वहां तीन दिनों तक छिपे रहना। जब तक तुम्हें खोजने के लिए निकले लोग लौट आएंगे। तब तुम अपनी राह चले जाना।"

राहाब से विदा लेने के पूर्व दोनों जासूसों ने

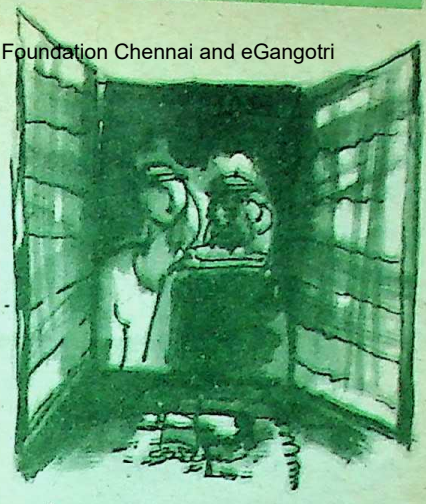

उससे कहा, "यदि इस खिड़की से यह रस्सी लटकी न रही, और तुम्हारे सभी संबंधी— माता-पिता, भाई-बहन तथा और भी अन्य लोग इस घर के भीतर छिपे न रहे तो यदि उन्हें कुछ हो गया तो हम जिम्मेदार नहीं होंगे।" (तात्पर्य यह कि संकेत रूप में पहचान के लिए रस्सी लटकी रहने दो और परिवार के लोगों को बाहर न निकलने दो।) जासूसों ने आगे कहा, "यदि वे घर से बाहर सड़क पर निकलते हैं तो हम कोई जिम्मेदारी नहीं लेते पर हम कसम खाते हैं कि इस घर के भीतर न कोई मारा जाएगा, न घायल किया जाएगा। हां, यदि तुम हमसे विश्वासघात करोगी तो उस कसम का हम पर कोई बंधन नहीं रहेगा।"

"मैं आपकी शर्तें मानती हूं।" राहाब ने कहा, और उसने खिड़की पर वह रस्सी लटकी रहने दी।

दोनों जासूस पहाड़ों पर चले गये और तीन दिनों तक वहां छिपे रहे। जब उन्हें खोजने निकले लोग असफल होकर लौट गये तो दोनों जासूस पहाड़ों पर से उतरे और नदी पार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोशुआ के पास आये। जो कुछ भी मार्ग था, उसकी उन्होंने जोशुआ को जानकारी दी।

"निश्चय ही ईश्वर हमें वह सारी भूमि देंगे।" उन जासूसों ने कहा, "क्योंकि वहां सारे लोग हमसे बुरी तरह भयभीत हैं।"

लोगों ने सूखी धरती पर जोर्डन नदी पार की

(३)

दूसरे दिन सुबह जोशुआ और इजरायल के सारे लोगों ने असासिया से प्रस्थान किया और शाम तक जोर्डन नदी के किनारे आ पहुंचे। वहां नदी पार करने से पूर्व कुछ दिनों उन्होंने विश्राम किया।

तीसरे दिन अधिकारियों ने शिविर में जाकर लोगों को ये निर्देश दिये—

"जब तुम लोग पुजारियों को देवता की नाव ले जाते हुए देखो तो उनका अनुसरण करना शुरू कर दो। हम लोग जहां जा रहे हैं, वहां तुम पहले कभी नहीं गये हो। अतः वे तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे। फिर तुम सब उनसे लगभग आधा मील दूर रहना, तुम्हारे और देवता की नाव के बीच काफी फासला रहना चाहिए। इस बात का पूरा ख्याल रखना कि कभी उसके पास तक न पहुंचने पाओ।"

इसके बाद जोशुआ ने उन सबसे शुद्ध होने के लिए कहा। 'क्योंकि कल' उसने कहा, "ईश्वर एक महान चमत्कार करेगा।"

प्रातःकाल जोशुआ ने पुजारियों को निर्देश दिया, "देवता की नाव उठाओ और नदी पार करने में हमारा नेतृत्व करो।"

और इस तरह सबने प्रस्थान किया।

ईश्वर ने जोशुआ से कहा, "आज मैं तुम्हें महान सम्मान प्रदान करूंगा ताकि सारा इजरायल जान ले कि मैं तुम्हारे साथ हूं। ठीक उसी तरह,जिस तरह मैं मोजेस के साथ था। पुजारियों को निर्देश दो कि वे नदी तट पर पहुंचकर रुक जाएं।"

इसके बाद जोशुआ ने सारे लोगों को एकत्र किया और उन्हें बताया, "यहां आओ और सुनो कि तुम्हारे ईश्वर ने क्या कहा है। आज तुम सब यह जानने जा रहे हो कि जीवित ईश्वर हमारे साथ है और वह बिना व्यवधान के कनानी, हित्तियों, हिवित्तियों, पेरिजेत्तियों, गिरगाशियतों, अमोरियोतियों और जेबुसितियों को खदेड़ देगा। इस भूमि पर रहनेवाले सारे लोगों को वह निष्कासित कर देगा। तुम सब इसी भूमि पर शीघ्र ही अधिकार करनेवाले हो। जरा विचार करो। ईश्वर की यह नाव उस ईश्वर का, जो सारी धरती का स्वामी है, नदी पार करने में तुम्हारा नेतृत्व करेगी।

"अब एक विशेष कार्य के लिए हर कबीले से बारह व्यक्तियों का चुनाव करो। देवता की नाव ले जानेवाले पुजारी जब नदी जल का स्पर्श करेंगे तो नदी का बहाव रुक जाएगा, मानो किसी बांध ने उसका पानी रोक लिया है। पानी इस तरह एकत्र होने लगेगा मानो किसी अदृश्य दीवार ने उसे रोक लिया है।"

वह फसल का मौसम था और जोर्डन नदी अपने तटों को तोड़कर बह रही थी। पर जैसे ही लोग नदी पार करने के लिए आगे बढ़े और देवता का ध्वज ले जा रहे पुजारियों के पैरों ने जल का स्पर्श किया, जेरिको के पास स्थित अदम शहर तक नदी का बहाव रुक गया और पानी इस तरह चढ़ने लगा, मानो किसी बांध ने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे रोक लिया है । इसके बाद का पानी मृत सागर की ओर तब तक बहने लगा, जब तक कि नदी का तल सूख न गया । इसके बाद जेरिको शहर के सबसे पास बहनेवाले हिस्से से सूखी नदी पार कर ली । देवता की नाव ले जानेवाले पुजारी सूखी नदी के बीच तब तक खड़े रहे, जब तक सारे लोग इस पार से उस पार नहीं पहुंच गये ।

लोगों ने स्थापित किया स्मारक

(४)

जब सारे लोग सुरक्षित उस पार पहुंच गये, तब जेवोहा ने जोशुआ से कहा, "हर कबीले से विशेष कार्य के लिए चुने गये बारह लोगों से कहो कि वे जहां पुजारी खड़े हैं, वहां से एक-एक पत्थर उठाकर लायें और आज रात जहां तुम सब विश्राम करोगे, वहां एक स्मारक बनायें ।"

फलतः जोशुआ ने उन बारह लोगों को बुलाया और उनसे कहा, "जोर्डन नदी के बीच में, जहां ध्वज है, जाओ । तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने कांधे पर एक पत्थर लाएगा— कल बारह पत्थर, बारह कबीलों में से प्रत्येक के लिए एक । हम उनका एक स्मारक बनाने में उपयोग करेंगे ताकि भविष्य में जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछेंगे कि 'यह स्मारक किसके लिए है ?' तो तुम उन्हें बता सको कि 'यह स्मारक इस बात को याद दिलाने के लिए है, जब देवता की नाव नदी पार करने लगी तो जोर्डन नदी का बहाव थम गया था ।' यह स्मारक इजरायल के लोगों को इस चमत्कार को सदा याद दिलाता रहेगा ।

अतः जोशुआ ने जैसा कहा था, उन लोगों ने वैसा ही किया । जोर्डन नदी के बीच से वे हर कबीले के लिए एक-एक पत्थर लाये, उसी प्रकार जैसा ईश्वर ने जोशुआ को निर्देश दिया था । वे उन पत्थरों को उस स्थान तक ले गये जहां रात में उन्हें विश्राम करना था । उन्होंने वहां एक स्मारक बनाया । जोशुआ ने नदी के बीचोबीच जहां पुजारी नाव लिये खड़े थे, बारह पत्थरों से एक और स्मारक बनाया । यह स्मारक आज भी है ।

मोजेस ने जोशुआ को जेवोहा के जो निर्देश बताये थे, उनके पूरा होने तक पुजारी नाव लिये नदी की सूखी धरती पर खड़े रहे । इसी बीच लोगों ने जल्दी-जल्दी नदी पार की । जब सब लोग नदी पार कर चुके तो खड़े होकर देखने लगे कि ध्वज लिये पुजारी किस तरह नदी पार कर रहे हैं ।

मोजेस ने जैसा निर्देश दिया था, उसी के अनुसार, रूबेन, गैड और मानासेह की अर्धजाति के कबीले के लोग अपने सारे

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथियारों से लैस होकर जेरिको पर हमले का नेतृत्व करने के लिए तैयार हो गये ।

जोशुआ के लिए यह एक महान दिन था । ईश्वर ने इजरायल के लोगों की दृष्टि में उसे महान बना दिया था । वे मोजेस की भांति उसका भी आदर करने लगे । क्योंकि जोशुआ ने ही ईश्वर के आदेश के अनुसार पुजारियों को नाव ले जाने की आज्ञा दी थी ।

"नदी के बीच से आ जाओ" ईश्वर ने जोशुआ को निर्देश दिया और कहा कि अब लोगों का नेतृत्व करो । जैसे ही पुजारी नदी के बीच से बाहर आये नदी का पानी पहले की तरह बहने लगा । यह चमत्कार २५ मार्च को घटा था । उस दिन सारे राष्ट्र ने जोर्डन नदी पार की और जेरिको शहर के पूर्वी किनारे पर गिल गल में विश्राम किया ।

इसके बाद जोशुआ ने लोगों को इस स्मारक का महत्त्व समझाया और कहा कि जब तुम्हारे बच्चे इस स्मारक के बारे में पूछें तो उन्हें यह सारी घटना बताना और कहना कि हमारे ईश्वर ने हमारी आंखों के सामने नदी सुखा दी ताकि हम उसे पार कर सकें । यह चमत्कार वैसा ही चमत्कार था, जो ईश्वर ने चालीस वर्षों पूर्व लाल सागर पर किया था । (जब मोजेस ने मिस्र से इजरायलियों को बाहर निकाला था ।) ईश्वर ने यह चमत्कार इसलिए किया कि इस धरती के सारे राष्ट्र जान जाएं कि जेवोहा ही शक्तिशाली देवता है और इसलिए तुम सब हमेशा-हमेशा के लिए उसकी पूजा करोगे ।"

शर्म की समाप्ति

(५)

जोर्डन नदी के पश्चिमी तट के अमोराइत और कनानियत जातियों को जब यह खबर मिली कि इजरायली लोगों को नदी पार करने के लिए ईश्वर ने जल को सुखा दिया तो वे सब भयभीत हो उठे । इसके बाद ईश्वर ने जोशुआ को सभी मरदों की सुन्नत करने का निर्देश दिया ।

इसका कारण था । जब मिस्र से इजरायली मोजेस के नेतृत्व में निकले थे तो चालीस वर्ष पहाड़ों में भटकने के दौरान सभी वयस्क बूढ़े होकर मर गये थे और नवजात शिशुओं की सुन्नत नहीं हो पायी थी । अब वे बच्चे वयस्क हो चुके थे । ईश्वर ने जोशुआ से कहा, "ऐसा करने के बाद तुम्हारी जाति की शर्म समाप्त हो जाएगी ।"

जोशुआ ने इस निर्देश का भी पालन किया ।

जेरिको के मैदानों में गिलगल में रहने के दौरान इजरायलियों ने अप्रैल के प्रथम सप्ताह में 'पास ओवर' उत्सव मनाया । दूसरे दिन सुबह वे बाग-बगीचों पर, खेतों पर हमला कर फल और अन्न खाने लगे ।

जब जोशुआ जेरिको शहर की घेराबंदी कर रहा था, तब उसके सामने तलवार लेकर एक व्यक्ति आया । जोशुआ ने उससे पूछा, "तुम दोस्त हो या दुश्मन ?"

"मैं ईश्वर की सेना का प्रधान सेनापति हूं ।" उसने उत्तर दिया ।

यह सुनते ही जोशुआ ने भूमि पर दंडवत होकर उसे प्रणाम किया । उसकी पूजा की । फिर कहा, "मुझे आदेश दीजिए ।"

"अपने जूतों को उतार दो । यह पवित्र भूमि है ।" उस व्यक्ति ने कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेरिको का पतन

(६)

जेरिको शहर के दरवाजे कसकर बंद कर दिये गये थे । इजरायलियों के भय से किसी को भी बाहर जाने की अनुमति नहीं थी ।

जेवोहा ने जोशुआ से कहा, "जेरिको, उसका राजा, उसके योद्धा सभी पहले ही पराजित हो चुके हैं । मैंने उन सबको तुम्हारे आधीन कर दिया है । तुम्हारी समूची सेना को छह दिनों तक प्रतिदिन जेरिको शहर की एक बार परिक्रमा करनी पड़ेगी । उनके पीछे नाव के आगे-आगे सात पुजारी मेढ़े के सींग से बनी तुरही लिये चलेंगे । सातवें दिन तुम शहर की सात बार परिक्रमा करोगे । तुम्हारे साथ-साथ तुरही बजाते हुए सातों पुजारी चलेंगे । फिर वे एक बार जोर से देर तक तुरही बजाएंगे । उस समय तुम्हारे लोग जोर से नारा लगाएंगे । तब शहर की दीवारें ढह पड़ेंगी और तब तुम हर दिशा से शहर पर हमला कर देना ।"

जोशुआ ने पुजारियों को बुलाकर निर्देश दिये । फिर उसने छह दिनों तक सारी सेना को शहर की एक बार परिक्रमा करने का आदेश दिया । सातवें दिन सुबह उसने जेवोहा से प्राप्त संदेशों का पालन किया । पुजारियों के तुरही बजाते ही जोशुआ ने लोगों को नारा लगाने का आदेश दिया । इसके पूर्व उसने लोगों को आज्ञा दी कि वेश्या राहाब और उसके परिवार को छोड़कर किसी को जीवित नहीं छोड़ना । सबकी हत्या कर देना । पर लूट का माल अपने पास न रखना । सब कुछ नष्ट कर देना । केवल सोना-चांदी और कांसे के बरतन और लोहे की वस्तुएं नष्ट नहीं करना । वे ईश्वर को समर्पित हैं । उन्हें खजाने में लाकर जमा कर देना ।

इसके बाद जैसे ही पुजारियों ने तुरही बजायी और लोगों ने नारे लगाये, जेरिको शहर की दीवारें ढह गयीं और इजरायलियों ने हर दिशा से उस पर हमला कर दिया । हर व्यक्ति मारा गया । यहां तक कि पशु तक नहीं छोड़े गये ।

इस बीच जोशुआ ने दोनों जासूसों को बुलाकर निर्देश दिया, "अपने वचन का पालन करो । जाओ और राहाब तथा उसके परिवार के हर व्यक्ति की रक्षा करो ।"

इस तरह जोशुआ ने इजरायलियों की सहायता करनेवाली राहाब और उसके परिवार के सदस्यों के प्राण बचा लिये । इसके बाद जोशुआ ने शाप दिया कि जो भी जेरिको को बसाने की कोशिश करेगा, नींव रखते ही उसका सबसे बड़ा बेटा मर जाएगा और जब शहर के दरवाजे लगाये जाएंगे तो उसके सबसे छोटे बेटे की मृत्यु हो जाएगी ।

जोशुआ के साथ ईश्वर था । उसका नाम चारों ओर प्रसिद्ध हो गया ।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचहान का पाप

(७)

ईश्वर का आदेश था कि उसे समर्पित वस्तुओं को छोड़कर सब कुछ नष्ट कर दिया जाए, लेकिन जूडा जाति के अचहान ने इस आदेश की अवज्ञा की और लूट का कुछ माल छिपाकर रख लिया। फलतः समूची इजरायली जाति को ईश्वर के कोप का शिकार होना पड़ा।

जेरिको के पतन के बाद जोशुआ ने बेथेल के पूर्व में स्थित ऐई नगर पर हमले का आदेश दिया। उसके जासूसों ने उसे खबर दी थी कि वह छोटा-सा शहर है। केवल तीन हजार सैनिक पर्याप्त होंगे। पर जब हमला किया गया तो इजरायली बुरी तरह हार गये।

उस पराजय पर जोशुआ रो पड़ा। उसने रोते हुए कहा, "ओ जेवोहा, तुम हमें जोर्डन नदी के इस पार क्यों लाये ? क्या तुम अमोराइती लोगों को हमारी हत्या करने दोगे ?"

जेवोहा ने कहा, "मुझे अपना मुंह मत दिखाओ। इजरायलियों ने पाप किया है। मेरी अवज्ञा की है।" फिर जेवोहा ने उससे कहा, "कल सुबह तुम सब शुद्ध होकर आओ और मेरी अवज्ञा करनेवाले व्यक्ति के परिवार के हर सदस्य को सामने आने के लिए कहो।"

दूसरे दिन सुबह जोशुआ ने इन निर्देशों का पालन किया। अचहान ने सबके सामने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

जोशुआ उसे उसके परिवार के सदस्यों के साथ अचहोर की घाटी में ले गया। उसने अचहान से कहा, "तुम क्यों हम पर विपत्ति लाये ? अब ईश्वर तुम्हारा सर्वनाश करेगा।" इसके बाद इजरायलियों ने पत्थर मार-मारकर अचहान और उसके परिवार के लोगों की हत्या कर दी। यह स्थान आज भी 'विपत्ति की घाटी' नाम से जाना जाता है।

ऐई का विनाश

(८)

इसके बाद जेवोहा ने जोशुआ से कहा, "न तो डरो और न निरुत्साहित हो। अपनी समूची सेना के साथ ऐई पर हमला करो। मैंने उसे तुम्हारे आधीन कर दिया है।"

जोशुआ ने ऐई पर हमले की योजना बनायी। उसने अपने तीस हजार योद्धाओं को ऐई शहर के पीछे जाने का आदेश दिया। उसने कहा, "ऐई का राजा हमें कमजोर समझकर हमला करेगा। हम लोग सामने से उस पर हमला करेंगे। जब राजा सेना लेकर आएगा तो हम मैदान छोड़ने का नाटक करेंगे। राजा शहर को असुरक्षित छोड़कर हमारा पीछा करेगा। तब तुम पीछे से शहर पर हमला कर देना। इधर हम भी रुककर राजा पर हमला कर देंगे।"

जोशुआ की यह व्यूह-रचना सफल हुई। ऐई का राजा उसकी चाल का शिकार हो गया और युद्ध में उसका सब-कुछ नष्ट हो गया।

कूटनीति का शिकार जोशुआ

(९)

आसपास के राजाओं ने जब जेरिको के पतन का समाचार सुना तो वे सब मिलकर जोशुआ का सामना करने की योजना बनाने लगे। लेकिन गिबेन के लोगों ने कूटनीति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम लेने का फैसला किया । उन्होंने जोशुआ के पास अपने दूतों को फटे वस्त्रों और फटे जूते पहने भेजा । जोशुआ ने उनसे पूछा, "तुम लोग पास के किसी राज्य से तो नहीं हो ?" दूतों ने जोशुआ को बताया कि हम लोग बहुत दूर से आये हैं । देखिए, चल-चलकर हमारे वस्त्र फट गये हैं । जूतों का बुरा हाल हो गया है । हमने आपके ईश्वर की लीलाएं सुनी हैं । हमारे बुजुर्गों का आदेश है कि हम आपसे मिलें और आपसे अनुरोध करें कि आप हमारी जाति को दास के रूप में स्वीकार कर लें ।

जोशुआ उनकी चाल में आ गया । उसने गिबेन जाति को दास के रूप में स्वीकार कर उसकी रक्षा का वचन दिया । लेकिन तीसरे दिन ही वास्तविकता उजागर हो गयी ।

इजरायली अपने नेताओं पर बेहद नाराज हुए कि उन्होंने गिबेन के लोगों से संधि क्यों की ? अंत में तय हुआ कि गिबेन के निवासी इजरायलियों के दास बनकर रहेंगे । जोशुआ ने कहा, "हमारी उनसे संधि हुई है । उनकी हत्या कतई न की जाए ।"

सूर्य चौबीस घंटे चमकता रहा !

(१०)

यरुशलम के राजा अदोनी जेडेक ने जब जोशुआ की विजय का समाचार सुना तो उसने आसपास के राजाओं के पास दूत भेजे । उन सबने मिलकर गिबेन पर हमला कर दिया । फलतः जोशुआ इजरायली सेनाओं को लेकर उनकी सहायता के लिए जा पहुंचा । उधर जेवोहा ने उन राजाओं की सेना में आतंक फैला दिया । तेज आंधी चली । लोग भयभीत हो

उठे । जोशुआ की सेना ने मारकाट शुरू कर दी थी । उसने शत्रुओं का दूर-दूर तक पीछा किया । जोशुआ ने जेवोहा से प्रार्थना की कि जब तक इजरायली सेना शत्रुओं का संपूर्ण विनाश नहीं कर देती तब तक सूरज-चांद की गति थम जाए । फलतः जेवोहा ने सूरज-चांद की गति रोक दी । सूरज चौबीसों घंटे चमकता रहा । पांचों राजा जिनमें अदोनी भी शामिल था, एक गुफा में छिप गये पर जोशुआ से वे बच न पाये । उसने उन्हें गिरफ़्तार किया और फिर मौत के घाट उतार दिया ।

राजाओं की पराजय

(११)

हजोर के राजा जाबिन ने जब यह समाचार सुना तो उसने आसपास के राजाओं से परामर्श कर एक संयुक्त मोरचा बनाया और जोशुआ से लड़ने निकल पड़ा । पर भीषण युद्ध के बाद उनकी भी पराजय हुई । अब जोशुआ का संपूर्ण इलाके पर अधिकार हो गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराजित राजाओं की सूची

(१२)

जोशुआ ने जिन राजाओं को पराजित किया, उनमें अमोदितों का राजा सिहोन, बाराहान का राजा ओग, जेरिको का राजा, ऐई का राजा, यरुशलम का राजा, हेब्रोन, जरमुथ, लछिस, एगलोव, गेजेर, देबीर, गेडेर, होरमाह, अरद, लिबनाह, अदुलम, मक्केदह, बेथेल, हेपेरे और अन्य राजाओं के राजा थे।

भूमि का बंटवारा

(१३)

इसके बाद जोशुआ ने विजित भूमि का कबीलों में बंटवारा किया। हर कबीले को पयोदा भूमि मिली।

जोशुआ अब काफी वृद्ध हो चुका था। एक दिन उसने इजरायल के नेताओं, न्यायाधीशों और अधिकारियों को एकत्र किया और उसने उनसे कहा, "अब मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूं। तुम सब मोजेस की पवित्र पुस्तक के अनुसार आचरण करना। केवल जेवोहा को ईश्वर के रूप में स्वीकार करना। अगर अन्य किसी देवता को मानोगे तो वह कुपित हो जाएगा। तुम्हारा साथ छोड़ देगा। तुम पड़ोसी राज्यों से विवाह संबंध भी नहीं रखना। इससे भी जेवोहा नाराज हो जाएगा। अतः सावधान रहना।"

कुछ समय पश्चात जोशुआ ने इजरायली जनता को संबोधित कर उन्हें भी हिदायतें दीं। जेवोहा को छोड़ अपने पुराने देवताओं को भूल जाने को कहा। सबने उसका परामर्श स्वीकार कर लिया।

इसके शीघ्र बाद एक सौ दस वर्ष की अवस्था में जोशुआ का प्राणांत हो गया। उसे गाश पर्वत के उत्तर में इपाराहिम पहाड़ी क्षेत्र के तिनाथ सैरेह नामक स्थान में दफन कर दिया गया। यह इलाका जोशुआ का ही था।

तनाव से झुर्रियां

तनाव की वजह से अनेकानेक हानियां होती हैं। पर शायद ही किसी ने सोचा होगा कि चेहरे पर होनेवाली झुर्रियों के लिए तनाव ही जिम्मेदार है। एक अमरीकी वैज्ञानिक डी. एस. डेनफर्टे ने अपने शोध के दौरान पाया कि ज्यादा तनावग्रस्त रहनेवाले व्यक्ति असमय ही झुर्री का शिकार हो जाते हैं। डेनफर्टे का मानना है कि तनाव के क्षण में हमारे शरीर में एक विशेष प्रकार का खिंचाव होता है, यह खिंचाव चेहरे पर सबसे अधिक होता है। तनाव के समय कभी-कभी मानसिक संतुलन की स्थिति इसी खिंचाव के कारण होती है। इस खिंचाव के वक्त 'डिस्केफॉन' नामक हार्मोन का स्राव बड़ी तेजी से होता है, जिससे चेहरे की त्वचा में संकुचन उत्पन्न होता है और आगे चलकर यह झुर्रियों में बदल जाता है।

विपिन शुक्ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्मा में नेताजी का स्वतंत्रता संग्राम

● श्रीराम वर्मा

नेताजी एक जातिवाचक संज्ञा है । परंतु उनके विशिष्ट व्यक्तित्त्व के कारण यह व्यक्तिवाचक संज्ञा बन गया है । अब तो नेताजी सिर्फ सुभाषचंद्र बोस के लिए ही प्रयोग किया जाता है । यह उनके राष्ट्र-प्रेम तथा भारत की स्वतंत्रता के लिए महान त्याग का ही द्योतक है ।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस अपना भेष बदलकर कलकत्ता से काबुल, काबुल से जरमनी, जरमनी से जापान, जापान से सिंगापुर तथा सिंगापुर से बर्मा गये । जरमनी में उन्होंने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के लिए हिटलर से सहयोग मांगा ।

हिटलर ने उनको सब तरह का सहयोग देने का वचन दिया ।

आजाद हिंद संघ तथा सेना का गठन

जून, १९४२ में जरमनी के ड्रेसडेन शहर में श्री रासबिहारी बोस तथा श्री राघवन द्वारा एशियाई भारतीयों के प्रतिनिधियों की एक मीटिंग बुलायी गयी, जिसमें आजाद हिंद संघ का गठन किया गया । आजाद हिंद सेना के गठन का दायित्त्व कैप्टन मोहनसिंह को सौंपा गया । पांच जुलाई, १९४३ को सिंगापुर में आजाद हिंद संघ का प्रथम ऐतिहासिक सम्मेलन हुआ, जिसमें नेताजी ने घोषणा की कि आजाद हिंद सेना का गठन कर दिया गया है तथा शीघ्र ही भारतीय स्वतंत्रता के लिए सशस्त्र युद्ध आरंभ कर दिया जाएगा । नेताजी के रंगून पधारने के बहुत पहले ही बर्मा के भारतीयों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संघ (इंडियन इंडिपेंडेंस लीग) का गठन कर दिया गया था जिसके प्रधान श्री एल. बी. लाठिया चुने गये थे । इसका प्रथम कार्यालय सुली पगोडा रोड, रंगून के एक तीन मंजिला मकान में खोला गया ।

लाठियाजी के पश्चात करीम गनी, तत्पश्चात बालेश्वर प्रसाद इंडियन इंडिपेंडेंस लीग के प्रधान बने । श्री बालेश्वर प्रसाद भारत की आजादी के

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद के वर्षों में असम के गवर्नर, दिल्ली के उपराज्यपाल तथा बर्मा के भारतीय दूतावास में राजदूत रहे । श्री बालेश्वर प्रसाद के लीग के प्रधान बनने के कुछ ही समय बाद उस लीग का नाम 'ऑल बर्मा टेरिटोरियल कमेटी ऑव इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' रखा गया, जिसमें कई विभाग बनाये गये । बर्मा के अन्य क्षेत्रों में भी इसकी शाखाएं खोली गयीं ।

आजाद हिंद की अस्थायी सरकार

नेताजी के रंगून पहुंचने के कुछ ही समय पश्चात इस संगठन का नाम 'आजाद हिंद की अस्थायी सरकार' (प्रोवीजनल गवर्नमेंट ऑव आजाद हिंद) और 'सुप्रीम कमांड ऑव आजाद हिंद फौज' रखा गया, जिन दोनों के प्रधान स्वयं नेताजी थे । उपप्रधान श्री जे. ए. थीवी तथा ए. एन. सरकार थे । श्री देवनाथ दास प्रधानमंत्री तथा श्री दीनानाथ डायरेक्टर ऑव आजाद हिंद बैंक तथा फाइनेंस कमेटी के मंत्री थे ।

अन्याय सहना भी उतना ही बड़ा पाप है, जितना कि अन्याय करना । अन्याय सहने से अन्याय बढ़ता है । अन्याय करनेवालों कां संख्या बढ़ती है, जो समाज और देश को भ्रष्ट कर देती है ।

अस्थायी सरकार का कार्यालय रंगून क्षेत्र के टामवे तथा सुप्रीम कमांड का कार्यालय बाहन में खोला गया । आजाद हिंद फौज की एक रेजीमेंट का नाम 'रानी झांसी रेजीमेंट' रखा गया जिसमें सिर्फ महिला सेनानियां थीं ।

समय-समय पर रंगून क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में नेताजी का भाषण हुआ करता था, जिसमें बहुत ओज तथा आकर्षण रहता था । उनका चुंबकीय व्यक्तित्त्व श्रोताओं को बरबस अपनी ओर खींच लेता था । और सभी लोग सब-कुछ न्यौछावर करने पर उद्यत हो जाया करते थे ।

नेताजी द्वारा आह्वान

प्रति मास के अंत में आजाद हिंद अस्थायी सरकार के प्रधान कार्यालय के कर्मचारियों की स्टाफ मीटिंग हुआ करती थी, जिसमें नेताजी ही प्रधान वक्ता हुआ करते थे । एक ऐसी ही मासिक मीटिंग में नेताजी ने कर्मचारी श्रोताओं से एक प्रश्न किया, "मेरे उपस्थित कर्मचारी भाइयो ! आज की मीटिंग मैं एक प्रश्न से शुरू करना चाहता हूं । क्या आप यह जानते हैं कि अन्याय करना एक बहुत बड़ा पाप है ?"

इस प्रश्न को सुनकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये । काना-फूसी करने लगे कि 'यह कैसा प्रश्न है । यह तो सभी जानते हैं कि अन्याय करना पाप है ।' एक सज्जन ने जवाब दिया, "हां नेताजी अन्याय करना अवश्य ही एक बहुत बड़ा अपराध है, पाप है ।"

तब नेताजी ने दूसरा प्रश्न किया, "क्या आपको यह भी मालूम है कि अन्याय सहना भी उतना ही बड़ा पाप है, जितना कि अन्याय करना । अन्याय सहने से अन्याय बढ़ता है । अन्याय करनेवालों की संख्या बढ़ती है, जो समाज और देश को भ्रष्ट कर देती है ।

"हम लोग, हमारे देशवासी और हमारे नेतागण ब्रिटिश सरकार द्वारा ढाये गये अन्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अत्याचार को सहते रहे। उनका अत्याचार बढ़ता ही गया। उन्होंने देश को लूट लिया। उन्होंने भारत को कंगाल बना दिया। देश को नोंच लिया! हमारे नेता हाथ जोड़कर आजादी मांगते रहे। भीख मांगने से एक मुट्ठी अन्न या कुछ पैसे मिल सकते हैं। देश या देश की आजादी नहीं मिलती। आजादी पाने का एकमात्र रास्ता सशस्त्र संघर्ष ही है। आज तक हम हाथ जोड़कर भीख मांगते रहे। अब समय आ गया है कि हम सब सशस्त्र युद्ध के लिए तैयार हो जाएं। दुश्मनों पर चौतरफा हमला हो रहा है। लोहा गरम हो गया है। सिर्फ पीटना शेष रह गया है। पीटना शुरू कर दीजिए। लोहा गरम होकर मुड़ जाएगा। आजादी मिलकर ही रहेगी। त्याग और एकता के साथ आगे बढ़िए। सफलता में पूर्ण विश्वास कर दिल्ली की तरफ कूच कर दीजिए। अपना खून देकर आजादी हासिल कीजिए। ध्यान रखिए कि पीठ कभी नहीं दिखाएंगे। यदि दुश्मन की गोली लगे, तो सीने पर ही लगे। पीठ पर न लगे। यदि घायल होकर गिरना ही है, तो आगे की तरफ गिरिये। पीछे न गिरिये। यदि बर्मा के समस्त भारतीयों को प्राण देने पड़ें और आजादी मिल जाए, तो यह सौदा सस्ता ही कहा जाएगा। अब मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आप लोगों में कौन-कौन आजादी के लिए प्राण देने को तैयार हैं। हाथ उठावें।''

इस पर सभी ने सोत्साह हाथ उठाकर 'हां' में जवाब दिया।

बर्मा के उपेक्षित स्वातंत्र्य सेनानी

नेताजी की सभी मीटिंगों में ऐसा ही उत्साह देखने को मिलता था। सब कोई सब-कुछ मिशिवर करने पर उद्यत हो जाते थे। इस लेख का लेखक इन सभी घटनाओं और प्रसंगों का प्रत्यक्षदर्शी है। नेताजी के निकट संपर्क में रहा और उनकी सरकार में एक विभागाध्यक्ष था।

लेखक का अपना दृष्टिकोण है कि यदि नेताजी द्वारा चलाया गया संघर्ष वर्षों पहले चलाया गया होता, तो भारत की आजादी बहुत पहले ही मिल गयी होती तथा देश का विभाजन होने की नौबत न आती। धन्य हैं नेताजी तथा उनका अद्वितीय व्यक्तित्व।

इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि नेताजी के अधीन भारतीय स्वतंत्रता का जितना कार्य बर्मा में हुआ उतना देश या विदेश के किसी कोने में नहीं हुआ। परंतु देश की आजादी के बाद बर्मा के स्वतंत्रता सेनानियों को भारत सरकार द्वारा उपेक्षित रखा गया। आज भी करीब दो सौ स्वतंत्रता सेनानी बर्मा में अपने बुढ़ापे की अंतिम सीढ़ियों पर खड़े आस लगाये बैठे हैं कि भारत के नेताओं तथा सरकार का ध्यान कभी-न-कभी तो उनकी तरफ अवश्य जाएगा। इस संबंध में वर्षों से भारत के गृह मंत्रालय से पत्राचार हो रहा है। अभी तक कोई परिणाम नहीं निकल पाया है। यदि भारत सरकार का यही रवैया रहा तो संभव है कि ये बेचारे स्वतंत्रता सेनानी देश सेवा के लिए की गयी अपनी सेवाओं का लाभ और सम्मान इस जनम में न पा सकेंगे।

All Burma Ex. I.N.A. Personnel Relief Committee, No. 49
29th street, Rangoon, Burma

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कादम्बिनी साहित्य महोत्सव

भोपाल

पुरस्कृत कविताएं

प्रथम पुरस्कार

हमारे विकल्प

हमारे सामने
समझौते हैं, लड़ाइयां हैं
विकल्प तो हैं
मौसमों के साथ नहीं बदले
यह हमारा कसूर
भीतर से बहते हुए बाहर तक,
रूखे-नीरस बेजार जख्म
हमारे सामने
आकस्मिक संदर्भ हैं, अर्थ हैं
विषय तो हैं
चटके हुए चेहरे लिये
घूम रहे हैं कई लोग
इस शहर में
सही आईने नहीं मिलते
विकल्प तो हैं
रंग-बिरंगे मुखौटे हैं, मुलम्मे हैं
चढ़ाने के लिए हम हैं, तुम हो।

—विधुलता
ए/४५, सर्वधर्म कॉलोनी,
कोलार रोड, भोपाल (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय पुरस्कार

हम बड़े

मनुष्य बोले हम बड़े
पर पृथ्वी पर खड़े

पृथ्वी बोली हम बड़े
पर शेष नाग के सर पर खड़े

शेष नाग बोले हम बड़े
पर शंकरजी के गले में पड़े

शंकरजी बोले हम बड़े
पर, पहाड़ पर खड़े

पहाड़ बोले हम बड़े
पर हनुमान के हाथों में खड़े

हनुमान बोले हम बड़े
पर राम के चरणों में पड़े

राम बोले हम बड़े
पर दशरथ के चरणों में पड़े

दशरथ बोले हम बड़े
पर राम को चौदह वर्ष का
वनवास देकर मर पड़े

—अभिलाषा गुप्ता

द्वारा—श्री आर. एल. गुप्ता
पी-३२८/१ एम. ई. एम. कॉलोनी
बैरागढ़, भोपाल (म. प्र.)

बदलते संदर्भ

समय बदलता है
बदल जाती हैं हवाएं,
रातें और सभी कुछ
कुछ तो होता ही होगा
जब संवेदनाएं मूर्त रूप लेती हैं
और अमूर्त हो जाता है मन
वास्तविकता, कल्पना को
धकेलकर हो जाती है—राक्षस
प्रिय हो जाते हैं अप्रिय
फूल हो जाते हैं—बदरंग
मौसम के सुहानेपन में
शामिल हो जाता है जहरीलापन
जो सांसों के साथ गले में उतरता है
बच्चे बूढ़ों-सी बातें करते हैं
और चेहरे मुखौटों में तब्दील हो जाते हैं
आकाश का विस्तार सिमट जाता है
चौराहे, गलियां, सड़कें, नगर
और देश—सब बदले-बदले से लगते हैं
चाहता तो हूं—मैं
कि पकड़ लूं इन सभी संदर्भों को
बदलने न दूं, लेकिन
क्या मेरे करने और चाहने से
यह सब उतना सहज हो जाएगा
नहीं, क्योंकि मैं जानता हूं
मेरी सोच का विस्तार
तुम्हारे परिवर्तन का बिलकुल उलटा है
और तुम नहीं चाहते हो
कि इस विस्तार के साथ
तुम्हारी पहचान मेरे साथ हो

—अनिल शर्मा

राज्यपाल सचिवालय, राज भवन,
भोपाल (म. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

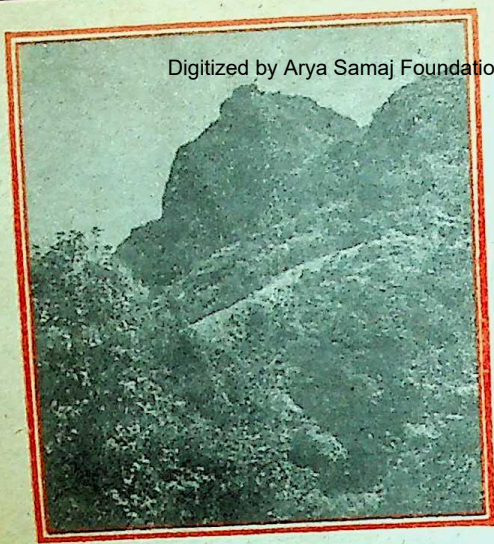

पचमढ़ी की छोटी-बड़ी पहाड़ियां

अद्वितीय है । कैप्टन जे. फोरसाइथ ने इसे सन् १८५७ में ढूंढ निकाला था और इसका वर्णन उस समय के अंगरेजी शासन को भेजा था । शासन ने इसे प्रादेशिक ग्रीष्मकालीन राजधानी के लिये चुना था । राज्यपाल भवन (गवर्नमेंट हाउस) बड़े-छोटे बंगले, चर्च, गोल्फ कोर्स बनाये गये । गरमी के तीन माह एवं बरसात के बाद एक माह के लिए गवर्नर तथा पूरा उच्च शासकीय तंत्र पचमढ़ी में रहकर शासन चलाता था । यह प्रथा कुछ वर्ष पहले ही बंद हुई, क्योंकि मध्य प्रदेश की नयी राजधानी भोपाल स्वतः अधिक गरम नहीं रहती है ।

सैलानियों के आकर्षण का केंद्र

सैलानियों के लिए पचमढ़ी हमेशा आकर्षण

पचमढ़ी

नर्मदा घाटी में पहाड़ों की रानी

● डॉ. एस. डी. एन. तिवारी

सतपुड़ा । पर्वत श्रृंखला में पचमढ़ी पहाड़ी समूह सबसे ऊंचा है, जिसमें धूपगढ़ पहाड़ी की समुद्र सतह से ऊंचाई १०६७ मीटर है । पचमढ़ी पठार करीब ५० वर्ग कि.मी. है, जिसके चारों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियां, गहरे खड्ड, जलप्रपात, नाना प्रकार के वन, जिनके बीच घास के मैदान, खुली पथरीली पहाड़ियां इत्यादि हैं । देश में बहुत से ठंडे स्थान (हिल स्टेशन) हैं, पर पचमढ़ी प्राकृतिक सौंदर्य में का केंद्र रहा है । वे सुबह उठते, झोले में चाय एवं कुछ नाश्ता रखते तथा डेरा से लगभग २ कि.मी. दूर राज्यपाल सार (ट्वानम पूल) सुंदर वन एवं घास के मैदान से गुजरती पगडंडी से पैदल पहुंच जाते हैं । स्वच्छ प्राकृतिक जलप्रपात के नीचे और उससे भरे कुंड में स्नान कर फिर नाश्ता कर डेरा लौट आते हैं । संध्या को पांडव गुफाओं को देखने जाते, लौटकर बाजार में चाट खाते और थककर रात्रि को घोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निद्रा का सुख प्राप्त करते हैं। अगले दिन कुछ अधिक दूर जमुना कुंड जाने तथा शाम को 'राजगिरि' की पहाड़ी पर जाकर पचमढ़ी का दृश्य देखते हैं। अगले दिन फिर और सुदूर जलप्रपात, जलकुंड, पहाड़ियों की चोटी, शासकीय उद्यान इत्यादि पर जाते हैं।

पचमढ़ी में अनेक जलप्रपात तथा जल कुंड हैं जैसे रम्य कुंड (ईरीन पूल), संगम (वाटर्स मीट), वनश्री विहार (पेंजी पूल), अप्सरा विहार (फेयरी पूल), पथरचटा इत्यादि, जो बहुत गहरे नहीं, पर जिनका पानी इतना स्वच्छ है कि उनकी तलहटी में डाला पैसा बिलकुल साफ दिखायी देता है। इसी प्रकार दर्जनों छोटी-बड़ी पहाड़ियां हैं, जिनसे प्राकृतिक सुंदरता देखी जाती है। पयर्टक कम से कम एक माह लगातार प्रतिदिन नये-नये स्थानों पर जा सकता है। अंत में बहुत से स्थान बिना देखे ही रह जाते हैं। सैलानी घर लौटता है, पर उसे बाकी पचमढ़ी देखने की ललक बनी रहती है। यही कारण है कि जो भी पयर्टक एक बार पचमढ़ी देख लेता है, वह समय मिलने पर हर वर्ष वहां आता है। दिल ऊबना तो दूर रहा, उसे हमेशा यही लगता रहता है कि वह पूरा पचमढ़ी नहीं देख पाया। अभी भी नये स्थल खोजे जा सकते हैं। कुछ वर्ष पहले श्रीमती ईरीन बोस (स्व. जस्टिस बोस की पत्नी) ने एक नये जलकुंड को खोजा था, जो उनके नाम से जाना जाता है। भ्रमण के लिए काफी दूर तक पक्के रास्ते, तथा पगडंडियां हैं। पगडंडियों की लंबाई करीब ७५ कि.मी. है

भीड़ से आक्रांत नहीं

भ्रमण के लिए बहुत से स्थान होने के कारण किसी भी स्थान पर पर्यटकों की भीड़ नहीं होती और वे पूरी 'प्रायवेसी' के साथ पिकनिक करते हैं। रमणीक स्थान कुछ दूर तथा कुछ पास हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए रोज का कार्यक्रम-सा बना लिया गया है। छोटा चक्कर २-३ कि.मी. का और बड़ा चक्कर इससे अधिक लंबा रहता है। बहुत से स्थानों तक जीप गाड़ियों के रास्ते और पगडंडियां दोनों हैं, जिससे वृद्ध लोग भी वहां आराम से पहुंच सकते हैं जैसे धूपगढ़ की चोटी, बड़े महादेव इत्यादि स्थान।

स्वच्छ जल के झरने, कुंड तथा पहाड़ियों के अतिरिक्त पचमढ़ी में बहुत-सी ऐसी विशेषताएं हैं, जो दूसरे ठंडे स्थानों (हिल स्टेशनों) में नहीं हैं। यहां की पहाड़ियां हिमालय-जैसी ऊंची नहीं हैं, जिन पर तेनसिंह या हिलेरी—जैसे सैलानी चढ़ सकते हैं और पर्यटक हार मानकर उनको भय या अचंभे से देख ही सकता है—उन पर चढ़ने की सोच ही नहीं सकता। पचमढ़ी में वे सरल भी हैं, दुर्गम भी। सभी पहाड़ियों को चढ़ाई में जीता जा सकता है। सबसें दुर्गम चौरागढ़ की चढ़ाई है, पर वहां भी हजारों

अप्सरा विहार (फेयरी जल प्रपात)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आदमी, औरतें, बच्चे हर वर्ष जाते हैं और श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाये छोटे बड़े हजारों शिवलिंगों को देखते हैं । धूपगढ़ के लिए पगडंडी भी है, डामर का रास्ता भी । वहां जाकर सुंदर सूर्यास्त देखते हैं ।

वास्तव में हिम्मत हारना तो दूर, पर्यटक की हिम्मत छोटी पहाड़ी पर चढ़कर रोज बढ़ती है और अंत में सबसे कठिन पहाड़ियों पर चढ़ जाता है । हारकर, मायूस होकर लौटने का प्रश्न ही नहीं उठता है । जीत की यही इच्छा उसे हर वर्ष पचमढ़ी खींच लाती है । इसके जलप्रपातों की खाइयां १० मीटर से २०० मीटर तक गहरी हैं । पर्यटक प्रतिदिन एक के बाद दूसरे कठिन रास्ते पर जाता है, ठंडे कुंडों तथा जलप्रपातों के नीचे स्नान करता है ।

प्रतिध्वनि स्थल और डाकिन खो

जहां पहाड़ियों तथा खाइयों का चक्रव्यूह-सा हो और जिनकी दीवारें सैकड़ों मीटर ऊंची तथा खड़ी हों, वहां मोटर रास्ता तो क्या पगडंडियां निकालना अत्यंत कठिन है । कई हिम्मतवाले इंजीनियरों एवं वनाधिकारियों ने कई स्थलों पर हाथ टेक दिये हैं । भारतवर्ष के बोरी के प्रसिद्ध सागौन वन पचमढ़ी से केवल तीस कि.मी. हैं, जहां पहुंचने के लिए केवल हाथीदान ही था । इस पर मोटर का रास्ता बनाना असंभव माना जाता रहा । सन् १९६२ में मैंने इसे ढूंढ़ निकालने की हिम्मत की तथा सफलता पायी । केवल एक ही ऐसा स्थल मिला, जहां ७ यू गुलाई देकर दो छोर जोड़े जा सके । इस नयी सड़क को बनाने के क्रम में दो नये दर्शनीय स्थल भी मिले । पहला प्रतिध्वनि स्थल जहां खड्ड की दूसरे किनारे की चट्टान की दीवार से आवाज टकराकर स्पष्ट वापस आती है और दूसरा डाकिन खो जहां बारहों महीने सड़क के किनारे पानी बहता है तथा दलदल में केला जंगली रूप में पैदा होता है । इसके बीज मोती झिरा को ठीक करने में काम आते हैं ।

पचमढ़ी के चारों ओर बहुत-सी गुफाएं हैं जिनमें हजारों वर्ष पूर्व चित्रकारी की गयी थी । इनकी खोज जारी है और कई पुरातत्ववेत्ता इसीलिए पर्यटन के लिए आते हैं ।

भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी पचमढ़ी

पचमढ़ी की ऊंचाई बहुत अधिक नहीं होने से ठंड में यहां बरफ नहीं गिरती । पूरे बारहों महीने यहां सुविधापूर्वक रहा जा सकता है । बहुत से सेवानिवृत्त अधिकारी यहां बस रहे हैं । स्वर्गीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने शिमला की जगह इसे भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी बना लिया था । उनके लिए अलग से राष्ट्रपति भवन बनाया गया था । वर्षों आते रहने से तथा अधिक पैदल न चल सकने के कारण उन्हें नये दार्शनिक स्थलों की कमी दिखने लगी । मैंने पनारपानी एक नया रोचक स्थल बनाया था जहां पचमढ़ी में उगने वाली जड़ी-बूटियां एक जगह लगाने का प्रयास किया था । एक दिन मैं उन्हें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यपाल के साथ वहां ले गया, जहां उन्होंने कुछ घंटे बिताये तथा बाद में भी वहां कई बार गये। उनके कर कमलों द्वारा रोपित कुंदन वृक्ष आज भी वहां की शोभा बढ़ाता है।

वनस्पतियों का भंडार

यदि पर्यटक को वनस्पतियों तथा जड़ी-बूटियों में दिलचस्पी है, तो वह पचमढ़ी में महीनों रहकर भी ज्ञान अर्जन की अपनी भूख नहीं मिटा सकता। फर्नों का यह गढ़ है। 'ट्री फर्न' जो बहुत दुर्लभ हैं यहां मिलते हैं। 'साइलोटम फर्न' जो वनस्पति शास्त्र में एक महत्त्वपूर्ण मौका है, यहां मिलता है। उसे एकत्रित करने भारत के प्रायः हर महाविद्यालय के वनस्पति शास्त्री आते हैं। पिछले ४६ वर्षों में सैकड़ों दिन मैंने पचमढ़ी में सैकड़ों मील पैदल चलकर वनस्पतियों की खोज की। वह भी प्रायः हर मौसम में, पर अभी भी दावे के साथ यह मैं नहीं कह सकता कि मैंने वहां की सभी प्रजातियां देख ली हैं। इसी दृष्टि से पनारपानी में मैंने उनको वहां-वहां से लाकर एक स्थान पर लगाने की चेष्टा की थी। यह स्थल अब एक सुंदर पिकनिक स्थल बन गया है।

पचमढ़ी के चारों ओर करीब ५०० वर्ग कि.मीटर पर साल के वन हैं, जो सागौन वन क्षेत्र में एक टापू के समान हैं तथा वैज्ञानिकों के आकर्षण एवं विवाद का केंद्र है। साल वन बारहों महीने हरे रहते हैं। वही पचमढ़ी की असली खूबसूरती हैं। पर वे लगातार घने और डरावने नहीं हैं। उनके बीच-बीच में खाली घास के मैदान, जड़ी-बूटियों से भरपूर चट्टानें, उनमें मिट्टी की दरारें और जंगली फलों के मिश्रित वन हैं। कुछ वृक्षों में बहुत सुंदर फूल आते हैं। सोनचंपा यहां-वहां पायी जाती है। उसका रोपण भी किया गया है, विदेश से लायी गयी सुंदर प्रजातियां भी अंगरेजों के समय से यत्र-तत्र लगायी गयी हैं जिनमें आराकाटिया, जाइनस, क्यूप्रेसस, यूकेलिप्टस, कुंदन इत्यादि हैं।

बोरी पचमढ़ी मार्ग पर ७ यू बैंड मोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलों के वृक्ष

आम के करीब छह हजार वृक्ष जंगलों में नाले के किनारे प्राकृतिक रूप से लगे हैं। इन जंगली आमों पर टहनी बैठाकर डॉ. परसाई ने इन पर नीलम, सिंदूरी, लंगड़ा, सफेदा आदि आम फलाये हैं। पचमढ़ी अब आमों के लिए प्रसिद्ध हो गया है। जंगली नीबू का वन भी एक स्थान पर है। अमरूद तो पचमढ़ी के पठार के नाले के किनारे बहुतायत से मिलता है। खिरनी का वन तो प्रायः पचमढ़ी पठार पर है। इनके अतिरिक्त सफेद बेर (जिजीफस रुगोसा), हर्रा, बहेड़ा, आंवला, चिरौंजी आदि फलों के वृक्ष वन में मिलते हैं। जड़ी-बूटियों का तो कोई हिसाब ही नहीं। आजकल कुछ दुकानों में ये बिकने के लिए रखी रहती हैं। ब्राह्मी तो प्रायः हर दलदल वाले स्थान में मिलती है।

वनों में कोई खूंख्वार वन प्राणी नहीं रहते, जिससे सैलानी अकेले निडर घूम सकते हैं। चीतल, चौसिंगा हिरन इत्यादि मिलते हैं। कभी-कभी पैंथर दिख जाता है। लाल गिलहरी यहां की विशेषता है। पक्षियों की प्रजातियों की बहुतायत है, जिनमें कोयल, सुनहरी ओरियोल, मुनिया हरियल, पपीहा प्रमुख हैं।

पुरातात्विक महत्त्व की स्थली

पचमढ़ी के चारों ओर बहुत-सी गुफाएं हैं जिनमें हजारों वर्ष पूर्व चित्रकारी की गयी थी। इनकी खोज जारी है और कई पुरातत्ववेत्ता इसीलिए पर्यटन के लिए आते हैं।

प्राकृतिक सुंदरता के अतिरिक्त यहां मनोरंजन के आधुनिक साधन भी उपलब्ध हैं जैसे स्केटिंग, फ्लोर, हाथी की सवारी, गोल्फ ग्राउंड, टैनिस, स्क्वाश, फील्ड, सिनेमाघर इत्यादि। अनेक स्कूल, ट्रेनिंग सेंटर, फौजी म्यूजिक स्कूल, वन विद्यालय इत्यादि जिनके बीच विभिन्न खेलों के मैच पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पचमढ़ी छोटा-सा कस्बा है पर घरेलू आवश्यकता की सभी वस्तुएं यहां मिल जाती हैं। खिरनी और पंचकारा लकड़ी से बनी घड़ियां प्रायः हर सैलानी खरीदकर ले जाता है। फल-फूलों की अधिकता से यहां शहद बहुत मिलता है।

पचमढ़ी में ऊंची, सीधी पहाड़ियां हर तरफ हैं, जिन पर से कोई गिरे, तो वह मरने से बच नहीं सकता, पर खुदकुशी की वारदातें इस पुण्यस्थल पर नहीं के बराबर हैं।

भारतवर्ष के भौगोलिक केंद्र के नजदीक होने के कारण यहां 'आल इंडिया' बैठकों, सेमिनार इत्यादि के लिए बरसात छोड़कर हर मौसम में अत्यंत सुविधाजनक स्थान है। बंबई-कलकत्ता रेलमार्ग पर स्थित पिपरिया रेलवे स्टेशन से केवल ५० कि.मी. दूर डामर रोड से शासकीय बसों तथा जीपों से आराम से पहुंचा जा सकता है। रेलवे से पचमढ़ी तक का टिकिट किसी भी स्टेशन से मिलता है। इटारसी जो उक्त रेलमार्ग तथा देहली-मद्रास लाइन का जंक्शन है। पिपरिया से केवल ६० कि.मी. है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार द्वारा पचमढ़ी किसी भी दिशा से पहुंचा जा सकता है । पिपरिया पचमढ़ी मार्ग के किनारे शासकीय सागौन के सुंदरवन हैं तथा अंजन वृक्ष की झूलती शाखाएं पर्यटकों का स्वागत करती हैं । यह वृक्ष भी अत्यंत सुंदर होता है तथा भारतवर्ष में बहुत कम पाया जाता है । इसी रास्ते से कुछ दूर अनटोनी में गरम पानी का कुंड भी है ।

पचमढ़ी में ठहरने के लिए सस्ते से लेकर मंहगे अनेक स्थान हैं जैसे मध्यप्रदेश पर्यटन कारपोरेशन के 'सतपुड़ा रिट्रीट' अमलताल, हालीडे होम्स, पंचवटी काटेज, लोककर्म विभाग का नया एवं पुराना होटल ब्लाक, साडा का नंदन वन इत्यादि । इसके अतिरिक्त धर्मशालाएं एवं प्राइवेट 'लाज' भी हैं । घूमने के लिए जीपें, तांगे इत्यादि हमेशा मिल जाते हैं ।

पौराणिक महत्त्व का स्थान

पर्यटन के अतिरिक्त पचमढ़ी पौराणिक काल से ही एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थान है । विष्णु भगवान ने यहीं भस्मासुर को भस्म कर भगवान शंकर को उस दुष्ट से बचाया था । पांडव गुफाओं में पांडवों ने वनवास के अपने कुछ वर्ष यहां बिताये थे । बाद में बौद्ध भिक्षु भी यहां रहे । शिवरात्रि को बड़े महादेव तथा नाग पंचमी के दिन नागद्वारा में भारी मेला लगता है, जिसमें हजारों लोग आते हैं । बड़े महादेव के पास स्थित भस्मासुर जलकुंड है, जिस पर भक्त लोग बांस की सोटियों से भस्मासुर जलकुंड पर मारते हैं । हजारों सोटियां एकत्रित हो जाती हैं, जिनकी नीलामी की जाती है । बड़े महादेव के अतिरिक्त जटाशंकर जम्बूद्वीप इत्यादि धार्मिक रमणीक स्थल हैं, जहां

प्रतिध्वनि स्थल पर पर्यटक

प्रसाद अक्सर वितरित होता रहता है । ईसाइयों का पुराना चर्च देखने लायक है, जो अंगरेजों ने बनवाया था । महेश योगी ने भी अपना एक बड़ा आश्रम यहां खोला है

पचमढ़ी में ऊंची, सीधी पहाड़ियां हर तरफ हैं, जिन पर से कोई गिरे, तो वह मरने से बच नहीं सकता, पर खुदकुशी की वारदातें इस पुण्यस्थल पर नहीं के बराबर हैं । यदि कोई पर्यटक खुदकुशी के इरादे से आता है, तो वह यहां की पहाड़ी एवं खड्डों की चढ़ाई-उतराई जीतकर, दुनिया की अनेक कठिनाइयों का सामना करने की हिम्मत लेकर लौटता है तथा भगवान शंकर का आशीर्वाद प्राप्त कर नया जीवन पाकर संसार में आगे बढ़ता है । सचमुच यह घुमक्कड़ों का स्वर्गस्थल है ।

—'समय भवन'
९-प्रोफेसर कॉलोनी
भोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोजकजी ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया तथा फिर बोले, "देश की दशा दिनों-दिन गिर रही है। अतः हम चाहेंगे वह गिरती दशा पर अपना वक्तव्य दें।"

भाषणकर्ता ने सिर्फ आधा वाक्य ही सुना था, तपाक से खड़े हो गये तथा बोल उठे—"भाइयो गिरी हुई चीजों को न छुएं, न उठायें। हम हर रोज विज्ञापन दे रहे हैं, बार-बार ताकीद कर रहे हैं और आज गिरती चीजों का विश्लेषण करने को हम यहां फिर इकट्ठे भी हो गये हैं। जो गिरे उसे एक जमाने में हम लोग उठाने की बातें करते रहे। पर आज जमाना बदल गया है, मूल्य बदल गये हैं, गिरने का तरीका बदल गया है, गिरने का वह जो चरित्र होता था—कि कोई आये तो उद्धार का श्रेय ले सके, वह भी बदल गया है। इसीलिए तो गिरने की बात के भी सिद्धांत बनने लगे। मैं अपने अनुभव के अनुसार गिरने पर प्रकाश डालूंगा।

"सच कहें तो सबसे पहला गिरने का सिद्धांत उस दिन बना जब न्यूटन को जमीन पर लेटकर घंटों शून्य में ताकने की आदत का फल मिल गया। सेब जमीन पर क्या आ टपका...उसके चिंतन की धारा में कंकर मार गया। उसने निष्कर्ष निकाल ही दिया कि आकर्षण से ही यह फल नीचे गिरा, वरना यह पेड़ ऊर्ध्वमुखी होकर, हर पके हुए फल को आसमान की ओर निशाना साधे, तीर की तरह मारता। आसमान में फलों की रोज वर्षा होती और तब यह नीला आसमान सेब, अमरूद, लौकी, कटहल, करेले से भरा हुआ एक औंधा थाल होता, जो सबको छत्रछाया देता। 'फल

व्यंग्य

गिरती हुई दशा पर

● डॉ. सरोजनी प्रीतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छत्रछाया में फल की इच्छा कैसी' का मंत्रोच्चार एक नया अर्थ रखता । लेकिन हाय पेड़ की मुट्ठियों से फल छूटकर मिट्टी में मिलने की चेष्टा में था । मिट्टी में रहकर मिट्टी में न मिलना उसमें लोटते ही रहना, गिरकर भी न गिरने का प्रतीक है । वरना इस मिट्टी ने किसकी मिट्टी खराब नहीं की... । लोग जो मिटकर भी अपना नाम छोड़ जाते हैं, वे बहुत ऊंचे लोग होते हैं । उन्हें हर कोई मिट्टी में मिलाने के लिए उनकी टांग खींचता है । उन्हें धूल में मिला देने को आतुर होता है तथा फिर देखना चाहता है कि ऐसे लोग किस मिट्टी के बने हैं । जो बना है वह ढहेगा, टूटेगा, गिरेगा । कांच का होगा तो टूटकर भी औरों के हाथ-पांव जख्मी करके छोड़ेगा । धूल में मिलकर भी धूल का अंग न बनकर वह टुकड़ा-टुकड़ा अपने अस्तित्व की घोषणाएं, करता रहेगा । अतः भाइयो जो गिर चुका है, उससे अपने हाथ जख्मी करने से क्या लाभ ।

''वास्तव में गिरती चीजों की ओर दृष्टि गिरायें, तो चरित्र और कीमतें दोनों का अलग ही चरित्र है । एक गिरता है तो व्यक्तित्व पर आघात होता है, दूसरी गिरती है तो लोगों के चेहरे पर एक संतोष का भाव आ जाता है । सच कहें तो गिरे हुए को दूसरों को गिराने में जो मजा आता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं आता । दशा ही ऐसी गिरी हुई वस्तु है, जो गिरती है तो साथ में सब कुछ ले डूबती है इसके मूल में है गरीबी... । यह अपने आप में एक ऐसा गरमागरम मसाला है, जिसके बल पर लोगों ने सालों कमाई की, खाया और उनकी दशा सुधारने के चक्कर में ताक लगाये रहे कि कहीं

''सच कहें तो सबसे पहला गिरने का सिद्धांत उस दिन बना जब न्यूटन को जमीन पर लेटकर घंटों शून्य में ताकने की आदत का फल मिल गया ।

उनकी दशा सुधर न जाए, क्योंकि ऐसी हालत हुई, तो वे सुधार, विकास किसका करेंगे । उन्हीं की विवशता की दुहाई और आंसू वह तौल के बाट हैं, जिनसे हर कोई अपना पलड़ा भारी किये है...

''ध्यान रहे गिरी हुई चीजों को आप न छुएं, न हाथ लगायें । यह जैसी है, जहां है उसे वहीं रहने दें । हां कीमतें और भाव गिरायें । डॉलर और पौंड की कीमतें गिरायें, जो ज्यादातर आसमान में देखने के आदी हैं, उनके पांव तले से जमीन खिसकायें । जिनकी आंखों में शरम-हया बाकी नहीं, जो मुंह उघाड़े घूमते हैं, उनकी पलकें गिरायें । जिस नौटंकी में द्रोपदी चीरहरण होता रहे और श्रीकृष्ण न आ पायें, ऐसी नौटंकी पर परदा डाल दें । जिन रावणों ने सोने की लंकाएं खड़ी कर लीं, ऐसी लंकाएं गिरायें... ।

''लेकिन भाइयो फिलहाल...आपसे इतना ही अनुरोध है कि आप हर गिरी हुई वस्तु की मात्र सूचना दें । हमारा कार्यालय इतना गिरा हुआ नहीं है कि आपकी सूचनाएं दर्ज न करे... ।''

—सी-१११, न्यू राजेन्द्र नगर
नयी दिल्ली-११००६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष : समस्या और समाधान

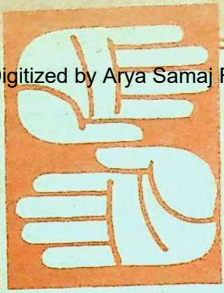

● अजय भाम्बी

ब्रह्मदत्त सिंह, जगदीशपुर (बस्ती)

प्रश्न : हत्या के मामले में जेल में हैं। जमानत कब तक ? फैसला पक्ष में या प्रतिकूल ?

उत्तर : ७ दिसम्बर के बाद जमानत होने की पूर्ण संभावना है।

जयंती रामसाय, इंदौर

प्रश्न : टी. वी., फिल्म लेखन में सफलता मिलेगी ? आर्थिक आत्मनिर्भरता कब ?

उत्तर : १६ फरवरी के बाद उत्तम समय प्रारंभ हो रहा है, सारे कार्य सिद्ध होंगे।

प्रेमप्रकाश मिश्र, पटना

प्रश्न : आध्यात्मिक सफलता कब तक ?

उत्तर : कुंडली में संन्यास योग तो है लेकिन बहुत स्पष्ट नहीं, अतः किसी योग्य गुरु की आवश्यकता पड़ेगी।

आलोक बछरावर, फतेहाबाद

प्रश्न : वाहन सुख, विदेश यात्रा कब ?

उत्तर : वाहन सुख १९९६ में, यात्रा बाद में।

अरुण प्रसाद, डालमियानगर

प्रश्न : दांपत्य जीवन के शुरुआत में ही स्थिति क्लेशमय क्यों ?

उत्तर : क्योंकि कुंडली में सप्तम यानि भार्या स्थान में केतु स्थित है और सप्तम का स्वामी शुक्र दूषित है।

शक्ति शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : संतान प्राप्ति होगी या नहीं ? होगी तो कब तक ?

उत्तर : दो वर्ष के भीतर निःसंदेह संतान प्राप्त होगी।

जयप्रकाश अग्रवाल, बुलंदशहर

प्रश्न : धन लाभ कब तक ? रत्न बतायें ?

उत्तर : १९९६ से आर्थिक दृष्टि से बहुत अच्छा समय प्रारंभ हो रहा है। पुखराज धारण करें।

नीरज गोयनका, लुधियाना

प्रश्न : विवाह कब होगा ? रत्न सुझाये ?

उत्तर : विवाह सितम्बर '९६। नीलम धारण करें।

रोली वाजपेयी, लखनऊ

प्रश्न : आई. ए. एस. कब तक बनूंगी ?

उत्तर : इस बार प्रयास करें, सफलता मिल सकती है।

बी. बी. एल. शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : श्वेत दाग कब ठीक होंगे ? रत्न सुझायें ?

उत्तर : पन्ना पहनें, पूर्ण लाभ की संभावना कम है ?

स्मिता शर्मा, रुड़की

प्रश्न : क्या माता-पिता की इच्छानुसार या स्वयं की इच्छानुसार प्रेम विवाह होगा ?

उत्तर : आपके विवाह को लेकर संकट की स्थिति नहीं आएगी एवं सभी पक्ष प्रसन्न रहेंगे।

अजय कुमार गोयल, मेरठ

प्रश्न : मकान का मुकदमा किसके पक्ष में और कब तक ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : समझौता करना पड़ेगा ।

हेम कुमार, रामपुर (उ.प्र.)

प्रश्न : फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में जाना चाहता हूं, क्या सफलता मिलेगी ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयासों की आवश्यकता है ।

राजीव रंजन सिंह, मोहनियां (बिहार)

प्रश्न : शांति एवं तरक्की हेतु कौन-सा रत्न धारण करें ?

उत्तर : मोती एवं पुखराज ।

नंदिता कुमारी, गढ़वा

प्रश्न : क्या मैं बी. पी. एस. की परीक्षा में सफल हो पाऊंगी ?

उत्तर : हो जाएंगी ।

राजीव, खंडवा

प्रश्न : मेरा स्वयं का मकान कब तक बनेगा ?

उत्तर : अगले ढाई वर्ष में आपके बहुत-सारे कार्य संपन्न होंगे, उसमें एक मकान भी है ।

संदीप प्रकाश, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : इंजीनियरिंग में नामांकन कब होगा ?

उत्तर : इसी वर्ष (१९९६ में) ।

प्रमोद चंद्र शर्मा, नोएडा

प्रश्न : पुत्र प्राप्ति कब तक होगी ?

उत्तर : जून '९७ तक ।

— 'नक्षत्र निकेत'
४०६, ढाका चेम्बर-१
२०६८/३८, नाईवाला करोलबाग
नयी दिल्ली-११०००५

प्रविष्टि—१६५

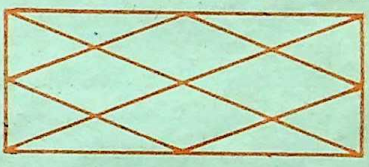

नाम.....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ..... महीना ..... सन .....

जन्म-स्थान.....

जन्म-समय .....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण .....

पता.....

आपका एक प्रश्न .....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें .....

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १६५ 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० दिसंबर, १९९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुगलखोर का मकबरा और गिलहरी का पुल

● मेधावसु पाठक

यह तथाकथित 'चुगलखोर' अपनी चुगली की खराब आदत के कारण इतना मशहूर हुआ कि तत्कालीन राजाओं ने चुगलखोर के मरने के बाद एक मकबरा बनवा दिया, जो आज 'चुगलखोर का मकबरा' नाम से जाना जाता है। नगर इटावा से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर फर्रूखाबाद मार्ग के निकट जुगरामऊ का प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर पर मुड़नेवाली सड़क के बीस कदम आगे ही चुगलखोर का मकबरा स्थित है। इष्टिकापुरी, इटावा में जहां महाकवि देव-जैसे महाकवि और खटखटा बाबा-जैसे संत हुए, वहां एक नामी चुगलखोर भी हुआ।

कब्र पर जूते मारने की प्रथा

चुगलखोर के मकबरे को लेकर यहां के क्षेत्रीय ग्रामीणों में एक धारणा प्रचलित है कि...इस मार्ग से होकर गुजरनेवाला यात्री चुगलखोर की कब्र पर यदि पांच जूते अथवा पांच चप्पलें मारेगा, तो उसकी यात्रा सफल होगी तथा यात्रा के अंतर्गत उसे किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होगी। अतः इस मार्ग से निकलनेवाले कुछ यात्री चुगलखोर के इस मकबरे के अंदर बनी कब्र पर प्रायः जूते या चप्पलें मारते देखे जाते हैं।

एक अन्य धारणा भी चुगलखोर के मकबरे के संबंध में व्याप्त है कि...जब कोई व्यक्ति चुगलखोर के मकबरे के अंदर घुसता है, तो अंदर घुसते ही उस व्यक्ति के अंदर स्वतः ही यह इच्छा तीव्र होने लगती है कि वह स्वयं भी किसी अन्य व्यक्ति की चुगली किसी और से करने लगे। इस तथ्य में कितनी सत्यता है— यह चुगलखोर के मकबरे के अंदर घुसकर ही अनुभव किया जा सकता है। हां...चुगलखोर के मकबरे के अतीत में एक कहानी प्रचलित है,

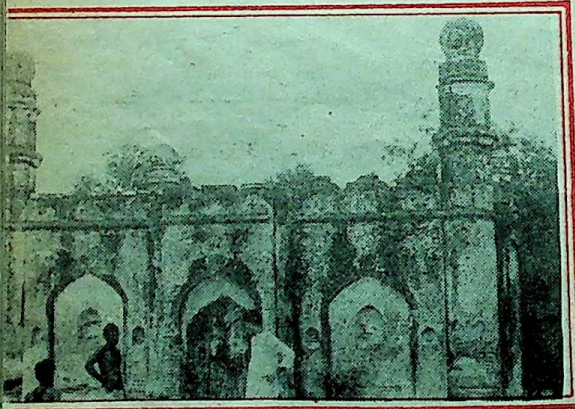

चुगलखोर का मकबरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे यहां आसपास के क्षेत्रीय निवासी बड़े चाव से सुनाते हैं । यह कथा किस सीमा तक सच है— इसका कोई लिखित ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, किंतु जो भी इस संबंध में प्रचलित है, वह इस प्रकार है—

चुगलखोर की कहानी

सैकड़ों वर्ष पूर्व इष्टिकापुरी, इटावा के किसी तत्कालीन राजा का युद्ध अटेर (भिंड) नामक स्थान के राजा से हुआ । यहां आश्चर्य का विषय था कि इटावा के राजा का एक प्रमुख मुसलिम सलाहकार था, जो राजा के व्यक्तिगत मामलों में काफी दखल और जानकारी रखता था । इस व्यक्ति की तबियत एक बार अटेर रियासत घूमने की हुई । वह राजा से आज्ञा प्राप्त कर अटेर की तरफ चल दिया । अटेर पहुंचने पर वहां के राजा ने उसकी बड़ी खातिरदारी की । यहां पर उस व्यक्ति के दिमाग में एक शरारत सूझी । उसने अटेर तथा इटावा के दोनों राजाओं को परस्पर लड़वाने का मंसूबा तैयार किया और अटेर के राजा को भड़काते हुए बोला कि वह सावधान रहे, क्योंकि निकट भविष्य में इटावा का राजा अटेर का राज्य एकाएक हड़पने के लिए किसी भी समय हमला कर सकता है । इधर अटेर से इटावा लौटने पर यही बात उसने इटावा के राजा से कही । फिर क्या था, अकारण ही एक साधारण-सी बात युद्ध की भूमिका में परिवर्तित हो गयी । दोनों ओर से तलवारें खिंच गयीं तथा कुछ लोग मारे भी गये, किंतु यकायक उन दोनों राजाओं के सलाहकारों ने सूचना दी कि 'युद्ध करने की कोई बात ही नहीं है, बल्कि उस व्यक्ति ने बिना किसी बात के दोनों राजाओं को लड़वा दिया है और वह स्वयं दूर से इस युद्ध का आनंद ले रहा है ।' यह बात दोनों राजाओं की समझ में आ गयी, तब जाकर कहीं लड़ाई बंद हुई ।

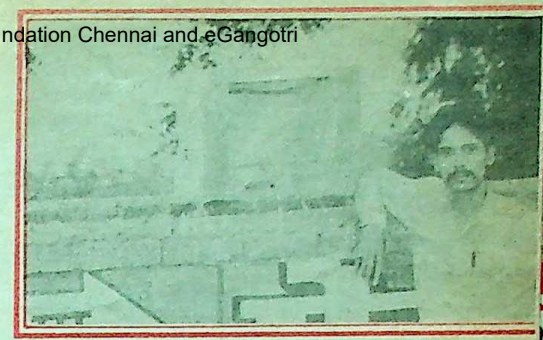

गिलहरी की नन्हीं समाधि

अंत में उस चुगलखोर को सजा-ए-मौत का हुकम दिया गया ताकि जनता, उसकी चुगली की बुरी आदत का ध्यान रखते हुए सदा सावधान रहे । दोनों रियासतों के राजाओं ने मिलकर, यह मकबरा बनवाया, जिसे 'चुगलखोर का मकबरा' नाम से आज तक जाना जाता है ।

गिलहरी का पुल

नगर इष्टिकापुरी इटावा स्थित इसलामिया इंटर कॉलेज के पास स्थित गंदे नाले के ऊपर एक पुल बना है, जिसके ऊपर होकर देहली-कलकत्ता मार्ग गुजरता है । यह पुल 'गिलहरी का पुल' नाम से जाना जाता है । जिस प्रकार चुगलखोर का मकबरा अपने आप में विचित्रता रखता है, उसी प्रकार गिलहरी का पुल भी अजीब दास्तान एवं किंवदंतियों से अपना संबंध रखता है ।

पौराणिक प्रसंग

रामायण के महानायक श्रीरामचंद्रजी समुद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रीय ग्रामीणों में एक धारणा प्रचलित है कि...इस मार्ग से होकर गुजरनेवाला यात्री चुगलखोर की कब्र पर यदि पांच जूते अथवा पांच चप्पलें मारेगा, तो उसकी यात्रा सफल होगी तथा यात्रा के अंतर्गत उसे किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होगी ।

के ऊपर रावण की लंका तक पुल बनवा रहे थे । यह पुल नल और नील नामक दो कुशल वानर अभियंताओं की देखरेख में तैयार हो पाया था । लोक धारणा है कि जिस समय समुद्र के ऊपर बननेवाला यह पुल निर्माणाधीन था, उस समय एक नन्हीं गिलहरी ने भी अपना यथासंभव योगदान पुल के निर्माण के समय किया । गिलहरी सागर तट पर पड़ी बालू में पहले लोट लगाती और फ़िर समुद्र के पानी में डुबकी लगाती, जिससे उसके नन्हे शरीर में लिपटा हुआ बालू का अंश पानी में चला जाता । मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जब नन्हीं गिलहरी को पुल के निर्माण के कार्य में लगे देखा, तो उसे अपने पास बुलाकर उसकी पीठ पर अपना हाथ फेर दिया । उस दिन से गिलहरी की पीठ पर तीन काली धारियां बन गयीं, जो श्रीराम की ही अंगुलियों के निशान हैं ।

कलयुगी गिलहरी का योगदान

इष्टिकापुरी इटावा में भी इस गिलहरी ने कुछ ऐसा ही काम किया, किंतु यह बात कोई अप्रमाणित बात न होकर शत-प्रतिशत प्रमाणित है ।

कहा जाता है कि जब यह पुल ब्रिटिश काल में निर्माणाधीन था, तो इस पर काम करनेवाले मजदूरों और मिस्त्रियों को गिलहरी ने बहुत खुश किया । जब वे मजदूर पुल को बनाते समय कड़ी मेहनत में लगे होते, तो एक नन्हीं गिलहरी उनके आसपास चहलकदमी करती फिरती और अपनी तीखी और तेज-तर्रार आवाज से मजदूरों का मनोरंजन करती, जिससे मजदूरों को सुस्ती नहीं आती थी । यह एक विश्वास अथवा किंवदंती है कि महल्ला नौरंगाबाद के पास स्थित यह पुल जब तक पूर्ण रूप से निर्मित नहीं हो गया, यह गिलहरी उन सभी मजदूरों के साथ रही, किंतु जिस दिन यह पुल बनकर तैयार हुआ, ठीक उसी दिन वह गिलहरी मर गयी । उस दिन सभी मिस्त्री और मजदूर बहुत खुश थे, क्योंकि बड़ी मेहनत से यह पुल तैयार हो पाया था, लेकिन फिर भी रह-रहकर उन्हें उस गिलहरी की याद भी अंदर-ही-अंदर सता रही थी, जिसने कड़ी मेहनत करते समय महीनों तक उनका दिल बहलाया था । अतः जिस मुंडेर पर उस गिलहरी ने प्राण त्यागे थे, वहां कुछ मजदूरों ने उसकी नन्हीं-सी समाधि बना दी, जो आज भी देखी जा सकती है । आसपास रहनेवाले लोग कभी-कभार गिलहरी की छोटी-सी कब्र पर अगरबत्तियां आदि जलाते देखे जाते हैं ।

यह छोटी-सी मजबूत और सुंदर कब्र अब तक बनी है, उस पुल की मुंडेर पर । इसलिए आज भी लोग इसे 'गिलहरी का पुल' नाम से पुकारते हैं ।

—१७, कूंचा शील चंद्र, इटावा (उ.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कृतियां

मछली बाजार : राजेन्द्र अवस्थी : मछली बाजार केवल औपन्यासिक कथा नहीं है अपितु यह अब तक के प्रचलित औपन्यासिक शिल्प से नितांत भिन्न प्रकार की कृति है । यह आज के मध्यमवर्गीय परिवार और तत्संबंधी समाज का एक दस्तावेज भी है । समकालीन जीवन और राजनीति में घटनाओं के पीछे किस तरह की मूल्यहीनता है, कैसे मुखौटे हैं : राजनीतिक कर्णधारों का निजी जीवन कैसा है इसका विवरण तो यह उपन्यास जुटाता ही है, साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि विभाजित व्यक्तित्ववाला इसका नायक शमशेर हमारे जीवंत सामाजिक परिवेश के कितने ध्वज भंग करता है ।

मध्यमवर्गीय परिवार और तत्संबंधी समाज की कुरीतियों, प्रथाओं के बीच उपन्यास के सभी कथा-पात्र शमशेर, विक्रम राय, शुभा, अशरफी तथा प्रभा केवल पात्र मात्र नहीं है, बल्कि समाज में रोज-रोज घटनेवाली घटना तथा घटनाक्रम के प्रतिबिंब हैं । कथाकार की दृष्टि में तो यह उपन्यास एक 'सामाजिक आत्म स्वीकृति' है जिसे कथाकार ने एक माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया है । यह उपन्यास एक ऐसे वैज्ञानिक समाज का भी दर्शन कराता है जिससे पता चलता है कि नया समाज कैसा हो और नये समाज का ढांचा क्या हो ?

'ताबूत में ढका हुआ मकान... एक अजीब बात है । हजारों साल पहले ढकी हुई कब्रों के बारे में कहा जाता है कि कोई दिन आएगा और उनमें हलचल होगी । तब अपने-आप इन कब्रों में हरकत होगी और... आगे की बात कोई नहीं जानता । इनके भीतर से क्या निकलेगा, कैसा होगा । जो और जैसा हो प्रतीक्षा रहेगी ।' इन पंक्तियों से शुरू होनेवाला यह उपन्यास अंत तक रोचकता, तनाव, घुटन, प्रेम और त्याग से भरपूर है ।

कथाकार ने अपने पूर्व के उपन्यासों में कई प्रयोग किये हैं । मछली बाजार में भी कई-कई जगह अच्छे प्रयोग हैं— आकर खड़ी हो जाए । यदि ज़िंदगी । एक दिन नंगी एकदम । नहीं करूंगा मैं आलिंगन उसका । हम सब । नंगे आये थे । आने को ढंकना और संवारना हमने सीखा है । धीरे-धीरे । सभ्यता के साथ । क्योंकि हम फिर नहीं लौट जाना चाहते । जंगलों की ओर । जंगली जानवरों की तरह । खून पीने के लिए ।'

श्री राजेन्द्र अवस्थी प्रयोगधर्मा कथाकारों में प्रथम श्रेणी के कथाकार हैं । उनके कथा-साहित्य में आम आदमी की व्यथा रही है । उन्होंने महानगरों के यांत्रिक जीवन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपनी कथाओं का आधार बनाकर हिंदी साहित्य को कई उत्कृष्ट उपन्यास दिये हैं। भाषा, भाव, शैली और वस्तु विन्यास में इस उपन्यास का भी अपना विशिष्ट स्थान है। यथा— 'शमशेर का मकान ही नहीं, बहुत से मकान हैं जो सब अपने-अपने ताबूत में ढके हैं। कहीं कुछ रोशनी है, कहीं वह भी नहीं, परंतु सारे ताबूत जीवित हैं। वे कब्रगाह नहीं बन सकते और न कभी बनेंगे— कब्रगाहों में तो सुगंधित फूल और रेशमी चादरें चढ़ायी जाती हैं, इन ताबूतों को वह भी नसीब नहीं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य उपन्यासों और रचना की तरह यह उपन्यास भी पाठक उसी तरह से सराहेंगे। उपन्यास की रोचकता उसकी सरल भाषा, कथानक एक-दूसरे को जोड़नेवाला तथा भाव अपने आसपास घटित होनेवाला घटनाक्रम-सा है। आवरण पृष्ठ आकर्षक तथा छपाई साफ है। उपन्यास पठनीय ही नहीं, संग्रहणीय भी है।

मछली बाजार : राजेन्द्र अवस्थी, प्रकाशक : विद्या पुस्तक सदन, बी-८८७, चित्रकूट एंक्लेव, अम्बेडकर मार्ग, दिल्ली-११००९३। मूल्य : अस्सी रुपये।

अतीत के साये : सुधीन्द्र कुमार का यह उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें नारी की पीड़ा तथा उसके संघर्ष का मार्मिक चित्रण है। भारतीय समाज के आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे मध्यमवर्गीय परिवारों में पति-पत्नी के साथ परिवार में महिलाओं की क्या स्थिति है; यह उपन्यास उस पर चिंतनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

उपन्यास के पात्र चाहे वह श्रीनिवास हो, प्रेमनाथ हो, कला हो, चंद्रपाल हो या उनकी पत्नी, सभी आज के मध्यमवर्गीय और उच्चवर्गीय समाज की घुटन भोग रहे हैं। मध्यमवर्गीय समाज से आयी कला की सोच, नौकरी के लिए स्कूलों की खाक छानना और तथाकथित उच्चवर्गीय प्रबंधक और प्रधानाचार्य के शोषण के बीच तैरते-निकलते कथा के पात्र आस-पास के-से लगते हैं।

अतीत के साये : सुधीन्द्र कुमार, प्रकाशक : कादम्बरी प्रकाशन, ५४५१, शिव मार्केट जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७, मूल्य : सौ रुपये।

प्रस्तुति : सुजीत वाजपेयी

मध्य रात्रि में सूर्य स्नान : सुपरिचित व्यंग्य चित्रकार सुशील कालरा की नारवे-यात्रा के मर्मस्पर्शी संस्मरण हैं। ये संस्मरण आम यात्रा-वृत्तों से बिलकुल अलग हैं और किसी औपन्यासिक कृति का-सा आनंद देते हैं। नारवे अर्थात नार्थ-वे— उत्तरी ध्रुव जाते समय लेखक ने कुछ रेखा-चित्र भी बनाये, वे भी इस यात्रा-संस्मरण में यत्र-तत्र संकलित हैं। लेखक को इस यात्रा में अनेक व्यक्ति मिले और लेखक की भांति वे पाठक के मन पर भी अपनी छाप छोड़ते हैं, चाहे वह क्रिस्टीना हो, या एंड्रीना। सुशील कालरा प्रसिद्ध चित्रकार एडवर्ड मुंक की कृतियों को प्रत्यक्ष देखने गये थे और एक अध्याय में उन्होंने पाठकों को मुंक के विषय में पर्याप्त जानकारी भी दी है। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यात्रा-संस्मरणों की एक विशेषता है, लेखक की अनुभूतियां और उसके संकेतात्मक निष्कर्ष जो पाठक को झकझोरते हैं । यूनिवर्सिटी में लेखक का अनुभव हमें अपने देश की सामाजिक स्थितियों पर मजबूर कर देता है । वे लिखते हैं, 'यहां व्यक्ति और पोस्ट दो अलग-अलग चीजें हैं । कोई भी अपने काम की हैसियत को अपनी व्यक्तिगत हैसियत पर हावी नहीं होने देता । नौकरियां तो आनी-जानी हैं, पर व्यक्तित्व का निजी व्यक्तित्व स्थायी है ।'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक की 'निक्का नियाणां' और 'पालकी' की तरह यह कृति भी निश्चय ही सराही जाएगी

मध्य रात्रि में सूर्य स्नान : लेखक : सुशील कालरा, प्रकाशक : पुस्तकायन, २१४२२०ए, अंसारी रोड, नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य : सत्तर रुपये ।

उदयाचल से उत्तरायण : डॉ. प्रदीप शुक्ल की यह कृति मध्य प्रदेश के लौह पुरुष और भारतीय राजनीति के आधुनिक चाणक्य कहे जानेवाले स्वतंत्रता सेनानी पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र का मूल्यांकन है । मिश्रजी प्रमुख सांसद, प्रशासक, शिक्षाविद् और साहित्यकार भी थे । ऐसे बहुमुखी व्यक्तित्व पर कलम उठाना और उसके साथ न्याय करना कितना कठिन है इसका अनुमान सहज में लगाया जा सकता है । विद्वान लेखक ने यह कार्य बड़ी योग्यता से किया है ।

मिश्रजी ने १९२६ में अपने छात्र जीवन के दौरान भारतीय धारा सभा (केंद्रीय विधानसभा) के चुनाव में दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति और सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता सर हरीसिंह गौड़ को पराजित कर सनसनी फैला दी थी । अपने लंबे और उतार-चढ़ाव भरे जीवन के दौरान मिश्रजी ने समकालीन इतिहास की रचना की और उसे दिशा प्रदान की ।

प्रस्तुत पुस्तक में उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में उपयोगी और अंतरंग जानकारी दी गयी है । उनके तेजस्वी व्यक्तित्व के विविध रूपों को बड़े श्रम से संजोया गया है । 'उदयाचल से उत्तरायण' एक विलक्षण व्यक्ति के जीवन की दुर्लभ झांकी प्रस्तुत करता है ।

प्रकाशक : साहित्य संगम, नया १०० लूकर गंज, इलाहाबाद ; मूल्य : २०० रु. ।

निराला के काव्य में जीवन बोध : डॉ. जगदीश्वर प्रसाद की प्रस्तुत रचना में निराला के जीवन बोध को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । निराला हिंदी काव्य जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे । उनकी रचनाओं में दो रेखाएं—मानवाद और अध्यात्म प्रमुख हैं । विद्वान लेखक ने निराला की रचनाओं में इन दोनों रेखाओं को बड़े सरल ढंग से स्पष्ट किया है ।

प्रकाशक : नयी कहानी, १७० अलोपी बाग, इलाहाबाद २११००६ ; मूल्य : ८० रु. ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्राप्ति स्वीकार :

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. हरिवंशराय बच्चन और कृष्णदासन की कविताओं में सौंदर्य चेतना : (हिंदी-तमिल तुलनात्मक अध्ययन) लेखक : डॉ. एस. विजया

प्रकाशक : हिंदी हृदय, ३९, सालै स्ट्रीट, , मद्रास-४ मूल्य : १०० रुपये

२. बुंदेली के प्रतिनिधि कवि : संपादक : कैलाश मड़बैया

प्रकाशक : मनीष प्रकाशन ३४/१० साउथ टी.टी. नगर एवं ७५, चित्रगुप्त नगर, कोटरा, सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.)-३ मूल्य : ५० रुपये

३. सफलता का रहस्य : लेखक : जगतराम आर्य

प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मंडल सरस्वती भंडार, गांधी नगर, दिल्ली-३१ संस्करण : १९९४ मूल्य : ३० रुपये

४. लोकनायक : लेखक : नरेन्द्र स्वरूप 'विमल'

प्रकाशक : किंवा प्रकाशन सी-४७७, सेक्टर-१९* बिस्मिल विहार (नौएडा) मूल्य : १०० रुपये

५. रूप कुछ निखरे हुए ये : लेखक : डॉ. राधा पांडेय

प्रकाशक : चरित्र-विकास ८६, नजीराबाद, लखनऊ-१८ संस्करण : १९९३ मूल्य : ५५ रुपये

६. समुद्र ने भी सुना : लेखक : चैतन्य त्रिवेदी

प्रकाशक : साहित्य भारती के-७१, कृष्ण नगर दिल्ली-५१ प्रथम संस्करण : १९९४ मूल्य : ९० रुपये

७. आदर्श विद्यार्थी बनो : लेखक : जगतराम आर्य

प्रकाशक : किताब घर मेन बाजार, गांधी नगर दिल्ली-३१ संस्करण : १९९४ मूल्य : २५ रुपये

८. आचार्य तुलसी साहित्य एक पर्यवेक्षण : लेखक : समणी कुसुम प्रज्ञा

प्रकाशक : जैन विश्व भारती लाडनूं (राजास्थान) संस्करण : १९९४ मूल्य : १८० रुपये

९. सीता की रामकहानी : लेखक : डॉ. सरोजनी प्रीतम

प्रकाशक : हास्य अकादमी प्रकाशन सी-१११, न्यू राजेन्द्र नगर नयी दिल्ली-६० मूल्य : ६० रुपये

१०. जागीं नदियां नैन की : लेखक : डॉ. अब्दुल अजीज 'अर्चन'

प्रकाशक : डॉ. अब्दुल अजीज 'अर्चन', संस्करण : १९९१ मूल्य : १५ रुपये

११. आस्था का सूरज : लेखक : घमंडी लाल अग्रवाल

प्रकाशक : अयन प्रकाशन १/२०, महरौली, नयी दिल्ली-३० संस्करण : ११९५ मूल्य : ७५ रुपये

१२. अमी-धारा : लेखक : साध्वी अक्षयश्री 'आरवा'

प्रकाशक : के. ज्ञानचंद जैन एंड कम्पनी २३१, सदर बाजार, दिल्ली-६ संस्करण : १९९४ मूल्य

१३. उर्मिल का विरह : लेखक : कमला शर्मा

प्रकाशक : पहला प्रकाशन प्रथम संस्करण : १९९४ मूल्य : —

१४. स्वधर्म और कल्पनायोग : लेखक : सुरेश सोमपुरा

प्रकाशक : स्वधर्म समिधा ट्रस्ट १४, योगाधाम, पी.एम. रोड, विलेपार्ले (ईस्ट), बंबई-५७

१५. हिंदी की जय यात्रा : लेखक : धनंजय अवस्थी

प्रकाशक : — प्रथम संस्करण : १९९४ मूल्य : १५ रुपये

१६. अन्तप की ध्वनि : लेखक : राधेश्याम तिवारी

प्रकाशक : आर.जी. झबर एंड एसोसिएट्स संस्करण : १९९५ मूल्य : १५ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७. छींटें रंग-गुलाल के : लेखक : बटुक चतुर्वेदी
प्रकाशक : पोंगा उत्सव समिति प्रथम संस्करण : १९९५ मूल्य : ११ रुपये

१८. सावित्री : लेखक : अभिमन्यु सिंह 'मधुर'
प्रकाशक : सावित्री प्रकाशन ज्योली, पोस्ट-ज्योली जिला-आजमगढ़ (उ.प्र.) प्रथम संस्करण : १९९४ मूल्य : २० रुपये

१९. काल अभिज्ञान : लेखक : रामदुलारे पाठक
प्रकाशक : हिंदी प्रकाशन लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ (उ.प्र.) प्रथम संस्करण : १९९४ मूल्य : २५ रुपये

२०. महकते फूल : लेखक : मंजू अग्रवाल
प्रकाशक : — मूल्य : ५० रुपये

२१. काथम (कहानी-संग्रह) : संपादक : प्रेम गुप्ता 'मानी'
प्रकाशक : यथार्थ प्रकाशन ई-६९७, बर्रा भाग-३, जनता नगर, कानपुर-१४ प्रथम संस्करण : १९९० मूल्य : ५० रुपये

२२. अनुभूत (कहानी-संग्रह) : संपादक : प्रेम गुप्ता 'मानी'
प्रकाशक : यथार्थ प्रकाशन ई-६९७, बर्रा भाग-३, जनता नगर, कानपुर-१४ मूल्य : ३५ रुपये

२३. सिर्फ एक गुलाब (बाल-कथा-संग्रह) : संपादक : प्रेम गुप्ता 'मानी'
प्रकाशक : यथार्थ प्रकाशन ई-६९७, बर्रा भाग-३, जनता नगर, कानपुर-१४

२४. अपराधी : लेखक : नरेन्द्र कुमार जैन
प्रकाशक : नरेन्द्र वैलफेयर ट्रस्ट ५९, गांधी रोड, देहरादून मूल्य : १० रुपये

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. मीराबाई के पत्र के उत्तर में (जिसमें यह पद लिखा था— 'स्वस्ति श्री तुलसी गुण भूषण दूषण हरण गुसाईं', ख. वृंदावन में, २. अरब सागर में ५०८ द्वीप— सबसे बड़ा द्वीप लक्षद्वीप; बंगाल की खाड़ी में ६६७ द्वीप— सबसे बड़ा अंडमान-नीकोबार द्वीपसमूह, ३. क. भारत— २३५ टन, ख. जापान— १६४ टन, अमरीका— १३९ टन, ४. क. भारतीय इस्पात प्राधिकरण (सेल), ख. १३,५५२ करोड़ रु., ५. क. सिंधु नदी (विशेषतया लद्दाख) में अगस्त १९७५ में भारत-जरमन नौका-दल के ५ सदस्यों ने, ख. ४१४०-३१५० मीटर के बीच ऊंचाई पर, २५० कि.मी. नौका यन, ६. क. ४ अप्रैल '६६ को पूरी की, ख. ४० हजार कि.मी., डेढ़ मास से अधिक समय में, ७. क. अर्जेंटीना की श्रीमती इसाबेल पेरोन, ख. षड्यंत्रकारी सैन्य सत्ता ने अनैतिकता तथा अक्षमता के आरोप में अपदस्थ कर दिया (मार्च, १९७६), ८. डॉ. हृदयनाथ कुंजरू ने (१९६८), ९. क. शिवाजी सावंत (मराठी उपन्यासकार), ख. अमृत राय, ग. क्रमशः निर्मल वर्मा तथा प्रभाष जोशी, १०. क. स्टेफी ग्राफ (मोनिका सेलेस को हराकर), ख. जसपाल राणा (निशानेबाज) और मल्लेश्वरी (भारोत्तोलन), ११. *नर बेबून के कैनाइल दांत जो शेर के दांत से भी तेज और लंबे हैं।*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों में व्यर्थ व्यय होंगे। उच्चाधिकारियों से संबंधों में सुधार होगा। आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से संपत्ति कार्यों की पूर्ति होगी। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी। निकट जनों से भावनात्मक पीड़ा होगी। नवीन मित्रों का समागम लाभदायी होगा।

वृषभ : आर्थिक योजनाओं में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से संपत्ति कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी। व्ययों की अधिकता होगी। परोपकारी प्रयासों से प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। न्यायालयीन समस्याओं का समुचित समाधान होगा। यात्रा का योग उपस्थित होगा।

मिथुन : कार्यों में सफलता मिलेगी। लंबित योजनाओं की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। शत्रु-पक्ष के गुप्त षड्यंत्र से सावधानी रखें। न्यायालयीन कार्यों में सफलता में विलंब होगा। अकारण विवाद टालना हितकर होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। पारिवारिक सहयोग उत्साहदायी होगा। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में विवादास्पद स्थितियों का उदय होगा।

कर्क : परोपकारी तथा जोखिमपूर्ण कार्यों में सावधानी हितकर होगी। शत्रु-पक्ष कार्यों में अकारण अवरोध उपस्थित करेगा। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से वांछित पद अथवा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। कार्यों की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा। सत्संग अथवा ज्ञानार्जन के अवसर मिलेंगे। पुराने मित्रों का समागम होगा। आमोद-प्रमोद की अधिकता होगी। विलासितादायी वस्तु पर व्यय होगा।

सिंह : संपत्ति कार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे। पारिवारिक तथा राजकीय दायित्वों की अधिकता होगी। लंबित योजनाओं में विद्यमान अवरोध दूर होगा। नवीन स्थान की यात्रा होगी। आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा। आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। आकस्मिक व्यय होने पर आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा। उदर अथवा रक्तविकारों से पीड़ा होगी आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

कन्या : धैर्य तथा संयम से कार्य करें। भावुकता की अधिकता पीड़ादायी होगी। पारिवारिक वातावरण में विषमता का उदय होगा। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता से चिंतनीय स्थिति होगी। व्यर्थ संभाषण में संतुलन हितकर होगा। निकटजनों अथवा मित्रों के सहयोग से

ग्रह स्थिति— सूर्य : १६ दिसंबर से धनु में, मंगल : धनु में, बुध : ८ से धनु में, २७ से मकर में, गुरु : ७ से धनु में, शुक्र : १६ से मकर में, शनि : कुंभ में, राहु-केतु क्रमशः कन्या तथा मीन में ६ दिसं. से, हर्षल : मकर में, नेप्चून : ६ से मकर में, प्लेटो : वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा। आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी। यात्रा में सुखानुभूति होगी।

तुला : राजकीय सम्मान की प्राप्ति होगी। उच्चाधिकारियों के सहयोग से लंबित समस्याओं का समाधान होगा। आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी। नवीन संपत्ति अथवा वाहनादि का सुख प्राप्त होगा। प्रवास की अधिकता से स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी। पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा। परोपकारी कार्यों में अधिकता होगी। व्यर्थ संभाषण से मानसिक तनाव का सामना करना होगा।

वृश्चिक : विद्यमान समस्याओं का समाधान होगा। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु-पक्ष का पराभव होगा। आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी। सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में वृद्धि होगी। नवीन संपत्ति अथवा वाहन क्रय का योग उपस्थित होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी।

धनु : पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी। प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता तथा व्यय होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे। संपत्ति समस्या में शंका की स्थिति उपस्थित होगी। आर्थिक दिशा में चल रहे प्रयास पूर्ण होंगे। परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी। जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ का योग होगा। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी।

मकर : परिस्थितियों में चमत्कारी परिवर्तनों का उदय होगा। संपत्ति कार्यों में विद्यमान अवरोध दूर होंगे। पारिवारिक मतांतर दूर होंगे। उत्साहदायी स्थितियों से आत्मविश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी। दीर्घकालिक योजनाओं में व्यय लाभदायी होगा। आजीविका की दिशा में अनपेक्षित लाभ मिलेगा।

कुंभ : आजीविका संबंधी सुधार से उत्साह वृद्धि होगी। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी। न्यायालयीन कार्यों में विलंब हितकर होगा। सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि होगी। धनागम के संसाधनों में वृद्धि होगी। शत्रु-पक्ष के प्रयास विफल होंगे। उच्च वर्गीय अनुकंपा से शत्रु-पक्ष का पराभव होगा।

मीन : आत्म शक्ति में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा। शत्रु-पक्ष की क्रियाशीलता चिंतनीय होगी। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। विवादास्पद कार्यों से लाभ मिलेगा। भौतिक सुख तथा संसाधनों में वृद्धि होगी।

—ज्योतिष धाम
१२/४, ओल्ड सुभाष नगर
गोविंदपुरा भोपाल (म.प्र.)

पर्व और त्यौहार

२ दिसं. मोक्षदा एकादशी, ३ अखंड द्वादशी, ६ स्नानदान व्रत की पूर्णिमा श्री दत्तात्रेय जयंती, श्री विद्या जयंती, ७ आग्रहायणी पूर्णिमा, १० संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, १५ कालाष्टमी, १८ सफला एकादशी, १९ भौम प्रदोष, २१ स्नानदान श्रद्धादि की दर्श अमावस्या, २५ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी, २८ सतगुरु श्री गुरु गोविंद सिंह महाराज का जन्म दिवस, २९ अन्नपूर्णाष्टमी, ३१ शाम्ब दशमी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकल्लस पुरस्कार समर्पण समारोह

इस वर्ष शरदजी की स्मृति में आयोजित होनेवाले 'शरदांजलि समारोह' में १९९३ तथा १९९४ के 'चकल्लस पुरस्कार' क्रमशः डॉ. संसारचन्द्र और डॉ. शंकर पुणतांबेकर को दिये गये। यह संपूर्ण कार्यक्रम हरिशंकर परसाईजी की स्मृति को समर्पित था। चकल्लस पुरस्कार ट्रस्ट की वर्तमान परिषद के अध्यक्ष हैं— न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी। परिषद के अन्य सदस्य हैं— भंवर मेहता, द्वारकादास वेद, के.एम. पांडे, सुशील नेवटिया, निस्सीम चेतन, सर्जना ब्रह्मवर और नेहा शरद।

सिद्धांत कौमुदी राष्ट्रपतिजी को भेंट

उदयपुर (राज.) के प्रख्यात संस्कृत-सेवी ९० वर्षीय पं. बालकृष्ण व्यास शास्त्री ने सिद्धांत कौमुदी राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति डॉ.

शंकरदयाल शर्मा को भेंट की।

इस अवसर पर राष्ट्रपतिजी ने पंडित बालकृष्णजी की पौत्री संस्कृत-हिंदी लेखिका डॉ. रेखा व्यास से भी संस्कृत-संस्कृति तथा राजस्थान में संस्कृत की पारिवारिक परंपरा पर बातचीत की। सुश्री व्यास ने सुदूर क्षेत्रों में अनेक विद्वानों द्वारा की जा रही संस्कृत-सेवा तथा साधना पर भी प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में उमेश व्यास, श्रीमती अंजली, महेश आर्य, डॉ. मोनालिसा एवं डॉ. पी.के. चौधरी ने भी भाग लिया।

साहित्य वही जो मन को परिष्कृत करे

पिछले सप्ताह भोपाल के हिंदी भवन में कहानीकार कमलचन्द्र वर्मा के सातवें कहानी संग्रह 'पत्थर जो पिघल गया' का लोकार्पण त्रिपुरा के राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता म.प्र. के जल संसाधन मंत्री श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल ने की। इस अवसर पर म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्वावधान में 'देश की वर्तमान स्थिति एवं साहित्य के समक्ष चुनौती' विषय पर व्याख्यान का भी आयोजन किया गया। प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद ने उक्त विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि साहित्य वही अमरत्त्व को प्राप्त करता है जो यथार्थ के धरातल पर होता है और जिसकी दृष्टि शाश्वत होती है।

जल संसाधन मंत्री श्री राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल ने कहा कि कवि समाज में परिवर्तन ला सकता है। आज हमारे समक्ष अनेक चुनौतियां हैं, वही चुनौतियां साहित्य के समक्ष भी हैं। आज हम मूल्यों और आस्थाओं के संकट से गुजर रहे हैं।

हम एक वर्ण संकरण संस्कृति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में साहित्य एवं साहित्यकार की महती भूमिका है। कार्यक्रम का संचालन म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संयोजक श्री कैलाशचन्द्र पंत ने किया और आभार समिति अध्यक्ष श्री तनवंतसिंह कीर ने व्यक्त किया।

कविता संग्रह का लोकार्पण

नयी दिल्ली। गांधी शांति प्रतिष्ठान में युवा कवि दीपक गुप्ता के प्रथम कविता संग्रह 'सीपियों में बंद मोती' का लोकार्पण प्रख्यात साहित्यकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने किया । इस अवसर पर श्री यतीन्द्रनाथ गौड़, श्रीकृष्ण गुप्त एवं दर्शन सिंह को हिंदी सेवा सम्मान-१९९५ से सम्मानित किया गया ।

समारोह के अंत में एक काव्य गोष्ठी का आयोजन भी किया गया । जिसमें श्री श्रवण राही, लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, सतीश सागर, डॉ. शशि शर्मा, नीलम भट्ट आदि कवि-कवयित्रियों ने काव्यपाठ किया । समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ लेखक एवं कवि डॉ. अशोक लव, विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली पुलिस उपायुक्त श्री दीपक मिश्र सहित अन्य गण्यमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे । समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. रामप्रसाद मिश्र ने की ।

सद्भावना कवि सम्मेलन

कादीपुर (सुल्तानपुर) । भारतरत्न श्रीमती इंदिरा गांधी के बलिदान दिवस पर महिला एवं बाल कल्याण समिति के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का आयोजन किया गया । केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री सुरेश पचौरी मुख्य अतिथि थे । अध्यक्षता संजय गांधी मेमोरियल ट्रस्ट के अध्यक्ष कैप्टन डावर ने की । कवि सम्मेलन के संयोजक रामार्य पाठक के अनुसार इस कवि सम्मेलन में डॉ. कुंवर बेचैन, सुरेश नीरव, कमलेश राजहंस, कैलाश गौतम, डॉ. सुरेश व्यथित तथा लता श्रीवास्तव आदि ने काव्यपाठ किया । संचालन अनवर जलालपुरी ने किया ।

बायें से— रामार्य पाठक, सुरेश पचौरी (रक्षा राज्यमंत्री) तथा कैप्टन डावर

के.के. बिड़ला फाउंडेशन की शोधवृत्तियां

के.के. बिड़ला फाउंडेशन ने पिछले वर्ष भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के लिए दो शोधवृत्तियां आरंभ की थीं ।

वर्ष १९९५-९७ के लिए प्रो. भोलाभाई पटेल, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (सेवानिवृत्त) हिंदी विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय एवं पुणे की विदुषी श्रीमती रजिया पटेल, जो मुसलिम महिलाओं की समस्याओं के अध्ययन में संलग्न हैं, का चयन किया गया है । प्रो. भोलाभाई पटेल 'भारतीय

उपन्यास की परंपरा और इसकी पृष्ठभूमि में प्रेमचंद, ताराशंकर बंद्योपाध्याय और पन्नालाल पटेल का अध्ययन' तथा श्रीमती रजिया पटेल 'भारतीय लोक साहित्य तथा समकालीन साहित्य में मुसलिम स्त्री का चित्रण : एक तुलनात्मक अध्ययन' पर शोध करेंगी ।

भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन

१ से ३ नवम्बर को मावलंकर हॉल में आयोजित भारतीय प्राच्य विद्या के सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंह राव के सुपुत्र डॉ. पी.वी. रंगा राव, णाणसायर के ऋषभ अंक का अवलोकन करते हुए । साथ में णाणसायर के संस्थापक अशोक जैन और भारत निर्माण के अध्यक्ष श्री एम.सी. भंडारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांडुलिपियों के संरक्षण की आवश्यकता—डॉ. अवस्थी

पटना । प्रख्यात साहित्यकार एवं 'कादम्बिनी' के संपादक डॉ. राजेन्द्र अवस्थी ने विगत १७ सितम्बर को पटना कादम्बिनी क्लब द्वारा जाकिर हुसैन अनौपचारिक शिक्षण संस्थान के सभागार में आयोजित रचना-संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह सर्वाधिक दुःखद पहलू है कि राजनीति का छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी महत्त्वपूर्ण मान लिया जाता है, जबकि साहित्य का महान

साधक हाशिये में अदना स्थिति में पड़ा है । उन्होंने साहित्यकारों की उपेक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वरिष्ठ साहित्यकारों की पांडुलिपियों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की जानी चाहिए ।

डॉ. अवस्थी ने अपने देश-देशांतर के अनुभवों को सुनाते हुए कहा कि इंगलैंड में शेक्सपीयर के जन्मस्थान पर तीर्थस्थल-सा बन गया है, जहां उनकी प्रत्येक वस्तुएं संग्रहीत हैं, जिसमें उनकी पांडुलिपि भी शामिल है; जबकि हमारे लोकमानस को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले महान साहित्यकार तुलसीदास के 'रामचरितमानस' की पांडुलिपि का कहीं पता नहीं है । यह हिंदी सेवियों का दुर्भाग्य है । उन्होंने साहित्यकारों का आह्वान करते हुए कहा कि वह श्रेष्ठ बनें एवं अपनी आत्मा के प्रकाश से देश-समाज को प्रकाशित करें ।

समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री भगवतीशरण मिश्र ने की एवं संचालन युवा साहित्यकार एवं क्लब के संयोजक डॉ. शिवनारायण ने किया ।

इस अवसर पर पटना की ख्यातिलब्ध साहित्यिक संस्था 'साहित्य कुंज' की ओर से समारोह के मुख्य अतिथि एवं 'नई धारा' साहित्यिक पत्रिका के प्रधान संपादक श्री उदयराज सिंह ने डॉ. अवस्थी को माल्यार्पित कर अंगवस्त्रम् से सम्मानित करते हुए 'साहित्य-शिरोमणि' का मानद सम्मान-पत्र प्रदान किया ।

समारोह में सर्वश्री विन्ध्यवासिनीदत्त त्रिपाठी, योगेश्वर सिंह योगेश, ललित कुमुद, डॉ. विनोदमणि दिवाकर, मोहन प्रेमयोगी, हलधर भारती, डॉ. शिवनारायण, विशुद्धानंद, जनार्दन मिश्र, आनंद रस्तोगी, राजकुमार प्रेमी, विजय गुंजन एवं डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया, जिनकी डॉ. अवस्थी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

इस सारस्वत समारोह में अतिथियों का स्वागत जाकिर हुसैन संस्थान के निदेशक प्रो. उत्तम कुमार सिंह ने किया, जबकि युवा कवि आनंद रस्तोगी ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

— प्रस्तुति : डॉ. शिवनारायण

कादम्बिनी क्लब की ९वीं गोष्ठी संपन्न

हैदराबाद : कादम्बिनी क्लब की ९वीं मासिक साहित्य सभा, नामपल्ली में संपन्न हुई । गोष्ठी की अध्यक्षता श्री विजय कुमार टावरी, मैनेजिंग डायरेक्टर, महेश बैंक ने की । डॉ. अहिल्या मिश्रा, संयोजिका ने स्वागत किया और पिछले कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत किया ।

गोष्ठी में श्री नरेंद्र राय की हास्य व्यंग्य कविताओं पर चर्चा हुई ।

श्री नेहपाल सिंह वर्मा के संचालन में कवि-गोष्ठी भी हुई जिसमें सर्वश्री विनोद कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रवाल, एलिजाबेथ कूरियन मोना, विजय प्रकाश मिश्रा, डॉ. सोलम व्यंकटेश्वर राव, दुर्गादत्त पांडेय, अजीत गुप्ता, नरेंद्र राय, नेहपाल सिंह वर्मा, डॉ. अहिल्या मिश्र, नवीन सेठिया, रमेश गायकवाड़, गायत्री शरण शर्मा, विश्वेश्वर राज अस्थाना, श्रीमती सुनीता मोथा, श्रीमती पवित्रा अग्रवाल, रउफ रहीम, गोविंद सिंह अक्षय, पुरुषोत्तम प्रशांत , मुनींद्र मिश्र और साहिब बनारसी ने काव्यपाठ किया ।

काव्य संध्या का आयोजन

रांची । कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में १३ अगस्त को स्थानीय नेताजी सुभाष चंद्र बोस क्लब में एक काव्य संध्या का आयोजन किया गया । जिसमें जाने-माने कवि अशोक कुमार अंचल, रेहाना मुहम्मद अली, कृष्ण कुमार मधुकर, कौशल किशोर ठाकुर, आलोक प्रियदर्शी, राजीव कुमार थेपड़ा, नरेश कुमार बंका, सुश्री मुक्ति शाहदेव, रश्मि कुमारी, श्रीमती महुआ माजी बृजलाल, आलोक आदित्य की कविताएं काफी सराही गयीं ।

इनके अतिरिक्त उक्त गोष्ठी में डॉ. माया प्रसाद, सुश्री कलावती सिंह सुमन तथा अन्य लोगों ने भी हिस्सा लिया । कार्यक्रम का संचालन रांची जिला कादम्बिनी क्लब के संयोजक एवं कवि, साहित्यकार आलोक आदित्य ने किया जबकि अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि श्री अशोक कुमार अंचल ने की ।

क्लब की बैठक

टिहरी, गढ़वाल । 'कादम्बिनी क्लब' की एक बैठक स्थानीय संयोजक श्री परिपूर्णानंद सेमवाल की अध्यक्षता में हुई जिसमें क्लब की गतिविधियों को और तेज करनेतथा क्लब के सदस्यों की संख्या को बढ़ाने समेत अन्य बिंदुओं पर विचार किया गया । बैठक में इंद्रप्रताप विष्ट, जगदीश प्रसाद व्यास तथा प्रेमबल्लभ पुरोहित, राकेश चंद्र मैठाणी एवं आर. डी. विजूल्वाण ने अपने विचार व्यक्त किये ।

में संयोजक श्री सेमवाल ने सदस्यों के प्रति आभार [illegible] किया ।

शरदोत्सव संपन्न

साईंखेड़ा (न[illegible]हपुर) । 'कादम्बिनी क्लब' द्वारा एक गोष्ठी का [illegible]जन किया गया । गोष्ठी की अध्यक्षता श्री डी. ए[illegible] भदौरिया ने की । वरिष्ठ कवि पं. नरहरिदत्त बसेड़िया [illegible] सरस्वती वंदना की ।

अंत में उपस्थित रचनाकारों में श[illegible] जफर (शिक्षक), संजय गुप्ता, बीरेंद्र राजपूत, वेणीशंकर पटेल (संयोजक), शिवकुमार शर्मा, कीर्तिवर्धन सिंह, भानुप्रताप राजपूत, संजीव सोनी आदि ने काव्य पाठ किया । कार्यक्रम में के. के.

शर्मा (प्राचार्य हाई स्कूल), पं. रामेश्वरदयाल बसेड़िया, अत्तरसिंह पटेल, मुकेश साहू, धरमदास वर्मा, गजेंद्र चौकसे (अध्यक्ष, छात्र संगठन) भी उपस्थित थे ।

रचना संगोष्ठी

शिवहर । 'कादम्बिनी क्लब' के बैनर तले रचना-संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसकी अध्यक्षता श्री जयप्रकाश मिश्र एवं संचालन क्लब के संयोजक अधिवक्ता श्री ओमप्रकाश मिश्र ने की । इस अवसर पर बलराम भूषण 'पत्रकार' ने क्लब का सदस्य बनने पर जोर दिया । उपस्थित जिन रचनाधर्मियों ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया उनमें अमरकांत चौधरी, रामबहादुर पांडेय, श्री राम परदेशी, अवधेश प्रसाद गुप्ता, राम इकबाल राय, सुभाष 'मिर्जापुरी', प्रेमानंद वर्मा तथा अरविंद कुमार झा प्रमुख थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
078832

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या-पूर्ति—१९५

सिंगार

प्रथम पुरस्कार

गोरी सपनों में खोयी-सी, चली पिया के गांव
सतरंगी खुशियों की चाहत, मिले प्यार की छांव
रोम-रोम है रेशम-रेशम, चितवन तीर-कमान
धीरे-धीरे खिली धूप-सी, अधरों पर मुसकान
जैसे प्रीतम का करती हो, मन-ही-मन सत्कार
मौन समर्पण को आतुर हैं, ये सोलह सिंगार

—सतीश गुप्ता
पंजाब नेशनल बैंक, भटनी
जिला—देवरिया

द्वितीय पुरस्कार

निष्कपट चंचल शिशु—जैसा तुम्हारा रूप
मुसकुराती चांदनी तुम, खिलखिलाती धूप
भाल को चूमे तुम्हारे, लाज का झूमर
प्रीत का प्रतिबिंब है यह रेशमी चूनर
नैन कजरारे, मुदित मन, कामना अभिसार
शब्द हैं निःशब्द मुखर हैं रूप, रंग, सिंगार

—मुसव्विर कैलाशपुरी
मौलवी साहब स्ट्रीट
ग्राम-डाकघर—कैलाशपुर
जिला—सहारनपुर (उ. प्र.)-२४७००१

तृतीय पुरस्कार

लिये प्रीतम की मन में चाह
प्रफुल्लित जाती अपनी राह
बहुरिया का क्या सुंदर रूप
चांद का मुखड़ा मधुर अनूप
अचंभित देख सकल संसार
तुम्हारा यौवन औ' सिंगार

—डॉ. बिंदेश्वरी प्रसाद सिंह
उप निदेशक
राष्ट्रीय एटलस संगठन
डी. एफ. ब्लॉक, साल्ट लेक
कलकत्ता—७०००६४

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की
ओर से राकेश शर्मा द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
१८/२० कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००१ में
मुद्रित तथा प्रकाशित

पुस्तक लिंक
0788372

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar